

प्रथम संस्करण—

१९८०-८१ ई०

पृष्ठसंख्या—१८ × २२ ÷ ८ = १०१६

मूल्य— ७०.०० रुपये

मुद्रक—

बाजी प्रेस

‘प्रभाकर निलयम्’, ७०४/१२८, गण्डिया रोड, लखनऊ-२२६००३



.....

.....

.....

.....

.....



अतुलितबलधामं स्वर्गात्मदेहं
 दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
 सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
 रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

श्रीराम-पञ्चायतन



Swami Chinmayananda

Bombay Yagnasala
14-11-79.

Sri Peshadri.

Madurai

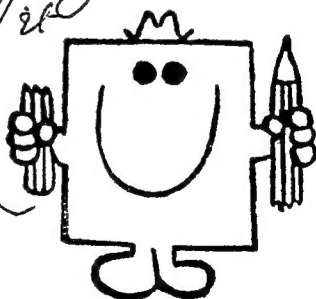
Blessed One,

Hanoms Hanoms. Hanoms.
Salutations.

Congratulations that you
found in you the "faults" to serve the Lord
with this superhuman work of translating
and commenting, in Hindi, the entire
10,000 and odd verses of Ramcharitmanas.
May Sri Ramchandra shower His
grace upon you: let Shiva give the
required heart: and let Hanumanji
supply the mental and physical
strengths to accomplish it.

Love dar dar,

Shilamp



श्री स्वामी चिन्मयानन्द

श्री घोषाद्वि

मदुरै

घन्य ॐ

वाम्बे यज्ञशाला

१४-११-७६

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम ।



कम्बर रामायण के पूरे दस हजार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने मे 'विद्वत्ता' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री नीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बन दें ।

प्रेम प्रेम प्रेम
(प्रेमसहित)

ॐ चिन्मयानन्द

कम्बन-मणिमण्डपम्



तमिळुनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर
स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन
के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-
अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु)
श्री सा० गणेशन द्वारा स्थापित

आचार्य ति० शेषाद्रि का अभिनन्दन

कारैक्कुडी के 'कम्बन कळगम्' द्वारा इस अनुवाद का भव्य स्वागत



बालकाण्ड की भूमिका में कारैक्कुडी के निवासी, कम्बन कळगम् के निर्माता, संचालक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पीडि ('कम्बन-चरणरेणु') जी की चर्चा दी गयी है। उस संदर्भ में उक्त कळगम् द्वारा हर वर्ष चलायी जानेवाली 'कम्ब जयन्ती' के उत्सव की बात भी कही गयी है। वह उत्सव चार दिनों का होता है और उसकी समाप्ति कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान

में वहाँ होती है, जहाँ कम्बन की समाधि पर बना मन्दिर-सा मण्डप रहता है। फाल्गुन (सौर गणना के अनुसार) महीने के 'हस्त नक्षत्र' का दिन कम्ब रामायण के प्रकाशन का दिन माना जाता है। (शकाब्द ८०७ के फाल्गुन यानी फरवरी सन् ८९६ ई० के दिन वह प्रकाशित हुआ।) इसलिए यह उत्सव उस दिन कम्बन की पूजा-अर्चना के साथ समाप्त होता है।

इस उत्सव में तमिळनाडु के मूर्धन्य विद्वान् और अन्य गण्यमान्य सज्जन भाग लेकर अपने भाषणों, कविताओं और चर्चाओं द्वारा अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। यह शानदार जलसा है और कम्बन अडिप्पोडि जी कोई बात उठा नहीं रखते। यह उत्सव कारैक्कुडी में बन रहे कम्ब-मण्डप में चलता है।

इस साल 'कम्ब-मेला' में दो विशेष बातों का आयोजन था। कम्बन के दो विद्वान् भक्तों की स्मृति में चित्रों का अनावरण एक बात था, और इस अनुवाद-ग्रंथ के प्रणेता का अभिनन्दन दूसरी बात।

मार्च १८ से २१वीं ता० तक मनाये गये इस उत्सव में पहले ही दिन की सभा के कार्यक्रम में ये दोनों अच्छे कार्य सम्पन्न हुए।

इस सभा के तमिळनाडु के वित्तमंत्री श्री वी० आर्० नैडुवर्जेळियन जी सभापति रहे। प्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस् मु० मु० इस्माइल ने उद्घाटन किया। (इनकी लिखी भूमिका बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है।) तमिळनाडु विधान कौंसिल के अध्यक्ष मान्य म० पी० शिवज्ञान ग्रामणी जी ने वी० वी० एस् अय्यर के चित्र का अनावरण किया और उनका गुणगान समुचित रूप से किया। यह साल व० वे० सु० अय्यर के जन्म का सौवाँ साल है। उन्हीं ने पहले-पहल कम्बन की रचना का विश्व के श्रेष्ठतम कवियों की रचनाओं के साथ तुलना करके कम्बन को उनसे भी आगे निकली मेधा का स्वामी साबित किया। उनका 'A study of Kampan' 'कम्बन — एक अध्ययन' बड़ा ही उत्कृष्ट, प्रामाणिक और महत्त्व का विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ है। वी० वी० एस्० (व-वे-सु) अय्यर तमिळनाडु के 'तिलक' थे।

कोयम्बतूर के प्रसिद्ध मिल-मालिक जी० के० सुन्दरम् जी ने तै० पो० मीनाक्षी सुन्दरम् के चित्र का अनावरण किया। तै० पो० मी०,

जिनको यहाँ गुरुदेव कहके सम्बोधित करने की प्रथा है, बहुभाषाविद्, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के प्रथम उपकुलपति थे । उन्होंने पहले-पहल कम्बन का समूचा ग्रन्थ एक ही जिल्द में संकलन करके पुस्तक के प्रकाशन में सहायता दिलायी थी ।

बाद मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने श्री शेषाद्रि और ग्रन्थ की सराहना की । इनकी लिखी भूमिका भी बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है । उन्होंने अपनी संस्तुति के भाषण में कहा कि तमिळभाषियों के लिए हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, 'ने, का, के, की' आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं । तमिळनाडु में रहनेवाले इने-गिने हिन्दी के अधिकारी विद्वानों में आचार्य ति० शेषाद्रि एक हैं ।

फिर उन्होंने कम्बन की महत्ता बतायी । अनुवाद के दो-एक स्थलों का उल्लेख करके बताया कि अनुवाद सफल हुआ है ।

यहाँ की प्रथा के अनुसार उन्होंने कम्बन कळगम् की ओर से ज़री की कारीगरी से युक्त रेशमी शाल उढ़ाकर अनुवादक का सम्मान किया ।

असल में यह कार्य तमिळ देश के समूचे कम्बन प्रेमियों के सम्मान का प्रदर्शक है और ट्रस्ट और अनुवादक इस पर गर्व कर सकते हैं ।



अनुवादक की अवतरणिका

अयोध्या-अरण्यकाण्ड की श्रुतिका (अनुवादक की अवतरणिका) में तमिऴ के वाक्यों में आनेवाले शब्दों के मूल रूपों को छाँटने में जो कठिनाई सम्भवनीय है, उसे दूर करने (कम से कम करने) के विचार से शब्द-विचार पर कुछ बातें कही गयीं। अब उसी को मद्देनजर रखकर सन्धि-सम्बन्धी कुछ विस्तार करना चाहता हूँ।

सन्धि ध्वनियों के मेल से होती है। वहाँ विग्रह आसान है। पर शब्दों का जहाँ योग के कारण रूप-परिवर्तन होता है, जो आम तौर से समास के कारण होता है, वहाँ विग्रह आसान नहीं है। यों ही शब्दों को खण्डित करने से काम नहीं चलेगा। अतः समास के कारण होनेवाली सन्धि-सम्बन्धी बातें जानना आवश्यक हो जाता है। असल में तमिऴ में 'पुणर्च्चि' के प्रकरण में जो तत्त्व बताये जाते हैं वे अधिकांश समास के ही नियम हैं, यद्यपि 'पुणर्च्चि' का अर्थ मेल, सन्धि या योग है।

पुणर्च्चि

- 1 पुणर्च्चि (लक्षण)— शब्दों के अपने क्रम में मेल या योग को "पुणर्च्चि" कहते हैं। इसमें "समास, सन्धि और योग" तीनों का समावेश है। ये दो तरह की हैं—
पहली— वेङ्कमैप् पुणर्च्चि— जब पूर्वशब्द का अपर शब्द से विभक्ति के "योग" या समास बनता है, उसे 'वेङ्कमैप् पुणर्च्चि' कहते हैं। (इसके अंतर्गत हिन्दी का तत्पुरुष सपाग आता है।) इसमें कारक-चित्त लुप्त भी रह सकते हैं, प्रकट भी।

उदाहरण :

कारकचित्त लुप्त	कारकचित्त प्रकट	कारकचित्त	विभक्ति
पाल् कुटित्तान् (दूध पिया)	पालैक् कुटित्तान् (दूध को पिया)	ऐ (को)	दूसरी
तल्ल वणङ्कित्तान् (सिर नवाया)	तल्लैयाल् वणङ्कित्तान् (सिर से नमन किया)	आल् (से)	तीसरी
परतन् मैन्तन् (भरत-सुत)	परतन्नुक्कु मैन्तन् (भरत को सुत)	कु (को)	चौथी
(यहाँ हिन्दी में छोटी विभक्ति होती है।)			

मलै वीळरुवि (पर्वत-उतरती नदी)	मलैयिन् वीळरुवि (पर्वत से उतरती नदी)	इन् (से)	पाँचवीं
मुरुकन् वेल् (मुरुग-भाला)	मुरुकन्तु वेल् (मुरुगन का भाला)	अतु (का)	छठी
कुक्कै नुळैन्तान् (गुहा-घुसा)	कुक्कैक्कण् नुळैन्तान् (गुहा में घुसा)	कण् (में)	सातवीं
पाल् + कुटम् = पार्कुटम्	पालै उटैय कुटम्	मध्यमपदलोपी कर्मधारय	

दूसरी— अल्वळिप् पुणर्च्चि— अन्य सभी समस्त (या संयुक्त) शब्द “अल्वळिप् पुणर्च्चि” के कहे जाते हैं। “अल्” का अर्थ “इतर” या अन्य या ‘जो यह नहीं’।

उदाहरण :

- (क) पाय्पुलि— विनैत्तौहै (कृदन्त) के प्रयोग से बननेवाले समस्त शब्द ‘पाय्’ का अर्थ ‘झपटता’, ‘झपटा’ और आगे ‘झपटनेवाला’ है— पुलि=बाघ है।
- (ख) पच्चम् पुल् (हरी घास) पण्पुत्तौहै— गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य का समास है।
- (ग) कयल् विळि— (मछली-सी आँख) उवमैत्तौहै— उपमेय तथा उपमित शब्दों का मेल।
- (घ) इराप्पहल्— इरा + पकल् = रात (और) दिन (द्वन्द्व समास)।
- (ङ) कयल् विळि वन्ताळ्— यहाँ “मछली-सी आँख वाली आयी” अर्थ है। यह ‘अन्मोळित्तौहै’ (कर्मधारय समास) में बना समास है।

2 “पुणर्च्चि” दो तरह से साधी जाती है—

- (अ) 1 स्वाभाविक या केवल संयोग— इरामन् वन्तात् (राम आया); माट्टु पुल् मेय्न्ततु (बैल ने घास चरी।)
- 2 विकारयुक्त—मेल होते वक्त्र पूर्व शब्द के आखिर में और पूर्व व अपर शब्दों के बीच परिवर्तन या विकार हो जाते हैं।
- उदाहरण : कलै + चैल्वि = कलैच्चैल्वि।

(आ) विकार तीन तरह के होते हैं— आगम, परिवर्तन और लोप।

आगम—कलै + चैल्वि = कलैच्चैल्वि— आगम है ‘च’ आया है। (कला में निपुण स्त्री इसका अर्थ है। ‘कलै’ और ‘चैल्वि’ का समास नहीं बना तो अर्थ भिन्न होगा; उनको अलग-अलग लेना पड़ेगा।)

पू+तोदृट्म्=पून् दोदृट्म्—आगम है। पू और तोदृट्म्
अलग-अलग रहें तो दोनों के अलग-अलग अर्थ करना पड़ेगा।
पर यहाँ यह समस्त शब्द है। अर्थ 'फूलों का वाग' है।

परिवर्तन—मरम्+चायून्ततु=मरञ्जायून्तदु(अर्थ—पेड़ गिरा।) यहाँ
म् ञ् में परिवर्तित हो गया।

लोप—मरम्+वेर्=मरवेर्— (अर्थ— पेड़ की जड़) यहाँ म् का
लोप हो गया।

तमिळ में इस तरह के समासगत संधि के विस्तृत नियम होते हैं।
उनके रूप के किञ्चित् ज्ञान के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

संधि में परुष व्यंजनों का द्वित्व

तमिळ में परुष वर्ग के अक्षरों के द्वित्व का मुख्यत्व है। द्वित्व के बिना
अर्थ भी बदल जाता है; समास ही भिन्न हो जाता है। अतः पहले उन
स्थलों का विवरण उदाहरण-सहित दिया जाता है।

नोटः— यहाँ तमिळ के वर्णों के वर्गीकरण का स्मरण करना सुविधाजनक
होगा :

अ आदि बारह स्वर— स्वरवर्ण के हैं।

क, च, ट, त, प, उ— ये परुष अक्षर, “वल्लेळुत्तु” या “वलि” या वल्
इनम् के परुषवर्ण या परुषगण के अक्षर हैं।

ङ, ञ, ण, न, म, न— ये कोमल वर्ण “मैल् इनम्” कोमल वर्ण या कोमल
गण के हैं।

य, र, ल, व, लृ, लृ— ये मद्धिम वर्ण के अक्षर “इडैयिनम्” के कहे जाते हैं।

3 (क) विभक्ति-समास में वे स्थल जहाँ परुष वर्ण का द्वित्व होता है :

1 द्वितीया तत्पुरुष के विग्रह करते समय द्वित्व होता है :

अण्ये+कट्टिनान्=अण्येक्कट्टिनान्। (आक्कल्) सृजन

कट्टये+तत्तित्तान्=कट्टयेत्तत्तित्तान्। (अळित्तल्) नाश

ऊरै+शैर्न्दान्=ऊरैच्चेर्न्दान्। (अडैदल्) प्राप्ति

उलहै+तुउन्दान्=उलहैत्तुउन्दान्। (नीत्तल्) त्याग

पुलिये+पोत्तुवन्=पुलियेप्पोत्तुवन्। (ओत्तल्) समता

पौरुळै+पैर्त्तान्=पौरुळैप्पैर्त्तान्। (उडैमै) स्वामीत्व

2 चौथी विभक्ति के बने समस्त शब्दों के विग्रह करते समय :

नम्बिक्कु+कौडुत्तान्=नम्बिक्कुक्कौडुत्तान्। (कौडै) दान

पाम्बुक्कु + पहै कीरि = पाम्बुक्कुप्पहै कीरि । (पहै) शत्रुता
 औवैक्कु + कबिलर् नण्बर् = औवैक्कुक्कबिलर् । (नण्बर्) मित्रता
 वैन्ऱवर्क्कु + कळल् तक्कडु = वैन्ऱवर्क्कुक्कळल् । (तक्कडु) उचितता
 नल्लुक्कु + पज्जु = नल्लुक्कुप्पज्जु । (अदुवादल्) वही बनना
 कूलिक्कु + शैय्द वेले = कूलिक्कुच्चैय्द वेले । (पौरुट्टु) तबथं
 कण्णनुक्कु + तम्बि मुरुहन् = कण्णनुक्कुत्तम्बि मुरुहन् । (क्रम)

3 छठी विभक्ति में अवर वर्ग के नामों के बाद परुषाक्षरों का द्वित्व हो जाता है :

यानै + काडु = यानैक्काडु । (गजकर्ण)
 कुदिरै + शैवि = कुदिरैच्चैवि । (अश्वकर्ण)
 पाम्बु + तलै = पाम्बुत्तलै । (सर्पसिर)
 पूनै + पार्वे = पूनैप्पार्वे । (मार्जारदृष्टि)

4 सातवीं विभक्ति पर आधारित समास में :

कूण्डु + किळि = कूण्डुक्किळि । (पिजरे का तोता)
 तण्णीर् + पाम्बु = तण्णीर्प्पाम्बु ।
 मलै + कुहै = मलैक्कुहै ।

5 परुष वर्ण के ह्रस्व 'उ' के बाद परुष अक्षर आवे तो उसका द्वित्व हो जाता है :

वाक्कु + कौडु = वाक्कुक्कौडु । कौक्कु + शिउडु = कौक्कुच्चिउडु ।
 पाक्कु + तूळ् = पाक्कुत्तूळ् । अच्चु + पलहै = अच्चुप्पलहै ।

6 स्थानवाचक शब्द के उपांत अक्षर कोमल (मैल्लैळुत्तु) व्यंजन हों तो परुष व्यंजनों का द्वित्व हो जाता है :

इङ्गु + कण्डान् = इङ्गुक्कण्डान् ।
 अङ्गु + शैन्ऱान् = अङ्गुच्चैन्ऱान् ।
 आङ्गु + तेडित्तान् = आङ्गुत्तेडित्तान् ।
 ऐङ्गु + पोत्ताय् = ऐङ्गुप्पोत्ताय् ?
 ईङ्गु + कण्डान् = ईङ्गुक्कण्डान् ।
 आण्डु + शैन्ऱान् = आण्डुच्चैन्ऱान् ।
 ईण्डु + तेडित्तान् = ईण्डुत्तेडित्तान् ।
 याण्डु + पोत्ताय् = याण्डुप्पोत्ताय् ?

7 एकाक्षर शब्द के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व हो जाता है :

पू + कडै = पूक्कडै
 ती + पुहै = तीप्पुहै
 तै + पौङ्गल् = तैप्पौङ्गल्
 पू + चैण्डु = पूच्चैण्डु
 ई + तलै = ईत्तलै

3 (ख) इतर समास-गठन में परुष अक्षरों का द्वित्व :

1 अरै, पादि (आधा) के बाद आनेवाले परुषाक्षर :

अरै + काशु = अरैक्कासु । पादि + शुमै = पादिच्चुमै ।

2 ह्रस्व अक्षर के आगे के परुष का द्वित्व होता है :

कना + कण्डेन् = कनाक्कण्डेन् ।

पला + चुळै = पलाच्चुळै ।

उला + तमिळ् = उलात्तमिळ् ।

इरा + पहल् = इराप्पहल् ।

3 दो ह्रस्वाक्षरों के शब्दों के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व होता है :

कौशु + कडित्तदु = कौशुक्कडित्तदु ।

उडु + शिदरियदु = उडुच्चिदरियदु ।

कणु + तोन्ऱियदु = कणुत्तोन्ऱियदु ।

वडु + पिळन्ददु = वडुप्पिळन्ददु ।

4 नकारात्मक शब्दों का अन्तिम स्वर जहाँ लुप्त है, वहाँ :

कलैया + कून्दल् = कलैयाक्कून्दल् ।

नाडा + शिरप्पु = नाडाच्चिरप्पु ।

काणा + तैय्वम् = काणात्तैय्वम् ।

माणा पिऱप्पु = माणाप्पिऱप्पु ।

5 अकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :

पाड + केट्टान् = पाडक्केट्टान् ।

पाड + शौन्नान् = पाडक्कौन्नान् ।

कूऱ + तैरिन्दान् = कूऱत्तैरिन्दान् ।

आऱ + पौऱुत्तान् = आऱप्पौऱुत्तान् ।

6 इकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :

केट्टालन्ऱि + कौडान् = केट्टालन्ऱिक्कौडान् ।

उणविन्ऱि + शौत्तान् = उणविन्ऱिच्चौत्तान् ।

तेडि + तन्ऱान् = तेडित्तन्ऱान् ।

ओडि + पोनान् = ओडिप्पोनान् ।

7 उन शब्दों के आगे, जिनका अन्तिम स्वर ह्रस्व हो और उपान्त कोमल वर्ग का ह्रस्व व्यंजन हो :

अन्बु + तळै = अन्बुत्तळै ।

8 गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य से बने समस्त शब्दों में :
वट्ट + कोट्टे = वट्टक्कोट्टे । पच्चे + पुडैवे = पच्चेप्पुडैवे ।

9 दो नामों के (रूपी या संज्ञित अर्थ में) बने समस्त शब्दों में :
ते + तिङ्गळ् = तैत्तिङ्गळ् । शारै + पाम्बु = शारैप्पाम्बु ।

10 अ, इ—संकेतात्मक प्रत्यय और ऐ प्रश्नात्मक प्रत्यय के आगे :
अ + करुम्बु = अक्करुम्बु । इ + शङ्गु = इच्चङ्गु ।
ऐ + पन्नु = ऐप्पन्नु ?

11 'अन्त' (उस); 'इन्त' (इस) और 'ऐन्त' (कौन) इन प्रश्नवाचक शब्दों के आगे :

अन्त + कुदिरै = अन्तक्कुदिरै । इन्त + शिलै = इन्तच्चिलै ।
ऐन्त + तट्टु = ऐन्तत्तट्टु ? ऐन्त + पडम् = ऐन्तप्पडम् ?

12 अप्पडि (वैसा), इप्पडि (ऐसा); ऐप्पडि (कैसा) इन शब्दों के आगे :
अप्पडि + कूत्तिन्नान् = अप्पडिक्कूत्तिन्नान् ।
इप्पडि + शैम्दान् = इप्पडिच्चैम्दान् ।
ऐप्पडि + पाडिन्नान् = ऐप्पडिप्पाडिन्नान् ?

13 'इत्ति' (अब, आगे); 'तत्ति' (अकेला); "मर्ऱु", "मर्ऱु"
(अलावा, अन्य, इतर) इन शब्दों के आगे :

इत्ति + पोहलाम् = इत्तिप्पोहलाम् ।
तत्ति + पळक्कम् = तत्तिप्पळक्कम् ।
मर्ऱु + कण्डवै = मर्ऱुक्कण्डवै ।
मर्ऱु + पौरुहळ् = मर्ऱुप्पौरुहळ् ।
मर्ऱु + कूरुहळ् = मर्ऱुक्कूरुहळ् ।

वे स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होता

4 (क) विभक्ति-समास में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होता :

1 कर्म, तत्पुरुष समास में जहाँ विग्रह नहीं किया गया है:—
कवै + कट्टिन्नान् = कवै कट्टिन्नान् । (सृजन)
काडु + कौन्ऱान् = काडु कौन्ऱान् । (नाश)
ऊर् + शेर्न्दान् = ऊर् शेर्न्दान् । (प्राप्ति)
उयिर् + तुर्न्दान् = उयिर् तुर्न्दान् । (त्याग)
पुलि + पोन्ऱान् = पुलि पोन्ऱान् । (समता)
पुहळ् + पेर्ऱान् = पुहळ् पेर्ऱान् । (स्वामीत्व)

2 तीसरी विभक्ति के 'औटु, ओटु' के चिह्नों के आगे नहीं होगा—

अँत्तनीडु + कइरान् = अँत्तनीडु कइरान् ।

महनोडु + शेर्न्दान् = महनोडु शेर्न्दान् ।

अँत्तनीडु + तङ्गिनान् = अँत्तनीडु तङ्गिनान् ।

वेलनोडु + पोनान् = वेलनोडु पोनान् ।

3 पाँचवीं विभक्ति के 'इरुन्तु, निन्ऱु' चिह्नों के आगे नहीं होता—

मरत्तिलिरुन्दु + कुदित्तान् = मरत्तिलिरुन्दु कुदित्तान् ।

वीट्टिनिन्ऱु + पुउप्पट्टान् = वीट्टिनिन्ऱु पुउप्पट्टान् ।

4 छठी विभक्ति के चिह्नों के आगे नहीं होगा—

कण्णनदु + कुळल् = कण्णनदु कुळल् ।

वेलनुडैय + शिरप्पु = वेलनुडैय शिरप्पु ।

अँन + कैहळ् = अँन कैहळ् ।

4 (ख) इतर सन्धियों में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होगा :

1 उच्च जाति के साधारण नामों (जातिवाचक संज्ञाओं) के आगे—

तम्बि + शिरियवन् = तम्बि शिरियवन् ।

शैल्वि + पेरियळ् = शैल्वि पेरियळ् ।

ताय् + शिरन्दवळ् = ताय् शिरन्दवळ् ।

ताय् + शिरन्ददु = ताय् शिरन्ददु ।

2 उन सभी कृदन्तीय विशेषणों को छोड़, जिनके अन्तिम स्वर लुप्त हों—

पाराद + काडु = पाराद काडु (नकारात्मक)

पुदिय + शिङ्गम् = पुदिय शिङ्गम् (संकेतात्मक)

पाय्न्द + तवळे = पाय्न्द तवळे (खुला)

3 अवर जाति के वाचक पूर्ण क्रिया के शब्दों के आगे—

मुळङ्गिन + शङ्गुहळ् = मुळङ्गिन शङ्गुहळ् ।

आर्त्तन + परैहळ् = आर्त्तन परैहळ् ।

पाडिन + कुमिल्हळ् = पाडिन कुमिल्हळ् ।

करैन्दन + काक्कैहळ् = करैन्दन काक्कैहळ् ।

4 “चैयिय” — (करने) जैसी अपूर्ण क्रिया के आगे—

उण्णिय + शैन्ऱान् = उण्णिय शैन्ऱान् । (खाने गया)

नोट:—यह कविता में ही प्रयुक्त होता है ।

5 ‘मिया’ की पूरक ध्वनि के आगे—

केण्मिया + शैल्व = केण्मिया शैल्व !

शैन्मिया + तम्बि = शैन्मिया तम्बि !

केण्मिया—केण्—सुनो; शैन्मिया = शैल = चल—यह भी कविता में आता है।

6 आकारान्त, नकारात्मक बहुवचन की पूर्ण क्रियाओं के आगे नहीं होता :
वारा + किळिहळ् = वारा किळिहळ्।

तिन्ना + पुलिहळ् = तिन्ना पुलिहळ्।

पाडा + कुयिल्हळ् = पाडा कुयिल्हळ्।

7 कर्ता अगर ऐकारान्त हो तो सन्धि में द्वित्व नहीं होता :

यानै + परियदु = यानै परियदु। पूनै + शिरियदु = पूनै शिरियदु।

8 प्रश्नसूचक शब्द के आगे द्वित्व नहीं होता :

कण्णा + केळ् = कण्णा केळ्। वेला + शैल् = वेला शैल्।

मुरुहा + ता = मुरुहा ता। कुप्पा + पो = कुप्पा पो।

9 क्रिया और संज्ञा मिलकर जहाँ समस्त शब्द बने हों, वहाँ द्वित्व नहीं होता :

कत्तु + कडल् = कत्तुकडल्। औलि + शङ्गु = औलिशङ्गु।

मोदु + तिरै = मोदुदिरै। तैळि + पौरुळ् = तैळिपौरुळ्।

10 ह्रस्वान्त शब्दों के उपान्त अक्षर परुष जहाँ नहीं हो, वहाँ द्वित्व नहीं होगा :

नाडु + कळित्तदु = नाडु कळित्तदु।

अह्(ः)गु + कडिदु = अह्(ः)गु कडिदु।

कयिरु + शिरिदु = कयिरु शिरिदु।

पन्दु + तन्दात् = पन्दु तन्दात्।

कौय्दु + शैल् = कौय्दु शैल्।

11 कुछ मामूली उकार के आगे द्वित्व नहीं होगा :

कदवु + तिउन्ददु = कदवु तिउन्ददु। नालु + पेर् = नालु पेर्।

12 कुछ संख्यावाचक शब्दों के आगे परुष का द्वित्व नहीं होगा :

औन्ऱु + कौडु = औन्ऱु कौडु। औरु + काशु = औरु काशु।

इरण्डु + शिङ्गम् = इरण्डु शिङ्गम्। इरु + शीर् = इरु शीर्।

मून्ऱु + किळि = मून्ऱु किळि। नान्गु + काल् = नान्गु काल्।

ऐन्दु + तलै = ऐन्दु तलै। आरु + शेवल् = आरु शेवल्।

एळु + कडल् = एळु कडल्। औन्बदु + पळम् = औन्बदु पळम्।

13 वह, यह (कर्तावाचक) निश्चयार्थक सर्वनामों के आगे :
 अडु + शिरिडु = अडु शिरिडु । इडु + पेरिडु = इडु पेरिडु ।

4 (ग) अन्य स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होगा :

1 'अँतु', 'एतु', 'यातु' क्या एकवचन; 'अँवै', 'यावै' क्या बहुवचन
 प्रश्नवाचक सर्वनामों के आगे :

अँडु + तङ्गिरु ? = अँडु तङ्गिरु ? एडु + पै ? = एडु पै ?
 याडु + शैय्दाय् ? = याडु शैय्दाय् ? अँवै + शैन्डु ? = अँवै शैन्डु ?
 यावै + कण्डन्न ? = यावै कण्डन्न ?

2 'अव्वळवु' (उतना), 'इव्वळवु' (इतना), 'अँव्वळव' (कितना)
 — इन शब्दों के आगे :

अव्वळवु + पौरुळ् = अव्वळवु पौरुळ् ।
 इव्वळवु + कालम् = इव्वळवु कालम् ।
 अँव्वळवु + शुरुक्कम् = अँव्वळवु शुरुक्कम् ?

3 अत्तनै (उतना), इत्तनै (इतना), अँत्तनै (कितना) — इन शब्दों के
 आगे :

अत्तनै + काक्कै = अत्तनै काक्कै ।
 इत्तनै + शैल्वम् = इत्तनै शैल्वम् ।
 अँत्तनै + पेरिडु ! = अँत्तनै पेरिडु !

4 पटि (ऐसा) के प्रत्यय के बाद :

तैरिमुम्बडि + कूरिन्नान् = तैरिमुम्बडि कूरिन्नान् ।
 उवक्कुम्बडि + शिरुन्दान् = उवक्कुम्बडि शिरुन्दान् ।
 काणुम्बडि + तोन्निरिन्नान् = काणुम्बडि तोन्निरिन्नान् ।
 महिल्लुम्बडि + पेशिन्नान् = महिल्लुम्बडि पेशिन्नान् ।

5 'शिल', 'पल' (कुछ) :

शिल + कर्कळ् = शिल कर्कळ् । पल + शौर्कळ् = पल शौर्कळ् ।
 शिल + तडैहळ् = शिल तडैहळ् । पल + पयिरहळ् = पल पयिरहळ् ।

6 आ, ओ, ए, या — इन प्रश्नसूचक शब्दों के आगे :

अवना + शैन्डान् ? = अवना शैन्डान् ?
 अवन्नो + कण्डान् ? = अवन्नो कण्डान् ?
 यारे + शैय्दार् ? = यारे शैय्दार् ?
 या + कूरिनाय् = या कूरिनाय् ?

7 निश्चयार्थक 'ए'कार-युक्त शब्दों के आगे : . . .

इवन्ते + शैय्दवन् ! = इवन्ते शैय्दवन् !

5 उटम्पटु मैय् (मिलानेवाला व्यंजन) — पास-पास स्वर हो आएँ तो उन्हें मिलाने के लिए य और व के व्यंजनों का आगम होता है :

'य्' आया है :—

मणि + अल्लहिदु = मणियल्लहिदु

ती + अल्लन्दु = तीयल्लन्दु

कै + इदु = कैयिदु

अवन्ते + अल्लहन् = अवन्तेयल्लहन्

'व्' का आगम हुआ है :—

विळ + अल्लहिदु = विळवल्लहिदु

पला + अल्लहिदु = पलावल्लहिदु

कडु + अल्लहिदु = कडुवल्लहिदु

पू + अल्लहिदु = पूवल्लहिदु

नी + अल्लहिदु = नीवल्लहिदु

को + अल्लहिदु = कोवल्लहिदु

6 प्रश्नवाचक या निश्चयवाचक शब्दों (सर्वनामों) का मेल :

(कौन, क्या) अँ + अणि = अँव्वणि; अँ + यात्तै = अँव् यात्तै ।

(उस) अ + अणि = अव्वणि; अ + यात्तै = अव् यात्तै ।

यहाँ अपर शब्द का आरम्भाक्षर य या व है। तब हलन्त व का आगम हुआ है। य को छोड़ अन्य व्यंजन आएँ तो उस-उस व्यंजन का द्वित्व हो जाता है। [पहले (10) में आया है।]

7 ह्रस्व उ का मेल — नाकु + अरिदु = नाकरिदु — ह्रस्व उ का लोप हो गया और क् + अ मिलकर क हो गया। अपर शब्द यकारारम्भ हो तो ह्रस्व उ ह्रस्व इ बन जाता है :

नाकु + यातु = नाकियातु ।

कुछ स्थानों में ह्रस्व उ के बाद 'ऐ' का आगम होता है। उदा :

पण्टु + कालम् = पण्टैक्कालम् । - इत्तु + कूलि = इत्तैक्कूलि ।

8 गुणी नामों का मेल — अधिकांश गुणवाचक शब्द (संज्ञाएँ) 'मै' में अन्त होते हैं। उनको लेकर गुणी का समस्त शब्द जब बनते हैं, तो समास निम्नलिखित प्रकार से बनते हैं :

उटैमै + अन् = उटैयन् — मै का लोप ।

करुमै+अन्=करियन्—मै का लोप और उ का इ में विकार ।
 पचुमै+तार्=पन्तार्—मै का लोप; चु का विकार; त् का न् में विकार ।

9 व्यंजनान्त शब्दों की सन्धि— पूर्व शब्द व्यंजनान्त हो और अपर शब्द स्वरान्त तो पहले के व्यंजन से यह स्वर संयुक्त हो जाता है :

उदा : नेरम्+इल्लै=नेरमिल्लै । पाल्+आट्ट=पालाट्ट ।

10 केवल एक ह्रस्व अक्षर और हलन्त के बने शब्दों के आगे स्वरारम्भ शब्द आएँ, तो निम्नलिखित विकार होता है :

मण्+अरितु=मण्णरितु । पीन्+अरितु=पीन्नरितु ।

11 'म'कारान्त शब्दों की संधि— इसमें पहले 'म्' का लोप हो जाता है; फिर स्वरान्त बनकर तत्संबंधी विधियों के अनुसार परिवर्तन पाता है । उदा :

1 मरम्+अडि=मरवडि (म् का लोप; मिलानेवाला व्यंजन का आगम ।)

2 मरम्+कोडु=मरक्कोडु (म् का लोप+क का द्वित्व)

3 मरम्+वेर्=मरवेर् (म् का लोप; फिर केवल संयोग : विकार मरम्+नार्=मरनार् नहीं ।)

4 (अ) उण्णुम्+चोर्=उण्णुज्जोर् (म् का ज् में बदलना ।)

(आ) अहम्+चैवि=अज्जैवि—म् का लोप म् का च वर्ग के कोमल ज् में परिवर्तन ।

अहम्+कै=अङ्गै— म् का लोप; म् का क वर्ग के कोमल ग् में परिवर्तन ।

12 ण, न की समास-संधि विधि :

1 शिर कण्+कळिर्=शिरु कट्कळिर्— ण् का ट् में परिवर्तन
 पीन्+तट्ट=पीर्त्तट्ट— न् का ट् में परिवर्तन

2 मण्+जाट्चि=मण्जाट्चि विभक्ति-समास है । इसमें केवल
 पीन्+नीट्चि=पीन्नीट्चि संयोग यानी विना परिवर्तन के
 मण्+वन्मै=मण्वन्मै मेल हो जाता है ।

पीन्+याप्पु=पीन्त्याप्पु

3 मण्+कटितु=मण्कटितु इतर-समास है— परुषगण, (अनुनासिक)

मण्+जान्इतु=मण्जान्इतु
 मण्+याप्पु=मण्याप्पु
 पौन्+कटितु=पौन्कटितु
 पौन्+जान्इतु=पौन्जान्इतु
 पौन्+याप्पु=पौन्याप्पु

कोमल गण और मद्धिम गण
 —तौनों के व्यंजनों के साथ
 स्वाभाविक मेल या संयोग हो
 जाता है।

13 ल, ळकारान्त शब्दों की विधि :

1 कल्+कुइ=कङ्कुइ
 मुळ्+कुइ=मुट्कुइ

विभक्ति-समास है— ल इ में और
 ळ ट में बदल गया।

2 कल्+कुइतु=कल् कुइतु या कङ्कुरितु
 मुळ्+कुइतु=मुट् कुइतु—या मुट्कुइतु

इतर समास है
 विकल्प है।

3 कल्+अँरिन्तु=कन् अँरिन्तु
 मुळ्+अँरिन्तु=मुण् अँरिन्तु
 कल्+अँरि=कन् अँरि
 मुळ्+अँरि=मुण् अँरि

इतर समास है— कोमल वर्ण
 के सामने विकार पाता है।
 विभक्ति-समास है, यहाँ भी ल ण
 में और ळ ण में बदल जाता है।

4 कल्+यातु=कल् यातु
 मुळ्+यातु=मुळ् यातु
 कल्+याप्पु=कल् याप्पु
 मुळ्+याप्पु=मुळ् याप्पु

मद्धिम गण के अक्षर के सामने
 दोनों तरह के समासों में अपरिवर्तन
 के स्वाभाविक संयोग होता है।

14 न, ल, ण के आगे त, न के सम्बन्ध में :

1 पौन्+तीतु=पौन्तीतु
 कल्+तीतु=कङ्तीतु

न, ल के आगे का त इ में
 बदल जाता है।

2 पौन्+नन्ऱु=पौन्नन्ऱु
 कल्+नन्ऱु=कन्नन्ऱु

न ण में बदल जाता है।

3 मण्+तीतु=मण्तीतु
 मुळ्+तीतु=मुट्तीतु

त ट में बदलता है।

4 मण्+नन्ऱु=मण्णन्ऱु
 मुळ्+नन्ऱु=मुण्णन्ऱु

न ण में बदलता है।

15 य, र और ळकारान्त शब्दों के सम्बन्ध में :

1 वेय्+कटितु=वेय्कटितु
 वेर्+कटितु=वेर्कटितु
 वौळ्+कटितु=वौळ् कटितु

इतर समास है—
 अपरिवर्तित मेल है।

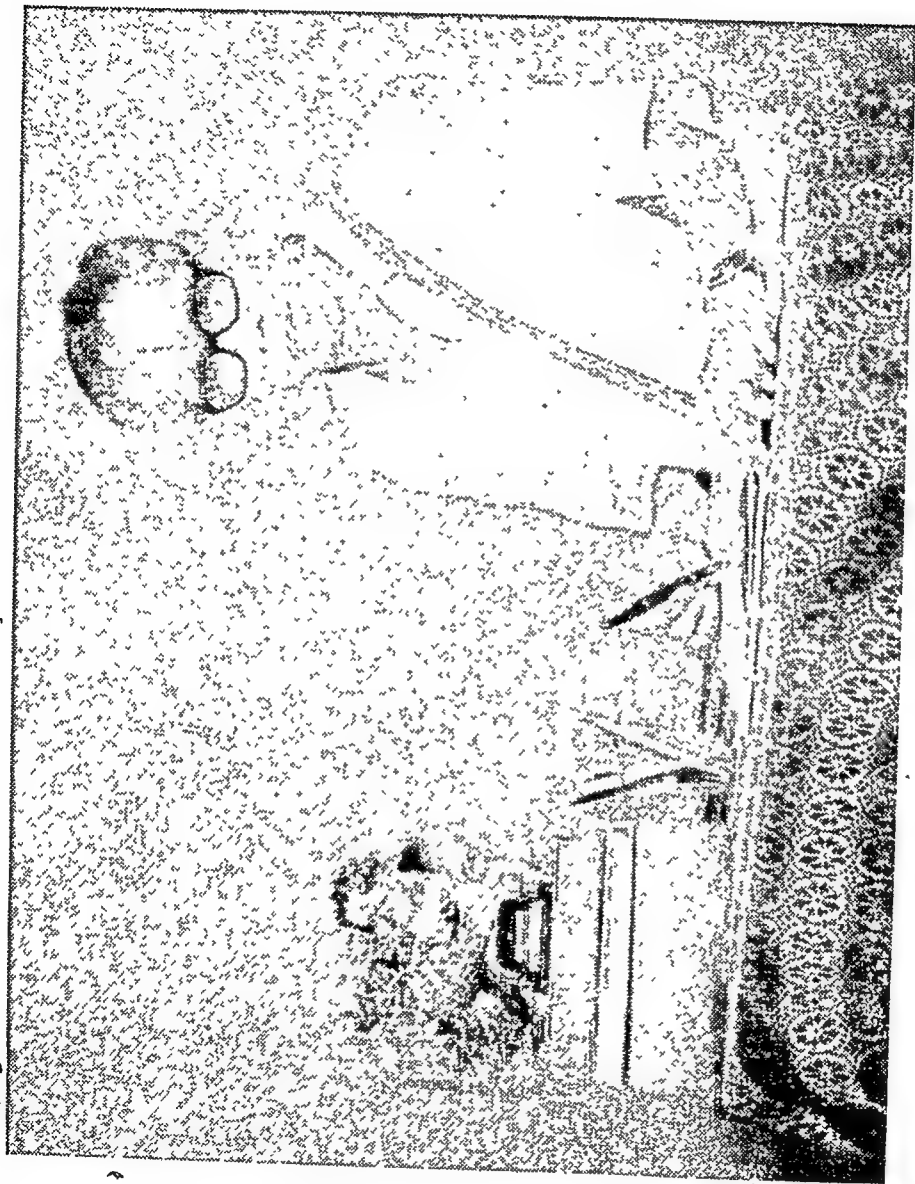
- 2 मैय् + कीर्त्ति = मैय्क्कीर्त्ति इतर समास है।
 कार् + परुवम् = कार्प्परुवम् क, प आदि का द्वित्व होता है।
 पूळ् + पडवै = पूळ्प्पडवै
- 3 नाय् + काल् = नाय्क्काल् विभक्ति-समास है। परुष अक्षर
 तेर् + काल् = तेर्क्काल् का द्वित्व होता है।
 पूळ् + काल् = पूळ्क्काल्
- 4 वेय् + कुळल् = वेय्ङ्गुळल्, वेय्क्कुळल् विभक्ति-समास है।
 आर् + कोटु = आर्ङ्गोडु, आर्क्कोटु विकल्प है।

अब तक सन्धि के विविध रूपों का परिचय दिया गया है। उद्देश्य यही है कि जहाँ समस्त शब्द दिये गये हैं, वहाँ मूल शब्दों की परख हो जाय। पर इसका कितना उपयोग हुआ या होता है, वह तब तक हमें मालूम नहीं हो सकता जब तक कोई पाठक कम्ब रामायण के इस अनुवाद के द्वारा कम्बन को ही नहीं 'तमिळु' भाषा को समझने का प्रयास न करे और अपना अनुभव न बतलाए।

आशा है कि शीघ्र ही ऐसे एक नहीं, अनेक जिज्ञासु पाठक हिन्दी-ज्ञाता तमिळुप्रेमी निकल आएँगे।

तब ये देखेंगे कि और भी सहायता की आवश्यकता पड़ती है। प्रयत्न करने पर वह भी उन्हें मिल जाएगा।

ति० शेषाद्रि



सानुवाद लिप्यन्तरणकार—
आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमर भारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिळ्' सुपावन धारा ।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

अचलाद्रि चलायमान

शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये । अचलायतन में ही सीमित न रहकर हिमञ्चल अब अञ्चल-अञ्चल की सैर करने लगे । तमिळ् रूपाम्बरा ने नागरी पटम्बर भी धारण कर लिया । तमिळ् का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिळ्-जन तक सीमित नहीं है । लेखन और उच्चारण, दोनों पद्धतियों पर उसका नागरी लिप्यन्तरण और राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरलानुवाद, इसका अधिकांश प्रकाशित होकर अब अखिल राष्ट्र की वस्तु बन चुकी है ।



पृष्ठभूमि

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया । और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी लगभग ५००० पृष्ठ का यह बृहत् संस्करण सम्पूर्णप्राय है । वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का

बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था । वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई । सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी बृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी और युद्धकाण्ड तीव्रगति में यन्त्रस्थ है । इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम पुनः और बारम्बार नमन करते हैं । तमिळ् की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं । फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और

ट्रस्ट के विद्वानों एवं शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति — इस बल पर हम इस त्वरा गति से कार्य की सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं । इसलिए यह चरितार्थ है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये ।

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई० से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिळु लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान — 'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है । तमिळु ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है ।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन; तमिळुनाडु के चीफ् जस्टिस श्री एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस श्री महाराजन; स्व० श्री० के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन; और सर्वोपरि, आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद — यह सब बालकाण्ड में अक्षरशः मुद्रित हैं ।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है । आवाजए खल्क, नक्कारए खुदा ! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई । उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही है । विशेष रूप से तमिळुनाडु में ही, ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ । एक स्थल पर, उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिळुनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना — ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन !

अयोध्या-अरण्यकाण्ड

श्री प्रभुदास बी० पटवारी, तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत् कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं तत् भारतं नाम यद्वेयं भारती प्रजा ॥" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से अद्यावधि निरन्तर राष्ट्रसेवी तमिळनाडु के जाने-माने महापुरुष श्री० ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हजार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळनाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मन्दिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अरण्य-अयोध्याकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

नवप्रकाशित इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने-का-के-की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर शौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी हैं। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी-जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिळ-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको और अधिक कठिनाई प्रतीत होगी।

इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें सहिष्णुता और उदारता से काम लेना चाहिए ।

उसी प्रकार तमिळभाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है । तमिळ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं । यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप तमिळभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है । इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिळ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया । अन्यथा आज के युग में वह राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती ।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है । अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळभाषा और तमिळकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी । प्रथम दो जिल्दों के तारतम्य में, प्रस्तुत खण्ड में भी अनुवादक की चल रही अवतरणिका में, सन्धि-समास के फलस्वरूप उच्चारण-वैभिन्न्य का विश्लेषण दिया गया है ।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है । कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ । "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किंवदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि ।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं । महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है । रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये । देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिळ' में रामचरित की रचना ! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का । शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है । हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है । नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्घोष करनेवाले जस्टिस शारदा-चरण मित्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं । 'वदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत बंकिम

ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंख-नाद करनेवाले तिलक, 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। तब से तमिळ का यह जीवन्त अद्भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरी लिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्मय की छटा बिखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं, आश्चर्यविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक है। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या? प्रत्येक खण्ड के प्रकाशन के समय वे हमारे लिए स्मरणीय है।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०१६ पृष्ठों का तृतीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष दो खण्ड लगभग, २५०० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। युद्धकाण्ड पूर्वार्ध और युद्धकाण्ड उत्तरार्ध। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन—सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।

पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

(तमिळ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिळ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ळ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ळ' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ळ' के स्थान पर 'ळ' ही को ग्रहण किया गया।

तमिळ वर्णक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क,

च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिळ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप 'ी' ; 'े' हैं।

तमिळ - देवनागरी वर्णमाला			
अ क	आ का	इ कि	ई की
उ कु	ऊ कु	ए के	ऐ के
ऐ कै	ओ को	ओ को	आ कौ
ॐ अक्			
क क	ङ ङ	च च	ज ज
ट ट	ण ण	त त	न न
प प	म म	य य	र र
ल ल	व व	ळ ळ	ळ ळ
र र	न न	ष ष	स स
ह ह	ज ज	क्ष क्ष	

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

तमिळ उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिळ के व्यञ्जनो में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिळ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिळ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिळ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२ हैं।	
लब्धलिपि ह्रस्व:—अ इ उ अँ (ए का ह्रस्व) औँ (ओ का ह्रस्व)—1 मात्रा	
दीर्घ:— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ — 2 मात्राएँ	
“आय्दम” (उपस्वर)—:— ½ मात्रा	
अलब्धलिपि ह्रस्व—ऐ और औ — 1 मात्रा	
ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ — ½ मात्रा	
ह्रस्व—‘आय्दम’ — ½ मात्रा	

नोट:— आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण ‘अह्क्’ है। इस लिप्यन्तरण में दोनों सकेतो (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ ले और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यन्तरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिळ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं सध्वि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै... आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर:) मूल १८ हैं	
लब्धलिपि वल्लळुत्तु (पुरुष वर्ग)	क च ट त प उ
मैल्लळुत्तु — कोमल या अनुनासिक वर्ग }	ङ ज ण न म न
इडैयळुत्तु (मद्भि) वर्ग	य र ल व ळ ऴ

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब । ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है । वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है । स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है । बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं । लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं ।

नोट—तमिळ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं । हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है । हलन्त व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता ।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दाारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ङ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डू, पाक्कु, उङ्गट्कु, कङ्क ।

दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम् ।

ङ् के बाद 'ग' बन जाता है । उदा : चङ्कम् —शङ्गम् ।

च— द्वित्व में और ट्, ट् के बाद च ही रहता है । उदाहरण : अच्चु, पौच्चट्टै, वैट्चि । अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है । जैसे पा शम्, शदम् आदि । (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै ।

ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्—मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है ।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता । द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम् ।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शतूतम्, शक्ति । अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल् ।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ङ् के बाद यह 'प' ही है । उदा : पडम्, कप्पल्, पेट्पु, पौप्पु । अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है ।

विशेष: न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकलता है । भेद नगण्य है । बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है ।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है ।

न— यह भी दन्त्य है । पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है । इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है । पर शब्द के आरम्भ में न नहीं आता । न शब्द के

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिळ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे— अरङ्गन्, इरामन् उरुत्तिरन्।

रू— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ टू के समान हो जाता है। दोनों र और रू मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण : अरम्— रेती; अरुम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ळ— यह र और न के समान तमिळ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे— निन्पर्ख् को निन्बर्ख् पढ़ना चाहिए, पर निन्पर्ख् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर जोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिळ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिळ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छन्द-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

विषय-सूची

किष्किधाकाण्ड

प्रशस्तियाँ, अनुवादक की अवतरणिका, प्रकाशकीय 1-40

ईश्वर-वन्दना 41

1 पम्पा पटल 41-60

पम्पा का वर्णन; श्रीराम का विलाप; श्रीराम की दीन स्थिति; श्रीराम का पम्पा में स्नान; रात का आगमन और श्रीराम की स्थिति; रात का वर्णन; सूर्योदय और दोनों का प्रस्थान ।

2 हनुमान पटल 60-76

श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव का डरकर छिप जाना; हनुमान का आश्वासन देना; ब्रह्मचारी-वेश में हनुमान का आजमाना; श्रीराम और लक्ष्मण पर हनुमान का निहेंतुक प्रेम; हनुमान का श्रीराम और लक्ष्मण से अपना वृत्तान्त कहना; श्रीराम का हनुमान की प्रशंसा में अपने भाई से कहना; परस्पर सम्मानवचन; हनुमान के पूछने पर श्रीलक्ष्मण का अपना वृत्तान्त कहना; हनुमान का दण्डवत् करना और पूछने पर अपना असली रूप दिखाना; हनुमान का विराट् रूप; श्रीराम का विस्मय-कथन ।

3 मैत्री पटल 76-109

हनुमान का सुग्रीव के पास आकर समाचार देना; सुग्रीव-श्रीराम-मिलन; सुग्रीव का शरण जाना और श्रीराम का अभयदान; श्रीराम का आतिथ्य; हनुमान का वाली-वृत्तान्त कहना; मायावी-युद्ध; बिल में प्रवेश; सुग्रीव का राजा बनना; वाली का उससे क्रोध; सुग्रीव की बुरी स्थिति; श्रीराम का वाली पर खीझ और वादा; सुग्रीव का श्रीराम की वाली-वध-सामर्थ्य पर सन्देह; हनुमान का सुज्ञाव ।

4 सालवृक्ष पटल 110-119

सुग्रीव की सालवृक्ष-भेदन की प्रार्थना; सालवृक्ष-वर्णन; श्रीराम के धनु की टंकार; श्रीराम का अस्त्र चलाना और उसका कार्य; सुग्रीव का श्रीराम की स्तुति करना और वानरों का आनन्द ।

5 दुन्दुभी पटल 119-125

श्रीराम का दुन्दुभी का अस्थिपंजर को देखना; सुग्रीव का दुन्दुभी का वृत्तान्त कहना; दुन्दुभी-वाली-संग्राम; श्रीराम की आज्ञा से श्रीलक्ष्मण का अस्थिपंजर को उछाल देना ।

6 आभरण-दर्शन पटल 125-138

सुग्रीव का आभरणों का समाचार देना; श्रीराम का आभरणों को देखना और दुःखी होना; श्रीराम का होश खोना और सुग्रीव का धैर्य बँधाना; श्रीराम का होश में आना और सुग्रीव से अपना दुःख कहना; सुग्रीव का पुनः धीरज दिलाना; हनुमान का वाली-वध की आवश्यकता बताना; श्रीराम की सम्मति और सबका प्रस्थान ।

7 वालि-वध पटल 138-213

श्रीराम आदि के मार्ग व मार्गगमन का वर्णन; सुग्रीव का ललकारना; वाली का क्रुद्ध होना; वाली-तारा संवाद; वाली का लड़ने आना; श्रीराम और लक्ष्मण का वाली के शान और सुग्रीव के भ्रातृविरोध को लेकर आपस में बात करना; सुग्रीव-वाली-युद्ध; श्रीराघव का वाली पर अस्त्र चलाना; वाली का विस्मय और खीझ; वाली का अस्त्र को वक्ष से निकालना और श्रीराम का नाम देखना; वाली का अपना श्रीराम पर विश्वास झूठा हो जाने से शर्म, दुःख और क्रोध का अनुभव करना; श्रीराम का वाली के समक्ष आना; वाली का श्रीराम की निन्दा करना; श्रीराम का वाली के प्रश्नों का उत्तर देना; वाली का समाधान कहना; श्रीराम का वाली की मान्यताओं का खण्डन करना; वाली का और प्रश्न करना; लक्ष्मण का उत्तर देना; वाली का ज्ञान पाना; वाली का श्रीराम की स्तुति करना और सुग्रीव को उनके अधीन सौंप देना; वाली का हनुमान की प्रशंसा करना; अंगद का वाली को देखकर विलाप करना; वाली का आश्वासन; अंगद को श्रीराम के हाथ में सौंपना; वाली की परमपदयात्रा; तारा का आना और रोना; हनुमान का तारा को महल में पहुँचाना और वाली का दाहकर्म आदि करवाना ।

8 शासन-शास्त्र पटल 213-227

श्रीराम का लक्ष्मण को सुग्रीवाभिषेक की आज्ञा देना; हनुमान का सामग्री इकट्ठी कर लाना; अभिषेक; श्रीराम का सुग्रीव को शासन-शास्त्रोपदेश देना; सुग्रीव का श्रीराम को नगर में वास करने का निमन्त्रण देना और श्रीराम का अस्वीकार करना; श्रीराम का तपस्यानिमित्त प्रश्रवणपर्वत पर जाने का संकल्प; सुग्रीव का नगर में जाना; अंगद का श्रीराम की सलाह लेकर नगर जाना; हनुमान का श्रीराम की सेवा में रहने की अनुमति माँगना; श्रीराम का न मानना; सुग्रीव का शासन ।

9 वर्षाकाल पटल 227-278

वर्षा का वर्णन; वर्षाकाल का प्रकृतिवर्णन; श्रीराम का विरह-दुःख; श्रीलक्ष्मण का श्रीराम को धीरज बँधाना; श्रीराम का किंचित् धैर्यावलम्बन; फिर से पिछली वर्षा का (शरद का) वर्णन; श्रीराम का विरह-विलाप; श्रीलक्ष्मण का उत्तर; शरद का अन्त और प्रकृति-वर्णन ।

10 किष्किंधा पटल 278-332

श्रीराम का कोप करके लक्ष्मण को किष्किंधा भेजना; श्रीलक्ष्मण का अपना अलग मार्ग पकड़कर जाना; उनकी गति का वर्णन; उनका किष्किंधा पहुँचना; अंगद का, वानरों द्वारा लक्ष्मण का आगमन जानकर सुग्रीव के पास जाना; सुग्रीव की स्थिति का वर्णन; अंगद का सुग्रीव को जगाना और सुग्रीव का बेसुध रहना; अंगद का हनुमान के पास जाना; दोनों का तारा के पास जाना; तारा का उनको आड़े हाथों लेना; वानरों का कपाट बन्द करना; श्रीलक्ष्मण का कोप और कपाट तोड़कर अन्दर आना; तारा का स्त्रियों-सहित लक्ष्मण के रास्ते में आना; लक्ष्मण का दुःख; तारा-लक्ष्मण-संवाद; लक्ष्मण का शान्त होना और हनुमान का आना; लक्ष्मण का प्रश्न करना और हनुमान का समाधान; लक्ष्मण का कोप छोड़कर सुग्रीव का दोष बताना; हनुमान का उन्हें सुग्रीव के पास ले जाना; अंगद का सुग्रीव से लक्ष्मण के क्रोध के साथ आगमन का समाचार देना; सुग्रीव का जागकर उसी पर दोष लगाना;

अंगद का उत्तर सुनकर सुग्रीव का पछताना; किष्किंधा में श्रीलक्ष्मण का शानदार स्वागत; सुग्रीव का लक्ष्मण का स्वागत करना; दोनों का महल के अन्दर जाना; लक्ष्मण का सिंहासन पर बैठने से इनकार करना; सुग्रीव का श्रीराम के पास आना; श्रीराम का क्षेमप्रश्न; सुग्रीव का अपना अपराध मानकर पछताना; उसका हनुमान के दूतों को साथ ले आने की बात कहना; सुग्रीव और अंगद को बिदा देना।

11 सेना-संदर्शन पटल 332-347

वानर-यूथपों का आगमन; सेना का गौरव और बल; सेनापतियों का सुग्रीव को प्रणाम करना; श्रीराम से सेना-संदर्शन की प्रार्थना करना; सेना का वर्णन; श्रीराम का लक्ष्मण से सेना की बड़ाई का वर्णन करना।

12 अन्वेषण-प्रेषण पटल 347-379

श्रीराम का सुग्रीव से आगे का कार्य करने की प्रेरणा देना; सुग्रीव का हनुमान आदि वानर वीरों की दक्षिण की दिशा में जाने की आज्ञा देना; मार्ग में अन्वेषण योग्य स्थानों का वर्णन; श्रीराम का हनुमान से सीतादेवी का नख-शिख-वर्णन; अभिज्ञान-कथन; श्रीराम का मुंदरी को अभिज्ञान के रूप में देना।

13 बिल-प्रवेश-निर्गमन पटल 379-408

वानरवीरों का मार्ग-गमन; विंध्यपर्वत पर आना; नर्मदा नदी के तट पर अन्वेषण; हेमकूटपर्वत-प्रदेश पर खोजना; मरुप्रदेश पर आना; बिल-मार्ग में जाना; अँधेरी गुहा में वानरवीरों का संकट और वानरों का हनुमान से प्रार्थना करना; हनुमान का उन्हें ले जाना और स्वयंप्रभा के नगर में पहुँचना; स्वयंप्रभा का वर्णन; स्वयंप्रभा का उनसे प्रश्न करना; हनुमान का उत्तर देना; स्वयंप्रभा का अपना चरित्र सुनाना; हनुमान का अपने विराट् रूप में बिल को तोड़कर ऊपर आना; स्वयंप्रभा का देवलोक जाना।

14 मार्ग-गमन पटल 408-427

वानरवीरों का एक सर के तट पर विश्राम करना; एक असुर का आकर अंगद से टकराना; असुर का अंगद द्वारा मारा जाना; जाम्बवान का उस असुर का वृत्तान्त कहना; वानर वीरों का आगे जाना; पैतृ नदी, विदर्भ देश, दण्डक वन जाना; मुण्डकघाट पर आना; गोदावरी नदी पर आना; तौण्डे देश में आना; उस देश का वर्णन; कावेरी नदी के तमिळु देश में आना।

15 सम्पाती पटल 427-449

वानरवीरों का दक्षिणी सागर को देखना; हेमकूट पर जो अलग गये उन वानरों का आकर इनसे मिलना; वानरों का अपनी असफलता पर दुःख प्रगट करना; अंगद का आत्महत्या पर उतारु होना; जाम्बवान का रोकना; हनुमान के संवाद में जटायु का नाम का आना; सम्पाती का वह सुनकर इनके पास आना; वानरों का डरकर भागना; हनुमान का सम्पाती से प्रश्न करना; सम्पाती का अपना और अपने भाई जटायु का वृत्तान्त कहना; हनुमान का जटायु-रावण का युद्ध के सम्बन्ध में कहना; सम्पाती का वानरों से श्रीराम का नामजप करने की प्रार्थना करना; सम्पाती के

पंखों का श्रीराम-नाम-महिमा के कारण निकल आना; वानरों का सीता के अन्वेषण का समाचार कहना; सम्पाती का सीता के स्थान का निर्देश और चला जाना ।

16 महेन्द्र पटल 449-461

वानरों का आगे के कर्तव्य के सम्बन्ध में सलाह-मशविरा करना; समुद्र-तरण में सवका अपनी-अपनी बलहीनता का दयान करना; जाम्बवान का हनुमान को प्रोत्साहित करना; हनुमान का उत्साह के साथ जाने का आश्वासन देना; हनुमान का विराट् रूप में महेन्द्र पर्वत पर खड़ा हो जाना ।

सुन्दरकाण्ड

1 समुद्र-संतरण पटल 463-506

ईश्वर-वन्दना; हनुमान का स्वर्ग देखना; हनुमान के पैरों से दबने पर महेन्द्र पर्वत पर हुई वारें; समुद्र-तरण आरम्भ; उसकी गति के कारण हुई वारें; हनुमान का वर्णन; मैनाक पर्वत का वर्णन; मैनाक की दावत और हनुमान का उत्तर; सुरसा का दखल व हनुमान का बचकर निकलना; हनुमान और अंगारतारा की टक्कर; हनुमान का प्रवालपर्वत पर कूदना; हनुमान का लंका देखकर विस्मय करना ।

2 नगरान्वेषण पटल 506-609

लंका नगर का वर्णन; चन्द्रोदय का वर्णन; हनुमान का प्राचीर और द्वार को देख विस्मय करना; लंकादेवी का रूप; हनुमान और लंकादेवी की टक्कर; हारकर लंकादेवी का अपना वृत्तान्त बताना; लंका के प्रकाश का वर्णन; लंका की वीथियों में हनुमान के जाने और दृश्यों का वर्णन; हनुमान का कुम्भकर्ण को देखना; विभीषण को देखना; इन्द्रजित् को देखना; अन्य स्थानों में अन्वेषण; हनुमान का मध्य नगर की खाई का पार करना; उस नगरभाग की सुप्त-स्थिति का वर्णन; हनुमान का अन्तर्नगर पहुँचकर खोज लगाना; हनुमान का मन्दोदरी को देखना और देवी सीता के भ्रम में पड़ना और भ्रम दूर हो जाना; रावण के महल में; सुप्त रावण का वर्णन; रावण को मारने का निश्चय करना; शान्त होकर अलग जाना; हनुमान का असफलता पर दुःख; हनुमान का अशोक वन को देखना ।

3 सीता-दर्शन पटल 609-677

हनुमान का अशोक वन में प्रकाश; सीताजी की दुःखी स्थिति; प्रहरी राक्षसियों को सो जाना और देवी-त्रिजटा-संवाद; त्रिजटा का अपने देखे स्वप्न का विवरण देना; राक्षसियों का जाग उठना और देवी को त्रास देना; सीताजी का दुःख और हनुमान का आगमन और देवी के दर्शन; देवी की पवित्रता देखकर हनुमान के विस्मय-वचन; अशोक वन में रावण का ठाट-वाट और परिवार के साथ आगमन; सीता का डरना और हनुमान का उन दोनों को देखना; रावण की सीता से प्रेमयाचना; सीतादेवी का कटु उत्तर और रावण का क्रोध; हनुमान का गुस्सा; रावण का सीता का उत्तर देना और धमकी देकर चला जाना; राक्षसियों का सीता को दिक् करना और त्रिजटा का निवारण ।

4 रूप-दर्शन पटल 677-727

हनुमान का राक्षसियों को सुला देना; सीता के दुःख के वचन और प्राणत्याग

का निश्चय और माधवी झाड़ के पास जाना; हनुमान का प्रगट होकर अपने को रामदूत बताना; सीता का पहले संशय करके बाद की पूछना; हनुमान का अपना वृत्तान्त कहना; सीतादेवी के कहने पर श्रीराम के रूप का वर्णन; हनुमान द्वारा हनुमान के प्रज्ञान-वचनों का उल्लेख और अंगुलीयक प्रदानम्; मुँदरी पाकर सीतादेवी के वचन और उनकी चेष्टाएँ; सीताजी का हनुमान को बधाई देना, संस्तुति करना और आशीर्वाद देना; हनुमान का श्रीराम का वृत्तान्त वर्णन करना; श्रीराम का दुःख सुनकर देवी की सहानुभूति; सीता का हनुमान से सागर-तरण के सम्बन्ध में सफ़ाई के प्रश्न और हनुमान के उत्तर; हनुमान का विश्वरूप दिखाना; सीताजी को उसके छिपाने की प्रार्थना; हनुमान का अपना सामान्य रूप अपनाना; सीताजी का बधाई और आशीर्वाद के वचन; हनुमान का वानर-सेना की बड़ाई का वर्णन करना; हनुमान का बिदाई से पहले एक सुझाव पेश करना ।

5 चूडामणि पटल 728-758

हनुमान का देवी को खुद ले जाने का प्रस्ताव; सीता का अस्वीकार करना; हनुमान का सीताजी से सन्देश माँगना; सीताजी का श्रीराम को सन्देश जिसमें संशय, दुःख आदि मिश्रित थे; हनुमान का सीता को ढाढ़स बँधाना; सीताजी का सँभलना; सीताजी का चूडामणि देना; हनुमान का उसे आदर के साथ ग्रहण करना ।

6 (अशोक) वन-विध्वंस पटल 758-781

हनुमान का अपने आप विचार करना; वन को नष्ट करना; नष्ट करने के प्रकारों का वर्णन; चन्द्र का छिप जाना और हनुमान के कार्य से सारे लोक में प्रकाश का फैलना; पशु-पक्षी का हाल; सूर्योदय पर राक्षसियों का हनुमान के सम्बन्ध में पूछना और सीता का टाल देना; हनुमान द्वारा चैत्य का नाश; ऋतुदेवों की रावण से शिकायत करना ।

7 किंकर-वध पटल 781-810

रावण का ताना देना और ऋतुदेवों का कथन; हनुमान का नर्दन; रावण की आज्ञा और किंकरों का युद्ध के लिए प्रस्थान; किंकरों का घेर आना और हनुमान की स्थिति; किंकर-हनुमान-युद्ध; हनुमान की जीत और देवों का आनन्द; पहरेदारों का रावण को खबर देना ।

8 जम्बुमालि-वध पटल 810-833

रावण का गुस्सा और जम्बुमाली को आज्ञा सुनाना; जम्बुमाली का अपनी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान; सेना देखकर हनुमान का उत्साह और तत्प्रेरित चेष्टाएँ; जम्बुमाली-हनुमान-युद्ध; जम्बुमाली का हनन; रावण का समाचार पाना और उसकी स्थिति का वर्णन ।

9 पंच सेनापति-वध पटल 833-858

पंचसेनापतियों की प्रार्थना; सेनाओं का प्रस्थान; हनुमान सेनाओं को देखता है; हनुमान का विराट् रूप लेकर राक्षसों से लड़ना; सेना का नाश; पंच सेनापति-युद्ध; उनका नाश और रावण का समाचार पाना ।

10 अक्षकुमार-वध पटल 859-883

अक्षकुमार का युद्ध में जाने की अनुमति माँगना; उसकी सेना का कूच;

हनुमान का अक्षकुमार को देखकर अनुमान करना; अक्षकुमार का हनुमान को देखकर हल्का समझना और सारथी की चेतावनी; अक्षकुमार का संकल्प; सेना के साथ युद्ध; अक्षकुमार का युद्ध और वध; पश्चात् युद्धभूमि की घटनाएँ; अक्षकुमार की मृत्यु का समाचार महल में जाता है।

11 पाश-बन्धन पटल 883-910

इन्द्रजित् का रोष; उसकी सेना की विपुलता का वर्णन; उसका रावण से निवेदन; उसकी सेना का कूच; उसका युद्धभूमि देखकर दुःखी होना; हनुमान-का इन्द्रजित् को देखकर विस्मय करना; सेनाओं के साथ हनुमान का युद्ध; हनुमान-इन्द्रजित्-युद्ध; इन्द्रजित् द्वारा ब्रह्मास्त्र-प्रयोग; मारुति की मूर्च्छा और राक्षसों का मोद।

12 बन्धन-मुक्ति पटल 910-968

हनुमान का बंध जाना और राक्षसों का आनन्द-कोलाहल; हनुमान को देखकर कुछ सहानुभूति करते हैं; हनुमान के विचार; हनुमान के बन्धन का समाचार रावण को मिलता है; हनुमान की बात सुनकर देवी सीता का व्यग्र होना; हनुमान का रावण के महल में लाया जाना; दरवार में रावण का वर्णन; रावण को देखकर हनुमान का रोष से भर जाना; हनुमान का रुककर विचार करना; इन्द्रजित् का रावण को हनुमान का परिचय दिलाना; रावण का प्रश्न करना; हनुमान का उत्तर देना; रावण का फिर से प्रश्न करना; हनुमान का उत्तर देना; फिर से रावण के प्रश्न और हनुमान के उत्तर; रावण का हनुमान की पूँछ पर आग लगाने की आज्ञा; ब्रह्मास्त्र का प्रभाव छूट जाता है और हनुमान रस्सियों से बाँधा जाता है; हनुमान के आन्तरिक विचार; पूँछ पर आग का लगाया जाना; समाचार सुनकर सीता का दुःख करना; उनकी अग्निदेव से प्रार्थना और उसके प्रभाव; हनुमान की स्थिति और गति।

13 लंका-दहन पटल 968-991

आग में मकानों की स्थिति का वर्णन; उपवनों का जलना; आकाशलोको का जलना; घोड़ों का जलना; राक्षस-राक्षसियों की दुर्गति; राक्षसों का समुद्र में गिरना; हथियारों का पिघलना; हाथियों का नाश; पक्षियों का नाश; रावण के महल में आग का लग जाना और रावण आदि का पलायन; रावण का दहन का कारण पूछना और जानकर क्रोध करना; राक्षसों का हनुमान को खोज देखना; हनुमान का राक्षसों को मारकर बाहर चला जाना; सीताजी के स्थान पर आँच का न आना; हनुमान का सीताजी से मिलकर विदा लेना और प्रस्थान।

14 श्रीचरण-वन्दना पटल 991-1015

हनुमान का लंका से लौटना; हनुमान को लौटा देखकर अंगदादि वानरों का आनन्द अनुभव करना; हनुमान का देवी का वृत्तान्त कहना; हनुमान को पुरस्सर करके सबका प्रस्थान; श्रीराम की दुःखमग्नस्थिति का वर्णन; हनुमान का आगमन; उसके कृत्य से श्रीराम का शुभसमाचार अनुमान कर लेना; हनुमान का सीता-वृत्तान्त-कथन; हनुमान का अपने कार्यों का विवरण देना; हनुमान का चूड़ामणि देना और श्रीराम पर उसका प्रभाव; सुग्रीव का धीरज देना और श्रीरामका शान्त होना; वानर-सेना का कूच।

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

किष्किन्दा काण्डम्

कडवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर वन्दना)

❀ मून्ऱु वेंनक्कुण मुम्मै यामुदल्, तोन्ऱु वेंवैयुमम् मुदलैच् चोल्नुदल्
केन्ऱु वमैन्दवु मिडैयि निन्ऱुवुम्, शान्ऱु वुणर्वित्तुक् कुवन्द दायिनात् 1

मुतल्-परमात्मा; मुम्मै कुणम् आम्-तीन गुणों के; मून्ऱु उरु अँत-तीन देव हैं, जैसे; तोन्ऱु उरु अँवैयुम्-व्यक्त सभी रूप; अ मुतलै चोल्नुदल्-उस परब्रह्म को कहने के लिए; एन्ऱु उरु अमैन्तवुम्-योग्य रूप जिनके हैं, वे; इटैयिल् निन्ऱुवुम्-मध्य में स्थित जो हैं, वे; चान्ऱु उरु-उन सबके साक्ष्य (श्रीराम) उणर्वित्तुक्कु-हमारी अनुभूति के लिए; उवन्तु आयितान्-परम भोग्य वन प्रकट हुए । १

आदि परब्रह्म हमारे ज्ञान के विषय बनकर श्रीराम के रूप में अवतरित हुए । वे तीन गुणों के त्रिदेव, सृष्टि के सारे जीव, पदार्थ आदि, परब्रह्म के द्योतक अर्चावितार और उनके मध्य पाये जानेवाले जीवन्मुक्त लोग इन सभी के साक्षी रूप रहनेवाले हैं । तात्पर्य यह कि ये सब परब्रह्म के ही रूप हैं । वैष्णव मत के अनुसार ये सब परब्रह्म श्रीमन्नारायण के शरीर हैं और वे सर्वशरीरी हैं । १

1. पम्बैप् पडलम् (पम्पा पटल)

तेन्बडि मलरदु शैङ्गण् वेंङ्गैमा, तान्बडि हिन्ऱुदु तैळिवु शान्ऱुदु
मीन्बडि मेहमुम् बडिन्दु वीङ्गुनीर्, वान्बडिन् दुलहिडैक् किडन्द माण्बदु 2

तेन् पटि मलरतु-(वह सर ऐसा-)-भ्रमरावत पुष्पों का; चैम् कण्-लाल आँखों के और; वेंम्-डरावने; कै मा-करि; पटिकिन्ऱु-गोते लगाते हैं, जिसमें; तैळिवु चान्ऱु-स्वच्छता के साथ है; मीन् पटि-नक्षत्रसहित; मेकमुम् पटिन्त-मेघों से युक्त; वीङ्गु नीर् वान्-अधिक जल के साथ आकाश ही; उलकु इटै-पृथ्वी पर; पटिन्तु किटन्त-पड़ा रहता हो; माण्पु-ऐसा विलक्षण है । २

पम्पा सर का वर्णन किया जाता है। सर प्राकृतिक बड़ा तालाब है। वह सर ऐसे पुष्पों से भरा है, जिन पर (शहद या) भ्रमरकुल रहता है; जिसमें लाल आँखों वाले डरावने करि आकर नहाते हैं। वह ऐसा दृश्यमान है, मानो नक्षत्रों और मेघों से अलंकृत और विपुल जलराशि से भरा आकाश ही भूमि पर आकर पड़ा हुआ हो। २

ईर्न्दनुण्	पळिङ्गैन्तु	तैळिन्द	वीर्म्बुनल्
पेर्न्दौळिर्	नवमणि	पडर्न्द	पित्तिहैच्
चेर्न्दुळिच्	चेर्न्दुळि	निऱुत्तैच्	चेर्दलान्
ओर्न्दुणर्	विल्लव	रळ्ळ	मौप्पदु 3

ईर्न्त-तरागे हुए; नुण् पळिङ्कु-सूक्ष्म रफटिक; अँन्-जैसे; तैळिन्त-स्वच्छ रहनेवाला; ईर्स् पुत्तल्-(उसका) शीतल जल; पेर्न्दु-(वायु के कारण) चलकर; ओळिर्-उज्ज्वल; नव मणि पटर्न्त-नवरत्न जिनमें जड़े रहते हैं; पित्तिकै-उन किनारों की भित्तियों पर; चेर्न्दुळि-चेर्न्दुळि-जब-जब लगता है, तब; निऱुत्तै चेर्त्तलाल्-उन रंगों से प्रभावित होता है, इसलिए; ओर्न्दु-अनुमान (तर्क आदि) करके; उणर्वु इल्लवर्-अनुभवज्ञान जिन्होंने प्राप्त नहीं किया है; उळ्ळम्-उनके मन का; औप्पतु-साग्य रखनेवाला है। ३

काट-छाँटकर सुन्दर बनाया गया स्फटिक-सम है उसका जल। वह शीतल जल लहरों के रूप में चलकर नवविध रत्नों से युक्त और जाज्वल्यमान प्राकृतिक तट-भित्तियों से टकराता है। जब-जब वह ऐसा टकराता है, तब वह उन नवरत्नों का प्रतिबिम्ब पाकर रंग-विरंगा लगता है। तब वह उनके मन का सादृश्य करता है, जो अपनी तरफ से तर्क, अनुमान आदि करके तत्त्व जान नहीं पाते और दृढ़ धारणा न रहने से सन्देह के कारण जिनके मन का रंग बदलता रहता है। ३

कुवान्मणर्	उडन्दौळ्म्	पवळक्	कौम्बिवर्
कवानर	शन्नमुम्	पैडैयुङ्	गाण्डलिल्
तवानैडु	वात्तहन्	दयङ्गु	मौनौडुम्
उवामदि	युलप्पिल	वुदित्त	वौत्तदु 4

कुवाल-लगे हुए; मणल् तटस् तौळ्म्-वालू के ढेर-ढेर पर; पवळम् कौम्पु-प्रवाल-लता पर; इवर्-रहते जैसे; कवान्-पैरो वाले; अरच्चु अन्नमुम्-राजहंस; पैट्युम्-और हंसिनियाँ; काण्टलिन्-दिखाई देते हैं, इसलिए; तवा नैडु वात्तकम्-अक्षय विस्तृत आकाश में; तयङ्कुम् मीन् ओटुम्-विद्यमान उडुओं के साथ; उवामति-पूर्णचन्द्र; उलप्पु इल-असंख्यक; उतित्त औत्ततु-उदित हुए हों, ऐसे लगा। ४

उस सर के मध्य और किनारों पर यत्न-तत्न बालू के टीले देखे जाते हैं। उन पर अपने लाल पैरों के कारण प्रवाल-लता के समान दिखनेवाले राजहंस और उनकी हंसिनियाँ बैठे रहते हैं। उससे वह सर ऐसा लगता है, मानो

अक्षय आकाश उज्ज्वल नक्षत्रों के साथ हो और उसमें अनेक पूर्णचन्द्र उदित हुए हों । ४

ओदनो	रलहमु	मुयिरहळ	यावैयुम्
वेदपा	रहरैयुम्	विदिप्प	वेट्टनाळ
शीदनी	रुवरियैच्	चैहुक्क	वाङ्गौरु
कादिहा	दलन्तुरु	कडलि	तन्तुडु 5

काति कार्तलन्-गाधिनंदन ने; ओतम् नीर् उलकमुन्-समुद्रजलावृत पृथ्वी; उयिरुक्ळ यावैयुम्-(और) सभी जीवों को; वेत पारकरैयुम्-वेदपारगों को; वितिप्प-सृजित करना; वेट्ट नाळ-(जिस दिन) चाहा उस दिन; चीत नीर् उवरियै-शीतल जल-भरे समुद्रों को; चैकुक्क-दवाने के लिए (मान घटाने के लिए); आङ्कु-वहाँ; तरु-सृष्ट; और कटलिन् अन्तु-अन्य एक सागर-जैसा था । ५

गाधितनय विश्वामित्र ने एक बार समुद्रों से घिरे भुवनों, उनमें सभी तरह के जीवों और वेदपारंगत ब्राह्मणों को अलग से सृष्ट करना चाहा था । यह पम्पा सर उस समुद्र के जैसा लगा, जिसे उस दिन विश्वामित्र ने शीतल जल-भरे समुद्र के मानमर्दन के लिए सरजा था । ५

अैप्पडर्	नाहर्द	मिरुक्कै	यीदेनक्
किप्पदोर्	काट्चिय	दैत्तिनुड्	गेल्लुक्क
कप्पह	मनैयवक्	कविजर्	काट्टिय
शीप्पौरु	ळामेन्तु	तोन्नु	हिन्नुडु 6

नाकर् तम्-नागों का; अैल् पटर्-प्रकाश से भरा; इरुक्कै-वासस्थान (पाताललोक); ईतु अैल्ल-यह है, ऐसा; किप्पतु-इशारा करता सा; ओर् काट्चियतु-दृश्यमान है; अैत्तिनुम्-तो भी; केळ् उड-छवि के साथ; कप्पकम् अतैय-कल्पतरु के समान; कविजर् काट्टिय-कवियों द्वारा दर्शित; चैल् पौळ् आम्-शब्दों के अर्थगाम्भीर्य के ही; अैन-समान; तोन्नुकिन्नुतु-दिखाई देता है । ६

‘नागों का प्रकाशमय लोक यही है’ —ऐसा इंगित कर रहा हो, ऐसा दृश्यमान था वह सर । साथ-साथ कल्पतरु के समान (शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से) कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों के प्रकाशमय अर्थों के समान भी दिखता है । नागलोक अनेक रत्नों की राशियों के कारण प्रकाशमय रहता है । वह प्रकाश पम्पा सर के जल में प्रतिबिंबित होता है । इसलिए वह सर ऐसा दिखता है, मानो यह संकेत करता हो कि यही नागलोक है । वह सर बहुत गहरा है और उसका जल स्वच्छ है । कवि के शब्द कल्पतरु से उपमित हैं क्योंकि दोनों वांछित और अधिक अर्थ दे सकते हैं । ६

कळनवि	लन्तमे	मुदल	कण्णहन्
तळमलरूप	पुळ्ळालि	तळङ्गि	यिन्नदोर्

किळवियेन्	इरिवरुड्	गिळर्च्चित्	तादलिन्
वळनहरक्	कूलमे	पोलु	माण्बडु 7

कळम् नविल्-मधुर बोलनेवाले; अन्तम् मुतल-हंस आदि; कण् अकल्-विशाल; तळ मलर्-दलयुक्त कमलपुष्पों पर रहनेवाले; पुळ् ओलि-पक्षियों का कलरव; तळङ्कि-अधिक रहता है; इन्तु ओर् किळवि-यह अमुक की ध्वनि है; अरिवु अरु-यह जानना कठिन है; किळर्च्चित्तु-ऐसा कोलाहलमय है; आतलिन्-इसलिए; वळ नकर्-समृद्ध नगर की; कूलमे पोलुम्-पण्यवीथी जैसे; माण्पतु-विलक्षण है । ७

विशाल दलसंकुल कमलपुष्पों पर हंस आदि पक्षी कलरव करते हुए रहते हैं । उनमें कौन से पक्षी क्या बोलते हैं, यह समझा नहीं जाता । ऐसी अधिक और मिश्रित ध्वनि के कारण वह सर किसी बड़े नगर के बाजार के समान लगता है । ७

अरिमलर्प्	पङ्गयत्	तन्न	मैङ्गणुम्
पुरिहुळल्	पुक्किडम्	पुहल्हि	लादयाम्
तिरुमुह	नोक्कल्	मिडन्डु	तीरुडुमैन्
रैरिपुहु	वन्नवैन्त्	तोन्डु	मीट्टु 8

अैङ्कणुम्-सर्वत्र; अरि मलर्-लाल लकीरों से युक्त; पङ्कयत्तु-कमलपुष्पों पर रहते हुए; अन्तम्-मराल; पुरि कुळल्-सँवारकर बँधे हुए केश वाली सीताजी का; पुक्किडम्-प्रवेशस्थल; पुक्किल्लात-न (जान) कहनेवाले; याम्-हम; तिरुमुक्क नोक्कल्- (श्रीराम का) श्रीमुख नहीं देखेंगे; इन्तु तीरुत्तुम्-मर मिटेंगे; अैन्डु-यह निश्चय करके; अैरि पुक्कवन्न अैन्-अग्निप्रवेश करते हों जैसे; तोन्डुम्-दिखते हैं; ईट्टु-वह सर ऐसा है । ८

उस सर में सर्वत्र लाल कमलपुष्पों का घना समूह है । उन कमलों के मध्य हंस पक्षी पाये जाते हैं । उनको देखने पर ऐसा लगता है कि वे हंस आग में प्रवेश कर रहे हों ! क्यों ? उनके मन में (शायद) यह विचार है— (मेढ़ी मे) गूँधकर गाँठ के रूप में बँधी चोटी से अलंकृत सीताजी के रहने का स्थान हम नहीं जानते, इसलिए श्रीराम से बता भी नहीं सकते । ऐसे हम श्रीराम का मुख नहीं देखेंगे और आग में घुसकर अपनी जान त्याग लेंगे । ८

काशडै	विळङ्गिय	काट्चित्	तायिन्नुम्
माशडै	पेदैमै	यिडैम	यक्कलाल्
आशडै	नल्लुणर्	वनेय	दामैलप्
पाशडै	वयिन्नीरुम्	परन्द	पण्बडु 9

माचु अटै-दोषयुक्त; पेटैमै-अज्ञता; इटै मयक्कलाल्-मध्य में आकर मोह में डाल लेती है, इसलिए; आचु अटै-दोषपूर्ण हो जानेवाले; नल्ल उणर्वु अतैय-उत्तम ज्ञान के समान; काचु अटै विळङ्किय-रत्नोंसहित उज्ज्वल होकर; काट्चित्तु

आयितुम्-दृश्यमान होने पर भी; वयित् तौरुम्-स्थल-स्थल पर; पाचटै परन्त-
काई फैली थी; पण्पतु-ऐसा विशिष्टतायुक्त था वह । ६

मोती, रत्न आदि उस सर के तल में पड़े थे । जल की स्वच्छता के कारण वे बाहर दिखाई दे रहे थे । ऐसे दृश्य होने पर भी कहीं-कहीं काई, सेवार आदि के कारण जल ढका हुआ था और मोती, रत्न आदि अदृश्य रहे । वह दृश्य उस ज्ञान के समान लगा, जो अज्ञान के कारण मोहाच्छादित हो जाता हो । ९

कळिप्पडा	मनत्तवन्	काण्ड	कड्पेनुम्
किळिप्पडा	मौळियवळ्	विळियित्	केळत्तत्
तुळिप्पडा	नयत्तङ्ग	डुळिप्पच्	चौरुम्
रौळिप्पडा	दायिडै	यौळिक्कु	मीत्तडु 10

कळि पटा-आनन्द जिसमें नहीं रहता; मनत्तवत्-उस मन के श्रीराम; काणिल्-हमें देखेगे तो; कड्पु अँतुम्-मूर्तिमान् पातिव्रत्य; किळि पटा-शुक में भी अप्राप्य; मौळि अवळ्-(मधुर-)भाषिणी उन (सीता) की; विळियित् केळ् अँत-आँखों का बन्धु समझकर; तुळि पटा-कभी (अश्रु-)कण जिनमें न पड़े थे; नयत्तङ्गळ् तुळिप्प-उन नेत्रों में आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; चौरुम्-दुःखी होंगे; अँत्तु-सोचकर; औळि पटानु-रूप व्यक्त नहीं करते हुए; अ इटै-उस सर में; औळिक्कुम्-अपने को छिपा लेनेवाली; मीत्तु-मछलियों से युक्त है (वह सर) । १०

उस सर में मछलियाँ रहीं पर वे छिपी रहीं । उसका कारण क्या था ? शायद उनको यही भय था कि श्रीराम आनन्दरहित मन के हैं । उनकी दृष्टि हम पर पड़ेगी तो उन्हें पातिव्रत्य की मूर्ति, शुक में भी अप्राप्य (मधुर) भाषण वाली सीताजी की आँखें स्मरण हो आयेंगी और अपनी आँखों से जो कभी अश्रु वहाने के आदी नहीं हैं, वे आँसू बहाते हुए शिथिल पड़ जायेंगे । ऐसे मीनों से भरा हुआ वह सर था । १०

कळैपडु	मुत्तमुड्	गलुळिक्	कार्मद
मळैपडु	तरळमु	मणियुल्	वारिनेर्
इळैपडर्न्	दत्तैयनी	ररुवि	यैय्दलान्
कुळैपडु	मुहत्तियर्	कोलम्	बोल्वदु 11

कळै पटु-बाँसों में उत्पन्न; मुत्तमुम्-मोतियों; कलुळि-पंकिल; कार् मत मळै-काले मद-नीर से युक्त मेघों (गजों) से; पटु-प्राप्य; तरळमुम्-मोतियों को और; मणियुम्-अनेक रत्नों को; वारि-बटोर लेकर; नेरिळै पटर्न्तु-सुन्दर आभरण-भूषित; नीर् अरुवि-सरिता-जल; यैय्दलान्-आया है, इसलिए; कुळै पटु मुहत्तियर्-कुण्डलधारिणी मुखों की स्त्रियों के; कोलम् पोल्वतु-सौंदर्य के समान सौंदर्य रखनेवाला है वह सर । ११

वह सर कर्णकुण्डलधारिणी सुन्दरियों का-सा सौन्दर्य रखता था, क्योंकि उसमें वाँसों से उत्पन्न मोती, पंकिल मदनीर वाले मत्तगजों से उत्पन्न मोती और अनेक प्रकार के रत्न, इनको वहा लेती आकर सरिताएँ उससे मिलती थीं । ११

पौङ्गुवेंडु	गडहरि	पौडुळि	याडलिन्
कडगुलि	नैदिर्पोरु	कलविप्	पूशलिल्
अङ्गानौन्	दलशिय	विलेयि	नाय्वळ
मङ्गैयर्	वडिवेन्	वरुन्दु	मैय्यदु 12

पौङ्गु-उमग उठनेवाला; वैम् कट-उष्ण मदनीर वाले; करि-मातंग; पौडुळि आटलिन्-गोते लगाते हैं, इसलिए; कडकुलिन्-रात के समय में; नैदिर् पोर्-सामने से आलिंगन के; कलवि पूचलिल्-संभोग-समर में; अङ्कम् नौन्तु-अंगों में शिथिल पड़कर; अलच्चिय-थकित हुई; आय् वळ-चुने हुए कंकणभूषित; विलेयिन् मङ्कैयर्-वेश्याओं का; वटिवु अन्न-शरीर के समान; वरुन्दुम्-कष्ट उठानेवाले; मैय्यदु-शरीर का है । १२

उस सर में उष्ण मदलावी गज गोते लगाते हैं । उससे वह सर उन आभरणभूषिता वेश्याओं के शरीर के समान थकित अंगों का हो जाता है, जो रात के समय सामने प्राप्त संभोग-समर में अपने शरीर की शक्ति खोकर श्रान्त हो रहती हैं । १२

विण्डौडु	नैडुवरैत्	तेनुम्	वेळत्तिन्
वण्डुळर्	नरुमद	मळ्यु	मण्डलाल्
उण्डवर्	पेरुङ्गळि	युर्लि	नोदियर्
तौण्डैयड्	गन्नियिदळ्त्	तुप्पिर्	चान्ऱुडु 13

विण् तौडु-आकाशस्पर्शी; नैडु वरै-उन्नत पर्वतों से झरनेवाला; तेनुम्-शहद; वेळत्तिन्-गजों का; वण्डु उळर्-भ्रमर जिसमें पैठकर चूसे हैं; नरु मत मळ्युम्-सुगन्धित मद-वारि; मण्डलाल्-आकर मिलते हैं, इसलिए; उण्डवर्-(उस सर के जल को) पीनेवाले; पेरुम् कळि उर्लिन्-बहुत आनन्दयुक्त होते हैं, इसलिए; ओतियर्-रमणियों के; तौण्डै अम् कन्नि इतळ्-विन्वफल-सम अधरों के; तुप्पिल् चान्ऱु- (अमृत) पान के समान है । १३

गगनस्पर्शी और बड़े पर्वतों से शहद की धारा आती है । मत्तगजों के भ्रमराकुलित और सुगन्धित दान की धारा आती है । वे धाराएँ आकर उस सर में मिल जाती हैं । उस सर का जल पीने से लोग मदमत्त हो जाते हैं । इसलिए वह सर सुकेशिनी विम्बाधरा स्त्रियों के अधरों की समानता करता है (और जल अधर-मधु की) । १३

आरिय	मुदलिय	पदिन्नैण्	पाडैयिल्
पूरिय	रौरुवळि	पूहुन्द	पोन्ऱन

ओर्विल	किळविह	ळीन्त्री	डीप्पिल
शोर्विल	विळम्बुपुट्	टुवन्ऱु	हिन्ऱुडु 14

आरियम् मुतलिय-संस्कृत आदि; पतिन् अण् पाटैयिल्-अठारह भाषाओं के; पूरियर्-अल्पज्ञ लोग; ओरु वळि-एक स्थान पर; पुकुन्त पोन्ऱुत-मिलकर शोर मचाते जैसे; ओर्वु इल-स्वच्छ नहीं हैं; किळविकळ्-शब्द; ओन्ऱोडु ओप्पु इल-परस्पर सम नहीं; चोर्वु इल-दुर्बल नहीं हैं; विळम्पु-(ऐसे) बोलनेवाले; पुळ्-पक्षीगणों से; तुवन्ऱुकिन्ऱुतु-भरा है । १४

आर्य (संस्कृत) आदि अठारह भाषाओं के अपढ़ बोलनेवाले एक स्थान पर इकट्ठे हो गये हों, ऐसे, अस्पष्ट और परस्पर विपरीत और अथक रूप से बोलनेवाले पक्षीगणों से पूर्ण है (वह सर) । १४

तानुयि	रुत्तत्तित्	तळुवुम्	पेडैयं
ऊनुयिर्	पिरिन्देत्तप्	पिरिन्द	वोदिमम्
वानर	महळिर्तम्	वयङ्गु	नूपुरत्
तेनुहु	मळलैयैच्	चेवियि	नोर्प्पडु 15

तान् उयिर् उर-अपने प्राणों के साथ; तत्ति तळुवुम्-खूब आलिंगन करनेवाली; पेडैयै-हंसिनी को; उयिर् ऊन् पिरिन्तु अत्त-प्राण शरीर को छोड़ गये हों जैसे; पिरिन्त ओतिमम्-अलग जो गया वह हंस; वान् अर मळिर् तम्-आकाशलोक की मुरवालाओं की; वयङ्कु-मनोरम; नूपुर तेन् उकु-नूपुरों की शहद-सी उठनेवाली; मळलैयै-मधुर, तुतली-सी बोली को; चेवियिन् ओर्प्पतु-अपने कानों से सुनते हैं, ऐसा है वह सर । १५

उस सर में व्योमराज्य की अंगनाएँ आकर स्नान कर रही हैं। उनकी बोलियाँ उनके नूपुरों की ध्वनि ही के समान मनोरम हैं। हंस उन मधुर बोलियों को कान देकर सुनते हैं। कौन हंस? वे हंस, जो अपनी हंसिनियों से शरीर त्यागकर जानेवाले प्राणों के समान छोड़ अलग हुए हैं। कैसी हंसिनियाँ? वे हंसिनियाँ, जो इन हंसों के साथ इस तरह पाश-बद्ध रहीं, मानो प्राणों से प्राण लगाकर अपूर्व रीति से आलिंगन कर रही थीं । १५

ईरिड	लरियमाल्	वरैनिन्	रीर्त्तिल्
आरिडु	विरैयहि	लार	मादिया
ऊरिड	वौण्णह	रुरैत्त	वैण्डळच्
चेरिडु	परणियिर्	रिहळुन्	देशडु 16

ईरु इटल्-अन्त निर्धारित करना; अरिय-(जिसका) कठिन है; माल् वरै निन्ऱु-बड़े पर्वत से; ईर्त्तु इळि-बहाते हुए नीचे बहनेवाली; आरु इटु-नदियों द्वारा लाकर डाले हुए; विरै अकिल्-सुगन्धित अगरु; आरम् आतिया-चन्दन के काठ आदि; ऊरिट-पड़े घुलते रहते हैं, इसलिए; ओळ् नकर्-श्रेष्ठ नगर में लोगों द्वारा;

उरत्त-पीसकर; वैण् तळ चेळ-सफ़ेद चन्दन का लेप; इट्टु-जिसमें रखा गया हो; परणियिल्-उस पात्र के समान; तिकळुम्-मनोरम रहनेवाले; तेचतु-सौंदर्य का (है वह सर) । १६

अपरिमित बड़े पर्वत से नदियाँ सुगन्धित अगर, चन्दन आदि की लकड़ियाँ वहा ले आयी और वे उस सर में पड़ी धुली रहीं। तब वह सर श्रेष्ठ नगरवासियों के द्वारा घिसकर तैयार किये हुए चन्दनलेप के पात्र के समान दिखा । १६

नव्वि	नोक्किय	रिदळ्निहर्	कुमुदत्ति	नरुन्देन्
वव्वि	मान्दलित्	कळिमयक्	कुरुवत्त	महरम्
अव्व	मोङ्गिय	विरप्पोडु	पिरप्पिवै	यैन्तक्
कव्वु	मीनीडु	मुळुहित	वैळुवत्त	करण्डम् 17

मकरम्-मकर; नव्वि नोक्कियर्-मृगाक्षियों के; इतळ् निकर्-अधरों के समान; कुमुतत्तिन्-कुमुदपुष्पों के; नरुम् तेन्-मुवासपूर्ण मधु को; वव्वि मान्दलित्-लेकर पीते हैं, इसलिए; कळि मयक्कु-सुरापायी-प्राप्य नशा; उरुवन-प्राप्त करते हैं; अव्वम् ओङ्किय-दुःखप्रवृद्ध; इरप्पु ओट्टु पिरप्पु-मरण और जन्म; इवै अन्त-ऐसे हैं, इसका संकेत करते-से; कव्वु मीन् ओट्टु-अपने द्वारा ग्रस्त मछलियों के साथ; करण्डम्-करंड; मुळुहित अव्वत्त-उस (सर के) जल में डूबते हैं, उतराते हैं । १७

उसमें मकर थे। मृगनयनी सुन्दरियों के अधरों के समान जो उस सर में कुमुद-कुसुम थे, उनसे सुगन्धपूर्ण शहद रिसता रहा। उसको पीकर वे मकर सुरापायी के-से नगे में रहे। उसमें करंड पक्षी मछलियाँ पकड़ते रहे। उन मछलियों के साथ वे कभी जल के अन्दर घुसते, कभी बाहर निकलते। उसे देखकर ऐसा लगा मानो वे, दुःखबहुल जन्म और मरण का चक्र यही है—यह दरसा रहे हों। १७

कवळ	यानैय	नाङ्कन्दक्	कडिनरुड्	गमलत्
तवळ	यीहल	मावडु	शैय्दुमेन्	रुळित्
तिवळ	वन्नङ्ग	डिरुनडै	काट्टुव	शेङ्गण्
कुवळ	काट्टुव	दुवरिदळ्	काट्टुव	कुमुदम् 18

कवळ यानै-कवलभक्षी गज; अनाङ्कु-सम (श्रीराम) को; अन्त कटि नरुम् कमलत्तु अवळ-उस श्रेष्ठ सुगन्धित कमल की (निवासिनी) सीता को; ईकलम्-(ढूँढ़ लाकर) नहीं देते; आवतु चैय्तुम्-तो भी जितना हो सकेगा, उत्तना करेंगे; अन्त अरळि-ऐसा कृपा करके; अन्तर्दळ-हंस; तिवळ-प्रकट रूप से; तिरु नटे काट्टुव-(सीताजी की-सी) श्रेष्ठ चाल दिखाते हैं; कुवळ-नीलोत्पल; चैम् कण् काट्टुव-(सीताजी की-सी) लाल आँखें दिखाते हैं; कुमुतम्-(लाल) कुमुद; तुवर् इतळ् काट्टुव-ताल अधर दिखाते हैं । १८

उसमें हंस चल-फिर रहे थे। वे मानो सीताजी की चाल का श्रीराम को स्मरण दिला रहे थे। उनका विचार था कि हम कवलग्राही गज-सदृश श्रीराम को सुगन्धपूर्ण कमल की निवासिनी श्री सीताजी को ढूँढ़ लाकर दे नहीं पाये। कम से कम उनकी-सी चाल दिखाएँ। उनके मन में कृपा थी। वैसे ही नीलोत्पल के फूलों ने देवी की लाल डोरों-सहित आँखों का और कुमुदों ने लाल अधरों का दृश्य दरसाया। १८

पैय्ह	लन्गळि	निलङ्गौळि	मरुङ्गौडु	पिरळ
वैह	लुम्बुत्तल्	कुडैबवर्	वानर	महळिर्
शैय्है	यन्तङ्ग	ळेन्दिय	शेडिय	रैन्तप्
पौय्है	यन्तङ्ग	ळेन्दिय	पूङ्गौम्बु	पौलिव 19

पैय् कलन्कळिन्—(उतारकर) रखे गये आभरणों से; इलङ्कु ओळि—निसृत प्रकाश; मरुङ्कु ओटु पिरळ—पास के स्थानों से भिन्न छटा देते हैं; वैकलुम—दिनों-दिन; पुत्तल् कुटैपवर्—जल में स्नान करनेवाले; वान् अर मकळिर्—आकाश की अप्सरा स्त्रियों के; चैय्कै अन्तङ्कळ्—कृत्रिम हंसों को; एन्तिय—उठा ले आनेवाली; चेदियर् अन्त—दासियों के समान; पूम् कौम्पु—पुष्पशाखाएँ; पौय्कै अन्तङ्कळ्—सर के हंसों को; एन्तिय—धारण करती हुई; पौलिव—शोभायमान हैं। १९

उसमें रोज आकाशलोकवासिनी अप्सराएँ आकर स्नान करती थीं। उनके साथ उनकी दासियाँ आयीं और उनके हाथों में उन अप्सराओं के मनोरंजन के लिए बने कृत्रिम हंस थे। उन अप्सराओं ने अपने आभरण उतारकर वहाँ यत्न-तत्न रखे थे। उनकी कांति वहाँ के पदार्थों से अलग चित्र-विचित्र छटा दिखा रही थी। वहाँ की पुष्पलताएँ अपने ऊपर बैठे हंसों के साथ उन अप्सराओं की चेरियों के समान लगीं, जिनके हाथों में कृत्रिम हंस थे। १९

एलु	नीणिळ	लिडैयिडै	यैरित्तलिर्	पडिहम्
पोलुम्	वार्पुत्तल्	पुहुन्दुळ	वामेत्तप्	पौङ्गि
आलु	मीन्गणम्	वैरुवुर्	वलम्वर	वज्जक्
कूल	मामरत्	तिरुज्जिरै	पुलर्त्तुव	कुरण्डम् 20

एलुम्—युक्त; नीळ् निल्लल्—लम्बी छायाएँ; इटै इटै—बीच-बीच में; यैरित्तलिन्—पड़ती हैं, इसलिए; पटिकम् पोलुम् वार् पुत्तल्—स्फटिक-से विस्तृत जलतल में; पुकुन्तुळ आम् अन्त—घुसे हों जैसे; आलुम्—क्रीडामग्न; मीन् कणम्—मछलियों के समूह; वैरुवु उर—डर से; अलम् वर—घबड़ाकर; पौङ्कि अञ्च—चंचल और कातर होते; कुरण्डम्—(ऐसे) बगुले; कूल मा मरत्तु—तट पर के आभूषणों पर; इरुम् चिरै—अपने बड़े पंखों को; पुलर्त्तुव—सुखा रहे हैं। २०

उसके किनारों पर पेड़ थे और उन पेड़ों की शाखाओं पर बैठे हुए बक अपने बड़े पक्षों को सुखा रहे थे। उनकी परछाईं उस सर के

स्फटिक-स्वच्छ जल में यत्न-तत्न पड़ती थी। मछलियों ने सोचा कि सचमुच बक घुस गये हैं। इसलिए वे भयातुर होकर धवड़ाते हुए चकित और थकित हो रहीं। ऐसे दृश्यों का था वह सर। २०

अङ्गोर्	वाहत्ति	नञ्जन्	मणिनिळ	लडैयप्
पङ्गु	वेरदिर्	पडुमरा	हत्तौळि	पायक्
कङ्गु	लुम्बह	लुम्मेत्तप्	पौलिवत्त	कमलम्
मङ्गो	मार्त्तुणै	मुलैयैत्तप्	पौलिवत्त	वाळम् 21

अङ्कु-वहाँ (उस सर के); ओर् पाकत्तिन्-एक भाग में; अञ्चत्तमणि-नीली मणियों की; निळल् अटैय-छटा पड़ती है, तो; वेरु पङ्कु अत्ति-दूसरे भाग में; पतुमराकत्तिन् औळि-पद्मराग का प्रकाश; पाय-फंला है; पौलिवत्त कमलम्-(तब) शोभा के साथ विद्यमान कमल; कङ्कुलुम् पकलुम् अँत-रात और दिन के (बन्द और खुले कमलों के) रहते हैं और; वाळम्-चक्रवाक; मङ्कै मार्-स्त्रियों के; तुणै मुलै अँत-स्तनद्वयों के समान; पौलिवत्त-रूप में शोभते हैं। २१

वहाँ एक भाग में नीलमणियों की कांति पड़ी रही। दूसरी ओर पद्मराग का लाल प्रकाश पड़ा रहा। इसलिए वहाँ के कमल रात और दिन में जैसे क्रमशः बन्द और खिले रहे। (नीलमणियों की काली कांति अँधेरा-भरी रात के समान थी और पद्मराग का प्रकाश धूप के समान।) चक्रवाक पक्षी (देखने में) स्त्रियों के स्तनों के समान लगे। २१

वलिन	डत्तिय	वाळैन	वाळैहळ्	पाय
औलिन	डत्तिय	तिरैत्तौळ	मुहळ्वन्	नीर्नाय्
कलिन	डक्कळैक्	कण्णुळ	रैन्नडङ्	गवित्तप्
पौलिवु	डैत्तैन्त	तेरैहळ्	पुहळ्वन्	पोलुम् 22

वलि नटत्तिय-बल के साथ चलायी गयी; वाळै अँत-तलवार के समान; वाळैकळ् पाय-'वाळै' नाम की मछलियाँ झपटती हैं; औलि नटत्तिय-ध्वनिपूर्ण; तिरै तौळम्-तरंगों में; कलि नट-मनोरंजक नर्तन करनेवाले; कळै कण्णुळ् अँत-वाँस (गाड़कर उस पर) नर्तन दिखानेवाले नटों के समान; नीर् नाय्-जलकूकर; उकळ्वन्त-लुढ़कते हैं; नटम् कवित्त-और नर्तन का-सा खेल दिखाते हैं और; तेरैकळ्-दादुर; पौलिवु उटैत्तु अँत-(तुम्हारा नाच) श्रेष्ठता से युक्त है, कहकर; पुकळ्वन्त पोलुम्-वाहवाही करते से है। २२

(उस सर में कुछ अनोखे दृश्य पाये जाते हैं।) 'वाळै' नाम की मछलियाँ बहुत वेग और शक्ति के साथ चलायी गयी तलवार के समान झपटती थी। तरंगों के मध्य जल-कूकर (एक जलजन्तु) वाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटों के समान लुढ़क-लुढ़ककर तमाशा दिखा रहे थे। दादुर उनको देखकर विस्वाहवाही दे रहे थे। २२

अन्तु	दाहिय	वहन्बुत्तर्	पीयूहैयै	यणुहिक्
कन्ति	यन्तमुड्	गमलमु	मुदलिय	कण्डान्
तन्ति	नीङ्गिय	तळिरियर्	कुरुहितन्	इळर्वान्
उन्तु	नल्लुणर्	वीडुङ्गिडप्	पुलम्बिड	लुड्डान् 23

अन्तु आकिय-ऐसे (दृश्यों के); अकल् पुत्तल्-विशाल जल-फलाव के; पीयूहैयै-सर के; अणुकि-पास जाकर; कन्ति अन्तमुम्-बालमरालों; कमलमुम्-और कमलों; मुतलिय-आदि (सब) को; कण्डान्-देखकर; तन्तिन् नीङ्गिय-अपने से अलग जो चली गई; तळिर् इयर्कु-पल्लवनिभ सीताजी के लिए; उरुकिन्तु-द्रवीभूत होकर; तळर्वान्-दुखते हुए; उन्तुम् नल् उणर्वु-विवेकी बुद्धि के; ओटुङ्किट-मन्द पड़ने के कारण; पुलम्पिटल् उड्डान्-(श्रीराम) विलाप करने लगे । २३

श्रीराम अपने छोटे भाई के साथ ऐसे पम्पा सर पर आये । उसमें रहनेवाले बाल-मरालों और कमलों को देखा । उन्हें उनसे बिछुड़ी पल्लव-निभ सीताजी का स्मरण सताने लगा । उनका मन द्रवीभूत हो गया । दुःख के कारण धैर्य, बुद्धि भी मन्द पड़ गयी । तब वे यों विलाप करने लगे । २३

वरियार्	मणिक्काल्	वरालिन्तमे	सडवन्	नड्गा	ळैन्नीङ्गित्
तरिया	नडैया	ळिलळालैर्	इन्द	वेदुन्	दहवेयाल्
अरिया	निन्ड	वारुयिरुक्	किरङ्गि	नाली	दिशैयन्डो
पिरिया	दिरुन्दीर्क्	कौरुमाड्डम्	पेशिर्	पूशल्	पैरिदामो 24

वरि आर्-लकीरों से युक्त; मणि काल्-सुन्दर पैरों (रूपी डैनों) से युक्त; वराल् इन्तमे-'वराल' मछलियों के समूह; मट अन्तङ्काळ्-बालमराल; अन्तै नीङ्कि-मुझे छोड़कर; तरिया-अलग जो नहीं सकती; नडैयाळ्-ऐसे स्वभाव की; इलळ्-(सीता मेरे साथ अब) नहीं है; अन् तन्त-मेरे लिए दिया गया सन्देश; एतुम्-कोई; तकवे-अच्छा होगा; अरिया निन्ड-जलनेवाले; आर् उयिर्कु-मेरे प्यारे प्राणों के लिए; इरुक्किन्तल्-सहानुभूति करेंगे तो; ईतु-यह; इच्चै अन्डो-(तुम्हारे लिए) प्रशंसा का विषय होगा न; पिरियातु-अवियुक्त; इरुन्तीर्कु-जो रहते हो, उन तुमको; ओरु माड्डम् पेच्चिल्-(उसके सम्बन्ध में) एक बात कहना; पूचल्-टंटा; पैरितु-बड़ा; आमो-हो जायगा क्या । २४

रेखाओं से युक्त डैनों वाली हे 'वराल' मछलियो ! हंसो ! अब सीताजी मेरे पास नहीं रहतीं । उनका स्वभाव ऐसा है कि वे मुझे छोड़कर अलग जीवित नहीं रह सकतीं । उसने तुम्हारे पास कुछ भी कहा हो तो वह मुझसे कह दो । यही उचित होगा । मेरे प्राण उसके बिना जल रहे हैं । दया करके यह सहायता करोगे तो वह तुम्हारी कीर्ति का हेतु बनेगा । तुम तो नर-मादा अपृथक् रहते हो । कुछ मुझे बताओगे तो टंटा बढ़ जायगा क्या ? । २४

वण्ण नरुन्दा मरैमलरुम् वाशक् कुवळै नाण्मलरुम्
 पुण्णि नैरियु मीरुनैजम् वीदियु मरुन्दिर् इरुम्वीय्हाय्
 कण्णु मुहमुड् गाट्टुवाय् वडिवु मीरुहाड् काट्टायो
 ओण्णु मैन्नि नः(ह्)दुदवा दुलोवि तारु मुयर्न्दारो 25

वण्ण नरुम्-सुन्दर और सुवासित; तामरै मलरुम्-कमलपुष्प; वाच नाळ् कुवळै मलरुम्-सुवासित और तत्कालविकसित कुवलयपुष्प; पुण्णिन् नैरियुम्-व्रण के समान जलनयुक्त; और नैजम्-(मेरे) एक मन में; पौतियुम् मरुन्तिल्-धाव पर लिपे मलहम के समान; तरुम्-दरसानेवाले; पीय्काय्-हे सर; कण्णुम् मुकमुम्-आँखें और मुख; काट्टुवाय्-दिखाते हो; वडिवुम्-सारा रूप; और काल्-एक वार; काट्टायो-नहीं दिखाओगे क्या; ओण्णुम् मैन्तिल्-हो सकता है तो; अ. तु उतवातु-(जो दे सकते हैं) उसको न देकर; उलोविन्नारुम्-लोभ दिखानेवाले भी; उयर्न्तारो-श्रेष्ठ वन सकेंगे क्या (वन नहीं सकेंगे) । २५

हे सर ! मेरा मन व्रण से जल रहा है । तुम सुन्दर और सुवासपूर्ण कमलकुसुमों और सुवासित और नवविकसित नीलोत्पल के फूलों को दिखा रहे हो और वह मेरे मन पर मलहम का काम दे रहा है ! तुम इस तरह सीताजी की आँखों और मुख को दरसा रहे हो ! क्या उसका सारा रूप नहीं दिखाओगे एक वार ? हो सकता है तो दिखाने की दया करो । वह न करके लोभ दिखाओगे तो लोभी भी उत्कृष्ट हो सकते हैं क्या ? । २५

विरिन्द कुवळै चेदाम्बल् विरैमैन् कमलड् गौडिवळै
 तरङ्ग नैरङ्गु वरालामै यैन्दिर् तहैय तमैनोक्कि
 मरुन्दि नतैया लवयवङ्ग लवेनिर् कण्डेन् वल्लरक्कन्
 अरुन्दि यहल्वान् शिन्दिन्नवो वावि युरैत्ति यामन्ने 26

विरिन्त कुवळै-विकसित नील कुवलय; चैम्मै आम्बल्-लाल कुमुद; विरै मैन् कमलम्-वासपूर्ण कोमल कमल; कौटि वळै-'वळै' नाम की लता; तरङ्कम् नैरङ्कु-तरंगों के बीच पास-पास संचार करनेवाले; वराल्-'वराल' नामक मीन; आम्-कछुए; अन्नुड्ड इ तर्कय तमै-इस प्रकार के जीवों को (देखकर); वावि-हे सर; मरुन्तिन् अन्नायळ्-देवामृत के समान सीता के; अवयवङ्कळ्-अंगों को; निन् कण्डेन्-तुम्हारे पास देखता हूँ; वल् अरक्कन्-वली राक्षस (रावण); अरुन्ति अकल्वान्-उसको खाकर जो गया; चिन्दिन्नवो-तब विथूर गये, क्या ये; उरैत्ति-वताओ । २६

श्रीराम ने विकसित नीलोत्पल के फूलों को, लाल कुमुदों को और सुन्दर सुवासित कोमल कमलों को देखा । 'वळै' नाम की लता देखी, जिसके पत्ते मनुष्य के कानों के आकार के लगते हैं । लहरों के मध्य 'वराल' मछलियाँ और कछुए भी दिखाई दिये । (तो उन्हें क्रमशः सीता की आँखें, अधर, मुख, कान, पिंडली, उत्तरण आदि स्मरण हो आ गये ।) उन्होंने सर से कहा कि हे सर ! तुम्हारे पास मैं अमृत-समाना सीताजी के अवयवों

को देखता हूँ । क्या वे तब बिथुरे गिरे हैं, जब बली राक्षस रावण सीता को खाते हुए जाता रहा ? । २६

ओडा	निन्त्र	कळिमयिले	शायर्	कौदुङ्गि	युळळिन्नु
कूडा	दारिर्	रैरिहिन्त्र	नीयु	माहङ्	गुळिर्न्दायो
तेडा	निन्त्र	वैन्नुयिरैत्	तैरियक्	कण्डाय्	शिन्दैयुवन्
दाडा	निन्त्रा	यायिरङ्ग	णुडैयाय्क्	कौळिक्कु	मारुण्डो 27

ओडा निन्त्र—दौड़ते फिरनेवाले; कळि मयिले—मुदित मोर; चायर्कु औतुङ्कि—(सीता की) आभा के सामने (हार मानकर) हटकर; उळ् अळिन्नु—मन मारकर; कूडातारिल्—शत्रु के समान; तैरिक्निन्त्र—दिखनेवाले; नीयुम्—तुम भी; आकम् कुळिर्न्दायो—मन में आनन्दानुभव करते हो क्या; तेडा निन्त्र—जिसकी मैं खोज कर रहा हूँ; वैन्नु उयिरै—उस मेरे प्राणसमाना को; तैरिय कण्डाय्—तुमने खूब देखा है; चिन्ते उवन्नु आटा निन्त्राय्—अब सन्तोष के साथ नाचते हो; आयिरम् कण् उडैयाय्क्कु—सहस्र-नेत्र तुमसे; औळिक्कुम् आरु उण्डो—छिपने का रास्ता भी है क्या २७

(श्रीराम एक मयूर से पूछते हैं—) हे दौड़ते फिरनेवाले मयूर ! सीताजी की आभा के सामने तू हार गया था । मन मारकर तू शत्रुवत् व्यवहार करता-सा दीखता है ! अब तेरा मन ठण्डा हो गया न ? तूने मेरी प्राण-सम सीता को खूब देखा है ! अब मुदितमन हो नाच रहा है ! तेरे सहस्र नेत्र हैं ! तुझसे कोई वस्तु अनदेखी रह सकेगी क्या ? । २७

अडैयो	रैन्निनु	मौरुमाड्	मडिन्द	दुरैयो	रन्तत्तित्तिन्
पैडैयो	रौन्नुम्	पेशीरो	पिळैया	देरुक्कुम्	पिळैत्तीरो
नडैनी	रळियच्	चैय्दार्	नडुवि	लादार्	नत्तियवरो
डुडैयीर्	पहैदा	नुमैनोक्कि	युवक्किन्	रैन्	मुनिवीरो 28

अन्तत्तित्तिन् पैडैयीर्—हंस-स्त्रियो; अडैयीर् अन्तिनुम्—पास नहीं आओगी तो भी; अडिन्नुतनु—जाना; मौरुमाड्—एक समाचार; उरैयीर्—मुझे बताओ; औन्नुम् पेशीरो—कुछ न कहोगी क्या; पिळैयातेरुक्कुम्—निरपराधी के प्रति भी; पिळैत्तीरो—अपराध करोगी; नडु इलातार्—तटस्थता (कमर) जिसके पास नहीं है; नडै नीर् अळिय चैय्दार्—तुम्हारी चाल (के गर्व) को मिटाया; यार्—किसने था; अवरोट्टु पक्कै तान्—उनके साथ शत्रुता; नत्ति उडैयीर्—भले ही रखो; उमै नोक्कि—तुम्हें देखकर; उवक्किन्नेन्—हर्षित होनेवाले मुझसे; मुत्तिवीरो—गुस्सा करोगी क्या । २८

(हंसिनियों से उपालम्भ—) हे हंसकुमारियो ! तुम मेरे पास नहीं आओगी । सही । पर सीता के सम्बन्ध में कुछ समाचार कहो । क्या नहीं कहोगी ? मैंने तो तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया । निरपराध के प्रति भी अपराध करोगी क्या ? कटिहीन ('नडु' का अर्थ तटस्थता भी है— अतः तटस्थता से रहित) किसने तुम्हारा चाल का गर्व चूर किया ?

सीता ने ही न ? उसके साथ शत्रुता तुम भले ही करो । मैं तो तुमको देखकर आनन्द से भर जाता हूँ । मुझसे भी खीझ दिखाओगी क्यों ? । २८

पौन्बाल् पौरुवुम् विरैयल्लि पुल्लिप् पौलिन्द पौलन्दाडु
तन्बार् रळ्वुड् गुळल्वण्डु तमिळ्पाट् टिशैक्कुन् दामरैये
अैन्बा लिल्लै यप्पालो विरुप्पा रल्लर् विरुप्पुडैय
उन्बा लिल्लै यैन्ऱक्का लौळिप्पा रोडु मुऱवुण्डो 29

पौन् पाल्-स्वर्ण का-सा गुण; पौरुवुम्-रखनेवाले; विरै अल्लि-सुवासित
दलों के; पुल्लि पौलिन्त-अन्दर शोभनेवाले और; पौलन् तातु-स्वर्ण-सम मकरन्द;
तन् पाल् वळ्वुम्-जिन पर लगे रहते हैं; गुळल् वण्ड-बांसुरी-ध्वनि वाले भ्रमर;
तमिळ् पाट्-मधुर संगीत; इचैक्कुम्-(जिनमें रहकर) गाते हैं; तामरैये-ऐसे
कमल-पुष्पो; अैन् पाल् इल्लै-(सीता) अब मेरे साथ नहीं है; अप्पालो इरुप्पा
अल्लर्-अलग कहीं रहनेवाली भी नहीं है; विरुप्पु उडैय-प्रेमासक्त; उन् पाल्-तुम
पर; इल्लै यैन्ऱक्काल्-नहीं है, कहोगे तो; लौळिप्पारोट्टुम्-छिपा रखनेवालों के
साथ; उऱवु उण्डो-मित्रता हो सकती है क्या । २८

हे कमलपुष्पो ! तुम्हारे दल स्वर्ण के समान है । उन पर मकरन्द
भरा है । उस मकरन्द-धूल पर भ्रमर लोटते हुए अपने शरीरों पर
उसे मल लेकर खूब गुंजार कर रहे हैं ! सीता मेरे साथ नहीं है । वह
ऐसी है जो अन्यत्र रह ही नहीं सकती । (वह या तो मेरे साथ रहेगी या
अपनी नैहर तुम पर ।) अगर तुम यह कहो कि वह यहाँ नहीं, तो वह
झूठ ही होगा । छिपाकर रखनेवालों के साथ मित्रता कैसे रखी
जायगी ? । २९

औरुवा शहतै वाय्तिऱन्दिड् गुदवाय् पौय् है युळ्ळौडुङ्गुम्
तिरुवा अत्तैय शैदामवर् कयले किडन्द शौङ्गिडैये
वैरुवा वैदिर्निन्ऱुमुदुयिर्क्कुम् वीळिच् चैव्विक् कौळ्ङ्गनिवाय्
तरुवा यव्वा यित्तनमिळ्दुन् तण्णैन् मौळियुन् दारायो 30

पौय्कैयुळ्-सर के अन्दर; औडुङ्कुम्-दबे रहनेवाले; तिरुवाय् अत्तैय-सीताजी
के श्रीसम्पन्न अधरों के समान; चैम् आम्पड्कु-लाल कुमुदकुसुमों के; अयले किटन्त-
पास रहनेवाली; चैम् किटैये-लाल खुखरी; वैरुवा-निर्मय होकर; अैतिर् निन्ऱु-
सामने रहकर; अमुतु उयिर्क्कुम्-अमृत बहानेवाले; वीळि कौळुम् कति-"वीळि"
(नाम) के पुष्ट फल के (सदृश); चैव्वि वाय्-(सीता के) लाल मुख को; तरुवाय्-
दरसाते हो; अ वायिन्-उस मुख के; इन् अमिळुतुम्-मधुर अमृत को भी; तण्
अैत्त-शीतल; मौळियुम्-बोली को भी; तारायो-नहीं दोगे क्या; और वाचकत्तै-
एक वचन; वाय् तिऱन्तु-अपना मुख खोलकर; इङ्कु उतवाय्-कहने की, यहाँ,
कृपा करो तो । ३०

हे लाल 'किटै' (खुखरी ?) लता, जो सर के अन्दर सीता के मुख के

समान लाल कुमुदों के पास पड़ी हो ! (किटै लाल रंग की जललता है । उसकी उपमा अधर से दी जाती है ।) तुम मेरे सामने मधुसूत्री, 'वीळि' के फल के समान (सीता के) सुन्दर अधरों को दिखा (स्मरण करा) रही हो ! क्या तुम उन अधरों का अमृतपान और उनकी बोली का स्वाद नहीं दिलाओगी ? मुख खोलकर एक बात करो तो बड़ी दया होगी । ३०

अलक्क णुर्रेर् कारूवदर् कडैवुण् इन्नो कौडिवळ्ळाय्
मलर्क्कौम् वनैय मडच्चीदै कादे मरून् रल्लैयाल्
पौलक्कुण् डलमुड् गौडुगुळैयुम् पुनैताळ् मुत्तित् पौरुडुम्
विलक्कि वन्दाय् काट्टायो विन्नुम् बूशल् विरुम्बुदियो 31

कौटि वळ्ळाय्-हे 'वळ्ळै' लता; मलर् कौम्पु अनैय-पुष्पशाखा-सदृश; मटम् चीतै-बाला सीता के; काते-कर्ण; मरू ओन्न अल्लै आल्-(तू) दूसरा कुछ नहीं है तो; पौलत् कुण्डलमुम्-स्वर्णकुण्डलों; कौटुम् कुळैयुम्-वक्र ताटंकों को; पुनै ताळ्-पहने हुए, लटकनेवाले; मुत्तित् पौत् तोडुम्-मोती के स्वर्ण कर्णफूलों को; विलक्कि वन्ताय्-छोड़कर आये हो; काट्टायो-(सीता को) दिखाओगी नहीं क्या; अलक्कण् उर्रेर्कु-दुःख को प्राप्त मुझे; आरूवतर्कु-दुःखशमन के लिए; अटैवु उण्टु अन्नो-मार्ग होगा न; इन्नुम् पूचल् विरुम्पुतियो-आगे भी मुझसे झगड़ा चाहती हो क्या । ३१

हे 'वळ्ळै' लता ! तुम पुष्पलता-सदृश बाला सीता के कान ही हो ! और कुछ नहीं । स्वर्णकुण्डल, वक्र ताटंक और मोती-जड़ित स्वर्ण कर्णफूल (विना पहने) त्यागकर आयी हो ! क्या तुम मुझे उस सीता को नहीं दरसाओगी ? मैं दुःखदग्ध हूँ । दिखाओगी तो दुःख बुझाने में सहायता मिलेगी । फिर क्यों और भी मुझसे झगड़ा रखना चाहती हो ? । ३१

पञ्चु पूत्त विरप्पदुमम् पवळम् बूत्त वडियाळैन्
नैञ्चु पूत्त तामरैयि निलय मुवन्दा णिऱम्बूत्त
मञ्चु पूत्त मळैयनैय कुळलाळ् कण्वोन् मणिक्कुवळाय्
नञ्चु पूत्त तामैन्त नहुवा यैन्तै नलिवायो 32

पञ्चु पूत्त-लाक्षारंजित; विरल्-उँगलियों; पतुमम् पवळम् पूत्त-पद्मों में प्रवाल जड़ित हों, ऐसे; अट्टियाळ्-चरणों वाली; अन्नै नैञ्चु-मेरे मन के; पूत्त तामरैयिन्-विकसित कमल पर; निलयम् उवन्ताळ्-वास चाव के साथ करनेवाली; निऱम् पूत्त-रंगीन; मञ्चु पूत्त-सुन्दरता-भरे; मळै अनैय-मेघ-सम; कुळलाळ्-केश वाली की; कण् पोल्-आँख के सदृश रहनेवाले; मणि कुवळाय्-सुन्दर कुवलय-कुसुम; नञ्चु पूत्ततु अन्नै-विष फैलता हो, ऐसा; नकुवाय्-हँसी दिखाते हो; अन्नै नलिवायो-मुझे त्रास दोगे क्या । ३२

(नीलोत्पल के फूल से श्रीराम कहते हैं—) लाक्षारसरंजित उँगलियों, प्रवाल-जड़ित पद्मों के समान चरणों से भूषित; मेरे मन रूपी विकसित

कमल पर वास चाहनेवाली; और सुन्दर काले रंग के मेघ के समान केश वाली सीता की आँख के समान दृश्यमान नीलोत्पल के फूल ! तुम मुझ पर विष की-सी दृष्टि डालते हुए हँस रहे हो ! मुझे सताओगे क्या ? । ३२

अँनुइ यावुयिर्क् किन्नुव नेडविळ्, कौन्नै याविप् पुत्तुत्तिवै कूरियान्
पौन्नु यादुम् पुहल्हिले पोलुमाल्, वन्नु याविलि यैन्न वरुन्दित्तान् 33

अँनुइ-ऐसा; अया उयिर्क्किन्नुवन्-ठण्डी आहें भरनेवाले; आवि पुत्तुत्तु-सर के पास; एदु अविळ् कौन्नै-(दलों से पूर्ण) फूलों से युक्त अमलतास तरु; इवै-ये बातें; यान् कूरि-मैं, कहकर; पौन्नु-मर जाऊँगा, तब भी; यादुम्-कुछ भी; पुफलकिले पोलुम्-नहीं कहोगे शायद; आल्-तो; वन्नु-कठोर; तयाविलि-निर्दय हो; अँनुत्त-कहकर; वरुन्दित्तान्-दुःखी हुए । ३३

इस तरह श्रीराम विलाप करते हुए ठण्डी आहें भरते रहे । फिर उन्होंने सर के पास रहे अमलतास के तरुओं को देखकर कहा कि विकसित पुष्पों से भरे हे अमलतास ! देखो । मैं इस तरह दुखड़ा रोते-रोते मर जाऊँगा । इस स्थिति में मुझे देखकर भी तुम कुछ आश्वासन के वचन नहीं कहते हो । तुम अवश्य कठोर और निर्मम हो । ३३

वार ङित्तिळ माप्पिडि वायिडेक्, कार ङिक्कुलु ङक्करुङ्ग गैम्मलै
नीर ङिप्पदु नोक्किन्न निन्नन्नन्, पेर् ङिक्कुप् पिन्नुदविल् लायित्तान् 34

पेर् अळिक्कु-बड़ी दया का; पिन्नुत्त इल्-जन्मस्थान; आयित्तान्-जो रहे; वार् अळित्तु-बड़े प्रेम का पात्र; इळ मा पिडि वाय् इटै-छोटी आयु की बड़ी हथिनी के मुख में; कार् अळि-काले भ्रमरों के; कलुळ-तितर-वितर भागते; करुम् कै मलै-काले करि को; नीर् अळिप्पतु-जल पिलाते हुए; नोक्कित्तन्-देखते हुए (श्रीराम) निन्नन्नन्-खड़े रहे । ३४

श्रीराम बड़ी दया के जन्मस्थान थे । उन्होंने एक दृश्य देखा । एक काला हाथी अपनी सूँड़ से जल लेकर अपने गहरे प्रेम का पात्र, हथिनी के मुख में डाल रहा था । तब काले भ्रमर चकित होकर उड़ रहे थे । श्रीराम ने यह दृश्य देखा तो वे स्तब्ध खड़े रह गये । ३४

आण्डव् वळ्ळलै यन्बैन्नु मारणि, पूण्ड तम्बि पौळ्ळु कळिन्ददाल्
ईण्डि रुम्बुन रोय्न्दुन् त्रिशैयैन्, नीण्ड वन्गळ् डाळ्नेडि योयैन्नान् 35

आण्डु-तब; अन्नपु अँनुम्-प्रेम नाम का; आर् अणि पूण्ड-अपूर्व आभरण-धारी; तम्बि-अनुज (ने); अ वळ्ळलै-उन उदार प्रभु को; पौळ्ळु कळिन्नुत्तु आल्-(दिन का) समय बीत गया, इसलिए; नैटियोय्-बड़े हुए (या बड़े यशस्वी); ईण्डु-यहाँ; इरुम् पुत्तल् तोय्न्दु-इस बड़े जलाशय में स्नान करके; उन् इच्चै अँत्त-आपकी कीर्ति के समान; नीण्डवन्-लम्बे (सर्वव्यापी); कळल् ताळ्-(श्रीमन्नारायण) के चरणों की पूजा करें; अँनुन्नान्-कहा । ३५

तब प्रेम रूपी उत्तम आभरणधारी लक्ष्मण ने उदार प्रभु श्रीराम से विनय की कि दिन बीत गया। सन्ध्या आ गयी। इसलिए, हे लम्बे (श्रीशरीर के या) यश के धारक ! यहाँ इस जलाशय में स्नान करें और आपके यश के समान सर्वत्र व्याप्त श्रीमन्नारायण की चरण-वन्दना करें। ३५

अरञ्चु मव्वळि नित्तरि देहियत्, तिरैशैय् तीरूत्तमुञ् जैय्दव मुण्मैयाल्
वरैशैय् मामद वारण नाण्ड, विरैशैय् पूम्बुन लाडलै मेयित्तान् 36

अरञ्चुम्-राजा राम ने भी; अ वळि नित्तरु-वहाँ से; अरितु एकि-सायास जाकर; अ तिरै चैय् तीरूत्तमुम्-उस तरंगसंकुल सर के जल की; चैय् तवम्-की हुई तपस्या; उण्मैयाल्-रही, इसलिए; वरै चैय्-पर्वत-सम; मा मत वारणम्-बहुत मदस्त्रावी हाथी की भी; नाण्ड उड-लजाते हुए; विरै चैय् पूम् पुत्तल्-सुवासपूर्ण पुरुषों से भरे जल में; आडलै-स्नान में; मेयित्तान्-प्रवृत्त हुए। ३६

राजा राम भी वहाँ से सायास सर के पास गये। तरंग उठानेवाले उस सरोवर के जल का सुकृत था। इसलिए श्रीराम ने उसमें स्नान करना अपनाया। तब पर्वताकार और मदस्त्रावी गज भी उनको देखकर लजा गया। ऐसा उन्होंने स्नान किया। ३६

नीत्त नीरि नैडियवन् मूळ्हलुम्, तीत्त कामत् तैरुहदित् तीयित्तान्
काय्त्ति रुम्बैक् करुमहक् कम्मियन्, तोयत्त तण्बुन लीत्तदत् तोयमे 37

नैडियवन्-लम्बोतरे; नीत्तम् नीरिल्-उस बड़े प्रवाह के सर के जल में; मूळ्हलुम्-(श्रीराम ने) जब स्नान किया; तीत्त-तब उनके शरीर को ताप देनेवाले; कामम्-विरह की; तैरु कतिर् तीयित्तान्-जलती ज्वाला की अग्नि के कारण; अ तोयम्-वह जल; करुमक् कम्मियन्-लोहार; इरुम्पै काय्त्तु-लोहे को तपाकर; तोयत्त-(जिस जल में) डुबोया; तण् पुत्तल्-उस ठण्डे जल के; लीत्तदत्-समान बन गया (गरम हो गया)। ३७

जब लम्बे क्रद के श्रीराम ने उस जल में स्नान किया, तब उनके शरीर को तपानेवाली विरहाग्नि ने उस जल पर अपना प्रभाव दिखाया। जब लुहार लोहा तपाकर ठण्डे जल में डालता है, तब वह जल गरम हो जाता है। वैसे ही उस सर का जल भी गरम हो गया। ३७

आडित्ता	तन्नमा	यरुमडैहळ्	पाडित्तान्
नीडुनीर्	मुत्तैन्	नैरिमुडैयि	नेमिताळ्
शूडित्तान्	मुत्तिवरत्	तीळ्ळुपूज्	जोलैवाय्
माडुतान्	वैहिता	नैरिहदित्	वैहित्तान् 38

अन्तमाय्-हंस का रूप लेकर; अरु मडैकळ्-अपूर्व वेदों को; पाडित्तान्-जिन्होंने गाया; मुत्तै नूल् नैरि मुडैयिन्-(उन श्रीराम ने) प्राचीन शास्त्रों की बतायी विधि के

अनुसार; नीट्ट नीर्-आदितान्-विस्तृत जलाशय-में स्नान-करके; त्रेमिताळ चूदितान्-ब्रह्मधर (विष्णु)-देव के चरणों की; चूदितान्-वन्दना की; मुनिवर तौळतु-मुनियों की पूजा-करके; पूम्-चोले-वाय्-एक-बगीचे में; मादुतान्-एक-ओर; वैकितान्-ठहरे; और कतिर्-जलानेवाला सूर्य भी; वैकितान्-अस्त-हुआ । ३८

श्रीराम विष्णु के अवतार थे । विष्णु ने एक बार हंस का अंशान्तार लेकर ब्रह्मा को वेद गाकर सिखाये थे । उन्होंने पम्पा सर में प्राचीन शास्त्रोक्त रीति से स्नान करके श्री ब्रह्मधर नारायण के चरणों की पूजा की । फिर वहाँ के मुनियों को नमस्कार करके वे एक बगीचे में गये । उसमें एक ओर ठहरे । तब किरणमाली भी अस्त-हुआ । ३८

अनूदियाळ	वनुदुता	ननुहवे	प्रवयिन्
शन्दवार	कौङ्गैया	डनिमैता	नायहन्
शिन्दिया	नौन्दुतेय्	पौळुदवण्	शौदनीर्
इन्दुवा	नुन्दुवा	नैरिहदि	रायितान् 39

अनूदियाळ-सन्ध्यादेवी; वनुतु-आकर; अणुकवे-निकट पहुँची; अ वयिन्-तब; नायकन्-नायक; वनुत-सुन्दर; वार्-अँगियाबद्ध; कौङ्गैयाळ-स्तनों वाली सीताजी का; तनिमैतान्-अकेलापन; चिन्दिया-सोचकर; नौन्दु-दुःख से; तेय् पौळुतु-जब विगलित हुए, तब; अवण्-वहाँ; चीत नीर्-(समुद्र के) शीतल जल की; वात् उनुतवान्-आकाश में उछालनेवाला; इन्दु-चन्द्र; और कतिर्-तापक-सूर्य (-सा); आयितान्-वन-गया (श्रीराम के लिए) । ३९

सन्ध्यादेवी आ पहुँची । तब श्रीराम को सीतादेवी का स्मरण आया । नायक श्रीराम सुन्दर अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीताजी का निस्सहाय एकाकीपन स्मरण करके दुःखी हुए । दुःख से कृश-होते लगे । तब चन्द्र उदित हुआ । वह शीतल-समुद्र-जल को आकाश-तक उछालने वाला है । पर श्रीराम के लिए वह जलानेवाले सूर्य के समान बहुत गरम लगा । ३९

पूवौडुङ्	गितविरवु	पुळ्ळौडुङ्	गितपौरविल्
मावौडुङ्	गितमरनु	मिलैयौडुङ्	गितकिळिहळ्
नावौडुङ्	गिनमयिल्ह	णडमौडुङ्	गितकुयिल्हळ्
कूवौडुङ्	गितपिळिह	कुरलौडुङ्	गितकळिह 40

पू औटुङ्कित-फूल बन्द हुए; विरवु-अनेक प्रकार के मिश्रित; पुळ्-पक्षी; औटुङ्कित-(जाकर) डुबक गये; पौरवु इल्-उपमाहीन; मा औटुङ्कित-प्राणी छिप-गये; मरनुम् इलै औटुङ्कित-तरुओं के पत्ते भी संकुचित हो गए; किळिकळ्-शुकों की; तान-जिह्वाएँ; औटुङ्कित-बन्द हो गयीं; मयिल्कळ्-मोरी का; नटम्-नाच; औटुङ्कित-बन्द हुए; कुयिल्कळ्-कोयलों की; कू-कूँ; औटुङ्कित-

बन्द हुए; कल्लिङ्ग-पुरुषगजों के; पिळ्ळिङ्ग-कुरल-चिघाड़ने की ध्वनियाँ; ओट्टुङ्कित-बन्द हो रहीं। ४०

रात का आगमन हो गया। इसलिए उस सर के फूल सब बन्द हो गये। विविध तरह के पक्षी अपने-अपने घोंसलों में जाकर दुबक गये। उपमाहीन अनेक जानवर जाकर अपने-अपने स्थानों में बन्द हो गये। बड़े पेड़ों के पत्ते बन्द हुए। शुकों की बोली, मोरों का नाच, कोयलों की कूकें, हाथियों की चिघाड़ — सब बन्द हो रहीं। ४०

मण्डुयिन्	इत्तनिलैय	मलैतुयिन्	इत्तमरुविल्
पण्डुयिन्	इत्तविरवु	पन्नितुयिन्	इत्तपहरम्
विण्डुयिन्	इत्तहळुदुम्	विळ्ळिदुयिन्	इत्तपळ्ळदिल्
कण्डुयिन्	इल्लनैडिय	कडरुयिन्	इवौरुहळिङ्ग 41

मण् तुयिन् इत्त-पृथ्वी के सब सो गये; निलैय-मलै-अचल पर्वत; तुयिन् इत्त-सोये; मरु इल्-निर्मल; पण्-जलाशय; तुयिन् इत्त-सो गये; विरवु पत्ति तुयिन् इत्त-व्याप्त हिम भी सो गया; पकरम् विण्-(बड़ा) कहलानेवाला आकाश भी; तुयिन् इत्त-निःशब्द हुए; कळुतुम्-भूतगण ने भी; विळ्ळि तुयिन् इत्त-आँखें मूँद लीं; नैटिय कटल्-विशाल (क्षीर-)सागर पर; तुयिन् इत्त ओरु कल्लिङ्ग-निद्रा करनेवाले अप्रतिम हाथी, श्रीराम; पळ्ळुतु इल्-निर्मल; कण् तुयिन् इल्लिन्-आँखें मूँदकर नहीं सोये। ४१

पृथ्वी, अचल पर्वत, निर्मल जलाशय, सर्वत्र व्याप्त हिम, गौरवान्वित आकाश — सभी निःशब्द हो गये। भूतों ने भी आँखें मूँद लीं। पर क्षीर-सागर पर निद्रा करने के आदी जोये, गजश्रेष्ठ-तुल्य उन श्रीराम ने अपनी निर्मल आँखें नहीं मूँदीं। ४१

पौङ्गिमुर्	इयवुणर्वु	पुणरदलुम्	पुहैयिनीडु
पङ्गमुर्	इत्तैयविन्	परिवरुम्	वडिमुडिविल्
कङ्गुलिङ्	इदुकमल	मुहमेडुत्	तदुकडलिल्
वैङ्गदिरक्	कडवुळ्ळ	विमलन्वैन्	दुयिरिनेळ 42

मुर् इय उणर्वु-पूर्णज्ञान; पौङ्किं पुणरत्तलुम्-प्राप्त होने पर; पुहैयिनीडु-धुएँ के साथ; पङ्कम् उर् उर् अतैय-पंक मिल गया हो, ऐसा; विन्-उसके कर्म; परिवु उरुम्पटि-जैसे नष्ट होते हैं, वैसे; मुटिवु इल्-अनन्त रीति से, लम्बी रही; कङ्कुल्-रात; इर् इत्तु-समाप्त हुई; कटलिल्-समुद्र पर; वैम् कतिर्-गरम किरणों के; कटवुळ् अळ-(सूर्य-)देव उठे; विमलन्-विमल प्रभु को; वैम् तुयिरिन् अळ-कठोर (बिरह-)दुःख से मुक्त कराने के लिए; कमलम्-कमल; मुक्कम् अट्टुत्तु-विकसित हुए। ४२

जैसे-तैसे अनन्त लगनेवाली वह रात ऐसे बीती, जैसे सम्पूर्ण ज्ञान के प्राप्त होने पर धुएँ और पंक के मिश्रण के समान रहनेवाला कर्म (पाप) मिट

जाता है। समुद्र से उष्णकिरण सूर्यदेव उगे। कमल भी विमल विष्णुदेव श्रीराम के दुःख के निवारणार्थ विकसित हुए। ४२

कालेये	कडिटुनैडि	देहिनार्	कडल्कविनु
शोलयैय्	मलैतळुवु	काननी	णैडित्तोलैय
आलयेय्	तुळुन्नियह	नाडरार्	कलियमिळ्दु
पोलवे	युरंशैय्पुत	मानैत्ता	डुदल्पुरिजर् 43

आलै एय् तुळुत्ति-इक्षुशालाओ से निकलनेवाली ध्वनि से भरे; अकल् नाटर्-(और) विशाल (कोसल) देश के वे; आर् कलि अमिळुतु पोलवे-शब्दायमान सागर से उत्पन्न अमृत के ही समान; उरै चैय्-बोलनेवाली; पुत मातै-वनमृगी (-सी सीताजी) को; नाटुतल् पुरिजर्-खोजने में प्रवृत्त हो; कटल् कवितुम्-समुद्रतुल्य; चोलै एय्-उपवनों से पूर्ण; मलै तळुवुम्-पर्वतों से मिलित; कानल् नीडि-कंकड़ीले और लम्बे मार्ग; तौलैय-तय करने के विचार से; कालेये-सवेरे ही; कडिटु-सवेग; नैडितु-बहुत दूर; एकितार्-गये। ४३

इक्षुशाला से उत्पन्न ध्वनि वाले विशाल कोसल देश के स्वामी दोनों क्षीरसागरोत्पन्न अमृत के समान बोलनेवाली वनमृगी-सी सीतादेवी को, खोजने के हेतु सवेग जाने लगे। उन्हें समुद्र-सम विशाल उपवनों से भरे और पर्वत-मिलित कंकड़ीले मार्ग तय करने थे। इसलिए वे उदयकाल में ही बहुत जल्दी-जल्दी बहुत दूर चले गये। ४३

2. अनुमप् पडलम् (हनुमान पटल)

अँय्तिन्नार्	शवरिनैडि	देयमाल्	वरैयैळिदित्
नौय्दिने	डित्तदत्ति	नोन्मैहूर्	कवियरशु
शैय्वदोर्	हिलत्तिवर्ह	डैव्वरा	मैत्तवैरुवि
उय्दुना	मनविरेवि	नोडित्तान्	मलैमुळैयित् 44

अँय्तिन्नार्-(वंसे जो) गये; चवरि नैडितु एय्-शवरी से साफ़ निर्दिष्ट; माल् वरै अतत्तिल्-बड़े पर्वत पर; अँळितित्-अनायास; नौय्तिन्-शीघ्र; एडितर्-चढ़े; नोन्मै कूर्-क्षमाशील; कवि अरचु-कपिराज (सुग्रीव); इवर्कळ्-ये; तैव्वर् आम्-शत्रु हैं; अँत्त वैरुवि-ऐसा डरकर; चैय्वतु ओर्किलन्-क्या करना, यह न जान कर; नाम् उय्त्तुम् अँत्त-हम वच जायँ, यह सोचकर; मलै मुळैयितिल्-पर्वतगुफा में; विरेवित् ओडित्तान्-शीघ्र भागा। ४४

ऐसे जो गये, वे दोनों शवरी द्वारा साफ़ निर्दिष्ट ऋष्यमूक पर्वत पर अनायास और शीघ्रता से चढ़ते चले। उस पर कपिराज सुग्रीव बैठा था। वह क्षमा के साथ उस पर्वत पर रहता था। उसने इन दोनों को देखा तो डर गया कि ये धनुर्धर वीर शत्रु ही हैं। अब क्या करना होगा

—यह न जानता हुआ वह 'हम बच जायँ' —इस विचार से पर्वत की गुफा की ओर भागने लगा । ४४

कालिन्मा	मदलैयिवर्	काण्मिन्नो	करुवुडैय
वालिये	वलित्त्वरवि	नार्हडाम्	वरिशिलैयर्
नीलमाल्	वरैयनैयर्	नीदियाय्	निनैदियैन्
मूलमोर्	हिलन्मरुहि	योडित्तान्	मुळैयदत्तिन् 45

कालिन् मा मतलै—पवनदेव के श्रेष्ठ पुत्र; इवर् काण्मिन्—इनको देखो; वरि चिलैयर्—सबन्ध धनुर्धर; नील माल् वरै अतैयर्—नीले, बड़े पर्वत से तुल्य हैं; कड उडैय—वर रखनेवाले; वालि एवलित्—वाली की प्रेरणा से; वरविनार्कळ् ताम्—आनेवाले हैं अवश्य; नीतियाय्—नीतिज्ञ; नितैति—सोचो; अँत—कहकर; मूलम्—हेतु; ओर्किलित्—न जानकर; मरुकि—घबड़ाकर; मुळै अततिल्—उस गुफा के अन्दर; ओडित्तान्—दौड़ा । ४५

तब उसने हनुमान से कहा कि पवनदेव के महान पुत्र ! इनको निहारो । सबन्ध धनुर्धर, नील पर्वत—सम दृश्यमान —ये अवश्य वैरी वाली की प्रेरणा से ही (हमें तंग करने) आये हैं । नीतिज्ञ मारुति ! तुम खूब सोचो ! ऐसा कहकर उनके आगमन का हेतु न समझ सकने के कारण घबड़ाहट में पड़कर गुफा के अन्दर भाग गया । ४५

अव्विडत्	तवर्म्मरुहि	यज्जिनेञ्	जळियमैदि
वैव्विडत्	तिनैम्मरुहु	तेवर्त्ता	तवर्र्वैरुवत्
तव्विडत्	तनियरुळुन्	दाळ्शडैक्	कडवुळैन्
इव्विडत्	तिनिदिरुमि	नज्जलैन्	डिडैयुदवि 46

अ इटत्तु—वहाँ; अवर्—वे; मरुकि अञ्चि—घबड़ाते हुए डरकर; नैञ्च अळि अमैति—(जब) चित्ताक्रान्त रहे, तब; वैम् विटत्तितै—(सागर-मन्थन के समय प्रकट हुए) भयंकर विष को देखकर; मरुकु—जो घबड़ाए; तेवर् तान्तवर् वैरुव—वे देव और दानव भयभीत हुए, तब; तव्विट—डर दूर करने; तति अरुळुम्—जिन्होंने अपूर्व कृपा की; ताळ् चटै कटवुळ् अँन्—उन प्रलम्ब जटाधारी शिवदेव के समान; इ इटत्तु—यहाँ; इतितु इरुमिन्—सुख से रहें; अञ्चल्—नहीं डरें; अँन्नु—ऐसा; इटै उतवि—बीच में सहायता करके (कहकर) । ४६

उस पर्वत पर सुग्रीव आदि वानरवीर घबड़ाहट के साथ भयातुर हुए । तब सागर-मन्थन के अवसर पर भयंकर विष से भयभीत देवों व दानवों की सहायता में जिन्होंने उसको खाकर कृपा की, उन प्रलम्ब जटाधारी शिवजी के समान हनुमान उठा । उसने उनको आश्वासन प्रदान किया कि यहीं सुख से रहें । भय मत करें । ४६

अञ्जनैक्	कौशिशिवः	नञ्जत्तक्	किरियनैयः
मञ्जनैक्	कुरुहियौर	माणिनः	पडिवमोडुः
वैञ्जिनत्	तौळिलरुतव	मैय्यर्कैच्	चिलैयैरत्
नैञ्जयिरुत्	तयन्मरैयः	निन्नूकः	पिनिनिनैयुम् 47

अञ्जनैक्कु और चिरुपन्-अंजना का अप्रतिम पुत्र हनुमान; और नल् माणि-एक श्रेष्ठ ब्रह्मचारी के; पडिवमोडु-रूप में; अञ्जत्तम् किरि अन्त-अंजनगिरि-तुल्य; मञ्जत्तै-कुन्दर-श्रीराम के; कुरुकि-पास आकर; अयल् मरैय-निन्नू-अलग अवश्य खड़े होकर; वैच् चित्त तौळिलरु-मयंकर क्रोधी कर्मरत; तव मैय्यर्-तपस्वी वेश के शरीर वाले; कै चिलैयै-हाथ में धनु लिये हुए; अन्त-यह देखकर; नैञ्च् अधिर्त्तु-मन-में संका करके; कर्पितित्तु-विद्वत्ता का आधार लेकर; निन्नैयुम्-विचार करके लिया। ४७

यह कहकर अंजना के अप्रतिम पुत्र ने एक उत्तम ब्रह्मचारी का वेश लिया। वह अंजनगिरि-तुल्य श्रीराम के पास आया, छिपा खड़ा रहा। के क्रोध से कार्य करनेवाले लगते हैं। पर उनका तपस्वी का वेश है। और हाथ में धनु रखते हैं। यह देखकर हनुमान निश्चय नहीं कर सका कि ये कौन हैं। उसके मन में संशय पैदा हुआ। तब वह अपनी विद्वत्ता से प्राप्त ज्ञान के आधार पर सोचने लगा। ४७

देवरीप्	परुतलैव	रामुदः	इवैरैन्निः
मूवर्मः	इवरिरुवर्	मूरिविः	कररिवरै
यावरीप्	पवरुलहिन्	यादिवर्कः	करियपौरुळ्
केवलत्	तिवर्निलैमै	तेर्वर्दैक्	किल्लमैकोडु 48

अपु-अव-उपमाहीन; तेवर् तलैवर्-आम्-देवों के प्रधान; मुतल् तेवर् अत्ति-अविदेव हैं तो; अवर् मूवर्-वे तीन हैं; इवर् इरुवर्-ये तो दो हैं; मूरि विल् कर-बलवान धनु के धारक हैं; उलकिल्-संसार में; इवरै ओप्पवर्-इनकी समानता करनेवाले; यारै-कौन है; इवर्कु-इनके लिए; अरिय-असाध्य; पौरुळ् यातु-परार्थ क्या है; केवलत्तु इवर् निलैमै-अपूर्व-इनकी स्थिति; अ किल्लमै-कोट्ट-किसके नाते से; तेर्वतु-जाना जायगा। ४८

ये अनुपमा देवों के प्रधान विदेव नहीं हो सकते। क्योंकि वे तीन हैं। ये तो दो ही हैं। इनके हाथ में कठोर धनु है। संसार में इनकी टक्कर का कौन मिल सकता है? ये खोजते फिरें, ऐसी इनके लिए असाध्य वस्तु क्या हैं? निपट अद्वितीय इनका समाचार किस नाते से जाना जायगा? ४८

शिन्दैयिः	चिरिदुदुयः	शेर्वुत्तः	तैरुमरलिन्
नौन्दयर्त्	तन्नैन्निः	नोवुरुञ्	जिरियरल्

अनृदरत्नं तमररुशिरु मातिडम् पडिवरुमयर्
 शिन्दतैक् कुरियपौरु डेडुदरु कुरुनिलैयर् 49

चिन्तैयिल्-मन में; चिरितु तुयर्-थोड़ी ग्लानि; चेरुवुडरु-उठी, इसलिए;
 तैरुमरुवित्तु-उस गड़बड़ी में; तौनुतु अयर्ततत्तरु-पीड़ित होकर थके हैं; अन्तिनुम्-
 तो भी; नोवु उरुम्-अभिभूत होनेवाले; चिरियर् अलर्-शक्तिहीन नहीं हैं;
 अनृतरत्तु अमरर्-आकाश के अमर; चिरु मातिट पडिवर्-छोटे मानव रूप में आये
 हैं; मयर्-मोहक; चिन्ततैक्कु उरिय-चिन्ता योग्य; पौरुळ्-पदार्थ कोई;
 तेदुतडुक्कु उरु-खोजने में प्रवृत्त; निलैयर्-स्थिति वाले हैं । ४६

उनके मन में थोड़ी ग्लानि अवश्य हुई है । घबड़ाहट से ये अवश्य
 कुछ क्षलांत हैं । तो भी बिल्कुल अभिभूत हो जायें, ऐसी ओछी प्रकृति या
 शक्ति के भी नहीं हैं । इसलिए आकाशवासी अमर देव ही कम महत्त्व
 के मानवी रूप लेकर आये हैं । उनके मन को मोहनेवाली और चिन्ता के
 योग्य किसी वस्तु की खोज में लगे रहनेवाले से लगते हैं । ४९

इवरुममुन् इहवुमिवै ततमैतुम् दहैयरिवर्
 करुममुम् पिडिदोर्पौरुळ् करुदियन् इडुकरुदिन्
 अरुमरुन् दतैयैदिडै यळिवुवन् दुळददत्तै
 इरुमरुड् गितुनेडिडु तुरुवुहिन् रतरिवरुहळ् 50

इवर्-ये; तरुममुम् तक्वुम् इवै-धर्म और शालीनता इनको; ततम् अंतुम्-धन
 माननेवाले; तकैयर्-स्वभाव के हैं; करुममुम्-मनोरथ (कार्य) भी; पिडितु ओर्-पौरुळ्-
 दूसरी वस्तु; करुति अतुळ्-चाहकर नहीं; अतु करुतित्तु-उसको सोचें, तो; इवरुळ्-
 ये; अरु मरुन्तु अंतैयतु-उत्तम देवामृत-सम; इटै अळिवु वन्तु उळुतु-(कुछ) बीच
 में खो गया है; अततै-उसको; इरु मरुड्कितुम्-(दायें, बायें) दोनों ओर; नेटितु-
 बहुत दूर तक; तुरुवुक्तिउत्तरु-(छानकर) खोजते हैं । ५०

ये धर्म और शौर्य को धन माननेवाले लगते हैं । इनके मनोरथ का
 कार्य भी किसी अन्य वस्तु की चाह का नहीं लगता । देवामृत-सा कोई
 पदार्थ बीच में खो गया है । उसको वे दायें और बायें बहुत दूर तक
 खोजते आते हैं । ५०

कदमैतुम् पौरुण्मैयिलर् करुणैयिन् कडल्लनैयर्
 इवमैनुम् पौरुळ्ळदी रियल्बुणर्न् दिलस्विरुहळ्
 शवमत्तञ् जुशुनिलैयर् तरुमत्तञ् जुशुशरिवर्
 मवत्तनञ् जुशुवडिवर् मरुलियञ् जुशुविडलर् 51

कतम् अंतुम् पौरुण्मै इलर्-वैरी स्वभाव के नहीं हैं; करुणैयिन् कटल् अतैयर्-
 करुणा के सागर के समान है; इतम् अंतुम् पौरुळ् अलतु-हितार्थ से इतर; इवरुळ्-
 ये; ओर्-इयल्पु-एक गुण; उणर्न्तिलर्-नहीं जानते (रखते); त्वतम् अन्तुम् अन्तुम्-
 शतमख भी डरे; निलैयर्-ऐसे शानदार; तरुमन् अन्तुम्-धर्मदेवता भी डरे, ऐसे;

चरितर्-चरित्र वाले; मततन्-मन्मथ; अञ्चुड-डरे, ऐसा; वटिवर्-सौंदर्यवान्;
मडलि-यम भी; अञ्चुड-डरे, ऐसा; विडलर्-पराक्रमी । ५१

ये वीर रखनेवाले लोगों का-सा क्रोध नहीं रखते । करुणा के समुद्र के समान हैं । परहित को छोड़कर कोई दूसरा अर्थ चाहनेवाले स्वभाव के नहीं लगते । इन्द्र भी इनका पौरुष देखकर डरेगा । धर्मदेवता भी इनका चरित्र देखकर डरेगा । मदन इनका रूप देखकर डरेगा । यम भी डरे ऐसी वीरता के है ये । ५१

अँन्वन्न	पलवु	मँण्णि	यिरुवरै	यैय्द	नोक्कि
अन्वित्त	नुरुहु	हिन्ऱु	वुळ्ळत्त	नार्वत्	तोरै
मुन्ऱिरिन्	दत्तैयर्	तम्मै	मुत्तिता	नैन्	निन्ऱान्
तन्ऱैरुड्	गुणत्ताऱ्	ऱुन्नैत्	तानल	दौप्पि	लादान् 52

तन् पँरुम् कुणत्ताल्-अपने महान् गुणों के कारण; तन्ऱै तान् अलतु-आपकी आपको छोड़; औपु इलात्तान्-उपमा नहीं रखनेवाले; अँन्पत्त पलवुम्-ऐसे अनेक; अँण्णि-विचार करके; इरुवरै-दोनों के; अँय्त् नोक्कि-समीप जाने का निश्चय करके; अन्पितोडु-प्रेम के साथ; उरुकुकिन्ऱु-पसीजनेवाले; उळ्ळत्तन्-मन का; आरवत्तोरै-प्रियों से; मुन्ऱिऱित्तु-पहले अलग होकर; अत्तैयर् तम्मै-उनसे; मुत्तितात्-मिले; अँन्त-जैसे; निन्ऱान्-खड़ा रहा । ५२

अपने उन्नत गुणों के कारण अपने आप को छोड़ कोई दूसरी उपमा न रखनेवाले हनुमान ने इस तरह अनेक प्रकार से सोचकर उनके पास जाना चाहा । प्रेमातँ मन के साथ विछोह के बाद पुनः प्रियों से मिलनेवाले के समान उनके सामने खड़ा रहा । ५२

तन्गन्ऱु	कण्ड	वन्	तन्मैय	तरुहट्	पेळ्वाय्
मिन्गन्ऱु	मँयिऱुक्	कोण्मा	वेङ्गैयैन्	ऱिन्नैय	वैयुम्
पिन्ऱैन्ऱु	कादल्	कूरप्	पेळ्ऱ्हणित्	तिरड्गु	हिन्ऱु
अँन्गन्ऱु	हिन्ऱु	वँण्णिऱ्	पऱ्पल	विवरै	यम्मा 53

तऱ्ऱुक्कण्-निर्भयता; पेळ् वाय्-(और) खुला (बड़ा) मुख; मिन् कन्ऱुम्-बिजली को विह्वल करनेवाले; अँयिऱु-दाँत, इनसे युक्त; कोळ् मा-सिंह; वेङ्क्-व्याघ्र; अँन्ऱु इत्तैयवैयुम्-कथित ये भी; तन् कन्ऱु कण्डु अन्त-अपने वस्त्रों को देखा हो, ऐसे; तन्मैय-(वात्सल्य-)गुण के होकर; पिन्ऱु चैन्ऱु-उनके पीछे जाकर; कातल् कूर-प्रेमाधिक्य के साथ; पेळ्ऱ्हणित्तु-आँखें मँदकर; इरुक्कुकिन्ऱु-अनुताप दिखाते हैं; इवरै-इन्हें; पल्पल अँण्णि-अनेक प्रकार से मानकर; अँन् कन्ऱुकिन्ऱु-क्यों अनुताप करते हैं; अम्मा-हाय री माँ । ५३

(हनुमान ने और भी देखा ।) बिजली को भी मात देनेवाले रूप से प्रकाशमय दाँतों वाले अपने मुख खोले सिंह और व्याघ्र आदि सहस्र

जानवर भी उनको अपने वत्सों को जैसे वात्सल्य के साथ देखते और आँखें मूँदकर रंज प्रकट करते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक प्रकार से सोचकर ये क्यों ऐसे रंज दिखाते हैं ? । ५३

मयिन्मुदत् पडवै यैल्ला मणिनिडत् तिवरुदम् मेति
वैयिलुड् किरड्गि मोदाय विरिशिड् पन्दर् नीड्गा
इयल्वहुत् तैयु हित्त् वित्तमुहिर् कणड्ग लैड्गुम्
पयिल्वुड् तिवलै शिन्दिप् पयप्पयत् ताळुम् पाड्गर् 54

मयिल् मुतल्-मयूर आदि; पडवै अल्लाम्-खग सब; मणि निडत्तु-मनोरम रंगों के; इवर् तय् मेति-इनके श्रीशरीर पर; वैयिल् उड्कु-धूप पड़ेगी, इसकी; इरड्कि-चिन्ता करके; मीतु आय्-इनके ऊपर जाकर; विरि चिरै-खुले पंखों का; पन्तर् नीड्का-वित्तान न छोड़े, इस तरह; इयल् वकुत्तु-सुन्दर ढंग से रचना करके; अय्तुकिन्तु-इनके साथ जाते हैं; इत्त मुक्किल् कणड्कळ्-श्रेष्ठ मेघों के समूह; अड्कुम्-सब स्थानों पर; पयिल्वु उड्-(इनसे) लगे रहकर; तिवलै चिन्ति-बूँदें गिराते हुए; पय पय-धीरे-धीरे; पाड्कर-इनके समीप; ताळुम्-नीचे-नीचे जाते हैं । ५४

इन सुन्दरवर्ण वीरों के शरीर पर धूप लगती देखकर मयूर आदि पक्षी दुःखी हैं। वे इनके ऊपर अपने पंख फैलाकर वित्तान-सा बनाये उनके साथ-साथ इस रीति से चलते हैं कि वे उस वित्तान के नीचे से अलग न हो जायें। श्रेष्ठ मेघवृन्द भी, ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ छोटी बूँदें गिराते हुए उनके साथ-साथ धीरे-धीरे जाते हैं। वे नीचे-नीचे ही जाते हैं । ५४

ॐ कायैरि कनलुड् गड्कळ् कळ्ळुडै मलरे पोलत्
तूयशैड् गमल पादन् दौय्दौड् गुळैन्नु तोन्नुम्
पोयित्त तिशैह डोरु मरन्नीडु पुल्लु मैल्लाम्
शाय्वुडुन् दौळुव पोलिड् गिवर्हळो दरुम मावार् 55

काय् अरि कनलुम्-जलती आग के समान तपनेवाले; कड्कळ्-कंकड़ आदि; तूय-पवित्र; चैम् कमल पातम्-लाल चरण-कमलों के; तोय् तौरुम्-लंगते-लगते; कळ् उटै मलरे पोल-मधु-भरे पुष्पों के समान; कुळैन्नु तोन्नुम्-मृदुल बन जाते हैं; पोयित्त तिचैकळ् तोरुम्-ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, उन सभी दिशाओं में; मरन् ओटु पुल्लुम् अल्लाम्-तरुओं के साथ घास आदि सभी; इड्कु तौळुव पोल्-इस ओर प्रणाम करते जैसे; चाय्वुडुम्-नत रहते हैं; तरुमम् आवार्-ये धर्ममूर्ति हैं; इवर्कळो-ये, क्या । ५५

(और भी विस्मयकारी बातों को देखता है हनुमान ।) कंकड़, जो जलती अग्नि के समान जलाते हैं, इनके पवित्र और लाल कमल-से चरण लगते हैं तो शहद-भरे फूलों के समान कोमल हो जाते हैं। वे जिन-जिन दिशाओं में जाते हैं, वहाँ रहनेवाले तरु, घास आदि पादप इन्हीं की ओर झुक जाते हैं, मानो वे इनको प्रणाम कर रहे हों । ५५

❖ तुन्विनैत् तौडक्कु मायत् तौल्विनै तुडैत्तु नौक्कित्
 तन्बुलत् तन्त्रि मीळा नैरियुक्कुन् देव रोताम्
 अन्बैतक् कुरुहु हिन्ऱु दिवर्हिन्ऱु दळविल् कादल्
 अन्विन्नुक् कवदि यिल्लै यडैवैन्गौ लरिद रेऱ्ऱेन् 56

तुन्पित्तै—कष्टों को; तौडक्कुम्—शृंखला में देनेवाले; माय तौल् वित्तै—माया-जन्त कर्म को; तुडैत्तु नौक्कि—पोंछ मिटाकर; तन् पुलत्तु अन्त्रि—दक्षिण में (यम) लोक न भेजकर; मीळा नैरि—आवर्त्तनहीन, मोक्षमार्ग में; उय्क्कुम्—पहुँचानेवाले; तेवरो ताम्—देव है क्या; अन्पु—हड्डियाँ; अन्कु—मेरी; उरुक्किन्ऱु—पानी हो जाती हैं; अळविल् कातल्—अपार स्नेह; इवर्क्किन्ऱु—उठता है; अन्पित्तुक्कु—प्रेम का; अवति इल्लै—ठिकाना नहीं रहता; अटैवु अन् कौल्—उपलब्धि क्या होगी; अरितल् तेऱ्ऱेन्—जान नहीं पाता । ५६

(हनुमान अनुभव करता है कि उसके तन-मन में एक अगाध दैवी प्रेम व्याप्त हो रहा है ।) आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दुःखों को शृंखला में देनेवाले है पूर्वकृत कर्म । उनका नाश करके, दक्षिण के यमलोक में जाने से वचाते हुए मोक्षलोक में, जहाँ से लौटना नहीं होता, पहुँचना हो तो आदि परमात्मा देवों की कृपा से ही वह साध्य है । (हनुमान पूछता है कि) क्या ये ही वे देव हैं ? वह कहता है कि मेरी हड्डियाँ जलप्राय हो रही है । अपार प्रेम उमड़ आता है । इनके प्रति उठनेवाले प्रेम का ठिकाना नही रहता । इसके फलस्वरूप क्या ही सौभाग्य जागने वाला है ? वह जान नहीं पाता । ५६

❖ इव्वळि यैण्णि याण्डव् विरुवरु मैय्द लोडुम्
 शैव्वळि युळ्ळत् तानुन् दैरिवुर् वैदिरैशैन् ईय्दिक्
 कव्वैयिन्ऱु शह नुङ्गळ् वरवैतक् करुण् योनुम्
 अँव्वळि नौङ्गि योय्नी यारैन् वियम्ब लुरैरान् 57

चैम् वळि उळ्ळत्तात्तुम्—नेकमार्गगामी मन के हनुमान (के) भी; इ वळि अँण्णि—इस तरह सोचकर; आण्डु—वहाँ; अ इरुवरुम्—उन दोनों के; मैय्दलोडुम्—आने पर; अँतिर् चैन्ऱु—सामने जाकर; तैरिवु उरु अँय्ति—प्रकट रूप से पास पहुँचकर; नुङ्गळ् वरवु—आपका आगमन; कव्वै इन्ऱु—अमंगलरहित (शुभ); आक—हो; अँन—कहने पर; करुण् योनुम्—कृपालु (के) भी; नौ—तुम; अँ वळि—कहाँ से; नौङ्कियोय्—आनेवाले हो; यार्—कौन; अँन—पूछने पर; इयम्पल् उऱैरान्—(हनुमान) बोलने लगा । ५७

हनुमान नेकमन था । वह इस तरह सोचता रहा । तब श्रीराम और लक्ष्मण उसके पास आ गये । हनुमान उनके पास प्रकट होकर उनके सामने जा खड़ा हुआ और अभिनन्दन-वचन बोला कि आपका आगमन अशुभहीन (शुभ) हो । कृपालु श्रीराम ने पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो और कौन हो ? हनुमान इसका उत्तर यों देने लगा । ५७

❖ मञ्जन्तु तिरण्ड कोल मेत्तिय महळिर्क् केल्लाम्
 नञ्जन्तु तहैय वाहि नळिरिरुम् बत्तिकुत् तेम्बाक्
 कञ्जमोत् तलरन्द शैय्य कण्णयान् काड्डिन् वेन्दर्
 कञ्जन्तु वयिड्डिल् वन्दे नाममु मनुम तैन्वेन् 58

मञ्जु अंत-मेघ-सम; तिरण्ड कोल-अधिक सुन्दर; मेत्तिय-शरीर वाले; महळिर्क्कु केल्लाम्-सभी स्त्रियों के लिए (जो आप पर दृष्टि डालती है); नञ्जु अंत-विष के-से; तहैय आकि-स्वभाव की बनकर; नळिर् इरुम् पत्तिकु-शीतल और कड़े हिम के साधने भी; तेम्पा-न मुरझानेवाले; कञ्चम् ओत्तु-कमल के समान; तलरन्त-विकसित; शैय्य कण्ण-लाल आँखों वाले; यान्-मैं; काड्डिन्-वेन्तर्कु-वायुदेव का; अञ्चन्त वयिड्डिल्-अंजना के गर्भ में; वन्तेन्-उत्पन्न हुआ (पुत्र) हैं; नाममु-नाम भी; अनुमन्-हनुमान; तैन्वेन्-कहा जाता हूँ । ५८

बहुत ही सुन्दर मेघवर्ण ! ऐसी आँखों वाले, जो सभी दर्शक स्त्रियों के लिए विष के समान हैं और शीतल ओस के पड़ने पर भी न मुरझाने वाले कमल के समान विकसित और लाल हैं ! मैं वायुदेव का अंजना के गर्भ से आया पुत्र हूँ । मेरा नाम हनुमान है । ५८

❖ इम्मलै यिरुन्दु वाळु मैरिहदिर्प् परिदिच् चैल्वन्
 शैम्मलुक् केवल् शैय्वेन् ऐवनुम् वरवु नोक्कि
 विम्मलुर् इतैया तेव वित्तविय वन्दे तैन्डान्
 अम्मलैक् कुलमुन् दाळ विशैशुमन् दैळुन्द तोळान् 59

इच्च चुमन्तु-कीर्ति धारण कर; अँ मलै कुलमुम्-किसी भी पर्वतकुल को; ताळ-नीचा दिखाते हुए; अँळुन्त तोळान्-उन्नत उठे कंधों वाले (हनुमान) ने; इ मलै-इस पर्वत पर; इरुन्तु वाळुम्-रहकर वास करनेवाले; मैरि कतिर्-गरम किरणों के; परिति-सूर्य के; चैल्वन्-प्यारे पुत्र; शैम्मलुक्कु-प्रभु (सुग्रीव) का; एवल् चैय्वेन्-आज्ञाकारी हैं; तेव-भगवान; नुम् वरवु नोक्कि-आपका आना देखकर; अतैयान्-उनके; विम्मल् उड्ड-घबड़ाकर; एव-प्रेरित करने पर; वित्तविय-पूछने के लिए; वन्तेन्-आया; तैन्डान्-कहा । ५९

किसी भी पर्वतकुल को मात देनेवाली रीति से उन्नत और कीर्तिभार-वाही कंधों के हनुमान ने आगे कहा कि इस पर्वत पर गरम किरण-माली सूर्यदेव का पुत्र वास कर रहे हैं । उनका मैं सेवक हूँ और उनकी आज्ञाएँ मान रहा हूँ । आपका आगमन देखकर वे घबड़ा गये । उनसे प्रेरित होकर मैं आपसे आपके सम्बन्ध में पूछने आया हूँ । ५९

❖ माड्डमः(ह) दुरैत्त लोडुम् वरिशिलैक् कुरिशिन् मैन्दन्
 तेड्डमुर् इवत्ति नूडुगुच् चैव्वियो रिन्मै तेडि
 आड्डलु निरैवुड् गल्वि यमैदियु मरिवु मैन्नुम्
 वेड्डुमै यिवन्तो डिल्लै यामैत्त विळम्ब लुड्डान् 60

माइरुम्-उत्तर; अःनु-वह; उरैतुलोटुम्-कहने पर; वरि चिले-सवन्ध धनु के; कुरिचिल् मैन्तु-चक्रवर्ती-कुमार; तेइरुम् उइरु-आश्वस्त होकर; इवत्तिन् ऊङ्कु-इससे बढ़कर; चैवियोरु इन्मै-श्रेष्ठ का अभाव; तेरि-निश्चित रूप से जानकर; आइरुलुम्-पराक्रम; निरैवुम्-गुणपूर्णता; कल्वि अमैतियुम्-विद्या से प्राप्त विनय; अरिवुम्-और ज्ञान; अँन्तुम्-आदि ये गुण; इवत्तोडु वेइरुम् इत्तल्ले आम्-इससे परे नहीं हैं; अँत्त-सोचकर; विळम्पल् उइरान्-(लक्ष्मण से) बोलने लगे । ६०

हनुमान ने यह उत्तर दिया तो सवन्ध धनुर्वर चक्रवर्तीतनय श्रीराम को विश्वास हो गया । इससे बढ़कर उत्तम कोई नहीं होगा । यह निश्चय हुआ । पराक्रम, गुणपूर्णता, विद्या से प्राप्त विनय और ज्ञान —ये विशेषताएँ इससे पृथक् नहीं होंगी । यह धारणा बना लेकर श्रीराम लक्ष्मण से यों बोले । ६०

ॐ इल्लाद बुलहत् तँडुगु मिङ्गिव निशैहळ् कूरक्
कल्लाद कलैयुम् वेदक् कडलुमे यँन्नुड् गाट्चि
शौल्लाले तोन्ऱिइरु इन्ऱे यार्कोलिच् चौल्लित् शैल्वन्
विल्लार्तो लिळैय वीर विरिञ्जन्नो विडैवल् लान्नो 61

इङ्कु-इस पृथ्वी में; इवैकळ् कूर-कीर्ति बढ़े, ऐसा; इवन् कल्लात-इसने जो नहीं सीखे; कलैयुम्-शास्त्र और; वेत कडलुम्-वेदों का सागर; उलकत्तु अँङ्कुमे-संसार में कहीं; इल्लात-नहीं होंगे; अँन्तुम्-इसका; काट्चि-प्रत्यक्ष प्रमाण; चौल्लाले तोन्ऱिइरु-इसके वचन से मिल जाता है; अन्ऱे-न; इ-यह; चौल्लित् चैल्वन्-वाग्देवी-पुत्र (वचनसमर्थ); यार् कोल्-कौन होगा; विल् आर् तोळ्-धनुधारी कन्धों के; इळैय वीर-छोटे वीर; विरिञ्जन्नो-विरंचि है; विटै वल्लातो-या ऋषभवाहन शिव हैं । ६१

धनुधारी भुजा वाले छोटे वीर ! इस संसार में ऐसे शास्त्र या वेद-सागर नहीं है, जो इसने नहीं सीखे हैं । इससे उसकी कीर्ति विवर्धित रहती है । उसके वचन इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण है । है न यह बात ? यह सरस्वतीपुत्र (भाषण-चतुर) कौन होगा ? ब्रह्मदेव होगा या ऋषभ-वाहन समर्थ शिवजी ही होगा ? । ६१

माणियाम् वडिव मन्ऱु मइरिवन् वडिव मैन्द्
आणियिव् बुलहुक् कैल्ला मैन्तल्ला मारुइरु केइरु
शैणुयर् परुमै तन्ऱैच् चिक्कउत् तँळिन्देत् पित्तुत्तरक्
काणुदि मैयुम्मै यँन्ऱु तम्बिक्कुक् कळरिक् कण्णन् 62

मैन्त-तात; इवन् वडिवम्-इसका सच्चा रूप; माणियाम् पटिवम् अन्ऱु-ब्रह्मचारी का रूप नहीं है; मइरु-फिर; इ-इस; उलकुक्कु अँल्लाम्-सारे संसार के लिए; आणि अँन्तल्लाम्-धुर कह सकते हैं; आइरुक्कु एइरु-इसके पराक्रम के

अनुरूप; चेण् उयर्-बहुत ही उत्कृष्ट; पेरुमै तन्नै-गौरव को; चिक्कु अर-
संशयहीन रीति से; तैल्लिन्तेन्-जान गया; पित्तर्-बाद; मेय्मै-सच्चाई;
काणुति-देखोगे; अन्न-ऐसा; तम्पिक्कु-भाई को; कण्णन्-सबके नेत्रस्वरूप
श्रीराम; कळ्ळि-कहकर । ६२

तात ! तुम जो ब्रह्मचारी का इसका वेश देख रहे हो, वह उसका
सच्चा रूप नहीं है । फिर वह इस सारे संसार का धुर है ! इसका पराक्रम
और उसके अनुरूप उसकी श्रेष्ठता — इनको मैं साफ पहचान रहा हूँ । तुम
भी बाद उसको देखोगे । यह लक्ष्मण से कहकर श्रीराम— । ६२

ॐ अव्वळि यिरुन्दान् शौत्तन् कविकुलत् तरशन् याङ्गळ्
अव्वळि यवन्नैक् काणु मरुत्तिथि नणुह वन्देम्
इव्वळि नित्तनै युर्ऱ्ऱ् वैमक्कुनिन् नित्तनै लन्त
शैव्वळि युळ्ळत् तान्नैक् काट्टुदि तैरिय वन्नान् 63

चौत्त- (तुमसे) उवत्त; कवि कुलत्तु अरचन्-कपिकुलाधिपति; अँ वळि
इरुन्तान्-किस स्थान पर रहते हैं; याङ्गळ्-हम; अ वळि-वहाँ (जाकर);
अवन्नै काणुम्-उनको देखेंगे (उनसे मिलेंगे); अरुत्तिथिन्-चाह के साथ; अणुक
वन्देम्-मिलने आये है; इ वळि-यहाँ; नित्तनै उर्ऱ्ऱ्-तुमसे मिलकर; वैमक्कु-
हमें; नित् इन् चोल् अनन्त-तुम्हारे ही मधुर वचन के समान; वैम् वळि उळ्ळत्तान्-
सीधे मन के उनको; तैरिय-परिचित कराते हुए; काट्टुति-दरसाओ; अन्नान्-
कहा । ६३

हनुमान से बोले । उक्त वानरराज कहाँ है ? हम उन्हीं को उधर
जाकर मिलने की उत्कंठा लेकर आये हैं । अब तुम हमें मिल गये हो ।
तुम्हारे मधुर वचन के समान ही मधुर-स्वभाव उनसे हमें मिला दो और
परिचय करा दो । उन्हें दरसाओ । ६३

मादिरप् पौरुप्पो डोङ्गि वरम्बिला वुलहिन् मर्ऱिप्
पूदरप् पुयत्तु वीरर् नुम्मीक्कुम् बुत्तिदर् यारे
आदरित् तवन्नैक् काण्डर् कणुहिनि रैन्ति नन्नान्
तीदवित् तरिदिर् चैय्द शैय्दवच् चैल्व नन्नै 64

मातिर पौरुप्पोट्टु-दिशाओं को घेरकर रहनेवाले (चक्रवाल गिरि) के साथ;
ओङ्कि-समान रूप से उन्नत; वरम्बु इला-निस्सीम; उलकिन्-लोक में; इ-
यहाँ के; पूतर पुयत्तु-भूधर-सम कन्धों के; वीरर्-वीर; नुम् ओक्कुम्-आपके
समान; पुत्तिर्-पवित्र पुरुष; यारे-और कौन हैं; अवन्नै काण्डर्कु-उनको देखने
के लिए; आतरित्तु-चाव के साथ; अणुकिर् अन्नित्तु-पधारें हों तो; अन्नान्-
वे; तीतु अवित्तु-पाप मिटाकर; अरितिल् चैय्त्त-कण्ट के साथ कृत; चैय्त्त
चैल्वम्-कर्तव्य तपस्या का धन; नन्नै-बड़ा अच्छा है ही । ६४

(हनुमान श्रीराम और लक्ष्मण से शिष्टता के साथ बोला ।) दिशाओं

को घेरते हुए चक्रवाल पर्वत जो है, उनके साथ-साथ और उतने ही उन्नत बड़े हुए भूधर-तुल्य कन्धों वाले वीर ! आपके समान पवित्र पुरुष दूसरे कौन होंगे ? यह बात है कि आप स्वयं उनसे मिलने की चाह लेकर पधारे हैं, तो पाप शान्त करते हुए उन्होंने जो कर्तव्य तपस्या की है वह भाग्य-धन निश्चय ही श्रेष्ठ है ! । ६४

इरवितन्	पुदल्वन्	रन्ने	यिन्दिरन्	पुदल्व	नैन्नुम्
परिविलन्	शीरप्	पोन्दु	परवरर्	कौरु	वनाहि
अरुवियड्	गुन्ऱि	नैम्मो	डिरुन्दन	नवन्बार्	चैल्वम्
वरुवदो	रमैविन्	वन्दोर्	वरैयिनुन्	वळर्न्द	तोळीर् 65

वरैयिनुम् वळर्न्द तोळीर्-पर्वतों से भी उन्नत कन्धों वाले; इरवि तन् पुतल्वन् तन्ने-रवि-कुमार पर; इन्तिरन् पुतल्वन् नैन्नुम्-इन्द्र के कुमार; परिवु इलन्-दयाहीन; चीड्-(वालि) के क्रोध करने पर; परवरर्कु ओरुवन् आकि-दुःखसंतप्त निस्सहाय एकाकी बनकर; अरुवि अम् गुन्ऱिल्-नदीसहित (ऋष्यमूक) पर्वत पर; पोन्नु-आकर; नैम्मोदु-हमारे साथ; इरुन्तत्तन्-रहते हैं; अवन् पाल्-उनके पास; चैल्वम् वरुवतु-संपत्ति आती हो; ओर् अमैविन्-ऐसी एक रीति में; वन्तीर्-आप पधारे हैं । ६५

भूधरों से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! रविसूनु सुग्रीव पर इन्द्र-पुत्र निर्दय वालि ने क्रोध दिखाया । सुग्रीव दुःखाक्रांत हुए । निस्सहाय और एकाकी बनकर वे सरिताओं से भूषित इस पर्वत पर आये और हमारे साथ (छिपे) रह रहे हैं । अब उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो जाय, ऐसा एक सन्दर्भ बनाते हुए आप पधारे हैं (या आप ही सम्पत्ति के समान पधारे हैं) । ६५

ओडुङ्गलि	लुलहम्	यावु	मुवन्दन	वुदवि	वेळ्वि
तौडङ्गिन्	मर्ऱु	मुर्ऱत्	तौल्लरन्	तुणिवर्	शान्ऱोर्
कौडङ्गुलप्	पहैअ	नाहिक्	कौल्लिय	वन्द	कूर्ऱे
नडुङ्गिनर्क्	कबय	नल्हु	मदनिन्	नल्ल	दुण्डो 66

चात्तुर्-श्रेष्ठ लोग; ओडुङ्गल् इल्-अक्षय; उलकम् यावुम्-सारे लोक में; उवन्तत्त-लोग जो चाहते हैं; उतवि-उनको वह देकर; तौडङ्कित वेळ्वि-आरब्ध यज्ञ आदि; मर्ऱुम्-अन्य कार्य; मुर्ऱ-पूरा करने के लिए; तौल् अरुम्-प्राचीन धर्म पर; तुणिवर्-दृढ़ रहेंगे; कुल कौटुम्-जीवकुल के भयंकर; पकैजन् आकि-शत्रु बनकर; कौल्लिय वन्त-मारने आये; कूर्ऱे-यम से; नडुङ्कितर्क्कु-भयभीत हुए लोगों को; अपयम्-अभय-प्रदान; नल्कुम् अतत्तिन्नुम्-करने के उस काम से; नल्लतु उण्टो-अधिक श्रेष्ठ हैं क्या । ६६

श्रेष्ठ लोग प्राचीन धर्मों का पालन इसलिए करते हैं कि वे अक्षय संसार में सबको उनके मांगे पदार्थ दान दें और अपने आरब्ध यज्ञादि शास्त्रविहित

कर्म पूरा करें। पर जीवकुल का शत्रु बनकर आनेवाले यम से भयभीत लोगों को अभयदान देने से बड़ा धर्म कोई हो सकता है क्या ? । ६६

अम्भैये	कात्ति	रैन्त्र	लैल्लिदरो	विमैप्पि	लादोर्
तम्भैये	मुदलिट्	टात्त्र	शराशरञ्	जमैत्त	वाड्डल्
मुम्भैया	मुलहुड्	गाक्कु	मुदल्वरनोर्	मुखहच्	चैव्वि
उम्भैये	पुहल्लुक्	केमुक्	किदिन्वरु	मुख्दि	युण्डो 67

इमैप्पु इलातोर्—जो पलक नहीं गिराते; तम्भैये मुतल् इट्टु—उन देवों से लेकर; आन्त्र—श्रेष्ठ; चराचरम् चमैत्त आड्डल्—जड़जंगमजग सृष्ट करने के सामर्थ्य के साथ; मुम्भैयाल् उलकम् काक्कुम्—त्रिलोकपालन करनेवाले; मुतल्वर् नोर्—परम देव आप ही हैं; अम्भैये—हम अकिंचन को; कात्तिर् अन्त्रल्—रक्षित करें, यह कहना; अल्लितु—छोटी बात है; मुख् चैव्वि उम्भैये—दिव्य सौन्दर्ययुक्त आपके ही; पुक्कु पुक्केमुक्कु—शरण आये हमें; इतिन्—इस (आपकी कृपा) से बढ़कर; वरुम् उरुति उण्टो—मिलनेवाला हित अन्य हो सकता है क्या । ६७

हे वीर ! आप अपलक देवों से लेकर चराचरमय सारे जग की सृष्टि करने के साथ-साथ त्रिलोक के पालन करने का भी सामर्थ्य रखनेवाले परम देव हैं। ऐसे आपसे, हमारी रक्षा की प्रार्थना करना बहुत ही अल्प विषय है। दिव्य सौन्दर्यमय आपकी शरण आये हैं—इससे बढ़कर और किस लाभ को अधिक हितकारी मानें ? । ६७

✽ यारैत	विळम्बु	हेना	नैङ्गुलत्	तिरैवर्	कुम्भै
वीरर्नोर्	पणित्ति	रैन्त्रान्	मैयम्भैयिन्	वेलि	पोल्वान्
वार्हळ	लिळैय	वीरन्	मरबुळि	वाय्मै	यावुम्
शोर्विल	निलैमै	यैल्लान्	दैरिवुर्च	चौल्ल	लुर्रान् 68

मैयम्भैयिन् वेलि पोल्वान्—सत्य (-खेत) के घेरे के समान (सत्यसेतु) हनुमान ने; नान्—दास मैं; अम् कुलत्तु इरैवर्क्कु—हमारे कुल के नायक को; उम्भै—आपको; यार् अन् विळम्पुकेन्—कौन कहकर परिचय दूँ; वीरर्—वीर; नोर् पणित्तिर्—आप आज्ञा दीजिए; अन्त्रान्—पूछा; वार् कळल्—(स्वर्ण की) ढली पायल से भूषित; इळैय वीरन्—लघु वीर लक्ष्मण ने; वाय्मै यावुम्—सभी सच्ची घटनाएँ; शोर्विलन्—विना कोई अंश छोड़े; मरबुळि—यथाक्रम; निलैमै अल्लाम्—सारी स्थिति; तैरिवु उर—साफ़ करते हुए; चौल्लल् उर्रान्—कहना प्रारम्भ किया । ६८

हनुमान ने, जो सत्य के खेत के घेरे के समान (सत्यसेतु) था, आगे बहुत ही चातुर्य के साथ पूछा कि हे वीर ! अपने कुल के नायक सुग्रीव के पास मैं आपका कौन सा परिचय दूँ ? आपको कौन बतलाऊँ ? आप ही आज्ञा दें। तब स्वर्ण की ढली पायल से अलंकृत छोटे वीर लक्ष्मण सारी सच्ची घटनाएँ विना छूट के साफ़ समझाते हुए बताने लगे । ६८

ॐ शूरियन्	मरविर्	रोन्निच्	चुटर्नेडु	नेमि	याण्ड
आरिय	नमरर्क्कु	काहि	यशुररे	यावि	युण्ड
वीरियन्	वेळ्वि	मुर्त्ति	विण्णुल	होडु	माण्ड
कारियर्	करुण	यन्त	कण्णहन्	कविहै	मन्तन् 69

चूरियन् मरपिल्-सूर्य के वंश में; तोन्नि-प्रकट होकर; चुटर् नेडु नेमि-उज्ज्वल, बड़ा (आज्ञा-)चक्र; आण्ड-जिन्होंने चलाया; आरियन्-वे उत्तम राजा; अमरर्क्कु आफि-सुरों के लिए; अचुररे-(शंवर आदि) असुरों के; यावि उण्ड-प्राण खाने (हरने) वाले; वीरियन्-प्रतापी; वेळ्वि मुर्त्ति-यज्ञ सम्पन्न करके; विण् उलकोटुम्-आकाश का भूमि के साथ; आण्ड-जिन्होंने शासन किया; कार् इयल्-मेघ का स्वभाव; करुण अन्त- (जो कृपा है) उसके समान कृपालु; कण् अकल्-विशाल; कविकै मन्तन्-छत्रधारी । ६६

सूर्यवंशोत्पन्न; उज्ज्वल और विशाल आज्ञाचक्र चलानेवाले; सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम; देवों के हितार्थ शवरासुर आदि असुरों के मारक प्रतापी; अनेक यज्ञ सुसम्पन्न करके जिन्होंने आकाश के साथ भूमि पर शासन किया; मेघ के समान करुणा का स्वभाव रखनेवाले और विशाल छत्र (राज्य)-धारी; । ६९

[इसके बाद टी०के०सी के संकलन में निम्नलिखित पद पाया जाता है । यद्यपि प्रस्तुत संकलन में उसको क्षेपक माना गया है, तो भी चूंकि टी०के०सी इसे प्रामाणिक मानते हैं, इसलिए हम मूल पद और भावार्थ दे रहे हैं ।]

ॐ पुयर्	मतत्तिण्	कोट्टुप्	पुहर्मलैक्	किरैयै	यूरन्डु
मयर्	मवुणर्	यार्	मडिदर	वरिविर्	कोण्ड
इयर्	पुलमैन्	चैङ्गोन्	मन्नुमुदल्	यार्	मौव्वात्
तयरदन्	कनह	माडुत्	तडमदि	लयोत्ति	वेन्दन् (69 अ)

मेघ के समान मद बहानेवाले, कठोर दांतों से युक्त और मुख पर लाल बिन्दियों के साथ दृश्यमान गजराज पर चढ़कर जिन्होंने धनु के सहारे युद्ध किया और सारे असुरों को मरवाया; जो सहज मेघावी, नेक दण्डधर और मनु से लेकर किसी भी राजा से अनुपमरेय (अधिक) सुशासक थे, दशरथ नाम के वे स्वर्णमहलों से भरी, विशाल प्राचीरों-सहित अयोध्यानगरी के राजा थे । ६९ (अ)

ॐ अन्तवन्	शिख	तामिव्	वाण्डहै	यन्तै	येवत्
तन्नुडै	युरिमैच्	चैल्वन्	दम्बिक्कुत्	तहवि	नल्हि
तन्नेडुडै	गानम्	जेरन्दा	ताममु	मिराम	नैन्वात्
इन्नेडुम्	जिलैव	लान्कु	केवल्लोय्	यडियन्	याने 70

अन्तवन् चिखवन् आम्-उनका पुत्र; इ-आण् तकै-ये पुरुषश्रेष्ठ; अन्तै एव-माता की आज्ञा से; तन् उटै उरिमै चैल्वम्-अपने स्वत्व का राज्यधन; तम्पिक्कु-

अपने छोटे भाई को; तर्कविन् नल्कि-उदारता के साथ देकर; नल् निंदुम् कातम्-
बहुत ही बड़े जंगल में; चेरन्तात्-आ गये; नाममुम् इरामन् अत्पात्-नाम के भी
श्रीराम हैं; इ-इन; नैटुम् चिल्-बड़े धनु में; वलातुकु-समर्थ श्रीराम की; एवल
चैय्-सेवा करनेवाला; अटियन्-दास; यात्ते-मैं हूँ । ७०

ये पुरुषश्रेष्ठ उनके पुत्र हैं । माता की आज्ञा मानकर ये अपने
स्वतंत्र का राज्य आदि धन अपने छोटे भाई के हाथ उदारता के साथ सौंप
कर इस अति विपुल कानन में पधारें हैं । इनका नाम भी सुनो—श्रीराम
है । इन लम्बे और धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम की सेवा करनेवाला किंकर
हूँ मैं । ७०

ॐ अन्तरवन् तोरुः मादि यिरावण निळैत्त मायप्
पुन्नीळि लिळुदि याहप् पुहुन्दुळ पोरुळ्ह लैल्लाम्
अन्तुमाण् डौळिवु राम लुणर्त्तित्त नुणर्त्तक् केट्टु
निन्तवक् कालित् मैन्द नैडिदुवन् दडियिर् इळन्दात् 71

अन्तु-ऐसा; अवन् तोरुम् आति-उनके अवतार से लेकर; इरावणन् इळैत्त-
रावण-कृत; माय पुन् तोळिल्-वचनापूर्ण नीच काम; इळित् आक-तक; पुहुन्दु
उळ-घटित; पोरुळक् अल्लाम्-सारी घटनाएँ; अन्तुम्-(कुछ) एक भी; अळिवु
उरामल्-न छोड़कर; आण्टु-तब; उणर्त्तित्तन्-जतलायीं; उणर्त्त केट्टु-
बतायी गयी बातें सुनकर; निन्तु-उनके सामने स्थित; अ कालित् मैन्तन्-वह
पवनकुमार; नैदितु उवन्तु-बहुत प्रसन्न होकर; अटियिल्-उनके चरणों पर;
ताळन्तात्-झुका । ७१

लक्ष्मण ने ऐसा श्रीराम के अवतार से लेकर रावण-कृत वचक नीच
कर्म तक की सारी घटनाएँ विना किसी अन्तर के कह सुनी थीं । वह सुनकर
वायुकुमार बहुत प्रसन्नता के साथ श्रीराम के श्रीचरणों पर झुका । ७१

ॐ ताळदलुन् दहाद शैय्द दैन्तैनी दहम् मन्त्राल्
केळ्विन्नून् मरैव लाळा वैन्तुत्त नैन्तक् केट्टु
पाळियन् दडन्दोळ वैन्त्रि मारुदि पदुमच् चैङ्गण्
आळिया थडिय तेनु मरिहुलत् तोरुव नैन्त्रात् 72

ताळदलुम्-झुकने पर; केळ्विन्नू मरै-श्रौत और स्मार्त वेदों के; वलाळा-
विद्वान्; नो-तुमने; तकाततु चैय्ततु-अनुचित किया; अन्तै-वह क्यों; तरुमम्
अन्तु-धर्मसम्मत नहीं है; अन्तुत्त-श्रीराम ने कहा; अन्त-कहना; केट्ट-सुनकर;
पाळि-स्थूल; अम्-सुन्दर; तटम् तोळ-विशाल कन्धों के; वैन्त्रि-विजयी; मारुति-
मारुति ने; पदुमम् चैम् कण् आळियाय-लाल कमल-सी आँखों के चक्रधारी;
अटियतेन्तुम्-दास मैं भी; अरि कुलैत्तु-कपिकुल का; ओरुवन्-एक है; अन्त्रात्-
कहा । ७२

उसके प्रणाम करने पर श्रीराम ने पूछा कि हे ! यह क्या कर रहे हो ?

श्रवण द्वारा वेद और शास्त्रों में दक्षताप्राप्त विप्र ! यह अनुचित कार्य किया, वह क्यों ? यह धर्मसम्मत नहीं है । यह सुनकर स्थूल, सुन्दर, विशाल और विजयी भुजाओं वाले हनुमान ने निवेदन किया कि पद्मपत्न-अरुणाक्ष ! चक्रधारी ! दास मैं भी उसी कपिकुल का एक हूँ । ७२

ॐ मिन्नुरुक् कौण्ड विल्लोर् वियप्पुर् वेद नत्नूल
पिन्नुरुक् कौण्ड वैत्तुम् पैरुमैयाम् वौरुळुम् नाणप्
पौन्नुरुक् कौण्ड मेरु पुयत्तिर्कु मुवमै पोदात्
तन्नुरुक् कौण्डु निन्नान् इरुमतत्तिन् इनिमै तीरप्पात् 73

तत्त्वमूतित् तत्तिमै-धर्म का एकाकीपन (धर्म की निस्सहायता); तीरप्पात्-दूर करनेवाला; मिन् उरु कौण्ड-विद्युतस्वरूप; विल्लोर्-धनुर्धरों को; वियप्पु उरु-विस्मय में डालते हुए; वैत्तुम् नल् नूल-वेद आदि शास्त्रों ने; पिन् उरु कौण्डतु अत्तुम्-बाद यह रूप लिया हो, ऐसा; पैरुमै आम् पौरुळुम्-गौरव नामक तत्त्व भी; नाण-लजा जाय, ऐसा; पौन् उरु कौण्ड-स्वर्णरूप; मेरु-मेरु पर्वत भी; पुयत्तिर्कु- (हनुमान की) भुजा की; उवमै पोता-उपमा न बन सके, ऐसा; तन् उरु कौण्ड-अपना रूप (विश्वरूप) लेकर; निन्नान्-खड़ा रहा । ७३

यह कहकर धर्म की निस्सहायता दूर करने के लिए धर्मसहायक के रूप में अवतरित हनुमान अपना निजी (बड़ा भारी) रूप लेकर उनके सामने खड़ा हुआ । तब विद्युतस्वरूप धनु के धारक श्रीराम और लक्ष्मण अपार विस्मय में पड़ गये । वेद आदि शास्त्रों ने एक नया रूप लिया हो, ऐसा; गौरव का तत्त्व भी उनकी गुरुता को देखकर लजा जाय, ऐसा; स्वर्णमय मेरुपर्वत भी उनकी भुजा की उपमा न बन सके, ऐसा वह हनुमान दृश्यमान रहा । ७३

कण्डिल नुलह मून्नुड् गालिन्नार् कडन्दु कौण्ड
पुण्डरी हक्क णाळिप् पुरवलन् पौलन्गौळ् शोदिक्
कुण्डल वदन मन्नाड् कूळान् दहैमैत् तौन्ना
पण्डेन्डु कदिरोन् शौल्लप् पडित्तन् पडिव मम्मा 74

उलकम् मून्नुम्-तीनों लोकों को; कालिन्नाल्-अपने श्रीचरणों से; कडन्दु कौण्ड-नापकर (जिन्होंने) तीर्ण किया; पुण्डरीक कण्-वे पुण्डरीकाक्ष; आळि-चक्रधर; पुरवलन्-जगन्नाथ; पौलन् कौळ्-चोति-स्वर्णमय उज्ज्वल; कुण्डल-कुण्डलों से भूषित; वतन्- (हनुमान का) आनन; कण्डिलन् अन्नाल्-नहीं देख पाये तो; पण्डे नूल-अति प्राचीन शास्त्र (व्याकरण आदि); कतिरोन् चौल्ल-सूर्य के सिखाने पर; पडित्तन्-जिन्होंने अध्ययन किये थे; पडिवम्-उनका आकार; कूळ् आम् तर्कमैत्तु अन्ना-वर्णन-योग्य एक विषय है क्या । ७४

तब अपने श्रीचरणों से जिन्होंने त्रिलोक को तीर्ण किया था, वे पुण्डरीकाक्ष चक्रधर प्रभु स्वर्णमयकुण्डल-भूषित हनुमान का मुख देख नहीं

सके तो उस हनुमान का रूप वर्ण्य एक विषय हो सकता है क्या, जिसने सूर्य से शिक्षा लेकर प्राचीन व्याकरणादि शास्त्रों का अध्ययन किया था ? । ७४

❖ ताट्पडाक्	कमल	मन्त	तडङ्गणान्	उम्बिक्	कम्मा
कोट्पडा	तिन्त्र	नीक्किक्	किळर्पडा	दाहि	यैन्नम्
नाट्पडा	मरेह	ळानु	नवैपडा	आन्तत्	तालुम्
कोट्पडाप्	पदमे	यैय	कुरक्कुरुक्	कोण्ड	दैन्नान् 75

ताळ पटा—नाल पर जो न उगा हो; कमलम् अन्त—उस कमल के समान; तटम् कणान्—विशाल आँखों वाले; तम्पिक्कु—अपने छोटे भाई से; ऐय—तात; कीळ पटा तिन्त्र—अधोस्थितियाँ; नीक्कि—छोड़कर; किळर् पटानु आकि—अमन्द न पड़कर; अन्नम्—सदा; नाळ पटा—कालातीत; मरेहळालुम्—वेदों द्वारा; नवै पटा—(और) निर्दोष; आन्तत्तालुम्—ज्ञान द्वारा; कोळ पटा—अग्राह्य; पतमे—तत्त्व ने ही; कुरक्कु उरु—वानर का रूप; कोण्डतु—लिया है; अन्नान्—कहा; अम्मा—मैया री । ७५

श्रीराम ऐसे कमल के दल के समान विशाल आँखों वाले थे, जो मामूली नाल पर नहीं उगा था (जो दिव्य था) । उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि भैया! यह देखो । यह मामूली वानर का रूप नहीं । यह उस सनातन तत्त्व का वानर-रूप है, जो नीची स्थितियों और गतियों से परे है; जो सदा प्रकाशमय है; जो कालातीत है; और जो वेदों और निर्दोष ज्ञान द्वारा भी अग्राह्य है ! आहा मैया ! कितना अद्भुत है ! । ७५

❖ नल्लन	निमित्तम्	बैर्रे	नम्बियप्	पैर्रेम्	नम्बाल्
इल्लैये	तुन्ब	मान	दिन्बमु	मैय्दिर्	शामाल्
विल्लिन्ना	यिन्नैयन्	बोलाड्	गविकुलक्	कुरिशिल्	वीरन्
चौल्लिन्ना	लेवल्	शैय्वा	नवल्लै	शौल्लर्	पाउर्रो 76

विल्लिन्नाय्—धनुर्धर; नल्लन—अच्छे; निमित्तम्—शकुन; पैर्रेम्—पाये (हमने); नम्पियं पैर्रेम्—(उसी से) पुरुषनायक यह मिला है; नम्बाल्—(अब) हमारे पास; तुन्पम् आन्तु—संकट; इल्लैये—नहीं रहे; इन्पमुम्—सुख भी; अय्यिर्दिर् आम्—मिल गये; इत्तैयन्—ऐसा (वीर); कवि कुल कुरिचित्—वानरकुल-पति; वीरन्—(और) वीर (सुग्रीव) की; चौल्लिन्नाल्—आज्ञा के वचन के अनुसार; एवल् चैय्वान् पोल् आम्—कंकर्य करनेवाला लगता है तो; अवन् निलै—उसकी स्थिति; चौल्लल् पाउर्रो—(श्रेष्ठता) बतायी जा सकती है क्या । ७६

श्रीराम ने आगे कहा— धनुधारी लक्ष्मण ! हमारे शुभ शकुन हो गये । तभी पुरुषनायक यह प्राप्त हुआ है । अब हमारे पास कोई संकट नहीं रहा । सुख ही सुख आ गया । ऐसा यह वीर कपिकुल के

राजा का आज्ञाकारी दास है — यह सुनते हैं । तब तो वह राजा कैसा होगा ? उसकी श्रेष्ठता बतायी जा सकेगी क्या ? । ७६

ॐ ऐतृह	मुवन्दु	कोल	मुहमलरन्	दितिदि	निन्ऱ
कुन्ऱुळ्	तोळि	नानै	नोक्किय	कुरक्कुच्	चीयम्
शैत्तुवत्	इत्तनै	यित्तने	कौणर्हिन्ऱेन्	शिरिदु	पोळ्दु
वैन्ऱियि	रिस्तुति	रैन्ना	विटैपैर्ऱु	विरैविऱ्	पोत्तान् 77

ऐतृह—ऐसा कहकर; अकम् उवन्तु—मन से मुदित होकर; कोलम् मुकम् मलरन्तु—सुन्दर मुख पर सन्तोष प्रकट करते हुए; इतितिन् निन्ऱ—प्रसन्न खड़े रहे; कुन्ऱु उऱळ्—पर्वत-सम; तोळित्तानै—कन्धो वाले को; नोक्किय—देखकर; कुरक्कु चीयम्—वानरसिंह; शैत्तु—जाकर; इत्तनै—अभी; अवन् तन्तुनै—उनको; कौणर्किन्ऱेन्—लाता हूँ; वैन्ऱियिर्—विजयी-वीर; चिरिदु पोळ्दु—थोड़ी देर; इस्तुतिर्—ठहरिए; ऐत्ता—कहकर; विटै पैर्ऱु—विदा लेकर; विरैविऱ् पोत्तान्—शीघ्र गया । ७७

ऐसा श्रीराम ने प्रफुल्ल-चित्त होकर कहा । उनका मुख भी सन्तोष के कारण प्रकाशमय हो रहा । बहुत ही प्रसन्नता के साथ अपने सामने स्थित पर्वत-सम भुजा वाले श्रीराम को वानरसिंह हनुमान ने देखकर सिवेदन किया कि विजयी वीर ! मैं अभी जाकर उन्हें बुला लाता हूँ । थोड़ी देर ठहरे रहें । हनुमान ने यह कहकर उनसे आज्ञा ली । फिर वह बहुत शीघ्र चला । ७७

3. नट्पुप् पडलम् (मैत्री पटल)

पोनम्	दरमणिप्	पुयनैडुम्	बुहळित्तान्
आनदत्	नरिहुलत्	तरशन्मा	डणुहिन्नान्
यानुमुन्	कुलमुमिव्	वुलहुमुयन्	दत्तमैत्ता
मात्तवन्	गुणमैला	निन्नैयुमा	मदियित्तान् 78

पोत—जो गये; मन्तरम्—मन्दरगिरि-सम; मणि पुयम्—सुन्दर मुजा वाला; नैट्टम् पुक्कित्तान्—बड़े यश वाला; मात्तवन्—मानव श्रीराम के; कुणम् ऐलाम्—सर्व कल्याणगुणगणों के; निन्नैयुम्—स्मरणकारी; मा मदियित्तान्—आत-वड़ा बुद्धिमान जो था; यानुम्—मैं भी; उन् कुलमुम्—तुम्हारा कुल और; इ उलकुम्—यह लोक; उयन्तत्तम्—तैर गये; ऐत्ता—कहते हुए; तन् (हनुमान) अपने; अरि कुलत्तु अरघन् माटु—वानरकुल के राजा के पास; अणुक्कित्तान्—पहुँचा । ७८

हनुमान मन्दर पर्वत-सम सुन्दर भुजाओं के और बहुत बड़ी कीर्ति के स्वामी सम्मान्य श्रीराम के सब दिव्य और कल्याणगुणों का स्मरण करते हुए चला । कपिकुल-राज सुग्रीव के पास यह कहते हुए पहुँचा कि मैं तर गया; आप तर गये और आपके कुल का भी उद्धार हो गया । ७८

मेलवन्	तिरुमहर्	कुरैशैयदान्	विरैशैय्वार
वालियन्	इळविला	वलियिन्ना	नुयिर्तैरुक्
कालन्वन्	दन्तिडर्क्	कडलूहडन्	दन्मेन्ता
आलमुण्	डवन्तिन्	इरुनडम्	बुरिहुवान् 79

आलम्-उण्डवतिन्-हलाहल (विष-) पायी के समान; नित्तु-स्थित होकर; अरु नटम्-पुस्त्रिवान्-अतिशय नृत्य करनेवाला; विरै चैय्-सुवासदायी; तार्-माला-धारी; वालि-वाली; अन्तु-नाम के; अळवु इला-अपार; वलियिन्ना-बली के; उयिर् तैरु-प्राणों को तोड़ने; कालन् वन्ततन्-यम आ गया; इटर् कटल-संकटसागर; कटन्तैम्-तारण कर लिया; अन्ता-ग्रह; मेलवन्-ऊपर के (सूर्य) देव के; तिरुमकड्कु-सुपुत्र से; कुरै चैय्-बोला १७६

हनुमान हलाहलविषपायी शिवदेव के समान नृत्य करते हुए बोला कि सुगन्ध छिटकानेवाली माला के धारक और अपार बली वाली के प्राण हरने के लिए यम आ गये । हम भी दुःख-सागर पार कराये ! हनुमान ने आक्राशचारी सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से ये बातें कहीं । ७९

मण्णुळार्	विण्णुळार्	माळुळार्	वेळुळार्
अण्णुळार्	दिशैयुळा	रियलुळा	रिशैयुळार्
कण्णुळा	रायितार्	पहैयुळार्	कळिन्डुम्
पुण्णुळा	रुयिर्क्	कैमिळ्दमे	पोलुळार् 80

मण् उळार्-भूलोकवासी; विण् उळार्-न्योमवासी; माळु उळार्-इतर (पाताल) लोकवासी; वेळु उळार्-अन्य लोग; तिकै उळार्-दिशाओं के वासी; अण् उळार्-स्मरण करनेवालों के लिए; इयल् उळार्-बुद्धि-रूप जो रहते हैं; इक्कै उळार्-कीर्तिस्वरूप जो रहते हैं; कण् उळार्-नेत्रस्वरूप जो रहते हैं; आयितार्-वे बने रहते हैं; पक्कै उळार्-जिनके शत्रु हैं; कळि नैटुम् पुण् उळार्-और जिनके (शत्रु द्वारा) प्राप्त बड़े गहरे घाव हैं; आर् उयिर्क्कु-उन जीवों के लिए; अमिळ्दमे पोलु-अमृत के ही समान; उळार्-रहनेवाले (वे घोर हैं) । ८०

हनुमान ने श्रीराम का और भी गुणगान किया । वे वीर पृथ्वी में, व्योम में, इनसे अलग तागलोक में, इतर लोकों में या किसी भी दिशा में रहनेवालों में अपना स्मरण करनेवाले भक्तजनों के लिए बुद्धि, कीर्ति और नेत्रों के समान सहायता करनेवाले हैं । उनमें जिनके शत्रु हैं और जिन्हें शत्रु के कारण बहुत गहरे व्रण (पीड़ा और दुःख) हो गये हैं, उनके लिए देवामृत के समान (तापहारी) हैं । ८०

शूलिमाळ्	यानैयार्	तौळुहळु	उय्यरदन्
माळिया	रुल्लैला	मौरुवळिप्	पडरवाळ्
आळियान्	सैन्वरप्पे	रडिविन्ना	रळ्हितार्
उळिया	लित्तिदुनक्	करशुदन्	दुदयितार् 81

चूळि-मुखपट्ट-सहित; माल् यात्तैयार्-बड़े गजों के स्वामी राजाओं से; तौळि कळल्-नमस्कृत पायल-चरण; तयैरतन्-दशरथ; पाळि आर् उलकु अलाम्-बड़े-बड़े सभी लोकों को; औरवळि पटर-अपने शासनाधीन कर चलाते (पालते) हुए; वाळ्-जो रहे; आळियात्-उन चक्रवर्ती के; मेन्तर्-पुत्र हैं; पेर् अळक्किता-बड़े ही सुन्दर; अरिवितार्-और मेघावी; ऊळियाल्-विधिवत; उतक्कु-आपको; इत्तिनु अरच्च तन्तु-सुख से राज्य प्रदान कर; उतवितार्-उपकार करनेवाले हैं । ८१

(हनुमान श्रीराम का चरित्र और परिचय यों देता है —) वे चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र हैं, जिनके पायल-चरणों पर मुखपट्ट से अलंकृत बड़े गजों के स्वामी राजा लोग विनत होते थे और जो सभी विश्वों को अपने एकछत्र शासन के अधीन करके चलाते रहे थे । वे बड़े ही सुन्दर हैं और मेघावी भी । वे ही विधिवत आपको राज्य प्रदान करके उपकार करनेवाले हैं । ८१

नौदियार्	करुणैयिन्	नैरियिनार्	नैरिवयिन्
पेदिया	निलैमैया	रैवरिनुम्	पैरुमैयार्
पोदिया	दळविला	वुणर्विनार्	पुळ्ळितार्
कादियार्	शैय्दरुड्	गडवुळ्वैम्	वडैयिनार् 82

नौतियार्-(और) न्यायी; करुणैयिन् नैरियितार्-करुणा के मार्ग पर चलनेवाले; नैरिवयिन्-न्याय-मार्ग से; पेदिया निलैमैयार्-न हटने के स्वभाव वाले; रैवरिनुम्-किसी से भी; पैरुमैयार्-अधिक सम्मान्य; पोतियातु-विना पर-बोधन के ही; अळवु इला-अपार; उणर्वितार्-प्रतिभाशाली; पुळ्ळितार्-कीर्तिमान; कातियार् चैय्-गाधिपुत्र; तच्चम्-(द्वारा) दिये गये; कडवुळ्-दिव्य; वैम् पडैयितार्-प्रतापी अस्त्रों वाले । ८२

(और भी—) वे न्यायी हैं । करुणावलम्बी हैं । न्यायमार्ग से न हटनेवाले किसी से भी ये अधिक गौरवान्वत हैं । विना किसी के बोधन से ही वे प्रतिभावान अपार ज्ञानी रहते हैं । बड़े कीर्तिमान और गाधिपुत्र कौशिकजी के द्वारा प्रदत्त दिव्य और प्रतापी अस्त्रों वाले हैं । ८२

वेलिहर्	चिन्वुत्ता	डहैविळिन्	डुरुळ्विर्
कोलियक्	कौडुमैयाळ्	पुदल्वन्नैक्	कौनुरुदत्
कालियर्	पौडियिना	नैडियहर्	पडिवमाम्
आलिहैक्	कुरियपे	रुवळित्	तरुळिनात् 83

वैल् इकल्-त्रिशूल लेकर युद्ध करनेवाली; चिन्वु ताटक्-क्रोधी ताड़का; विळिन्तु उरुळ्-मरकर गिर पड़े, ऐसा; विल् कोलि-धनु प्रयोग करके; अ कौडुमैयाळ्-उस अत्याचारिणी के; पुतल्वन्नै कौत्तु-पुत्र (सुबाहु) को मारकर; तन् काल् इयल्-अपने श्रीचरणों पर लगी; पौडियिताल्-धूली से; नैडिय कल्-बड़े प्रस्तर के; पडिवम् आम्-रूप में रही; आलिकैक्कु-अहल्या को; उरिय-उनका अपना; पेर् उरु-मान्य रूप; अळित्तु-देकर; अरुळित्तान्-कृपा की । ८३

उन्होंने त्रिशूल लेकर लड़नेवाली ताड़का को अपने धनु को झुकाकर (अस्त्र चलाकर) मारा; उस अत्याचारिणी के पुत्र सुबाहु को मारा। और अपने चरणों पर लगी धूल के पवित्र प्रताप से उन्होंने (श्रीराम ने) बड़े पत्थर के रूप में पड़ी जो रहीं, उन अहल्या को उनका अपना रूप दिलाकर उपकार किया था। ८३

नल्लुरुप्	पमैयुतम्	बियरित्तुम्	तवन्नयन्
देल्लुरुप्	परियपे	रैरिशुडर्क्	कडवुडन्
पल्लिरुत्	तवन्वलिक्	कमैतियम्	बहमैन्नुम्
विल्लिरुत्	तरुळितान्	मिदिलैपुक्	कणैयुनाळ् 84

नल् उरुप्पु अमैयुम्-शुभ अंग-लक्षणों के बने; नम्पियरित्तु-नायकों में; मुत्तवन्-ज्येष्ठ श्रीराम; मितिलै पुक्कु-मिथिला में प्रवेश कर; अणैयुम् नाळ्-जब गये तब; अल्ल उरुप्पु-प्रकाश की किरणों के; अरिय-अपूर्व; पेर्-बड़े; अरि सुटर् कडवुळ् तन्-गरम किरणमाली सूर्यदेव के; पल् इरुत्तवन्-दाँत जिन्होंने तोड़े थे; वलिक्कु अमै-उन शिवजी की शक्ति के अनुरूप बने; तियम्पकम् अँतुम्-व्यंभक नाम के; विल् नयन्तु-धनु को प्यार के साथ उठाकर; इरुत्तु अरुळितान्-तोड़कर कृपा की। ८४

दोनों लक्षणपूर्ण अंगों के सुन्दर रूपधर हैं। उनमें ज्येष्ठ श्रीराम ने मिथिला में जाकर रहते समय, गरम किरणमाली सूर्यदेव के दाँतों के भंजक शिवजी के धनुष को तपाक से उठाया और भग्न करके उपकार किया। (दक्ष-यज्ञ के अवसर पर शिवजी ने सूर्य के दाँत तोड़े थे।)। ८४

उळैवयप्	पुरविया	तुदववुड्	रौरुशौलाल्
अळविल्कड्	पुडैयशिड्	इवैपणित्	तरुळलाल्
वळैयुडैप्	पुणरिशूळ्	महितलत्	तिरुवैलाम्
इळैयवड्	कुदवियित्	तलैयैळुन्	दरुळितान् 85

उळै वयम्-अयालसहित बलवान; पुरवियान्-अश्वों के स्वामी (दशरथ) से; उतव उरु-दिया जाकर; अळवु इल् कडुप्पु उटैय-अपार पातिव्रत्यशीला; चिडुवै-छोटी माता के; और शौलाल्-एक वचन के कारण; पणित्तु अरुळलाल्-आज्ञा देने से; पुणरि चूळ् वळै उटै-समुद्र से जो घेरी गयी है; मकितलम् तिरु अँलाम्-भू की सम्पत्ति, सब; इळैयवड्कु-छोटे भाई को; उतवि-उपकार-बुद्धि के साथ देकर; इ तलै-इस ओर; अँळुन्तरुळितान्-कृपा करके पधारे हैं। ८५

अयाल वाले बलिष्ठ अश्वों के स्वामी चक्रवर्ती दशरथ ने अपनी इच्छा से राज्य को श्रीराम को दिया। पर बड़ी पातिव्रत्यशीला श्रीराम की विमाता कैकेयी को दशरथ ने वर का वचन दिया था। उसकी प्राप्ति में विमाता ने श्रीराम को आज्ञा दिलायी कि वन जाओ। उस आज्ञा को

मानकर समुद्रवलित राज्यश्री और अपनी सारी सम्पत्ति को अपने छोटे भाई (कैकेयी के पुत्र) को देकर के श्रीराम इस ओर पधारे हैं। ८५

तैवविरा	वहैनेडुम्	जिहैविरा	मळुवित्तान्
अवविरा	मत्तैयुमा	वलित्तौलैत्	तरळित्तान्
इवविरा	हवन्वैहुण्	उळुमिरा	वत्तैयत्ताम्
अवविरा	दन्तैयिरा	वहैडुडैत्	तरळित्तान् 86

इ इराकवन्-इन श्रीराम ने; तैव इरा वक्क-शत्रु ही न रहें, ऐसा; नेटुम् चिक्क-लम्बी ज्वालाओं से; विरा-युक्त; मळुवित्तान्-परशु वाले; अ इरामत्तैयुम्-उन (परशु) राज को; मा वलि तौलैत्तु-उनका वल मिटाकर (हराकर); अरळित्तान्- (लोकां का) उपकार किया; वैकुण्ठ अळुम्-कुपित हो चढ़ आनेवाले; इरा अत्तैयत् आत्-राक्षिके समान काले; अ विरातत्-उस विराध को भी; इरा वक्क-जीवित न रहे, ऐसा; तुटैत्तु-मिटाकर; अरळित्तान्-कृपा की। ८६

इन्हीं श्रीराम ने उन परशुराम का वल मिटाया था, जिनके अग्निशिखा-वृत्त परशु ने मही को शत्रुहीन बना दिया था; यह इनकी कृपा थी। वहीं नहीं। रात के समान काला विराध कोप के साथ उन पर चढ़ आया। श्रीराम ने उसका भी नाश करके लोकोपकार किया। ८६

करन्मुदर्	करुणैयर्	उवर्हडर्	पटैयोडुम्
शिरमुहर्	चिलैहत्ति	तुववुवान्	तिशैयुळार्
परमुहर्	पहैडुमित्	तरळुवान्	परमराम्
अरन्मुदर्	रलैवरक्	कदिशयत्	तिरलित्तान् 87

करन्मुदर्-खर आदि; करुणैयर्-करुणाहीन (की); कटल् पटैयोडुम्-सागर-सी सेना के साथ; शिरम् उक्क-उनके मस्तकों को गिराते हुए; चिलै कुत्तित्तु-घनुष झुकाकर; उतवुवान्-(देवों और मानवों का) उपकार किया; तिशै उळार्-सारी दिशाओं में रहनेवाले; पर मुक्क पक्क-वैरी शत्रुओं को; तुमित्तु-मिटाकर; अरळुवान्-कृपा करनेवाले हैं; परमर् आम्-श्रेष्ठ देव; अरन् मुतल् तलैवरक्कु-हर आदि प्रधान देवताओं के लिए भी; अतिचय-विस्मय देनेवाली; तिरलित्तान्-शक्ति रखनेवाले हैं। ८७

(वहीं नहीं—) खर आदि नृशंस निशाचरों और उनकी सागर-सम सेना को श्रीराम ने उनके सिर काटकर मिटाया और देवों और मानवों का बड़ा उपकार किया। श्रीराम ऐसे हैं, जो सभी दिशाओं में रहनेवाले शत्रुओं का नाश करके उपकार करेंगे। श्रेष्ठ हर आदि प्रधान देवों को भी विस्मय हो जाय, वे ऐसे शक्तिशाली हैं। ८७

आयमा	नाहर्वा	ळालिया	नेयलाल्
कायमा	नायित्तान्	यावन्ने	कावला

नीयमा
मायमानेर्दिया
नायितान्तिरुदमा
मायमारीशन्नार्
नायितान् 88

कावला-हमारे पालक; आर् माय-अधिक मायावी; मान् आयितान्-मृग जो बना; निरुत मारीचन्-उस राक्षस मारीच के लिए; मा यमान् आयितान्-बड़े यम बने; माय-उचित; मा नाकर्-श्रेष्ठता से युक्त देवों से; ताळ्-नमस्कृत; आळि यात्ते अलाल्-चक्रधारी विष्णु के सिवा; मान् कायम् आयितान्-मानवशरीरी बने; यावते-आर कौन हैं; नी-आप; अ मान्-उन महान पुरुष से; नेर्ति-जाकर मिलें । ८८

राजन ! राक्षस मारीच मायामृग बना । श्रीराम उसके लिए बड़ा यम बन गये । वे अवश्य चक्रधारी श्रीविष्णु हैं, जिनके चरणों पर देव विनत होते हैं ? फिर कौन ऐसे मानव बन सकते हैं ? आप आइए और उन महान विभूति से मिलिए । (इस पंद में माय मान् में श्लेष है । माय मान् = मायावी मृग; मा यमान् = बड़ा यम । 'मान्' शब्द के और दो अर्थ हैं— मानव और महान; 'मायम्' का 'मरने' अर्थ भी है ।) । ८८

उक्कवन्

दववुड्

पौरैतुड्

दुयर्पदम्

पुक्कवन्

दमुनमक्

कुरैशैयुम्

दुरैयवो

तिक्कवन्

दरनेडुन्

दिरळ्करज्

जैलवुतोळ्

अक्कवन्

दनूनिनैन्

दमरर्ताळ्

शवरिपोल् 89

अम्-श्रेष्ठ; तव-तपस्या से; उट् पौरै-शरीर का भार; तुडुन्तु-गिराकर; उक्क-जो दिवंगत हुई; अमरर् नितैन्तु-देवों द्वारा ध्यान कर; ताळ्-नमस्कृत; चवरि पोल्-शवरी के समान; तिक्कु अवम् तर-सभी दिशाओं में संकट फैलाकर; नैटु तिरळ् करम्-लम्बे और स्थूल हाथों को; जैलवु तोळ्-चलानेवाले कन्धों से युक्त; अ कवन्तुम्-वह कवन्ध भी; उयर् पतम् पुक्क-उच्च पद पहुँचा, वह; अन्तमुम्-महिमा; नमक्कु-हमें; उरै चैयुम्-कथन योग्य हो, ऐसा; दुरैयवो-सुलभ है क्या । ८९

शवरी थीं, जो श्रेष्ठ तपस्या से शरीर-भार छुड़ाकर मरीं । देव भी उनका स्मरण करके नमस्कार करते हैं । उन्हें मोक्ष दिया प्रभु ने । कवन्ध था, जो अपने हाथों को सारी दिशाओं में फैलाकर बड़ा उत्पात मचा रहा था । वह भी इन्हीं की कृपा से मोक्ष पहुँचा । श्रीराम की इस महिमा का सम्यक् वर्णन क्या हमारे लिए सुलभ है ? । ८९

मुनेवरम्

पिडुरुमे

मुडिवरम्

वहलैलाम्

इनेयर्वन्

दुरुवर्त्तु

रियवडम्

पुरिह्वार्

वित्तैयैनुज्

जिरेडुडुन्

दुयर्पदम्

विरविन्नार्

अनेयैर्त्तु

रुरैशैयहे

निरविदन्

पुदल्वने 90

इरवि तत् पुतल्वते-हे सूर्यसन्तु; मुनेवरम् पिडुरुम्-मुनि और अन्य लोग;

इतैयर् वृत्तु-ये आकर; उडुवर् अंतुड-उपकार करेंगे, यह समझकर; मुटिवु
अरुम्-अनन्त; पकल् अलाम्-काल तक; इयत्तु तवम् पुरिकुवार-उत्तम तपस्या करते
हुए; चित्तै अंतुम् चिडै-कर्मबन्धन की कारा; तुरन्तु-तुड़ाकर; उयर् पतम्-श्रेष्ठ
(मोक्ष) प्रद; जिरवितार्-पहुँचे; अंतैयर्-ऐसे ये कैसे सहान हैं; अंतुड-यह;
उरै तैयर्-कथन करूँ। ६०

हे सूर्यसन्तु ! मुनिगण और अन्य ऋषि आदि इन्हीं के आगमन और
कृपा की प्रतीक्षा में लम्बे काल तक कठोर तपस्या करते हैं और कर्मबन्धन
की कारा काटकर सर्वात्कृष्ट मोक्षपद को प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में
इन्हें के बारे में, ये कौन हैं, कैसे हैं ? यह विवरण मैं कैसे दे सकूँगा ? । ९०

मार्यैयान्तु	मदियिला	निरुदरहोत्	मृत्तैवियैत्
तीयका	नैडियिन्मत्	तनन्त्रत्	देवैयान्तु
तीयया	तवामिलैत्	तुडैयै	नैडमन्तम्
तयया	वडुमैया	लुडवितैत्	तुणिकुवार ११

ऐया-प्रभु; मति इला-बुद्धिहीन; निरुदर कोत्-राक्षसराज; मार्यैयान्तु-
प्रपंच से; मृत्तैवियै-श्रीराम की पत्नी को; तीय कान् नैडियिन्-कठोर वनमार्ग में;
उयत्तु-ले गया; अडुवर् देवैयान्तु-उन्को खोजने के लिए; नो-आप; तवम्
इत्यैयान्तु-सुकृत कर चके; उडुमैयाल्-उससे; मृत्तम्-और मन में; नैडम् तयैया
उडुमैयाल्-अति पवित्रता रखते हैं, इसलिए; उडुवितै-आपकी मैत्री; तुणिकुवार-
प्राप्त कर लेने का निश्चय किया है। ६१

प्रभु ! जड़मूर्ति राक्षसमूर्ति प्रपञ्च रचकर श्रीराम की पत्नी को
कठोर कान्तिन-मार्ग से हर ले गया। उन्हीं की खोज में वे इधर आये।
आपका सुकृत है और आपका मन पवित्र है। इसीलिए वे आपकी
मैत्री तीव्रता से चाहते हैं। ९१

तन्दिरुन्	दन्तरुट्	तलैमैयैप्	पहैयान्तम्
इन्दिरुन्	शिरुवन्तुक्	किरुदियिन्	रिशुवन्तम्
पुन्दियिन्	पेरुमैयाय्	प्रादरन्	रुशयैयान्तु
मन्नादिरुन्	गळुमन्तुन्	मुरवुणरन्	दुदवैयान्तु १२

कैळमुत्तुल्-श्रेष्ठ शास्त्रसम्मत; मन्तिरुम् मरपु-मंत्रणा का क्रम; उणरन्तु-
जानकर; उतवैयान्तु-उपकार करनेवाले (हनुमान्) ने; पुन्तियिन् पेरुमैयाय्-श्रेष्ठ
बुद्धिशाली; अरुत् तलैमैयै-कृपा-विशेष को; तन्तिरुन्तुत्-वे आपको प्रदान करने
को प्रस्तुत हैं; पकैयन् आम्-शत्रु; इन्दिरुन् चिरुवन्तुक्-इन्द्रपुत्र (वाली) का;
इरुत्ति-अन्तु; इन्तु इन्तु तवम्-अब हो जायगा; पोतर्-जाइए; अंतुड-ऐसा;
उरै तैयर्-कथन किया। ६२

हनुमान् शास्त्रज्ञ था। मन्त्रणा देने का क्रम, ज्ञानता था। उसने
सुभीत से आगे कहा कि श्रेष्ठ बुद्धिशाली ! वे आप पर विशेष कृपा रखते

है। आपके शत्रु, इन्द्र के पुत्र, वाली का अन्त अब आ जायगा।
इसलिए आप उनके पास जाइए। ९२

अन्तर्वा	सुर्येला	मरिविना	लुणरहवान्
उन्तये	युडयवर	करियदप	परिलोरो
पोन्तये	पोरुववाय	पोदतप	पोदुवान्
तन्तये	यतयवन्	शरणम्वन्	दणुहिनान् 93

अन्त आम-वसे; उर अलाम-वे वचन; अरिविताल-बुद्धि से; उणरकुवान्-
समझकर; पोन्तये-(सुग्रीव ने) स्वर्ण से ही; पोरुववाय-तुल्य; उन्तये उदय-
तुमको प्राप्त; अरकु-मुझे; अ पोरुल-कौन सी वस्तु; अरियतु-दुर्लभ है;
पोतु-चलो; अन्त-कहकर; पोतुवान्-निकला; तन्तये अतयवन्-स्वोपम;
चरणम् वन्तु-(श्रीराम के) चरणों के पास आकर; अणुकितान्-पहुँचा। ९३

सुग्रीव ने हनुमान की कही सारी बातें सुनीं। बुद्धिसंगत समझा।
उसने हनुमान से कहा कि स्वर्ण ही सम (मूल्यवान या सुन्दर) हनुमान !
तुम्हीं सहायक के रूप में मैंने पाया है। वैसे मुझे दुर्लभ वस्तु कौन सी
होगी ? आओ। फिर वह स्वोपम श्रीराम के चरणों पर आ पहुँचा। ९३

कण्डल	तन्व	मन्ता	कदिरवन्	शिरुवन्	कामरक
कण्डलन्	दुर्न्द	कोल	वदनमुड	गुळिरककुड	गण्णम्
पुण्डरी	हडगळ	पूतुप	पुयडळोडप	पोलिनद	तिडगळ
मण्डल	मुदयज	जयद	मरगदक	किरियन्	नाते 94

कदिरवन् चिरवन्-किरणमाली के पुत्र ने; पुण्डरीकङ्कळ-कमल; पूतु-
विकसित होकर; पुयल तळोड-मेघ से मिलकर; पोलिनन्-शोभायमान; तिङ्कळ
मण्डलम्-चन्द्रमण्डल; उत्तयम् चयत-उदित हो; मरकत किरि-ऐसे मरकतपत्र;
अन्तात-जैसे का; कामर-मनोरम; कुण्डलम् तुरन्त-कुण्डल-रहित; कोल वतन्मम-
सुन्दर वर्दन; कुळिरककुम् कण्णम्-और स्नेहशीतल आँखों के; कण्टतन्-दर्शन
किये। ९४

सुग्रीव ने सुग्रीव ने आकर श्रीराम के दर्शन किये। श्रीराम एक
मरकत-गिरि के समान थे, जिस पर अनेक कमल खिले थे और जिस पर
मेघावृत चन्द्र-मण्डल उदित हुआ था। उनके मुख के दर्शन किये, जो मनोरम
कुण्डलों से रहित थे। उनकी आँखों के दर्शन किये जो स्नेह-शीतल थी। ९४

नोक्किन	नडिवु	निन्ना	नोडिवरुड	गमलत्	तण्णल्
आक्किय	वुलह	मल्ला	मत्तुतीट	टिन्नु	हारुम्
पाक्कियम्	बुरिन्द	वैल्लाड	गुविन्दिरु	पडिव	माहि
मेक्कुर्य	तडन्दीळ	वैन्नि	वीरराय	विळैन्द	वैन्वान् 95

नोक्कितन्-दर्शन करके; नडितु निन्नान्-बहुत देर (मुग्ध) खड़ा रहा;

नोटिवु अरुम्-अवर्ण्य; कमलतु अण्णल्-कमल के देव ब्रह्मा से; आक्किय-सृष्ट; उलकम् अल्लाम्-सारे लोकों द्वारा; अन्नु तौट्टु-उस दिन से लेकर; इन्नु फाळम्-अब तक; पुरिन्त पाक्कियम् अल्लाम्-कृत पुण्य सब; कुविन्तु-इकट्ठा होकर; इरु पटिवम् आकि-दो दिव्य मूर्तियाँ बने; मेक्कु उयर्-खूब उन्नत; तटम् तोळ्-विशाल भुजाओं के; वेन्नु विरराय्-विजयी वीरों के रूप में; विळैन्त-व्यक्त हुआ है; अत्तपान्-ऐसा सोचने लगा (सुग्रीव) । ६५

देखा तो सुग्रीव मन्त्रमुग्ध-सा बहुत देर विस्मित खड़ा रह गया । उसने सोचा कि अवर्णनीय श्रेष्ठ कमलासन ब्रह्मा द्वारा सृष्ट सारे विश्वों का उस दिन से लेकर अब तक किया हुआ जो पुण्य है, वही दो मूर्तियाँ बनकर श्रेष्ठ उन्नत भुजाओं के साथ विजयी वीरों के रूप में व्यक्त हुआ है ! । ९५

ॐ तेरिन्ने	नमरर्क्	कैल्लान्	देवरान्	देवरैन्ने
माडियिप्	पिडप्पिल्	वन्दार्	मानुड	राहि मन्तो
आरुहीळ्	शडिलत्	तानु	मयनुमैन्	रिवर्ह लादि
वेरुळ	कुळुवै	यैल्ला	मानुडम्	वेन्नु दन्ने 96

माडि-रूप बदलकर; मानुटर् आकि-मनुष्य बनकर; इ पिडप्पिल् वन्दार्-इस जन्म में आये हुए ये; अमरर्क्कु अल्लाम्-सभी देवों के; तेवर् आम् तेवर्-देव परमदेव हैं; अन्नु-ऐसा; तेरिन्ने-साफ समझ लिया; आरु कौळ्-गंगाधर; चटिलत्तात्तुम्-जटाधारी महादेव और; अयनुम्-ब्रह्मा; अन्नु-कहलानेवाले; इवर्कळ् आति-इनसे लेकर; वेरु उळ कुळुवै अल्लाम्-अन्य सभी धूर्तों को; मानुटम् वेन्नु-मानवता ने जीत लिया है । ६६

ये दोनों देवों के देव परमदेव के ही अवतार हैं । परमेश्वर ने ही अपना रूप बदलकर मनुष्य-जन्म लिया है । गंगाधर जटाधारी महादेव, ब्रह्मा आदि अनेक धूर्तों के देवों के जन्म को मनुष्य-जन्म ने हरा दिया है ! मानव जाती का ही भाग्य रहा कि ये परमदेव मानव बन आये । ९६

ॐ अन्नितैन्	दिनैय	वैण्णि	यिवर्हिन्नु	काद	लोदक्
कनैहडर्	रिरैयुळ्	ळाळन्नु	कण्णिणै	कळिप्प	नोक्कि
अन्नहत्तैक्	कुरुहि	नानव्	वण्णलु	मरुत्ति	कूरप्
पुत्तैमलर्त्	तडक्कै	नोटटिप्	पोन्दित्ति	दिरुत्ति	यैन्नान् 97

अन्न नितैन्नु-ऐसा सोचकर; इन्नैय वैण्णि-यों विचार करके; इवर्किन्नु-उमगनेवाले; कातल ओतम्-प्रेम-जल के; कत्तै कटल्-शब्दायमान समुद्र की; तिरैयुळ् आळन्नु-तरंगों में मग्न होकर; कण् इण्-अक्षद्वय; कळिप्प-मुदित करते हुए; नोक्कि-दर्शन करके; अनकत्तै-अनघ के; कुळकिन्नान्-समीप गया; अ अण्णलुम्-उन सहिमावान प्रभु ने भी; अरुत्ति कूर-वांछा के बढ़ते; पुत्तै मलर-सुन्दर कमल-सम; तटम् कै-(और) विशाल हाथों को; नोटटि-बढ़ाकर; पोन्नु-

(स्वागत में); पोन्तु-इधर आकर; इत्ति तु इस्तुति-सुख से रही; अन्तान्-
कहा । ६७

ऐसी-ऐसी बातें सुग्रीव ने सोचीं । और आगे भी अनेक विचार करते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के प्रति उमड़ आनेवाले स्नेहजल के शब्दायमान सागर की तरंगों में मग्न हुआ । अपनी आँखों को मुदित करते हुए उनके दर्शन किये । इस परवश स्थिति में सुग्रीव श्रीराम के पास पहुँचे । अनघ श्रीराम की भी वांछा बढ़ी । उन्होंने सुन्दर कमल-सम अपने हाथ बढ़ाकर उसका स्वागत किया और कहा कि आओ ! इधर सुख से रहो । ९७

तवावलि	यरक्क	रैन्तुन्	दवाविरुट्	पहैयैत्	तळ्ळिक्
कुवालर्	निरुत्तर्	केरुर्	कालत्तिन्	कूट्ट	मीत्तार्
अवामुद	लरुत्त	शिन्दे	यत्तहनु	मरियिन्	वेन्दुम्
उवावुर्	वन्दु	कूडु	मुडुपदि	यिरवि	यीत्तार् 98

अवा मुतल् अरुत्त-राग को जड़ से उखाड़कर रहे; चिन्ते अतकत्तुम्-मन के अनघ श्रीराम और; अरियिन् वेन्तुम्-कपिराज; उवा उर्-अमावस्या के आने पर; वन्तु कूट्टम्-आ मिलनेवाले; उटुपति इरवि-उडुपति और किरणमाली के; औत्तार्-समान रहे; तवा वलि-अक्षय बली; अरक्कर् अन्तुम्-राक्षस रूपी; तवा इरुळ् पकैयै-अखण्डित अन्धकार शत्रु को; तळ्ळि-मिटकर; कुवाल् अरुम्-पुंजीभूत धर्म को; निरुत्तर्कु-स्थापित करने के लिए; कालत्तिन् कूट्टम्-उपयुक्त काल के संगम के; औत्तार्-समान लगे । ६८

श्रीराम ने राग को मूल से उखाड़कर फेंक दिया था । अनघ वे और वानरराज सुग्रीव मिले, तो उनका मिलन अमावस्या के दिन उडुपति चन्द्र और किरणमाली रवि के सम्मिलन-सा था । अक्षय बलशाली राक्षस रूपी अखण्डित अन्धकार-शत्रु को मिटाने के लिए और पुंजीभूत धर्म की संस्थापना करने के लिए संगमित कालों के समान था । ९८

कूट्टमुर्	शिरुन्द	वीरर्	कुशित्तदोर्	पौरुट्कु	मुन्नाळ्
ईट्टिय	तवमुम्	पिन्नर्	मुयर्चियु	मियैन्द	दीत्तार्
वीट्टुम्वा	ळरक्क	रैन्तुन्	दोविनै	वेरिन्	वाङ्गक्
केट्टुणर्	कल्वि	योडु	जान्मुड्	गिडैत्त	दीत्तार् 99

कूट्टम् उरु इरुन्त-एकवित रहे; वीरर्-वीर; कुशित्ततु ओर् पौरुट्कु-निश्चित कोई कार्य साधने के लिए; मुन् नाळ्-पूर्व के दिनों में; ईट्टिय तवमुम्-की हुई तपस्या; पिन्नर् मुयर्चियुम्-और बाद का प्रयत्न; इयैन्तु-मिले; औत्तार्-जैसे लगे; वीट्टुम् वाळ्-घातक तलवार-सरीखे; अरक्कर् अन्तुम्-राक्षस रूपी; ती विलै-पातक को; वेरिन् वाङ्क्-मूल से उखाड़ने के लिए; केट्टु उणर् कल्वियोटु-श्रवण से प्राप्त विद्या को; जान्मुम्-ज्ञान भी; किटैत्तु-प्राप्त हुआ हो; औत्तार्-ऐसा लगे । ६९

श्रीराम और सुग्रीव की मिलन और कैसी थी ? किसी निश्चित कार्य की सिद्धि के लिए पूर्वकृत तपस्या का फल और तत्काल का प्रयत्न दोनों मिल गये हों, ऐसा भी लगा । और भी खूनी तैलवीर-सं राक्षसों के रूप में रहे पातक को मूल से मिटाने के हेतु श्रवण से प्राप्त विद्या को तत्त्व की ज्ञान भी प्राप्त हो गयी हो, ऐसा भी लगा । ९९

ॐ आयदी	रवदि	यित्क	णरक्कन्शि	यरशी	नोक्किन्
तोविने	तीय	नोइडा	रत्तित्तियार्	शैल्वे	निन्नै
नायह	नुलहुक्	कैल्ला	मेन्नला	नलमिक्	कोयि
मेयितेन्	विदिये	नल्हिन्	मेवला	हार्देन्	तेन्डान्

100

आयुतु ओर-ऐसे एक; अवैतियिन् कण-समय में; अरक्कन् चेय्-अर्कपुत्र; अरक्क नोक्कि-राजा राम को देखकर; शैल्व-प्रभु; उलकुक्कु अल्लाम्-सारे लोकों के; नायकन् अन्नलाम्-नायक माने, उसके योग्य; नलम मिक्कोय्-श्रेष्ठता रखनेवाले; निन्नै-आपके पास; मेयितेन्-आ गया; तो वित्ति तीय-पाप जल जाये, ऐसी; नोइडा-तपस्या के कर्ता; अन्नतिल यार-मेरे समान कौन होंगे; विदिये नल्किन्-अब विधि ही अनुकूल रहे, तब; मेवल् आकितु-अप्राप्य; अन्-क्या है । १००

उस मिलन के समय सूर्यमनु सुग्रीव ने राजा राम से यों निवेदन किया । प्रभु ! सारे लोकों के नायक के योग्य श्रेष्ठता रखनेवाले आपके पास मैं आ गया हूँ । कठोर पाप को मिटानेवाली तपस्या के श्रेष्ठ कर्ता मेरे समान कौन होंगे ? जब विधि स्वयं उपकार करने को अनुकूल हो जाती है, तब कौन सी वस्तु होगी जो दुर्लभ हो ? । १००

मेयिन्	तव्वत्ति	नान्	शर्वरियिम्	मल्लियि	नीवन्
दय्यदिन	यिरुन्	तन्मै	यियम्बिनळ्	याङ्ग	ळुइ
कियेन्	तुयर्	निन्ताइ	कडप्पटु	करुदि	वन्दोम्
ऐयनिड	शेरुमन्	वरिहुलत्	तलवन्	शौल्वान्	101

ऐय-श्रेष्ठ; मै अइ-अकलक; तव्वत्तिन् आन्-तपस्या में रत; शर्वरि-शर्वरी ने; मल्लियिल्-इस पर्वत पर; नी वन्तु अयितिते-तुम आये रहे; इरुन्त तन्मै-रहने की बात; इयम्पितोळ्-कही थी; याङ्कळ् उइर-हमको प्राप्ति; कै अइ तुयर्म्-निष्क्रिय बनानेवाला दुःख; निन्ताल् कडप्पटु करुति-तुम्हारी सहायता से दूर करो; समझ; निन् तोरुम्-तुम दूर करोगे, सोचकर; वन्दोम्-आये हैं; अन्न- (श्रीराम के) यह कहने पर; अरि कुल तलवन्-वानरकुल का नायक; शौल्वान्-बोला । १०१

उसके उत्तर में श्रीराम ने यह श्रीवचन उच्चारें । श्रेष्ठ सुग्रीव ! निर्दोष तपस्विनी शर्वरी ने हमें तुम्हारे इस ऋण्यभूत पर्वत पर आकर वास करने की बात बतायी थी । हम यही सोचकर तुम्हारे पास आये कि हम पर जो मनुष्य को निष्क्रिय बना सकनेवाली विपदा आयी है, वह तुम्हारी

सहायता से दूर होगी। श्रीराम ने जब यह बात कही तब वानरकुलाधीश ने यों कहा। १०१

ॐ मुरण्डेत् तडकके योच्चि मुत्तवन् पित्वन् देने
इरुणिलेप् पुउत्तित्त्त क्राड् मुलहड्गुन् दौडर विककुन्
उरण्डेत् ताह वृयन्दे तारुयिर् तुउक्क ववञ्चि
चरणुनेप् पुहुन्दे नेन्नेत् ताड्गुद उरुस मेन्डान् 102

मुत्तवन्-मेरे अग्रज के; पित् वन्तेने-अनुज, मुझ पर; मुरण्डे-बलिष्ठ; तडक्-विशाल हाथ; ओच्चि-उठाते हुए; इरुळ तिले-अन्धकारनिलय; पुउत्तित्त्त क्राड्-इस अण्ड के बाहर तक; उलकु अड्कुम्-विश्व भर में; तौडर-पीछा करने प्रारंभ; आरु उयिर्-प्यारे प्राण; तुउक्क अवञ्चि-छोड़ने से डरकर; इ कुन्दे-इस (ऋष्यभूक) पर्वत के; अरण उटैत्तु आक-मेरे रक्षक रहते; वृयन्तेने-बर्सा; चरण उतै पुकुन्तेत्-आपकी शरण में आया हूँ; अन्नेत् ताड्कुतल-मुझे अपना लेना (और मेरी सहायता करना); तरुमम्-आपका धर्म है; मेन्डान्-कहा। १०२

प्रभु ! मेरे बड़े भाई ने अपने ही अनुज मुझ पर अपना बलवान हाथ उठाकर खड़े। विश्व भर में, अण्ड के बाहर तक जहाँ अंधरा भरा है उसने मेरा पीछा करके मुझे भगाया। मैं मरने से डरता था। अच्छा हुआ कि यह पर्वत मेरा रक्षण कर सकता था। मैं इधर आया तभी जीवित बच सका। ऐसा मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरी रक्षा करना आपका धर्म है ! १०२

ॐ अन्तवक् कुरड्गु वेन्दै यिरामन्तु मिरड्गि नोक्कि
उत्तउत्तक् कुरिय वित्तव तुन्बड्ग लळळ मुत्तुलळ
शान्दन प्रोह मेलवन् दुर्वन्त तौरपप लन्त
नित्तरत्त वेन्कक्कि निरुक्क नेरत्त मोळियु नेरा 103

अन्त-ऐसा जिसने कहा; अ कुरक्कु वेन्ते-उस वानरपति को; इरामन्तु-श्रीराम (ने); इरड्कि नोक्कि-अनुताप के साथ देखकर; उत्त तत्तक्कु उरिय-तुम्हारे अपने; इत्त तुन्पड्कळ् लळळ-सुख-दुःख जो हैं; मुत्तु लळ् नित्तरत्त-जैसे जो पहले हो चुके हैं; पोक्-उनको जाने दो; मेल वन्तु उरुवत्त-जो आगे आयेंगे; तुन्पड्कळ्-उन दुःखों को; तौरपपल-दूर कर देंगे; अन्नेत् नित्तरत्त-वैसे जो स्थित हैं; अन्तक्कुम् निरुक्क नेर-वे मेरे और तुम्हारे लिए समान रहेंगे; अन्त-ग्रह; मोळियुम् नेरा-वचन देकर। १०३

श्रीराम ने ऐसा कहनेवाले सुग्रीव पर दया की दृष्टि फेरी। कहा कि देखो सुग्रीव ! तुम्हारे हक में जितने सुख-दुःख होंगे, उनमें जो बीत गये वे तो बीत गये। पर आगे जो दुःख होंगे उनका निवारण मैं अवश्य करूँगा। अभी जो बाकी हैं आने को, उनको तुम भी मेरे समान हक के समझ लो। प्रभु श्रीराम ने यह वचन दिलाया। १०३

ॐ मइइति युरेप्प देन्ने वानिडे मण्णि तित्तैच्
 चैइव रेन्तैच् चैइडार् तीयरे येन्निनु निन्तो
 इइव रेनक्कु मुइडा रुत्किळे येनदेन् कादइ
 चुइइमुन् चुइइ नीयेन् तित्तुयिर्त् तुणैव नेन्डान् 104

सइइ-और; इति-आगे; उरैप्पतु-कहने के लिए; अँन्ते-क्या है; वान्
 इडे-आकाश में; मण्णिन्-पृथ्वी में; निन्तै चैइवर्-तुम्हारे शत्रु; अँन्तै चैइडार्-
 मेरे भी शत्रु है (मैं वैसा मानूँगा); निन्तोडु उइवर्-तुम्हारे साथी मित्र; तीयरे
 अँत्तिनुम्-दुष्ट ही क्यों न हों; अँत्तकुम् उइडार्-मेरे भी मित्र होंगे; उन् किळे-तुम्हारे
 नातेदार; अँततु-मेरे है; अँत् कातल् चुइइम्-मेरे प्यारे रिश्तेदार; उन् चुइइम्-
 तुम्हारे बन्धु हैं; नी-तुम; अँन्-मेरे; इन्-प्यारे; उयिर् तुणैवन्-प्राणसखा
 हो; अँन्डान्-कहा । १०४

फिर आगे बोले— फिर कहने को क्या है ? इतना मान लो कि
 आकाश में हो, चाहे पृथ्वी में, जो भी तुम्हारे त्रासक शत्रु हैं वे मेरे भी शत्रु
 होंगे । तुम्हारे साथी मित्र मेरे मित्र होंगे । तुम्हारे बन्धु मेरे बन्धु और
 मेरे प्यारे रिश्तेदार तुम्हारे बान्धव ! तुम मेरे प्यारे प्राणसखा हो ! । १०४

ॐ आर्त्ततु कुरक्कुच् चेतै यज्जत्तैच् चिइवन् मेत्ति
 पोर्त्तन पौडित्त रोम पुळहङ्गळ् पूविन् मारि
 त्तर्त्तत्तर् विण्णोर् मेहम् जौरिन्दन कनह मण्णल्
 वार्त्ततैय्क् कुलत्तु लोर्क्कु मइयिनु मैय्यैन् इन्ता 105

अण्णल् वार्त्ततै-महिमावान प्रभु का वचन; अँ कुलत्तु उलोर्क्कुम्-किसी भी
 कुल के लोगों के लिए; मइयिनुम्-वेदवचन से भी (अधिक); मैय्यै-सत्य है; अँत्तु-
 ऐसा; इन्ता-सोचकर; कुरक्कु चेतै-वानर-सेना ने; आर्त्ततु-आनन्दारव किया;
 अज्जत्तै चिइवन्-अंजना के पुत्र की; मेत्ति-श्रीदेह पर; पौडित्त रोम पुळहङ्गळ्-
 प्रफुल्ल रोम-पुलक; पोर्त्त-भर गये; विण्णोर्-देवों ने; पूविन् मारि-पुष्पवर्षा
 करके; त्तर्त्तत्तर्-(भूमि को) पाट दिया; मेकम्-मेघों ने; कनकम्-कनक की;
 जौरिन्दन-वर्षा करायी । १०५

महिमामय प्रभु श्रीराम का यह वचन सुनकर वानर-सेना आनन्दनाद
 कर उठी । 'यह प्रभु का वचन किसी भी (वानर, मानव, देव या
 प्राणी) कुल के सभी लोगों के लिए सत्य है और वेद-वाक्य से भी अधिक
 सत्य है' —इसी धारणा से वे वीर हर्षोन्मत्त हो उठे । अंजनासुत की
 श्रीदेह रोमांच से ढक गयी । देवों ने पुष्पवर्षा करके भूमि को छिपा
 दिया । मेघों ने कनकवर्षा करायी । १०५

ॐ आण्डैळुन् दडियिर् इळुन्द वज्जत्तैच् चिङ्गम् वाळि
 त्तुण्डि डडन्दोण मैन्द तोळुन् नोयुम् वाळि

ईण्डुनुड् गोयि लैय्दि यितिदिति निरुक्कै काण
वेण्डुडुम् मरुळु हँन्डात् वीरनुम् विळुमि दैन्डात् 106

आण्डु-तब; अँळुनुतु-उठ आकर; अटियिल् ताळुन्त-श्रीराम-चरण पर विनत हुआ; अञ्चत्तै चिङ्कम्-अंजनापुत्र सिंह-सदृश हनुमान ने; तूण् तिरळ्-स्तम्भ-सम स्थूल; तटम् तोळ्-और विशाल कन्धों वाले; मैन्त-बलवान वीर; वाळि-जिये; तोळुत्तुम् नीयुम्-आपका मित्र और आप; वाळि-(चिरकाल) जिऐ; ईण्डु-अब; नुम् कोयिल् अँय्ति-अपना मन्दिर जाकर; इतितित्तु-सुख से; नित्तु इरुक्कै-आपका (आराम से) रहना; काण वेण्डुतुम्-देखना चाहते हैं; अरुळुक-कृपा करें; अँन्डात्-प्रार्थना की; वीरनुम्-श्री वीरराघव ने भी; विळुमितु-यह श्रेष्ठ है; अँन्डात्-कहा (सम्मति प्रकट की) । १०६

तब हनुमान उठा । श्रीराम के पास आकर उनके चरणों पर विनत हुआ । अंजनासुत, केसरी-सदृश हनुमान ने निवेदन किया कि स्तम्भ-सम स्थूल और विशाल कन्धों वाले बली वीर ! जिऐ आप । आपका मित्र और आप चिरकाल जिऐ । अब आप अपने मन्दिर में सुख से पधारें और प्रसन्नता के साथ आराम करें । इसके हम दर्शन करना चाहते हैं । यह निवेदन सुनकर श्रीवीरराघव ने भी श्रीवचन उच्चारित कि हाँ ! यह अच्छी बात है ! । १०६

एहित्त रिरवि शेयु मिरुवरु मरिह ठेरुम्
ऊहर्वञ् जेनै शूळ्वन् दडियिणै युवन्डु वाळुत्त
नाहमु नरन्दक् कावु नळित्तावा विहळु मल्हिप्
पोहवू मियैयु मेशुम् पुडुमलर्च् चोले पुक्कार् 107

इरवि चैयुम्-रविसुत (और); इरुवरुम्-(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों; अरिक्ळ् एरुम्-वानरों में केसरी-सम हनुमान; वैम्-भयंकर; उक् चेतै-और वानर-सेना के; शूळ्वन्नु-घेरते आकर; अटियिणै-चरणद्वय; उवन्तु वाळुत्त-भक्ति के साथ वन्दना करते; एकितर्-चले; नाकमुम्-पुंनाग और; नरन्त कावुम्-नारंगी के बागों; नळित वाविकळुम्-और कमलसरो से; मल्कि-खूब भरे होकर; पोक पुमियैयुम्-भोगभूमि (स्वर्ग) की भी; एचुम्-शरम में डालनेवाले; पुतुमलर् चोले-नवविकसित पुष्पोद्यान में; पुक्कार्-पहुँचे । १०७

उनके सम्मत होने पर रविसुत सुग्रीव, श्रीराम और लक्ष्मण दोनों और वानरकेसरी हनुमान सब उठे और चलने लगे । वानर-सेना ने उनके चरणों में विनत होकर उनकी स्तुति की । वे एक नवविकसित पुष्पोद्यान में पहुँचे, जिसमें पुंनाग, नारंगी आदि के तरु लसे थे और कमलसर पाये गये । वह भोगभूमि स्वर्ग का भी उपहास करनेवाला (उतना मनोरम और सुहावना) उद्यान था । १०७

आरमु	महिलुन्	दुन्नि	यविरपळिक्	कडैय	ळावि
नारनिन्	इन्नपोऽ	रोन्नि	नवमणित्	तडङ्ग	णीडुम्
पारमु	मरुङ्गुन्	दैयवत्	तरुवुयर्	मरत्ति	ताडुम्
शूरर	महळि	रुश	रुवन्निऽय	शुम्मेत्	तन्ने 108

आरमुम् अकिलुम्-चन्दनतरुओं और अगर के वृक्षों से; तुन्ति-ठस भरकर; अविर पळिङ्कु अडै-उज्ज्वल स्फटिक-चट्टानों से; अळावि-शोभायमान; नारम् निन्नत्त पोल्-(उनमें) जल स्थित हो; तोन्नि-ऐसा भ्रम पैदा करते हुए; नव मणि तटङ्कळ-नवरत्न-खचित तडागों के; नीटुम्-लम्बे; पारमुम् मरुङ्कुम्-तटों और पास के स्थलों में; तेय्व तरु-देवलोके के कल्पतरु-सम; उयर्-उन्नत; मरत्तिन्-वृक्षों पर; आटुम्-झूलनेवाले; चूरु अर मकळिर्-देववालाओं के; ऊचल्-मूले; तुवन्निऽय-जो खूब मचाते हैं; चुम्मेत्तु-उस शोर से भरा है, (वह उद्यान) । १०८

उसमें चन्दनतरु और अगर के पेड़ बहुत थे । प्रकाशमय स्फटिक-चट्टानें थीं । वे ऐसी दिखीं मानो उनमें जल भरा हो । नवरत्नों से शोभित तडाग थे । उनके कुलों पर और उनके आसपास दिव्य कल्पतरु के समान अनेक ऊँचे वृक्ष थे । उन पर देवनारियाँ झूले बाँधकर झूल रही थीं । वह उद्यान उनकी कोलाहलध्वनि से भरा था । १०८

अयर्विल्	केळ्विशा	लडिअर्	वेलैमुन्
पयिल्विल्	कल्वियार्	पौलिविल्	पान्मैपोल्
कुयिलु	मामणिक्	कुळुमु	शोदियाल्
वैयिलुम्	वैळ्ळिवैण्	मदियिन्	मेम्पडा 109

अयर्वु इल्-अप्रमत्त; केळ्वि चाल्-श्रवणज्ञान से युक्त; अडिअर् वेलै मुन्-ज्ञानी पंडितों के सागर (वृन्द) के सामने; पयिल्वु इल्-अनभ्यस्त; कल्वियार्-विद्या वाले; पौलिबु इल्-जैसे नहीं चमकते; पान्मै पोल्-वैसी रीति से; कुयिलुम्-जड़ित; मा मणि कुळुमु-अनेक रत्नों की सम्मिलित; चोतियाल्-ज्योति से; वैयिलुम्-धूप भी; वैळ्ळि वैण् मतियिन्-चाँदी के से श्वेत चन्द्र की तरह; मेम्पडा-प्रकाश में उन्नत नहीं रहती । १०९

उसमें अनेक तरह के रत्न पाये गये । उनके प्रकाश के सामने धूप भी श्वेत चाँदनी से अधिक उज्ज्वल नहीं रही । वह ऐसा रहा, जैसा अप्रमत्त श्रवण-ज्ञान से भरे विद्वानों के (सागर) समूह के सामने विद्या से अनभ्यस्त लोग नहीं चमकते । १०९

एय वन्नुदा मिन्निय शोलैवाय्, मेय मैन्दनुड् गवियिन् वेन्दनुम्
तूय पूवणैप् पौलिन्दु तोन्निन्नार्, आय वन्विन्ना रळव लावुवार् 110

एय-(ऐसी विशेषता से) युक्त; अन्ततु आम्-उस; इतिय-मुहावने; चोलै-वाय्-उद्यान में; मेय मैन्तनुम्-आगत वीर श्रीराम; कवियिन् वेन्तनुम्-कपिराज;

तूय पू अणं-पवित्र पुष्पासन पर; पीलिनू तोन्त्रितार्-शोभायुक्त विराजे; आय
अन्पितार्-गम्भीर प्रेम के साथ; अळवळावुवार्-स्नेहसम्भाषण करने लगे । ११०

ऐसे विशिष्ट सुखद उद्यान में श्रीराम और कपिकुलेश दोनों पधारे
और एक पवित्र पुष्पासन पर विराजे । दोनों बराबर स्नेह के साथ
वार्तालाप करने लगे । ११०

कनियुङ्	गन्तमुम्	कायुन्	द्वयन्
इतिय	यावैयुङ्	गौणर	यारितुम्
पुत्तिदत्	मब्जत्तत्	तौळिल्पु	रिन्दुपिन्
इतिदि	रुन्दुनल्	विरुन्दु	मायितान् 111

कनियुम्-फलों और; कन्तमुम्-कन्दों; कायुम्-खाद्य कच्चे फलों को; तूयत्-
पवित्र और; इतिय-मधुर; यावैयुम्-सब; गौणर-लोग लाये, तब; यारितुम्
पुत्तिदत्-सर्वश्रेष्ठ पावनमूर्ति; मब्जत्त तौळिल्-स्नानकार्य; पुरिन्दु-करके; पिन्-
पश्चात्; इतितु इरुन्दु-सुख से रहकर; नल् विरुन्दुम्-श्रेष्ठ अतिथि भी; मायितान्-
बने (आतिथ्य स्वीकार किया) । १११

स्नेह के साथ जब वे बोलते रहे तब वानर फल, कन्द, तरकारी आदि
लाये, जो पावन और मधुर थे । सर्वश्रेष्ठ पावन (और पावनकारी)
भगवान ने स्नानकार्य किया । फिर सुख से आसीन होकर आतिथ्य को
स्वीकार किया । १११

विरुन्दु	माहियम्	मैय्मै	यन्त्रितो
डिरुन्दु	नोक्किन्	दिरैवन्	शिन्र्दियाप्
पौरुन्दु	नन्मत्तैक्	कुरिय	पूर्वैयप्
पिरिन्दु	ळाय्हीलो	नीयुम्	पिन्नेन्डान् 112

अ मैय्मै अन्पितोटु-उस तरह सच्चे प्रेम के साथ; इरुन्दु-रहकर; इरैवन्-
भगवान श्रीराम ने; विरुन्दुम् आकि-आतिथ्य स्वीकार करके; नोक्कि-सुग्रीव पर
दृष्टि डालकर; नौन्तु-खेद करके; चिन्तिया-विचार करके; पौरुन्दु-योग्य;
नल् मत्तैक्कु उरिय-सद्गृहिणी; पूर्वैयै-स्त्री से; पिन्-बाद; नीयुम्-तुम भी;
पिरिन्दु उळाय् कील्-वियुक्त हो गये क्या; अन्डान्-प्रश्न किया । ११२

श्रीराम ने सुख से आतिथ्य स्वीकार किया । तब उनकी दृष्टि सुग्रीव
पर पड़ी । उनके मन में सुग्रीव के अकेलेपन पर ध्यान गया । वे दुःखी
हुए । उन्होंने उससे पूछा कि फिर तुम भी आखिर अपनी योग्य गृहिणी
स्त्री से वियुक्त हो गये क्या ? । ११२

अन्ड	वैलैयि	नैळ्नुदु	मारुदि
कुन्ऱु	पोलनिन्	इरुहै	कूपपितान्

निन्ऱु औन्ऱु	नीदियाय् नानुन्नक्	नैडिडु कुरैप्प	केट्टियाल् दुण्डेन्ता 113
-----------------	-----------------------	-------------------	------------------------------

अँन्ऱु वेलैयिल्-प्रश्न करते समय; मारुति-मारुति; कुन्ऱु पोल अँळुन्नु निन्ऱु-पर्वत-सम उठ खड़ा हुआ और; इरुक्-दोनों हाथ; कूपपित्तान्-जोड़े; निन्ऱु नीतियाय्-अचल नीतिमान; नानु-मैं; उन्नक्कु-आपसे; उरैप्पतु-निवेदन करूँ, वह; औन्ऱु उण्डु-एक बात है; नैडितु केट्टि-लम्बी (है) सुन लें; अँता-कहकर । ११३

जब श्रीराम ने सुग्रीव से यह प्रश्न किया, तब मारुति पर्वत के समान उठ खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर यों बोला । अचल नीतिमान स्वामी ! आपसे एक बात निवेदन करनी है । उसको आप पूरा-पूरा आदि से अन्त तक सुनिए । ११३

नालु वेलि शूलि वालि	वेदमा यन्तदोर् यिन्नरुट् यैन्ऱुलान्	नवैयि मलैयिन् टुंरैयिन् वरम्बि	लार्हलि मेलुळान् मुड्डित्तान् लार्ऱुलान् 114
------------------------------	--	---	---

नालु वेतमाम्-चार वेद रूपी; नवै इल्-निर्दोष; आर् कलि-समुद्र ही; वेलि अन्नतु-रक्षा-भित्तियाँ जिसकी हों; ओर् मलैयिन् मेल्-ऐसी एक गिरि (कैलास) पर; उळान्-रहनेवाले; चूलियिन्-शूली महादेव की; अरुळ् तुंरैयिन्-कृपा से; मुड्डित्तान्-पूर्ण; वरम्बिल् आर्ऱुलान्-असीम बलिष्ठा वाली; वालि-वाली; अँन्ऱु उळान्-नामक एक है । ११४

निर्दोष, वेद रूपी और शब्दायमान समुद्रों को रक्षण-भित्तियों के रूप में जिसने पाया है, उस कैलासपर्वत पर रहनेवाले शूली महादेव की कृपा का पूर्ण पात्र और असीम बलिष्ठ वाली नाम का एक वानरराज है । ११४

कळ्ऱुन् ऱुळु अळुलुड् चुळुलुम्	देवरो मन्दरत् गोळरा वेलैयैक्	डवुणर् तुरुवु वहडु कडैयुन्	कण्णिनिन् तेय्वुऱ तीयैळच् दोळिनाम् 115
--	---------------------------------------	-------------------------------------	---

कळ्ऱुम्-प्रशंसित; तेवरोट्टु-देवों के साथ; अवुणर्-दानव; कण्णि निन्ऱु- (अमृत-प्राप्ति का) लक्ष्य लेकर, (दोनों ओर) खड़े होते; उळुलुम्-धूमनेवाला; मन्तरत्तु-मन्दर पर्वत का; उरुवु-आकार; तेय्वु उऱ-घिसे ऐसा; अळुलुम्-क्रुद्ध; कोळ् अरा-भयंकर सर्प, वासुकी के; अकट्टु ती अँळ-पेट से आग निकले, ऐसा; चुळुलुम् वेलैयै-मथित समुद्र को; कडैयुम् तोळित्तान्-अकेला मथनेवाले बलिष्ठ कर्णों का । ११५

अमृत निकालने के उद्देश्य से देवों और दानवों ने वासुकी-लपेटे मन्दर पर्वत को घुमाया था । तब मन्दर के आकार को घिसाकर क्षीण कराते

हुए और क्रुद्ध भयंकर वासुकी नाग अपने पेट से आग उगले —ऐसा वाली ने अकेले ही मन्दर पर्वत को घुमाया था और समुद्र बिल्कुल क्षुब्ध हो गया । (यह वृत्तान्त वाल्मीकी में नहीं पाया जाता ।) ऐसा भुजबली है वह । ११५

निलत्तु	नीरुमाय्	नैरुप्पुड्	गाड्ऱुमाय्
उलैविल्	पूदनान्	गुडैय	वाड्ऱुलान्
अलैयिन्	वैलैशूळ्	किडन्द	वाळिमा
मलैयि	त्तिन्ऱुमिम्	मलैयिन्	वावुवान् 116

निलत्तुम्-भूमि; नीरुम् आय्-व जल बने; नैरुप्पुम् काड्ऱुम् आय्-अनल और अनिल बने; उलैव ईल्-अक्षय; पूतम् नान्कु उटैय्-(जो हैं) उन चार भूतों के सम्मिलित; आड्ऱुलान्-बल से युक्त; अलैयिन् वैलै-तरंगसमेत समुद्र से; शूळ् किटन्त-घिरे रहे; आळि मा मलैयिन् तित्ऱुम्-चक्रवाल पर्वत से; इ मलैयिल्-इस पर्वत पर; वावुवान्-उछलकर कूदेगा । ११६

वाली भूमि, जल, अनल और अनिल —इन चारों भूतों का सम्मिलित बल रखता है । तरंग-भरे बाह्य समुद्रों से घिरे चक्रवाल पर्वत से उछलकर वह इस पर्वत पर एक दम कूद सकता है । ११६

किट्टु	वार्पौरक्	किटैक्कि	तत्तनवर्प्
पट्ट	नल्वलम्	बाह	मैय्दुवान्
अट्टु	मादिरत्	तिरुदि	नाळुमुड्
इट्ट	मूरत्तिताळ्	पणियु	माणैयान् 117

पौर किट्टुवार्-लड़ने आनेवाले; किटैक्किन्-मिल गये तो; अत्तनवर् पट्ट-उनमें रहनेवाले; नल् वलम्-श्रेष्ठ बल का; पाकम्-(आधा) भाग; मैय्दुवान्-खुद प्राप्त कर लेगा; अट्टु मातिरत्तु-आठों दिशाओं के; इरुत्ति-अन्त तक; नाळुम् उड्ऱु-रोज जाकर; अट्ट मूरत्ति-(वहाँ अधिष्ठित रहनेवाले) अष्टमूर्तियों के; ताळ्-चरणों की; पणियुम्-पूजा करने का; आणैयान्-नियम रखनेवाला । ११७

जो कोई उससे युद्ध करने आयगा, उसका आधा बल वाली को मिल जायगा । ऐसा वर उसे प्राप्त है । (यह बात वाल्मीकी में नहीं पायी जाती । श्रीराम ने छिपकर वाली को मारा, इसकी सफ़ाई में यह वर इंगित किया जाता है ।) वह प्रतिदिन आठों दिशाओं के अन्त तक जाता है और वहाँ अधिष्ठित अष्टमूर्तियों की पूजा कर आता है । यह उसका नियम बना है । ११७

कालूशै	लादवन्	मुत्तन्ऱक्	कन्दवेळ्
वैलूशै	लादवन्	मारविन्	वैन्ऱियान्

वाल्श
कोल्श

लादवा
लादवन्

यलदि
कुडेश

रावणन्
लादरो 118

अवन् मुन्तर्-उसके सामने; काल् चैलातु-पवन नहीं चलता; अवन् मारुपिन्-उसके वक्ष में; कन्त वेळ-स्कन्द (कार्तिकेय) देव की; वेल् चैलातु-शक्ति नहीं निफर सकती; वेन्डियान्-विजयी (की); वाल् चैलात-पूँछ जहाँ नहीं जाती; वाय् अलतु-उस जगह के सिवा अन्यत्र (यानी जहाँ उसकी पूँछ जाती वहाँ नहीं); इरावणन् कोल्-रावण का (राज) दण्ड; चैलातु-नहीं जायगा; अवन् कुट-उसका छत्र भी; चैलातु-नहीं चलेगा । ११८

उस वाली के सामने पवन नहीं चलता । उसके वक्ष में स्कन्ददेव की शक्ति घात नहीं कर सकती । (स्कन्ददेव कार्तिकेय हैं ।) रावण का दण्ड और छत्र वहीं चल सकेंगे, जहाँ वाली की पूँछ नहीं गयी हो । रावण का अधिकार वाली के अधिकार से सीमित रह गया है । ११८

मेरु वेमुदर् किरिहळ् वेरोडुम्, पेरु मेयवन् पेरु मेत्तैडुम्
कारुम् वानमुड् गदिरु नाहमुम्, तूरु मेयवन् पेरिय तोळ्कळाल् 119

अवन् पेरुमेल्-वह चलेगा तो; मेरुवे मुतल् किरिहळ्-मेरु ही आदि पर्वत; वेरोडुम्-जड़ के साथ; पेरुमे-उखड़ जायेंगे; अवन् पेरिय तोळ्कळाल्-उसकी बड़ी भुजाओं से; नेट्टुम् कारुम्-बड़े-बड़े मेघ और; वातमुम्-आकाश; कतिरुम्-चन्द्र और सूर्य और; नाकमुम्-स्वर्गलोक; तूरुमे-परस्पर टकराकर मिट जायेंगे । ११९

जब वह चलता है, तब उसके वेग से चालित पवन के कारण मेरु आदि सभी पर्वत जड़ से उखड़ जाते हैं । उसके कन्धों से टकराकर बड़े-बड़े मेघ, आकाश, चन्द्र और सूर्य और स्वर्गलोक तक चूर हो जा सकते हैं । ११९

पारि उन्दवैम् वन्डि पण्डेनाळ्, नीर्हि उन्दपे रामै नेरुळान्
मारुवि उन्दमा वैन्निनु मड्ऱवन्, तार्हि उन्दतो डहैय वल्लदो 120

पार् इटन्त-भूमि को उखाड़नेवाले; वैम् पन्डि-अतिबलिष्ठ वराह (विष्णु का अवतार) भी; पण्डे नाळ्-प्राचीनकाल में; नीर् किटन्त-जल में रहा; पेर् आमे-बड़ा कच्छप (विष्णु का अवतार) भी; नेर् उळान्-उसके समान हैं; मारुपु इटन्त-हिरण्य का वक्ष-विदारक; मा वैन्निनुम्-नरसिंह भी; अवन्-उसके; तार् किटन्त तोळ्-माला से अलंकृत कन्धों को; तर्कैय वल्लतो-परास्त करने की शक्ति रखता क्या । १२०

वह, भूमि को जिन्होंने खोद निकाला उन विष्णु का अवतार, बड़ा वराह, और प्रलयजल में पड़ा रहा, विष्णु का, अवतार कच्छप —इनकी-सी शक्ति रखनेवाला है । नरसिंह भी, जिन्होंने हिरण्यकशिपु के वक्ष को विदीर्ण किया था, इसके भुजबल को परास्त कर सकेंगे क्या ? नहीं । १२०

पडर्न्द	नीर्ण्डुन्	दलैप	रप्पिमी
दडर्न्दु	पारिडन्	दत्तैय	नन्दन्तुम्
किडन्तु	ताड्गुमिक्	किरियिन्	मेयितान्
नडन्तु	ताड्गुमिप्	पुवन्	नाळैलाम् 121

अनन्तन्तुम्-अनन्त नाग भी; पडर्न्त-खुले; नीळ् नैटु-लम्बे-चौड़े; तलै-अपने सहस्र सिरों को; परप्पि-फैलाकर; मीतु अडर्न्तु-उन पर रही; पार् इटम् तलै-भूमि को; किटन्तु ताड्कुम्-उसके नीचे रहकर ठो रहा है; इ किरियिन् मेयितान्-इस पर्वत पर रहनेवाला वाली तो; इ पुवन्तम्-इस भुवन को; नाळैलाम्-अनेक काल से; नडन्तु ताड्कुम्-चलते हुए ही धारण करता रहा है । १२१

अनन्तनाग इस भूमि को अपने सहस्र सिरों को फैलाकर, भूमि के नीचे रहकर ही उसे धारण कर रहा है । पर इस पर्वत पर रहनेवाला वाली चलते हुए ही बरसों से इसका धारण कर रहा है । १२१

कडलौ	लिप्पदुड्	गाल्श	लिप्पदुम्
मिडल	रुक्कर्तेर्	मीडु	शाल्वदुम्
तौडरिन्	मर्डुवन्	शुळियु	मैन्डलाल्
अडलिन्	वैर्डिया	ययलि	ताववो 122

अडलिन् वैर्डियाय्-युद्धविजेता; कडल् औलिप्पतुम्-समुद्र का गर्जन करना; काल् चलिप्पतुम्-पवन का संचार करना; मिडल् अरुक्कर्-शक्तिमन्त (द्वादश) आदित्यों का; तेर् मीतु चैल्वतुम्-रथों पर सवार होकर संचार करना; तौडरिन्- (वाली के) पास जायें तो; अवन् चुळियुम्-वह क्रोध करेगा; मैन्ड अलाल्-यह (कारण) छोड़कर; मर्डु अयलिन्-अन्य कारणों से; आववो-होते हैं क्या । १२२

हे युद्धविजेता ! समुद्र गरजता है, वायु बहती रहती है, बलवान द्वादश आदित्य रथों पर सवार हो संचार कर रहे हैं ! यह सब क्यों ? वे वाली से डरते हैं । सोचते हैं कि अगर हम उसके पास जायें तो वह कुपित होगा । अन्य कोई हेतु है क्या ? नहीं । १२२

वैळळ	मेळुपत्	तुळळ	मेरुवैत्
तळळ	लान्तदो	ळरियिन्	रात्तैयान्
उळळ	मीन्डिरिय्व	वुयिरुम्	वाळुमाल्
वळळ	लेयवन्	वलियिन्	वन्मैयाल् 123

वळळले-उदार दानी; मेरुवै तळळल् आत्त-मेरु को भी ढकेलने की शक्ति वाले; तोळ्-कन्धों के; वैळळम् अळुपत्तु उळळ-सत्तर 'वैळळम्' के; अरियिन् तात्तैयान्-वानरों की सेना का स्वामी; अवन् वलियिन्-उसकी शक्ति के; वन्मैयाल्-आधिक्य से; अँ उयिरुम्-सभी जीव; उळळम् औन्डि-उसके साथ मन मिलाकर, मेल के साथ; वाळुम्-जीते हैं । १२३

हे वदान्य ! उसके पास सत्तर 'वैळ्ळम्' या समुद्र वानरवीरों की बनी सेना है । (एक हाथी, एक रथ, तीन अश्व, पाँच पदाति — ये मिलकर एक 'पंक्ति' बनते हैं । तिगुणे के हिसाब से सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी होती है । दस अनीकिनियों की एक अक्षौहिणी होती है । फिर अठगुणे के हिसाब से एक, कोटि, शंख, विन्द, कुमुद, पद्म, देश और समुद्र होता है — शुकनीति से न०वे० रा० द्वारा उद्धृत ।) उसके प्रताप के आधिक्य के कारण सभी जीव उसका आदर करके मेल के साथ रहते हैं । १२३

मल्लैयि	डिप्पुडा	वयवैन्	जीयमा
मुल्लैयि	डिप्पुडा	मुरण्वैन्	गालुमैन्
तल्लैतु	डिप्पुडुच्	चार्वु	डाववन्
विळ्ळैवि	डत्तिन्मेल्	विळ्ळियै	यन्जलाल् 124

विळ्ळियै अन्चल् आल्—उसके गर्जन से डरते हैं, इसलिए; अवन्—उसके; विळ्ळैवु इट्तिन् मेल्—चाहे (वास के) स्थान के ऊपर; मल्लै इट्तिप्पु उडा—मेघ वज्रघोष नहीं निकालते; वयम् वैम्—विजयी भयंकर; जीयमा—सिंह जानवर; मुल्लै—गुफाओं में; इट्तिप्पु उडा—गर्जन नहीं करते; मुरण्वैम् कालुम्—बली, भयंकर पवन भी; मैन् तल्लै—मृदु पत्तों में; तुट्तिप्पु उड—स्पन्दन पैदा करते हुए; चार्वु उडा—उनके पास नहीं बहता । १२४

वाली गरज उठेगा, इसी डर से जहाँ वह चाह के साथ रहता है, उसके ऊपर मेघ वज्र नहीं गिराते । विजयशील सिंह जानवर अपनी गुफा में भी गर्जन नहीं करते । बलवान भयंकर पवन भी पल्लवों को भी हिलाते हुए नहीं बहता । १२४

मैय्क्कौळ्	वालितान्	मिडलि	रावणन्
तौक्क	तोळ्ळुत्	तौडर्व	डुत्तनाळ्
पुक्कि	लादवुम्	बौळ्ळिय	रत्तनीर्
उक्कि	लादवु	मुलहम्	यावदो 125

मैय् कौळ् वालितान्—अपने शरीर का एक अंग, पूँछ से; मिडल् इरावणन्—अति बलिष्ठ रावण के; तौक्क तोळ्—राशि के कंधों को; उड—खूब कसकर; तौडर् पटुत्त नाळ्—जिस दिन (वाली ने) बाँधा था; पुक्कु इलातवुम्—(उस दिन) वह जिन लोकों में नहीं गया; बौळ्ळि अरत्त नीर्—बहनेवाला रक्त; उक्कु इलातवुम्—जहाँ नहीं गिरा; उलकम् यावतो—वे लोक कौन हैं । १२५

(एक बार वाली समुद्रतट पर सन्ध्यावन्दन कार्य में निरत था । रावण ने पीछे से उसको अपनी बीसों भुजाओं से बाँधा ।) वाली ने उसको बीसों कंधों को एक साथ कसकर अपनी पूँछ से बाँध लिया । उसी स्थिति में उसको उठा लेते हुए वाली सभी लोकों में घूमा । तब कौन सा लोक बचा था, जिसमें वाली नहीं गया था और जहाँ रावण का रक्त नहीं गिरा था ? । १२५

इन्दि	रत्नरत्तिप्	पुदल्व	तिन्नल्लिच्
चन्दि	रत्नरत्ति	तन्नेय	तन्मैयान्
अन्दि	हन्तरत्तक्	करिय	वाणैयान्
मुन्दि	वन्दन्	निवत्तिन्	मीयम्बिताय् 126

मीयम्पिताय्-शक्तिमन्त; इन्तिरत्न तन्ति पुतल्वन्-इन्द्र का अनुपम वह पुत्र; इन् अलि-सुखद; चन्तिरत्न-चन्द्र; तल्लत्तु अन्नेय-शोभायमान हो, ऐसा; तन्मैयान्-विशिष्ट (श्वेत वर्ण का) है; अन्तकन् तन्तक्कु अरिय-यम के लिए भी अलंघ्य; आणैयान्-आज्ञाकारी है; इवत्तिन्-इन (सुग्रीव) का; मुन्ति वन्तत्तन्-अग्रज है। १२६

शक्तिमान ! इन्द्र का वह अनुपम पुत्र वाली श्वेत रंग का है और सुखद शोभायमान चन्द्र के समान है। उसकी आज्ञा ऐसी है कि यम के लिए भी टालना कठिन है। वह इन सुग्रीव का अग्रज भ्राता है। १२६

अन्त	वन्तमक्	करश	ताहवेन्
इन्त	वन्तिळम्	बदमि	यर्कुनाळ्
मुन्त	वन्तुलप्	पहैजन्	मुट्टितान्
मिन्त	यिर्कुवा	ळवुणन्	मेन्मैयान् 127

अन्तवन्-वह; अन्तक्कु अरचन् आक-हमारा राजा रहा, तब; इन्तवन्-ये; इळम् पतम् एन्कु-युवराज के पद का धारण करके; इयर्कु नाळ्-शासन करते रहे, तब; मेन्मैयान्-शक्ति में बढ़ा हुआ; मुन्-पूर्व से ही; अबन् कुल पक्कन्-वाली का कुलवैरी जो रहा, वह; मिन् अयिर्कु-उज्ज्वल वक्र दन्तार; वाळ् अवुणन्-तलवारधारी दानव; मुट्टितान्-(वाली से) भिड़ा। १२७

वह वाली हमारा राजा रहा। ये सुग्रीव युवराज के पद पर थे। जब ये राज्य कर रहे थे, तब अति बलिष्ठ, वाली का कुलवैरी और बिजली-सम वक्रदन्तार और तलवारधारी (मायावी नाम का) दानव वाली से आकर भिड़ा। १२७

मुट्ट	निन्नुवन्	मुरणु	रत्तिताल्
ओट्ट	वज्जिन्नेज्	जुलैय	बोडितान्
वट्ट	मण्डलत्	तरिदु	वाळ्वैन्ता
अट्ट	रुम्बिल	मदन्ति	लैय्दितान् 128

मुट्ट-टकराने पर; निन्नुवन्-जो अड़ा रहा वह वाली; मुरणु उरत्तिताल्-बलवान वक्ष से; ओट्ट-प्रहार करने लगा; अज्जि-डरकर; नेज्चु उलैय-मन में व्यग्र होकर; ओडितान्-भागा; वट्ट मण्डलत्तु-गोल भूमण्डल में; वाळ्वु अरितु अँता-जीता कठिन है, जानकर; अट्ट अरुम्-पहुँचने में कठिन; पिलम् अतत्तिल्-एक बिल में; अय्दितान्-घुस गया। १२८

जब असुर भिड़ने आया, तब वाली अड़ा रहा और अपने वक्ष से उस पर प्रहार किया। असुर डरा और जान लेकर भागा। 'इस गोल भूमण्डल पर कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं' —यह जानकर वह ऐसे एक बिल में घुस गया, जहाँ जाना बहुत ही कठिन था। १२८

अँयुदु	कालैयिप्	पिलनु	ळैय्दियान्
नौय्दि	नङ्गवड्	कौल्वे	नोन्मैयाल्
शैय्दि	कावनी	शिरिडु	पोळ्देन्ता
वैय्दि	नैय्दिन्नान्	वैहुळि	मेयिन्नान् 129

अँयुतु कालै-जब घुसा; वैकुळि मेयिन्नान्-क्रुद्ध (वाली); यान्-मैं; इ पिलनुळ् अँय्ति-बिल में जाकर; नोन्मैयाल्-शक्ति से; नौय्तिन्-शीघ्र; अङ्कु-वहाँ; अवन् कौल्वेन्-उसको मारूँगा; नो-तुम; चिरिटु पोळ्त्तु-थोड़ी देर; कावल् वैय्ति-रक्षण का काम करो; अँता-कहकर; वैय्तिन्-शीघ्र; अँय्तिन्नान्-(बिल में) गया। १२९

जब वह घुस गया तो वाली को अपार क्रोध हुआ। उसने सुग्रीव को आज्ञा दी कि मैं इसमें जाऊँगा और अपने बल से इसको शीघ्र मारकर आ जाऊँगा। तुम इसकी रखवाली करो, थोड़ा समय। यह कहकर वाली शीघ्र उस बिल में घुस गया। १२९

एहि	वालियु	मिरुदुवे	ळौडेळ्
वैह	वैम्बिलन्	दडवि	वैम्मैशाल्
मोह	मोडमर्	मुयल्विन्	वैहिडच्
चोह	सैय्दिनिन्	रुण्डु	ळङ्गिन्नान् 130

वालियुम्-वाली भी; वैम् पिलम् वेकम् एक-भयंकर बिल में घुसकर; एळ् ओट्टु एळ् इरुतु-चौदह ऋतुओं के काल तक; तटवि-टटोलकर; वैम्मै चाल्-उग्र; मोकम् ओट्टु-उत्साह के साथ; अमर् मुयल्विन्-युद्ध के प्रयत्न में; वैकिट-लगा रहा, तब; निन् तुणै-आपके भाई (सुग्रीव); चोकम् अँय्ति-शोकाकुल होकर; तुळङ्किन्नान्-घबड़ा गया। १३०

वाली उसके अन्दर गया। उस असुर को ढूँढ़ता रहा। चौदह ऋतुओं का (अट्ठाईस मास का) काल बीत गया। आखिर उसको पाकर वाली उग्र रूप से दत्तचित्त होकर उसके साथ लड़ने में लगा हुआ था। इधर आपके भाई सुग्रीव चिन्ताग्रस्त होकर (शायद वाली मर गया क्या ? इस संशय के कारण) घबड़ाये रहे। १३०

अळद	ळुङ्गुरु	मिवन्	यन्बिन्निल्
तौळुदि	रन्डुनिन्	रौळिलि	दादलाल्

अळुदु	वैत्रिया	यरशु	कौळ्हत्तप्
पळुदि	दैन्ऱत्तन्	परियु	नैज्जित्तान् 131

अळुदु वैत्रियाय्-उल्लेखनीय विजयशाली; अळुदु अळुङ्कुम्-रोते और दुःखी; इवत्तै-इनको; अन्पितिल् तौळु-स्वामी-भक्ति के साथ नमस्कार करके; इरन्तु-प्रार्थना में; निन् तौळिल् इतु-आपका कार्य है यह; आतलाल्-इसलिए; अरच्चु कौळ्क-राज्य लो; अत्त-हमारे कहने पर; परियुम् नैज्जित्तान्-(भ्रातृस्नेह से) विह्वलमन; इतु पळुदु-यह गलत है; अन्ऱत्तन्-कहा । १३१

वर्णनयोग्य विजयशील ! बहुत काल तक सुग्रीव दुःख के साथ रोते रहे । तब हम वानरों ने इनसे प्रार्थना की । शासन करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार का कार्य है । आप जाकर राज्य पर अधिकार करें । पर भ्रातृवियोग से दुःखी इन्होंने कहा कि यह गलत काम है । वे सम्मत नहीं हुए । १३१

अैन्ऱु	तानुमव्	वळिथि	रुम्बिलम्
शैन्ऱु	मुत्तवर्	रेडु	वैत्तवर्
कौन्ऱु	ठान्ऱत्तैक्	कौलवी	णादैत्तिल्
पौन्ऱु	वैत्तन्प्	पुहुदत्त	मेयित्तान् 132

अैन्ऱु-ऐसा कहकर; अ वळि-उसी रास्ते से; इरुम् पिलम् चैन्ऱु-बड़े बिल में जाकर; मुत्तवन् तेदुवैन्-अपने बड़े भाई को ढूँढ़ेगा; अवन् कौन्ऱु उळान् तत्तै-उसके हन्ता को; कौल ओणातु अैत्तिल्-मार नहीं सकूँगा तो; पौन्ऱुवैन्-स्वयं मर जाऊँगा; अैत्त-यह ठानकर; तानुम्-स्वयं भी; पुकुत्तल् मेयित्तान्-घुसने लगे । १३२

उन्होंने यह ठाना कि मैं इसी मार्ग से इस बिल में घुस जाऊँगा और बड़े भाई की टोह लगाऊँगा । समझिए कि उनको असुर ने मारा है और उसे मैं मार नहीं सकूँगा, तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँगा । यह निश्चय सुनाकर वे उसी बिल में प्रवेश करने लगे । १३२

तडुत्तु	वल्लवर्	तणिवु	शैय्दुनोय्
कैडुत्तु	मैलैयोर्	किळत्तु	नीदियाल्
अडुत्त	कावलुम्	मरशु	माणैयिल्
कौडुत्त	दुण्डिवन्	कौण्ड	दिल्लैयाल् 133

वल्लवर्-समर्थ, बड़े वानर लोगों ने; तडुत्तु-रोककर; तणिवु चैय्दु-समाधान करके; नोय् कैडुत्तु-दुःख का रोग दूर करके; मैलैयोर्-पूर्व के लोगों के; किळत्तु नीतियाल्-कथित नीतिवाक्यों के अनुसार; अडुत्त कावलुम् अरच्चुम्-प्राप्त पालन और शासन का पद; आणैयिल्-क्रम के अनुकूल; कौडुत्तु उण्डु-दिया, यही सत्य है; इवन् कौण्डु इल्लै-इन्होंने खुद लिया नहीं था । १३३

तब चतुर, समर्थ बुजुर्ग लोगों ने उनको रोका और सान्त्वना दिलायी;

और दुःखरोग से निवृत्त कराया। पूर्व के विद्वानों के कथित धर्म के अनुसार पालन और शासन का जिम्मा उनका हो गया था। इसलिए उन्होंने राज्य का भार नियमानुसार उन्हें सौंप दिया। यही सच्ची घटना है। सुग्रीव ने स्वयं राज्य नहीं लिया था। १३३

अन्न	नाळिन्मा	यावि	यप्पिलत्
तिन्न	वायिल्	डेरु	मैन्नयाम्
पौन्निन्	माल्वरैप्	पौरुप्पौ	ळित्तुवे
रुन्नु	कुन्ऱैला	मुडन्	डुक्किन्मे 134

अन्न नाळिल्-उस दिनों; याम्-हम; मायावि-मायावी; अ पिलत्तु-उस विल के; इन्न वायिल् ऊटु-इस द्वार के द्वारा; एरुम् अन्न-चढ़कर बाहर आया (तो); अन्न-ऐसा सोचकर; पौन्निन् माल् वरै पौरुप्पु-स्वर्ण का बड़ा मेरुपर्वत; ओळित्तु-छोड़कर; वेरु उन्न-अन्य गण्य; कुन्ऱु अलाम्-सभी पर्वतों को; उटन् अट्टक्किन्मे-उस द्वार पर चुन दिया। १३४

जब यह सब हुआ तो हमने सोचा कि मायावी इस द्वार से बाहर आ जाएगा तो अनर्थ हो जाएगा। इस डर से हमने उसको वन्द कर अपनी रक्षा करना चाहा। अतः मेरुपर्वत को छोड़कर अन्य सारे गण्य भारी पर्वतों को उठाकर हमने उस द्वार के सामने चुन दिया। १३४

शेम	मव्वळिच्	चैयुडु	शैङ्गदिरक्
कोम	हन्ऱिन्नेक्	कौण्डु	वन्दियाम्
मेवु	कुन्ऱिन्नेल्	वैहुम्	वैलैवाय्
आवि	युण्डन्	नवत्तै	यन्नवन् 135

याम्-हम; अ वळि-उस द्वार को; चेम् चैयु-सुरक्षित (वन्द) करके; चैम् कतिर्-लाल किरणों के सूर्य के; कोमकन् तन्नै-सुपुत्र को; कौण्डु वन्नु-ले आकर; मेवु कुन्ऱिन्नेल्-(हमारे वास के लिए) बने पर्वत पर; वैकुम् वैलै वाय्-रहते थे, तब; अवत्तै-उस असुर के; अन्नवन्-उस वाली ने; आवि उण्डत्तन्-प्राण पी लिये (हर लिये)। १३५

इस तरह उस द्वार को खूब वन्द करके, हमने सुरक्षा का वन्दोवस्त किया। लाल किरणों के स्वामी सूर्य के सुत को पर्वत पर ले आये। हम यहाँ निश्चिन्त अपना समय बिताने लगे। उधर क्या हुआ? वाली ने मायावी के प्राणों का पान कर लिया (मार डाला)। १३५

ओळित्त	वन्नयिर्क्	कळळै	युण्डुळम्
कळित्त	वालियुडु	गडिदि	नैय्दिनात्
विळित्तु	निन्ऱुवे	रुरैप्	रानिरुन्
दळित्त	वारुन्	रिळव	लारैत्ता 136

औलित्तवन्-जो छिपा रहा उसके; उयिर् कळ्ळै-प्राणसुरा को; उण्डु-पान करके; उळम् कळित्त-मनमस्त; वालियुम्-वाली भी; कटित्तु अयत्तितान्-वेग के साथ आकर; विळित्तु निन्ऱु-टेर लगाता रहा; वेऱु उरै पैंऱान्-उत्तर नहीं पाकर; इळवलार्-युवराज का; इरुन्तु अळित्त-यहाँ रहकर उपकार करने का; आऱु-यह प्रकार; नन्ऱु अता-अच्छा रहा, कहकर । १३६

बिल में जो छिपा था, उस मायावी के प्राण वाली के लिए सुरा-सम लगे । यानी वाली उसको मारकर सन्तोष से भर गया । मनमस्त होकर वह द्वार पर आकर क्या देखता है ? द्वार बन्द है । टेर लगाता है; कोई उत्तर नहीं मिलता । हा ! युवराज का यहाँ रखवाली करके मेरा उपकार करने का यह तरीका भी बड़ा अच्छा रहा ! यह कहा । १३६

वाल्वि	शैत्तुवान्	वळिनि	मिर्न्दुऱ्क्
काल्प	यर्त्तवन्	कडिडु	दैत्तलुम्
नील्नि	उत्तवा	नैडुमु	हट्टवुम्
वेलै	पुक्कवुम्	बैरिय	वैर्पेलाम् 137

अवन्-उसके; वान् वळि-आकाश में; निमिर्न्तु उऱ-उठी रहे, ऐसा; वाल् विचैत्तु-पूँछ ऊपर करके; काल् पयर्त्तु-पैर उछालकर; कटित्तु उतैत्तलुम्-जोर से (लात) मारने पर; पैरिय वैऱ्पु अलाम्-सारी बड़ी गिरियाँ; नील् निऱत्त-नील; वान्-आकाश की; नैडु मुक्कट्टवुम्-ऊँची चोटी की (तक पहुँची हुई) हो गयीं; वेलै पुक्कवुम्-और समुद्र में मग्न (हो गईं) । १३७

उसने अपनी पूँछ आकाश की चोटी से लगाते हुए उठायी । बड़े वेग के साथ पैर उछालकर लात मारी तो द्वार पर के सारे पर्वत उड़ गये । एक अंश के आकाश पर गये और बाकी समुद्र में जा गिरे । १३७

एऱि	नान्व	नैवरु	मञ्जुऱ्क्
चीऱि	नानैडुम्	जिहर	मैय्त्तितान्
वैऱि	लादवन्	बुदवु	मैय्स्मैयाम्
आऱि	नानुम्बन्	दडिव	णङ्गितान् 138

अवन्-वह; नैवरुम् अञ्जुऱ-सबको भयभीत करते हुए; एऱितान्-बिल के बाहर चढ़ आया; चीऱितान्-क्रोध दिखाते हुए; नैडुम् चिकरम् अयत्तितान्-विशाल उन्नत शिखर पर आ पहुँचा; वेऱु इलात-निर्विकार; अत्तु उतवु-भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर; मैय्स्मै अम्-सत्य के; आऱितानुम्-मार्ग में चलनेवाले सुग्रीव भी; वन्तु-सामने आकर; अटि वणङ्कितान्-उसके चरणों पर नत हुए । १३८

वह ऊपर चढ़कर बिल के बाहर निकला । सबको भयभीत करते हुए अत्यन्त क्रोध के साथ वह इस पर्वत के विशाल और उन्नत शिखर पर चढ़ आया । सत्यमार्गगामी सुग्रीव निर्विकार भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर उसके सामने आये और चरणों पर नत हुए । १३८

वणङ्गि	यण्णत्तिन्	वरवि	लामैयाल्
उणङ्गि	युन्वळिप्	पडर	वुत्तुवेऱ्
क्किणङ्ग	रिन्मैया	लिऱैव	वुत्तुडैक्
कणङ्गळ्	कावलुन्	कडन्मै	यैन्ऱत्तर् 139

वणङ्कि-नमस्कार करके; अण्णल्-महिमामय; निन्-आपका; वरवु-आगमन; इलामैयाल्-नहीं हुआ, इसलिए; उणङ्कि-मुरझाकर; उन् वळि पटर-आपकी खोज में आना; उन्तुवेऱ्कु-जो सोचा वैसे मुझे; इऱैव-हे नाथ; उन्तुटे कणङ्कळ्-आपके ही इन वृन्दों ने; इणङ्कर् इन्मैयाल्-सम्मत न होने से; कावलु उन् कटन्मै-शासन तुम्हारा जिम्मा है; अन्ऱत्तर्-कहा । १३६

नमस्कार करके उन्होंने वाली से निवेदन किया कि महिमावान ! आप बहुत दिन तक लौट नहीं आये । मैं मुरझाया और मैं आपका अनुगमन करना ही चाहता था । पर आपके इन वानरवृन्दों ने उससे सहमत न होकर मुझसे आज्ञा दी कि शासन करना तुम्हारा कर्तव्य है; जिम्मा है । १३९

आणै	यञ्जियिक्	वरशै	यैय्दिवाल्
नाणि	लादनी	नवैयुळ्	वैहिताय्
पूणु	लावुदो	ळित्तैर्पो	ऱायैत्तक्
कोणि	त्तानैडुङ्	गौडुमै	कूऱित्तान् 140

पूणु उलावु-आभरण जिन पर हिलते हैं, ऐसे; तोळित्तै-भुजा वाले; पौऱाय्-क्षमा कीजिए; अँत्त-विनय करने पर; आणै अञ्चि-इनकी आज्ञा से डरकर; इ अरचै-इस राज्य को; अँय्ति-लेकर; वाल्-रहनेवाले; नाणु इलात नी-निर्लज्ज तुम; नवैयुळ् वैकित्ताय्-अपराध कर चुके हो; कोणित्तान्-विकृतमन; नैट्टुम् कौटुम्-बड़े कठोर वचन; कूऱित्तान्-बोला । १४०

आभरणालंकृत भुजा वाले भाई ! क्षमा करें । सुग्रीव ने यह विनय की । पर वाली का मन वक्र हो गया था । उसने अपराध लगाया कि उनकी आज्ञा से डरकर तुम राज्य लेकर भोग कर रहे हो । तुम निर्लज्ज हो ! तुम अपराध कर चुके हो । विकृतमन वाली ने कितने ही कठोर शब्द कहे । १४०.

अडल्ह	डन्ददो	ळवनै	यञ्जिवैम्
कुडल्ह	लङ्गियेङ्	गुलमी	डुङ्गमुन्
कडल्ह	डैन्दवक्	करद	लङ्गळाल्
उडल्ह	डैन्दन	त्तिवन्नु	लेन्दत्तन् 141

अटल् कटन्त-अतिक्रान्त; तोळ अवत्तै-भुजवल वाले उससे; अञ्चि-डरकर; अँम् कुलम्-हमारे समूह; वैम् कुटल्-तप्त आँतों के; कलङ्कि-विचलित होते;

औटुङ्क-दुबके रहे; मुन् कटल् कटैन्त-पूर्वकाल में जिनसे समुद्र मथा था; अ करतलङ्कलाल-उन हाथों से; उटल् कटैन्ततन्-(सुग्रीव का) शरीर मथ दिया; इवन् उलैन्ततन्-ये व्याकुल हुए । १४१

वाली का भुजबल बल के माप का भी अतिक्रमण कर गया था । उसके डर के कारण हमारे समूह के वानरों की आँतें तक तप्त हो गयीं, विचलित हो गयीं । हम दुबके खड़े रहे । तब वाली ने अपने हाथों से, जिनसे उसने क्षीरसागर को मथा था, सुग्रीव को प्रहार करके त्रस्त किया । ये सुग्रीव बहुत व्याकुल हुए । १४१

नक्क	रक्कडर्	पुइत्तु	नण्णुनाळ्
शैक्कर्	मैय्त्तत्तिच्	चोदि	शैर्हलाच्
चक्क	रप्पोरुप्	पिन्ऱ	लैक्कुमप्
पक्क	मुइवड्	कडिडु	पइत्तान् 142

नक्करम्-नक्रों से युक्त; कटल् पुइत्तु-समुद्रों के भी उस पार; नण्णुम् नाळ्-(जब सुग्रीव) गये तब; चैक्कर् मैय्-लाल शरीर के; तत्ति चोत्ति-अनुपम ज्योतिस्वरूप (सूर्य); चैर्कला-जहाँ पहुँच नहीं पाते; चक्करम् पोरुप्पिन्-चक्रवाल गिरि के; तलैक्कुम्-तल के भी; अ पक्कम् उइवड्-उस पार जाकर; अवन् कटितु पइत्तान्-उनको जल्दी पकड़ लिया । १४२

सुग्रीव भागा । नक्रसहित समुद्रों के उस पार जाकर रहा । वाली चक्रवाल गिरि के उस पार, जहाँ लाल शरीर के अनुपम ज्योतिपुंज सूर्य भी पहुँच नहीं पाते, गया और सुग्रीव को पकड़ लिया । १४२

पइत्ति	यञ्जलन्	पळियै	वैञ्जितम्
मुइ	निन्ऱदन्	मुरण्व	लिक्कैयाल्
अइरु	वालेडुत्	तैळुद	लुम्बिळैत्
तइ	मौन्ऱुपै	रिवन्	हन्ऱन् 143

पइत्ति-पकड़कर; पळियै अञ्जलन्-लोकनिन्दा से न डरकर; वैम् चित्तम्-भयंकर क्रोध; मुइ निन्ऱ-से भरे; तन् मुरण्व वलि कैयाल्-अपने अति बलिष्ठ हाथों से; अइरुवान्-पटकने के विचार से; औटुत्तु औळुत्तु-उठाते हुए उठा तो; इवन्-ये; अइरुम् औन्ऱु-एक मौका; पैंरु-पाकर; पिळैत्तु अकन्ऱतन्-बचकर भाग गये । १४३

वाली 'भ्रातृज्ञासक के रूप में लोक-निन्दा का पात्र बनूंगा' इस बात से भी नहीं डरा । उसने अति क्रोध के साथ अपने क्रूर हाथों से सुग्रीव को पकड़ लिया । उनको वेग से पटकने के विचार से उसने अपने हाथ उठा लिये । तब सुग्रीव किसी विध मौका पाकर बच गये और भाग आये । १४३

अनन्दे मइव तैयिइ दुक्कुमेल्, अनन्द हइकुमो ररण मिल्लैयाल्
इन्द वैइपित्तवन् दिवनि रुन्दनन्, उन्द वुइइदोर् शाव मुण्मैयाल् 144

अनन्ते-हमारे धाता; अवन्-(वाली) वह; अयिइ अतुक्कुमेल्-दांत पीसेगा तो; अन्तकइकुम्-यम के लिए भी; ओर् अरणम्-कोई पनाह; इल्लै-नहीं मिलेगी; आल्-इसलिए; उन्त-(मतंग मुनि द्वारा) दिया जाकर; उइइतु ओर् चापम्-मिला एक शाप; उण्मैयाल्-है, उससे; इवन्-ये; इन्त वैइपित्त वन्तु-इस गिरि पर आकर; इरुन्तन्-ठहरे हैं। १४४

हनुमान ने जारी किया। हमारे धाता ! वाली दांत पीसता दिखता तो यम को भी पनाह नहीं मिलती। इसलिए सुग्रीव का वचना कठिन हो गया। तो भी कुपित मतंग मुनि का दिया हुआ शाप है कि वह इधर नहीं आ सकता। इसलिए सुग्रीव इस पर्वत पर आकर ठहरे हैं। १४४

उरुमै यैन्ऱिवइ कुरिय तारमाम्, अरुम रुन्दैयु मवन्वि रुम्बिन्नान्
इरुमै युन्दुइन् दिवनि रुन्दनन्, करुम मिङ्गिदैड् गडवु लैन्ऱनन् 145

अम् कटवुळ्-हमारे ईश्वर; इवइकु-इनके; उरुमै अैन्ऱ-रमा नाम की; उरिय तारम् आम्-इनकी अपनी पत्नी; अरु मरुन्तैयुम्-दुर्लभ अमृत को भी; अवन् विरुम्पित्तान्-उसने अपने पास कामना के साथ रख लिया है; इवन्-ये; इरुमैयुम्-(पत्नी, राज्य) दोनों को; तुइन्तु-त्यागकर; इरुन्तन्-रहते हैं; इइकु करुमम्-इतु-यहाँ का वृत्तान्त यह है; अैन्ऱनन्-(हनुमान ने) कहा। १४५

हमारे भगवान ! सुग्रीव के रमा नाम की, दिव्य अमृत-समान पत्नी है। वाली ने उसे भी कामना के साथ अपने पास रख लिया है। ये पत्नी व राज्य, दोनों से वंचित होकर इधर आकर ठहरे हैं। यही घटित वृत्तान्त है। हनुमान ने सारी बातें कह सुनायीं। १४५

ॐ पौय्यि	लादवन्	वरन्मुइ	यस्मोळि	पुहल
ऐय	तायिरम्	पैयरुडै	यमरर्क्कु	ममरन्
वैय	नुङ्गिय	वायिदळ्	तुडित्तदु	मलर्क्कण्
शैय्य	तामरै	याम्बलम्	पोदैन्त	तिहळ्न्द 146

पौय् इलातवन्-असत्य-रहित (सत्यसंध); वरन् मुइ-यथाक्रम; अ मोळि पुकल-वह वृत्तान्त बोला, तब; आयिरम् पैयरुडै-सहस्रनामी; ऐयन्-प्रभु; अमरर्क्कुम् अमरन्-देवाधिदेव के; वैयम् नुङ्किय-भुवनों को (प्रलयकाल में) निगलनेवाले; वाय् इतळ्-मुख के अधर; तुडित्ततु-फड़के; कण्-आँखें रूपी; चैय्य-लाल; तामरै मलर्-कमल के फूल; आम्पल् अम् पोतु अैन्त-लाल कुमुद-सुमन के समान (अत्यधिक लाल); तिकळ्न्त-हो गये। १४६

हनुमान कभी झूठ बोलनेवाला नहीं था। सत्यसंध था। उसने क्रमवार सारी घटनाएँ कह सुनाया तो सहस्रनामधारी देवाधिदेव के प्रलयकाल में

इन्द्रि	रत्नरत्तिप्	पुदल्व	नित्तनळिच्
चन्द्रि	रत्नरत्तैत्	तत्तैय	तन्मैयान्
अन्द	हत्नरत्तक्	करिय	वाणैयान्
मुन्दि	वन्दत्	तिवतिन्	मौय्म्वित्ताय् 126

मौय्म्विताय्-शक्तिमन्त; इन्तिरत्न तत्ति पुतल्वन्-इन्द्र का अनुपम वह पुत्र; इन् अळि-सुखद; चन्तिरत्न-चन्द्र; तत्तैत्तु अतैय-शोभायमान हो, ऐसा; तन्मैयान्-विशिष्ट (श्वेत वर्ण का) है; अन्तकन् तत्तक्कु अरिय-यम के लिए भी अलंघ्य; वाणैयान्-आज्ञाकारी है; इवतिन्-इन (सुग्रीव) का; मुन्ति वन्ततन्-अग्रज है। १२६

शक्तिमान ! इन्द्र का वह अनुपम पुत्र वाली श्वेत रंग का है और सुखद शोभायमान चन्द्र के समान है। उसकी आज्ञा ऐसी है कि यम के लिए भी डालना कठिन है। वह इन सुग्रीव का अग्रज भ्राता है। १२६

अत्त	वत्तैमक्	करश	ताहवेन्
इत्त	वत्तिळम्	बदमि	यर्त्तनाळ्
मुत्त	वत्तगुलप्	पहैजन्	मुट्टितान्
मिन्तै	यिर्त्तवा	ळवुणन्	मेन्मैयान् 127

अत्तवन्-वह; अँमक्कु अरचन् आक-हमारा राजा रहा, तब; इत्तवन्-ये; इळम् पतम् एत्तु-युवराज के पद का धारण करके; इयर्त्त नाळ्-शासन करते रहे, तब; मेन्मैयान्-शक्ति में बढ़ा हुआ; मुत्त-पूर्व से ही; अबन् कुल पक्कैजन्-वाली का कुलवैरी जो रहा, वह; मिन् अँयिर्त्तु-उज्ज्वल वक्र दन्तार; वाळ् अवुणन्-तलवारधारी दानव; मुट्टितान्-(वाली से) भिड़ा। १२७

वह वाली हमारा राजा रहा। ये सुग्रीव युवराज के पद पर थे। जब ये राज्य कर रहे थे, तब अति बलिष्ठ, वाली का कुलवैरी और बिजली-सम वक्रदन्तार और तलवारधारी (मायावी नाम का) दानव वाली से आकर भिड़ा। १२७

मुट्ट	निन्तवन्	मुरणु	रत्तिनाल्
ओट्ट	वञ्जिर्नैञ्	जुलैय	वोडितान्
वट्ट	मण्डलत्	तरिदु	वाळ्वैत्ता
अँट्ट	रुम्बिल	मदन्ति	लैय्दितान् 128

मुट्ट-टकराने पर; निन्तवन्-जो अड़ा रहा वह वाली; मुरणु उरत्तितान्-बलवान वक्ष से; ओट्ट-प्रहार करने लगा; अञ्चि-डरकर; नैञ्चु उलैय-मन में व्यग्र होकर; ओडितान्-भागा; वट्ट मण्डलत्तु-गोल भूमण्डल में; वाळ्वु अरितु अँता-जीता कठिन है, जानकर; अँट्टु अरुम्-पहुँचने में कठिन; पिलम् अततिल्-एक बिल में; अँय्दितान्-घुस गया। १२८

जब असुर भिड़ने आया, तब वाली अड़ा रहा और अपने वक्ष से उस पर प्रहार किया। असुर डरा और जान लेकर भागा। 'इस गोल भूमण्डल पर कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं' —यह जानकर वह ऐसे एक बिल में घुस गया, जहाँ जाना बहुत ही कठिन था। १२८

अय्युदु	कालैयिप्	पिलनु	ळैय्दियान्
नौय्दि	नङ्गवड्	कौल्वे	नोन्मैयाल्
शैय्दि	कावनो	शिरिटु	पोळ्देन्ता
वैय्दि	नैय्दितान्	वैहुळि	मेयितान् 129

अय्यु काले—जब घुसा; वैकुळि मेयितान्—क्रुद्ध (वाली); यान्—मैं; इ पिलनुळ् अय्यति—बिल में जाकर; नोन्मैयाल्—शक्ति से; नौय्यित्—शीघ्र; अङ्कु—वहाँ; अवन् कौल्वेन्—उसको मारूँगा; नी—तुम; चिरितु पोळ्त्तु—थोड़ी देर; कावल् वैय्यति—रक्षण का काम करो; अन्ता—कहकर; वैय्यित्—शीघ्र; अय्यितान्—(बिल में) गया। १२९

जब वह घुस गया तो वाली को अपार क्रोध हुआ। उसने सुग्रीव को आज्ञा दी कि मैं इसमें जाऊँगा और अपने बल से इसको शीघ्र मारकर आ जाऊँगा। तुम इसकी रखवाली करो, थोड़ा समय। यह कहकर वाली शीघ्र उस बिल में घुस गया। १२९

एहि	वालियु	मिरुदुवे	ळोडेळ्
वैह	वैम्बिलन्	दडवि	वैम्मैशाल्
मोह	मोडमर्	मुयल्वित्	वैहिडन्
चोह	मैय्दिनिन्	रुण्डु	ळङ्गितान् 130

वालियुम्—वाली भी; वैम् पिलम् वेकम् एक—भयंकर बिल में घुसकर; एळ् ओट्टु एळ् इरुतु—चौदह ऋतुओं के काल तक; तटवि—टटोलकर; वैम्मै चाल्—उग्र; मोकम् ओट्टु—उत्साह के साथ; अमर् मुयल्वित्—युद्ध के प्रयत्न में; वैकिट—लगा रहा, तब; निन् तुण्—आपके भाई (सुग्रीव); चोकम् अय्यति—शोकाकुल होकर; तुळ्ळकितान्—घबड़ा गया। १३०

वाली उसके अन्दर गया। उस असुर को ढूँढ़ता रहा। चौदह ऋतुओं का (अट्ठाईस मासे का) काल बीत गया। आखिर उसको पाकर वाली उग्र रूप से दत्तचित्त होकर उसके साथ लड़ने में लगा हुआ था। इधर आपके भाई सुग्रीव चिन्ताग्रस्त होकर (शायद वाली मर गया क्या ? इस संशय के कारण) घबड़ाये रहे। १३०

अळद	ळुङ्गुरु	मिवत्तै	यन्बितिल्
तौळुदि	रन्डुनिन्	डौळिलि	दादलाल्

अळुदु	वैत्रिया	यरशु	कीळ्हनप्
पळुदि	दैत्रनन्	परियु	नैञ्जितान् 131

अळुतु वैत्रियाय्-उल्लेखनीय विजयशाली; अळुतु अळुङ्कुरुम्-रोते और दुःखी; इवतै-इनको; अन्पितिल् तौळुतु-स्वामी-भक्ति के साथ नमस्कार करके; इरन्तु-प्रार्थना में; निन् तौळिल् इतु-आपका कार्य है यह; आतलाल्-इसलिए; अरचु कौळ्क-राज्य लो; अत-हमारे कहने पर; परियुम् नैञ्चितान्-(भ्रातृस्नेह से) विह्वलमन; इतु पळुतु-यह गलत है; अत्रुत्तन्-कहा । १३१

वर्णनयोग्य विजयशील ! बहुत काल तक सुग्रीव दुःख के साथ रोते रहे । तब हम वानरों ने इनसे प्रार्थना की । शासन करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार का कार्य है । आप जाकर राज्य पर अधिकार करें । पर भ्रातृवियोग से दुःखी इन्होंने कहा कि यह गलत काम है । वे सम्मत नहीं हुए । १३१

अैत्रु	तानुमव्	वळियि	रुम्बिलम्
शैत्रु	मुत्तवर्	रेडु	वेत्तवर्
कौत्रु	ळान्रतैक्	कौलवी	णार्दितिल्
पौत्रु	वेत्तनप्	पुहुदन्	मेयितान् 132

अैत्रु-ऐसा कहकर; अ वळि-उसी रास्ते से; इरुम् पिलम् चैत्रु-बड़े बिल में जाकर; मुत्तवन् तेदुवेन्-अपने बड़े भाई को ढूँढ़ंगा; अवन् कौत्रु उळान् ततै-उसके हन्ता को; कौल ओणातु अैतिल्-मार नहीं सकूंगा तो; पौत्रुवेन्-स्वयं मर जाऊंगा; अत-यह ठानकर; तानुम्-स्वयं भी; पुकुतल् मेयितान्-घुसने लगे । १३२

उन्होंने यह ठाना कि मैं इसी मार्ग से इस बिल में घुस जाऊंगा और बड़े भाई की टोह लगाऊंगा । समझिए कि उनको असुर ने मारा है और उसे मैं मार नहीं सकूंगा, तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूंगा । यह निश्चय सुनाकर वे उसी बिल में प्रवेश करने लगे । १३२

तडुत्तु	वल्लवर्	तणिवु	शैय्दुनोय्
कैडुत्तु	मेलैयोर्	किळत्तु	नीदियाल्
अडुत्त	कावलुम्	मरशु	माणैयिल्
कौडुत्त	दुण्डिवन्	कौण्ड	दिल्लैयाल् 133

वल्लवर्-समर्थ, बड़े वानर लोगों ने; तडुत्तु-रोककर; तणिवु चैयु-समाधान करके; नोय् कैडुत्तु-दुःख का रोग दूर करके; मेलैयोर्-पूर्व के लोगों के; किळत्तु नीतियाल्-कथित नीतिवाक्यों के अनुसार; अडुत्त कावलुम् अरचुम्-प्राप्त पालन और शासन का पद; आणैयिल्-क्रम के अनुकूल; कौडुत्तु उण्डु-दिया, यही सत्य है; इवन् कौण्डु इल्लै-इन्होंने खुद लिया नहीं था । १३३

तब चतुर, समर्थ बुजुर्ग लोगों ने उनको रोका और सान्त्वना दिलायी;

और दुःखरोग से निवृत्त कराया। पूर्व के विद्वानों के कथित धर्म के अनुसार पालन और शासन का जिम्मा उनका हो गया था। इसलिए उन्होंने राज्य का भार नियमानुसार उन्हें सौंप दिया। यही सच्ची घटना है। सुग्रीव ने स्वयं राज्य नहीं लिया था। १३३

अन्त	नाळित्मा	यावि	यप्पिलत्
तित्तन्	वायिल्	डेळ	मैन्तयाम्
पौत्तिन्	माल्वरप्	पौरप्पो	ळित्तुवे
रुत्तु	कुत्तुला	मुडत्त	डुक्किन्नेम् 134

अन्त नाळिल्-उन दिनों; याम्-हम; मायावि-मायावी; अ पिलत्तु-उस बिल के; इत्त वायिल् ऊट्टु-इस द्वार के द्वारा; एळम् अन्त-चढ़कर बाहर आयागा (तो); अन्त-ऐसा सोचकर; पौत्तिन् माल् वरं पौरप्पु-स्वर्ण का बड़ा मेरुपर्वत; ओळित्तु-छोड़कर; वेळु उत्तु-अन्य गण्य; कुत्तु अलाम्-सभी पर्वतों को; उट्टन् अट्टुक्किन्नेम्-उस द्वार पर चुन दिया। १३४

जब यह सब हुआ तो हमने सोचा कि मायावी इस द्वार से बाहर आ जाएगा तो अनर्थ हो जाएगा। इस डर से हमने उसको बन्द कर अपनी रक्षा करना चाहा। अतः मेरुपर्वत को छोड़कर अन्य सारे गण्य भारी पर्वतों को उठाकर हमने उस द्वार के सामने चुन दिया। १३४

शेम	मव्वळिच्	चैय्दु	शैङ्गदिर्क्
कोम	हत्तुत्तक्	कोण्डु	वन्दियाम्
मेवु	कुत्तिन्नेल्	वैहुम्	वैलैवाय्
आवि	युण्डत्त	नवन्नै	यत्तवन् 135

याम्-हम; अ वळि-उस द्वार को; चेम् चैय्दु-सुरक्षित (बन्द) करके; चैम् कतिर्-लाल किरणों के सूर्य के; कोमकन् तत्तै-सुपुत्र-को; कोण्डु वन्तु-ले आकर; मेवु कुत्तिन्नेल्-(हमारे वास के लिए) बने पर्वत पर; वैकुम् वैलै वाय्-रहते थे, तब; अवन्नै-उस असुर के; अत्तवन्-उस वाली ने; आवि उण्डत्तन्-प्राण पी लिये (हर लिये)। १३५

इस तरह उस द्वार को खूब बन्द करके, हमने सुरक्षा का बन्दोबस्त किया। लाल किरणों के स्वामी सूर्य के सुत को पर्वत पर ले आये। हम यहाँ निश्चिन्त अपना समय बिताने लगे। उधर क्या हुआ? वाली ने मायावी के प्राणों का पान कर लिया (मार डाला)। १३५

ओळित्त	वत्तुयिर्क्	कळ्ळै	युण्डळम्
कळित्त	वालियुड्	गडिदि	नैय्दित्तान्
विळित्तु	निन्नूवे	रुरैप्	शानिरुन्
दळित्त	वाळन्नन्	रिळिव	लारैन्ना 136

औलित्तवन्-जो छिपा रहा उसके; उयिर् कळळै-प्राणसुरा को; उण्डु-पान करके; उळम् कळित्त-मनमस्त; वालियुम्-वाली भी; कटित्तु अय्यत्तित्तान्-वेग के साथ आकर; विळित्तु निन्ऱु-टेर लगाता रहा; वेरु उरै पेशान्-उत्तर नहीं पाकर; इळवलार्-युवराज का; इरुन्तु अळित्त-यहाँ रहकर उपकार करने का; आरु-यह प्रकार; नन्ऱु अत्ता-अच्छा रहा, कहकर । १३६

बिल में जो छिपा था, उस मायावी के प्राण वाली के लिए सुरा-सम लगे । यानी वाली उसको मारकर सन्तोष से भर गया । मनमस्त होकर वह द्वार पर आकर क्या देखता है ? द्वार बन्द है । टेर लगाता है; कोई उत्तर नहीं मिलता । हा ! युवराज का यहाँ रखवाली करके मेरा उपकार करने का यह तरीका भी बड़ा अच्छा रहा ! यह कहा । १३६

वाल्वि	शैत्तुवान्	वळिनि	मिर्न्दुर्ऱुक्
काल्पे	यर्त्तवन्	कडिदु	दैत्तलुम्
नील्नि	इत्तवा	नैडुमु	हट्टवुम्
वेलै	पुक्कवुम्	वैरिय	वैर्पेलाम् 137

अवन्-उसके; वान् वळि-आकाश में; निमिर्न्तु उर-उठी रहे, ऐसा; वाल् विचैत्तु-पूँछ ऊपर करके; काल् पयर्त्तु-पैर उछालकर; कटितु उतैत्तलुम्-जोर से (लात) मारने पर; पेरिय वैर्पु अलाम्-सारी बड़ी गिरियाँ; नील् निरत्त-नील; वान्-आकाश की; नैडु मुकट्टवुम्-ऊँची चोटी की (तक पहुँची हुई) हो गयीं; वेलै पुक्कवुम्-और समुद्र में मग्न (हो गई) । १३७

उसने अपनी पूँछ आकाश की चोटी से लगाते हुए उठायी । बड़े वेग के साथ पैर उछालकर लात मारी तो द्वार पर के सारे पर्वत उड़ गये । एक अंश के आकाश पर गये और बाकी समुद्र में जा गिरे । १३७

एरि	नानव	नैवरु	मञ्जुरच्
चोर्ऱि	नानैडुञ्	जिहर	मैय्दित्तान्
वैरि	लादवत्	बुदवु	मैय्मैयाम्
आरि	नानुम्वन्	दडिव	णङ्गित्तान् 138

अवन्-वह; अँवरुम् अञ्चुऱ-सबको भयभीत करते हुए; एरित्तान्-बिल के बाहर चढ़ आया; चोर्ऱित्तान्-क्रोध दिखाते हुए; नैडुम् चिकरम् अय्यत्तित्तान्-विशाल उन्नत शिखर पर आ पहुँचा; वेरु इलात-निर्विकार; अन्पु उतवु-भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर; मैय्मैयाम् आम्-सत्य के; आरित्तानुम्-मार्ग में चलनेवाले सुग्रीव भी; वन्तु-सामने आकर; अटि --उसके चरणों पर नत हुए । १३८

वह के बाहर निकला । सबको भयभीत करते हुए उस पर्वत के विशाल और उन्नत । पर चढ़ निर्विकार भ्रातृप्रेम की नत हुए । १३८

वणङ्गि	यण्णत्तिन्	वरवि	लामैयाल्
उणङ्गि	युन्वळिप्	पडर	वुन्नुवेड
किणङ्ग	रिन्मैया	लिइव	वुन्नुडैक्
कणङ्गळ्	कावलुन्	कडन्मै	यैन्ऱुत्तर् 139

वणङ्कि-नमस्कार करके; अण्णल्-महिमामय; निन्-आपका; वरवु-आगमन; इलामैयाल्-नहीं हुआ, इसलिए; उणङ्कि-मुरझाकर; उन् वळि पडर-आपकी खोज में आना; उन्नुवेड्कु-जो सोचा वैसे भुले; इइव-हे नाथ; उन्नुडै कणङ्कळ्-आपके ही इन वृन्दों ने; इणङ्कर् इन्मैयाल्-सम्मत न होने से; कावल् उन् कटन्मै-शासन तुम्हारा जिम्मा है; ऐन्ऱुत्तर्-कहा । १३६

नमस्कार करके उन्होंने वाली से निवेदन किया कि महिमावान ! आप बहुत दिन तक लौट नहीं आये । मैं मुरझाया और मैं आपका अनुगमन करना ही चाहता था । पर आपके इन वानरवृन्दों ने उससे सहमत न होकर मुझसे आज्ञा दी कि शासन करना तुम्हारा कर्तव्य है; जिम्मा है । १३९

आण	यञ्जियिद्	वरश	यैय्दिवाळ्
नाणि	लादनी	नवैयुळ्	वैहिन्नाय्
पूणु	लावुदो	ळित्तैपी	ऱायैत्तक्
कोणि	तानैडुङ्	गौडुमै	कूऱित्तान् 140

पूण उलावु-आभरण जिन पर हिलते हैं, ऐसे; तोळित्तै-भुजा वाले; पौऱाय्-क्षमा कीजिए; ऐन्-विनय करने पर; आण अञ्चि-इनकी आज्ञा से डरकर; इ अरचै-इस राज्य को; अय्ति-लेकर; वाळ्-रहनेवाले; नाण् इलात नी-निर्लज्ज तुम; नवैयुळ् वैकिन्नाय्-अपराध कर चुके हो; कोणित्तान्-विकृतमन; नैट्टुम् कौटुमै-बड़े कठोर वचन; कूऱित्तान्-बोला । १४०

आभरणालंकृत भुजा वाले भाई ! क्षमा करें । सुग्रीव ने यह विनय की । पर वाली का मन वक्र हो गया था । उसने अपराध लगाया कि उनकी आज्ञा से डरकर तुम राज्य लेकर भोग कर रहे हो । तुम निर्लज्ज हो ! तुम अपराध कर चुके हो । विकृतमन वाली ने कितने ही कठोर शब्द कहे । १४०

अडल्ह	डन्ददो	ळवन्नै	यञ्जिवैम्
कुडल्ह	लङ्गियेड्	गुलमौ	डुङ्गमुन्
कडल्ह	डैन्दवक्	करद	लङ्गळाल्
उडल्ह	डैन्दत्त	निवन्नु	लन्दत्तन् 141

अडल् कटन्त-अतिक्रान्त; तोळ् अवतै-भुजवल वाले उससे; अञ्चि-डरकर; वैम् कुलम्-हमारे समूह; वैम् कुटल्-तप्त आंतों के; कलङ्कि-विचलित होते;

औटुङ्क-दुबके रहे; मुन् कटल् कटैन्त-पूर्वकाल में जिनसे समुद्र मथा था; अ करतलङ्कलाल-उन हाथों से; उटल् कटैन्ततन्-(सुग्रीव का) शरीर मथ दिया; इवन् उलैन्ततन्-ये व्याकुल हुए । १४१

वाली का भुजबल बल के माप का भी अतिक्रमण कर गया था । उसके डर के कारण हमारे समूह के वानरों की आँतें तक तप्त हो गयीं, विचलित हो गयीं । हम दुबके खड़े रहे । तब वाली ने अपने हाथों से, जिनसे उसने क्षीरसागर को मथा था, सुग्रीव को प्रहार करके तस्त किया । ये सुग्रीव बहुत व्याकुल हुए । १४१

नक्क	रक्कडर्	पुउत्तु	नण्णुनाळ्
शैक्कर्	मैय्त्तत्तिच्	चोदि	शेरुहलाच्
चक्क	रप्पोरुप्	पिन्ऱ	लैक्कुमप्
पक्क	मुऱ्ऱवऱ्	कडिदु	पऱ्ऱित्तान् 142

नक्करम्-नक्रों से युक्त; कटल् पुउत्तु-समुद्रों के भी उस पार; नण्णुम् नाळ्-(जब सुग्रीव) गये तब; चैक्कर् मैय्-लाल शरीर के; तत्ति चोत्ति-अनुपम ज्योतिस्वरूप (सूर्य); चेरुक्कल-जहाँ पहुँच नहीं पाते; चक्करम् पोरुप्पिन्-चक्रवाल गिरि के; तलैक्कुम्-तल के भी; अ पक्कम् उऱ्ऱ-उस पार जाकर; अवन् कटितु पऱ्ऱित्तान्-उनको जल्दी पकड़ लिया । १४२

सुग्रीव भागा । नक्रसहित समुद्रों के उस पार जाकर रहा । वाली चक्रवाल गिरि के उस पार, जहाँ लाल शरीर के अनुपम ज्योतिपुंज सूर्य भी पहुँच नहीं पाते, गया और सुग्रीव को पकड़ लिया । १४२

पऱ्ऱि	यज्जलन्	पळ्ळियै	वैज्जितम्
मुऱ्ऱि	निन्ऱदन्	मुरण्व	लिक्कैयाल्
अऱ्ऱु	वान्नेडुत्	तैळुद	लुम्बिळैत्
तऱ्ऱ	मौन्ऱुपैऱ्	रिवन्	हन्ऱन्तन् 143

पऱ्ऱि-पकड़कर; पळ्ळियै अज्जलन्-लोकनिन्दा से न डरकर; वैम् चित्तम्-भयंकर क्रोध; मुऱ्ऱि निन्ऱ-से भरे; तन् मुरण्व वलि कैयाल्-अपने अति बलिष्ठ हाथों से; अऱ्ऱुवान्-पटकने के विचार से; अँटुत्तु अँळुत्तुलुम्-उठाते हुए उठा तो; इवन्-ये; अऱ्ऱम् औन्ऱु-एक मौका; पौऱ्ऱु-पाकर; पिळ्ळैत्तु अकन्ऱत्तन्-बचकर भाग गये । १४३

वाली 'भ्रातृत्वासक के रूप में लोक-निन्दा का पाव बनूंगा' इस बात से भी नहीं डरा । उसने अति क्रोध के साथ अपने क्रूर हाथों से सुग्रीव को पकड़ लिया । उनको वेग से पटकने के विचार से उसने अपने हाथ उठा लिये । तब सुग्रीव किसी विध मौका पाकर बच गये और भाग आये । १४३

अँन्दै मरुडव नैयिर दुक्कुमेल्, अन्द हरुकुमो ररण मिल्लैयाल्
इन्द वैरुपिन्वन् दिवन्ति रुन्दनन्, उन्द वुडुदोर् शाव मुण्मैयाल् 144

अँन्तै-हमारे धाता; अवन्-(वाली) वह; अँयिरु अतुक्कुमेल्-दाँत पीसेगा तो; अन्तकरुक्कुम्-यम के लिए भी; ओर् अरणम्-कोई पनाह; इल्लै-नहीं मिलेगी; आल्-इसलिए; उन्त-(मतंग मुनि द्वारा) दिया जाकर; उडुडु ओर् चापम्-मिला एक शाप; उण्मैयाल्-है, उससे; इवन्-ये; इन्त वैरुपिन् वन्तु-इस गिरि पर आकर; इरुन्तत्तन्-ठहरे है। १४४

हनुमान ने जारी किया। हमारे धाता ! वाली दाँत पीसता दिखता तो यम को भी पनाह नहीं मिलती। इसलिए सुग्रीव का वचना कठिन हो गया। तो भी कुपित मतंग मुनि का दिया हुआ शाप है कि वह इधर नहीं आ सकता। इसलिए सुग्रीव इस पर्वत पर आकर ठहरे हैं। १४४

उरुमै यैन्ऱिवर् कुरिय तारभाम्, अरुम रुन्दैयु मवन्वि रुम्बिनान्
इरुमै युन्दुडुन् दिवन्ति रुन्दनन्, करुम मिङ्गिदैङ् गडवु लैन्ऱत्तन् 145

अँम् कटवुळ्-हमारे ईश्वर; इवडु-इनके; उरुमै अँन्ऱु-रमा नाम की; उरिय तारम् आम्-इनकी अपनी पत्नी; अरु मरुन्तैयुम्-दुर्लभ अमृत को भी; अवन् विरुम्पितान्-उसने अपने पास कामना के साथ रख लिया है; इवन्-ये; इरुमैयुम्-(पत्नी, राज्य) दोनों को; तुडुन्तु-त्यागकर; इरुन्तत्तन्-रहते हैं; इङ्गु करुम्म् इतु-यहाँ का वृत्तान्त यह है; अँन्ऱत्तन्-(हनुमान ने) कहा। १४५

हमारे भगवान ! सुग्रीव के रमा नाम की, दिव्य अमृत-समान पत्नी है। वाली ने उसे भी कामना के साथ अपने पास रख लिया है। ये पत्नी व राज्य, दोनों से वंचित होकर इधर आकर ठहरे हैं। यही घटित वृत्तान्त है। हनुमान ने सारी बातें कह सुनायीं। १४५

✽ पौय्यि लादवन् वरन्मुऱै यम्मोळि पुहल
ऐय तायिरम् पँयरुडै यमरर्क्कु ममरन्
वैय नुङ्गिय वायिदळ् तुडित्तदु मलर्क्कण्
शौय्य तामरै याम्बलम् पोदैत्त त्रिहळ्न्द 146

पौय् इलातवन्-असत्य-रहित (सत्यसंध); वरन् मुऱै-यथाक्रम; अ मोंळि पुकल-वह वृत्तान्त बोला, तब; आयिरम् पँयरुडै-सहस्रनामी; ऐयन्-प्रभु; अमरर्क्कुम् अमरन्-देवाधिदेव के; वैयम् नुङ्किय-भुवनों को (प्रलयकाल में) निगलनेवाले; वाय् इतळ्-मुख के अधर; तुडित्तदु-फड़के; कण्-आँखें रूपी; शौय्य-लाल; तामरै मलर्-कमल के फूल; आम्पल् अम् पोतु अँत-लाल कुमुद-सुमन के समान (अत्यधिक लाल); त्रिहळ्न्त-हो गये। १४६

हनुमान कभी झूठ बोलनेवाला नहीं था। सत्यसंध था। उसने क्रमवार - सारी घटनाएँ कह सुनाया तो सहस्रनामधारी देवाधिदेव के प्रलयकाल में

नाड्ड	मल्हपो	दडैहति	ननैमुद	नात्ता
वीर्रिन्	मण्डलत्	तियावैयुम्	वीळ्हिल	याण्डुम्
कार्ड	लम्बिनुड्	गलिनेडु	वानिडैक्	कलन्द
आड्डिन्	वीळ्नुडुपो	यलैहड्ड	पाय्दर	मियल्ब 165

कार्ड अलम्पितुम्-हवा हिला दे तो भी; नाड्डम् मल्कु-सुवासपूर्ण; पोतु-फूल; अटै-पत्ते; ननै कत्ति-कलियाँ और फल; मुतल-आदि; नात्ता वीर्रिन्-अनेक खण्ड बनकर; यावैयुम्-वे सब; मण् तलत्तु-पृथ्वीतल में; याण्डुम्-कहीं भी; वीळ्हिल-गिरनेवाले नहीं; वान् इटै कलन्त-आकाश में ही पड़ी रही; आड्डिन्-गंगा में; वीळ्नुतु-गिरकर; पोय्-(बहते हुए) जाकर; कलि नैडुम्-शोर-मरे; अलै कटल्-तरंग समेत समुद्र में; पाय् तरुम्-मिल जाते हैं; इयल्प-वैसे प्रकार के हैं। १६५

हवा बहुत प्रबल रूप से हिलाये तो भी उनके सुगन्धपूर्ण फूल, पत्ते, कलियाँ और फल छितरकर भूमि पर कहीं नहीं गिरते। पर वे आकाश-गंगा में तिरकर गर्जनशील तरंगायित समुद्र में जा मिलते हैं। १६५

अडिय	नात्तमरै	यन्दण	तण्डत्तुक्	कप्पाल्
मुडियिन्	मेड्चेन्ड	मुडियन्	वादलिन्	मुडिया
नैडिय	मालन्	निलैयन्	नीरिडैक्	किडन्द
पडियिन्	मेत्तिन्ड	मेरुमाल्	वरैयितुम्	परिय 166

नान् मरै अन्तणन्-चतुर्वेदी ब्रह्मा के; अण्डत्तुक्कु अडिय-अण्डों के मूल से भी नीचे गयी हुई जड़ वाले थे; अप्पाल्-उस (अण्ड) के भी परे; मुडियिन् मेल्-शिखर के भी ऊपर; चेन्ड-गये हुए; मुडियन्-शिखर के; आतलिन्-इस कारण; मुडिया-अनन्त; नैडिय माल्-त्रिविक्रम महाविष्णु; अन्त-के समान; निलैयन्-दृश्यमान हैं; नीर् इटै किडन्त-समुद्रमध्य पड़ी रहनेवाली; पडियिन् मेल्-भूमि पर; तिन्ड-स्थायी; मेरु माल् वरैयितुम्-मेरु के बड़े पर्वत से भी; परिय-मोटे हैं। १६६

चतुर्वेदी ब्रह्मा के अण्ड के मूल तक इनकी जड़ें गयी हैं। इनकी शिखाएँ उस ब्रह्माण्ड की चोटी के ऊपर भी गयी हैं। इसलिए वे त्रिविक्रम महाविष्णु के समान आकार के लगते हैं। समुद्र-मध्य-स्थित भूमि पर स्थायी रहनेवाले मेरु से ये अधिक स्थूल हैं। १६६

वळ्ळ	लिन्दिरन्	मैन्दड्कुन्	दम्बिक्कुम्	वयिर्त्त
उळ्ळ	मेयैन्	वौन्निन्	रुड्वयिर्प्	पुडैय
तैळ्ळु	नीरिडैक्	किडन्दपार्	शुमक्किन्ड	शेडन्
वैळ्ळि	वैण्बड्ड	गुडैन्दुकोळ्	पोहिय	वेर 167

वळ्ळल्-दानी; इन्तिरन्-इन्द्र के; मैन्दड्कुम्-पुत्र वाली और; तम्पिक्कुम्-छोटे भाई सुग्रीव के; वयिर्त्त उळ्ळमे अन्त-वैरी मन के समान; औन्निन् औन्ड-

(उन पेड़ों में) एक से बढ़कर एक; वयिर्प्पु उटैय-हीर वाले हैं; तैळु नीर् इटै-शुद्धजल के समुद्रमध्य; किटन्त-पड़ी रहनेवाली; पार्-भूमि को; चुमक्किन्-धारण करनेवाले; चेटन्-शेषनाग के; वैळ्ळि वैण्-पटम्-चाँदी के समान श्वेत फन को; कुटैन्तु-छेदकर; कीळ् पोक्किय-पाताल में गयी हुई; वेर-जड़ों वाले हैं । १६७

दानी इन्द्र के पुत्र और उसके भाई सुग्रीव के मन के वर के ही समान इनके एक-एक का सत भी कठोर हो गया था । शुद्धजल सागरमध्य-स्थित भूमि के धारक शेषनाग के फनों को छेदकर जो नीचे गयी थीं, ऐसी जड़ों के थे ये वृक्ष । १६७

शैन्ऱु	तिक्किनै	यळन्दन	तिशैहळिऱ्	उवैर्
अैन्ऱु	निऱ्कुमैन्	ऱिशैप्पन	विरुशुडर्	तिरियुम्
कुन्ऱि	तुक्कुयर्न्	दहन्ऱन	यादिनुड्	गुऱुहा
औन्ऱित्तुक्	कौन्ऱि	निडैनेडि	दियोशतै	युडैय 168

चैन्ऱ-बढ़कर; तिक्किनै-दिशाओं को; अळन्तत-नापनेवाले; तिचैकळिऱ् तेवर्-दिशाओं के (दिग्पाल) देव; अैन्ऱुम् निऱ्कुम्-हमेशा उन्हीं पर रहते हैं; अैन्ऱु इचैप्पन-ऐसा वर्ण हैं; इरु चुटर्-दो प्रकाशपुंज सूर्य और चन्द्र; तिरियुम्-जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱित्तुक्कु-उस मेरुपर्वत से बढ़कर; उयर्न्तु अकन्ऱन-उन्नत और विशाल बने हैं; यात्तिनुम् कुऱुका-किसी से भी कम नहीं; औन्ऱित्तुक्कु औन्ऱित्तु इटै-एक दूसरे के बीच; नैटितु-लम्बाई (दूरी); औऱ योचतै उटैय-एक योजन की रखनेवाले थे । १६८

वे ऐसे व्यापक हैं, मानो वे दिशाओं को नापते हों । दिग्पालक इन्हीं पर रहते हों —ऐसे वर्णनीय हैं । मेरुपर्वत से भी, जिसकी दोनों प्रकाशपुंज, सूर्य और चन्द्र परिक्रमा करते हैं, उन्नत और विशाल हैं । वे किसी से भी कम नहीं हैं । उनकी आपस की, एक-दूसरे से, दूरी एक योजन की थी । १६८

आय	मामर	मनैत्तैयु	नोक्किनिन्	अमलन्
तूय	वारुहणै	तुरप्पदो	रादरन्	दोन्ऱुच्
चैय	वात्तमुन्	दिशैहळुज्	जैविडुऱ्त	तेवर्क्
केय	लाददोर्	पयम्बरच्	चिलैयिना	जैऱिन्दान् 169

आय-वैसे; मा मरम् अतैत्तैयुम्-सभी बड़े वृक्षों को; अमलन्-निरंजन श्रीराम ने; नोक्कि निन्ऱु-देखते खड़े रहकर; तूय वार् कणै-पवित्र लम्बे शर को; तुरप्पतु-छोड़ने की; ओर् आतरम्-एक प्रबल इच्छा; तोन्ऱ-होने से; चैय वात्तमुम्-दूर के आकाशवासी और; तिचैकळुम्-दिशाओं के वासी; चैविडु उऱ-बहरे हो जायें, ऐसा; तेवर्क्कु-देवों को; एय् अलात-अपरिचित; ओर् पयम् वर-एक भय हो जाय, ऐसा; चिलैयिन् नाण्-धनु की प्रत्यंचा; अैऱिन्तान्-खींचकर ध्वनि निकाली । १६९

निरंजन श्रीराम ऐसे उन पेड़ों को गौर से देखते खड़े रहे। उनके मन में उत्कण्ठा हुई कि पवित्र और लम्बा शर चलाऊँ। तब उन्होंने प्रत्यंचा को खींचकर टंकार पैदा की। उससे अधिक दूर के देवलोकवासियों और सभी दिशाओं के रहनेवाले लोगों के कान बहरे हो गये। देवों को एक अभूतपूर्व डर हो गया। १६९

औक्क	निन्ऱुदेव्	वुलहमु	मङ्गङ्गो	योशै
पक्क	निन्ऱुवर्क्	कुऱ्ऱुडु	पहर्वर्देप्	पडियो
दिक्क	यङ्गळु	मयङ्गित्त	दिशैहळुन्	दिहैत्त
पुक्क	यन्बदि	शलिप्पुऱ	वौलित्तदप्	पोर्विल् 170

ओचै-वह ज्यास्वर; अँ उलकमुम्-सारे लोकों में; अङ्कङ्के-यत्त-तत्त; औक्क निन्ऱु-समान रूप से फैला; पक्कम् निन्ऱुवर्क्कु-पास स्थित लोगों पर; उऱ्ऱु-जो बीता; पक्वत्तु-वह कहना; अँप्पडियो-कैसे हो; तिक् कयङ्कळुम्-दिग्गज भी; मयङ्कित्त-बेहोश हुए; तिचैकळुम्-दिशाएँ; तिकैत्त-अस्त-व्यस्त हुई; अ पोर्विल्-उस (श्रीराम के) युद्ध-धनुष की ध्वनि; अयन् पति-ब्रह्मा के (सत्य-) लोक को भी; चलिप्पु उऱ-चंचल करते हुए; पुक्कु औलित्ततु-घुसकर गूँजी। १७०

वह ज्यास्वन सारे लोकों में यत्त-तत्त समान रूप से व्याप गया। उन वृक्षों के पास जो रहे, उन पर कैसे बीता, यह क्या कहा जाय? आठों दिग्गज बेहोश हो गये। दिशाएँ भ्रमित हो गयीं। श्रीराम के उस युद्ध-धनु की ध्वनि ब्रह्मा के सत्यलोक में घुसी, तो वह लोक भी डगमगा गया। १७०

अरिन्द	मन्ऱुशिलै	नार्णैडि	दार्त्तलु	ममरर्
इरिन्दु	नोङ्गिनर्	कऱ्पत्ति	निऱुदियैन्	उयिर्त्तार्
परिन्द	तम्बिये	पाङ्गुनिन्	ऱान्मऱ्ऱैप्	पल्लोर्
पुरिन्द	तन्मैयै	युरैशैयिऱ्	पळियवर्प्	पुणरुम् 171

अरिन्तमन्-अरिन्दम (परंतप) श्रीराम; चिलै नान्-धनु का डोरा; नैटिनु आर्त्तलुम्-देर तक ध्वनि करता रहा तो; अमरर्-देव; कऱ्पत्तिन् इऱुत्ति-कल्पान्त; अँऱुङ्क-कहकर; अयिर्त्तार्-शंकित ए; इरिन्दु, नोङ्कित्तर्-अस्त-व्यस्त भागे; परिन्त तम्बिये-स्निग्ध छोटे भाई ही; पाङ्कु निन्ऱान्-पास खड़े रहे; मऱ्ऱै पल्लोर्-अन्य अनेक लोगों ने; पुरिन्त तन्मैयै-जो किया वह कार्य; उरै चैयिल्-कहें तो; पळि-निन्दा; अवर् पुणरुम्-उनकी होगी। १७१

अरिन्दम श्रीराम के धनुष का डोरा बहुत देर तक टंकार निकालता रहा। देवों को शंका हो गयी कि कल्पान्त आ गया। इसलिए वे अस्त-व्यस्त होकर भागे। केवल लक्ष्मण ही पास खड़े रहे, जो कि श्रीराम पर अगाध भक्ति रखते थे। अन्य अनेकों ने क्या किया, यह कहने लगे तो उनकी निन्दा होगी। १७१

अय्दल्	काण्डुङ्गी	लिननुमैन्	अरिदिन्वन्	दैय्दिप्
पौय्यिन्	मारुदि	मुदलितर्	पुहलुङ्गम्	वौळुदिल्
मौय्हीळ्	वार्शिलै	नाणितै	मुर्ङ्गुर्	वाङ्गि
वैय्य	वाळियै	याळुडै	विल्लियुम्	विट्टान् 172

पौय् इल्-असत्य-रहित (सत्यसंध); मारुति मुतलितर्-मारुति आदि; इन्नुम्-और भी; अय्तल् काण्डुम् फौल्-शर चलाना भी देखना है क्या; अन्नुङ्-कहकर; अरितित् वन्तु अय्ति-सप्रयास आ पहुँचकर; पुक्ल् उङ्गम् पौळुत्तु-समीप आते समय; आळुडै विल्लियुम्-हमारे कैकय-प्राप्त धनुर्धर श्रीराम ने भी; मौय् फौळ्-सुदृढ़; वार् चिलै-लम्बे धनुष के; नाणितै-डोरे फो; मुर्ङ्ग उङ्ग-यथाविधि; वाङ्कि-खींचकर; वैय्य वाळियै-भयंकर शर फो; विट्टान्-चलाया । १७२

सत्यसंध मारुति आदि यही सोचने लगे कि आगे श्रीराम का शर चलाना देखना भी है क्या ? वे बहुत प्रयास के साथ श्रीराम के पास धीरे-धीरे आये । तब हमारे कैकय के अधिकारी श्रीराम ने सुदृढ़ अपने चाप के डोरे को यथाविधि खींचकर एक भयंकर शर चलाया । १७२

एळु	सामर	मुरुविक्की	ळलहमैन्	इशैक्कुम्
एळु	मूडुपुक्	कुरुविप्पित्	नुडनडुत्	तियन्ऱ
एळि	लामैयान्	मीण्डदव्	विराहवन्	पहळि
एळु	कण्डपि	नुरुवुमा	लौळिवदन्	इत्तनुम् 173

इराकवन्-श्रीराघव का; अ पकळि-वह वाण; एळु सा मरम्-उन सातों वड़े वृक्षों को; उरुवि-ब्रेधकर; कीळ् उलकम्-तीचे के लोक; अन्नुङ्-ऐसा; इचैक्कुम् एळुम्-फहलानेवाले सातों को; ऊट्टु पुक्कु-मध्य घुसकर; उरुवि-उस तरफ बाहर आकर; पिन्-वाद; उटन् अटुत्तु-साथ लगे; इयन्ऱ-रहनेवाले; एळु इलामैयान्-सप्तक न रहने के कारण; मीण्डतु-लौट आया; इन्नुम्-आगे भी; एळु कण्ट पिन्-कोई सप्तक देखता तो उसके बाद; उरुवुम्-भेद जाता; औळिवतु अन्नुङ्-छोड़नेवाला नहीं था । १७३

श्रीराघव का वह वाण सातों सालवृक्षों को भेदकर बाहर निकला । फिर सातों लोकों के मध्य घुसकर निफरा । उसके बाद अन्य कोई सप्तक (सात वस्तुओं का सम्मिलित समूह) न पाकर लौट आया । और कोई सप्तक मिल जाता, तो वह अवश्य भेदकर पार होता । छोड़ता नहीं । १७३

एळु	वेलैयु	मुलहमे	लुयर्न्दत्त	वैळुम्
एळु	कुन्ऱमु	मिरुडिह	ळैळ्वरुम्	वुरवि
एळु	मङ्गैय	रैळ्वरु	नडुङ्गिन	रैन्व
एळु	पैन्ऱदो	विक्कणैक्	किलक्कमैन्	रैण्णि 174

एळु वेलैयुम्-सातों समुद्र; उयर्न्दत्त-ऊपर रहनेवाले; मेल् उलकम्-उपरिलोक;

एलुम्-सातों; एलु कुन्नुमुम्-सातों पर्वत; इरुटिकळ्-ऋषि; अँलुवरुम्-सप्तक;
 पुरवि एलुम्-सातों अश्व (सूर्य के रथ के); मडक्कैयर् अँलुवरुम्-सातों कन्याएँ; इ
 कणैक्कु-इस शर का; इलक्कम्-निशान; एलु-सप्तक; पँडूरतो-बनेगा क्या;
 अँन्रु अँण्णि-यह सोचकर; नटुङ्कितर्-भयभीत हो गए । १७४

तब सृष्टि में जितने सप्तक थे, वे सब भयभीत हो गये । (नमक,
 इक्षुरस, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध, शुद्धजल के) समुद्र-सप्तक; (भूलोक,
 भुवलोक, स्वर्लोक, जन, महा, तपो, सत्य के सातों) उपरिलोक; (कैलास,
 हिम, मन्दर, विन्ध्य, निषध, हेमकूट, गन्धमादन —ये सातों) गिरियाँ;
 (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगिरा —ये) ऋषि-सप्तक;
 (गायत्री, उष्णिग, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, दृष्टुप, जगती —ये छन्द, जो सूर्यरथ
 के अश्व हैं —ये सातों) अश्व; (ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, नारायणी,
 वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डी —ये) सप्तकन्याएँ —ये सब सप्तक इस संशय से
 भयभीत हुए कि इस शर का निशान कोई भी सप्तक होगा ! । १७४

अन्न	दायिन्	मरुत्तित्तुक्	कारुयिर्त्	तुणैवन्
अँन्नुन्	दन्मैयै	नोक्किन	रियावरु	मँवैयुम्
पौन्त्तिन्	वार्हळ्	पुदुनरुन्	दामरै	पूण्डु
शैन्ति	मेर्कोण्ड	वरुक्कन्शे	यिवैयिवै	शैप्पुम् 175

अन्नतु आयितुम्-वैसा हुआ तो भी; अरुत्तित्तुक्कु-धर्म का; आर् उयिर्
 तुणैवन् अँन्नुम्-बहुत ही प्राणप्यारा रहने का; दन्मैयै-उनका स्वभाव; यावरुम्
 अँवैयुम्-सारे लोगों और सारे जीवों ने; नोक्किनर्-समझा (समझकर भय त्याग
 दिया); पौन्त्तिन् वार् कळल्-स्वर्ण की बड़ी पायल के; पुदु नरुम् तामरै-नवीन
 सुगन्धित शहदयुक्त कमलों (चरणों) को; पूण्डु-पकड़कर; शैन्ति मेल् कोण्ट-अपने
 सिर पर जिसने रख लिया; अरुक्कन् चैय्-वह सूर्यकुमार; इवै इवै चैप्पुम्-यों-यों
 बोलने लगा । १७५

तो भी उनको यह विश्वास था कि श्रीराम धर्म के प्राणप्यारे संगी
 हैं । इसलिए वे सभी भयमुक्त हुए । तब सूर्यपुत्र सुग्रीव स्वर्ण की बनी
 बड़ी पायलों से शोभित और नवविकसित सुगन्धपूर्ण कमल के समान
 रहनेवाले श्रीराम-चरणों को सिर पर धारण करके (चरणों पर दण्डवत में
 सिर रखकर) निम्नोक्त स्तुति की बातें कहने लगा । १७५

वैयनी	वात्तुनी	मरुन्नी	मलरिन्मेल्
ऐयनी	याळिमा	मालुनी	यरत्तुनी
शैय्यती	विन्नैरुन्	देवुनी	नायिन्नेन्
उय्यवन्	दुदविना	युलहमुन्	दुदविनाय् 176

वैयम् नी-भूमि भी आप हैं; वात्तुम् नी-आकाश भी आप; मरुन् नी-अन्य
 भूत भी आप; मलरिन् मेल् ऐयन्-(कमल-)पुष्प पर वास करनेवाले देव (ब्रह्मा भी);

नी-आप है; आळि मा मालुम्-क्षीरसागर-शायी महाविष्णु भी; नी-आप; अरतुम् नी-हर भी आप; तो वित्तै तैडम्-पापनाशक; चैय्य तेवुम् नी-श्रेष्ठ देव भी आप; उलकु-प्रपंच को; मुत्तु उतवित्ताय्-पहले सृष्ट करनेवाले आपने; नायितेन् उय्य-कुत्ते के समान मेरे उद्धार के लिए; वन्तु उतवित्ताय्-आकर उपकार किया । १७६

आप भूमि है; आकाश व अन्य भूत भी आप हैं । कमलासन ब्रह्मा, क्षीरसागरशायी महाविष्णु, हर आदि सब हैं । पापनाशक श्रेष्ठ देवता भी आप ही हैं । लोकपिता आपने ही इस प्रपंच को सृष्ट किया । ऐसे आपने स्वयं आकर मेरे उद्धार का बड़ा उपकार किया है । १७६

अन्नन्नक्	करियर्दप्	पौरुळुमैर्	कैळियदाल्
उन्नैयित्	तलैविडुत्	तुदविनार्	विदियिनार्
अन्नैयौप्	पुडैयवुन्	नडियरुक्	कडियन्यान्
मन्नवर्क्	करशर्वेत्	रुरैशैय्दान्	वशैयिलान् 177

वचै इलान्-निर्दोष सुग्रीव ने; मन्नवर्क्कु-राजाओं के; अरच-राजा; वित्तियितार्-विधि के देव ने; उन्नै-आपको; इ तलै विटुत्तु-यहाँ भिजवाकर; उतवित्ताय्-उपकार किया है; अन्नै-क्या; अन्नैक्कु-मेरे लिए; अरियतु-दुर्लभ है; अ पौरुळुम्-कोई भी वस्तु; अन्नैक्कु-मेरे लिए; कैळियतु आल्-सुगम है, इसलिए; अन्नै औप्पु उटैय-मातृ-सम; उन्नै-आपके; अटियरुक्कु-दासों का; यान् अटियन्-मैं फिर हूँ; अन्नै-ऐसा; उरै चैय्तान्-कथन किया । १७७

निर्दोष सुग्रीव ने और भी निवेदन किया । राजाधिराज ! विधि ने आपको यहाँ भिजवाकर मेरा बहुत बड़ा उपकार किया है ! अब मेरे लिए कौन सी बात दुर्लभ है ? कोई भी बात सुगम है ! इसलिए मैं माता-तुल्य आपके दासों का भी दास बन गया । १७७

आडिनार्	पाडित्ता	रङ्गुमिड्	गुङ्गलन्
दोडित्ता	रुवहैया	नरवैयुण्	उणर्हिलार्
नेडित्ताम्	वालिहा	लत्तैयैत्ता	नेडिदुनाळ्
वाडिनार्	तोळैलाम्	वळरमर्	रवरैलाम् 178

नेटितु नाळ् वाडितार्-बहुत दिन से व्यथित; अवरु अलाम्-वे सब; वालि कालत्तै-वाली के यम को; नेडित्ताम्-ढूँढ़कर पा गये; अत्ता-कहकर; उवकैयित् नडवै-सन्तोष का सुरा; उण्टु-पीकर; उणर्किलार्-आपा भूलकर; तोळ् अलाम् वळर-भुजाओं के वर्धित होते; आडित्तार्-नाचे; पाडित्तार्-गाये; अङ्कुम् इङ्कुम्-इधर-उधर; कलन्तु-मिलकर; ओडित्तार्-दौड़े । १७८

वे वानर बहुत दिनों से संकटग्रस्त और व्यथित रहे थे । अब उन्हें यह सन्तोष हो गया कि हम वाली के काल को ढूँढ़ रहे थे और वह श्रीराम के रूप में मिल गया । आनन्द सुरा का काम करने लगा । पिये हुए के

समान वे आपा भूलकर नाचे-गाये । उनके कन्धे फूल उठे । वे वृन्दों में मिलकर यत्न-तत्न दौड़े । १७८

5. तुन्दुबिप् पडलम् (दुन्दुभि पटल)

अण्डमुम्	महिलमु	मडैयवन्	इत्तलिडैप्
पण्डुर्वेन्	ददुर्नेडुम्	पशैवडन्	दिडिन्नुम्वान्
मण्डलन्	दौडुवदम्	मलैयिन्मेन्	मलैयैतक्
कण्डलन्	रुन्दुबिक्	कडलन्ना	नुडलरो 179

अण्डमुम्-अण्डगोल और; अकिलमुम्-उसके अन्तर्निहित सारे लोक; अटैय-एक साथ; अन्ड-प्रलय के उस दिन; अत्तल् इटै-आग में; पण्डु-पहले; वेन्ततु-जल गये; नैटुम् पचै वडन्तिटिन्नुम्-(रक्त आदि) लस के बहुत दिनों से सूखने पर भी; वान् मण्डलम् तौटुवतु-आकाश-मण्डल को छूनेवाला; कटल् अत्तान्-समुद्र-सम; तुन्तुपि उटलै-दुन्दुभी के (मृत) शरीर को; अ मलैयिन् मेल्-उस पर्वत पर रहनेवाले; मलै अत्त-अन्य पर्वत के समान; कण्डलन्-(श्रीराम ने) देखा । १७९

[श्रीराम ने दुन्दुभि की लाश को देखा । दुन्दुभि महिष का-सा रूप वाला था । इसको मय का पुत्र भी माना जाता है । वाल्मीकी के अनुसार श्रीराम ने सालवृक्ष-छेदन के पहले दुन्दुभि के पंजर को अपने पैर के अँगूठे से उछाला था ।]

वह दुन्दुभि का पंजर सारे अण्डगोल के और उसके अन्तर्हित सभी लोकों के पूर्व प्रलयकाल में अग्नि में जलने पर जो अवशेष रह सकता था, उसके समान था । रक्त आदि सूख गया था, तो भी वह इतना ऊँचा था कि आकाश को छू रहा था । समुद्र के समान वह फैला पड़ा था । श्रीराम ने उस मृत शरीर (अस्थिपंजर) को देखा, जो ऋष्यमूक पर्वत पर पड़े रहनेवाले दूसरे पर्वत के समान लगता था । १७९

तैन्बुलक्	किळवन्तूर्	मयिडमो	दिशैयिन्वाळ्
वन्बुलक्	करिमडिन्	ददुर्होलो	महरमीन्
अैन्बुलप्	पुडुवल्न्	ददुर्होलो	विदुर्वेना
उन्बुलक्	कुरियनी	युरैशैया	यैन्ववन् 180

इतु-यह; तैन् पुलम् किळवन्-दक्षिण दिशा के अधिदेव की; ऊर्-सवारी; मयिटमो-महिष है; तिचैयिन् वाळ्-दिशाओं में वास करनेवाले; वन्पु-बलिष्ठ; उलम् करि-(गजों में) मोटा एक गज; मटिन्तु कौलो-मरा है क्या; मकर मीन्-मगर-मच्छ; उलप्पु उड-जीवन खोकर; अैन्पु उलर्न्तु कौलो-उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी हैं क्या; अैता-तोचकर; उन् पुलक्कु उरिय-तुम्हारी जानकारी में आयी हुई बात को; नी-तुम; उरै चैया-बताओ; अैन्-पूछने पर; अवन्-सुग्रीव भी । १८०

श्रीराम ने उसको देखकर सुग्रीव से पूछा कि सुग्रीव ! यह पंजर दक्षिण दिशा के अधिदेव यम का वाहन महिष है ? या आठ बलिष्ठ मोटे दिग्गजों में एक मरा पड़ा है ? या किसी मगरमच्छ के मरने पर उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी है ? आश्चर्य के साथ ऐसा पूछने के बाद श्रीराम ने कहा कि तुम जो जानते हो, वह बताओ । सुग्रीव ने यों उत्तर दिया । १८०

तुन्दुविप्	पैयरुडैच्	चुडुशित्तत्	तवुणन्मी
इन्दुवैत्	तौडनिमिर्न्	देंडुमरुप्	पिणैयिनान्
मन्दरक्	किरियेनप्	पैरियवन्	महरनीर्
शिन्दिडक्	करुनिडत्	तरियित्तैत्	तेडुवान् 181

मो इन्दुवै-ऊपर, चन्द्र को; तौट-स्पर्श करते हुए; निमिर्न्तु अँडु-ऊपर की ओर उठे हुए; मरुप्पु इणैयिनान्-शृंगद्वय-सहित था; मन्तर किरि-मन्दर पर्वत; अँन-जैसे; पैरियवन्-बड़ा आकारवाला; तुन्दुपि-दुन्दुभि; पैयरुडै-नाम का; चुडु चित्तत्तु-जलानेवाले क्रोध का; अवुणन्-दानव; मकर नीर् चिन्तिट-मकरालय (समुद्र) का जल बिलोडित करके; करु निडत्तु-काले रंग के; अरियित्तै-हरि को; तेडुवान्-ढूँढ़ चला । १८१

एक दुन्दुभि दानव था । उसके दो सींग थे, जो आकाश में चन्द्र को स्पर्श कर दे, इतने ऊँचे ऊपर को उठे हुए थे । उसका आकार मन्दर पर्वत के समान बड़ा था । उसका क्रोध अग्नि के समान जलानेवाला था । वह मकरालय में इतने जोर से घुसा कि उसका जल छलककर छितर गया । वह काले रंग के महाविष्णु को (युद्ध करने के लिए) ढूँढ़ते हुए चला । १८१

अड्गुवन्	दरियेदिर्न्	दमैदियेन्	नैन्डुलुम्
पौड्गुवैञ्	जैरुविन्निड्	पौरुदियेन्	रुरैशैयक्
कड्कैयिन्	कणवनक्	करैमिड्	रुमलत्ते
उड्गदप्	पैरुवलिक्	कौरुवत्तैन्	रुरैशैय्दान् 182

अड्कु-वहाँ; अरि वन्तु-हरि आये; अँतिर्न्तु-सामने रहकर; अमैति अँन्-योजना क्या है; अँन्डुलुम्-पूछने पर; पौड्कु-क्रोध जिसमें उमड़े, उस; वैम् चैरुवित्तिल्-भयंकर युद्ध में; पौरुति-मुझसे मिड़ो; अँन्डु उरै चैय-यह कहने पर; कड्कैयिन् कणवन्-गंगा के पति; अ करै मिड्डु-वे विष-कण्ठ; अमलत्ते-निर्मल ईश्वर ही; उम्-तुम्हारे (जैसे लोगो को); कत पैरुवलिक्कु-क्रोधशील बड़े बल के योग्य; कौरुवत्तै-एक (गन्तु) है; अँन्डु-ऐसा; उरै चैय्दान्-कहा । १८२

तब वहाँ हरि सामने आये । उन्होंने दानव से पूछा कि अभिप्राय क्या है ? दानव ने उत्तर दिया कि मेरे साथ क्रोध उभाड़नेवाली रीति से युद्ध करो । तब हरि ने कहा कि चलो गंगा के पति के पास । विषकण्ठ

वे ही तुमको तृप्तिदायक युद्धदान कर सकेंगे । तुम बहुत ही क्रोधशील और बड़ी शक्ति के रखनेवाले हो । १८२

कडिदुशेन्	इवतुमक्	कडवुडन्	कथिलैयैक्
कौडियकौम्	बितित्तुमडुत्	तैळुदलुड्	गुरुहिमुन्
नौडिदिनिन्	कुरैयैयन्	इलुनुवन्	इत्तन्नरो
मुडिविल्वैञ्	जैरुवैतक्	कुदवुवान्	मुयल्हैन्ता 183

अवतुम्-वह भी; कटितु चैत्तु-जल्दी जाकर; अ कटवुड तन्-उन ईश्वर के; कथिलैयै-कैलास पर्वत को; कौडिय कौम्पित्तिल्-भयंकर सींगों से; मडुत्तु-उखाड़ लेकर; अळुतलुम्-उठा, तो; मुन् कुरुकि-सामने आकर (शिवजी); निन् कुरैयै-अपनी चाह; नौडिति-कहो; अन्नलुम्-बोले, तो; मुटिवु इल्-असीम; वैम् चैरु-कठोर युद्ध; अतक्कु उतवुवान्-मुझ देकर उपकार करने का; मुयल्क-प्रयत्न करें; अन्ता-यह; नुवन्नत्तन्-(कुन्दुभि) बोला । १८३

वह वेग के साथ चला । उसने ईश्वर शिव के कैलास को अपने सींगों से खोदकर उठा लिया । तब शिवजी उसके सामने आये और पूछा कि तुम्हारी चाह क्या है ? दानव ने कहा, मुझसे असीम काल तक भयंकर युद्ध करने का प्रयत्न कीजिए । १८३

मूलमे	वीरमे	मूडित्ता	योडुपोर्
एलुमो	तेवर्पा	लेहैन्ता	वेवित्तान्
शालनाळ्	पोर्शैय्वा	यादियेर्	चारल्पोय्
वालिपा	लेयैन्ता	वानुळोर्	वानुळान् 184

मूलमे-आदि से ही; वीरमे मूडित्तायोडु-वीरता में मग्न रहनेवाले तुमसे; पोर् एलुमे-युद्ध शक्य है क्या; तेवर् पाल् एकु अन्ता-देवों के पास जाओ, ऐसा; एवित्तान्-प्रेरित किया; वान् उळोर्-व्योमवासियों के; वान् उळान्-ऊपर रहनेवाले इन्द्र; चाल नाळ्-अनेक दिन; पोर् चैय्वाय् आति-युद्ध करनेवाले हो; एल्-तो; वालि पाले-वाली के पास ही; पोय् चारल्-जाकर मिलो; अन्ता-ऐसा । १८४

शिवजी ने कहा कि तुम आदि से ही वीरता से आवृत बड़े वीर हो ! तुम्हारे साथ युद्ध करने की शक्ति मुझमें है क्या ? तुम देवों के पास जाओ । उन्होंने उसे देवों के पास भेजा । (वह उनके पास गया ।) देवों के राजा इन्द्र ने उनसे कहा कि अगर तुममें बहुत लम्बे काल तक युद्ध करने की चाह है, तो वाली के पास ही जाओ । १८४

अन्नवन्	विडवुवन्	दवन्नुम्वन्	दरिहडम्
मन्तव	वरुहपोर्	शैयवैन्ता	मलैयित्तैच्
चिन्नपित्	तम्बडुत्	तिडुदलुम्	जित्तवियैन्
मुन्नवन्	मुन्नर्वन्	दवन्नोडुम्	मुनैदलुम् 185

अनूतवन् विट-इन्द्र के भेजने पर; अवन्तुम्-उस (दुन्दुभि) के; उवन्तु वन्तु-मुदित आकर; अरिक्ळ तम् मन्तव-वानरों के राजा; पोर् चैय-युद्ध करने; वरुक्-आओ; अँता-कहकर; मलैयित्त-वाली के वास के पर्वत को; चित्त पित्तम् पटुत्तिटुतलुम्-छिन्न-भिन्न करने पर; अँन् मुन्नवन्-मेरे अग्रज; चितवि-कुपित हो; मुन्नर् वन्तु-सामने आकर; अवन्तीट्ट-उसके साथ; मुन्नतलुम्-लड़े, तब । १८५

इन्द्र ने ऐसा कहकर उसे भेज दिया । दुन्दुभि भी बहुत खुश होकर वाली के पास आया । वानरराज ! आओ, हमसे भिड़ो ! यह कहते हुए उसने वाली के पर्वत को तहस-नहस किया । तो मेरे बड़े भाई क्रुद्ध हुए और आकर उससे भिड़ने लगे । १८५

इरुवरुञ्	जैरुवरुम्	पौळुदित्तु	नवरुहळैन्
इरुवरुञ्	जिरिदुणर्न्	दिलरुहळैव्	वुलहमुम्
वैरुवरुन्	दहैयित्तार्	विळुवर्न्निन्	इळुवराल्
मरुवरुन्	दहैयर्ता	नवरुहळ्वा	नवरुहडाम् 186

इरुवरुम्-दोनों; चैरु उरुम् पौळुदित्तु-जब भिड़े तब; इन्नतवरुक्ळ अँन्ड-फौन हैं, ऐसा; ओरुवरुम्-कोई भी; उणर्न्तिलरुक्ळ-समझ नहीं पाये; अँ उलकमुम्-किसी भी लोक के वासी; वैरुवरुम् तकैयित्तार्-देखकर भयभीत हो जायें, ऐसे रचित वे; विळुवर्-गिरेंगे; निन्डु अँळुवर् आल्-फिर उठेंगे, इसलिए; तात्तवर्-दानव; वात्तवरुक्ळ ताम्-और देवों को भी; मरुवु-पास आना; अरुम् तकैयर्-असम्भव हो, ऐसी स्थिति वाले । १८६

दोनों जब लड़े तो वे इतने गुंथ गये कि किसी के लिए भी अलग-अलग पहचानना कठिन हो गया । वे दोनों ऐसे थे कि किसी भी लोक के वासी उनको देखकर भयभीत हो जायें । ऐसा वे भिड़ते हुए कभी गिर जाते; कभी उठ जाते कि दानव, देव सभी उनके समीप आ नहीं सके । १८६

तीयैळुन्	ददुविचुम्	बुरनैडुन्	दिशेमिशैप्
पोयैळुन्	ददुमुळक्	कुडत्तैळुन्	ददुपुयल्
तोयमुम्	बुणरियुन्	दौडर्त्तड्डु	गिरिहळुम्
शायळिन्	दन्नवडित्	तलमैडुत्	तिडुदलाल् 187

अटि तलम्-पैरों को; अँटुत्तिटुतलाल्-बदलकर रखने से; ती-आग; विचुमुपु उड-आकाश छूते हुए; अँळुन्तु-उठी; मुळक्कु-गर्जन; नैटुम् तिच्च मिच्च-लम्बी दिशाओं में; पोय् अँळुन्तु-जाकर गूँज उठा; पुयल्-मेघ; उटन् अँळुन्तु-साथ उठे; तोयमुम्-जलाशय; पुणरियुम्-समुद्र; तटम् तौटर् किरिक्ळुम्-और बड़े श्रेणीबद्ध पर्वत; चाय् अळिन्तन-प्रभाहीन हो गये (महिमाहीन हो गये या सौंदर्य-विहीन हो गये) । १८७

वे जब पैंतरे बदलते तब आग उठ जाती और आकाश तक फैल

जाती । उनका गर्जन सारी दिशाओं में जाकर गूँज उठा । मेघ भी उसके साथ उठ जाते । शुद्ध जलाशय, समुद्र और बड़ी पर्वतश्रेणियाँ अपना-अपना सौन्दर्य खो गयीं । सब मिट गये । १८७

अरुदा	हियशैरुप्	पुरिवुरु	मळवितिल्
कौरुदा	लियुस्वयक्	कुववुतोळ्	वलियित्ताल्
परुडिया	शयित्तवन्	पणैमरुप्	पिणैपरित्
तैरुडित्ता	नवन्नुस्वा	निडियितिन्	रुरडित्तान् 188

अरुतु आकिय-उस प्रकार के; चैरु-युद्ध को; पुरिवुरुम् अळवितिल्-जब वे करते रहे, तब; कौरु वालियुम्-साहसी वाली ने भी; वयम् कुववु-विजयी और पुष्ट; तोळ् वलियित्ताल्-भुजबल से; अवन्-उसके; पणै-स्थूल; मरुप्पु इणै-सींगों के जोड़े को; परुडि-पकड़कर; परित्तु-नोच लेकर; आचैयित्-दिशाओं में; अरुडित्तान्-फेंका; अवन्नुम्-वह (हुन्दुभि) भी; वान् इडियित्-आकाश में होनेवाले वज्र के समान; नित्ुरु-खड़ा होकर; उरडित्तान्-गरजा । १८८

दोनों में ऐसा युद्ध हो रहा था । तब साहसी वाली ने अपनी विजयी, पुष्ट और उन्नत भुजाओं के बल से दानव के दोनों सींगों को तोड़ लेकर दूर दिशाओं में फेंक दिया । वह भी वहीं रहकर वज्र के समान गरजने लगा । १८८

कवरियड्	गिरियित्तैक्	करदलड्	गौडितिरित्
तिवर्दलुड्	गुरुदिपट्	टुयर्नैडुन्	दिशैतौरुम्
तुवरणिन्	दन्नवैत्तप्	पौशितुदैन्	दनदुणैप्
पवर्नैडुम्	वणैमदम्	बयिलुम्बन्	गिरिहळे 189

कवरि अम् किरियित्तै-महिष के आकार के सुन्दर पर्वत के समान उस हुन्दुभि को; करतलम् कौटु-(वाली) हाथों से; तिरित्तु-घुमाते हुए; इवर्तलुम्-घुमा तो; कुरुति पट्टु-(उस दानव का) रक्त आ लगा, इसलिए; उयर् नैडुम्-विशाल व उन्नत; तिवै तौडुम्-आठों दिशाओं में; तुणै-मिले रहे; पवर्-पास-पास के; नैडुम्-बड़े; पणै-स्थूल; मतम् पयिलुम्-मदमत्त; वन् किरिकळ्-बलिष्ठ गिरि-सम गज; तुवर् अणिन्तत अँत-लाल रंग से रंगित हो गये जैसे; पौचि-(रक्त के) लेप से; तुतैन्तत-युक्त हो गये । १८९

वाली महिषाकार सुन्दर पर्वत-सम उसको अपने हाथों में उठाकर घुमाते हुए स्वयं घूमने लगा । तब उस असुर के रक्त से आठों परस्पर मित्र, बड़े, मोटे और मदस्रावी दिग्गज लाल रंग के बने से लिप्त हो गये । १८९

पुयल्हडन्	दिरवितन्	पुहल्हडन्	दयलुळोर्
इयलुमण्	डिलमिहन्	दैनेयवन्	दविरमेल्

वयिरवन् करदलत् तवन्वलित् तैयिवन्
रुयिरुम्विण् पडरविव् वुडलुमिम् वरित्तरो 190

अवन्-वह; पुयल् कटन्तु-मेघमण्डल पार करके; इरवि तन् पुकल्-सूर्य-मार्ग; कटन्तु-पार करके; अयल् उळोर् इयलुम्-उनके परे अन्य देवों के भी; मण्डिलम् इकन्तु-मण्डलों को पार करके; अँतैयवुम्-अन्य लोकों को भी; तविर-छोड़ते हुए; मेल्-ऊपर; वयिर-कठोर; वन् कर तलत्तु-वलिष्ठ हाथों से; वलित्तु अँयि-जोर से फेंकने पर; अन्न-तब; उयिरुम् विण् पटर-प्राणों के स्वर्ग में जाते; इ उटलुम्-यह शरीर भी; इम्परिन् अरो-इस लोक में पड़ा रह गया न । १६०

वाली ने अपने बहुत ही बलवान हाथों से उसको ऐसा ले पटका कि वह मेघमण्डल, सूर्यमण्डल, देवलोक और अन्य लोकों को पार कर जाये । तब उसके प्राण स्वर्ग में चले गये और उसका शरीर इस भूमि पर पड़ा, इस भूमि का हो गया न ? । १९०

मुट्टिवान् मुहडुशैन् इणवियिम् मुडैयुडल्
कट्टिमाल् वरैयैवन् वुडदलिङ् करुणैयान्
इट्टशा वमुमैत्तक् कुदवुमिव् वियल्वितिल्
पट्टवा मुळुवडुम् वरिविना लुरैशैय्दान् 191

इ मुट्टै-यह दुर्गन्धपूर्ण; उटल् कट्टि-शरीर का मांसपिण्ड; वान् मुकट्टु-आकाश की छत को; मुट्टि चैन्न-टकराते हुए जाकर; अणवि-वहाँ लगा रहने के बाद; माल् वरैयै-इस बड़े (ऋष्यमूक) पर्वत पर; वन्तु उरुतलिल्-आ गिरा, तब; करुणैयान्-करुणामय (मत्तंग ऋषि) का; इट्ट चापमुम्-दिया गया शाप भी; अँनक्कु उतवुम्-मेरा उपकारी बना; इ इयल्वितिल्-इस प्रकार से; पट्टवा मुळुवतुम्-जो कष्ट सहना पड़ा, वह सब; परिवित्ताल्-पीड़ा के साथ; उरै चैय्दान्- (सुग्रीव ने) कह सुनाया । १६१

यह दुर्गन्धपूर्ण शरीर, मांसपिण्ड ऊपर गया, आकाश की छत से टकराया और इस बड़े पर्वत पर आ गिरा । तब करुणामय मत्तंग ऋषि ने यह देखकर वाली को शाप दे दिया । वही शाप अब मेरा बड़ा उपकारी बना रहता है । इस प्रकार से सुग्रीव ने अपने सारे कष्टों की कहानी वेदना के साथ सुना दी । १९१

केट्टन् नमलत्तुङ् गिळन्द् वाऱैलाम्
वाट्टौळि लिळवलै यिदन्नै मैन्दनी
ओट्टैन् ववन्कळल् विरलि नुन्दिन्नान्
मीट्टट्टु विरिञ्जना डुर्रु मीण्डडै 192

अमलत्तुम्-निरंजन प्रभु ने भी; किळन्त आऱु अँलाम्-कथित सभी बातों को; केट्टन्-सुना; वाळ् तौळिल्-करवालाकार्य में चतुर; इळवलै-छोटे भाई से;

मैन्त-वीर भाई; नी-तुम; इतत्तै-इसको; ओट्टु-दूर करो; अँत-कहा तो;
 अवत्-उन्होंने भी; कळल् विरलित्-पैर की उँगलियों से; उन्तितान्-उछाला;
 अतु-वह पंजर; मीट्टु-फिर एक बार; विरिञ्चन् नाटु उड्ड-विरंचि का लोक
 जाकर; मीण्टु-लौट आया । १६२

यह सब श्रीराम ने सुना । उन्होंने तलवार चलाने में अत्यन्त चतुर
 अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा कि वीर भाई ! इसको यहाँ से हटाओ ।
 लक्ष्मण ने भी उसको अपने पैरों की उँगली से उछाला, तो वह पंजर फिर
 एक बार विरंचिलोक जा लौटा १९२

6. कलन् काण् पडलम् (आभरण-दर्शन पटल)

आयिडै	यरिक्कुल	मशन्ति	यञ्जिड
वाय्तिउन्	दार्त्तुतु	वळ्ळ	लोङ्गिय
तूयवच्	चोलैयि	लिरुन्द	चूळल्वाय्
नायह	वुणर्त्तुव	दुण्ड	नानैता 193

अ इटै-तब; अरि कुलम्-वानरवृन्द; अचत्ति अञ्चिट-वज्र को भयभीत करते
 हुए; वाय् तिउन्तु-मुख खोलकर; आर्त्तुतु-शोर मचा उठे; वळ्ळल्-उदार
 प्रभु श्रीराम भी; ओङ्किय-उन्नत; नल्-अच्छे; तूय-पवित्र; चोलैयिल्-उद्यान
 में; इरुन्त-जब रहे; चूळल् वाय्-उस समय; नायक-नायक; नान् उणर्त्तुवतु-
 मेरी समझाने की; उण्टु-एक बात है; अँता-कहकर । १६३

तब वानरवृन्दों ने मुख खोलकर सन्तोष का बड़ा हल्ला मचाया ।
 दानी श्रीराम ऊँचे तरुओं से पूर्ण एक सुन्दर और पवित्र उपवन में जाकर
 ठहरे । तब सुग्रीव ने कहा कि नायक ! मेरा एक निवेदन है । १९३

इव्वळि	यामियैन्	दिरुन्द	दोरिडै
वैव्वळि	थिरावणन्	कौणर	मेलैनाळ्
शैव्वळि	नोक्किन्तैम्	देविये	कौलाम्
कव्वैयि	तरुडित्तळ्	कळिन्द	शेणुळाळ् 194

मेलै नाळ्-पहले किसी दिन; इ वळि-यहाँ; याम् इयैन्तु-हम मिलकर;
 इरुन्तु ओर् इटै-जब रहे तब; वैम् वळि-दुराचारी; रावणन्-रावण द्वारा;
 कौणर-लायी जाकर; कळिन्त चेण् उळाळ्-बहुत दूर आकाश में जो रहीं; कव्वैयिन्-
 (एक स्त्री ने) दुःख से; अरुडित्तळ्-विलाप किया; चैम्मै वळि-अब खूब;
 नोक्किन्तैम्-सोचकर देखा; तेविये कौल् आम्-देवी सीता ही होंगी शायद । १६४

उसने कहा— पहले किसी दिन हम यहाँ एकत्र होकर बैठे हुए थे ।
 तब दुराचारी रावण एक स्त्री को उठाये ले जा रहा था । वह बहुत दूर
 में दुःख से विलाप कर रही थीं । अब सोचता हूँ तो लगता है कि वे
 देवी सीता ही थीं । १९४

उळैयरि	नुणर्त्तुव	दैन्व	दुन्नियो
कुळैपौरु	कण्णिनाळ्	कुर्त्तित्त	दोर्न्दिलेम्
मळैपौरु	कण्णिणै	वारि	योडुदन्
इळैपौदिन्	दिट्टनळ्	याङ्ग	ळेर्त्तैम् 195

कुळै पौरु-कुण्डलों से टकरानेवाली; कण्णिनाळ्-आँखों की वे; उळैयरिन्-पास जो रहे उन हमसे; उणर्त्तुवतु-(अपनी स्थिति) बताना; अँतपतु उन्नियो-यह सोचकर; कुर्त्तित्तु-उनका अभिप्राय; ओर्न्दिलेम्-जान नहीं सके; तन् इळै-अपने आभरणों को; पौत्तिन्तु-बाँधकर; मळै पौरु-वारिश के समान; इण कण्-जोड़ी की आँखों से; वारियोटु-वहनेवाली अश्रुधारा के साथ; इट्टनळ्-नीचे डाल दिया; याङ्कळ्-हमने; एर्त्तैम्-लेकर रख लिया । १६५

तब उन्होंने अपने आभरणों को वस्त्रखण्ड में बाँधकर आँखों से वहनेवाली अश्रुधारा के साथ हमारे सामने नीचे डाला । यह उन्होंने क्या सोचकर किया ? हम ही पास रहे, हमको अपनी स्थिति समझाना चाहती थीं, यही कारण था ? या कोई और ? हम नहीं जानते । हमने भी उन्हें उठाकर रखा है । १९५

वैत्तनै	मिव्वळि	वळ्ळ	त्तिन्वयिन्
उय्त्तन्न	तन्दपो	दुणर्दि	यार्लैताक्
कैत्तलत्	तन्नवै	कौणर्न्दु	काट्टिन्नान्
नैय्त्तलैप्	पाल्हलन्	दनैय	नेयत्तान् 196

नैय् तलै-शहद से; पाल् कलन्ततैय-दूध मिला जैसे; नेयत्तान्-स्निग्ध; वळ्ळल्-दानी प्रभु; उय्त्तन्न-ऐसे जो डाले गये, उनको; इ वळि वैत्ततैम्-यहाँ रखा है; तिन् वयिन्-आपके पास; तन्त पोतु-जब देंगे तब; उणर्त्ति-आप समझ लेंगे; अँता-कहकर; अन्नवै-उन आभरणों को; कै तलत्तु-अपने हाथों में; कौणर्न्दु-ले आकर; काट्टिन्नान्-दिखाया (सुग्रीव ने) । १६६

सुग्रीव का स्नेह शहदमिश्रित दूध के समान मधुर और गाढ़ था और पवित्र भी । वैसे स्नेही सुग्रीव ने आगे कहा कि वदान्य ! वे आभरण, जिनको उन्होंने नीचे डाला था, इधर ही है । उनको हम आपके पास लाकर दें तो आप समझ सकेंगे कि वे क्या उन्हीं के है । यह कहकर सुग्रीव अपने हाथ में उन आभरणों को ले आया और श्रीराम को दिखाया । १९६

तैरिवुड	नोककिनन्	रैरिवै	मैय्यणि
अँरिहन	लैय्दिय	मैळुहिन	याक्कैपोय्
उरुहिन	नैन्गिल्लै	मुयिरुक्	कूर्त्तमाय्प्
परुहिन	नैन्गिल्लैम्	बहर्त्त	दैन्गौलाम् 197

तैरिवै मैय् अणि-देवी के शरीर को अलंकृत करते जो रहे उनको; तैरिवु उड-

ध्यान देकर; नोक्कित्तन्—श्रीराम ने निहारा; अरि अन्नल्—जलती अग्नि में; अयूतिय—पड़े; मँळुकिन्—मोम के समान; याक्क पोय्—शरीर के; उरुकिन्न—कृश हुए (पिघल गये); अँत्किल्लम्—यह नहीं कह सकते; उयिरुक्कु ऊर्ऱम् आय्—प्राण की संजीवनी समझकर; परुकिन्न अँत्किल्लम्—पिया, यह भी कह नहीं सकते; पक्कर्वतु—कहने के लिए; अँत् कौल् आम्—क्या ही है । १६७

देवी सीता के शरीर को अलंकृत करते जो रहे, उन आभरणों को श्रीराम ने ध्यान से देखा । तब उनकी स्थिति क्या रही ? आग में पड़े मोम के समान शरीर द्रवीभूत हो गया ? ऐसा कह नहीं सकते । या प्राणों की संजीवनी मानकर उनको उन्होंने पी लिया —यह भी नहीं कह सकते । फिर हम क्या कह सकेंगे ? । १९७

नल्हुव	दँत्तित्ति	नङ्गै	कौङ्गैयैप्
पुल्हिय	पूणुमक्	कौङ्गै	पोन्ऱत्त
अल्हुलि	नणिहळु	मल्हु	लायित्त
पल्हलन्	पिरवुमप्	पडिव	मायवे 198

नङ्कै कौङ्कैयै—देवी के उरोजों को; पुलुक्किय—जो आलिंगन करते रहे; पूणुम्—वे आभरण; अ कौङ्कै पोन्ऱत्त—उन्हीं स्तनों के समान बने (दिखे); अल्कुलित् अणिकळुम्—कटि-प्रदेश के आभरण भी; अल्कुल् आयित्त—कटि-प्रदेश ही बने; पल्कलन्—अनेक आभरण; पिरवुम्—अन्य भी; अ पडिवम् आयित्त—उन्हीं अंगों के रूप में दिखे (जिन पर वे पहने गये थे); इत्ति—इसके अलावा; नल्कुवतु—आभरण कर सकते हैं; अँत्—क्या (उपकार) । १६८

उन आभरणों ने सीता के उन अंगों का स्मरण दिलाकर बड़ा उपकार किया । उरोजों से जो आभरण लगे रहे, वे (हार आदि) उरोज ही बन गये ! कटिप्रदेश के मेखला आदि आभरण वही अंग बन गये । अन्य अंगों के आभरण भी वे अंग बन गये । (श्रीराम के मन में उन अंगों की स्मृति जागी और वह तीव्र हो गयी ।) वे आभरण इसके सिवा क्या उपकार कर सकते थे ? । १९८

विट्टपे	रुणर्विन्नै	विळित्त	वैत्तुगैतो
अट्टत्त	वुयिरैयव्	वणिह	ळैत्तुगैतो
कौट्टित्त	शान्दत्तक्	कुळिर्न्द	वैत्तुगैतो
शुट्टत्त	वैत्तुगैतो	यादु	शौल्लुहेन् 199

अ अणिकळ्—उन आभरणों ने; विट्ट—जो छूट गयी थी; पेर् उणर्विन्नै—(श्रीराम की) उस प्रज्ञा को; विळित्त—बुलाकर लौटा दिया; अँत्कैतो—कहें; उयिरं—प्राणों को; अट्टत्त—मार दिया; अँत्कैतो—कहें; कौट्टित्त—ऊपर उड़ले गये; चान्तु अँत्—चन्दन के समान; कुळिर्त्त—शीतल बनाया; अँत्कैतो—कहें; शुट्टत्त—जलाया; अँत्कैतो—कहें; यातु चौल्लुकेन्—क्या बता सकता हूँ । १६९

उन आभरणों ने श्रीराम की छूटी प्रज्ञा को फिर से जाग्रत् कर दिया —ऐसा कहूँ ? या उन्होंने उनके प्राण जला (मिटा) दिये —कहूँ ? अधिक परिमाण में लिप्त चन्दन के समान शरीर को शीतल (सुखी) बनाया —कहूँ ? या श्रीशरीर को ताप दिया —कहूँ ? क्या कहूँ, मैं ? । १९९

मोन्दिड	नरुमल	रान	मोय्म्बितिल्
एन्दिड	वुत्तरी	यत्तै	येय्न्दन
शान्दमु	मायौळि	तळुवप्	पोर्त्तलाल्
पून्नुहि	लानवप्	पूवै	पूण्गळे 200

अ-उन; पूवै-कोमल सारिका-सम देवी के; पूण्कळ्-आभरण; मोन्तिटि-सूँघने के लिए; नरु मलर् आत्त-युगन्धित फूल बने (उन्होंने सूँघा); मोय्म्पितिल्-अपने कन्धों पर; एन्तिटि-धारण करने पर; उत्तरीयत्तै-उत्तरीय के; एय्न्तत-स्थान में रहे; चान्तमुम्-चन्दन भी; आय्-बने और; औळि तळुव-शोभा देते हुए; पोर्त्तलाल्-शरीर पर धारण करने से; पूम् तुकिल्-सुन्दर वस्त्र भी; आत्त-बने । २००

श्रीराम को वे आभरण कैसे-कैसे लगे ! उन्होंने उन्हें सूँघा तो वे फूल हो गये । (फूल के समान उन्होंने उन्हें सूँघा ।) कन्धों पर धारण किया तो वे उत्तरीय बने । चन्दन बने और शोभा बढ़ाते हुए उनके अंगों के आवरण बने । तब वे सुन्दर वस्त्र भी बने । २००

ईर्त्तत्त	शैङ्गणीर्	वैळ्ळम्	यावैयुम्
पोर्त्तन	मयिर्प्पेरुम्	बुळहम्	पौङ्गुतोळ्
वेर्त्तत्त	नैन्ऱैन्तो	वैदुम्बि	नानैन्ऱैन्तो
तोर्त्तत्तै	यव्वळि	यादु	शैप्पुहेन् 201

ईर्त्तत्त-बहकर जो आया; चैम् कण् नीर् वैळ्ळम्-लाल अश्रुप्रवाह; यावैयुम्-सबको; मयिर् पेरुम् पुळ्ळम्-रोमांच ने; पोर्त्तत्त-ढक दिया; पौङ्गु तोळ्-प्रफुल्ल कन्धे; वेर्त्तत्त-स्वेदयुक्त हो गये; नैन्ऱैन्तो-कहूँ; वैदुम्पितान्-तप्त हुए; अन्ऱैन्तो-कहूँ; तोर्त्तत्तै-भगवान की; अ वळि-वह स्थिति; यातु चैप्पुकेन्-क्या कह सकता । २०१

श्रीराम की आँखों से अश्रु की धारा बहती आयी और उनके शरीर पर लगी रही । पर रोमांच ने उसको ढक दिया । तब क्या कहा जाय ? यह कहूँ कि उनके पुष्ट कन्धे स्वेदयुक्त हो गये ? या यह कहूँ कि विरहताप से तप्त हो गये ? तीर्थ, भगवान श्रीराम की तब की स्थिति का क्या कहूँ ? । २०१

विडम्बरन्	दत्तैयदोर्	वैम्मै	मीक्कौळ
नैडुम्बौळु	दुणर्वित्तो	दुयिर्प्पु	नौङ्गिय

तडम्बैरुड्	गण्णनैत्	ताङ्गि	तान्तरत्
दुडम्बित्	चैरिमयिर्	शुरूक्काण्	डोडवे 202

विटम् परन्त-विष फैला; अतैयतु-ऐसा; ओर् वैम्भै-एक ताप; मी कौळ-अधिक हुआ; नैटुम् पौळुतु-बहुत देर तक; उणर्वितोडु-सुध के साथ; उयिर्पु-श्वास; नोङ्किय-खोया रहा; तडम् पेरुम् कण्णनै- (जिनका) उन आयतविशालाक्ष को; तततु उडम्पितिल्-अपने शरीर पर के; चैरि मयिर्-घने बालों के; चुरू कौण्ड ओट-झुलसने देते हुए; ताङ्कितान्-(सुग्रीव ने) धारण कर लिया । २०२

उनके शरीर भर में विष फैला जैसा ताप बढ़ गया । वे बहुत देर तक सुध-बुध खोये रहे । सुग्रीव ने उन आयतविशालाक्ष श्रीराम को अपने शरीर पर धारण कर लिया । ताप इतना था कि सुग्रीव के शरीर के बाल झुलस गये । २०२

ताङ्गित	तिरुत्तियत्	तुयर्न्	दाङ्गुरा
दैङ्गिय	नैञ्जित	तिरङ्गि	विम्मुवान्
वोङ्गिय	तोळिनाय्	वित्तैयि	तेनुयिर्
वाङ्गित	तिव्वणि	वरुवित्	तेयैता 203

ताङ्कितान्-धारण कर; इरुत्ति-रखते हुए; अ तुयर्म्-वह (उनका) दुःख; ताङ्कुरातु-सह नहीं सक कर; एङ्किय-दुखनेवाले; नैञ्चितान्-मन के साथ; वोङ्किय-फूले हुए; तोळिनाय्-कन्धों वाले; वित्तैयितेन्-यह कार्यकर्ता मैं; इ अणि वरुवित्ते-ये आभरण मँगाकर ही; उयिर् वाङ्कितेन्-आपके प्राण हर चुका; अँता-कहकर; इरङ्कि-अनुताप से; विम्मुवान्-भर गया । २०३

सुग्रीव श्रीराम के दुःख से कातर हुआ । श्रीराम को अपने अंक में धारण करते हुए सुग्रीव ने कहा कि प्रफुल्ल भुजा वाले ! मैं अनुचित काम का करनेवाला बन गया । ये आभरण मँगाकर मैंने आपके प्राणों को खतरे में डाल दिया । वह बहुत दुःख से भर गया । २०३

अयनुड	यण्डत्ति	नप्पु	रत्तैयुम्
मयर्वर	नाडियेन्	वलियुड्	गाट्टियुन्
उयर्पुहळ्त्	तेवियै	युदवर्	पालनाल्
तुयर्ळन्	दयर्दियो	शुरुदि	नूल्वलाय् 204

चुरुति नूल् वलाय्-श्रुतिशास्त्रविद्वान्; अयन् उटै-ब्रह्मा के; अण्डत्तिन्-अण्ड के; अ पुडत्तैयुम्-पार के स्थानों में भी; मयर्व अर्-विना भ्रम के; नाटि-खोजकर; अँन् वलियुम्-अपना बल भी; काट्टि-दिखाकर; उन् उयर् पुकळ्-आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी; तेवियै-धर्मपत्नी को; उतवल् पालन्-ले आने को बद्ध हूँ; आल्-इसलिए; तुयर् उळ्ळन्तु-दुःख में पड़कर; अयर्तियो-श्रान्त होंगे क्यों । २०४

उसने आगे आश्वासन दिया । श्रुतिशास्त्रव्युत्पन्न ! ब्रह्माण्ड के

उस पार भी जाकर सब स्थलों में विना प्रमाद के ढूँढ़कर, अपने बल से आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी धर्मपत्नी सीताजी को ले आने का संकल्पबद्ध हूँ। फिर आप क्यों दुःखमग्न होकर श्रान्त हों ? । २०४

तिरुमह	ळत्तैयवत्	तैयवक्	कड्पिताळ्
वैरुवरच्	चैय्दुळ	वैय्य	वन्नुयम्
इरुबदु	मीरेन्दु	तलैयु	निर्क्कुवुन्
औरुहणैक्	कारुमो	बुलह	मेळुमे 205

तिरुमळ् अतैय-श्रीलक्ष्मी-सदृश; अ तैयव कड्पिताळ्-उन पतिव्रता देवी को; वैरुवर चैयु उळ-जिसने भयभीत किया है; वैय्यवन्-उस नृशंस की; पुयम् इरुपतुम्-वोसों भुजाएँ; ईर् ऐन्तु तलैयुम्-दसों सिर; निर्क्क-रहें; उन् और कणैक्कु-आपके एक शर के सामने; उलकम् एळुम्-सातों लोक; आरुमो-ठहर सकेंगे क्या । २०५

श्रीलक्ष्मी-सदृश पतिव्रता सीता को भयभीत करते हुए जो कष्ट देता रहता है, उस क्रूर रावण के बीस भुजाएँ और दस सिर हैं। तो क्या ? उनको रहने दीजिए। आपके एक शर के सामने सातों लोक टिक सकेंगे क्या ? । २०५

ईण्डुनी	यिरुन्दरु	ळेळों	डेळैत्तप्
पूण्डये	रुलहङ्गळ्	वलियिर्	पुक्किडैत्
तेण्डियव्	वरक्कत्तै	तिरुहित्	तेवियैक्
काण्डिया	तिव्वळिक्	कौणरुड्	गैप्पणि 206

ईण्डु-यहीं; नी इरुन्तु अरुळ्-आप रहने की कृपा करें; एळ् ओट्टु एळ् अँत-सात और सात; पूण्ट-के बने; पेर् उलकङ्कळ्-लोकों में; वलियिल् पुक्कु-अपने बल से प्रवेश करके; इटै-वहाँ; तेण्टि-खोजकर; अ अरक्कत्तै-उस राक्षस को; तिरुकि-मरोड़कर; तेवियै-देवी सीता को; इ वळि कौणरुम्-इधर लाने का; कै पणि-मेरा हस्तकौशल (कार्यकौशल) काण्टि-देखिए । २०६

श्रीमान आप यहीं रहने की कृपा करें। चौदह की संख्या के इन बड़े लोकों में मैं अपने बल से प्रवेश करूँगा। देवी को ढूँढ़ूँगा। उस राक्षस रावण का शरीर मरोड़ दूँगा। फिर सीताजी को इधर सम्मान सहित ले आऊँगा। मेरी कार्यकुशलता देखिए आप । २०६

एवल्शैय्	तुणैवरेम्	याङ्ग	ळीङ्गिवन्
तावरुम्	बैरुवलित्	तम्बि	नम्बिनिन्
शेवह	मिदुवैत्तिर्	चिरुह	नोक्कलैन्
मूवहै	युलहुनिन्	मौळियिन्	मुन्दुमो 207

याङ्कळ्-हम; एवल् चैय्-आज्ञाकारी; तुणैवरेम्-साथी हैं; इङ्कु इवन्-यहाँ

रहनेवाले ये (लक्ष्मण); ता अरुम्-अप्रतिहत; पेरु वलि-बड़े बलवान; तम्पि-कनिष्ठ भ्राता हैं; तम्पि-नायक; निन् चैवकम्-आपकी वीरता; इतु अँतिल्-यह है तो; चिडुक नोककल्-लघुता देखना; अँन्-क्यों; मू वकँ उलकुम्-तीनों (वर्गों के) लोक; निन् मौळियिन्-आपकी आज्ञा; मुन्तुमो-लाँघकर जायेंगे क्या । २०७

आपके आज्ञाकारी सेवक और सखा हम हैं । और यहाँ पास जो हैं, वे लक्ष्मण दुद्धर्ष बड़े बलवान हैं । नायक ! आपकी शक्ति तो वैसी है । तब क्यों आप अपने को अल्प के रूप में देखें ? क्या पाताल, भूलोक, देवलोक —ये तीनों वर्गों के लोक आपकी आज्ञा को लाँघ सकेंगे ? । २०७

पेरुमैयो	रायिनुम्	पेरुमै	पेशलार्
करुममे	यल्लदु	पिरिर्वेन्	कण्डुदु
दरुमनी	यल्लदु	तनित्तु	वेरुण्डो
अरुमैये	दुत्तक्कुनिन्	इवलड्	गूरदियो 208

पेरुमैयोर् आयिनुम्-प्रशंसायोग्य हों तो भी; करुममे अल्लतु-कार्य करना छोड़कर; पेरुमै पेशलार्-अपनी प्रशंसा नहीं करते रहते; पिरितु अँन् कण्डु-फिर क्या देखा गया; तरुमम्-धर्म; नी अल्लतु-आपके सिवा; तनित्तु वेरु-अलग दूसरा; उण्टो-है क्या; उतक्कु-आपके लिए; अरुमै एतु-कठिन क्या है; निन्नु-रहकर; अवलम्-दुःख; कूरतियो-करेंगे क्या । २०८

बड़े समर्थ लोग भी करनी करते हैं । अपनी प्रशंसा कहते नहीं फिरते । यह बड़ा तथ्य है । इसको छोड़ दूसरा तथ्य कहाँ ? धर्म आप ही हैं । दूसरा कुछ नहीं है । आपके लिए दुर्गम क्या है ? फिर आप ऐसा रहकर क्यों दुःख कर रहे हैं ? । २०८

मुळरिमेल्	वैहुवान्	मुरुहर्	इन्दवत्
तळिरियल्	वाहत्तान्	इडक्कै	याळियान्
अळवियौन्	इवदे	यन्त्रि	यैयमिल्
किळवियाय्	तनित्तनिक्	किडप्प	रोनुणै 209

ऐयम् इल्-असंदिग्ध; किळवियाय्-वचन बोलनेवाले; मुळरि मेल्-कमल पर; वैकुवान्-आसीन (ब्रह्मा); मुरुकन् तन्त-‘मुरुगन’ (कार्तिकेय का तमिळ नाम) के जनक; अ तळिरियल्-उस पल्लव-समान पार्वतीदेवी के; पाकत्तान्-अर्द्धाङ्गी; तट कँ आळियान्-विशाल हस्त में चक्र रखनेवाले (चक्रधारी) विष्णु; अळवि-मिलित होकर; औन्नु आवते अन्नुरि-एक बनें तब के सिवा; तत्ति तत्ति-पृथक्-पृथक् वे; तुण्णि किटप्परो-आपकी समानता कर सकेंगे क्या । २०९

कमलासन, मुरुगन की माता पार्वती को अंग में रखनेवाले अर्धनारीश्वर और विशाल हाथ में चक्र रखनेवाले चक्रधारी विष्णु —तीनों सम्मिलित हो एक बने आवें, तो शायद वे आपकी समानता कर सकेंगे । पृथक्-पृथक् वे आपकी समानता कर सकेंगे क्या ? । २०९

अँत्तुडैच्	चिरुकुर्	मुडित्त	लीण्डोरीइप्
पिन्नुडैत्	तायिन्नु	माह	वेदुरुम्
मिन्निडैच्	चत्तहियं	मीट्टु	मीडुमाल्
पौन्नुडैच्	चिलैयित्ताय्	विरैन्दु	पोयैन्नान् 210

पौन् उटै-सौंदर्ययुक्त; चिलैयित्ताय्-धनुर्धर; अँत्तुडै-मेरी; चिरु कुर्-छोटी याचना; मुडित्तल्-पूरा करना; पिन्नुडैत्तु आयितुम्-पीछे हो तो; आक-हो; ईण्डु ओरीइ-अब उसको रहने देकर; विरैन्दु पोय्-शोध जाकर; पेतु उरुम्-पीड़ित रहनेवाली; मिन् इटै-विद्युत्कटि; चत्तकिये-जानकी को; मीट्टु-छुड़ाकर; मीळुत्तुम्-लौट आयेंगे (हम); अँन्नान्-कहा (सुग्रीव ने) । २१०

सुन्दर धनुर्धारी ! मेरी छोटी प्रार्थना वाद को देखी जाय ! उसको अब छोड़ दें । हम अभी जायेंगे । रावण के हाथों वस्त, विद्युत्कटि सीता को उससे मुक्त कराके लेकर लौट आयेंगे । २१०

अँरिहदिर्क्	कादल	तितैय	कूडुत्तुम्
अरुवियड्	गण्डिरन्	दन्वि	नोक्कित्तान्
तिरुवुर्	मारुवन्नुन्	दँळिवु	तोन्निड
ओरुवहै	युणरुवन्	दुरैप्प	दायितान् 211

अँरि कतिर्-दाहक किरणों के सूर्य के; कातलन्-प्यारे (पुत्र) के; इतैय कूडुत्तुम्-यह कहने पर; तिरु उर्-श्रीनिवास; मारुपत्तुम्-वक्ष वाले; तँळिवु तोन्निड-प्रज्ञा पाकर; ओरु वकै-उणरुव-एक तरह से सुध; वन्नु-मिलने से; अरुवि-(अश्रु की) नदी बहानेवाली; अम्-सुन्दर; कण्-आँखें; तिरुन्नु-खोलकर; अन्पिन् नोक्कित्तान्-स्नेह के साथ देखकर; उरैप्पत्तु आयितान्-कहने लगे । २११

गरम किरणमाली के पुत्र, सुग्रीव, के यह कहने पर श्रीनिलयवक्ष (महाविष्णु) के अवतार श्रीराम एक तरह से सचेत हुए । सुन्दर और अश्रुसरिता की अपनी आँखें खोलकर उन्होंने सुग्रीव से ये बातें कहीं । २११

विलङ्गैळिर्	रोळिनाय्	वितैयि	नेनुमिव्
विलङ्गुविर्	करत्तिन्नै	तिरुक्क	वैयवळ्
कलन्गळित्	तन्निळिडु	कप्पिन्	मेविय
पौलन्गुळैत्	तैरिवैयर्	पुरिन्दु	ळोर्हळ्यार् 212

विलङ्कु अँळिल्-पर्वतसुन्दर; तोळित्ताय्-कन्धों वाले; वितैयितेत्तुम्-दुर्भाग्यशाली मेरे; इ इलङ्कु विल्-इस देखने योग्य धनु के; करत्तिन्नै-रखनेवाले हाथों के; इरुक्कवे-रहते हुए भी; अवळ्-उसने; कलन् कळित्तत्तळ्-अपने आभरण त्यागे; इतु-यह कार्य; कप्पिन् मेविय-गृहस्थ धर्म में लगी हुई; पौलन् कुळै तैरिवैयर्-स्वर्णकुण्डलधारिणी-स्त्रियों में; पुरिन्दुळोर्कळ्-जो करने को मजबूर हुई हैं; यार्-वे कौन हैं । २१२

पर्वत जैसे और सुन्दर कन्धों वाले ! मैं बड़ा अभाग्य हूँ । हाथ में

यह शोभायमान धनु लिये हुये रहता हूँ ! तो भी सीता को अपने आभरण उतारने पड़े । गृहस्थी में लगी हुई स्त्रियों में और किसका यह दुर्भाग्य रहा है ? । २१२

वाण्डुङ्	गण्णिर्येत्	वरवु	नोक्कयान्
तार्ण्डुङ्	गिरियोडुन्	दरुक्क	डम्मीडुम्
पूणीडुम्	पुलम्बिये	पौळुडु	पोक्कियिन्
नार्ण्डुङ्	जिलेशुमन्	डुळल्वे	नाणिलेत् 213

वाळ् नैटुम् कण्णि-तलवार-सी आयत आँखों वाली सीता; अँत् वरवु नोक्क-मेरी राह देख रही हैं, तब; यान्-मैं; ताळ्-तलों के साथ; नैटुम् किरि ओटुम्-उन्नत पर्वतों से; तरुक्कळ् तम् ओटुम्-वृक्षों के साथ; पूण् ओटुम्-इन आभरणों के साथ; पुलम्पिये-विलाप करते हुए ही; पौळुत्तु पोक्कि-समय व्यतीत करके; इ नाण्-इस डोरेसहित; नैटुम् चिले-लम्बे धनुष को; चुमन्तु-ढोते हुए; नाण् इलेन्-निर्लज्ज होकर; उळल्वेन्-संकटग्रस्त रह रहा हूँ । २१३

तलवार के समान आँखों वाली सीता मेरी बाट जोह रही है ! पर मैं यहाँ विशाल तलोंसहित गिरियों, वृक्षों और आभरणों को देखकर विलाप करता हुआ, और इस बड़े धनुष को बेकार ढोता हुआ, निर्लज्ज (लाजहीन) दुःख सह रहा हूँ । ("नाण्"—डोरा, लाज) । २१३

आड्डन्	शैलव	ररिवै	मार्दमै
वेळ्ळोर्	वल्लिशैयिन्	विलक्कि	वैज्जमत्
तूळ्ळत्	तम्मुयि	रुहुप्प	रैन्तैये
तेरित्तळ्	पुत्तगणोय्	तीरक्क	हिर्रिलेत् 214

आड्ड-मार्ग में; उडन् चैल्पवर-साथ चलनेवाली; अरिवै मार् तमै-स्त्रियों को; वेळ्ळोर्-पराये लोग; वलि चैयिन्-त्रास देते हैं तो; विलक्कि-उनको हटाकर; वैम् चमतु-भयंकर युद्ध में; ऊळ् उड-कण्ट आने पर; तम् उयिर् उकुप्पर्-अपनी जान दे देते; अँन्तैये तेरित्तळ्-मुझे पर निर्भर जो रही, उनका; पुत्तक्क नोय्-दुःखरोग को; तीरक्ककिर्रिलेन्-नहीं दूर कर सक रहा हूँ । २१४

मार्ग में अपने साथ आनेवाली स्त्री पर कोई अत्याचार करे, तो भी लोग उस अत्याचारी को रोकते हैं । कठोर युद्ध में अपने प्राण भी दे देते हैं । पर मुझे देखो । मेरे ही ऊपर सब तरह से निर्भर है सीता । उसका दुःख दूर करने में भी मैं असमर्थ हूँ । २१४

इन्दिरिर्	कुरियदो	रिडुक्कण्	डोर्त्तिहल्
अन्दहर्	करियपो	रवुणर्	रैयत्तन्नन्
अँन्देमर्	इवत्तिन्वन्	दुदित्त	यानुळेन्
वैन्दुयर्क्	कौडम्बळि	विल्लिर्	शङ्गिनेन् 215

अन्तै-मेरे पिता ने; इन्तिरिक्कु उरियतु-इन्द्र का; ओर् इट्टक्कण्-एक संकट; तीर्त्तु-दूर करके; अन्तकक्कु अरिय-यम के लिए भी असाध्य; इक्ल् पोर् अवुणन्-विरोधी, युद्ध में चतुर दानव (शम्बर) को; तेय्त्ततन्-मिटाया; मङ्गु-इसके विपरीत; अवत्तिल् वन्तु-उनके पुत्र के रूप में आकर; उत्तित्त-पैदा जो हुआ; यात्-वह मैं; वैम् तुयर्-कठोर दुःखदायी; कौटुम् पळि-घोर अपमान; इ विल्लिल्-इस धनुष पर; ताङ्क्त्तेन्-उठा रहा हूँ । २१५

मेरे पिता ने इन्द्र का संकट दूर किया । यम के लिए भी दुद्धर्ष वैरी और युद्ध-चतुर शंबरासुर को कठोर युद्ध में मारा । किन्तु मैं हूँ उनका ही पुत्र ! इस धनुष पर कठोर दुःखदायी क्रूर निन्दा ढो रहा हूँ । २१५

करुङ्गड	तौट्टनर्	गङ्ग	तन्द्नर्
पोरुम्बुलि	मान्नीडु	पुत्तु	मूट्टितर्
पैरुन्दहै	यैत्तगुलत्	तरशर्	पित्तोर्
तिरुन्दिळै	तुयरनात्	तीर्क्क	हिर्त्तिलेन् 216

करुम् कटल्-काले समुद्र के; तौट्टनर्-खननकारी; कङ्कै तन्तनर्-गंगा को भूमि पर जो लाये, वे; पोरुम् पुलि-झगड़ालू व्याध को; मान् ओट्टु-हरिण के साथ; पुत्तुम् ऊट्टितर्-(एक ही घाट पर) पानी पिलानेवाले; पैरुम् तकै-बड़े ही श्रेष्ठ; अन्तु कुलत्तु अरचर्-मेरे कुल के राजा; पित्तु-उनके बाद; नात्-मैं; ओर्-एक; तिरुन्तु इळै-श्रेष्ठ आभरणभूषित स्त्री का; तुयरम्-दुःख; तीर्क्ककिर्त्तिलेन्-दूर कर नहीं सक रहा हूँ । २१६

हमारे पूर्वजों में सागर-खननकारी (सगरपुत्र) रहे । गंगा नदी को भूमि पर लानेवाले (भगीरथ) रहे । शत्रु व्याध को हरिण के साथ एक ही घाट में जल पिलानेवाले (मान्धाता) थे । ऐसे प्रख्यात राजा थे मेरे पूर्वज । उनके ही कुल में उत्पन्न मैं एक (अपनी ही) स्त्री का दुःख दूर नहीं कर सक रहा हूँ । २१६

विरुम्बळि	लैन्दैयार्	सैय्म्सै	वीयुमेल्
वरुम्बळि	यैत्तरियात्	महुडम्	जूडलेन्
करुम्बळि	शौल्लियैप्	पहैजन्	कैक्कोळप्
पैरुम्बळि	शूडिन्नेन्	पिळैत्त	दैन्नरो 217

विरुम्पु-मनोरम; अँळिल्-शानदार; अँन्तैयार्-मेरे पिता का; सैय्म्सै वीयुम् एल्-(वचन) सत्य श्रंग हो जायगा तो; पळि वरुम्-निन्दा होगी; अँन्तु-सोचकर; यात्-मैंने; मकुटम् चूटलेन्-मुकुट धारण नहीं किया; करुम्पु अळि-ईख को हरानेवाली; चौल्लियै-बोली वाली को; पकैजन्-शत्रु; कै कोळ-ले गया; पैरुम् पळि-बड़ा अपमान; चूटितेन्-धारण कर लिया; पिळैत्ततु अँन्-क्या ही गल्ती की है । २१७

मेरे पिताजी सबके मनों का हरण करनेवाले रूप के स्वामी थे । उनका वचन भंग हो जायगा तो बड़ा अपयश होगा । इस डर से शायद मैंने मुकुट धारण नहीं किया । किन्तु इक्षुरस के स्वाद को भी फीका बनानेवाली मधुर बोली वाली सीता को रावण के हाथ कैद होने देकर मैंने बड़ी निन्दा ग्रहण कर ली । कैसी ही भयंकर गलती हो गयी है मेरे हाथों ? । २१७

अन्तर्नोन्	दिन्तन्	पन्ति	येङ्गिये
तुन्तरुन्	दुयरत्तुच्	चोरहित्	रान्द्रन्
पन्तरुड्	गदिरवन्	पुदल्वन्	पैयुळ्पार्त्
तन्तर्वेन्	दुयर्त्तु	मळक्कर्	नीक्किन्नान् 218

अन्त-ऐसा; नोन्तु-दुःखी होकर; इन्तन् पन्ति-ऐसी बातें कहते हुए; एङ्किये-तरसते हुए; तुन्त अरुम्-असह्य; दुयरत्तु-शोक से; चोरकिन्त्रान् तन्तै-लटनेवाले की; पन्त अरुम्-अकथनीय; पैयुळ्-पीड़ा को; कतिरवन् पुतल्वन्-सूर्यसुत ने; पार्त्तु-देखकर; अन्त-उस; वेम् तुयर् अन्तुम्-कठोर दुःख रूपी; अळक्कर्-समुद्र के; नीक्किन्नान्-पार कराया । २१८

श्रीराम ने दुःख के साथ ऐसी-ऐसी बातें कहीं । उनका मन आक्रान्त हो गया । असह्य दुःख के कारण वे निर्बल हो रहे । ऐसे उनके दुःख को सूर्यपुत्र ने देखा । उसने अपनी परिचर्या से धीरज दिलाकर उनको उस कठोर दुःख के सागर को पार कराया । २१८

ऐयनी	याङ्गलि	नारि	नेत्तला
दुय्वने	यैत्तक्किदि	नुरुदि	वेरुण्डो
वैयहत्	तिप्पळि	तीर	माय्वदु
शैय्वैत्तिन्	कुरैमुडित्	तन्त्रिच्	चैय्वहेल् 219

ऐय-प्यारे; नी-तुमने; याङ्गलिन्-शान्त कराया; नारित्तेन् अलातु-शान्त हुआ, नहीं तो; उय्वत्ते-जी सकता था क्या; अैत्तक्कु-मेरे लिए; इत्तिन्-इस (तुम्हारी मित्रता) से बढ़कर; उरुत्ति-हितकारी; वेरु-दूसरा; उण्टो-है क्या; वैयक्त्तु-संसार में; इ पळि तीर-इस अपमान को पोंछने के लिए; माय्वतु चैय्वैन्-मर जाऊंगा; निन् कुरै-तुम्हारी शिकायत; मुडित्तु अन्त्रि-दूर किये बगैर; चैय्वहेल्-वैसा नहीं करूँगा । २१९

श्रीराम किसी विध सम्हले । उन्होंने सुग्रीव से कहा कि तुम्हारे ही कहने से मैं सम्हल रहा हूँ । नहीं तो मैं कहाँ जीवित रह पाता ? तुम्हारी मित्रता से बढ़कर कोई हित भी है ? यह अपयश कठोर है । उससे बचने के लिए मैं मर जाऊँगा । पर तुम्हारी माँग पूरी किये बिना मैं ऐसा नहीं करूँगा । २१९

अन्नउन्	निराहव	निनेय	कालैयिल्
वन्नडिउन्	मारुदि	वणङ्गि	नोक्कितान्
कुन्नडिवर्	तोळिन्नाय्	कूडल्	वेण्डुव
दीन्ऱुळ	ददन्नेनी	युवन्डु	केळैता 220

अन्नउत्तन्-फहा; इराकवन्-श्रीराघव ने; इत्तैय कालैयिल्-उस समय; वल् तिरुल्-अधिक बलशाली; मारुति-मारुति ने; वणङ्गि नोक्कितान्-नमस्कार करके देखा; कुन्ऱु इवर्-पर्वत-सम; तोळिन्नाय्-कन्धों वाले; कूडल् वेण्डुवतु-निवेदन-योग्य; ओन्ऱु उळुतु-एक बात है; अतर्त-उसको; नी-आप; उवन्तु-मन बेकर; केळ्-सुनिए; अत्ता-फहकर । २२०

श्रीराम ने सुग्रीव को यों वादा दिलाया । तब बहुत बली मारुति ने श्रीराम को नमस्कार करके उनसे निवेदन किया कि पर्वतभुज ! एक बात का निवेदन है । कृपा करके सुनें । यह सुनाकर आगे— । २२०

कौडुन्दिउल्	वालियंक्	कौन्ऱु	कोमहन्
कडङ्गदि	रौन्मह	नाक्किक्	कंवळर्
नेडुम्बडे	कूट्टिन्ना	लन्ऱि	नेडरि
दडुम्बडे	यरक्कन	दिरुक्कै	याणैयाल् 221

कौटुम्-निर्मम; तिरुल्-बलिष्ठ; वालियं-वाली को; कौन्ऱु-मारकर; कटुम्-अधिक गरम; कतिरोन्-किरणों वाले सूर्य के; मकन्-पुत्र को; कोमकन् आक्कि-राजा बनाकर; आणैयाल् (सुग्रीव की) आज्ञा द्वारा; कं वळर्-युद्धाभ्यस्त; नेडुम् पट्टे-बड़ी सेना को; कूट्टिन्नाल् अन्ऱि-एकत्रित किये बिना; अटुम् पट्टे-घातक सेना वाले; अरक्कततु-राक्षस का; इरुक्कै-वासस्थान; नेट्टु अरितु-ढूँढ़ना कठिन (काम) है । २२१

पहले क्रूर पराक्रमी वाली को मारना है । फिर गरम किरणमाली सूर्यदेव के पुत्र को राजा बनाना और समर के सब प्रकारों में समर्थ सेना को एकत्र करना चाहिए । तभी, घातक सेना के स्वामी रावण का वासस्थान ढूँढ़कर उसका पता लगाया जा सकता है । नहीं तो वह दुस्साध्य है । २२१

वानदो	मण्णदो	मड्डुम्	वैडुपदो
एन्नेमा	नाहर्त	मिरुक्कैप्	पालदो
तेनुळर्	तैरियलाय्	तैळिव	दन्ऱुन्नाम्
ऊनुडे	मानुड	माव	दुण्मैयाल् 222

तेन् उळर्-भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; तैरियलाय्-ऐसी माला से भूषित; वानतो-आकाश में का है; मण्णतो-भूतल का; मड्डुम्-अन्य; वैडुपतो-पर्वतप्रदेश का; एन्ने-अन्य; मा-विशाल; नाक्क तम् इरुक्कै-नागों के वास के; पालतो-स्थान में है; नाम्-हम; ऊनुटे-मांस के; मानुटम् आवतु उण्मे-मानव-शरीर के हैं; आल्-इसलिए; तैळिवतु अन्ऱु-निश्चित रूप से जानने योग्य नहीं । २२२

ऐसी माला से शोभायमान प्रभु, जिस पर भ्रमर कुरेदते रहते हैं ! उन राक्षसों का वासस्थान आकाश में है, या इस भूतल में ? या कहीं अन्य पर्वतस्थलों में ? या अन्य नाग आदि लोगों के वास के लोक में है ? हम सब मानवशरीरी हैं । (वानर और नर दोनों का शरीर एक-सा माना गया है, देवों के दिव्य शरीरों और राक्षसों के राक्षस-शरीरों से भिन्न ।) इस कारण हम निश्चित रूप से जानते नहीं । २२२

अव्वुल	हत्तिनु	मिमैप्पि	नैय्दुवर्
वव्वुव	रव्वळि	महिळ्न्त	याव्वुम्
वैव्विनै	वन्देन	वरुवर्	मीळ्वराल्
अव्वव	रुइविड	मडियड्	पालदो 223

इमैप्पिन्-पलक मारते समय के अन्दर; अँ उलकत्तिनुम्-किसी भी लोक में; अँय्तुवर्-जायेंगे; अ वळि-वहाँ; मकिळ्न्त याव्वुम्-जिनको पसन्द करते हैं, उन सबको; वव्वुवर्-हथिया लेंगे; वैव्विनै-कठोर पूर्व-कर्म; वन्ततु अँत-आ गया हो, ऐसा; वरुवर्-आ जायेंगे; मीळ्वर्-लौट जायेंगे; अ अवर् उइविटम्-ऐसे उनका वासस्थान; अडियल् पालतो-जानने योग्य है क्या । २२३

वे पलक मारते समय के अन्दर कहीं भी, किसी भी लोक में जा पहुँचने वाले होते हैं । वे वहाँ जो भी उनको भावे उन वस्तुओं का अपहरण कर लेंगे । बुरे पूर्वकर्म जैसे अचूक रीति से और अकस्मात् आते हैं, वैसे वे भी आ जाते हैं । वैसे ही वापस भी चले जाते हैं । ऐसे उनके वासस्थान का पता लगाया जा सकता है क्या ? । २२३

औरुमुइ	येपरन्	डुलहम्	याव्वुम्
तिरुमह	ळुइविडन्	देर	वेण्डुमाल्
वरन्मुइ	नाडिडिल्	वरम्बिन्	डालुल
हरुमैयुण्	डळप्परु	माण्डुम्	वेण्डुमाल् 224

वरन्मुइ-क्रमेण स्थान-स्थान में; नाडिडिल्-खोजना हो; उलकु-संसार; वरम्पु इन्ड-असीम है; आल्-इसलिए; अरुमै उण्डु-कठिनाई है; अळप्पु अरुम् आण्डुम्-असंख्यक वर्षों का समय भी; वेण्डुम् आल्-(खोजने के लिए) चाहिए; आल्-इसलिए; और मुइये-एक ही समय; उलकम् याव्वुम्-सारे लोक में; परन्तु-फैलकर; तिरुमकळ्-श्रीलक्ष्मीदेवी का; उइविटम्-वासस्थान; तेर वेण्डुम्-ढूँढ़ लेना चाहिए । २२४

श्रीलक्ष्मी (सीता) जी को एक-एक स्थान पर क्रम से ढूँढ़ने लगे, तो लोक की सीमा कहाँ है ? वह तो असीम है ! उसमें बहुत अधिक कठिनाई है । उस रीति से अधिक काल तक ढूँढ़ना पड़ेगा । इसलिए श्रीदेवी को एक साथ दुनिया भर में व्यापकर ढूँढ़ना चाहिए । २२४

एळुपत्	ताहिय	वैळळत्	तैण्वडे
ऊळियिड्	कडलैन	वुलहम्	वोर्क्कुमाल्
आळियैक्	कुडिप्पित्तु	मयन्शै	यण्डतत्तैक्
कीळ्मडुत्	तैडुप्पित्तुड्	गिडैतत्तल्	शैय्युमाल् 225

एळु पत्तु आकिय-सत्तर; वैळळत्तु अण्-'वैळळम्' की संख्या की; पटै-(वानरों की) सेना; ऊळियिल् कटल् अन्न-प्रलयसागर के समान; उलकम्-सारे संसार पर; वोर्क्कुम्-छा जायगी; आल्-इसलिए; आळियै-समुद्र (जल) को; कुटिप्पित्तुम्-पीना हो; अयन् चैय् अण्डत्तै-ब्रह्मा-सृष्ट अण्ड को; कीळ् मडुत्तु-नीचे से उखाड़कर; तैडुप्पित्तुम्-उठा लेना हो; गिडैतत्तल्-जो भी सामने आये; चैय्युम्-वे कार्य कर दोगे । २२५

सत्तर 'वैळळम्' की संख्या की सेनाएँ आयँगी, तो वह प्रलयसमुद्र के समान सारे लोक पर छा जायँगी । समुद्र को पीना (सोखना) हो । चाहे ब्रह्माण्ड को जड़ से उखाड़ उठाना हो, जो भी काम आ जाय वह करने में समर्थ हैं । २२५

आदला	लन्तदे	यमैव	दामैन
नीदियाय्	नितैन्दनै	नैन्ननि	हळत्तिनात्
साडुवा	मैन्डवत्	तनुवित्तु	शैल्वन्तुम्
बोदुनाम्	वालिपा	लैन्तप्	पोयित्तार् 226

नीतियाय्-राजनीतिनिपुण; आतलाल्-इसलिए; अन्तते-वही (कार्य); अमैवतु आम्-करना (उचित) है; अैन-ऐसा; नितैन्तनैन्-सोचा मैंने; अैत् निकळत्तित्तान्-ऐसा कहा; चातु आम् अैन्ड-साधु कहनेवाले; अ-उन; तनुवित्तु चैल्वन्तुम्-धनुर्धर ने भी; वालि पाल्-वाली के पास; पोतुम् नाम्-जाएँ हम; अैन्त-कहा, तब; पोयित्तार् (सब) चले । २२६

राजनीति के अच्छे ज्ञाता ! वही काम (वानर-सेना इकट्ठी करके भेजना) उचित है । यही मेरा विचार है । हनुमान ने यह निवेदन किया । वही साधु है —धनुधन श्रीराम ने सहमति दिलायी । फिर कहा कि हम वाली के पास जायँ । तब सब चले । २२६

7. वालि वदैप् पडलम् (वालि-वध पटल)

वैङ्ग	णाळि	येरु	मोळि	मावुम्	वेह	नाहमुम्
शिङ्ग	वेरि	रण्डी	डुन्दि	रण्ड	वन्त	शैय्यैयार्
तङ्गु	शाल	मूल	मार्त	माल	मेल	मालैपोल्
पौङ्गु	नाह	मुन्डु	वन्ड	शार	लूडु	पोयित्तार् 227

वैम् कण्-भयानक आँखों वाले; आळि एरुम्-पुरुषशरम्; मोळि मावुम्-और साहसपूर्ण बाघ और; वेकम् नाकमुम्-गतिमान गज; चिङ्क एरु-पुरुषसिंह;

इरण्डौटुम्-दो के साथ; तिरण्ट अन्त-एकत्र हुए जैसे; चैय्कैयार्-कर्मण्य; तङ्कु-वहाँ रहनेवाले; चालम्-सालवृक्ष; मूलम्-'मूलम्' नाम के तरु; आर्-अगस्त; तमालम्-तमाल; एलम्-एला नाम के (जटाधारी) तरु; माले पोल्-हारों की तरह; पौङ्कु-पुष्पबहुल; नाकमुम्-पुनाग; तुवन्त्र-इनसे खूब भरे; चारल् ऊटु-पर्वत-प्रदेशों से होकर; पोयितार्-चले । २२७

जैसे भयंकर आँख वाला (नर) "याळि", साहसपूर्ण बाघ और तीव्रगामी गज दो पुरुषसिंहों के साथ एकत्र हो जाते हों, वैसे सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, तार और श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ के पर्वतप्रदेशों से होकर चले जहाँ साल, अगस्त, एला और हारों के समान पुष्पगुच्छों के साथ शोभायमान पुनाग आदि तरुविशेष घने रूप से उगे थे । २२७

उळैयु	लाने	डुङ्गण	माद	रुश	लूश	लल्लवेल्
तळैयु	लावु	शन्द	लरन्द	शारल्	शार	लल्लवेल्
मळैयु	लावु	मुन्त्रि	लल्ल	मन्त्र	तारु	शण्वहक्
कुळैयु	लावु	शोलै	शोलै	यल्ल	पौन्शैय्	कुन्त्रमे 228

उळै-हरिणी के समान; उलाम्-चकित देखनेवाली; नैटु कण्-आयत आँखों से भूषित; मातर्-स्त्रियों के; ऊचल्-झूले; ऊचल् अल्ल एल्-झूले नहीं तो; तळै उलावु-पत्ते जिन पर हिलते हैं, उन; चन्तु-चन्दन के पेड़ों से भरे; चारल्-पर्वतप्रदेश; चारल् अल्ल एल्-ऐसे प्रदेश नहीं तो; मळै उलावु-मेघविहार; मुन्त्रिल्-(पर्वतों के) आँगन; अल्ल-(वे) नहीं तो; मन्त्रल् नारु-सुवासित; कुळै उलावु-पत्ते जिन पर झूलते हैं, उन; चण्पकम् चोलै-चम्पक वन; चोलै अल्ल-(चम्पक) वन नहीं तो; पौन् चैय्-स्वर्णदृश्य; कुन्त्रमे-गिरियाँ । २२८

उस पर्वत-मार्ग में कोई न कोई मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था । हरिणों की-सी और आयत आँखों वाली स्त्रियों के झूले; वे जहाँ नहीं थे, वहाँ चन्दन तरुओं के प्रदेश जिनके पत्ते हिल रहे थे । नहीं तो मेघविहार पर्वतांगन या चंपकवन और उसके तरुओं पर सुवासित पल्लव हिल रहे थे । चंपकवन जहाँ नहीं पाये गये, वहाँ स्वर्णसम गिरियाँ विद्यमान थीं—इस तरह मार्ग के सभी भाग मनोरम थे । २२८

अरङ्ग	णारु	मेनि	यार	रिक्क	णङ्ग	ळोडुमङ्
गिरङ्गु	पोडु	मेरु	पोडु	मोत्रि	लाद	वोशैयाल्
करङ्गु	वारुह	ळरक	लन्क	लिप्प	मुन्नु	कण्मुहिळ्त्
तुरङ्गु	मेह	मुम्मु	णरन्दु	मोडु		लावुमे 229

अरङ्कळ्, नारु मेतियार्-धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण; अरि कणङ्कळोटुम्-वानरगण के साथ; अङ्कु-वहाँ; इरङ्कु पोतुम्-उतरते समय; एङ् पोतुम्-चढ़ते वक्त; ईङ् इलात-सदा; ओचैयाल्-शब्द के साथ; करङ्कु वारु कळल्-ववणनशील बड़ी पायल रूपी; कलन्-आभरण; कलिप्प-ध्वनि निकाल रहे थे; मुन्नु-पहले;

कण् मुकिळ्त्तु-आंखें मूंदकर; उरङ्कु-जो सो रहे थे; मेकमुम्-वे मेघ भी; उणर्न्तु-जागकर; मीतु उलावुम्-आकाश में संचार करने लगे । २२६

धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण वानरगण के साथ उस मार्ग में कभी नीचे उतरते, कभी चढ़ाई पर चढ़ते जा रहे थे । तब उनकी ववणनशील पायलें निरन्तर बज रही थीं । उस ध्वनि से सुप्त मेघ भी जाग गये और आकाश में संचार करने लग गये । २२९

नीडु	नाह	मूडु	मेह	मोड	नीरु	मोडवे
आडु	नाह	मोड	मान	यान्नै	योड	वाळिपोम्
माडु	नाह	नीडु	शारल्	वाळै	योडुम्	वावियू
डोडु	नाह	मोड	वेङ्ग	योडुम्	यूह	मोडवे 230

नीटु नाकम् ऊटु-लम्बे पर्वतों से होकर; मेकम् ओट-मेघ भागते; नीरुम् ओट-जल बहता; आटुम् नाकम्-फन फैलाकर नाचनेवाले सर्प; ओट-भागते; मात्तम् यान्नै ओट-बड़े गज दौड़ते; आळि पोम्-शरभसंचार के; माटु-पास में; माकनीटु-स्वर्ग रहे, ऐसे विशाल; चारल्-प्रदेशों में; वावि ऊटु-सरो के अन्दर; वाळैयोडुम्-‘वाळै’ मीनों के साथ; ओटु नाकम्-भागनेवाले सर्प; ओट-भागते; वेङ्कयोडु-बाघों के साथ; अकम्-काले (मुख वाले) वन्दर; ओट-भागते । २३०

वहाँ सर्वत्र स्पन्दन था । लम्बे पर्वतों पर से मेघों का संचार; जल का बहाव; फन फैलाए हुए नाचनेवाले सर्पों की गति; बड़े गजों का भागना; ‘याळियों’ का इधर-उधर जाना; स्वर्ग तक विस्तृत पर्वतप्रदेश के जलाशयों में ‘वाळै’ मछलियों और सर्पों का संचार या बाघों के साथ काले मुख वाले वन्दरों का जाना-आना—इस तरह वह मार्ग सर्वत्र गतिमय था । २३०

मरुण्ड	माम	लैत्त	डङ्गळ्	शैल्ल	लाव	दल्लमाल्
तेरुण्डि	लाद	मत्त	यान्नै	शीरि	निन्न्रि	डित्तलाल्
इरुण्ड	काळ	हिर्ऱु	डत्ती	डिर्ऱु	लरन्द	शन्दुवन्
दुरुण्ड	पोद	ळिन्द	तेनी	ळुक्कु	पेरि	ळुक्किने 231

माल्-मोह से; तेरुण्डु इलात-जो छूटे नहीं थे; मत्त-मत्त; यान्नै-गज; चीरि निन्न्रि-कोप के साथ; इटित्तलाल्-झपटते, इसलिए और; इरुण्ड-काले; काळ-कठोर गुदे के; अकिल् तटत्तु ओटु-अगरु-काष्ठों के साथ; इर्ऱु-टूटकर; उलरन्त-सूखे हुए; चन्तु-चन्दन के पेड़; वन्तु-आकर; उरुण्ड पोतु-जब लुढ़कते हैं, तब; अळिन्तु-छत्तों के टूटने से निकली; तेन् ओळ्ळुक्कु-शहव की धारा से उत्पन्न; पेर् ओळ्ळुक्किन्-बड़ी फिसलन थी, इसलिए; मरुण्ड-ध्रामक; मा मलै तटङ्कळ्-बड़े पर्वत-प्रदेश; चैल्लल् आवतु अल्ल-यात्रा के लिए सुगम नहीं थे । २३१

वहाँ के मार्ग में जाना खतरे से खाली नहीं था । कारण ? मद में चूर मत्त हाथी कोप के साथ मार्ग में झपटने को तैयार खड़े थे । कठिन

हीर (गूदा) के काले अगरुकाष्ठ और चन्दन के तरु जब कटकर लुढ़कते तब शहद के छत्ते टूट जाते थे और शहद बड़ी धारा में बहने लगता । उससे फिसलन हो जाती थी । इसलिए पर्वततराइयों के वे मार्ग किसी को भी भ्रमित कर सकते थे । उनमें जाना सुलभ नहीं था । २३१

मित्तन्म णिक्कु लन्दु वत्तु विल्ल लरन्दु विण्गुलाय्
अत्तल्प रप्प लीप्प मीदि मैप्प वन्द विप्पपोल्
पुत्तल्प रप्प लीप्पि रुन्द पौत्तप्प रप्पु मत्तबराल्
इत्तैय वित्तु डक्कै वीर रेह हित्तु कुत्तुमे 232

इत्तैय-ऐसे; विल् तट कै-धनु रखनेवाले विशाल हस्तों के; वीर-वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); एरुकिन्नु-जिस पर चढ़ते हैं वह; कुत्तुम्-पर्वत; मित्तल्-रह-रहकर चमकनेवाले; मणि कुलम्-रत्न-समूह; तुवत्तु-भरा था और; विल् अलरन्तु-कान्ति बिखेरकर; विण् कुलाय्-आकाश तक; अत्तल् परप्पल् औप्प-आग फैलाते जैसे; मीतु-उस पर्वत पर; इमैप्प-प्रकाश छिटकाते है तब; वन्तु अविप्प पोल्-(उस आग को) आकर बुझाते जैसे; पुत्तल् परप्पल्-जल डाल रहे हों; औप्पु इरन्तु-जैसे रहनेवाले; पौत्त परप्पुम्-स्वर्णराशि भी; (इरन्तु-रही); मत्तुप्-कहते हैं । २३२

ऐसे वीर जिस पर्वत पर चढ़ते जाते थे, उसमें रत्नों की विपुल राशियाँ थीं । उनसे जो लाल रंग की कान्ति छूट रही थी, उसको देखकर ऐसा लगा मानो आकाश में बहुत दूर आग फैल गयी हो । वहाँ स्वर्णों के स्थल भी थे और वे, उस आग को बुझाने के लिए जल पसार दिया गया हो, ऐसे लगे । २३२

तेत्ति लुक्कु शारल् वारि शैल्ल मीदु शैल्लुनाळ्
मीत्ति लुक्कु मन्नि वान्न विल्लि लुक्कुम् वण्मदिक्
कूत्ति लुक्कु माह् लावु कोळि लुक्कु मत्तबराल्
वात्ति लुक्कु मेल वाश मन्नु नाह् कुत्तुमे 233

वान्-देवों को भी; इल्लुकुम्-खींचनेवाले; एलम् वाचम् मत्तुल्-एलावास से बासित; कुत्तुम्-उस पर्वत पर; तेन् इल्लुकु चारल्-शहद की धारा से युक्त पर्वतढालों में; वारि चैल्ल-जल बहता है, तब; मीतु चैल्लुम्-ऊपर संचार करनेवाले; नाळ मीत्-नक्षत्रों को; इल्लुकुम्-खींचकर ले जाता है; अत्ति-अलावा; वान्न विल्-इन्द्रधनुष को भी; इल्लुकुम्-खींचता है; वण् मति कून्-श्वेत चन्द्र के वक्र अंश को; इल्लुकुम्-खींचता; माह्-परस्पर विपरीत; लावु-संचार करनेवाले; कोळ इल्लुकुम्-(नव-) ग्रहों को खींचता; मत्तुप्-(ऐसा लोग) कहते हैं । २३३

उसमें एले के वृक्ष थे । उनकी सुगन्धि देवों को भी आकृष्ट कर रही थी । उस पर्वत पर, जिस पर शहद की धारा बह रही थी, जल भी

बह रहा था । वह जलधारा आकाश के नक्षत्र, इन्द्रधनुष, चन्द्र का वक्र
अंश और परस्पर विपरीत चलनेवाले नवग्रह — इन सबको खींच लेती । २३३

मरुवि	याडुम्	वावि	तोरुम्	वान	यारु	पायुम्बन्
दिरुवि	यार्द	डङ्गण	मीत्ति	नेरु	पायु	मारुपोल्
अरुवि	पायु	मौत्ति	नौत्ति	नानै	पायु	मेनलिल्
कुरुवि	पायु	मोडि	मन्दि	कोडु	पायु	मार्डेलाम् 234

मारु अलाम्-पाश्वर्षों में सब ओर; मरुवि-उतरकर; आटुम्-जिनमें लोग स्नान करते हैं, उन; वावि तोरुम्-तालावों में, हर एक में; वान यारु-आकाशगंगा; वन्तु पायुम्-आकर बहती; मीत्तिन् एरु-बड़ी-बड़ी मछलियाँ; इरुवि आर्-बाल-कटे कोदों के पौधों से भरे; तटङ्कळ्-खेतों में; पायुम्-झपटते; आरु पोल्-नदियों की ही तरह; अरुवि पायुम्-नाले बहते हैं; औत्तिन् औत्तिन्-एक-एक (नाले) में; आत्तै पायुम्-हाथी झपटते हैं; एत्तलिल्-कोदों के खेतों पर; कुरुवि पायुम्-चिड़ियाँ झपटती हैं; मन्ति-वानर; ओटि-मागकर; कोटु पायुम्-तरुशाखाओं (या पर्वतशृंगों) पर झपटते हैं । २३४

वहाँ पर्वत के तलों में जो जलाशय थे उनमें आकाशगंगा बही । उन जलाशयों के मोटे-मोटे मीन उन खेतों के कोदों के पौधों पर झपटे, जिनकी बालें कट गयी थी । वहाँ के बरसाती नाले भी नदियों के समान (विशाल) बह रहे थे । उनमें हाथी झपटते रहते थे । कोदों के खेतों पर चिड़ियाँ झपटतीं । बन्दर तरुशाखाओं पर भागते और झपटते थे । २३४

अन्त	दाय	कुन्डि	नारु	शैन्डु	वीर	रैन्दोडैन्
दैन्त	लाय	योश	नैक्कु	मुम्ब	रेडि	इम्बरिल्
पौत्ति	नाडि	ळिन्द	दन्त	वालि	वाळ्पो	रुप्पिडम्
तुन्ति	नारुहळ्	याडु	शैयडु	मैन्डु	शौडु	पोदिन्ने 235

अन्ततु आय-वैसे रहनेवाले; कुन्डिन् आरु-पर्वत-मार्ग से; चैन्डु-जो गये वे; वीरर्-श्रीराम आदि वीर; एन्तु ओटु एन्तु-पाँच के साथ पाँच; अन्तत् आय-(दस) कहलानेवाले; योचत्तैक्कुम्-योजन से भी; उम्पर् एडि-ऊपर चढ़कर; इम्परिल्-इस लोक में; पौत्तिन् नाटु-(अमरावती) स्वर्णपुरी; इळिन्तु अन्त-उतरकर आया हो जैसे; वालि वाळ्-वाली के वास के; पौरुप्पु, इटम्-पर्वतस्थान को; तुन्तितारुक्ळ-गये; यातु चैयुत्तुम्-क्या करेगे; अैन्डु-ऐसा; चौडु पोत्तिन्-पूछने पर । २३५

ऐसे पर्वत-मार्ग पर श्रीराम आदि वीर दस योजन दूर ऊपर चले । वाली जहाँ वास करता था, उस पर्वत-नगर किष्किन्धा के पास पहुँचे । वह स्थान स्वर्णपुरी अमरावती-सा लगा जो आकाश से उतरकर वहाँ रह गयी हो । वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाय ? । २३५

अव्वि डत्ति राम तीय छैत्तु वालि यान्तेर्
 वैव्वि डत्तिन् वन्दु पोर्वि छैक्कु मेल्वै वेरुनिन्
 रेव्वि डत्तु णिन्द मैन्द दैन्ग रुत्ति दैन्ऱत्तन्
 तैव्व डक्कुम् वैन्ऱि यान् नन्ऱि दैन्ऱु शिन्दिआ 236

अ इटत्तु-तब; इरामन्-श्रीराम ने; अछैत्तु-(सुग्रीव को पास) बुलाकर; नी-तुम; वालि आन्-वाली नाम के; पेर् वैम् विटत्तिन्-बड़े भयंकर विष के साथ; वन्दु-आकर; पोर् विळैक्कुम्-जब युद्ध करो; एल्वै-तब; वेरु निन्ऱु-अलग खड़ा रहकर; अव्विट-बाण चलाने को; तुणिन्तु-ठाना है; अमैन्ततु इतु-निश्चय यह; अैन् करुत्तु-मेरी राय है; अैन्ऱत्तन्-कहा; तैव्व अटक्कुम्-शत्रु-संहार कर; वैन्ऱियान्ऱुम्-विजय चाहनेवाला (सुग्रीव) भी; इतु नन्ऱु-यही अच्छा है; अैन्ऱु-ऐसा; चिन्तिया-सोचकर। २३६

तब श्रीराम ने सुग्रीव को अपने पास बुलाया और कहा कि तुम बड़े और भयंकर विष, वाली, को ललकारो। जब तुम उसके विरुद्ध युद्ध करो तब मैं अलग रहकर उसके ऊपर बाण चलाऊँ, यही मेरी राय है। शत्रु वाली के नाश में तुला हुआ, विजय का चाहक सुग्रीव ने उत्तर में कहा कि हाँ ! वही अच्छा है। २३६

वार्त्तै यन्त दाह वानि यङ्गु तेरि तान्महन्
 नीर्त्त रङ्ग वैलै यञ्ज नील मेह नाणवे
 वेर्त्तु मण्णु छोरिन् विण्णु छोरि रिन्दु विम्ममेल
 आर्त्त वोश यीश तुण्ड वण्ड मुर्ऱु मुण्डवे 237

वार्त्तै अन्ततु-श्रीराम का वचन वैसा; आक-रहा तो; वान् इयङ्कु-आकाशचारी; तेरितान् मकन्-रथ के स्वामी सूर्य का पुत्र; तरङ्क नीर् वैलै-तरंगाकुल समुद्र को; अञ्च-भयभीत करते हुए; नील मेकम् नाण-नीले मेघों को लजाने देते हुए; मण् उळोरिन्-सूतलवासियों के समान; विण् उळोर्-स्वर्गवासी भी; वेर्त्तु-पसीना-पसीना होकर; इरिन्तु-अस्त-व्यस्त होकर; विम्म-दुःख से भर जायँ, ऐसा; मेल आर्त्त ओचै-तिस पर निकाला शोर; ईचन् उण्ट-महाविष्णु से खादित; अण्टम् मुर्ऱुम्-अण्ड भर को; उण्टतु-(लील गया) खा गया। २३७

श्रीराम ने ऐसा कहा तो सुग्रीव ने धीरे गर्जन-नाद निकाला। आकाशचारी रथ के स्वामी सूर्य के पुत्र के उस नाद के सामने तरंगायमान समुद्र डर गया। नीले मेघ लजा गये। भूमि के वासी जैसे सुरलोकवासी भी पसीना-पसीना होकर अस्त-व्यस्त हो गये और घबड़ाहट से भर गये। उसका नाद सारे ब्रह्माण्ड को लील गया, जिसको भगवान महाविष्णु ने प्रलय के अवसर पर अपने उदर में समा लिया था। २३७

इडित्तु रप्पि वन्दु पोर् दिर्त्ति येल डरप्पत्तै
 उडित्त लङ्गळ कौट्टि वाय्म डित्त डत्त लङ्गुतोळ

पुडैत्तु निन्ऱु छैत्त पूशल् पुक्क दैन्व मिक्किटम्
तुडिप्प वड्गु इड्गु वालि तिण्शै वित्तो लैक्कण 238

वनु-आकर; पोर् अँतिरुत्तियेल्-युद्ध में सामना करो तो; अटर्प्पेन्-मार वूंगा; अँन्ऱु-कहकर; इटित्तु उरप्पि-डाँट बतायी और; अटि तलङ्कळ् कौट्टि-पैरों को जोर से पटककर; वाय् मटित्तु-अघर मोड़कर; अटुत्तु अलङ्कु तोळ्-पार्श्व में फड़कते रहनेवाले कन्धों को; पुटैत्तु-ठोंकते हुए; निन्ऱु उळैत्त पूवल्-रहकर जो (शोर) मचाया, वह शोर; इटम् मिक्कु-वायें अंगों के अधिक; तुडिप्प-फड़कते; अङ्कु-वहाँ (किष्किन्धा नगर में); उड्ङ्कु-सोते रहनेवाले; वालि-वाली के; तिण् चैवि तोळै कण्-वलयुक्त कर्ण-विवर में; पुक्कतु-घुसा; अँन्प-कहते हैं। २३८

‘तुम आकर मेरे साथ युद्ध करो तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा’ —ऐसा सुग्रीव ने डाँट के साथ बताया। उसने ललकार के साथ पैरों से शब्द निकालते हुए पैतरे बदले। अघरों को मोड़ लिया; कन्धे ठोंके। ऐसा जो शोर उसने मचाया वह वाली के वलवान कर्णविवर में जा पहुँचा। तब वह सो रहा था। जब उसने यह सुना तब उसके वायें अंग बहुत फड़के। २३८

❖ माड्पेरुड्	कडहरि	मुळक्कम्	वाळरि
एड्पडु	शैवित्तलत्	तैन्त	वोङ्गिय
आरप्पीलि	केट्टन	नमळि	मेलौर
पाड्कडल्	किडन्ददे	यनैय	पान्मैयान् 239

अमळि मेल-तेज पर; ओङ्ग पाल् कटल्-एक क्षीरसागर; किटन्तते अतैय-पड़ा रहा हो, ऐसे हो; पान्मैयान्-दृश्य वाली ने; माल्-अमित; पैरुम् कट करि-बड़े व मत्त गज की; मुळक्कम्-चिघाड़ की; वाळ् अरि-भयंकर सिंह; चैवि तलत्तु-कान से; एरपतु अँन्त-मुनता हो जैसे; ओङ्किय-उठा हुआ; आरप्पु-ओलि-ललकार का स्वर; केट्टन्त-सुना। २३९

अपनी शय्या पर वाली क्षीरसागर के समान लेटा हुआ था। मदहोश मत्तगज की चिघाड़ सुननेवाले सिंह के समान वाली ने सुग्रीव की ललकार का उच्च नाद सुना। २३९

❖ उरुत्ततन्	पौरवैदिरन्	दिल्लव	लुड्डमै
वरैत्तडन्	दोळिनान्	मनत्ति	नैण्णिनान्
शिरित्तन	नव्वौलि	तिशैयि	त्तप्पुत्त
तिरित्तद्व	वुलहमो	रेळो	डैळैये 240

वरै तटम् तोळिनान्-पर्वत-सम विशाल कन्धों वाले ने; इळवल्-कनिष्ठ भ्राता; उरुत्ततन्-कोप करके; पौर-लड़ने के हेतु; अँतिरुत्तु उड्डमै-सामने आया है, यह बात; मत्तत्तिन् अँण्णितान्-मन में सोची; चिरित्ततन्-हँसा; अ ओलि-उस

ध्वनि ने; तिचैयिन् अ पुरत्तु-दिगन्त के उस पार जाकर और; अ उलकम्-श्रेष्ठ लोक; और एलोट्टु एल्ले-(सात और सात) चौदहों को; इरित्तु-भय से अस्त-व्यस्त करा दिया । २४०

पर्वतविशाल कन्धों वाले वाली ने जब सोचा कि मेरा छोटा भाई सुग्रीव मुझसे युद्ध करने आया है तो उसे हँसी आ गयी । वह हँस उठा । वह ध्वनि दिगन्त के उस पार भी चौदहों लोकों पर छायी, जिससे सारे लोक काँप उठे । २४०

अल्लुन्दत्तन्	वल् विरैन्	दिरुदि	यूळियिल्
कौळन्दिरैक्	कडल्हिल्लर्न्	दनैय	कौळ्हायान्
अल्लुन्दिय	दक्किरि	यस्सहिन्	माल्वरै
विल्लुन्दन	तोळ्पुडै	विशैत्त	काइरित्ते 241

ऊळि इल्लित्तिन्-युगान्त में; कौळुम् तिरै-बड़ी-बड़ी लहरों का; कटल्-समुद्र; किल्लैन्तु-उमँग उठा हो; अतैय-जैसी; कौळ्कैयान्-अवस्था में वाली; वल् विरैन्तु-बहुत तेजी से; अल्लुन्तत्तन्-उठा; अ किरि-वह पर्वत; अल्लुन्तियतु-दब गया; तोळ् पुटै-भुजाओं को; विचैत्त-ठोंकने से उठी; काइरिन्-हवा के कारण; अरुकिन् माल् वरै-पास के बड़े पर्वत; विल्लुन्तत्त-गिर गये । २४१

वाली शीघ्र उस प्रकार उठा जैसे युगान्त में बड़ी लहरों वाला सागर उमँग उठा हो ! उस (के भार और वेग) से वह पर्वत धँस गया । कंधों के ठोंकने से जो हवा चलित हुई उसके कारण पास के बड़े-बड़े पर्वत टूटकर गिरे । २४१

पोय्प्पोडित्	तनमयिर्प्	पुरत्त	वैम्बोडि
काय्प्पोडुर्	रैळुवड	कत्तलुड्	गण्कैडत्
तीप्पोडित्	तत्तविळि	तेवर्	नाट्टिनुम्
सीप्पोडित्	तनपुहै	युयिर्प्पु	वीङ्गवे 242

वैम् पोडि-गरम अंगारे; मयिर् पुरत्त-शरीर के वालों के ऊपर; पोय्-आकर; पोडित्त-छितरे; विळि-आँखों ने; काय्प्पु ओट्टु-क्रोध के साथ; उरु अल्लु-मिलकर ऊपर उठनेवाली; वट कत्तलुम्-बड़वाग्नि की; कण् कैट-आँखों को चौंध से खराब करते हुए; ती पोडित्तत्त-आग निकाली; उयिर्प्पु-श्वास; वीङ्गवे-वेग के साथ ऊपर आया तब; पुकै-धुआँ; तेवर् नाट्टिनुम्-देवलोक में भी; मी-ऊपर जाकर; पोडित्तन-प्रकट हुआ । २४२

भयंकर कोपाग्नि शरीर पर के वालों के ऊपर अंगारों के रूप में प्रकट हुई । आँखों से आग निकली । उसको देखकर भयंकर क्रोध के साथ (भयंकर रूप से भभककर) उठनेवाली बड़वाग्नि भी चौंधिया गयी ! उसके निःश्वास बड़े और उनसे धुआँ उठकर ऊपर गया और सुरलोक में जाकर फैल गया । २४२

ॐ कैक्कौडु	कैत्तलम्	वुडैप्पक्	कावलित्
तिक्कयड्	गळुमदच्	चैरुक्कुच्	चिन्दित
उक्कत्त	वुरुमिन	मुलैन्द	वुम्बरुम्
नैक्कन	नैरिन्दत्त	निन्ऱ	कुन्ऱमे 243

कै कौटु-हाथ से; कै तलम्-हथेली; पुटैप्प- (वाली ने) पीटी; कावलित्-लोकरक्षण में लगे रहनेवाले; तिक्कयड्कळुम्-दिग्गजों ने भी; मत चैरुक्कु-मदमस्ती (पौरुष) को; चिन्दित-त्याग दिया; उरुम् इत्तम्-वज्रसमूह; उक्कत्त-चूर हो चू गये; उम्परुम्-आकाशलोक भी; उलैन्त-कलान्त हो गये; निन्ऱ कुन्ऱम्-अचल गिरियाँ भी; नैक्कत्त-टूटे; नैरिन्दत्त-चूर्ण हो गये । २४३

वाली ने हाथ से हाथ पीटा । तो पृथ्वी के रक्षण में खड़े रहनेवाले दिग्गजों ने अपना मद और शक्ति त्याग दी । वज्र निर्बल होकर गिर गये । देवलोक डगमगा गये । अचल पर्वत भी दलक गये । २४३

वन्दनैन्	वन्दनै	नैन्ऱ	वाशहम्
इन्दिरि	मुदऱ्ऱिशै	यैट्टुड्	गेट्टत्त
शन्दिरन्	मुदलिय	तार	हैक्कुळाम्
शिन्दित	ववन्मुडिच्	चिहरन्	दीण्डवे 244

वन्दनैन्-आ गया; वन्दनैन्-आ गया; नैन्ऱ वाचकम्-वे शब्द; इन्दिरि मुतल् तिचै-इन्द्र की (पूर्व) दिशा आदि; यैट्टुम्-आठों दिशाओं में; केट्टट-सुनाई दिये; अवन्-उसके; मुटि चिक्करम्-किरीट-शिखर के; तीण्ड-छूने से; चन्तिरन् मुतलिय-चन्द्र आदि; तारकै कुळाम्-ताराओं के समूह; चिन्दित-नीचे गिर गये । २४४

वाली ने उच्च स्वर में ललकार का उत्तर दिया— आ गया । अभी आ गया । वे शब्द इन्द्र की पूरव दिशा से लेकर सारी दिशाओं में गूँज उठे । उसके किरीट की चोटी के लगने से चन्द्र और सितारों के समूह नीचे चू गये । २४४

वीशिन	काऱ्ऱिन्वेर्	पऱिन्ऱु	वैऱ्पित्तम्
आशैयै	युऱ्ऱन्	वण्डप्	पित्तिहै
पूशित्	वैण्मयिर्प्	पुऱ्त्त	वैम्बोऱि
कूशित	तन्दहन्	कुलैन्द	दुम्बरे 245

वीचित काऱ्ऱित्- (वाली के उठने के वेग से) चालित हवा के कारण; वैऱ्पु इत्तम्-पर्वतसमूह; वेर् पऱिन्ऱु-जड़ कटकर; आशैयै-दिशाओं में जा; उऱ्ऱित्-पहुँचे; वैण्मयिर्- (शरीर के) सफेद बालों के; पुऱ्त्त-ऊपर; वैम् पौऱि-कोपाग्नि (जो उठी) उसके कण; अण्ड पित्ति कै-अण्ड की भित्तियों पर; पूचित-पीत गये; अन्तकन्-यम; कूचितन्-संकोच में पड़ गया; उम्पर्-स्वर्गलोक; कुलैन्तु-अस्त-व्यस्त हुआ । २४५

उसके वेग से हवा चलित हुई। तब पर्वत-वृन्द मूल से कटकर दिशाओं में जा लगे। श्वेत बालों के ऊपर से निकले अंगारे अण्ड-भित्तियों से जा लगे। यम भी वाली को देखने से संकोच करने लगा। स्वर्ग अस्त-व्यस्त हो गया। २४५

कडित्तवा	यैयिरुहु	कत्तल्हळ्	कार्विशुम्
बिडित्तवा	लुहुमुरु	मिन्तत्तिर्	चिन्दिन
तडित्तुवीळ्न्	दत्तवैन्नत्	तहरन्नु	शिन्दिन
वडित्ततोळ्	वलयत्तिन्	वयङ्गु	काशरो 246

कडित्त वाय्-मुख में पिसते; यैयिरु उकु-दाँतों से निकली; कत्तल्हळ्-अग्नि के कण; कार्-मेघों के; विचुम्पु इडित्त आल्-आकाश में टकराने से; उकुम्-गिरनेवाले; उरुम् इत्तत्तिल्-वज्र-समूह के समान; चिन्तित्त-गिरे; वडित्त-श्रेष्ठ; तोळ् वलयत्तिन्-बाहुवलय में; वयङ्कु काचु-दृश्यमान रत्न; तडित्तु वीळ्न्तत्त अँन्त-तड़ितें गिरतीं जैसे; तकरन्नु चिन्तित्त-टूटकर गिरे। २४६

वाली ने दाँत पीसे। तब दाँतों से अंगारे निकले। वे आकाश में गरजते मेघों से निकलकर गिरनेवाली तड़ितों के समान छितरे। उसके सुन्दर बाहुवलियों से रत्न अलग होकर गाजों के समान चू पड़े। २४६

जालमु	नार्त्तिशैप्	पुत्तलु	नाहरुम्
मूलमु	मुर्त्तिड	मुट्टिविर्	तीक्कुम्
कालमु	मौत्तत्तन्	कडलिल्	रान्कडे
आलमु	मौत्तत्त	नेवरु	मज्जवे 247

अँवरुम् अवच-कोई भी भयभीत हो, ऐसा; जालमुम्-यह भूमि और; नाल् तिचै पुत्तलुम्-चारों दिशाओं के समुद्र और; नाकरुम्-देव; मूलमुम्-सृष्टि के मूल (भूत आदि); मुर्त्तिड-(इनको) नाश करते हुए; मुट्टिविल्-युगान्त में; तीक्कुम्-जला डालनेवाले; अ कालमुम्-उस प्रलयकाल के; औत्तत्तन्-समान भी रहा; कडलिल्-(क्षीर-) सागर में; तान् कटै-खुद उससे मथने से निकले; आलमुम्-हलाहल के; औत्तत्तन्-समान भी रहा। २४७

उस वाली को देखकर सब कोई भयभीत हो गये। तब वह प्रलय-काल के समान लगा जो भूमि, चारों ओर के सागर, देवगण और इन सबके मूलतत्त्व आदि सभी का अन्त करते हुए जला डालता है। और भी उस हलाहल के समान भी लगा, जिसको उसी ने खुद क्षीरसागर मथकर उससे प्रकट कराया था। २४७

ॐ आयिडैत्	तारैयैन्	इमुदिर्	रोन्त्रिय
वेयिडैत्	तोळित्ता	ळिडैवि	लक्किताळ्

वायिडैप्	पुहैवर	वालि	कण्वरुम्
तोयिडैत्	तन्नेडुड्	गून्व	रीहिन्नाळ् 248

अ इटै-तव; तारे अन्न-तारा नाम की; अमुत्तिल् तोन्निय-अमृत के समान दृश्यमान; वेय् इटै तोळिन्नाळ्-वाँस-से प्राप्त कन्धों वाली (वाली-पत्नी) ने; वाय् इटै-मुख से; पुक्क वर-धुआँ निकलने देते हुए; वालि कण वरुम्-वाली की आँखों में प्रकट; तो इटै-अग्नि में; तन् नेट्टुम् कून्तल्-अपने लम्बे केश को; तोकिन्नाळ्-जलने देती हुई; इटै विलक्किनाळ्-बीच में आकर रोका । २४८

तव तारा ने आकर उसे रोका । तारा अमृत के समान प्रकट हुई । वाँस के समान कन्धों वाली वाली की पत्नी तारा के लम्बे केश उस अग्नि में झुलसे जो वाली के मुख से धुआँ छोड़ते हुए उसकी आँखों में जल रही थी । २४८

ॐ विलक्कलै	विडुविडु	विळित्तु	ळानुरम्
कलक्कियक्	कडल्हडैन्	दमुडु	कण्डैन्
उलक्कविन्	नुयिरुडिट्	तौल्लै	मीळ्कुवैन्
मलैक्कुल	मयिलैन्	मडन्दै	कूडवाळ् 249

मलै कुल मयिल्-पर्वतवासिनी मुन्दर मोरनी; विलक्कलै-मत रोको; विट्टु-छोड़ो, छोड़ो; अ कडल्-(तव या) उस सागर को; कटैन्तु-मथकर; अमुत्तु कण्टु-अमृत निकाला (मैंने); अन्न-वैसे ही; विळित्तु उळान्-ललकारनेवाले का; उरम् कलक्कि-बल मिटा करके; उलक्क-उसको मारकर; इन् उयिर् कुडित्तु-उसके प्यारे प्राण पीकर; औल्लै-शीघ्र; मीळ्कुवैन्-लौट आऊँगा; अन्न-कहने पर; मडन्दै-वह नारी; कूडवाळ्-बोली । २४९

वाली ने उससे कहा कि पर्वतकुलकेकिनी ! मुझे मत रोको । छोड़ दो, छोड़ दो । उस दिन जैसे सागर मथकर अमृत निकाला, उसी तरह आज ललकारनेवाले सुग्रीव का बल मिटाकर, उसे मिटा दूँगा और उसके प्यारे प्राण पीकर शीघ्र लौट आऊँगा । तव तारा ने कहा । २४९

ॐ कौरुडव	निन्बैरुड्	गुववुत्	तोळ्वलिक्
किरुत्तन्	मुन्नैना	ळोडुण्	डेहुवान्
पैरुत्तिलन्	पैरुन्दिउल्	पैयर्त्तुम्	पोरुशैयर्
कुरुडु	नेडुन्दुणै	युडैमै	यालैन्नाळ् 250

कौरुडव-राजा; मुन्नै नाळ्-पहले दिन; निन्-आपके; कुववु पैरुम् तोळ्-पुष्ट, बड़े कन्धों के; वलिक्कु-बल के सामने; इरुत्तन्-हारकर; ईट्टु उण्टु-अपमानित होकर; एकुवान्-जो भागा; पैरु तिरुल्-(वह अब) बहुत शक्ति; पैरुत्तिलन्-पा नहीं गया है; पैयर्त्तुम्-फिर भी; पोरु चैयर्त्तु-युद्ध करने के लिए; उरुत्तु-आना; नेट्टुम् तुणै-बहुत बड़ी सहायता; उटैमैयाल्-प्राप्त करने के कारण; अन्न-कहा । २५०

राजा ! पहले यही सुग्रीव आपके पुष्ट बड़े कन्धों के बल के सामने हारा, अपमानित हुआ और भागा । उसे अब कोई बड़ी शक्ति तो प्राप्त नहीं हुई है । तो भी वह लड़ने आया है । इसका कारण उसकी किसी बड़ी सहायता की प्राप्ति है । —तारा ने ऐसा कहा । २५०

सूत्रैर्न	सुद्रिय	मुडिवल्	पेरुल
हेन्ड	नुद्रुत	वैतक्कु	नेरैतत्
तोन्निनुन्	दोर्इवै	तौलैयु	मैन्डुर्कुच्
चान्नुळ	वन्नुवै	तैयल्	केट्टियाल् 251

तैयल्-दयिता; सूत्रु अंत-तीन की संख्या में; सुद्रिय-पूर्ण बने; मुटिवु इल्-अनन्त; पेर् उलकु-बड़े लोकों के वासी; अंतक्कु नेर् अंत-मेरे सामने; एन्ड-विरोध करके; उदन् उद्रुत-साथ मिलकर; तोन्निनुम्-आकर प्रकट हों तो भी; अवै तोर्इ-वे हारकर; तौलैयुम्-मिट जायेंगे; मैन्डुर्कु-इसके लिए; चान्नु उळ-प्रमाण हैं; अन्नुवै-उनको; केट्टि-सुनो; (आल्-पूरक ध्वनि) । २५१

वाली ने कहा— दयिता ! स्वर्ग, मध्य, पाताल —तीनों श्रेणियों के असंख्यक और बड़े लोक, सारे, मिलकर मेरे विरुद्ध युद्ध करने आयें तो भी वे हारकर मिट जायेंगे । इसके प्रमाण हैं । वतलाता हूँ । सुनो । २५१

मन्दर	नैडुवरै	मत्तु	वाशुहि
अन्दमिल्	कडैहयि	इडैह	लाळियान्
शन्दिरन्	ऊणैर्दिर्	तरुक्किन्	वाङ्गुवार्
इन्दिरन्	मुदलिय	वमर	रेनैयोर् 252

मन्तर-मन्दर के; नैडुवरै-बड़े पर्वत को; मत्तु-मथानी; वाचुकि-वासुकी को; अन्तम् इल्-बहुत लम्बी; कटै कयिडु-नेती; आळियान्-चक्रधारी महाविष्णु को; अटै कल्-(पर्वत को धँसने से रोकने का) आधार-प्रस्तर; चन्तिरन्-चन्द्र को; तूण्-स्थिर स्तम्भ (खंटा, जिसके सहारे मथानी बँधी रहती है); तरुक्किन्-गर्व के साथ; अँतिर् वाङ्कुवार्-आमने-सामने रहकर खींचनेवाले; इन्तिरन् मुतलिय अमरर्-इन्द्रादि देव; एनैयोर्-और अन्य (असुर) थे । २५२

(क्षीरसागर-मन्थन की बात लो ।) मन्दरपर्वत को मथानी, वासुकी की लम्बी नेती बनायी गयी । चक्रधारी महाविष्णु पर्वत के नीचे आधार-प्रस्तर बने रहे, ताकि पर्वत घूमते समय धँस न जाय । चन्द्र को स्थिरस्तम्भ बनाकर उसी से मथानी सुरक्षित की गयी । गर्व के साथ दोनों पक्षों में इन्द्रादि सुरगण और असुर रहकर नेती को खींचने लगे । २५२

पैयर्वुड	वलक्कुवु	मिडुक्किल्	पैर्इयार्
अयर्वुड	लुर्इदै	नोक्कि	यान्नु

तयिरैन्क्	कडैन्दवर्क्	कमुदन्	दन्ददुम्
मयिलियड्	कुयिन्मौळि	मडक्कड्	पालदो 253

मयिल् इयल्-मोर की-सी छटा; कुयिल् मौळि-कोकिल की वाणी वाली; पॅयर्चु उड्-घुमाते हुए; वलिकक्कुम्-छींचने पर; मिट्टक्कु इल्-निर्वल; पॅड्रियार्-दम.वाले; अयर्चु उडल् उड्डतै-थक गये, उसे; नोक्कि-देखकर; यान्-मेरा; अतु-उसे; तयिर् अँत-दही के समान; कडैन्तु-मथकर; अवरक्कु-उन्हें; अमुतम् तन्तुतुम्-अमृत दिलाना; मडक्कल् पालतो-भूलने योग्य है क्या । २५३

मयूराभा कोकिलवाणी तारा ! वे मन्दरपर्वत को घुमाने लगे । पर उनमें योग्य बल नहीं था । इसलिए वे थक गये । उसको मैंने देखा तो मैं गया और दही के समान सागर को मथ डाला । अमृत निकालकर दिया । वह सामर्थ्य भुलाने की बात है क्या ? । २५३

❀ आड्डलि	नमररु	मवुणर्	यावरुम्
तोड्डत्त	रँतैयवड्	शौल्लड्	पालदो
कूड्डुमैन्	पॅयर्शौलक्	कुलैयु	मारिति
माड्डवड्	काहिवन्	दैदिरु	माण्बितार् 254

आड्डलिन्-मेरी शक्ति के सामने; अमररुम्-देव और; अवुणर् यावरुम्-वानव सब; तोड्डत्त-जो हारे; रँतैयवड्-कितने हैं; शौल्लड् पालतो-(हिसाब) कहा जा सकता है क्या; कूड्डुम्-यम भी; अँन् पॅयर्-मेरा नाम; चौल-लेने पर; कुलैयुम्-भय से काँप जायगा; माड्डवड्डु-मेरे शत्रु का; आकि वन्तु-(सहायक) बन आकर; इत्ति-अव; अँतिरुम्-लड़े; माण्पितार्-ऐसी शक्ति रखनेवाले; आर्-कौन हैं । २५४

मेरे सामने अमर और असुर कितने ही हारे हैं ! उनकी गणना भी हो सकती है क्या ? यम भी, मेरा नाम लिया जाय तो भय से काँप जायगा ! फिर कौन हैं जो इतना हौसला रखते हैं कि मेरे सामने आकर युद्ध करें ? । २५४

❀ पेटैय	रँदिरुव	रँतिनुम्	वैड्डुडै
ऊदिय	वरङ्गळु	मुरमु	मुळ्ळदिल्
पादियु	मँन्तदाड्	पहैप्प	दैड्डत्तम्
नीतुय	रौळिहैन्	निन्ऱु	कूड्डितान् 255

पेटैयर्-बुद्धिहीन; अँतिरुक्कुवर्-लड़ेंगे; अँतिनुम्-तो भी; वैड्डुडै-उनके प्राप्त; ऊतियम् वरङ्गळुम्-शक्तियों और वर; उरमुम्-बल; उळ्ळत्ति-जो हैं, उनका; पातियुम् अँन्तु-आधा मेरा होगा; आल्-इसलिए; पकैप्पतु अँड्डत्तम्-विरोध करेंगे कैसे; नी-तुम; तुयर्-दुःख; ओळिक-छोड़ो; अँन्-ऐसा; निन्ऱु-सावधानी के साथ; कूड्डितान्-(आश्वासन का वचन) कहा (वाली ने) । २५५

समझो कि कुछ जड़मति हैं जो युद्ध करने आ जायें । (मेरे प्राप्त वरदान के बल से) उनके वर, बल और सामर्थ्य —सबके आधे भाग मेरे हो जायेंगे । फिर वे कैसे मेरा विरोध करेंगे ? तुम अपना दुःख छोड़ दो । वाली ने तारा को धीरज देते हुए सावधानी से कहा । २५५

❖ अन्नतु	केटव	ळरश	वायवर्
किन्नयिर्	नटपमैन्	दिराम	नैन्बवन्
उन्नयिर्	कोडलुक्	कुडन्वन्	दानैन्तत्
तुन्निय	वन्बिन्तर्	शौल्लिता	रैन्डाळ् 256

अन्नतु केटवळ्—उसको सुनकर (तारा ने); अरच—राजा; इरामन् अन्नपवन्—श्रीराम नाम के; आयवर्कु—उनका; इन् उयिर् नटपु—प्राणप्यारा मित्र; अमैन्तु—वनकर; उन् उयिर् कोडलुक्कु—तुम्हारे प्राण हरने के लिए; उटन् वन्तात्—साथ आये हैं; अन्न—ऐसा; तुन्निय—निकट के; अन्नपितर्—स्नेहियों ने; शौल्लितार्—कहा; रैन्डाळ्—बोली । २५६

यह सुनकर तारा ने उत्तर दिया । राजा ! बात ठीक नहीं है । हमारे निकट के स्नेहियों ने कोई बात कही है । श्रीराम नाम के कोई सुग्रीव के प्राणप्यारे मित्र बनकर आपके प्राण हरने के लिए उसके साथ इधर आये हैं । २५६

❖ कुळैत्तवल्	लिरुविनैक्	कूऱु	काण्गिला
दळैत्तय	रुलहिनुक्	कडत्ति	नारैलाम्
इळैत्तवर्	कियल्बल	वियम्बि	यैन्शैय्दाय्
पिळैत्तनै	पावियुन्	पैण्मै	यार्लैन्डान् 257

पावि—पापिनी; कुळैत्त—संकटदायी; वल् इरु वितैक्कु—बलवान दोनों कर्मों (पाप, पुण्य) का; ऊऱु—नाश; काण्किलातु—(उपाय) न देखकर; अळैत्तु—बुलाते हुए; अयर्—दुःखी; उलकिन्नक्कु—लोकवासियों को; अडत्तिन् आऱु अलाम्—धर्म के मार्ग सब; इळैत्तवर्कु—अपने चरित्र से सिखाया जिन्होंने, उन श्रीराम के लिए; इयल्पु अल—अनुपयुक्त; इयम्पि—कहकर; अन्न चैय्ताय्—क्या ही (अपचार) किया है; उन् पैण्मैयाल्—अपनी स्त्री-बुद्धि के कारण; पिळैत्तनै—अपराध किया (या बच गयीं); रैन्डान्—वाली ने कहा । २५७

(वाली को श्रीराम का नाम सुनकर क्रोध आ गया । क्षुब्ध भी हुआ ।) वाली बोला—पापिनी ! (क्या बात करती हो ? श्रीराम कौन हैं, जानती हो ?) पूर्वकर्म, पाप और पुण्य, दोनों मनुष्यों को निरन्तर सताते हैं । उनका अन्त न पाकर जीव छटपटाते हैं । निवारण का कोई उपाय न देखकर वे श्रीराम को बुलाते हैं, तो वे आकर जीवों को धर्म के मार्ग सब अपने आचरणों द्वारा बताते हैं । ऐसे श्रीराम के सम्बन्ध में अनुचित

वातें कहती हो ! यह बड़ा अपचार है ! तुम स्त्री हो ! इसीलिए तुमने यह अपराध किया है (‘पिळैत्तल्’ का दूसरा अर्थ ‘जीवित वच जाना’ है !) । २५७

✽ इरुमैयु	नोक्कुळु	मियल्वि	नाइकिदु
पैरुमैयो	वीङ्गिदिर्	पैरुव	दैन्गौलो
अरुमैयि	निन्ऱुयि	रळिक्कु	मारुडैत्
तरुममे	तविर्क्कुमो	तन्नेत्	तानरो 258

इरुमैयुम्—(पूर्व, अपर) दोनों पक्षों को; नोक्कुळुम्—सोच-देखनेवाले; इयल्वि—नार्क्कु—स्वभाव वाले श्रीराम के लिए; इतु पैरुमैयो—यह (काम) गौरव है क्या; इङ्कु—यहाँ; इतिल्—इस (मित्रता) में; पैरुवतु—लाभ; अन् कौलो—क्या है; अरुमैयिन् निन्ऱु—डुलभ रहकर; उयिर अळिक्कुम्—जीवों की रक्षा करने का; आरु उटै—कार्यकारी; तरुममे—धर्म स्वयं; तन्ने तान्—अपने आप को; तविर्क्कुमो—नष्ट कर लेगा क्या । २५८

वाली आगे बोला । श्रीराम निष्पक्ष दोनों ओर ध्यान देनेवाले स्वभाव के हैं । उनके लिए यह काम गौरवदायी है क्या ? और भी इससे उनको मिलेगा भी क्या ? धर्म दुर्गम है और जीवरक्षण का सामर्थ्य रखता है । क्या वह स्वयं अपना नाश करा लेगा ? । २५८

✽ एरुइपे	रुलहैला	मैय्दि	यीन्ऱवळ्
माइऱव	ळेवमर्	इवडन्	मैन्दनुक्
काइऱरु	मुवहैया	लळित्त	वैयनेप्
पोइऱलै	यिन्तत्त	पुहइऱ	पालैयो 259

एरुइ—(पिता द्वारा) भरण किये हुए; पेर् उल्लु अलाम्—विशाल लोक (राज्य-अधिकार) सब; अय्ति—प्राप्त करके; ईन्ऱवळ्—जन्नी की; माइऱवळ्—सौत के; एव—आज्ञा देने पर; मइऱ—फिर; अवळ् तन् मैन्दनुक्कु—उनके पुत्र को; आइऱ अरुम्—(अन्यों द्वारा) करने में असाध्य; उवकैयाल्—सन्तोष के साथ; अळित्त—जिन्होंने दिया; ऐयने—उन प्रभु को; पोइऱलै—नहीं सराहा; इन्तत्त—ऐसी (निन्दा की) बातें; पुकलल् पालैयो—कह सकोगी क्या । २५९

अपने पिता के भरण में रहे सारे लोकों का अधिकार पाकर भी उन्होंने अपनी विमाता के कहने पर उसे उनके पुत्र के हाथ में असाध्य प्रेम के साथ सौंप दिया । ऐसे महान पुरुष की सराहना नहीं करती पर ऐसी निन्दा की बातें करोगी ! । २५९

✽ निन्ऱपे	रुलहैला	नैरुङ्गि	ने रिन्दुम्
वैन्ऱिवैन्	जिलैयलाऱ्	पिऱिडुम्	वेण्डुमो
तन्ऱुणै	यौरुवरुन्	दन्निल्	वैऱिलान्
पुन्ऱौळिऱ्	कुरङ्गौडु	पुणरु	तदपैन्तो 260

निर्त्तर-स्थायी; पेर् उलकु अलाम्-बड़े-बड़े सभी लोक; नैरुकि-मिलकर; नेरितुम्-लड़ें तो भी; वैत्ति-विजयदायी; वैम्-भयंकर; चिले अलाल्-धनु को छोड़कर; पिरितुम्-अन्य सहायता भी; वेण्टुमो-उन्हें चाहिए क्या; तन् तुण-अपने सदृश; तत्तिल्-अपने से; वेरु ओरुवरुम्-अन्य कोई; इलान्-नहीं ऐसे (श्रीराम); पुल् तौल्लिल्-अल्पकृत; कुरङ्कोटु-वानर के साथ; पुणरुम् नट्पु-करे, ऐसी मित्रता; अंतो-क्यों । २६०

ये लोक, जो युग-युग से रहते हैं, सभी मिलकर उनका सामना करें तो भी अपने एक कोदण्ड के सिवा किसी और (चीज) की सहायता लेनेवाले वे नहीं हैं । उनकी बराबरी का और कोई नहीं रहता । ऐसे वे अल्पकर्मी वानर के साथ मित्रता क्यों बना लेंगे ? । २६०

❖ तम्बिय	रल्लदु	ततक्कु	वेरुयिर्
इम्बरि	तिल्लेत्त	वैण्णि	येयन्दवन्
अम्बियुम्	यानुमुड्	इंदिरन्द	पोरितिल्
अम्बिडे	तौडुक्कुमो	वरुळि	ताळियान् 261

तम्पियर् अल्लतु-छोटे भाइयों के सिवा; ततक्कु-अपने; वेरु उयिर्-अलग प्राण; इम्परिल्-इस लोक में; इल्-नहीं; अंत-ऐसा; अण्णि-सोचकर; एयन्तवत्-उनसे मिलकर रहनेवाले; अरुळित् आळियान्-करुणासागर; अम्पियुम् यानुम्-मैं और मेरा भाई; उड्डु अंतिरन्त-(जिसमें) लगे लड़ते हैं; पोरितिल्-(उस) लड़ाई में; इटै-बीच में आकर; अम्पु तौडुक्कुमो-बाण चलायेंगे क्या । २६१

वे ऐसे हैं जिनके इस लोक में अपने अनुजों के अलावा प्राण हैं ही नहीं । और जो उनसे हेल-मेल के साथ रहते हैं । वे करुणासागर हैं । ऐसे वे क्या उस युद्ध में बीच में आकर बाण चलायेंगे, जिसमें मैं और मेरे भाई भिड़ रहे हैं ? । २६१

❖ इरुत्तिनी	यिरेयिव	णिमैप्पिल्	कालैयिल्
उरुत्तुयिर्	कुडित्तव	नुडन्वन्	दारैयुम्
करुत्तळित्	तैय्दुवैन्	कलङ्ग	लैन्डनन्
विरैक्कुळल्	पिन्नुरै	विळम्ब	वञ्जिनाळ् 262

नी-तुम; इरे-कुछ देर; इवण् इरुत्ति-ठहरो; इमैप्पु इल्-पलक भी न मारो; कालैयिल्-उस समय के अन्दर; उरुत्तु-कोप दिखाकर; उयिर् कुडित्तु-प्राण पीकर; अवन् उटन् वन्तारैयुम्-उसके साथ आये हुआ को भी; करुत्तु अळित्तु-विफल-मनोरथ करके; अय्दुवैन्-लौट आऊंगा; कलङ्कल्-क्षुब्धमत हो; अंतुडन्-कहा; विरै कुळल्-सुगन्धित केश वाली; पिन्-आगे; उरै विळम्प-बात करने से; अञ्चिताळ्-डरी । २६२

तुम थोड़ी देर यहीं ठहरो । पलक भी न मार सको उतनी देर के अन्दर मैं कोप करके सुग्रीव को मार डालूंगा । और उसके साथ आये हुआ का

मनोरथ विफल करके लौट आ जाऊंगा । तुम मत घबड़ाओ । वाली ने धीरज दिया । आगे सुगन्धित केशिनी तारा कुछ न बोली । वह कुछ कहने से डरती थी । २६२

औल्लैच्	चैरुवेट्	दुयर्वत्तुपुय	वोङ्ग	लुम्बर्
अँल्लैक्कु	मप्पा	लिवर्हिन्ऱु	विरण्डि	नोडुम्
मल्लऱ्	किरियिन्	उलैवन्दनन्	वालि	कीळ्पाल्
तौल्लैक्	किरियिन्	उलैतोन्ऱिय	आयि	ऐन्ऱ 263

वालि—वाली; औल्लै—जल्दी; चैरु वेट्टु—युद्ध करना चाहकर; उयर्—फूल उठनेवाले; उम्पर् अँल्लैक्कुम्—स्वर्ग की सीमा के पार भी; इवर्किन्ऱु—उन्नत; वन् पुय—वलवान भुजा रूपी; ओङ्गल्—पर्वत; इरण्डितोडुम्—दो के साथ; कीळ् पाल्—पूर्व दिशा में; तौल्लै किरियिन् तलै—प्राचीन (उदय-)गिरि के शिखर पर; तोन्ऱिय—प्रकट; आयिऱु ऐन्ऱु—सूर्य के समान; मल्लल् किरियिन् तलै—वैभवयुक्त गिरि के ऊपर; वन्तत्तन्—आया । २६३

वाली को युद्ध प्यारा था । उसके वारे में सोचते ही उसके कंधे फूल उठे । वे देवों के लोकों के पार भी उन्नत हुए । पूर्व दिशा की प्राचीन उदयगिरि पर प्रकट होनेवाले सूर्य के समान वाली अपने दोनों उन्नत भुजाओं के साथ शोभता हुआ वैभवपूर्ण उस गिरि पर आया । २६३

निन्ऱा	नैदिर्या	वरुनैञ्ज	नडुङ्गि	यञ्जत्
तन्ऱोळ्	वलियाऱ्	इहैमाल्वरै	शालुम्	वालि
कुन्ऱु	डुवन्दुऱ्	उनन्गो	ळवुणन्	कुडित्त
वन्ऱु	णिडैत्तोन्	ऱियमानन्ऱ	शिङ्ग	मैन्ऱ 264

तन् तोळ् वलियाल्—अपने भुजबल से; तलै माल् वरै—शालीन बड़े (मेरु) पर्वत की; शालुम्—समता करनेवाला (वाली); कोळ् अवुणन् कुडित्त—नृशंस राक्षस (हिरण्यकशिपु) द्वारा निर्दिष्ट; वल् तूण् इटै—कठोर खम्भे से; तोन्ऱिय—प्रकट; मा—माननीय; नरचिङ्गम् अँल्लै—नृसिंह के समान; अँल्लैर् यावर्म्—सामने (आये) सभी को; नैञ्चम् नडुङ्कि—दिल दहलकर; अञ्च—भयभीत होने को विवश करते हुए; कुन्ऱु ऊटु वन्तु—पर्वत से होकर आया और; निन्ऱान्—स्थित रहा । २६४

वाली अपने भुजबल में बड़े और श्रेष्ठ मेरुपर्वत से तुल्य था । जब क्रूर राक्षस हिरण्यकशिपु ने खम्भे का निर्देश किया (और प्रह्लाद को ललकारा कि तेरा हरि इसमें है क्या ?) तब उस कठोर स्तम्भ के मध्य से नृसिंह प्रकट हुए । उन्हीं नृसिंह-मूर्ति के समान वाली सामने आये सभी के मन में भय भरते हुए गिरियों की घाटियों से होता हुआ आया और खड़ा रहा । २६४

आर्क्किन्ऱु	पिन्ऱोन्	उनेनोक्किनन्	ऱानु	मार्त्तान्
वेर्क्किन्ऱु	वानत्	तुरुमेऱु	वैऱित्तु	वोळ्प्

पोर्क्किन्ऱु	वैल्ला	वुलहुम्बोदिर्	वुऱुऱ	पूशल
कार्क्कुन्ऱु	सन्ना	निलन्दाविय	कालि	नैन् 265

आर्क्किन्ऱु-गर्जन करनेवाले; पिन्तोन् तनै-अनुज को; नोक्किन्ऱु-देखकर; तात्तुम् आर्त्तान्-उसने भी नारे लगाये; वेर्क्किन्ऱु-स्वेदयुक्त; वात्तत्तु-आकाश के; उरुम् एङ्ग-वज्रराज; वैऱित्तु-तनकर; वीळ-गिरें, ऐसे; कार्क्कुन्ऱुम् अन्तान्-काले मेघ-सम महाविष्णु के; निलम् ताविय-लोकमापक; कालिन् अन्त-श्रीचरणों के समान; पूचल्-उनके घोष; पोर्क्किन्ऱु-(भू को) आवृत रहनेवाले; वैल्ला उलकुम्-सारे लोकों में; पोतिर्वु उऱुऱ-भर गये । २६५

उसने अपने गर्जन करनेवाले अनुज को देखा । उसने भी मारु नारे लगाये । उस दिन काले मेघतुल्य महाविष्णु के श्रीचरण सब जगह फैले । तब स्वेदयुक्त आकाश के वज्रसमूह भी भय से नीचे चू पड़े । उन्हीं श्रीचरणों के समान वाली और सुग्रीव के घोषों का शब्द सब लोकों में व्याप्त हुआ । २६५

अव्वेलै	यिराम	नुमन्बुडैत्	तम्बिक्	कैय
शैव्वे	शैलनोक्	कुदितानवर्	देवर्	निऱ्क्
अव्वेलै	यैम्मेरु	वैक्कालोडैक्	काल	वैन्दी
वैव्वे	इलहत्	तिवर्मेनियै	मानु	मैन्ऱान् 266

अ वेलै-तब; इरामन्-श्रीराम भी; अन्पु उटै-प्यारे; तम्पिक्कु-अपने छोटे भाई से; ऐय-सुन्दर भाई; चैव्वे चैल-खूब ध्यान देकर; नोक्कुति-देखो; तात्तवर् तेवर् निऱ्क्-दानव और देव एक ओर रहें; वैव्वेङ्ग उलकत्तिन्-पृथक्-पृथक् रहनेवाले लोकों में; अ वेलै-कौन सा सागर; अ मेरु-कौन सा मेरु; अ काल् ओट्टु-कौन से पवन के साथ; अ काल वैम् ती-कौन सी प्रलयकालीन नाशकारी आग; इवर् मेत्तियै-इनके शरीर की; मानुम्-समता करेगी । २६६

(श्रीराम को वाली और सुग्रीव के रूप को देखकर विस्मय हुआ ।) श्रीराम अपने प्यारे भाई से बोले । सुन्दर भाई ! ध्यान देकर निहारो । देव और दानव एक ओर रहें ! पृथक्-पृथक् रहनेवाले इन लोकों में कौन सा सागर, कौन सा मेरु, पवन या कालानल — इनके रूप और आकार की समता कर सकेगा ? । २६६

वळ्ळुऱ्	किळैयान्	पहर्वानिवन्	इन्मुन्	वाणाळ्
कोळ्ळक्	कोडुङ्	गूऱुवत्तक्	कोणर्न्	दान्कुरङ्गिन्
अळ्ळुऱ्	कुरुम्बोर्	शैयवैय्दिर्	मैन्नु	मिन्ऱन्
उळ्ळत्ति	नून्ऱु	वृणर्वुऱुलि	नौन्ऱु	मैन्ऱान् 267

वळ्ळुऱ्कु इळैयान्-दानी प्रभु के अनुज; पक्वन्-कहते; इवन्-यह सुग्रीव; तन् मुन्-अपने ज्येष्ठ भ्राता की; वाळ् नाळ् कोळ्ळ-आयु हरने के लिए; कोट्टुम् कूऱुवत्तै-कूर यम की; कोणर्न्तान्-यहाँ लाया है; कुरङ्किन्-वानरों से;

अळ्ळुक्कु उडुम्-निन्ध; पोर् चैय-युद्ध करने; अय्यत्तिर्त्तम्-आये हैं; अन्तुम्-इसका; इन्तल्-दुःख; उळ्ळत्तिन्-चित्त में; ऊन्ऱ-गड़ गया, इसलिए; ओन्ऱुम्-कुछ भी; उणर्वु उड्डिलैन्-सोच नहीं पाता; अन्ऱाड्-कहा । २६७

यह सुनकर वदान्य श्रीराम के अनुज ने कहा कि यह अपने ज्येष्ठ भाई को शत्रु मानकर उसकी आयु को हरने के निमित्त भयंकर यम को इधर लाया है ! वानरों के साथ, गर्हण योग्य युद्ध करने के लिए हम भी आये हैं । यह दुःख मेरे चित्त में गड़ा हुआ है । अतः मैं कुछ सोच नहीं पाता । २६७

आड्डाडु	पित्तुम्	पहर्वानडु	ताड	ळुङ्गात्
तेड्डाडु	चैय्वार्	हळैत्तेरुदल्	शैव्वि	दन्ऱाल्
माड्डा	नैनत्तन्	मुत्तैक्कौल्लिय	वन्ऱु	निन्ऱान्
वैड्डार्ह	डिडत्ति	वन्ऱञ्जमैन्	वीर	वैन्ऱान् 268

आड्डाडु-शोक न सह सककर; पित्तुम्-और भी; पकर्वान्-कहते; वीर-वीर; अड्डत्तु आड्ड-धर्म का मार्ग; अळुङ्क-नष्ट करते हुए; तेड्डाडु-विवेचन न करके; चैय्वार्कळ्-(बुरे काम) करनेवालों को; तैड्डत्तल्-(मित्र) समझना; चैव्वितु अन्ऱ-ठीक नहीं होगा; तन् मुत्तै-अपने ज्येष्ठ को; माड्डान् अन्न-शत्रु कहकर; कौल्लिय-मारने के लिए; वन्ऱु निन्ऱान्-आकर खड़ा है; वैड्डार्कळ् तिड्डत्तु-परायों के प्रति; इवन् तञ्चम्-इसका शरण्यभाव; अन्-कैसा होगा; अन्ऱान्-(लक्ष्मण) बोले । २६८

लक्ष्मण के लिए यह क्षोभ असहनीय रहा । अपने को शान्त बना नहीं सके । वे आगे बोले— वीर भ्राता ! धर्ममार्ग नष्ट करके अविवेकी कार्य करनेवालों को सहायक चुन लेना श्लाघनीय काम नहीं है । यह अपने ज्येष्ठ भ्राता को शत्रु मानकर उसे मारने के निमित्त आ खड़ा है । परायों के प्रति इसका शरण्यभाव कौन सा मूल्य रखेगा ? (सर्वशरण्य श्रीराम के सामने सुग्रीव को श्रीराम का शरण्य मानना खलता है । अतः 'तञ्चम्' का अर्थ 'इसका शरण में आना और आपका मानना'—किया जाता है । तब 'परायों के प्रति'—अर्थ नहीं होगा 'पराये हमारी' यह अर्थ होगा ।) । २६८

अत्ता	विदुहे	ळैत्तवारियन्	कूऱु	वानिप्
पित्ताय	विलङ्गि	तौळ्क्किनैप्	पेश	लामो
अत्तायर्	वयिड्डि	नुम्बिन्पिडन्	दोर्ह	ळैल्लाम्
औत्ताड्	परदन्	पैरिडुत्तम	ताद	लुण्डो 269

अत्ता-तात; इतु केळ्-यह सुनो; अत्तै-ऐसा; आरियन्-महिमावान श्रीराम; कूऱुवान्-बोलने लगे; पित्तु आय-पागल; इ विलङ्क्ति-इस मृगप्राय के; औळ्क्कितै-चरित्र को; पेचैल् आमी-चर्चा योग्य मानेंगे क्या; अत्तायर्-

किसी भी माता की; वयिर्इत्तुम्-कोख में; पितृ पित्रन्तोरकळ्-अनुज के रूप में उत्पन्न; अल्लाम्-सभी की; औत्ताल्-तुलना करें तो; परतन्-भरत के समान; पैरितु उत्तमन्-बहुत श्रेष्ठ; आतल्-बननेवाले; उण्टो-कोई है क्या । २६६

तब महिमावान श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि तात ! यह सुनो । ये पागल और मृगप्राय हैं । उनके चरित्र चर्चा के विषय बन सकेंगे क्या ? (नहीं ।) (किसी भी माता से उत्पन्न अनुज जब अपने अग्रजों से हेल-मेल के साथ रहें तो भरत बहुत उत्तम माना जायगा क्या ? —यह सीधा अर्थ लगता है । पर हेय लगता है । इसलिए यह अर्थ किया गया है—) अगर किसी भी माता से उत्पन्न सभी अनुजों की भरत से तुलना की जाय तो भरत के समान उत्तम कोई पाया जायगा क्या ? । २६९

विइडाङ्गु	वैइपन्	नविलङ्गेळिइ	डोळ	मैय्मै
उइडाइ	शिलरल्	लवरेपल	रैन्ब	दुण्मै
पैइडा	रुळैपपैइ	उपयन्पैरुम्	पैइइ	यल्लाल्
अइडाइ	नवैयैन्	उलुक्काहुन	रारहो	लैन्डान् 270

विल् ताङ्कु-धनु धारण करनेवाले; वैइपु अन्नत-पर्वत-सम; इलङ्कु-वर्तमान; अळिल्-सुन्दर; तोळ-भुजा वाले; मैय्मै उइडाइ-सचमुच बड़प्पन के रखनेवाले; चिलर-थोड़े हैं; अल्लवरे-जो नहीं; पलर-वे अनेक हैं; अँत्पतु-यह मसल; उण्मै-सत्य है; पैइडाइ उळै-(मित्र-रूप में) प्राप्त लोगों के पास; पैइइ पयन्-प्रापनीय हित की; पैइम्-प्राप्त; पैइइ अल्लाल्-उपलब्धि के सिवा; नवै अइडाइ-दोषरहित हैं; अँन्डुकुकु-ऐसा कहने योग्य; आकुत्तर-बननेवाले; आर् कौल्-कौन हैं; अँन्डान्-कहा । २७०

धनुर्धारी पर्वततुल्य सुन्दर भुजा वाले ! दुनिया में सच्चे (श्रेष्ठ आचरणशील) मनुष्य कम हैं । इसके विपरीत रहनेवाले ही अधिक संख्या में हैं । यह मसल सत्य है । मित्र के पास प्राप्य हित जो होगा उसे लेना है । वही लाभ है । उसे छोड़कर दोष देखना आरम्भ करो तो दोषहीन कहलाने योग्य कौन हैं इस संसार में ? । २७०

वीरत्	तिइलो	रिवरित्त्तुन	विळम्बुम्	वेलै
तेरिइ	तिरिवान्	महन्तिन्दिरन्	शैय्म	लैन्डिप्
पारिइ	तिरियुम्	बनिमाल्वरै	यन्त	पण्वार
मूरित्	तिशैया	नैयिरण्डेन्	मुट्टि	तारे 271

वीरम् तिइलोइ इवर-वीर और बलिष्ठ ये; इन्त विळम्बुम् वेलै-जब ऐसा बोलते रहे, तब; तेरिइ तिरिवान्-रथचारी; मकन्-(सूर्य का) पुत्र; इन्तिरिन् चैम्मल्-इन्द्र का पुत्र; अँन्ड-कहलानेवाले; इ पारिल्-इस भूमि पर; तिरियुम्-संचार करते हुए; पतिमाल्वरै-हिमाच्छादित बड़े पर्वतों के-से; पण्वार-रूप वाले; मूरि-बलवान; तिचै यात्तै-विंगज; इरण्टु-दो; अँत-जैसे; मुट्टितार्-आपस में भिड़े । २७१

ये दोनों बलिष्ठ वीर आपस में ऐसी बातें कर रहे थे। तब रथचारी सूर्य का पुत्र सुग्रीव और इन्द्र का पुत्र वाली दोनों भूतल पर संचार करनेवाले हिमपर्वत के समान दिखते हुए दो बलवान दिग्गजों के समान आपस में भिड़े। २७१

कुन्डोडु	कुन्डोत्	तत्तर्कोळरि	कौडु	बल्ले
डोन्डोडु	शौन्डोन्	डैदिरुडुत्त	वेयु	मौत्तार्
निन्डार्	तिरिन्दार्	नैडुज्जारि	निलन्दि	रिन्द
बन्डोडु	कुयवन्	डिरिमट्कलत्	ताळि	यैन्त 272

कुन्डु ओटु-पर्वत के साथ; कुन्डु-पर्वत (टकराता हो); औत्तत्तर्-ऐसे रहे; कौडु-विजयी; बल्ल-बलिष्ठ; एरु कोळरि-(नर) सिंह; औन्डोडु औन्डु-परस्पर; अँतिर् चैन्डु-सामने आकर; उडुत्तवेयुम्-भिड़ने लगे; औत्तार्-ऐसे; निन्डार्-रहते हुए; नैडु चारि-(दायें और बायें) दूर-दूर तक चक्कर लगाये; बल्ल तोळ-बलवान कन्धों के; कुयवन् तिरि-कुम्हार के घुमाये हुए; मण् कलत्तु-मिट्टी के बर्तन बनाने के; आळि अन्त-चक्र के समान; निलम्-भूमि (के जीव) तिरिन्त-डगमगायी (अस्त-व्यस्त हुए)। २७२

दो पर्वत टकराते जैसे, विजयी, ताकतवर दो सिंह आपस में भिड़ते जैसे दोनों दायें और बायें घूमे। तब बलवान कन्धों के कुलाल से घुमाए हुए मृत्पात्र के समान भूमि चक्रीत हुई। भूमि के वासी डगमगा गये। २७२

तोळोडु	तोडेय्त्	तलिडुन्तिलन्	दाङ्ग	लाडुत्त
ताळोडु	ताडेय्त्	तलिडुन्त	तळुपि	डुङ्गल्
वाळोडु	मिन्तो	डुवपोनैडु	वात्ति	तोडुम्
कोळोडु	कोळुडु	रन्वौत्तडुर्त्	तार्ही	दित्तार् 273

तोळ ओटु-(एक के) कन्धे के साथ; तोळ तेय्त्तलिल्-(दूसरे का) कन्धा टकराता तो; तौल् निलम्-पुरातन भूमि; ताङ्कल् आडु-सहन कर नहीं सके, ऐसा; ताळ ओटु ताळ-पैर से पैर; तेय्त्तलिल्-टकराता, इस कारण; तन्त-उत्पन्न; तळल् पिडुङ्कल्-अग्निपुंज; वाळ ओटु-प्रकाश के साथ; मिन् ओटुव पोल्-विद्युत चलती जैसे; नैडु वात्तिन्-विशाल गगन में; ओटुम्-सवेग चलनेवाले; कोळ ओटु कोळ-ग्रह के साथ ग्रह; उडुत्त औत्तु-टकराते जैसे; कौत्तित्तार्-उबले; अटर्न्तार्-लड़े। २७३

उनके कन्धे भिड़े। पुरातन भूमि को भी असह्यता का अनुभव दिलाते हुए उनके पैर आपस में टकराये। तब अग्नि का पुंज उठा। वह विस्तृत आकाश में विजली के समान सवेग व्याप चला। वे दो ग्रहों के समान आपस में बहुत क्रोध के साथ लड़े। २७३

तन्दोळ	वलिमिक्	कवर्तामोरु	ताय्व	यिर्झिन्
वन्दोर्	मडमड्	गैपोरुट्टु	मलैद	लुर्झार्
शिन्दो	डरियुण्कट्	टिलोत्तमै	कादर्	चैर्झ
सुन्दोब	सुन्दप्	पैयर्त्तोल्लैयि	तोरु	मौत्तार् 274

तम् तोळ वलि—(अपने) अपने भुजबल में; मिक्कवर्-बढ़े हुए; ताम ओरु ताय्व यिर्झिन्-दोनों एक ही माता की कोख से; वन्दोर्-जनित; मट मड्कै पोर्ट्टु-एक बाला स्त्री के कारण; मलैतल् उर्झार्-गुथने लगे, वे; चिन्तु ओट्टु-सिंधु को हराने (भगाने) वाले; अरि-लाल डोरों से युक्त; उण् कण्-अंजनयुक्त; नेत्रों वाली; तिलोत्तमै-तिलोत्तमा के; कातल्-प्रेम के कारण; चैर्झ-जो लड़े; चुन्त उपचुन्त पैयर्-सुन्द-उपसुन्द नाम के; तौल्लैयितोरुम्-प्राचीन राक्षसों की भी; औत्तार्-समानता करते थे । २७४

वे दोनों भुजबल में बढ़े हुए थे । दोनों एक ही माता की कोख से जने थे । अब वे एक बाला स्त्री (रूमा) के निमित्त लड़ते हुए सुन्द-उपसुन्द के समान दिखे, जो लाल डोरों से युक्त और अंजनभूषित आँखों वाली तिलोत्तमा के निमित्त आपस में लड़े थे । (इसका वृत्तान्त यों है—ये दोनों हिरण्यकशिपु के वंश में आये दानव थे । वे लोकों को बहुत त्रस्त करते थे । महाविष्णु ने विश्वकर्मा द्वारा तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को सृष्ट कर इनके पास भेजा । ये दोनों उस पर आसक्त हुए । तिलोत्तमा ने कहा कि मैं तुम दोनों में श्रेष्ठतर वलशाली से विवाह कर लूंगी । दोनों आपस में लड़कर मर गये ।) । २७४

कडलीन्	रितीडीन्	रुमलैक्कवुड्	गावन्	मेरुत्
तिडलीन्	रितीडीन्	उमर्शैय्यवुञ्	जीर्झ	मैन्ब
दुडल्लैण्	डिरण्डाहि	युडर्झवुड्	गण्डि	लादेम्
मिडलिड्	गिवर्वैन्	दौळिर्कोप्पत्त	वैरु	काणेम् 275

कटल् औत्तिन् औट्टु औन्नु-एक समुद्र दूसरे समुद्र के साथ; मलैक्कवुम्-टकराये; कावल्-भूमि का रक्षक; मेरु तिडल्-मेरुपर्वत; औत्तिरितीट्टु औन्नु-(दो भाग बनकर) आपस में; अमर् चैय्यवुम्-लड़े; चीर्झम् अँत्तपु-कोप नाम का गुण; इरण्डाकि-दो भागों में बँटकर; उटल् कौण्टु-(मानव-) शरीर लेकर; उटर्झवुम्-एक दूसरे को सताएँ; कण्टिलातेम्-नहीं देखा, ऐसे हम; इड्कु-यहाँ; इवर्-इनके; मिटल् वैम् तौळिर्कु-कठोर साहसपूर्ण युद्धकृत्य की; औप्पत्त-समता करनेवाले; वैरु काणेम्-कुछ नहीं देखते । २७५

हमने दो समुद्रों को आपस में टकराता नहीं देखा है । मेरुपर्वत का दो भाग बनकर आपस में भिड़ना नहीं देखा है । न ही कोप को दो भागों में बँटकर परस्पर गुँथते देखा है । और इन साहसी वीरों के युद्धकार्य की उपमाएँ भी नहीं देखते । २७५

ऊहङ्	गळिना	यहर्वङ्ग	णुमिळ्न्द	तीयाल्
मेहङ्	गळ्करिन्	दत्तवैङ्गु	मैरिन्द	तिक्किन्
नाहङ्	गणडुङ्	गित्तनान्लि	मुङ्गु	लैन्द
माहङ्	गळैनण्णिय	विण्णवर्	पोय्म	त्रैन्दार् 276

ऊकङ्कळिन्-वानरों के; नायकर्-नायकों की; वैम् कण्-उग्र आँखों की; उमिळ्न्द-उगली; तीयाल्-आग से; मेकङ्कळ् करिन्तत-मेघ झुलस गये; वैङ्गुम् अरिन्त-पर्वत जल गये; तिक्किन्-दिशाओं के; नाकङ्कळ्-हाथी; नटुङ्कित्त-काँप उठे; नान्लिमुम्-चतुर्विधा भूमि भी; कुलैन्त-अस्त-व्यस्त हुए; माकङ्कळै-आकाशलोकों में; नण्णिय-वास करनेवाले; विण्णवर्-स्वर्गवासी; पोय् मरैन्तार्-(कहीं) जाकर छिप गए । २७६

उन वानरनायकों की भयानक आँखों से जो आग निकली, उससे मेघ झुलस गये । पर्वत जल गये । दिग्गज काँपे । चतुर्विधा भूमि थरथरी । आकाशवासी देव कहीं जाकर छिप गये । २७६

विण्मे	लिनरो	नैडुवैङ्गिन्	मुहट्टि	नारो
मण्मे	लित्तरो	पुड्मादिर	वीदि	यारो
कण्मे	लिनरो	वैनयारुड्	गाण	निन्डार्
पुण्मे	लिरत्तम्	पौडिप्पक्कडिप्	पारुपु	डैप्पार् 277

विण् मेलित्तरो-व्योम के ऊपर के हैं; नैटु वैङ्गिन्-बड़े पर्वत के; मुकट्टित्तारो-शिखर के हैं; मण् मेलित्तरो-भूतल के हैं; पुडम्-बाह्य; मातिरम्-दिशाओं की; वीत्तियारो-वीथियों के हैं; कण् मेलित्तरो-(हमारे) दृष्टिपथ के हैं; अँत-ऐसा; यावरुम्-सबके; काण्-दृष्टिगोचर होते हुए; निन्डार्-(घूमते) रहनेवाले; पुण् मेल-व्रणों पर; इरत्तम्-रक्त; पौडिप्प-ढलकाते; कटिप्पार्-काटते; पुटैप्पार्-पीटते (लड़ते) । २७७

सभी जगह रहनेवालों ने उन्हें अपने-अपने स्थान पर देखा । तो यह सन्देह उठा कि क्या वे आकाश में रहकर लड़ रहे हैं ? या बड़े पर्वत के शिखर पर ? या भूमि पर ? या अण्ड के बाहर की वीथियों पर ? या हमारी ही दृष्टि के पथ में रहकर लड़ रहे हैं ? ऐसा लड़ते हुए उन्होंने परस्पर एक दूसरे को काटा और पीटा । तब गम्भीर व्रण हुए और उन पर रक्त ढलक आया । २७७

एळौत्	तुलहन्	दिशैयैट्टौ	डिरण्डु	मुट्टि
आळिक्	किळरार्	कलिकुक्कैम्मड्डु	गार्प्पि	नोदै
पाळित्	तडन्दो	ळिनमार्विनुड्	गैहळ्	पाय
ऊळिक्	किळरुहा	रिडियौत्तडु	कुत्तु	मोबै 278

आर्प्पिन् ओतै-उनके गर्जन का स्वर; उलक्कम् एळ्-सातों लोकों में; ओत्तु-जैसे; तिचै-दिशाओं; अँटु ओटु इरण्डम्-आठ और दो (दस) में; मुट्टि-जा

टकराकर; आळि किळर्-समुद्र की उमड़ से; आर् कलिकु-उत्पन्न उच्च स्वर से; ऐम्मटङ्कु-पाँच गुना (अधिक था); पाळि-सारयुक्त; तटम् तोळितुम्-विशाल कन्धों पर; सारपितुम्-वक्ष पर; कैकळ् पाय-हाथों को चलाते हुए; कुत्तुम् ओतै-घूँसा मारने से उत्पन्न ध्वनि; ऊळि किळर्-युगान्त में उठनेवाले; कार् इटि-मेघों के गर्जन; औत्ततु-के समान थी । २७८

उन्होंने नारे लगाये । गर्जन किया । वह स्वर सातों लोकों में व्याप्त हुआ । वैसे ही वह आठों दिगन्तों से जा टकराया । उमड़नेवाले सागर की ध्वनि से वह स्वर पाँच गुना अधिक था । हाथ चलाकर उन्होंने आपस में कन्धों पर और वृक्षों पर घूँसा मारा । वह स्वर युगान्त में घुमड़नेवाले बादलों के वज्र के समान था । २७८

वैव्वा	यैयिर्शान्	मिडल्वीरर्	कडिप्प	मीचर्चन्
इव्वा	यैळुशो	रिहळाशैह	डोरुम्	वीश
अव्वा	युर्मैळुन्	दहौळुजुडर्	मीनगळ्	यानुम्
शैव्वा	यैनिहर्त्	तत्तशैक्करै	यीत्त	मेहम् 279

मिडल् वीरर्-बलिष्ठ वीरों के; वाय् वैम् यैयिर्शान्-अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से; कटिप्प-काटने से; अ वाय्-उन मुखों से; अँळु-निकलनेवाला; चोरि-रक्त; मी चैन्नु-ऊपर जाकर; आचैकळ् तोरुम्-दिशा-दिशा में; वीच-व्याप्त हुआ, तब; अँ वायुम्-कहीं भी; अँळुन्त-उदित; कौळुम् चुटर्-विपुल कान्ति के; मीत्तकळ् यावुम्-नक्षत्र सभी; चैव्वायै-मंगल ग्रह; निकर्तुतत-के समान लगे; मेकम्-मेघ; चैक्करै औत्त-लाल गगन के समान लगे । २७९

उन बलिष्ठ वीरों ने अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से एक दूसरे को काटा । तब रक्त जो बह आया, आकाश में उछलकर सभी दिशाओं में फैल गया । उससे विपुल प्रकाशमय नक्षत्र, जहाँ कहीं भी उदित हुए, मंगलग्रह के समान (लाल) हो गये । मेघ भी लाल (सन्ध्या-) गगन के समान बन गये । २७९

वैन्द	वल्लिरुम्	विडैनेडुङ्	गूडङ्गळ्	वीळच्
चिन्दि	यैङ्गणुज्	जिदरुव	पोर्पोरि	तैरिप्प
इन्दि	रन्महन्	पुयङ्गळु	मिरविशे	युरनुम्
शन्द	वन्तैडुन्	दडक्कैह	डाक्कलिर्	उहर्व 280

वैन्त-खूब तप्त; वल्-घने; इरुम्पु इटै-लोहे पर; नैटु कूटङ्कळ्-बड़े हथौड़ी के; वीळ-पीटने से; पोरि तैरिप्प-अंगारे छूटते; अँङ्कणुम् चिन्ति-सब ओर गिरते; चितरुव पोल्-छितरते हैं जैसे; इन्तिरन् मकन्-इन्द्रपुत्र के; पुयङ्कळुम्-कन्धे और; इरवि चैय्-रविकुमार का; उरत्तुम्-वक्ष; चन्तम्-सुन्दर; वल्-ताकतवर; नैटुम् तटम् कैकळ्-लम्बे विशाल हाथों के; ताक्कलिल्-प्रहारों से; तकर्व-(पिटकर) खण्ड-खण्ड हुए । २८०

ऊहङ्	गळिता	यहर्वङ्गा	णुमिळ्न्द	तोयाल्
मेहङ्	गळ्करिन्	वनवैरुप्पु	मैरिन्द	तिक्किन्
नाहङ्	गण्डुङ्	गित्तनानिल	मुङ्गु	लेन्द
साहङ्	गळैन्णिय	विण्णवर्	पोय्म	इन्दार् 276

ऊहङ्कळिन्-वानरों के; नायकर्-नायकों की; वैम् कण्-उग्र आँखों की; उमिळ्न्त-उगली; तोयाल्-आग से; मेकङ्कळ् करिन्त-मेघ झुलस गये; वैरुप्पु मैरिन्त-पर्वत जल गये; तिक्किन्-दिशाओं के; नाकङ्कळ्-हाथी; नटुङ्कित-काँप उठे; नातिलमुम्-चतुर्विधा भूमि भी; कुलैन्त-अस्त-व्यस्त हुए; माकङ्कळै-आकाशलोकों में; नण्णिय-वास करनेवाले; विण्णवर्-स्वर्गवासी; पोय् मइन्तार्-(कहीं) जाकर छिप गए । २७६

उन वानरनायकों की भयानक आँखों से जो आग निकली, उससे मेघ झुलस गये । पर्वत जल गये । दिग्गज काँपे । चतुर्विधा भूमि थर्रायी । आकाशवासी देव कहीं जाकर छिप गये । २७६

विण्मे	लित्तरो	नैडुवैरुपिन्	मुहट्टि	नारो
मण्मे	लित्तरो	पुडुमादिर	वीदि	यारो
कण्मे	लित्तरो	वैनयावरुड्	गाण	निन्डार्
पुण्मे	लिरत्तम्	पौडिप्पक्कडिप्	पारुप्पु	डैप्पार् 277

विण् मेलित्तरो-व्योम के ऊपर के हैं; नैडु वैरुपिन्-बड़े पर्वत के; मुहट्टित्तारो-शिखर के हैं; मण् मेलित्तरो-भूतल के हैं; पुडुम्-बाह्य; मातिरम्-दिशाओं की; वीत्तियारो-वीथियों के हैं; कण् मेलित्तरो-(हमारे) दृष्टिपथ के हैं; अँत-ऐसा; यावरुम्-सबके; काण-दृष्टिगोचर होते हुए; निन्डार्-(घूमते) रहनेवाले; पुण् मेल-व्रणों पर; इरत्तम्-रक्त; पौडिप्प-ढलकाते; कटिप्पार्-काटते; पुटैप्पार्-पीटते (लड़ते) । २७७

सभी जगह रहनेवालों ने उन्हें अपने-अपने स्थान पर देखा । तो यह सन्देह उठा कि क्या वे आकाश में रहकर लड़ रहे हैं ? या बड़े पर्वत के शिखर पर ? या भूमि पर ? या अण्ड के बाहर की वीथियों पर ? या हमारी ही दृष्टि के पथ में रहकर लड़ रहे हैं ? ऐसा लड़ते हुए उन्होंने परस्पर एक दूसरे को काटा और पीटा । तब गम्भीर व्रण हुए और उन पर रक्त ढलक आया । २७७

एळौत्	तुलहन्	दिशैयैट्टी	डिरण्डु	मुट्टि
आळिक्	किळरार्	कलिक्कैम्मड्डु	गार्प्पि	नोवै
पाळित्	तडन्दो	ळिन्मारुबिन्दु	गैहळ	पाय
ऊळिक्	किळरुहा	रिडियोत्तडु	कुत्तु	मोवै 278

गार्प्पिन् ओतै-उनके गर्जन का स्वर; उलक्कम् एळ्-सातों लोकों में; ओत्तु-जैसे; तिच्चै-दिशाओं; अँट्टु ओट्टु इरण्डुम्-आठ और दो (दस) में; मुट्टि-जा

टकराकर; आळि किळर्-समुद्र की उमड़ से; आर् कलिकु-उत्पन्न उच्च स्वर से; ऐम्सटङ्कु-पाँच गुना (अधिक था); पाळि-सारयुक्त; तटम् तोळितुम्-विशाल कन्धों पर; मारपितुम्-वक्ष पर; कंकळ् पाय-हाथों को चलाते हुए; कुत्तुम् ओतै-धूँसा मारने से उत्पन्न ध्वनि; ऊळि किळर्-युगान्त में उठनेवाले; कार् इटि-मेघों के गर्जन; औत्ततु-के समान थी । २७८

उन्होंने नारे लगाये । गर्जन किया । वह स्वर सातों लोकों में व्याप्त हुआ । वैसे ही वह आठों दिगन्तों से जा टकराया । उमड़नेवाले सागर की ध्वनि से वह स्वर पाँच गुना अधिक था । हाथ चलाकर उन्होंने आपस में कन्धों पर और वक्षों पर धूँसा मारा । वह स्वर युगान्त में घुमड़नेवाले बादलों के वज्र के समान था । २७८

वैव्वा	यैयिर्झान्	मिडल्वीरर्	कडिप्प	मीचचैन्
इव्वा	यैळुशो	रिहळाशह	डोरुम्	वीश
अव्वा	युमैळुन्	दहौळुञ्जुडर्	मीन्गळ्	याबुम्
शैव्वा	यैनिहर्त्	तन्शैक्करै	यौत्त	मेहम् 279

मिडल् वीरर्-बलिष्ठ वीरों के; वाय् वैम् अयिर्झाल्-अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से; कडिप्प-काटने से; अ वाय्-उन मुखों से; अँळु-निकलनेवाला; चोरि-रक्त; मी चैन्-ऊपर जाकर; आचैकळ् तोरुम्-दिशा-दिशा में; वीच-व्याप्त हुआ, तब; अँ वायुम्-कहीं भी; अँळुन्त-उदित; कौळुम् चुटर्-विपुल कान्ति के; मीन्कळ् यावुम्-नक्षत्र सभी; चैव्वायै-मंगल ग्रह; निकर्त्तत-के समान लगे; मेकम्-मेघ; चैक्करै औत्त-लाल गगन के समान लगे । २७९

उन बलिष्ठ वीरों ने अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से एक दूसरे को काटा । तब रक्त जो वह आया, आकाश में उछलकर सभी दिशाओं में फैल गया । उससे विपुल प्रकाशमय नक्षत्र, जहाँ कहीं भी उदित हुए, मंगलग्रह के समान (लाल) हो गये । मेघ भी लाल (सन्ध्या-) गगन के समान बन गये । २७९

वैन्द	वल्लिरुम्	बिडैर्नैडुङ्	गूडङ्गळ्	वीळच्
चिन्दि	यैङ्गणुञ्	जिदरुव	पोर्पोरि	तैरिप्प
इन्दि	रन्महन्	पुयङ्गळु	मिरविशे	युरनुम्
शन्द	वन्नेडुन्	दडक्कैह	डाक्कलिर्	इहर्व 280

वैन्त-खूब तप्त; वल्-घने; इरुम्पु इटै-लोहे पर; नैटु कूटङ्कळ्-बड़े हथौड़ों के; वीळ-पीटने से; पोरि तैरिप्प-अंगारे छूटते; अँङ्कणुम् चिन्ति-सब ओर गिरते; चितरुव पोल्-छितरते हैं जैसे; इन्तिरन् मकन्-इन्द्रपुत्र के; पुयङ्कळुम्-कन्धे और; इरवि चैय्-रविकुमार का; उरत्तुम्-वक्ष; चन्तुम्-सुन्दर; वल्-ताकतवर; नैटुम् तटम् कंकळ्-लम्बे विशाल हाथों के; ताक्कलिल्-प्रहारों से; तक्व- (पिटकर) खण्ड-खण्ड हुए । २८०

जब खूब तप्त लोहे पर भारी हथौड़ों की चोटें पड़ती हैं, तब लोहे के छोटे-छोटे तप्त कण चारों ओर उड़ते हैं। वैसे ही इन्द्रपुत्र के कन्धों से और सूर्यसूनु के वक्ष से, उनके आपस की वलिष्ठ सुन्दर हाथों की चोटों के कारण, अंश छूटकर उड़ने लगे। २८०

उरत्ति	नात्तुमडुत्	तुन्दुवर्	पादमिट्	टुदैप्पर्
करत्ति	नाल्विशैत्	तैरुवर्	कडिप्पर्निन्	डिडिप्पर्
मरत्ति	नालडित्	तुरप्पुवर्	पौरुप्पिन्नम्	वाङ्गिच्
चिरत्तिन्	मेलैरिन्	दोरुक्कुवर्	तैळिप्पर्त्ती	विळिप्पर् 281

उरत्तिनाल्—छाती से; मटुत्तु—टकराकर; उन्तुवर्—ढकेलते; पातम् इट्टु—पैर बढ़ाकर; उतैप्पर्—लात मारते; करत्तिनाल्—हाथों से; विचैत्तु—वेग के साथ; अैरुवर्—ढेलते; कटिप्पर्—काटते; निन्नु—अड़कर; इटिप्पर्—टकराते; मरत्तिनाल्—तरुओं से; अटित्तु—पीटकर; उरप्पुवर्—चिल्लाते; पौरुप्पु इतम्—गिरि-समूह; वाङ्कि—उखाड़ लेकर; चिरत्तिन् मेल्—सिरों पर; अैरिन्तु—फेंककर; ओरुक्कुवर्—दण्ड देते; तैळिप्पर्—नारे लगाते; ती विळिप्पर्—आग्नेय दृष्टि करते। २८१

वे एक दूसरे को अपनी छाती से टकराकर ढकेलते; पैरों से लात मारते; हाथों से वेग के साथ पीटते। दाँतों से काटते। खड़े होकर धक्का देते। तरुओं से पीटकर चिल्लाते। पर्वतसमूह लेकर सिर पर फेंककर दण्डित करते। गर्जन करते। अग्नि के समान लाल आँखों के साथ तरेरते। २८१

अैडुप्पर्	पड्डियुड्ड	ओरुवर्	योरुवर्विट्	तैरिवर्
कौडुप्पर्	वन्दुरड्ड	गुत्तुवर्	कैत्तलड्ड	गुळिप्पक्
कडुप्पि	निर्प्पेरुड्ड	गरुड्गैन्नच्	चारिहै	पिरुड्गत्
तडुप्पर्	पिन्नव	रौन्नरुवर्	तळुवुवर्	विळुवर् 282

ओरुवर् ओरुवर्—एक दूसरे को; पड्डि उरु—पकड़ लेकर; अैडुप्पर्—उठाते; विट्टु अैरिवर्—दूर फेंकते; उरम्—छाती; वन्तु—आकर; कौडुप्पर्—आगे करते; कै तलम् कुळिप्प—हाथों को (मुट्टियों को) धँसाते हुए; कुत्तुवर्—धँसा मारते; कडुप्पितिल्—अतिवेग से; पैरु कडुक्कु अैन—बड़े वातचक्र के समान; चारिकै पिरुड्कु—दायें और बायें पैतरे बदलते हुए; तडुप्पर्—रोकते; पिन्नरुवर्—पीछे हटते; ओन्नरुवर्—गुंथे रहते; तळुवुवर्—लपेट लेते; विळुवर्—नीचे गिरते। २८२

वे एक दूसरे को पकड़ लेते और दूर फेंकते। सामने आकर छाती आगे करते। ऐसा धँसा देते कि मुट्टियाँ ही शरीर के अन्दर धँस जायँ। प्रवल वातचक्र के समान वे पैतरे बदलते और रोकते। कभी पीछे हटते; कभी गुंथ जाते, चपेट में लेते और नीचे गिर जाते। २८२

वालि	नालुरम्	वरिन्दतर्	नैरिन्दुह	वलिप्पर्
कालि	नार्नेडुड्	गाल्पिडित्	तुड्डुवर्	कळल्वर्
वेलि	नालुड्	वैरिन्दत	विडल्वलि	युहिराल्
तोलि	नाक्कैह	ण्डुवरै	मुळैयैतत्	तौळैप्पर् 283

वालिनाल्-पूँछ से; उरम् वरिन्दतर्-वक्ष लपेटकर; नैरिन्दु उक-दलककर गिरने देते हुए; वलिप्पर्-खींचते; कालिनाल्-पैर से; नैट्टु काल्-लम्बे पैर को; पिडित्तु-मरोड़, पकड़कर; उट्टुवर्-पीड़ा देते; कळल्वर्-उस बन्धन से बच जाते; वेलिनाल्-भाले को; उड्डु अरिन्दत-खूब गड़ाकर फेंका गया हो, ऐसा; विडल्वलि-अति कठोर; उकिराल्-नाखूनों से; तौलित्तु-चमड़े से ढके; आक्कैकळ-शरीरों पर; नैट्टु वरै मुळै-बड़ी पर्वत-गुफाओं; अँत-के समान; तौळैप्पर्-छेद बना देते । २८३

एक दूसरे की छाती को अपनी पूँछ से लपेट लेकर ऐसा खींचते कि शरीर ही दलककर चू जाय ! पैरों से पैर पकड़कर खींचते और दुःख देते । पकड़ से बच जाते । शक्ति के प्रहार के समान अपने तेज कठोर नाखूनों को चलाकर चमड़े-मड़े उनके शरीरों पर छेद ही लगा देते, जो पर्वत की गुफाओं के समान दिखते । २८३

मण्ण	हत्तत	मलैहळु	मरड्गळु	मरुडम्
कण्ण	हत्तिनिड्	रोन्डिय	यावैयुड्	गैयाल्
अँण्ण	हप्पडित्	तैरिदलि	नैड्डलि	तिड्ड
विण्ण	हत्तिनै	मरैतत	मरिहडल्	वीळ्न्त 284

मण् अकतुत-पृथ्वी के; मलैकळम्-पर्वतों; मरड्कळम्-और तरुओं को; मरुडम्-और; कण् अकत्तिनिल्-दृष्टिपथ में; तोन्डिय-प्रकट; यावैयुम्-सभी को; कैयाल्-हाथों से; अँण् नक-गिनती को परिहास करते हुए (अनगिनत); पडित्तु-तोड़ लेकर; अँरितलिल्-एक दूसरे पर फेंकते; अँड्डलिल्-प्रहार करते, इसलिए; इड्ड-टूटे वे; विण्णकत्तिनै-व्योममण्डल को; मरैतत-ढकनेवाले; मरि कटल्-उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में; वीळ्न्त-गिरनेवाले बने । २८४

वे भूमि के हों, या आकाश के सभी पर्वतों और तरुओं और दृष्टि में पड़नेवाले सारे पदार्थों को तोड़कर उठा लेते और फेंकते । ऐसे पदार्थों की संख्या गिनती में ही न आ सकती थी । उनके शरीरों से लगकर वे टूट जाते और आकाश को ढकनेवाले या उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में गिरनेवाले बन जाते थे । २८४

वैरुविच्	चाय्न्दनर्	विण्णवर्	वैरैन्तै	विळम्बल्
औरुवर्क्	काण्डम	रौरुवरुन्	दोड्डिल	रुडन्
शैरुविड्	रुयत्तलिल्	चैड्गलल्	वैण्मयिर्च्	चैल्
मुरिपुड्	कान्तिडै	यैरिपरन्	दत्तवैत	मुनैवार् 285

आण्टु अमर्-वहाँ के युद्ध में; ओरुवरुम्-कोई; ओरुवरुक्कु-किसी से; तोड्डिलर्-नहीं हारा; उटन्नु-कण्ट उठाकर; चेरुविल्-युद्ध में; तुयत्तलिल्-मग्न रहे, इसलिए; चैम् कत्तल्-लाल कोपाग्नि; वैण् मयिर्-उनके (शरीर के) श्वेत रोमो द्वारा; चैल्-प्रकट हुई, इसलिए; मुरि पुल्ल-सूखी घास के; कान् इट्टे-वन में; अरि परन्तन-आग फैल गयी; अँत्त-जैसे; मुत्तैवार्-लड़े; विण्णवर्-व्योमवासी; वैरुवि-डरकर; चाय्न्तत्तर्-अस्थिर हुए; वैरु विळम्पल्-अलावा कहना; अँन्तै-क्या । २८५

तब जो युद्ध हुआ, उसमें कोई किसी से न हारा । एक दूसरे को पीड़ा देते हुए स्वयं कण्ट उठाकर लड़ रहे थे । तब कोपाग्नि उनके श्वेत बालों पर बाहर दिखाई दे रही थी । तब सूखी घास के वन में आग फैल रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित हो रहा था । वे इस भाँति युद्ध कर रहे थे । उसको देखकर व्योमवासी देव भी भय से अस्थिर हो गये । फिर इस लड़ाई का और कैसा वर्णन किया जाय ? । २८५

अन्न	तन्मैय	राड्डिलि	तमर्पुरि	पौळुदिन्
वन्तै	डुन्दडत्	तिरळ्पुयत्	तडुदिडल्	वालि
शौन्त	तम्बियैत्	तुम्बियै	यरितौलैत्	तैन्त
कौन्त	हड्गळिड्	करड्गळिड्	कुलैन्दुह	मलैन्दान् 286

अन्न-ऐसे; तन्मैयर्-रंग-ढंग के वे; आड्डिलिन्-बल लगाकर; अमर्पुरि पौळुतिन्-जब लड़े, तब; वल्-बलवान; नैटु-लम्बे; तटम्-विशाल; तिरळ्-स्थूल; पुयत्तु-भुजा वाले; अटु तिडल्-शत्रुसंहारक बलशाली; वालि-वाली ने; चौन्त तम्पियै-जिसने ललकार सुनाई, उस लघु भाई से; तुम्पियै-हाथी को; अरि-सिंह; तौलैत्तु अँन्त-जैसे मिटा देगा वैसे; कौल् नकळ्कळिल्-घातक नाखूनों से; करड्कळिल्-व हाथों से; कुलैन्तु उक-जर्जर हो गिर जाए, ऐसा; मलैन्तान्-युद्ध किया । २८६

जब ऐसे रंग-ढंग के वाली और सुग्रीव अपना सारा बल लगाकर लड़ रहे थे तब बलवान, लम्बे, विशाल और स्थूल हाथों वाला वाली सुग्रीव से, जिसने उसको ललकारा था, इस तरह लड़ा जैसे एक सिंह हाथी का बल मिटाता है । उसने अपने कठोर घातक नाखूनों और हाथों से सुग्रीव पर प्रहार करते हुए लड़ाई की । तब सुग्रीव निर्बल होकर गिर गया । २८६

[इसके बाद तीन अतिरिक्त पद हैं, जिनका सार है— वाली के प्रहारों से जर्जर होकर सूर्यसूनु प्रभु श्रीराम के पास गया और क्षोभ के साथ उलाहना की । प्रभु ने कहा कि मुझे भेद नहीं दिखाई दिया । अब पुष्पित लता पहनके जाओ । दुःखो मत ।

सिर पर नक्षत्र-माला जैसा पुष्पहार पहने हुए सुग्रीव व्याघ्र के समान वज्रनाद की मात देनेवाले गर्जन के साथ युद्ध करने आया और शत्रुतप वाली को मुट्ठी से मारकर त्रस्त कर दिया ।

शंकितमन वाली ने गुस्से के साथ ऐसा घूरा कि यम भी डर गया । फिर मन्दहास के साथ उसने अपने हाथों और पैरों से सूर्यपुत्र के मर्मस्थलों पर ऐसा प्रहार किया कि सुग्रीव मूर्च्छित हो गया ।

ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि तीनों पद क्षेपक हैं । किसी वाल्मीकी-भक्त तमिळु-विद्वान् द्वारा बनाये गये हैं । कथा के रवैये को ये साफ़ रोकते हैं ।]

कक्कि	नानुयि	रुयिर्प्पोडुञ्	जैविहळिर्	कण्णिन्
उक्क	ताङ्गैरिप्	पडलैयो	डुदिरत्ति	नोदम्
तिक्कु	नोक्कितन्	शैङ्गदि	रोन्महन्	शैरुक्किप्
पुक्कु	मीक्कोडु	नैरुक्कित	तिन्दिरन्	पुदल्वन् 287

आङ्कु-तब; चैम् कतिरोन् मकन्-किरणमाली के पुत्र ने; उयिर्प्पोटुम्-निःश्वास के साथ; उयिर्-प्राणों को; कक्कितान्-उगला; चैविकळित्-कानों; कण्णिल्-व आँखों से; उतिरत्तिन् ओतम्-रक्त का प्रवाह; अरि पटलै ओटु-अग्निपटल के साथ; उक्कतु-निकला और बूँदें छिड़कीं; तिक्कु नोक्कितन्-सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ायी; इन्तिरन् पुतल्वन्-इन्द्र-पुत्र वाली ने; चैरुक्कि-आवेग के साथ; मी कौटु पुक्कु-और भी उसके पास जाकर; नैरुक्कितन्-कण्ट दिया । २८७

तब सुग्रीव का दम फूल गया । प्राण निकलने लगे । कानों और आँखों से रक्त का प्रवाह अग्निपटल के साथ निकलकर बहा । वह सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ाने लगा । तब इन्द्रपुत्र वाली ने आवेग के साथ उसके पास जाकर और भी यंत्रणा दी । २८७

अँडुत्तुप्	पारिडै	यैरुवैन्	पर्त्रियेन्	रिळवल्
कडित्त	लत्तिनुड्	गळुत्तित्तुन्	दन्निर्	करङ्गळ्
मडुत्तु	मीक्कोण्ड	वालिमेर्	कोलीन्ऱु	वाङ्गित्
तौडुत्तु	नाणौडु	तोळुत्तु	तिराहवन्	रुन्दात् 288

पर्त्रि अँडुत्तु-पकड़कर उठाकर; पार् इटै-भूमि पर; अँरुवैन्-पटक दूंगा; अँन्ऱु-कहकर; इळवल्-छोटे भाई को; कटि तलत्तित्तुम्-कमर में; कळुत्तित्तुम्-व गले में; तन् इस करङ्गळ् मडुत्तु-अपने दोनों हाथों को देकर; मी कौण्ट (सुग्रीव को) जिसने ऊपर उठाया; वालि मेल्-उस वाली पर; इराकवन्-श्रीराघव ने; कोल् ओन्ऱु वाङ्कि-एक बाण लेकर; तौडुत्तु-धनुष पर संधानकर; नाण् ओटु-डोरे के साथ; तोळ् उळुत्तु-कन्धा मिले, ऐसा डोरा खींचकर; तुरन्तान्-चलाया । २८८

तब वाली ने सोचा कि इसको उठाकर भूमि पर पटक दूँ । इसलिए उसने सुग्रीव की कमर पर एक हाथ और कन्धे पर एक हाथ देकर उसे उठा लिया । तभी श्रीराम ने एक बाण लेकर धनु में रखा, डोरा कन्धे तक खींचकर बाण को छोड़ दिया । २८८

कारुम्	वारुवैक्	कदलियिन्	कत्तियितैक्	कळियच्
चेरुम्	जूशियिर्	चैन्ऱुडु	निन्ऱुदेंन्	शैप्प
नीरु	नीरुदरु	नैरुप्पुम्बन्	काऱुडुङ्गीळ्	निरन्द
पारुञ्	जार्वलि	पडैत्तव	नुरत्तैयप्	पहळि 289

अ पकळि-वह बाण; नीरुम्-जल; नीर् तरु नैरुप्पुम्-जल का जनक अनल; वल् कारुम्-(उसका जनक) बलवान अनिल; कोळ्-नीचे; निरन्त-व्याप्त; पारुम्-थल; चार्-इनका सम्मिलित; वलि पडैत्तवन्-बल जिसमें था, उस वाली के; उरत्तै-छाती में; कारुम्-पके; वार् चुवै-अति स्वादिष्ट; कतलियिन् कत्तियितै-कदली-फल में; कळिय चेरुम्-घुस जानेवाली; चूचियिन्-सूई के समान; चैन्ऱुडु-शीघ्र घुसा; चैप्प निन्ऱुडु-कहने के लिए रहा जो; अन्-वह क्या है। २८६

वाली असाधारण रूप से बलवान था। उसमें जल, जल का जनक अनल, उसका जनक अनिल और पृथ्वी—इन सब भूतों का सम्मिलित बल था। ऐसे वाली के वक्ष में वह शर सूई के समान घुसा जो पके और अति स्वादिष्ट कदलीफल में घुस रही हो! अब कहने के लिए क्या वचा है? (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि वह रुका। क्या समझाने को रुका?।)। २८९

अलङ्गु	तोळ्वलि	यळिन्ददन्	ऱुम्बियै	यरुळान्
वलङ्गीळ्	पारिडै	यैऱुवा	नुरुपोर्	वालि
कलङ्गि	वल्विशैक्	काल्हिळर्न्	दैऱिवुळ्	गडेनाळ्
विलङ्गन्	मेरुवुम्	वेर्परिन्	दालैन्	वीळ्न्तान् 290

अलङ्कु तोळ् वलि-शोभायमान कन्धों का वल; अळिन्त-जिसका मिट गया; तन् तम्पियै-उस अपने भाई को; अरुळान्-दया न दिखाकर; वलम् कौळ्-कठोर; पार् इटै-भूमि पर; अैऱुवान्-पटकने को; उऱु-प्रस्तुत; पोर् वालि-योद्धा वाली; कलङ्कि-हड़बड़ाकर; वल्-प्रबल; विचै काल्-वेगवान पवन; किळर्न्तु-उठकर; अैऱिवु उऱुम्-सबको (जब) उड़ा देता है; कटै नाळ्-उस युगान्त के दिन में; विलङ्कल् मेरुवुम्-मेरुपर्वत भी; वेर् परिन्ताल् अैन्त-जड़ से उखड़ गया हो, ऐसा; वीळ्न्तान्-नीचे गिरा। २९०

शर के लगने से वह निर्दय वाली गिरा जिसने भुजबल खोकर कण्ठग्रस्त अपने भाई को कठोर भूमि पर पटकना चाहा। वह बलवान योद्धा था। वह वाली चक्कर खाकर ऐसा गिरा, मानो युगान्त में, प्रबल रूप से उठकर सभी जीवों व पदार्थों को उखाड़ देनेवाले पवन के आघात से जड़ से उखड़कर मेरुपर्वत गिरा हो। २९०

अैळ्न्डु	वान्मुह	डिडित्तुहप्	पडुप्पलैन्	ऱिवरुम्
उळ्न्डु	पेर्वुळित्	तिशैतिरिन्	दिरुप्पलैन्	रुक्कुम्

विळुन्तु पारितै वैरौडुम् पडिप्पलैन् ओरुम्
अळुन्तु मिच्चर मय्यदव तार्होलैन् इयिर्क्कुम् 291

अळुन्तु-उठकर; वान् मुकटु-आकाश-शिखर को; इटित्तु-धक्का देकर;
उक पटुप्पल् अन्तु-गिरा दूंगा, कहते हुए; इवरुम्-ऊपर उठता; उळुन्तु पेरवु
उळि-उड़द के लुढ़कने की देर में; तिचै तिरिन्तु-चारों दिशाओं में घूमकर;
इरुप्पल् अन्तु-तोड़-फोड़ डालूंगा, कहते हुए; उरुक्कुम्-कोप दिखाता; विळुन्तु-
नीचे झपटकर; पारितै-भूमि को; वेर् ओटुम्-जड़ के साथ; पडिप्पल्-उखाड़
लूंगा; अन्तु ओरुम्-यह सोचता; अळुन्तुम्-गड़नेवाला; इ चरम्-यह शर;
अय्तवन्-चलानेवाला; आर् कौल्-कौन है तो; अन्तु-ऐसा; अयिर्क्कुम्-सन्देह
करता । २६१

वाली सँभलकर उठा । फिर 'आकाश की चोटी को धक्का देकर गिरा
दूंगा' यह कहते हुए उठता । 'उड़द के एक बार घूमने के समय के अन्दर
ही सारी दिशाओं में घूमकर सारी वस्तुओं को तोड़-फोड़कर मिटा दूंगा'
—ऐसा कहकर अपना गुस्सा दिखाता । 'झपटकर इस भूमि को जड़ से खोद
दूंगा' —ऐसा विचार करता । फिर संशय उठाता कि इस तरह मेरी छाती
में गड़नेवाले शर का प्रेरक कौन होगा ? । २९१

अँरुड् गैयिनै निलत्तौडु मैरिप्पौडि पिउक्कच्
चुर्रु नोक्कुरुज् जुडुशरत् तैत्तुणैक् करत्ताल्
पड्रि वालिनुम् कालिनुम् पल्लिनुम् बरिप्पात्
उड्रौ णामैयि नुलैवुरु मलैयैत्त वुरुळुम् 292

कैयितै-हाथ को; निलत्तौडु-भूमि पर; अँरुम्-पीटता; अँरि पौडि-
अंगारे; पिउक्क-छितराते हुए; चुर्रुम्-चारों ओर; नोक्कुरुम्-देखता;
चुटु चरत्तै-जलानेवाले उस शर को; तुणै करत्ताल्-दोनों हाथों से; पड्रि-
पकड़कर; वालिनुम् कालिनुम् पल्लिनुम्-पूँछ से, पैरों से और दाँतों से; पड्रिप्पात्-
उखाड़ता; उड्रु-उखाड़ते; ओणामैयिन्-न उखड़ने पर; नुलैवु उरुम्-दुःखी होता;
मलै अँत-पर्वत के समान; उरुळुम्-लोटता । २६२

(क्षोभ और क्रोध की दशा में) वह हाथ से धरती को पीटता ।
आँखों से अंगारे निकालते हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ाता । जलानेवाले
उस शर को वह पूँछ, हाथों और दाँतों से पकड़कर बाहर खींचने का प्रयास
करता । पर उस काम को असाध्य पाकर खीझ उठता । पर्वत के समान
भूमि पर लोटता । २९२

देव रोवैन् वयिर्क्कुमत् तेवरिच् चैयलुक्
काव रोववर्क् काड्रुलुण् डोवैन् मयलोर्
एव रोवैन् नहैशैयु मौरवन् यिरैवर्
मूव रोडुमौप् पान्शैय लामैन् मुनियुम् 293

तेवरो-क्या देव हैं; अंत-ऐसा; अयिर्कुम्-संग्रह करता; अ तेवर्-
वे देव; इ चैयलुकु-इस काम के लिए; आवरो-(योग्य) होंगे क्या; अवरकु-
उनमें; आरुल् उण्टो-शक्ति है क्या; अंतुम्-पूछता; अयलोर्-दूसरे; एवरो
अंत-कौन है, कहकर; नर्क चैयुम्-हंस उठता; इरुवर् मूवरोटुम्-तीनों देवों को;
ओप्पान्-समानता करनेवाले; ओरुवत्ते-उन अकेले देव का; चैयल् आम्-काम है;
अंत-कहकर; मुत्तियुम्-कूपित होता । २६३

उसे सन्देह हुआ कि क्या देवों ने यह शर चलाया होगा ? पर क्या
देवता लोग ऐसा काम करने को सम्मत होंगे ? उनमें शक्ति भी है ? फिर
दूसरे कौन होंगे ? वह हंस उठता । फिर सोचता कि त्रिदेवों के समान बल
रखनेवाले, अपार महिमावान, किसी अद्वितीय देव ने ही किया होगा !
यह सोचकर वह कोपवश हो जाता । २९३

नेमि	दात्कौलो	नीलहण्	उन्नेडुल्	जूलम्
आमि	दाङ्गौलो	वन्नेनिर्	कुन्नुल्	वयिलुम्
नाम	विन्दिरन्	वच्चिरप्	पडैयुमेन्	नडुवण्
पोमे	नुन्दुणप्	पोदुमो	यादैत्तप्	पुळुङ्गुम् 294

नेमि तान् कौलो-चक्रायुध (सुदर्शन) ही है क्या; नीलकण्ठन्-नीलकंठ शिवजी
का; नैट्टु चूलम्-लम्बा त्रिशूल; इतु आम् कौलो-यह है क्या; अन्नु अन्तिल्-नहीं
तो; कुन्नु उरुधु-(क्रौंच-) पर्वत भेद जो गया; अयिलुम्-(कार्तिकेय की) शक्ति
भी; इन्तिरन्-इन्द्र का; नाम-भयानक; वच्चिर पडैयुम्-वज्रायुध भी; अन्तु
नडुवण्-मेरे बीच से; पोम् अन्तुम्-जायें ऐसा; तुण्-उतना; पोतुमो-(सशक्त)
बने हैं क्या; यातु-कौन सा है; अंत-यह सोचकर; पुळुङ्कुम्-व्याकुल होता । २६४

‘यह जो मेरी छाती को विद्ध कर रहा है, क्या महाविष्णु का सुदर्शन
चक्रायुध है ? या नीलकण्ठ शिवजी का लम्बा त्रिशूल है ? नहीं तो क्रौंच
पर्वत को जिसने वेधा, वह कार्तिकेय की शक्ति हो या इन्द्र का भयानक
वज्रायुध हो, वे मेरे शरीर के मध्य में भेदकर नहीं जा सकेंगे । यह कौन
सा है ?’ ऐसा सोचते हुए वाली व्याकुल हुआ । २९४

विल्लि	नारुर्प	परिदिव्वैल्	जरमेन्	वियक्कुम्
शौल्लि	नान्नेडु	मुनिवरो	तूण्डिन्ना	रैन्नुम्
पल्लि	नारुपडिप्	पुरुम्बल	हालुन्दन्	नुरत्तैक्
कल्लि	यारुप्पोडु	परिक्कुम्प	पहळियैक्	कण्डान् 295

तन् उरत्तै-अपनी छाती को; कल्लि-छेदकर; आरुप्पु ओट्टु-शब्द के साथ;
पडिक्कुम्-घुस जो रहा; अ मकळियै-उस बाण को; कण्डान्-देखकर; इ वैम्
चरम्-यह सन्तापक शर; विल्लित्ताल्-घनु द्वारा; तुरप्पु अरितु-प्रेषणीय नहीं है;
अंत वियक्कुम्-ऐसा विस्मय करता; चौल्लित्ताल्-अपने (अमोघ) शब्दों से; नैट्टु
मुत्तिवरो-महर्षियों ने; तूण्डित्तार्-प्रेरित किया क्या; अन्तुम्-सोचता; पल कालुम्-

अनेक बार; पल्लिताल्-अपने दाँतों से; पडिपुडुम्-(काट) निकालने का प्रयास करता । २६५

फिर उसने बाण को देख लिया जो उसके कठोर वक्ष को बड़े शब्द के साथ भेद रहा था । उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह बाण किसी धनु द्वारा प्रेषित भी किया जा सकता है ? उसने विचार किया कि क्या महर्षियों ने अपने अमोघ (मन्त्र-) वचन से इसे प्रेरित किया ? अनेक बार उसने अपने दाँतों से बाहर खींच लेने का प्रयास किया । २९५

शरम्	नुम्बडि	तैरिन्दु	पलपडच्	चलित्तु
उरम्	नुम्बद	मुयिरौडु	मुरुविय	वीत्तुईक्
करमि	रण्डित्तुम्	वालित्तुम्	कालित्तुम्	गळ्ळित्तुम्
परम	नत्तवत्	पैयरडि	हुर्वेन्नत्	पडिप्पात् 296

चरम् अँतुम् पटि तैरिन्तु-शर है, ऐसा मालूम हो गया; पल पट-अनेक प्रकार से; चलित्तु अँतु-चंचल होने से क्या (लाभ); उरम् अँतुम् पतम्-वक्ष नाम के स्थान को; उयिर् ओटुम्-मेरे प्राणों के साथ; उरुविय ओत्तुई-भेद जानेवाले इस अद्वितीय शर को; करम् इरण्डित्तुम्-बोनों हाथों से; वालित्तुम्-पूँछ से; कालित्तुम्-व पैरों से; कळ्ळित्तुम्-अपनी छाती से निकालकर; परमत्-बड़े ही श्रेष्ठ; अन्तवत्-उस (चलानेवाले) का; पैयर्-नाम; अरिक्कुवैत्-जान लूँगा; अँत-सोचकर; पडिप्पात्-निकालने लगा । २६६

वाली ने कुछ निश्चय किया । 'यह मालूम हो गया कि यह बाण है । तब अनेक प्रकारों से चंचल होने से क्या लाभ होगा ? यह शर मेरी छाती को मेरी जान के साथ भेदकर चल रहा है ! इस अपूर्व शर को मैं अपनी पूँछ और पैरों का उपयोग करके बाहर खींच लूँगा और उसका नाम देख लूँगा जो परमवीर लगता है ।' यह निश्चय करके वह उस बाण को खींचने लगा । २९६

ओङ्ग	रुम्पैरुन्	दिउलुडै	मत्तत्तुळ्	ळत्तत्
वाङ्गि	नान्मड्	वाळियै	याळिपोल्	वालि
आङ्गु	नोक्किन्	रमरु	मवुणरुम्	पिरुम्
वीङ्गि	नार्हडोळ्	वीररै	यार्विय	वादार् 297

याळि पोल्-'याळी' (नामक भयंकर जानवर) की तरह; वालि-वाली ने; ओङ्कु-वर्धनशील; अरुम् पैरुम्-अपूर्व, बड़ा; तिउल् उटै-बलसंयुक्त; मत्तत्तु-मन वाला; उळ्ळत्तत्-जीवट का (जो था); अ वाळियै-उस बाण को; वाङ्किन्नात्-जोर से पकड़ लिया; आङ्कु नोक्किन्-वहाँ देखा; अमरुम्-देवों और; अवुणरुम्-दानवों और; पिरुम्-अन्यों ने; तोळ् वीङ्किन्नात्-उनके कन्धे (विस्मय और गर्व से) फूल उठे; वीररै-वीरों की; वियवातार-प्रशंसा न करनेवाले; यार्-कौन है । २९७

वाली 'याळी' (बहुत ही बलवान अप्राप्य या कल्पित जानवर) के समान बलिष्ठ था। मन का भी बहुत बड़ा साहसी था। बड़ा ही जीवट का था। उसने उस बाण को पकड़कर आगे जाने से रोक दिया। यह बड़ा ही वीरता का काम था। देवों, दानवों और अन्यो ने उसे देखा तो उनकी भुजाएँ भी फूल उठीं। उनके मन में उतनी उमंग भर गयी। हाँ ! वीरों को देखकर कौन विस्मय और उमंग से नहीं भरता ? । २९७

❖ वाशत्	तारवत्	मार्बन्नु	मलैवळ्ड्	गरुवि
ओशैच्	चोरियै	नोक्किन	नुडन्पिडप्	पैन्नुम्
पाशत्	ताऱ्पिणिप्	पुण्डवत्	तम्बियुम्	वशुङ्गण्
नेशत्	तारैहळ्	शौरितर	नैडुनिलज्	जेरुन्दात् 298

वाचम् तार्-सुवासित माला; अवन्-(पहने हुए) उसके; मारुपु अँतुम्-वक्ष रुपी; मलै वळ्डकु-पर्वत से निःसृत; अरुवि-सरिता-सदृश; ओचै चौरियै-शब्दायमान रक्त को; उडन् पिडपु-सहोदर के; अँतुम्-उस; पाचत्तात्-पाश से; पिणिप्पु उण्ट-वद्ध; अ तम्बियुम्-वह भाई (सुग्रीव) भी; नोक्कितन्-देखकर; पच्चुम् कण्-स्नेहार्द्र आँखों से; नेच तारैकळ्-प्रेम के आँसू; चौरि तर-दहाते हुए; नैडु निलम् चेर्न्तात्-लम्बी धरती पर गिरा। २९८

सुवासित मालाधारी वाली का वक्ष पर्वत के समान था। उससे रक्त की सरिता वह चली। शोर के साथ बहनेवाले रक्त को सुग्रीव ने देखा। वह सहोदर-प्रेम के पाश से बद्ध था। उसकी प्रेमार्द्र आँखों से बलात् भ्रातृस्नेह-जनित आँसू की धाराएँ बहने लगीं और वह धरती पर लम्बा व चित गिर गया। २९८

❖ पडित्त	वाळियैप्	परुवलित्	तडक्कैयाऱ्	पऱ्ऱि
इरुप्पै	नैन्ऱुहोण्	डैळुन्दत्तन्	मेरुवै	यिरण्डाय्
मुऱिप्पै	नैन्निन्	मुऱिवदन्	रामैत्त	मौळियाप्
पौऱित्त	नामत्तै	यऱिहुवा	नोक्कितन्	पुहळोन् 299

पडित्त वाळियै-(अन्दर) धँसते हुए उस बाण को; परु वलि-अधिक बली; तड कैयाल्-विशाल हाथ से; पऱ्ऱि-पकड़कर; इरुप्पैन्-तोड़गा; अँन्ऱु कौण्ड-कहते हुए; अँळुन्दत्तन्-उठा; मेरुवै-मेरु को; इरण्डाय्-दो (टुकड़ों) में; मुऱिप्पैन् अँन्निनुम्-तोड़ सकता हूँ, तो भी; मुऱिवनु अन्ऱु आम्-यह टूटनेवाला नहीं है; अँन्ऱु मौळिया-ऐसा कहते हुए; पुहळोन्-स्तुत्य वाली; पौऱित्त-अंकित; नामत्तै-नाम को; अऱिकुवान्-जानने के लिए; नोक्कितन्-देखा। २९९

वाली ने बाण को बाहर निकाल दिया। 'मैं अपने बहुत ही बलवान और विशाल हाथों से उसे पकड़कर तोड़ दूँगा' —यह विचार करके उठा। पर उसे कहना पड़ा कि मेरु को भी दो खण्डों में तोड़ सकता हूँ। पर इसको

तोड़ना असाध्य है। यह कहते हुए उसने उसमें अंकित नाम को जानने के लिए उस पर दृष्टि चलायी। २९९

❖ मुम्मैशा लुलहुक् कैल्ला मूलमन् दिरत्तै मुर्रुम्
तम्मैये तमक्कु नल्हुन् दनिप्पैरुम् बदत्तैत् तात्ते
इम्मैये मरुम् नोय्क्कु मरुन्दितै यिराम वैनत्तुम्
शैम्मैशैर् नामन् दन्तैक् कण्गळिर् रैरियक् कण्डान् 300

मुम्मै चाल्-त्रिविध; उलकुक्कु अल्लाम्-सारे लोकों के; मूल मन्त्तिरत्तै-मूल मन्त्र को; मुर्रुम्-पूर्ण रूप से; तमक्कु-उनके भक्तों को; तम्मैयै नल्कुम्-नामी को ही दिलानेवाले; तत्ति पेरुम् पतत्तै-अद्वितीय श्रेष्ठ पद को; तात्ते-स्वयं; इम्मैये मरुम् नोय्क्कुम्-इह-पर भवरोग के; मरुन्दितै-औषध को; इराम अन्तुम्-राम के; शैम्मै चैर्-महान; नामम् तन्तै-नाम को; कण्कळिल्-आँखों से; रैरिय-स्पष्ट रूप से; कण्डान्-देखा। ३००

(वहाँ वाली ने क्या नाम देखा ?) त्रिविध, भूमि, मध्य और पाताल के लोकों का आधार मन्त्र; भक्तों को पूर्णतः अपने (नामी) को दिला देनेवाला विशिष्ट अद्वितीय शब्द; इह-पर के भवरोग का श्रेष्ठ औषध; राम का महिमामय नाम—इसको वाली ने साफ़-साफ़ अपनी आँखों से देखा। ३००

❖ इल्लरन् दुर्न्द नम्बि यैम्मत्तोर्क् काहत् तङ्गळ्
विल्लरन् दुर्न्द वीरन् रोन्डलाल् वेद नन्नूल्
शौल्लरन् दुर्न्दिलाद सूरियन् मरबुन् दौल्लै
नल्लरन् दुर्न्द दैन्ता नहैवर नाणुक् कौण्डान् 301

इल्लरम्-गृहस्थ धर्म के; दुर्न्द-त्यागी (जो वन में आये हैं); नम्बि-नायक; यैम्मत्तोर्क्कु आक-हम लोगों के लिए; तङ्कळ्-अपना; विल् अरम्-धनु-धर्म; दुर्न्द-त्यागी; वीरन्-वीर; रोन्डलाल्-अवतार से; वेतम् नल् नूल्-वेदों के श्रेष्ठ शास्त्रों में; चौल्-प्रतिपादित; अरम्-धर्म; दुर्न्दिलात्-जिसने नहीं त्यागा; सूरियन् मरपुम्-उस सूर्यकुल ने भी; दौल्लै नल् अरम्-प्राचीन सद्धर्म; दुर्न्दतु-त्याग दिया; अन्ता-सोचकर; नकै वर-हँसी के आने से; नाणु कौण्डान्-शरम खायी। ३०१

(वाली सोचने लगा।) घर-बार छोड़कर वन में आये हुए श्रीराम हम जैसे वानरों के कार्य में अपने धनु-धर्म को त्याग चुके—ऐसे वीर श्रीराम के जन्म लेने से वेदशास्त्र-विहित धर्ममार्ग से न हटनेवाला सूर्यवंश भी सनातन सद्धर्म छोड़नेवाला हो गया। उसे हँसी आयी। और शरम का अनुभव हुआ। ३०१

❖ वैळ्हिडु महडज् जाय्क्कुम् वैडिपडच् चिरिक्कु मोट्टुम्
उळ्हिड मिदुवन् दान्तो रोडगर् मोवैत् रुत्तन्

मुळ्हिड्डु गुळियिड् पुक्क मूरिवैड् गळिनल् यानै
 तीळहीड्डु गिडन्द दैन्नत् तुयरुळन् इळिन्दु शोर्वान् 302

वैळ्किट्टुम्-शरम का अनुभव करता; मकुटम्-किरीट को (सिर को);
 चाय्क्कुम्-झुकाता; वैट्टि पट-ठठाकर; चिरिक्कुम्-हँसता; मोट्टुम्-फिर;
 उळ्किट्टुम्-चिन्तामग्न होता; इतुवुम्-यह भी; ओर्-एक; ओळ्कु-उत्कृष्ट;
 अरम् तातो-धर्म है क्या; अँन्ऱु उन्नत्तुम्-ऐसा सोचता; कुळियिल् पुक्क-एक गड्ढे
 में गिरा हुआ; मूरि-बलवान; वैम्-भयंकर; कळि नल् यानै-मत्त, श्रेष्ठ हाथी;
 मुळ्किट्टुम्-अन्दर खींचनेवाले; तीळ्कु ओट्टुम्-पंक में; किटन्तत्तु अँन्न-फँस गया
 हो, ऐसा; तुयर् उळ्ऱु-दुःख में पड़कर; अळिन्तु-बल खोकर; चोर्वान्-
 थक जाता । ३०२

वाली शरम का अनुभव करता; किरीट (सिर) को झुकाता;
 ठठाकर हँसता । फिर गम्भीर रूप से चिन्तामग्न हो जाता । सोचने
 लगता कि क्या यह भी एक श्रेष्ठ धर्म है ! गड्ढे में पंक में पड़कर घँसनेवाले
 सबल भयंकर और मत्त गज के समान वह दुःखी होकर छटपटाया, बल
 खोकर बहुत शिथिल हो गया । ३०२

✽ इरैदिरम् बिनना लैन्ने यिळिन्दुळो रियर्क्क यन्नन्
 मुरैदिरम् बिनना लैन्ऱु मौळिहिन्ऱु मुहत्तान् मुन्नर्
 मरैदिरम् वाद वाय्मै मन्नर्क्कु मनुविर् चोल्लुम्
 तुरैदिरन् वामर् काक्कत् तोन्ऱिनान् वन्दु तोन्ऱ 303

इरै तिरम्पित्तन्-राजा धर्मच्युत हो गये; आल्-इसलिए; इळिन्तुळोर्-नीच
 लोगों की; इयर्क्क-स्थिति; अँन्ने-क्या होगी; अँन्तिन्-मेरे सम्बन्ध में; मुरै
 तिरम्पित्तान्-तो क्रम-भंग कर दिया है; अँन्ऱु-ऐसा; मौळिकिन्ऱु-आपसे आप
 बोलते रहनेवाले; मुक्त्तान् मुन्नर्-मुख के वाली के सामने; वाय्मै-सच्चे;
 मन्नर्क्कु-राजाओं के लिए; मनुविल् चोल्लुम्-मनु में कथित; मरै-वेद-विचार
 के; तिरम्पात-विपरीत जो न जाते थे; तुरै-उन मार्गों की; तिरम्पामल्-नष्ट
 न होने देते हुए; काक्क-रक्षा करने के हेतु; तोन्ऱितान्-अवतरित श्रीराम; वन्दु
 तोन्ऱ-उसके सामने आये, तब । ३०३

स्वयं राजाराम ने धर्ममार्ग छोड़ दिया, तो नीच लोगों की क्या
 हस्ती है ? वह भी राजाराम ने मेरे सम्बन्ध में क्रम-भंग कर दिया है !
 वाली यों आप से आप कह ही रहा था कि उसके सामने श्रीराम आ प्रकट
 हुए । ये श्रीराम मनु-शास्त्र में राजाओं के सम्बन्ध में निर्दिष्ट वेदतत्त्व के
 विपरीत न चलने का क्रम सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुए थे । ३०३

✽ कण्णुर्ऱान् वालि नीलक् कार्मुहिल् कमलम् बूत्तु
 मण्णुर्ऱु वरिवि लेन्दि वरुवदै पोळु मालेप्
 पुण्णुर्ऱु निरुत्तिर् चोरि पौङ्गिये पौडिप्प नोक्कि
 अण्णुर्ऱा यैन्ऱैय् दायैन् रेशुवा नियम्ब लुर्ऱान् 304

नीलम् कार् मुकिल्-काला वर्षाकालीन मेघ; कमलम् पूतुतु-विकसित कमल धारण करके; वरि विल् एन्ति-सबन्ध धनुष लेकर; मण् उरु-भूमि पर आकर; वरुवते पोलुम्-आता हो जैसे; मालै-महाविष्णु को; कण् उरुशान् वालि-आँखों से देखकर वाली; पुण् उरु-व्रणयुक्त; निरुत्तिल्-छाती से; चोरि-रक्त; पौड्किये-उमड़कर; पौटिप्प-उठा, उस स्थिति में; नोक्कि-देखकर; अँन् (अँण्) उरुशाय्-क्या सोचा; अँन् चैय्ताय्-क्या किया; अँन्-ऐसा; एचुवान्-भर्त्सना देते हुए; इयम्पल् उरुशान्-कहने लगा । ३०४

वाली ने श्रीराम को देखा, जो एक काले वर्षाकालीन मेघ के समान थे । उस मेघ में कमल खिले थे । वह धनुष लिये हुए धरती पर आ रहा था । वाली की छाती के व्रण से रक्त उमड़ आ रहा था । वाली ने श्रीराम से पूछा कि क्या सोचा और क्या किया है तुमने ? वह और भी उन्हें भर्त्सना देने लगा । ३०४

ॐ वाय्मैयु मरबुड् गात्तु मन्तुयिर् तुरन्तु वळ्ळल्
तूय्मैयन् मैन्द तेनी बरदन्मुन् रोन्त्रि ताये
तीमैतान् पिउरैक् कात्तुत् तान्शैय्दाइ उीदन् शामो
ताय्मैयु मरैयुम् नदपुन् दरुममुन् दळुवि नित्शाय् 305

ताय्मैयुम्-मातृवत्सलता; मरैयुम्-और वेदसम्मत बर्ताव; नदपुम्-और मैत्री; तरुममुम्-और धर्म; तळुवि नित्शाय्-इनको अपनाये रहनेवाले; वाय्मैयुम्-सत्य और; मरपुम्-कुलाचार का; कात्तु-पालन कर; मन् उयिर् तुरन्तु-अपने नित्य प्राण जिन्होंने छोड़े थे; वळ्ळल्-उन दानी; तूय्मैयन्-और पवित्र पुरुष दशरथ के; मैन्तते-पुत्र; नी-तुम; परतन् मुत्-भरत के पहले; तोन्त्रिताये-(अग्रज के रूप में) पैदा हो गये; तीमै-बुराई; पिउरै कात्तु-दूसरों से बचाकर; तान् चैय्ताल्-वह खुद करे तो; तीतु अन्नु आमो-(बुराई) बुराई नहीं रहेगी क्या । ३०५

मातृवत्सलता, वेदमार्ग, मैत्री, धर्म आदि को अपनाए रहनेवाले श्रीराम ! दशरथ सत्य और अपने कुल के आचार का सम्यक् पालन करके उसी के अर्थ अपने प्राण भी त्याग चुके । ऐसे दानी और पवित्र दशरथ के पुत्र ! तुम कैसे भरत के अग्रज हो पैदा हुए ? दूसरों को बुराई करने से रोको और स्वयं बुराई करो तो वह बुराई, बुराई नहीं रहेगी क्या ? । ३०५

कुलमिदु कल्वि यीदु कौरुमी दुर्ऋ नित्श
नलमिदु बुवन् मून्त्रिन् नायह मीदु नित्शोळ्
वलमिदिव् वुलहन् दाङ्गुम् वण्मैयी दैन्शाय् रिण्मै
अलमरल् शैय्य लामो वरिन्दिरुन् दयर्न्दु ळारपोल् 306

इतु कुलम्-यह तुम्हारा कुल है; कल्वि ईतु-तुम्हारी विद्या यह है; कौरुम् ईतु-विजय यह है; उरु नित्श-तुम्हारे जन्मसिद्ध; नलम्-अच्छे गुण; इतु-ये हैं; पुवत्तम् मून्त्रिन्-तीनों लोकों का; नायकम् ईतु-नायकत्व यह है; नित् तोळ् वलम् इतु-तुम्हारा भुजबल यह है; इ उलकम् ताङ्कुम्-यह संसार-भरण करने की; वण्मै

ईतु-वदान्यता यह है; अँनूडाल्-तो; अरिन्तिरुन्तु-जानते हुए भी; अयरन्तु उळार् पोल्-भ्रान्त के समान; तिण्मै अलमरल्-गुण-दृढ़ता में चंचलता लाना; चैय्यलामो-कर सकते हो क्या । ३०६

(सारा संसार तुम्हारी प्रशंसा करता है कि) इनका कुल यह (उत्कृष्ट); विद्या ऐसी; विजय यह; इन्हें प्राप्त अच्छे गुण ये हैं । तीनों भुवनों का नायकत्व यह जो इनका है । इनका भुजवल ऐसा । भुवन का गोप्तृत्व यह । तो यह सब जानते हुए भी मोहित मनुष्य के समान ऐसी दृढ़ता को अस्थिर करा देना क्या तुम्हें शोभा देगा ? । ३०६

❖ कोवियर् इरुम मुङ्गळ् कुलत्तुदित् तोरहद् कॅल्लाम्
ओवियत् तैळुद वौण्णा वुरुवत्ता युडैमै यन्त्रो
आवियैच् चत्तहन् पॅर्ऱ वन्नत्तै यमिळ्दिन् वन्द
देवियैप् पिरिन्द पित्तैत् तिरैत्तत्तै पोलुम् जैयहै 307

ओवियत्तु अँळुत ओण्णा-आपका चित्र न बन सके, ऐसे; उरुवत्ताय्-अपार रूप वाले; को इयल् तरुमम्-राजधर्म; उङ्गळ् कुलत्तु-तुम्हारे कुल में; उतित्तोर्कदकु अँल्लाम्-उत्पन्न सभी को; उटैमै अनुत्रो-सम्पत्ति है न; आवियै-प्राण (-समाना) सीता को; चत्तकत् पॅर्ऱ-जनक की जनायी गयी; अनुत्तत्तै-हंसिनी देवी को; अमिळ्तिन् वन्त-अमृत के समान तुम्हारे पास आयी हुई; तेवियै-देवी को; पिरिन्त पित्तै-छोड़ने के बाद; चैय्कै-काम में; तिरैत्तत्तै पोलुम्-अस्त-व्यस्त हो गये शायद । ३०७

हे ऐसे रूपवान, जिसका चित्र नहीं बन सकता ! राजधर्मपालन तुम्हारे कुल में उत्पन्न सभी का धन है ! (फिर तुमने उसका भंग क्यों किया ?) प्राण-सम, जनकदुहिता हंसिनी-सी, अमृततुल्य सीतादेवी के वियोग के बाद तुम्हारा मन भ्रमित और कार्य अस्थिर हो गया है क्या ? । ३०७

❖ अरक्कनो रळिवु शैय्दु कळिवन्ने लदक्कु माडोर्
कुरक्कर शदत्तैक् कौल्ल मन्नेर्ऱि कूरिर् रुण्डो
इरक्कर्मैड् गुहुत्ता यैन्वा लैप्पिळै कण्डा यप्पा
परक्कळि विदुनी पूण्डार् पुहळैयार् परिक्कर् पालार् 308

अरक्कन्-राक्षस रावण; ओर् अळिवु चैय्तु-एक हानि करके; कळिवन्नेल्-चला जाय तो; अतर्कु माऱु-उसके प्रीतिकार में; ओर् कुरक्कु अरच् अतत्तै-एक वानरराज को; कौल्ल-मारने को; मन्नेर्ऱि-मनु-धर्म ने; कूरिर् उण्टो-कहा है क्या; इरक्कम्-दया को; अँडकु-कहाँ; उकुत्ताय्-गिरा दिया; अँन् पाल्-मुझमें; अँ पिळै-कौन सा अपराध; कण्टाय्-देखा; इतु परक्कळिवु-यह बड़ा अपयश; नी पूण्डाल्-तुम धारण करो तो; पुकळै-यश को; यार्-कौन; परिक्कल् पालार्-भरण करने योग्य रहेंगे । ३०८

(क्या ही विचित्र विडम्बना है !) राक्षस कोई हानि कर गया तो

दूसरे वानरराज को मारने की आज्ञा मनुधर्म देता है क्या ? दया तुमने कहाँ छोड़ी ? मुझमें क्या अपराध देखा ? यह बड़ा अपयश है ! अगर तुम अपयश धारण कर लोगे तो यश का पात्र कौन बन सकेगा ? रे बाप ! । ३०८

औलिहड लुलहन् दन्नि लूर्दरु कुरङ्गिन् माडे
कलियदु कालम् वन्दु कलन्ददो करुणै वळ्ळाल्
मैलियवर् पाल देयो विळुप्पमु मौळुक्कन् दानुम्
वलियवर् मैलिवु शैय्दार् पुहळन्नि वशैयु मुण्डो 309

करुणै वळ्ळाल्-करुणा-दानी; औलि कटल्-शब्दायमान समुद्रवसना; उलकम् तन्नितिल्-लोक में; ऊर् तरु-रेंगनेवाले; कुरङ्गिन् भाटे-वानरों के हक में ही; कलि अतु कालम्-कलि (नाशक) काल; वन्दु कलन्ततो-आ मिल गया क्या; विळुप्पमुम्-सभ्यता और; मौळुक्कम् तासुम्-सदाचरण; मैलियवर् पालतेयो-निबलों के लिए ही विहित हैं क्या; वलियवर्-बलवान; मैलिवु चैय्ताल्-नीच काम करें; पुकळ् अन्नि-यश के सिवा; वचैयुम् उण्टो-निन्दा (नहीं) होगी (शायद) था । ३०८

अपरिमित दयावान ! शब्दायमान समुद्रमध्य स्थित भूलोक में क्या रेंगते चलनेवाले वानरों पर ही कलि (नाश का) काल आ छा गया ? सभ्यता (श्रेष्ठता) सदाचार आदि निबलों के लिए ही विहित हैं ? बलवान लोग नीच काम करें तो यश मिलेगा और भर्त्सना नहीं होगी न ? । ३०९

कूट्टोर् वरैयुम् वेण्डाक् कौडुव पेरु तादै
पूट्टिय शैल्व माडुगोर् तम्बिकुक् कौडुत्तुप् पोन्दु
नाट्टोर् करुमञ् जैय्दाय् यैम्बिकुक् वरशै नल्हिक्
काट्टोर् करुमञ् जैय्दाय् करुमन्दा त्तिदन्मे लुण्डो 310

कूट्टु-सहायक; और्वरैयुम्-किसी की; वेण्डा-अपेक्षा नहीं करनेवाले; कौडुव-विजयराघव; पेरु तादै-जनक ने; पूट्टिय चैल्वम्-जो सम्पत्ति दिलायी; आङ्कु-उसे वहाँ; ओर्-श्रेष्ठ; तम्बिकु-भाई को; कौडुत्तु-देकर; नाट्टु-जनपद में; और् करुमम् चैय्ताय्-एक (अनोखा) कार्य किया; पोन्दु-जाकर; यैम्बिकु-मेरे भाई को; इ अरचै-इस राज्य को; नल्कि-देकर; काट्टु-जंगल में; और् करुमम् चैय्ताय्-एक कार्य किया; इतन् मेल्-इससे बड़ा; करुमम् तान् उण्टो-कर्म कोई होगा क्या । ३१०

किसी दूसरे की सहायता की अपेक्षा न करनेवाले विजयी ! तुम्हारे जनक ने तुम्हें स्वतः जो सम्पत्ति दी, उसे तुमने अपने श्रेष्ठ भाई को देकर जनपद में एक अनोखा कार्य कर दिखाया । फिर मेरे भाई को यह राज्य देकर यहाँ जंगल में एक कार्य किया । इससे बढ़कर कोई काम हो सकता है क्या ? । ३१०

अरैहळ ललङ्गल् वीरर्क् कडुत्तवे पुरिव दाण्मैत्
 तुरैयैन्न लायिर् इन्ऱे तौन्मैयि नन्नूर् कैल्लाम्
 इरैवनी यैन्नेच् चैय्द तीर्देनि लिलङ्गं वेन्दे
 मुरैयल शैय्दा नैन्ऱु मुत्तिदियो मुत्तिवि लादाय् 311

मुत्तिवु इलाताय्-क्रोधविहीन; अरै कळल्-शब्द करनेवाली पायल के धारक; अलङ्गल्-मालाधारी; वीरर्क्कु-वीरों के लिए; अटुत्तते-योग्य (काम) ही; पुरिवतु-करना; आण्मै तुरै अँतल्-पुरुषोचित काम कहना; आयिर् इन्ऱे-होता है न; तौन्मैयिन्-प्राचीन; नल् नूर्कु-श्रेष्ठ शास्त्रों के; कैल्लाम्-सबके; इरैवन् नी-नायक तुमने; अँतत् चैय्ततु ईतु-मेरे प्रति जो किया, यह; अँतिल्-तो; इलङ्गं वेन्तै-लंकापति से; मुरै अल-अनुचित काम; चैय्तान् अँन्ऱु-किया, ऐसा; मुत्तितियो-गुस्सा करोगे क्या । ३११

हे क्रोधविहीन राम ! शब्द करती रहनेवाली पायलधारी वीर के लिए योग्य काम करना ही पुरुषोचित माना जायगा न ? तुम सभी प्राचीन शास्त्रों के नायक हो ! तुमने यह काम कर दिया; फिर लंकापति के सम्बन्ध में 'अनुचित व्यवहार किया' कहकर कोप करोगे क्या ? । ३११

इरुवर्पो रँदुर्दु गालै यिरुवरु नल्लुर् इरै
 ओरुवर्मेर् करुणै तूण्ड वीरुवर्मे लौळित्तु निन्ऱु
 वरिशिलै कुळैय वाङ्गि वायम्बु मरुमत् तैय्दल्
 तरुममो पिडिदौन् इमो तक्किल दैन्नुम् वक्कम् 312

इरुवर्-दो; पोर् अँतिर्म् कालै-युद्ध में परस्पर जब लड़ते हैं तब; इरुवर्म्-दोनों; नल् उरैरै-(समान रूप से) अच्छे (मित्र) हैं ही; ओरुवर् मेल्-उनमें एक पर; करुणै तूण्ड-करुणा के प्रेरित करने पर; लौळित्तु-छिपा; निन्ऱु-रहकर; ओरुवर् मेल्-(दूसरे) एक पर; वरि चिलै-सबन्ध धनु; कुळैय-झुकाते हुए; वाङ्कि-डोरा (खींचकर); वाय् अम्पु-तीक्ष्णमुखी शर को; मरुमतु-मर्मस्थान पर; अँय्तल्-चलाना; तरुममो-धर्म (हो सकता) है; पिडितु-इतर; अँन्ऱु-एक; आमो-होगा; तक्किलतु-अनुचित; दैन्नुम् पक्कम्-की तरफ ही (माना) जायगा । ३१२

जब दो मनुष्य, जो हमारे लिए समान रूप से अपरिचित हैं, आपस में युद्ध करते हैं, तब दोनों समान रूप से हमारे होते हैं । तब एक के प्रति करुणा करके, उससे प्रेरित होकर आड़ में से सबन्ध धनु को झुकाकर तीक्ष्णमुखी बाण को दूसरे के मर्म पर चलाना धर्म होगा या धर्मतर ? वह अवश्य अनुचित, अधर्म के पक्ष में ही माना जायगा । ३१२

❀ वीर मन्ऱु विदियन्ऱु मैय्मैयिन्
 वार मन्ऱुनिन्ऱु मण्णिनुक् कैन्नुडल्

वार	मन्त्र	पहैयन्त्र	पण्वीळिन्
दीर	मन्त्रिय	दन्शैय्द	वाररो 313

वीरम् अन्त्र-वीरता (का काम) नहीं है; विति अन्त्र-युद्धधर्म की विधि नहीं; मैय्मैयित्-सत्य की; वारम् अन्त्र-सीमा में भी नहीं; निन् मण्णित्कु-तुम्हारे इस राज्य में; अन् उदल्-मेरा शरीर; पारम् अन्त्र-भार नहीं है; पक् अन्त्र-शत्रुता नहीं; पण्पु ओळिन्तु-शील त्यागकर; ईरम् अन्त्रि-स्नेह-हीन होकर; इतु-यह; अन् चैय्त् आन्-क्या करने का प्रकार है । ३१३

तुम्हारा व्यवहार वीरता का परिचायक नहीं है; न ही वह विधिसम्मत है । वह सत्य की सीमा के अन्दर भी नहीं आता । तुम्हारे राज्य की भूमि पर मेरा शरीर असह्य भार भी नहीं बना था । मैं तुम्हारा शत्रु भी तो नहीं । अपना शील-स्वभाव छोड़कर, आर्द्रता (दया) का भाव त्यागकर तुमने यह जो कार्य किया है वह किस काम में आयगा ? । ३१३

इरुमै	नोक्किनिन्	त्रियावर्क्कु	मौक्किन्त्र
अरुमै	याड्डल्	रोवरड्	गाक्किन्त्र
पैरुमै	यैन्वदि	दैन्विळ्	पेणल्विट्
टौरुमै	नोक्कि	यौरवड्	कुदवलो 314

इरुमै-दोनों तरफ़; नोक्कि निन्त्र-समान रूप से देखकर; यावर्क्कुम् ओक्किन्त्र-सर्वमान्य; अरुमै-श्रेष्ठ कर्म; आड्डल् अन्त्रो-करना न; अरुम् काक्किन्त्र-धर्म-रक्षण करने का; पैरुमै अन्त्रपु-बड़प्पन है; पिळ् पेणल् विट्टु-दोष से बचकर; औरुमै नोक्कि-एकतरफ़ा होकर; औरवड्कु उतवल् ओ-एक की सहायता करना ही; इतु अन्-यह क्या (न्याय) है । ३१४

दोनों पक्षों का विचार करके सर्वमान्य रीति से श्रेष्ठ व्यवहार करना ही न धर्मपालन का गौरवमय कार्य होगा ! दोषपूर्ण कार्य से बचना छोड़कर पक्षपाती बनकर किसी एक की सहायता करना (ऐसा माना जायगा) क्या ? यह क्या नीति है ? । ३१४

शैयलैच्	चैड्ड	पहैरैरु	वान्त्रैरिन्
दयलैप्	पड्डिन्	तुणैयमैन्	दार्पैत्तिन्
पुयलैप्	पड्डुमव्	वैड्डगिरि	पोक्कियोर्
मुयलैप्	पड्डुव	दैन्त	मुयड्डिचियो 315

चैयलै चैड्ड-(तुम्हारे गृहस्थी-सम्बन्धी) कार्य को जिसने मिटाया; पक्-उस शत्रु को; तैरुवान्-मारने के लिए; तैरिन्तु-सोचकर; अयलै पड्डि-एक पराये को (मित्र के रूप में) लेकर; तुणै अमैन्ताय्-उसके सहायक बने; अत्तिल्-तो; पुयलै पड्डुम्-मेघ को खींचनेवाले; अ वैम् करि-उस भयंकर हाथी को; पोक्कि-जाने देकर; ओर् मुयलै-एक खरगोश को; पड्डुवतु-मित्र बना लेना; अन्त मुयड्डिचियो-कैसा प्रयास है । ३१५

तुम्हारी गृहस्थी को मिटाकर जो गया उस शत्रु को मारना चाहते हो। उपाय सोचकर तुमने अन्य की सहायता ली है। तुमने उसको अपना सहायक बना लिया है। ठीक ! तो मेघ को भी छीन लेनेवाला भयंकर गज है— उसको (या मेघ-सम हाथी को भी पछाड़नेवाले सिंह को —यानी मुझे) छोड़कर एक खरगोश को (मित्र के रूप में) पकड़ लेना कैसा (बुद्धिमत्ता का) प्रयास है ? । ३१५

❀ कारि	यन्त्र	निरत्त	कळङ्गमोन्
रुरि	यन्त्र	मदिककुळ	दामेन्बर्
सूरि	यन्मर	बुक्कुमोर्	तोन्मरु
आरि	यन्बिरन्	दाक्किन्	यामरो 316

ऊर् इयन्त्र-संचारी; सतिकु-चन्द्र में; कार् इयन्त्र निरत्त-काला रंग वाला; कळङ्कम् औन्त्र-कलंक एक; उळतु आम्-रहता है; अन्पर्-कहते हैं; चूरियन्-सूर्य के; तोल् मरपुक्कुम्-प्राचीन वंश के लिए; ओर् मरु-एक कलंक; आरियन्-श्रेष्ठ पुरुष (तुमने); पिन्नु-पैदा होकर; आक्किन् आम्-लगा लिया है। ३१६

संचरणशील चन्द्र में काले रंग का कलंक है। यह सब लोक कहते हैं। (सूर्य में नहीं है, पर) प्राचीन सूर्यकुल पर भी श्रेष्ठ तुमने पैदा होकर धब्बा लगा दिया है क्या ? । ३१६

मर्ऱी	रुत्तन्	वलिनूदरै	कूवन्
दुर्ऱ	वैन्नेयौ	ळित्तुयि	रुण्डनी
इर्ऱि	दरुपि	निहलरि	येर्ऱन्
निर्ऱि	पोलुड	गिडन्द	निलत्तरो 317

मर्ऱ औरुत्तन्-दूसरे किसी (एक) के; वलिनू-जवरदस्ती से; अर्ऱ कूव- (युद्ध के लिए) ललकारने पर; वन्नु उर्ऱ-जो आया उस; वैन्ने-मुझे; औळित्तु-छिपा रहकर; उयिर् उण्ट नी-प्राण खा लिये ऐसे तुम; इर्ऱ इतन् पिन्-इस घटना के बाद; किटन्त निलत्तु-जिस पर मैं पड़ा हूँ, उस भूमि पर; इक्ल्-युद्ध में चतुर; अरि एऱ्ऱ अन्त-नरकेसरी के समान; निर्ऱि पोलुम्-(शान के साथ) खड़े भी रहो क्या । ३१७

किसी ने (जो तुम्हारे किसी नाते का नहीं) मुझे जवरदस्ती आकर युद्ध के लिए ललकारा और मैं युद्ध करने आया। ऐसे मेरे प्राणों को तुमने छिपे रहकर हर लिया। यह करने के बाद तुम, जहाँ मैं (शराहत हो) पड़ा हूँ, वहाँ आकर खड़े हो, मानो युद्ध-चतुर नरकेसरी हो ! । ३१७

❀ नूलि	यर्कैयु	नुङ्गुलत्	तन्वेयर्
पोलि	यर्कैयुम्	शीलमुम्	पोर्ऱलै

वालि	यैपपडुत्	तायलै	सन्तनर
वेलि	यैपपडुत्	तायविइल्	वीरते 318

नूल इयइकैयुम्-शास्त्रोक्त क्रमों को; नुम् कुल-तुम्हारे कुल के; तन्तैयर् पोल-पुरखों के समान; इयइकैयुम्-उनके स्वभाव को; चीलमुम्-और उनके शील को; पोइल्लै-मानकर नहीं चले; वालियै पटुत्ताय् अलै-वाली को नहीं मारा है; मन् अइम्-राजधर्म की; वेलियै-रक्षक बाड़ को; पटुत्ताय्-नष्ट कर दिया है; विइल् वीरते-प्रतापी वीर हो क्या । ३१८

शास्त्रों में जो कहे गये हैं वे गुण, तुम्हारे कुल के पुरखों से प्राप्त गुण, शील आदि को तुम मानकर नहीं चले । तुमने वाली को मारा नहीं है ; पर वास्तव में राजधर्म की रक्षक बाड़ को मिटा दिया है । क्या तुम सचमुच प्रशंसायोग्य प्रतापी वीर हो ? । ३१८

✽ तार	मइरू	वत्तगौळत्	तन्तैयिल्
पार	वैजिलै	वीरम्	वळिपपदे
नेरु	मन्तु	मइन्नु	निरायुदन्
मार्बि	नैय्यवो	विल्लिहल्	वल्लदे 319

तारम्-(तुम्हारी) पत्नी को; मइरू औखवन्-किसी अन्य ने; कौळ-हर लिया, तब; तन्तैयिल्-अपने हाथ में; पारम् वैम् चिलै-भारी और भयंकर धनु; वीरम्-वीरता का; पळिपपतु-परिहास करता है; नेरुम् अन्तु-सामने से नहीं; मइन्नु-छिपकर; निरायुदन् मार्पितु-निरायुध के वक्ष में; नैय्यवो-(शर) चलाने के कारण क्या; विल् इकल-धनुर्युद्ध में; वल्लतु-समर्थ कहा जाना । ३१९

तुम्हारी पत्नी को किसी ने हर लिया । तब तुम्हारे हाथ का भारी भयंकर धनु तुम्हारी वीरता का परिहास कर रहा है ! (तुम्हारा कोदण्ड-पाणी नाम ही किस काम का ?) सामने से नहीं, आड़ में रहकर आयुध-हीन रिक्त हाथ मेरे वक्ष में शर चलाना ही धनुर्युद्ध में तुम्हारे सामर्थ्य का परिचायक बनेगा ? । ३१९

✽ अन्तु	तानु	मैयिरु	पौडिपडत्
तिन्तु	कान्तु	विळिवळित्	तीयुह
अन्तु	वालि	यत्तैयत्त	कूडितान्
तिन्तु	वीर	नित्तैय	निहळत्तुवान् 320

अन्तु-ऐसा; अ वालि तानुम्-उस वाली ने; मैयिरु पौडि पट-दाँतों को चूर्ण बनाते हुए; तिन्तु-पीसकर; विळि वळि-आँखों द्वारा; ती कान्तु उक-आग प्रकट होकर छितर जाय ऐसा; अन्तु-तब; अत्तैयत्त-वे बातें; कूडितान्-कहीं; तिन्तु वीरत् तानुम्-सामने स्थित वीर भी; इत्तैय-यों; निकळत्तुवान्-कहने लगे । ३२०

वाली ने दाँत चूर-चूर हो जायें, ऐसा दाँत पीसते हुए, आँखों से

अंगारे निकाल छितराते हुए ऐसी बातें कहीं । तब वहाँ जो स्थित थे वे श्रीराम भी यों बोले । ३२०

पिलम्बुक	काय्नेडु	नाळप्पय	राय्त्ताप्
पुलम्बुड्	रुन्वळिप्	पोदलुड्	रान्नुत्तैक्
कुलम्बुक	कान्नु	मुदियर्	कुडिक्कोळीड
अलम्बुत्	तारव	नीयर	अैन्नुलुम् 321

पिलम् पुक्काय्-विल में (तुमने) प्रवेश किया; नैट्टु नाळ-बहुत दिन तक; पयराय्-नहीं लौटे; अैत्ता-इसलिए; पुलम्पु उड्डु-विलाप करके; उन् वळि-तुम्हारे मार्ग में; पोतल् उड्डान् तत्तै-जाने को उद्यत (सुग्रीव) को; कुलम् पुक्कु-तुम्हारे कुल में जनमे हुए; आन्नु मुतियर्-श्रेष्ठ वृद्ध लोग; कुडि कोळीड-उसका संकल्प जानकर; अलम्पु तारव-हिलती मालाधारी; नी अरच्चु-तुम राजा हो; अैन्नुलुम्-कहने पर । ३२१

(मायावी का पीछा करते हुए) तुम विल में घुसे । बहुत दिनों तक लौट नहीं आये । यह देखकर सुग्रीव दुःखी हुआ और विलाप करते हुए तुम्हारे पीछे तुम्हारे मार्ग में जाने को उद्यत हुआ । तब तुम्हारे कुल के वृद्ध लोगों ने उसका आशय ताड़ लिया । उससे कहा कि हिलनेवाली माला से शोभित सुग्रीव ! तुम हमारे राजा हो । तब । ३२१

वान	माळवैन्	रम्मुत्तै	वैत्तवन्
तानु	माळक्	किळैयु	मिडुत्तडिन्
दियानु	माळवैनि	रुन्दर	शाळहिलैन्
ऊत्त	मान	वुरैपहरन्	दीरैन् 322

अैन् तम् मुत्तै-मेरे अग्रज को; वातम् आळ वैत्तवन् तातुम्-स्वर्गपालन करने जिसने भेज दिया, वह मायावी; माळ-मर जाए; किळैयुम् इर-और उसका परिवार मिट जाय, ऐसा; तटिन्नु-मारकर; यातुम्-मैं भी; माळवैन्-मर जाऊंगा; इरुन्नु-(जीवित) रहकर; अरच्चु-राज्य; आळकिलैन्-नहीं पालूंगा; ऊत्तम् आत्त-निकृष्ट; उरै-बात; पकरन्तीर्-वतायी; अैत्त-कहने पर । ३२२

सुग्रीव ने कहा कि मेरे बड़े भाई को इस राक्षस ने स्वर्ग में उसका पालन करने के लिए भेज दिया । उसको उसके परिवारों के साथ मार दूंगा और स्वयं भी मर जाऊंगा । जीवित रहकर शासन न करूंगा । तुम लोगों ने निकृष्ट बात की सलाह दी है । मैं नहीं मानूंगा । ३२२

पड्डि	यान्नु	पडैत्तलै	वीररुम्
मुड्डु	णरन्द	मुदियरु	मुन्बरुम्
अैड्डु	रुम्मार	शैय्दिलै	यैलैन्क्
कोड्डु	नन्मुडि	कोण्डिलन्	कोदिलान् 323

आन्त्र-श्रेष्ठ; पटै तलै वीररुम्-सेनापति वीरों ने और; मुद्रुणरन्त-पूर्णज्ञ; मुत्तिरुम्-वयोवृद्ध लोगों ने और; मुत्तुपरुम्-अन्य अगुओं ने; पड्डि-पकड़कर; अरचु अय्तिलैयेल्-राज्य न लोगे तो; अन्त्र उरुम्-क्या गति (वानरों को) प्राप्त होगी; अन्त-कहा, तब भी; अ कोतु इलान्-उस निर्दोष (सुग्रीव) ने; कोन्त्रुम् नल् मुटि-राजकीय श्रेष्ठ किरोट को; कोण्टिलन्-स्वीकार नहीं किया । ३२३

उसको सुनकर उत्तम सेनापति वीरों, पूर्णज्ञानी वयोवृद्ध लोगों और अन्य मुखियाओं ने मिलकर उसको पकड़ लिया और कहा कि सोचो ! अगर तुम राज्य न लोगे तो वानरों की गति क्या होगी ? तब भी उस निरपराध सुग्रीव ने राजकीय श्रेष्ठ मुकुट को नहीं अपनाया । ३२३

वन्द	निन्तै	वणङ्गि	महिळ्न्दतन्
अन्द	यैत्तकणि	तत्तव	राड्डिलिन्
तन्द	दुन्नर	शैन्त्रु	तरिक्किलेन्
मुन्द	युड्डु	शौल्ल	मुत्तिन्दुत्ती 324

वन्त निन्तै-(फिर) आये हुए तुमको; मकिळ्न्ततन्-हर्षित होकर; वणङ्कि-नमस्कार करके; अन्तै-पितृतुल्य; इत्ततवर्-समूह के लोगों ने; अन्त कण्-मेरे पास; आड्डिलिन्-(तर्क के) जोर से; तन्त-जो सौंपा; उन् अरचु-उस तुम्हारे राज्य को; तरिक्किलेन्-वहन नहीं किया; अन्त्रु-ऐसा; मुन्तै उड्डु-पूर्व-वृत्तान्त को; शौल्ल-कहा, तब भी; नो-तुम; मुत्तिन्तु-कुपित होकर । ३२४

फिर तुम लौट आये । तुमको लौट आये देखकर सुग्रीव अपार हर्षित हुआ । उसने तुमको नमस्कार करके कहा कि पिता-सम मेरे भाई ! हमारे समूह के वानरों ने तर्क के जोर से मेरे पास यह राज्य सौंपा । पर तुम्हारा वह राज्य मैंने नहीं लिया । इस तरह उसने पूर्ववृत्तान्त सुनाया । पर तुम नहीं माने और कुपित हुए । ३२४

कौल्ल	लुड्डुनै	युम्बियैक्	कोदवड्ड
किल्लै	यैन्ब	दुणरन्नु	मिरङ्गलै
अल्लल्	शैय्य	लुत्तक्कंब	यम्बिल्लै
पुल्ल	लैन्तवुम्	पुल्ललै	पौङ्गिन्नाय् 325

उम्पियै-अपने भाई को; कौल्लल् उड्डुनै-निहत करने लगे; अवड्डु-उसका; कोतु इल्लै-कोई अपराध नहीं; अन्तपतु-यह; उणरन्तुम्-जानकर भी; इरङ्कलै-दया नहीं की; अल्लल् चैय्यल्-वास मत दो; उत्तक्कु अपयम्-तुम्हारी शरण हूँ; पिल्लै पुल्लल्-मुझ पर अपराध मत लगाओ; अन्तवुम्-प्रार्थना करने पर भी; पुल्ललै-नहीं माने; पौङ्गिन्नाय्-उबल पड़े । ३२५

कोप करके तुम अपने भाई को मारने लगे । वह निरपराध है, यह जानकर भी तुमने दया नहीं दिखाई । उसने विनय की कि मुझे वास मत

दो । मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ । मुझे अपराधी मत मानो । फिर भी तुमने उसकी बात नहीं मानी और उस पर कोप दिखाया । ३२५

ऊरु	मुरुडै	यानुनक्	कारमर्
तोरु	मन्नु	तौळुदुयर्	कैयनैक्
कूरु	मुण्णक्	कौडुप्पेन्	ऐण्णिनाय्
नारु	शैक्कुम्	पुत्तैयु	नण्णिनान् 326

ऊरुम्-बल; मुरु उट्टेयान्-पूर्ण रखनेवाले; उतक्कु-तुम्हारे सामने; आर् अमर् तोरुम्-होनेवाले इस युद्ध में हारा; अन्नु-विनय करके; तौळुतु उयर्-अञ्जलिबद्ध और ऊपर उठाए हुए; कैयनै-हाथों वाले को; कूरुम् उण्ण-यम को खाने; कौडुप्पेन्-दे दूंगा; ऐन्नु-ऐसा; ऐण्णिनाय्-सीचा (तुमने); नाल् तिचैक्कुम्-(वह) चारों दिगन्तों के; पुत्तैयुम्-उस पार को भी; नण्णिनान्-गया । ३२६

सुग्रीव ने यह भी कहा कि तुम्हारे पास सम्पूर्ण बल है । हमारे बीच हुए इस युद्ध में मैं हार मान लेता हूँ । उसने यह कहकर हाथ जोड़े और नमस्कार की मुद्रा में ऊपर उठायें । तुमने उसे यम का भोजन बनाने का संकल्प किया । वह भागा और दिगन्तों के पार के प्रदेशों में जा पहुँचा । ३२६

अन्त	तन्मै	यत्तिन्दु	मरुळलै
पिन्त	वन्निव	तैन्बदुम्	पेणलै
वन्ति	तानिडु	शाव	वरम्बुडैप्
पोन्म	लैक्किव	नण्णलिर्	पोहलै 327

अन्त तन्मै-उसकी वैसी स्थिति; यत्तिन्दुम्-जानकर भी; मरुळलै-दया नहीं दिखाई; इवन् पिन्तवन्-यह अनुज है; ऐन्पतुम्-यह बात भी; पेणलै-नहीं मानी; वन्ति तान्-महर्षि (मतंग) के; इट्टु-दिये हुए; चापम् वरम्बु उट्टै-शाप की सीमा के अन्तर्गत; पोन् मलैक्कु-सुन्दर ऋष्यमूक पर्वत को; इवन् नण्णलित्-यह आया, इसलिए; पोहलै-नहीं गये (तुम) । ३२७

वह भय से भागा —यह जानते हुए भी तुमने दया नहीं की । 'आखिर यह मेरा अनुज है !' यह नाता भी तुमने नहीं माना । यह स्थान मतंग मुनि (वर्णी का अपभ्रंश रूप प्रयुक्त है —अतिवर्णी के अर्थ में ।) के शाप से निर्दिष्ट सीमा के अन्दर यह ऋष्यमूक पर्वत पड़ा है । वह उधर पहुँच गया, इसलिए तुम उधर नहीं गये । ३२७

ईर	मावदु	मिर्पिर्प्	पावदुम्
वीर	मावदुड्	गल्वियिन्	मैयन्नेर्

वार	मावदु	मरुङ्ग	वन्बुणर्
तार	मावदैत्	ताङ्गुम्	तरुक्कदो 328

ईरम् आवतुम्-दया जो है; इल् पिउप्पु आवतुम्-कुलीनता जो है; वीरम् आवतुम्-वीरता जो है; कल्विधिन्-विद्या द्वारा; मैय् नैरि-सच्चे धर्ममार्ग की; वारम् आवतुम्-श्रेष्ठता जो है; मरुङ्ग औरवन्-(वह) किसी दूसरे की; पुणर्-भोग की हुई; तारम् आवतै-पत्नी को; ताङ्कुम्-अपना बना लेने का; तरुक्कु अतो-घमण्ड होगा क्या । ३२८

दया, कुलीनता, वीरता, शिक्षा द्वारा प्राप्त सदाचार, निष्ठा —इन सबमें परोपभुक्त दारा के ग्रहण को सहने की शक्ति है क्या ? । ३२८

मरुन्दि	रुम्बल्	वलियम्	नामत्तम्
पुउन्दि	रुम्ब	लैळियवर्प्	पौङ्गुदल्
अरुन्दि	रुम्ब	लरुङ्गडि	मङ्गैयर्
तिरुन्दि	रुम्ब	रैळिवुडे	योर्क्कलाम् 329

तैळिवु उदैयोर्क्कु अलाम्-सुलझे हुए विचार वाले सभी के लिए; अरुम् कटि-श्रेष्ठ गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली; मङ्गैयर् तिरुम्-स्त्रियों के सम्बन्ध में; तिरुम्पल्-अतिक्रमण; वलियम् अता-हम बली हैं, समझकर; मरुम् तिरुम्पल्-वीरता का दुरुपयोग; मत्तम् पुउम् तिरुम्पल्-अन्तःकरण की उपेक्षा करना; अैळियवर् पौङ्कुतल्-निर्बलों पर क्रोध करना; अरुम् तिरुम्पल्-धर्म के विपरीत (कार्य) हैं । ३२९

सभी सद्विवेकियों के लिए गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली स्त्रियों के प्रति अतिक्रम का व्यवहार करना, अपने बल के घमण्ड में अन्तःकरण का उल्लंघन करना, निर्बलों पर उबल पड़ना —ये काम अधार्मिक हैं । ३२९

दरुम्	मिन्नु	दैन्नुदहैत्	तन्मैयुम्
इरुमै	युन्दैरिन्	दैण्णलै	यैण्णिनाल्
अरुमै	युम्बिदन्	नारुयिर्त्	तेवियैप्
पैरुमै	नीङ्गिड	वैय्दप्	पैरुदियो 330

तरुम् इन्ततु-धर्म यह है; अैन्नुम्-ऐसा इंगित; तर्कै तन्मैयुम्-उसकी विशेष गति; इरुमैयुम्-और इह-पर दोनों; तैरिन्नु-खूब विश्लेषण करके; अैण्णलै-तुमने नहीं सोचा; अैण्णिनाल्-सोचा होता तो; अरुमै उमपि तन्-प्यारे अनुज की; आर् उयिर् तेवियै-प्राणप्यारी पत्नी को; पैरुमै नीङ्किट-गौरव त्यागते हुए; अैय्त्त पैरुदियो-हथिया पाओगे क्या । ३३०

तुमने धर्म, उसकी श्रेष्ठता, पाप-पुण्य, इह-पर —इनका विचार नहीं किया । अगर किया होता तो अपने प्यारे अनुज की पत्नी को अपनी बनाकर गौरव खोते क्या ? । ३३०

आद	लानु	मवत्तैत्तक्	कारुयिर्क्
काद	लात्तैन्	लानुनिर्	कट्टत्तैन्
एदि	लारैयु	मैळियर्न्	शारैयुम्
तीदु	तीरप्पदेन्	शिनदैक्	करुत्तरो 331

आतलानुम्-इसोलिए; अवन्-वह (सुग्रीव); अत्तैक्कु-मेरा; आर् उयिर्-प्यारे प्राण-सम; कातलानु-मित्र है; अत्तलानुम्-उससे भी; निन् कट्टत्तैन्-तुमको मिटाया; एतु इलारैयुम्-निरपराधों को और; मैळियर्-दीन; अन्शारैयुम्-लोगों को; तीदु तीरप्पदु-हानि से बचाना; अन् चिन्तै करुत्तु-मेरे मन का संकल्प है। ३३१

इन कारणों से और वह मेरा प्राणप्यारा मित्र है — इस नाते मैंने तुम्हें मारा। निर्दोष और निर्बल लोगों को हानि से बचाना मेरा संकल्प है। ३३१

पिळैत्त	तन्मै	यिदुवैन्प्	पेरैळिल्
तळैत्त	वीर	नुरैशैयत्	तक्किला
दिळैत्त	वालि	यियल्वल	वित्तुणै
विळैत्ति	इत्तौळि	लैन्त	विळम्बुवान् 332

पिळैत्त तन्मै-अपराध करने का प्रकार; इतु अत्त-यह है ऐसा; पेरै अळिल्-बड़ी सुन्दरता से; तळैत्त वीरन्-पूर्ण वीर श्रीराम के; नुरै शैय-कहने पर; तक्कु इलानु-अनुचित; इळैत्त-जिसने किया; वालि-वाली; इ तुणै-इतने; इयल्लु अल-(हमारे सम्बन्ध में) साध्य नहीं हैं; विळै तिरुम्-मनमाना; तौळिल्-काम करना ही; अत्तै विळम्बुवान्-कहकर समझाने लगा। ३३२

यही तुम्हारा अपराध है। — ऐसा अतिसुन्दर श्रीराम ने वाली को बताया। अनुचित आचरण वाले वाली ने उत्तर में कहा कि ये सब धर्म हमारी जाति के योग्य नहीं है। मनमाना करना ही हमारा धर्म है। वह आगे बोला। ३३२

ऐय	नुङ्ग	ळरुङ्गुलक्	कड्पित्प्
पौय्यिन्	मङ्गैयर्क्	केय्न्द	पुणर्च्चिपोल्
शैयदि	लन्तैमैत्	तेमलर्	मेलवन्
अैयदि	नैय्दिय	दाह	वियर्त्तिनान् 333

ऐय-प्रभु; नुङ्कळ्-तुम लोगों की; अरुम् कुल-श्रेष्ठ जाति के; कड्पित्-पातिव्रत्य पर आधारित; अ पौय् इल् मङ्गैयर्क्कु-उन असत्यहीन स्त्रियों के; एय्न्त-योग्य; पुणर्च्चि पोल्-विवाह-मिलन के समान; अमै-हमको; तेमलर् मेलवन्-दिव्य कमलासन ब्रह्मा ने; अय्यितलन्-(संभोग-विधान) नहीं दिया है; अय्यितन्-संयोग हुआ तो; अय्यित्यु-संभोग बना, ऐसा; इयर्त्तिनान्-विधान बनाया है। ३३३

प्रभु ! आपकी जाति में पातिव्रत्यशीला और सच्ची (पति-भक्ति रखनेवाली) स्त्रियों के योग्य विवाह-विधान हैं। ऐसे विधान हमारे लिए कमलासन ब्रह्मा ने नहीं बनाये हैं। पर 'संयोग हुआ' तो संभोग करो' का विधान ही दिया है। ३३३

मणमु	मिल्लै	मडैनेरि	वन्दन
गुणमु	मिल्लैक्	कुलमुदरु	कौतूतन
उणरुवु	शैल्लुळिक्	चैल्लु	मौळुक्कलालु
निणमु	नैय्यु	मिणङ्गिय	नेमियाय् 334

निणमुम्-(शत्रु-) मांस; नैय्युम्-और घृत; इणङ्गिय-मिलकर लगे हुए; नेमियाय्-चक्रधारी; उणरुवु चैल्लु उळि-मन जहाँ गया; चैल्लुम् औळुक्कु-वहीं जाने का चरित्र है; अलाल्-उसके सिवा; मडै नेरि-वेदमार्ग से; वन्दन-आये; मणमुम् इल्लै-विवाह-विधान नहीं; कुल मुतडु-तुम्हारे (मानव) कुल के; कौतूतन-समान; कुणमुम् इल्लै-(हमारे पास) गुण भी नहीं। ३३४

शत्रुमांस और घृत से लिप्त चक्र के धारण करनेवाले वीर ! मन जहाँ प्रेरित करता है, वहीं जाना हमारा आचार है। उसके सिवा वेद-सम्मत विवाह नहीं है; न ही तुम्हारे मानवकुलोचित गुण हैं हममें। ३३४

पैरुडि	मडुडिडु	पैरुडोर्	पैरुडियिल्
कुडुड	मुडुडिल्लै	नीयिडु	कोडियाल्
वैरुडि	यडुडोर्	वैरुडियि	तार्येनच्
चौडुड	चौडुडैक्	कुडुडु	शौल्लुवान् 335

वैरुडि अडुडु-(सच्ची) विजय से हीन; और वैरुडियिताय्-श्रेष्ठ विजयी; पैरुडि इतु-(हमारी जाति की) स्थिति यह है; पैरुडु और पैरुडियिल्-जन्म-प्राप्त धर्म के अनुसार; कुडुडु उडुडिल्लै-दोषयुक्त न हुआ हूँ; नी इतु कोटि-तुम इसको मन में धारण करो; अत-ऐसा; चौडुड-कहे हुए; चौल् तुडैक्कु-वचनक्रम के; उडुडु-योग्य उत्तर को; शौल्लुवान्-श्रीराम देने लगे। ३३५

हे झूठे विजयी ! यह हमारी जाति को मिली रीति है। उसके अनुसार देखा जाय तो मुझ पर कोई दोष नहीं लगा है। तुम यह बात मन में धारण कर लो। वाली ने जब ऐसा कहा तो श्रीराम उसके विचारक्रम को ध्यान में रखकर योग्य उत्तर देने लगे। ३३५

नलङ्गो	डेवरिडु	रोनुडि	नवैयडुक्
कलङ्ग	लावड	ननुनेरि	काण्डलित्
विलङ्ग	लामै	विळङ्गिय	दादलान्
अलङ्ग	लाय्क्कि	दडुप्पदन्	शामरो 336

नलम् कौळ-सद्गुणी; तेवरिल्-देवों से (या के समान); तोनुडि-पैदा होकर;

नवै अइ-निर्दोष; कलङ्कला-भ्रमविहीन; अइम् नल् नैरि-धर्म का अच्छा मार्ग; काण्टलिन्-जानते हो, उससे; विलङ्कु अलामै-जानवर न रहना; विळङ्कियतु-साफ मालूम होता है; आतलाल्-इसलिए; अलङ्कलाय्क्कु-मालाधारी तुम्हें; इतु अटुप्पतु अन्ऱ-यह उचित नहीं; आम्-होगा । ३३६

श्रेष्ठ गुण वाले देवों से (या देवों के समान) तुम पैदा हुए । निर्दोष और भ्रमरहित रीति से तुम धर्म की अच्छी गति को जानते हो । इससे साफ है, तुम जानवरों में नहीं हो । इसलिए, हे मालाधारी वीर ! यह कार्य तुम्हारे योग्य नहीं था । ३३६

पौरियिन्	याक्कैय	दोपुल	नोक्किय
अडिविन्	मेलदन्	रोवडत्	तारुदान्
नैडियि	नोन्मैयै	नेर्निन्	ऊणर्न्दनी
पैरुदि	योपिळै	युर्ऱु	पैर्ऱिदान् 337

अइत्तु आइ तान्-धर्म की गति; पौरियिन् याक्कैयतो-इन्द्रियसहित शरीर पर आश्रित रहेगी क्या; पुलन् नोक्किय-इन्द्रियों का आश्रय; अडिविन् मेलतु अन्ऱो-विवेक पर स्थित है न; नैडियिन् नोन्मैयै-धर्ममार्ग का बल; नेर् निन्ऱ-सीधे प्रत्यक्ष रीति से; उणर्न्दन नो-जाननेवाले तुम; पिळै उर्ऱु-अपराध करके; उर्ऱु-प्राप्त होनेवाले; पैर्ऱितान्-पद को; पैर्ऱितयो-पाओगे क्या । ३३७

धर्म का आचरण क्या इन्द्रियों के आगार शरीर पर निर्भर रहेगा ? वह तो इन्द्रियों को वश में रखनेवाली विवेकबुद्धि पर आधारित है । तुम प्रत्यक्ष रूप से धर्म की शक्ति को जानते हो । फिर अपराध करने की स्थिति को ही तुम अपनाओगे क्या ? । ३३७

माडु	पर्ऱि	यिडङ्गर्	वलित्तिडक्
कोडु	पर्ऱिय	कौर्ऱवर्	क्यदोर्
पाडु	पैर्ऱ	वुणर्विन्	पयत्तिनाल्
वीडु	पैर्ऱ	विलङ्गुम्	विलङ्गरो 338

इटङ्कर्-एक नक्र; पर्ऱि-पकड़कर; माडु-एक ओर; वलित्तिट-खींचता रहा, तब; पाडु पैर्ऱ-उत्कृष्ट; उणर्विन् पयत्तिनाल्-भावना के फलस्वरूप; कोडु पर्ऱिय-शंख (पांचजन्य) रखनेवाले; कौर्ऱवन्-विजयी (श्रीमहाविष्णु को); क्यतु-पुकारकर; ओर्-परम; वीडु पैर्ऱ-पद जिसने प्राप्त किया; विलङ्कुम्-वह जानवर भी; विलङ्कु अरो-जानवर था क्या । ३३८

(तुम गजेन्द्र की बात जानते हो ।) नक्र ने उसको पकड़ा और जल की ओर खींचा । गजेन्द्र की बुद्धि श्रेष्ठ थी । उसने पाञ्चजन्य शंख के धारक महाविष्णु को पुकारा । उसे मोक्षपद मिल गया । क्या वह भी जानवर ही माना जाय ? । ३३८

शिनदे	नल्लरत्	तिन्नवळिच्	चेरदलाल्
पैन्दी	डित्तिरु	विन्नबरि	वाङ्गवान्
वैन्दी	ळिरुङ्गे	वीडुपैर्	रैय्दिय
अैन्दे	युस्मेरु	वैक्कर	शल्लत्तो 339

नल् अइत्तिन् वळि-सद्धर्मपथ पर; चिन्तै चेरदलाल्-मन गया, इसलिए; पैन्तीटि-स्वर्णकंकणालङ्कृता; तिरुविन्-श्रीलक्ष्मी (सीता) का; परिवु-दुःख; आङ्गवान्-कम करने के हेतु; वैम् तौळिल् तुङ्गे-भयंकर (युद्ध-) कर्म में; वीटु पेरु-मोक्ष प्राप्त कर; अैय्दिय-जो गये; अैन्तैयुम्-मेरे पिता (तुल्य) जटायु भी; अैरुवैक्कु अरचु-गीधों के राजा; अल्लत्तो-नहीं थे क्या । ३३६

(जटायु की बात लो।) उनका मन श्रेष्ठ धर्मपथगामी था। इसलिए वे स्वर्णकंकणधारिणी श्रीलक्ष्मीजी सीता का दुःख कम करने गये और रावण के साथ घोर युद्धकर्म में प्रवृत्त हुए। उसमें उन्हें मोक्षपद प्राप्त हो गया। क्या वह गीधों (पक्षियों) के राजा नहीं हैं ? । ३३९

नन्ऱु	तीदैन्	रियैरि	नल्लरि
विन्नरि	वाळ्व	दन्ऱोविलङ्	गिन्नियल्
निन्नर	नन्नेरि	नीयरि	यानैरि
अैन्ऱु	मिन्मैयुन्	वाय्मै	युणर्त्तुमाल् 340

नन्ऱु तीतु अैन्ऱु-अच्छा, बुरा यह; इयल् तैरि-(और) उनका स्वभाव जाननेवाले; नल् अरिवु इन्नरि-अच्छे विवेक के बिना; वाळ्वतु अन्ऱो-जीना न; विलङ्कित् इयल्-जानवरों का स्वभाव है; निन्नर नल् नैरि-सुस्थापित अच्छे मार्गों में; नी-तुम; अरिया नैरि-जो नहीं जानते वह मार्ग; अैन्ऱुम् इन्मै-कुछ नहीं है, यह बात; उन् वाय्मै-तुम्हारे वचन ही; उणर्त्तुम्-बता देंगे । ३४०

जानवर का लक्षण है क्या ? कौन सी बात अच्छी है, कौन सी बुरी —इसके ठीक-ठीक लक्षण के ज्ञान के बिना रहना ही तो जानवरों का स्वभाव है ! इस संसार में सुस्थापित धर्म-मार्गों में तुमको अज्ञात कोई भी मार्ग नहीं है —यह तथ्य तुम्हारे वचनों से साफ़ प्रकट होता है ! । ३४०

तक्क	विन्न	तहादन्	विन्नवैन्
रौक्क	वुन्नल	राहि	युयर्न्नुळ
मक्क	ळुम्बिलङ्	गेमन्तु	विन्नैरि
पुक्क	वैल्व	विलङ्गुम्	बुत्तेळिरे 341

इन्त तक्क-क्या-क्या ग्राह्य हैं; इन्त तकातत्त-क्या-क्या अग्राह्य हैं; अैन्ऱु-यह; अौक्क-सबको लेकर; उन्तलर् आकि-विचार न करनेवाले बनकर; उयर्न्नु उळ-(जन्म से) उच्चता प्राप्त; मक्कळुम्-मानव भी; विलङ्के-पशु ही हैं; अ विलङ्कुम्-वे पशु भी; मन्तुविन् नैरि-मनुनीति; पुक्कवैल्-(सम्मत मार्ग में) प्रवेश करें तो; पुत्तेळिरे-देव ही (मान्य) होंगे । ३४१

जो जन्म से उत्कृष्ट मानव पैदा हुए हैं, पर यह विवेक नहीं करते कि क्या ग्राह्य है, क्या अग्राह्य और सबको तोलकर कोई सही निर्णय नहीं करते वे पशु ही हैं ! पर वे जन्मजात पशु भी मनुनीति के अनुसार चलने लगे तो वे देवों के समकक्ष होंगे । ३४१

काल	ताइइल्	कडिन्द	कणिच्चियान्
पालि	नाइइय	पत्ति	पयत्तलान्
मालि	ताइइरु	वन्बेरुम्	बूदङ्गळ्
नालि	ताइइलु	माइरुळि	नण्णिताय् 342

कालन् आइइल्-यम के बल को; कटिन्द-जिन्होंने प्रभावहीन बनाया; कणिच्चियान् पालिन्-उन परशुधर शिवजी के प्रति; आइइय-तुमने जो की; पत्ति पयत्तलान्-उस भक्ति के फलीभूत होने से; मालिनाल्-शिवजी के सद्भाव के कारण; तरु-दत्त; बल पेरुम् पूतङ्कळ्-बलिष्ठ और बड़े भूतों के; नालिन्-चारों (अनल, अनिल, जल, थल) के; आइइलुम्-प्रताप को; माइरु उळि-दूर करने की शक्ति; नण्णिताय्-प्राप्त की (तुमने) । ३४२

तुमने काल के प्रभाव का निरसन करनेवाले शिवजी की भक्ति की । शिवजी ने तुम पर दयाभाव रखा और उसके फलस्वरूप तुममें अनल, अनिल, जल और थल —इन चारों प्रबल भूतों के बल को भी बेकार करने की शक्ति आ गयी थी । ३४२

मेव	रुन्दरु	मततुइ	मेवितार्
एव	रुम्बवत्	तालिळिन्	दोरुहळुम्
ताव	रुन्दव	रुम्तम	दन्मैशाल्
देव	रुम्मुळर्	तीमै	तिरुत्तितार् 343

मेव अरुम्-दुष्प्राप्य; तरुम् तुइ-धर्ममार्ग पर; मेवितार् एवरुम्-लगे हुए सब कोई; पवत्ताल्-पाप के कारण; इळिन्तोरुक्ळुम्-निकृष्ट बने हुए लोग; ता अरुम्-दोषहीन; तवरुम्-तपस्वी; तम-अपने; तन्मै चाल्-गुणों में उत्कृष्ट; तेवरुम्-देव (इनमें); तीमै तिरुत्तितार्-बुराई करनेवाले; उळर्-हैं । ३४३

सभी तरह के लोगों में महान भी हैं और क्षुद्र भी पाये जाते हैं । दुर्गम धर्मपथ के पथी, पाप के कारण पतित लोग, निर्दोष तपस्वी, अपने गुणों के कारण उच्च बने हुए देव —सबमें ऊँचे भी हैं, ओछे भी । ३४३

इनेय	दादलि	तैक्कुलत्	तियावरक्कुम्
विनैयि	ताल्वरु	मेन्मैयुड्	गोळ्मैयुम्
अनेय	तन्मै	यडिन्दु	मळित्तने
मनैयिन्	माट्चियैन्	शान्मनु	नीदियान् 344

मनु नीतियान्-मनुनीति पर चलनेवाले श्रीराम; इनेयतु आतलिन्-ऐसी स्थिति

हैं; इसलिए; अँ कुलतु यावरक्कुम्-किसी भी जाती के सभी के लिए; मेन्मैयुम्-गौरव और; कील्मैयुम्-क्षुद्रता; वित्तैयिनाल्-उनके कर्म से; वरुम्-प्राप्त होती हैं; अत्तैय तन्मै-वह रोति; अरिन्नुम्-जानते हुए भी; मत्तैयिन्-गृहस्थी का; माट्चि-गौरव; अळित्तत्तै-मिटा दिया; अँन्शान्-बोले । ३४४

मनुनीति के अनुसार चलनेवाले श्रीराम ने वाली से और भी कहा—यही सच्ची स्थिति है । किसी भी कुल के किसी को भी महत्ता या क्षुद्रता उसके कर्म के अनुसार ही प्राप्त होगी । यह सब जानते हुए भी तुमने गृहस्थी का गौरव मिटा दिया । ३४४

अव्वुरै	यमैयक्	केट्ट	वरिक्कुलत्	तरशु	मान्ऱ
शैव्वियो	यत्तैय	दाहच्	चैरुक्कळत्	तुरुत्तैय	दादे
वैव्विय	पुळिञ्ज	नैन्ऱ	विलङ्गित्तै	मरैन्दु	विल्लाल्
अँव्विय	दैन्ऱै	यँन्ऱा	तिलक्कुव	तियम्ब	लुऱ्शान् 345

अ उरै-वे वचन; अमैय-ध्यान से; केट्ट-सुनकर; अरि-वानर; कुलतु-कुल का; अरचुम्-राजा वाली भी; आन्ऱ-उत्कृष्ट; चैव्वियो-सदाचारी; अत्तैयु आक-वही हो; चैरु कळत्तु-युद्धभूमि में; उरुत्तु-कोप करके; अँयत्ताते-न आकर; वैव्विय-क्रूर; पुळिञ्जन् अँत्त-व्याध के समान; विलङ्कित्तै-अलग (या पशु को); मरैन्दु-आड़ में रहकर; विल्लाल् अँव्वियतु-धनु से शर चलाना; अँत्तै-कैसा (न्याय) है; अँन्शान्-पूछा; इलक्कुवन्-लक्ष्मण; इयम्पल् उऱ्शान्-कहने लगे । ३४५

वाली ने श्रीराम का कहना ध्यान से सुना । कपिकुलराज ने पूछा कि उत्कृष्ट सदाचारी ! तुम्हारा कहना सही रहे ! पर युद्धभूमि में कोप के साथ प्रकट न होकर पशु को मारनेवाले क्रूर व्याध के समान तुमने (अलग रहकर) धनुष से शर चलाया । यह कैसा (धर्म) है ? उसका उत्तर लक्ष्मण देने लगे । ३४५

मुन्ऱुनिन्	रम्बि	वन्दु	शरण्बुह	मुऱैयि	लोयैत्
तैन्ऱुलत्	तुयर्प्प	तैन्ऱ	शैप्पित्तन्	शैरुवि	नीयुम्
अन्ऱिन्नै	युयिरुक्	काहि	यडैक्कल	मियान्	मैन्ऱाय्
अँन्ऱु	करुदि	यण्णल्	मरैन्दुनिन्	रैय्द	दैन्ऱान् 346

निन् तम्पि-तुम्हारे भाई के; मुन्ऱु वन्दु-पहले आकर; चरण् पुक्-शरण माँगने पर; मुऱै इल्लोयै-अधर्मी तुम्हें; तैन्ऱ पुलत्तु-दक्षिणी प्रदेश में (यमपुरी में); उयर्प्पै-पहुँचा दूंगा; अँन्ऱ-ऐसा; चैप्पित्तन्-(श्रीराम ने) कहा; चैरुविल्-युद्ध में; नीयुम्-तुम भी; उयिरुक्कु अन्ऱिन्नै-प्राणों के मोह में; आकि-पड़कर; यात्तुम् अटैक्कलन्-मैं भी शरणप्रार्थी हूँ; अँन्ऱाय्-कहोगे; अँन्ऱपु कहति-यह सोचकर; अण्णल्-महिमायुक्त श्रीराम का; मरैन्दु निन्ऱ-आड़ लेकर; अँयत्तु-चलाना; अँन्शान्-कहा । ३४६

तुम्हारे भाई ने पहले आकर श्रीराम की शरण माँगी और श्रीराम

ने वादा किया कि दुराचारी तुम्हें यमपुरी भिजवा दूंगा । युद्ध में तुम भी प्राणों के मोह में पड़कर शरण माँगोगे तो क्या किया जायगा ? यही सोचकर श्रीराम ने आड़ में से शर चलाया । ३४६

कविकुलत् तरशु मन्नुन कट्टुरै करुत्तिर् कौण्डान्
अवियुरु मनत्त नाहि यत्तुत्तिर् नल्लियच् चैय्यान्
पुवियिडै यण्ण लैन्नुव वैण्णिनिर् पौरुन्द मुन्ने
शवियुरु केळ्विच् चैल्वन् शैन्नियि निरैन्जिच् चोन्नान् 347

कवि कुलतु अरचुम्-वानरकुलाधिपति ने भी; अन्त कट्टुरै-यह व्याख्या; करुत्तिल् कौण्डान्-समझ ली; अवि उरु-शान्त; मन्तुत्तन् आकि-मन वाला बनकर; अण्णल्-महिमामय श्रीराम; पुवि इटै-भूमि पर; अरम् तिन्-धर्म की श्रेष्ठता को; अल्लिय चैय्यान्-मिटने न देंगे; अन्पतु-यह तथ्य; अण्णिन्निल् पौरुन्त-चिन्तन में आया, तो; चैवि उरु-कर्ण द्वारा; केळ्वि चैल्वन्-श्रवण-ज्ञान के धनी के; मुन्ने-सामने; शैन्नियित् इरैन्जि-सिर से नमस्कार करके; चोन्नान्-बोला । ३४७

वानरकुलाधिपति ने उनके हेतुकथन पर ध्यान दिया । बात समझी । शान्त-मन हुआ । उसके मन में यह विश्वास जगा कि महिमामय श्रीराम भूमि पर धर्म की स्थिति को बिगाड़नेवाला कोई काम नहीं करेंगे । इस तथ्य के जानने पर वाली श्रवण-ज्ञान-धन श्रीराम के सामने सिर झुकाकर नमस्कार करके बोला । ३४७

तार्यैन् वुयिर्क्कु नल्हित् तरुमुन् दहवुन् जार्वुम्
नीयैन् निन्ऱ नम्ब नैरियिन् नोक्कु नेर्मे
नार्यैन् निन्ऱ वैम्बा नवैयुऱ लुणर लामे
तीयन् पौरुत्ति यैन्ऱान् शिरियन शिन्दि यादान् 348

चिरियन् चिन्तियातान्-छोटी बातों की ओर ध्यान न देनेवाला; तार्यैन्-माता के समान; वुयिर्क्कु-जीवों को; नल्कि-हित देकर; तरुमुन्-धर्म; तक्वम्-और तटस्थता; जार्वुम्-आधार; नी-आप; अन्त निन्ऱ-ऐसे विद्यमान; नम्प-नायक; नैरियित्तिल्-श्रेष्ठ मार्ग पर; नोक्कुम् नेर्मे-स्थित होकर विचार करने की श्रेष्ठता के आधार पर; तार्यैन्-कुत्ते के समान; निन्ऱ-रहनेवाले; अम् पाल्-हमारे; नवै उरुल्-दोषयुक्त होने की बात; उणरलामे-विचारणीय है क्या; तीयन्-बुराइयाँ; पौरुत्ति-क्षमा कीजिए; यैन्ऱान्-बोला । ३४८

वाली छोटी बातों पर ध्यान देनेवाला नहीं था । (परमपदप्राप्ति, श्रीराम की महिमा आदि के सामने अपना दुःख और क्रोध भूल गया ।) हे नायक ! माता के समान जीवों का हित करनेवाले ! धर्म, तटस्थता और आश्रय आप ही हैं, ऐसे विद्यमान श्रीराम ! धर्म-मार्ग पर स्थित रहकर विचार करनेवाले आप श्वान-सम हमारी दोषयुक्तता का विश्लेषण करेंगे क्या ? हमारी बुराइयों को क्षमा कर दीजिए । ३४८

इरन्तन्त् पित्तु मँन्दै यावदु मँण्ण रेइराक्
 कुरङ्गैत्तक् करुदि नायेत् कूरिय मन्तत्तुक् कौळ्ळैल्
 अरन्दैवैम् बिइवि वँन्तोय्क् करुमरुन् दनैय वैया
 वरन्दरु वळ्ळा लीन्ऱु केळैन् मरित्तुत्तु जौल्वान् 349

पित्तुम्-फिर भी; इरन्तन्-विनय करता हुआ; अँन्तै-विधाता; अरन्तै-
 दुःखमूल; वैम् पिरुवि अँन्-भयानक जन्म रूपी; नोय्क्कु-रोग के; अरु मरुन्तु
 अँनैय-श्रेष्ठ औषध-समान; ऐया-प्रभु; वरम् तरु-वरदायी; वळ्ळाल्-दानी;
 यावतुम् अँण्णल् तेइरा-किंचित भी विवेक न रखनेवाले; नायेन्-मुझ दास को;
 कुरङ्गु अँत करुति-वानर समझकर; कूरिय-कहे गये; मन्तत्तु कौळ्ळैल्-मन में न
 रखिए; ओन्ऱु केळ्-एक बात सुनिए; अँत-ऐसा; मरित्तुम्-आगे भी; जौल्वान्-
 कहने लगा । ३४६

वाली ने यह कहकर आगे विनय की । विधाता ! दुःखमूल भयंकर
 भवरोग के दिव्य औषध, प्रभु ! याचित वरों को देनेवाले दानी ! विवेक-
 हीन वानर हूँ आपका दास मैं । इसका विचार करके आप मेरी कही
 हुई बातों को मन में न रखें । और भी एक विनय है, सुनिए । ३४९

एवुहर् वाळिया लैय्दुना यडियत्तेन्
 आविपोम् वेलैवा यरिवुदन् दरुळिन्नाय्
 मूवर्नी मुदल्वन्ती मूर्ऱुनी मर्ऱुनी
 पावनी दरुमनी पहैयुनी युरवुनी 350

एवु-प्रेरित; कूर् वाळियाल्-तीक्ष्ण शर से; अँय्तु-चलाकर; नाय् अडियत्तेन्-
 श्वान से मुझ दास को; आवि पोम्-प्राणों के चलने के; वेलै वाय्-समय पर;
 अरिवु तन्तु अरुळिन्नाय्-ज्ञान प्रदान कर दया दिखायी; मूवर् नी-आप त्रिदेव हैं;
 मुतल्वन् नी-उनके आदि भी आप; मूर्ऱुम् नी-ये सारे आप ही; मर्ऱुम् नी-
 अन्य सभी आप ही; पावम् नी-पाप आप ही; तरुमम् नी-धर्म भी आप; पकैयुम्
 नी-शत्रु भी आप; उरवुम् नी-सम्बन्धी भी आप हैं । ३५०

आपने तीक्ष्ण बाण चलाकर मुझे मारा और मरते समय आकर दास
 को ज्ञान देकर बड़ा उपकार किया । आप त्रिदेव हैं; त्रिदेवों में आदि
 हैं । संसार के सारे पदार्थ आप ही हैं । अन्य भी आप ही हैं । आप
 पाप, धर्म, शत्रु, बन्धु सब हैं । ३५०

पुरमैला मँरिशैय्दोन् मुदलित्तोर् पौरुविला
 वरमैला मुरुवियैन् वशैयिला वलिमैशाल्
 उरमैला मुरुवियैन् नुयिरैला मुरुवुनिन्
 शरमलाऱ् पिरिदुवे रुळ्दरो दरुममे 351

पुरम् अलाम्-त्रिपुर सारा; अँरि चैय्तोन्-जिन्होंने जला दिये वे रुद्र;
 मुतलित्तोर्-आदि देवों के; पौरुवु इला-अनुपम; वरम् अलाम्-सभी वरों को;

उरुवि-दूर करके; अँन्-मेरे; वच्च इला-अनिच्छ; वलिमै चाल्-वलपुयत; उरम् अँलाम् उरुवि-वक्ष सब वेधकर; अँन् उयिर् अँलाम्-मेरे सारे प्राणों को; उरवुम्-विद्ध करनेवाले; निन् चरम् अलाल्-आपके शर के अलावा; तरुमम्-धर्म; पिडितु वेरु-अन्य कोई; उळ्ळु अरो-है क्या । ३५१

त्रिपुरदाहक शिवदेव आदिदेवताओं ने मुझे अनुपम वर दिये थे । उन सबको विफल करके, अनिच्छ और सबल मेरे वक्ष को और प्राणों को विद्ध करके जानेवाला आपका उत्तम वाण ही धर्म है । उसके सिवा धर्म अलग कहीं है क्या ? । ३५१

[अतिरिक्त पद— बड़े पराक्रमी शिवजी अपने भक्तों को उच्च वर (परमपद) दिलाने की शक्ति रखते हैं । वह आपके नाम के सदा स्मरण करने से ही उन्हें प्राप्त हुई । ऐसे आपके मैंने प्रत्यक्ष दर्शन कर लिये । फिर मेरे लिए दुर्लभ क्या है ?]

यावरु	मैवैयुमा	यिरुदुवुम्	वयनुमाय्
पूवुनल्	वैडियुमोत्	तौरुवरुम्	पौदुमैयाय्
यावनी	यावदेन्	इडिविना	रुळितार्
तावरुम्	पदमैन्क्	करुमैयो	ततिमैयोय् 352

ततिमैयोय्-अकेले देवता; यावरुम्-सब कोई और; मैवैयुम् आय्-बस कुछ बनकर; इरुतुवुम् पयनुम् आय्-ऋतुएँ और उनके फल बनकर; पूवुम् नल् वैडियुम् औत्तु-पुष्प और सुगन्ध के समान; तौरुव अरुम्-अपृथक् रहनेवाले; पौतुमैयाय्-सम रहनेवाले; नी यावन्-आप कौन हैं; यावतु-कैसे हैं; अँन्नु-यह बात; अडिवितार् अरुळितार्-ज्ञान ने दिखा दी; ता अरुम् पतम्-अकलंक परमपद; अँतक्कु अरुमैयो-मेरे लिए दुर्लभ है क्या । ३५२

अद्वितीय श्रीराम ! सब कोई, सब कुछ, ऋतुएँ और उनके फल सभी में, पुष्प में सुगन्ध के समान समान रूप से व्याप्त रहते हैं आप । मुझे इसका ज्ञान हो गया कि आप कौन हैं और आपकी प्रकृति क्या है । अब मेरे लिए अनिच्छ परमपद भी दुर्लभ रहेगा क्या ? नहीं । ३५२

उण्डेन्नु	दरुममे	युरुवमाय्	निन्ऱनिन्
कण्डेन्नु	मड्ऱिनिक्	काणवेन्	कडवनी
पण्डौडिन्	उळ्वमे	यैन्पैरुम्	वळ्वितै
दण्डमे	यडियत्तेऱ्	कुरुपदन्	दरुवदे 353

उण्डु अँतुम्-(सनातन रूप से) है ऐसा; तरुममे-धर्म ही; उरुवमाय् निन्ऱ-स्वरूप में विद्यमान; निन् कण्डेन्नु-आपके दर्शन मैंने कर लिये; मड्ऱु-अलावा; इति काण अँन् कडवतो-और भी किसी के दर्शन करनेवाला बनूँगा क्या; अँन्-मेरे; पैरुम् पळ्ळु विन्नै-बड़े और पूर्वकृत कर्म; पण्डु औदु-आदि से लेकर; इन्ऱ अळवुमे-आज तक के ही; तण्डमे-यह दण्ड ही; अडियत्तेऱ्कु-मुझ दास को; उरु पतम्-परमपद; तरुवते-दिला देगा । ३५३

धर्म के अस्तित्व को धर्मस्वरूप आपमें मैंने देख लिया । फिर आगे क्या देखना चाहूंगा ? मेरे पूर्वकृत कर्म पहले से आज तक ही रहे । (अब मिट गये ।) आपने जो दण्ड दिया वही मुझे परमपद दिला देगा । ३५३

मरुतिनि युदवि युण्डो वान्तिनु मुयर्नुद मानक्
कौडरुव वुन्तै येन्तैक् कौल्लिय कौणरुन्दु तौल्लैच्
चिरुडिक् कुरङ्गि नोडुन् दिरिवुड् चैय्द चैय् है
वैरुडर शैय्दि यैम्बि वीट्टर शैक्कु विट्टान् 354

वान्तिनुम् उयर्नुत-व्योम से भी उन्नत; मात कौडरुव-सम्मान्य विजयी; अम्पि-मेरे छोटे भाई ने; अन्तै कौल्लिय-मुझे मरवाने; उन्तै-आपको; कौणरुन्दु-लाकर; तौल्लै-प्राचीन; चिरु इत कुरङ्कितोटुम्-अल्प जाति के वानरों के स्वभाव के; तिरिवु उड-विपरीत; चैय्द चैय्कै-जो किया उस कार्य से; वैरुडै अरचु-कोरा राज्य; अयति-प्राप्त करके; अतैक्कु-मुझे; वीट्ट अरचु-परमपद का मोक्ष-राज्य; विट्टान्-प्राप्त करने दिया; मरुड इति-इससे श्रेष्ठ कोई; उतवि-सहायता; उण्टो-हो सकती है क्या । ३५४

व्योम से भी उन्नत महिमा के विजयी स्वामी ! मेरा अनुज मुझे मारने आपको ले आया । इस कार्य द्वारा उसने क्षुद्र जाति के वानरों के स्वभाव के विपरीत एक बड़ा श्रेष्ठ काम किया है । इससे उसने स्वयं कोरा वानराधिपत्य लेकर मुझे परमपद मोक्ष का राज्य दिला दिया । इससे बढ़कर उसके हाथों क्या उपकार हो सकता है ? । ३५४

ओविय वुरुव नाये नुळ्दौन्नु पेरुव दुत्तुवाल
पूविय नरुव मान्दिप् पुन्दिवे रुडर पोळ्दिल्
तीवित्तै यियरु मेनु मैम्बियैच् चीरि येन्मेल्
एविय पहळि येन्नुड् गूरुत्तै येव लैन्नान् 355

ओविय उरुव-चित्रसमान रूपवान; नायेन्-दास का; उन् पाल्-आपसे; पेरुवतु-माँग लेना; औन्नु उळुतु-एक है; पू इयल्-पुष्पों से प्राप्य; नरुवम् मान्ति-मधु पीकर; पुन्ति-बुद्धि; वेरु उडर पोळ्त्तिल्-बदल जब जाती है, तब; ती वित्तै इयर्मेनुम्-बुरे कार्य कर लेगा तो भी; अम्पियै चीरि-मेरे भाई पर गुस्सा करके; अन् मेल् एविय-मुझ पर प्रेषित; पकळि अन्नुम्-शर रूपी; कूरुत्तै-यम को; एवल्-मत चला दें; अन्नान्-यह प्रार्थना की । ३५५

चित्र-सम रूपवान ! मुझ दास को आपसे एक याचना करनी है । पुष्पों से प्राप्य मधु को पीकर उस नशे में बुद्धि खोकर मेरा भाई अगर कोई बुरा काम करेगा, तो आप उस पर गुस्सा करके मुझ पर जो शर के रूप में यम को प्रेरित किया उसे उस पर न चलाइएगा । ३५५

इत्तु मौन्नुडिप्प दुण्डा लैम्बियै युम्बि मारुहळ्
तन्मुत्तैक् कौल्वित् तानैन् रिहळ्वरेड् उडुत्ति तक्कोय्

मुन्नमे मौळिन्दा यन्त्रे यिवत्कुर्इ मुडिप्प वैय
पित्तिवत् वित्तैयिन् शैय्हे यदत्तैयुम् पिळैक्क लामो 356

तफ्फोय्-उत्तम; इत्तम् औन्डु-और एक; इरप्पतु-याचना; उण्डु-है;
उम्पिमारकळ्-आपके छोटे भाई; अम्पिये-मेरे अनुज को; तन् मुत्तै-अपने अग्रज
को; कौल्वित्तान्-मरवाया (सुग्रीव ने); अन्डु-कहकर; इकळवरेल्-निन्दा करें
तो; तटुत्ति-उनको रोकिए; ऐय-प्रभु; इवन् कुर्इ-इसका कष्ट; मुडिप्पतु-दूर
करना; मुन्नमे-पहले ही; मौळिन्दाय् अन्त्रे-आपने वचन दिया न; पित्-फिर;
इवन् वित्तैयिन्-इसके प्रारब्ध के; चैय्क् अतत्तैयुम्-परिणाम-कर्म से; पिळैक्कल्-
वचना; लामो-साध्य है क्या। ३५६

उत्तम गुण वाले ! और एक प्रार्थना है। अगर आपके भाई मेरे
भाई की, यह कहकर निन्दा करेंगे कि उसने अपने बड़े भाई को मरवा
दिया तो आप उनको रोक दें। आपने इसकी याचना पूरी करने का
वादा किया था। उस सिलसिले में वह जो काम करेगा उसके फल से
वच सकेंगे क्या ?। ३५६

मड्रिल्लै तैत्तिन् माय वरक्कत्तै वालिड् पड्रिक्
कौड्डव निन्गट् टन्डु कुरक्कियड् मौळिलुड् गाट्टप्
पैड्रिल्लैन् कडन्द शौल्लिड् पयत्तिलै पिळैप्प दित्ति
उड्डु शैय्हेन् डालु मुरियन्निव् वनुम तैन्डान् 357

कौड्डव-विजयी राजा राम; मड्डु इलैन्-और कुछ करनेवाला न रहा;
तैत्तिन्-तो भी; माय अरक्कत्तै-बंचक राक्षस को; वालिड् पड्रि-पूँछ में बाँधकर;
निन् कण् तन्नु-आपके पास सौंपकर; कुरक्कु इयल् मौळिलुम्-वानरयोग्य कार्य;
काट्ट पैड्रिल्लैन्-दिखा नहीं पाया; कटन्त-बीती बात; शौल्लिल्-कहने में;
पयन् इलै-कोई लाभ नहीं है; पिळैप्पतु इत्ति-गलती के बिना; उड्डु-यह जो
मिला है; चैय्क-वह काम करो; तैन्डालुम्-कहने पर; इ अत्तुमन्-यह हनुमान;
उरियन् तैन्डान्-समर्थ है, कहा। ३५७

(वाली ने आगे कहा—) विजयशील श्रीराम ! और कुछ नहीं कर
सका तो भी बंचक राक्षस को पूँछ से बाँधकर आपके पास लाता और
अपना वानर-सामर्थ्य दिखाता। वह भाग्य नहीं रहा। पर जो बीत
चुका, उसको अब कहने से क्या लाभ है ? पर यह जो हनुमान है उसे,
'जो आ गया, इस काम को करो'—की आज्ञा दी जाय तो वह पूर्ण रूप से
समर्थ है। ३५७

अनुमत्तैन् बवत्तै याळि यैयनिन् शैय्य शैङ्गेत्
तन्वैन् निनैदि मड्डैन् तम्बिनिन् तम्बि याह
निनैदियोर् तुणैव रिन्तो रत्तैयव रिलैनी योण्डव्
वन्नैयै नाडिक् कोडि वानिन् मुयर्न्द तोळाय् 358

अनुमत् अंतुपवत्तै-हनुमान नाम के उसको; निन्नु-आपका; चैय्य-सुन्दर;
चैम् कै तत्तु अंत-लाल हाथ का धनु; नित्तैति-समझिए; आळि ऐय-चक्रधारी प्रभु;
वातित्तुम्-आकाश से भी अधिक; उयर्नुत्-उन्नत; तोळाय्-कन्धे वाले; मरू-
और भी; अंतु तम्पि-मेरे भाई को; निन्नु तम्पि आक-अपने भाई के रूप में;
नित्तैति-समझें; इन्तुर् अतैयवर्-इनसे तुल्य; ओर् तुणैवर्-एक साथी; इलै-
दूसरा नहीं होगा; ईण्टु-ऐसी स्थिति में; नी-आप; अ-उन; वतित्तैयै-देवी
को; नाटि-ढूँढ़कर; कोटि-प्राप्त कर लीजिए । ३५८

चक्रधारी देव ! आकाश से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! इस
हनुमान को आप अपने लाल हाथ का सुन्दर धनु मान लीजिए । और
मेरे छोटे भाई को अपना छोटा भाई मान लीजिए । इनके समान आपको
दूसरा सहायक नहीं मिलेगा । उनकी सहायता से आप अपनी पत्नी
सीतादेवी को ढूँढ़कर प्राप्त कर लीजिए । ३५८

अंतुवर्	कियम्बिप्	पित्त	रिरुन्दत्	तिळव	रन्तैत्
तन्नुणैत्	तडक्कै	नीट्टि	वाङ्गित्तन्	इळुवि	मैन्द
ओन्नुनक्	कुरैप्प	दुण्डा	लुरुदियः(ह)	दुणर्नुदु	कोडि
कुत्तिन्नु	मुयर्न्द	तोळाय्	वरुन्दलै	यैन्नु	कूम् 359

अंतु-ऐसा; अवर्कु इयम्पि-उनसे कहकर; पित्तर्-पीछे; इरुन्दत्तन्-
जो रहा, उस; इळवल् तन्तै-लघु भाई को; तन् तुणै-अपने जोड़े के; तड कै-
विशाल हाथ; नीट्टि-बढ़ाकर; वाङ्कित्तन्-खींच लेकर; तळुवि-गले लगाते हुए;
मैन्द-बेड़े; कुत्तिन्नु उयर्नुत्-पर्वत से भी बढ़े हुए; तोळाय्-कन्धों वाले; ओन्नु-
एक बात; उतक्कु-तुमसे; उरुति-हितकारी; उरैप्पतु-कहनी; उण्टु-है;
अ-तु-उसे; उणर्नुत्-समझकर; कोटि-मान लो; वरुन्दलै-दुःख मत करो;
अंतु-कहकर; कूम्-बोला । ३५९

वाली ने यह सब श्रीराम से कहा । फिर उसने अपने दोनों हाथ
बढ़ाकर अपने पीछे खड़े रहे सुग्रीव को पकड़कर अपने पास खींच लिया
और गले लगा लिया । फिर उससे कहा कि बेड़े ! पर्वत से भी अधिक
बढ़े हुए कन्धों वाले ! तुमसे एक बात कहनी है । उसे सुनो, समझो
और मन में धारण करो । दुःख मत करो । वह समझाकर कहने
लगा । ३५९

मरैहळुम्	मुत्तिवर्	यारुम्	मलर्मिशै	ययनुम्	मरैत्
तुरैहळिन्	मुडिवुम्	जौल्लुन्	दुणिपौरु	डिणिविर्	रूक्कि
अरैहळ	लिराम	ताहि	यरनैरि	निरुत्त	वन्द
तिरैयौरु	शङ्गै	यिन्निरि	यैण्णुदि	यैण्ण	मिक्कोय् 360

अैण्णम् मिक्कोय्-सोच-विचार में समर्थ; मरैहळुम्-वेद; मरै-और अन्य
ग्रन्थों के बताये हुए; तुरैहळिन् मुटिवम्-मार्ग का अन्त; मुत्तिवर् यारुम्-सभी मुनिगण;

मलर् मिच्चै अयत्तुम्-कमलासन ब्रह्मा; चोल्लुम्-जो वताते है; तुणि पोरुळ्-वह निश्चित तत्त्व; तिणि विल्-सारयुक्त धनु; तूक्कि-उठाए हुए; अरै कळल्-क्वणित पायलधारी; इरामन् आकि-श्रीराम बनकर; अरु नैरि निरुत्त-धर्ममार्ग प्रतिष्ठापनार्थ; वन्ततु-आया है; इरै-थोड़ा भी; और चङ्क इन्नि-कोई संशय विना; अण्णुति-समझो। ३६०

सोच-विचार करने में समर्थ सुग्रीव ! ये जो श्रीराम है वह परम-तत्त्व है, जिसकी सत्ता का दृढ़ता से वेद घोषित करते हैं; अन्य ग्रन्थों का विषय है; जिसके बारे में सारे मुनिगण और कमलासन बतलाते हैं। वही तत्त्व क्वणनशील पायलधारी श्रीराम बनकर हाथ में कठोर धनुष लिये हुए संसार में धर्म-मार्ग को सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुआ है ! इसको विना किसी शंका या संशय के मान लो। ३६०

निर्किन्ऱु शैल्वम् वेण्डि नैरिनिन्ऱु पोरुळ्ह लैल्लाम्
कर्किन्ऱु विवन्ऱुत्त नामड् गरुदुव विवन्ऱैक् कण्डाय्
पोरुक्कुन्ऱु मन्ऱैय तोळाय् पौदुनिन्ऱु निलैमै नोक्किन्ऱु
अर्कौन्ऱु वलिये शालु मिदरुक्कौन्ऱु मेदु वेण्डा 361

पोन्ऱु कुन्ऱुम् अनैय-मेरुपर्वत-सदृश; तोळाय्-भुजा वाले; निर्किन्ऱु-शाश्वत; शैल्वम् वेण्डि-पद (परमपद) चाहकर; नैरि निन्ऱु-धर्ममार्ग पर स्थित; पोरुळ्हळ् लैल्लाम्-सभी जीव; इवन्ऱु तन्ऱु नामम्-इनका नाम; कर्किन्ऱु-जप करते हैं; इवन्ऱु गरुदुव-इनका ध्यान करते हैं; कण्डाय्-जानते हो; पौदु निन्ऱु-तटस्थ; निलैमै नोक्किन्ऱु-स्थिति में रहकर देखें तो; अन्ऱु कौन्ऱु-मुझे मारने को; वलिये-शक्ति ही; शालुम्-प्रमाण होगा; इतर्कु-इसके लिए; औन्ऱुम्-और कोई; एदु वेण्डा-हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

मेरुपर्वत-सम कन्धों वाले ! शाश्वत परमपद प्राप्त करने के हेतु धर्म-मार्ग पर जानेवाले सभी जीव इनका ही नाम जपते हैं और ध्यान करते हैं। तुम यह जान लो। तटस्थ रहकर देखा जाय तो इसका प्रमाण वही उनकी शक्ति है जिसने मुझे मारा। और अन्य किसी हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

कंदव मियर्ऱि याण्डुड् गळिप्परुड् गणक्कि उमी
वंहलुम् पुरिन्दुळ्ळारुम् वानुयर् निलैयै वळ्ळल्
अय्दवर् पेरुव रैन्ऱु विणैयडि यैयदि येवल्
शैय्दवर् पेरुव दैय शैप्पलाज् जिऱुमैत् तामो 362

ऐय-तात; कंदवम् इयर्ऱि-कंदव करके; याण्डुम्-कभी भी; कळिप्पु अरु-अनिवार्य; कणक्कु इल्-असंख्यक; तीमै-पापकार्य; वंकलुय्-हर दिन; पुरिन्दुळ्ळारुम्-जिन्होंने किये वे भी; वळ्ळल्-उदार श्रीराम के द्वारा; अय्दवर्-प्ररित शर के लक्ष्य बने (और मरे) तो; वान्ऱु उयर् निलैयै-अत्युच्च परमपद को;

परुवर् अँशाल्-पा जायँगे, तो; इण् अटि अँयति-उनके चरणद्वय की शरण लेकर; एवल् चँयत्तवर्-उनका कँकर्य करनेवाले; परुवतु-जो प्राप्त करेंगे; चँपल् आम्- (वह पद) कहने योग्य; चिळ्मैत्तु आमो-लघु विषय होगा क्या । ३६२

तात ! जो वंचक काम करते रहते हैं, दुर्वार असंख्यक पाप सदा करते हैं वे भी, इन उदार प्रभु से प्रेरित शर से मरेंगे तो अतिश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जायँगे । तब जो इनके चरणद्वय की शरण में रहकर इनकी सेवा करते हैं, उनको जो पद प्राप्त होगा क्या वह इतना अल्प होगा कि वर्णन का विषय बने ? । ३६२

अरुमैयँन्	विदियि	तारे	युदवुवा	नमैन्द	कालै
इरुमैयु	मैयदि	नाय्मर्	रित्तिच्चैयर्	पाल	दँण्णिन्
तिरुमरु	मार्व	नेवल्	शैन्नियिर्	चेर्त्तित्तिच्	चिन्दै
औरुमैयि	तिरुवि	मुम्मै	युलहिन्	मुयर्दि	यन्त्रे 363

वित्तियित्तारे-विधि ही; उतवुवान् अमैन्त कालै-जब उपकार करने को उद्यत हो जाती है, तब; अरुमैयँन्-अगम क्या; इरुमैयुम् अँयत्तिताय्-(तुम) इह-पर दोनों हित पा चुके; इत्ति-आगे; चँयल् पालतु-कर्तव्य; अँण्णिन्-सोचो तो; तिरु मरु मार्पन्-श्रीवत्सांकितवक्ष; एवल्-(श्रीराम) की आज्ञाओं को; चैत्तित्तियिल् चेर्त्तित्ति-सिर पर धारण करो; चिन्तै-मन को; औरुमैयिन्-एक ही मार्ग पर (अचल); तिरुवि-रखकर; मुम्मै उलकितुम्-तीनों विध लोकों में; उयर्त्ति-श्रेष्ठता प्राप्त कर लो । ३६३

जब स्वयं विधिदेवता उपकार करने को उद्यत हो जाते हैं, तब क्या वस्तु दुर्लभ होगी ? तुम भाग्यवान हो । इह-पर दोनों हित पा चुके हो ! आगे का कर्तव्य सोचो तो यही है कि, श्रीवत्सांकितवक्ष श्रीराम की आज्ञाओं को शिरोधार्य करो; मन को एक मार्ग में चलाओ और त्रिविध लोकों में सर्वश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जाओ । ३६३

मदवियल्	कुरक्कुच्	चैयहै	मयर्वाडु	माऱ्ऱि	वळ्ळल्
उदवियै	युत्ति	यावि	युर्ऱिट्	तुदवु	हिर्ऱि
पदवियै	यैवर्क्कु	नल्लुम्	पण्णवन्	पणित्त	यावुम्
शितैविल	शैय्दु	नीय्दिर्	ओर्वरुम्	विरवि	तीर्दि 364

मत इयल्-मत स्वभाव के; कुरक्कु चैयकै-वानर-कृत्यों को और; मयर्वाडु-भ्रम को; माऱ्ऱि-द्वार करके; वळ्ळल्-उदार प्रभु श्रीराम की; उतवियै-सहायता को; युत्ति-सोचकर; उर्ऱिट्त्तु-(उन पर) जब विपदा आयगी, तब; आवि उतवुकिर्ऱि-अपने प्राण भी देकर (सेवा करो); पतवियै-परमपद को; यैवर्क्कुम् नल्लुम्-(भवत) किसी को भी देनेवाले; पण्णवन्-कृपालु स्वभाव के; पणित्त-(श्रीराम के) आज्ञा किये हुए; यावुम्-सभी कार्य; चितैवु इल-विना कमी के; चैय्तु-करके; तीर्वु अरुम्-दुर्वार; पिर्ऱि-जन्म को; नीय्त्तिल्-सुगम रीति से; तीर्त्ति-द्वार करो । ३६४

अपना मस्त वानर-प्रकृति का कृत्य और भ्रम छोड़ दो । उदार प्रभु का उपकार स्मरण रखो । जब उन पर कोई विपदा आये तो अपने प्राण देकर निवारण करो । वे भक्तों में भेद करनेवाले नहीं हैं । किसी को भी अपना परमपद दिलानेवाले उदार प्रभु हैं । वे जो भी कहेंगे उनको निर्दोष रीति से कार्यान्वित करो । इस प्रकार अपना जन्म-बन्धन शीघ्र काट लो । ३६४

अरशियड्	पारम्	पूरित्	तयर्त्तत्तै	यिहळ्	दैयन्
मरैमलर्प्	पादम्	नीङ्गा	वाळुदि	मन्त	रैन्बार्
अरियनड्	कुरिय	रैन्ड्रे	यैण्णुदि	यैण्णम्	यावुम्
पुरिदिशिड्	रडिमै	कुड्डम्	पौरुप्परैन्	डैण्ण	वेण्डा 365

अरचु इयल्-राज्य-शासन के; पारम्-भार पर; पूरित्तु-मुदित होकर; अयर्त्तत्तै-भ्रमित हो; इकळ्ळालु-(श्रीराम को) अल्प मत मानो; ऐयन् मरै मलर् पातम्-(और) श्रीराम के कमल-चरणों से; नीङ्गा-अलग मत जाओ; वाळुति-इस तरह जीवन बिताओ; मन्तर् अन्बार्-राजा कहलानेवाले; अरि अतड्कु-जलती आग की समानता पाने के; उरियर् अन्ड्रे-योग्य हैं, यही; अण्णुति-समझो; अण्णम् यावुम्-उनके विचार सब; पुरिति-कार्यान्वित करो; चिरु अटिमै-मैं छोटा दास हूँ; कुड्डम् पौरुप्पर्-अपराध क्षमा करेंगे; अन्ड-ऐसा; अण्ण वेण्डा-विचार नहीं रखना चाहिए । ३६५

राज्य-शासन के भार से मुदित होकर या भूलकर उनको अल्प मत मानो । प्रभु श्रीराम के कमल-चरणों से अलग मत होओ । उनकी ही शरण में जीवन बिताओ । राजा जलती आग के समान है । उन्हें वसा ही रहने का अधिकार है । यह विचार करके उनके सभी विचारों को कार्यान्वित करो । 'हम छोटे दास हैं, वे हमारी भूलें क्षमा कर देंगे'—ऐसा कभी मत सोचो । ३६५

अन्तनवित्	तहैय	वाय	वुरुदिहळ्	यावु	मेङ्गुम्
पिन्तवड्	कियम्बि	निन्ड	पेरैळि	लाने	नोक्कि
मन्तवर्क्	करशन्	मैन्द	मर्डिवन्	शुड्डत्	तोडुम्
उन्तडैक्	कलमैन्	रुयत्ते	युयर्हर	मुच्चि	वैत्तान् 366

अन्त-इस तरह; इ तर्कय आय-ऐसे; उरुतिकळ् यावुम्-सब हितों का; एड्कुम्-डुःखी; पिन्तवड्कु-अपने अनुज को; इयम्पि-उपदेश देकर; निन्ड-सामने स्थित; पेरु अळिलात्तै-अतिसुन्दर श्रीराम को; नोक्कि-देखकर; मन्तवर्क्कु अरचन् मैन्त-राजाधिराज के पुत्र; इवन्-यह; चुरड्डत्तोडुम्-इसके परिवार के साथ; उन् अटैक्कलम्-आपकी शरण में हैं; अन्डु उयर्त्तु-कहकर उसे उनके पास सौंपकर; उयर् करम्-उठाये हुए हाथ; उच्चि वैत्तान्-(वाली ने) अपने सिर पर रखे । ३६६

इस भाँति वाली ने अपने दुःखी भाई को ऐसे हितोपदेश दिये । फिर

अपने सामने स्थित अतिरूपवान श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह सुग्रीव अपने परिवारों के साथ आपकी शरण में हैं। यह कहकर वाली ने सुग्रीव को श्रीराम के आगे किया। फिर उसने अपने हाथ जोड़कर सिर पर रख लिये। ३६६

❖ वतत्पितृ नुरिमैत् तम्बि मामुह नोक्कि वल्लै
उयत्तत्तै कौणर्दि युत्तु तोङ्गरु महत्तै यैत्त
अत्तलै यवनै येवि यल्लैत्तलि तणैन्दा नैत्तव
कैत्तलत् तुवरि नीरैक् कलक्किन्नान् पयन्द काळै 367

वैत्त पितृ-रखने (नमस्कार करने) के बाद; उरिमै तम्पि-अपने ही छोटे भाई का; मा मुक्कम् नोक्कि-उत्तम मुख देखकर; उन् तन्-तुम्हारे; ओङ्कु अरु मक्कत्तै-श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र (अंगद) को; वल्लै-शीघ्र; उयत्तत्तै-बुला; कौणर्दि-लाओ; यैत्त-कहकर; अ तलै-वहाँ; अवत्तै एवि-उसको भिजवाकर; यल्लैत्तलित्-बुलवाने पर; कै तलत्तु-हाथों से; उवरि नीरै कलक्किन्नान्-(जिसने) समुद्रजल को मथा, उस वाली का; पयन्द काळै-पुत्र ऋषभ-सम अंगद; अणैन्तान्-आया (अन्तप)। ३६७

सिर पर जुड़े हाथ रखकर नमस्कार करने के बाद वाली ने अपने भाई के गौरवमय मुख को देखकर कहा कि सुग्रीव ! तुम जाओ और अपने श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र अंगद को बुला लाओ। वाली ने सुग्रीव को भिजवाकर बुलवाया। समुद्र को अपने हाथों से जिसने मथा था, उस वाली का पुत्र ऋषभतुल्य अंगद आया। ('अन्तप' का इधर अर्थ नहीं किया गया यद्यपि उसका अर्थ 'कहते हैं' भी है।) पूरक ध्वनि। ३६७

❖ शुडरुडै मदिय मैनत्तत् तोन्ऱलुन् दोन्ऱि याण्डुम्
इडरुडै युळ्ळत् तोरै यैण्णित्तु मुणर्न्दि लादान्
मडरुडै नरुमैन् शेक्कै मलैयन्ऱि युदिर वारिक्
कडरिडैक् किडन्द कादड् रादैयैक् कण्णिड् कण्डान् 368

शुटर् उटै-प्रकाशमय; मत्तियम् अन्त-चन्द्र के समान; तोन्ऱलुम्-कुंअर भी; याण्डुम्-कहीं भी; इडर् उटै उळ्ळत्तोरै-संकटग्रस्त लोगों को; यैण्णित्तुम्-अपनी कल्पना में भी; उणर्न्तिलात्तान्-जो नहीं जानता था, वह; तोन्ऱि-आकर; मडर् उटै-सुमेन वलों से युक्त; नरु मैन-सुगन्धित और कोमल; शेक्कै मलै अन्ऱि-शय्या रूपी पर्वत पर न; उतिर वारि-रक्तप्रवाह रूपी; कडर् इटै-समुद्रमध्य; किटन्त-पड़े रहे; कातल् तातैयै-प्यारे पिता को; कण्णिल् कण्डान्-अपनी आँखों से देखा (अंगद ने)। ३६८

वाली का कुमार भूलकर भी किसी को दुःख देनेवाला नहीं था। दुःखी मनुष्य को उसने कल्पना में भी नहीं देखा था। वह प्रकाशमय पूर्णचन्द्र के समान आ प्रकट हुआ। उसने देखा कि वाली पंखुड़ियों की

बनी शय्या रूपी पर्वत पर नहीं लेटा था, पर रक्त-समुद्र के मध्य पड़ा था ।
उसने अपनी आँखें फाड़कर उस दृश्य को देखा । ३६८

ॐ कण्डहण् कनलु नीरुड् गुरुदिपुड् गाल मालैक्
कुण्डल मलम्बु हित्तु कुववुत्तोद् कुरिशि रिङ्गळ्
मण्डल मुलहिल् वन्तु किडन्ददम् मदियिन् मीदा
विण्डल मदति तित्तोर् मोन्विळुन् दैन्त वीळ्न्दान् 369

कण्ड कण्-देखनेवाली आँखों ने; कनलुम्-अग्नि को और; नीरुम्-जल को;
कुरितियुम्-रक्त को; काल-निकाला और; कुण्डलम् अलम्पुकिन्तु-कुण्डल जिन पर
लगे डोलते हैं; मालै कुववु-और जो माला से भूषित हैं, उन; तोळ्-कन्धों से भूषित;
कुरिचिल्-राजकुमार; तिङ्कळ् मण्डलम्-चन्द्रमण्डल; उलकिल् वन्तु-भूमि पर
आकर; किडन्दतु-पड़ा रहा; अ मतियिन् मीता-उस चन्द्रमण्डल पर; विण्
तलम् अतत्तिन् मिन्तु-आकाश से; ओर् मीन्-एक नक्षत्र; विळुन्तु अन्त-गिरा,
जैसे; वीळ्न्तान्-गिरा । ३६९

उसकी उन आँखों से आग उठी और जल रक्त के साथ वह निकला ।
अंगद के कन्धे ऊँचे थे । उन पर कुण्डल डोल रहे थे । वे माला से अलंकृत
थे । वह राजकुमार आकर वाली पर गिरा । तब ऐसा लगा मानो
चन्द्रमण्डल भूमि पर पड़ा हो और उस पर आकाश से एक तारा आकर
गिरा हो । ३६९

ॐ अन्दैये यैन्दै येयिव् वैळुदिरै वळाहत् तियार्क्कुम्
शिनदैयार् चैय् है यालोर् तीविनै शैय् दि लादाय्
नीन्दनै यदुदा निरुक् नित्तुमुह नोक्किक् कूरुम्
वन्ददै यन्तो वज्जा दारदन् वलियैत् तीरप्पार् 370

अन्तैये-पिता; अन्तैये-मेरे पिता; इ अँळु तिरै-इन सातों समुद्रों से;
वळाहत्तु-वलयित भूमि में; यार्क्कुम्-किसी को भी; चिन्तैयाल्-मन से;
चैय्कैयाल्-और कृत्य से; ओर् ती विसै चैय्तिलाताय्-कोई हानि न करनेवाले; नीन्तनै-
अब दुःखग्रस्त हो गये; अतु तान् निरुक्-वह तो रहे एक ओर; नित्तु मुक्कम् नोक्कि-
आपके मुख को देखते हुए; कूरुम्-मृत्यु भी; अज्जा-विना मय खाये; वन्ततै
अन्तो-आ गयी न; आर्-कौन; अतन् वलियै-उसके बल को; तीरप्पार्-
तोड़ देगा । ३७०

(अंगद विलाप करने लगा ।) मेरे पिताजी ! मेरे पिताजी ! आपने
सातों समुद्रों से वलयित इस भूमि पर किसी का अहित नहीं सोचा, न ही
किया । ऐसे आप अवकष्ट में पड़े हैं । हाय ! वह एक ओर रहे !
आज यह अनोखी बात हो गयी है कि यम ने भी आपके सम्मुख आने का
साहस किया ! अब कौन है जो उसका घमण्ड चूर करे ? । ३७०

तडैयडित्	तदुपोऽ	श्रीरात्	तहैयवित्	तिशैह	डाङ्गुम्
करैयडिक्	किळिवु	कण्ड	कण्डह	नैज्ज	मुन्ऽन्
निडैयडिक्	कोल	वालि	निलैमैयै	निलैयुन्	दोऽम्
परैयडिक्	किन्ऽ	वन्दप्	पयमऽप्	परन्द	दन्ऽ 371

तडै-खूँटे; अटित्ततु पोल्-गाड़े गये हों, ऐसे; तीरा तकैय-अचल रहनेवाले; इ तिचैकळ ताङ्कुम्-इन दिशाओं के भारवाही; करै अटिक्कु-ओखली के समान पैरों के गजों को; इळिवु कण्ट-हरानेवाले; कण्टकन्-कंटक रावण का; नैज्जम्-मन; उन् तन्-आपकी; निडै-स्थूल; अटि-अग्रभाग से युक्त; कोल-सुन्दर; वालिन्-पूँछ की; निलैमैयै-(शक्ति की) स्थिति को; नितैयुम् तोडम्-जब-जब स्मरण करता है तब; परै अटिक्किन्ऽ-ढोल-सा थरनेवाला; अन्तप्पयम्-वह भय; अऽ-अलग; पऽन्ततु अन्ऽ-माग गया न । ३७१

आपकी मृत्यु से रावण के मन का भय मिट जायगा । रावण खूंटों के समान अचल रहकर दिशाओं को ढोनेवाले, ओखली के समान पैरों वाले दिग्गजों को हराकर उनको हेय बना दिया था । उस कंटक का मन आपकी सुन्दर और स्थूल अग्र भाग की पूँछ का स्मरण करते हर समय पिटे ढोल के समान थरता था । अब वह भय उड़ गया । ३७१

ॐ कुलवरै	नेमिक्	कुन्ऽ	मैन्ऽवा	नुयर्न्द	कोट्टित्
तलैहळ	निन्बोऽ	राळिऽ	इळुम्बित्ति	तविरन्द	वन्ऽ
मलैयुड	नरवु	मऽऽ	मदियमुम्	बलवुन्	दाङ्गि
अलैहडल्	कडैय	वेण्डि	तारिनिक्	कडैव	रैया 372

ऐया-श्रेष्ठ; कुल वरै-आठों कुलपर्वत; नेमि कुन्ऽम्-चक्रवालपर्वत के; वान् उयर्न्त कोट्टित्-गगनस्पर्शी पर्वत के; तलैकळुम्-शिखर भी; निन्-आपके; पोन् ताळिल्-सुन्दर पैरों के कारण; तळुम्पु-पड़े चित्नों से; इति-अब; तविरन्त अन्ऽ-रिक्त हो गये न; मलैयुटन्-मन्दरपर्वत के साथ; अरवुम्-सर्प (वासुकी); मत्तियमुम्-चन्द्र; मऽऽम् पलवुम्-और अन्य सभी; ताङ्कि-धारण करके; अलै कटल्-तरंगपूर्ण समुद्र का; कटैय वेण्डित्-मथन करना हो; आर् इति कटैवर्-कौन मथेगा । ३७२

श्रेष्ठ ! आपके पैरों के लगने से आठों कुलपर्वतों और गगनस्पर्शी चक्रवालपर्वत के शिखरों पर घिसने के चिह्न लगे हुए थे । अब वे उनसे रहित हो जायँगे । मन्दरपर्वत, वासुकी नाग, चन्द्र और अन्य उपकरण तैयार करके तरंगपूर्ण समुद्र को मथना पड़े तो कौन मथेगा ? । ३७२

पज्जित्तैल्	लडियाळ	पड्गन्	पदयुह	मल्ल	याडुम्
अज्जलित्	तडियाच्	चैङ्गै	याणैया	यमर्	यारुम्
अज्जल	रिरुन्दा	रुण्णा	दिन्तमु	दीन्द	नीयो
तुज्जितै	वळ्ळि	योर्ह	णिन्तिन्ऽयार्	शौल्लऽ	पालार् 373

पञ्चिन् मेल् अटियाळ्-रई से भी अधिक कोमल चरणों की पार्वतीदेवी के; पङ्कजन्-अर्द्धांगी के; पत युक्कम् अल्ल-चरणद्वय को छोड़कर; यातुम् अञ्चलित्तु अट्रिया-किसी की अंजलि करना जिन्होंने नहीं जानने का; आणै-नियम रखा था; चैम् कयाय्-ऐसे लाल हाथों वाले; अमरर् यारुम्-सभी देव; अञ्चलर् इरुन्तार्-अमर रहते हैं (आपके मथने से प्राप्त अमृत खाकर); इन् अमुतु-वह मधुर अमृत; उण्णातु-बिना भोगे; ईन्त नीयो-उन्हें देकर आप; तुञ्चित्तै-मृतक हो गये; निन्तिन्-आपसे बढ़कर श्रेष्ठ; वळ्ळियोर्कळ्-दानी; चोल्लल् बालार्-कहाने योग्य; यार्-कौन है। ३७३

रई से भी कोमलचरणा पार्वती को आधा शरीर जिन्होंने दिया है, उन शिवजी के चरणद्वय को छोड़कर आपके हाथों ने किसी की अंजलि करना न जाना था। यह आपका प्रण था। ऐसे लाल हाथों वाले ! आपकी कृपा और परिश्रम से अमृत निकला। उसे आपने देवों को दे दिया। वे अमर रह गये। पर आप मर गये। आपसे बढ़कर श्रेष्ठ दानी कहलानेवाले कौन होंगे ? । ३७३

आयन	पलवुम्	वन्ति	यळ्ळुङ्गितन्	पुळ्ळुङ्गि	नोक्कि
तीयुरु	मैळुहिर्	चिन्दे	युरुहिनन्	शैङ्गण्	वालि
नीयिनि	ययर्वा	यल्लै	यैन्नुदन्	नैञ्जिर्	पुल्लि
नायह	निरामन्	शैय्द	नल्वित्तैप्	पयत्ती	दन्नान् 374

आयन पलवुम्-ऐसी बहुत बातें; वन्ति-बार-बार कहकर; पुळ्ळुङ्गि-तप्त होकर; यळ्ळुङ्गितन्-दुःखी हुआ और; नोक्कि-(वाली को) देखकर; ती उक्क मैळुक्कि-आग में गलते मोम के समान; चिन्दे उरुक्किन्-द्रवमन हो गया; चैम् कण् वालि-लाल बनी आँखों वाले वाली ने; नी-तुम; इन्ति-अब से; अयर्वाय् अल्लै-दुःखी मत हो; अैन्नु- (धीरज में) कहकर; तन् नैञ्चित्तै-अपने गले से; पुल्लि-लगाकर; नायकन् इरामन्-नायक श्रीराम का; चैय्त् ईतु-कृत यह कार्य; नल्वित्तै पयन्-सौभाग्य का फल है; अैन्नान्-कहा (वाली ने)। ३७४

अंगद ऐसी बातें कहते हुए विलाप करता रहा। वह बहुत तप्त और दुःखी हुआ। वह वाली को देखकर अग्नि-तप्त मोम के समान द्रवमन हो गया। तब वाली ने अंगद को धीरज देते हुए कहा कि पुत्र ! दुःख मत करो। फिर उसने अपने पुत्र को गले से लगाते हुए कहा कि सर्वलोकनायक श्रीराम ने जो किया है, यह मेरे सौभाग्य का फल है। ३७४

तोन्नुलु	मिस्तत्	रानुन्	दुहळ्ळुत्	तुणिन्दु	नोक्किन्
मून्नुल	हत्ति	नोर्क्कुम्	मूलत्ते	मुडिन्द	वन्ने
यान्नुव	मुडैमै	यालिव्	विरुदिवन्	दियैन्द	दियार्क्कुम्
शान्नुन	निन्नु	वीरन्	रान्वन्नु	वीडु	तन्दा 375

तोत्तुम्-जन्म लेना; इत्तुल् तात्तुम्-और मरना; तुकळ अत्-दोषहीन; तुणिन्तु तोक्किन्-दृढ़ता से विचारा जाय तो; मूत्तु उलकत्तितोरक्कुम्-तीनों लोकों के वासियों के लिए; मूलत्ते-आरम्भ में ही; मुटिन्त-निश्चित विषय हैं; यात्-मैं; तवम् उट्टैयाल्-पूर्वकृत तपस्या वाला था, इसलिए; इ इत्ति-ऐसा अन्त; वन्तु इयैन्तु-आ मिला; यार्क्कुम्-सभी के; चान्त्तु अत्त-साक्षी-रूप में; निन्त्तु-स्थित; वीरन्-वीर श्रीराम ने; तान् वन्तु-स्वयं पधारकर; वीटु तन्तान्-मोक्ष दिलाया । ३७५

अंगद ! जन्म और मरण तीनों लोकों के वासियों के सम्बन्ध में पूर्व-निर्धारित विषय हैं । मैंने तपस्या की थी, इसलिए ऐसा दुर्लभ अन्त हुआ । तभी तो सबके साक्षीरूप-स्थित ये श्रीराम स्वतः मेरे पास आये और इन वीर श्रीराम ने मुझे मोक्षपद दिला दिया । ३७५

ॐ पालमै तविरुदि यैन्त्तौत्तु पत्तुदि यैन्ति नैय
मेलौरु पौरुळु मिल्ला मैय्पौरुळु विल्लुन् दाङ्गिक्
काल्तरै तोय निन्त्तु कट्पुलक् कुत्तु दम्मा
माल्तरम् विरुवि नोय्क्कु मरुन्दै वणङ्गु मैन्द 376

ऐय-तात; पालमै तविरुति-बालपना छोड़ दो; अन् चोल्-मेरा कहना; पत्तुति-मानो; यैन्तिन्-तो; मेल् और पौरुळुम् इल्ला-जिसके परे या ऊपर कोई तत्त्व नहीं है; मैय् पौरुळु-वह सनातन तत्त्व; विल्लुम् ताङ्कि-धनु भी लेकर; काल्-पैरों को; तरै तोय-भूमि पर रखते हुए; निन्त्तु-स्थित रहकर; कण् पुलक्कु उत्तु-दृष्टिगोचर हुआ; मैन्त-पुत्र; माल् तरम्-मोहजनक; विरुवि नोय्क्कु-भवरोग का; मरुन्तु अत्त-औषध मानकर; वणङ्कु-इनका नमन करो; अम्मा-मैया री । ३७६

(वाली ने अंगद को सलाह दी ।) बेटे ! बालपन छोड़ दो । मेरी बात मानो । ये श्रीराम, वही तत्त्व है जिससे परे कोई तत्त्व नहीं है । वह सनातन तत्त्व हाथ में एक धनु भी लिये हुए और धरती पर चरण रखते हुए दृष्टिगोचर हुआ है । इसलिए, हे पुत्र ! इनकी वन्दना करो, यह मानकर कि ये मोहक भवरोग के औषध हैं । ३७६

ॐ अैन्नुयिर्क् किरुदि शैय्दा नैन्वदै यिरैयु मैण्णा
दुन्नुयिर्क् कुरुदि शैय्दि यिवर्कम रुत्तु दुण्डेल्
पौन्नुयिर्त् तौळिरुम् बूणाय् पौन्निन्त्तु दुरुसम् पौत्ति
मन्नुयिर्क् कुरुदि शैय्वान् मलरुडि तौळुदु वाळ्दि 377

पौन् उयिर्त्तु-स्वर्ण से निर्मित होकर; औळिरुम्-ज्वलन्त रहनेवाले; पूणाय्-आभरणधारी; अैन् उयिर्क्कु-मेरे प्राणों का; इत्ति चैय्तान्-अन्त कराया; अैन्पत्तै-यह बात; इरैयुम् अैण्णातु-बिल्कुल न सोचकर; उन् उयिर्क्कु-अपने जीवन का; उरुति चैय्ति-हित करा लो; इवर्कु-इनकी; अमर् उत्तु उण्डेल्-(शत्रुओं से) लड़ाई हो गयी तो; पौत्तु निन्त्तु-तटस्थ रहकर; तरुसम् पौत्ति-धर्म का पक्ष

लो; मन् उयिर्कु-सनातन जीवों के; उरुति चैय्वान्-हितकारी इनका; मलर्
अटि-चरण-कमल; तौळुनु-वन्दित कर; वाळुति-जीवन विताओ । ३७७

स्वर्णनिर्मित, कांतियुक्त आभूषणभूषित अंगद ! श्रीराम ने मेरे
प्राणों का अन्त करा दिया, इस बात का किंचित भी विचार मत करो ।
अपने जीवन का हित साध लो । इनको कभी युद्ध करने का मौका आ
जाय तो तटस्थता न छोड़कर धर्म का पालन करो । ये सनातन जीवों के
हितकारी हैं । इनके चरणों की पूजा-वन्दना करके उनकी सेवा में जीवन
विताओ । ३७७

अँतुत्तु निनैय वाय वुरुदिहळ् यावुम् जौल्लित्
तन्नुणत् तडक्कै यार्त् तनयनैत् तळुविच् चालक्
कुन्ऱित्तु मुयर्न्द तिण्डोद् कुरक्किन्त् तरशन् कौऱुप्
पीन्ऱिणि वयिरप् पैम्बुट् पुरवलन् उन्नै नोक्कि 378

कुन्ऱित्तुम् चाल उयर्न्द-पर्वत से भी अत्यधिक उन्नत; तिण् तोळ्-सुबुद्ध कन्धों
से युक्त; कुरङ्कु इत्तुत्तु अरचन्-वानरकुलाधिपति; अँतुत्तु-ऐसा; इत्तैय आय-
इस तरह के; उरुतिकळ् यावुम्-सब हितकारी बातें; जौल्लि-कहकर; तन् तुणै
तट-कै-अपने जोड़े के विशाल हाथों से; तनयनै-पुत्र को; आर तळुवि-कसकर
आलिगन करके; कौऱुम्-विजयी; पैम् पीन् तिणि-उत्तम स्वर्णमय; वयिरम् पूज्-
हीरे-जड़े आभरणों से भूषित; पुरवलन् तन्नै-जगद्रक्षक को; नोक्कि-देखकर । ३७८

पर्वतों से भी अत्यधिक उन्नत कन्धों वाले वानराधिपति वाली ने ऐसा
इस तरह की हित की बातें कहीं । फिर उसने अपने दोनों विशाल हाथों
से अपने पुत्र का कसकर आलिगन किया । उसके बाद वाली ने विजयशील
और स्वर्णमय, हीरे-जड़ित आभरणधारी जगन्नाथ श्रीराम की ओर
देखकर— । ३७८

* नैय्यडै नँडुवेऱ् इन्नै नीनिऱ् निरुद रैन्नुम्
तुय्यडैक् कनलि यन्न तोळिन्न शौळिलुन् द्वयन्
पीय्यडै युळ्ळत् तार्क्कुप् पुलप्पडाप् पुत्तिद मऱुन्
कैयडै याहु सँतुऱ्व विरामऱ्कुक् काट्टुड् गालै 379

पीय् अटै-असत्यमिलित; उळ्ळत्तार्क्कु-मन वालों को; पुलप्पटा-अदृश्य;
पुत्ति-पवित्र पुरुष; नैय् अटै-घृतसिक्त; नँडु वेल्-लम्बे भालों के धारक बीरों की;
चैत्तै-सेना वाले; नील्-निऱ् निरुत् अँतुम्-काले रंग के राक्षस रूपी; तुय् अटै-
कपास के गट्ठर के लिए; कनलि अन्न-अग्नि-सम; तोळित्तु-कन्धे वाला है; शौळिलुम्-
कार्य में; तूयन्-पवित्र है; मऱु-अब; उन् कैयडै आकुम्-आपका घोरोहर होगा;
अँतु-कहकर; अ इरामऱ्कु-उन श्रीराम को; काट्टुम् कालै-दिखाने (सौंपने)
पर । ३७९

वाली ने सम्बोधित किया कि असत्य-मन जीवों को अगोचर रहनेवाले पवित्र पुरुष ! इस अंगद के कन्धे घृत-लगे भालों वाले वीरों की सेना के स्वामी, काले रंग के राक्षस रूपी रुई की गंठरियों के लिए अग्नि के समान हैं । यह अपने कृत्यों में भी पवित्र रहनेवाला है । अब से यह आपका धरोहर है । यह कहकर जब उसने अंगद को श्रीराम के आगे किया, तब । ३७९

ॐ तन्नडि	ताळ्द	लोडुन्	दामरैत्	तडङ्ग	णानुम्
पौत्तुडै	वाळै	नीट्टि	नीयिदु	पौरुत्ति	यैन्नात्
अँत्तलु	मुलह	मेळु	मेत्तिन्न	विउन्नु	वालि
अत्तिलै	तुउन्नु	वानुक्	कप्पुउत्	तुलह	नानान् 380

तामरै तट कणातुम्-आयत-कमलाक्ष ने भी; तन् अटि ताळतलोडुम्-अपने पैरों पर (उसके) झुकने पर; पौन् उटै वाळै नीट्टि-स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ाकर; नी-तुम; इतु-इसको; पौरुत्ति-धारण कर लो; अँन्नात्-कहा (उसे दिया); अँत्तलुम्-कहते ही; उलकम् एळुम् एत्तित-सातों लोकों ने स्तुति की; वालि-वाली; अ निलै-वह स्थिति; तुउन्नु-छोड़कर; वानुक्कु-स्वर्ग के; अ पुउत्तु-उस पार के; उलकन् आत्तान्-विष्णुलोक (वैकुण्ठ या परमपद) वासी बना । ३८०

अंगद श्रीराम के चरणों में नत हुआ । विशाल-कमलाक्ष श्रीराम ने अपनी स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ायी और अंगद से कहा कि इसको धारण करो । (श्रीराम ने उसे अंगरक्षक का पद दिया ।) श्रीराम के यह कहते ही सातों लोकों के वासियों ने श्रीराम की स्तुति की और अंगद को बधाई दी । तब वाली अपनी भूलोकवास की स्थिति से छूटकर उस परमलोक में पहुँच गया, जो देवों के स्वर्गलोक से भी परे, ऊपर है । ३८०

कैयव	णैहिळ्द	लोडुङ्	गडुङ्गणै	कालन्	वालि
वैय्यमार्	बहतुत्तु	टङ्गा	दुरुविमेक्	कुयर्	मीप्पोय्त्
तुय्यनीर्क्	कडलुट्	टोय्न्नु	तूय्मल	रमरर्	तूव
ऐयन्वैन्	विडाद	कौरुत्	तावम्बन्	दडैन्द	दन्ने 381

अवण्-तब; कै-उसके हाथों के; नैकिळ्त्तलोडुम्-ढीले पड़ते ही; कटुम् कणै कालन्-कठोर शर रूपी यम; वालि-वाली के; वैय्य-सुदृढ़; मार्पु अकत्तु उळ्-वक्ष के अन्दर; तड्कातु-न रहकर; उरुवि-निफरकर; मेक्कु उयर्-ऊपर उठकर; मी पोय्-दूर जाकर; तुय्य नीर् कडलुळ्-शुद्ध-जल-सागर में; तोयन्नु-मग्न होकर; तूय् मलर्-पवित्र पुष्प; अमरर् तूव-देवों के बरसाते; ऐयन्-प्रभु की; वैन्-पीठ की; विडात-छोड़ जो अलग नहीं होता; कौरुत्तु-जो विजय का आधार है, उस; आवम्-तूणीर में; वन्नु-आकर; अटैन्तु-पहुँचा । ३८१

वाली के हाथ (जो बाण को पकड़े हुए थे) ढीले हो गये तो कठोर बाण (यम) वाली के सुदृढ़ वक्ष से निफरकर बाहर आया । आकाश में ऊपर

बहुत दूर गया। शुद्धजल के सागर में नहा उठा। फिर उस तूणीर में आकर घुस गया जो श्रीराम की पीठ से कभी अलग नहीं होता था और जो श्रीराम की विजयों का आधार था। ३८१

वालियु मेहि तान्विण् वरम्बिला वाऱ्ऱ लोडुम्
पालिया मुन्नर् निन्ऱ परिदिशेय् शैङ्ग पऱ्ऱि
आलिलैप् पळ्ळि यान्तु मङ्गद त्तोडुम् वोत्तान्
वेल्विळित् तारै केट्टाळ् वन्दवन् मैयिल् वीळ्न्दाळ् 382

वालियुम्-वाली भी; विण् एकितान्-परमपद गया; आल् इल पळ्ळियात्तुम्-वटपत्रशायी विष्णु (के अवतार श्रीराम) भी; वरम्पु इला-असीम; आऱ्ऱलोडुम्-बल के साथ; मुन्नर् निन्ऱ-सामने स्थित; परिति चेय्-सूर्यपुत्र के; चैङ्कै-लाल हाथों को; पऱ्ऱि-पकड़कर; पालिया-कृपा का प्रदर्शन करके; अङ्कतत्तोडुम्-अंगद को साथ लेकर; पोत्तान्-(परे) गये; वेल्विळि-बछी-सी आँखों वाली; तारै केट्टाळ्-तारा ने सुना; वन्तु-आकर; अवन् मैयिल्-उस (वाली) के शरीर पर; वीळ्न्दाळ्-गिरी। ३८२

वाली स्वर्ग (परमपद) पहुँच गया। सुग्रीव अपार बल के साथ सामने खड़ा था। श्रीराम वटपत्रशायी (विष्णु प्रलयकाल में एक शिशु के रूप में प्रलय-प्रवाह के ऊपर एक वटपत्र पर शयन की मुद्रा में रहते हैं, ऐसा पुराणों का कथन है।) विष्णु के अवतार थे। उन्होंने सूर्यपुत्र सुग्रीव का हाथ पकड़कर अपनी कृपा जतायी। फिर वे अंगद को साथ लेकर वहाँ से अलग हो गये। भाले की-सी आँखों वाली तारा ने समाचार सुना तो वह भागती आकर वाली के शरीर पर गिरी। ३८२

कुङ्गुमड् गौट्टियन्त कुविमुलैक् कुवट्टिर् कौत्त
पौङ्गुवैड् गुरुदि पोर्प्पप् पुरिहुळल् शिवप्पप् पौऱ्ऱोळ्
अङ्गव तलङ्गन् मार्बिर् पुरण्डन् लहन्ऱ शैक्कर्
वैङ्गदिर् विशुम्बिर् रौन्ऱु मिन्नेत्तत् तुवळ् मैय्याळ् 383

कुवि मुलै-उठे हुए स्तनों के; कुवट्टिर्कु कौत्त-पर्वतशिखरों के लिए उपयुक्त रीति से; कुङ्कुमम् कौट्टि अन्त-कुङ्कुम डाला गया हो, ऐसा; पौङ्कु-उमगनेवाले; वैम् कुरुति-गरम रक्त; पोर्प्प-(स्तनों पर) ढँककर जम गया; पुरि कुळल्-धुंधराले बाल; चिवप्प-लाल हुए; अङ्कु-वहाँ; पोन् तोळवन्-सुन्दरबाहु; अलङ्कल् मार्पिल्-(वाली के) माला से अलंकृत वक्ष पर; अकन्ऱ चैक्कर्-विशाल लाल गगन में; वैम् कतिर्-गरम सूर्यकिरणों के; विच्चुम्पिल्-आकाश में; तोन्ऱुम्-प्रकटित; मिन् अँत-विद्युत के समान; तुवळ् मैय्याळ्-तड़पनेवाले शरीर की होकर; पुरण्टत्तळ्-लोटी। ३८३

पर्वतशिखरों के समान उसके स्तनों पर कुङ्कुम जम गया हो, ऐसा उमड़नेवाला गरम रक्त जम गया। उसके धुंधुराले केश भी लाल हो

गये । वह उस बिजली के समान सुन्दर कन्धों वाले वाली के शरीर पर पड़कर तड़पी, मानो लाल सन्ध्यागगन के विशाल आकाश में बिजली तड़प रही हो । ३८३

वेयङ्गुल्ल विळरि नल्याळ् वीणैयैन् रिनेय नाण
एङ्गिन् ळिरङ्गि विम्मि युरुहिन ळिरुहै कूपपित्
ताङ्गिन् डलैयिर् चोर्नुदु शरिन्दुताळ् कुळल्ह डळ्ळि
ओङ्गिय तुयराऱ् पन्ति यिन्तन वरऱ् उऱ्ऱाळ् 384

वेय् कुळल्-वंशीनाद; विळरि नल् याळ्-‘विळरि’ (रुदन का) राग का ‘याळ्’ का स्वर; वीणै-वीणा का नाद; अँनुड् इतैय-ऐसे स्वरों को; नाण-शरमाते हुए; एङ्कितळ्-रोती हुई; इरङ्कि-दुःखी होकर; विम्मि-सिसककर; उरुक्कितळ्-पानी-पानी होकर; तलैयिल्-सिर पर; इरु कै कूपपि-दोनों हाथ जोड़े; ताङ्कितळ्-रखकर; चोर्नुतु-यककर; ताळ् कुळल्कळ्-लटकनेवाले केशों को; तळ्ळि-हटाकर; ओङ्किय तुयराऱ्-बढ़ते दुःख से; पन्ति-विविध प्रकार से विलाप करते हुए; इन्तन-यों; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्-रोने लगी । ३८४

उसके रुदन-स्वर के सामने वंशीनाद, ‘विळरि’ के शोकगीत निकालने वाली ‘याळ्’ का स्वर और वीणा की ध्वनि भी शरम का अनुभव करे, ऐसी मधुर ध्वनि में वह रो रही थी । असह्य दुःख से वह सिसकी । दोनों हाथ जोड़कर उसने अपने सिर पर रखे । शिथिलता का अनुभव किया । केश उसके मुख पर बिखर रहे थे, उसने उनको हटाया । बढ़ते दुःख से पीड़ित होकर वह विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगी । ३८४

❀ वरैशेर् तोळिडै नाळुम् वैहुवेन्
करैशे राविड रैल्लै कण्डिलेन्
उरैशे रायुयि रेयैन् तुळ्ळमे
अरैशे यान्तिदु काण् वज्जितेन् 385

उरै चेर्-प्रकीर्तित; आर् उयिरे-मेरे प्राण; अँन् उळ्ळमे-मेरे मन; अरैचे-राजा; वरै चेर्-पर्वत-सम; तोळ् इटै-कन्धों में; नाळुम्-सदा; वैहुवेन्-रहनेवाली; करै चेरा-पार न पाऊँ, ऐसा; इटर्-दुःख; अँल्लै कण्डिलेन्-इसका किनारा नहीं देखती; यान्-मैं; इतु काण-यह देखने से; अज्जितेन्-डरती हूँ । ३८५

मेरे प्राण-सम और कीर्तिमान नाथ ! मेरे मन (के वासी) ! राजा ! तुम्हारे पर्वत-सम कन्धों के मध्य सदा (निश्चिन्त और सुखी) रहती थी । अब अपार दुःख आ गया । उसका छोर देख नहीं पाती । इसको देखने से मैं भय खाती हूँ । ३८५

तुयरा लेतीलै याद वैन्नेयुम्
पयिरा योपहै याद पण्बिन्नोय

शैयिर्त्ती
उयिर्पो

राय्विदि
नालुड

यान
लारु

दैय्वमे
मुय्वरो 386

पकैयात-वैर न करनेवाले; पण्पितोय्-शीलवान; तुयाराले-दुःख से; तौलैयात-जो नहीं मरी; अँत्तैयुम्-मुझे भी; पयिरायो-न बुलाओगे क्या; चैयिर् तोराय्-मेरा अपराध भूल जाओ; विदि आत्त-विधिदत्त; तैय्वमे-मेरे देव; उयिर् पोताल्-प्राणों के छूटने पर; उटलारुम्-शरीर भी; उय्वरो-टिकेगा क्या । ३८६

मुझसे कभी न खीझनेवाले मेरे पति ! इस दुःख में भी मैं नहीं मरी । ऐसे मुझे सम्बोधित न करोगे क्या ? मेरे अपराध का विस्मरण कर दो । विधिदत्त मेरे पतिदेव ! प्राण छूट जायँ तो शरीर भी रह सकेगा क्या ? 'उडलार्' में 'आर्' चेतनवाचक प्रत्यय लगा है; कांकु है ।) । ३८६

नडिदा

नल्लमिळ

डुण्ण

नल्हलिन्

पिडिया

विन्नुयिर्

पैड्ड

पैड्डिदाम्

अडिया

रोनम

नार

दन्डैत्तिन्

शिडिया

रोवुव

हारब्

जिन्दियार् 387

नमत्तार्-यमदेव; नडितु आम्-स्वादिष्ट और सुवासपूर्ण; नल् अमिळ्-श्रेष्ठ अमृत; उण्ण-खाने को; नल्कलिन्-(तुम्हारे) देने से; पिडिया-अमर; इन् उयिर्-प्यारे प्राणों को; पैड्ड पैड्डि-प्राप्त करने का लाभ; ताम् अडियारो-आप जानते नहीं क्या; अतु अन्डु अँत्तिन्-वैसा नहीं तो; उपकारम् चिन्तियार्-कृतघ्न; चिडियारो-अल्प जीव हैं क्या । ३८७

तुमने देवों को अमृत दिया । यमदेव ने भी सुगन्धित स्वादिष्ट अमृत तुमसे लेकर पिया था । तभी वे अमर बने । इस प्राप्ति की सच्ची स्थिति को वे नहीं जानते क्या ? नहीं तो वे क्या कृतघ्न और क्षुद्रप्रकृति हैं ? । ३८७

अणङ्गार्

पाहने

याशै

तोडुमुड्

रुणङ्गा

वीण्मलर्

कौण्डु

ळन्बौडुम्

इणङ्गाक्

काल

मिरण्डौ

डौन्डिनुम्

वणङ्गा

दित्तुणे

वैह

वल्लैयो 388

आचै तोडुम्-दिशा-दिशा में; उड्डु-जाकर; उळ् अन्पौटुम्-आन्तरिक भक्ति के साथ; इणङ्का-रहकर; उणङ्का-अमलिन (ताजे); ओळ् मलर्-प्रकाशमय पुष्पों को; कौण्डु-ले; कालम् इरण्डौटु-(प्रातः और सन्ध्या) दो कालों के साथ; औन्डिनुम्-(मध्याह्न) एक में; अणङ्कु आर्-नारी को दिये हुए; पाकत्तै-अर्द्धांग वाले (शिव) की; वणङ्कानु-पूजा किये बिना; इ तुणै-इतनी देर; वैह वल्लैयो-रह सकनेवाले हो क्या । ३८८

तुम्हारी आदत थी कि दिशा-दिशा में जाकर प्रातःकाल, मध्याह्न

और सायंकाल, तीनों बेर अर्द्धनारीश्वर की नवीन सुगन्धित पुष्पों से पूजा करते थे । अब वह किये बिना पड़े रहते हो । इतनी देर बिना पूजा किये रह सकते हो क्या ? । ३८८

वरैयार्	तोळ्पोडि	याड	वैहुवाय्
तरंमे	लायुरु	तत्तुमै	यीदेन
करंवे	निन्डिडु	पूशल्	कण्डुमोन्
रुरैया	यैन्वयि	नून	मियावदो 389

तरै मेलाय्-धरती पर; वरै आर् तोळ्-पर्वतोपम कन्धों पर; पोडि आट-धूल लगने देते हुए; वैहुवाय्-पड़े रहनेवाले; उरु तत्तुमै-तुम्हारी प्राप्त दशा; ईतु अँत-यही क्या, कहकर; करंवेन् नान्-चिल्लाती मैं; इन्डु इट्टु-आज जो मचाती; पूचल्-वह शोर; कण्डुम्-देख (मुन) कर भी; ओन्डु उरैयाय्-कुछ न कहते हो; अन्डु वयिन्-मेरे पास; ऊतम्-कमी (अपराध, दोष); यावतो-क्या है तो । ३८९

कन्धों पर धूल लगने देते हुए धरती पर पड़े रहनेवाले ! तुम्हारी यह दशा हुई । यह कहते हुए मैं रो रही हूँ । मैं इतना रार मचा रही हूँ । तो भी तुम कुछ भी कह नहीं रहे हो ? मुझमें क्या दोष हो गया ? । ३८९

नेया	निन्डुत्तै	नानि	रुन्डिडुन्
मैय्वा	नोर्तिरु	नाडु	मेविताय्
ऐया	नीयैन्	दावि	यैन्डुम्
पौय्यो	पौय्युरे	याद	पुण्णिया 390

पौय् उरैयात-असत्य न बोलनेवाले; पुण्णिया-पुण्यपुरुष; नान्-मैं; इड्डुन्-यहाँ; इरुन्तु-रहकर; नेया निन्डुत्तै-मलिन हो रही हूँ; मैय् वातोर् तिरु नाटु-सत्यदेव की स्वर्गभूमि; मेविताय्-पहुँच गये; ऐया-नायक; नी-तुम; अँतु आवि-मेरे प्राण हो; अँन्डुत्तुम्-(जो) कहा (तुमने) वह; पौय्यो-झूठ ही है क्या । ३९०

कभी असत्य न बोलनेवाले पुण्यपुरुष ! मैं यहाँ रहकर कुम्हला रही हूँ और तुम सत्यदेव के वैकुण्ठलोक में पहुँच गये । हे नाथ ! तुम कहते रहे कि तुम (तारा) मेरे प्राण हो । वह असत्य हो गया क्या ? । ३९०

ॐ शैरुवार्	तोळनिन्	शिन्दैयु	ळेनैत्तिल्
मरुवार्	वैज्जर	मैनेयुम्	वव्वुमाल्
ओरुवे	नुळुळै	याहि	लुय्दियाल्
इरुवे	मुळळिरु	वेमि	रुन्दिलेम् 391

चैरु आर् तोळ-युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले; निन् चिन्तै-तुम्हारे मन में; उळेन् अँतिल्-रही तो; मरुवार्-शत्रु (श्रीराम) का; वैम् चरम्-कूर शर; अँतैयुम्

वद्वुमाल्-मुझे भी मारकर ले गया होता; औखेत्तु उळ्-अकेली मेरे मन में; उळ् आकिल्-तुम रहते तो; उय्ति आल्-बचे रह जाते; इखेम् उळ्-दोनों के अन्दर; इखेम् इरुत्तिलेम्-परस्पर नहीं रहे हैं । ३६१

युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले ! अगर मैं तुम्हारे मन में रहती होती तो शत्रु का क्रूर शर मुझे भी मार के जाता ! तुम ही मेरे, जो अब अकेली रह गयी हूँ, मन मे रहते तो तुम अब बचे रहते । इसलिए साफ़ यह है कि न तुम मेरे मन के अन्दर रहे, न मैं तुम्हारे मन में । ३९१

ॐ अन्दाय्	नीयमिळ्	दीय	यामैलाम्
उय्न्दे	मैन्खव	हार	मुन्नुवार्
नन्दा	नाण्मलर्	शिन्दि	नण्वाडु
वन्दा	रोवैदिर्	वानु	ळोरैलाम् 392

वानु उळोर् अलाम्-स्वर्गवासी (देव) सब; उपकारम् उन्नुवार्-उपकार मानकर; अन्ताय्-पिता-सम; नी-तुमने; अमिळ्त्तु-अमृत; ईय-दिया; याम् अलाम्-(इससे) हम सब; उय्न्देम्-अमर बने; अन्ख-कहकर; नन्ता-कभी न मुरझानेवाले; नाळ् मलर्-नवीन (कल्प) पुष्प; चिन्ति-वरसाकर; नण्पु ओट्टु-सैत्री के साथ; अतिर् वन्तारो-अगवानी करने आये क्या । ३६२

क्या सभी स्वर्गवासी कृतज्ञ बनकर तुम्हारी अगवानी करने आये ? क्या उन्होंने यह कहा कि पिता-सम ! तुमने अमृत दिया और हम अशन करके अमर रहते हैं ? क्या उन्होंने तुम पर कभी न मुरझानेवाले नवीन कल्पसुमन वरसाये । ३९२

ओया	वाळि	यौळित्तुनिन्	ऐय्यवे
एया	वन्द	विराम	नैन्खळान्
वाया	लेयिन	नैन्निन्	वाळ्वैलाम्
ईया	योवमिळ्	देयु	मोहुवाय् 393

ओळित्तु निन्ख-(आड़ में) छिपे रहकर; ओया वाळि-(विना मारे) न चलनेवाला शर; ऐय्यवे-चलाते के हेतु; एया वन्त-(सुग्रीव द्वारा) प्रेरित जो आये; इरामन् अन्ख-श्रीराम नाम के एक; उळान्-हैं; वायाल्-(वे) अपने मुख से; एयिन्न् अन्निन्-मांगते तो; अमिळ्त्तु एयुम्-अमृत ही; ईकुवाय्-दान देनेवाले तुम; वाळ्वु अलाम्-जीवनाधार सब सम्पत्ति (राज्य आदि); ईयायो-नहीं देते क्या । ३६३

श्रीराम सुग्रीव से प्रेरित होकर, आड़ से अपना अमोघ वाण चलाने आये । अगर वे राम अपना मुख खोलकर तुमसे मांगते तो अमृत को भी दूसरों को जो दे चुके वैसे तुम अपने जीवन का आधार, सब सम्पत्ति, राज्य आदि नहीं दे देते क्या ? । ३९३

शौड्डेन्	मुन्नुडु	वन्त	शौर्कीळाय्
अर्डा	नन्तुडु	शौय्ह	लानेन्

उड्डा
इड्डाय्

युम्बियै
नानुनै

यूळि
येन्नु

काणुनी
काण्वेतो 394

मुन्नुत्त-पहले ही; चोड्डेन्-मैंने कहा; अन्त चोल्-वह कहना; कौळाय्-तुमने नहीं माना; अड्डा-वे; अन्तु चैय्कलान्-वह काम नहीं करेंगे; अंत-कहकर; उम्पियै-अपने छोटे भाई के सामने; उड्डाय्-(लड़ने के लिए) आ पहुँचे; ऊळि काणुन्-अनेक युगपर्यन्त रहकर उनको देखने की आयु रखनेवाले तुम; इड्डाय्-चल बसे; नान्-मैं; उत्तै-तुम्हें; ऐन्नु-कब; काण्वेतो-देखूंगी। ३६४

पहले ही, जब तुम जाने लगे तभी, मैंने कहा था (किं श्रीराम आये हैं)। पर तुमने वह कथन नहीं माना। 'वे वैसा करनेवाले नहीं हैं।' —यह कहकर भाई से लड़ने आ गये। तुम्हारी आयु इतनी लम्बी है कि युग-युग तक जीवित रहते। पर अब मर गये। कब मैं तुमको देखूंगी?। ३९४

❀ नीडा
माडोर्
तेरेन्
वेरोर्

मेरुवु
वाळियुन्
यान्निदु
वालि

नीनै
मार्वै
तेवर्
कौलाम्वि

रुड्गिताल्
योर्वदो
मायमो
ळिन्दुळान् 395

नी नैरुड्गिताल्-तुम नियराओ तो; मेरुवुम्-मेरुपर्वत भी; नीड्ड आम्-भस्म हो जायगा; माड्ड-तुम्हारे विरोध में; ओर् वाळि-एक बाण; उन् मार्वै-तुम्हारे वक्ष को; ईर्वतो-चीर गया, यह क्या; यान् इतु तेरेन्-मैं यह नहीं मानूंगी; तेवर् मायमो-देवों की माया है क्या; विळिन्दु उळान्-मरे जो पड़े हैं; वेरु-(व) दूसरे; ओरु-एक; वालि कौलाम्-वाली ही हैं। ३६५

तुम पास जाओ तो मेरु भी भस्मीभूत हो जायगा। ऐसे तुम्हारे वक्ष को कोई बाण चीर गया क्या? मैं विश्वास नहीं कर पाती। यह देवों की माया होगी? ये जो मरे पड़े हैं शायद दूसरे कोई वाली हैं क्या?। ३९५

तहैशैर्
पहैनेर्
उहवे
महने

वण्बुहळ्
वारुळ
शिन्दै
कण्डिलै

तिन्नु
रान्
युलन्द
योनम्

तम्बियार्
पण्वित्ताल्
ळिन्ददाल्
वाळ्वैलाम् 396

मकत्ते-पुत्र (अंगद); तम्पियार्-(तुम्हारे पिता के) छोटे भाई; तर्क चैर्-आदर योग्य; वण् पुकळ्-श्रेष्ठ प्रशंसा को; तिन्नु-मिटकर; पकै नेर्वार्-शत्रुता करनेवाले; उळर् आत्त-है, ऐसे; पण्वित्ताल्-व्यवहार से; नम् वाळ्वु अलाम्-हमारा सारा जीवन; उकवे-चूर-चूर हो गया; चिन्तै-(इसलिए) मन भी; उलन्तु-कुम्हलाकर; अळिन्तु-मर गया; कण्डिलैयो-नहीं देखा। ३६६

(तारा ने अपने पुत्र, अंगद, से कहा—) पुत्र अंगद! देवर ने गौरवयोग्य विपुल यश को खा (मिटा) लिया और शत्रुता के व्यवहार से

हमारे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया । अब हमारा मन मुरझाया हुआ आक्रांत है । यह नहीं देखते क्या ? । ३९६

अरुमन्	दरु	महर्कुम्	विल्लियार्
औरुमैन्	दरुकु	मडाद	दुन्नित्तार्
तरुमम्	वरुयि	तक्क	वरुक्कैलाम्
करुमड्	गट्टळ	यैन्नल्	कट्टतो 397

अरुमन्तु-अपूर्व औषध के समान; अरुम् अर्कुम्-दुःख दूर करनेवाले; विल्लियार्-धनुर्धर श्रीराम ने; औरु मैन्तर्कुम्-किसी वीर के; अटाततु-न योग्य; उन्नित्तार्-(सोच) कर दिया है; तरुमम् परुयि-धर्मदूढ़; तक्कवरुक्कु अलाम्-सभी श्रेष्ठ लोगो के लिए; करुमम्-उनका कृत्य; कट्टळ-कसौटी है; यैन्नल्-यह मसल; कट्टतो-मिटायी गया क्या । ३९७

श्रीराम अपूर्व औषध के समान दुःखनिवारक धनुर्धर हैं । पर उन्होंने ऐसा काम किया है, जो किसी भी वीर को नहीं सोहता । यह कथन है कि धर्मावलम्बी श्रेष्ठ लोगों के कृत्य ही उनकी श्रेष्ठता की कसौटी हैं । पर क्या वह कथन अब निरर्थक हो गया ? । ३९७

अैन्ना	ळित्तन	पत्ति	यित्तलो
डौन्ना	वुळ्ळणर्	वेदु	मुर्त्तिलाळ्
निन्ना	ळन्निलै	नोक्कि	नीदियाल्
वन्नाण्	माल्वरै	यत्त	मारुदि 398

अैन्नाळ्-कहकर; इत्तन-इस प्रकार; पत्ति-बार-बार कहकर; इत्तलोडु-दुःख के साथ; अौन्ना-एक बनकर; उळ् उणर्वु-अन्तर्चेतना; एतुम् उर्त्तिलाळ्-कुछ भी न रखती हुई; निन्नाळ्-भ्रमित खड़ी रही; अ निलै-वह स्थिति; नोक्कि-देखकर; नीदियाल्-न्याय (-व्यवहार) में; माल्वरै अत्तन-बड़े मेरु के समान (उत्कृष्ट और दृढ़); वल् ताळ्-अपार कार्यशक्ति-सम्पन्न; मारुति-मारुति ने । ३९८

तारा ऐसी बहुत बातें बार-बार कहकर विलापती रही । उसका मानो दुःख के साथ एकाकार हो गया । सुध-बुध खो दी और भ्रमित खड़ी रह गयी । हनुमान ने, जो अपने न्यायपालन में मेरु के समान उन्नत और दृढ़ था और कर्मण्य भी, — । ३९८

मडवार्	शूळ	मडन्दै	तन्नैवाळ्
इडमै	वुम्बडि	येवि	वालिपाल्
कडन्या	वुड्गडै	हण्डु	कण्णतो
डुडत्ता	वुर्त्त	वैलामु	णर्त्तिनान् 399

मडवार् शूळ्-स्त्रियों के मध्य रहनेवाली; अ मडन्दै तन्नै-उस स्त्री (तारा) को; वाळ् इटम्-वासस्थान; मेवुम्पटि-जाने को; एवि-प्रेषित करके; वालि

पाल्-वाली के प्रति; कटन् यावुम्-कर्तव्य सब संस्कार; कटं कण्टु-पूरा कराकर; उटता-तुरत; कण्णतोट्टु-पद्माक्ष के पास; उड्ड अलान्-जो हुआ, वह सब; उणर्त्तितान्-कह सुनाया । ३६६

स्त्रियों के मध्य रही उसको अपने अन्तःपुर में भिजवा दिया । फिर अंगद द्वारा वाली के प्रति कर्तव्य दाहकर्म आदि पूर्णरूप से कराया । पश्चात् वह कमलाक्ष श्रीराम के पास गया और सारा वृत्तान्त समझा दिया । ३९९

(इसके बाद के तीन अतिरिक्त पदों का सार—) सूर्य अस्त हुआ । तब सूर्यमण्डल वाली के ही मुख के समान लाल था । श्रीराम ने रात का समय सीता का स्मरण करते हुए दुःख में बिताया । दूसरे दिन सवेरे सूर्य अपने पुत्र का अभिषेक देखने के इरादे से शीघ्र उदित हो गये । सुग्रीव के पास श्रीदेवी को पहुँचने में सुविधा हो, इस हेतु उन्होंने कमलों का द्वार खोल दिया ।

8. अरशियर् पडलम् (राज्य-शासन पटल)

अदुहा	लत्तव्	वरुट्कु	नायहन्
मदिशा	उम्बियै	वल्लै	येवितान्
कदिरोन्	मैन्दनै	यैय	कैहळाल्
विदियान्	मौलि	मिलैच्चु	वार्यैता 400

अतु कालत्तु-उस समय; अ अरुट्कु नायकन्-उन करुणानाथ श्रीराम ने; मति चाल्-बुद्धि-श्रेष्ठ; तम्पियै-अनुज से; ऐय-सुन्दर भाई; कतिरोन् मैन्तत्तै-सूर्यपुत्र का; कैहळाल्-अपने हाथों से; वितियाल्-विधिवत्; मौलि-मुकुट; मिलैच्चुवाय्-धारण कराओ; अँता-ऐसा; वल्लै-शीघ्र; एवितान्-आज्ञा सुनाई । ४००

तब करुणामय प्रभु श्रीराम ने बुद्धिश्रेष्ठ अपने कनिष्ठ को तुरन्त आज्ञा दी कि सुन्दर भाई ! जाओ अपने हाथों से विधिवत् सूर्यपुत्र सुग्रीव का मुकुटधारण कराओ । ४००

अप्पो	दड्गरु	णिन्ऱु	वण्णलुम्
मैय्प्पोर्	मारुदि	तन्तै	वीरनी
इप्पो	देहीण	रिन्ऱु	शैय्वितैक्
कौप्पाम्	यावैयु	मैन्ऱु	णर्त्तलुम् 401

अरुळ् निन्ऱु-(श्रीराम की) कृपा (आज्ञा) माननेवाले; अण्णलुम्-महिमावान लक्ष्मण के भी; अप्पोतु-तभी; अड्कु-वहीं; मैय् पोर्-धर्म-योद्धा; मारुति तन्तै-मारुति से; वीर-वीर; नी-तुम; इन्त-इस; चैय् वितैक्कु-कर्तव्य कृत्य के लिए;

ओप्पु आम्-योग्य; यावैयुम्-सभी उपकरणों को; इप्पोते कौणर्-अभी लाओ;
 अन्नू उणर्त्तुतलुम्-ऐसा कहते ही । ४०१

श्रीराम की कृपापूर्ण आज्ञाओं के सदा माननेवाले महिमावान लक्ष्मण ने तभी और वही धर्मयुद्धनिपुण हनुमान से कहा कि वीर ! इस मंगल-कार्य के लिए योग्य और आवश्यक उपकरण जुटाकर अभी लाओ । ४०१

मण्णु	नीर्मुदन्	मङ्ग	लङ्गळुम्
अण्णुम्	बौन्मुडि	यादि	यावैयुम्
नण्णुम्	वैलैयि	नम्वि	तम्बियुम्
तिण्णन्	जैय्वन्	शैय्दु	शैम्मलै 402

मण्णुम्-अभिषेक का; नीर् मुतन्-पुण्यजल आदि; मङ्गलङ्कळुम्-मंगलद्रव्य;
 अण्णुम्-प्रशंसनीय; बौन् मुटि-स्वर्णमुकुट; आति यावैयुम्-आदि सभी; नण्णुम्
 वैलैयिल्-जब आये तब; नम्पि-पुरुषनायक के; तम्पियुम्-अनुज भी; चैम्मलै-
 (वानर-) नायक के लिए; तिण्णम् चैय्वन्-अवश्य कर्तव्य; चैय्तु-(संस्कार)
 करवाकर । ४०२

उनकी आज्ञा सुनते ही हनुमान कार्यतत्पर हुआ और अभिषेक-जल आदि मंगलसाधन और गण्य स्वर्णमुकुट आदि उपकरण आ गये । तब पुरुषनायक श्रीराम के कनिष्ठ लक्ष्मण ने वानरनायक के प्रति आवश्यक अभिषेकपूर्व कर्तव्य संस्कार आदि करवाया । ४०२

मरैयो	राशि	वळङ्ग	वानुळोर्
नरैदोय्	नाण्मलर्	तूव	नत्तैरिक्
किरैयोन्	उन्निळै	योनव्	वेन्दलैत्
तुरैयोर्	नून्मुर्	मौलि	शूट्टिन्नान् 403

मरैयोर्-विप्रों के; आचि वळङ्क-आशीर्वचन कहते; वानुळोर्-स्वर्गवासियों के;
 नरै तोय् नाण् मलर् तूव-सुरभियुक्त ताजे फूल बरसाते; नत् नैरिक्कु-श्रेष्ठ आचरण के;
 इरैयोन्-नायक; तन्-के; इळैयोन्-अनुज ने; अ एन्तलै-उस राजा को;
 तुरैयोर् नून् मुर्-आचार्यों के शास्त्रों के अनुसार; मौलि शूट्टिन्नान्-मुकुट धारण करवाया । ४०३

फिर धर्मावलम्बी श्रेष्ठ नायक के भाई ने उस सम्मानित सुग्रीव का विधिवत मुकुटधारण करवाया । तब विप्रों ने आशीर्वचन उच्चारें । स्वर्ग के देवों ने सुरभिमय ताजे कल्पसुमन बरसाये । ४०३

पौन्मा	मौलि	पुत्तैन्दु	पौयिलान्
तन्मा	तक्कळ	उळुम्	वैलैयिल्
नन्मार्	विउरुळु	वुर्	नायहन्
शौन्नान्	मुर्इयि	शौल्लि	नैल्लैयान् 404

पौन मा मौलि पुनैन्तु-स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करके; पौय् इलान्-सत्यसंध; तत् मानम् कळल्-(श्रीराम के) आदरणीय चरणों पर; तालुम् वेलेयिल्-(जब सुग्रीव) झुका तब; नल् मारपिल्-अपने श्रेष्ठ वक्ष से; तळुवुड्ड-लगा लेकर; मुड्डिय चौल्लिन्-वेदों के; अल्लैयान्-शीर्षस्थ; नायकन्-जगन्नायक; चोत्तान्-बोले । ४०४

सुग्रीव स्वर्णनिर्मित बड़ा किरीट पहनकर सत्यसंध श्रीराम के आदरणीय चरणों पर आ झुका । श्रीराम ने उसे अपने श्रीवक्ष से लगा लिया । फिर अर्थपूर्णवेदों के शीर्षस्थ (या अर्थपूर्णशब्दों के सर्वोन्नत अधिकारी) जगन्नायक सुग्रीव को (निम्नलिखित) उपदेश देने लगे । ४०४

ईण्डुनिन्	रेहि	नोनिन्	तिन्त्रिय	लिरुक्कै	यैयदि
वेण्डुव	मरवि	नैण्णि	विदिमुड्डै	यियड्डि	वीर
पूण्डपे	ररशुक्	केड्ड	यावैयुम्	बुरिन्दु	पोरिन्
माण्डवन्	मैन्द	तोडुम्	वाळ्दिनड्ड	डिरुविन्	वैहि 405

वीर-वीर; नी-तुम; ईण्डु निन्डु-यहाँ से; एकि-जाकर; तिन्-अपने; इन् इयल्-सुहावने; इरुक्कै-वासस्थान; अय्ति-पहुँचकर; वेण्डुव-कर्तव्य; मरपिन्-यथापरम्परा; नैण्णि-विचारकर; विदि मुड्डै-विधिवत; इयड्डि-करके; पूण्ड-अपनाये गये; पेर अरचुक्कु-बड़े शासन-कार्य के; एड्ड-योग्य; यावैयुम्-सभी; पुरिन्तु-सम्पन्न करते हुए; पोरिल्-युद्ध में; माण्डवन्-जो मरा, उसके; मैन्ततोडुम्-पुत्र (अंगद) के साथ; नल् तिरुविन्-श्रेष्ठ वैभव में; वैकि-रहकर; वाळ्ति-जीवन व्यतीत करो । ४०५

तुम यहाँ से सुखपूर्वक जाओ । अपने मधुर और निजी वासस्थान पहुँचो । कर्तव्य यथाक्रम सोचो और यथाविधि करो । अपनाये गये राज्यशासन के योग्य सभी कृत्य पूरा करते हुए युद्धनिहत वाली के पुत्र के साथ श्रेष्ठ सुख-वैभव में रहो । ४०५

वायमैशा	लडिर्विन्	वाय्न्द	मन्दिर	मान्द	रोडुम्
तीमैती	रौळक्किन्	निन्डु	तैरुदौळिन्	मडव	रोडुम्
तूय्मैशाल्	पुणर्च्चि	पेणिन्	तुहळरु	तौळिलै	याहिच्
चेय्मैयो	डणिमै	यिन्डिन्	तेवरिड्ड	डैरिय	निड्डि 406

वाय्मै चाल्-सत्यपूर्ण; अडिर्विन् वाय्न्त-बुद्धिशाली; मन्तिरम् मान्तरौडुम्-मंत्रणा के (मन्त्री) लोगों के साथ; तीमै तीर्-बुराई-रहित; रौळक्किन्-आचरण में; निन्डु-रहकर; तैरु तौळिल्-संहारकारी; मडवरोडुम्-(सेना) वीरों के साथ; तूय्मै चाल्-पवित्र; पुणर्च्चि पेणि-मेल का व्यवहार चाहकर; तुळ अरु-दोषहीन; तौळिलै-कर्मों; आकि-वनकर; चेय्मैयोडु-दूरी के साथ; अणिमै इन्डि-निकटता भी छोड़कर; तेवरिल् तैरिय-देवों के समान; निड्डि-रहो । ४०६

सत्यसंध और बुद्धिमान मन्त्रियों के साथ बुराई-रहित आचरण करो,

और संहारकारी (सेना के) वीरों के साथ पवित्र मेल का व्यवहार करो। तुम स्वयं दोषरहित आचरण करो। प्रजाजनों से न बहुत दूर रहो, न अत्यधिक समीप रहो। देवों के समान सम्मानित रहो। ४०६

पुहैयुडैत्	तैन्नि	नुण्डु	पौङ्गन	लङ्गेन्	रुन्नुम्
मिहैयुडैत्	तुलह	नूलोर्	विनयमुम्	वेण्डर्	पाङ्ग्रे
पहैयुडैच्	चिन्दै	यार्क्कुम्	पयन्नु	पण्विर्	रीरा
नहैयुडै	मुहत्तै	याहि	यिन्नुरै	नल्हु	नावाल् 407

उलकम्-संसार के (अनुभवों) लोग; पुकै उटैत्तु अँतिन्-धुआँ रहा तो; अङ्कु-वहाँ; पौङ्कु अत्तल्-लपलपानेवाली आग; उण्डु-है; अँत्तु उन्नुम्-ऐसा (अनुमान) कहने का; मिक्कै उटैत्तु-ज्ञान रखते हैं; नूलोर् विनयमुम्-शास्त्रज्ञों के कहे कूटव्यवहार भी; वेण्डल् पाङ्ग्रे-अपेक्षित है; पकै उटै चिन्तयार्क्कुम्-शत्रुता मन में रखनेवाले लोगों के प्रति भी; पयन् उरु-फलदायक; पण्विल् तीरा-व्यवहार से न हटकर; नकै उटै पुकत्तै-हासवदन; आकि-वनकर; नावाल्-जीम से; इन् उरै-मधुर वचन; नल्कु-बोलो। ४०७

धुआँ दिखायी दिया तो लोग कहते हैं कि वहाँ भभक उठनेवाली आग भी है। यह अनुमान का प्रमाण है। यह भी आवश्यक है। साथ-साथ ग्रन्थों में शास्त्रज्ञों ने जो लिख रखा है, उस पर भी (आगम-प्रमाण में भी) विश्वास रखो। तुम्हारे प्रति शत्रुता रखनेवालों के प्रति सुफल-दायक बर्ताव करने का गुण मत छोड़ो। हँसमुख रहो। जिह्वा से मधुर वचन बोलो। ४०७

तेवरुम्	वैः(ह)हर्	कौत्त	शैयिरु	शैल्व	मः(ह)दुन्
कावल	दरुमैत्	तैन्ना	लत्तुदु	करुदिक्	काण्डि
एवरु	मित्तिय	नण्व	रयलवर्	विरवा	रैन्डिस्
मूवहै	यियलो	रावर्	मुनैवर्क्कु	मुलह	मून्डिन् 408

तेवरुम्-देव भी; वैः.करु ओत्त-अपने लिए चाहें, इस योग्य; चैयिर् अरु-कमीहीन; चैल्वम् अ.तु-सम्पत्ति वह; उत कावलतु अरुमैत्तु-तुम्हारे संरक्षण में आ मिली है; अँन्नाल्-कहें तो; अन्तु करुति-वह सोचकर; काण्डि-देखो; मुनैवर्क्कुम्-मुनियों के लिए भी; उलकम् मून्डिन्-तीनों लोकों के; एवरुम्-कोई भी; इत्तिय नण्वर्-मधुर मित्र; विरवार-अरि; अयलवर्-अन्य (उदासीन); अँत्तु-ऐसे; इ मूवकै-इन तीन प्रकारों के; इयलोर् आवर्-स्वभाव वाले होते हैं। ४०८

तुम्हारे पास ऐसी सम्पत्ति मिली है, जिसको देखकर देव भी अपने लिए चाहें। इसलिए तुम उसका महत्त्व जानो और उसका ठीक तरह से पालन करो। मुनियों के लिए भी अरि, मित्र, उदासी —इन तीनों तरह के लोगों से सम्बन्ध रखना पड़ता है। ४०८

शैय्वत्त शैयदत्त याण्डुन् तीयन् शिन्दि यामल्
 वैवत्त वन्द पोदुम् वशैयिल विनिय कूरल्
 मैय्शौलल् वळङ्गल् यावुम् मेवित्त वैः(ह्)ह लित्तमै
 उय्वत्त वाक्कित् तम्मो डुयर्वत्त वुवन्दु शैय्वाय् 409

याण्डुम्—(अरि, मित्र, उदासीन) सभी के प्रति; तीयत्त चिन्तियामल्—बुराई न सोचकर; शैय्वत्त शैयदत्त—करनी करना; वैवत्त—निन्दा-कथनों के; वन्द पोदुम्—(कानों में) लगने पर भी; वचै इल—कटुवचन छोड़कर; इत्तिय कूरल्—मधुर भाषण करना; मैय् शौलल्—सत्य ही बोलना; यावुम् वळङ्गल्—सबका दान देना; मेवित्त—परधन; वैः.कल् इत्तमै—न ग्रसना; उय्वत्त आक्कि—(मनुष्यों का) उद्धार कराकर; तम्मोटु उयर्वत्त—खुद भी उत्कृष्ट बनते हैं; उवन्तु शैय्वाय्—(ऐसे व्यवहार) चाव के साथ करो । ४०६

अरि, मित्र उदासी —इन तीनों के प्रति कभी भी बुराई मत सोचो । कर्तव्य योग्य कृत्य करो । अपवाद कानों में पड़ें तो भी कटु शब्द मत कहो, पर मधुर भाषण ही करो । खूब दान करो । परधन मत चाहो । ऐसे कृत्य तुम्हें भी उभारेंगे और स्वयं भी उत्कृष्ट होते रहेंगे । इनको चाह के साथ करो । ४०९

शिडियर्त्तु इहळ्ळुन्दु नोवु शैय्वत्त शैय्यत्त मर्त्तिन्
 नैडियिहन् दियात्तोर् तीमै यिळैत्तला लुणर्च्चि नोण्डु
 कुडियदा मेत्ति याय कूत्तियार् कुववुत् तोळाय्
 वैडियत्त वैय्दि नौय्दिन् वैन्दुयर्क् कडलित् वीळ्ळुन्देन् 410

कुववु तोळाय्—पुष्ट कन्धों वाले; चिडियर् अँनुळ्—छोटे (अल्प या लघु) ऐसा; इहळ्ळुन्दु—(सोचकर) उपेक्षा करके; नोवु शैय्वत्त—दुःखदायी कृत्य; शैय्यल्—मत करो; मर्त्तिन्—और भी; यात्त—मैने; इ नैडि—यह सिद्धान्त; इहळ्ळुन्दु—छोड़कर; ओर् तीमै—एक बुराई; इळैत्तलाल्—की, इसलिए; उणर्च्चि नोण्डु—(शत्रुता की) भावना बढ़कर; कुडियत्तु आम्—छोटी; मेत्ति आय—देह वाली; कूत्तियाल्—कुब्जा द्वारा; वैडियत्त—अभाव; अय्यत्ति—प्राप्त करके; नौय्दिन्—शीघ्र; वैम् तुयर्—कठोर दुःख के; कडलित्—सागर में; वीळ्ळुन्देन्—गिरा । ४१०

पुष्ट कन्धों वाले ! अल्प (छोटा, या नीच, या लघु) समझकर किसी की उपेक्षा या अपमान मत करो और उनको दुःखी मत करो । देखो । मैंने इस सिद्धान्त का उल्लंघन कर एक बुराई की । इसलिए छोटी देह वाली कुब्जा का वैर-भाव बढ़ा और फलस्वरूप मुझे अभावों का सामना करना पड़ा और मैं क्रूर दुःख-सागर में गिर गया । ४१०

मड्गैयर् पौरुट्टा लैय्दु मान्दर्क्कु मरण मैन्डल्
 शङ्गैयिन् रुणर्दि वालि शैय्हायर् चालु मिन्नुम्

अङ्गवर् तिउत्ति ताने यल्लुम् बळियु मादल्
 अङ्गळिऱ् काण्डि यन्ऱे यिदऱ्कुवे रुवमै युण्डो 411

मङ्कैयर् पोरुटाल्-नारियों के कारण; मान्तर्कु-पुरुषों को; मरणम्
 अय्तुम्-मरण प्राप्त होगा; अय्ऱल्-यह तथ्य; वालि चैय्कैयाल्-वाली के कृत्य से;
 चङ्कै इन्ऱ-शंका के बिना; ∴ उणर्ति-जान लो; चालुम्-प्रमाण (पर्याप्त) होगा;
 इन्नुम्-और भी; अवर् तिउत्तित्ताने-उनके निमित्त; अल्लुम्-संकट और;
 पळियुम् आतल्-अपकीर्ति होती है, यह; अङ्कळिऱ्-हममें; काण्टि अन्ऱे-देखते हो
 न; इतऱ्कु-इसके लिए; वेङ्-अन्य कोई; उवमै उण्टो-उपमा है क्या । ४११

स्त्रियों के कारण पुरुषों को मृत्यु भी प्राप्त होगी —यह तथ्य वाली के
 व्यवहार से शंका के बिना जान लो । यही श्रेष्ठ प्रमाण है । और उनके
 ही निमित्त संकट और अपवाद प्राप्त हो सकते हैं —यह तथ्य हमारी बाबत
 साबित हुआ है । दूसरे उदाहरण भी चाहिए क्या ? । ४११

नायह तल्ल नम्मै ननिपयन् दैडुत्तु नल्लुम्
 ताय्ऱेन विनिडु पेणत् ताङ्गुदि ताङ्गु वारे
 आयडु तन्मै येन् मऱवरम् बिहवा वण्णम्
 तीयन वन्द पोडु शुडुदियाऱ् रीमै योरे 412

नायकन् अल्लन्-स्वामी नहीं; नम्मै-हमें; पयन्नु अय्ऱुत्तु-जनाकर; नत्ति
 नल्लुम्-खूब पालनेवाली; ताय्-माता; अय्-ऐसा (मानकर); इत्ति पेण-
 (प्रजा) तुमसे प्रेम-भरा व्यवहार करे, ऐसा; ताङ्कुवारै-भरणयोग्य प्रजाजनों का;
 ताङ्कुत्ति-भरण करो; आयडु तन्मै एनुम्-वैसे व्यवहार के होने पर भी; तीयत्
 वन्त पोतु-हानि (किसी के द्वारा) आयी तो; तीमैयोरे-बुरा करनेवाले को; अऱम्
 वरम्पु-धर्म की सीमा; इक्वा वण्णम्-लाँचे बिना; चूटुत्ति-जलाओ (दण्ड दो) । ४१२

प्रजा तुम्हें स्वामी न माने; पर अपनी जननी और पालन करने
 वाली धात्री समझे, और तुम्हारी सेवा करे । ऐसा तुम भरण-योग्य प्रजा
 का पालन करो । तो भी बुराई किसी के द्वारा आयी तो हानिकारी को,
 धर्म की सीमा का उल्लंघन किये बिना, दण्ड दो । ४१२

इरत्तलुम् पिउत्त तानु मँत्वन विरण्डुम् याण्डुम्
 तिउत्तुळि नोक्किऱ् चैय्द विनैदरत् तैरिन्द वन्ऱे
 पुउत्तिन्नि युरैप्प दैन्ने पूविन्मेऱ् पुत्तिदऱ् केनुम्
 अउत्तिन् दिरुदि वाळ्नाट् किरुदियः(ह्) दुरुदि यत्ब 413

अन्प-स्नेही; तिउत्तु उळि-समर्थ-रूप से; नोक्किन्-देखें तो; इरत्तलुम्-
 मरना और; पिउत्तल् तानुम्-जन्म लेना; अन्पत्त इरण्डुम्-दोनों; याण्डुम्-
 सदा; चैय्त् वित्तै तर तैरिन्त् अन्ऱे-पूर्वकृत कर्म के फलस्वरूप होते हैं न; पूविन्
 मेल्-(कमल) पुष्प पर आसीन; पुत्तिऱ्कु एनुम्-पवित्र (ब्रह्मा) देव के लिए भी;

अस्तित्तु इति-धर्म का अन्त; वाळ् नाट्कु इति-आयु का अन्त है; अ.तु उरुति-वह निश्चित है; इति-आगे; पुरतु-अन्य; उरैप्पतु अन्ते-कहना क्या है ? । ४१३

प्रिय मित्र ! खूब विदग्धता के साथ सोचा जाय तो जन्म और मरण पूर्वकृत कर्मों के ही फल हैं । हैं न ? महाविष्णु के नाभि-कमल पर उदित पवित्र ब्रह्मा के लिए भी धर्म-कर्म का अन्त आयु का अन्त ला देगा । वह शाश्वत है और ध्रुव है । फिर क्या कहा जाय ? । ४१३

आक्कुमुड्	गेडुन्	दाज्ज	यस्तुत्तीडु	पाव	माय
पोक्किवे	रुण्मै	तेडार्	पौरुवरुम्	बुलमै	नूलोर्
ताक्कित्त	वीन्रो	डौन्	तरुक्करुन्	जैरुविर्	इक्कोय्
पाक्किय	मन्त्रि	यैन्ऱुम्	पावत्तैप्	पड्ऱ	लामो 414

तक्कोय्-योग्य; औन्ऱोटु औन्ऱु-एक दूसरे के साथ; ताक्कित्त-टकराकर; तरुक्कु उरुम्-जहाँ गर्व दरसाया जाता है, उस; चैरुविल्-युद्ध में; आक्कुमुम् केटुम्-उत्कर्ष और अपकर्ष; ताम् चैय्-अपने से किये हुए; अस्तुत्तीडु पावम् आय-धर्म और पाप के फलस्वरूप मिलनेवाले है; पोक्कि-वह छोड़कर; वेरु उण्मै-अन्य कारणों का रहना; पौरुव अरुम्-अनुपम; पुलमै नूलोर्-विद्वान् शास्त्रज्ञ; तेडार्-नहीं मानते; पाक्कियम् अन्त्रि-पुण्यकर्म छोड़कर; पावत्तै-पाप को; औन्ऱुम्-कभी; पड्ऱलामो-कर सकते हैं क्या । ४१४

योग्य सुग्रीव ! युद्ध में, जहाँ लोग परस्पर टकराते हैं और अभिमान दिखाते हैं, अभ्युदय और नाश अपने किये पुण्य और पाप के लाये हुए होते हैं । विद्वान् शास्त्रज्ञ लोग उसका और किसी कारण का होना नहीं मानते । इसलिए सौभाग्यकारी पुण्यकर्म छोड़कर नाशकारी पापकार्य कभी भी किये जा सकते हैं क्या ? । ४१४

इन्ऱवै	तहैमै	यैन्ऱव	वियल्बुळि	मरवि	नैण्णि
मन्ऱर	शियर्ऱि	यैन्गण्	वरुवळि	मारिक्	कालम्
पिन्ऱुड	मुर्ऱेयि	नुन्ऱन्	पैरुङ्गडर्	चेत्तै	योडुम्
तुन्ऱुदि	पोदि	यैन्ऱान्	सुन्दर	नवनुज्	जौल्वान् 415

इन्ऱवै तहैमै-ये योग्यताएँ हैं; औन्ऱव-कहते हैं (लोग); वियल्बु उळि-शास्त्र-सम्मत रीति से; मरपिन्ऱु नैण्णि-यथाक्रम विचार कर; मन्ऱरन्ऱु-स्थायी राज्य; शियर्ऱि-(राज) करके; मारि कालम्-वर्षाकाल के; पिन्ऱु उड्-बीतने पर; औन्ऱ कण्-मेरे पास; वरु वळि-जब आओगे तब; मुर्ऱेयिन्-उचित प्रकार से; उन् तन्-अपनी; पैरु कटल् सागर-सम; चेतैयोडुम्-सेना के साथ;

यैन्ऱान्-कहा; वुन्ऱरन्-सुन्दर

ये सब शासक के लिए योग्य विचार और व्यवहार हैं। ऐसा लोग कहते हैं। इसलिए शास्त्र में उक्त रीति से और परम्परा के क्रम के अनुसार शाश्वत राज्य करो। फिर वर्षाकाल के बीतने पर मेरे पास आ जाओ। जब आओ, तब अपनी विशाल सागर-सम सेना को भी साथ ले आओ। अब तुम जाओ। —सुन्दर श्रीराम ने कहा। तब सुग्रीव उत्तर में यों बोला। ४१५

कुरङ्गुडै यिरुक्कै यैत्तुङ् गुड्डमे कुड्ड मल्लाल्
अरङ्गैल्लिल् तुरक्क नाट्टुक् करशैत लाहु मन्डै
मरङ्गिळ् ररुविल् कुत्तुत्ति वळ्ळत्ती मतत्ति नैम्मै
इरङ्गिय पणियाञ् जैय्य विरुत्तियाङ् चिन्ता लैम्बाल् 416

वळ्ळल्-वदान्य; कुरङ्कु उडै-वानरों के रहने का; इरुक्कै-स्थान; यैत्तुम्-कहा जाता है, यही; कुड्डमे-दोष; कुड्डम् अल्लाल्-दोष है, नहीं तो; अल्लिल् अरङ्कु-सुन्दर मंच (सुधर्मा) से शोभित; तुरक्कम् नाट्टुक्कु-स्वर्गदेश का; अरच्चु अल्लल्-राजा है, कहने योग्य; आकुम्-है; मरम् किळर्-तरुलसित; अरुवि कुत्तुत्ति-सरितापूर्ण पर्वत पर; नी-आप; मतत्तित्तु-चित्त में; नैम्मै-हमारे प्रति; इरङ्किय-सहानुभूति के साथ दी गयी; पणि-सेवा की आज्ञाएँ; याम् चैय्य-हमें करने देते हुए; चिल् नाळ्-कुछ दिन; नैम् पाल्-हमारे पास; विरुत्ति-रहिए। ४१६

हमारे वासस्थान के सम्बन्ध में इतना ही दोष है कि वह वानरों का वासस्थान है, अगर वह दोष हो! नहीं तो वह 'सुधर्मा' नाम के सभाभवन के साथ शोभनेवाले स्वर्ग का भी नायक (स्वर्ग से अधिक भव्य) है। हमारे पर्वत पर तरु हैं और सरिताएँ हैं। आप जो भी आज्ञा देने की कृपा करेंगे, हम उनको कार्यान्वित कर देंगे। आप कुछ दिनों तक हमारे पास रहने की कृपा करें। ४१६

अरिन्दम निन्तै यण्मि यरुळ्कुक्कुरिये माहिप्
पिरिन्दुवे रैय्दुञ् जैल्वम् वैरुमैयिड् पिडिदन् रामाल्
करुन्दडङ् गण्णि ताल्लै नाडलाङ् गालङ् गारुम्
इरुन्दरु डरुदि यैम्मो डैन्नुडि यिणैयिन् वीळ्न्तान् 417

अरिन्दम-शत्रुहंता; निन्तै अण्मि-आपकी शरण में आकर; अरुळ्कुक्कु-कृपा के; उरियोमाकि-पात्र बनकर; पिरिन्दु-आपसे बिछुड़कर; वैरु अय्युम्-अलग रहकर भोगने का; जैल्वम्-विभव; वैरुमैयिल् पिरितु अन्नु आम्-अभाव से पृथक् नहीं है; करु तटम् कण्णित्ताळै-काली और आयत आँखों वाली (सीतादेवी) को; नाटल् आम्-खोजने का; कालम् गारुम्-काल आते तक; नैम्मोडु इरुन्दु-हमारे साथ रहकर; अरुळ् तरुति-उपकार करें; अन्नु-कहकर; अटि इणैयिन्-चरणद्वय पर; वीळ्न्तान्-गिरा। ४१७

शत्रुहन्ता वीर हे श्रीराम ! आपकी शरण में आकर, आपकी कृपा के पात्र रहने के बाद आपसे बिछुड़कर अलग जो भी भोग भोगेंगे, वे अभाव से भिन्न नहीं होंगे ! काली और विशाल आँखों वाली देवी सीता के अन्वेषण के लिए योग्य काल के आने तक आप हमारे साथ रहने की कृपा कीजिए । सुग्रीव ने यह विनय करते हुए श्रीराम के चरणयुगल पर गिरकर प्रणाम किया । ४१७

एन्दलु	मिदन्नैक्	केळा	विन्तिळ	मुखव	नाड
वेन्दमै	यिरुक्कै	यम्बोल्	विरदियर्	विळैदर्	कौव्वा
पोन्दव	णिरुप्पि	नैम्सैप्	पोड्डवे	पौळुदु	पोमाल्
तेरुन्दिनि	दियड्डु	मुन्ड	तरशियर्	डरुमन्	दोर्दि 418

एन्तलुम्-राजाराम भी; इतन्नै केळा-यह सुनकर; इन् इळ मुखवल्-मधुर मन्दहास; नाड-प्रकट करते हुए; वेन्तु अमै-राजकीय; इरुक्कै-भवन में रहना; अम् पोल्-हम जैसे; विरतियर्-तपोव्रती लोगों के लिए; विळैतड्डु ओव्वा-चाहनीय नहीं है; अवण् पोन्तु-वहाँ आकर; इरुप्पित्तु-रहें तो; अम्मै पोड्डवे-हमारे सत्कार करने में हो; पौळुतु पोम्-समय बीत जायगा; आल्-इसलिए; तेरुन्तु-छानबीन कर; इत्तितु इयड्डुम्-सुख से जो करोगे; उन् तन्-उस तुम्हारे; अरचियल् तरुमम्-शासन-धर्म से; तीरुत्ति-तुम हट जाओगे । ४१८

श्रीराजाराम ने भी यह सुनकर मधुर मन्दहास करते हुए उत्तर दिया । हम तपोव्रती हैं । हमारे लिए राजकीय भवन में रहना चाहने योग्य काम नहीं है । और भी अगर हम वहाँ आकर रहें तो हमारी सेवा-टहल में तुम लोगों का सारा समय कट जायगा । और उससे तुम सोच-विचारकर करणीय अपने शासनकार्य के धर्म से च्युत हो जाओगे । ४१८

एळिरण्	डाण्डि	यान्पोन्	दैरिवत्तत्	तिरुक्क	वेन्ड्रेन्
वाळिया	यरशर्	वेहुम्	वळनहर्	वैह	लौल्लेन्
पाळियन्	दडन्दोळ्	वीर	पार्क्किलै	पोलु	मन्ड्रे
याळिशै	मौळियो	डन्डि	यानुश	मिन्ब	मैन्तो 419

वाळियाय्-जयजीव; एळ् इरण्डु आण्डु-सात के दो (चौदह) साल; यान् पोन्तु-मैं जाकर; दैरिवत्तत्तु-जलते वन में; इरुक्क-रहना; एन्ड्रेन्-मैंने मान लिया; अरचर् वैकुम्-राजा जहाँ रहते हैं; वळ नकर्-उस समृद्ध नगर में; वैक्ल् औल्लेन्-रहने को सम्मत नहीं होऊँगा; पाळि-सबल; अम्-सुन्दर; तटम् तोळ्-विशाल कंधों वाले; वीर-वीर; याळ् इचै-'याळ'-ध्वनि-सी मधुर; मौळियोडु अन्डि-बोली की सीता के बिना; यान् उळुन्-मैं जो भोगूँ, वह; इत्तप्-सुख; अन्तो-किस मूल्य का; पार्क्किलै पोलुम्-शायद तुमने नहीं सोचा क्या । ४१९

जयजीव ! मैंने चौदहों साल दाहक वन में वास करने का वचन दिया है । तब तक राजाओं के वासस्थान, समृद्ध नगरों में रहना नहीं मानूँगा ।

और भी, हे सबल सुन्दर विशाल कन्धों वाले वीर ! 'याळ' की ध्वनि-सी मधुरभाषिणी सीता के बिना जो भी मुझे सुख-भोग मिले, वह किस काम का ? यह तुम नहीं देखते शायद ! । ४१९

देविवे	इरक्कन्	वैत्त	शिऱैयिन्नु	ळिरुप्पत्	तान्ऱन्
आवियन्	दुणैव	तोडु	मळविडर्	करिय	विन्बम्
मेविना	तिराम	नैन्ऱा	लैयिव्	वैय्य	माऱ्ऱम्
मूवहै	युलह	मुऱ्ऱुड्	गालत्तु	मुऱ्ऱ	वऱ्ऱो 420

ऐय-श्रेष्ठ सुग्रीव; तेवि-मेरी गृहिणी; वैरु-अलग; अरक्कन् वैत्त-राक्षस-रक्षित; चिऱैयितुळ्-कारागृह में; इरुप्प-रहती है, तब; इरामन्-श्रीराम; तान्-स्वयं; तन् आवि अम् तुणवत्तोडुम्-अपने प्राणप्यारे सखा के साथ; अळविटर्कु अरिय-अराण्य; इन्पम्-सुखभोग; मेवितान्-अपनाए रहा; नैन्ऱाल-लोग कहें तो; इ वैय्य माऱ्ऱम्-यह कठोर अपवाद-कथन; मूवकै उलकम्-त्रिवर्ग के लोकों के; मुऱ्ऱुम् कालत्तुम्-मिटने के समय में भी; मुऱ्ऱवऱ्ऱो-मिटेगा क्या । ४२०

श्रेष्ठ सुग्रीव ! मेरी गृहिणी सीता रावणरक्षित कारागृह में है । तब 'राम अपने प्यारे प्राणसम सखा के साथ अपार सुख-भोग में मस्त रहा !' —यह अपवाद अगर लोग कहने लगे तो क्या वह अपयश त्रिवर्ग के लोकों के नाश होने पर भी मिटेगा ? । ४२०

इल्लन्	डुऱन्दि	लादो	रियर्कैयै	यिळन्नु	पोरिन्
विल्लन्	डुऱन्नु	वाळ	वैळ्हिन्नेन्	मेन्मै	यल्लाच्
चिल्लन्	वुरिन्नु	निन्ऱ	तीमैह	डीरु	माऱु
नल्लन्	दौडर्न्द	नोन्वि	नवैयर्	नोऱ्प	नाळुम् 421

इल् अऱम्-गृहस्थधर्म; तुऱन्तिलातोर्-अमुक्त; इयर्कैयै-लोगों का आचार-व्यवहार; इळन्नु-छोड़कर; पोरिन्-युद्ध में; विल् अऱम्-धनुधर्म; तुऱन्नु-छोड़कर; वाळ वैळ्हिन्नेन्-जीने से शरमाता हूँ; मेन्मैयल्ला-जो उत्कृष्ट नहीं; चिल् अऱम्-क्षुद्र धर्म; पुरिन्नु निन्ऱ-जो मैंने आचरण किया है; तीमैकळ्-उनसे मिलनेवाले कष्ट; तीरुम् आऱु-दूर करने हेतु; नल् अऱम् तौटर्न्त-सद्धर्मानुचारी; नोन्पिन्-व्रत के पालन में; नाळुम्-रोज; नवै अऱ-निर्दोष रीति से; नोऱ्पल्-तपस्या करूँगा । ४२१

गृहस्थी में रहनेवालों के योग्य रहन-सहन या व्यवहार मैंने त्याग दिया । साथ-साथ युद्ध में धनु-धर्म जो है, उसका भी उल्लंघन कर दिया । इस स्थिति में अपने जीवित रहने में मुझे शरम का अनुभव होता है । जो धर्म मैंने अब तक अपनाए वे अल्प हैं और श्रेष्ठ नहीं हैं । उनके पालन से जो हानियाँ सम्भवनीय हैं, उनको दूर करने के वास्ते मैं सदाचरण व्रत के पालन में स्थित होकर प्रतिदिन तप करूँगा, ताकि दोष सब दूर हों । ४२१

अरशियर् कुरिय यावु माइइळि याइरि यान्ऱ
 करैशैयर् करिये शैतैक् कंडलौडुन् दिङ्ग जाल्लिगिन्
 विरशुव दैनबा तित्तै वेण्डित्तै वीर वैन्रान्
 उरैशैयर् कळिडु माहि यरिडुमा मौळुक्कि निन्नान् 422

उरै चैयर्कु-कहने के लिए; अळितुम् आकि-सुलभ रहकर; अरित्तुम् आम-
 (करने के लिए) कठिन जो है; औळुक्कि-उस आचरण में; निन्नान्-स्थित
 रहनेवाले श्रीराम; वीर-वीर; अरचु इयर्कु-राजकाज के लिए; उरिय यावुम्-
 योग्य आवश्यक सभी; आइइळि-करनेयोग्य रीति से; आइरि-करके; आन्ऱ-
 श्रेष्ठ; करै चैयर्कु अरिय-पार पाने में कठिन; चैतै कटलौडुम्-सेना-सागर के साथ;
 तिङ्कळ् नान्किल्-महीनों, चार, में; अन्नु पाल्-मेरे पास; विरचुक्-आ मिलो;
 तित्तै वेण्डित्तै-तुमसे याचना करता हूँ; अन्नान्-बोले । ४२२

सदाचार ऐसे हैं, जिनका कथन सुलभ है पर आचरण कठिन है ।
 श्रीराम ऐसे सदाचरण में स्थिर रहनेवाले थे । उन्होंने सुग्रीव से कहा कि
 वीर ! राजकाज ठीक सँभालो । फिर अपार सेना के सागर के साथ
 चार मास की अवधि में मेरे पास आ जाओ । तुमसे मेरी यह याचना
 है । ४२२:

मडित्तोरु माइइडु गूडान् वान्तुयर् तोइरत्तु तन्नान्
 कुडिप्पडिन् दौळुहन् मादो कोदिल राव लैन्ता
 नैरिप्पडर् कण्गळ् पौङ्गि नीरुवर नैडिडु ताळ्न्नु
 पौरिप्पहन् दुन्व मुत्ताक् कविकुलत् तरशन् पोत्तान् 423

कविकुलत्तु अरचत्-कपिकुल का राजा; मडित्तु-उत्तर में; ओरु माइइम्-
 कोई वचन; गूडान्-न बोला; वान् उयर्-बहुत उत्कृष्ट; तोइरत्तु-(तपो-)
 वेशधारी; अन्तान्-उनका; कुडिप्पु अरिन्नु-मनोभाव जानकर; औळुक्क-उसके
 अनुसार आचरण करना; कोतु इलर् आत्त-निर्दोष काम करनेवाले का गुण होगा;
 अन्ता-यह सोचकर; पटर् कण्कळ्-विशाल आँखों से; नीर् पौङ्कि-जल को
 उमड़कर; नैरि वर-धारा में बहाते हुए; नैडितु ताळ्न्नु-पट गिरकर; पौरिप्पु
 अरु-अकूत; तुन्पम् उन्ता-दुःख-मन में रखे; पोत्तान्-गया । ४२३

यह सुनकर कपिकुलराज ने कुछ उत्तर नहीं दिया । अति श्रेष्ठ तपवेश-
 धारी श्रीराम का तात्पर्य समझा । माना कि उनका मन जानकर उसी के
 अनुकूल चलना निर्दोष आचरण वाले के लिए युक्त है । आँखों से आँसू बहाते
 हुए सुग्रीव श्रीराम के चरणों में पट गिरा । नमस्कार कर उठा और
 अपार दुःख लेकर किष्किन्धा की ओर चल दिया । ४२३

वालिहा दलन्नु माण्डु मलरडि वण्डिगि नान्
 नीलमा मेह मन्त नैडियव नरळि नोकुकिच्
 चीलनी युडै याद लिवन्शिरु तादै यैन्ता
 मूलमे तन्द नुन्दे यामेन मुरैयि निर्रि 424

मलर् अटि—कमल-चरण पर; वणङ्कितान्—जिसने प्रणाम किया; वालि कातलनुम्—उस वाली के पुत्र को भी; आण्टु—वहाँ; नीलम् मा मेकम् अन्त—नीले, बड़े मेघ के समान; नैटियवन्—उत्तम श्रीराम; अरुळिन्—कृपापूर्वक; नोक्कि—देखकर; नी—तुम; चीलम् उटैयै—शीलवान; आतल्—वनो; इवन्—इसे; चिऱु तातै अन्ता—छोटे पिता न मानकर; मूलमे तन्त—जन्म-दाता; नुन्तै आम् अन्त—अपने पिता ही मानकर; मुदैयिन् निऱुऱि—उसी (वान्धव्य-) क्रम में वर्ताव करो । ४२४

तब वाली का पुत्र भी श्रीराम के चरणों पर नत हुआ । नीले, बड़े मेघ-सम श्रीराम ने उस पर कृपाकटाक्ष डालकर कहा कि तुम शीलवान बने रहो । इस सुग्रीव को छोटे पिता मत मानो । पर जनक पिता ही मानो । उस रिश्ते के गौरव का पालन करो । ४२४

अन्तमड्	रिनैय	कूऱि	येहवड्	रौंडर	वैन्ऱान्
पौन्नडि	वणङ्गि	मड्डप्	पुहळुडैक्	कुरिशिल्	पोनान्
पिन्तर्मा	रुदियै	नोक्किप्	पेरैळिल्	वीर	नीयुम्
अन्तव	तरशुक्	केऱु	दाऱुदि	यऱिवि	नैन्ऱान् 425

अन्त—कहकर; मड्डम्—और; इतैय कूऱि—ऐसी बातें कहकर; अवन् तौंडर—उसका पीछा करके; एकु—जाओ; वैन्ऱान्—कहा; मड्ड—उसके पश्चात्; अ पुकळ् उटै—वह कीर्तिमान; कुरिचिल्—कुँअर; पौन् अटि वणङ्कि—सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके; पोत्तान्—गया; मारुतियै—मारुति को; नोक्कि—देखकर; पिन्तर्—फिर; पेर् अँळिल् वीर—अतिसुन्दर वीर; नीयुम्—तुम भी; अन्तवन्—उसके; अरचुक्कु एऱुऱु—राज्य के योग्य; अरिविन्—अपनी बुद्धि से; आऱुडति—(काम) करो; वैन्ऱान्—कहा । ४२५

श्रीराम ने यह कहा और भी ऐसे हित-वचन कहे । फिर आज्ञा दी कि सुग्रीव के पीछे जाओ । पश्चात् वह प्रकीर्तित कुमार अंगद श्रीराम के सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके किष्किन्धा की ओर चल पड़ा । श्रीराम ने मारुति से कहा कि अतिसुन्दर वीर ! तुम भी जाओ और सुग्रीव के शासनकार्य में युक्त सहयोग के कार्य अपने बुद्धिबल के आधार पर साधो । ४२५

पौयत्तलि	लुळ्ळन्	तन्बु	पौळिहिन्ऱ	पुणर्च्चि	यानुम्
इत्तलै	यिरुन्दु	नाये	नैयिन	वैन्क्कुत्	तक्क
कैन्तौळिल्	शैय्वै	नैन्ऱु	कळलिणै	वणङ्गुड्	गालै
मैयत्तलै	निन्ऱ	वीर	तिव्वुरै	विळम्ब	लुऱुऱान् 426

पौयत्तल् इल्—असत्य जिसमें नहीं था; उळ्ळत्तु—ऐसे मन के; अन्पु पौळिकिन्ऱ—(और) भक्ति अधिक; पुणर्च्चियात्तुम्—रखनेवाले के; नायेन्—दास में; इ तलै इरुन्तु—यहीं रहकर; एयित्त—आप जो आज्ञा देंगे, अँतक्कु तक्क—और अपने योग्य; कैन् तौळिल्—छोटी-मोटी सेवाएँ; चैय्वैन्—करूँगा; अँन्ऱु—कहकर;

कळल् इणै-चरणयुगल पर; वणङ्कुम् कालै-नमस्कार करते समय; मैय् तलै निन्ऱ
वीरन्-सत्यसंध, वीर (श्रीराम); इ उरै-यह बात; विळम्पल् उड्डान्-कहने
लगे । ४२६

असत्यहीन और भक्ति से लबालब भरे मन वाले हनुमान ने विनय की
कि दांस मैं यहीं रह जाऊँ ! आप जो भी आज्ञा करेंगे, जो मुझसे साध्य
है, वे छोटी-मोटी सेवाएँ बजाऊँगा । यह कहते हुए उसने श्रीराम के चरणों
पर नमस्कार किया; तब सत्यसंध श्रीराम ने यों कहा । ४२६

निरम्बिता तौरवन् कात्त निरैयर शिरुदि निन्ऱ
वरम्बिला ददत्तै मड्डोर् तलैमहन् वलिदिऱ् कौण्डाल्
अरुम्बुव नलन्नु दीङ्गु माहलि तैय निन्बोऱ्
पैरुम्बोऱै यरिवि तोरा तिलैयितैप् पैरुव दम्मा 427

निरम्पितान्-पूर्णयोग्य; औरवन्-एक (वाली); कात्त-द्वारा पालित;
निरै अरचु-समृद्ध राज्य; इरुति निन्ऱ-अन्तिम; वरम्पु इलातनु-सीमा-रहित है;
अतत्तै-उसे; मड्ड ओर् तलै मकन्-कोई दूसरा राजा; वलितिन् कौण्डाल्-बलात्
हथिया लेगा तो; नलन्नु तोङ्कुम्-लाभ और हानि; अरुम्पुव-होगी; आकलिन्-
इसलिए; ऐय-महिमामय; निन्पोल्-तुम्हारे-समान; पैरुम् पौऱै-बड़े सहनशील
और; अरिवितोराल्-बुद्धिमान लोगों द्वारा ही; तिलैयितै पैरुवन्-स्थिरता पा सकता
है । ४२७

पूर्णकुशल वाली द्वारा पालित राज्य समृद्ध और निस्सीम है । उसको
कोई अन्य राजा बलात् हथिया लेगा तो लाभ और हानियाँ निकल
आयेंगी । इसलिए उसे सुरक्षित करना है । महिमावान हनुमान ! वह
स्थिरता देने का कार्य तुम जैसे बड़े ही सहनशील और बुद्धिमान के हाथों
ही हो सकेगा । ४२७

आन्ऱवऱ् कुरिय दाय वरशितै निरुवि यप्पाल्
एन्ऱैनक् कुरिय दाय करुमु मियऱऱ् कीत्त
शान्ऱवर् निन्ति तिल्लै यादलाऱ् इरुयन् दान्ते
पोन्ऱनी यान्ते वेण्ड वत्तलैप् पोदि यैन्ऱान् 428

आन्ऱवऱकु-उत्तम सुग्रीव के; उरियतु आय-स्वत्व के; अरचितै-राज्य को;
निरुवि-सुसंगठित करके; अप्पाल-वाद; अँतक्कु उरियतु आय-मेरे प्रति कर्तव्य;
करुमुम्-कार्य भी; एन्ऱ-हाथ में लेकर; इयऱऱ्कु औत्त-करने योग्य; चान्ऱवर्-
श्रेष्ठ व्यक्ति; निन्तिन् इल्लै-तुम्हारे समान कोई नहीं है; आतलाल्-इसलिए;
तरुम् तात्ते पोन्ऱ-धर्म ही-सम; नी-तुम; यान्ते वेण्ड-मेरी ही याचना से; अ तलै
पोति-उधर जाओ; अँन्ऱान्-कहा । ४२८

श्रेष्ठ सुग्रीव के अधिकार में आये राज्य को पहले सुरक्षित करो ।

फिर मेरे प्रति कर्तव्य करो । इसके लिए तुमसे बड़ा श्रेष्ठ कोई नहीं है । इसलिए धर्मावतार-सम तुम मेरी याचना मानो और वहाँ जाओ । ४२८

आळिया	तत्तैय	कूड	वाणैयी	दाहि	तः(ह)दे
वाळियाय्	पुरिवै	नैतू	वणङ्गिमा	रुदियुम्	बोत्तान्
शूळिमाल्	यात्तै	यन्त	तम्बियो	डैळुन्नु	तौल्ले
ऊळिना	यहन्तुम्	वेरो	रुयर्दडड्	गुन्ऱ	मुड्डान् 429

आळियान्-(सुदर्शन)- चक्रधारी श्रीराम (के); अत्तैय कूड-बैसा कहने पर; मारुतियुम्-हनुमान भी; वाळियाय्-जयजीव; आणै-आज्ञा; ईतु आकिन्-यह हो तो; अःते पुरिवैन्-वही कहूँगा; नैतू-कहकर; वणङ्कि-नमस्कार करके; पोत्तान्-गये; तौल्ले-पुरातन; ऊळि नायकत्तुम्-युगनायक श्रीराम भी; शूळि माल्-मुखपट्ट पहने हुए और बड़े; यात्तै अन्त-गज के समान; तम्बियोट्टु डैळुन्नु-भाई के साथ उठकर; वेरु ओर्-दूसरे एक; उयर् तट कुन्ऱम्-उन्नत विशाल पर्वत पर; उड्डान्-पहुँचे । ४२९

सुदर्शन नाम के चक्रधारी श्रीराम के ऐसा कहने पर मारुति ने विनय के साथ कहा कि जयजीव ! यही आपकी आज्ञा है तो उसी के अनुसार चलूँगा । फिर वह उनको नमस्कार करके चला गया । बाद पुरातन युगों के नायक श्रीराम मुखपट्ट पहने हुए बड़े हाथी के समान अपने भाई लक्ष्मण को साथ लेकर दूसरे एक बड़े (प्रश्रवण) पर्वत पर जा पहुँचे । ४२९

आरिय	तरुळिर्	पोयव्	वहन्मलै	यहत्त	नात्त
सूरियन्	महन्नु	मानत्	तुणैवरुड्	गिळैयुञ्	जुड्डत्
तारैयै	वणङ्गि	यन्ना	डायैन्तत्	तन्द	शौऱ्कळ्
शौरियर्	शौल्ले	यैन्तन्	चैव्विदि	तरशु	शैय्दान् 430

आरियन् अरुळिन्-आर्यश्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा के अनुसार; पोय्-जाकर; अ अकन् मलै-उस विशाल (किष्किन्धा) पर्वत के; अकत्तन् आत्त-स्थल में रहनेवाला; सूरियन् मकत्तुम्-सूर्य के पुत्र ने भी; मात्तम् तुणैवरुम्-सम्मान्य साथी; गिळैयुम्-और बन्धु; जुड्ड-घेर आये; तारैयै वणङ्कि-तारा को नमस्कार करके; अन्ताळ् तायैत-उसके द्वारा मातृ-सम; तन्त चौऱ्कळ्-कहे हुए शब्दों को; चौरियर् चौल्ले-उत्तम लोगों के उपदेश-वचन ही; नैन्त-मानकर; चैव्वितिन्-उत्तम रूप से; अरवु चैय्दान्-राज्य किया । ४३०

आर्य श्रीराम की आज्ञा लेकर सुग्रीव अपने साथियों (मन्त्रियों आदि) और बान्धवों के साथ अपने पर्वत पर पहुँचा । वहाँ का होकर उसने तारा को नमस्कार किया । उसने जो भी माता के समान कहा उसे उत्तम, बड़े लोगों के उपदेशों का-सा गौरव देते हुए सुग्रीव राज्य करता रहा । ४३०

वळवर	शैय्दि	मर्ऱ	वानर	वीरर्	यारुम्
किळैरि	नुदव	वाणै	किळर्दिशै	यळप्पक्	केळो
डळविल	वारऱ	लाण्मै	यङ्गद	नरङ्गीळ्	शैल्वत्
तिळवर	शियर्ऱ	वेवि	यितिदिति	तिरुन्दा	निप्पाल् 431

वळम् अरचु अँयति-सब तरह से समृद्ध राज्य पाकर; मर्ऱ-अन्य; वानर वीरर् यारुम्-सभी वानर वीरों के; किळैरित् उत्तव-रिश्तेदारों के समान साथ देते; आणै-आज्ञा के; किळर् तिचै-वर्तमान सभी दिशाओं में; अळप्प-मापते (मान्य रहते); अळवु इल आर्ऱल्-अपार शक्तिशाली; आण्मै अङ्कतन्-पौरुषयुक्त अंगद को; केळोट्टु-अपने बन्धु-बान्धवों के साथ; अर्ऱम् कौळ् चैल्वत्तु-धर्मसम्मत रीति से प्राप्त वैभव के साथ; इळवरचु इयर्ऱ-युवराज का अधिकार चलाने की; एवि-आज्ञा देकर; इतितित् इरुन्तात्-सुखपूर्वक रहा; इप्पाल्-इसके पश्चात् । ४३१

सुग्रीव सर्वसमृद्ध राज्य का राजा बना । अन्य वानरवीर उसका रिश्तेदारों के समान साथ दे रहे थे । उसकी आज्ञा वर्तमान सभी दिशाओं में मानी गयी । सुग्रीव ने अपार बल और पौरुष से युक्त अंगद को युवराज के पद पर रहकर अपने रिश्तों के साथ धर्मसम्मत रीति से प्राप्त धन-वैभव को भोगने की आज्ञा दी । इस स्थिति में सुग्रीव सुख के साथ राज्य करता रहा । ४३१

9. कार्कालप् पडलम् (वर्षाकाल पटल)

मावियल्	वडदिशै	निन्ऱुम्	मात्तवन्
ओविय	मेयँत्त	वौळिक्क	वित्तुगुलाम्
देवियै	नाडिड	मुन्ऱित्	तैत्ऱिशैक्
केविय	तूदेन	विरवि	येहितान् 432

ओवियमे अँत्त-चित्र के ही समान; ओळि-प्रकाशमय; कवित् कुलाम्-सौन्दर्ययुक्त; तेवियै-देवी सीता को; नाटिट-ढूँढ़ने के लिए; मुन्ऱित्-(किसी के जाने से) पूर्व ही; मात्तवन्-मनुकुल सम्भूत श्रीराम के द्वारा; तैत्ऱि तिचैक्कु-दक्षिण दिशा में; एविय-प्रेषित; तूतु अँत्त-दूत के समान; इरवि-सूर्य; मा इयल्-श्रेष्ठ मान्य; वट तिचै निन्ऱुम्-उत्तर दिशा से; एकितान्-(दक्षिण की तरफ) गये । ४३२

दक्षिणायन आरम्भ हुआ । सूर्य ने अपना दक्षिण की ओर गमन आरम्भ किया । सूर्य श्रीराम के दूत के समान लगे, जिनको श्रीराम ने चित्र-सम सुन्दर देवी सीता को खोजने के लिए सबसे पहले भेजा हो । वे उत्तम उत्तर दिशा छोड़कर दक्षिण में गये । ४३२

पैविरि	पः(ह्)ऱलैप्	पान्द	ळेन्दिय
मीय्निलत्	तहळियित्	मुळङ्गु	नीर्नैयित्

वैयवन्	विळक्कमा	मेरुप्	पौर्रिरि
मैयह	लौत्तडु	मळैत्त	वानमे 433

मळैत्त वातम्-मेघाच्छन्न आकाश; पं विरि-फन फैले हुए; पल् तलै-अनेक सिरों के; पान्तळ्-शेषनाग द्वारा; एन्तिय-वहित; मौय् निलम्-सशक्त भूमि रूपी; तक्ळियिल्-दिये में; मुळङ्कुम्-शब्दायमान; नीर् नैयिन्-समुद्र रूपी घृत से; मेरु पौन् तिरि-मेरु रूपी सुन्दर वर्तिका पर; वैयवन् विळक्कम् आ-सूर्य की ज्वाला का; मै अक्ल्-काजल पारने के वर्तन; औत्ततु-के समान लगा । ४३३

आकाश मेघाच्छन्न था । वह काजल पारने के एक बहुत बड़े वर्तन के समान लगा । फैले हुए फनों वाले शेषनाग द्वारा वहित भूमि रूपी दिये में शब्दायमान समुद्रजल रूपी घृत डालकर मेरु की सुन्दर वर्तिका रखी गयी और सूरज की ज्वाला से जो धुआँ उठा वह आकाश पर जम गया । ४३३

नण्णुद	लरुङ्गड	तन्ज	नुङ्गिय
कण्णुदल्	कण्डत्तिन्	काळ	मामेन
विण्णुह	मिरुण्डु	वैयिलिन्	वैङ्गदिर
तण्णिय	मैलिन्दत्त	तळैत्त	मेहमे 434

विण् अकम्-आकाश; नण्णुतल् अरु-अगम; कटल् नञ्चम्-(क्षीर-)सागरोत्पन्न विष के; नुङ्किय-खादक; कण्णुतल्-भालनेत्र शिवजी के; कण्डत्तिन्-कण्ठ में; काळम् आम् अँत-(जो है) उस हलाहल के समान; इरुण्डतु-काला बना; वैयिलिन्-सूर्य की; वैम् कतिर्-गरम किरणें; तण्णिय-शीतल बनीं और; मैलिन्दत्त-कृश (मन्द) पड़ गयीं; मेकम्-मेघ; तळैत्त-पुष्ट हुए (घुमड़ आये) । ४३४

आकाश भालनेत्र शिवजी के कण्ठ के विष के समान काला बना, जो अतिभीषण था, क्षीरसागर से निकला था और जिसको उन्होंने निगल लिया था । सूर्य की गरम किरणें शीतल और कृश पड़ गयीं । वैसे मेघ घने रूप से इकट्ठे हुए । ४३४

नञ्जिनि	नळिर्नैडुङ्	गडलि	तङ्गैयर्
अञ्जन	नयनत्ति	नविळ्न्द	कन्दलिन्
वञ्जने	यरक्कर्दम्	वडिविर्	चैय्कैयिन्
नैञ्जिति	निरुण्डु	नील	वानमे 435

नीलम् वातम्-नीला आकाश; नञ्चितिन्-विष के समान; नळिर्-शीतल; नैट्ट कटलिन्-विशाल सागर के समान, और; तङ्कैयर्-स्त्रियों के; अञ्चनम् नयनत्तिन्-कजरारे नेत्रों के समान; अविळ्न्द कन्दलिन्-खुले केश के समान; वञ्चने अरक्कर् तम्-वंचक राक्षसों के; वडिविन्-शरीर के समान; चैय्कैयिन्-उनके कृत्यों के समान; नैञ्चितिन्-उनके मन के समान; इरुण्डतु-काला बना रहा । ४३५

नीला आकाश हलाहल के समान, शीतल व विशाल समुद्र के

समान, स्त्रियों के कजरारे नेत्र के समान, और उनके खुले केश के समान लगता था । और भी वह वंचक राक्षसों के शरीर के समान, उनके नृशंस कृत्यों के समान और उनके मन के समान काला बना हुआ था । ४३५

नाट्कळि	नळिर्हड	नार	नावुऱ्
वेट्कैयिऱ्	परुहिय	मेह	मिन्नुव
वाट्कैहण्	मयङ्गिय	शैरुविन्	वारम्दप्
पूट्कैह	णिरत्तपुण्	डिरप्प	पोन्ऱवे 436

नाळ्—(उसी या बहुत) दिन की; कळित्तु—ताड़ी के समान; नळिर् कटल् नारम्—शीतल समुद्रजल की; ना—जीभ से; उऱ्—अधिक; वेट्कैयिन्—चाव के साथ; परुहिय—(जिन्होंने) पिया था; मेकम्—वे मेघ; मिन्नुव—जो चमके; वाळ् ककळ्—तलवारधारी हाथ; मयङ्किय—जिसमें टकराए; शैरुविन्—लड़ाई में; वार् मत—बहनेवाले मदजल के; पूट्कैकळ्—हाथी; निरत्त पुण्—छाती के व्रणों की; तिरप्प—दिखाते हों; पोन्ऱ—जैसे दिखे । ४३६

मेघों ने (उसी दिन की या) बहुत दिनों की ताड़ी के समान शीतल समुद्रजल को बहुत ही चाव के साथ पी लिया था । उनमें रह-रहकर बिजलियाँ कौंध रही थीं । तब वे मेघ मदनीर बहाते हुए बड़े-बड़े हाथियों के समान लगे, जो युद्ध में तलवार लेकर लड़नेवाले वीरों के हाथ से चोटें खा चुके हों । बिजलियाँ उनके खुले व्रणों के समान लगीं । ४३६

नीनिऱ्प्	पैरुङ्गरि	निरैत्त	नीरुत्तैत्तच्
चूत्तिऱ्	मुहिऱ्कुलन्	तुवन्ऱिच्	चूळ्दर
मानिऱ्	नैडुङ्गडल्	वारि	मूरिवान्
मेतिऱैन्	डुळ्दैन	मुळक्क	मिक्कदे 437

चूल्—जलगर्भ; निऱम्—काले रंग के; मुक्किल्—मेघों के; कुलम्—समूह; नील् निऱम्—नीले रंग के; पैरुम् करि—बड़े-बड़े हाथी; निरैत्त नीरुत्तु अन्न-पंक्तियों में खड़े किये गये हों, ऐसा; तुवन्ऱि—सटकर; चूळ् तर—घेर आये; माल् निऱम्—काले रंग के; नैटु कटल्—विशाल सागर का; वारि—जल; मूरि वान् मेल—विस्तृत आकाश में; निऱैन्तु उळ्ळु अन्न-फैला रहा, ऐसा; मुळक्कम् मिक्कतु—अधिक शोर मचाते हुए रहे । ४३७

काली घटाओं के समूह पंक्तियों में स्थित हाथियों के समान आकाश में चारों ओर घेरे रहे । तब वज्र कड़क उठे । वह दृश्य ऐसा था, मानो विशाल समुद्र का जल आकाश में उठ फैलकर गर्जन कर रहा हो । ४३७

अरिप्पैरुम् बैयरवन् मुदलि नोरणि, विरिप्पवु मौत्तन्न वैऱ्पिन् मौदुती, अरिप्पवु मौत्तन्न वैशि लाशैहळ्, शिरिप्पवु मौत्तन्न तैरिन्द मिन्नेलाम् 438

तैरिन्त मिन् अलाम्—प्रकटित सभी बिजली की रेखाएँ; अरि—हरि का; पैरुम्

पैयरवत्-वड़ा नाम जिसका था; मुतलितोर्-उस इन्द्र आदि देवताओं के; अणि विरिप्पवुम् ओतुत-आभरणों की कान्ति फैलाती हों, जैसी भी रहों; वैरुपिन् मीतु-पर्वतों पर; ती अरिप्पवुम्-आग जलती हो; ओतुत-जैसी भी दिखें; एवु इल्-अनिन्द्य; आचैकळ्-दिशाएँ; चिरिप्पवुम्-हँसती हों; ओतुत-जैसी भी दिखें। ४३८

बिजलियाँ, जो कौंध उठीं, हरि कहलानेवाले इन्द्र आदि देवों के आभरणों की चमक दिखती जैसी लगी। वे ऐसा भी लगीं, मानो पर्वत पर आग जल रही हो। अनिन्द्य दिशाएँ हँस रही हों, ऐसा भी लगीं। ४३८

मादिरक्	करुमहन्	मारिक्	कारुमळ्
यादिन्	मिरुण्डविण्	णिरुन्दैक्	कुप्पैयिन्
कूदिरवैड्	गानैडुन्	दुरुत्तिक्	कोळमैत्
तूदुवैड्	गनलुमि	ळुलैयु	मौत्तवै 439

यात्तिन् इरुण्ट विण्-किसी भी वस्तु से (सबसे) अधिक जो काला रहा, वह आकाश; मातिरम् करुमकन्-दिशा रूपी लुहार; मारि कार् मळ्-वर्षाकालीन काले मेघों के; इरुन्तै कुप्पैयिल्-कोयलों के ढेर में; वैम् कूतिर् काल्-वेगवान शारदीय पवन रूपी; नैटुम् तुरुत्ति कोळ् अमैत्तु-बड़ी भाथी में जोर लगाकर; ऊतु-हवा चलाकर उभाड़ी गयी; वैम् कत्तल्-गरम आग के कणों को; उमिळ्-निकालनेवाली; उलैयुम्-भट्ठी के भी; ओत्तु-समान था। ४३९

आकाश एक दम काले से काला हो गया। काला आकाश, मेघ, शारदीय पवन, बिजलियाँ—यह सब देखकर कवि कल्पना करते हैं कि दिशा लुहार बनी; वर्षाकालीन मेघ कोयलों का ढेर। अतिवेगवान उदीची पवन भाथी से निकलनेवाली हवा बनी और उस हवा द्वारा अग्नि प्रज्वलित हो उठी और ज्वालाएँ दिखीं। इस साज में आकाश लुहार की भट्ठी बन गया। ४३९

पिरिन्दुऱै	महळिरुम्	बिलत्त	पान्दळम्
अरिन्दुयिर्	नडुङ्गिड	विरवि	यिन्गदिर्
अरिन्दन	वामेन्न	वशनि	नार्वेन्न
विरिन्दन	तिशैतौरु	मिशैयिन्	मिन्नेलाम् 440

मिचैयिन्-आकाश में; तिचै तौरुम्-हर दिशा में; मिन् अलाम्-सभी बिजलियाँ; इरिविन् कतिर्-रवि की किरणें; अरिन्तत आम अन्न-जो काटकर रखी गयी हों, ऐसी; अचत्ति ना अन्न-अशनि की जिह्वाओं के समान; पिरिन्तु उऱै-बिछड़कर रहनेवाली; मकळिरुम्-स्त्रियों को और; पिलत्त पान्दळम्-बाँबियों में रहनेवाले साँपों को; अरिन्तु-झुलसकर; उयिर् नडुङ्किट-प्राणविकम्पित होने देते हुए; विरिन्तन-सर्वत्र फैली दिखायी दीं। ४४०

आकाश में सब ओर बिजलियाँ कौंध उठीं। वे रविकिरणों के

समान थीं, जिनको काटकर रखा गया हो। वे अशनि-जिह्वाओं के समान भी लगीं। पतिवियुक्त स्त्रियों और बिलों में रहनेवाले साँपों को भय-विकंपित करते हुए वे सब ओर कौंधती दिखायी दीं। ४४०

शूडिन	मणिमुडित्	तुहळिल्	विज्जैयर्
कूडुरे	नीक्किय	कुरुदि	वाट्कळुम्
आडवर्	पैयर्दोरू	माशै	यानैयिन्
ओडैह	ळीळिपिरळ्	वन्नवु	मीत्तवे 441

चूटित मणि मुटि-धूत-रत्न-किरीट; तुकळ् इल्-अनिन्द्य; विज्जैयर्-विद्याधर; कूटु उरै-स्यानों से; नीक्किय-बाहर निकाली गयी; कुरुदि वाट्कळुम्-रक्तरंजित तलवारों (के समान भी थीं); आडवर्-दिग्पालकों के; पैयर् तोरुम्-स्थान-परिवर्तन के समय में; आचै यानैयिन्-दिग्गजों के; ओटैकळ् ओळि-मुखपट्ट अपनी कान्ति; पिरळ्वत्तवुम्-रह-रहकर प्रकट कर रहे हों, ऐसी भी लगीं। ४४१

वे विजलियाँ रत्नमुकुटधारी विद्याधरों की स्यान से निकली हुई रक्तरंजित तलवारों के समान भी लगीं; और वे उन दिग्गजों के मुखपट्ट की कौंधों के समान भी दिखायी दी, जो कि दिग्पालों के स्थान बदलकर जाते समय खुद जाते थे। (इन्द्र आदि आठ दिग्पाल हैं। उनके आठ गज हैं। इन्द्र का ऐरावत है; अग्नि का पुण्डरीक; यम का वामन; नैऋत का कुमुद; वरुण का अंजन; वायु का पुष्पदन्त; कुबेर का सार्वभौम और ईशान का सुप्रदीप है)। ४४१

अण्वहै	नाहङ्ग	डिशह	ळैट्टैयुम्
नण्णित्त	नावळैत्	तत्तैय	मित्तहक्
कण्णुदत्त	मिडुरैत्तक्	करुहक्	कार्विशुम्
बुण्णिरै	युयिर्प्पेत्त	वूदै	यूदित्त 442

अण्वकै नाकडकळ्-(आठों दिशाओं के) आठ प्रकार के नाग; तिचैकळ् अट्टैयुम्-आठों दिशाओं को; नण्णित्त-पास जाकर; ना वळैत्तु अत्तैय-जिह्वाएँ बढ़ाकर घेर लेते हों, ऐसा; मित्त नक्-बिजली के चमकते; कार्विशुम्-काले मेघ; कण्णुदत्त मिट्टु अत्त-भालनेत्र शिव के कण्ठ के समान; करुहक्-झुलसकर काले बनकर; उळ्ळ निरै-अन्दर के; युयिर्प्पु अत्त-श्वास के समान; उत्तै-उदीची हवा को; ऊत्तित्त-निकालते रहे। ४४२

विजलियाँ आठ प्रकार के (वासुकी, अनन्त, तक्षक, शंखपाल, कुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक) सर्पों की जिह्वाओं के समान लगीं, जिनको वे सर्प निकालकर दिशाओं को चाटने के लिए अपने चपेट में ला रहे हों। काले मेघ भाल में अग्निमयनेत्र से भूषित शिव के कण्ठ के समान काले बने। मानो वे अपने अन्दर के श्वासों को निकाल रहे हों, ऐसी उदीची हवा बही। ४४२

तलैमयुङ्	गीळ्मैयुन्	दविरुद	लिन्रिये
मलयितु	मरत्तितु	मरु	मुर्त्तिनुम्
विलैनिनैन्	दुळवळि	विरुम्बुम्	वेशैयर्
उलैवुरु	मुळमैन्	वुलाय	दूदैये 443

ऊतै-वह पवन; तलैमैयुम् कीळ्मैयुम्-ऊँचे और नीचे स्थानों में; तविरुत्तु इन्न्रिये-(भेद न करते हुए) किसी को न छोड़कर; मलयितुम्-पर्वतों पर; मरत्तितुम्-तरुओं पर; मरुम् मुर्त्तिनुम्-अन्य सभी स्थानों पर; विलै निनैन्तु-सिर्फ दाम ही सोचकर; उळ वळि-धन जहाँ हो वहीं; विरुम्बुम्-प्रेम दिखानेवाली; वेशैयर्-वेश्याओं के; उलैव-उरुम्-चंचल; उळम् अँत-मन के समान; उलायतु-संचार करता रहा । ४४३

वह हवा ऊँच-नीच का भेद नहीं करके पर्वतों, तरुओं और अन्य सभी स्थलों पर बही और केवल धन का ही विचार करके (मनुष्य के गुणों का विचार किये बिना ही) धन जहाँ से प्राप्त होता है, वहीं प्रेम दिखानेवाली वेश्याओं के चंचल मन के समान संचार करने लगी । ४४३

अळुङ्गुरु	महळिरुद	मत्तुविरु	तीरुन्दवरु
पुळुङ्गुरु	पुणर्मुलै	कौदिप्पप्	पुक्कुलायक्
कौळुङ्गुर्त्तु	तशैयिनै	यरिन्दु	कौण्डु
विळुङ्गुरु	पेयैन्	वाडे	वीङ्गिर्त्तु 444

वाटै-उदीची (अतिशीतल) पवन; तम् अत्तुपिल् तीरुन्तवरु-अपने पति के प्रेम से बिछुड़कर; अळुङ्गुरु-दुःखित रहनेवाली; महळिरु-स्त्रियों के; पुळुङ्गुरु पुणर् मुलै-तप्त स्तनद्वयों को; कौतिप्प-और तप्त करते हुए; पुक्कु उलाय्-(उन पर) लगते हुए बहकर; कौळुम्-मांसल; कुर्त्तु तचैयितै-(स्तनों के) मांसखण्डों को; अरिन्दु कौण्डु-काट लेकर; अतु विळुङ्गुरु-उनको निगलने में लगे; पेयै-पिशाच के समान; वीङ्गिर्त्तु-और अधिक चला । ४४४

वह उदीची शीतल हवा विरहिणी स्त्रियों के तप्त स्तनद्वयों को और भी ताप देती हुई उन पर लगी वर्द्धित होकर बही । तब वह पिशाच के समान लगी, जो उनके मांसल स्तनों को काटकर बोटी-बोटी खाना चाहता हो । ४४४

आर्त्तुल्लु	तुहळुविशुम्	बडैत्त	लानुमिन्
कूर्त्तुल्लु	वाळनप्	पिरळुङ्	गौटपित्तुम्
तार्प्पर्पुम्	वणैयिन्विण्	डळङ्ग	लानुमप्
पोर्प्पर्पुङ्	गळमैन्	पौलिन्द	दुम्बरे 445

आर्त्तु-नर्वन करते हुए; अँळु तुकळ्-उठनेवाली धूल; विच्चुम्पु-आकाश को; अटैत्तलानुम्-ढँक लेती, इसलिए और; मिन्-बिजलियाँ; कूर्त्तु अँळु-तीक्ष्णता लिये रहनेवाली; वाळ् अँत-तलवार के समान; पिरळुम्-झमकते हुए;

कौटपितुम्—धूमती हैं, इसलिए; विण्—मेघ; तार्—हारालंकृत; पैरुम् पणैयित्—बड़े ढोलों के समान; तळङ्कलानुम्—शब्द करते हैं, इसलिए; उम्पर्—आकाश; अ पैरु पोर् कळम् अंत—रम्य समरभूमि के समान; पौलिनृतु—शोभा । ४४५

धूल ऊपर उठी और भीषण ध्वनि के साथ उठी । उसने आकाश को ढँक दिया । और बिजलियाँ तीक्ष्णता लिये धूमनेवाली तलवारों के समान कौंधीं । मेघ ढोलों के समान गरज उठे । इस साज के कारण आकाश सुन्दर और विशाल समरांगण-सा लगा । ४४५

इत्तहैच्	चत्तहियैप्	पिरिन्द	वेन्दल्मेल्
मन्मदत्	मलर्क्कणै	वळङ्गि	तानैत्तप्
पौत्तैडुङ्	गुत्तित्तुमेर्	पौळिन्द	तारैहळ्
मिन्तौडुन्	दुवत्तित्तु	मेह	राशिये 446

इत् नकै चत्तकियै—मधुर मन्दहास वाली जानकी से; पिरिन्द—विछुड़े रहनेवाले; एन्तल् मेल्—(राजा-) राम पर; मन्मदत्—मन्मथ ने; मलर् कणै—पुष्पशर; वळङ्कितान्—चलाये; अंत—जैसे; मिन्तौडुम्—बिजली के साथ; तुवत्तित्तु—मिले आये; मेक राच्चि—मेघों की राशियों ने; पौत्त—सुन्दर; नैदुम् कुत्तित्तु मेल्—बड़े पर्वत पर; तारैकळ्—धारें; पौळिन्द—बरसायीं । ४४६

बिजलियोंसहित मेघराशियाँ पर्वतों पर जो धारें गिरा रही थीं, वह ऐसा था मानो मारदेव मधुर मन्दहासकारिणी सीताजी से वियुक्त राजाराम पर अपने पुष्प-शर छोड़ रहा हो । ४४६

कल्लिडैप्	पडुन्दुळित्	तिवलै	कारिडुम्
विल्लिडैच्	चरमन्	विशैयित्	वीळ्न्दत्त
शौल्लिडैप्	पिउन्दशौङ्	गत्तल्हळ्	शिन्दित्त
अल्लिडै	मणिशिदरन्	दळलि	यर्त्तल्पोल् 447

कार् इट्टु—मेघ-मध्य; विल्लिट्टै चरम् अंत—इन्द्रधनुष के शरों के समान; कल् इट्टै—चट्टानों के मध्य; पट्टुम्—गिरनेवाली; तुळि तिवलै—वर्षा की बूंदें; विचैयित् वीळ्न्दत्त—बहुत वेग के साथ गिरीं; चैल् इट्टै—अशनियों से; पिउन्दत्त—छूटे; चैम् कत्तल्कळ्—लाल अंगारे; मणि—रत्न; अल्लिट्टै चित्तरन्तु—अन्धकार में छितरकर; अळल् इयर्त्तल् पोल्—ज्वाला-सम प्रकाश फैलाते हों जैसे; चिन्तित्तु—गिरे । ४४७

मेघों से गिरनेवाली बूंदें उनमें रहनेवाले इन्द्रधनुष से निकले शर के समान वेग के साथ गिरीं । मेघों से निकली अशनि के लाल अंगारे रात में रत्नों की ज्योतियों के समान यत्न-तत्न गिरे । ४४७

मळ्ळर्हण्	मरूपडै	मान	यात्तैमेल्
वैळ्ळिवे	लैत्तिवन्	पोत्तु	मेहङ्गळ्

तळ्ळरुन्	दुळिपडत्	तहरन्नु	शाय्हिरि
पुळ्ळिबैड्	गडहरि	पुरळ्व	पोन्ऱवे 448

मरु पटै-योद्धा; मळ्ळरुक्क मात्त-वीरों के समान; यात्तै मेल्-हाथियों पर; वैळ्ळि वेल्-श्वेत शक्तियाँ (भाले); अँरिवत्त-फँक रहे हों; पोन्ऱ मेकड्क्-ऐसे मेघों की; तळ् अरुम्-दुनिवार; तुळि-धारें; पट-लगाँ, इससे; तकर्त्तु चाय्-ढहकर गिरती; किरि-गिरियाँ; पुळ्ळि-विदियों-सहित रहनेवाले (उत्तम लक्षण के); वैम्-भयंकर; कट-मस्त; करि-हाथी; पुरळ्व पोन्ऱवे-लोटते जैसे लगे । ४४८

मेघ शत्रुसंहारक वीर थे । गिरियाँ हाथी थीं । मेघों ने श्वेत भालाओं के समान बूँदें गिरायी । गिरियाँ उन दुनिवार धारों के सामने टूटकर ऐसे लुढ़क पड़ी, मानो लाल विदियों के अच्छे लक्षणों से भरे भयंकर और मस्त हाथी लोटते हों । ४४८

वानिडु	तनुनैडुड्	गरुप्पु	विन्मळ्
मीनैडुड्	गौडियवन्	पहळि	वीळ्त्तुळि
तानैडुज्	जार्तुणै	पिरिन्द	तन्मैयर्
ऊनुडै	गुडम्बैला	मुक्कुक्क	लौत्तवे 449

मळ्-मेघ; मीन् नैटु कौटियवन्-मत्स्यांकित बड़ी पताका वाला बना; वान् इटु तन्-मेघमध्य प्रकट इन्द्रधनुष; नैटु करुप्पु विल्-लम्बा इक्षु-धनुष; वीळ् तुळि-गिरती धारें; पकळि-(उसके) शर; नैटुम् चार्-लम्बे पर्वत के पादप्रदेश; तुणै पिरिन्त-विरही; तन्मैयर्-की हालत में; ऊन् उटै उटम्पु अँलाम्-मांससहित शरीरों को; उक्कुक्क लौत्त-गलाते हों जैसे । ४४९

मेघ मकरांकित ध्वजा वाला मार बना । इन्द्रधनुष उसका लम्बा इक्षु-धनुष बना; मेघों से गिरनेवाली बूँदें उसके शर बनी । और लम्बे पर्वत-चरण-प्रदेश विरही जनों के समान विगलित शरीर और हड्डियों वाले हो रहे । ४४९

तीर्त्तनुड्	गविहळुज्	जैरिन्दु	नम्बहै
पेर्त्तन्न	रिनियेत्तप्	पेशि	वानवर्
आर्त्तैन्न	वार्त्तन	मेह	माय्मलर्
तूर्त्तन्न	वौत्तन	तुळ्ळि	वैळ्ळमे 450

तीर्त्तनुम्-पवित्र श्रीराम; कविकळुम्-और वानर; जैरिन्दु-एकत्र हुए, इसलिए; इनि-अब; नम् पक्क-हमारे शत्रुओं को; पेर्त्तनर्-उन्होंने दूर कर दिया; अँत्त पेच्चि-ऐसा कहकर; वानवर्-देवता लोग; आर्त्तु अँत्त-आनन्दरव करते हों जैसे; मेकम्-मेघों ने; आर्त्तन्न-गर्जन किया; तुळ्ळि वैळ्ळम्-बूँदों की राजियाँ; आय् मलर् तूर्त्तन्न-चुने हुए (उत्तम) पुष्प (जो) बरसाये गये; औत्तन्न-उनके समान लग्नी । ४५०

मेघगर्जन देवों के आनन्दघोष के समान लगा, जो यह कह रहे हों कि

श्रीराम और वानरों का मेल हो गया और अब वे हमारे शत्रुओं (रावण आदि राक्षसों) को हटा देंगे। मेघ के गिरते जलकण देवों के आनन्द के साथ गिराये श्रेष्ठ चुने हुए पुष्पों के समान रहे। ४५०

वण्णविड्	करदलत्	तरक्कन्	मण्णोडुम्
विण्णिडैक्	कडिदुहोण्	डेहुम्	वेलैयिल्
पेण्णित्तुक्	करुड्गल	मत्तैय	पेय्वळै
कण्णत्तप्	पौळिन्ददु	काल	मारिये 451

वण्णम् विल-सुन्दर धनु(-शोभित); करतलत्तु-हाथों वाले; अरक्कन्-राक्षस; मण्णोडुम्-धरती (के अंश) के साथ; कौण्टु-लेकर; विण्णिडै-आकाश में; कटितु-सवेग; एकुम् वेलैयिल्-जब जाता रहा, तब; पेण्णित्तुक्कु-स्त्रियों के; अरु कलम् अत्तैय-दुर्लभ आभरण के समान; पेय्वळै-कंकणधारिणी सीता की; कण् अत्त-आँखों के समान; कालम् मारि-मौसमी बारिश; पौळिन्दतु-बरसी। ४५१

जब सुन्दर धनुर्धर रावण एक योजन धरती के अंश के साथ सीताजी को लेकर आकाश में जा रहा था, तब स्त्रियों का अलभ्य आभरण मानी जानेवाली [—दक्षिण की सधवाएँ मंगलसूत्र पहनती हैं, जिसमें श्रीलक्ष्मीदेवी की मूर्ति से अंकित तमगे (पदक) के आकार का आभरण रहता है और ऐसा मंगलसूत्र आभरणों में श्रेष्ठ माना जाता है। वस्तुतः वही अन्य आभरण पहनने का अधिकार भी देता है।] और कंकणहस्ता सीतादेवी की आँखों ने अश्रु बरसाया। वर्षाकालीन मेघों ने उन्हीं नेत्रों की भाँति अधिक जल बरसाया। ४५१

परम्पुडर्	पण्णवत्	पण्डु	विण्णोडर्
पुरम्पुड	विडुशरम्	बुरैयु	मित्तिन्नम्
अरम्पुड	पौडिनिमि	रयिलि	ताडवर्
उरम्पुड	वुळैन्दनर्	पिरिन्दु	ळोरैलाम् 452

परम् चुटर्-उत्तम ज्योतिर्मय; पण्णवत्-शिवदेव; पण्डु-प्राचीनकाल में; विण् तौटर् पुरम्-आकाश में संचार करनेवाले त्रिपुरों को; चुट-जलाने के लिए; विटु चरम्-जो शर चलाते थे, उनकी; पुरैयुम्-समानता करनेवाली; मित्तिन्नम्-बिजलियों के समूह; अरम् चुट-रेती के रगड़ने से; पौडि निमिर्-अंगारे निकालनेवाले; अयिलिन्-भाले के समान; आटवर्-(विरही) पुरुषों के; उरम् चुट-दिल को जलाती थीं; पिरिन्दु उळोर् अलाम्-(उससे) विरही सभी; उळैन्दनर्-दुःखी हुए। ४५२

महान ज्योतिस्वरूप शिवजी के, आकाश-संचारी त्रिपुरों को जलाने हेतु छोड़े गये शरों-जैसी बिजलियों ने रेती से रगड़कर उज्ज्वल रहनेवाली बिजियों के समान विरही पुरुषों के हृदयों को जलाया। वे सब उद्विग्न हुए। ४५२

पौरुडरप्	पोयित्तरप्	पिरिन्द	पौय्युड्ड
कुरुडरु	तेरुमिशे	युयिरुहोण्	डुयुत्तलान्
मरुडरु	पिरिवनुम्	माशु	ण्डुगंडक्
करुडनैप्	पौरुवित्त	काल	मारिये 453

पौरुड तर-अर्थाजिन के लिए; पोयित्तर-गये हुए नायकों से; पिरिन्द-वियुक्त; पौय् उड्डकु-व निर्जीव शरीर वाली नायिकाओं के पास; उरुड तर-लुडक चलनेवाले पहियों के; तेरु मिचै-रथों पर; उयिरु कौण्डु-(उनके) प्राणों को लेकर; डुयुत्तलान्-मिलाती है; कालम् मारि-(इसलिए) मौसमी वारिश; मरुड तर-ध्वस्त करनेवाले; पिरिवु अंतुम्-वियोग रूपी; माचुणम् कैंट-साँप को नाश करते हुए (आगत); करुडतै-गरुड की; पौरुवित्त-समानता कर रही थी। ४५३

अर्थाजिन के लिए नायक प्रवास पर चले गये थे। उनके वियोग में स्त्रियाँ निर्जीव शरीरवत रही। अब उनके पास मानो उनकी जानें लेकर नायक घूमते आनेवाले चक्रों से युक्त रथों पर वापस आ गये। उनको लानेवाली वर्षा संज्ञाहीन करनेवाले विरह रूपी साँप का नाश करते हुए आगत गरुड के समान लगी। ४५३

मुळङ्गिन	मुडुमुडु	मूरि	मेहनीर्
वळङ्गित्त	मिडैवन	मात्त	यानैहळ्
तळङ्गित्त	पौळिमदत्	तिवलै	ताळुदरप्
पुळङ्गिन	वैदिरैदिर्	पौरुव	पोत्तुवे 454

मूरि मेकम्-सबल मेघ; मुडु मुडु-वारी-वारी से; मुळङ्कित्त-गरजे; नीर् वळङ्कित्त-जल बरसाते हुए; मिडैवत्त-(जो) घुमड़ आये (वे); मात्तम् यानैहळ्-बड़े-बड़े हाथी; तळङ्कित्त-चिघाड़ते हुए; पौळि मतम् तिवलै-बहनेवाले मदनीर को धार के; ताळुत्तर-गिरते; पुळङ्कित्त-कोप करके; अँतिर् अँतिर्-आमने-सामने; पौरुव पोत्तु-लड़ते-जैसे (दिखे)। ४५४

बड़े-बड़े मेघ रह-रहकर गरजे, जल बरसाते हुए घुमड़ आये। तब वे ऐसे बड़े गजों के समान लगे जो चिघाड़ते और मदनीर बहाते हुए गुस्से के साथ आपस में टकरा रहे हों। ४५४

विशैहोडु	मारुद	मडित्तु	वोशलाल्
अशैवुरु	शिळुत्तुळि	यप्पु	मारियित्तु
इशैवुडळुन्	दंडुप्पत्त	विशैय	वायिरुन्
दिशैयोडु	तिशैशैरुच्	चैय्व	पोत्तुवे 455

विचै कौटु-वेग के साथ; मारुत्तम्-हवा के; मडित्तु वोचलाल्-रह-रहकर बहने से (मेघ); अप्पु मारियित्तु-शर-वर्षा के समान; इचैवु उडुळुन्तु-आपस में मत्तमुटाव के साथ; अँटुप्पत्त-बढ़नेवाले; अचैवु उडु-हिलनेवाले; चिळ तुळि-छोटे-

छोटे कणों के साथ; इचैय-युक्त हो; आय् इरुम्-सुन्दर बड़ी; तिचै ओटु तिचै-
दिशाएँ आपस में; चैरु चैय्व पोन्ऱ-युद्ध करती जैसी (दिखीं) । ४५५

प्रबल प्रभञ्जन रह-रहकर अतिवेग के साथ बह रहा था । इसलिए
शर-वर्षा के समान जल की बूंदें आपस में टकरा उठीं । तब ऐसा लगा,
मानो सुन्दर व बड़ी दिशाएँ आपस में युद्ध कर रही हों । ४५५

विळैयुरु	पौरुडरप्	पिरिन्द	वेन्दर्वन्
दुळैयुऱ	वुयिरुऱ	वुयिरुक्कु	मादरिन्
मळैयुऱ	मणमुऱ	मलरुन्दु	तोन्ऱित्त
कुळैयुऱप्	पौलिन्दत्त	वुलवैक्	कौम्बैलाम् 456

विळै उरु-स्पृहणीय; पौरुळ्-अर्थ; तर-अर्जन हेतु; पिरिन्त-वियुक्त हुए;
वेन्तर्-नायकों के; वन्तु उळै उऱ-लौट आकर मिलने पर; उयिर् उऱ-जान में
जान आयी और; उयिर्कुक्कुम्-(सन्तोष की) साँसें जो छोड़ती है, उन; मातरिन्-
(नायिकाओं) स्त्रियों के समान; उलवै कौम्पु अलाम्-सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ;
मळै उऱ-वारिश के होने से; मणम् उऱ-सुगन्धि से भरकर; कुळै उऱ-पत्तों से युक्त
होकर; पौलिन्तत्त-शोभायमान हुई और; मलरुन्तु तोन्ऱित्त-विकसित (मनोरम)
रहीं । ४५६

इच्छित धनार्जन के लिए नायक अपनी प्रियतमाओं को छोड़कर गये
थे । अब वे आकर मिल गये और विरहिणियों की जान में जान आ गयी ।
उनकी साँसें भी यथावत स्वस्थ लग गयीं । उनके समान सूखे पेड़ों की
सभी शाखाएँ वर्षाकाल के आगमन से पल्लवों से भरकर प्रफुल्लमन दिखायी
दीं । ४५६

पाडलम्	वरुमै	कूरप्	पहलवन्	पशुमै	कूरक्
कोडल्हळ	पेरुमै	कूरक्	कुवलयज्	जिरुमै	कूर
आडिन	मयिल्हळ	पेशा	दडङ्गिन	कुयिल्ह	ळन्वर्क्
केडुऱत्	तळरुन्दार्	पोन्ऱुन्	दिरुवुऱक्	किळरुन्दार्	पोन्ऱुम् 457

पाटलम्-पाटल वृक्ष; वरुमै कूर-(पुष्पहीन हो) दीन हुए; पकलवन्-
दिनकर; पचुमै कूर-शीतल बना; कोटल्कळ-‘कोडल’ के पौधे; पेरुमै कूर-
(पुष्पित हो) शानदार लगे; कुवलयम्-कुवलय; चिरुमै कूर-म्लान हुए; मयिल्कळ-
मोर; तिरु उऱ-श्रीसम्पन्न (घनी) होने पर; किळरुन्तार्-उत्साहित हुए; पोन्ऱु-
जैसे; आडित्त-नाच उठे; कुयिल्कळ-कोयलें; अनुपर् केटुऱ-मित्रों की दुर्गति पर;
तळरुन्तार्-जो शिथिल हुए हों; पोन्ऱु-उनके समान; पेचातु अटङ्कित-अवाक्
रह गयीं । ४५७

पाटलवृक्ष हीनता को (पुष्पों से हीन होने के कारण) प्राप्त हो
गये । सूर्य शीतलता को प्राप्त हो गये । ‘कोडल’ (‘कांदळ’ भी कहते हैं) ।
इनके पंचदलीय पुष्प अपने नालों के साथ स्त्री के हाथों के समान लगते

हैं ।) पुष्प ज्ञानदार हो गये । कुवलय म्लान पड़ गये । मोर, सम्पत्ति के प्राप्त होने पर इतरानेवालों के समान नाच उठे । कोयलें, अपनों की दीन दशा देखकर शिथिल पड़नेवाले लोगों के समान मौन रह गयी । ४५७

वाळ्यिड्	इरवम्	बोल	वान्नुलै	तोन्नु	वारुन्द
ताळुडैक्	कोड	इम्मै	तळ्ळीइयन	काद	इङ्ग
मीळल	ववैयु	मन्त	विळैवन	वुणर्वु	वीन्द
कोळर	वैन्नुन्प्	पिन्ति	यवर्त्तुडुडु	गुळैन्नु	शायन्द 458

वाळ् अयिड् अरवम्-तलवार-जैसे दाँत वाले सर्प; वान् तलै पोल-अपने उठे हुए सिर के समान; तोन्नु वारुन्त-दिखते हुए जो बड़े थे; ताळ् उदै-ऐसे तनों से युवत; कोटल् तम्मै-‘कोडल’ पौधों से; कातल् तङ्क-प्रेम के साथ; तळ्ळीइयन-लिपटकर; मीळल-अलग नहीं हुए; अवैयुम्-वे (पौधे) भी; अन्त विळैवन-वही चाह रखते हुए; उणर्वु वीन्त-काटने की स्वाभाविक भावना जिनसे दूर हो गयी थी, ऐसे; कोळ् अरवु अन्त-बड़े सर्पों के समान; अवर्त्तुडुडु पिन्ति-उनके साथ लिपटकर; गुळैन्नु-झुके हुए; चायन्त-उन पर गिरे पड़े थे । ४५८

उठे हुए सिर वाले सर्पों के समान लम्बे नालों के ‘कोडल’ पुष्पों को तलवार-से दाँत वाले सर्पों ने सर्प ही समझ लिया । इसलिए वे बहुत ही प्रेम के साथ उनसे लिपटे, विना छोड़े, पड़े रहे । वे पुष्प भी, दंशवसंज्ञाशून्य सर्प-सम जैसे ही प्यार से उनके साथ लिपटकर झुके पड़े रहे । ४५८

नानिड्	चुरुम्बुम्	वण्डुम्	नवमणि	यणियिड्	चारत्
तेनुह	मलरुन्दु	शायन्द	शेयिदळ्क्	कान्दळ्	चैम्बू
वैतिलै	वैन्नु	दम्मा	कारैन्	वियन्नु	नोक्कि
मानिलक्	किळत्ति	कैहण्	मरित्तन	पोन्नु	मन्नो 459

नाल् निडम्-नाना रंग के; चुरुम्बुम् वण्डुम्-भ्रमर और भ्रमरियाँ; नवमणि अणियिन्-नवरत्नजटित आभरण के समान; चार-(उन फूलों पर) बैठे; तेन् उक्-शहद निकालते हुए; मलरुन्नु-फूलकर; चायन्त-झुके हुए; चेय् इतळ्-लाल पंखुड़ियों के; कान्तळ् चैम्बू-रक्तकांतळ (या कोडल) के फूल; माल् निलम् किळत्ति-महीयसी पृथ्वी-स्त्री के; नोक्कि-(अतु-उत्सव) देख; वैतिलै-वसन्त की; वैन्नुस्तु कार्-जीत लिया वर्षा ने; अम्मा-मेया री; मरित्तन-(कहते हुए विस्मय-प्रकटन में) मोड़े हुए; कंकळ् पोन्नु-हाथों के समान थे । ४५९

‘कोडल’ पुष्पों पर भ्रमर और भ्रमरियाँ नवरत्नाभरण के समान बैठी थीं । शहद वरसाते हुए वे पुष्प झुके रहे । तब उन लाल पंखुड़ियों के रक्त ‘कांदळ्’ के पुष्प भूमिदेवी के हाथ के समान लगे, मानो भूमि ने विस्मय से यह कहते हुए अपने हाथों की तदनुकूल मुद्रा में मोड़ रखा हो कि वर्षा ने वसन्त की शोभा में हरा लिया है । ४५९

अळळिड विडमौन् रिन्त्रि यळुन्दत विलङ्गु कोबम्
 तळुउत् तलैवर् तम्सैप् पिरिन्दवर् तळुवत् तूय
 कळळुडै योदि यार्दड् गलवियिड् पलहाड् कान्ड
 वैळळुडैत् तम्बर् कुप्पै शिदरन्देन विरिन्द मादो 460

अळ इट-तिल डालने के लिए (भी); इटम् औन्ड इन्त्रि-स्थान न रहा, ऐसा;
 अळुन्दत-उठकर; इलङ्कु-प्रकट; कोपम्-इन्द्रगोप; तळुउ-अलग होकर;
 तम्सै पिरिन्दवर्-अपने को छोड़कर जो गये थे; तलैवर्-वे नायक; तळुव-लौट
 आ मिले, तब; तूय कळ उटै-शुद्ध शहद से युक्त; ओतियार्-केश वाली स्त्रियों की;
 तम् कलवियिल्-अपने समागम में; पल काल् कान्ड-अनेक बार थूकी हुई; वैळ
 अटै-पान की; तम्पल् कुप्पै-पीक की अधिक छोटें; चितरन्नु अत-बिखरी पड़ी
 हों, ऐसा; विरिन्द-फैले रहे। ४६०

सब जगह इन्द्रगोप के कीड़े प्रकट होकर ऐसा पड़े हुए थे कि तिल
 धरने को भी अन्तर नहीं मिलता था। वह दृश्य शहद-भरे केश वाली
 उन स्त्रियों की अनेक बार थूकी हुई व छितरी पड़ी पीकों के समान था,
 जिनके साथ उनसे थोड़े समय के लिए बाहर गये हुए उनके नायक आकर
 मिल रहे थे। ४६०

नत्तैडुड् गान्दट् पोदि तरैविरि कडुक्कै मन्बूत्
 तुन्तिय कोबत् तोडुन् दोन्त्रिय तोड्डन् दुम्बि
 इन्तिशै मुरल्व नोक्कि यिरुनिल महळ्कै येन्दिप्
 पोन्नीडुड् गाशै नीट्टिक् कौडुप्पदे पोन्ड दन्ने 461

नल्-सुन्दर; नैटु-लम्बे; कान्तळ् पोतिल्-'कांदल' पुष्प पर; नरै विरि-
 शहद-भरे; कडुक्कै मन् पू-अमलतास के कोमल फूल; तुन्तिय कोपत्तोडुम्-आकर
 मिले हुए इन्द्रगोपों के साथ; तोन्त्रिय-जो दिखते हैं; तोड्डम्-वह दृश्य; इन्
 इचै-मधुर गीत; मुरल्व-गुंजारनेवाले; तुम्पि नोक्कि-भ्रमरों को देखकर; इरु
 निल मकळ्-महीयसी भूमिदेवी; कै एन्ति-हाथ उठाकर; नीट्टि-बढ़ाकर;
 पोन्तोडुम्-स्वर्ण के साथ; काचै-रत्नों को; कौडुप्पते-दे रही हो, उसी के;
 पोन्ड-समान था। ४६१

सुन्दर और लम्बे 'कांदल' पुष्पों पर शहद-भरे अमलतास के (पीले)
 फूल गिरे पड़े थे और इन्द्रगोप के (लाल) कीड़े भी रहे। वह दृश्य ऐसा
 था, मानो माननीय भूमिदेवी मधुर गीत गानेवाले भ्रमरों को उपहार देने
 के लिए अपने हाथों को बढ़ाकर स्वर्ण के साथ रत्न प्रदान कर रही
 हों। ४६१

तीङ्गनि नाव लोङ्गुज् जेणुयर् कुन्त्रिर् चैम्बौन्
 वाङ्गनि कौण्डु पारिन् मण्डुमाल् याड् मान

वेङ्गोनन् मलरुड् गौन्ऱै विरिन्दन वीयु मीरत्तुत्
ताड्गिन कलुळि शौन्ऱु तलैमयक् कुश्व तम्मिल् 462

तीम्-मधुर; कनि-फल (-धारी); नावल् ओङ्कुम्-जामुन के पेड़ जिस पर रहते हैं; चेण् उयर् कुन्ऱिन्-आकाश तक उन्नत मेरु पर्वत से; वाळ्किन-गूहीत; चैम्पोन् कौण्डु-स्वर्ण बहाते हुए; पारिल्-घरती पर; मण्डु-पुष्कल रीति से बहनेवाली; माल् याळु-बड़ी नदी (जम्बू नाम की?); माल्-के समान; वेङ्कै नल् मलरुम्-‘वेंगै’ पेड़ के पुष्पों और; कौन्ऱै-अमलतास तरह पर; विरिन्दन वीयुम्-विकसित पुष्पों की; ईरत्तु ताड्कित्त-बहाते हुए ले आती हुई; कलुळि-पंकिल बरसाती नदियाँ; चैन्ऱु-बहकर; तम्मिल्-आपस में; तलै मयक्कु उश्व-मिलकर मिश्रित हो जाती हैं। ४६२

मधुरफलयुक्त जामुन के पेड़ों से भरे मेरु के उन्नत पर्वत से जम्बू नदी स्वर्ण खींच लाते हुए नीचे की ओर बह रही है। इस पर्वत पर पंकिल नाले ‘वेंगै’ और ‘कौन्ऱै’ (अमलतास?) के फूलों को बहा लेते आ रहे थे और उस उत्तम जम्बू नदी की समानता करने का प्रयास कर रहे थे। ४६२

किळैत्तुणै मळलै वण्डु किन्नर निहर्त्त मिन्नुम्
तुळिक्कुरन् मेहम् वळ्वार्त् तुरियन् तुवैप्प पोन्ऱ
वळ्ळैकैयर् पोन्ऱ मञ्जै तोन्ऱिह्ळ्ळरङ्गिन् माट्टु
विळक्किन् मौत्त काण्वोर् विळियौत्त विळैयिन् मैन्ऱ 463

किळै-‘किळै’ नाम का राग; तुणै-सम; मळलै वण्डु-मधुररवर भ्रमर; किन्ऱरम् निकर्त्त-किन्नर ‘याळ’; निकर्त्त-के समान थे; मिन्नुम् तुळि-चमकती बूँदों से युक्त और; कुरल् मेकम्-गरजनेवाले मेघ; वळ्वार् तुरियम्-स्थूल चमड़े के फीतों से बँधे हुए ढोल; तुवैप्प पोन्ऱ-वजते जैसे हैं; मञ्जै-मोर; वळ्ळै कैयर् पोन्ऱ-कंकणधारिणी स्त्रियों के समान हैं; तोन्ऱिह्ळ्ळ-‘कांदल’; अरङ्किन् माट्टु-रंगमंच पर; विळक्कु इन्-दीपावलियों; औत्त-के समान थे; विळैयिन् मैन् पू-‘विळै’ के कोमल फूल; काण्वोर् विळि औत्त-दर्शकों की आँखों के समान थे। ४६३

“कैक्किळै” राग-सी ध्वनि करनेवाले भ्रमर ‘किन्नर याळ’ (वीणा-सा वाद्य) की समानता करते थे। चमकनेवाले जलकणों से भरे गर्जनशील मेघों ने वजनेवाले चमड़े के फीतों से बँधे ढोलों की समानता की। मोर कंकणधारिणी स्त्रियों के समान लगे। ‘कांदल’ पुष्प नाट्य मंच पर के दीपों के समान लगे। काले ‘विळै’ के फूलों ने दर्शकों की आँखों की समानता की। ४६३

पेडैयु जिमिरुम् वायप् पयैर्वुळिप् पिडक्कु मोशै
ऊडुडत् ताक्कुन् दोरु मौल्लील पिडप्प नल्लार्

आडियर् पाणिक् कौक्कु मारिय वमिळ्दप् पाडर्
कोडियर् ताळ् गौटन् मलरन्दक् दाळ मीत्त 464

जिमिळ्-भ्रमर और; पेदुम्-भ्रमरियाँ; पाय-टकराते हुए; पयर्वुळि-जब उड़ती हैं; पिक्कुम् ओचै-तब निकलनेवाला शब्द; ऊटु उड-मध्य जाकर; ताक्कुम् तोळ्-गुंजार करती हैं, तब; पिप्प-निकलनेवाली; ओल् ओलि-‘ओल’ की ध्वनि; नल्लार् आटु इयल्-देवांगनाओं के नृत्य से लयीभूत; पाणिक्कु ओक्कुम्-करताल के समान रहती हैं; मलरन्त् कूताळम्-विकसित ‘कूदालि’ के फूल; आरिय-कुशल; अमिळ्त्तम्-नर्तकों के अमृत-सम; पाटल्-गीतों के अनुकूल; कोडियर्-नर्तक; ताळम् कौटल् औत्त-ताल देते जैसे लगे । ४६४

जब भ्रमर और भ्रमरियाँ आपस में टकराते हुए उड़ती हैं, तब जो नाद उठता है, वह दोनों और परस्पर मिलते हुए जो शब्द करती हैं, वह देवांगनाओं के करताल के समान लगते हैं। ‘कूदाली’ के फूल उन श्रेष्ठ नर्तकियों के नृत्य के अनुकूल बजनेवाले झाल के समान दिखे । ४६४

वळैदुरु कान्न यारु मानिलक् किळत्ति मक्कट्
कुळैदुरु मलैमाक् कौङ्गै शुरन्दपा लौळुक्कै यौत्त
विळैवुरु वेट्कै नाळुम् वेण्डितर्क् कुदव वेण्डिक्
कुळैदौरुङ् गतहन् दूङ्गु कर्पह निहर्त्त कौन्ऱै 465

वळै तुळ-पुन्नाग तरुओं के मध्य बहनेवाली; कान्नयारु-जंगली नदियाँ; मा निलम् किळत्ति-सम्मान्य भूदेवी; मक्कट्कु-अपनी सन्तानों के लिए; उळै तुळ-पास में संकुलित रहनेवाले; मलै मा कौङ्कै-पर्वत रूपी बड़े स्तनों से; चुरन्त-निक्षित; पाल् ओळुक्कै-दूध की धारा के; औत्त-समान थीं; कौन्ऱै-अमलतास; विळैवु उरु-चाहनेवाली; वेट्कै-इच्छा के कारण; नाळुम्-प्रतिदिन; वेण्डितर्क्कु-याचना करनेवालों को; उतव वेण्टि-सहायता देना चाहकर; कुळै तोळ्-पत्ते-पत्ते पर; कत्तक् तूङ्कुम्-स्वर्ण लटकाये रहनेवाले; कर्पक् निकर्त्त-कल्पतरुओं के समान थे । ४६५

पर्वत पर जंगली नदियाँ बह रही थी। उनके कूलों पर घने पुन्नाग के पेड़ उगे थे। उन नदियों को देखने पर ऐसा लगा, मानो भूमिदेवी अपनी सन्तानों के लिए अपने गिरियों के स्तनों से दूध बहा रही हो और दूध की धाराएँ ही वे नदी हों। अमलतास के पेड़ उन कल्प-तरुओं के समान लगे, जो अपने पत्तों के मध्य सतत याचकों को देने के लिए स्वर्ण लिये खड़े हों । ४६५

पूवियल् पुडव मँडुगुम् पौशिवरि वण्डु पोर्प्पत्
तीविय कळिय वाहिच् चैरुक्किन् कामच् चैव्वि
ओविय मान्ग डोरु मुरैत्तड वुरिञ्जि यौण्गैल्
नावियिन् मणङ्ग णाडक् कलैयौडुम् बुलन्द नव्वि 466

पू इयल् पुरवम्-पुष्प-भरे वन; अँड्कुम्-सर्वत्र; पौरि वरि-चित्तियों से भरे मधुरगायक; वण्टु पोर्प्प-भ्रमर भीड़ लगाए हुए थे; तीविय कळिय आकि-मधुर आनन्ददायक बनकर; चैरुक्कित-इतराते रहे; कामम् चैव्वि-प्रेमाधिक्य के कारण; ओवियम्-चित्र-सम; मान्कळ् तोडुम्-हर मृग पर; उरैत्तु-रगड़कर; अउ उरिञ्चि-खूद मलने से; ओळ् केळ्-परिपक्व; नावियिन् मण्डकळ्-कस्तूरी की सुगन्ध; नार्-निकल रही थी, इसलिए; कलैयोट्टुम्-उन मृगों से; नव्वि-मृगियाँ; पुलन्त-रूठ गयी। ४६६

वहाँ के पुष्पतरुओं से पूर्ण वनों में, सर्वत्र चित्तियोंसहित शरीर वाले गुंजनशील भ्रमर आनन्द प्रदान करते हुए मँड़रा रहे थे। नरमृग प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अन्य मृगों से रगड़-रगड़ाकर आये। उन पर परिपक्व कस्तूरी की गन्ध आ रही थी। उन मृगों से उनकी प्रिया मृगियाँ (यह समझकर) रूठ गयी (कि ये कस्तूरीमृगियों से मिलकर आये हैं।)। ४६६

तेरि	नन्नैडुन्	दिशैल्लच्	चैरुक्कळिन्	दौडुङ्गुम्
कूर	यिन्नैडुङ्	गण्णनक्	कुविन्दन	कुवळै
मार	तन्नवर्	वरवुहण्	डुवक्किन्ऱ	महळिर्
मूरन्	मैन्गुरु	मुरुवलीत्	तरुव्विन	मुल्लै 467

तेरितन्-रथी बनकर; नैटु तिर्चै-बहुत दूर; चैल-जाने से (अपने प्रिय के); चैरुक्कु अळिन्नु-दर्पहीन (आनन्दहीन) होकर; ओडुङ्कुम्-कृश होनेवाली; कूर्-(नायिका के) तीक्ष्ण; अयिल्-भाले के समान; नैटु कण् अँत-लम्बी आँखों के समान; कुवळै-कुवलय; कुविन्नन-मुकुलित हुए; मारन् अन्नवर्-मन्मथ-सम; वरवु कण्डु-(नायकों का) आगमन देखकर; उवक्किन्ऱ-आनन्दित होनेवाली; मकळिर्-स्त्रियों के; मैल्-कोमल; कुडु मुडुवल्-मन्दहास के; मूरल्-दाँतों; ओत्तु-के समान; मुल्लै-कुँद; अरुम्पिन-पुष्पित हुए। ४६७

कुवलय, उन गर्वहीन और कृश हुई विरहिणियों की भाले-सी तीक्ष्ण और आयत आँखों के समान मुकुलित हो गये, जिनके पति रथारूढ़ हो बहुत दूर चले गये हैं। मन्मथ-सम अपने नायकों को आते देख हर्षित होनेवाली स्त्रियों के सहास दाँतों के समान कुन्दकलियाँ उग आयीं। ४६७

कळिक्कु	मञ्जैयैक्	कण्णुळ	रित्तमैन्क्	कण्णुङ्
उळिक्कु	मन्नरिर्	पौन्वळङ्	गिनमलै	यरुवि
वैळिक्कण्	वन्दकार्	विरुन्दैत्	विरुन्दुहण्	डुळ्ळम्
कळिक्कु	मङ्गैयर्	मुहमैन्प्	पौलिनन्दन	कमलम् 468

कळिक्कुम् मञ्जैयै-हर्षित मोरों को; कण्णुळर् इत्तम् अँत-नटवर्ग समझकर; कण्णुङ्-उनका नृत्य देखकर (उससे खुश होकर); अळिक्कुम्-पुरस्कार दान करनेवाले; मन्नरिन्-राजाओं की तरह; मलै अरुवि-पवंत-सरिताएँ; पौन् वळङ्कित-स्वर्ण दे रही थीं; वैळि कण् वन्त-आकाश में प्रकट; कार्-मेयों को;

विरुन्तु अंत-अतिथि संमज्ञकर; निरुन्तु कण्टु-अतिथि (का आगमन) देखकर; उल्लम् कळिक्कुम्-मनमुदित; मङ्कैयर्-स्त्रियों के; मुक्कम् अंत-मुखों के समान; कमलम्-कमल; पौलितन्त-सुशोभित हुए । ४६८

पर्वत-नदियों ने आनन्दनृत्य-लीन मयूरों को देखकर, बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटवृन्द को देखकर उपहार देनेवाले राजाओं के समान स्वर्ण को बहुतायत से छितरा दिये । आकाश में प्रकट मेघों को मेहमान समझकर कमल उन स्त्रियों के समान सुशोभित हुए, जो कि मेहमानों के आगमन से प्रफुल्लमन हो जाती हैं । ४६८

शरद	नाण्मल	रियावैयुड्	गुडैन्दन	तडविच्
चुरद	नूर्नेरि	विडरैन्त	तेन्कोण्डु	तौहुप्प
बरद	नूर्मुर्	नाडहम्	बयनुरप्	पहुप्पान्
इरद	मीट्टुड्ड	गविजरैप्	पौरुविन्	तेनी 469

चुरत नूर् नैरि-कामशास्त्रज्ञ; विटर् अंत-विटपुरुषों के समान; नाळ् मलर् यावैयुम्-सद्यविकसित सभी फूलों को; चुरतम् कुटैन्त-मधु में घुसकर; तडवि-स्पर्श कर; तेन् कोण्डु-रस लेकर; तौकुप्प-संचय करनेवाले; तेनी-भ्रमर; परतम् नूर् मुर्-भरत के (नाट्य) शास्त्र के क्रम से; नाटकम्-नाट्य; पयत् उर-उपादेय रीति से; पकुप्पात्-बनाने के लिए; इरतम् ईट्टुड्डम्-(नव-) रसों का सम्पादन करनेवाले; गविजरै-कवियों की; पौरुविन्-समानता करते थे । ४६९

मधुमक्खियों ने फूल-फूल पर बैठकर खूब पैठकर मधुर पुष्परस संचित किया । इसमें वे कोकशास्त्रज्ञ विटपुरुषों के समान थे । बाद उन्होंने उसे शहद में परिवर्तित कर दिया । इसमें वे भरत ऋषि के नाट्यशास्त्र में कहे अनुसार नाटक में रसों के सम्पादक कवियों के समान रहे । ४६९

नोक्कि	नानमै	नोक्कळि	कण्डनुण्	मरुड्गुल्
ताक्क	णङ्गरुन्	जोदैक्कुत्	ताक्करुन्	दुत्त्वम्
आक्कि	नान्तम	दुरुविन्न्	ररुम्बैर	लुवहै
वाक्कि	नानुरै	यामन्तक्	कळित्तन्	मान्गळ् 470

नोक्किनाल्-दर्शनीयता से; नमै-हमारी; नोक्कु-दृष्टि को; अळि कण्ट-हरानेवाली; नुण् मरुड्कुल्-पतली कमर की; ताक्कु अण्ड्कु-(चंचल)-लक्ष्मीदेवी के समान; अरुम् चीतैक्कु-अपूर्व सीताजी को; ताक्कु अरु-असह्य; तुत्तम्-दुःख; नमतु उरविन्-हमारा-सा रूप लेकर; आक्किनान्-(मारीच ने) दिलाया; अत्तु-यह सोचकर; पेरुल् अरुम्-दुर्लभ; उवर्क-आनन्द को; वाक्किनान् उरैयाम्-मुख से नहीं कहेंगे; अन्-यह विचार कर; मान्गळ्-हरिण; कळित्तन्-मौन रूप से हर्षित हुए । ४७०

हिरण इतराये । उन्हें इस बात का ठसक हो गया था कि मारीच ने अपनी दर्शनीयता से दर्शक की दृष्टि को हरनेवाली और पतली कमर से

शोभित लक्ष्मीदेवी से तुल्य सीताजी को असह्य दुःख देने की बात जब सोची, तब हमारा ही रूप धरकर कष्ट दिया। पर वे मौन ही रहे; क्योंकि उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि हम अपना मुख खोलकर अपना आनन्द प्रकट नहीं करेंगे। ४७०

नीडु	नैञ्जुरु	नेयत्ता	नैडिदुउप्	पिरिन्दु
वाडु	हिन्ऱन	मरुळुरु	कादलिन्	मयङ्गिक्
कूडु	नन्नदित्	तडन्दौऱुड्	गुडैन्दन	पडिवुऱ्
राडु	हिन्ऱन	कौळुन्नरैप्	पौरुविन्न	वन्नन्म् 471

नैटिउ उऱ-दीर्घ (बहुत) काल तक; पिरिन्दु-वियुक्त रहकर; नैञ्जु उडु-मन में रहनेवाले; नीडु नेयत्ताल्-गहन प्रेम से; वाटुकिन्ऱ-स्नान होकर; मरुळु उडु-मोहक; कातलिन् मयङ्गि-प्यार के साथ भ्रान्त हो; कूटुम्-जहाँ आ मिले हैं; नल् नति-उन उत्तम नदियों के; तटम् तौऱुम्-तल-तल में; कुडैन्त-गोते लगाते हुए; पडिवुऱु-वहीं रहकर; आटुकिन्ऱ- (जो) क्रीड़ा करते हैं, वे; अन्तम्-हँस; कौळुन्नरै-पतियों की; पौरुविन्न-समानता करते थे। ४७१

हस बहुत काल तक दूर रहे। फिर मन के गम्भीर प्रेम के कारण व्याकुल और मोहक प्रेम के वश में होकर नदी-तटों पर आ जाते हैं और वे जल में गोते लगाकर क्रीड़ा करते हैं। वे विरही पतियों के समान हैं। अर्थश्लेष के द्वारा यह पद दोनों पर (हंसों और पतियों पर) लागू होता है। ४७१

कारै	नुम्बैयर्क्	करियवन्	मार्बित्तिऱ्	कदिर्मुत्
तार	मैन्नवुम्	बौलिन्दन	वळप्परु	मळक्कर्
नीर्मु	हन्दमा	मेहत्ति	नरुहुऱ्	निरैत्त
कूरुम्	वैण्णित्	तिरैयैन्प्	परप्पन	कुरण्डम् 472

अळप्प अरुम्-अगणित (अपार); अळक्कर्-समुद्र से; नीर् मुकन्त-जल सोखकर जानेवाले; मा मेकत्तिन्-काले मेघ के; अरुकु उऱ-पार्श्व में; निरैत्त-पंकित में; वैळ निऱम् कूरुम्-श्वेत रंग की; तिरैयै-लहरों के समान; परप्पन कुरण्डम्-उड़नेवाले बगुले; कार् अँतुम् पँयर्-मेघश्याम नाम के; करियवन्-श्यामदेव महाविष्णु के; मार्पितिल्-वक्ष में रहनेवाले; कतिर् मुत्तु आरम् अँन्तवुम्-शोभायमान मुक्ताहार के समान; पौलिन्त-शोभायमान थे। ४७२

अपार सागर से जल सोखकर काले मेघ आकाश में संचार करते हैं। उनके पास श्वेत तरंगों के समान पंकितबद्ध होकर बगुले उड़ते हैं। वे नीलमेघश्याम महाविष्णुवक्ष के मुक्ताहार के समान लगते हैं। ४७२

मरुवि	नीडुगल्शैल्	लानैडु	मालैय	वात्तिऱ्
परुव	मेहत्ति	नरुहुऱ्	कुरुहितम्	वरप्प

तिरुवि नायह त्रिवर्त्तनत् तेमरै तैरिक्कुम्
 ओरुवन् मारुविनि नुत्तरी यत्तैयु मौत्त 473

मरुवि-इकट्ठा होकर; नीड्कल् चैल्ला-अन्तर न देकर; नैट्टु मालैय-लम्बी पंक्ति बांधकर; वात्तिन्-आकाश में; परुवम् मेकत्तिन्-मौसमी मेघों के; अरुक्कु उर-पास में लगे; परुप्प-जो उड़ते हैं, वे; कुरुक्कु इत्तम्-सारसों का वृन्द; तिरुविन् नायकन्-श्रीलक्ष्मी के नायक; इवन् अत्त-ये हैं, ऐसा; ते मरु-दिव्य वेदों से; तैरिक्कुम्-प्रतिपादित; ओरुवन्-अप्रमेय (श्रीविष्णु) के; मारुपितिल्-वक्ष में; उत्तरीयत्तैयुम्-उत्तरीय की भी; औत्त-समानता करते थे । ४७३

सारस पक्षी भी पंक्तियों में उड़ते हैं। वे सटे हुए जाते हैं। वे आकाश में वर्षाकालीन काले मेघों के पास लगे हुए उड़ते हैं। वे वेदों द्वारा प्रतिपादित श्रियःपति महाविष्णु के वक्ष पर के उत्तरीय के समान भी लगते हैं। ४७३

तेन वामलर्त्त तिशैमुहन् मुदलितर् तैळिन्दोर्
 जान नायह त्रवैयर् नोक्किन नल्हक्
 कान्तम् यावैयुम् वरुप्पिय कण्णैत्तच् चनहन्
 सान्नै नाडित्तिन् रळैप्पन्न पोन्नन मञ्जै 474

तेन् अवाम्-मधु-भ्रमरों से इच्छित; मलर्-कमल पर के; त्रिचैमुक्त्-चतुर्मुख; मुतलितर्-आदि; तैळिन्दोर्-विशद ज्ञानियों के; जान नायकन्-ज्ञान के विषय, नायक श्रीराम का; नवै-दुःख; अरुल्-दूर होना; नोक्कित-चाहते हुए; नल्हक्-उनके पास सीताजी को ले आकर उपकार करने के विचार से; कान्तम् यावैयुम्-जंगल भर में; परुप्पिय कण् अत्त-फैलायी गयी आँखें हों, ऐसे; मञ्जै-मोर; चनकन् सान्नै-जनक की हरिणी को; नाडि निन्न-खोजते हुए; अळैप्पन्न पोन्नन-बुलाते हों जैसे हैं। ४७४

श्रीराम भ्रमरावृत कमल पर आसीन ब्रह्मा आदि के ज्ञान का विषय हैं। उन्हें पत्नी के विरह से जनित अपार दुःख है। उसे दूर करने के लिए उनकी पत्नी को ढूँढ़कर ला देंगे। इस उपकार के लिए मयूर सर्वत्र अपनी आँखें (दृष्टि) भेजकर जनक की दुहिता हरिणी-सी सीता को ढूँढ़ रहे हों और बुला रहे हों, ऐसे लगे। ४७४

उरवै दुप्पुरुड् गौडुन्दोळिल् वेत्तिला नौळिय
 तिडनि नैप्पुरुड् गारैनुञ् जैव्वियोन् शेर
 निडम तत्तुरु कुळिर्प्पिनि नैडुनिल मडन्दै
 पुडम यिर्त्तलम् बौडित्तन पोन्नन पशुम्बुल् 475

पचुम् पुल-हरी घास; वैत्तुप्पु उर-तप्त करते हुए; उरुम्-आनेवाले; कौटुम् तौळिल्-कूरकर्म; वेत्तिलान्-ग्रोष्मराज के; तिडम् नौळिय-बल को मिटाते हुए; निडैप्पु उरु-सबके मन में आनेवाले; कार् अत्तम् जैव्वियोन्-वर्षाकाल रूपी श्रेष्ठ गुण

वाले राजा के; चेर-आ जाने पर; नैट्टु निरुम्-विशाल विस्तार की; निलम् मतनूतै-भूमिदेवी; मततु उडु-मन में हुई; कुळिरुप्पित्तु-शीतलता के कारण; पुडुम् मयिर् तलम्-शरीर के रोंगटे; पोटित्तु-पुलकित हुए हों; पोनुत्त-ऐसे लगीं । ४७५

घासैं भूमिदेवी के पुलकित रोंगटों के समान लगीं । तप्त करनेवाले क्रूरकर्मी ग्रीष्मराज का आतंक दूर करते हुए सर्वप्रिय वर्षाकाल आ गया । इससे भूमि के विशाल शरीर भर में शीतलता (आनन्द) के कारण पुलक भर गये । ४७५

शैज्जै	वेलवर्	शरिशिलैक्	कुरिशिल	रिरुण्ड
कुज्जि	शैयौळि	कदुवुडुप्	पुटुनिरुडु	गौडुक्कुम्
पज्जि	पोरुत्तमैल्	लडियेनप्	पोलिन्दत्त	पदुमम्
वज्जि	पोलियर्	मरुडुगैन्	नुडुङ्गिन	वल्लि 476

चैम् चैव्वेलवर्-(रक्त के कारण) लाल हुए तीक्ष्ण भालाभो के धारक; चैरि चिल्लै कुरिचिलर्-सबन्ध धनुर्धर वीर, इनके; इरुण्ट कुज्जि-काले केश; चैय् ओळि कदुवुडु-लाल कान्ति से रंजित हो, ऐसा; पुटु निरुम् कौडुक्कुम्-नई रौनक देनेवाला; पज्जि पोरुत्त-लाक्षारसरंजित; वज्जि पोलियर्-वल्लरी-सी स्त्रियों के; मैल् अटि अँत्त-कोमल चरणों के समान; पदुमम् पोलिन्दत्त-कमल शोभे; मरुडुक्कु अँत्त-(उनकी) कमरों के समान; वल्लि नुडुङ्गित-पुष्पलताएँ लचकीं । ४७६

कमल वल्लरी-तुल्य-रमणियों के चरणों के समान कोमल रहे । लाक्षारसरंजित वे चरण, रक्त-रंजित भालाधारी और सबन्ध धनुर्धर वीरों के काले केशों को (अपने आघातों से) नया रंग देनेवाले थे । उन स्त्रियों की कमर के समान लताएँ लचकीं । ४७६

नोयि	रन्नवळ्	कुदलैय	रादलि	तेडिप्
पोयत्	तैयलैत्	तरुदिरैन्	रिराहवन्	पुहलत्
तेय	मैङ्गणुन्	दिरिन्दन	पोन्दिडैत्	तेडिक्
कूय	वाय्क्कुरल्	कुडैन्दवोऽ	कुडैन्दन	कुयिल्हळ् 477

नोयिर्-आप लोग; अन्नवर् कुतलैयर् आतलिन्-उनकी-सी मधुर (अस्पष्ट) तोतली बोली वाली हैं, इसलिए; नैटि पोय्-खोजते जाकर; अत्तैयलै-उन रमणी की; तरुतिर्-ला दीजिए; अँत्तु-यह; इराकवन् पुकल-श्रीराम के कहने पर; कुयिल्कळ्-कोयलों ने; तेयम् अँडक्कणुम्-देश भर में; तिरिन्दत्त पोन्तु-धूमते हुए जाकर; इटै तेटि-उन-उन स्थानों में खोजकर; कूय आय्-टेर लगाकर; कुरल्-गला; कुडैन्त पोल्-बैठ गया हो, ऐसा; कुडैन्तत्त-बोलना छोड़ दिया । ४७७

कोयलें अब मौन रहीं । क्यों ? श्रीराघव ने उनसे कहा था कि सीताजी की बोली भी तुम्हारी जैसी है । उसे हँदकर लाओ । वे देश भर में टेर

लगाती हुई घूमिं । उन्होंने उसमें अपना गला फाड़ दिया, अब गले के बैठ जाने के कारण वे मौन हैं । यह कवि की उत्प्रेक्षा है । ४७७

पौलिनन्द	मातिलम्	बुड्डरक्	कुमट्टिय	पुत्तिर्रा
अँलुन्द	वाम्बिह	ळिड्डिन	शँडितयि	रेयत्त
मौलिनन्द	तेनुडै	मुहिल्लुमुलै	याय्च्चियर्	मुळविल्
पिलिनन्द	पाल्वळि	नुरैयितैप्	पौरुवित्त	पिडवम् 478

पौलिनन्द मा निलम्-वर्षा-प्राप्त भूमि ने; पुल तर-घास उगायी, इसलिए; कुमट्टिय-उमै खाकर जो अघा गयीं; पुत्तिर्रा आ-हाल में व्यायी हुई गायों ने; अँलुन्द आम्पिकळ-उगे हुए कुरुरमुत्तों को; इट्टित्त-ठोकर मारकर छितरा दिया; तयिर् चैरि-(वे) दहीखण्ड; एयत्त-के समान लगे; पिडवम्-'पिडव' नामक पौधों के फूल; मौलिनन्द तेत्त उटै-बोली के रूप में शहद बरसानेवाली; मुक्किळ मुलै-नवोदित स्तनों वाली; आय्च्चियर्-ग्वालवालाओं के; मुळविल् पिलिनन्द-दुग्धपात्रों से निकले; पाल्-दूध से; वळि-छलकनेवाले; नुरैयितै-झाग के; पौरुवित्त-समान रहे । ४७८

भूमि को अधिक वर्षा प्राप्त हो गयी । उसने अधिक घास पैदा करायी । हाल में व्यायी हुई गायों ने उस घास को खूब चरा और अघा गयीं । उन्होंने अपने पैरों से अपनी गति में कुरुरमुत्तों को तोड़कर छितरा दिया । वे कुरुरमुत्ते दहीखण्डों के समान दिखे । 'पिडव' नाम के फूल यत्त-तत्त दिखे । वे मधुमधुर बोली और नवोदित स्तनों वाली ग्वालवालाओं द्वारा दूध के पात्रों में ढाले गये दूध के झाग के समान लगे । ४७८

वेङ्ग	नाडित्त	कौडिच्चियर्	वडिक्कुळल्	विरैवण्
डेङ्ग	नाहमु	नाडित्त	नुळैच्चिय	रैम्वाल्
आङ्गु	नाण्मुल्लै	नाडित्त	वाय्च्चिय	रोदि
आङ्ग	उड्पल	मुळत्तियर्	पित्तित्तै	नाड 479

कौटिच्चियर्-पर्वतीय स्त्रियों के; वटि कुळल्-कंधी करके बँधे केश; वेङ्क विरै नाडित्त-'वैंगै' फूलों का गन्ध निकाल रहे थे; नुळैच्चियर्-(समुद्रतटीय प्रदेश की) धीवर स्त्रियों के; ऐम्पाल्-केश; वण्टु एङ्क-भ्रमर गुंजार करें, ऐसा; नाकमुम् नाडित्त-सुरपुन्नाग के (फूलों के कारण) सुवास से पूर्ण थे; आङ्कर्-पास; उळत्तियर्-(खेतों के प्रदेश की) कृषकवालाओं के; पित्तिकै-केश; उड्पलम् नाड-उत्पल की गन्ध दे रहे थे; आङ्कु-वहाँ; आय्च्चियर्-ग्वालिनों के; ओत्ति-केश; नाळ् मुल्लै नाडित्त-नवविकसित कुंदपुष्प का गन्ध दे रहे थे । ४७९

पार्वत्य देश वाली 'कौडिच्चि' स्त्रियों के बँधे केश से 'वैंगै' फूलों का सुवास आ रहा था । समुद्रतटप्रदेश वाली धीवरवालाओं के केश से सुरपुन्नाग की गन्ध आ रही थी और उस पर भ्रमर मँडरा रहे थे । पार्श्व में

कृष्कस्त्रियों के केश से लाल उत्पल का सुवास आ रहा था । उन पर्वत-प्रदेशों में ग्वालिनों के केश कुन्दपुष्पगन्ध से भरे थे । ४७९

तेरेक्	कौण्डपे	रल्लुला	डिरुमुहड्	गाणान्
आरेक्	कण्डुयि	राऱ्कुवा	नल्लुणर्	वळिन्वान्
मारड्	कैण्णिल्वल्	लायिर	मलर्क्कणै	वहुत्त
कारैक्	कण्डनन्	वैन्दुयर्क्	कौरुहरे	काणान् 480

तेरे कौण्ड-रथसदृश; पेर् अल्लुलाळ्-विशाल कटि वाली; तिरु मुक्क काणान्- (सीताजी का) श्रीमुख न देखकर; मारड्कु-सन्मथ के लिए; अैण् इल्-अगण्य; पल् आयिरम्-अनेक सहस्र; मलर् कणै-पुष्पशर; वहुत्त-जिसने सृष्ट कर दिया, उस; कारै-वर्षाकाल को; कण्डनन्-देखकर; वैन् तुयर्क्कु-कठोर दुःख (सागर) का; और करै-पार; काणान्-न देखकर; नल् उणर्वु-होश; वळिन्वान्-खो गये; आरै कण्ड-किसको देखकर; उयिर् आऱ्कुवान्-प्राण धारण करेंगे । ४८०

रथ-सदृश विशाल कटिप्रदेश वाली सीताजी का मुख श्रीराम को देखने को नहीं मिला । लेकिन कामदेव के वास्ते असंख्य अनेक सहस्र पुष्प-शर उत्पन्न करनेवाले वर्षाकाल को देखा । वे अपने दुःख-सागर का अन्त नहीं देख पाये । अतः वे वेसुध हो गये । बेचारे श्रीराम किसको देखकर अपनी जान बचाते ? । ४८०

अळविल्	कारैन्	मप्पैरुन्	वरुवम्बन्	वणैन्दाल्
तळर्व	रैन्बडु	तवम्बुरि	वोरुक्कुन्	वहुमाल्
किळवि	तेत्तिन्	ममिळ्दिनुड्	गुळैत्तवळ्	किळैत्तोळ्
वळवि	युण्डवन्	वरुन्दुमैन्	उलडु	वरुत्तो 481

अळवु इल्-अपार; कार् अैत्तुम्-वर्षा की; अ प्पैरुम् परुवम्-वह श्रेष्ठ ऋतु; वन्तु अणैन्ताल्-आ गयी तो; तळर्व-शिथिल पड़ जायेंगे; अैत्तु-यह बात; तवम् पुरिवोरुक्कुम्-तपस्या करनेवालों के लिए भी; तक्कुम्-लागू होगी; आल्-इसलिए; वळकिळै तोळ्-बड़े बाँस के समान कन्धों वाली (सीतादेवी) की; तेत्तिन्-शहव में; ममिळ्दिन्-और अमृत में; गुळैत्त-घुली; किळवि-(मधुर) बोली का; वळवि उण्टवन्-खूब स्वादन जिन्होंने किया था; वरुन्दुम् अैत्तुशल्-वे दुःखी रहे तो; अतु वरुत्तो-वह साधारण दुःख होगा क्या । ४८१

अतिगहन और अपार वर्षाकाल जब आता है, तब लोग शिथिलमन हो जाते हैं । यह कथन मुनियों के विषय में भी सत्य है । श्रीराम ने बाँस-सम कन्धों वाली सीताजी के मधु-सुधा-मिश्रित वचन जी भर सुने थे । अब वे दुःख से पीड़ित हैं, तो क्या वह दुःख साधारण दुःख होगा ? । ४८१

कावि	युड्गरुड्	गुवळैयु	नैयदलुड्	गायाम्
बूवै	युम्बोर्	वानवन्	पुलम्बिनन्	इळर्वान्

आवि युज्जिहि दुण्डुहो लामेन वयर्न्दान्
तूवि यन्तमन् नाडिइत् तिवैयिवै शील्लुम् 482

कावियुम्-नीलोत्पल और; कल्हम् कुवळैयुम्-नीलकुवलय; नैय्तलुम्-और 'नैय्दल'; कायाम् पूवैयुम्-और अतसी पुष्पों की; पौहवान्-समानता करनेवाले; अवन्-वे श्रीराम; पुलम्पितन्-विलाप करते हुए; तळरवान्-शिथिल हुए; आवियुम्-प्राण भी; चिरितु उण्डु कौल् आम्-थोड़े हैं क्या; अँत-ऐसा; अयर्न्तान्-बेसुध हुए; तूवि अन्तम् अन्ताळ्-मृदु पर वाली हंसिनी-सदृश; तिइत्तु-(सीताजी) के प्रति; इवै इवै शील्लुम्-ये बातें कहते । ४८२

नीलोत्पल, कुवलय, 'नैय्दल' और अतसी पुष्पों के-सें रंग वाले श्रीराम विलाप करते हुए बेसुध हो रहे । इस बात का भी संशय हो रहा कि प्राण हैं या नहीं । वे कोमलपंख हंसिनी-सी सीताजी के सम्बन्ध में निम्नोक्त बातें कहने लगे । ४८२

वारेय् मुलैया लैमरैक्कु नर्वाळ्
ऊरेयडि येनुयि रोडु लल्वेन्
नीरे युडैया परुणिन् निलैयो
कारे यँतदा विहलक् कुदियो 483

कारे-काले मेघ; वार् एय् मुलैयाळ्-अँगियावद्ध स्तनों वाली सीता की; मरैक्कुत्तर्-छिपाये रखनेवालों की; वाळ् ऊरे-वास की बस्ती की भी; अडियेन्-नहीं जानते हुए; उयिरोडु-प्राणसह; उळल्वेन्-धूमता फिरता हूँ; नीरे उडैयाय्-पानी (आन) रखते हो; अरुळ्-करुणा; निन् इलैयो-तुम्हारे पास नहीं है क्या; अँतु आवि-मेरे प्राणों की; कलक्कुतियो-आकुलित करोगे क्या । ४८३

काले मेघ ! मैं अँगिया-वद्ध स्तनों वाली सीताजी को छिपाये रखने वालों का वासस्थान नहीं जानता । प्राण ढोकर धूम रहा हूँ । तुम जल (आन) से भरे हो ! पर तुममें दया (आर्द्रता) नहीं है क्या ? मेरे प्राणों को सताओगे क्या ? । ४८३

वैप्पार् नैडुमिन् निन्नैयिर् इवैहुण्
डैप्पा लुम्विशुम् विनिरुण् डैळुवाय्
अप्पा दहवज् जवरक् करैये
औप्पा युयिर्होण् डलदो वलैयो 484

वैप्पु आर्-ज्वलन्त; नैडु मिन्निन्-लम्बी विजलियों के; अँयिर्-दांतों वाले; इरुण्डु-काले होकर; वैकुण्डु-कोप करके (गरजकर); विचुम्पिन्-आकाश में; अप्पालुम्-सभी ओर; अँळुवाय्-प्रकट होते; अ पातकम्-उन पातक; वज्जम्-कपटी; अरक्करैये औप्पाय्-राक्षसों की ही समता करते हो; उयिर् कौण्डु अलतु-प्राण लिये बिना; ओवलैयो-न हटोगे क्या । ४८४

कठोर और लम्बी बिजलियों रूपी दन्तोरे ! काले होकर, गुस्सा करते हुए (गरजते हुए) आकाश में सर्वत्र प्रकट हो ! तुम भी उन पातक और वंचक राक्षसों की समता करते हो ! मेरी जान लिये बिना हटोगे नहीं क्या ? । ४८४

अयिलेय्	विळियार्	विळैया	रमिळ्दिन्
कुयिलेय्	मौळियार्क्	कौणराय्	कौडियाय्
तुयिले	नौरवे	नुयिर्शोर्	वुणर्वाय्
मयिले	यैनेनी	वलिया	डुदियो 485

मयिले-मोर; अयिल् एय् विळियार्-भाला-जैसी आँखों वाली; विळै-(क्षीर-सागर-) उत्पन्न; आर्-मधुर; अमिळ्तिन्-अमृत और; कुयिल् एय्-कोकिल की-सी; मौळियार्-बोली वाली सीता को; कौणराय्-ढूँढ़कर नहीं लाओगे; कौडियाय्-नो-क्रूर हो तुम; तुयिलेन्-अनिद्र; नौरवेन्-(अकेला) विरही; उयिर् चोर्बु-मेरे प्राणों की शिथिल हालत; उणर्वाय्-जानते हो; अँनै-(ऐसे) मेरे प्रति; वलि-अपना (बल) सामर्थ्य; आटुतियो-दिखाओगे (सताओगे) क्या-। ४८५

मयूर ! तुम भाले-सी आँख वाली और क्षीरसागरोत्पन्न अमृत-सम और कोयल की कूक की-सी बोली वाली सीताजी को ढूँढ़ नहीं लाओगे क्या ? तुम भी बहुत क्रूर हो ! मुझे नींद नहीं आती और मेरी शिथिलता जानते हो । तब भी तुम अपना बल दिखाओगे क्या ? । ४८५

मळैवा	डैयीडा	डिवलिन्	डुयिर्मेल्
नुळैवाय्	मलर्वाय्	नौडियाय्	कौडिये
इळैवा	णुदला	रिडैपो	लिडैये
कुळैवा	यैन्ददा	विहुळैक्	कुदियो 486

कौडिये-लता; मळै वाटैयोट्ट-वर्षाकालीन (उदीची) हवा में; आडि-हिलकर; वलिननु-बलात्; उयिर् मेल्-मेरे प्राणों में; नुळैवाय्-प्रवेश करोगी; मलर्वाय्-खिलोगी; इळै-झूमर से अलंकृत; वाळ् नुतलार्-प्रकाशमय माथे वाली की; इटै पोल्-कमर के समान; इटैये-मध्य में; कुळैवाय्-झुकते हुए; अँननु आवि-मेरे प्राणों को; कुळैक्कुतियो-निर्वल बनाओगी क्या; नौडियाय्-कहो । ४८६

हे लताओ ! वर्षाकालीन हवा में हिलकर बलात् मेरे अन्दर घुस जाती हो ! पुष्पसहित (प्रफुल्ल) रहती हो । झूमर से अलंकृत भाल वाली सीताजी की कमर के समान लचकती हो ! मेरे प्राणों को भी लचकाओगी क्या ? बताओ । ४८६

विळैयेन्	विळैवा	नवैमैय्	मैयिन्निन्
डिळैये	तुणर्चे	नवैयिन्	मैयिन्नाल्
पिळैये	नुयिरो	डुपिरिन्	दन्नराल्
उळैये	यवर्चे	वुळैया	रुरैयाय् 487

उल्लेये-हिरन; विल्लेवु-चाहनीय; आतवे-जो हैं; विल्लेयेन्-उनको नहीं चाहता; मैय्मैयिन् निन्ऋ-सत्य से; इल्लेयेन्-नहीं हटूंगा; उणर्वेन्-(तथ्य) समझूंगा; अवै-वे ज्ञान; इन्मैयित्ताल्-नहीं रहे, इसलिए; विल्लेयेन्-अपराधी हो गया; उयिरोटु पिरिन्तत्तर्-(सीता) प्राणों के साथ बिछुड़ गयीं; अवर-वे; अँ उल्लेयार्-किस स्थान में हैं; उरैयाय्-कहो । ४८७

हे हरिण ! प्यारी वस्तुओं की चाह नहीं रखता । सत्य-मार्ग से नहीं हटता । समझदार हूँ । पर ये सब गुण छूट गये; तभी तो मैंने अपराध किया और तभी तो जीते-जी मुझे वे छोड़कर चली गयीं । वे कहाँ है ? बताओ, भला । ४८७

पयिल्वा	डहर्मेल्	लडिपम्	जनैयार्
शैयिरे	डुमिला	रौडुतो	रुदियो
अयिरा	डुडने	यहल्वा	यलैयो
उयिरे	कँडुवा	युडवोर्	हिलैयो 488

उयिरे-मेरे प्राण; पयिल्-शोभाकारी; पाटकम्-'पाडगम' नाम के (चरण के) आभरणों से भूषित; मैल् अटि-कोमल चरण; पञ्चु अतैयार्-रई के समान (जिनके) है; चैयिर्-दोष; एतुम्-कुछ; इलारौटु-(जिनका) नहीं है, उनके साथ; तीरुतियो-(मुझे छोड़कर) जाओगे क्या; अयिरातु-विना विलम्ब किये; उटने-उनके साथ ही, तभी; अकत्वाय् अलैयो-हट गये होंगे न; कँडुवाय्-नाशवान; उडवु-(मेरा-सीता का) सम्बन्ध; ओर्किलैयो-(तभी) न समझे क्या । ४८८

मेरे प्राण ! सुन्दर पादकटक-भूषित व रई-से चरणों वाली, अर्निच्च सीताजी के साथ तुम भी मुझे छोड़ जाओगे क्या ? अगर जाने का विचार रखते तो अविलम्ब चले जाते ! हे नाशवान ! उनका मेरा नाता नहीं जानते ? । ४८८

औन्ऱैप्	पहराय्	कुल्लुक्कु	कुडैवाय्
वन्ऱैप्	पुरुनीळ्	वयिरत्	तित्तैये
कौन्ऱैक्	कौडियाय्	कौणर्हिन्	रिलैये
अँन्ऱैक्	कुरवा	हविरुन्	दत्तैये 489

कौन्ऱै कौडियाय्-अमलतास के क्रूर (तरु); कुल्लुक्कु-सीताजी के केश के सामने; उटैवाय्-हार गया; वल्-दूढ़; तैप्पु उरु-गड़े हुए; नीळ् वयिरत्तित्तै-गम्भीर वर रखनेवाला है; औन्ऱै-एक भी; पकराय्-नहीं बोलता; कौणर्किन्निलै-(सीता को) नहीं लाता; अँन्ऱैक्कु उडवाक् इरुत्ततै-किस दिन (कब) तू बन्धु (मित्र) रहा । ४८९

अमलतास, क्रूर ! तुम्हारे फल सीताजी के केशों के सामने हारे ! इसलिए मेरे साथ गम्भीर वर पालते हो ! यह उत्तर दो ! उनको तुम मेरे पास ले नहीं आते । तुम कब मेरे मित्र रहे ? । ४८९

कुरावरुम्	वनैय	कूर्वा	ळैयिरुवैड	गुरुळे	नाहम्
विरावुवैड	गडुविर्	कौल्लु	मैल्लिणर्	मुल्लै	वैय्दिन्
उरावरुन्	दुयर	मूट्टि	योय्वर	मलैव	दौन्ऱो
इरावण	कोव	निर्क्क	विन्दिर	कोव	मैन्ऱो 490

कुरा अरुम्पु-“कुरा” तरु की कलियों के; अनैय-समान; कूर् वाळ् अयिरु-तीक्ष्ण और उज्ज्वल दाँतो के; वंम् नाकम्-भयंकर सर्प के; कुरुळे-वच्चे में; विरावु-(स्वाभाविक रूप से) रहनेवाले; वैम् कटुविन्-भीषण विष के समान; कौल्लुम्-मुझे मारनेवाली; मुल्लै-कुन्दलता की; मैल् इणर्-कोमल कलियाँ; वैय्तिन् उरावु-ताप देते हुए आनेवाले; अरुन्तुयरम्-असह्य दुःख को; मूट्टि-बढ़ाकर; ओय्वु अरु-निरन्तर; मलैवतु-संघर्ष करती हैं; औन्ऱो-क्या वही एक है; इरावणन् कोपम् निर्क्क-रावण का कोप तो एक तरफ़ रहता है; इन्तिर कोपम् मैन्ऱो-इन्द्र का कोप भी बयो । ४६०

कुन्दलताओं की कोमल कलियाँ ‘कुरवक’ पुष्प-सदृश दाँतो वाले भयंकर बालसर्पों के विष के समान मुझे सन्तापक और असह्य दुःख देते हुए मेरे साथ अथक रीति से लड़ रही है ! क्या यही एक है ? रावण का कोप एक ओर रहता है तब ये असह्यक इन्द्रगोप बयो आ निकले हैं ? [इस पद के पिछले अंश का भाव-चमत्कार तमिळ में गोप, कोप दोनों को एक ही समान लिखने पर आधारित है। पहले ही रावण का कोप (दुष्कृत्य) सता रहा है; अब ये इन्द्रगोप बयो आकर सताने लगे ? कुन्दकली से सीताजी की दन्तावली की याद आ जाती है और इन्द्रगोप से उनके अंधरों की स्मृति। दोनों उनको पीड़ा दे रही हैं] । ४९०

ओडैवा	णुदलि	नाळै	यौळिक्कला	मुवाय	मुन्नि
नाडिमा	रोच्च	नारो	राडह	नव्वि	यानार्
वाडैयाय्क्	कूड्डि	नारु	मुर्विने	माड्डि	वन्दार्
केडुशूळ	वार्क्कु	वेण्डु	मुरुक्कोळक्	किडैत्त	वन्ऱे 491

मारीचनार-मारीच; ओटे वाळ-ललाट-पट्ट से अलंकृत और उज्ज्वल; नुतलित्ताळै-भाल वाली सीता को; ओळिक्कलाम् उपायम्-छिपाने का उपाय; उन्नि-सौचंकर; नाटि-ढूँडकर; ओर्-अनुपम; आटक्क् नव्वि-स्वर्णमृग; आनार्-बने; कूड्डित्तारुम्-(महाशय) यम भी; वाटैयाय्-उदीची (जाड़े की) हवा के रूप में; उरुविलै-अपना रूप; माड्डि-बदलकर; वन्तार्-आये; केट्टु चूळ्वार्क्कु-हानि करनेवालों को; वेण्डुम् उरु-मनचाहे रूप; कौळ-लेना; किटैत्त अन्ऱे-सम्भव हो गया न । ४६१

मारीच महाशय ने (मुझे क्लेश देना चाहा और) ताज से अलंकृत उज्ज्वल भाल वाली सीता को (हर लेकर) छिपाने का मार्ग सोचा और कोई उपाय निर्णय किया और तदनुसार अनुपम स्वर्ण-मृग के रूप में अपना रूप बदल लिया ! वैसे ही यम महाराज भी उदीची (जाड़े का) पवन

में रूप बदलकर आपधारे ! हानि करना चाहनेवालों को मन-चाहा रूप लेने का मौका मिल गया न ! । ४९१

अरुविन्नै यरक्क रैन्न वन्दर मदन्निल् यावुम्
 वैरुवर मुळङ्गु हिन्न मेहमे मित्तु हिन्नाय्
 तखल्लेन् इरङ्गि नायो तामरै तुन्नद तैयल्
 उरुविन्नैक् काट्टिक् काट्टि यौळिक्किन्ना यौळिक्किन्ना ४९२

अरुविन्नै-दुष्कृत्य; अरक्कर् अन्न-राक्षसों के समान; अन्तरम् अतन्त्रि-आकाश में; यावुल् वैरुवर-सबको भयभीत होने देते हुए; मुळङ्कुकिन्न-गरजनेवाले; मेकमे-मेघ; मित्तुकिन्नाय्-चमक दिखाते हो; तखल् अन्न-उन्हें दिला दूंगा, ऐसा; इरङ्किनायो-दया दिखायी क्या; तामरै तुन्नद-जिसने कमल त्यागा; तैयल्-उस दयिता के; उरुविन्नै काट्टि काट्टि-रूप को (बिजली के रूप में) दिखाते-दिखाते; यौळिक्किन्नाय्-छिपाते; यौळिक्किन्नाय्-छिपाते; (आल्-पूरक ध्वनि) । ४९२

हे मेघ ! जो दुष्कृत्य राक्षसों के समान आकाश में रहकर सबको डराते हुए गरज रहे हो ! तुम (सीतादेवी के समान) चमक दिखा रहे हो । पर तुमने उनको मेरे पास सौपने की दया तो नहीं की न ? कमल त्यागकर जो आयी है उन देवी का रूप दिखाते, छिपाते; दिखाते और छिपाते हो ! । ४९२

उण्णिन्नै दुयिर्क्कुम् वैम्मै युयिर्शुड वुलैयु मुळळम्
 पुण्णुर् वाळि तूर्त्तल् पळुदित्तिप् पोदि मार
 अण्णुर् कल्वि युळ्ळत् तिळैयव नित्ते युन्नैक्
 कण्णुर् मायिर् पित्तै यारवन् शीर्ऽइ गप्पार् ४९३

मार-मारदेव; उळ् निन्नै-सारे शरीर में भरकर; उयिर्क्कुम्-निकलनेवाली; वैम्मै-गरमी (तपन); उयिर् चुट-मेरे प्राणों को जलाती है; इति-आगे; उलैयुम् उळ्ळम्-डुखनेवाला मन; पुण् उर्-व्रण-लगा हो, ऐसा; वाळि तूर्त्तल्-शर छिड़काना; पळुत्-व्यर्थ काम है; पोति-हट जाओ; अण् उर्-मान्य; कल्वि उळ्ळत्तु-विद्या-पूर्ण मन वाले; इळैयवन्-मेरा छोटा भाई; इन्नै-अभी; उन्नै-तुमको; कण् उर्म् आयिन्-देख लेगा तो; पित्तै-बाद; अवन् चीर्ऽइम्-उसके क्रोध को; कप्पार्-बचानेवाला (रोकनेवाला); यार्-कौन है । ४९३

मन्मथ ! विरहताप अन्दर सब जगह भरकर बाहर भी प्रकट हो गया और वह मेरे प्राणों को जला रहा है । उससे मेरा मन अत्यधिक जर्जर है । तिस पर चोट करते हुए शर छिड़काना व्यर्थ है । सम्मान्य विद्वान् मेरा छोटा भाई अभी तुम्हें देखेगा तो फिर उसके कोप को रोकनेवाला कौन होगा ? । ४९३

विल्लुम्वेड् गणैयुम् वीरा वैज्जमत तज्जि नारमेल्
 पुल्लुन वल्ल वाऱुल् पोऱुल्लर्क् कुरित्तु पोलाम्
 अल्लुनन् पहलु नीड्गा यनड्गनी यरुळिऱ् शीर्न्दाय्
 शैल्लुमेन् ईळिवन् दोरमेऱ् शैलुत्तलुन् जीर्मेत् तामो 494

वीरा-वीर; वैम् चमतु-भयंकर युद्ध में; अञ्चित्तार् मेल-मयातुर मनुष्यों पर; विल्लुम्-धन और; वैम् कणैयुम्-भयंकर शर (प्रयोग); पुल्लुन अल्ल-युक्त नहीं है; आऱुल्-शुद्ध वीरता का; पोऱुल्लर्क्कु-मान न करनेवालों के लिए; उरित्तु पोलाम्-उचित है शायद; अनड्क-मन्मथ; नी-तुम; अरुळिन् तीर्न्ताय्-कठ्ठना-त्यक्त हो; अल्लुम्-रात; नल् पकलुम्-और श्रेष्ठ दिन भी; नीड्काय्-हट जाते नहीं; शैल्लुम् अन्नू-चलेगा, यह समझकर; ईळि वन्तोर् मेल-निर्वालों पर; शैलुत्तलुम्-(बल का) प्रयोग करना भी; जीर्मेत्तु आमो-अच्छा होगा क्या । ४६४

वीर ! घोर समर में भयभीत लोगों पर धनु-शर का प्रयोग उचित नहीं है । शायद यह वीरता को न माननेवालों के विषय में युक्त है ? अनङ्ग ! तुम दया से तो छूट गये; पर दिन और रात मुझे छोड़ नहीं जाते ! वहीं बलप्रयोग कारगर होगा, यह समझकर निर्वालों पर प्रयोग करना श्लाघ्य काम होगा क्या ? । ४९४

अँत्तवित् तहैय पन्नि योडळिन् दिरड्गु हिनऱ्
 तन्नेयीप् पात्ते नोक्कित् तहैयाळिन् दयरन्द तम्बि
 नित्तेनैयैत् तहैयै याह् नित्तेन्दत्ते नैडियो येन्नाच्
 चैत्तिथिऱ् चुमन्द कैयन् रेऱुवात् शैप्प लुऱ्ऱान् 495

अँत्त-ऐसा; इत्तकैय-ऐसी बातें; पन्नि-कहकर; ईट्टु अळिन्नु-शक्ति खोकर; इरड्कुकिन्ऱ-रोनेवाले; तन्ने ओप्पात्ते-स्वोपम (श्रीराम) को; नोक्कि-देखकर; तर्के अळिन्नु-दृढ़ता खोकर; अयरन्द-थके हुए; तम्बि-लघुधृता; चैत्तिथिल् चुमन्त कैयन्-सिर-धृत-हस्त हो; रेऱुवात्-ढाड़स देने हेतु; नैडियो-महिमावान्; नित्ते-अपने को; अँत्तकैय आक-कैसे मनुष्य; नित्तेन्दत्ते-समझ गये; अँत्ता-कहकर; चैप्पल् उऱ्ऱान्-बोलने लगे । ४६५

ऐसा, ऐसी विभिन्न बातें कहते हुए शक्ति खोकर श्रीराम दुःखी हो रहे थे । तब स्वोपम श्रीराम को देखकर उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने, जो सत्र खोकर थक गये थे, सिर पर हाथ धरकर, कहा कि हे महिमामय ! आपने अपने को क्या और कैसा समझा है ? फिर वे उनको आगे ढाड़स दिलाने हेतु निम्न प्रकार बोले । ४९५

कालनीळितु कारुमारियुम् वन्देन्दुऱ कवर्च्चियो
 नीलमेत्ति यरक्कर्वीरम् निनेन्दळुङ्गिय तीर्मेयो
 वालिशेनै मडन्देवैहिड नाडवारलि लामैयो
 शालनूलुणर् केळिवीर तळरन्देन्ने तवत्तिनोय् 496

चाल-खूब; नूल् उणर्-शास्त्रज्ञान; केळ्वि-श्रवणज्ञान के; वीर-वीर; तवत्तितोय-तपस्वी; कार् कालमुभू नीळितु-वर्षाकाल लम्बा है; मारियुम् वन्ततु-बारिश भी आ गयी; अँनूर्-यह; कवर्चियो-दुःख है क्या; नीलम् मेति-काले शरीरों के; अरक्कर् वीरम् नितेन्तु-राक्षसों के पराक्रम को सोचकर; अळुङ्किय-क्षीण हुए; नीरुमैयो-मन चाले हो गये क्या; मटन्तै-देवी; वैकुम्-जहाँ रहती हैं; इटम्-वह स्थान; नाट-ढूँढ़ने के लिए; वालि चेतै-वाली की सेना का; वारल्-आगमन; इलामैयो-नहीं हुआ इसलिए क्या; तळर्न्ततु अँनूतै-विगलित होना क्यों । ४६६

शास्त्र के पठन और श्रवण से प्राप्त पुष्कल ज्ञान के धनी ! वीर ! तपस्वी ! वर्षाकाल दीर्घ है; बारिश भी खूब आयी ! यह सोचकर आप चिन्ताग्रस्त है क्या ? या काले शरीरों के राक्षसों का प्रताप सोचकर मन टूट गया है ? या देवी का स्थान ढूँढ़ने के लिए वाली की सेना का आगमन नहीं हुआ, वही कारण है ? यह मन की शिथिलता क्यों ? । ४९६

मरैतुळङ्गितु	मदितुळङ्गितुम्	वानुमाळ्हडल्	वैयमुम्
निरैतुळङ्गितु	निलैतुळङ्गुर्	निलैमैनिन्वयि	तिरकुमो
पिरैतुळङ्गुव	वन्नैयपेरैयि	रुडैयपेदैयर्	पैरुमैनिन्
इरैतुळङ्गुर्	पुरुववैञ्जिलै	यिडैतुळङ्गुर्	विशैयुमो 497

मरै तुळङ्कितुम्-वेद विपरीत बनें तो भी; मति तुळङ्कितुम्-चन्द्र भ्रमित हो जाय तो भी; वानुम्-आकाश और; आळ् कटल्-गहरे समुद्र-मध्य; वैयमुम्-भूमि; निरै तुळङ्कितुम्-स्थिति खो दें तो भी; निलै तुळङ्कुरुम् निलैमै-स्थिति खोने का स्वभाव; निन् वयित्-आपके पास; निरकुमो-रहेगा क्या; पिरै-चन्द्रकलाएँ; तुळङ्कुव अतैय-चमकती-जैसे; पेरै अँयिर्-बड़े दाँतों के; उटैय-रखनेवाले; पेटैयर्-बुद्धिहीनों का; पैरुमै-(शक्ति का) महत्त्व; निन्-आपके; इरै तुळङ्कुरु-स्वामीत्व-प्रदर्शक; पुरुवम् वैञ्जिलै-मौहें रूपी भयंकर धनुषों के; इटै तुळङ्कुरु-मध्यभाग के काँपने पर; इचैयुमो-(टिका) रहेगा क्या । ४६७

चाहे वेद ही अस्त-व्यस्त क्यों न हों; भले ही चन्द्र का स्थिति-विपर्यय हो आवे; आकाश और गम्भीर-सागरमध्यस्था भूमि अपनी स्थिति खो जाय तो भी स्थैर्यस्खलन आपके पास होगा क्या ? चन्द्रकलाओं के समान चमकने वाले दाँतों से युक्त राक्षसों का पराक्रम स्वामित्वद्योतक आपकी भीहों रूपी भयंकर धनुषों के मध्यभाग के काँपने पर टिक सकेगा क्या ? । ४९७

अनुमर्तैन्वव	नळवरिन्दत्त	मरिजवङ्गद	नादियोर्
अँतैयर्नैन्वदो	रिरुदिहण्डिल	मैळुबदैन्त्रैणु	मियल्बिन्नार्
विनैयित्त्वेन्दुयर्	विरवुत्तिङ्गळुम्	विरैवुशैन्त्रत्त	वैळिदित्तिन्
तनुवैनुन्दिरु	नुदलिवन्दत्तळ	शरदम्बन्नुयर्	तविरुदिये 498

अरिज-ज्ञानी; अनुमत् अँनूपवन्-हनुमान कहलानेवाले के; अळवु-(सामर्थ्य का) माप; अरिन्तत्तम्-जान गये; अङ्कतन् आतियोर्-अंगद आदि; अँळुपतु

अँनु अँणम्-सत्तर (वैळळम्) की गिनती में; इयल्पितार्-आनेवाले; अँत्तयर्-कितने (बोर) हैं; अँत्तपु-इसका; ओर् इरुति-एक निर्णय; कण्टिताम्-हमने नहीं जाना; विनँगिन्-बुरे कर्म (फल) के समान; वैम् तुयर्-तापक दुःख; विरवु-देनेवाले; तिङ्कळम्-मास भी; विरैवु चैन्ऱत्त-जल्दी बीत गये; निन्-आपके; तनु अँन्म-धनु-सम; तिरु नुतलि-श्रीयुक्त ललाट वाली; अँळितितिन् वन्तत्तळ्-सुगम रीति से आ गयीं; चरतन्-यह ध्रुव है; वत् तुयर्-कठोर दुःख; तविर्नि-छोड़ दीजिए । ४६८

ज्ञानी ! हमने जान लिया कि हनुमान (के प्रताप) का माप क्या है ! अंगद आदि वीरो की सेना सत्तर (वैळळम्) की संख्या में बतायी गयी । पर असल में वे कितने हैं ? उनकी गणना की सीमा हमने नहीं देखी । बुरे कर्म-फल के समान कठोर दुःखदायी (शरत्कृतु के) मास भी बीत गये । अब आपके धनु के समान ललाट वाली देवी आपसे सुगमता से आकर मिल गयीं, समझिए । यह ध्रुव है । इसलिए अब यह कठोर दुःख छोड़ दीजिए । ४९८

मरैयर्त्तिन्दवर् वरवुहण्डुमै वलियुम्बज्जहर् वळियौडुम्
 कुरैयवैन्ऱिडर् कळैवैन्ऱुन्नै कुरैमुत्तिन्दु विदियिनाल्
 इरैववड्गव रिरुदिहण्डिनि दिशैपुनैन्दिमै यवर्हडाम्
 उरैयुमुम्बर मुदविनिन्ऱर ळुणर्वळिन्दिड लुरुदियो 499

इरैव-प्रभु; मरै अरिन्तवर्-(आपका) रहस्य जाननेवाला का; वरवु कण्ट- (दण्डक वन के ऋषिगणों का) आगमन देखकर; उमै वलियुम्-आप लोगों को त्रास देनेवाले; वज्जकर्-राक्षसों के; वळियौडुम् कुरैय-सन्तति के साथ नाश हों, ऐसा; वैन्ऱ-हराकर; इटर् कळैवैन्-कण्ट दूर करेगा; अँन्ऱत्त-वचन दिया (आपने); वितियिनाल्-विधिवशात्; कुरै मुत्तिन्तु-कण्ट दूर हो गया (या राक्षसों के हाथ अपराध हो गया और वे मरेंगे); इनि-अब; अरुक्कु अवर् इरुति कण्टु-वहाँ उनका अन्त करके; इनिन्तु-सुख से; इचै पुनैन्तु-प्रशंसा पाकर; इमेयवर्कळुकुम्-देवों का भी; ताम् उरैयुम् उम्पेरुम्-उनका वासस्थान स्वर्गलोक; उत्तिवि निन्ऱु-दिलाकर; अरुळ-उपकार करें; उणर्वु अळिन्तिटल्-धैर्य खोना; उरुतियो-हितकारी है क्या । ४६९

हे प्रभु ! आपका अवतार-रहस्य जिन्हे मालूम था वे आपके पास (शरण माँगने) आये । उनके आगमन पर आपने वादा किया कि हम आपके त्रासक कपटी राक्षसों को उनकी सन्तति के साथ नष्ट करते हुए हरायेंगे और आपका कण्ट दूर करेंगे । विधिवशात् (उसी वचन के अनुसार) उनका कण्ट दूर हो गया । (या राक्षस ने अपराध कर दिया और आप उसको बिना किसी संकोच के दण्ड दे सकते हैं ।) अब उनका अन्त कीजिए । सुख से यश अर्जन करते हुए देवों को भी उनका स्वर्ग दिला दीजिए । उसके विपरीत इस तरह धैर्य खोना हितकारी हो सकता है क्या ? । ४९९

कादुहोर्इ नितक्कुलादु पिर्इर्क्कैव्वाइ कलक्कुमो
 वेदत्तैक्किड मादल्वीरदै यन्नूपेदमै यामरो
 पोदुपिर्पड लुण्डिदोर्पोरु ळन्ऱियिन्न पुणर्त्तियेल्
 यादुत्तक्किय लाददन्दै वरुन्दलैन्न वियम्बिन्नान् 500

अँनूतै-मेरे पिता (सदृश); कातु कौर्इम्-संहारक विजय; नितक्कु अलातु-आपको छोड़; पिर्इर्क्कु-अन्यों (राक्षसों) को; अँव्वाइ कलक्कुमो-कैसे मिलेगी; वेदत्तैक्कु इटम् आतल्-वेदना का शिकार होना; वीरतै अन्न-वीरता नहीं; पेतैमै आम् अरो-अज्ञता नहीं होगा क्या; पोतु पित्पटल्-समय का अनुकरण करना; इतु ओर् पोर्ळ् उण्डु-यह एक लोकरीति का विषय है; अन्नऱि-उसके अलावा; इन्न पुणर्त्तियेल्-आज ही प्रयत्न करें तो; उत्तक्कु इयलाततु-आपके लिए अशक्त; यातु-क्या है; वरुन्तल्-दुःख मत कीजिए; अँनूत-ऐसा; इयम्पित्तान्-(लक्ष्मण ने) कहा । ५००

मेरे पिता-तुल्य ! शत्रुसंहारजन्य विजय आपको छोड़ अन्य की हो कैसे सकेगी ? वेदनाग्रस्त होना वीरता नहीं है । यह अज्ञता होगा । हाँ ! समय का अनुसरण करना है, यह एक बात लोकमान्य है ! पर उसको न मानकर आज ही प्रयास करें तो आपके लिए असाध्य क्या है ? इसलिए मन मत मारिए । —लक्ष्मण यों बोले । ५००

शौर्इत्तम्बि युरैक्कुणर्न्दुयिर् शोर्वौडुङ्गिय तौल्लैयोन्
 इर्इविन्न लियक्कम्मैय्दिड वैहल्पप्पल वैहमेल्
 उर्इन्निन्न विन्नैक्कोडुम्बिणि यौन्ऱिन्मेळुड तौन्ऱाय्
 मर्इम्बैम्बिणि पर्ऱिनालैन् वन्दैदिर्न्दु मारिये 501

उयिर् चोर्वु-जीवन के दुर्बल होने से; औटुङ्किय-शरीर और मन में शिथिल जो हुए; तौल्लैयोन्-उन पुरुष-पुरातन के; तम्पि-छोटे भाई के; चोर्इ उरैक्कु-कहे वचनों से; उणर्न्तु-सुघ पाकर; इर्इ इन्तल्-त्यक्त-दुःख हो; इयक्कम् अँय्त्तिट-चलते-फिरते हुए; पप्पल-अनेक; वैक्ल्-दिन; एक-बीते; मेल्-वाद; उर्इ निन्न-आ लगे; विन्नै-कर्म-सम; कौटुम् पिणि-क्रूर रोग पर; मर्इम्बैम्बिणि औन्ऱ-और अन्य एक भयंकर रोग; उटन् उराय् पर्ऱिन्नाल् अँनूत-साथ आकर पकड़ गया हो, ऐसा; मारि-(द्वारा) वर्षा; अँतिर्न्तु वन्ततु-सामने आयी । ५०१

श्रीराम का शरीर निर्बल था और उनकी जान भी दुर्बल हो गयी थी । अब वे अपने छोटे भाई के वचन सुनकर थोड़ा आश्वस्त हुए और उनका मन साफ़ हुआ । दुःख-विमुक्त हुए और चलने-फिरने लगे । ऐसा अनेक दिन व्यतीत हुए । तब प्राप्त कर्मफल के समान, मानो एक रोग पर दूसरा आ लगा हो, ऐसा अपर-वर्षाकाल भी आ गया । (वर्षाऋतु के पूर्व अपर दोनों अंशों में वर्षा होती है । बीच में एक अंश ऐसा है जब पानी नहीं बरसता) । ५०१

निर्ऌन्दन	नैडुङ्गुळ	नैरुङ्गिन	तरङ्गम्
कुरैन्दन	करुङ्गुयिल्	कुळिर्न्दवुयर्	कुन्ऱम्
मरैन्दन	तडन्दिशै	वरुन्दिनर्	पिरिन्दार्
उरैन्दन	महन्ऱिलुड	नन्ऱिलुयि	रौन्ऱि 502

नैडुम् कुळन् निर्ऌन्तत-वड़े-वड़े तालाव भर गये; तरङ्गम्-(उन पर) तरंगें; नैरुङ्गित्त-अधिक उठी; करुङ्गुयिल्-काली कोयलें; कुरैन्तत-मौन हो रह्यीं; उयर् कुन्ऱम्-ऊँची गिरियाँ; कुळिर्न्त-शीतल हुई; तट तिचै-विशाल दिशाएँ; मरैन्तत-(वर्षा में) छिप गयीं; पिरिन्दार्-विछुड़े लोग; वरुन्तितर्-दुःखी हुए; मकन्ऱिल् पडवैकळ्-'महन्ऱिल्' नामक जल-पक्षी; अन्ऱिलुडन्-मादा पक्षियों के साथ; उयिर् ओन्ऱि-एकप्राण हो; मरैन्तत-छिप गये (संश्लिष्ट रहे) । ५०२

बारिश से सभी वड़े-वड़े तालाव भर गये । उन पर तरंगें लगातार उठीं । काले रंग की कोयलें मौन हुई । ऊँच पर्वत शीतल हुए । विशाल दिशाएँ (मेघों में) छिप गयी । वियोगी लोग दुःखी हुए । क्राँच पक्षी क्राँचियों के प्राणों में प्राण मिलाकर ऐसे सटे रहे कि वे अदृश्य हो गये । ५०२

पाशिल्लै	मडन्देयर्	पळिप्पिलह	लल्लुल्ल
तूचुत्तौड	रुशन्ननि	वैम्मैत्तौडर्	वुर्ऱे
वीशियदु	वाडैयैरि	वैन्दविरि	पुण्वीळ्
आशिलयिल्	वाळियेन	वाशैपुरि	वार्मेल् 503

आशै पुरिवार् मेल्-(विरह की अवस्था में) प्रेम से भरी; पळिप्पिल् अकल् अल्कुल्-निर्दोष विशाल कटिप्रदेश; पाचु इळै-सुन्दर आभरण (इनसे अलंकृत); मडन्तैयर् मेल्-स्त्रियों पर; तूचु-उनके वस्त्रों; तौटर् ऊचल्-झूलनेवाले झूलों पर; नत्ति तौटर्वुर्ऱु-खूब लगकर; वैन्त विरिपुण्-आग लगने से बने बड़े व्रण पर; वीळ्-लगनेवाले; आचु इल्-अन्नक; अयिल् वाळि अँत-तीक्ष्ण शर के समान; वाटै-उदीची (बरसाती) हवा ने; वैम्मै-गरमी; वीचियतु-दिलायी । ५०३

उदीची हवा अनिच्छा विशाल जघनप्रदेशों से और उत्तम आभरणों से शोभित वियोगिनी स्त्रियों के कपड़ों पर और उनके झूलों पर खूब लगी और आग से बने व्रण में लगनेवाले दोषहीन और तीक्ष्ण भाले के समान उन्हें अपार ताप दे रही थी । ५०३

वैलैनिरै	वुर्ऱन	वैयिर्कदिर्	वैदुप्पुम्
शीलमळि	वुर्ऱपुत्त	लुर्ऱुरुवु	शैप्पिन्
कालमरि	वुर्ऱुणर्दल्	कन्ऱलळ	वल्लाल्
मालैपह	लुर्ऱुर्देन	वोर्वरिदु	मादो 504

वैलै-समुद्र; निरैवु उर्ऱुत्त-भर गये; वैयिल् कतिर्-सूर्य की किरणें; वैदुप्पुम् चोलम्-गरमी देने का गुण; अळिवुर्ऱु-छोड़ गयी; पुनल् उर्ऱु-जल जिसमें से गिरकर;

उरुवु-निकलता है; चैप्पित्तु कन्तल-उस ताँबे के बने समयमापक पात्र के; अळवु-माप से; कालम् अरिवुर्कु-समय जानकर; उणरुतल् अल्लाल्-समझे विना; मालै पकल्-शाम, सवेरा; उड्डु-आया; अँत ओरुवु-यह जानना; अरितु-कठिन हो गया; (मातु ओ-पूरक ध्वनियाँ) । ५०४

समुद्र भर गये । सूर्य की किरणों का तापक गुण नष्ट हो गया । समय का ज्ञान उस यन्त्र से ही प्राप्त हो सका, जिसमें जल ऊपर के पात्र से नीचे के पात्र में रंध्रों द्वारा गिरता है । नहीं तो सन्ध्या, दिन आदि काल का बोध होना असाध्य हो गया । ५०४

नैर्क्किळिय	नैर्प्पोदि	निरम्बित	निरम्बाच्
चौर्क्किळिय	नर्क्किळिह	डोहैयवर्	तूय्मिन्
पर्क्किळि	मणिप्पडर्	तिरैप्परदर्	मुन्ऱिल्
पौर्क्किळि	विरित्तत	शितैप्पोडुळु	पुन्ऱै 505

तोर्कैयवर्-कलापी-सी स्त्रियों की; निरम्पा चौर्कु-अपूर्ण (अस्पष्ट) बोली (तोतली) के सामने; इळिय-हार जाने से; नल् किळिकळ-सुन्दर तोते; नैल् किळिय-धान चीरते हुए; नैल् पौति निरम्पित्त-धानों के ढेरों में छिप गये; तूय्- (ललनाओं के) शुद्ध; मिन् पड्कु-चमकदार दाँतों के सामने; इळि-हारनेवाले; मणि-मोती; पटर् तिरै-कैलनेवाली सागर-लहरों से; परतर् मुन्ऱिल्-(स्पृष्ट) धोवरों के आँगनों में; चित्तै पौतुळु-पुष्प-बहुल; पुन्ऱै -'पुन्ऱै' के तरह; पौत्त किळि-स्वर्ण-बँधे वस्त्र के समान; विरित्तत-लगे । ५०५

शुक जाकर धान की बालियों को तोड़ते हुए उनके बीच जा छिपे । (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) वे मयूरसंकाश स्त्रियों की सुमधुर, अस्पष्ट तोतली बोली के सामने हारकर जा छिपे । स्त्रियों के चमकीले दाँतों के सामने जो हारे वे मुक्तागण समुद्रतटप्रदेश के लोगों के आँगनों में, जहाँ समुद्र की तरंगें बहती थीं, ऐसे पड़े दीखे, मानो पुष्प-भरी शाखादार 'पुन्ऱै' के वृक्षों ने स्वर्णभरी गाँठों को खोलकर बिखेर दिया हो । ५०५

निडङ्गरु	कङ्गुल्पह	निन्ऱनिलै	नीङ्गा
अरङ्गरु	शिन्दमुत्ति	यन्दणरि	त्तलिप्
पिडङ्गरु	नैडुन्ऱुळि	पडप्पैयर्चिल्	कुन्ऱिन्
उडङ्गलिल्	विलङ्गलिल्	निन्ऱदुयर्	वैळम् 506

निडम् करु-रंग में काली; कङ्कुल्-रात्रि में (और); पकल्-दिन में; निन्ऱ निलै नीङ्का-अपनी स्थिति से न हटकर; अडम् करु चिन्तै-धर्म-चिन्तन-रत मन वाले हो; मुत्ति अन्तणरिन्-(कामादि को) तिरस्कृत करनेवाले मुनियों के समान और; पिडङ्कु-शोभायमान; अरु-अपूर्व; नैटु आलि तुळि पट-बड़ी-बड़ी जल की बूंदों के लगने से (पर भी); पयर्वु इल्-अचल (रहनेवाले); कुन्ऱिन्-पर्वत के समान; उयर् वैळम्-ऊँचे हाथी; उडङ्कल् इल्-विना सोये; विलङ्कल् इल्-हिले विना; निन्ऱ-खड़े रहे । ५०६

काली अँधेरी रात में और दिन में भी ऊँचे हाथी अनिद्र और अचल खड़े रहे। तब वे उन मुनियों के समान लगे जो अपने तप में अचल और धर्म पर स्थिरमन रहे, और जिन्होंने कामादि दोषों पर कोप दिखाया था (उनको हटा दिया था)। उनके ऊपर पानी की बूंदें गिर रही थीं। तब भी वे हाथी पर्वतों के समान अचल खड़े रहे। ५०६

शन्दिनडै	यिड्पडलै	वेदिहै	तडन्दो
इन्दियि	डहिरपुहै	नुळैन्दकुळि	रन्न्म
मन्दितुयि	लुड्डुमुळै	वन्कडु	वन्डङ्गत्
तिन्दियम	वित्ततनि	योहरि	निरुन्द 507

कुळिर् अन्तम्-शीत (से प्रभावित) हंस; चन्तिन्-चन्दन के (तर के); अट्टियिन् पटलै-पत्रों के छाजन के झोंपड़ों में रहनेवाली; वेतिकै-वेदियों पर; तटम् तोड्ड-हुर होमकुण्ड में; अन्ति इट्टु-सन्ध्याकालों में डाली गयी; अकिल्-अगर की लकड़ियों के; पुकै-धुएँ में; नुळैन्त-(ठण्ड से धचने) घुसे; मन्ति-वानरियाँ; मुळै-गुफाओं में; वल् कटुवन्-वलवान वानरो की; अड्कत्तु-गोद में; तुयितुड्ड-सोयीं; इन्तियम्-अवित्त-(वे वानर) इन्द्रियनिग्रही; तति योकरिन्-अनुपम योगियों के समान; इरुन्त-(निश्चल) रहे। ५०७

ठण्ड से हंस पीड़ित हुए तो वे चन्दन-पत्रों से आच्छादित ऋषियों के आश्रम के अन्दर गये। वहाँ सन्ध्याकालों में वेदियों पर होम-कुण्डों में अगर की लकड़ियाँ जलायी जाती थीं। उनके धुएँ में घुसकर हंस घाम का अनुभव करते थे। वानरियाँ पर्वतकन्दराओं में तगड़े वानरों की गोदी में सोयीं। वे वानर भी इन्द्रियनिग्रही और उत्कृष्ट योगियों के समान अचल बैठे रहे। ५०७

आशिल्शुनै	वालरुवि	यायिळैय	रैम्वाल्
वाशमण	नाडलिल	वान्तमणि	वन्गाल्
ऊशल्वडि	दानविद	णौण्मणिहळ्	विण्मेल्
वीशलिल	वानिर्नडु	मारितुळि	वीश 508

वानिन्-आकाश से; नैटुळि-लम्बी धारों की; मारि वीच-बरसात होती रही, इसलिए; आचु इल्-निर्दोष; चुत्तै-स्रोतें; वाल् अरुवि-(और) उत्तम सरिताएँ; आय् इळैयर्-चुने हुए आभरणों से भूषित स्त्रियों के; ऐम्पाल् वाचम्-केशों की सुगन्धि से; मणम् नाडल् इल-गन्ध देनेवाले नहीं; आत्त-वने; मणि वल् काल्-रत्नयुक्त दृढ़ खम्भों से बँधे; ऊवल्-झूले; वरितु आत्त-खाली रहे; इतण्-मचान; ओळ् मणिकळ्-जमकदार रत्न; विण् मेल्-आकाश में; वीचल् इल-फँकने (-वालिओं) से हीन हुए। ५०८

आकाश से लम्बी धारों में पानी बरस रहा था। इसलिए अनिच्छ स्रोतों और श्रेष्ठ सरिताओं के जल से उत्तम आभरणधारिणी अंगनाओं

के केश का सुबास नहीं आ रहा था (क्योंकि वे उनमें स्नान करने नहीं गयीं) । नवरत्नखचित खम्भों पर झूलनेवाले झूले खाली रहे । मचानों से रत्न आकाश में फेंके नहीं गये (क्योंकि मचान पर बैठकर कोई रखवाली नहीं करता था और पत्थर के स्थान पर रत्न नहीं फेंकता था) । ५०८

करुन्दहैय	तण्शिनैय	कैदमडल्	कादल्
तरुन्दहैय	पोडुहिळै	यिर्पुडै	तयङ्गप्
पेरुन्दहैय	पोर्चिरैयौ	डुक्कियिडे	पेरा
दिरुन्दकुरु	हिनपैडैपि	रिन्दवर्ह	ळैत्त 509

करु तर्कय—काले रंग की; तण् चित्तैय—शीतल डालों वाले; कैतै—केतकी के; मडल्—फूल; कातल् तरु तर्कय—चाह पैदा करने योग्य; पोतु—कलियाँ; किळैयिल्—बन्धुओं के समान; पुटै तयङ्क—चारों ओर आसपास खड़ी रहीं; कुरुकिन् पेटै—सारसी; पेरु तर्कय—बड़े और सुन्दर; पोन् चिरै—आकर्षक पंखों को; ओटुक्कि—समेटकर; इटै पेरातु—अपने स्थान से न हटकर; पिरिन्तवर्कळ् अत्त—वियोगिनियों की तरह; इरुन्त—विद्यमान रहीं । ५०९

सारसियाँ अपने पंखों को बन्द करके अपने-अपने स्थान पर वियोगिनियों की भाँति बैठी हुई थीं । उनके चारों ओर काले और शीतल पत्तों वाले केवड़े के झाड़ों के सुन्दर फूल और मनोहर कलियाँ रिश्तेदारों के समान (उन वियोगिनियों को ढाड़स बँधाती-सी) विद्यमान रहीं । ५०९

पदङ्गमुळ	वौत्तविशै	पल्त्रिमिरु	पन्त
विदङ्गळि	नडित्तिडु	विहर्पवळि	मेवुम्
मदङ्गियरै	यौत्तमयिल्	वैहुमर	मूलत्
तौडुङ्गिन	वुळैक्कुल	मळैक्कुल	मुळक्क 510

पतङ्कम्—विहंग; मुळवु औत्त—मृदंग के समान रहे; पल् त्रिमिरु—विविध भ्रमर; इच्चै—संगीत; पन्त—गाये; मयिल्—मोर; वितङ्कळिन् नडित्तिटु—विविध रूप से नृत्य किये जानेवाले; विकर्पम् वळि—अनेक नाचों में; मेवुम्—विदग्ध; मतङ्कियरै नर्तकियों; औत्त—के समान रहे; मळै कुलम्—मेघकुल के; उळक्क—भीत करने से; उळै कुलम्—हिरणसमूह; वैकुम् मरम्—नाच जहाँ हो रहे थे, उन पेड़ों के; मूलत्तु—तले; औत्तुङ्कित्त—आ ठहरे । ५१०

विविध जलपक्षी अपनी ध्वनि के कारण मृदंग के समान लगे । विविध भ्रमर संगीत (का-सा नाद) उठा रहे थे । मोर उन नर्तकियों के समान नाच रहे थे, जो अनेक तरह के तालों के लय में होनेवाले विविध नृत्यों में दक्ष थीं । मेघ-गर्जन से भयभीत हुए हिरण-समूह उन पेड़ों के तले जा ठहरे जहाँ ये नृत्य और गान आदि हो रहे थे । ५१०

विळक्कोळि	यहिर्पुहै	विळ्ळुङ्गमळि	मैन्गीम्
विळक्कुमिडै	मङ्गयर्	सैन्दर्हळु	मेइत्
तळत्तहु	मलर्त्तविशि	कन्दुनुहु	शन्दित्
तौळैत्तुयिल्	वन्दुत्तुयिल्	वुर्ऱुळिर्	तुम्बि 511

मैल् कौम्पु-पतली लता भी; इळक्कुम्-जिसकी उपमा बनने से विछुड़ जाती है; इटै-ऐसी कमरों की; मङ्गयर्म्-स्त्रियाँ और; सैन्तर्कळुम्-पुरुष; अकिल् पुक्कै-अगर का धुआँ; विळक्कु ओळि-दीपों के प्रकाश को; विळ्ळुङ्कु-जहाँ निगल रहा था; अमळि-उस शय्या पर; एइ-चढ़े; कुळिर् तुम्पि-शीतल भ्रमर; तळ तकु-त्यागने को मजदूर होकर; मलर् तविच्चु-फूलों की सेज; इकन्तु-त्यागकर; नकु चन्तित्-सुन्दर रहनेवाले चन्दनतरुओं के; तौळै-कोटरों में; तुयिल्-सोना; उवन्तु-चाहकर; तुयिल्वुर्ऱु- (आये और) सोये । ५११

पतली पुष्पलता से भी अधिक पतली कमर वाली दयिताएँ और उनके नायक पुरुष शय्याओं पर चढ़े । वहाँ अगर का धुआँ दीप के प्रकाश को निगल रहा था । शीतल ('तुम्पि' जाति के) भ्रमरों को पुष्पशय्या त्यागना पड़ गया । वे चन्दनतरुओं के कोटरों में चाह के साथ जाकर सोये । ५११

तामरै	मलर्त्तविशि	कन्दुदहै	यन्तम्
मामर	निरैत्तौहु	पौडुम्बरुळे	बहत्
तेमर	तडुक्किद	णिडैच्चैरि	कुरम्बैत्
तूमर	वैयिर्ऱिय	रौडन्वर्	तुयिल्वुर्ऱार् 512

तर्क अन्नम्-उत्तम हंस; तामरै मलर्-कमल-पुष्प का; तविच्चु इकन्तु-अपना आसन त्यागकर; मा मरन्त् निरै-बड़े वृक्षों की पंक्तियों से; तौङ्कु-मरे; पौतुम्पर् उळ्ळै-उपवनों में; वैक-ठहरते हैं और; तेम् मरन्त् अटुक्कु-सुगन्धपूर्ण लकड़ियाँ चुनकर बने; इतण् इटै चैरि-मचानों पर बने; कुरम्पै-छोटे-छोटे झोंपड़ों में; तू मरुवु-शुद्ध; वैयिर्ऱियरौटु-दाँतों वाली किरातिनियों के साथ; अन्पर्-उनके प्रेमी; तुयिल्वुर्ऱार्-सोये । ५१२

सुन्दर हंस विहंगों ने कमलशय्या त्याग दीं । वे जाकर ब्रागों में रहे जहाँ बड़े-बड़े वृक्ष पंक्तियों में खड़े थे । सुवासपूर्ण काष्ठखण्डों को चुनकर उन ढेरों पर झोंपड़े बनाये गये थे । उन झोंपड़ों में वनप्रदेश-वासी व्याध लोग अपनी पवित्र दाँतों वाली स्त्रियों के साथ सोये । ५१२

वळ्ळिपुडै	शुर्ऱियुयर्	शिर्ऱिलै	मरन्दो
रौळ्ळरुम	रिक्कुळ्ळी	डण्डर्ह	ळिन्दार्
कळ्ळरि	नौळित्तुळ	नैडुङ्गळु	दौडुङ्गि
मुळ्ळैयिर्	तिन्नूपशि	मूळ्हिड	विरुन्द 513

वळ्ळि पुटै चूर्ऱि-'वळ्ळि' की लताओं से, चारों ओर से घिरे रहनेवाले; उयर्-

अँचे उगे; चिरु इलै-छोटे-छोटे पत्तों के; मरम् तोड़-पेड़-पेड़ के तले; अँळ अरु-
अनिद्य; मरि कुरुळोटु-पालनयोग्य बाल-बकरियों के साथ; अण्टर्कळ्-गोप
लोग; इरुन्तार्-ठहरे रहे; कळ्ळरिन्-चोरों के समान; ओळित्तु उळल्-छिपे-
छिपे फिरनेवाले; नैट्टु कळ्ळुतु-बड़े-बड़े भूत भी; ओट्टुङ्कि-शिथिल होकर; मुळ्
अँयिरु-काँटे-सदृश अपने दाँतों को; तिनूङ्-खाते हुए; पचि मूळकिट-भूख में मग्न;
इरुन्त-रहे । ५१३

छोटे-छोटे पत्तों के साथ पेड़ खड़े थे । उनके चारों ओर 'वळ्ळी'
नाम की लताएँ फैली थीं । उनके तले पालनयोग्य बाल-बकरीयों की रक्षा
करते हुए गोपलोग रहे । चोरों के समान छिपे-छिपे घूमनेवाले भूत और
पिशाच कहीं जा नहीं सके । उनको भूख सता रही थी । अतः वे अपने
ही दाँतों को खाते हुए रह गये । ५१३

शरम्बयि	नैडुन्नुळि	निमिरन्दपुयल्	शार
उरम्बैयर्	विल्वन्करि	करन्दुड	वीडुङ्गा
वरम्बह	नैडुम्बिरशम्	वैहल्पल	वैहुम्
मुरम्बिनि	तिरम्बल	मुळैञ्जिडै	मुळैन्द 514

निमिरन्त पुयल्-ऊपर रहे मेघों से; चरम् पयिल्-शर-सम बरसनेवाली; नैट्टु
तुळि-लम्बी धारें; चार-पड़ों तो; उरम् पय्यर्वु इल्-साहस न छोकर; वल् करि-
बलवान हाथी भी; ओट्टुङ्का-सिकुड़कर; वरम्पु अकल्-बड़े-बड़े; नैट्टु पिरचम्-
अनेक छत्ते; पल वैकल्-अनेक दिनों से; वैकुम्-जहाँ रहे, उन; मुरम्पितिल्-टीलों
पर; निरम्पल-ठहर नहीं सके; करन्तु उड्-(बरसात से) बचकर रहने हेतु;
मुळैञ्चु इटै-गुफाओं में; मुळैन्त-घुसे । ५१४

उन्नत आकाश में ऊपर रहनेवाले मेघों से शरों के समान पानी की
बूँदें गिर रही थी और वे हाथियों पर जोर से लगीं । हाथी मन में दृढ़
और शरीर में सबल थे । तो भी वे उन उन्नत भू-भागों पर नहीं रह
सके, जहाँ बड़े-बड़े शहद के छत्ते अनेक दिनों से थे । वे छिपकर रहने के
विचार से चट्टानों के बीच गुफाओं में जा रहे । ५१४

इत्तहैय	मारियिडै	तुन्नियिरु	ळैय्द
मैत्तहु	विळिक्कुरु	नहैच्चनहन्	मान्मेल्
उयत्तवुणर्	विर्त्ति	नैरुप्पिडै	युयिर्प्पान्
वित्तह	तिलक्कुवन्नै	मुत्तिन्नन्	विळम्बुम् 515

इत्तकैय मारियिडै-ऐसी वर्षा में; इरळ् तुन्ति अँय्त-अन्धकार आ गया, तब;
वित्तकन्-विद्यासम्पन्न श्रीराम; मैत्तु विळि-अंजन-लगी आँखें; कुरु नकै-मन्दहास
(इनसे युवत); चत्तकन् मान् मेल्-जनक-दुहिता, हरिणी-सी जानकी पर; उयत्त-
रखे गये; उणर्विल्-(प्रेम के) भाव से; तित्तन्-रोज; नैरुप्पिडै उयिर्प्पान्-

आग-सा गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए; इलक्कुवन्त मुन्तितन्-लक्ष्मण को देखकर; विळम्पुम्-बोले । ५१५

वारिश ऐसी थी और सर्वत्र अन्धकार का राज्य हो गया । तब विद्वान् श्रीराम अंजनरंजित सुन्दर आँखों और मृदु-मन्दहास के साथ मनोरम लगनेवाली जनकमुता पर के प्रेम के कारण आग के समान गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए लक्ष्मण से (यों) बोले । ५१५

मळक्क	मिन्तैयिड्	उरक्कन्	वज्जन्तै
इळप्पेरुड्	गोड्गैयु	मैदिरवुड्	रिन्नलित्
उळैत्तन	ळुलैन्दुयि	रुलक्कु	मेलिनिप्
पिळैप्परि	दैनक्कुमि	दैन	पैर्रियो 516

कह मळै-काले मेघ-सम और; मिन् अयिड्-विजली-जैसे दाँत वाले; वज्जन्तै-कपट से; इळै पेरु कौड्कैयुम्-भूषणमण्डित पुण्ड स्तनों की सीताजी भी; इन्नलित् अतिरवुड्-कण्ट का सामना करके; उळैत्तनळ्-दुःखी होकर; उलैन्तु-मुरझाकर; उयिर् उलक्कुमेल्-प्राण छोड़ देंगे तो; अतक्कुम्-मेरे लिए भी; औन्नितुम् पिळैप्पु अरितु-किसी विध जीना दूबर हो जायगा; इतु अन्नै पैर्रियो-यह भी क्या भाग्य है । ५१६

काले मेघ के समान रंग के और विजली के समान दाँतों के रावण के कपट-कार्य से आभरणभूषिता पीनस्तनी सीता कण्ट का सामना करते हुए अधिक दुःख के कारण मर जाय, तो मेरे लिए भी जीवित रहने का कोई मार्ग न रहेगा । यह कैसी स्थिति है ? । ५१६

तूनिड्	चुटुशरन्	दूणि	तूङ्गिड
वानुड्	पिड्गिय	वयिरत्	तोळोडुम्
यानुड्	कडवदे	यिदुवु	मिन्निलै
वेत्तिड्	तुर्दौत्	तुळियुम्	वीहिलेन् 517

तू-पवित्र; निडम्-और अच्छे रंग वाले; चुटु चरम्-सन्तापक शर; तूणि-तूणीर में; तूङ्गिड-वेकार रहे; वान् उड्-आकाश छूते हुए; पिड्गिय-उन्नत; वयिरम्-मुदुड्; तोळोडुम्-कन्धों के साथ; यान्-मैं; इतुवुम् उड् कटवतु ए-यह (दुःख) भी भोगूँ क्या; इ निलै-यह स्थिति; वेल्-भाला; निरत्तु उड्त्तु औत्त-छाती पर लगा, ऐसी है; उळियुम्-तो भी; वीकिलै-नहीं मरा । ५१७

तूणीर मे पवित्र, मनोरम रंग वाले और सन्तापक शरों को वेकार पड़े रहने देते हुए अपने आकाश छूते हुए-से ऊँचे बढ़े कन्धों के साथ मैं इस स्थिति में आने अर्ह हूँ क्या ? यह स्थिति, भाला वक्ष मे घुस गया-जैसी है । तो भी (क्या आश्चर्य—) मैं मरा नहीं ! । ५१७

तैरिहणै	मलरुळार्	रिन्द	नैज्जोडुम्
अरियवन्	रुयरोडुम्	यानुम्	वैहुवेन्

अरियुमिन् मितिमणि विळक्कि निन्नूणैक्
कुरीइयित्तम् बैड्यौडुन् दुयिल्व कूट्टिनुळ् 518

कुरीइ इत्तम्-चिड़ियों का दल; अरियुम्-उज्ज्वल; मिन्मिति-जुगुनू रूपी;
मणि विळक्किन्-सुन्दर दीपों के प्रकाश में; इन् तुणै पेट्ट्यौडुम्-अच्छी साथिन, मादा
चिड़ियों के साथ; कूट्टिनुळ्-अपने घोंसलों में; तुयिल्व-सोते हैं; यात्तुम्-मैं तो;
तैरि कणै मलर्कळाल्-चुनकर फेंके गये (मन्मथ-) शरों से; तिरुन्त-विदीर्ण;
नैञ्चौटुम्-हृदय के साथ; अरिय-असह्य; वल्-कठोर; तुयरीटुम्-दुःख के साथ;
वैकुवेन्-रह रहा हूँ । ५१८

देखो ! चिड़ियाँ भी अपने घोंसलों में अपनी प्यारी मादा चिड़ियों
के साथ सुख से सोती हैं और जुगुनू के दीप उन घोंसलों में प्रकाश दे रहे
हैं । इधर मैं हूँ जो कामदेव के चुने हुए पुष्पशरों से विदीर्ण हृदय के असह्य
और कठोर दुःख के साथ रह रहा हूँ । ५१८

वान्ह मिन्नित्तु मळैमु लङ्गिनुम्, यात्तह मैलिह्वे नैयिडु रावैतक्
कान्हम् पुहुन्दियात् मुडित्त कारियम्, मेत्तदुङ् गोळ्न्नुह मिन्नियेन् वेण्डुमाल् 519

वान् अकम्-आकाश; मिन्नित्तुम्-चमकता तो भी; मळै-मेघ; मुळङ्कित्तुम्-
गरजते तो भी; नैयिडु अरा अँत्त-विषदन्त सर्प के समान; यात्तु-मैं; अकम्
मैलिकुवेन्-शिथिलमन पड़ जाता हूँ; यात्तु-मैं; कान् अकम्-जंगल में; पुकुन्नु-
प्रवेश करके; मुडित्त कारियम्-जो पूरा किया वह कार्य; मेल् नकुम्-(देखकर)
व्योमवासी हूँसंगे; कोळ्-नीचे के लोकवासी भी; नकुम्-हूँसंगे; इत्ति-अब; अँत्त
वेण्डुम्-और (डुर्भाग्य) क्या चाहिए । ५१९

जब आकाश में बिजली चमकती है या वज्र कड़कता है, तो विष-दाँत
सर्प के समान दहल उठता हूँ । यही जंगल में आकर मैंने जो किया वह
काम है । इसको देखकर ऊपर व्योमवासी हूँसंगे और नीचे भूमिवासी भी
हूँसंगे । आगे (मेरे लिए) और क्या चाहिए ? । ५१९

मडन्दिरुन् दुय्हलैन् मारि योदेनिन्, इडन्दुविण् शेर्वदु शरव मिप्पळि
पिडन्दुपिन् शेर्वलो पित्तन रत्तनु, तुडन्दुशैन् ऊरुवलो तुयरिन् वैहुवेन् 520

तुयरिन् वैकुवेन्-दुःखपीड़ित मैं; मडन्नु इरुन्नु-(सीता को) भूले रहकर;
उय्कलैन्-जीवित नहीं रहूँगा; मारि-वर्षा; ईनु अँत्तिन्-ऐसी होगी तो; इडन्नु-मरकर;
विण् शेर्वदु-स्वर्ग पहुँचना; चरतम्-ध्रुव है; इ पळि-यह अपमान; पिडन्नु-
दूसरा जन्म लेकर; पित्तु-बाद; तीर्वलो-दूर करूँगा क्या; पित्तु-बाद तब;
चैत्तु-जाकर; तुडन्नु-संन्यासी बनकर; अन्नत्तु-(अपमान से छूटने की) वह
दशा; ऊरुवलो-पाऊँ क्या । ५२०

दुःखमग्न मैं सीता को भूलकर जीवित रह नहीं सकता । यही
वर्षा है (वर्षा यही करती रहेगी), तो मेरा मरकर स्वर्ग जाना ध्रुव है !
फिर यह अपयश फिर एक जन्म लेकर (रावण को परास्त करके) दूर

किया जायेगा ? या दूसरे जन्म में गृहस्थी छोड़ जाकर, संन्यासी वनूँ और इस अपमान को दूर कर पाऊँ ? । ५२०

ईण्डुनिन्	ररक्कर्द	मिरक्कै	यामित्तिक्
काण्डलिर्	पड्पल	कालड्	गाण्डुमाल्
वेण्डुव	दन्डिदु	वीर	नोय्दंड
माण्डने	नेन्डु	माट्चिप्	पालदाम् 521

वीर-वीर; याम्-हम; ईण्डु निन्डु-यहाँ से; इत्ति-आगे; अरक्कर् तम् इक्कै-राक्षसों का स्थान; काण्डलिन्-ढूँढ़ पाना चाहें तो; पड्पल कालम्-अनेक दिन; काण्डम्-बीतेगे, देखेंगे; आल्-इसलिए; इतु-यह (खोज); वेण्डुवतु अन्डु-नहीं चाहिए; नोय्दंड-(वियोग-) रोग के कष्ट देने से; माण्डनेन् अन्डु-मर गया, यह; माट्चिप् पालतु आम्-श्रेयस्कर होगा । ५२१

वीर ! हम यहाँ रहकर राक्षस का वासस्थान ढूँढ़ पाना चाहें तो उसमें अनेक दिन लग जायेंगे । इसलिए यह खोजने का काम नहीं चाहिए । (वियोग-) रोग के कारण मर जाऊँ, यही श्लाघ्य है, यशदायी काम है । ५२१

शैप्पुरुक्	कत्तैयविम्	मारिच्	चीहरम्
वैप्पुरुप्	पुरन्जुड	वैन्डु	वीवदो
अप्पुरुक्	कौण्डवा	ण्डुङ्ग	णायिळै
तुप्पुरुक्	कुमुदवा	यमुदन्	दुयत्तयान् 522

अप्पु उरु-शर का रूप; कौण्ड-लेकर रहनेवाली; वाळ-प्रकाशमान; नैडुम् कण्-आयत आँखों वाली; आय् इळै-चुने हुए आभरणभूषिता सीता के; तुप्पु उरु-प्रवाल-सम; कुमुतम् वाय्-कुमुद-सम अधरों का; अमुतम्-अमृत; तुयत्त-जिसने पान किया, वह; यान्-मैं; इ मारि चीकरम्-इस वर्षा के सीकरों के; वैम्पु उरुक्कु अत्तैय-पिघले ताँवे के समान; वैप्पु उरुप्पु-गर्मी के साथ; उरम् चुट-हृदय को जलाते; वैन्तु-जलकर; वीवतो-मर जाऊँ क्या । ५२२

सीता की आँखें शर के रूप की हैं, आयत हैं और उज्ज्वल । उसके आभरण चुने हुए और मनोरम हैं । उसके अधर प्रवाल-सम लाल और कुमुद के समान सुन्दर हैं । उसके अधरों के रस का मैं पान कर चुका हूँ । ऐसा मैं पिघले ताँवे के समान गरमी के साथ गिरनेवाले इन वर्षा के सीकरों के मेरे हृदय को जलाते मन तपकर मर जाऊँ क्या ? । ५२२

नैय्यडै तीयैदिर् निरुवि निरुक्किवळ्, कैयडै यैन्डवच् चनहन् कट्टुरै
पौय्यडै याक्किय पौडियि लेनीडु, मैय्यडै यादित्ति विळिद तन्डरो 523

नैय् अटै-घृतवर्धित; ती अत्तिर्-(होम-) अग्नि के सामने; निरुवि-स्थित कर; निरुक्कु-आपके पास; इवळ्-यह सीता; कैयटै-धरोहर है; अन्डु-ऐसा

(जिन्होंने) कहा; अ चतकन्-उन जनक के; कट्टुरै-वचन को; पौय् अटै-असत्य-मिला; आक्किय-जिसने बनाया; पौडि इलेन्नोट्ट-उस अभाग मेरे पास; मैय्-सत्य; अटैयातु-नहीं ठहरेगा; इति-अब; विळितत् नन्ऱु-मरना अच्छा है । ५२३

राजा जनक ने घृत-लगी होमाग्नि के सामने सीता को स्थित कर मुझसे कहा कि यह आपका धरोहर है ! मैंने उनके उस विश्वास के वचन को झूठा बना दिया । मैं बड़ा अभाग हूँ । मेरे पास सत्य नहीं रह सकता । इसलिए मर जाना ही अच्छा है ! । ५२३

तेरुवाय्	नीयुळै	याहत्	तेरिनिन्
डाऱुवे	नानुळ	नाह	वाय्वळै
तोऱुवा	ळलळित्	तुन्ब	मारिन्ति
माऱुवार्	तुयर्क्कोरु	वरम्बुण्	डाहुमो 524

तेरुवाय्-सान्त्वना देनेवाले; नी उळै-तुम हो; आक-ऐसा होने पर, और; तेरि निन्ऱु-आश्वस्त हो; आऱुवेन्-दृढ़ रहनेवाला; नान् उळन् आक-मैं रहूँ, तब; आय् वळै-चुने हुए कंकण पहने रहनेवाली सीता; तोऱुवाळ् अल्लळ्-इधर आकर प्रकट होनेवाली नहीं; इ तुन्पम्-यह दुःख; इति-अब; आर् माऱुवार्-कौन दूर करेगा; तुयर्क्कु-इस दुःख का; ओर् वरम्पु-(एक) ठिकाना; उण्टाकुमो-होगा क्या । ५२४

भाई ! तुम मुझे सान्त्वना दो और मैं आश्वस्त होकर रहता रहूँ, तो क्या सीता स्वतः आकर प्रकट होगी ? नहीं । वह आनेवाली नहीं है । यह वियोगदुःख दूर करेगा कौन ? इस दुःख की कोई सीमा भी है ? । ५२४

विट्टपोर्	वाळिहळ्	विरिज्जन्	विण्णैयुम्
शुट्टपो	दिमैयवर्	मुदल	तौल्लैयोर्
पट्टपो	दुलहमु	मुयिरुम्	वऱ्ऱुक्
कट्टपो	दल्लदु	मयिलैक्	काण्डुमो 525

पोर्-युद्ध में; विट्ट-प्रेषित; वाळिकळ्-शर; विरिज्जन्-ब्रह्मा के; विण्णैयुम्-लोक को भी; चुट्ट पोतु-जला दे; इमैयवर् मुतल-सुर आदि; तौल्लैयोर् प्राचीन लोग; पट्ट पोतु-मर जायँ; उलकमुम् उयिरुम्-लोकों को और लोकवासियों को; पऱ्ऱु अऱ-निशान मिटाकर; चुट्ट पोतु-जला डालूँ; अल्लतु-नहीं तो; मयिलै काण्डुमो-मयूरनिभ सीता को देख सकूँगा क्या । ५२५

युद्ध हो, मैं शर छोड़ूँ और वे शर ब्रह्मा के सत्यलोक को जला दें; सुर आदि प्राचीन लोग मर जायँ; सभी लोक और लोकवासी नामोनिशान न छोड़कर मिट जायँ —विना ऐसा हुए मैं अपनी मोर-सी सुन्दरी सीता को देख पाऊँगा क्या ? । ५२५

दरुममैन् शीरुपीरु डळ्ळ वज्जियान्, तैरुमरुहिर्पुदु शैन्नर् देवरो
डोरुमैयिन् वन्दन् रेनु मुय्हलार्, उरुमैन् वीलिपडु मुरवि लोयैन्डान् 526

उरुम् अँत-अशनि के समान; ओलि पटुम् (ज्या-) स्वन देनेवाला; उरम्-
दूढ़; विलोय-धनु के धारक; यान्-मेरा; तैरुमरुकिर्पुतु-भ्रमित रहना; तरुमम्
अँन्ड ओरु पीरुळ्-धर्म नाम के उस चीज को; तळ्ळ-उपेक्षित करने से; अञ्चि-
डरकर; चैन्नर्-शत्रु; तेवरोटु-देवों के साथ; ओरुमैयिन्-एकत्र हो; वन्दन्
एतुम्-आयें तो भी; उय्कलार्-बचेंगे नहीं; अँन्डान्-(श्रीराम ने) कहा। ५२६

वज्रघोष-सी टंकार से युक्त धनु के धारण करनेवाले ! मैं अब
भ्रमित-सा चुप रहता हूँ, क्यों ? मालूम है ? धर्म नाम का जो मार्ग है,
उसका उल्लंघन करने से डरता हूँ। ये शत्रु देवों से मिलकर एकत्र हो
आयें तो भी वे बच नहीं पायेंगे। यह निश्चित है ! श्रीराम यों बोले। ५२६

इळवलु मुरैशैय्वा नैण्णु नाळिनि, उळवल कूदिरु मिरुदि युर्त्तुदाल्
कळवुशैय् दवन्तुर् काणुड् गालमी, दळविडन् दयर्वदै त्ताणै याळियाय् 527

इळवलुम्-लघुस्वामी ने भी; उरै चैय्वान्-उत्तर में कहा; आणै आळियाय्-
आज्ञाचक्रधर; नैण्णुम् नाळ्-निर्धारित (अवधि) दिन; इति उळ अल-अब नहीं
रहे; कूदिरुम्-शरत्काल भी; इरुति उर्त्तु-अन्त हो गया; कळवु चैय्तवन्-
(देवी की) चोरी जिसने की, उसका; उरै-वासस्थान; काणुम् कालम्-(दूढ़) लेने
का काल; इतु-यह (आ गया); अळवु इडन्तु-सीमा पारकर (अत्यधिक);
अयर्वतु अँन्-आयास करना क्यों। ५२७

लघुभ्राता ने भी उत्तर दिया कि आज्ञाचक्रधारी ! हमने जो अवधि
बनायी थी उसके दिन अब बाकी नहीं रहे। शरत्काल भी व्यतीत हो
गया। देवी सीता को जो चुरा ले गया है उसका वासस्थान ढूँढ़ पाने
का समय अभी आ गया है। अब आपका अपार दुःख करना क्यों ?। ५२७

तिरैशैयत्	तिण्गड	लमिळ्दव्	जैङ्गणान्
उरैशैयत्	तरिन्नुमत्	तीळिलु	वन्दिलन्
वरैमुदड्	कलप्पैहण्	माडु	नाट्टित्तन्
कुरैमलर्त्	तडक्कैयाड्	कडैन्दु	कौण्डत्तन् 528

तिरै चैय्-तरंगकारी; अ तिण् कटल्-वह सशक्त (क्षीर-) सागर; अमिळ्त्तम्-
अमृत को; चैम् कणान्-अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के; उरै चैय्-(दे दो) कहने पर;
तरिन्नुम्-दे सकता था, तो भी; अ तीळिल्-वह (आज्ञा चलाने का) काम;
उवन्तिलन्-न चाहकर; वरै मुतल्-पर्वत आदि; कलप्पैकळ्-उपकरण; माडु
नाट्टि-पार्श्व में स्थापित करके; तन्-अपने; कुरै-(आभरणों के कारण) ध्वनि
उठानेवाले; मलर्-कमल-सम; तड कैयाल्-विशाल हाथों से; कडैन्तु-मथकर
हो; कौण्डत्तन्-(अमृत) पाया (श्रीविष्णुदेव ने)। ५२८

तरंगकारी वह सबल क्षीरसागर अरुणाक्ष श्रीविष्णु के कहने मात्र से

अमृत निकाल दे सकता था । पर श्रीविष्णु ने वैसा प्राप्त करना नहीं चाहा । (वे काल, उपकरण, प्रयास आदि के महत्त्व को स्थापित करना चाहते थे, इसलिए) मन्दरपर्वत आदि उपकरण यथास्थान स्थापित करके उन्होंने आभरणों के कारण ध्वनि निकालनेवाले अपने कमल-सम हस्तों से समुद्र को मथा । तब जाके अमृत ग्रहण किया । ५२८

मत्तत्तिनि	तुलहैलाम्	वहुत्तु	वाय्पपैयुम्
नितैप्पित्त	न्यायिनु	नेमि	योडुवे
इनैप्पल	पडैक्कल	मेन्दि	यारैयुम्
वित्तैप्पैरु	जूळ्च्चियिन्	पौरुदु	वैल्लुमाल् 529

मत्तत्तिनिन्-मन (के संकल्प मात्र) से; उलकु अलाम्-सारे लोकों को; वहुत्तु-बनाकर; वाय् पपैयुम्-अपने मुख में डाल सकनेवाले; नितैप्पित्तन्-संकल्प-शक्ति के हों तो भी; नेमियोडु-चक्र के साथ; वेरु-अन्य; अँनै-कितने ही; पल नैदुम् पडैक्कलम्-अनेक हथियार; एन्ति-धारण करके; यारैयुम्-(दुष्कृत) सभी को; वित्तै-युद्धोचित; पौरुम् चूळ्च्चियिन्-गम्भीर उपायों द्वारा; पौरुदु-सामना करके; वैल्लुम्-जीतते हैं । ५२९

और भी वे विष्णुदेव सारे लोकों की सृष्टि करके फिर उन्हें निगल लेने का भी सामर्थ्य रखते हैं । यह उनके संकल्प मात्र से हो सकता है । तो भी वे अपना चक्रायुध और अन्य कितने ही हथियारों का प्रयोग करके, और अनेक युद्धतंत्रों को अपनाकर किसी भी शत्रु का संहार करते हैं । ५२९

कण्णुडै नुदलिनन् कणिच्चि वात्तवन्, विण्णिडैप् पुरञ्जुड वैहुण्ड मैलैनाळ्
अण्णिय जूळ्च्चियु मीट्टिक् कौण्डवुम्, अण्णले यौरुवरा लरैयर् पालवो 530

अण्णले-महिमायुक्त; कण् उटै नुतलितन्-भाल-नेत्र (शिवजी); कणिच्चि वात्तवन्-परशु शस्त्रधर; विण् इटै-आकाश में; पुरम् चुट-त्रिपुर जलाने हेतु; वैकुण्ड-कुपित हुए, तब; मैलै नाळ्-उस पहले के दिन; अण्णिय जूळ्च्चियुम्-जो सोचे वे उपाय; ईट्टि-संग्रह कर; कौण्डवुम्-जो लिये (वे उपकरण); यौरुवरा लरैयर् पालवो-किसी से वर्णित हो सकते हैं क्या । ५३०

महिमावान ! भालनेत्र परशुधर शिवजी की बात लीजिए । त्रिपुर-दहन के लिए उन्होंने संकल्प किया । उन्हें क्रोध आया । तब क्या-क्या उपाय किये, क्या-क्या हथियारों को जुटा लिया —यह सब वर्ण्य हो सकता है क्या ? । ५३०

आहुनर् यारैयुन् दुणैव राक्किप्पिन्, एहुरु नाळिडै यैय्दि यैण्णुव
शेहुरप् पन्मुरै तैरुट्टिक् चैय्दपिन्, वाहैयैन् उरैरुपुरुळ् वळुवर् पालवो 531

आहुनर् यारैयुम्-(सहायक) बननेवाले सभी को; दुणैव आक्कि-साथी बना लेकर; यैण्णुव-विचारणीय; चैकु उर-दृढ़ रूप से; पल मुरै तैरुट्टि-अनेक बार

स्पष्ट करके; पिन्-वाद; एकुड-जाने के; नाळ् इट्टे-दिन में; अँयति-जाकर; चँयत् पिन्-(कार्य) करने के उपरान्त; वाक्कै-विजय; अँन्ऱ और पोरुळ्-नामक एक विषय; वळ्ळवल् पालवो-चूक जा सकेगा क्या । ५३१

सहायकों को एकत्र कर लेना, विचारणीय बातों पर ध्यान देकर, बार-बार सोचना, बाद निश्चय पर आना, गमन के योग्य समय पर जाना, कार्यस्थल पर पहुँचना — इस रीति से काम होने पर विजय नामक चीज बच सकेगी क्या ? । ५३१

अडत्तुडै	तिडम्बिन्	राक्क	राड्डलान्
मडत्तुडै	नमक्कैन्	वलिक्कुम्	वन्मैयोर्
तिडत्तुडै	नन्नेरि	तिडम्ब	लुण्डैन्निन्
पुडत्तिनि	यार्तिडम्	बुहळुम्	वाहैयुम् 532

अडम् तुडै-धर्म-मार्ग; तिडम्पितर्-जो छोड़ गये, वे; अरक्कर्-राक्षस; आड्डलान्-(शरीर, वर और सेना के) बल से; मडम् तुडै-पाप-मार्ग; नमक्कु अँत-हमारा, ऐसा; वलिक्कुम्-सोचनेवाले; वन्मैयोर्-कठोरमन हैं; तिडम् तुडै-उत्तम रीति के; नन्नेरि-सन्मार्ग से; तिडम्पल् उण्डु-डिग जायेंगे; अँतिन्-तो; पुडत्तु इति-फिर अब; पुळ्ळुम् वाक्कैयुम्-कीर्ति और विजय; यार् तिडम्-किसके पास होगी । ५३२

धर्ममार्गातिक्रमी है राक्षस लोग । वे शरीर, वर और सेना के बल पर विश्वास रखते हैं और उनका मन पाप-मार्ग को अपना समझने की कठोरता रखता है ! वे उत्तम रीति के सन्मार्ग से हटकर व्यवहार करते हैं । फिर जीत और कीर्ति कहाँ जा सकेगी ? आपको छोड़कर उनकी हो सकती है क्या ? । ५३२

पैन्दौडिक् किडरुळै परवम् पैयवे, वन्दडुत् तुळदिति वस्तुत्त नीडुवाय्
अन्दणर्क् कामड मरक्कर्क् काहुमो, सुन्दरत् तनुवलाय् शौल्लु नीयैन्डान् 533

पैन्तौडिक्कु-कुन्दन-भूषण-अलङ्कृत सीताजी के; इटर् कळै-दुःख-निवारण का; परवम्-काल; पैयवे वन्तु-धीरे आकर; अडत्तु उळ्ळु-पास पहुँचा है; इति-अब; वस्तुत्तम्-दुःख; नीडुक्वाय्-छोड़ दें; अडम्-धर्म; अन्तणर्क्कु आम्-दयावानो का होगा; अरक्कर्क्कु-(नृशंस) राक्षसों का; आकुमो-होगा क्या; चुन्तरम्-सुन्दर; तनु वलाय्-धनु-समर्थ; नो चौल्लु-आप कहिए; अँन्डान्-(लक्ष्मण ने) कहा । ५३३

कुन्दन-निर्मित आभरण-भूषित सीतादेवी के कण्ठों को दूर करने का समय अब धीरे-धीरे आकर पास पहुँच गया है । अब आप दुःख छोड़ दें । धर्म-मार्ग दयावानों का है । नृशंस राक्षसों का हो सकता है क्या ? हे सुन्दर धनुर्विद्याविशारद ! आप ही कहें । —लक्ष्मण यों बोले । ५३३

उरुदियः(ह्)	देयैत	वुणरन्द	वूळियात्
इरुदियुण्	डेहौलिम्	मारिक्	कैन्बदोर्
तेरुतुय	रुळन्दनन्	रेयत्	तेय्वुशैन्
रुहदियै	यडैन्ददप्	परुव	माण्डुपोय् 534

अ. तु उरुतिये—(उनका कहा) वह हितकारी है; अँन—ऐसा; उणरन्त—जो समझे, वे; ऊळियात्—युगपति (जब); इ मारिक्कु—इस वर्षा का; इरुति उण्टु कौल्—अन्त होगा क्या; अँनपतु—ऐसा, सोचकर; ओर् तैरु तुयर्—एक गहन दुःख से; उळन्ततन्—पीड़ित होकर; तेय—कृश हुए (तब); अ परुवम्—वह वर्षाकाल; आण्टु—अपना शासन पूरा करके; पोय्—जाकर; तेय्वु चैन्नरु—क्षीण होता हुआ; अरुतिये अटैन्तु—अन्त को प्राप्त हुआ । ५३४

श्रीराम ने अपने छोटे भाई के वचन सुने और माना कि उनके वचन हितकारी हैं । वे यह सोचकर दुःखी थे कि क्या इस वर्षा का अन्त भी कहीं होगा और उसी चिन्ता में घुलकर कृश हो रहे थे । अब वह काल अपना अधिकार चलाने के बाद धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और अन्त को मिल गया । ५३४

मळ्हलि पेरुङ्गोडै मरुवि मण्णुळोर्, उळ्हिय पौरुळैला मुदवि यरुदोर्
दँळ्हलि लिरवलरक् कोव दित्तुमैयाल्, वैळ्हिय मान्दरिन् वैळुत्त मेहमे 535

मळकल् इल्—अक्षय; पेरु कौटे—बड़ी दानशीलता; मरुवि—जन्म से लेकर; मण् उळोर्—पृथ्वीलोकवासी; उळ्किय—जो चाहते थे; पौरुळ् अँलाम्—पदार्थ सब; उतवि—देकर; अरु पोतु—धनहीन हो जाने पर; अँळकल् इल्—अनुपेक्षणीय; इरवलरक्कु—याचकों को; ईवतु इत्तुमैयाल्—देने को न रहने के कारण; वैळ्किय—लाज का अनुभव करनेवाले; मान्तरिन्—(दानी) मनुष्यों के समान; मेकम्—मेघ; वैळुत्त—श्वेत बन गये । ५३५

तब मेघ श्वेत हो गये । वे उन दानशील उदार पुरुषों के समान श्वेत हो गये, जो जन्मजात अक्षय दानशीलता के कारण अपने सारे धन पृथ्वीवासी सभी याचकों को उनकी इच्छानुसार देने के बाद अब अनुपेक्षणीय याचक को देने के लिए कुछ न रहने के कारण लज्जायुक्त हो गये हों । ५३५

तीविनै नल्विनै यैन्नत् तेरियप्, पेय्विनैप् पौरुडनै यरिन्दु पेरुदोर्
आय्विनै मय्युणर् वणुह वाशुरु, मायैयिन् मायन्ददु मारिप् पेरिरुळ् 536

तीविनै—पापकृत्य; नल्विनै—पुण्यकार्य; अँन्न तेरि—क्या, यह सोच-विचारकर; पेय् विनै—उस पिशाचकृत्यप्रेरक; पौरुळ् ततै—धन को; अरिन्दु—पहचानकर; पेरुदु—प्राप्त; ओर्—अनुपम; आय्विनै—विवेकशील; मय् उणर्वु—तत्त्वदर्शन; अणुक—आ जाने पर; आचु उरु—दोषपूर्ण; मायैयिन्—माया (अविद्या) की तरह; मारि पेरु इरुळ्—मेघों के कारण उत्पन्न बड़ा अन्धकार; मायन्तु—मिट गया । ५३६

शरत्काल के आते ही मेघाच्छादन से बना रहा अन्धकार हट गया । वह वैसे हट ही गया, जैसे विवेकशील तत्त्वज्ञान के आने पर दोषपूर्ण मायाजन्य अविद्या हट जाती है । यह तत्त्वज्ञान कैसा ? पाप-पुण्य की विवेचना करके, शुद्धमन होने पर पापकारी धन का स्वभाव मालूम हो जाता है । उसके फलस्वरूप यह तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है ! । ५३६

मूळमर् मुड्डुर् मुश विन्दबोल, कोळमै कणमुहिल् कुमुर् लोवित्त
नीळडु कणैयत्त तुळियु नीड्गित्त, वाळुर् गुड्डेन मडैन्द मिन्नैलाम् 537

मूळ अमर्-छिड़ा हुआ युद्ध; मुड्डु उड-समाप्त होने पर; मुश्चु-भेरियाँ;
अविन्त पोल्-बन्द हुई जैसे; कोळ अमै-सबल; कणम् मुकिल्-मेघगण; कुमुडल्
ओवित्त-गर्जन-रहित हो गये; नीळ-लम्बे; अट्टु-संहारक; कण अन्त-शरी के
समान; तुळियुम्-बूँदें भी; नीड्कित्त-गिरने से रह गयीं; वाळु-तलवारें; उड्डे-
म्यान में; गुड्डे अन्त-चली गयीं, जैसे; मिन् अलाम्-सभी बिजलियाँ; मडैन्त-
छिप गयीं । ५३७

परस्पर वैर के कारण युद्ध छिड़ जाता है । जब युद्ध बन्द हो जाता है तब भेरियो का बजना भी बन्द हो जाता है और भेरियाँ चुप्पी साध लेती हैं न ! वैसे ही सशक्त मेघ गर्जनहीन हो गये । बूँदें, जो लम्बे संहारक शरी के समान गिरती थीं, रुक गयीं । तलवारें म्यानों में छिप जाती हैं न ! वैसे ही बिजलियाँ भी अदृश्य हो गयी । ५३७

तडुत्तदा ण्डुन्दडड् गिरिह डाळ्वरै, अडुत्तनी रौळिन्दत्त वरुवि तूङ्गित्त
अडुत्तन् लुत्तरि यत्तौ डैय्दिनिन्, रुडुत्तवा निडुत्तुहि लौळिन्द पोन्डवे 538

तडुत्त-मार्गरोधक; ताळु-पाद-प्रवेश वाले; नैटु तट फिरिकळ-ऊँचे और
चौड़े पर्वतों की; ताळ्वरै-तराइयों में; अडुत्त-रहा; नीर्-जल; रौळिन्त-
सूख गये; अरुवि-सरिताएँ; तूङ्किन-वहीं; अडुत्त-धृत; नूल् उत्तरियत्तौट्ट-
सूती उत्तरीय के साथ; अय्ति निन्डु-युक्त रहकर; उडुत्त-पहने हुए; वाल्
निडम् तुकिल्-श्वेत रंग के (अधो-)वस्त्र से; रौळिन्त-रहित हुए; पोन्ड-जैसे
रहे । ५३८

उन्नत और विशाल पर्वतों की तराइयों में जमा रहा जल बह गया । पर ऊपर से बहनेवाली सरिताओं में जल था । तब ऐसा लगता था मानो पर्वत के श्वेत अधोवस्त्र हट गये और वे श्वेत कपास के उत्तरीयों के साथ खड़े थे । ५३८

मेहमा मलैहळिन् पुडुत्तु वीदलान्, माहमा रियावैयुम् वारि यड्डत्त
आहैयाड् उहळिन् दळिवि नन्बोरुळ, पोहवा रौळुहलान् शौल्वम् वीन्डवे 539

माकम् याडु-ऊपर बहनेवाली नदियाँ; यावैयुम्-सभी; मेकम्-मेघों के;
मा मलैकळिन् पुडुत्तु-बड़े पर्वतों के ऊपर से; वीतलाल्-हट जाने से; वारि अड्डत्त-

जलहीन हो गयीं; आकैयाल्-इसलिए; तकवु इळन्तु-योग्यता खोकर; अळिवु इल्-अमोघ; नल् पौरुळ्-शुभकारी (पुण्य-) तत्त्व; पोक-रिक्त हो जाने से; आरु ओळुकलान्-सन्मार्ग पर न चलनेवाले का; चैल्वम्-धन (जो मिट जायगा); पोन्ऱ-उसके समान थीं । ५३६

मेघ छूट गये और पर्वत के ऊपरी भाग में बहनेवाली नदियाँ जलहीन हो रहीं । कोई आदमी कुमार्गगामी है, तब योग्य और अमोघ स्वभाव का पुण्य क्षीण हो जाता है और फलस्वरूप धन भी चला जाता है । उन नदियों का जल भी उसी तरह शून्य हो गया । ५३९

कडन्दिर्न्	देंळुहलि	इत्तैय	कार्मुहिल्
इडन्दुर्न्	देहलिर्	पौलिन्द	दिन्दुवुम्
नडन्दिर्	नविल्वुरु	नङ्गै	मार्मुहम्
पडन्दिर्न्	दुरुवलिर्	पौलियुम्	पान्मैपोल् 540

कटम्-मदनीर; तिडन्तु अँळु-अत्यधिक खुलकर जिन पर बहता है; कळिड अत्तैय-उन हाथियों के समान; कार् मुकिल्-काले मेघ; इटम् तुडन्तु-आकाश स्थल छोड़कर; एकलिन्-चले (जाने से); इन्तुवुम्-इन्दु भी; पटम् तिडन्तु-पट खोलते हुए; उरुवलिन्-हटाने पर; तिडम् नटन्-कलापूर्ण नृत्य; नविल्वुरु-करनेवाली; नङ्कैमार्-नर्तकी स्त्रियों के; मुकम्-मुखों के; पौलियुम् पान्मै पोल्-शोभने के प्रकार के समान; पौलिन्तु-शोभा । ५४०

काले मेघ अत्यधिक मद बहानेवाले गजों के समान थे । वे आकाश को छोड़कर चले गये । तब इन्दु उदित हुआ । पर्दों के खुलने पर चतुर नर्तकियों का मनोरम मुख जैसे शोभायमान दिखता है, वैसे ही वह इन्दु शोभायमान लगा । ५४०

पाशिळै मडन्दैयर् प्पहट्टु वैम्मुलै, पूशिय शन्दनम् पुळुहु कुङ्गुमम्
मूशित्त मुयङ्गुशे रुलर मौण्डुड, वीशिय नरुम्बोडि विण्डु वाडैये 541

पाचिळै मटन्तैयर्-कुन्दन के बने आभरणों से भूषित स्त्रियों के; पकट्टु वैम् मुलै-(हाथी के) कुम्भों-सम आकर्षक स्तनों पर; पूशिय-चर्चित; चन्तत्तम्-चन्दन का लेप और; पुळुकु-कस्तूरी का लेप; कुङ्कुमम्-केसर का लेप; मूचित्त-इनके मिश्रण से; मुयङ्कु चेङ्ग-प्रणयोत्तेजन के लिए (वक्ष व स्तनों पर अंकित) चित्र का लेप; उलर-सुखाते हुए; विण्डु वाटै-पर्वतीय पवन; नरुम् पौटि-सुगन्धित मकरन्द; मौण्डु-लेकर; उड-खूब; वीशिय-बहा । ५४१

अब पर्वतों पर से बहनेवाली जाड़े की हवा सुवासित मकरन्दकण को ले आकर स्त्रियों पर लीप देती थी । अतः उनके स्तनों और वक्षों पर जो चन्दन, कुंकुम और कस्तूरी का लेप लगा हुआ था, वह सूख गया । ५४१

मन्तवन्	इलैमहन्	वरुत्त	मारुवान्
नन्नेडुम्	बरुवम्बन्	दणहिर्	राहलाल्

पौनर्त्तिनै
अन्नमुन्

नाडिय
दिशैदिशै

पोटु
यहन्ऱ

मैन्वपोल्
विण्णिन्वाय् 542

मन्तवन्-चक्रवर्ती (दशरथ) के; तल्ल मकन्-ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के; वरुत्तम् मारुवान्-दुःख को दूर करने के लिए; नल् नैट्-अच्छा और लम्बा; परवम्-काल; वन्तु अणुकिरु-आकर नियराया; आकलाल्-इसलिए; पौनर्त्तिनै-देवी को; नाडिय-खोजते; पोतुम्-हम जायें; अन्नप पोल्-कहते जंते; अन्नमुम्-हंस भी; विण्णिन् वाय्-आकाश में; तिचै तिचै-दिशा-दिशा में; अकन्ऱ-दूर-दूर (उड़ते) गये । ५४२

हंस पंक्तियाँ बाँधे आकाश में दिशा-दिशा में उड़ रहे थे । 'चक्रवर्ती दशरथ के श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम का दुःख दूर करने का दीर्घ रूप से अच्छा रहनेवाला काल आ गया है । अब हम भी जाकर स्वर्णसुन्दरी सीता को खोजें' —हंस शायद यही सोचकर उड़ रहे थे ! । ५४२

तज्जिऱ यौडुङ्गिन तळुवु पित्तनलित्, नैज्जुऱ मम्मरुम् निनैप्पु नोडिन
मज्जुऱ नैडुमळै पिरिद लान्प्रयिल्, अज्जिन मिदिलैनाट् टन्न मैन्तवे 543

मयिल्-मोर; मज्जु उऊ-मेघों की; नैट् मळै-अधिक वर्षा; पिरितलान्-रुक गयी, इसलिए; तम् चिऱ औडुङ्किन-वन्द किये हुए पंख वाले हो गये; तळुवुम् इत्तनलित्-लगे दुःख के कारण; नैज्जु उऊ-मन में उठे; मम्मरुम्-भ्रम; निनैप्पुम्-सोच; नोडित्त-बढ़े; मितिलै नाट्ऱ अन्नम् अन्न-मिथिला की हंसिनी (सीता) के समान; अज्जिन-क्षीण-आनन्द हुए । ५४३

मेघ लुप्त हो गये और वर्षा रुक गयी । इसलिए मोरों ने अपने पंखों को समेट लिया । उनके मन में दुःख भर गया और भ्रम तथा धूमिल विचारों ने घर कर लिया । मिथिला में जनित, मोर (समान सीताजी) के समान वे सन्तोषहीन हो रहे । ५४३

वज्जनैत्
नैज्जनैत्
पज्जनैत्
अज्जनक्

तीविनै
तैळिन्दनीर्
चिवक्कुम्
कण्णैन्

मरुन्द
निरन्दु
पादप्
पिऱळुन्द

मादवर्
तोन्ऱव
पेदैयर्
वाडन्मीन् 544

वज्जनै तीविनै-वंचक कार्योद्दीपक पाप-कर्म; मरुन्त मातवर्-जिन्हें मालूम ही नहीं था, उन महान तपस्वियों के; नैज्जु अन्न-मन के समान; निरन्तु तोन्ऱव-फंला पड़ा था; तैळिन्त नीर्-स्वच्छ जल; आटल् मीन्-(उसमें) क्रीड़ा करनेवाली मछलियाँ; पज्जु अन्न-लाल रूई कहने भर से; चिवक्कुम्-लाल होनेवाले; मैल् पातम्-कोमल चरणों की; पेदैयर्-स्त्रियों की; अज्जन्तम् कण् अन्न-अंजन-लगी आँखों के समान; पिऱळुन्त-चलित थीं । ५४४

सब जगह जल वंचना और पाप न जाननेवाले श्रेष्ठ तपोधनों के मन के समान शुद्ध स्वच्छ हो गया । उसमें मछलियाँ उन स्त्रियों की आँखों

के समान चलित थीं, जिनके पैर महावर का नाम लेते ही लाल हो जाते हैं (लाक्षारस लगाने की आवश्यकता ही नहीं होती थी) । ५४४

ऊडिय मडन्दैयर् वदत्त मीत्तन, ताडौरु मलरन्दत्त मुदिन्द तामरै
कूडितर् तुवरिदळ्क् कोलङ् गौण्डत्त, शेडुरु नरुमुहै विरिन्द शङ्गिडे 545

ताळ् तौरुम्-नाल-नाल पर; मलरन्दत्त-जो खिले थे; मुतिरन्द-वर्धित;
तामरै-कमल के फूल; ऊडिय-रूठी हुई; मडन्दैयर्-स्त्रियों के; वदत्तम् मीत्तन-
मुखों के समान थे; चेदु उरु-ऊँची उगी; नरु मुहै विरिन्द-सुवासित कलियाँ
जिन पर खिली थीं; चैम् किटै-वे लाल "किटै" (खुखरी?) नाम की जल-लताएँ;
कूडितर्-प्रिय के साथ मिली हुई स्त्रियों के; तुवर् इतळ्-लाल अधरों की; कोलम्
गौण्डत्त-सुन्दरता से युक्त हो गयीं । ५४५

नाल-नाल पर कमल पूर्णता को प्राप्त होकर रूठी हुई स्त्रियों के
मुखों के समान एक ओर झुक गये । लाल 'किटै' (खुखरी?) नाम की
लता, जिसमें सुवासित कलियाँ ऊपर खिल आयी थी, स्त्रियों के लाल अधरों
का-सा रूप दिखाने लगी । ५४५

कल्विडिर्	रिहळ्हणक्	कायर्	कम्बलै
पल्विदच्	चिराअरैन्प्	पहर्व	वल्लरि
शौल्लिडत्	तल्लदौन्	इरैत्तल्	शैय्हला
नल्लरि	वाळरि	नविन्द	नावैलाम् 546

कल्विडिल् तिकळ्-विद्या के कारण प्रसिद्ध; कणक्कायर्-पाठशाला के अध्यापक
के अधीन; कम्पलै-उच्च शोर के साथ सीखनेवाले; पल्वितच् चिरार् अरै-अनेक
तरह के बालकों के समान; पकर्व-जो बोल (टेर) लगा रहे थे; वल् अरि यावुम्-
जोरदार मेंढक सब; चैल् इटत्तु अल्लतु-जहाँ बात मानी जाय, उस स्थान को छोड़कर
अन्यत्र; औन्नु-कोई बात; उरैत्तल् चैय्या-न कहनेवाले; नल् अरिवाळरिन्-
चतुर विद्वानों के समान; ना अविन्द-मौन (-जिह्वा) हो गये । ५४६

पहले मेंढक अध्यापक के सामने उच्च स्वर में पाठ दुहरानेवाले
बटुओं के समान टेर लगा रहे थे । अब वे उन विद्वानों के समान मौन-
जिह्वा हो गये, जो अनुपयुक्त तथा सम्मानहीन स्थलों में कोई बात नहीं
करते । ५४६

शैरिपुनर्	पून्नुहि	रिरैक्कै	याइरैरैत्
तुरुदहक्	कान्मडुत्	तोडि	योदनीर्
अैरुवलिक्	कणवन्नै	यैय्दि	याइलाम्
मुरुवलिक्	किन्ऱत्त	पोन्ऱ	मुत्तैलाम् 547

मुत्तु अैलाम्-मोती सभी; चैरि पुत्तल्-घने जल रूपी; पू तुकिल्-सुन्दर
वस्त्रधारिणी; याइ अैलाम्-सभी नदियाँ; तिरै कैयाल्-तरंग रूपी हाथों से;

तिरैत्तु-समेटकर; उरु तक-कसकर; काल् मटुत्तु-पैरो से लपेटकर; ओटि-
दौडकर; ओतम् नीर्-सरितापति रूनी; अँळुवलि-अतिवली; कणवत्तै अँयति-
पति को मिलकर; मुळवलिक्किन्नुत्त-हँसती हों; पोन्नु-ऐसे लगे । ५४७

जल का स्वच्छ वस्त्र पहने हुए नदियाँ जो वह रही थी, वे लहरों रूपी हाथों को उठाते हुए, नालों से होकर, सवेग वही और सरितापति, अपने पति का आलिंगन करके बहुत आनन्दित हुई। उनकी हँसी के समान मोती चमकते थे। (काल में श्लेष है— पैर या चरण और नाला। स्त्रियाँ पैरों पर चलती हैं और नदियाँ नालों के रूप में बहती हैं।) । ५४७

शौन्तिर्	केळवियिर्	डौडर्न्द	मान्दरिन्
इन्तिर्	पशलेयुर्	डिर्न्द	मादरिन्
तन्तिर्	वयप्पय	नीङ्गित्	तळळरुम्
पौन्तिर्	वौरुन्दिन	पूहत्	तारैलाम् 548

पूकम् ताङ्ग-पूग-गुच्छे; अँलाम्-सभी; चोन् निर्-बहुप्रशंसित; केळवियिन्-
शास्त्र-श्रवण के लिए; तौडर्न्द-यात्रा पर निकले; मान्तरिन्-पुरुषों (के वियोग)
से; इन् तिर् पचले-मनोरम हरे रंग को; उर्डिस्सुत्त-प्राप्त; मातरिन्-स्त्रियों
के समान; तम् निर्-अपना हरा रंग; पयप्पय-धीरे-धीरे; नीङ्कि-खोकर;
तळळ अरुम्-अनिष्ट; पौन्तिर्-स्वर्ण के-से रंग से; पौरुन्ति-युक्त हुए । ५४८

पूग के गुच्छे अपना (हरा) रंग खोकर स्वर्ण-वर्ण हो गये। जब प्रेमी श्रेष्ठ गुरु से श्रवणज्ञानार्जन हेतु चला जाता है, तब उसकी वियोगिनी के शरीर में एक तरह का हरा रंग फैल जाता है। पूग के गुच्छों का रंग पहले वैसा (हरा) था। पीछे वह रंग बदल जाता है। ५४८

पयिन्डुडल्	कुळिर्प्पवुम्	वळन	नीत्तवण्
इयन्डिल	विळवैयि	लैळुदु	मैय्यत्त
वयिन्डौम्	वयिन्डौरु	मडित्त	वायत्त
तुयिन्	विडङ्गर्मात्	तडङ्ग	डोरुमे 549

इडङ्कर् मा-मर प्राणी; पयिन्डु- (जल में अधिक काल से) पड़े रहने के
कारण; उटल् कुळिर्प्पवुम्-शरीर के ठण्डा होने से; अवण् इयन्डिल-गहरे स्थानों
में न रहकर; पळत्तम् नीत्तु-तडागों को छोड़कर; इळ वैयिल्-वालसूर्य-किरणों
से; अँळुत्तुम् मैय्यत्त-लिप्त-शरीर होकर; तडङ्कळ् तौळुम्-तडागों के तटों पर;
वयिन् तौळुम् वयिन् तौळुम्-स्थान-स्थान पर; मडित्त वायत्त-मुख वन्द कर; तुयिन्-
सोये । ५४९

मगरों का शरीर अधिक गहरे जल में बहुत दिन पड़े रहने से ठण्डा हो गया। इसलिए वे तीरों पर यत्न-तत्न मुख वन्द किये सोते हुए दिखाई दिये और उनके शरीरों पर धूप पड़ रही थी। ५४९

कौञ्जुरुङ् गिळिनेडुङ् गुदलै कूडित्त, अञ्जिरै यरूपद वळह वोळिय
अञ्जलिल कुळैयन विडैनु डङ्गुव, वञ्जिहळ् पौलिनन्दन महळिर् मानवे 550

वञ्चिकळ्-‘वञ्जि’ नाम की लताएँ; कौञ्चुरुम् किळि-तुतलानेवाले शुकों के;
‘नेटु कुतलै-दीर्घ बोलों से; कूटित्त-युक्त होकर; अम् चिरै-मनोरम पंखों के; अरु
पतम् अळकम्-पटपटों के रूप में केश की; ओळिय-पंक्तियों के साथ रहतीं;
अञ्चल् इल्-अक्षय; कुळैयन-पत्नों सहित (आभरणों सहित); इटै नुटङ्कुव-मध्य
में लचकती; मकळिर् मान-स्त्रियों के समान; पौलिनन्दन-शोभी। ५५०

(‘वञ्जी’ लताओं और स्त्रियों में श्लेष है।) ‘वञ्जी’ लताओं पर शुक
बैठकर मधुर बोली में बोल रहे थे। भ्रमर पंक्तियों में लगे बैठे थे। वे
ही केश थे। लता पर बहुत पत्ते थे और स्त्रियों पर बहुत आभरण पाये
जाते हैं। (‘कुळै’ के ‘छोटे पत्ते’ और ‘आभरण’ दोनों अर्थ हैं।)
लताएँ लचकीली थीं। स्त्रियों की कमरें लचकीली होती हैं। (अतः)
वे लताएँ स्त्रियों के समान थीं। ५५०

मळैपडप्	पौदुळिय	मरुदत्	तामरै
तळैपडप्	पेरिलैप्	पुरैयिड्	इङ्गुव
विळैपडप्	पैडैयोडु	मैळळ	नळ्ळिहळ्
पुळैयडैत्	तौडुङ्गिन	पौच्चं	माक्कळ्बोल् 551

मळै पट-बारिश के कारण; पौतुळिय-पनपे; मरुदम् तामरै-‘मरुद’ प्रदेश के
कमल की लताएँ; तळै पट-पत्नों से युक्त हुई; पेरु इलैयिल्-उनके बड़े पत्तों के;
पुरैयिल्-मध्य; तङ्गुव-जो ठहरते हैं; नळ्ळिकळ्-केकड़े; विळै पट-प्यार के
होने से; पैडैयोडम्-केकड़ियों के साथ; पौच्चं माक्कळ् पोल्-अपराधी लोगों के
समान; पुळै-अपनी बिलों को; मैळळ अटैत्तु-(मिट्टी से) चुपके से बन्द करके;
औटुङ्कित्त-छिपे रहे। ५५१

पानी खूब बरसा था। ‘मरुदम्’ (खेत और बागों के) प्रदेश में
कमल की लताओं पर पत्ते घने रूप से उग आये थे। केकड़े उनमें ठहरे
थे। अब वे अपनी प्यारी केकड़ियों के साथ बाहर निकल आये और
मिट्टी में बिल बनाकर उसमें घुस गये। और उसका मुख मिट्टी से बन्द
करके वे अपराधी लोगों के समान छिपे रहने लगे। ५५१

अळित्तन	मुत्तित्तन्	दोऽप	वानत्तम्
वैळित्तैदिर	विळिक्कवुम्	वैळ्हि	मेन्मैयाल्
ओळित्तन	वामेन	वौडुङ्गु	हण्णन
कुळित्तन	मण्णिडैक्	कून्	नन्दैलाम् 552

कूत्तल् नन्तु अलाम्-कूबड़ वाले घोड़े सभी; अळित्तन-अपने जाये; मुत्तु
इतम्-मोतियों की राशि के; तोऽप-हार जाने से; आत्तम् अतिर-(हरानेवाली
स्त्रियों के) आननों के सामने; वैळित्तु-प्रकट होकर; विळिक्कवुम्-दृष्टि पड़ने से;

वैष्कि-लजाकर; मेन्मैयाल् ओळित्तत्त आम्-मानो वडप्पन के कारण छिपे; अँत्त-ऐसा कहने योग्य रीति से; ओट्टुङ्कु कण्णन-उन्मीलित आँखों के साथ; मण्णिट्टै-पंक के अन्दर; कुळित्तत्त-मग्न हुए । ५५२

घोघे भी मिट्टी के अन्दर आँखे मूँदकर मग्न हो छिपे रहे । उन्होंने मोती दिये थे । वे मोती स्त्रियों के दाँतों से होड़ लगा नहीं सके और हार गये । इसलिए घोघो को अपमान लगा । वे उन स्त्रियों के सामने प्रकट रूप से आना नहीं चाहते । यह किसी को मालूम नहीं था । सभी समझने लगे कि ये घोघे अपने वडप्पन के कारण स्वयं ही मिट्टी के अन्दर चले गये हैं । ५५२

10. किट्किन्दैप् पडलम् (किष्किन्धा पटल)

अन्न काल महलु मळविनिल्, मुन्न वीर निळवल मुन्नवित्तोय्
शौन्न वैल्लैयि नूङ्गिनुम् तूङ्गित्तन्, मन्तन् वन्दिल नैन्शैय्द वाऱरो 553

अन्न कालम्-वैसा काल; अकलुम् अळवितिल्-जब बीता तब; मुन् अव वीरन्-अग्रगण्य वीर श्रीराम; इळवल (नोककि)-अपने छोटे भाई को देखकर; मुन्नवित्तोय्-वली; शौन्न वैल्लैयिन्-कथित अवधि के; नूङ्गित्तुम्-बीत जाने पर भी; मन्तन्-राजा (सुग्रीव); तूङ्गित्तन्-देर करता है; वन्दिलन्-नहीं आया; चैय्द आऱु-(वचन-पालन) करने का हंग भी; अँन्-कैसा । ५५३

जब वह (वर्षा) काल बीता तब वीरों में अग्रगण्य वीर श्रीराम लघुभ्राता लक्ष्मण से बोले । वली वीर ! हमने जो अवधि निर्धारित की थी, वह बीत गयी । उसके बाद भी राजा सुग्रीव देर करता है । नहीं आया है । उसका वचनपालनक्रम भी कैसा है, देखो । ५५३

पैऱल रुन्दिरुप् पैऱुद विप्पैरुम्, तिरुनि नैन्दिलन् शीर्मैयिर् शीर्न्दत्तन्
अऱम् इन्दन नन्बु किडक्कनम्, मऱन रिन्दिलन् वाळ्विन् मयङ्गिनान् 554

पैऱल् अऱु-दुष्प्राप्य; तिरु पैऱु-(राज्य-) धन पाकर; उतवि-सहायता का; पैरुम् तिरुल्-बड़ा महत्त्व; नितैन्तिलन्-न सोचा (उसने); शीर्मैयिन्-सदाचरण से; शीर्न्दत्तन्-डिग गया; अऱम्-धर्म; मऱन्तत्तन्-भुला दिया; अन्पु किट्क्क-स्नेह एक ओर रहे; नम् मऱन्-हमारी वीरता; अरिन्तिलन्-नहीं जानी; वाळ्विन्-राज्य-जीवन में; मयङ्किनान्-भ्रमित रह गया । ५५४

हमारी सहायता से उसे दुष्प्राप्य राजधन मिला । वह इस सहायता का महत्त्व नहीं समझता । उचित आचरण से डिग गया । उसने कृतज्ञता, वचन-पालन आदि धर्म भी भुला दिया । स्नेह भी भूल गया, वह एक ओर रहे ! हमारी वीरता भी भूलकर तो वह राज-जीवन में मोहित हो रहता है । ५५४

नन्त्रि कौन्त्र नदपितै नारुत्, तौन्त्र मय्यम्मै शिदैत्तुरे पौयत्तुळान्
कौन्त्र नीक्कुदल् कुड्डत्तु नीङ्गुमाल्, शौन्त्र मड्डवन् शिन्दैयैत् तेरुवाय् 555

नन्त्रि कौन्त्र-कृतघ्न बनकर; अरु नदपितै-अच्छी मित्रता का; नार् अड्डत्तु-बन्धन (सम्बन्ध) काटकर; ओन्त्रम्-सुबद्ध; मय्यम्मै-सत्य को; पळुताक्कि-बिगाड़कर; उरै पौयत्तुळान्-जो वचन को भी झूठा बना चुका, उसे; कौन्त्र नीक्कुतल्-मारकर हटाना; कुड्डत्तु-अपराध से; नीङ्गुम्-हटा रहेगा; आल्-इसलिए; शौन्त्र-जाकर; अवन् चिन्तैयै-उसका मन; तेरुवाय्-परख आओ। ५५५

जो आदमी कृतघ्न बनता है, उत्तम मित्रता का सम्बन्ध तोड़ता और सबके लिए पालनयोग्य सत्य को भी बिगाड़ता है और वचन-भंग करता है, उसको मार-मिटाना अपराध नहीं होगा। इसलिए तुम जाकर उसका अभिप्राय जान आओ। ५५५

वैम्बु कण्डहर् विण्बुह वेरुत्, तिम्बर् नल्लडुज् शैय्य वैडुत्तविल्
कौम्बु मुण्डरुड् कूड्डुमु मुण्डेङ्गळ्, अम्बु मुण्डेन्त्रु शौल्लुनम् माणैये 556

वैम्बु कण्टकर-नृशंस दुष्टों को; विण् पुक-स्वर्ग पहुँचाते हुए; वेर् अड्डत्तु-निर्मूल बनाकर; इम्पर्-इहलोक में; नल् अड्डम् चैय्य-सद्धर्मस्थापन के लिए; वैडुत्त-जो हाथ में लिया है, हमने; विल् कौम्पुम्-धनुर्दण्ड भी; उण्डु-है; अरुम्-दुर्द्धर्ष; कूड्डुमुम् उण्डु-यम भी है; अङ्कळ् अम्पुम् उण्डु-हमारे शर भी है; अन्त्रु-ऐसा; नम् आणै-हमारी शपथ; शौल्लु-कहो। ५५६

हमारे पास यह धनुर्दण्ड है, जिसको हमने नृशंस दुष्कृतों को आकाश में भेजने और इस लोक में सद्धर्म-स्थापन करने के लिए रखा है। और यम भी है, मरा नहीं है। हमारे शर भी हैं। यह सब स्मरण कराके हमारी आज्ञा सुनाओ। ५५६

नञ्ज मन्न वरैनलिल् दालदु, वञ्ज मन्त्रु मनुवळक् कादलान्
अञ्जि लम्बदि लौन्त्रि यादवन्, नैञ्जि निन्त्रु निलाव निरुत्तुवाय् 557

नञ्चम् अन्नवरै-विष-समान खलों को; नल्लिन्ताल्-दण्डित करे तो; अतु-वह; मनु वळक्कु-मनुनीति है; आतलाल्-इसलिए; वञ्चम् अन्त्रु-वंचना नहीं है; अञ्चिल् अम्पतिल्-पाँचवीं उमर में या पचासवीं उमर में; ओन्त्रु अड्डियातान्-जो (कर्तव्य) कुछ नहीं जानता; नैञ्चिल्-उसके मन में; निन्त्रु निलाव-स्थिर रूप से रहे, ऐसा; निरुत्तुवाय्-यह विचार रखो। ५५७

विष-सम खलो को दण्ड देना मनुधर्म-सम्मत कार्य है। वह कपट या वञ्चना नहीं होगा। सुग्रीव, लगता है कि पाँच (साल की आयु) में भी कुछ नहीं समझा (सीख चुका है); और पचास में भी कुछ नहीं जानता। उसके मन में बात बैठ जाय, ऐसा समझाओ। ५५७

ऊरु माळु मरचुनुम् जुड्डमुम्, नीरु माळुदि रेयैन्तिन् नेरुन्दनाळ्
वारुम् वार लिरेयैन्तिन् वानरप्, पेरु माळु मँनुम्बोरुळ् पेचुवाय् 558

नीरुम्—तुम और; तुम् चुड्डमुम्—तुम्हारा परिवार; आळुम्—जहाँ शासन करता है; ऊरुम्—वह नगर और; अरचुम्—राज्य; आळुतिरे—(पर) शासन करना चाहो; अँतिल—तो; नेरुन्त नाळ्—कथित दिन में; वारुम्—आओ; वारलिरे अँतिन्—नहीं आओगे तो; वानरम् पेरुम् माळुम्—वानर का नाम-निशान मिट जायगा; अँतुम्—यह; पोरुळ्—विषय; पेचुवाय्—कहो। ५५८

उनसे कहो—तुम और तुम्हारा शासकदल यह चाहता है कि किष्किन्धा नगरवास और राज्य-शासन टिका रहे तो निर्णीत समय-में, (सीता के अन्वेषणार्थ) आ जाओ हमारे पास। अगर नहीं आओगे, तो वानर का नाम-निशान नहीं रहेगा और सब वानर मिट जायँगे। ५५८

इन्नु नाडुडु मिङ्गिवर्क् कुम्बलि, तुन्नि त्रारै यैन्तुत्तुणिन् दारैन्तिन्
उत्तनै यौप्प वुलहोरु मूत्तुत्तुम्, निन्त लाडुपिड रिन्मै निहळ्त्तुवाय् 559

इङ्कु—यहाँ; इन्तुम्—और भी; इवर्क्कु—इन (श्रीराम और लक्ष्मण) से बढ़कर; वलि तुन्नित्रारै—वलवानों को; नाडुतुम्—ढूँढ़ लें (सहायक बना लें); अँत—ऐसा; तुणिन्तार् अँतिन्—निश्चय करते हैं, तो; उलकु ओरु मूत्तुत्तुम्—तीनों लोकों में; उत्तनै औप्प—तुम्हारे समान; निन्त अलाल्—तुम्हारे सिवा; पिडरु इन्मै—दूसरे का अभाव; निकळ्त्तुवाय्—कहो। ५५९

समझो कि वे हमसे वलवानों की सहायता ढूँढ़ लेने का विचार रखते हैं, तो कहना, लक्ष्मण, कि तुम्हारे समान वीर इन तीनों लोकों में तुम्हारे सिवा नहीं मिल सकता। ऐसे वीर का अभाव उनसे कहो। ५५९

नीदि यादि निहळ्त्तिन्नै निन्डुडु, वेदि याद पौळुडु वेंहुण्डिडल्
शादि यादवर् शौडरत् तक्कनै, पोदि यादियैन्तु रात्तुपुहळ्प् पूणिन्नान् 560

पुकळ् पूणिन्नान्—प्रशंसा-आभरण; निन्डु—अवधान करके; नीति आति—नीति आदि; निकळ्त्तिन्नै—समझाकर; अतु—वह; वेतियात्त पौळुतु—उनके मन में जब नहीं धुसा तो; नी—तुम; वेंकुण्टिटल्—क्रोध करना; चातियातु—न करके; अवर् चोल्—उनका (उत्तर-) वचन; तर तक्कनै—(यहाँ मेरे पास) कहो; पोति आति—चलता बनो; अँन्डान्—कहा। ५६०

श्रीराजाराम, जिनका आभरण प्रशंसा ही थी, जरा ठहरे। अवधान करके बोले कि लक्ष्मण नीति का उपदेश दो। अगर तुम्हारा वचन उनके मन में प्रवेश नहीं करता तो तुम क्रोध को मत अपनाओ। आकर मेरे पास उनका कथन कह दो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। ५६०

आणै शूडि यडित्तौळु दाण्डिडै, पाणि यादु पडर्वोन् पळिपडात्
तूणि तूक्कित् तौडुशिलै तौट्टेरुळ्, जेणि नीङ्गिनन् शिन्दैयि नीङ्गलान् 561

आणं चूटि—(श्रीराम की आज्ञा को) शिरोधार्य करके; अटि तौल्लुतु—पैरों पर नमन करके; आण्डु—वहाँ; इरै—जरा भी; पाणियातु—विलम्ब किये बिना; पटर्वोन्—जो चले; पळि पटा—अनिच्छ (अक्षय); तूणि तूक्कि—तूणीर कन्धे पर लेकर; तौट्टु चिल्ले—शरप्रेषक धनु; तौट्टु—लेते हुए; चिन्तैयिन्—मन से; नीङ्कलान्—(श्रीराम को) न हटाकर (स्मरण करते हुए); अरुम् चेणिल्—जहाँ पीछा करना कठिन है, उस लम्बे मार्ग में; नीङ्किनन्—चले । ५६१

लक्ष्मण ने भगवान श्रीराम की आज्ञा को शिरोधार्य करके उनके चरणों पर प्रणाम किया । फिर वहाँ से बिना विलम्ब किये जाने लगे । वे अक्षय तूणीर अपने कन्धे पर उठाते हुए, और शरप्रेषक धनु को साथ लिये हुए श्रीराम के स्मरण के साथ लम्बे मार्ग में ऐसे चले कि उनका उस मार्ग में पीछा कोई नहीं कर सकता था । ५६१

माऱु निन्ऱ मरन्तु मलैहळुम्, नीऱु शैन्ऱु नैडुनैऱि नीङ्गिड
वेऱु शैन्ऱुनन् मैय्मैयि तौङ्गिय, आऱु शैन्ऱुव तानैयि तेहुवान् 562

मैय्मैयिन्—सत्य के; ओङ्किय आऱु—उत्तम मार्ग में; चैन्ऱुवन्—चलनेवाले श्रीराम को; आणैयिन् एकुवान्—आज्ञा पर चलनेवाले लक्ष्मण; माऱु निन्ऱ—मार्ग में बाधा-रूप में रहे; मरन्तुम् मलैकळुम्—वृक्ष और पर्वत; नीऱु चैन्ऱु—चूर होकर; नीङ्किट—अलग हुए; वेऱु—अन्य; नैट्टु नैऱि—लम्बे मार्ग में; चैन्ऱुनन्—गये । ५६२

सत्य के उन्नत मार्ग पर चलनेवाले श्रीराम की आज्ञा लेकर जो लक्ष्मण चले, उनके मार्ग में रहनेवाले पर्वत और वृक्ष उनकी गमन-गति से चूर होकर अलग हो गये । वे (ऐसे बने) दूसरे मार्ग से चले । (शायद वे पूर्वपरिचित अभ्यस्त मार्ग से जाना सुरक्षित नहीं समझे) । ५६२

विण्णु इत्तौडर् मेरुविन् शीर्वरै, मण्णु इप्पुक्क लुन्दित्त मादिरम्
कण्णु इत्तैरि वुऱुडु कट्चैवि, उण्णि उक्कळु चैवडि यून्ऱुलाल् 563

कट्चैवि—नेत्र-कर्ण (आदिशेषनाग) के अवतार लक्ष्मण के; ओळ् निऱम्—उज्ज्वल रंग की; कळल्—पायल से अलंकृत; चैवटि—सुन्दर पैरों को; ऊन्ऱुलाल्—रोपकर रखने से; विण् उऱ तौटर्—आकाश स्पर्श करते हुए उन्नत; मेरुविन्—मेरु पर्वत की; चीर् वरै—ऊँचाई जितनी; कण् उऱ तैरिवुऱुन्—दृष्टिगोचर; मातिरम्—दिशाएँ; मण् उऱ—भूमि में; पुक्कु—जाकर; अळुन्तित्त—धँस गयीं । ५६३

आदिशेष नाग के अवतार लक्ष्मण के उज्ज्वल पायलों से अलंकृत सुन्दर पैरों के लगने से, आकाशस्पर्शी उन्नत मेरुपर्वत जितना ऊँचा था, उतना गहरा, संदृश्य दिशाएँ सब पाताल में धँस गयीं । ५६३

वैम्बु कानिडैप् पोहिन्ऱु वेहत्ताल्, उम्बर् तोयु मरामरत् तूडुशैल्
अम्बु पोन्ऱुन तन्ऱुडल् वालितन्, तम्बि मेऱ्चैलु मानवन् इम्बिये 564

अन्ऱु—तब; अटल् वालि तन्—बलवान वाली के; तम्पि मेल्—सुग्रीव के प्रति;

चैलुम्-चलनेवाले; मातवन् तम्पि-मनुकुल में उत्पन्न श्रीराम के लघुभ्राता लक्ष्मण के; पोकिन्ऱ-गमन के; वेकत्ताल्-वेग से; वैम्पु फात्तिटै-गरम जंगल में; उम्पर् तोयुम्-गगन-बुन्बी; मरामरत्तु अट्टु चैल्-सालवृक्षों के मध्य जानेवाले; अम्पु पोत्तुत्तन्-शर के समान लगे । ५६४

तब बलवान वाली के लघु भ्राता सुग्रीव के पास, जो मनुवंश के श्रीराम के छोटे भाई चले, वे अपने चलने की तीव्र गति से, गरम जंगल में सालवृक्षों के मध्य चलते हुए श्रीराम के शर के समान लगे । ५६४

माडु वैन्ऱियोर् मादिर यानैयैच्, चेडु तुन्ऱु शौडिलोर् तिक्किन्मा
नाडु हिन्ऱडु नण्णिय काल्पिटित्, तोडु हिन्ऱडु मौत्तुळ तायिनान् 565

चेडु तुन्ऱु-महिमायुक्त; ओर् तिक्किन् मा-एक दिग्गज; माडु-पास रहनेवाले; ओर् वैन्ऱि मातिरम् यानैयै-अनुपम और एक दिग्गज को; नाटुकिन्ऱु-बुद्धता; नण्णिय चैटिल्-स्वाभाविक मद-गन्ध का; काल् पिटित्तु-मार्ग लेकर; ओटुकिन्ऱु-जो दौड़ता है, उसके भी; औत्तु उळन् आयित्तान्-समान बने । ५६५

एक महान दिग्गज अपूर्व विजयी और एक दिग्गज को दौड़ते हुए, उसके स्वाभाविक मद की गन्ध द्वारा टोह लगाकर भाग रहा हो, लक्ष्मण वैसे भी लगे । ५६५

उरुक्को	ळीणगिरि	यौन्ऱिनिन्	शौन्ऱितैप्
पौरुक्क	वैय्दिनन्	पौन्ऱोळिर्	मेत्तियान्
अरुक्कन्	मावुद	यत्तिनिन्	इत्तमाम्
परुप्प	दत्तिनै	यैय्दिय	पण्बिनाल् 566

अरुक्कन्-सूर्य; मा उतयत्तिन् निन्ऱु-बड़ी उदयगिरि से; अत्तम्-जहाँ अस्त होता है, उस; परुप्पत्तिनै-पर्वत को; अय्त्तिय-जाता जिस रीति से; पण्पित्ताल्-उस रीति से; पौन् ओळिर् मेत्तियान्-स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी; उरु कौळ्-बड़े आकार के; ओळ् किरि-उज्ज्वल पर्वत; औन्ऱिन् निन्ऱु-एक से; औन्ऱितै-दूसरे एक पर्वत पर; पौरुक्क-जल्दी; अय्त्तिन्-पहुँचे । ५६६

सूर्य बड़ी उदयगिरि से अस्तगिरि पर जिस रीति से जाता है, उसी रीति से स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी लक्ष्मण बड़े आकार के और उन्नत और उज्ज्वल एक पर्वत (माल्यवान) से दूसरे पर्वत की तरफ (किष्किन्धा) की तरफ सवेग गये । ५६६

तन्ऱु णत्तमै यन्ऱनि वाळियिड्, चैन्ऱु शेणुयर् किट्किन्दै शेर्न्दवन्
कुन्ऱि निन्ऱोर् कुन्ऱिनिर् कुप्पुळुम्, पौन्ऱु लङ्गुळैच् चोयमुम् वोन्ऱनन् 567

तन् तुणै-अपने साथी; तमैयन्-और बड़े भ्राता श्रीराम के; तति वाळियिन्-अप्रमेय शर के समान; चैन्ऱु-जाकर; चेण् उयर्-गगन छूते हुए; उयर्-उन्नत; किट्किन्दै चेर्न्तवन्-जो किष्किन्धा पहुँचे; कुन्ऱिन् निन्ऱु-एक गिरि से; ओर्

कुञ्जिनिल्-दूसरी एक गिरि पर; कुपुङ्गुम्-झपटनेवाले; पौन् तुळङ्कु-स्वर्णवर्ण;
उळै-अयाल वाले; चीयमुम्-सिंह के; पोन्ऱत्तन्-समान भी शोभे । ५६७

अपने साथी और बड़े भ्राता श्रीराम के अनुपम शर के समान बहुत तीव्र गति से चलकर गगनोन्नत किष्किन्धा पर जो पहुँचे, वे लक्ष्मण एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर झपटनेवाले स्वर्णोज्ज्वल अयाल के पुरुषकेसरी के समान भी शोभे । ५६७

कण्ड वानरङ् गालतैक् कण्डैत्त, मण्डि योडिन वालि महर्कैया
कौण्ड शोऱ्त्त तिळैयोन् कुरुहिनान्, चण्ड वेहत्ति तानैन्ऱु शाऱ्ऱुम् 568

कण्ड वानरम्-इनको जिन वानरों ने देखा, वे वानर; कालतै कण्डु-यम को देख गये; अँत्त-ऐसा; मण्डि ओटित-मिलकर भागे; वालि मर्कु-वाली-पुत्र से; ऐया-सुन्दरराज; इळैयोन्-लघु भाई लक्ष्मण; कौण्ड शोऱ्त्तु-अपनाये क्रोध से; चण्ड वेक्त्तित्तान्-प्रचण्ड वेगवान बनकर; कुरुकितान्-आ गये; अँन्ऱु-ऐसा; चाऱ्ऱुम्-कहते ही । ५६८

वानरों ने श्रीलक्ष्मण को देखा । मानो यम का साक्षात्कार कर लिया हो, ऐसा वे भागे और अंगद के पास गये । उससे बोले कि सुन्दर युवराज ! लक्ष्मण अत्यधिक क्रोधी बनकर प्रचण्ड वेग के साथ आ पहुँचे हैं । यह कहते ही— । ५६८

अत्तन् तोन्ऱु माण्डीळि लान्वर, वित्तन् दैन्ऱरि वान्मरुङ् गैय्दिलान्
मन्तन् मैन्तन् मतक्करुत्तुट्कौळाप्, पौन्तिन् वारहळ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ् 569

अत्तन् तोन्ऱुम्-वह राजकुमार भी; आण् तौळिलान् वरवु-पुरुषोचित कार्य करनेवाले (वीर) के आने का कारण; इत्तन्तु-(क्या) यही है; अँन्ऱु अरिवान्-यह जानने के लिए; मरुङ्कु-उनके पास; अँय्तिलान्-नहीं गया; मन्तन् मैन्तन्-चक्रवर्ती के पुत्र का; मतम् करुत्तु-मनोभाव; उट् कौळा-ताड़कर; पौन्तिन्-स्वर्णनिर्मित; वार् कळल्-बड़ी पायल के धारक; तातै-पिता के; इल् पोयित्तान्-महल में गया । ५६९

वह राजकुमार अंगद भी लक्ष्मण के पास यह जानने के लिए नहीं गया कि पौरुषकर्म लक्ष्मण किस अभिप्राय से आये हैं ? लेकिन वह ताड़ गया कि लक्ष्मण का मनोभाव क्या है । इसलिए वह दीर्घ स्वर्ण-पायलधारी अपने पिता (चाचा) के महल में गया । ५६९

नळन्ति यर्ऱिय नायहक् कोयिलुळ्, तळम लर्त्ततहैप् पळ्ळियिर्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ्ऱ् 570
इळमु लैच्चिय रेन्दडि तैवर, विळैत्तु यिर्ऱु विरुन्दु विरुम्बुवान्

नळन् इयर्ऱिय-नल-निर्मित; नायकम्-राजसी; कोयिलुळ्-महल में; तळम् मलर् तकै-पल्लव और पुष्पों से भरी; पळ्ळियिल्-शय्या पर; ताळ् कुळल्-प्रलम्ब केश; इळ मुलैच्चियर्-बालस्तनी स्त्रियों के; एन्तु अटि-स्तुत्य पेरों को;

तेवर-सहलाते; विळै-वर्तमान; तुयिर्कु-निद्रा का; विरुन्तु-अतिथि रहना; विरुम्पुवान्-चाहनेवाला और । ५७०

वानर नल के द्वारा निर्मित राजायोग्य महल के अन्दर पल्लव-पुष्प-शय्या पर सुग्रीव सो रहा था । प्रलम्ब केश और बालस्तनों से युक्त वानर-स्त्रियाँ उसके पूज्य पैरों को सहला रही थीं । वह ऐसा सो रहा था, मानो निद्रादेवी का मेहमान बना रहना चाहता हो । ५७०

तेळ्ळि योर्हि लान्बैरु जैल्वमाम्, कळ्ळि नालदि हड्गळित् तान्कदिर्प्
पुळ्ळि मानैडुम् पौन्वरै पुक्कदोर्, वैळ्ळि माल्वरै येन्न विळङ्गुवान् 571

तेळ्ळि-खूब स्पष्ट; ओर्किलान्-विचार न करनेवाला; पेरु चैल्वम् आम्-विपुल धन रूपी; कळ्ळिनाल्-सुरा-पान के कारण; अतिकम् कळित्तान्-अधिक मत्त; कतिर् पुळ्ळि-किरणपुञ्ज; मा नैट्टु-अत्युन्नत; पौन् वरै-स्वर्ण (मेरु) पर्वत में; पुक्कतु-प्रवेश करके रहनेवाले; ओर्-अनुपम; वैळ्ळि माल् वरै अन्त-रजतपर्वत के समान; विळङ्गुवान्-शोभनेवाला । ५७१

(सुप्त सुग्रीव का वर्णन ५७०वें पद से लेकर सात पद्यों तक हुआ है ।) सुग्रीव साफ़ सोचने में असमर्थ (था); अपार धन रूपी सुरा के पान से अतिमस्त; किरणपुञ्जों के साथ बहुत उन्नत हिमालय पर्वत के अन्दर घुसकर रहनेवाली एक श्वेत, उज्ज्वल और विपुल रजत-गिरि के समान शोभायमान (था) । ५७१

सिन्दु वारन् दिरुनरै तेक्कहिल्, चन्द मामयिर् चायलर् ताळ्हुळल्
कन्द मामलर्क् काडुह डाविय, मन्द मारुदम् वन्दुर् वैहुवान् 572

चिन्तुवारम्-'सिंदुवार' नामक तरु; तिरु नरै-सुगन्धयुक्त लता; तेक्कु-सागौन के वृक्ष; अकिल्-अगरु; चन्तम्-सुन्दर; मा मयिल् चायलर्-श्रेष्ठ मोरों की-सी छटा वाली; ताळ्हुळल्-(स्त्रियों के) प्रलम्ब केश के; कन्तम्-वास से पूर्ण; मा मलर् काटुकळ्-विपुल पुष्प-वन; ताविय-(इन पर से) बहता आया; मन्त मारुतम्-मन्द मारुत; वन्दु उर-आ बहे, ऐसा; वैकुवान्-(सोता) जो रहा वह । ५७२

सिंधुवार-तरु, सुवासित लताएँ, सागौन, अगरु आदि वृक्ष और सुन्दर मयूरनिभ छटा वाली स्त्रियों के प्रलम्ब केश पर के पुष्पवन, इनके ऊपर से बहनेवाली हवा उसको सहला रही थी; वैसा सुप्त । ५७२

तित्ति यानिन्ऱु शैङ्गनि वाय्चचियर्, मुत्त वाणहै मुळ्ळैयि ऊरुतेन्
पित्तु मालुम् पिडवुम् पेरुक्कलान्, मत्त वारण मेन्त मयङ्गिनान् 573

तित्तिया निन्ऱु-मधुर रहनेवाले; चैम् कत्ति-लाल (विम्ब) फल के समान; वाय्चचियर्-अधरों की स्वामिनियों के; मुत्तम्-मोती-सम; वाळ नकै-उज्ज्वल हास के; मुळ्ळैयि-तीक्ष्ण दाँतों से; ऊरु-रिसनेवाले; तेन्-शहद-सम रसीला द्रव; पित्तुम् मालुम्-पागलपन, मोह और; पिडवुम्-अन्य (कामादि) मनोविकारों को;

पैरुक्कलान्-बढ़ाता रहा, इसलिए; मत्त वारणम् अँत्त-मत्तगज के समान; मयङ्कितान्-मोहित जो पड़ा रहा । ५७३

मधुर व लाल बिब-सम अधरों वालियों के मुक्तासदृश उज्ज्वल हास दिखानेवाले तीक्ष्ण दाँतों के मध्य से, रिसनेवाला रस (जो) पागलपन, मोह और कामादि अन्य विकृति उत्पन्न करनेवाला था । (उसका) पान करने के कारण मत्त गज के समान मोह-मुग्ध । ५७३

महुड कुण्डल मेमुदन् मण्डनत्, तुहुने डुञ्जुडर्क् कर्इरै युलावलाल् पहल वन्नुडर् पाय्पत्ति माल्वरै, तहम लर्न्दु पौलिन्दु तयङ्गुवान् 574

मकुट कुण्डलमे मुतल्-किरीट, कुण्डलादि; मण्टत्तत्तु-अलंकारों से; उकुम्-निकलनेवाले; नैट्टु चुटर् कर्इरै-लम्बी किरणों का समूह; उलावलाल्-(उसके) शरीर पर लगता चला, इसलिए; पकलवन्-सूर्य की; चुटर्-किरणें; पाय्-जिस पर लगती हैं, उस; माल्-बड़े; पत्ति वरै तक-शीतल उदयाचल के समान; मलर्न्दु-प्रकुल; पौलिन्दु-शोभायमान हो; तयङ्कुवान्-रहनेवाला । ५७४

उस पर किरीट, कुण्डल आदि अलंकार के आभरणों से कान्ति की दीर्घ किरणों का पुज लग रहा था । इसलिए सूर्य-रश्मिरंजित बड़े और शीतल उदयाचल के समान खिलता हुआ और उज्ज्वल रूप लिये हुए (सो रहा था) । ५७४

किडन्द	नन्निडन्	दानैक्	किडैत्तिरु
तडङ्गै	कूपपित्तन्	शारेमिन्	ताट्टन्द
मडङ्गल्	वीरत्तन्	माऱ्ऱम्	विळम्बुवान्
तौडङ्गि	तात्तव	तैत्तुयि	नीक्कुवान् 575

किडन्तत्तन्-लेटा रहा; किडन्तात्तै-पड़े रहे उसके; तारै-तारा-संज्ञित; मिन्ताळ्-बिजली-समाना के; तन्त-जाये; मटङ्कल् वीरन्-पुरुषसिंह-सम वीर ने; किटैत्तु-पास जाकर; इरु तटकै-दोनों विशाल हाथ; कूपपित्तन्-जोड़े; अवत्तै-उसको; तुयिल् नीक्कुवान्-निद्रा से जगाने के लिए; नल् माऱ्ऱम्-अच्छे वचन; विळम्पुवान्-कहने; तौट्टुक्कितान्-लगा । ५७५

सुग्रीव ऐसा सो रहा था । विद्युत् के समान कान्तिमय शरीर वाली तारा का पुत्र पुरुष-केसरी अंगद उसके पास गया । वह अपने दोनों विशाल हाथों को जोड़कर सुग्रीव को निद्रा से जगाने के निमित्त अच्छे और हितकारी शब्द कहने लगा । ५७५

अँन्दे केळव् विरामर् किळैयवन्, शिन्दै युण्णैडुञ् जीर्ऱन् दिरुमुहम् तन्द लिप्पत् तडुप्परम् वेहत्तान्, वन्द नत्तनुन् मनक्करुत् तियादैन्ऱान् 576.

अँन्तै-मेरे पिता; केळ्-सुनो; अ-उन; इरामर्कु-श्रीराम के; इळैयवन्-कनिष्ठ भ्राता; चिन्तैयुळ् नैट्टु चीर्ऱम्-मन का गम्भीर कोप; तिरुमुक्-श्रीमुख

के; तन्तु अलिप्प-बाहर प्रकट होने देते हुए; तटुप्पु अरु—दुर्वार; वेकत्तान्-वेग के साथ; वन्ततन्-आये हैं; उन् मनम् करुत्तु—आपके मन का भाव; यातु-क्या है; अन्नरान्—(अंगद ने) पूछा । ५७६

मेरे पिताजी ! सुनिये । उन श्रीराम के भाई लक्ष्मण आये हैं । उनके मुख पर उनका आन्तरिक अत्यन्त कोप झलक रहा है । अदम्य वेग के साथ आये हैं । उनके सम्बन्ध में आपका विचार क्या है ? । ५७६

इनेय मारु मिशैत्तन नैन्वदोर्, निनैवि लानेडुज् जैल्व नैरुक्कवुम्
ननैन् रुन्दुळि नञ्जु मयक्कवुम्, तन्यु णरुन्दिलन् मैल्लणत् तङ्गिनान् 577

(सुग्रीव तो) नैट्टु चैल्वम्—विपुल धन-मद के; नैरुक्कवुम्—मन को वश में रखने के कारण; नञ् ननै तुळि—सुवासित सुरा की बूंदों रूपी; नञ्चु मयक्कवुम्—विप चेतना-हरण कर चुका, इसलिए; तनै उणरुन्दिलन्—(अपनी सुधि ले नहीं सका) होश में नहीं आया; इतैय मारुम्—ऐसे वचन; इचैत्ततन्—(अंगद ने) कहा; अन्नपतु ओर् नितैवु—यह कोई ज्ञान; इलान्—न रखनेवाला; मैल् अणयिल्—मृदु सेज पर; तङ्किनान्—पड़ा रहा । ५७७

विपुल धन का मद और सुरापान का मद —इन दोनों के उसके मन पर हावी आने के कारण सुग्रीव अपनी सुध-बुध नहीं रखता था । अंगद क्या कह रहा है, इसका भी उसको कुछ बोध नहीं हुआ । इसलिए वह कोमल शय्या पर निद्रामग्न रह गया । ५७७

आद लालव् वरशिळ् गोळरि, यादु मुन्नि यियरुव दिन्मैयाल्
कोदिल् शिन्दै यनुमत्तैक् कूवुवान्, पोदन् मेयिनन् पोदह मेयनान् 578

आतलाल्—इसलिए; पोतकमे अत्तान्—बालगज-सम; अ इळ अरचु कोळरि—वह युवराज-केसरी (अंगद); मुन्नि—सोचकर; इयिरुवतु—करणीय; यातुम् इन्मैयाल्—कुछ नहीं रहा, इसलिए; कोतु इल् चिन्तै—उलझन-रहित मन वाले; अनुमत्तै—हनुमान को; कूवुवान्—बुलाने; पोतल् मेयिनान्—जाने लगा । ५७८

सुग्रीव की यह स्थिति होने से कलभ-सम वह युवराज-केसरी सोचने लगा कि अब क्या किया जाय ? उसके सामने करने योग्य कोई काम नहीं सूझा । इसलिए वह निर्दोष-मन हनुमान को बुलाने चला । ५७८

मन्दि रत्तनि मारुदि तन्नीडुम्, वैन्दि ररुपडै वीरर् विराय्वर
अन्द रत्तिन्वन् दन्नदन् कोयिल्, इन्दि ररुक्कु महन्मह नैय्दित्तान् 579

इन्तिररुक्कु मकन्—इन्द्रपुत्र का; मकन्—पुत्र; मन्तिरम्—मंत्रणा में; तत्ति—अद्वितीय; मारुदि तन्नीडुम्—मारुति के साथ; वैम् तिर्ल—अत्यधिक साहस के; पडै वीरर्—सेनावीरों के; विराय्वर—साथ लगे आते; अन्तरत्तिन् वन्तु—बाहर आया और; अन्तै तन् कोयिल्—माता के महल में; नैय्दित्तान्—पहुँचा । ५७९

इन्द्रपुत्र और मंत्रणाचतुर वायुकुमार दोनों वहाँ से बाहर निकले ।

कठोर बल के वीरों की सेना उनके पीछे-पीछे आयी । अंगद अपनी माता के महल में गया । ५७९

अय्दि मेइच्चयत् तक्कदेत् नैन्डुलुम्, शैय्दिर् शैय्दऱ् करुनेडुन् दीयन्
नौय्दि लन्तवै नोक्कवु नोक्कलिर्, उय्दिर् पोलु मुदविहीन् शीरेना 580

अय्ति-पहुँचकर; मेल्-आगे; चैय्यत् तक्कतु-करने योग्य; अँत्-क्या है; अँन्डुलुम्-पूछने पर; चैय्त्ऱ्कु अरु-अकरणीय; नैटुम् तीयत्-बहुत बुरे कामों को; नौय्तिल् चैय्तिर्-अनायास कर दिया (तुम लोगों ने); अन्तवै-उनको; नौय्तिल् नोक्कवुम्-जल्दी दूर करने को; नोक्कलिर्-सोचा भी नहीं; उतवि कौन्ऱीर्-कृतघ्न बने; उय्तिर् पोलुम्-बचोगे क्या; अँता-कहकर । ५८०

अंगद ने माता से पूछा कि अब क्या करना है ? यह पूछते ही तारा डाँट बताने लगी । तारा ने कहा—अकरणीय और बुरे काम को अनायास तुम लोगों ने कर दिया । करके भी उसका निवारण करने का उपाय नहीं सोचा । कृतघ्न हो तुम ! बच सकोगे क्या ? । ५८०

मोट्टु	मौन्ऱु	विळम्बुहिन्	शाळ्पडै
कूट्टु	मैन्ऱुमैक्	कौऱ्ऱवन्	कूऱिय
नाट्टि	रम्बितुन्	नाट्टिऱम्	बुम्मेनक्
केट्टि	लोरिनिक्	काण्डिर्	किडैत्तिराल् 581

मोट्टुम्-और; मौन्ऱु-एक बात; विळम्बुकिन्ऱाळ्-तारा कहती है; उमै-तुम लोगों से; पटै कूट्टुम्-सेना एकत्र करो; अँन्ऱु-ऐसा; कौऱ्ऱवन्-श्रीविजयराघव के; कूऱिय नाळ्-कथित दिन के; तिऱम्पिन्-बीत जाने पर; उम् नाळ्-तुम्हारे (जीवन के) दिन; तिऱम्पुम्-पूरे हो जायेंगे; अँत-कहने पर; केट्टिलीर्-नहीं सुना (तुम लोगों ने); इति काण्डिर्-अब देखोगे; किडैत्तिर्-(अब) फँस गये । ५८१

तारा आगे बोली । मैंने तुमको समझाया था कि विजयी श्रीराम ने सेना-संग्रह की अवधि निर्धारित की है । और-अगर वह अवधि बीत जायगी तो तुम्हारे जीवन की अवधि भी खतम हो जायगी । पर तुमने नहीं सुना । अब उसका फल भुगतोगे । अब खूब फँसे ! । ५८१

वालि यारुयिर् कालनुम् वाङ्गविऱ्, कोलि वालिय शैल्वड् गौडुत्तवर्
पोलु मालुम्बु इत्तिरुप् पारिडु, शालु मालुङ्ग डन्मैयि नोर्क्कैलाम् 582

वालि आरुयिर्-वाली के प्यारे प्राणों को; कालनुम् वाङ्क-कालदेव ले ले, ऐसा; विल् कोलि-धनु झुकाकर; वालिय-उज्ज्वल; शैल्वम्-राजधन; कौटुत्तवर् पोलुम्-जिन्होंने दिया वे क्या; उम् पुऱत्तु-आपसे उपेक्षित; इरुप्पार्-रहेंगे; इतु-यह उपेक्षा; उड्कळ् पोलुम्-तुम्हारे समान; तन्मैयितोर्क्कु-स्वभाव वालों को ही; अँलाम्-सब तरह से; चालुम्-योग्य होगी । ५८२

श्रीराम ने अपने धनु के बल से वाली के प्यारे प्राणों को कालदेव के हाथ में सौंप दिया । क्या वैसे राम तुमसे उपेक्षणीय हैं ? यह उपेक्षा शायद तुम जैसे कृतघनों को सोह सकती है ! । ५८२

देवि नीड्गवत् तेवरिर् चोरियन्, आवि नीड्गिनन् पोलयर् वान्तु
पावि यादु परहुदिर् पोलुनुन्, कावि नाण्मलर्क् कण्णियर् कादनीर् 583

तेवि नीड्क-देवी के अलग होने पर; अ तेवरिल् चोरियन्-देवों में श्रेष्ठ श्रीराम; आवि नीड्कित्तन् पोल-प्राणविहीन के समान; अयर्वात्-शियिल होते हैं; अतु पावियातु-उसकी चिन्ता न करके; नुम्-(तुम्हारी) अपनी; नाळ् कावि मलर्-सद्यविकसित नीलोत्पल फूल के समान; कण्णियर्-आँखों वाली (पत्नियों) के; कातल् नीर्-प्रेम-रस; परहुतिर् पोलुम्-पान करते रहोगे क्या । ५८३

देवी के वियोग में देवों में श्रेष्ठ श्रीराम निर्जीव होकर शिथिल पड़े हुए हैं । तुम उसकी चिन्ता नहीं करके सद्य-विकसित नीलोत्पल के सदृश आँखों वाली अपनी पत्नियों का प्रेम-रस पान कर रहे हो न ? । ५८३

तिडम्बि निर्र्मेय् शिदत्ती रुदविये, निडम्बो लीड्गुङ्ग डीविन्नै नेरुन्ददाल्
मडुर्ज्जय् वानुडिन् माळुदिर् मडुर्जिनि, पुडुर्ज्जय् दावदै नैन्गिन्डु पोदिन्वाय् 584

मैय् तिडम्पित्तीर्-सत्य लांघ चुके; उतविये चित्तत्तीर्-कृतज्ञता को मार चुके हो; निडम् पीलीडर्-रंग ही (गौरव ही) नष्ट कर चुके हो; उडुक्कळ् तीवित्तै-तुम्हारा दुर्भाग्य; नेरुन्दतु-आ गया; मडुम् चैय्वात् उडिन्-वीरता दिखाने (लड़ने) चलोगे तो; माळुतिर्-मर जाओगे; इन्नि-अब; पुडुम् चैय्-उपेक्षा करने से; आवतु-होगा; अत्-क्या है; अत्किन्डु पोतिन् वाय्-जब यह (तारा) बोल रही थी, तब । ५८४

तुम लोगों ने सत्य छोड़ दिया । कृतघ्न बन गये । इस बुरे गुण के कारण तुम्हारी छवि ही मिट गयी । बुरे कर्म अपने फल देने आ गये । अपनी वीरता के बल पर लड़ने जाओगे तो मर जाओगे । अब मुक करने से क्या होगा ? तारा यह कह ही रही थी कि— । ५८४

कोळ् उडुत्तर् करिय कुरक्किन्नम्, नीळ् लुत्तौ डरुन्नेडु वायिलैत्
ताळ् उडुत्ति तडवरै तन्दन, मूळ् उडुत्ति यडुक्किन मीय्म्बित्ताल् 585

कोळ् उडुत्तर्कु अरिय-नाशदुस्साध्य; कुरक्कु इत्तम्-वानरगणों ने; नीळ् अळ्-लम्बी लोहे की सिटकिनियों से; तौटरुम्-बन्द होने योग्य; नैडु वायिलै-विशाल द्वार को (कपाट को); ताळ् उडुत्ति-सिटकिनी लगाकर; मीय्म्पित्ताल्-शरीर-बल के जोर से; तडवरै-चट्टानों को; तन्दन-ले आकर; मूळ् उडुत्ति-जोड़कर; अडुक्किन्न-चुन रखा । ५८५

वहाँ वानरगणों ने, जिनको मारना आसान नहीं था, लोहे की लम्बी सिटकिनियों से बड़े द्वार-कपाट को सुरक्षित किया और उसके पीछे बड़ी-बड़ी चट्टानें, अपने बल से ले आकर, जोड़ रखी । ५८५

शिक्कु इक्कडै शेमित्त शैय्हैय, तौक्कु इत्त मरत्त तुवन्नित्त
पुक्कु इक्किप् पुडैत्तु मँत्तप्पुरम्, मिक्कि इत्तत्त वीरन् मेयित्तान् 586

कटै चिक्कुड-द्वार को खूब; चेमित्त-सुरक्षित करनेवाले; शैय्कैय-कृत्यकारी वानर; पुक्कु उक्कि- (अगर वह अन्दर किसी विध आ जायें तो) सामने जाकर डाँटेंगे; पुडैत्तुम्-और पीटेंगे; अँत्त-सोचकर; तौक्कुइत्त-पंक्तियों में रखे हुए; मरत्त-तरुओं के साथ; तुवन्नित्त-मिल आये; पुरम्-द्वार के पास; मिक्कु इत्तत्त-खचाखच सटे रहे; वीरन् मेयित्तान्-वीर लक्ष्मण भी आ गये । ५८६

इस तरह किले के द्वार को सुरक्षित रूप से बन्द करने के बाद वानर यह सोचकर कि अगर वह किसी तरह अन्दर आयगा तो डाँट-डपट करके पीटेंगे, बड़े-बड़े वृक्षों को लिये हुए दल बाँधे खड़े थे । तब तक वीर लक्ष्मण भी आ गये । ५८६

काक्क वोकरुत् तैन्न कदत्तिनाल्, पूक्कु मूरर् पुरवलर् पुङ्गवन्
ताक्क णङ्गुर् तामरैत् ताळिनाल्, नूक्कि तानक् कदवित्तै नौय्दित्तिन् 587

कतत्तिनाल्-क्रोध की; मूरल् पूक्कुम्-हँसी प्रकट करते हुए; पुरवलर् पुङ्गवन्-राजश्रेष्ठ ने; काक्कवो करुत्तु-बचने का अभिप्राय है क्या; अँन्न-सोचकर; ताक्कणङ्कु उरै-(विजय-) लक्ष्मी के आश्रय; तामरै ताळिनाल्-कमलों के जैसे चरणों से; अ कदवित्तै-उस कपाट को; नौय्दित्तिन्-लघु-प्रहार करके; नूक्कितान्-हटाया । ५८७

वन्द द्वार को देखकर लक्ष्मण ने एक क्रोध की हँसी हँसी । राज-पुंगव ने सोचा, यह स्वरक्षा का उपाय है क्या ? अपने श्रीयुक्त कमल-चरण से उस किवाड़ पर लघु प्रहार किया । ५८७

कावन् मामदि लुङ्गद वुङ्गडि, मेवुम् वायि लडुक्किय वैर्पोडुम्
तेवु शेवडि तीण्डलुन् दीण्डरुम्, पाव मामँत्तप् पर्ऱळिन् दिर्ऱवाल् 588

तेवु-दिव्य; चे अटि-सुन्दर चरणों के; तीण्डलुम्-स्पर्श करते ही; कावल् मा मतिलुम्-नगर-रक्षक प्राचीर; कतवुम्-और कपाट; कटि मेवुम्-सुरक्षा के लिए; वायित् अडुक्किय-द्वार पर जोड़कर रखे हुए; वैर्पोडुम्-पत्थरों के साथ; तीण्ड अरुम्-अस्पृश्य; पावम् आम् अँत्त-पाप के समान; पर्ऱळिन्-लगाव छोड़कर; इर्ऱ-मिट गये । ५८८

दिव्य और सुन्दर (लक्ष्मण के) चरणों के स्पर्श मात्र से नगर-रक्षक प्राचीर और किवाड़, किवाड़ के पीछे चुनी हुई चट्टानों के साथ पाप के समान जिनका स्पर्श भी भयंकर है, आधार खोकर गिरकर मिट गये । ५८८

नौय्दि नोत्कद वुम्मुडु वायिलुम्, शैय्द हन्मदि लुन्दिशै योशन्
ऐयि रण्डि नळवडि यर्ऱुह, वैय्दि नित्ऱ कुरङ्गु वैरुक्कोळ 589

नोन् कतवुम्-कठोर किवाड़; मुनु वायिलुम्-और प्राचीन द्वार; कल् चैय्त मतिलुम्-पत्थरों का प्राचीर; नोय्तिल्-आसानी से; अटि अर्कु-आधार खोकर; तिचै-दिशाओं में; ऐ इरण्डु-दस (पाँच के दो); योचत्तैयित्-योजनों की दूरी तक; उक्-गिरे, तो; कुरङ्कुम्-वानर भी; वैरु कौळा-भय खाकर; वयित्तु निन्ऱ-तप्तमन रहे । ५८६

कपाट सशक्त था । पत्थर का बना नगर-द्वार भी प्राचीन था । पर वे सब लक्ष्मण के चरण-प्रहार से आधार खोकर गिर गये और दिशाओं में दस योजन तक छितर गये । वानर भय खाकर तप्त-मन खड़े रहे । ५८९

परिय मामदि लुम्बडर् वायिलुम्, शरिय वीळ्नुडु तहरन्द मुडित्तल
नैरिय नैञ्जु पिळक्क नैडुन्दिशै, इरिय लुङ्गुत्त विङ्गिल वित्तुयिर् 590

परिय मा मतिलुम्-चौड़े बड़े प्राचीर भी; पटर् वायिलुम्-विशाल द्वार भी; चरिय-ढहकर; वीळ्नुडु-गिरे; तकरन्त-और मिटे; मुटि तलै-सिर का भाग; नैरिय-टूटा; नैञ्जु पिळप्प-विदीर्ण-मन हो; इन् उयिर्-प्यारे प्राणों से; इङ्गिल-हीन नहीं हुए (वानर); नैडु तिचै-दूर दिशाओं में; इरियल् उङ्गुत्त-छितरकर भाग गये । ५९०

चौड़ा और ऊँचा प्राचीर और विशाल द्वार ढहकर गिरे और मिटे । प्राचीरों के शिरोभागों पर दरार पड़ गयी । इसको देखकर वानरों का मन भी विदीर्ण हो गया । वे अपने प्यारे और बचे हुए प्राणों को लेकर सभी दिशाओं में अलग-अलग भाग गये । ५९०

पहर वेयु मरिडु परिन्देळु, पुहरिल् वानर मञ्जिय पूशलान्
शिहर माल्वरै शैन्ऱु तिरिन्दुळि, महर वेलैयै योत्तडु मानहर् 591

परिन्दु-उद्भिन्न होकर; अैळु-जो भागे; पुकर् इल्-निरपराध; वातरम्-वानरों ने; अञ्चिय पूचलान्-डर से जो शोर मचाया, उससे; मातकर्-वह बड़ा नगर; चिकरम् माल्वरै-शिखर-सहित बड़ा (मन्दर) पर्वत; चैन्ऱु तिरिन्दुळि-जब (सागर में) प्रविष्ट हो घूमा; मकरम् वेलैयै-तब के मकरालय के; योत्तडु-समान था; पकरवेयुम् अरितु-कहना इस्साध्य है । ५९१

वानरसमूह बहुत दुःखी होकर अपना स्थान छोड़कर भागे । बेचारे वे वानर निरपराध थे । इनके भय के कारण नगर में बड़ा शोर मच गया । तब वह नगर उस मकरालय के समान लगा, जिसमें शिखरसहित बड़ा मन्दरपर्वत घुसकर घूम रहा था । ५९१

वान रङ्गळ् वैरुवि मलैयौरीडक्, कानौ रङ्गु पडरवक् कार्वरै
मीनै रङ्गिय वानह मीनैलाम्, पोन् पित्तुवौलि वङ्गु पोन्ऱुदे 592

वानरङ्गळ्-वानर; वैरुवि-भयभीत होकर; मलै औरीड-(किष्किन्धा)

पर्वत त्यागकर; औरङ्कु-एक साथ; कान् पटर-(पास के) जंगल में चले गये, इसलिए; अ कार् वर-वह मेघाच्छादित पर्वत; सीन् नैरङ्किय-उडुगणों से भरा; वातकम्-आकाश; सीन् अलाम् पोत्त पित्-नक्षत्रों के जाने के बाद; पोलिवु अइत्तु-शोभा खो जाता; पोत्तु-जैसे, वैसा लगा । ५६२

वानर भय से उस किष्किन्धा पर्वत को छोड़कर पास के जंगलों में, झुण्डों में भाग गये । इसलिए मेघाच्छादित वह किष्किन्धा गिरि उस नक्षत्रवान आकाश के समान दिखायी दी, जिसके सभी नक्षत्र लुप्त हो गये हों । ५९२

अन्त कालैयि नाण्डहै याळियात्, पीत्ति नन्तर्हर् वीदियिर् पुक्कनत्
शीत्त तारैयैच् चुरित्तर नित्तरवर्, अन्त शैयुव दैयित्त नैत्तर 593

अन्त कालैयिन्-उस समय; आण् तर्क-पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के; आळियात्-(आज्ञा-) चक्र लक्ष्मण; पीत्तिन्-सुन्दर; नल् नकर्-श्रेष्ठ नगर की; वीतियिल्-वीथी में; पुक्कतन्-प्रवेश करके चले; चीत्त तारैयै-जिसने सचेतन-वचन कहे, उस तारा को; चुरित्तर-घेरे; नित्तरवर्-जो खड़े थे, वे (अंगद आदि); अयित्तन्-आ हीं गये; अन्त चैयुवतु-क्या करें; अन्तर-(ऐसा घबड़ाकर) बोले । ५६३

तब पुरुषश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के आज्ञाचक्र के समान लक्ष्मण उस सुन्दर और अच्छे नगर की वीथी में प्रविष्ट हुए । पहले जिस तारा ने सचेतन के वचन कहे थे, उसको घेरे हुए अंगद आदि खड़े थे । जब उनको मालूम हुआ कि लक्ष्मण नगर में आ गये तो वे घबड़ाये और पूछने लगे कि आ हीं गये, अब क्या करें ? । ५९३

नीर् लामय तीङ्गुमि नेरन्दियात्, वीर तुळ्ळम् वित्तवुव लैत्तरलुम्
पेर नित्तरनर् यावरुम् पेर्हलात्, तारै शैत्तरन डारुळ् लारौडुम् 594

नीर् अलाम्-तुम सभी; अयल् नीङ्कुमिन्-अलग हट जाओ; यात् नेरन्तु-मैं मिलकर; वीरन् तुळ्ळम्-वीर का अभिप्राय; वित्तवुवल्-पूछ लूंगी; लैत्तरलुम्-(तारा के) यह कहने पर; यावरुम्-सभी; पेर-हटकर; नित्तर-खड़े हुए; तारै-तारा; पेर्कला-पीछे नहीं (आगे); तारकुळलारौडुम्-पुष्पालंकृत केश वालियों के साथ; चैत्तर-गयी । ५६४

तारा ने उनसे कहा, तुम सब यहाँ से हट जाओ । मैं उनसे मिलूंगी और जान लूंगी कि वीर उनका अभिप्राय क्या है ? तारा के ऐसा कहने पर सभी वानर हटकर खड़े हो गये । तारा पीछे नहीं गयी, लेकिन पुष्पालंकृत केश वाली अपनी सखियों के साथ आगे बढ़ी । ५९४

उरैशैय् वानर वीर ख्वन्टुर्, अरैशर् वीदि कडन्दहन् कोयिलेप्
पुरशै यानैयन् नान्पुह लोडुमव्, विरैशैय् वारुळ्ळर् शारै विलक्किताळ् 595

पुरचै-गले की रस्सी (कलापक) सहित; यात अन्तान्-गजसदृश लक्ष्मण; उरै चैय्-प्रकीर्तित; वानर वीरर्-वानर वीर; उवन्तु उरै-जहाँ खुशी से रहे; अरैचर् वीति-उस राजवीथी को; कटन्तु-पार करके; अकल् कोयिलै-(सुग्रीव के) विशाल महल में; पुकलोदुम्-प्रवेश करते ही; अ-उस; विरै चैय्-सुवासपूर्ण; वार कुळल्-लम्बे केश वाली; तारै-तारा ने; विल्क्किनाळ्-रोका । ५६५

कलापक (गले की रस्सी) सहित गजराज-सम लक्ष्मण प्रकीर्तित वानर वीरों के प्यारे वासस्थान, राजवीथी को पारकर सुग्रीव के विशाल महल में पहुँचे । तब प्राकृतिक-सुवास-भरे केश वाली तारा ने उसके मार्ग को रोका । ५९५

विलङ्गि	मैल्लियल्	वैण्णहै	वैळ्वळै
इलङ्गु	नुण्णिडै	येन्दिल	मैन्मुलैक्
कुलङ्गौ	डोहै	महळिर्	कुळात्तिनाल्
वलङ्गौळ्	वीरन्	वरुम्बळि	माड्डिनाळ् 596

विलङ्कि-आड़े आकर; मैल् इयल्-कोमल प्रकृति; वैळ नकै-श्वेत दाँत; वैळ्वळै-श्वेत कंकण; इलङ्कुम्-(विद्युत् के समान) शोभायमान; नुण् इटै-सूक्ष्म कमर; एन्तु-उठे हुए; इळ-बाल; मैल् मुलै-कोमल स्तन; कुलम् कौळ्-श्रेष्ठ; तोकै-मयूर की-सी आभा; मकळिर्-(इनसे युक्त) स्त्रियों के; कुळात्तिनाल्-झुण्ड की सहायता से; वलम् कौळ् वीरन्-दाहिनी ओर से जो आ रहे थे, उन वीर श्रीलक्ष्मण का; वरुम् बळि-आने का मार्ग; माड्डिनाळ्-रोका । ५६६

सुकुमारी, श्वेत दाँत, श्वेत कंकण, विद्युत-सम पतली कमर, उन्नत बाल-स्तन — इनके साथ शोभायमान मयूरनिभ स्त्रियों के समूहों का उपयोग करके तारा ने दाहिनी ओर से आनेवाले वीर लक्ष्मण का मार्ग रोका । ५९६

विल्लुम् वाळुम् मणियौडु मिन्निड, मैल्ल रिक्कुरन् मेहलै यार्त्तिडप्
पल्व हैप्पुरु वक्कौडि पम्बिड, वल्लि यायम् वलत्तिनिल् वन्ददे 597

विल्लुम्-धनु-सम (वक्र); वाळुम्-तलवार-सम प्रकाशपुंज; अणियौटु-आभरणो के साथ मिलकर; मिन्निटि-चमके; मैल् अरि कुरल्-नूपुर के अन्दर के छोटे कंकड़ों का स्वर; मेकलै-मेखला की ध्वनि; यार्त्तिड-(मारु) नारे से लगे; पल् वकै पुरुवम्-विविध भीहों रूपी; कौटि-(युद्ध के) झंडे; पम्बिड-घने रूप से भरे रहे; वल्लि आयम्-स्त्रियों की सेना; वलत्तिनिल्-दल-वल के साथ; वन्तु-आयी । ५६७

वानर-स्त्रियों का समूह क्या था, वह एक अलंघ्य सेना थी । धनु-सम वक्र और तलवार के समान लम्बी कान्तियाँ आभरणों के साथ मिलकर विद्युत के समान चमक रही थीं । छोटे-छोटे कंकड़ों से भरे नूपुरों और मेखलाओं से उठनेवाला नाद भेरीनाद-सा था । विविध भीहे युद्ध के

झण्डों के समान दिखायी दीं। इस साज के साथ स्त्री-समूह की सेना ने दल-बल सहित आकर लक्ष्मण को घेर लिया। ५९७

आर्क्कुन् पुरङ्गळ् बेरि यल्हन् इडन्दे रौत्त
पोर्क्कण्वम् बुरुवम् विल्ला मैल्लियर् वळैन्द पोडु
पेर्क्करुम् जीर्म् पेर मुहम्बैयर्न् दौदुङ्गिर् रल्लाल्
पार्क्कवु मञ्जि तान्प् पव्वरै यत्तैय तोळान् 598

आर्क्कुम्-स्वरित; नूपुरङ्गळ्-नूपुर; पेरि-भेरियाँ बने; रौत्त अलकुल्-सुडौल कटि-प्रदेश; तट तेर्-विशाल रथ; वम् पुरुवम्-प्यारी भौहें; पोर् कण् विल्ला-युद्ध में धनुष (यह लेकर); मैल्लियर्-सुकुमारियों ने; वळैन्त पोतु-जब घेर लिया तब; अ-वे; पव्वरै-बड़े पर्वत; यत्तैय-समान; तोळान्-लक्ष्मण; पेर्क्क अरु-दुर्वार; जीर्म्-क्रोध; पेर-छोड़कर; मुक्कम् पय्यर्न्तु-मुख मोड़कर; औतुङ्किर्-दूसरी तरफ करने; अल्लाल्-के सिवा; पार्क्कवुम्-देखने से भी; अञ्चितान्-डरे। ५९८

स्वरित नूपुर भेरियाँ बने। सुडौल कटि-प्रदेश बड़े-बड़े रथ बने। प्यारी भौहें युद्धकारी धनु बनीं। इनके साथ जब स्त्री-सेना ने लक्ष्मण को घेर लिया तब, विशाल पर्वत के समान उन्नत कन्धों वाले लक्ष्मण का दुर्वार क्रोध दूर हो गया। उनका मुख दूसरी ओर मुड़ गया। वे उनको देखने से भी डरे। ५९८

तामरै वदन्त जायत्तुत् तनुन्डुन् दरैयि तून्डि
मामियर् कुळुविन् वन्दा नामैन्त मैन्दन् निर्पप्
पूमियि लणङ्ग तारदम् पौदुविडैप् पुहुन्दु पौर्ऱोळ्
तूमन नैडुङ्गट् टारै नडुङ्गुवा छित्तैय शौन्ताळ् 599

मैन्तन्-वीर कुमार; तामरै वतन्त चायत्तु-कमल-सम वदन झुकाकर; नैटु तनु-लम्बे धनु को; तरैयिल् ऊन्डि-भूमि पर टेककर; मामियर् कुळुविन्-सासों के समुदाय में; वन्तान् आम् अँत-फँस गये जैसे; निर्प-संकुचित खड़े रहे; पौन् तोळ्-सुन्दर भुजाओं; तूमन्तम्-पवित्र मन; नैटुम्कण्-आयत आँखों वाली; तारै-तारा; पूमियिल् अणङ्कु अतार् तम्-भूलोक में सुरांगनाओं के समान रहनेवाली वानर-स्त्रियों के; पौतुविटै-दल में; पुकुन्तु-घुसकर; नडुङ्गुवाळ्-कंपन के साथ; इत्तैय-यों; शौन्ताळ्-वोली। ५९९

वीर राजकुमार ने अपना सिर झुका लिया। वे भूमि पर अपने लम्बे धनुष को टेककर ऐसे खड़े रहे, मानो कोई जवान पुरुष सासों के मध्य फँस गया हो। तब सुन्दर भुजा वाली, पवित्र मन वाली और आयताक्षी तारा भूमि में रहनेवाली देवांगनाओं के समान उन रमणियों के दल को चीरकर सामने आयी और काँपती वाणी में बोलने लगी। ५९९

अन्दमिल् काल नोर्इ वाइलुण्ड डायि तन्त्रि
 इन्दिरन् मुदलि नोर्कु कु मैयदला मियल्विइ इन्त्रे
 मैन्दनिन् पादङ् गौण्डेम् मनैवरप् पेरु वाळ्न्देम्
 उय्न्दनम् विनैयुन् दीरन्दे मुरुदिवे रिदन्मे लुण्डो 600

मैन्त-वीर कुमार; अन्तम् इल्-(आपका आगमन) अनन्त; कालम्-काल;
 नोर्इ-हमने तपस्या की, उसका; आइल्-बल; उण्टायिन् अन्त्रि-नहीं होगा तो;
 इन्त्रिन् मुतलितोर्कु-इन्द्रादि देवों को भी; मैयतलाम्-प्राप्य; इयल्पिइ अन्त्रे-
 गुण का नहीं है न; निन् पातम् कोण्ड-अपने श्रीचरण से (चलकर); मै मन्त-
 हमारे घर में; वर पेरु-आ पाये; वाळ्न्तेम्-हम सफल-जन्म हो गये; विनैयुम्
 तीरन्तेम्-कर्म-मुक्त हुए; उय्न्ततम्-हमारा उद्धार हो गया; इतन् मेल्-इससे
 बढ़कर; उरुति-हित; वेरु उण्टो-और कोई है क्या । ६००

हे वीरकुमार ! आप पैदल चलके इतनी दूर आये हैं । यह आपका
 आगमन, अनन्त काल तक तपस्या करो, तभी हो सकता है । नहीं तो
 इन्द्र आदि के लिए भी यह भाग्य प्राप्य रीति का नहीं है । आपके अपने
 पैरों से चलकर हमारे घर में आगमन से हम उत्कृष्ट जीवन पा गये ।
 हमारा बुरा कर्म मिट गया । हमारा उद्धार हो गया । इससे बढ़कर
 हितकारी विषय और कुछ है क्या ? —नहीं है । ६००

वैय्दिनी वरुद नोक्कि वैरुवुनुज् जेन् वीर
 शैय्दिदा नुणर्हि लादु तिरुवळन् दैरित्ति यैन्ता
 ऐयनी यरुळिन् वेन्द नडियिणै पिरिह लादाय्
 अय्दिय दैन्तै यैन्त्रा लिशैयिन् मिनिय शौल्लाळ् 601

इचैयितुम्-संगीत से भी; इत्तिय-मधुर; चोल्लाळ्-भाषिणी; वीर-वीर;
 नी-आपका; वैय्तिन् वरुतल् नोक्कि-वेग के साथ आना देखकर; वैय्ति तान्-
 समाचार; उणर्किलातु-न जान सककर; नुम् चेतै-आपकी सेना; वैरुवुम्-
 डरती है; तिरु उळम्-अपने मन की बात; तैरित्ति-बताइए; यैन्ता-कहकर
 (आगे); ऐय-सुन्दर वीर; यरुळिन् वेन्तन्-कण्णामय राजाराम के; अटि इणै-
 चरणद्वय; पिरिकलाताय् नी-छोड़ जो न सकते हैं, वैसे आपका; अय्त्तियतु-आगमन
 (का हेतु); अैन्तै-क्या है; अैन्त्राळ्-बोली । ६०१

तारा की वाणी संगीत से भी मधुर थी । उसने लक्ष्मण से कहा कि
 हे वीर ! तुम्हारा सवेग आना देखकर समाचार न जानने के कारण
 आपकी वानर-सेना डरेगी । कृपया आप अपना मनोभाव कहें । उसने
 आगे जारी किया— सुन्दर कुमार ! आप तो दया के अधिपति श्रीराम
 के श्रीचरणों से कभी अलग होनेवाले नहीं हैं । ऐसे आप इधर पधारे हैं
 —उसका क्या हेतु है ? । ६०१

आर्हीला वुरैशैय् दारैन् इरुळ्वरच् चीरु मः(ह्)हाप्
 पारहुला मुळुवैण् डिङ्गळ् पहल्वन्द पडिवम् बोलुम्
 एरुला मुहत्ति तालै यिरैमुह मैडुत्तु नोक्कित्
 तारहुला मलङ्गन् मारबन् तायरै नित्तैन्दु नैन्दान् 602

अलङ्कल्-हिलनेवाली; तार्-माला से; कुलाम मारपन्-अलंकृत वक्ष वाले;
 अरुळ् वर-कृपा के होने पर; चीरुम् अ.का-क्रोध कम करके; उरै चैय्तार्-
 भाषण किया; आर् कौलो-किसने तो; अैन्-ऐसा सोचकर; कुलाम्-गोल;
 मुळु-पूर्ण; वैण् तिङ्कळ्-श्वेत चन्द्र; पकल्-दिन में; पार् वन्त-भूमि पर आया
 हो, ऐसा; पडिवम् पोलुम्-रूप वाली (को); एर् कुलाम्-सौंदर्यमय; मुहत्तिताळै-
 मुख वाली को; मुकम्-मुख; इरै अैडुत्तु-थोड़ा उठाकर; नोक्कि-देखकर; तायरै
 नित्तैन्तु-अपनी माताओं को स्मरण करके; नैन्तान्-दुःखी हुए। ६०२

हिलनेवाली पुष्पमाला से भूषित लक्ष्मण के मन में दया आयी।
 क्रोध कम हुआ। ऐसा बोलनेवाली कौन होगी? यह समझने के लिए
 जब उसने थोड़ा मुख उठाकर तारा का सुन्दर मुख देखा, जो गोल
 राका-चन्द्र, दिन में ही भूमि पर आया-सा (मन्दप्रभ) लगता था, तब उन्हें
 अपनी (विधवा) माताओं का स्मरण आया और वे बहुत दुःखी
 हुए। ६०२

मङ्गल वणियै नोक्कि मणियणि तुरुन्दु वाशक्
 कौङ्गलर् कोदै मारुक्कु कुङ्गुमञ् जान्दङ् गौट्टा
 पौङ्गुवैम् मुलैहळ् पूहक् कळुत्तौडु मरैयप् पोर्त्त
 नङ्गैयैक् कण्ड वळ्ळल् नयनङ्गळ् पत्तिप्प नित्तान् 603

मङ्कलम् अणियै-अहिवात के आभरणों को; नोक्कि-दूर करके; मणि अणि-
 नवरत्नाभरण; तुरुन्तु-त्यागकर; वाचम्-सुगन्धपूर्ण; कौङ्कु अलर्-शहद-भरी;
 कौतै-पुष्पमाला को; मारुक्-हटाकर; कुङ्कुमम् चान्तम्-कुङ्कुम-चन्दन; कौट्टा-
 न लगाकर; पौङ्कु वैम् मुलैकळ्-पीन और प्यारे स्तनों को; पूक् कळुत्तौडु-
 पूगत-सम कन्धों के साथ; मरैय-छिपाते हुए; पोर्त्त-ओढ़े (रहनेवाली);
 नङ्कैयै-स्त्री तारा को; कण्ड-जिन्होंने देखा; वळ्ळल्-वे प्रभु; नयनङ्कळ्-
 आँखों को; पत्तिप्प-अश्रु से भरेने देते हुए; नित्तान्-खड़े रहे। ६०३

उस पर अहिवात के आभरण नहीं थे। मणियाँ नहीं थीं।
 सुवासित और शहद-भरे पुष्पों की मालाएँ त्याग दी गयी थीं। कुङ्कुम,
 चन्दन आदि के लेप का शृंगार नहीं था। पीन और गरम स्तनों को पूग-
 तरु-सम कन्धों के साथ ओढ़नी के अन्दर छिपाये रखकर तारा खड़ी थी।
 यह देखकर दयानिधि लक्ष्मण की आँखों से आँसू आ गये। वे वैसे ही
 स्तब्ध खड़े रहे। ६०३

इतैयरा मत्तनै यीत्तु विरुवरु मँत्तन वँन्द
 निनैविना तयर्प्पुच् चैन्ऱ नैञ्जित नैडिदु निन्ऱान्
 विनविनाट् कँदिरोर् माऱ्ऱम् विळम्बवुम् वेण्डु मँन्ऱप्
 पुत्तैहुळ लाट्कु वन्द कारियम् पुहल्व दानान् 604

अँन्तै ईन्ऱ-मेरी जननियाँ; इरुवरुम्-दोनों; इतैयर् आम्-ऐसी ही (विधवा-
 वेश में) होगी; अँत्तन-ऐसे; वँन्त नितैवितान्-झुलसानेवाले विचार से; अयर्प्पु
 चैन्ऱ-यकित; नैञ्जितान्-मन वाले हो; नैडितु निन्ऱान्-लम्बी देर तक जो खड़े
 रहे; वितवित्ताट्कु-अपने से प्रश्न करनेवाली से; अँतिर् ओर् माऱ्ऱम्-उत्तर में एक
 बात; विळम्बवुम् वेण्डुम्-कहना भी है; अँन्ऱ-यह सोचकर; अ पुत्तै कुळलाट्कु-
 उस सुन्दर केश वाली से; वन्त कारियम्-आगमन का हेतु; पुक्कल्वतु आतान्-कहने
 लगे । ६०४

वे सोचने लगे— मेरी दोनों माताएँ (कैकेयी का स्मरण नहीं हुआ)
 ऐसी ही दिखेंगी । इस तापक विचार से उनका मन दुर्बल हुआ । बहुत
 देर तक वैसे ही खड़े रहे । बाद सोचा कि प्रश्न करनेवाली को उत्तर देना
 चाहिए । इसलिए वे सुकेशिनी तारा से अपने आगमन का अभिप्राय इन
 शब्दों में कहने लगे । ६०४

शेनैयुम् यातुन् देडित् तेवियैत् तरुवै नैन्ऱ
 मानवर् कुरैत्त माऱ्ऱ मऱन्दन नरुक्कन् मैन्दन्
 आतव नमैदि वल्लै यऱियैत् वरुळिन् वन्देन्
 मेन्निलै यनैयान् शैय्ऱै विळैन्दवा विळम्बु हँन्ऱान् 605

अरुक्कन् मैन्तन्-सूर्यसूनु ने; चैन्ऱैयुम्-सेना और; यातुम्-मैं; तेवियै-देवी
 सीता को; तेडि तरुवैन्-खोज लाऊंगा; अँन्ऱ-ऐसा; मातवर्कु-मनुकुलोदित
 श्रीराम को; उरैत्त माऱ्ऱम्-जो दिया, वह वचन; मऱन्तनन्-(सुग्रीव) भूल गया;
 आतवन् अमैति-उसका अभिप्राय; वल्लै अरिति-जल्दी जान आओ; अँत्त-ऐसा
 (श्रीराम के) कहने पर; अरुळिन्-उस आज्ञा को लेकर; वन्तेन्-आया; मेल्
 निलै-उच्चस्थिति के; अतैयान् चैय्कै-उसका समाचार; विळैन्तवा-जैसे होता है;
 विळम्बुक-वैसा कहो; अँन्ऱान्-बोले । ६०५

“सूर्य-पुत्र ने मनुकुल-दीपक श्रीरामजी को वचन दिया था कि मैं और
 मेरी सेना देवी सीता को खोजकर लायगी । वह उसको भूल गया ।
 उसका मन जान आओ ।” श्रीराम ने मुझसे यह कहा और उनकी आज्ञा
 पर मैं इधर आया हूँ । उत्कृष्ट राजधन जिसे मिला है, उस सुग्रीव के कार्य
 के सम्बन्ध में आप ही कहें —लक्ष्मण ने यह कहा । ६०५

शौरुवा यल्लै यैय शिरियवर् तीमै शैय्दाल्
 आरुवाय् नीय लान्मर् ऱारुळ रयर्न्दा तल्लन्

वेरुवे रुलह मंडगुन् द्वदरै विडुत्त वल्लै
ऊरुमा नोक्कित् ताळत्ता नुदविमा रुदवि युण्डो 606

ऐय-प्रभु; चिरियवर्-छोटे लोग; तीमै चैय्ताल्-अपराध करें तो; चीरुवाय् अल्लै-कोप मत करें; आरुवाय्-शान्त हों; नी अलाल्-(इस योग्य) आपके सिवा; मरु आर् उळर्-और कौन हैं; अयरन्तान् अल्लन्-(सुग्रीव) भूले नहीं हैं; उलकम् अंडकुम्-विश्व भर में; वेरु वेरु-अलग-अलग; तूतरै विडुत्तु-दूतों को भेजकर; अ अल्लै-उन स्थलों से; ऊरुमा नोक्कि-उनके आने की प्रतीक्षा करते हुए; ताळत्तान्-विलम्ब किया (उन्होंने); उतवि-आपकी की हुई सहायता का; मारु उतवि-प्रतीकार सहायता; उण्डो-भी (हो सकती) है क्या । ६०६

(तारा ने उत्तर दिया कि) प्रभु ! छोटे लोग बुराई करें तो बड़े आपको क्रोध नहीं करना चाहिए । शान्त हो जाइये । अगर आप शान्त नहीं हो सकेंगे, तो और कौन हैं जिनमें यह गुण होगा ? और भी सुग्रीव कुछ नहीं भूले हैं । संसार भर में उन्होंने दूत भेजे हैं । उनके आने की प्रतीक्षा में वे विलम्ब कर रहे हैं । आपने जो उपकार किया, उसका प्रत्युपकार हो भी सकता है क्या ? । ६०६

आयिर कोडि तूद ररिक्कण मळैप्प वाण
पोयिनर् पुहुडु नाळुम् पुहुन्दु पुहलपुक् कोरुक्कुत्
तायिनु मित्तिय नीरे तण्णिरार् इरुम मः(ह्)दाल्
तीयन शैय्या रायिन् यावरे शैरुन रावार् 607

आयिर कोटि तूतर्-सहल करोड़ (असंख्यक) दूत; अरि कणम् अळैप्प-वानर-गणों को बुला लाने; आणै पोयिनर्-(सुग्रीव की) आज्ञा से चले हैं; पुकुत्तुम् नाळुम्-उनके आने का दिन भी; पुकुन्ततु-आ गया; पुक्कल् पुक्कोरुक्कु-शरणागतों के लिए; तायिनुम् इत्तिय-माता से बढ़कर प्यारे रहनेवाले; नीरे-आप ही; तण्णित्-कोप शान्त करने अर्ह है; अ.तु तरुमम्-वही धर्म है; तीयन् चैय्यार् आयिन्-अगर बुरा काम करते ही नहीं; चैरुत् आवार्-कोपभाजन या दंड्य होगा; यावरे-कौन । ६०७

सहस्रकोटि (असंख्यक) दूत वानर-समूहों को ले आने के लिए सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले हैं । उनके लौट आने का समय भी आ गया है । शरणागतों के लिए आप माता से भी प्यारे हैं । आपका क्रोध शान्त हो । वही धर्म है । बुरे काम करनेवाले होंगे ही नहीं तो क्रोध करने योग्य या दण्डनीय कौन होंगे ? (अपराध हो ही जाते हैं । तभी तो क्षमा की बात भी आती है ।) । ६०७

अडैन्दवर्क् कवय नीवि ररुळिय वळविल् शैल्वम्
तीडर्न्दुनुम् बणियिर् शीरुन्दा लडुवुनुन् दीळिले यन्त्रो

मडन्दैदन् पौरुट्टाल् वन्द वाळमर्क् कळत्तु माण्डु
किडन्दिल रैन्निर् पित्तु निरुक्को केण्मै यम्मा 608

नीविर्-आप; अटैन्तवर्क्कु-आपकी शरण में आये हुए लोगों को; अपयम् अरुळिय-अभय के साथ जो दी; अळवु इत् चैल्वम्-वह अनन्त सम्पत्ति; तौटर्न्तु-मिली, उस कारण; नुम् पणियिन्-आपकी सेवा की; तीरन्ताल-उपेक्षा करें तो; अनुवम्-वह भी; नुम् तौळिले-आपका ही कार्य; अन्नो-होगा न; मटन्ते तन्-रमणी सीता के; पौरुट्टाल् वन्त-कारण प्राप्त; वाळ् अमर् कळत्तु-तलवार के युद्ध की भूमि में; माण्डु किटन्तिलर्-मरकर पड़े नहीं रहे; ऐन्निन्-तो; पित्तुम्-उसके बाद भी; केण्मै-मित्रता; निरुक्को-टिकेगी क्या। ६०८

सुग्रीव आपकी शरण में आये थे। आपने उनको अभय प्रदान किया। और उन्हें फलस्वरूप अपार वैभव और सुख-भोग मिल गया। उसमें भूलकर अगर सुग्रीव आपकी सेवा त्यागेंगे तो वह भी आपके ही कृत्य का फल समझा जायगा न? सीतादेवी के कारण तलवार के साथ लड़ने योग्य युद्ध जो आयगा, उसमें वे मरे नहीं पड़ेंगे तो मित्रता भी टिकेगी क्या?। ६०८

शैम्मैशे रुळळत् तीरुहळ् शैय्दपे रुदवि तीरा
वैम्मैशेर् पहुयु मारुर् यरुचुवोर् रिक्क विट्टोर्
उम्मैये यिहळ्व रैन्नि नैळिमैया यौळिव दौन्रो
इम्मैये वरुमै यैय्दि यिरुमैयु मिळप्प रत्तरे 609

वैम्मै चेर् उळळत्तीरुक्क-निष्पक्षता से सुसंस्कृत मन वाले (आप) ने; चैय्त् पेर् उतवि-जो (उपकार) किया, वह बड़ा उपकार; तीरा-भुलाया नहीं जा सके, ऐसा; वैम्मै चेर्-भयंकर; पकैयुम् मारुर्-शत्रु को मारकर; अरुचु वीरुक्क विट्टोर्-राजा वन बैठने दिया (आपने सुग्रीव को); उम्मैये इक्कवर्-आपकी ही उपेक्षा करेंगे; ऐन्निन्-तो; नैळिमैय्य औळिवतु औन्नो-(वह उपेक्षा) यों ही आसानी से चली जायगी क्या; इम्मैये वरुमै ऐय्ति-इसी जन्म में अभावग्रस्त होकर; इरुमैयुम्-इह-पर दोनों को; इळप्पर् अन्नो-खो देंगे न। ६०९

उत्कृष्ट मन वाले आपने उपकार किया। वह बड़ा उपकार भुलाया न जाय, ऐसा आपने उनके सन्तापक शत्रु तो मारा और उन्हें राजसिंहासन पर शान के साथ आसीन कराया। अगर वे आपकी उपेक्षा करेंगे तो क्या वह आसानी से (विफल) हो जायगी? इसी जन्म में दरिद्र बनकर वे इह-पर दोनों हितों से वंचित न हो जायेंगे?। ६०९

आण्डुपोर् वालि यार्डन् मारुर् यि वस्वोन् रायिन्
वेण्डुमो तुण्यु नुम्बाल् विल्लिन् मिक्क दुण्डो
तेण्डुवार्त् तेडु हिन्नीर् देवियै यदनेच् चैव्वे
पूण्डुनिन् रुय्त्तर् पालार् नुङ्गळल् पुहुन्डु लोरुम् 610

आण्टु-तब (वाली-युद्ध के समय); पोर् वाली-योद्धा वाली का; आइइल्-बल का; माइइयितु-नाश करना; अस्पु औन्डू-आपका ही एक शर है; आयिन्-तो; तुणैयुम्-सहायक भी; वेण्टुमो-चाहिए क्या; नुम् पाल्-आपके पास रहनेवाले; विल्लितुम् मिक्कतु-धनु से बढ़कर बलवान; उण्टो-सहायक हैं क्या; तेवियै तेण्टुवार्-देवी सीता के अन्वेषक; तेटुकिन्नीर्-खोजते हैं (इतना ही); नुम् कळल्-आपके चरणों में; पुकुन्तुळोल्-आगत सुग्रीव आदि; अततै-उस (सेवाकार्य) को; चैव्वे पूण्टु निन्डू-अच्छे प्रकार से लेकर पूरा करके; उय्तल् पालार्-उद्धार पाने अर्ह हैं । ६१०

(असल में आप सहायक नहीं चाहते ।) आपके एक ही शर ने योद्धा वाली के बल को नष्ट किया । तब आपको सहायक भी चाहिए क्या ? आपके धनु से बढ़कर कोई (सहायक) क्या होगा ? आप तो सीता देवी के अन्वेषकों की खोज में हैं । आपके शरणागत सुग्रीव आदि वह सेवाकार्य अच्छी तरह से करें —यह उनका कर्तव्य ही है । ६१०

अैन्डू	ळुरैत्त	माइइस्	यावैयु	मिन्निडु	केट्टु
नन्डूणर्	केळ्वि	याळ	नरळ्वर	नाणुट्	कौण्डान्
निन्डू	निन्डू	लोडु	नीत्तनन्	मुनिवैत्	रुन्ता
वन्डूणै	वयिरत्	तिण्डोण्	मारुदि	मरुङ्गु	वन्दान् 611

अैन्डू-ऐसा; अवळ् उरैत्त माइइस्-उसके कहे वचन; यावैयुम्-सब; इत्तितु-ससंतोष; केट्टु-सुनकर; नन्डू उणर्-अच्छी तरह जाने हुए; केळ्वि-याळन्-श्रवण-ज्ञान के रखनेवाले लक्ष्मण; अरळ्वर-करुणा के आने से; नाण् उळ् कौण्ड-लाज से युक्त होकर; निन्डू-खड़े रहे; निन्डूलोडुम्-स्थित रहते ही; मुनिवु नीत्तनन्-क्रोध छोड़ गये; अैन्डू उन्ना-ऐसा सोचकर; वल् तुणै-बलवान सहायक; वयिरम् तिण् तोळ्-सारयुक्त और कठोर भुजाओं वाला; मारुति-मारुति; मरुङ्गु वन्तान्-पास आया । ६११

तारा ने जो कुछ कहा, वह सब लक्ष्मण ने सन्तुष्ट होकर सुना । लक्ष्मण ने शास्त्र खूब सुने थे और उनको खूब समझ लिया था, यानी वे बड़े ही शिष्ट थे । उन्हें दया आ गयी और लज्जायुक्त हो खड़े रह गये । जब वे ऐसे खड़े हो गये, तब हनुमान को, जिसके युगल कन्धे बड़े और सुदृढ़ थे, आश्वासन हो गया कि लक्ष्मण का क्रोध दूर हो गया । इसलिए हनुमान उनके पास आया । ६११

वन्डडि	वणङ्गि	निन्डू	मारुदि	वदन्	नोक्कि
अन्डमिल्	केळ्वि	नीयु	मयर्त्ततै	याहु	मन्ऱे
मुन्दित्त	शैय्है	यैन्डान्	मुनिविन्	मुळैक्कु	मन्वान्
अैन्दैकेट्	टरळु	हैन्ता	वियम्बित्त	नियस्व	वल्लान् 612

मुनिवित्तुम्-क्रोध में भी; मुळैक्कुम्-उत्पन्न; अन्पान्-स्नेह वाले (लक्ष्मण) ने; वन्तु-आकर; अटि वणङ्कि-पैरों पर नमस्कार करके; निन्डू-जो खड़ा रहा,

उस; मारुति वततम् नोक्कि-मारुति का मुख देख; अनुतम् इल्-अनंत; केळवि-
श्रवण-ज्ञान रखनेवाले; नीयुम्-तुम भी; मुनूतित चैय्कै-पहले (जो) हुआ (वह)
काम; अयर्त्ततै अन्ने-भूल गये न; अन्नान्-कहा; इयम्प वल्लान्-वाग्विदग्ध;
अन्तै-पिता-सम; केट्टु अरळुक-सुनने की कृपा करे; अन्ता-यह कहकर;
इयम्पित्तन्-आगे बोला । ६१२

लक्ष्मण ऐसे थे कि क्रोध करते हुए भी प्रेम रखनेवाले थे । अपने परो
पर नमन करनेवाले मारुति का मुख देखकर लक्ष्मण बोले— अपार श्रवण-
ज्ञान रखनेवाले हो तुम ! तुमने भी पहले जो हुआ उसको भुला दिया न ?
तब वाग्विदग्ध हनुमान ने कहा कि पिता (तुल्य) ! सुनने की कृपा करें ।
आगे वह यों बोला । ६१२

शिदैवहल्	कादऱ्	शायन्त्	तन्दैयक्	कुरुवैत्	तैयवप्
पदवियन्	दणरै	यावैप्	पालरैप्	पावै	मारै
वदंपुरि	हुनर्क्कु	मुण्डा	माऱऱला	माऱऱन्	माया
उदविहौन्	ऱार्क्कैन्	ऱैन्	मौळिक्कला	मुवाय	मुण्डो 613

चित्तवु अकल्-अक्षय; कातल् तायै-वात्सल्यमयी माता को; तन्तैयै-और
पिता को; कुरुवै-गुरु को; तैयवम् पतवि-देवपदासीन; अनुत्तणरै-ब्राह्मणों को;
आवै-गाथों को; पालरै-बालों को; पावैमारै-स्त्रियों को; वतै पुरिकुत्तर्क्कुम्-
जो मारते हैं (हत्या करते हैं), उनके लिए भी; माऱऱलाम् आऱऱल्-परिहार का
उपाय; उण्टाम्-होता है; माया-अविस्मरणीय; उतवि कौत्तऱार्क्कु-सहायता
(मारनेवालों) भूलनेवालों (कृतघ्नों) के लिए; मौळिक्कलाम् उपायम्-निवारण का
उपाय; औन्ऱैन्-एक भी; उण्टो-हैं क्या । ६१३

ससार में अक्षय प्रेम रखनेवाली माता की और पिता, गुरु, देवतुल्य
ब्राह्मण, गाय, बालक, स्त्री—इनकी हत्या करना बड़ा पाप है । पर ऐसे
पाप का भी प्रायश्चित्त हो सकता है । कृतघ्नता का परिहार कहीं एक भी
है क्या ? । ६१३

ऐयन्नुम्	मोडु	मैङ्ग	ळरिक्कुलत्	तरश	नोडुम्
मैय्युळ	केण्मै	याह	मेलनाळ	विळैव	दाय
शैय्यैयैन्	शैय्यै	यन्ऱो	वन्नत्तु	शिदैयु	मायिन्
उय्वहै	यैवर्क्कु	मुण्डो	वुणर्वुमा	शुण्ड	दन्ऱो 614

ऐय-सुन्दर; नुम्मोडुम्-आपके;
अरचतोडुम्-हमारे राजा सुप्रोव के बीच;
मित्रता; आक-हो ऐसा; मेलनाळ-पहले;
वह काम; अन् चैय्कै अन्ऱो-मेरा काम था न;
आयिन्-दूट जायगी तो; उय्वकै-उद्धार का मार्ग;
भी; उण्टो-होगा क्या; उणर्वु-हमारी बुद्धि;
बन जायगी न । ६१४

सुन्दर राजकुमार ! आपके साथ वानरकुल के हमारे राजा की सच्ची मित्रता स्थापित हुई । क्या वह काम मेरा नहीं है ? अगर वह टूट जायगी तो उससे जो पाप होगा उससे बचने का किसी के लिए क्या मार्ग होगा ? उसका अर्थ यही होगा न कि हमारी बुद्धि धूमिल हो गयी ! । ६१४

देवरुन् दवमुञ् जैय्यु नल्लउत् तिरुमु मरुम्
यावैयु नीरे यैन्व दैवयिर् किडन्द दैन्दाय्
आवदु निरुक् शेर् मरणुण्डो वरुळुण् डन्नेल्
मूवहै युलहड् गाक्कु मीयम्बित्तीर् मुत्तिवुण् डात्ताल् 615

अन्ताय-पिता (-सम); जैय्युम् तवमुम्-हमारी की जानेवाली तपस्या; तेवरुम्-हमारे देव; मरुम् यावैयुम्-अन्य सभी कुछ; नीरे-आप ही हैं; अन्नपतु-यह विचार; अन् वयिन्-मेरे मन में; किटन्तु-घर किये हैं; आवतु निरुक्-वह जो है एक ओर रहे; मूवकै उलकम्-त्रिवर्ग के लोकों का; काक्कुम्-पालन करने का; मीयम्पित्तीर्-बल रखनेवाले; अरुळ्-आपकी कृपा ही; उण्डु-हमारे लिए है; अन्नेल्-नहीं तो; मुत्तिवु उण्टात्ताल्-कोप करेंगे तो; चेरुम्-हम जा लगे, ऐसी; अरण् उण्डे-रक्षा का स्थान भी है क्या । ६१५

हमारे पिता (तुल्य) ! हमारे तप आप है । हमारे देव आप ही हैं । हमारे अन्य सभी कुछ आप ही हैं । यह विचार मेरे मन में घर किये है । वह एक ओर रहे—तीनों लोकों का पालन करने में समर्थ ! आपकी कृपा ही हमारी गति है ! अगर कृपा न रहे और क्रोध भी हो जाय तो हम कहाँ जायेंगे, जहाँ हमें शरण मिलेगी ? । ६१५

मरुन्दिलत् कवियिन् वेन्दन् वयप्पडै वरुविप् पारै
तिरुन्दिर् मेवि यन्तार् शेर्वदु पार्त्तुत् ताळ्त्तान्
अरुन्दुणै नुमक्कुत् तान्ऱत् वाय्मैयै यळिक्कु मायिन्
पिरुन्दिल तन्ऱे यौन्ऱो नरहमुम् पिळैप्प दन्ऱाल् 616

कवियिन् वेन्तन्-कपिराज; मरुन्तिलन्-नहीं भूले; वय पडै-विजय-वाहिनी को; वरुविप्पारै-बुला लानेवालों को; तिरुम् तिरुम्-(पृथ्वी के) भाग-भाग में; एवि-भेजकर; अन्तार् चैर्वतु-उनके आने की; पार्त्तु- (राह) देखते हुए; ताळ्त्तान्-विलम्ब किया (सुग्रीव ने); अरुम् तुणै-धर्म-मित्र; नुमक्कु-आपके विषय में; तान्-स्वयं; तन् वाय्मैयै-अपने सत्य का (वचन का); अळिक्कुम् आयिन्-भंग कर देंगे तो; पिरुन्तिलन् अन्ऱो-जनित नहीं है न (जन्म वृथा हो गया न); यौन्ऱो-क्या वही एक है; नरकमुम्-नरक भी; पिळैप्पतु अन्ऱु-छोड़ेंगे नहीं । ६१६

कपिकुलपति भूले नहीं हैं । विजयवाहिनी को बुलाने के लिए दूत भेजे जा चुके हैं । दूतों को स्थान-स्थान पर भेजकर वे उनके लौट आने

का रास्ता देख रहे हैं। आप धर्मपालक हैं। अगर आपके प्रति सत्य व्यवहार को सुग्रीव विगाड़ देंगे तो वे पैदा हुए ही नहीं, ऐसा न समझे जायेंगे (जन्म असफल हुआ रहेगा न) ? यह एक बुरा नतीजा ही नहीं— उन्हें नरक का वास भी मिलने से नहीं चूकेगा। ६१६

उदवाम	लौखन्	शैव	बुदविकुक्	कैम्मा	राह
मदवानै	यनैय	मैन्द	मरु	मौन्लहि	लुण्डो
शिदैयाद	शैरवि	लत्तान्	मुत्तुशैरु	शैरनर्	मार्दिन्
उदैयाने	लुदैयुण्	डावि	युलैयाने	लुखैन्	मत्तुनी 617

मत्तम् आत्तं—मत्तगज; अत्तैय मेन्त—समान वीर; उतवामल्—विना उपकृत हुए ही; लौखन् चैयत्—जिसने किया; उतविकुक्—उत्त उपकार के; कैम्माअ आक—बदले में; मरुम् औन्—और कुछ; उलकिल्—संसार में; उण्टो—होगा क्या; चित्तैयात् चैरविल्—पूर्ण युद्ध में; अत्तान् मुत्तु चैन्—उसके पूर्व ही जाकर; चैरनर् मार्पिल्—शत्रु के वक्ष में; उतैयानेल्—वाण गड़ा न दे तो भी; उत उण्टु—वाण से आहत होकर; आवि उलैयानेल्—प्राण नहीं छोड़ेगा तो; उरु अन्—(फिर) उससे नाता क्या; (मन्—ओ... पूरक ध्वनियाँ)। ६१७

मत्तगज—सदृश महावीर ! अहेतुक उपकार का कोई प्रत्युपकार इस संसार में सम्भव है क्या ? घोर युद्ध में उन (उपकारी) के पहले ही जाकर शत्रु के वक्ष पर वाण चलाना (या लात मारना) चाहिए। अगर वह न हो सके तो शत्रु का शर वक्ष में लेकर प्राण छोड़ नहीं देगा तो ऐसे उपकृतों के साथ सम्बन्ध से क्या होनेवाला है ?। ६१७

ईण्डिनि	निरु	लैन्व	दिनियदो	रियल्विड्	रत्तुआल्
वेण्डल	ररिव	रेनुड्	गेन्मैदीर्	विनैयिड्	रामाल्
आण्डहै	याळि	मौय्म्वि	नैयनी	रळित्त	शैल्वम्
काण्डिया	लुन्मुन्	वन्द	कविककुलक्	कोनी	उत्तुआन् 618

आण् तर्कै—पौरुषयुक्त; आळि—‘याळि’ (नामक बलवान जानवर) के समान; मौय्म्विन्—बलवान; ऐय—प्रभु; नी—आप; ईण्टु—यहां; इत्ति—अब भी; निरुल् अत्तु—खड़े रहने का यह काम; इयल्पिड् अन्—(मित्रता के लिए) स्वामाविक नहीं; वेण्टलर्—शत्रु लोग; अरिवरेल्—जान लेगे तो; मुम् केन्मै—आपकी मित्रता; तोर् विनैयिड् आम्—टूट जाय, ऐसा अनर्थकारी हो जायगा; नीर् अळित्त चैल्वम्—आपने दिया, यह धन; उन् मुत्तु वन्त—आपके अग्रज (के रूप में सम्मानित); कवि कुलम्—कपिकुल के; कोन् औटु—राजा के साथ; काण्टि—आकर निहार लें; अन्तु—कहा (हनुमान ने)। ६१८

पौरुषयुक्त “याळि” सदृश बलवान प्रभु ! आप आगे भी यहाँ खड़े रहेंगे, तो वह मधुर-सम्बन्ध का लक्षण नहीं होगा। शत्रु जानेंगे तो हमारी मित्रता के नाश का कारण बन जायगा। आपने जो वैभव

हमें दिलाया उसे, और आपके बड़े भाई के रूप में स्वीकृत हमारे वानरयूथों के पति सुग्रीव को आकर निहारें। हनुमान ने आमन्त्रित किया। ६१८

मारुति	मारुड्	गेट्ट	मलैपुरै	वयिरत्	तोळान्
तीरुवित्तै	शैन्ऱु	निन्ऱु	शीरुत्तान्	शिन्दै	शैय्दान्
आरिय	नरुळिऱ्	रीरुन्दा	तल्लन्वन्	दडुत्त	शैल्वम्
पेरुवरि	दाहच्	चैय्द	शिरुमैया	लैन्नुम्	वैरि 619

मारुति-मारुति का; मारुड्-केट्ट-उत्तर सुननेवाले; मलै पुरै-पर्वत की समानता करनेवाले; वयिरम् तोळान्-सारयुक्त कन्धों वाले; तीरु वित्तै चैन्ऱु-हटने पर तत्पर; निन्ऱु-जो रहा; शीरुत्तान्-वैसा क्रोध जिनका था (क्रोध-रहित हो); आरियन् अरुळि-आर्य श्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा की; तीरुन्तान् अल्लन्-उपेक्षा नहीं की है; वन्तु अटुत्त चैल्वम्-अपने को प्राप्त वैभव-सुख-भोग को; पेरु अरितु आक-मूलना कठिन था, इसलिए; चैय्द चिरुमैयान्-अल्पकर्मा हो गया है; अैन्नुम् पेरु-यह स्वाभाविक फल; चिन्तै चैय्दान्-मन में सोचा (लक्ष्मण ने)। ६१६

लक्ष्मण ने मारुति के वचन सुने। अब पर्वतोन्नत भुजा वाले वे गतक्रोध हो गये थे। उन्हें पता लग गया कि सुग्रीव ने श्रीराम की आज्ञा की उपेक्षा नहीं की है, वरन् यह नई प्राप्त सम्पत्ति का गुण था जो उसे सुख-भोग से अलग होने नहीं दे रहा था। इसके कारण वह गुणहीन हो गया था। लक्ष्मण ने इस तथ्य को समझा। ६१९

अतैयदु	करुदिप्	पिन्ऱु	ररिक्कुलत्	तवत्तै	नोक्कि
निनैयौरु	मारुड्	मिन्ऱु	निहळ्त्तुव	डुळुडु	निन्वाल्
इत्तैयन्	वुरैत्तऱ्	कैरुड्	वैण्णुदि	यिवैन्ती	यैन्ता
वनेहळल्	वयिरत्	तिण्डोण्	मत्तिळड्	गुमरन्	शैल्वान् 620

अतैयदु करुति-उसको सोचकर; पिन्ऱु-वाद; वत्तै कळल्-पुनिमित्त वीर-कटक; वयिरम् तिण् तोळ्-हीर के समान कठोर कन्धे; मत् इळम् कुमरन्-(इनके साथ शोभायमान) चक्रवर्तीकुमार; अरि कुलत्तवत्तै-वानरकुल के उस (हनुमान) को; नोक्कि-देखकर; इत्तै-अभी; नित्तै-तुम्हीं; और मारुड्-एक समाचार; निकळ्त्तुव-कहना; उळु- (रहता) है; इत्तैयन्-यह; निन्पाल उरैत्तऱ्कु-तुम्हारे पास; एरुड्-कहने योग्य है; नी इवै अैण्णुति-तुम ये बातें सोचो; अैन्ता-कहकर; चैल्वान्-कहने लगे। ६२०

यह सोचकर, कारीगरीयुक्त स्वर्ण-पायलों और वज्र-सम कठोर भुजाओं से भूषित राजकुमार लक्ष्मण ने वानरकुल के हनुमान से कहा कि मारुति! तुमसे कुछ बातें कहनी हैं। ये बातें तुम्हीं से कहने योग्य हैं। तुम सुनो और उन पर विचार करो। वे आगे गये बोले। ६२०

देवियैक्	कुश्चित्तुच्	चैर्ऱ	शीर्ऱमु	मानत्	तीयुम्
आवियैक्	कुश्चित्तु	निन्ऱ	वैयत्तै	यदनैक्	कण्डेन्
कोवियर्	ऱरुमम्	नीङ्गक्	कौडुमैयो	डुर्वु	कूडिप्
पावियर्क्	केर्ऱ	शैय्यक्	करुदुवल्	पळियुम्	पारेन् 621

तेवियै कुश्चित्तु-देवी सीता (के हरण। के कारण; चैर्ऱ-शत्रु के प्रति हुआ; चीर्ऱमुम्-रोष और; मानम्-(अप-) मान की; तीयुम्-आग दोनों; ऐयत्तै आवियै कुश्चित्तु-प्रभु श्रीराम के प्राणों को लक्ष्य बनाकर; निन्ऱ-(क्रियाशील) खड़े हैं; अतत्तै कण्डेन्-इसको मैंने देखा; को इयल्-राजा के लिए उचित; तरुमम् नीङ्ग-धर्म छोड़कर; कौडुमैयोडु-कूरता से; उर्ऱवु कूटि-सम्बन्ध स्थापित करके; पावियर्कु-पापी जनो के; एर्ऱ-योग्य; चैय्य-(काम) करना; करुदुवल्-सोचूंगा; पळियुम्-(उससे मिलनेवाली) निन्दा; पारेन्-की भी परवाह नहीं करूंगा। ६२१

श्रीराम की बात सोचो। देवी के अपहरण से उत्पन्न शत्रुता-भरा क्रोध और अपमान-भावना की आग उनके प्राणों को खाये जा रही है। उसको प्रत्यक्ष देखकर मेरे मन में यह भाव उठा कि राजधर्म छोड़ दूँ; कूरता के धर्म से नाता जोड़ लूँ और पापी-योग्य (आत्म-) घातक कार्य कर लूँ; और इसमें अपयश की परवाह नहीं करूँ। ६२१

आयिनु	मैन्तै	यात्ते	यार्ऱिनिन्	ऱवि	युय्नुडु
नायहन्	ऱनैयुन्	दैर्ऱ	नाळ्पल	कळिन्द	वन्ऱेल्
तीयुमिव्	वुलह	मून्ऱुन्	दैवरुम्	वीव	रौन्ऱो
वीयुनल्	लरुमुम्	वोहा	विदियैयार्	विल्क्कक्	पालार् 622

आयितुम्-तो भी; मैन्तै-अपने को; यात्ते आर्ऱि निन्ऱु-स्वयं शान्त करके; ऱवि उय्नुत्तु-प्राणधारण करके; नायकन् तनैयुम्-नायक श्रीराम को भी; तेर्ऱ-ढाढ़स दिलाने में; नाळ्पल कळिन्त-अनेक दिन बीत गये; अन्ऱेल्-नहीं तो; इ उलकम् मून्ऱुम्-ये तीनों लोक; तीयुम्-जल जाते; तेवरुम् वीवर्-देव भी मर जाते; रौन्ऱो-यही एक है क्या; नल् अरुमुम्-श्रेष्ठ धर्म भी; वीयुम्-मिट जाते; पोका-अटल; वितियै-विधि को; विल्क्कल् पालार्-टाल सकनेवाले; यार्-कौन हैं। ६२२

तो भी मैंने स्वयं अपने को धीरज बँधा लिया। अपने प्राणों को रख लिया। नायक श्रीराम को भी ढाढ़स दिलाया। इसी में अनेक दिन बीत गये। नहीं तो (अगर हम अपना गुस्सा शान्त नहीं करते तो), ये तीनों लोक जल जाते! देवगण मिट जाते। क्या वहीं तक समाप्त होता? श्रेष्ठ धर्म भी मिट जाते। अनिवार्य प्रारब्ध कर्म का निवारण कौन कर सकता है?। ६२२

उन्ऱैक्कण्	डुङ्गोन्	ऱन्ऱै	युर्ऱिडित्	तुदवुम्	वैर्ऱिक्
कैन्ऱैक्कण्	उनन्वोर्	कण्डिङ्	गित्तुणै	नैडिडु	वैहित्

तन्त्रैक्कीण् डिहन्दे ताळत्ता तन्त्रैनिर् रनुवीन् शाले
मिन्त्रैक्कण् डन्त्रैया डन्त्रै नाडुदल् विलक्कर् पाड्शो 623

उन्त्रै कण्टु—(श्रीराम) तुम्हें देखकर; उड्ड इटत्तु—संकट के अवसर पर; उतवुम् पेरुक्कु—उपकार करने के स्वभाव में; उम् कोन् तन्त्रै—तुम्हारे राजा को; अन्त्रै कण्टत्तन् पोल्—(जैसे) मुझे देखते हैं, वैसे (भाई) भानकर; इ तुणै—इतना; नैटितु वैकि—लम्बा काल बिताकर; तन्त्रै कौण्टु—अपने को (किसी तरह) जीवित; इहन्ते ताळत्तान्—रखते हुए क्षमाशील रहे; अन्त्रु अन्त्रिन्—नहीं तो; तत्तु औन्त्राले—धनु, एक से; मिन्त्रै कण्टु अन्त्रैयाळ् तन्त्रै—विद्युत्-सी दिखनेवाली सीताजी को; नाटुतल्—खोजना; विलक्कल् पाड्शो—रोका जा सकता है क्या । ६२३

श्रीराम ने तुम्हें देखकर तुम्हारे राजा को मेरे समान (अपना भाई) माना । अपने उपकारी स्वभाव के अनुकूल समय पर सहायता की । सुग्रीव के प्रति सम्मानभाव के ही कारण वे इतने दिन अपने प्राणों की रक्षा करते रह गये । नहीं तो वे अपने धनु की सहायता से ही अपनी विद्युत्-सम कान्ति वाली देवी को खोज लेते ! उनको उस काम से रोका जा सकता है क्या ? । ६२३

औन्त्रुमो वात्त मन्त्रि युलहमुम् पदिता लुळ्ळ
वैन्त्रिमाक् कडलु मेळ्ळे मलैयुळ्ळ वैन्त्र वेयाय्
निन्त्रदो रण्डत्तु तुळ्ळे यैन्त्रिदु नैडिय दौन्त्रो
अन्त्रुनीर् शौन्त्र मार्शन् दाळ्वित्तल् करुम सन्त्राल् 624

वात्तम्—आकाश; औन्त्रुमो—केवल एक है क्या; अन्त्रि—वही नहीं; पदिताल् उळ्ळ—चौदह (की संख्या में) रहनेवाले; उलकमुम्—लोक और; वैन्त्रि—विजयी; मा कटल्—बड़े समुद्र; एळुम्—सातों; मलै एळुम्—पर्वत सात; उळ्ळ—(इसके अन्दर) हैं; अन्त्रुवे—ऐसा; आय् निन्त्र—स्थित रहनेवाले; ओर् अण्टत्तु उळ्ळे—एक अण्ड में; अन्त्रि—(कहीं एक कोने में) रहती हैं तो; अतु—वह (वहाँ पहुँचना); नैडियतु औन्त्रो—बड़ा काम है क्या; अन्त्रु—उस दिन; नीर् चौन्त्र मार्शम्—तुमने जो दिया, वह वचन; ताळ्वित्तल्—(पालन करने में) देरी करना; करुम अन्त्रु—(योग्य) काम नहीं । ६२४

आकाश क्या ? चौदहों लोक, अजेय सातों समुद्र, सातों कुलगिरियाँ आदि से भरे इस अण्ड में कहीं किसी भी कोने में क्यों न हो, अगर देवी रहेंगी तो उनको ढूँढ़कर ले आना क्या कोई अतिकठिन काम होगा ? लेकिन तुम लोगों ने जो वचन दिया, उसकी उपेक्षा करके विलम्ब करना तुम्हारे लिए योग्य काम नहीं है ! । ६२४

ताळ्वित्ती रल्लीर् पन्ना डरुक्किय वरक्कर् तम्मै
वाळ्वित्ती रिमैयोर्क् किन्तल् वरुवित्तीर् मरबिर् श्रीराक्

केळ्वित्ती याळर् तुन्वड् गिळर्वित्तीर् पावन् दन्तै
मूळ्वित्तीर् मुनिया दानै मुनिवित्तीर् मुडिदि रैन्डान् 625

ताळ्वित्तीर् अल्लीर्-विलम्ब (ही) नहीं किया; पल् नाळ् तरक्किय-कई दिनों से घमण्ड के साथ फिरनेवाले; अरक्कर् तम्मै-राक्षसों को; वाळ्वित्तीर्-जीवित रख दिया; इमैयोर्क्कु-देवों को; इन्तल् वरवित्तीर्-कष्ट दिलाया; मरपिन् तीरा-धर्म-क्रम से दूर न जानेवाले; केळ्वि-श्रवण-ज्ञानी; ती आळर्-अग्निहोत्री ब्राह्मणों के; तुन्पम् किळर्वित्तीर्-दुःख को बढ़ाया; पावम् तन्नै-पाप को; मूळ्वित्तीर्-उकसाया; मुनियातालै-जो (साधारण रूप से) क्रोध नहीं करते, उन श्रीराम को; मुनिवित्तीर्-क्रोध करने को मजबूर कर दिया; मुडितिर्-मरो; रैन्डान्-(लक्ष्मण ने) कहा । ६२५

तुमने केवल विलम्ब ही नहीं किया ! (तुम्हारे विलम्ब से अन्य अनर्थ भी हो गये ।) बहुत काल से गर्व के साथ फिरनेवाले राक्षसों की आयु को तुमने बढ़ने दिया ! देवों को कष्ट दिलाया । यथाविधि अर्जित शास्त्रज्ञान रखनेवाले और यागाग्नि के पालक मुनियों का दुःख बढ़ाया । पाप को वर्धित कर दिया । जो साधारण रूप से क्रोध नहीं करते, उग श्रीराम को क्रोध से युक्त कर दिया । मरो सब ! —लक्ष्मण ने झुंझलाहट के साथ कहा । ६२५

तोन्डलः(ह) दुरैत्त लोडु मारुदि तौळुडु तौल्लै
आन्डन् लडिअ पोय पौरुण्मनत् तडैप्पा यल्लै
एन्डु मुडिये मॅन्नि निरुत्तुमित् तिरुत्तुक् कैल्लाम्
शान्द्रिति याने पोन्डुन् इन्मुनैच् चार्दि यैन्डान् 626

तोन्डल्-सुन्दर राजकुमार (के); अ. तु-वह; उरैत्तलोडुम्-कहते ही; मारुदि-हनुमान; तौळुत्तु-नमस्कार करके; तौल्लै-प्राचीन; आन्ड-श्रेष्ठ; नूल्-ग्रन्थों के; अडिअ-जाता; पोय पौरुळ्-वीती बातें; मतत्तु-मन में; अटैप्पाय् अल्लै-रखें मत; एन्डु-लिया हुआ काम; मुडियेम्-पूरा नहीं करेंगे; मॅन्निन्-तो; इरुत्तुम्-प्राण छोड़ देंगे; इ तिरुत्तुक्कु कैल्लाम्-इन सब बातों के लिए; इति-आगे; नात्तै चान्द्र-मैं खुद साक्षी हूँ; पोन्डु-अन्दर पधारकर; उन् तन् मुनै चार्ति-अपने बड़े भाई से मिलिए; यैन्डान्-कहा । ६२६

जब सुन्दर मुमित्रानन्दन ने यह बात कही, तब मारुति ने नमस्कार करके कहा कि हे प्राचीन और श्रेष्ठ शास्त्रों के विद्वान् ! वीती बातों को मन में मत रखिये । हम अपने वचन के अनुसार अपनायी हुई सेवा पूर्ण न करेंगे तो हम मर जायेंगे । इन सबका मैं ही साक्षी रहूँगा । आप अन्दर पधारें और अपने बड़े भाई के स्थान में रहनेवाले सुग्रीव से मिलें । ६२६

मुन्तुनी शौल्लिङ् रत्नो मुयत्तुदु मुयर्च्चि दानुम्
 इन्तुनी धिशैतत् शैवा नित्यैन्दत् मैन्नु कूरि
 अन्तदो रमैदि यात्तु नरुळिशिदि दडिवा तोक्किप्
 पौन्त्तिन्वार् शिलैयि त्तानु मारुदि योडुम् पोत्तान् 627

पौन्त्तिन्-स्वर्ण के; वार् चिलैयित्तानुम्-ठले धनु के धारक (लक्ष्मण) भी;
 मुन्तुम्-पहले भी; मुयत्तुदु मुयर्च्चि तानुम्-हमने जो किया, वह कार्य भी; नी
 चौल्लिङ् अत्तो-तुम्हारा कहा हुआ था न; इन्तुम्-आगे भी; नी इचैत्त-तुम
 जो कहो; चैवात्त-वह करने को; इयैत्तत्तम्-सम्मत है; अन्नु कूरि-ऐसा कहकर;
 अन्तत्तु ओर्-वैसी एक; अमैतियात्त तत्-स्थिति में रहनेवाले; अरुळ (सुग्रीव की)
 दया; चिडित्तु-थोड़ा; अडिवात्त-समझने का; नोक्कि-विचारकर; मारुतियोडुम्-
 मारुति के साथ; पोत्तान्-गये । ६२७

पिघले स्वर्ण से निर्मित धनु के धारक लक्ष्मण ने हनुमान से यों कहा ।
 पहले जो प्रयास हमने अपना लिये थे, वे भी तुम्हारे ही कहे हुए थे न ?
 वैसे ही आगे भी हमने तुम्हारी बात मानने को स्वीकार किया है । फिर
 वे पूर्वकथित स्थिति में रहनेवाले सुग्रीव का मनोभाव जानने के विचार से
 मारुति के साथ गये । ६२७

अयित्विळिक् कुमुदच् चैव्वाय् चिलैन्दु लत्तन्प् पोक्किन्
 मयिलियर् कौडित्ते रत्तुत्त मणिनहैत् तिणिवेय् मैन्नुट्
 कुयिन्मौळिक् कलशक् कौङ्गै मिन्त्तिडैक् कुमिळैर् मूक्किन्
 पुयलियर् कून्तत् मादर् कुळात्तौडुन् दारै पोत्ताळ् 628

तारै-तारा; अयिल् विळि-भाले के समान आँखें; कुमुतम् चैव्वाय्-कुमुद
 जैसे लाल अधर; चिलै नुतल्-(और) धनुसदृश भौहें; अन्तम् पोक्किन्-हंस की-
 सी चाल; मयिल् इयल्-कलापी-सी छटा; कौटि तेर् अल्कुल्-पताकाओं से अलंकृत
 रथ के समान कटि-प्रदेश; मणि नर्कै-मुक्ता-सम दाँत; तिणि वेय्-सुदृढ़; मैन्
 तोळ्-मृदुल कन्धे; कुयिल् मौळि-कोयल की-सी बोली; कलचम् कौङ्कै-स्वर्णकलश-
 सम उरोज; मिन् इटै-विद्युत्-सी कमर; कुमिळ्-'कुमिळ्' नामक फूल के समान;
 एर्-सुन्दर; मूक्किन्-नाक; पुयल् इयल् कून्तल्-मेघ-सम केश; मातर् कुळात्तौडुम्-
 (इनसे युक्त) स्त्रियों के समूह के साथ; पोत्ताळ्-लौट चली । ६२८

तारा अपनी दासियों और सहेलियों के वृन्दों के साथ लौट चली ।
 वे स्त्रियाँ भी कितनी सुन्दर थीं ! भाले के समान आँखें, कुमुद जैसे
 अधर, धनु के आकार की भौहें, हंस की-सी चाल, मयूर-सम आभा,
 ध्वजालंकृत रथों के समान कटि-प्रदेश, मोतियों के समान दाँतों की सुन्दरता,
 सुदृढ़ वंशवृक्ष के समान कोमल कन्धे, कोकिल का-सा कण्ठस्वर, स्वर्ण
 कलश-सम उरोज, बिजली-सी कमर और 'कुमिळ्' नामक फूल के समान
 नासिका और काले मेघ के समान केश —हर एक स्त्री का यह साज था ।

(तारा की वैधव्य-स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने के लिए स्त्रियों का यह वर्णन कवि द्वारा विशेष रूप से किया गया है ।) । ६२८

वल्लमन् दिरिय रोडु -वालिहा दलनु मैन्दन्
अल्लियड् गमल मन्तुन अडिपणिन् दच्चन् दीरन्दान्
विल्लियु मवनै नोक्कि विरैविनेन् वरवु वीर
शौल्लुदि नुन्दैक् केन्डा नन्ऱेनन् तौळ्ळु पोत्तान् 629

वालि कातलन्तुम्-वाली का प्यारा (पुत्र) भी; वल्ल-समर्थ; मन्तिरियरोडु-मन्त्रियों के साथ; मैन्तन्-(राजकुमार) लक्ष्मण के; अल्लि-पंखुड़ियों-सहित; अम् कमलम् अन्त-सुन्दर कमल के समान जो रहे; अटि पणिन्तु-(उनके) चरणों पर नमस्कार करके; अच्चम् तीरन्तान्-भय-विमुक्त हुआ; विल्लियुम्-धनुर्धर (लक्ष्मण) ने भी; अवतै नोक्कि-उसको देखकर; वीर-वीर; अन् वरवु-मेरा आना; नुन्तैक्कु-अपने पिता को; विरैविन्-जल्दी; शौल्लुति-कहो; अन्ऱान्-कहा; नन्ऱ-अच्छा; अन्त-कहकर; तौळ्ळु-नमस्कार करके; पोत्तान्-(अंगद) गया । ६२६

वाली के पुत्र अंगद ने लक्ष्मण को देखा, जो राजनीति और उससे सम्बन्धित शास्त्रों में कुशल मन्त्रियों के साथ आ रहे थे । उसने लक्ष्मण के पंखुड़ियों सहित खिले हुए सुन्दर कमल के समान चरणों पर झुककर नमस्कार किया । लक्ष्मण की करुणा देखकर उसका भय जाता रहा । धनुर्धर लक्ष्मण ने अंगद से कहा—वीर ! तुम जाओ और अपने पिता से मेरा आना बताओ । अंगद, “अच्छा” कहकर नमस्कार करके चला । ६२९

पोनपिन् डादै कोयिल् पुक्कवन् पौलन्गौळ् पादम्
तानुऱप् पऱ्ऱि मुऱ्ऱन् दैवन्दु तडक्कै वीरन्
मातवऱ् किल्लैपोन् वन्दुन् वायिलिन् पुऱत्तान् चीऱ्ऱम्
मीनुयर् वेलै मेलुम् पैरिदिदु विळैन्द दैन्ऱान् 630

सैट के वीरन्-बड़े हाथों वाले (अंगद) ने; पोन् पिन्-जाने के पश्चात्; तातै कोयिल् पुक्कु-पिता के महल में जाकर; अवन्-उसके; पौलम् कौळ् पातम्-सुन्दरता-युक्त चरणों को; तान् उऱ् पऱ्ऱि-खूब पकड़कर; मुऱ्ऱम् तै वन्तु-पूर्णरूप से सहलाकर; मातवऱ्कु-श्रीराम के; इळैयोन्-कनिष्ठ; वन्तु-आकर; उन् वायिलिन् पुऱत्तान्-आपके महल के द्वार के बाहर खड़े हैं; चीऱ्ऱम्-उनका क्रोध; मीन् उयर्-मकर-भरे; वेलै मेलुम्-समुद्र से बढ़कर; पैरिदु-अधिक है; इतु विळैन्तु-यह (कार्य) हुआ है; अन्ऱान्-कहा । ६३०

विशाल और दीर्घ हाथों वाला वीर अंगद वहाँ से चलकर अपने (छोटे) पिता के महल के अन्दर गया । उसने सुग्रीव के स्वर्ण-सम पैरों को पकड़कर सहलाया और कहा कि सम्मान्य श्रीराम के छोटे भ्राता लक्ष्मण

तुम्हारे महल के द्वार पर खड़े हैं। उनका क्रोध मकरालय से भी बड़ा है। यह समाचार है। ६३०

अरिवुर्	महळिर्	वैळ्ळ	मलमरु	समलै	नोक्किप्
पिरिवुर्	मयक्कत्	तान्मुन्	दुर्दोर्	पैर्	योरान्
शैरिपोर्	रलङ्गल्	वीर	शैय्दिलङ्	गुर्	नम्मैक्
करुवुर्	पौरुळ्कु	कैन्तो	कारणङ्	गण्ड	दैन्ऱान् 631

अरिवु उर् मकळिर् वैळ्ळम्-बात जो जान गयीं, उन स्त्रियों की भीड़ के; अलमरुम्-थराने के; अमलै-शोर को; नोक्कि-देखकर; पिरिवु उर् मयक्कत्तान्-छूटे हुए भ्रम वाले (सुग्रीव) ने; मुन्तु-पहले; उर्दु ओर् पैर्-जो हुआ वह समाचार; ओरान्-न जानकर; चैर् पौन् तार्-पक्के सोने के हारों से भूषित; अलङ्कल् वीर-मालाधारी वीर; कुर्दुम् चैय्तिल्लम्-(हमने) कोई अपराध नहीं किया; नम्मै-हम पर; करुवु उर् पौरुळ्कु-क्रोध करने की बात के लिए; कारणम् कण्डतु-हेतु देखा; कैन्तो-क्या; दैन्ऱान्-पूछा। ६३१

सुग्रीव ने थोड़ा जागकर देखा। अंगद के वहाँ आने से वहाँ रहनेवाली स्त्रियों में खलबली-सी मची हुई थी। सुग्रीव अपने मोह से छूटकर पूर्ण रूप से जागा। उसको बीती बातों का कोई ज्ञान नहीं रहा। उसने अंगद से पूछा कि हे स्वर्णधनहारधारी वीर! हमने अपराध तो कुछ नहीं किया। फिर हम पर क्रोध करने का क्या कारण उन्हें मिला है?। ६३१

इयैन्दना	ळल्लै	नीशैन्	रैय्दलै	शैल्व	मैय्दि
वियन्दनै	युदवि	कौन्ऱाय्	मैय्थिलै	यैन्त	वीङ्गि
उयर्न्ददु	शीर्	मर्	दुर्दु	शैय्य	मुर्दुम्
नयन्दैरि	यनुमन्	वेण्ड	नल्हित	तम्मै	यित्तुम् 632

इयैन्त नाळ्-सहमत दिनों की; अल्लै-अवधि पर; नी-आप; चैन्ऱु अय्तलै-जा नहीं पहुँचे; चैल्वम् अय्ति-विभव प्राप्त कर; वियन्तनै-इतराते हैं; उतवि कौन्ऱाय्-उपकार का हनन कर चुके; मैय् इलै-सत्य पालन नहीं है; अँतत-ऐसा सोचकर; चीर्दुम्-क्रोध; वीङ्कि-बढ़कर; उयर्न्ततु-उठा; नयम् मुर्दुम्-नीति की सभी बातें; तैरि अतुमन्-जो जानता है, उस हनुमान ने; अतु उर्दुतु-उसके (शमन करने) योग्य (कार्य); चैय्य-किया और; वेण्ट-प्रार्थना की, तब; नम्मै-हमको इत्तुम्-अब भी; नल्कित्तन्-जीवित रहने दिया। ६३२

अंगद ने सुग्रीव से आगे कहा कि आप निर्धारित अवधि के दिन में श्रीराम के पास नहीं गये। सुख-भोग में इतराते रहे। कृतघ्न बन गये। और झूठे हो गये। ऐसा समझकर लक्ष्मण का कोप बढ़ा-चढ़ा। तब नीति और न्याय-मार्ग सब जाननेवाले हनुमान ने लक्ष्मण के क्रोध को दूर

करने योग्य उपचार किये और लक्ष्मण से विनय की। उसी के फलस्वरूप आज उन्होंने हमको जीवित रहने दिया है। ६३२

वरुहिन्ऱु वेह नोक्कि वानर वीरर् वानैप्
 पोरुहिन्ऱु नहर वायिर् पोरुक्कद वडैत्तुक् कर्कुन्
 इरुहोन्ऱु मिल्ला वण्णम् वाङ्गिन रडुक्कि मर्ऱुम्
 तैरिहिन्ऱु शिनत्ती पौङ्गच् चैरुच्चेय्वान् शैरुक्कि निन्ऱार् 633

वानर वीरर्-वानर वीर; वरुहिन्ऱु वेकव नोक्कि-लक्ष्मण का आगमन देखकर; वानै पोरुहिन्ऱु-गगनस्पर्शी; नकरम् वायिल्-नगर-द्वार; पौन् कतवु-स्वर्णकण्ठ; अटैत्तु-वन्द करके; अरुडु-पास; ओन्ऱुम् इल्ला वण्णम्-कोई न रहे, वैसा; कल् कुन्ऱु-चट्टानों को; वाङ्किन्ऱु-ले आकर; अटुक्कि-जोड़कर रखा; मर्ऱुम्-और; तैरिहिन्ऱु-प्रकट जो हो रहा; चित्तम् ती-उस क्रोध की आग के; पौङ्क-भस्मकते; चैरु चैय्वान्-युद्ध करने; चैरुक्कि निन्ऱार्-गर्वाग्रत खड़े रहे। ६३३

लक्ष्मण बहुत तीव्र गति से आ रहे थे। उनकी गति देखकर वानर वीरों ने आकाश से टकरानेवाले हमारे नगर-द्वार को वन्द किया और वहाँ मिलनेवाली गिरियों को, बिना एक को छोड़े ले आकर कपाट के पीछे जोड़ रखा। और वे अपनी क्रोधाग्नि को प्रकट करते हुए लक्ष्मण से लड़ने के लिए सन्नद्ध खड़े रहे। ६३३

आण्डहै यदनै नोक्कि यम्भन्ऱुक् कमलत् ताल्लि
 तीण्डिनन् शीण्डा मुत्तन् दैर्कोटु वडक्कुच् चैल्ल
 नीण्डहन् मदिलुङ् गौर्ऱु वायिलु निरैत्त कुन्ऱुङ्
 कीण्डन तहर्न्ऱु पित्तन् पौटियोटुङ् गौळीय वन्ऱे 634

आण् तकै-पौरुषयुक्त लक्ष्मण ने; अतनै नोक्कि-उसको देखकर; अम्-सुन्दर; कमलम् मलर्-कमलसुमन-सम; ताल्लि-चरणों से; तीण्डित्तन्-स्पर्श किया; तीण्डा मुत्तम्-छूने से पहले; तैर्कोटु वडक्कु चैल्ल-दक्षिण से उत्तर में खिंचा; नीण्ड कल् मत्तिलुम्-लम्बा पत्थर का प्राचीर और; गौर्ऱुम् वायिलुम्-विजयद्वार; निरैत्त कुन्ऱुम्-जोड़कर रखे हुए पर्वत भी; तहर्न्ऱु-टूटकर; कीण्डत्त-बिखर गये; पित्तन्-वाद; पौटियोटुम् गौळीय-धूल के साथ मिल गये। ६३४

पौरुषपूर्ण लक्ष्मण ने वानरों का वह कृत्य देखा और अपने सुन्दर कमल-चरणों से कपाट पर लात मारी। उनके चरण स्पर्श के लगने से पूर्व ही उत्तर-दक्षिण में फैले रहे वे पत्थर के प्राचीर और विजयद्वार और वहाँ जुड़ी रही गिरियाँ—सब टूटकर छितर गयीं और चूर होकर धूल से मिल गयीं। ६३४

अन्निलै कण्ड तिण्डो ळरिक्कुलत् ततिह मम्मा
 अन्निलै युर्रु दैन्गेन् याण्डुप्पुक् कौळित्त दैन्गेन्

अन्निलै कण्ड वन्तै आयिल्लै यायत् तोडु
मिन्निलै विल्लि तानै वळियेदिर् विलक्कि निन्नाळ् 635

अ विलै कण्ड—उस स्थिति को जिन्होंने देखा, उन; तिण् तोळ्—सुदृढ़ कन्धों वाले; अरिकुलतु—वानरकुल के वीरों की; अनिकम्—सेना; अँ निलै उरुतु—किस स्थिति को पहुँच गयी; अँत्तेन्—कहूँगा; याण्टु पुक्कु—कहाँ जाकर; ओळित्तु—छिप गयी; अँत्तेन्—कहूँ; अ निलै कण्ड—(जिसने) उस स्थिति को देखा वह मेरी माता; आय् इळै—सुन्दर आभरणालंकृत; आयत्तोडु—स्त्रियों के समूह के साथ; मिन् इलै—विद्युत् की चमक का आश्रय; विल्लितानै—जो धनु था, उसके धारक के; अँतिर्—सामने; वळि विलक्कि—मार्ग रोके; निन्नाळ्—खड़ी रहीं। ६३५

उस हालत को देखकर वली भुजाओं वाले वानर वीरों की उस सेना की क्या स्थिति हुई, यह मैं क्या कहूँ ? कहाँ जाके छिप गयी, यह कैसे कहूँ ? वानर-सेनाओं की वह स्थिति देखकर मेरी माता तारा चुने हुए आभरणों से अलंकृत स्त्रियों के समूह के साथ लक्ष्मणजी के, जिनके हाथ में विद्युच्छटाधारी धनु था, मार्ग में जाकर उनको रोका। ६३५

मङ्कयर् मेत्ति नोक्कान् मैन्दन् मन्तत्तु वन्द
पौङ्गिय शीरु माऱिप् पुहल्हिलन् पौरुमि निन्नान्
नङ्कयु मिन्दु कूडि नायह नडन्द दैन्नी
अङ्गल्पा लैन्तक् केट्टा ळिलवलुम् वरवु शौन्तान् 636

मैन्तन्—कुमार; मङ्कयर् मेत्ति—रमणियों के रूप; नोक्कान्—नहीं देखते; मन्तत्तु—मन में; वन्त पौङ्गिय—आकर जो उफन रहा था, वह; चीरुम् माऱि—क्रोध दूर करके; पुक्किलन्—नहीं बोलते; पौरुमि निन्नान्—भाव-भरे खड़े रहे; नङ्कयुम्—रमणी-नायिका तारा ने; इत्ति कूडि—मधुर वचन कहकर; नायक—नाथ; अङ्कळ् पाल्—हमारे पक्ष में; नडन्तु अँत्तो—हुआ क्या; अँत्त—ऐसा; केट्टाळ्—पूछा; इळवलुम्—कनिष्ठ राजा ने भी; वरवु—आने का कारण; शौन्तान्—बताया। ६३६

राजकुमार लक्ष्मण ने न उन स्त्रियों का रूप अपनी आँख उठाकर देखा, न अपने मन का क्रोध दबाते हुए कुछ कहा। लेकिन वे गुस्से से भरे खड़े रहे। तब स्त्रियों में नायिका (तारा) मेरी माता ने लक्ष्मण से मधुर वचन कहे। वे बोलीं—प्रभु ! आप हमारे पास (श्रीराम को अकेला छोड़कर) इधर पैदल आये हैं। वह क्यों ? इस प्रश्न के उत्तर में लक्ष्मण ने अपने आगमन का कारण बताया। ६३६

अदुपैरि दशिन्द वन्तै यन्तवन् शीरु माऱि
विदिमुऱै मरन्दा नल्लन् वैञ्जिनच् चेन्नै वैळ्ळम्
कदुमैन्क् कौणरुन् दूडु कल्लदर् शैल्ल वैचि
अँदिर्मुऱै यिरुन्दा नैन्ना ळिदुविङ्गुप् पुहुन्द दैन्नान् 637

अतु-वह; पेरितु-खूब (विस्तृत रूप से); अत्रिन्त-(जिन्होंने) जान लिया
उन; अत्तै-माता तारा ने; अन्तवन् चोर्त्तम्-उनका क्रोध; आर्त्ति-शान्त
करके; विति मुर्-आज्ञा का प्रकार; मन्तान् अलन्-भूले नहीं हैं; वैम् चितम्-
भयकर क्रोध-युक्त; चैत्तै वैळ्ळम्-सेना की बाढ़ को; कतुम्-तुरन्त; कौण्डम्-
लानेवाले; त्तु-दूतों को; कल् अतर् चैल्ल-पर्वत-मार्ग में जाने की; एवि-आज्ञा
देकर; अत्तिर् मुर्-उनकी प्रतीक्षा में; इरुन्ता-रहे; अन्ता-कहा; इतु-
यही; इङ्कु-यहाँ; पुकुन्त-घटकर रहा; अन्ता-कहा (अंगद ने) । ६३७

कारण को ठीक तरह से जानकर मेरी माता ने उनका क्रोध शान्त
करते हुए कहा कि सुग्रीव श्रीराम की आज्ञा का प्रकार नहीं भूले हैं ।
अत्यन्त क्रोधशील वानर-सेना के बहुत बड़े अंश को जल्दी ले आने के लिए
ऐसा करनेवाले दूतों को पर्वतमार्ग में जाने के लिए भेजकर वे उन दूतों
की प्रतीक्षा में है । अंगद ने यह समाचार देकर सुग्रीव से कहा कि यही
यहाँ हुआ समाचार है । ६३७

चोर्त्तु मरुक्कन् रोन्तल् चोल्लुवान् मण्णिन् विण्णिन्
निर्कुरि यार्हळ् याव रनैयवर् शिन्नत्ति नेरुन्नाल्
विर्कुरि यारित् तन्मै वैहुळियिन् विरैवि नैय्द
अर्कुरे याडु नीरी दियर्शिय दैन्गो लैन्तात् 638

चोर्त्तुम्-कहने पर; अरुक्कन् तोन्तल्-अर्कपुत्र; चोल्लुवान्-बोला;
अनैयवर् चित्तत्ति-वे क्रोध के साथ; नेरुन्ताल्-आएँ तो; मण्णिन्-भूलोक में;
विण्णिन्-व्योमलोक में; निर्क उरियार्कळ्-खड़े रह सकनेवाले; यावर्-कौन
होंगे; विर्कु उरियार्-धनुर्वीर; इ तन्मै-इस प्रकार; वैहुळियिन्-कोप के साथ;
विरैविन् अय्य-सवेग आये और; अर्कु उरैयातु-मुझसे न कहकर; नीर्-तुम लोगों
ने; ईतु इयर्शियतु-यह किया; अन्तु कौल्-क्या कारण है; अन्ता-पूछा । ६३८

अंगद के यह कहने पर सूर्यपुत्र बोला । अगर श्रीराम और लक्ष्मण
कोप करके लड़ने आये, तो उनके सामने टिक सकनेवाले भूमि पर या
आकाश में कौन हैं ? धनुर्वीर वे वीर इतनी जल्दी कोप के साथ इधर आये हैं,
इसकी खबर मुझे न देकर तुम लोगों ने ऐसा किया है । इसका कारण क्या
है ? । ६३८

उणर्त्तिनेन् मुन्नर् नीयः(ह) दुणर्न्दिलै युणर्विर् शोन्दाय्
पुणर्प्पदोन् रिन्मै नोक्कि मारुदिक् कुरैप्पात् पोन्नेन्
इणर्त्तीहै यीन्त पाँडा रैळ्ळवलिन् तडन्दो लैन्दाय्
कणत्तिडै यवने नोयुड् गाणुदल् करुम मैन्तात् 639

इणर् तोर्क ईन्त-फूलों के गुच्छों से बनी; पीन् तार्-सुन्दर माला से अलंकृत;
अैळ्ळ वलि-बहुत बल से युक्त; तट तोळ्-विशाल भुजा वाले; अैन्ताय्-मेरे पिता;
मुन्नर् उणर्त्तिनेन्-पहले समझाया; नी-आप; उणर्विल् तोर्न्ताय्-बेसुध रहे;

अःतु उणरन्तिलै-वह नहीं समझे; पुणरप्पतु-उपाय; ओन्नइ इन्मै-एक नहीं रहा, वह; नोक्कि-देखकर; मारुतिकु-हनुमान के पास; उरैप्पात्-कहने के लिए; पोतेन्-गया; कणत्तिटै-एक पल के अन्दर; अवतै-उनसे; नीयुम्-आप भी; काणुतल्-जा मिलें; करुमम्-(वही) कर्तव्य है; अन्नडात्-कहा । ६३६

सुग्रीव के ऐसा पूछने पर अंगद ने उत्तर दिया—'फूलों के गुच्छों की बनी सुन्दर माला से अलंकृत सशक्त कन्धों वाले मेरे तात ! मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया । लेकिन आप बेसुध रहे । इसलिए आपने नहीं समझा । तब मैंने करने योग्य कोई काम नहीं रहा दिखा । इसलिए मैं मारुति के पास कहने गया । एक पल के अन्दर आप श्रीलक्ष्मणजी से जाकर मिलें । यही आपको अब करना है । ६३९

उडवुण्ड शिन्दै यात्तु मुरैशैय्वा नीरुवर्क् कित्तनम्
पैरुलुण्डे यवरा लीण्डियात्तु पैरु पेरुदविच् चैल्वम्
इडवुण्डाळ् पौरुट्टाड् शीरा दिरुन्दपे रिडरै यैल्लाम्
नडवुण्डु मडन्तेन् काण नाणुवैन् मैन्द वैन्डात् 640

उडवु उण्ट-श्रीराम के प्रति मित्रता से युक्त; चित्तैयात्तुम्-मन वाला; उरै चैय्वात्-वचन बोला; मैन्त-पुत्र; अवराल्-उनके द्वारा; ईण्टु-यहाँ; यात्तु पैरु-जो मैंने प्राप्त किया; पेर् उतवि चैल्वम्-वह उपकार और धन-वैभव; ओरुवर्क्-किसी से; इत्तनम् पैरुल्-और प्राप्त करना; उण्टे-हो सकता है क्या; इडवु उण्टाळ्-अलग जो हो गयीं, उन; पौरुट्टाळ्-सीतादेवी के हेतु; तीरात्तु इरुन्त-बिना दूर हुए जो रहा, वह; पेर् इटरै यैल्लाम्-सभी बड़ा दुःख; नडवु उण्टु-सुरा पान कर; मडन्तेन्-भूल रहा; काण-(लक्ष्मण से) भेंट करने से; नाणुवैन्-शरमाता हूँ; अन्नडात्-कहा । ६४०

श्रीराम के प्रति जिसके मन में मित्रता का नाता था, वह सुग्रीव अंगद से बोला— पुत्र, श्रीराम जी के द्वारा जो परमोपकार का धन मुझे मिला है, वह क्या किसी दूसरे को प्राप्य हो सकता है ? (मैं यह जानता हूँ । लेकिन) सीताजी के वियोग से श्रीराम पर जो अचल संकट आया है, उसको मैं सुरा पीकर उसके नशे में भूल गया था । इसलिए अब लक्ष्मणजी को देखने से शर्माता हूँ । ६४०

एयिन नडवल् लात्तुम् रैल्लैमैप् पाल दैन्तो
तायवळ् मनैवि यैन्नुन् दैळिवित्तुरै इरुम मैन्ताम्
तीविनै यैन्दि नीन्ना मन्त्रियुन् दिरुक्कु नीडगा
माययिन् मयड्गु हित्ताम् मयक्किन्मेन् मयक्कुम् वैत्ताम् 641

एयित्त-मुझमें लगी हुई; नडवु अल्लाल-सुरापान की आदत के सिवा; मडु-और कोई; एल्लैमैप्पालतु-मूर्खता की प्रवृत्ति; अन्नो-कौन सी है; तायवळ्-माता; मनैवि-पत्नी; अन्नत्तुम्-इनमें भेद करने की; तैळिवु इत्तुल्-स्पष्ट बुद्धि

नहीं हो तो; तरुमम्-अन्य धर्मों का पालन; अँन् आम्-क्या होगा; ती वित्त-महापातक; एन्तित् ओन्नाम्-पाँच में एक है; अन्नियुम्-और भी; तिरक्कु नीड्का-बंचना से जुड़ी हुई; मायैयिल्-माया के वश में; मयक्कुकिन्नाम्-मोहित हैं; मयक्किन् मेल्-(ऐसे) मोह के ऊपर; मयक्कुम् चैत्ताम्-सुरापान का नशा चढ़ा दिया (हमने) । ६४१

मेरे पास यही एक बुरी आदत लगी हुई है । इस सुरापान के अलावा और कोई दुर्गुण मेरे पास क्या है ? यह सुरापान ऐसा है, जो माता और पत्नी में भी भेद जानने की बुद्धि को हर लेता है । फिर मनुष्य के पास अन्य धर्म रहा तो क्या लाभ है । यह सुरापान की आदत पाँच (हत्या, असत्य, चोरी, सुरापान और गुरु-निन्दा) महापातकों में एक है । और भी, हम पहले ही कपटी माया के वश में हैं । उस माया-मोह के ऊपर हमने यह नशा भी जोड़ दिया है । ६४१

तैळिन्दुती वित्तैयैत् तीरुन्दोर् पिडवियैत् तीरुव रँन्ता
विळिन्दिला वुणर्वि तोरुप् वेदमुम् विळम्ब वेयुम्
नैळिन्दुर् पुळुवै नीक्कि नडवुण्डु निरैहिन् रैन्नाल्
अळिन्दहत् तैरियुन् दीयै नैय्यित्ता लविक्किन् रामाल् 642

तैळिन्दु-मन में साफ़ होकर; तीवित्तैयै-बुरे कर्मों को; तीरुन्दोर्-जिन्होंने त्यागा है, वे; पिडवियै तीरुवर्-जन्म से छूट जायेंगे; रँन्ता-ऐसा; विळिन्दित्लर्-अध्रान्त; उणर्वित्तोरुम्-ज्ञान रखनेवालों और; वेतमुम् वेदों का; विळम्बवेयुम्-कहा हुआ होने पर भी; नैळिन्दु उरै-रेंगते रहनेवाले; पुळुवै-कीड़ों को; नीक्कि-हटाकर; नडवु उण्डु-ताड़ी पीकर; निरैकिन्नेन्-संतुष्ट रहता हूँ; अळिन्दकम्-वेदी पर; अँरियुम् तीयै-जलती आग को; नैय्यित्ता-घी द्वारा; अविक्किन्नाम्-बुझाते हैं । ६४२

विवेक प्राप्त कर जिनका मन शुद्ध हो गया है, और जिन्होंने उस विवेक के फलस्वरूप पाप-कर्म को छोड़ दिया है, वे जन्म-कर्म से छूट जाते हैं । अविनश्वर ज्ञान से युक्त तत्त्वज्ञ लोग और वेदों ने यही कहा है । उसको जानकर भी मैं ताड़ी से, उसमें रेंगते रहनेवाले कीड़ों को हटाकर उसे पीता हूँ और अघाता हूँ । यह ऐसा काम है कि हम यज्ञ-वेदी पर जलनेवाले आग को आग से बुझाने का (मूर्ख) प्रयास करें । ६४२

तन्नैत्ता नुणरत् तीरुन् दहैयु पिडवि यैन्ब
वैन्नत्तान् मरैयु मड्डैत् तुरैहळु मिशैत्त वैल्लाम्
मुन्नैत्तान् इन्नै योरा मुळुप्पिणि यळुक्किन् मेले
पित्तनैत्तान् पेरुव दम्मा नडवुण्डु तिहैक्कुम् बित्ते 643

तान् तन्नै उणर-कोई अपना आत्मस्वरूप पहचाने तब; तर्क अरु-गौरवहीन; पिडवि अँन्पु-जन्म; तीरुम्-छूट जाता है; अँन्नत्ता-ऐसा ही; मरैयुम्-वेद

और; मर्द्दुं तुर्कळुम्-अन्य शास्त्र; अल्लाम्-सभी; इचैत्त-कहते हैं; मुत्तै-पहले ही; तात् तत्तै ओरा-आत्मा को न पहचानने का; मुळ्ळ पिणि-पूर्ण रोग और; अळ्ळक्किन् मेले-कल्मश जो है, उस पर; पित्तै-फिर भी; न्द्रुवु उण्डु-ताड़ी पीकर; तिकैक्कुम् पित्तु-भ्रमित हो रहने का पागलपन; पंङ्गवतु-पाना (उचित है क्या ?) । ६४३

स्वस्वरूप जानने पर यह क्षुद्र जन्म मिट जायगा । यही वेद और अन्य वेदांग, शास्त्र आदि समझाते हैं । पहले ही हमने शरीर पाया है, जो आत्मज्ञानहीनता के कारण हमें मिला है और जो रोगपूर्ण और मलिन है । तिस पर नशा पैदा करनेवाले पान से मोह का पागलपन ताड़ी पीकर प्राप्त कर लेना कैसा काम है ? मैया री ! । ६४३

चैर्द्रुम्	बहैअर्	नट्टार्	शैय्दपे	रुदवि	तानुम्
कर्द्रुम्	गणक्	डाहक्	कण्डुडु	गलैव	लाळर्
शौर्द्रु	मानम्	वन्दु	तौडर्न्दुम्	बडर्न्दु	तुन्बम्
उर्द्रु	मुणर्व	रायि	तुरुदिवे	रिदनि	नुण्डो 644

पकैअर् चैर्द्रुम्-शत्रु द्वारा किया हुआ और; नट्टार् चैय्त्त-मित्रकृत; पेर् उत्तवि तानुम्-बड़ा उपकार; कर्द्रुम्-सीखा हुआ; कण् कूटाक-अपनी आँखों से; कण्डुम्-दर्शित; कलैवलाळर्-शास्त्रज्ञों का; चौर्द्रुम्-कहा हुआ और; मानम् वन्दु-गौरव का आकर; तौडर्न्दुम्-लगना; तुन्बम् पटर्न्दु-दुःख का आकर; उर्द्रुम्-लगना; उणर्व आयित्-(यह सब) परखकर जानेंगे तो; इतत्तिन् वेळ्-इससे अलग; उड्ति उण्डो-कोई हित होगा क्या । ६४४

शत्रु का वैर करना, मित्रकृत बड़ा उपकार, विद्या का ज्ञान, अपनी आँखों से देखी हुई बात, शास्त्रोक्त विषय, सम्मान की प्राप्ति, दुःख का आगमन—इन बातों की स्थिति को कोई ठीक-ठीक जान ले, तो इससे बढ़कर हितकारी क्या हो सकता है ? । ६४४

वञ्जमुड्	गळ्वुम्	बौय्यु	मयक्कुम्	सरबिल्	कौट्पुम्
तञ्जमेन्	शरै	नीक्कुन्	दन्मैयुड्	गळिप्पुन्	दाक्कुम्
कञ्जमेल्	लण्डुगुन्	दीरुड्	गळ्ळिता	लरुन्दि	नारै
नञ्जमुड्	गौल्व	दल्ला	नरहितै	नल्हा	दन्ने 645

कळ्ळिताल्-सुरा (-पान) से; वञ्चमुम्-छल; कळ्वुम्-चोरी; बौय्युम्-असत्य; मयक्कुम्-मोह; सरबिल्-परम्पराविरुद्ध; कौट्पुम्-आचरणचक्र; तञ्चम् अन्तशरै-शरणागतों को; नीक्कुम् तन्मैयुस्-छोड़ देने का दुर्गुण; कळिप्पुम्-मद; ताक्कुम्-(ये सब) दुःख देंगे; कञ्चम् मेल् अण्डुक्कुम्-कमलवासिनी कोमल श्रीदेवी भी; तीरुम्-छोड़ जायगी; नञ्चमुम्-विष भी तो; अरुन्तित्तारै-पान करनेवाले को मारना छोड़; नरकितै-नरक को; नल्कातु-नहीं दिलायगा । ६४५

इस सुरापान से छल, चोरी, झूठ, मोह, परम्पराविरुद्ध आचरणचक्र,

शरणागत को भगा देने का गुण, घमण्ड आदि मद्यप को सताते हैं। और भी कमल-निवासिनी कोमलांगी श्री भी उसको छोड़ जाती है। विप भी पीनेवाले को मारता है, पर नरक में नहीं भेजता। लेकिन यह ताड़ी नरक दिला देती है। ६४५

केट्टन	नरुवार्	केट्टु	वरुमैनक्	किळत्तु	मच्चौल्
काट्टिय	दनुम	नीदिक्	कल्वियार्	कडन्द	दल्लाल्
मीट्टिनि	युरैप्प	देन्ते	विरैवित्तुवन्	दडेन्द	वीरन्
मूट्टिय	वंहुळि	यानास्	मुडिवदर्	कैय	मुण्डो 646

नरुवाल्-ताड़ी (पीने) से; केट्टु वरुम्-हानि होगी; अँत-ऐसा; केट्टत्तन्- (मैंने) सुना है; किळत्तुम्-कथित; अ चौल्-उस बात ने; काट्टियत्तु-(अपनी यथार्थता) दिखा दी; मीट्टु इति-और आगे; उरैप्पत्तु-कहना; अँन्ते-क्या है; कटन्तु- (आफ़त) पार की; अनुमन् नीति-हनुमान के नीतिशास्त्र के; कल्वियाल्-अध्ययन (-ज्ञान) से; अल्लाल्-नहीं तो; विरैवित्तु वन्तु-सवेग आ; अट्टन्तु वीरन्-जो पहुँचे उन वीर (लक्ष्मण) के; मूट्टिय वैकुळियाल्-उमरे हुए क्रोध से; नाम्-हमारे; मुट्टिवत्तु-मर मिटने में; एयम् उण्टो-सन्देह रहा क्या। ६४६

ताड़ी पीने से हानि होगी, यह मैंने सुना भर था। अब देखता हूँ कि उसने अपना सारा बल दिखा दिया है। और आगे कहने को क्या है? जो संकट होनेवाला था उससे हम बचे, हनुमान की नीति-बुद्धि से। नहीं तो त्वरित गति से आगत वीर लक्ष्मण के उभरते क्रोध से हमारे मर जाने में कोई सन्देह रहा है क्या ?। ६४६

ऐयना	नम्जि	नेनिन्	नरुविनि	नरिय	केट्टु
कैयिना	लन्ऱि	येयुड्	गरुदल्	करुम	मन्ऱाल्
वैय्यदा	मडुवै	यिन्नम्	विरुम्बित्ते	तैन्निन्	वीरन्
शैय्यदा	मरैह	ळन्	शेवडि	शिदैत्ते	तैन्ऱान् 647

ऐय-सुन्दर; इ नरुवित्तु-इस ताड़ी की; अरिय केट्टु-अवार्थ हानि से; नान् अम्बित्तैन्-मैं डरा; कैयित्ताल् अन्ऱिये-हाथ से ही नहीं; करुत्तुलुम्-मन से स्पर्श करना भी; करुम् अन्ऱु-करनेयोग्य काम नहीं है; वैय्यत्तु आम्-भयंकर; मडुवै-मद्य को; इन्नुम् विरुम्बित्तैन्-और चाह; अँन्तिन्-तो; वीरन्-वीर श्रीराम के; चैय्य तामरैकळ-लाल कमलो के; अन्न-समान; चे अट्टि-लाल चरणों में (विश्वास); चित्तैत्तैन्-नष्ट करनेवाला वनूंगा; अँन्ऱान्-कहा (सुग्रीव ने)। ६४७

सुन्दर अंगद ! मैं इस मद्यपान के अहित करने के गुण से डरा। हाथ में लेना क्या, इसका मन में विचार लाना भी योग्य काम नहीं। यह सुरा वड़ी भयंकर है। आगे भी इसको चाहूँ तो वीर श्रीराम के लाल कमल-सम सुन्दर चरणों के प्रति अपराध करनेवाला बन जाऊँगा। —सुग्रीव ने यह सब कहा। ६४७

अँत्तुर्कोण् डियम्बि यण्णर् कँदिर्होळर् कियेन्द वँल्लाम्
 नत्तुर्कोण् डित्तुर् नीये नणुर्हत्त ववत्तै येवित्
 तत्तुर्णैत् तेवि मारुहळ् तमरौडुन् दळुवत् तानुम्
 निन्तुत्तत् नँडिय वायिर् कडैत्तलै निवन्द नीरान् 648

अँत्तु-ऐसा; निवन्त नीरान्-उत्कृष्ट स्वभाव वाले; डियम्पि कौण्डु-कहते हुए; अण्णर्कु-महिमावान (लक्ष्मण) के; अँतिर्कोळर्कु-स्वागत के लिए; इयेन्त अँलाम्-योग्य सभी पदार्थ; नत्तु कौण्डु-भलीभाँति लेकर; इन्तुम् नीये-अब भी तुम्हीं; नणु-पास जाओ; अँत्-ऐसा; अवत्तै एवि-उस (अंगद) को भेजकर; तत् तुणै तेविमारुहळ्-अपनी संगिनी पत्नियों के; तमरौडुम् तळुव-अपने रिश्तेदारों के साथ घेरकर आते; तातुम्-खुद भी; नँडिय वायिल्-उन्नत द्वार के; कडैत्तलै-मुख पर; निन्तुत्तत्-खड़ा रहा। ६४८

उत्कृष्ट गुण-प्राप्त सुग्रीव ऐसा कहते हुए उठा और अंगद से बोला कि लक्ष्मण के स्वागतार्ह सभी साज लेकर अभी तुम्हीं जाओ। अंगद को भेजने के बाद सुग्रीव आकर महल के गोद्वार पर प्रतीक्षा में खड़ा रहा। उसके साथ उसकी संगिनी पत्नियाँ अन्य रिश्तेदारों के साथ उसको घेरे खड़ी रहीं। ६४८

उरैत्तशैज् जान्दुम् बूवुम् चुण्णमुम् बूहैयु मूळिन्
 निरैत्तपोर् कुडमुन् दीव शालमु निहरिल् मुत्तुम्
 कुरैत्तैळ् विदन्तत् तोडु तौङ्गलुङ् गौडियुज् जङ्गुम्
 इरैत्तिमिळ् मुरचुम् मुर्रु मिडङ्गित् वीदि यँल्लाम् 649

उरैत्त-घिसकर बना; चैम् चान्तुम्-श्रेष्ठ चन्दन-लेप और; बूवुम्-फूल; चुण्णमुम्-सुगन्ध-चूर्ण; पुकैयुम्-धुआँ; ऊळिन् निरैत्त-पंक्ति में रखे हुए; पोन् कुटमुम्-स्वर्णकलश (पूर्णकुम्भ); तीपचालमुम्-दीपजाल; निकर् इल्-अनुपम; मुत्तुम्-मोती; कुरैत्तु अँळ्-शब्दायमान; वितात्तुत्तौडु-वितानों के साथ; तौङ्गलुम्-झालर और; कौडियुम्-ध्वजाएँ और; चङ्कुम्-शंखनाद; इरैत्तु इमिळ्-जोर से शोर करनेवाली; मुरचुम्-भेरियाँ और; मुर्रुम्-सभी; वीति अँल्लाम्-वीथियों भर में; इयङ्कित्त-भर गये। ६४९

तब किष्किन्धा नगर की वीथियों में सभी मंगल द्रव्य और अन्य साज भर गये। खूब पिसा हुआ लाल चन्दन-लेप, फूल, सुगन्धचूर्ण धूप, पंक्तियों में रखे हुए जल-भरे स्वर्णकलश, दीप-जाल, अनुपम मुक्तामालाएँ, शब्द के साथ उठनेवाले वितान, मोरपंखों के झालर, ध्वजाएँ — इनके साथ शंख और जोर से बजनेवाली भेरियाँ आदि दिखायी दीं। ६४९

तूयतिण् पळिङ्गिर् चैय्द शुवर्हळिर् उलत्तिर् चुर्इिल्
 नायह् मणिगिर् चैय्द नलिनैडुन् द्वणि नाय्पण्
 शायैपुक् कुडलार् कण्डो रयर्बुर् तहैवि लोडुम्
 आयिर मैन्दर् वन्दार् रुळैन्नप् पौलिनन्द दव्वूर् 650

अ ऊर्-वह नगर; तूय-पवित्र; तिण् पळिङ्किन्-कठिन स्फटिक की;
 चैय्त् चुवर्कळिन्-वनी हुई दीवारों के; तलत्तिल्-तल में; चुर्त्तिन्-और चारों
 ओर; नायकम् मणियिन् चैय्त्-अत्युत्कृष्ट मणियों के बने; नति नैटुम् तूणिन्-बहुत
 ऊँचे खम्भों के; नायण-मध्य; चायै पुक्कु उरलाल्-(श्रीलक्ष्मण के रूप की)
 परछाई के जा लगने से; कण्टोर्-दर्शक; अयर्त्तु उरु-थक जायें, ऐसे; तक्
 विल्लोट्टुम्-महान धनु के साथ; आयिरम् मैन्तर्-सहल-सहल वीर कुमार; वन्तार्
 उळर्-आये है; अँत्-ऐसा; पौलित्तु-शोभायमान हुआ। ६५०

(लक्ष्मण वीथी में आ रहे थे; तब) किष्किन्धा के घर की दीवारें
 दृढ़ और शुद्ध स्फटिक की बनी थी। खम्भे भी श्रेष्ठ नवरत्न-जड़े थे।
 लक्ष्मण का रूप उन पर प्रतिबिम्बित हुआ। तब ऐसा लगा कि हज्जारों वीर
 कुमार दर्शकों के मन को भ्रांत करनेवाले धनु लेकर आ रहे हों। ६५०

अङ्गदन् पयैर्त्तुम् वन्दाण् डडिदौळु दानै यैयन्
 अँङ्गिरुन् दानुङ् गोमा नैन्ऱुलु मैर्दिहो लैण्णि
 मङ्गुरोय् कोयिर् कौर्ऱक् कडैत्तलै मरुङ्गु नित्ऱान्
 शिङ्गवे इन्नैय वीर शैय्दवच् चैल्व नैन्ऱान् 651

पयैर्त्तुम्-लौटकर, फिर; आण्टु वन्तु-वहाँ आकर; अटि तौळुतान्-जिसने
 चरणों पर सिर झुकाया; अङ्कतन्नै-उस अंगद की; ऐयन्-प्रभु लक्ष्मण (के);
 उम् कोमान्-तुम्हारे राजा; अँङ्कु इरुन्तान्-कहाँ रहा; नैन्ऱुलुम्-पूछते ही;
 विङ्कम् ऐङ् अन्नैय-पुरुषसिंह-सदृश; वीर-वीर; चैय् तवम्-संपन्न तपस्वी;
 चैल्वन्-धन के स्वामी; अँतिर् कोळ् अँण्णि-अगवाती करने के विचार से; मङ्कुल्
 तोय्-जिस पर मेघ ठहरते हैं; कोयिल्-उस महल के; कौर्ऱम् कडैत्तलै-विजय-
 द्वार के; मरुङ्कु नित्ऱान्-पास खड़े है; नैन्ऱान्-कहा। ६५१

अंगद ने फिर वहाँ आकर लक्ष्मण के चरणों पर नमस्कार किया।
 तब सुन्दर लक्ष्मण ने अंगद से पूछा कि तुम्हारा राजा रहा कहाँ? यह
 प्रश्न करने पर अंगद ने उत्तर दिया— पुरुषसिंह-सम वीर! पुण्यधन!
 सुग्रीव आपके स्वागत का विचार लेकर मेधाश्रय योग्य विजय द्वार के पास
 खड़े हैं। ६५१

शुण्णमुन् दूशुम् वीशिच् चूडहत् तौडिक्कै मादर्
 कण्णहन् कवरिक् कर्ऱैक् कालुर्ऱक् कलैवैण् डिङ्गळ्
 विण्णुर् वळर्न्द दैन्न वैण्गुडै विळङ्ग वीर
 वण्णविर् करत्तान् मुन्नर्क् कक्किक्कुलत् तरशन् वन्दात् 652

चूटकम्-चूड़े; तौटि-'तौडि' आदि; कै-जिन्होंने हाथ में पहने हैं; मादर्-
 वे स्त्रियाँ; चुण्णमुम्-सुगन्धचूर्ण और; तूचुम् वीचि-वस्त्र बिखेरकर; कण्
 अक्-विशाल; कवरि कर्ऱै-चामरों की राशियों से; काल् उर-हवा करती हैं,
 वैसे; कलै-कलाओं से पूर्ण; वैळ् तिङ्कळ्-श्वेत चाँद; विण् उर-आकाश स्पर्श

करते हुए; वळर्न्तु अन्त-बढ़ गया हो ऐसे; वैळ् कुट्ट-श्वेतछत्र; विळङ्क-शोभायमान हैं, ऐसे; वीरम्-वीरोचित; वण्णम् विल्-सुन्दर धनु के; करत्तान्-धारक हस्तों वाले; मुत्तर्-के सामने; कविकुलत्तु अरचन्-कपिकुलराज; वन्तान्-आया । ६५२

सुग्रीव आया । (उसके जुलूस का ठाट देखिये ।) चूड़े और "तीड़ी" नाम के कंकणधारिणी वानर-नारियाँ सुगन्ध-चूर्ण और वस्त्र उछालते हुए और विशाल चामर डुलाकर हवा करते हुए आयीं । सोलहों कलाओं से पूर्ण श्वेत चन्द्र आकाश में लगे शोभित हो रहे हों —ऐसे श्वेतछत्र दिखायी दे रहे थे । इस ठाट के साथ कपिकुलाधिपति पौरुषयुक्त और सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण के सामने आया । ६५२

अरुक्किय	मुदल	वाय	वरुच्चनैक्	कमैन्द	यावुम्
मुरुक्किदळ्	महळि	रेन्द	मुरशिन	मुहिलि	तारप्प
इरुक्कित	मुत्तिव	रोद	विशेदिशै	यळप्प	याणर्त्
तिरुक्किळर्	शैल्व	नोक्कि	तेवरु	मरुळ्	चैत्तुशान् 653

मुरुक्कु इतळ्-कँटीले पलाश के फूल के समान अधरों की; मकळिर्-स्त्रियाँ; अरुक्कियम् मुतल आय-अर्घ्य आदि (पूजाहँ); यावुम् एन्त-सब लेती आयीं; मुरचु इतम्-भेरियों के समूहों ने; मुकिलिन्-मेघों के समान; आरप्प-घोष किया; मुत्तिवर्-मुनियों ने; इरुक्कु इतम्-ऋचाओं (वेद-मन्त्रों) का; ओत-उच्चारण किया; इच्चै-संगीत; तिच्चै-दिशाओं की; अळप्प-मापता रहा; याणर् तिरु-नव वैभवयुक्त; किळर् चैल्वम्-पुष्कल धन की; नोक्कि-देखकर; तेवरुम् मरुळ्-देव भ्रमित हुए; चैत्तुशान्-(इस साज के साथ) सुग्रीव चला । ६५३

कँटीले पलाश तरु के पुष्पों के समान अधर वाली अंगनाएँ अर्घ्य आदि पूजा की सामग्रियाँ हाथ में लेती हुई आयीं । भेरियों का समूह मेघों के समान गर्जन कर रहा था । मुनिगण वेदपारायण करते हुए आये । संगीत का नाद दिशाओं की माप (व्याप्त कर) रहा था । सुग्रीव के नव-वैभव को देखकर देव भी चकित हो गये । इस रीति से सुग्रीव गया । ६५३

वैम्मुलै	महळिर्	वैळ्ळ	मीनैन	विळङ्ग	विण्णिल्
शुम्मैवान्	मदियङ्	गुन्ऱिङ्	रोन्ऱिय	दैन्वुन्	दोन्ऱिच्
चैम्मलै	यैदिर्हो	ळैण्णित्	तिरुवौडु	मलर्न्द	शैल्वन्
अम्मलै	युदयन्	जैय्युन्	दादैयु	मत्तैय	तात्तात् 654

चैम्मलै-नायक की; अँतिर् कोळ् अँण्णि-स्वागत करना चाहकर; तिरुवौडु मलर्न्त-राज्यश्री के साथ प्रकुल्ल; चैल्वन्-धनी; वैम्मुलै-मनोरम उरोजों वाली; मकळिर् वैळ्ळम्-स्त्रियों की वाढ़ के; विण्णिल् मीन् अँत-आकाश में नक्षत्रों के समान; विळङ्क-शोभित होते; कुन्ऱिल् तोन्ऱिय-(उदय-) गिरि पर प्रकट हुए; चुम्मे वान्-अधिक उज्ज्वल; मत्तियम् अँतवुम्-चन्द्र के समान भी; तोन्ऱि-प्रकट होकर;

अ मलै उतयम् चैय्युम्-उस पर्वत पर उदीयमान; तातैयुम् अतैयन्-पिता (सूर्य) के समान भी; आत्तात्-लगा । ६५४

नायक लक्ष्मण के स्वागतार्थ आनेवाला वैभवशाली सुग्रीव उदयगिरि पर उदित होनेवाले शोभायमान चन्द्र के समान दिखा । उसके चारों ओर मनोरम स्तन वाली स्त्रियों का बड़ा समूह आकाशस्थित नक्षत्र-वृन्द के समान शोभ रहे थे । सूर्यपुत्र उदयगिरि पर प्रकट अपने पिता सूर्य के समान भी शोभायमान दिखा । ६५४

तोड्डिय	वरिक्कुलत्	तरशैत्	तोन्डुलुम्
एड्डैदिर्	नोक्किन्	तैळुन्द	दव्वळि
शीड्डुम्	गुदुत्तैत्	तैळिन्द	शिन्दैयाल्
आड्डिन्नन्	करुमत्ति	तमैदि	युन्नुवान् 655

तोन्डुलुम्-कुमार (लक्ष्मण) ने भी; तोड्डिय अरि कुलत्तु अरचै-सामने प्रकट हुए वानरकुल के राजा को; अैदिर् एड्डु-स्वागत करके; नोक्किन्-निहारा; अ वळि-तव; शीड्डुम् अैळुन्नुतु-कोप हुआ; करुमत्तिन् अमैति-कार्य की स्थिति; उन्नुवान्-सोचकर; अड्डु-वहाँ; अतु तनै-उस (क्रोध) को; तैळिन्नु चिन्तैयाल्-मुलझे हुए विवेक से; आड्डिन्नन्-शान्त कर लिया । ६५५

महिमावान राजकुमार लक्ष्मण ने अपने सामने प्रकट हुए सुग्रीव को आँखों में आँख ढालकर देखा । तब उनके मन में क्रोध उमड़ आया । लेकिन कर्तव्य की रीति का विचार कर लक्ष्मण ने क्रोध को अपने विवेक के बल से शान्त कर लिया । ६५५

अैळुविन्नु	मलैयिन्नु	मैळुन्द	तोळ्हळाल्
तळुविन्नु	रिरुवरुन्	दळुवित्	तैयलार्
कुळुवौडुम्	वीरुदड्	गुळात्ति	नोडुम्बुक्
कौळिविलाप्	पौडुक्कुळात्	तुरैयु	ळैय्दित्तार् 656

इरुवरुम्-दोनों; अैळुविन्नुम्-लोहे के स्तम्भों; मलैयिन्नुम्-और पर्वतों; अैन्नु-के समान; अैळुन्नु तोळ्हळाल्-बढ़ी हुई भुजाओं से; तळुविन्नु-परस्पर गले लगे; तळुवि-आलिगन करके; तैयलार्-स्त्रियों के; कुळुवौडुम्-समूहों के साथ और; वीरु तम्-वीरों के; गुळात्तिनोडुम्-दलों के साथ; कौळिवु इला-अक्षय; पौडुक्कुळात्तु-स्वर्णराशियों से भरे; उरैयुळ-महल में; पुक्कु-प्रवेश करके; अैय्दित्तार्-पहुँचे । ६५६

दोनों ने अपनी लोहे के खम्भे और पर्वत-जैसी भुजाओं से परस्पर आलिगन किया । फिर परस्पर मिले हुए वे अक्षय स्वर्ण से भरे महल के अन्दर चले । उनके साथ वानर-नारी-वृन्द और वीरों के दल चले । ६५६

अरियणै	यमैन्ददु	हाट्टि	यैयवीण्
डिरुवैत्तक्	कविकुलत्	तरश	त्तेवलुम्
तिरुमह	डलैमहन्	पुल्लिड्	चेरवैड्
कुरियदो	विः(ह)दैन्	वुरैत्तुप्	पिन्त्तरुम् 657

कवि कुलत्तु अरचन्-वानरकुलाधिपति (के); अमैन्ततु-सुरचित; अरि अणै-सिंहासन को; काट्टि-दिखाकर; ऐय-प्रभु; ईण्टु इरु-यहाँ विराजिए; अँत्त-ऐसा; एवलुम्-प्रार्थना करने पर; तिरुमकळ् तलैमकन्-श्रीलक्ष्मी के पति के; पुल्लिल् चेर-घास पर बैठे रहते; इःतु-यह; अँड्कु उरियतो-मेरे योग्य होगा क्या; अँत्त उरैत्तु-ऐसा कहकर; पिन्त्तरुम्-फिर भी । ६५७

कपिकुल-पति सुग्रीव ने सुनिर्मित श्रेष्ठ सिंहासन को दिखाकर प्रार्थना की कि नाथ ! इस पर विराजिये । उसके उत्तर में लक्ष्मण ने कहा कि जब लक्ष्मीपति महाराज श्रीराम घास की भूमि पर बैठे रहें, तब यह मेरे योग्य होगा क्या ? और भी (आगे बोले ।) । ६५७

कल्लणै	मन्तूत्तितै	युडैक्कै	केशियाल्
अँल्लणै	मणिमुडि	तुडुन्द	वैम्मुनार्
पुल्लणै	वैहयान्	पौन्शैय्	पूत्तौडर्
मैल्लणै	वैहलुम्	वैण्डु	मोवैन्डान् 658

कल् अणै-पत्थर-सम; मन्तूत्तितै उटै-मन वाली; कैकेचियाल्-कैकेयी के कारण; अँल् अणै-कांतिमय; मणि मुटि-सुन्दर किरीट; तुडुन्त-जिन्होंने त्याग दिया; अँम् मुनार्-मेरे ज्येष्ठ (के); पुल्ल अणै-घास की शय्या पर; वैक-रहते समय; यान्-मैं; पौन् चैय्-स्वर्णनिर्मित; पू तौडर्-पुष्प-भरे; मैल् अणै-कोमल आसन पर; वैकलुम्-आसीन होऊँ, यह भी; वैण्डुमो-करना चाहिए क्या; अँन्डान्-कहा । ६५८

प्रस्तरमना कैकेयी के वर के कारण मेरे ज्येष्ठ श्रीराम कांतिपूर्ण मुकुट को त्यागकर जंगल में आये । वे मेरे बड़े भाई घासों की बनी शय्या पर लेटते हैं । तब मैं स्वर्ण-निर्मित सुमन-भूषित इस कोमल आसन पर बैठूँ, क्या यह श्लाघ्य होगा ? । ६५८

अँन्डव	नुरैत्तलु	मिरवि	कादलन्
निन्डतन्	विम्मितन्	मलर्क्कण्	णीरुहक्
कुन्डैन्	वुयर्न्दवक्	कोयिड्	कुट्टिम
वन्डलत्	तिरुन्दतन्	मनुविन्	कोमहन् 659

अँन्ड-ऐसा; अवन्-उनके; उरैत्तलुम्-कहने पर; इरवि कातलन्-सूर्य-सूनु; मलर्क्कण्-कमल-सी आँखों से; नीर् उक्-आँसू गिराते हुए; विम्मितन्-दुःख से भरकर; निन्डतन्-खड़ा रहा; मनुविन् कोमकन्-मनुकुल के राजकुमार भी;

कुन्नु अत्त-पर्वत के समान; उयर्न्त अ कोयिल्-उन्नत उस महल के; कुट्टिमम्
वल् तलत्तु-कोण्ड की कठोर भूमि पर; इरुन्तत्तन्-बैठे । ६५६

लक्ष्मण के वैसा कहने पर सूर्य का प्यारा पुत्र कमलदल के समान
अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए दुःख से भरा खड़ा रहा । तब मनु के
कुल में उत्पन्न राजकुमार पर्वत के समान ऊँचे बने उस महल के अन्दर
पत्थरों के बने एक कृत्रिम चवूतरे पर बैठ गये । ६५९

मैन्दरु	मुदियरु	महळिर्	वैळ्ळमुम्
अन्दमि	नोक्किन	रळुद	कण्णिनर्
इन्दिय	मवित्तव	रैत्तवि	रुन्दत्तर्
नौन्दनर्	तळरुन्दनर्	नुवल्व	दोर्हिलर् 660

मैन्तरुम्-पुरुष और; मुतियरुम्-बृद्ध लोग; मकळिर्-स्त्रियों की; वैळ्ळमुम्-
भीड़; अन्तम् इल्-छविहीन; नोक्किन्-दृष्टि और; अळुत कण्णिनर्-रोती
आँखों वाले; नुवल्वतु-क्या कहना, यह; ओर्किलर्-नहीं जानते; नौन्तत्तर्-
दुःखी हो; तळरुन्तनर्-शिथिल होकर; इन्तियम् अवित्तवर् अन्न-इन्द्रिय-नाशक
के समान; इरुन्तत्तर्-रहे । ६६०

उसको देखकर वहाँ रहनेवाले वयस्क पुरुष, ज्ञानवृद्ध लोग, स्त्रियों
का बड़ा समूह —सभी की आँखों से पानी बरसने लगा और उनका सौन्दर्य
ही मिट गया । वे कुछ भी कह नहीं सके, क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं
हो रहा था—क्या कहना है ? वे चिन्ताकुल होकर शिथिल हो गये ।
इन्द्रिय-निग्रही मुनियों के समान वे (अचल) खड़े रहे । ६६०

मञ्जन विदिमुडै मरवि त्राडिये, अञ्जलि लिन्नमु दरुन्दिन् यामैलाम्
उञ्जन मित्तियेन वरशु रैत्तलुम्, अञ्जत वण्णत्तुक् कनुशन् कूरुवान् 661

अरचु-राजा (सुग्रीव) के; विति मुडै मरपिन्-शास्त्रोक्त रीति से; मञ्जत्तम्
आटिये-स्नान करके; अञ्जल् इल्-निर्दोष; इन् अमुतु-मधुर भोजन; अरुन्तिन्-
भोग करेंगे तो; याम् अलाम्-हम सब; इति उय्जत्तम्-अब उद्धार पा जायेंगे;
अन्न-ऐसा; उरैत्तलुम्-कहने पर; अञ्जत वण्णत्तुक्कु-अंजनवर्ण (श्रीराम) के;
अनुचन्-अनुज; कूरुवान्-कहने लगे । ६६१

राजा सुग्रीव ने लक्ष्मण से प्रार्थना की । आप शास्त्रोक्त रीति से
मञ्जन करके खूब स्वादिष्ट भोजन करें तो हम कृतार्थ होंगे । जब सुग्रीव ने
यह कहा, तब अञ्जनवर्ण अयोध्यापति श्रीराम के अनुज ने यों कहा । ६६१

वरत्तमुन्	पळियुमे	वयिरु	मीक्कोळ
इरुत्तुमेन्	शालैमक्	कित्तिय	दियावदो
अरुत्तियुण्	डायिन्नु	मवलन्	दान्ऽळीइक्
करुत्तुवे	रुड्ऽरपि	नमिळ्ळुड्ड	गैक्कुमाल् 662

वरुत्तमुम्-दुःख और; पळिधुमे-अपमान के; वयिइ मी कौळ-पेट में भरे रहते; इरुत्तुम्-हम जीवित हैं; अँनुशल्-तो; अँमक्कु-हमें; इत्तियतु-सुख देनेवाला; यावतु-क्या है; अरुत्ति उण्टायितुम्-इच्छा होने पर भी; अवलम् तळीइ-शोकग्रस्त हो; करुत्तु-मन; वेरु उरुइ पित्-बिगड़ गया तो; अमिळ्त्तुम्-अमृत भी; कैक्कुम्-कड़ुआ लगेगा; (तान्, आल्) । ६६२

हमारा पेट दुःख और निन्दा से भरा है । हम ऐसे ही जीवित रहते हैं । तो हमको स्वादिष्ट लगनेवाला कौन सा पदार्थ होगा ? जब इच्छा होगी तो भी अगर दुःख के कारण चित्त व्याकुल है तो अमृत भी कड़ुआ लगेगा न ? । ६६२

मूट्टिय पळियँनु मुरुङ्गु तीयवित्, ताट्टितै गङ्गैनी ररशन् रेवियैक्
काट्टितै यैनिन्नैमैक् कडलि चारमु, दूट्टितै याऽपिडि दुयवु मिल्लैयाल् 663

अरचन् तेवियै-राजाराम की देवी को; काट्टितै अँतिन्-लाकर दिखाओ तो; अँमै-हम पर; मूट्टिय-लगी हुई; पळि अँतुम्-कलंक रूपी; मुरुङ्कु ती-एँठकर जलनेवाली आग को; अवित्तु-बुझाकर; कड्कै नीर्-गंगा-जल में; आट्टितै-स्नान करा दिया (वैसा अनुभव होगा); कटलित् आर् अमुतु-(क्षीर-) सागर के अतिश्रेष्ठ अमृत का; ऊट्टितै-भोजन कराया; पिडितु-बाद; उयवुम् इल्लै-कोई दुःख भी नहीं होगा । ६६३

अगर तुम राजाराम की रानी सीतादेवी को ढूँढ़ लाकर दिखा दो तो हमारे निन्दा रूपी एँठकर जलनेवाले अनल को बुझाकर गंगा-स्नान कराने वाले बन जाओगे । क्षीरसागर से उत्पन्न श्रेष्ठ अमृत को खिलानेवाले बन जाओगे । फिर हमारा कोई दुःख नहीं रहेगा । ६६३

पच्चिलै किळङ्गुकाय् परम नुङ्गिय, मिच्चिले नुहर्बदु वेरु तालीन्नु
नच्चिले नच्चिने तायि नायुण्ड, अँच्चिले यदुचिदऽ कैय मिल्लैयाल् 664

पच्चु इल्लै-शाक-पात; किळङ्कु-(और) कन्द; काय्-कच्चे फल; परमन्-परममान्य श्रीराम के; नुङ्किय-खाने के बाद; मिच्चिले तान्-बचे हुए पदार्थ ही; नुकरवतु-मेरे खाद्य है; वेरु औन्नुम्-और कुछ; नच्चिलेत-नहीं चाहूँगा; नच्चितेन् आयिन्-चाहूँगा तो; अतु-वह; नाय् उण्ट अँच्चिले-श्वान-जूठन होगा; इतऽकु ऐयम् इल्लै-इसमें संशय नहीं है । ६६४

हरा शाक, कन्द और कच्चे फल —यही श्रीराम भोजन करते हैं । उनके भोजन के बाद जो बचता है, वही जूठन मेरा खाद्य है । उसको छोड़कर, और कोई वस्तु मैं नहीं चाहूँगा । अगर चाहूँगा तो वह कुत्ते का जूठन होगा । इसमें कोई संशय नहीं है । ६६४

अन्ऱियु
चैन्ऱनेन्

मौन्ऱुळ
कौणर्न्दडे

दैय
तिरुत्ति

यान्निच
नालदु

नुन्नरुणैक्	कोमह	नुहर्व	दाहलान्
इन्निरिऱै	ताळत्तलु	मिनिदन्	शामेन्नान् 665

ऐय-वानरनायक; अन्नियुम्-और भी; औन्न उळ्ळु-एक वात है; यात् इति चैन्नरनेन्-मैं अव जाऊँ; कौणरन्नु-फल-मूल लाऊँ; अटै तिरुत्तित्ताल्-पत्तल परोसूँ तभी; अतु-वही; नुन् तुणै-तुम्हारे मित्र; कोमकन्-राजकुमार का; नुकरवतु-भोज्य होगा; आकलान्-इसलिए; इन्न-अव; इऱै ताळत्तलुम्-थोड़ा भी विलम्ब करना; इत्तितु अन्न आम-भला नहीं होगा; अेन्नान्-लक्ष्मण ने कहा । ६६५

अधिपति ! इसके अलावा और एक वात है । मैं अव जाकर कन्द-मूलादि ले आकर पत्र पर परोसूँ, तो वही तुम्हारे मित्र राजकुमार श्रीराम का भोजन होगा । इसलिए अव थोड़ा विलम्ब करना भी अच्छा नहीं होगा । ६६५

वानर वेन्दन् मिनिदन् वैहुदल्, मातवर् तलैमह त्रिडरिन् वैहवे
आत्तदु कुरक्किन्नत् तैमरहद् कामना, मेनिलै यळिन्दहम् विम्मि नानरो 666

वानर वेन्तनुम्-वानराधिपति भी; मातवर्-मनुकुल के; तलै मकन्-श्रेष्ठ पुत्र के; इडरिन् वैक-दुःखी रहते; इत्तितिन् वैकुतल्-सुख से (विलम्ब करता) रहना; आत्तनु-जो है वह; कुरङ्कु इतत्तु-वानर-जाति के; अमर्कद्कु आम्-हमारी प्रकृति है; अत्ता-कहकर; मेत् निलै अळिन्नु-अपना धर्म छोकर; अकम् विम्मिनान्-चित्तविह्वल हुआ । ६६६

लक्ष्मण का यह वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने दुःख के साथ कहा कि हाँ ! ठीक है । मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम जब दुःख-मग्न है, तब सुख में समय बिताना वानर-जाति के हमें ही सोह सकता है । सुग्रीव विचलित होकर चित्ताकुलित हुआ । ६६६

अळुन्दनन्	पौरुक्कैत्त	विरवि	कान्मुळै
विळुन्दकण्	णोरितन्	वैरुत्त	वाळ्वित्तन्
अळिन्दयर्	शिनदैय	ननुमर्	काण्डौन्न
मौळिन्दनन्	वरनुळैप्	पोदन्	मुन्नुवान् 667

इरवि काल् मुळै-सूर्यपुत्र सुग्रीव; पौरुक्कैत्त अळुन्तत्तन्-तपाक से उठा; विळुन्त कण् नीरितन्-बहते आँसुओं वाला; वैरुत्त वाळ्वित्तन्-और विरक्त जीवन वाला; अळिन्नु अयर्-जो क्षीण होकर थक गया, ऐसे; चिन्तैयन्-मन वाला होकर; वरन् उळै-उत्तम श्रीराम के पास; पोतल् मुन्नुवान्-जाने को उद्यत हुआ और; आण्डु-तब; अनुमर्कु-हनुमान से; औन्न मौळिन्तत्तन्-(उसने) एक (वात) कही । ६६७

फिर सुग्रीव ससंभ्रम उठा । उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे । उसे अपने जीवन से ही विरक्ति होने लगी । वह विचलित और थकित मन

का हो गया । श्रेष्ठ श्रीराम के पास जाने का विचार करके उसने हनुमान से एक बात कही । ६६७

पोयित् तूवरिन् पुहुदुब् जेनैयै, नीयुडन् कौणरुदि नैरिव लोयैत्त
एयित् ननुमत्तै यिरुत्ति योण्डेन, नायह निरुन्दुळिक् कडिदु नण्णित्तान् 668

नैरिवलोय्-उपाय में समर्थ; पोयित् तूवरिन्-जो गये हैं, उन दूतों के साथ; पुहुदुम् चेतैयै-आनेवाली सेना को; नी-तुम; उडन् कौणरुति-साथ ले आओ; अँत-ऐसा और; ईण्टु इरुत्ति-(तब तक) यहाँ रहो; अँत-ऐसा; अनुमत्तै-हनुमान को; एयित्तन्-आज्ञापित करके; नायकन् इरुन्त उळि-जहाँ नायक श्रीराम रहे, उस स्थान को; कटितु-सवेग; नण्णित्तान्-चला । ६६८

युद्ध-विज्ञान-विशारद वायुपुत्र ! दूत सेना लाने गये हैं न ? वे जो सेना लायेंगे उसे लेकर तुम आ जाना । तब तक यहीं रहो । हनुमान से यह आज्ञा सुनाने के बाद सुग्रीव, नायक श्रीराम के यहाँ सवेग जाने लगा । ६६८

अङ्गद	नुडन्शैल	वरिहण्	मुन्शैल
मङ्गैय	रुळ्ळमुम्	वळिपुम्	बिन्शैलच्
चङ्गैयि	लिलक्कुवर्	इळुवित्	तम्मुत्तिल्
शङ्गदि	रोन्महन्	कडिदु	शैन्ऱत्तन् 669

चैम् कतिरोन्-लाल किरणमाली का; मकत्-पुत्र सुग्रीव; चङ्क इल्-संशयहीन (ज्ञानी); इलक्कुवन् तळुवि-लक्ष्मण का आलिङ्गन करते हुए; अङ्कतन् उडन् चैल-अंगद के साथ आते; अरिकळ्-वानरों के; मुन् चैल्-आगे जाते; मङ्कैयर् उळ्ळम्-स्त्रियों के मनों के; पिन् चैलवुम्-पीछे आते; वळि पिन् चैलवुम्-मार्ग के पीछे रह जाते; तम् मुन् इल्-अपने ज्येष्ठ भ्राता (मान्य) श्रीराम के यहाँ; कटितु चैन्ऱत्तन्-शीघ्र गया । ६६९

लाल प्रकाश-किरणों वाले सूर्य का पुत्र सुग्रीव असंशयमन लक्ष्मण को आलिङ्गन में लेकर जाने लगा । अंगद साथ गया । वानर आगे गये । वानर-नारियों का मन उसके पीछे-पीछे गया । मार्ग पीछे छूटता गया । इस रीति से सुग्रीव श्रीराम की तरफ, जो कि उसके ज्येष्ठ भ्राता (के समान) थे, शीघ्र गया । ६६९

औन्बदि नायिर कोडि यूहन्दन्, मुन्शैलप् पिन्शैल जाङ्गर् मौय्प्पुर्
मन्बैरुड् गिळैजरु मरुङ्गु शुर्ऱुर्, मिन्वीरु पूणित्तान् शैल्लुम् वेलैयिल् 670

औन्पतिन् आयिर कोटि-नौ सहस्र कोटि; यूकम्-सेना; तन् मुन् चैल-उसके सामने गयी और; पिन् चैल-पीछे गयी; जाङ्कर्-(दोनों) पार्श्वों में; मौय्प्पुर्-घने रूप से मिल आयी; मन् पैरु किळैजरुम्-और बहुत उत्कृष्ट बन्धु-बान्धव; चर्ऱुर्-

चारों ओर घेर आये; मिन् पौर पूणितान्-विजली-सम आभरण वाला; चैलुम्
वेलैयिल्-जब चला तब । ६७०

नौ सहस्र कोटि वानर वीर उसके आगे, पीछे, और पार्श्वों में सटे हुए
चले । उत्तम वन्धु-वान्धव भी चारों ओर घेरकर चले । विद्युत् से होड़
लगानेवाले कान्तिमय आभरणों से भूषित सुग्रीव जब चलने लगा तब (आगे
के पद में वाक्य जारी है) । ६७०

कौडिवन मिडैन्दन कुमुड बेरियिन्, इडिवन मिडैन्दन पणिल मेड्गिन
तडिवन् मिडैन्दन तयङ्गु पूणौळि, पौडिवन मैळुन्दन वानम् वोर्क्कवे 671

कौटि वनम्-ध्वजाओं के जंगल; मिटैन्तत्त-जुटे; कुमुडम् पेरियिन्-गरजनेवाली
भेरियों के; इटि वनम्-वज्रघोष के जंगल; मिटैन्तत्त-मिल आये; पणिलम्
एङ्कित-शंख वज उठे; तयङ्गु पूण्-चमकनेवाले आभरणों की; औलि तटि वनम्-
कान्ति रूपी तड़ितों का वन; मिटैन्तत्त-भर आया; वातम् पोर्क्क-आकाश को
ढँकते हुए; पौटि वनम्-धूल का जंगल; मैळुन्तत्त-उठा । ६७१

ध्वजाओं का वन (समूह) मिल आया । नर्दन करनेवाली भेरियों
के णवों का वन (समूह) भर आया । शंख वज उठे । प्रकाश-प्रसारक
आभरणों की कान्तियों के पुञ्ज भरे । आकाश को ढँकते हुए धूलि-वन
(समूह) उठकर फैला । ६७१

पौन्निनिन्	मुत्तिनिन्	पुनैमैन्	इशित्तिन्
मिन्निन	मणियिनिन्	पळिङ्गिन्	वैळ्ळियिन्
पिन्निन	विशुम्दिनुम्	वैरिय	पेट्पुर्त्
तुन्निन	शिविहैवैण्	गविहै	चुङ्गिन् 672

पौन्निनिन्-स्वर्ण के; मुत्तिनिन्-मोतियों से; पुनैमैल्-सुन्दर और महीन;
तूचिनिन्-वस्त्रों से; मिन्निन मणियिनिन्-चमकती मणियों से; पळिङ्किन्-स्फटिक
से; वैळ्ळियिन्-चाँदी से; पिन्निन-यनी हुई; चिविकै-शिविकाएँ; तुन्निन-
सटी हुई आयी; वैळ् कविकै-श्वेत छत्र; विचुम्पितुन् पेरिय-आकाश से भी बड़ी;
पेट्पु उड़-मनोरम रोति से; चुङ्गिन्-धूमती आयी । ६७२

शिविकाएँ मिल आयी, जो स्वर्ण, मोती, सुन्दर महीन वस्त्र, चमकने-
वाली मणियों, स्फटिक और चाँदी से निर्मित थीं । श्वेत-छत्र ऐसे और इतने
धूमते आये कि उनका फैलाव आकाश से भी अधिक विशाल लगा । ६७२

वीरन्कु किलैयवन् विळङ्गु शेवडि, पारिनिन् चेङ्गुल् परिदि मैन्दनम्
तारिनिन् पौलन्गळ् इळङ्गत् तारणित्, तेरिनिन् चैन्डनन् चिविकै पिन्शैल 673

वीरन्कु इळैयवन्-वीर श्रीराम के लघुभ्राता के; विळङ्गु-शोभायमान;
चे अटि-सुन्दर चरण; पारिनिन्-भूमि पर; चेङ्गुल्-पड़ते चले तो; परिदि
मैन्तनुम्-सूर्यपुत्र भी; तारिनिन्-हारों और पायलों की; पौलम् कळल्-मनोरम ध्वनि

को; तल्लङ्कुक्क-उठने देते हुए; चिविकै पित्-पालकियों के (उसके) पीछे; चैल-चलते; तारणि तेरिल्-भूमि रूपी रथ पर; चैत्तुत्तन्-चला । ६७३

वीर श्रीराघव के कनिष्ठ भ्राता के लाल चरण भूमि पर चलने लगे, तो सूर्यपुत्र भी धरती रूपी रथ पर (यानी भूमि पर पैदल) चलने लगा । तब उसके पैरों पर बँधी हुई वीर पायलें शब्दित हुई । उसकी शिविका उसके पीछे आयी । ६७३

अय्यदित्तन्	मात्तव	तिरुन्द	माल्वरै
नोय्यदित्तिर्	चेनैपिन्	बौळिय	नोन्गळल्
ऐय्यविर्	कुमरन्नुन्	दान्	मङ्गदन्
कैत्तीडर्न्	दयल्शैलक्	कादन्	मुत्तुशैल 674

नोन् कळल्-तगड़े कड़ों के धारक; ऐय विल्-सुन्दर धनुर्धर; कुमरन्नुम्-कुमार लक्ष्मण भी; तात्तुम्-आप (सुग्रीव) के साथ; चैत्त पित्तु ओळिय-सेना को पीछे छोड़कर; अङ्कतन्-अंगद के; कै तौटर्न्तु-हाथ से लगे हुए (पास-पास); अयल् चैल-साथ आते; कात्तल् मुत्तु चैल-(श्रीराम के पास पहुँचने की) इच्छा के आगे जाते; मात्तवन्-सम्मान्य प्रभु श्रीराम; इरुन्त माल्वरै-जहाँ रहे, उस पर्वत पर; नोय्यत्तितिल्-शीघ्र; अय्यत्तितन्-पहुँचे । ६७४

ठोस रूप से बनी पायल और सुन्दर धनु —इनके साथ शोभायमान लघुदेव लक्ष्मण और सुग्रीव साथ-साथ जाने लगे । अंगद उनके पार्श्व में उनसे लगा हुआ जा रहा था । वानर-सेना पीछे जा रही थी । और श्रीराम-मिलन की उत्कण्ठा उनके आगे (उनको ले) जा रही थी । वे मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम जहाँ रहते थे, उस पर्वत पर जा पहुँचे । ६७४

कण्णिय	कणिप्परुम्	जैल्वक्	कादल्विट्
टण्णलै	यडिदौळ	वणैयु	मन्विताल्
नण्णिय	कविकुलत्	तरश	नामवैल्
पुण्णियर्	डौळवरुम्	बरदन्	पोत्तुत्तन् 675

कण्णिय-सबको विस्मय में डालनेवाले; कणिप्पु अरुम्-अगणित; जैल्वम् कात्तल्-धन का प्रेम; विट्टु-त्यागकर; अण्णलै-प्रभु श्रीराम के; अटि तौळ-चरणों की पूजा करने हेतु; अणैयुम्-उठे हुए; अत्तुपित्ताल्-भक्तिभाव के साथ; नण्णिय-जो आया; कवि कुलत्तु अरचन्-कपिकुलपति; नाम वैल्-डरावने भाले वाले; पुण्णियन्-पुण्य-सूति श्रीराम को; तौळ वरुम्-नमस्कार करने आनेवाले; परतन् पोत्तुत्तन्-भरत के समान लगा । ६७५

सर्वमान्य और अगणित विपुल सम्पत्ति का प्यार त्यागकर कपिकुल-पति श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने के लिए उत्पन्न भक्ति के साथ श्रीराम के पास जा पहुँचा । तब वह भयावह भालाधारी श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने आनेवाले भरत के समान लगा । ६७५

पिडिवरुन्	दम्बियुम्	विरियप्	पेरुल
हिरुदियिऱ्	रानेन	विरुन्द	वेन्दलै
अऱैमणित्	तारिनो	डारम्	वार्दोडच्
चैऱिमलर्च्	चेवडि	मुडियिऱ्	तीण्डित्तान् 676

पिडिवु अरु-कञ्जी अलग न होनेवाले; तम्बियुम् पिरिय-कनिष्ठ भ्राता के भी अलग हो जाने से; पेर् उलकु इरुतियिल्-बड़े लोकों के अन्तिम काल में (युगान्त में); तान् अंन इरुन्त-अकेले, आप ही रहनेवाले (महाविष्णु के समान जो रहे); एन्तलै-उन महाप्रभु के; अऱै मणि तारितोड् आरम्-व्यणित मणियों की मालाओं के साथ मुक्ताहारों को भी; पार् तौट-भूमि को स्पर्श करने देते हुए; चैऱि मलर् चै-अटि-उत्फुल्ल पद्म के समान लाल चरणों को; मुडियिन्-अपने सिर से; तीण्डित्तान्-स्पर्श किया। ६७६

लक्ष्मण किसी भी हालत में श्रीराम से अलग होनेवाले नहीं थे। अब वे भी इनको अकेले छोड़कर चले गये थे। इसलिए ये श्रीराम सृष्टि के अन्त में, जब सारे लोग लुप्त हो जाते हैं, निपट एकाकी रहनेवाले श्रीविष्णु के समान अकेले रहे। तब सुग्रीव ने उनके दल-लसित, कमलपुष्प-सम लाल चरणों पर अपना सिर लगाते हुए नमस्कार किया। तब उसके वक्ष में रहनेवाली रत्न और मोती की मालाएँ भी भूमि पर लगीं। उनके आपस में टकराने से शब्द निकल रहा था। ६७६

तीण्डिय	कुरिशिलैच्	चिलैयि	राहवन्
नीण्डपोऱ्	इडक्कैया	नैडिटु	पुल्लिनान्
मूण्डैळु	वैण्डुळिपो	यौळिप्प	मुत्तुवुपोल्
ईण्डिय	करुणैतन्	दिरुक्कै	येविये 677

तीण्डिय कुरिचिलै-स्पर्श करनेवाले राजा को; चिलै इराकवन्-कोदण्डपाणी श्रीराघव ने; नीण्ड-दीर्घ; पोन्-सुन्दर; तट-विशाल; कैयाल्-करों से; नैडिटु-खूब; पुल्लिनात्त-आलिंगन किया; मूण्डु अळु-उफनकर उठा; वैण्डुळि-क्रोध; पोय् ओळिप्प-जाकर छिप गया; मुत्तुपोल्-पूर्व की तरह; ईण्डिय करुणै-अधिक स्नेह; तन्तु-दिखाकर; इरुक्कै एवि-बैठने की आज्ञा देकर। ६७७

अपने चरण-स्पर्शी महिमायुक्त सुग्रीव को कोदण्डपाणी श्रीराम ने अपने दीर्घ और सुन्दर हाथों से उठाकर गले लगा लिया। उनके मन में जो क्रोध उठा और बढ़ रहा था, वह ठण्डा पड़कर लुप्त हो गया। उन्होंने पहले का जैसा प्रेम दिखाया और बैठने की आज्ञा देकर;। ६७७

अयलनि	दिरुत्तिनिन्	त्तरशु	माणैयुम्
इयल्विन्नि	नियैन्दवे	यिनिदिन्	वैहुमे
पुयल्वोरु	तडक्कैनी	पुरक्कुम्	वल्लुयिर्
वैयिलिल	वैहुडै	यैत्तवि	त्तायित्तान् 678

अयल्-पास में; इतितु-सुख से; इस्तुति-बिठा लेकर; नित् अरचुम्-
तुम्हारा राज्य और; आण्युम्-शासन; इयल्पितिल्-शास्त्रोक्त रीति से; इयैन्तवे-
मिलकर चलते हैं न; पुयल् पौरु-मेघ-सम (दानी); तटक नी-विशाल हस्त तुम;
पुरक्कुम् पल् उयिर्-जिनका पालन करते, वे अनेक जीव; इतितित् वैकुमे-सुख से
रहते हैं न; कुटै-श्वेतछत्र; वैयिल् इलते-आतपहीन हैं न; अँत्त वित्तायितान्-
ऐसा पूछा । ६७८

अपने पास सुख से बिठा लिया और पूछा कि तुम्हारा राज्य और शासन
शास्त्रोक्त प्रकार से युक्त हैं । मेघसम (दानी) हाथों वाले तुमसे पालित
होकर विविध जीव और प्राणी सुख से रहते हैं ? तुम्हारा श्वेतछत्र आतप-
रहित है ? (क्या तुम प्रजा को किसी भी कष्ट से बचा रहे हो ?) । ६७८

पौरुळुडै यव्वुरै केट्ट पोळ्दुवान्, उरुळुडैत् तेरित्तान् पुदल्व नूळियाय्
इरुळुडै युलहित्तुक् किरवि यत्तनित्, अरुळुडै येरुक्कै यरिय वोवैत्तान् 679

पौरुळ् उटै-अर्थ-भरा; अ उरै-वह वचन; केट्ट पोळ्त्तु-जब सुना तब;
वान्-आकाश में; उरुळ् उटै-चलनेवाले; तेरित्तान्-रथ के स्वामी सूर्य के; पुतल्वन्-
पुत्र (ने); नूळियाय्-युगपुरुष; इरुळ् उटै उलकित्तुक्कु-अँधेरा-भरी दुनिया के; इरवि
अन्त-रवि के समान; नित्-आपकी; अरुळुडैयेरुक्कु-कृपा के पात्र मुझे; अँ
यरियवो-वे कार्य कठिन है क्या; अँत्तान्-कहा । ६७९

श्रीराम के वचन अर्थ-भरे थे । यह सुनकर आकाशचारी एकचक्र-रथ
के स्वामी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र ने जवाब दिया कि युगान्त में अमर रहनेवाले,
हे देवदेव ! अँधेरे से भरी रही भूमि के रवि के समान आप रहते हैं । ऐसे
आपकी कृपा के पात्र मुझे यह काम कठिन है क्या ? । ६७९

पित्तनरुम् विळम्बुवान् पेदै येत्तुन, दित्तनरु लुदविय शैल्व सैय्दिनेत्
मत्तनव नित्तवणि मरुत्तु वैहियैन्, पुन्निलैक् कुरक्कियल् पुदुक्कि नेत्तैत्तान् 680

पित्तनरुम्-आगे भी; विळम्बुवान्-कहा; मत्तनव-राजन्; पेत्तैयेन्-जड़मति
(में) ने; उत्तु इत् अरुळ् उतविय-आपके कृपादत्त; चैल्वम् अँयत्तिनेन्-धन पाया;
नित् पणि-आपकी आज्ञा; मरुत्तु-भुलाकर; वैकि-रहा और; अँत्त-मेरा (अपना);
पुल् निलै-क्षुद्र स्थिति का; कुरङ्कु इयल्-वानर-स्वभाव; पुत्तुक्किनेन्-नये रूप से
दिखा दिया; अँत्तान्-कहा । ६८०

सुग्रीव आगे बोला । रामराज ! मैं बुद्धिहीन हूँ । आपकी कृपा
से मुझे अधिक सम्पत्ति मिली । तो भी मैंने आपकी आज्ञा की उपेक्षा कर
दी और उसके द्वारा मैंने अपना क्षुद्र वानर का स्वभाव नये रूप से दिखला
दिया । ६८०

पैरुन्दिशै
तरुन्दहै

यत्तैत्तैयुम्
यमैन्दुमत्

पिशैन्दु
तन्मै

नेडियान्
शैय्दिलेन्

तिरुन्दिलै तिरुत्तिनाऱ् रैळिन्द शिन्वैनी
वरुन्दिनै यिरुप्पयान् वाळ्विन् वैहितेन् 681

पैरुम् तिवै अनैत्तैयुम्-सभी बड़ी दिशाओं में; यान् पिचैन्तु नेटि-में खाक छानकर ढूँढ़कर; तरुम्-(देवी सीता को) लाऊँ; तफै-वह सामर्थ्य; अमैन्तुम्-रहता है तो भी; अ तन्मै-उस प्रकार; चैय्तिलेन्-न करके; तिरुन्तु इल्लै-श्रेष्ठ आभरण वाली (सीताजी); तिरुत्तिनाल्-के कारण; तैळिन्त चिन्तै-विवेकमन; नी-आप; वरुन्तितै-दुःखी हो; इरुप्प-रहते; यान्-मैं; वाळ्विल्-(सुखी) जीवन में; वैहितेन्-डूबा रह गया । ६८१

सुग्रीव ने जारी किया । सभी लम्बी दिशाओं में जाऊँ, खाक छानूँ और देवी सीताजी को ले आऊँ —यह शक्ति मुझमें है । तो भी मैंने ऐसा नहीं किया । सुन्दर कारीगरी से युक्त आभरण-धारिणी सीताजी के कारण आपका सदा-विवेकी मन भी विचलित हुआ । आप दुःखी रहे, तब भी मैंने अपने सुखी जीवन में समय बिताया । ६८१

इनैयन यानुडै यियल्लु मैण्णमुम्
निनैवुमैन् इल्लिनि निन्ऱि यान्शैयुम्
विनैयुनल् लाण्मैयु विळम्ब वेण्डुमो
वनैहळल् वरिशिलै वळ्ळि योयैन्ऱान् 682

वतै कळल्-कारिगरीयुक्त पायलधारी; वरि चिलै-सबन्ध धनुर्धर; वळ्ळियोय्-वदान्य; यान् उटै-मेरे पास जो रहता है; इयल्लुम्-वह स्वभाव और; मैण्णमुम्-विचार; निनैवुम्-स्मरण; इतैयत्-ऐसे हैं; मैन्ऱाल्-तो; इति-आगे; यान्-मैं; निन्ऱ चैयुम्-(मित्र की) स्थिति में जो करूँगा; वितैयुम्-वह कार्य; नल् आण्मैयुम्-और श्रेष्ठ पुरुषोचित सामर्थ्य भी; विळम्ब वेण्डुमो-कहना भी चाहिए क्या; मैन्ऱान्-कहा । ६८२

सुनिर्मित पायल और सबन्ध धनु के स्वामी, वदान्य ! मेरा स्वभाव, मेरे विचार और मेरे स्मरण ऐसे हैं तो आगे मैं आपका साथी बनकर जो करूँगा उन कार्यों का और मेरी श्रेष्ठ वीरता का क्या कहा जाय ? । ६८२

तिरुवुरै मार्वन्तुन् दीरुन्द देयुम्बन्, दीरुवरुड् गालमुन् नुरिमै योरुरै
तरुविनैत् ताहैयिऱ् इल्लविऱ् इहोमो, वरदनी यितैयन् पहर्दियो वैन्ऱान् 683

तिरु उरै-श्रीनिवास; मार्वन्तुम्-वक्ष वाले भी; ओरुव अरु-जलदी जो नहीं बीतता; कालम्-वह वर्षाकाल; वन्तु-आकर; तीरुन्ततैयुम्-चला गया और; उन् उरिमै-अपना कर्तव्य पहचानकर; ओर् उरै-जो कहते हो, वह वचन; तरु वितैत्तु-सीता को लाकर देने का कार्यवाची है; आकैयिन्-इसलिए; ताळ्विऱ् आकुमो-(तुम्हारे वचन और कार्य) नीच हो सकते हैं क्या; परतन् नी-भरत (समान) तुम; इतैयत्-ऐसी बातें; पकर्तियो-क्यों कहो; मैन्ऱान्-बोले । ६८३

(पछतावे के साथ सुग्रीव ने वे शब्द कहे थे ।) श्रीवक्ष श्रीराम ने उत्तर

में कहा— शीघ्र बीतनेवाला वर्षाकाल भी आकर चला गया । तुम अपना उत्तरदायित्व समझकर बात करने लगे । तुम्हारे वचनों में सीता को ढूँढ़ लाने का संकल्प झलकता है । फिर इसमें क्षुद्रता कहाँ ? तुम मेरे लिए भरत के समान हो । फिर ऐसी बातें क्यों कहीं ? । ६८३

आरियन् पितृरु ममैन्दु नन्गुणर्, मारुदि यैव्वळि मरुवि नात्तैत्तच्
चूरियन् कान्मुळै तोन्ऱु मालवन्, नीरिरुम् परवैयि नैडिय शेनैयान् 684

आरियन्—आर्य श्रीराम (के); पितृरुम्—फिर भी; ममैन्दु—कहने को उद्यत होकर; नन्कु उणर्—खूब समझदार; मारुति—मारुति; अँ वळि—कहाँ; मरुवित्तान्—रहता है; अँत—कहने पर; चूरियन् कान् मुळै—सूर्य का पुत्र; अवन्—वह; नीर् इरुम् परवैयित्तु—जल-भरे बड़े समुद्र के समान; नैडिय चेतैयान्—बहुत विशाल सेना वाला होकर; तोन्ऱुम्—आ जायगा । ६८४

आर्य श्रीराम ने और कुछ कहने को उद्यत होकर पूछा कि त्रिकालज्ञ और विवेकी मारुति कहाँ है ? उसके उत्तर में सूर्यसूनु ने कहा— वह जल-भरित सागर-सम विशाल सेना वाला बनकर आयगा । ६८४

कोडियो रायिरड् गुडित्त तूदुवर्, ओडि नैडुम्बडै कौणर लुड्डदाल्
नाडरक् कुडित्तदु मिन्ऱु नाळैयव्, वाडलन् दान्नैयो डवनु मैय्दुमाल् 685

ओर् आयिरम् कोटि—एक सहस्र कोटि; कुडित्त—गणित; तूदुवर्—दूत; नैट्ट पटै—विशाल सेना; कौणरल् ओटित्तर्—लाने दौड़े है; तर—(सेना) लाने; कुडित्ततु नाळुम्—निर्धारित दिन भी; उड्डतु—आ गया; आल्—इसलिए; इन्ऱु नाळै—आज या कल; अ—उस; आटल् अम् तान्नैयोडु—शक्तिमान सेना के साथ; अवन्तुम् अँय्तुम्—वह भी आ जायगा । ६८५

एक सहस्र कोटि गणित दूत विशाल वानर-सेना को ले आने के लिए वेग के साथ गये हैं । उनके लौट आने के लिए निर्धारित दिन भी आ गया । इसलिए आज या कल सशक्त उस बड़ी सेना के साथ हनुमान भी इधर आ जायगा । ६८५

विहम्बिय विरामन्तुम् वीर निङ्कदोर्, अरुम्बोर् लाहुमो वमैदि नन्ऱैत्ताप्
पैरुम्बह लिडन्ऱदु पयर्दि निन्बडै, पौरुन्दुळि वावैत्तत् तौळुदु पोयित्तान् 686

विहम्पिय विरामन्तुम्—(सुग्रीव से) स्नेह करनेवाले श्रीराम (के); वीर—वीर; निङ्कु—तुम्हारे लिए; अतु—वह; ओर् अरुम् पौरुळ् आकुमो—एक कठिन काम होगा क्या; ममैति—विनय; नन्ऱु—भली है; अँता—कहकर; पैरुम् पकल्—लम्बा दिन; इडन्ततु—पूरा हो गया; पयर्ति—निकलो; निन् पडै—तुम्हारी सेना; पौरुन्तुळि—जब आकर मिल जायगी; वा—आओ; अँत—कहने पर; तौळुतु—नमस्कार करके; पोयित्तान्—चला । ६८६

सुग्रीव को प्यार करनेवाले श्रीराम ने सुग्रीव से प्रोत्साहन के शब्द में

कहा कि हे वीर ! तुम्हारे लिए यह काम कोई कठिन काम है क्या ? लेकिन तुम्हारी विनय श्लाघनीय है । उन्होंने आगे कहा कि देखो ! लम्बा दिन का समय पूरा हो गया । अब चलो और जब सेना एकत्रित हो आयगी तब आ जाओ । श्रीराम की यह आज्ञा लेकर सुग्रीव उनको नमस्कार करके चला । ६८६

अङ्गदस् किनियन् वरुळि यैयपोय्त्, तङ्गुदि युन्दैयो डैन्ऱु तामरैच्
चैङ्गणान् उम्बियुन् दानुञ् जिन्दैयिन्, मङ्गैयु मव्वळि यन्ऱु वैहिनान् 687

तामरै-कमल-सी; चैम् कणान्-लाल आँखों वाले; अङ्कतङ्कु-अंगद से; इत्तियन्-मधुर; अरुळि-(वचन) कहकर; ऐय-तात; पोय्-जाकर; उन्तैयोडु-अपने पिता के साथ; तङ्कुति-रहो; अँन्ऱु-कहकर; तम्पियुम्-अपने छोटे भाई (के साथ जो प्रत्यक्ष थे) और; चिन्तैयिन् मङ्कैयुम्-(जो मन में रहीं उन) देवी (के साथ) और; तानुम्-स्वयं; अन्ऱु-उस निशा में; अव्वळि-वहाँ; वैकितान्-ठहरे । ६८७

पद्माक्ष श्रीराम ने अंगद से मधुर वचन कहे और आज्ञा दी—सुन्दर वीर ! तुम भी जाओ और अपने पिता के साथ रहो । फिर वे मन में सीता की चिन्ता और पास में लक्ष्मण को रखते हुए अकेले वहाँ रहे । ६८७

अन्ऱुव णिरुत्तन् नलरि कीट्टिशैप्, पौन्ऱिणि नैडुवरै पौलिवु उदमुत्
वन्ऱिऱुऱ् ङुडुवर् कूव वानरक्, कुन्ऱुऱुळ् नैडुम्बडै यडैन्द कूड्वाम् 688

अन्ऱु-उस रात; अवण्-वहाँ (माल्यवान पर्वत) पर; इरुत्तत्तन्-ठहरे; अलरि-सूर्य (के); कीळ् तिचै-पूर्व दिशा में; पौन्ऱिणि-स्वर्णमय; नैडु वरै-बड़ी (उदय-) गिरि पर; पौलिवु उरात-शोभायमान होने से; मुत्-पहले; वल् तिडल्-अधिक सशक्त; तूतुवर्-दूतों के; कूव-पुकारने-पर; कुन्ऱु उऱुळ्-पर्वत-सम; वानरम्-वानरों की; नैडु पडै-विशाल सेना; अटैन्ततु-आ पहुँची; कूड्वाम्-यह कहेंगे । ६८८

उस रात भर में वे उस माल्यवान पर्वत पर रहे । सूर्य के पूर्व दिशा की स्वर्णिम उदयगिरि पर शोभायमान दिखने से पूर्व ही बहुत बलवान दूतों के बुलाने पर पर्वत-सम वानरों की विशाल सेना कैसे आ पहुँची ? इसका अब विवरण देगे । ६८८

11. तात्तैकाण् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

आनै	यायिर	मायिरत्	तैऱुळ्वलि	यमैन्द
वान	रादिप	रायिर	रुडन्वर	बहुत्त
कूत्तन्	माक्कुरड्	गैयिरण्	डायिर	कोडित्
तानै	योडमच्	चदवलि	यैन्ववन्	शार्न्दान् 689

अ चत बलि अँतूपवन्-वह शतबली नाम का वीर; आथिरम् आथिरत्तु-सहस्र-सहस्र (दस लाख); आतै-गजों के; अँरुळ् बलि अमैन्त-विकट बल से युक्त; आथिरर्-वानर अतिपर्-सहस्र वानर-यूथप; उटन् वर-साथ आते; वकुत्त-दल-बद्ध; कूत्त-कूबड़े; मा-बड़े; ऐ इरण्डु-दस; आथिर-सहस्र; कोटि-कोटि; कुरङ्कु-वानरों की; तातैयोटु-सेना के साथ; वन्तान्-आया । ६८६

शतबली नामक वानर वीर आया; जिसके साथ दस-दस लाख गजों के-से बल वाले वानराधिपति आये । और उनके पीछे व्यूहों में बद्ध दस सहस्र करोड़ झुकी पीठ वाले वानरों की सेना आयी । ६८९

ऊत्त्रि	मेरुवै	यँडुकुक्कु	मिडुक्किनुक्	कुरिय
तेन्	रैरिन्दुण्डु	तँळिवुरु	वानरच्	चेनै
आन्त्र	पत्तुन्	आथिर	कोडियो	डमैयत्
तोन्त्रि	तात्तवन्डु	शुशेडण	नैनुम्बैयर्त्	तोन्डल् 690

चुचेटणन् अँतुम् पयर् तोन्डल्-सुषेण नामक वीर; मेरुवै-मेरुपर्वत को; ऊत्त्रि अँटुकुक्कु-उखाड़कर उठा लेने की; मिडुक्किनुक्कु उरिय-शक्तिसम्पन्न; तेन् तैरिन्तु उण्डु-सुरा का (परिमाण) जानकर पान करके; तँळिवु उरु-स्वच्छ (मन वाली); आन्त्र वानर-चेन्नै-श्रेष्ठ वानर-सेना; पत्तु नूआथिर कोटि योटु-दस लाख सहस्र के साथ; अमैय-युक्त होकर; वन्तु तोन्त्रितान्-आकर प्रकट हुआ । ६९०

सुषेण नामक बड़े वीर आये । उसके साथ उत्कृष्ट दस लाख कोटि वानरों की सेना आयी । वे वीर मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखते थे । मात्रा जानकर पिये हुए थे, उनके मन में कोई भ्रम नहीं था (ऐसे वीरों के साथ सुषेण आया ।) । ६९०

ईरिल्	वेलैयै	यिमैप्पुरु	मैल्लैयिर्	कलक्किच्
चेरु	काण्गुरुन्	दिउल्हैळ	वानरच्	चेनै
आर्रै	णाथिर	कोडिय	डुडन्वर	वमुदिन्
सायि	लामौळि	युरुसैयैप्	पयन्दवन्	वन्दान् 691

ईरु इल्-जिसके विस्तार का अन्त नहीं; वेलैयै-उस सागर को; इमैप्पुरुम् अँल्लैयिल्-पलक मारते समय के अन्दर; कलक्कि-विलोडकर; चेरु काण्गुरुम्-पंकिल बना सकनेवाले; मारु इला-अनुपम; अमुत्तिन् मौळि-अमृतवाणी; उरुसैयै-रुमा (सुग्रीव-पत्नी) को; पयन्दवन्-जिसने जन्म दिया था, वह; तिउल् कँळु-शक्तिसम्पन्न; वानर चेन्नै-वानर-सेना; आरु अँणाथिर कौटि-छः के आठ (अड़तालीस) की; अतु-उसके; उटन् वर-साथ आते; वन्तान्-आया । ६९१

बाद अनुपम अमृत-सम बोली वाली रुमा का पिता आया, जो अपार सागर को भी पलक मारते समय के अन्दर मथकर पंकिल बना सकता था । उसके साथ सशक्त अड़तालीस करोड़ की वानर-सेना आयी । ६९१

ऐम्ब	दायन्	शायिर	कोडियेण्	णमैन्द
मोय्म्बु	माल्वरै	पुरैनेडु	वानर	मोय्प्प
इम्बर्	जालत्तुम्	वानत्तु	मैळुदिय	चीर्त्ति
नम्ब	नैत्तन्द	केशरि	कडलैत्त	नडन्दान् 692

इम्पर् जालत्तुम्-इस संसार में; वात्तुम्-व्योम में; अँळुत्ति चोर्त्ति-अंकित कीर्ति रूपी; नम्पत्तै तन्त-महिमावान वीर (हनुमान) को; तन्त-जन्म देनेवाला; केचरि-केसरी नाम का सेनापति; ऐम्पतु आय-पचास के; नूशायिर कोटि-लाख करोड़; अँण् अमैन्त-संख्या के; माल् वरै पुरै-श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत-सम; मोय्म्पु नैडु वानरस्-भुजा वाले वानरों (की सेना) के; मोय्प्प-साथ आते; कडल् अँत्त-समुद्र के समान; नडन्तान्-आया । ६६२

भूलोक और व्योम-लोक में भी जिसकी कीर्ति अंकित थी, ऐसे यशस्वी श्रेष्ठ हनुमान के जनक केसरी पचास लाख कोटि में गिनी हुई, कैलास पर्वत-सम भुजा वाले और सशक्त वानरों की लम्बी सेना से घिरा हुआ आया । ६९२

मुत्तियु	मामैन्नि	नरक्कत्तै	मुरण्ड	मुक्कुक्कुम्
तनिमै	ताङ्गिय	वुलहैयुञ्	जलम्वरिन्	कुमैक्कुम्
कुनियु	माक्कुरड्	गौरिरण्	डायिर	कोडि
अत्तिक	मुन्वर	वान्पैयर्क्	कण्णन्वन्	दडैन्दान् 693

मुत्तियुम् आम् अँत्तिन्-क्रोध करे तो; नरक्कत्तै-सूर्य को; मुरण् अड्-निर्बल बनाते हुए; मुक्कुक्कुम्-मार देगा; चलम् वरिन्-उग्र कोप होगा तो; ततिमै-अकेले ही; ताङ्गिय उलकैयुम्-(हमको) धरती रहनेवाली भूमि को भी; कुमैक्कुम्-ध्वस्त कर देगा; कुत्तियुम्-(ऐसे) झुके रहनेवाले; मा कुरङ्कु-बड़े-बड़े वानर; ईर् इरण्डु-दो के दो (चार); आयिर कोटि-सहस्र कोटि (की); अत्तिकम् मुत्त वर-सेना के सामने जाते; आन् पैयर् कण्णन्-गाय को आँख नाम का (गवाक्ष); वन्तु अडैन्तान्-आ पहुँचा । ६६३

गवाक्ष आया और उसके सामने एक बहुत बड़ी वानर-सेना आयी । उसकी संख्या चार सहस्र कोटि थी । उसके वीर ऐसे थे कि क्रोध करें तो सूर्य को भी निर्बल करके मार दें । और उग्र क्रोध हो तो हमको धारण करनेवाली धरती को भी ध्वस्त कर दें । वे वीर आकार में बड़े थे और उनकी पीठ झुकी हुई थी । ६९३

मण्गौळ्	वाळैयिड्	उत्तत्तिन्	वलियेन	वयिरत्
तिण्गौण्	माल्वरै	मयिर्प्पुत्तु	तत्तवैन्तु	तिरण्ड
कण्गौ	ळायिर	कोडियि	निरट्टियिड्	कणित्त
अँण्गि	तीट्टङ्गौण्	डैळ्ळवलित्	तूमिर	निरुत्तान् 694

अँळ्ळ वलि-अतिबली; तूमिरन्-धूम्र; मण् कौळ्-भूमि को उछाड़नेवाले;

वाळ् अँयिरु-श्वेत दाँतों से भूषित; एतत्तित्- (श्रीविष्णु के अवतार) वराह के समान; वलियत्-बली; वयिरम्-सारयुक्त; तिण् कौळ्-सशक्त; माल् वर-बड़े पर्वत; मयिर् पुस्तत्-इनके बाल की जड़ में समा जायँगे, ऐसा; तिरण्ट-मोटे-तगड़े; कण् कौळ्-विशाल विस्तार के; आयिरम् कोटियिन् इरट्टियिल्-सहस्र कोटि के दुगुने; कणित्त-गिने हुए; अँण्किन् ईट्टम् कौण्टु-रीछों का दल लेकर; इत्तुत्तान्-आ पहुँचा । ६६४

अत्यधिक बली धूम्र भूमि को उत्पाटित करनेवाले श्रीविष्णु के वराहावतार के समान बड़े बलवान दो सहस्र कोटि में गणित रीछों का समूह ले आया । वे रीछ इतने तगड़े थे कि सुदृढ़ और कठोर बड़े पर्वत भी उनके एक रोम के मूल में समा सकते थे । ६९४

तत्तिव	रुन्दड्ड	गिरियैत्तप्	पेरियवत्	शलत्ताल्
नितैयु	नैज्जिऱ	वुरुमैत्त	वुरुक्कुऱु	निलैयत्
पनश	नैत्तववत्	पत्तिरिण्	डायिर	कोडिप्
पुत्तिव	वैज्जित्त	वानरप्	पडैहौण्डु	पुहुन्दान् 695

तत्ति वरुम् तट किरि अँत्त-अकेले आनेवाला बड़ा पर्वत है, ऐसा मान्य; पेरियवत्-भीमकाय; चलत्ताल्-अतिक्रोध से; नितैयुम् नैच्चु इऱ-सोचनेवालों के मन को तोड़ दे, ऐसा; उरुम् अँत्त-गाज के समान; उरुक्कुऱु-पिघलानेवाले; निलैयत्-स्वभाव का; पनचत्त-पनस (नाम का यूथप); पत्तिरिण्टु आयिर कोटि-द्वादश सहस्र कोटि; पुत्तिवम् वैम् चित्तम्-पवित्र (पर) भयंकर क्रोधी; वानरम् पटै कौटु-वानर-सेना को साथ लेकर; पुकुन्तान्-आ पहुँचा । ६६५

पनस नामक वानर यूथप बारह हजार करोड़ पवित्र पर भयंकर वानरों की सेना के साथ आ पहुँचा । वह यूथप अकेले उठकर आनेवाले पर्वत के-से आकार का था । उसका दुर्दम क्रोध सोचनेवाले के मन को भी तोड़ सकता था, और वज्र के समान उसको चूर-चूर कर सकता था । ६९५

इडियु	माळ्हडन्	मुळक्कमुम्	वैरुक्कौळ	विशैक्कुम्
मुडिविल्	पेरुमुळक्	कुडैयन	विशैयन	मुरण
कौडिय	कूऱैयु	मौप्पन	पदिऱैन्दु	कोडि
नैडिय	वानरप्	पडैहौण्डु	पुहुन्दन	नीलन् 696

नीलन्-नील; इटियुम्-वज्र-नाद; आळ कटल्-और गहरे समुद्र के; मुळक्कमुम्-गर्जन की; वैरु कौळ-भयभीत करते हुए; इचैक्कुन्-उठनेवाले; मुटिवु इल्-अपार; पेरु मुळक्कु-बड़ा शोर; उटैयत्-रखनेवाले और; विचैयत्-वेगवान; मुरण-विभिन्न; कौटिय कूऱैयुम्-क्रूर यम की भी; मौप्पत्त-समता करनेवाले; पदिऱैन्दु-दस के पाँच (पचास); कोटि-कोटि (की); नैडिय वानरम् पटै-विशाल वानर-सेना; कौण्टु-साथ लेकर; पुकुन्तत्तन्-प्रविष्ट हुआ । ६६६

नील, वज्र और गम्भीर सागर के गर्जन को भय से स्तब्ध करते हुए उठनेवाले जोर के घोष से युक्त, वेगवान, विविध प्रकार के, और क्रूर यम की वरावरी करनेवाले पचास करोड़ वानरों की सेना को लेकर पहुँचा । ६९६

इळैत्तु	वेरौरु	मानिलम्	वेण्डुमेन्	इरिङ्ग
मुळैत्त	मुप्पदि	तायिर	कोडियिन्	मुर्ऱुम्
विळैत्त	वैञ्जिनत्	तरियिन्	वैरुवुऱ	विळिक्कुम्
अळक्क	रोडुमक्	कवयनेन्	ववन्नुम्वन्	दडैन्दान् 697

अ कवयन् अन्पवत्तुम्-गवय नाम का वह भी; वेरु और-अन्य एक; मा निलम् वेण्डुम्-बड़ी भूमि चाहिए; अन्नु-कहकर; इळैत्तु इरङ्क-दुःखी होकर मन कृश हो, ऐसा; मुळैत्त-जो प्रकट हुए; मुप्पतिन् आयिरम् कोटि-तीस सहस्र कोटि; मुर्ऱुम् विळैत्त-सूतल भर में व्याप्त; वैम् चित्तु-भयंकर क्रोध से युक्त; अरि इतम्-वानर-समूह; वैरुवु उऱ-भय उत्पन्न करते हुए; विळिक्कुम्-तरेरनेवाले; अळक्करोडुम्-(सेना-) सागर के साथ; वन्नु अटैन्तान्-आ पहुँचा । ६९७

गवय (गज?) नामक वीर आया, और उसके साथ एक बड़ा सेना-सागर आया । उसको देखकर लोगों के मन में यह दया का भाव उठता था कि (यह भूमि उनके संचार के लिए पर्याप्त नहीं है और) दूसरी पृथ्वी चाहिए । उनकी संख्या तीस हजार करोड़ की थी । अत्युग्र सिंह भी डर जाय, ऐसा तरेरनेवाले वीर थे उस सेना के वानर । ६९७

माह	रत्तत्त	वरत्तत्त	मलैयन	निलैय
वेह	रत्तवैड्	गण्णुमिळ्	वैयिलन	मलैयिन्
आह	रत्तितुम्	वैरियन्	वाऱैन्नु	कोडि
शाह	रत्तौडुन्	दरीमुह	नैववन्	शार्न्दान् 698

तरीमुक्क अन्पवत्तु-दरीमुख नाम का वह; मा करत्तत्त-मोटी भुजाओं वाले; वरत्तत्त-अनेक वर जिन्हें प्राप्त थे; मलैयन्-पर्वत-सम सुदृढ़; वेकरत्त-उग्र; वैम् कण्-भयंकर आँखों से; उमिळ् वैयिलन्-निकलते अंगारों वाले; मलैयिन् आकरत्तितुम्-पर्वताकार से; वैरियन्-बड़े; आऱु ऐन्नु कोटि-छः के पाँच (तीस) करोड़; शार्न्दान्-(सेना-) सागर के साथ; चार्न्तान्-आ मिला । ६९८

दरीमुख तीस करोड़ सेना के समुद्र के साथ आ पहुँचा । उसके वीरों के हाथ बहुत मोटे थे । उन्हें श्रेष्ठ वर मिले थे । पर्वत से भी कठोर वे बहुत ही उग्र, आँखों से अंगारे उगलनेवाले और गिरियों से भी बड़े आकार के थे । ६९८

आयि	रत्तत्त	नरुहो	डियिऱ्कडै	यमैन्द
पायि	रप्पैरुम्	वडैहोण्डु	परवैयिऱ्	डिरैयिन्

तायु रत्तुड नेवरत् तडनेडु वरैयै
 एयु रप्पुयच् चाम्बनेन् ववनुम्बन् दिश्रुत्तान् 699

तट-विशाल; नैटु-ऊँचे; वरै एय-पर्वत के समान; उरु-आकार के; पुयम्-कन्धों वाले; चाम्पन् अन्नपवनम्-जाम्बवान नाम का वह भी; परवैयिन् तिरैयिन्-सागर-तरंगों के समान; ताय-छलाँग लगाते हुए; उरुत्तु-वर के साथ; उटते वर-साथ आनेवाले; आयिरत्तु अरु नूरु-एक सहस्र छः सौ; कोटियिन्-करोड़ की संख्या के; कटै अमैन्त-सर्वत्र व्याप्त; पायिरम् पैरुम् पटै-महिमामय बड़ी सेना; कौण्डु-साथ लेकर; वन्तु इश्रुत्तान्-आ पहुँचा । ६९९

पर्वतोन्नत भुजाओं वाला जाम्बवान, समुद्र तरंगों के समान छलाँग मारते आनेवाले एक सहस्र छः सौ करोड़ की संख्या के वीरों की बड़ी सेना लिये आ पहुँचा । ६९९

बहुत्त तामरै मलरय निशिशरर् वाणाळ्
 उहुत्ति नीयैत्तप् पौरुवरुम् बैरुवलि युडैयान्
 पहुत्त पत्तुनू रायिरप् पत्तिथि तिरण्डु
 तौहुत्त कोडिवैम् बडैहौण्डु दुन्मुहन् तौडर्न्दान् 700

पौरुव अरुम्-अप्रमेय; पैरु वलि उडैयान्-बड़ा बली; तुन्मुकन्-दुर्मुख; वकुत्त-लोकसर्जक; तामरै मलर्-(विष्णु की नाभि रूपी) कमल-पुष्प पर आसीन; अयन्-ब्रह्माजी (के); निचिचरर् वाळ्नाळ्-निशिचरों की आयु के दिनों की; नी उकुत्ति-तुम ही समाप्त करो; अन्न-कहने पर; पकुत्त-व्यूह-बद्ध; पत्तु नूरायिरम्-दस लाख; पत्तिथिन्-पंक्तियों में; तौकुत्त-लगे आनेवाले; इरण्डु कोटि-दो करोड़ की; वैम् पटै कौण्डु-भयंकर सेना लेकर; तौडर्न्दान्-(उनका) अनुगमन करता आया । ७००

अप्रतिम बलशाली दुर्मुख ऐसे वीरों को ले आया, जिनको लोकसर्जक कमलासन ब्रह्मा ने शायद यह कहकर बनाया था कि तुम्हीं निशिचरों की आयु का अन्त कर दो । दस-दस लाखों के दलों में विभक्त उन वीरों की कुल संख्या दो करोड़ थी । ७००

कोडि कोडिन् रायिर वैण्णैत्तक् कुविन्द
 नीडु वैञ्जित्त तरियिन्न मिरुपुडै नैरुङ्ग
 मूडु मुम्बरु मिम्बरुम् बूळियिन् मूळ्हत्
 तोडि वरन्दतार्क् किरिपुरै दुमिन्दनुन् दौडर्न्दान् 701

तोडु इवर्न्त-दलयुक्त; तार्-पुष्पमालाधारी; किरिपुरै-पर्वत-सम; तुमिन्तन्-द्विविध भी; कोटि कोटि नूरायिरम्-कोटि-कोटि लाख; अण् अन्न-संख्या में; कुविन्त-एकत्रित; नीडु वैम् चित्तत्तु-बहुत भयंकर क्रोधी; अरि इतम्-वानरवृन्द; इरु पुटै नैरुङ्क-दोनों पार्श्वों में लगे आए; मूडम् उम्परुम् इम्परुम्-

भूमि को ढँकनेवाला आकाश और भूमि दोनों को; पूछियिल् मूळक-धूल में छिपने देते हुए; तीटर्न्तान्-वाद आया । ७०१

दलयुक्त फूलों की माला पहने हुए पर्वत-सम द्विविद नामक वीर कोटि-कोटि लाखों के, अतिक्रोधी वानर यूथों के मध्य आया । उनके चलने के कारण जो धूल उठी, उसमें भूमि के ऊपर फैला हुआ आकाश और भूतल दोनों डूब गये । ७०१

इयैन्द	पत्तुन्	रायिरप्	पत्तैन्नुडु	गोडि
उयर्न्द	वैञ्जित्त	वानरप्	पडैयोडु	मौरुङ्गे
शयन्द	त्तक्कीरु	वडिवैन्त	तिडल्होडु	तळैत्त
मयिन्दन्	मक्कश	कोमुहन्	इन्नोंडुम्	वन्दान् 702

चयम् तत्तक्कु और वटिवु अँत-विजय को मिला एक रूप है, ऐसा लगनेवाले; तिडल् कौटु-बल के साथ; तळैत्त-उत्कृष्ट; मयिन्तन्-मयन्द; मल्-मल्ल; कच्च कोमुक्कन् तन्तौडुम्-गजगोमुख के साथ; इयैन्त-युक्त; पत्तु नूरायिरम् पत्तु अँतुम्-सौ लाख; कोटि-कोटि; उयर्न्त वैम् चित्तम्-अति भयंकर क्रोधी; वानरम् पटैयोडुम्-वानर-सेना के साथ; औरुङ्के वन्तान्-मिलकर आया । ७०२

मैंद आया जो विजय का ही साक्षात् रूप था । वह मल्ल गजगोमुख को भी साथ लाया । उनके साथ सौ सहस्र कोटि उत्कृष्ट और क्रोधी वानरों की सेना आयी । ७०२

कडङ्गु	पोल्वन	कार्त्तिन्नुडु	गूर्त्तिन्नुडु	गडिय
पिडङ्गु	तैण्डिरैक्	कडल्पुडु	पैयर्न्दैत्तप्	पैयर्व
मडङ्गौळ्	वानर	मौन्बुडु	कोडियैण्	वहुत्त
तिडङ्गौळ्	वैञ्जित्तप्	पडैहोडु	कुमुदनुम्	जेर्न्दान् 703

कुमुत्तन्नुम्-कुमुद; कडङ्कु पोल्वन्त-पतंग के समान (उड़नेवाले); कार्त्तिन्नुम् कटिय-पवन से भी (तेज) और यम से भी क्रूर; पिडङ्कु-शोभनेवाली; तैळ् तिरै-स्वच्छ वीचियों का; कटल्-समुद्र; पुटै पैयर्न्तु अँत-स्थान बदला हो, ऐसा; पैयर्व-स्थान बदलती जानेवाली; औन्पतु कोटि-नौ करोड़ की; अँण् वकुत्त-संख्या में गणित; तिडम् कौळ्-बली; वैम् चित्तम्-भयंकर क्रोधी; मडम् कौळ्-दूसरों की वीरता को परास्त करनेवाली; वानरम् कौटु-वानर-सेना को साथ ले; चेर्न्तान्-आ पहुँचा । ७०३

कुमुद, पतंग-सम, पवनदेव और यमराज से भी कठोर और ऐसा चलनेवाले मानो स्वच्छ वीची वाला समुद्र स्थान बदलकर आ रहा हो, नौ करोड़ वानरों की सेना ले आया । वे वानर मन और शरीर दोनों के बड़े बली और साहसी व क्रोधी थे । ७०३

कैयब्	जाशर	मुडैयवक्	कडवुळैक्	कण्डु
मैय्यब्	जादवन्	मादिरब्	जिरिर्देत्त	विरिन्द
वैयब्	जाय्दरत्	तिरिदुरु	वानरच्	चेत्तै
ऐयब्	जायिर	कोडिहौण्	डनुमन्वन्	दडैन्दान् 704

अम् कै-सुन्दर किरणें; चाचरम् उटैय-हजारों के साथ रहनेवाले; अ कटवुळै-उस (सूर्य-) देव को; कण्डुम्-देखकर भी; मैय् अञ्चातवन्-शरीर में थोड़ा भी कम्पन न लानेवाले; अनुमन्-हनुमान; मातिरम् चिरितु-दिशाएँ (इसके सामने) छोटी है; अत्त विरिन्त-ऐसा विशाल; वैयम्-भूमि; चाय्तर-एक ओर धँस जाय, ऐसा; तिरितरु-धूमनेवाली; ऐ अञ्चु-पचीस; आयिरम् कोटि-सहस्र कोटि; वानर-चेत्तै-वानर-सेना; कौण्डु-साथ लिये; वन्तु अटैन्तान्-आ पहुँचे । ७०४

सहस्रों सुन्दर किरणों को करों के रूप में रखनेवाले सूर्यदेव को सामने से देखकर भी जिसके शरीर में कोई कम्पन नहीं होता था, वह हनुमान दिशाओं को छोटा बनाते हुए और भूमि को एक ओर झुकाते हुए आनेवाले पचीस हजार करोड़ वानरों की सेना लेकर आया । ७०४

नौय्दिर्	कूडिय	शेत्तैन्	शायिर	कोडि
अैय्दत्	तेवरु	मैन्गौलो	मुडिवैन्व	दैण्ण
मैयर्	चिन्दैया	लन्दहन्	मरुकुर्कुर्	मयङ्गत्
तैयवत्	तच्चन्मैय्त्	तिरुर्नैडुङ्	गादलन्	शैर्न्दान् 705

तैयवम् तच्चन्-देवशिल्पी (विश्वकर्मा) का; मैय् तिरु-सच्चा प्रतिरूप; नैटु कातलन्-उसका बहुत प्यारा पुत्र (नल); तेवरुम्-देवता भी; मुटिवु अैन् कौलो-इसका पार कहाँ; अैत्तपु अैण्ण-यह सोचें, ऐसा; अन्तकन्-अन्तक (यम); मैयल् चिन्तैयाल्-भ्रमित मन में; मरुकुर्कुर्-मोहित होकर; मयङ्क-चक्रित हो; नौय्तिन् कूडिय-सहसा एकत्रित; नूशायिर कोटि-सहस्र (सहस्र) कोटि; चेत्तै अैय्त्त-सेना को अपने साथ आने देते हुए; चैर्न्दान्-आ पहुँचा । ७०५

देवशिल्पी का जो प्रतिरूप ही लगता था वह उसका पुत्र नल, अपने साथ एकत्रित लाख-लाख कोटि के वानरों की सेना लेकर आया । वह सेना इतनी विशाल थी कि देव भी यह विस्मय करने लगे कि इसका अन्त कहाँ और यम भी भ्रमित और अधीर हो गया । ७०५

कुम्ब	नुङ्गुलच्	चङ्गन्	मुदलितर्	कुरङ्गिन्
तम्बै	रुम्बडैत्	तलैवरुह	डरवन्द	तार्त्त
इम्बर्	निन्ऱवर्क्	कैण्णरि	दिराहव	त्तावत्
तम्बै	नुन्ऱुणैक्	कुरियमर्	रुरैप्परि	दळवे 706

कुम्पतुम्-कुम्ब व; कुलम् चङ्कतुम्-कुलीन शंख; मुतलितर्-आदि; तम् पैरु-अपनी-अपनी बड़ी; कुरङ्किन् पटै तलैवरुक्ळ-वानर-सेना के पति; तर वन्त-

अपने साथ आयी; तातै-सेना; इम्पर निन्नरवर्क्कु-भूतलवासियों के लिए; अण्णरितु-गिनना असम्भव है; इराकवन् आवत्तु-श्रीराघव के तूणीर के; अम्पु अन्नत्तु तुणैक्कु उरिय-अस्त्र जितने हैं, उतने लगनेवाले; अळवु मर्कु-दूसरी गणना; उरैपरितु-कहना कठिन है । ७०६

कुम्भ और कुलीन शंख आदि अपनी वड़ी-वड़ी वानर-सेनाओं के साथ आये । उनकी वानर-सेनाएँ इस लोक के वासियों द्वारा गिनी नहीं जा सकती थी । श्रीराघव के तूणीर में रहनेवाले शरों के उतने हैं, यह कहा जा सकता था । और कोई गणना सम्भव नहीं । ७०६

तोयि	लाळियो	रेळुनीर्	शुवर्जिर्वेण्	डुहळाम्
शायि	नण्डमु	मेरुवु	मौरुङ्गुडन्	शरियुम्
एयिन्	मण्डल	मैळ्ळिड	विडमिन्ऱि	यिरियुम्
कायिन्	वैङ्गनर्	कडवुळु	मिरवियुङ्	गरियुम् 707

तोयिल्-(यह सेना-समूह) गोता लगाएँ तो; आळि-समुद्र; ओर् एळुम्-सातों; नीर् च्वरि-जल सूखकर; वैळ् तुकळ् आम्-श्वेत धूल वन जावें; चायिन्-एक ओर झुकें तो; अण्टमुम्-यह अण्ड और; मरुवुम्-मेरु; औरुङ्कु-एक साथ; उटन् चरियुम्-उनके साथ झुक जाते; एयिन्-घूमने लगें तो; मण् तलम्-यह भूमि; अैळ् इट-तिल धरने को; इटम् इन्ऱि-स्थान नहीं हो; इरियुम्-जायगी; कायिन्-क्रोध करें तो; वैम् कनल् कटवुळुम्-भयंकर अग्निदेव और; इरवियुम्-रवि; करियुम्-झुलसंगे । ७०७

ऐसी वड़ी सेना आकर एकत्रित हुई; अगर वह समुद्र में मग्न हो, तो सातों समुद्र सूख जायें और सफ़ेद धूल मात्र रह जायें । अगर वह एक ओर पिल पड़े तो भूमण्डल और मेरु उसके साथ उसी ओर घँस जायें । अगर वह संचार करने लगे तो भूतल पर तिल रखने को भी स्थान नहीं मिले । अगर वह क्रोध करे तो भयंकर अनलदेव और अर्कदेव जलकर काले पड़ जायें । ७०७

अैण्णि	नान्मुह	रैळुपदि	नायिरर्क्	कियला
उण्णि	नण्डङ्ग	ळोर्बिडि	युण्णव्	मुदवा
कण्णि	नोक्कुऱिर्	कण्णुद	लान्नुक्कुङ्	गदुवा
मण्णिन्	मेल्वन्द्	वानरत्	तानैयिन्	वरम्बे 708

मण्णिन् मेल-भूमि पर; वन्त-एकत्रित हो आयी; वानर तानैयिन्-वानर-सेना का; वरम्पु-विस्तार (सीमा); अैण्णिन्-विचार करें तो; नान्मुकर्-चतुर्मुख; अैळुपतिनायिरर्क्कु-सात सहस्रों के लिए भी; इयला-असम्भव है; उण्णिन्-खाने लगें; अण्टङ्कळ्-सारे अण्ड; ओर् पिटि उण्णवुम्-एक घास खाने के लिए भी; उतवा-पर्याप्त नहीं होंगे; कण्णिन् नोक्कुऱिन्-आँखों से देखने लगे तो; कण्णुतलान्नुक्कुम्-भालनेत्र (शिवजी) के लिए भी; कतुवा-देखना असम्भव है । ७०८

भूमि पर जो वानर-सेना एकत्रित हो आयी, उसकी संख्या गिनना हो तो सत्तर हजार चतुर्मुखों के लिए भी असम्भव है। इस सेना के लिए खाना हो तो सारे अण्ड एक ग्रास भी नहीं बनें। आँखों से देखना हो तो भाल-नेत्र शिवजी की दृष्टिपथ में न समा सके। ७०८

औडिक्कु	मेल्वड	मेरुवै	वेरौडु	मौडिक्कुम्
इडिक्कु	मेल्डु	वानह	मुहट्टैयु	मिडिक्कुम्
पिडिक्कु	मेरुपैरुड्	काडूरैयुड्	गूरैयुम्	विडिक्कुम्
कुडिक्कु	मेरुक्कड	लेळैयुड्	गुडङ्गैयिर्	कुडिक्कुम् 709

औडिक्कुमेल-तोड़ने लगे; वट मेरुवै-तो उत्तर के मेरु को; वेरौडुम् औडिक्कुम्-मूल से तोड़ देगे; इडिक्कुमेल-गिराना चाहें; नेटु वानक मुकट्टैयुम्-विशाल आकाश की चोटी को भी; इडिक्कुम्-गिरा देंगे; पिडिक्कुमेल-ग्रसना चाहें तो; पैरु काडूरैयुम्-बड़े पवन को; कूरैयुम्-और यम को; पिडिक्कुम्-पकड़ ले; कुडिक्कुमेल-पान करे तो; कटल् एळैयुम्-सातों समुद्रों को; कुटङ्कैयिन्-हथेली में लेकर; कुडिक्कुम्-पी लेंगे। ७०९

वे सेनाएँ तोड़ने की इच्छा करें तो उत्तर के मेरु को जड़ से उखाड़ कर तोड़ लेतीं। आकाश की छत से भी टकरातीं। मन करें तो महान पवन और यम को भी पकड़ लें। पान करने की इच्छा करें तो सप्त समुद्रों के जल को चुल्लू में भरकर पी जायें। ७०९

आरु	पत्तैळु	कोडियर्	वानरर्क्	कदिवर्
कूळ	तिक्किनुक्	कप्पुरड्	गुप्पुरर्	कुरियार्
मारिल्	कौरव	निन्नैत्तन	मुडिक्कुळम्	वलियर्
ऊरु	मिप्पैरुज्	जेनैहीण्	डैळिटिन्	दुर्ऱार् 710

कूळ तिक्किनुक्कु-प्रथित चारो दिगन्त के; अप्पुरन्-उस पार भी; कुप्पुरङ्कु-लपकने का; उरियार्-सामर्थ्य रखनेवाले; मारु इल्-अप्रमेय; कौरवन्-उनके राजा (सुग्रीव); निन्नैत्तन-जो सोचेगा; मुडिक्कुळम्-उन सबको पूरा करने का; वलियर्-सामर्थ्य रखनेवाले; आरु पत्तु अळु-सड़सठ; कोडियर्-करोड़; वानरर्क्कु अतिपर्-वानर-सेनापति; ऊरुम्-उत्तरोत्तर बढ़े आनेवाली; इ पैरु चेतै-इस बड़ी सेना को; कौण्टु-लिये हुए; डैळिटिन्-अनायास; वन्तु दुर्ऱार्-आ पहुँचे। ७१०

ऐसी बढ़ती जाती-सी लगनेवाली विपुल सेना को लेकर सड़सठ वानर यूथप आ पहुँचे। वे चतुर्दिशाओं के पार भी छलाँग मारकर पहुँच सकते थे। उनमें इतना साहस था कि उनका अनुपम राजा सुग्रीव जो भी सोचता था वह काम पूरा कर दिखाते। ७१०

एळु	माहडर्	परप्पिनुम्	वरप्पैन्	विशैप्पच्
च्लम्	वानरप्	पडैयोडव्	दीररुन्	दुवन्निरि

आळि मापरित् तेरवन् कादल तडिहळ्
वाळि वाळियेन् रुरेततन् तूविनर् वणङ्गि 711

अ वीरस्-उन वीरों ने भी; एळु मा कटल् परप्पिनुम्-सात महासमुद्रों के विस्तार से भी; परप्पु अँत-इसका अधिक विस्तार है, ऐसा; इचैप्प-लोग कहें, इतनी बड़ी; चूळुम् वानरम् पटैयोदु-घेरे रहनेवाली वानर-सेना के साथ; तुवन्नर्-पास आकर; आळि मा परि-एक चक्र और बड़े अश्वों से युक्त; तेरवन् कातलन्-रथ के स्वामी सूर्य के प्यारे पुत्र के; अटिकळ्-श्रीचरण; वाळि वाळि-जिए, जिए; अँन्नु उरैत्तु-ऐसा जयघोष करके; वणङ्कि-नमस्कार करके; अलर् तूविनर्-पुष्प बरसाए । ७११

वे वानर वीर सातों समुद्रों के विस्तार से भी अधिक विस्तृत कही जा सकनेवाली वानर-सेना के साथ मिलकर आये । उन्होंने एकचक्ररथी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र सुग्रीव की यह कहते हुए स्तुति की कि आपके श्रीचरण जियें, जिये । उस पर पुष्प भी बरसाये । ७११

अनैय दाहिय शेनैवन् दिरुत्तलु मरुक्कन्
तनैय नौय्दितिर् इयरदन् पुदल्वनैच् चार्न्दान्
नितैयु मुन्नम्वन् दडैन्ददु नित्तैवैन् जेनै
विनैयिन् कूडुव कण्डरु णीर्येन विळम्बुम् 712

अनैयु आकिय-ऐसी वह; शेनै वन्तु-सेना आकर; इरुत्तलुम्-रही, तब; अरुक्कन् तनैयन्-अर्कपुत्र; इयरदन् पुतल्वनै-दाशरथी श्रीराम के पास; नौय्दितिल्-शीघ्र; चार्न्तान्-पहुँचा; विनैयिन् कूडुव-पापारि; नितैयुम् मुन्नम्-स्मरण करने से पहले; नित्तैवै चैनै-आपकी बड़ी सेना; वन्तु अटैन्तु-आ गयी; कण्डरु नी-कृपादर्शन कर लीजिए आप; अँत विळम्बुम्-ऐसा कहा । ७१२

ऐसी सेना के आ एकत्रित होने पर अर्कपुत्र, सुग्रीव दशरथ के पुत्र श्रीराम के पास वेग के साथ आया । उसने उनसे निवेदन किया कि हे पाप के अन्तक ! आप सोचें, इसके पहले ही आपकी बड़ी सेना आ गयी । उस पर दृष्टि लगाने की कृपा करें । ७१२

ऐय नुम्बुवन् दहर्मेन मुहमलर्न् दरुळित्
तैय लाळ्वरक् कण्डल तामेनत् तळिर्प्पान्
अय्दि तान्ङ्गोर् नैडुवरैच् चिहरत्ति तिरुक्कै
वैय्य वन्महन् पयैर्त्तुमत् तानैयिन् मीण्डान् 713

ऐयत्तुम्-सुन्दरराज श्रीराम; उवन्तु-आनन्द करके; अकम् अँत-भीतर जैसे; मुक्कम्-मुख भी; मलर्न्तु-मोद-विकसित करके; अरुळि-कृपा के साथ; तैयलाळ्वर-पत्नी को आते; कण्टतनाम् अँत-देखा हो जैसे; तळिर्प्पान्-फूल उठे; अड्कु-वहाँ; ओर् नैडु वरै-एक बड़े पर्वत के; चिहरत्तिन् इरुक्कै-शिखर के स्थल पर;

अँयत्तितान्-पहुँचे; वँय्यवन्-आतपकारी (सूर्य) का; मकन्-पुत्र; पँयर्त्तुम्-लौटकर; अ तानैयिन्-उस सेना के पास; मीग्टान्-चला । ७१३

सुन्दर श्रीराम मुदित हुए । जितना उनका मन मुदित हुआ, उतना ही उनका श्रीमुख भी प्रफुल्लित हुआ । देवी ही आ गयी हों, इस भाँति उत्साहित होकर वे एक उन्नत पर्वत के शिखर के स्थल पर जा पहुँचे । तब सूर्यपुत्र अपनी सेना के पास लौट आया । ७१३

अँट्टुत्	तिक्कैयु	मिरुनिलप्	परप्पैयु	मिमैयोर्
वट्ट	विण्णैयु	मडिहड	लनैत्तैयु	मड्रैयत्
तौट्टु	मेल्ळुन्	दोङ्गिय	तूळियिर्	पूळि
अट्टिच्	चैम्मिय	निड्रैहड	मौत्तदिव्	वण्डस् 714

अँट्टु तिक्कैयुम्-आठों दिशाओं को; इरु निल परप्पैयुम्-विशाल भूमि के विस्तार को; इमैयोर् वट्टम्-देवों के गोल; विण्णैयुम्-स्वर्गलोक को; मडि कटल्-जिन पर लहरें मुड़-मुड़कर (तीर से) टकराती हैं, उन; अतैत्तैयुम्-सभी (सातों) सागरों को; मड्रैय-छिपाते हुए; तौट्टु-भूमि पर और उससे; मेल् अँळुन्तु-ऊपर व्याप्त करके; ओङ्किय-उठी हुई; तूळियिन्-धूल से; इ अण्डम्-यह अण्डगोल; पूळि अट्टि-धूल से भरकर; चैम्मिय-सम्पूर्ण हुए; निड्रै कुटम्-पूर्णकुम्भ; औत्ततु-के समान लगा । ७१४

सेना ने आठों दिशाओं, बड़ी भूमि के विस्तृत स्थल और देवों के गोल व्योम देश और समुद्रों को, जिन पर लहरें उठकर तीरों से टकराकर वापस मुड़ती थीं, एकदम ढक दिया । तब धूल बहुत उठी और ऊपर चढ़ी; जिससे यह अण्ड धूल-भरे पूर्णकलश के समान दिखा । ७१४

अत्ति	यौप्पत्ति	तन्तवै	युणर्न्तव	रुळराल्
वित्त	हरक्किन्ति	युरैक्कला	मुवमैवै	श्रियादो
पत्ति	रट्टिनन्	पहलिर	वौरुवलर्	पारप्पार्
अँत्ति	इत्तिनु	नडुवुहण्	डिलर्मुडि	वैवन्तो 715

अत्ति-अब्धि; औप्पु अँत्तिन्-सानी है, कहेँ तो; अन्तवै-उनको; उणर्न्तवर्-पूर्णरूप से जो देख (जान) चुके; उळर्-वे हैं; इत्ति-अब; वित्तकर्क्कु-विद्वानों को; उरैक्कलाम् उवमै-कथनीय उपमा; वेळु यातो-और दूसरी क्या है; पत्तु इरट्टि-दस के दुगुने (बीस) दिन; नल् पकल् इरवु-रात और दिन; औरुवलर्-बिना रुके; पारप्पर्-जिन्होंने देखा, उन श्रीराम और लक्ष्मण ने; अँ तिरुत्तिन्तुम्-किसी विध; नट्टु कण्टिलर्-इन सेना का मध्य भाग नहीं देखा; मुट्टिवु अवन्तो-फिर अन्त कहाँ (देखा जाय) । ७१५

इस सेना की सागर समानता कर सकते हैं —ऐसा कहेँ तो सागरों की सीमा के ज्ञाता मिलते हैं । (पर इस सेना का अन्त कोई देख नहीं सका ।)

फिर विद्याप्रवीणों के पास उल्लेख-योग्य उपमा कहाँ है ? श्रीराम और लक्ष्मण ने बीस दिन और बीस रात लगातार देखा तो भी किसी विघ्न से इस सेना का मध्यभाग भी न देख सके । फिर इसका अन्त देखना कैसे हो सकता है ? । ७१५

विण्णिङ्	रोम्बुन	लुलहतत्ति	नाहरिन्	वैङ्गि
अण्णिङ्	डानल	दौप्पिल	नेन्निगिन्	विरामन्
कण्णिङ्	चिन्दैयिङ्	कल्वियिन्	आत्तत्तिङ्	करुदि
अण्णङ्	रम्बिय	नोक्किन्	नुरैशैय्व	दात्तान् 716

वैङ्गि अण्णिङ्-विजयशीलता पर विचार करें; तान् अलतु-स्वयं उन्हीं को छोड़कर; विण्णिङ्-व्योम में; रोम्बुन-मधुर सागर-वलयित; उलकत्तिल्-भूतल में और; नाकरिन्-नागलोक में; औप्पु इलन्-कोई उपमा नहीं रखनेवाले; इरामन्-श्रीराम (ने); कण्णिङ्-अपनी आँखों से; चिन्दैयिन्-मन से; कल्वियिन्-विद्या से; आत्तत्तिङ्-बुद्धि से; करुदि-सोचकर; अण्णल् तम्बिय-महिमावान् भ्राता को; नोक्किन्-देखा और; नुरैशैय्वु आत्तान्-वचन कहने लगे । ७१६

श्रीराम की विजयशीलता के सम्बन्ध में विचार करने लगें तो वे अपनी समानता स्वयं आप ही कर सकते हैं । नहीं तो आकाश में, सुखद समुद्र-वलयित भूमि में और नागों के पाताललोक में उनके समान कौन है ? ऐसे अप्रमेय श्रीराम ने अपनी आँखों से, मन से और शास्त्रज्ञान और विवेचना द्वारा उस सेना के विस्तार को देखा और समझा और अपने महिमामय भाई सुमित्रानन्दन से कहना आरम्भ किया । ७१६

अडल्होण्	ओङ्गिय	शेनेक्कु	नामुनम्	मरिवात्
उडल्हण्	डोमिनि	मुडिवुळ	काणुमा	रुळदो
मडल्होण्	ओङ्गिय	वलङ्गलाय्	मण्णिङ्	माक्कळ्
कडल्हण्	डोमेन्बर्	यावरे	मुडिवुङ्क्	कण्डार् 717

मटल् कौण्टु-पंखुड़ियों से पूर्ण; ओङ्किय-श्रेष्ठ (फूलों की); अलङ्कलाय्-मालाधारी; नामुम्-हमने भी; नम् अरिवाल्-अपनी बुद्धि से; अटल् कौण्टु-बल लिये; ओङ्किय-बड़ी हुई; शेनेक्कु-इस सेना का; उडल् कण्टोम्-शरीर (मध्य भाग) देखा; इत्ति उळ्-आगे रहनेवाले; मुडिवु-अन्त की; काणुम् आळु-देखने का मार्ग; उळतो-है क्या; मण् इट्टे-भूतल में; माक्कळ्-लोग; कटल् कण्टोम्-सागर देखा; अन्पर्-कहेंगे; मुडिवु उर-आर-पार पूरा करके; कण्डार्-जो देख चुके; यावरे-कौन हैं । ७१७

दल-लसे पुष्पों की बनी श्रेष्ठ माला के धारक ! हम दोनों ने अपने बुद्धिबल से वीरता के साथ उत्कृष्ट इस बड़ी वानर-सेना के मध्य भाग को एक तरह से देख लिया । उसका अन्तिम भाग देखने का कोई मार्ग भी है

क्या ? भूलोकवासी कहने को तो कह देते हैं कि हमने सागर देख लिया है, पर असल में कौन लोग हैं, जिन्होंने पूर्णरूप से समुद्र को देख चुके हैं ? । ७१७

ईशन्	मेत्तियै	यीरैन्दु	दिशैहळे	योण्डिव्
वाशिल्	शेत्तैयै	यैम्बैरुम्	बूदत्तै	यत्तिवैप्
पेशुम्	पेच्चिन्नैच्	चमयङ्गळ्	पिणक्कुरुम्	पिणक्कै
वाश	मालैया	यावरे	मुडिवैण्ण	वल्लार् 718

वाचम् मालैयाय-सुवासपूर्ण मालाधारी; ईशन् मेत्तियै-ईश्वर के शरीर को; ईरैन्दु तिचैकळे-दसों दिशाओं को; ऐम् पेरुम् पूतत्तै-पाँच महाभूतों को; अत्तिवै-ज्ञान के विस्तार को; पेचुम् पेच्चित्तै-कहे हुए वचनों को; चमयङ्गळ्-मतों के; पिणक्कुरुम्-तर्क के; पिणक्कै-झगड़ों को और; ईण्डु-यहाँ; इ-इस; आचु इल्-अनिच्छ; चेत्तैयै-सेना को; यावरे-कौन ही; मुटिवु अण्ण-गुनकर पूरा करने को; वल्लार्-समर्थ होंगे । ७१८

सुगन्ध-मालाधारी ! ईश्वर का श्रीरूप, दसों दिशाएँ, पञ्चमहाभूत, सूक्ष्मज्ञान, उच्चरित वचन, धर्मों का वैमनस्य और यहाँ यह अनिच्छ सेना ! इन सबको गुनकर अन्त बतानेवाला कौन है ? । ७१८

इन्त	शेत्तैयै	मुडिवुड	विरुन्दिव	णोक्किप्
पिन्तैक्	कारियम्	बुरिदुमे	नाळ्पल	पैयरुम्
उन्तिच्	चैय्हैमे	लौरुप्पड	लुरुवदे	युरुदि
अन्त	वीरनैक्	कैदीळु	दिळैयव	नियम्बुम् 719

इन्त चेत्तैयै-इस सेना को; इवण् इरुन्तु-यहाँ रहकर; मुटिवु उड-पूर्ण रूप से; नोक्कि-देखकर; पिन्तै-तदनन्तर; कारियम् पुरितुमेल्-कार्य में लगें तो; नाळ्पल-अनेक दिन; पैयरुम्-व्यतीत हो जायेंगे; उन्ति-विचारकर; चैय्कै मेल्-कार्य पर; औरुप्पटल्-चित्त लगाकर; उरुवते-लग जाना ही; उरुति-हितकारी है; अन्त-ऐसा (श्रीराम ने) कहा, तब; इळैयवन्-कनिष्ठ; वीरनै-वीर श्रीराम से; कै तौळु-हाथ जोड़कर; इयम्पुम्-बोले । ७१९

ऐसी सेना को हम यहाँ रहकर पूर्णरूप से देखें और बाद को कोई कार्य करने को सोचें तो अनेक दिन बीत जायेंगे । इसलिए (सेना-संदर्शन को यहीं छोड़कर) आगे के कर्तव्य का विचारकर कार्य में लग जाना ही हित-कार्य है । श्रीराम का यह वचन सुनकर लक्ष्मण ने वीरराघव को नमस्कार किया और कहा । ७१९

याव	दैव्वुल	हत्तित्ति	नीङ्गियवर्क्	कियर्ऱल्
आव	दाहुव	दरियदीन्	रुळ्दैन्	लामे
देव	देवियैत्	तेडुव	दैत्तुवदु	शिऱिदाल्
पावन्	दोऱ्ऱुदु	तरुममे	वैत्तुऱ्दिप्	पडैयाल् 720

तेव-देव; ईडकु-यहाँ; इवर्क्कु-इनके लिए; अँ उलकत्तितिन्-किस लोक में; इयर्त्तल् यावतु-करना क्या है; आकुवतु-करणीय वह; आवतु-कृत हो जायगा; अरियतु-कठिन; ओत्तु-एक काम; उळतु अँत्तल्-है कहना; आमे-होगा क्या; तेविये-देवी (सीता) को; तेटुवतु अँत्तपतु-खोजने का काम; चिरितु-अल्प है; इ पटैयाल्-इस सेना के कारण; पावम् तोर्त्तु-पाप हारा; तरुमे वेंत्तु-धर्म ही जीता । ७२०

देव ! किसी भी लोक में जो भी आवश्यक काम हैं, वे काम करना इस सेना के वीरों के लिए बाएँ हाथ का खेल है । उनके लिए असाध्य कहने योग्य कोई काम है क्या ? देवी को ढूँढ़ पाना इनके लिए बहुत छोटा काम है । इस सेना के कारण समझ लीजिये कि पाप हार गया और धर्म जीत गया । ७२०

तरङ्ग	नीरैळु	तामरै	नान्मुहन्	उन्द
वरङ्गौळ्	पेरुल	हत्तितिन्	मर्त्तैमन्	नुयिर्हळ्
उरङ्गौण्	माल्वरै	युयिर्पडैत्	तैळून्दन्	वौक्कुम्
कुरङ्गिन्	मापपडैक्	कुरैयिडप्	पडैत्तन्	कौल्लाम् 721

तरङ्कम् नीरैळु-लहरों से युक्त जल में उगनेवाले; तामरै-कमल पर उदित; नान्मुकन्-चतुर्मुख ने; तन्त-सृष्ट; वरम् कौळ्-वरीयता-प्राप्त; पेरु उलकत्तितिल्-बड़े जग (में) के; मर्त्तै-अन्य; मन् उयिर्कळ्-जीवसमूह को; उयिर् पटैत्तु अँळून्तन्-जीवित हो उठे हुए; उरम् कौळ्-बलवान; माल् वरै ओक्कुम्-बड़े पर्वतों की समता करनेवाले; कुरङ्किन् मा पटैक्कु-वानरों की बड़ी सेना के लिए; उरैइट-मापन-संकेत के रूप में रखने के लिए; पटैत्तन् कौल् आम्-शायद सृष्ट किया था । ७२१

लहरोद्वेलित जल मे उत्पन्न जलज-फूल में उद्भूत ब्रह्मादेव के द्वारा सृष्ट इस वर पृथ्वी में जो अन्य जीव हैं, उनकी संख्या अब जो उठ आये हैं, उन बलवान पर्वत-सम वानरों की सेना की गिनती के लिए निर्धारित प्रतिनिधि-मापक चिह्न हों, इस कारण ही ब्रह्मा ने संसार को सृष्ट किया है । [जब बड़ी संख्या को गिनना पड़ता है, तब यह प्रथा है कि बड़ी संख्या के एक अंश को किसी और पदार्थ की अदद को प्रतिनिधि-सूचक निशान (मापक) बनाया जाय । उदाहरणार्थ एक सहस्र रुपया गिनने पर एक कौड़ी रखी जाती । इस तरह से कौड़ियाँ रखते जाते हैं और आखिर में कौड़ियों को गिनकर कुल रुपयों का हिसाब लगाया जाता है । इस (मापक) कौड़ी को हम तमिळ में “उरै” कहते हैं । संसार का हर जीव वानर-सेना के एक अंश का प्रतिनिधि-चिह्न है । यह कवि का कथन है ।] । ७२१

ईण्डु	ताळ्क्किन्ऱ	दैनन्नि	यैण्डिशै	मरुङ्गुम्
तेण्डु	वार्हळै	वल्लैयिर्	चैलुत्तुव	दल्लाल्
नीण्ड	नूल्वला	यैन्ऱन	निळैयव	नैडियोन्
पूण्ड	तेरवन्	कादलर्	कौरुमोळि	पुहलुम् 722

नीण्ड नूल् वलाय्-श्रेष्ठ शास्त्रों में व्युत्पन्न; ऐण् तिचै मरुङ्कुम्-आठों दिशाओं के स्थानों में; तेण्डुवार्कळै-अन्वेषकों को; वल्लैयिन्-शीघ्र; चैलुत्तुवतु अल्लाल्-भेजे विना; इति-अब; ईण्डु-यहाँ; ताळ्क्किन्ऱतु अँन्-विलम्ब करना क्यों; अँन्ऱतन्-कहा; इळैयवन्-लक्ष्मण ने; नैडियोन्-त्रिविक्रम श्रीराम; पूण्ड तेरवन्-अश्व-जुते रथ के; कातलर्कु-सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से; कौरुमोळि पुकलुम्-एक बात कही । ७२२

महिमायुक्त शास्त्रों के ज्ञाता ! अब चारों दिशाओं के स्थानों में अन्वेषण-कर्ताओं को प्रेषित करना छोड़कर विलम्ब क्यों किया जाय ? लक्ष्मण के ऐसा कहने पर त्रिविक्रम श्रीराम ने सप्ताश्वरथी सूर्य के पुत्र सुग्रीव से कहने लगे । ७२२

12. नाडविट्ट पडलम् (अन्वेषण-प्रेषण पटल)

वहैयु मानमु मारैदिऱ्त् तारुऱ्, पहैयु मिन्ऱि निरन्ऱु परन्ऱेळु
तहैविल् वेनैक् कमैदि शमैन्ददोर्, तौहैयु मुण्डुहो लोवैन्च् चोल्लितान् 723

वकैयुम्-व्यूह-रचना; मानमुम्-और देहाभिमान; मारु अँतिरन्तु-बैर करके; आरुऱ् पकैयुम्-युद्ध करने की शत्रुता; इन्ऱि-विना; निरन्तु-व्यवस्थित होकर; परन्तु-व्याप्त होकर; अँळु-जो उठ आयी है; तकैव इल् चैत्तैक्कु-उस दुर्दम सेना की; अमैति चमैन्ततु-गिनती के लिए निर्धारित; ओर् तौकैयुम्-एक संख्या भी; उण्डु कौल्लो-है क्या; अँत चोल्लितान्-ऐसा कहा (श्रीराम ने सुग्रीव से) । ७२३

श्रीराम ने सुग्रीव से बधाई के रूप में प्रश्न किया कि विना व्यूह-रचना, शरीराभिमान और परस्पर विरोध के जो दुर्वार वानर-सेना खुद पंक्ति-बद्ध होकर इधर उठ आ जुड़ी है, उसकी गिनती का हिसाब लगाने के लिए कोई संख्या भी है क्या ? । ७२३

एऱ्ऱ वैळ्ळ मैळुपदि निऱ्ऱवैन्, इऱ्ऱ लाळ रऱिविन् मैत्तदोर्
माऱ्ऱ मुण्डु वल्लदु मऱ्ऱुमोर्, ईऱ्ऱ मुण्डेन् रिशैत्तिडर् कौण्णुमो 724

एऱ्ऱ-योग्य; वैळ्ळम् अँळुपतिन्-सत्तर 'वैळ्ळम्' की संख्या में; इऱ्ऱ-बनी है; अँन्ऱु-ऐसा; आऱ्ऱलाळर् अऱिविन्-संख्या-शास्त्र में निपुण लोगों की समझ में; अमैन्ततु ओर् माऱ्ऱम्-बना एक कथन; उण्डु-रहता है; अतु अल्लतु-उसके सिवा; मऱ्ऱम् ओर् ईऱ्ऱम् उण्डु-और कोई संख्या-सीमा है; अँन्ऱु इचैत्तिट्टु-ऐसा कहने के लिए; कौण्णुमो-साध्य है क्या । ७२४

सुग्रीव ने उत्तर दिया— गणितज्ञ विद्वानों ने कहा है कि सत्तर

“वैळ्ळम्” (प्रवाह) वीरों की यह सेना है। उस कथन पर विश्वास करने के सिवा इस सेना का हिसाब लगाने के लिए और कोई मार्ग नहीं है। ७२४

अन्नु रैत्त वैरिहदिर् मैन्दनै, वेंन्नि विर्क्कै यिरामन् विरुप्पित्तान्
निन्नि निप्पल पेशियैन् तोनैरि, शैन्नि लैप्पन शिन्दनै शैय्हेन्नान् 725

अन्नु उरैत्त-ऐसा जिसने कहा; अरि कतिर् मैन्दनै-तापक किरणमाली के पुत्र से; वेंन्नि विर्क्कै-विजयकोदण्डपाणी; इराक्कवन्-श्रीराघव ने; विरुप्पित्तान्-प्यार के साथ; इति-अब; निन्नु पल पेचि-खड़े होकर अनेक तरह से बोलने से; अन्तो-लाभ क्या; नैन्नि चैन्नु-मार्ग जाकर; इलैप्पन-कर्तव्य (कार्य); चिन्तनै चैय्क-सोचो; अन्नान्-कहा। ७२५

तापक किरणमाली के पुत्र को, जिसने यह शब्द कहा, विजय कोदण्डपाणी श्रीराघव ने स्नेह के साथ देखकर उससे कहा— अब खड़े होकर विविध बातें बनाने से क्या लाभ होगा? यथाक्रम कर्तव्य कार्य पर सोचो। ७२५

अवन्तु मण्ण लनुमनै यैयनो, पुवन मून्नुनिन् रादैयिर् पुक्कुळल्
तवन वेहत् तौरुत्तित् तन्मैयाल्, कवत्त माक्कुरङ् गिन्शैयल् काट्टुवाय् 726

अवन्तुम्-उसने भी; अण्णल् अनुमनै-महिमावान हनुमान से; ऐय-तात; नो-तुम; पुवत्तम् मून्नुम्-तीनों लोको में; निन् तातैयिन्-अपने पिता के समान; पुक्कु उळल्-प्रवेश कर घूमने की; तवत्तम् वेक्कतु-धावन-गति के; और तत्ति-एक विशिष्ट; तन्मैयाल्-स्वभाव से; कवत्तम्-गमन में; मा कुरङ्किन् चैयल्-बड़े वानर का कृत्य; काट्टुवाय्-दिखाओ। ७२६

तब उस सुग्रीव ने महान हनुमान से कहा, तुम अपने पिता के समान तीनों लोकों में घुसकर संचार करने की तीव्र गति रखते हो। अब अपनी बड़ी वानर-क्रिया दिखाओ। ७२६

एहि येन्दिल्लै तन्नै यिरुन्दुळि, नाह नाडुह नात्तिल नाडुह
पोह भूमियुम् नाडुह पुक्कुनिन्, वेह मीण्डु वैळिप्पड वेण्डुमाल् 727

नो-तुम; एकि-जाकर; एन्तु इल्लै-अलंकारकारी आभरणधारिणी सीताजी के; इरुन्त उळि तन्नै-रहने के स्थान को; नाकम्-नागलोक में; नाटुक-ढूँढ़ो; नात्तिलन् नाटुक-चतुर्विधा-भूमि पर ढूँढ़ो; पोह भूमियुम्-भोगलोक (स्वर्गलोक) में ढूँढ़ो; निन् वेकम्-तुम्हारा वेग; ईण्डु-इसमें; वैळिप्पड वेण्डुम्-प्रगट होना चाहिए। ७२७

तुम यहाँ से चलो और नागलोक में जाकर अलंकारकारी आभरण-भूषित अवोध सीतादेवी के रहने का स्थान ढूँढ़ो। चतुर्विधा इस पृथ्वी

पर भी खोजो, फिर भोग-भूमि स्वर्ग में भी अन्वेषण करो । इस काम में तुम्हारी गति का वेग प्रकट किया जाय । ७२७

तैन्नरि शैक्क णिरावणन् शेणहर्, अँन्नरि शैक्किन्नर् दँन्नरि विन्तणम्
वन्नरि शैक्किनि मारुदि नीयलाल्, वँन्नरि शैक्कुरि यार्पिर् वेण्डुमो 728

इरावणन् चेण् नकर्-रावण का लम्बा-चौड़ा नगर; तैन्नर् तिचै कण्-दक्षिण दिशा में; अँन्नर्-ऐसा; अँन् अरिवु-मेरी बुद्धि; इन्तणम्-यों; इचैक्किन्नर्-समझाती है; मारुति-मारुति; इत्ति-अब; वल् तिचैक्कु-उस बलवान दिशा में (जाकर); वँन्नर्-विजय पाकर; इचैक्कु-यशस्वी बनने के लिए; उरियार्-योग्य; नी अलाल्-तुम्हारे सिवा; पिर् वेण्डुमो-दूसरा चाहिए क्या । ७२८

मेरा मन कहता है कि रावण का उन्नत और विशाल नगर कहीं दक्षिण में ही है । मारुति ! इसलिए वह दिशा कठिन दिशा हो गयी है । तुम वहाँ जाओ और विजयी बनो । इस यश का योग्य पात्र तुम ही हो । और किसी का विचार करने की जरूरत है क्या ? । ७२८

तारै मैन्दनुज् जाम्बतुन् दामुदल्, वीरर् यावरु मेम्बडु मेन्मैयार्
शेर्ह नित्नीडुन् दिण्डिर् चेतैहळ्, पेर्ह वँळल् निरण्डीडुम् पँड्रियाल् 729

तारै मैन्तनुम्-तारा का पुत्र; जाम्पतुम्-और जाम्बवान; सुतल्-आदि; मेम्पटु मेन्मैयोर्-उन्नत महिमामय; वीरर् यावरुम्-वीर सब; नित्तीडुम् चेर्क-तुम्हारे साथ मिलें; वँळल् इरण्डीडुम्-दो 'वँळल्' की संख्या में; तिण् तिर्ल्-कठोर बल वाली; चेतैहळ्-सेनाएँ; पँड्रियाल्-शान के साथ; पेर्क-उठे (तुम्हारे साथ) । ७२९

तारा-पुत्र अंगद, जाम्बवान आदि अतिश्रेष्ठ वीर तुम्हारे साथ मिलकर जायें । दो "प्रवाह" संख्या की बलवान सेनाएँ युक्त शान के साथ तुम्हारी सहायता के लिए चलें । ७२९

वळल् रेवियै वज्जित्तु वौविय, कळल् वाळरक् कन्शैलक् कण्डडु
तेळ्ळि योयन्नु तैन्नरिशै यँन्बदोर्, उळ्ळ मुम्मेनक् कुण्डेन वुत्तुवाय् 730

तेळ्ळियोय्-सुलझी हुई बुद्धि वाले; वळल् रेवियै-उदार दानी प्रभु श्रीराम की देवी को; वज्जित्तु-छल करके; वौविय-जिसने अपहरण किया; कळल् वाळ् अरक्कन्-उस चोर क्रूर राक्षस को; अन्नु चैल्-उस दिन जाते हुए; कण्डु- (जिस दिशा में) देखा, वह; तैन्नर् तिचै-दक्षिण दिशा है; अँन्पु-यह; ओर् उळ्ळमुम्-एक स्मरण भी; अँत्तक्कु उण्डु-मुझे है; अँत्त-ऐसा; उन्तुवाय्-समझ लो । ७३०

सुलझी हुई बुद्धि वाले ! वदान्य श्रीराम की देवी को धोखा देकर जो हर ले गया वह चोर, क्रूर राक्षस उस दिन जिस दिशा की ओर जाता

दिखायी दिया, वह दक्षिण दिशा है। ऐसा मेरा स्मरण है। यह भी तुम विचार लो। ७३०

ईण्डु निन्ऱैळुन् दीरैन्दु नूऱैळिल्, तूण्डु शोदिक् कौडुमुडि तोन्ऱुमाल्
नीण्ड नेमिको लामैन् नेर्तौळ, वेण्डुम् विन्दम लैयिन्ने मेवुवीर् 731

नीङ्कळ्-तुम लोग; ईण्डु निन्ऱ-यहाँ से; अँळुन्तु-निकलकर; अँळिल् तूण्डु चोति-सुन्दर और ज्योतिर्मय; ईर् ऐन्तु नूऱ-दस सौ; कौडु मुडि तोन्ऱुमाल्-शिखरों के दिखने के कारण; नीण्ड नेमि कौलाम्-बड़े आकार के विष्णु है क्या; अँत-ऐसा समझकर; नेर् तौळ वेण्डुम्-सामने जाकर नमस्कार करने योग्य; विन्तु मलैयिन्ने-विन्ध्यपर्वत को; मेवुवीर्-जा पहुँचो (गे)। ७३१

सुग्रीव ने उनसे कहा— तुम लोग यहाँ से चलकर विन्ध्यपर्वत पहुँच जाओ। विन्ध्यपर्वत के सुन्दर और उज्ज्वल सहस्र शिखर हैं। इसलिए वह बहुत ऊँचे ऋद के श्रीविष्णु के समान वंश है। ७३१

तेडि यम्मलै तीरुन्दपिन्ऱु इवरुम्, आडु हिन्ऱु दरुपद मैन्दितैप्
पाडु हिन्ऱुडु पत्तमणि यालिरुळ, ओडु हिन्ऱु नरुमदै युन्नुवीर् 732

अ मलै-उस पर्वत पर; तेडि तीरुन्त पिन्ऱु-खोज चुकने के बाद; तेवरुम् आटुकिन्ऱु-देव भी जिसमें आकर स्नान करते हैं; अरु पतम्-षट्पद; ऐन्तितै पाटुकिन्ऱु-(जिसमें) पंचम स्वर में गाते हैं; पल् मणियाल्-(जिसमें रहनेवाली) विविध मणियों के कारण; इरुळ ओटुकिन्ऱु-अँधेरा भाग जाता है; नरुमदै-उस नर्मदा नदी को; उन्नुवीर्-स्मरण रखो। ७३२

उस पर्वत पर खोज लेने के बाद उस नर्मदा नदी को जाओगे, जिसमें देवगण भी आकर स्नान करते हैं और जिसके ऊपर वहनेवाले फूलों पर बैठकर भ्रमर पंचमस्वर में गाते हैं; और जिसके अन्दर रहनेवाले विविध रत्नों के कारण अँधेरा भाग जाता है। ७३२

वाम मेहलै वानर मङ्गैयर्, काम वूशर् कळियिशैक् कळ्ळिन्नाल्
तूस मेनि यशुणन् दुयिल्वुऱुम्, एम कूड मैन्नुमलै यैय्दुवीर् 733

वामम् मेकलै-सुन्दर मेखलालङ्कृत; वान् अर मङ्गैयर्-देवांगनाओं के; कामम् ऊचल्-मोहक झूलों पर से; कळि इचै-आनन्द-संगीत रूपी; कळ्ळिन्नाल्-सुरा से; तूसम् मेनि-धुएँ के रंग का; अचुणम्-‘अशुण’ नाम का प्राणी; दुयिल्वु उरुम्-निद्रागत जहाँ होता है; एम कूटम्-उस हेमकूट; अँतुम् मलै-नामक पर्वत को; यैय्दुवीर्-जाओगे। ७३३

फिर तुम हेमकूट पर पहुँच जाओ। वहाँ देखोगे कि मनोरम मेखला-धारिणी देवांगनाएँ प्यारे झूलों पर झूलते हुए मोद के वश होकर गाती हैं और उस गान की सुधा का पान कर धुएँ-से रंग वाले “अशुण” नामक प्राणी सोते हैं। ७३३

नीय्दि नस्मलै नीड्गि नुमरौडुम्, पीय्है यिन्गरै पिण्डप् पोदिराल्
शैय्य पण्णैक् करैप्पण्णै यिञ्चिल, वैह डेडिक् कडिडु वळिक्कौळ्वीर् 734

अस्मलै-उस पर्वत से; नीय्तिन् नीड्कि-शीघ्र हटकर; नुमरौडुम्-अपने वानर
वीरों के साथ; पीय्कैयिन् करै-वहाँ के तालाब के तीर को; पिन् पट-पीछे रहने
देते हुए; पोतिर्-जाकर; चैय्य पण्णै-लाल (गोरे) रंग की देवी को; पण्णै
करैयिल्-'पण्णै' नाम की नदी के तट पर; चिल वैकल्-कुछ दिन; तेटि-खोजकर;
कटितु वळि कौळ्वीर-जल्दी अपनी राह लो । ७३४

तुम लोग वहाँ से जल्दी हट जाओ और अपने साथी, वानर वीरों
के साथ आगे चलो । वहाँ एक तालाब है, उसको पीछे छोड़कर बढ़ो ।
पश्चात् "पण्णै" नाम की नदी के कछार पर उन गोरे रंग की सीतादेवी
को कुछ दिन खोजो । फिर आगे जल्दी चलो । ७३४

ताङ्गु मारहिड् उण्णरुज् जन्दत्तम्, वीड्गु वेलि विदर्प्पमु मैल्लैत्त
नीड्गि नाडु नैडियत्त पिण्डत्त, तेङ्गु वारुपुत्त उण्डहज् जेरदिराल् 735

ताङ्कुम्-गंध-भार-वाहक; आर्-अगस्त्य और; अकिल्-अगरुतर; तण्
नड्म् चन्तत्तम्-शीतल सुगन्धित चन्दन; वीड्कु वेलि-जिसकी बाड़ बने हैं;
वितर्प्पमुम्-विदर्भ देश को; मैल्लैत्त नीड्कि-शान्ति के साथ पार करके; नैडियत्त
नाडु-विस्तृत (अनेक) देशों को; पिन् पट-पीछे छोड़ते हुए; तेङ्कु-अधिक; वार्
पुत्तल्-जलसमृद्ध; तण्टकम्-दण्डक में; चैर्तिर्-पहुँच जाओ । ७३५

फिर विदर्भ देश आयगा । सुगन्धित अगरु वृक्ष और शीतल
सुगन्धित चन्दन तरु उसकी बाड़ बने हुए हैं । उस देश को भी पार करो
और बहुत विशाल अनेक प्रदेशों को पीछे छोड़ते हुए दण्डकवन में पहुँच
जाओ, जो अत्यन्त जलसमृद्ध है । ७३५

पण्ड हत्तियन् वैहिय दाप्पहर, तण्ड हत्तुडु तावदर् तस्मैयुट्
कण्ड हत्तुयर् तीर्वडु काण्डिराल्, मुण्ड हत्तुरै यैन्डौर मीय्म्बौळिल् 736

मुण्टकत्तुरै-'मुण्डकघाट'; अँन्ड-नाम का; और मीय्म् पौळिल्-एक घना
उपवन; पण्डु अकत्तियन्-प्राचीन अगस्त्य का; वैकियतु-वासस्थान; आ पकर्-
ऐसा कहा जाता है; तण्टकत्तु- (वह) दण्डक वन में है; तापतर्-तपस्वी लोग;
तस्मै उळ् कण्डु-अन्दर आत्मदर्शन करके; अकम् तुयर् तीर्वतु- (जहाँ) आध्यात्मिक
ताप को हर लेते हैं; काण्टिर्-जाकर देखो । ७३६

वहाँ मुण्डक घाट नाम का एक वृक्षपूर्ण वन मिलेगा । वह दण्डकारण्य
में है, जहाँ अगस्त्य रहे, कहे जाते हैं । वहीं तपस्वी लोग आत्मदर्शन करके
अपने मन का ताप हर लेते हैं । उस स्थान को देखो । ७३६

जाल नल्लडत् तोरुन्नु नरुपौरुळ्, पोल निन्नु पौलिवडु पूम्बौळिल्
शील मङ्गैयर् वार्येत्त तीङ्गति, काल मिन्त्रिक् कन्निवडु काण्डिराल् 737

पूम् पौळिल्-पुष्प-बहुल वह उपवन; बालम्-भूमि के; नल्लुत्तु-सद्धर्मियों के; उन्नुम् नरुप्पोल-मन के सद्धर्मियों के समान; निन्नु पौलिवतु-शोभा के साथ रहता है; चीलम् मड्कैयर् वाय् अन्न-शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान; तीम् कत्ति-मधुर फलों को; कालम् इन्नि-पर्व-बाहर भी (हमेशा); कनिवतु-फलनेवाला है; काण्टिर्-देख लो । ७३७

वह पुष्पपूर्ण मुण्डक घाट उस श्रेष्ठ वस्तु के समान शोभायमान है, जिसे सद्धर्मी लोग चाहते हैं । उसमें शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान मधुर फल फलते हैं, और अकाल में भी फलते हैं । उसको देख लो । ७३७

नयन नन्निमै यार्तुयि लार्ननि, अयन मिल्लै यरुक्कनुक् कव्वळि
शयन्न मादर् कलवि तलैत्तरुम्, पयनु मिन्वमु नीरुम् पयक्कुमाल् 738

नयन्नम्-(वहाँ रहनेवाले) अपनी आँखें; नन्नु इमैयार्-नहीं झपकाते; नत्ति तुयिलार्-अधिक नहीं सोते; अरुक्कनुक्कु-सूर्य का; अव्वळि-वहाँ; अयत्तम् इल्लै-मार्ग नहीं; शयन्नम्-शय्या में; मादर् कलवि तलै-स्त्रियों के साथ संभोग से; तरुम्-प्राप्य; पयत्तुम्-सुख; इन्नपमुम्-और आनन्द; नीरुम्-और जल (से प्राप्य समृद्धि); पयक्कुम्-देनेवाला है (वह स्थान) । ७३८

वहाँ के वासी पलक नहीं गिराते हैं । खूब नहीं सोते । सूर्य को वहाँ मार्ग नहीं मिलता । वह स्थान भोग-शय्या में स्त्री-संगम का सुख, आनन्द और शीतल जल —सभी देनेवाला है । ७३८

आण्डि इन्नुपिन् नन्दरत् तिन्नुवैत्, तीण्डु हिन्नुडु शैङ्गदिर्च् चैल्वनुम्
ईण्डु ईन्दल देहल मैन्बदु, पाण्डु विन्मलै यैन्नुम् वरुप्पदम् 739

आण्डु इन्नु-वहाँ से चलकर; पिन्-वाद; अन्तरत्तु इन्नुवै-आकाश के चन्द्र को; तीण्डुकिन्नु-स्पर्श करनेवाले; चैम् कतिर् चैल्वनुम्-लाल किरणमाली भी; ईण्डु उरैन्नु-यहाँ ठहरे; अलतु-विना; एकलम् अन्नपतु-नहीं जायेंगे, ऐसा (जिसको देखकर) सोचते हैं; पाण्डुविन् मलै अन्नम् परुप्पतम्-पाण्डुगिरि नामक पर्वत (है देखो) । ७३९

उस मुण्डकोपवन को छोड़कर आगे जाओ तो पाण्डुपर्वत नामक पर्वत देखोगे । वह आकाश के चन्द्र को स्पर्श करता हुआ रहता है । उसको देखकर लाल किरणमाली भी यह सोचता है कि हम यहाँ कुछ देर ठहरे बिना आगे नहीं चलेंगे । ७३९

मुत्तीरत्तुप् पौन्त्रिट्टि मणियुट्टि मुदुनीत्त मुन्नि लायर्
मत्तीरत्तु मरनीरत्तु मलैयीरत्तु मात्तीरत्तु वरुव दियार्क्कुम्
पुत्तीरत्तु टलैयामर् पुलवर्ना डुदुवुदु पुनिद मान
अत्तीरत्तु महन्गोदा विरियैन्ब रम्मलैयि नरुहिर् इम्मा 740

मुत्तु नीत्तम्-प्राचीन प्रवाह; मुत्तु ईरत्तु-मोती ले आता हुआ; पौन् तिरट्टि-और स्वर्ण बहाता हुआ; मणि उरुट्टि-रत्न खींचता; आयर् मुन्नि-गोपों के

आँगनों से; मत्तु ईर्त्तुम्-मथानियों को लेता हुआ; मरन् ईर्त्तु-तरुओं को लाता हुआ; मलै ईर्त्तु-गिरियाँ लेता हुआ; मान् ईर्त्तु-और पशुओं को बहा ले आता हुआ; वरुवतु-आनेवाला है; यार्क्कुम्-किसी भी स्नान करनेवाले को; पुत्तु ईर्त्तुत्तिट्टु-‘पुत्’ नामक नरक से खिचकर; अलैयामल्-घूमे विना; पुलवर् नाटु-स्वर्गलोक; उतवुवतु-दिलानेवाला है; पुत्तितम् आत अ तीर्त्तम्-पवित्र वह तीर्थ (नदी); अकल् कोतावरि अत्तुपर्-चौड़ी गोदावरी कहते; अ मलैयिन्-उस (पाण्डु) गिरि के; अरुकिर्-पास रहनेवाली है। ७४०

आगे जाओ। गोदावरी नदी मिलेगी। उसका सनातन प्रवाह मोती बहा ले आता है। स्वर्ण-कर्ण इकट्ठा कर लाता है। रत्नों को लुढ़काकर ले आता है। गोपों के आँगन से मथानी को, पेड़ों को, चट्टानों को और अनेक पशुओं को खींच ले आता है। उसमें जो भी स्नान करते हैं, वे (अपुत्र होने पर भी) “पुत्” नामक नरक से बच जाते हैं; और देवलोक पहुँच जाते हैं। वह गोदावरी पवित्र जल वाली है। और वह उस उपरोक्त पाण्डुपर्वत के पास बहती रहती है। ७४०

अव्वारु कडन्दप्पा लडत्ताडे यैन्तर्त्तैळिन्द वरुळि तारुम्
वैव्वारु मैनक्कुळिर्न्दु वैयिलियङ्गा वहैयिलिङ्गुम् विरिपूज् जोलै
अव्वारु मुडत्तुवन्डि यिरुळोड मणियिमैप्प दिमैयोर् वेण्डत्
तैव्वारु मुहत्तैरुवत् तनिक्किडन्द चुवणत्तैच् चेर्दिर् मादो 741

अ आरु कटन्तु-उस नदी को पार करके; अप्पाल-वाढ; अडत्तु आडे अत-धर्ममार्ग ही सम, और; तैळिन्त अरुळिन्-स्वच्छ करुणा पर; तारुम्-विकसित; वैम्-प्यारा; आरु अतवुम्-नीति के मार्ग के समान; कुळिर्न्तु-शीतल बना; वैयिल् इयङ्का वरु-धूप न लगे, इस प्रकार; इलङ्कुम्-शोभायमान रहनेवाला; विरि पू जोलै-विकसित फूलों से भरा उद्यान; अ आरुम्-सर्वत्र; उड तुवन्डि-खूब (जिसके किनारों पर) पाया जाता है; इरुळ् ओट-(और) अन्धकार को भगाते हुए; मणि इमैप्पतु-रत्न चमकते हैं (जिसमें); इमैयोर् वेण्ड-देवों की प्रार्थना पर; तैव्व आरुमुकत्तु औरुवन्-शत्रुसंहारक, छः मुख वाले देव (षण्मुख); तन्नि किटन्त-अकेले जिस पर रहे; चुवणत्तै-उस सुवर्ण (सोन) नदी को; चेर्दिर्-जा पहुँचो। ७४१

उस गोदावरी नदी को भी पारकर तुम लोग “शोण” नदी पर पहुँच जाओ। वह धर्म-मार्ग और पवित्र कृपा के फलस्वरूप उपलब्ध होनेवाले सन्मार्ग के समान शीतल है। उसके दोनों ओर प्रफुल्ल पुष्पवह तरुओं से पूर्ण बाग हैं, जिनके अन्दर सूर्य की किरणें पहुँच नहीं पातीं। उसके दोनों कूलों पर मणियाँ प्रकाश फैलाती और अंधेरे को भगाती रहती हैं। उसी में देवताओं की प्रार्थना पर शत्रुसंहारक षण्मुख (या विघ्न-हर विनायक) पड़े रहे। ७४१

शुवणनदि कडन्दप्पाड् चूरियकान् दहमेत्तत् तोन्नि मादर
कवणुमिळ् हल् वैयिलियङ्गुड् गन्नवरैयुम् जन्दिरहान् दहमुड् गाण्वीर्
अवणवैनीत् तेहियपिन् नहनाडु पलकडन्दा लनन्द नैन्वान्
उवणपदिक् कौळित्तुत्तैयुड् गौङ्गणमुड् गुलिन्दमुम्बेन् रुदिर मादो 742

शुवण नदि कटन्तु-सुवर्ण नदी को पार करके; अप्पाल्-उस तरफ़; चूरिय कान्तकम् अन्त तोन्नि-सूर्यकान्ति नाम से विख्यात (गिरि); मातर कवण् उमिळ् कल्-(जिस पर) स्त्रियों के ढेलावाँसों से निकले पत्थर; वैयिल् इयङ्कुम्-प्रकाश फैलाते हैं; कत्तम् वरैयुम्-उस भारी पर्वत को और; चन्तिर कान्तकमुम्-चन्द्रकान्त को भी; काण्पीर्-देखोगे; अवण्-वहाँ; अवै नीत्तु-उनको छोड़कर; एकिय पिन्-जाने के बाद; अकल् नाटु-विस्तृत देश; पल कटन्ताल्-अनेक पार करेंगे तो; अनन्तन् अन्तपान्-अनन्तनाग; उवणपतिकु कौळित्तु-खगपति गरुड़ से छिपकर; उरैयुम्-जहाँ रहता है; कौङ्कणमुम्-कोंकण देश को और; कुलिन्तमुम्-कुलिन्द देश को; चैन्ड उन्तिर्-जा पहुँचोगे । ७४२

“शोण” नदी को पारकर तुम सूर्यकान्तपर्वत पर पहुँचोगे । उस पर्वत पर खेतों की रखवाली करते हुए स्त्रियाँ पायी जाएँगी, जिनके ढेलेवाँसों से निकलनेवाले पत्थर (बहुमूल्य रत्न) धूप जैसा प्रकाश फैलाते हैं । आगे चन्द्रकान्तपर्वत पर भी खोज लगाओ । फिर उन पर्वतों को छोड़कर आगे अनेक विशाल पर्वतों को पार करो तो कोंकण देश में जाओगे, जहाँ आदिशेष खगपति गरुड़ से डरकर छिपा रहता है । उसके आगे कुलिन्द देश है, वहाँ पहुँचोगे । ७४२

अरन्दिह नुलहळन्द वरियदिह नैन्ऱैक्कु मरिवि लोर्क्कुप्
परहदिशैन् इडैवरिय परिशेपोड् पुहलरिय पण्विर् इमाल्
सुरन्दियि नयलडुवान् डोय्हुडुमिच् चुडर्त्तौहैय तौळुदोर्क् कैल्लाम्
वरन्दिहन् दरुन्दहैय वरुन्ददिया नैडुमलैय वणङ्गि यप्पाल् 743

अरन् अतिकन्-हरदेव ही श्रेष्ठ हैं; उलकु अळन्त-लोकमापक; अरि अतिकन्-हरि ही श्रेष्ठ हैं; अन्ऱु उरैक्कुम्-ऐसा कहनेवाले; अरिवु इलोर्क्कु-अज्ञों के लिए; परकति चैन्ड-उत्तम गति में जाकर; अटैवु अरिय-रहना कठिन है; परिचे पाल्-वैसी रीति से; पुकल् अरिय पण्विर्-प्रवेश पाना (जहाँ) कठिन; आम्-है; चुर नतियिन् अयलतु-सुरगंगा के पास रहनेवाली; वान् तोय्-आकाशस्पर्शी; कुटुमि-शिखरों पर (जिसके); चुडर् तौकैयतु-प्रकाशपुंज (सूर्य व चन्द्र) ठहरते हैं; तौळुदोर्क्कु कैल्लाम्-नमन करनेवाले सभी को; अतिकम् वरन् तरुम्-अधिक वरदायी; तर्कैय-महिमा वाला; अरुन्तति आम्-अरुन्धती नाम का; नैडुमलैय-बड़ा पर्वत, उसे; वणङ्कि-नमस्कार करके; अप्पाल्-तदनन्तर । ७४३

उसके आगे अरुन्धती नाम का बड़ा और श्रेष्ठ पर्वत रहता है । वह इतना अगम है जितना श्रेष्ठ-गति उन लोगों के लिए अगम है, जो इस बात को लेकर झगड़ा करते हैं कि हरदेव श्रेष्ठ हैं या त्रिलोकमापक हरि

श्रेष्ठ हैं। वह सुरगंगा के बिल्कुल पास है। उसके गगनस्पर्शी शिखरों पर दोनों प्रकाशपुञ्ज, सूर्य और चन्द्र आश्रय लेते हैं। जो उसकी पूजा करते हैं, उसको वह उत्तम वर देनेवाला है। उस पर्वत को (दूर से) नमस्कार करके आगे— । ७४३

अञ्जुवरम् वैञ्जुवरन्तु मारुमहन् पौरुञ्जुनेयु महिलोऽ गारम्
मञ्जिवरु नैडुङ्गिरियुम् वळ्नाडुम् पिर्पडप्पोय् वळिमेर् चैन्नाल्
नञ्जुवरु मिडर्ऱरवुक् कमिळ्ळुननि कीडुत्तायैक् कलुळ नौक्कुम्
अञ्जिन्मर हृदपौरुप्पै यिरैञ्जियदन् पुऱञ्जार वेहिर् मादो 744

अञ्जुवरम्—डरावना; वैम् चुरतुम्—कठोर मरुप्रदेश; आरुम्—नदियों को; अकल् पेरु चुरतुम्—विशाल और बड़े तालाबों को; अकिल्—अगर; ओङ्कु आरम्—ऊँचे चन्दनतरु; मञ्चु—मेघों तक; इवरुम्—जिन पर उगे हैं; नैडुम् किरियुम्—ऊँचे पर्वतों को; वळम् नाडुम्—समृद्ध जनपदों को और; पिन् पट—पीछे छोड़कर; पोय्—जाकर; वळि मेल् चैन्नाल्—आगे मार्ग पर जाओगे तो; कलुळन्—गरुड़ ने; नञ्चु वरुम्—विषैले; मिटर्—दाँत वाले; अरवुक्कु—नागों को; अमिळ्ळु नन्ति कीडुत्तु—अमृत अधिक देकर; आयै नौक्कुम्—अपनी माता को (दासता से) छुड़ाया (जहाँ); अञ्चिल्—निर्दोष; मरकत पौरुप्पै—मरकतगिरि को; इरैञ्चि—नमस्कार करके; अतन् पुऱम् चार—उसके पार्श्व के मार्ग में; एकिर्—आगे जाओ । ७४४

सबको भयभीत करनेवाला मरुप्रदेश, नदियाँ और चौड़े झरने, अगर और उन्नत चन्दन तरु जहाँ मेघों का स्पर्श करते हुए उगे हैं; उन पर्वतों और समृद्ध देशों को पीछे छोड़ते हुए जाओगे तो उस मरकतपर्वत को देखोगे, जहाँ गरुड़ ने विषदन्त नागों को अमृत दिलाकर अपनी माता को गुलामी से छुड़ाया था। उसको नमस्कृत करके उसके पास का मार्ग पकड़कर आगे जाओ। (पुराण की कथा है कि कश्यप मुनि की दो पत्नियों में गरुड़ की माता विनता अपनी सौत नागमाता कद्रू की दासी बनी थी। तो उसकी दासता को काटकर छुड़ाने के लिए कद्रू ने शर्त लगायी कि अमृत लाकर दो। गरुड़ ने अमृत-कलश लाकर दिया।) । ७४४

वडशौऱ्कुन् दैन्शौऱ्कुम् वरम्बाहि नात्सरैयु मर्रै नूळुम्
इडैशौऱ् पौरुट्कैल्ला मैल्लैयदाय् नल्लउत्तुक् कोऱाय् वेरु
पुडैशुऱ्ऱन् दुणैयिन्ऱिप् पुहळ्पौदिन्द मैय्येपोऱ् पूत्तु निन्ऱ
उडैशुऱ्ऱन् दण्शार लोङ्गियवेड् गडत्तिर्चेन् रुऱ्दिर् मादो 745

वडशौऱ्कुम् तैन् चौरुकुम्—संस्कृत और तमिळु की; वरम्पु ओकि—सीमा बनकर; नाल् मरैयुम्—चारों वेद और; मर्रै नूळुम्—अन्य शास्त्र; इटै चौरु—अपने में जिनकी चर्चा करते हैं; पौरुट्कैल्लाम्—उन विषयों का; अल्लैयताय्—शीर्षस्थ और; नल् अउत्तुक्कु—श्रेष्ठ धर्म का; ईऱाय्—प्रमाण और; पुटै चुरुम्—पास घेरे रहे; तुणै वेरु इन्ऱि—जोड़ किसी के बिना; पुकळ् पौतिन्त—प्रशंसा के पात्र; मैय्ये पोल्—शरीर के

समान; पूतु निन्ऱ-शोभित रहनेवाले; उटै चुरुम्-वस्त्र के समान लपेटे रहनेवाले; तण्चारल्-शीतल चरण-प्रदेशों-सह; ओङ्किय-ऊँचे; वेङ्कटतृत्ति-श्रीवेंकटगिरि पर; चैन्ऱ उरुतिर्-जा पहुँचो । ७४५

आगे तुम श्री वेंकटगिरि के पास पहुँच जाओगे । वह संस्कृत और तमिळ के प्रदेशों के बीच की सीमा है । उसमें चतुर्वेदों और अन्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित सर्वश्रेष्ठ “वस्तु” (परमतत्त्व) रहती है । वह सारे धर्मों की श्रेष्ठ व्याख्या है । उसके साथ मिलाने योग्य और कोई उपमान नहीं मिलता । यशवेष्टित शरीर के समान उसको शीतल तराइयाँ घेरे रहती हैं । वह उन्नत और पवित्र गिरि है । ७४५

इरुविनैयु मिडैविडा वैव्विनैयु मियर्ऱादै यिमैयो रैय्दुम्
तिरुविनैयु मिडुपन्देर् शिरुमैयैयु मुर्ऱैयौप्पत् तैळिन्दु नोक्किक्
करुविनैय दिप्पिरविक् कंत्तुणर्न्दड् गदुहळैयुड् गडैयिन् जानत्
तरुविनैयिन् पेरुम्बहैअ राण्डुळरीण् डिरुन्दुमडि वण्डुगर् पालार् 746

इरु विनैयुम्-दोनों कर्म (पाप और पुण्य); इटै विटा-निरन्तर; वैव्व विनैयुम्-कोई कर्म; इयर्ऱामे-विना किये; इमैयोर् अय्युम्-देवों को प्राप्त; तिरुविनैयुम्-भोग-कर्म और; इट्ट पतम् तेर्-(भीख में) दिये खाने की अपेक्षा में; चिरुमैयैयुम्-रहनेवाले क्षुद्र जीवन को; मुर्ऱै औप्प-सम क्रम से; तैळिन्दु नोक्कि-साफ़ विवेचना करके; इ पिप्पिरविकु-इस जन्म का; करुविनै अनु-वह गर्भ का कर्म है; अन्ऱु-ऐसा; उणर्न्तु-समझकर; अनु-उस कर्म को; अङ्कु-वहीं; कळैयुम्-त्यागनेवाले; कटै इल् नात्तुत्तु-असीम ज्ञान के; अरु विनैयिन्-दुनिवार कर्म के; पेरु पकैवर्-बड़े शत्रु; आण्टु उळर्-वहाँ रहते हैं; ईण्टु इरुन्तुम्-यहीं से भी; अटि वण्डुक्क पालार्-चरण-वन्द्य हैं । ७४६

उस पर्वत में दुर्वार, पाप-पुण्य दोनों कर्मों के प्रबल शत्रु, श्रेष्ठ महात्मा रहते हैं । उन्हें पाप-पुण्य और लगातार लग करके आनेवाले सभी कर्मों के सम्बन्ध में खूब ज्ञात है । इसलिए वे निष्काम हैं । वे देवों से प्राप्य भोगमय जीवन और भीख में मिलनेवाले भोजनापेक्षी और दुःखमय मानवजीवन, इन दोनों के समदर्शी हैं । जन्म का हेतु ये ही पाप और पुण्य हैं —इसको खूब जानकर उस कर्म-बन्धन को वही काटनेवाले अपार तत्त्वज्ञ हैं । वे महात्मा यहाँ से भी प्रणम्य हैं । ७४६

शूदहर्ऱुन् दिरुमर्ऱैयोर् तुर्ऱैयाडु निरैयारुन् जुर्ऱदित् तौन्ऱुल्
मादवत्तो रुरैविडनु मळैयुर्ऱुगु मणित्तडनु वात्त मादर्
कीदमौत्त किन्नरङ्ग लिन्नरम्बु वरुडुदोरुड् गिळक्कु मोदै
पोदहत्तिन् मळक्कन्ऱुम् बुलिप्पडळ् मुर्ऱङ्गिडनुम् वोरुन्दिर् इस्मा 747

चूतु अक्ऱुम्-कपट को त्यागनेवाले; तिरु मर्ऱैयोर्-सुन्दर ब्राह्मण लोग; आट्ट-जहाँ स्नान करते हैं; तुर्ऱै-उन घाटों से; निरै-पूर्ण; आरुम्-नदियाँ; चरति-

वेद; तौल् नुल्-सनातन शास्त्र (के ज्ञाता); मातवत्तोर-महान तपस्वी; उरैव इटत्तुम्-जहाँ वास करते हैं, वे आश्रम; मल्ल उरङ्कुम्-जहाँ मेघ आश्रय लेते हैं; मणि तटत्तुम्-वे रत्न-भरे स्थान; वात्तम् मातर्-(और) देवांगनाओं के; कीतम् औत्त-गीत के समान; किन्नरङ्कुम्-किन्नर (वाद्यों) के; इन् नरम्पु-मधुर (नादोत्पादक) तन्त्रियों को; वरुट् तौरुम्-मीडते वक्रत; किळक्कुम्-उठनेवाले; ओतै-नाद से; पोतकत्तित्तु-गज के; मल्ल कन्नुम्-छोटे कलभ और; पुलि पडलुम्-बाघ के शावक; उरङ्कु- (जहाँ एक साथ) सोते हैं; इटत्तुम्-वे स्थान; पोरुन्तिङ्ग-इनसे युक्त है (वह तिरुवेकटगिरि) । ७४७

उसमें छल-कपट छोड़कर रहनेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण जिनमें स्नान करते हैं, वे घाटों से भरी नदियाँ; श्रुति और पुराने शास्त्रों के विशिष्ट ज्ञाता बड़े तपस्वियों का वासस्थान; वे स्थल जो रत्नजड़ित हैं और जिन पर मेघ सुप्त रहते हैं; देवांगनाओं के गीत के लय के साथ किन्नर अपने वाद्य की तन्त्रियों से जो स्वर निकालते हैं, उस स्वर को सुनकर कलभ और व्याघ्रशावक जहाँ साथ-साथ सोते हैं वे स्थल —ये सभी हैं । ७४७

कोडुरुमाल् वरैयदत्तैक् कुङ्कुदिरै लुन्नैडिय कौडुमै नीडुङ्गि
वीडुरुदि रादलान् विलङ्गुदिरप् पुडत्तुनीर् मेवु तौण्डै
नाडुरुदि रुड्दन् नीडियदु पित्तैयवै नळिनीर् पोन्निच्
चेडुरुदण् पुनर्डैयवत् तिरुनदियि तिरुहरैयुन् दैरिदिर् मादो 748

कोटु उरु-शिखरोंसहित; माल् वरै अतत्तै-बड़े उस पर्वत के; कुङ्कुतिरेल्-पास जाओ तो; उम् नैडिय कौडुमै-तुम्हारा अधिक पाप; नीडुकि-छूटेगा और; वीडु उरुतिर्-मोक्ष पा जाओगे; आतलान्-इसलिए; विलङ्कुतिर्-दूर से ही हट जाकर; अप्पुडत्तु-उस तरफ के; नीर् मेवु-जलसमृद्ध; तौण्डै नाटु-“तौण्डै” (नाम के) देश को; उरुतिर्-जाओ; उरु-वहाँ पहुँचकर; अतत्तै नाटि-वहाँ खूब खोजकर; अतन् पित्तै-उसके बाद; नळि नीर्-उत्तम जल से पूर्ण; पोन्नि चेटु उरु-‘पोन्नी’ नाम की श्रेष्ठतायुक्त; तण् पुत्तल्-शीतल जल; तैयवम् तिरु नतियित्-दिव्य श्रीनदी के; इरु करै अवैयुम्-दोनों तीरों पर; तैरितिर्-देवी की खोज लगाओ । ७४८

शिखरों से भरे उस पर्वत के पास तुम लोग जाओगे तो तुम्हारे सारे पाप दूर हो जायँगे और तुम मोक्ष को प्राप्त हो जाओगे । इसलिए उससे बचकर आगे रहनेवाले जलसमृद्ध “तौण्डै” (बिम्ब) प्रदेश में जाओ और वहाँ खूब अन्वेषण करो । फिर उस कावेरी नदी के दोनों किनारों पर खोजो जो “पोन्नी” के नाम से विख्यात है और जो देखने में बहुत सुन्दर है । वह नदी शीतल जल से भरी और दिव्य है । ७४८

तुङ्क्कुमुड्डार् मत्तमैन्तत् तुडैहळुनीर्च् चोणाडु कडन्दार् रौल्लै
मरक्कुमुड्डार् रदन्तयले मरैन्दुरैव रव्वळिनीर् वल्लै येहि
उरक्कुमुड्डार् अँन्नुड्डार् रैन्मुणर्वि नौडुमीडुङ्गि मणिया रोडुङ्गि
पिरक्कुमुड्डार् मलैनाडु नाडियहत् रमिळनाट्टिर् पयर्दिर् मादो 749

तुङ्क्कम् उङ्गार्-स्वर्गगत; मत्तम् अत्त- (लोगों के) मन के समान; तुङ्गे कँळु नीर्-घाटों से युक्त धारा वाली कावेरी के जल से; चीणाट्ट- (समुद्र) 'चोळ नाडु' (चोळ देश); कटन्ताल्-पार करोगे तो; अत्तन् अयले-उसके समीप ही; तौल्ले-पूर्व-कर्म; मङ्क्कम् उङ्गार्-जो भूल चुके हैं, वे; मङ्गन्तु उङ्गवर्-छिपे-छिपे वास करते होंगे; नीर्-तुम लोग; अ वळि-उस मार्ग में; वल्लै एक-शीघ्र जाकर; उङ्क्कम् उङ्गार्-निद्रा में रत रहनेवाले; अत्त उङ्गार्-क्या पाये; अत्तुम् उणर्वित्तोदुम्-इस समझ के साथ; अत्तुङ्कि-हट जाकर; मणि आर्-रत्न-भरे; ओङ्कल् पिङ्क्कम्-पर्वतों के तलों से; उङ्ग-युक्त; मल्लै नाडु-पर्वत-प्रदेश में; नाटि-खोजकर; पिङ्कु-बाद; अकल् तमिळ नाट्टिल्-विस्तृत तमिळनाडु में; पयर्त्तिर्-जाओ। ७४६

स्वर्गगत लोगों के मन के समान कावेरी का जल स्वच्छ है और वह देश पवित्र है, जिसमें यह नदी बहती है। उसके पार्श्व में पूर्व कर्म को जो भूले हुए हैं, वे मुनिवर छिपे-छिपे वास कर रहे हैं। तुम उस मार्ग को अविलम्ब पार कर लो। सुप्त रहनेवाले क्या पायेंगे ? —इस मसल का स्मरण करते हुए आगे रत्नमय उन्नत पर्वतों के देश में देवी का पता लगाओ। उसके बाद विशाल तमिळ देश में (पाण्ड्य देश में) पहुँच जाओ। ७४९

तैत्तमिळनाट्टहन्पौदियिर् तिरुमुत्तिवन् तमिळ्चडङ्गम् जेर्हिर् पीरेल्
अत्तुरुम्ब नुर्देविडमा मादलिना नम्मलैयै यिडत्तिट्ट् टेहिप्
पौन्डिणिन्द पुनल्पेरुडुम् पौरुनैयैत्तुन् दिरुनदिपित् वौळिय नाहक्
कन्डुवळर् तडम्जारन् मयेन्दिरमा नैडुवरैयुड् गडलुड् गाण्डिर् 750

तैत्त तमिळ नाडु-दाक्षिणात्य तमिळ देश में; अकल् पौत्तियिल्-विशाल 'पौदिहै' गिरि पर; तिरु मुत्तिवन्-श्री (अगस्त्य) मुनि के; तमिळ् चडङ्कम्-तमिळ संग में; चेर्किङ्पीरेल्-पहुँचोगे तो; अत्तुरुम्-सदा; अवन् उङ्ग इटम् आम्-उनका रहने का स्थान है वह गिरि; आतलिताल्-इसलिए; अम् मल्लै-उस पर्वत को; इटत्तु इट्टु-बायीं ओर छोड़कर (परिक्रमा करते हुए); एक-जाकर; पौन् तिणिन्त-स्वर्ण-कणों से भरे; पुनल् पेरुडुम्-जल से पूर्ण; पौरुनै अत्तुम्-'पौरुनै' नाम की (ताम्रपर्णी); तिरु नति-श्रीनदी; पित्तु वौळिय-पीछे रह जाय, ऐसा आगे जाकर; नाक् कन्डु-कलभ; वळर्-जहाँ पलते हैं; तट चारल्-वैसी विशाल तराइयों से युक्त; मयेन्तिरम्-आम्-महेन्द्र की; नैडु वरैयुम्-बड़ी गिरि को और; कटलुम्-समुद्र को; काण्टिर्-देखो (गे)। ७५०

उस देश में "पौदिहै" का बड़ा पर्वत है। वहीं श्री अगस्त्य मुनि का तमिळ-संग प्राप्त होगा। वही अगस्त्य का स्थायी वासस्थान है। उसके दाहिनी ओर से आगे जाओ और स्वर्णकण-मिश्रित जल वाली ताम्रपर्णी नाम की नदी को भी छोड़कर आगे बढ़ो। महेन्द्रपर्वत आयगा, जिसकी तराइयों में हाथी के बच्चे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। उसके पास ही दक्षिणी समुद्र भी रहता है। ७५०

आण्डुकडन् दप्पुत्तु सप्पुत्तु मौरुतिङ्ग लवदि याहत्
तेण्डियवण् वन्दडैदिर् विडैहोडिर् कडिदैनत्तच् चप्पुम् वेलै
नीण्डवन्तु मारुदियै निरैयरुळा लुरनोक्कि नीदि वल्लोय्
काण्डियैनिर् कुडिकेट्टि यैनवेरु कौण्डिरुन्दु कळर लुर्रान् 751

आण्डु कटन्तु—उस स्थान को पार करके; अ पुत्तुत्तुम्—उसके उस तरफ़;
अ पुत्तुत्तुम्—सभी ओर; और तिङ्कळ्—एक महीना; अवति आक—अवधि बनाकर;
तेण्टि—अन्वेषण करके; इवण् वन्तु—यहाँ आ; अटैतिर्—पहुँचो; कटितु—अविलम्ब;
विटै कोटिर्—विदा लो; अन्न चप्पुम् वेलै—(सुग्रीव के) यों कहते समय; नीण्डवन्तुम्—
(लम्बोतरा श्रीत्रिविक्रम के अवतार) श्रीराम भी; मारुतियै—मारुति को; निरै अरुळाल्—
सम्पूर्ण कृपा के साथ; उर्र—खब; नोक्कि—देखकर; नीति वल्लोय्—नीतिशास्त्र-
विदग्ध; काण्टि अत्तिन्—देखोगे तो; कुडि केट्टि—लक्षण सुन लो; अन्न—कहकर;
वेरु कौण्डु इरुन्तु—अलग ले जाकर रहे और; कळरल् उर्रान्—बोलने लगे । ७५१

उस स्थान को पार कर उस तरफ़ और सब ओर एक मास की अवधि तक खोज लगाओ । फिर इधर आ पहुँचो । चलो, जल्दी विदा लो । सुग्रीव ने जब यह आज्ञा सुनायी, तब विश्वाकार श्रीराम ने मारुति पर कृपा-दृष्टि दौड़ायी । और कहा— नीतिशास्त्रज्ञ ! सीता को देखो तो उसकी पहचान के लक्षण सुन लो । फिर उसे अलग ले जाकर श्रीराम सीताजी के (पादादिकेश) अंग-लक्षण बताने लगे । ७५१

पाक्कड् पिन्तु शैय्य पवळत्तैप् पञ्जि यूट्टि
मेरुपड मदियञ् जूट्टि विरहुर् निरैन्द नौय्य
काड्रहै विरल्ह लैय कमलमुम् बिस्वुड् गण्डाल्
एरुपिल वैनब् दन्नि यिणैयडिक् कुवमै यैन्नो 752

ऐय—भद्र; नौय्य—कोमल; काल् तक विरल्कळ्—पैरों की उँगलियाँ; पाल् कटल् पिन्तु—क्षीराब्धि में उत्पन्न; चैय्य पवळत्तै—लाल प्रवाल-खण्डों को; पञ्चि ऊट्टि—लाल लाक्षारस लगाकर; मेल् पट—उनके ऊपर; सतियम् चूट्टि—चन्द्रों को जड़ित कर; विरकु उर्र—शालीनता से युक्त रीति से; निरैत्तु—बनाया गया, ऐसे हैं; कमलमुम्—कमल और; पिस्वुम्—अन्य (उपमेय) वस्तुएँ; कण्डाल्—इनको देखे तो; एरुपिल—योग्य नहीं हैं; अन्नपु अन्नि—ऐसा कहना छोड़कर; इणै अटिक्कु—चरण-युगल की; उवमै अन्नो—उपमेय (वस्तु) क्या है । ७५२

उत्तम वीर ! उसके मृदुल चरण की सुन्दर उँगलियों का लक्षण सुनो । क्षीरसागर में उत्पन्न श्रेष्ठ प्रवालखण्डों का लाक्षारस में सनकर उनके ऊपर चन्द्रों को टिकाकर बहुत ही कुशलता के साथ वे पंक्ति में बनायी गयी हैं । कमल और अन्य ऐसे पदार्थ, सोचने पर, उनके उपमान बनने के लिए योग्य नहीं हैं । यही कहना पड़ेगा । नहीं तो उसके दोनों चरणों के लिए योग्य उपमान कहाँ से मिलेगा ? । ७५२

नीमैया युणर्दि यैय निरैवळै महळिर्क्क कॅल्लाम्
 वाय्मैया लुवमै याह मदियरि पुलवर् वैत्त
 आमैया मॅन्ऱ पोडु मल्लत्त चोल्लि नालुम्
 यामयाळ् मळलै याडन् पुऱवडिक् किळुक्क मन्ऱो 753

ऐय—सौम्य; निरै वळै—पंक्तियों में पहने कंकणों की स्वामिनी; मकळिर्क्कु
 अल्लाम्—सभी स्त्रियों के (उत्तरणों के) लिए; उवमै आक—उपमा के रूप में; मति
 अरि पुलवर्—अपनी सूझ से सभी समझनेवाले विद्वान्; वाय्मैयाल् वैत्त—सच्चे रूप से
 जिसका निर्धारण कर चुके हैं; आमैयाम्—फछुआ है; मॅन्ऱ पोतुम्—कहें तब भी;
 अल्लत्त—इसके बिना अन्य भी; चोल्लित्तालुम्—कहें; यामम् याळ्—अर्धनिशा में चुनायी
 देनेवाली याळ (वीणा) के नाद के समान; मळलैयाळ् तन्—मधुरभाषिणी सीता
 के; पुऱवडिक्कु—उत्तरणों के लिए; इळुक्कम्—अगोरव ही है; नी—तुम; मैयाय्—
 सच; उणर्त्ति—मानो। ७५३

महिमावान हनुमान ! पंक्तियों में कंकण पहननेवाली स्त्रियों के
 उत्तरणों के लिए अपनी बुद्धि से सभी विषयों का ग्रहण कर सकनेवाले
 विद्वान् लोगों ने कछुए को उपमान निर्दिष्ट किया है। वही कहो, या और
 कुछ कहो, अर्द्धरात्रि में मन को मोहनेवाली “याळ” की ध्वनि के समान
 मधुर-वाणी सीतादेवी के उत्तरणों के लिए ऐसे उपमान कहना उन चरणों का
 अपमान ही होगा। ७५३

वित्तैवरा लरिय कोदै पेदैमैन् कणैक्कात्त मैय्य
 नित्तैवरा लरिय वित्त नैर्पडप् पुलवर् पोऱुम्
 शित्तैवराल् पहळि यावम् नैर्चिन्नै यैन्नुञ् जिऱ्पम्
 अँनैवराऱ् पहर् मीट्ट यात्तुरैत्त तिन्व मैन्ऱो 754

मैय्य—सत्यसंध; वित्तैवराल्—चित्रकारों द्वारा; अरिय—चित्रणदुर्लभ; कोदै—
 केश वाली; पेदै—अयोध देवी की; मैल्—कोमल; कणैक्कात्त—पिण्डलियाँ; नित्तैवराल्—
 अतिशय सूझ वालों के लिए भी; अरिय—उनकी उपमा ढूँढ़ना कठिन हो; इन्न्—इस
 प्रकार की हैं; पुलवर्—विद्वान्; नैर् पट्ट—समान कहकर; पोऱुम्—जिनकी प्रशंसा
 करते हैं; चित्तै वराल्—वे गाम्भिन ‘वराल’ मछलियाँ भी; पकळि आवम्—शर-तरकश
 और; चिन्नै नैल्—धान का गाभा; अँन्नुम्—ऐसे; जिऱ्पम्—कथन; अँनैवराल्
 पकरम्—सबसे कहे जाते हैं; ईट्ट—युक्त भी हैं; यात्त उरैत्तु—मैं भी कहूँ तो; इन्पम्
 अँन्ऱो—आनन्द कहाँ। ७५४

सत्यवान ! उस सीतादेवी की, जिसके केश का चित्रकारों को चित्र
 बनाना कठिन है, मृदुल पिण्डलियाँ ऐसी हैं जिनका ऊहापोह करनेवाले बड़े
 चतुर लोग भी उपमान नहीं ढूँढ़ सकते हैं। साधारण रूप से विद्वान् लोग
 गम्भीर वराल नामक मछली, तूणीर कोश को और धानसहित (धान के)
 पौधे आदि की बातें करते हैं। वे तो साधारण रूप से योग्य उपमान हो

सकते हैं। पर उनको मैं दुहराऊँ, इसमें क्या आनन्द मिल सकता है ? । ७५४

अरम्बैयैन् इळह मादर् कुरङ्गितुक् कमैन्द वौप्पिन्
वरम्बैयुड् गडन्द पोदु मरुरे बहुक्क लामो
नरम्बैयु ममिळ्द नारु नरवैयु नळिर्नीरप् पण्णैक्
करम्बैयुड् गडन्द शौल्लाळ् कवार्क्कुडु करुदु कण्डाय् 755

अळक्क मातर्—अलकालंकृत स्त्रियों के; कुरङ्गितुक्कु—ऊरुओं के लिए; अरम्पे अँनुडु—कदली; अमैनुत—कथित; औप्पिन् वरम्पैयुम्—समानता की सीमा को भी; कटन्त पोतु—(सीता के ऊरु) लाँघ गये, तब; मरुरे उरै—और कोई बात; बहुक्कलामो—कही जा सकती है क्या; नरम्पैयुम्—तन्त्री (वीणा) को; अमिळ्दम् नारुम्—अमृत की मिठास से भरे; नरवैयुम्—मधु को; नळिर् नीर पण्णै—शीतल जल—संचित खेतों के; करम्पैयुम्—ईखों के रस को; कटन्त—जिसने अपनी मधुरता में हराया है; शौल्लाळ्—ऐसी बोली वाली सीतादेवी के; कवार्क्कु—ऊरुओं के सम्बन्ध में; इतु—यह (मेरा कथन); करुदु—तुम सोच लो; (कण्टाय्—पूरक ध्वनि) । ७५४

अलकशोभिता स्त्रियों के ऊरुओं को कदली वृक्ष से उपमित करते हैं। लेकिन सीता के ऊरु इस उपमा को पार कर गये हैं। तो और कोई उपमान कहना हो सकता है क्या ? तंत्री नाद, अमृत-सम मधुर मधु, जल-समृद्ध खेतों में उत्पन्न ईख का रस—इन सबको जिस सीता के वचनों ने हरा दिया है, उसके ऊरु के सौन्दर्य को मेरी बातों से जान लो । ७५४

वाराळिक् कलशक् कौङ्गे वञ्जिपोन् मरुङ्गु लाडन्
ताराळिक् कलैशा रल्हु इडङ्गड्ड कुवमै तक्कोय्
पाराळिप् पिडरिर् राङ्गुम् पान्दळुम् पत्तिर्वैन् रोङ्गुम्
ओराळित् तेरुड् गण्ड वुनक्कुना तुरैप्प दैन्तो 756

तक्कोय्—सुयोग्य; वार्—अँगियावद्ध; आळि—चक्रवाक; कलचम्—और कलश-सम; कौङ्कै—स्तनों और; वञ्जि पोल्—‘वञ्जि’ नाम की लता के समान; मरुङ्कुलाळ् तन्—कमर से भूषित (सीतादेवी) के; तार्—किंकिणी से अलंकृत; आळि—गोल-गोल; कलै चार्—मेखला-वलयित; अल्कुल् तट कटर्कु—वरांग के विशाल सागर-प्रदेश की; उवमै—उपमा; आळि पार्—सागर-मेखला पृथ्वी को; पिटरिल् ताङ्कुम्—अपने सिरों पर धारण करनेवाले; पान्दळुम्—शेषनाग को; पत्तिर्वैन्—(और) हिम को जीतकर; ओङ्कुम्—उन्नत रहनेवाले; ओर् आळि तेरुम्—एक चक्र (सूर्य) के रथ को; कण्ट—जिसने प्रत्यक्ष देखा है, उस; उतक्कु—तुमसे; नान् उरैप्पतु—मैं कहूँ, ऐसा; अँन्तो—क्या है । ७५६

सुयोग्य ! अँगियावद्ध, चक्रवाक और स्वर्णकलश-सम स्तन और “वञ्जी” नाम की लता के समान कमर से शोभित सीतादेवी के किंकिणी हारों से अलंकृत भग रूपी बड़े समुद्र का उपमान मैं क्या कहूँ ? तुमने समुद्र-मेखला पृथ्वी को अपने सिर पर धरनेवाले आदिशेष का फन देखा है। और

ओस को थमाकर ऊपर उठनेवाले सूर्य के एकचक्र-रथ का पीठ भी देखा है। (तुम जान सकते हो कि सीता का कटि-प्रदेश कैसे इनसे भी सुन्दर है।) ऐसे तुमसे मैं क्या कहूँ ? । ७५६

शट्टहन् दन्नै नोक्कि यारैयुन् जमैक्कत् तक्काळ्
इट्टिडै यिरुक्कुन् दत्तमै यियम्बक्केट्टु टुणर्दि येन्तिन्
कट्टुरैत् तुवमै काट्टक् कट्टोऱि कट्टुवा कैयिल्
तौट्टवैर् कुणर लामर् रुण्डेनुन् जौल्लु मिल्लै 757

चट्टकम् तन्नै नोक्कि-रूप-सौन्दर्य देखकर (आदर्श बनाकर); यारैयुम् जमैक्क-
कितनी भी बड़ी सुन्दरी की सृष्टि की जा सके; तक्काळ्-ऐसी रूप वाली सीता की;
इट्टु इट्टे-पतली कमर; इरुक्कुम् तन्मै-जैसा रहता है, वह प्रकार; इयम्प केट्टु-
मैं कहूँ और तुम सुनो; उणर्ति-और समझो; येन्तिन्-तो; कट्टु उरैत्तु-निश्चित
रूप से कहकर; उवमै काट्ट-उपमा दिखाना हो तो; कण् पोऱि-आँख की इन्द्रिय;
कट्टुवा-देख नहीं सकती; कैयिल् तौट्ट-हाथ से जिसने स्पर्श किया है; अर्कु-उस
मुझसे; उणरल् आम्-साध्य हो सकती है; मर्ऱु उण्टु-अन्यथा, 'है'; येन्नुम्
चौल्लुम्-ऐसा कथन; इल्लै-नहीं। ७५७

सीता के रूप को नमूना बनाकर ब्रह्मदेव कितनी ही बड़ी सुन्दरी की
सृष्टि कर सकते हैं। ऐसी मनोरम रमणी की छोटी कमर का लक्षण
मैं कहूँ और तुम सुनो—यह कठिन है। क्योंकि आँखों से देखा जाय,
तभी न कल्पना के सहारे उपमान ढूँढा जा सकता है। सिर्फ मैंने स्पर्श
करके देखा है। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि उसके कमर है। अन्यथा
उसकी कमर के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है। ७५७

आलिलै पडिवन् दीट्टु मैयनुण् पलहै नौय्य
पाल्निऱुत् तट्टम् वट्टक् कण्णडि पलवु मित्त
पोलुमैन् उरैत्त पोदुम् पुनैन्दुरै पौदुमै पार्क्किन्
एलुमैन् इशैक्कि नेला विदुवयिर् इयिर्कै यिन्नुम् 758

पौतुमै पार्क्किन्-सामान्य रूप से देखें तो; आल् इल्लै-वटपत्र; पट्टिवम्
तौट्टुम्-चित्र खींचने के लिए उपयुक्त; ऐय् तुण् पलकै-बहुत पतला फलक; नौय्य-
पतली; पाल् निऱुम्-दुग्धवर्ण; तट्टम्-(चाँदनी की) थाली; वट्टम् कण्णडि-
गोलाकार दर्पण; इन्त पलवुम्-और ऐसी अन्य वस्तुओं; पोलुम्-के समान रहेगा
(उदर); अर्ऱु उरैत्त पौतुम्-ऐसा कहने पर भी; पुनैन्दुरै-यह सब मनगढ़न्त
कथन है; एलुम् अर्ऱु-(उपमित) हो सकते हैं, ऐसा; इवैक्किन्-कहना चाहें तो;
एला-नहीं हो सकते; इतु-यह; वयिर्ऱु इयिर्कै-उनके उदर की प्रकृति है;
इन्नुम्-और। ७५८

साधारण रूप से देखने पर स्त्रियों का उदर वटपत्र से, पतले चित्र-
पलक से, बहुत ही पतले दुग्ध-सम श्वेत चाँदी की थाली से और गोल आईने

से उपमित किया जाता है। लेकिन यह कोरी कल्पना है। वे उसकी समानता कर सकते हैं, ऐसा कहा जायगा क्या? नहीं। समानता नहीं कर सकते, क्योंकि उसके उदर की प्रकृति ऐसी है। ७५८

शिङ्गलिन् शिरूह दाळि नन्दियिन् शिरट्पूच् चेरन्द
 पौङ्गुपौङ् रौळैयैन् रालुम् बुल्लिय वुवमैत् तामाल्
 अङ्गव छुन्दि यौक्कुम् जुळियैन् कणित्त दुण्डाल्
 गङ्गयै नोक्किच् चेऱि कडलिन् नैडिडु कर्ऱोय् 759

कटलितुम्-सागर से भी; नैटितु-विशाल (शास्त्रों के); कर्ऱोय्-विद्वान्;
 चिङ्कल् इल्-सिक्कुडन-रहित; चिङ्ग कूताळि-छोटा 'कूदाली' का फूल; नन्तियिन्-
 'नैदि' नाम के पौधे का; तिरळ् पू-वर्तुलाकार फूल; चेरन्त-इनमें रहनेवाले;
 पौङ्कु पोन् तोळै-बड़ा सुन्दर गड्ढा (सा भाग); अन्ऱालुम्-कहें तो भी; पुल्लिय
 उवमैत्तु-क्षुद्र उपमाएँ होगा; जुळि-(गंगा नदी की) भँवर; अवळ्-उसकी; उन्ति
 ओक्कुम्-नाभि की समानता करेगी; अन्त-ऐसा; अङ्कु-वहाँ (जब मैंने गंगा पार
 की तब); कणित्ततु उण्टु-मैंने विचारा था; कङ्कयै नोक्कि-(इसलिए) गंगा
 (की भँवर) को-देखकर; चेऱि-सोच 'चलो'। ७५९

सागर से भी विशाल विद्या के स्वामी! सीता की नाभि का
 उपमान असंकुचित "कूदाली" का फूल, या "नन्दिवर्त" नाम के गोल फूल
 का सुन्दर कटोरा-सा भाग कहा जा सकता है। लेकिन वे अल्प उपमान
 हैं। जब मैंने गंगा पार की तब मेरे मन में यह भाव उठा कि गंगा की
 भँवर सीता की नाभि की समानता कर सकती है। इसलिए तुम भी
 गंगा का स्मरण कर उसकी नाभि को पहचान चलो। ७५९

मयिरोळुक् कँतवौन् रुण्डाल् वल्लिशेर् वयिर्ऱिन् मर्ऱैन्
 उयिरोळुक् कदऱ्कु वेण्डु मुवमैयोन् रुऱैक्क वेण्डिन्
 शैयिरिल्शिर् रिडैया युऱ्ऱ शिरूहीडि नुडक्कन् दीरक्
 कुयिलुरुन् दमैय वैत्त कौळ्हीम्बैन् रुणर्न्दु कोडि 760

वल्लि चेर्-वल्लरी-सम; वयिर्ऱिन्-उदर की; मयिर् ओळुक्कु-रोमराजी;
 अन्त ओन्ऱु उण्टु-ऐसा है; अन्त उयिर् ओळुक्कु-मेरे जीवन की ही राजि (रेखा) है;
 अतऱ्कु-उसकी; वेण्डुम् उवमै-सर्वमान्य उपमा; ओन्ऱु-एक; उऱैक्क वेण्डिन्-
 कहना हो; चैयिर् इल्-अनिन्ध; चिङ्ग इट्टैया-क्षीण कमर; उऱ्ऱ-जो बनी; चिङ्ग
 कौटि-छोटी लता का; नुडक्कम् तीर-संकोच छोड़ बढ़े, इस वास्ते; कुयिल् उऱ्ऱतु-
 खूब गाड़कर; अमैय वैत्त-स्थापित; कौळ् कौम्पु-अलान; अन्ऱु-ऐसा; कौटि-
 समझ लो। ७६०

लतासमाना देवी के दिव्य उदर में रोमराजी है। उसको मेरी ही
 जान का प्रवाह समझो। उसका सर्वमान्य उपमान कहना हो तो वह

असम्भव है। अर्निद्य कमर रूपी छोटी लता अपनी थकावट उतार ले, उसके लिए गड़े हुए आलम्ब के रूप में उसको समझ लो। ७६०

अल्लियून् रिडुमैन्नुञ्जि यरविन्दन् दुडुन्दाट् कम्बोन्
वल्लिमून् रुळवाड् कोल वयिरुत्तिन्मड् इवैयु मार
विल्लिमून् रुलहिन् वाळु मादरुन् दोडु मय्यम्मै
शौल्लियून् इयिवाम् वैरुडि वरैयैन्तत् तोन्डु मन्डु 761

अल्लि-पंखुड़ियाँ; अत्तुडिडुम्-चुभेंगी; अँतुड अञ्चि-ऐसा डरकर; अरविन्दम्-अरविन्द की; तुडुन्ताटकु-जिसने त्यागा उस सीता के; कोलम् वयिरुत्ति-मनोहर उदर में; अम् पोत्त-सुन्दर स्वर्ण रंग की; मून्डु वल्लि-त्रिवली; उळ-है; अवैयुम्-वे बल; मारन् विल्लि-मन्मथ धनुर्धर द्वारा; मून्डु उलकितुम्-तीनों लोकों में; वाळुम्-रहनेवाली; मातर्-स्त्रियों का; तोडुड-इनसे हारने का; मय्यम्मै-सत्य समाचार; शौल्लि-ढिढोरा पीटकर; अत्तुडिय-स्थापित; वैरुडि वरै-विजयसूचक लकीरें; आम्-हैं; अँत-ऐसा; तोन्डुम्-विळङ्कुम्-लगती है। ७६१

सीता वही कमला है, जिसने इस डर से कमल छोड़ा कि उसकी पंखुड़ियाँ चुभेंगी और दर्द देंगी। उसके मनोरम उदर में त्रिवली है। वह स्वर्णलता के समान है। वे तीन बल धनुवीर मन्मथ की खींची हुई रेखाएँ हैं, जिनको उसने इस तथ्य को घोषित करने के लिए खींचा था कि तीनों लोकों की वासिनी स्त्रियाँ इस सीता के सामने सौन्दर्य में हार गयीं। ७६१

शौपैन्बैन् कलश मैन्बैन् शौव्विळ नीरुन् देर्वैन्
तुपपौन्डु तिरळ्शु दैन्बैन् शौल्लुवैन् रुम्बिक् कौम्बैन्
तपपिन्डिप् पहलिन् वन्द शक्कर वाह मैन्बैन्
औपपौन्डु मुलैक्कुक् काणेन् पलनितैन् दुळल्वै तित्तुन् 762

मुलैक्कु-उरोजों की; औपपु-उपमा; औन्डुम् काणेन्-कुछ नहीं देखता; चैपु-रत्न की डिविया; अँतुपैन्-कहेंगा; फिलचम्-स्वर्ण-कलश; अँतुपैन्-कहेंगा; चैव इळनीरुम्-लाल डाम; तेर्वैन्-विचार कहेंगा; तुपपु औन्डु-प्रवाल तराशकर; तिरळ-गोल बनाया हुआ; चूतु अँतुपैन्-जुए का गोटा कहेंगा; तुम्पि-हाथी के; कौम्पै-दन्त-द्वय; शौल्लुवैन्-कहेंगा; तपपु इत्तुडि-विना नागा के; पकलिल वन्त-अह (दिन) में आये; चक्करवाक् अँतुपैन्-चक्रवाक कहेंगा; इत्तुन् पल नितैन्तु-और अनेक (उपमाएँ) सोचता; उळल्वैन्-फिहेंगा। ७६२

स्तनों का कोई उपमान मैं नहीं देखता। इसलिए रत्न-डिविया कहता हूँ, कलश कहता हूँ, लाल और कच्चे नारियल के फलों को चुनता हूँ और प्रवाल का तराशकर गोल बनाया हुआ गोटा कहता हूँ। कभी गजदन्त-युगल को, कभी दिन में अचूक रीति से आये चक्रवाक को कहता हूँ। और कितने ही अन्य उपमानों को सोचता फिरता हूँ। ७६२

करम्बुकण्	डालुम्	कान्तेशेर्	काम्बुकण्	डालु	मालि
अरम्बुकण्	डारै	शोर	वळङ्गुवे	तरिव	दुण्डो
शुरुम्बुकण्	डालुङ्	गोदै	तोळिणैक्	कुवमै	शील्ल
इरम्बुकण्	डनैय	नैञ्ज	मैन्ककिलै	यिशैप्प	दैन्नो 763

करम्बु कण्टालुम्—ईख को देखते समय और; कान् चेर—वनों में उत्पन्न; काम्बु कण्टालुम्—बाँस को देखते समय; कण् अरम्बु—आँखों से निकली; मालि तारै—अश्रुधारा; चोर—गिराते हुए; अळङ्कुवेन्—दुःखमग्न हो रहा हूँ; अरिवतु उण्टो—(उसको छोड़कर) उपमा जानता हूँ क्या; चुरुम्बु कण्टु—भ्रमर देखकर; डालुम्—जिन पर मँडराते हुए गुंजारते हैं, उन; कोतै तोळ् इणैक्कु—केशों से भूषित सीता के स्कन्धद्वय की; उवमै चील्ल—उपमा कहूँ; अँत्तैक्कु—मेरे; इरम्बु कण्टनैय—लोहे के समान; नैञ्चम् इलै—मन नहीं है; इचैप्पतु अँत्तु—फिर कहूँ क्या । ७६३

ईख को देखता हूँ या जंगल में बाँसों को देखता हूँ तो मेरी आँखों से अश्रु की धारा बहती है और मैं उद्विग्न हो जाता हूँ । (ऐसा रोने के सिवा) उसके कन्धों के उपमान को समझ सकता हूँ क्या ? उस सुकेशिनी के दोनों कन्धों की, जिन पर भ्रमर गुंजार करते हैं, उपमा, सोच-समझकर बताने के लिए मेरे पास लोहा-सा दिल नहीं है । फिर मैं क्या कहूँ ? कैसे कहूँ ? । ७६३

मुत्तगैये	यौप्प	दौत्तुम्	उण्डुमुत्त	रुलहत्	तुळ्ळुम्
अँत्तगैये	यिळुक्क	मन्ऱे	यियम्बिन्ऱुङ्	गान्द	ळैन्ऱल्
वत्तगैयाळ्	मणिक्कै	अँत्तुन्	मऱ्ऱौत्तुऱै	युणर्त्त	लत्तुऱि
नत्तगैया	डडक्कै	यामो	नलत्तित्तिमे	तलमुण्	डामो 764

मुत्तु उलकत्तुळ्ळुम्—तीनों लोकों में; मुत्तु कै—अग्रहस्त की; औप्पतु—समता करनेवाली; औत्तुम्—एक (वस्तु); उण्टु—है; अँत्तकैये—ऐसा कहना ही; इळुक्कम् अन्ऱे—गलत है न; इयम्पित्तुम्—कहें तो भी; मणि कै—उसके सुन्दर अग्रहस्त को; कान्तळ् अँत्तुल्—‘कान्दळ’ पुष्प कहना; वत्तुक्—निर्मम वचन है; याळ् अँत्तुल्—‘याळ’ कहना; मऱ्ऱु औत्तुऱै उणर्त्तल्—दूसरी किसी वस्तु को कहना होगा; अत्तुऱि—उसके बिना; नत्तु कैयाळ्—सुन्दर हाथों वाली सीता के; तटक्कै आमो—विशाल हस्त होंगे क्या (वे); नलत्तित्तु मेल्—सुन्दरता से बढ़कर; नलम् उण्टामो—सुन्दर हो सकता है क्या । ७६४

तीनों लोकों में सीता के (अग्र) हस्त से उपमित होने योग्य कोई चीज है—यह कहना ही दोषपूर्ण है न ? इस मजबूरी से उसके सुन्दर हाथों को “कांदळ” पुष्प कहना निर्मम वचन है । “याळ” कहूँ तो वह किसी और बात का संकेत हो जायेगा । इसके सिवा वे देवी के हस्तों के उपमान हो सकेंगे क्या ? सौन्दर्य से बढ़कर कोई चीज सुन्दर हो सकती है कहीं ? । ७६४

एलक्को डीन्ऱ पिण्डि यिळन्दाळिर् किडक्क याणर्क्
 कोलक्कड् पहतत्तिन् कामर् कुळैनरुड् कमल मँन्व
 नूल्ककु मरुङ्गु लाड नूबुर मलम्बु कोलक्
 कालुक्कुत् तौलैयु मँन्ऱाड् कैक्कौप्पु वैक्क लामो 765

पिण्डि—अशोक के; एल कोटु—सुवासित शाखाओं के; ईन्ऱ—दिए गये; इळम् तळिर्—छोटे पल्लव; किडक्क—एक ओर रहें; याणर् कोलम्—अनोखे सौंदर्य वाले; कड्पकत्तिन्—कल्पतरु के; कामर् कुळै—मनोहर पत्ते और; कमलम् नरुम् मँन् पू—कमल के सुगन्धित और कोमल फूल; नूल् ओक्कुम्—सूत्र (सूक्ष्म); मरुङ्कुलाळ् तन्—कमर वाली सीता के; नूपुरम् अलम्पुम्—जिन पर से नूपुर नाद करते हैं, उन; कोलम् कालुक्कुम्—अतिसुन्दर चरणों के सामने; तौलैयुम्—हारकर हट जायेंगे; अँन्ऱाल्—तो; कैक्कु ओप्पु—उसके हाथों की उपमा; वैक्कल्—कहना; लामो—(ठीक) होगा क्या । ७६५

अशोक-तरु की सुवासित शाखाओं में उगे पल्लव एक ओर रहें । नित-नवीन कल्पतरु के प्यारे पल्लव और सुगन्धित और कोमल कमल के फूल भी और सूत्र-सी कमर वाली सीता के नूपुर-वणन-द्योतित सुन्दर चरणों की उपमा नहीं बन सकते और हारकर पिछड़ जाते । तो उनकी सीता के हस्तों से उपमित करना युक्त हो सकता है क्या ? । ७६५

वैळ्ळिय मुरुवड् चैव्वाय् विळङ्गिळ् यिळम्बोर् कौम्बिन्
 वळ्ळुहिरक् कुवमै नम्मान् मयर्वर वहुक्क लामो
 अँळ्ळुदिर् नीरे मूक्कै यैन्ऱुक्कोण् डिवरि यैन्ऱुम्
 किळ्ळैहण् मुरुक्किन् पूवैक् किळ्ळिक्कुमे लुरैक्क लामो 766

वैळ्ळिय मुरुवल्—श्वेत दशन; चैव्वाय्—अरुण अधर; विळङ्कु इळै—(कान्ति के साथ) रहनेवाले आभूषण; इळ पाँन्—(इनसे युक्त) बाल, सुन्दर; कौम्पिन्—पुष्पलता-सी जानकी के; वळ् उकिर्क्कु—तीक्ष्ण नखों की; उवमै—उपमा; नम्माल्—हमसे; मयर्वु अड्—असंशय रीति से; वहुक्कलामो—दी जा सकती है क्या; किळ्ळैकळ्—तोते; नीरे—तुम; मूक्कै—हमारी चोंचों की; अँळ्ळुदिर्—अवहेलना (इस बात पर कि हमारी चोंचें सीताजी के नखों की बराबरी नहीं कर सकतीं) करते हो; अँन्ऱु कौण्डु—ऐसा मानकर; डिवरि—गुस्सा करके; मुरुक्किन् पूवै—(काँटेदार) पलाशफूलों की; यैन्ऱुम्—सदा; किळ्ळिक्कुमेल्—चीरते हैं तो; उरैक्कलामो—(तोतों की चोंचों की सीताजी के नखों की उपमा) कह सकते हैं क्या । ७६६

श्वेत दन्त, लाल अधर और कान्तिपूर्ण आभरण से सुशोभित बाल स्वर्णलता, जानकी के तेज नखों की उपमा हम जैसों से भ्रमरहित रीति से रची जा सकती है क्या ? शुक, कंटक-पलाश-पुष्पों की सीता के अधर मानकर चोंचों से नोचकर फाड़ते हैं —वह इसलिए कि वे उनसे इस बात से क्रुद्ध हैं कि वे पुष्प उनकी चोंचों की निन्दा करते हैं । तो शुक-चोंच को उपमान कह सकते हैं क्या ? । ७६६

अङ्गेयु मडियुङ् गण्डा लरविन्द नितैयु मापोल्
 शैङ्गदिर् शिदरि नीलज् जैरुक्किय दैय्व वाट्कण्
 मङ्गेदत् कळुत्तै नोक्कि वळरिळ्ड् गमुहुम् वारिच्
 चङ्गमु नितैदि यायि नवैयैन्ऱु तुणिदि तक्कोय् 767

तक्कोय्-सुयोग्य; अम् कैयुम्-सुन्दर हाथों और; अट्टियुम् कण्डाल्-चरणों को देखें तो; अरविन्दम् नितैयुमा पोल्-जैसे अरविन्द याद आते हैं, वैसे ही; चैम् कतिर् चितरि-लाल किरणें बिखेरते हुए; नीलम् जैरुक्किय-नीले रंग से युक्त; दैय्वम्-दिव्य; वाट् कण् मङ्क-तलवार-सी आँखों वाली सीता के; कळुत्तै नोक्कि-ग्रीवा को देखकर; वळर् इळ कमुकुम्-ऊँचा उगनेवाले सुपारी के पेड़ और; वारि-समुद्र में उत्पन्न; चङ्कमुम्-शंख को; नितैति आयित्-(उपमेय) सोचोगे तो; नवै अन्ऱु-गलती है, ऐसा; तुणिति-निश्चय कर लो । ७६७

सुयोग्य मारुति ! सीता के सुन्दर हस्त और चरणों को देखें तो अरविन्द का स्मरण जैसे हो आता है, वैसे ही लाल कान्ति बिखेरते हुए नीले रंग वाले दिव्य तलवार-सम नेत्रों वाली सीता के कण्ठ को देखकर ऊँचे उगनेवाले गुवाक तरु और समुद्र में मिलनेवाले शंख को स्मरण करोगे तो समझ लो कि वे दोषपूर्ण हैं । ७६७

पवळमुङ् गिडैयुङ् गौव्वैप् पळनुम्बैङ् गुमुदप् पोडुम्
 तुवळ्विल विलवम् कोव मुरुक्कैन्ऱित् तौडक्कज् जालत्
 तवळमैन् उरैक्कुम् वण्णज् जिवन्दुदैन् उडुम्बु माहिन्
 कुवळैयुण् कण्णि वण्ण वायडु कुरियु मः(ह्)दै 768

कुवळै उण् कण्णि-कुवलय-सम और काजल-लगी हुई आँखों वाली सीताजी का; वण्णम् वाय् अतु-सुन्दर मुख; पवळमुम्-प्रवाल; गिडैयुम्-'किडै' (नाम की जल-लता) और; गौव्वै पळनुम्-बिम्बफल; पौ कुमत पोतुम्-ताजा कुमुद-सुमन और; तुवळ्वु इल-जिसमें सिकुड़न नहीं पड़ा हो; इलवम्-वह सेमर का फूल; कोपम्-इन्द्रगोप (कीड़े); मुरुक्कु-काटिदार पलाश के फूल; अन्ऱु इ तौडक्कम्-ये आदि; चाल तवळम्-(इसके सामने) धवल ही हैं; अन्ऱु उरैक्कुम् वण्णम्-ऐसा कहने योग्य रीति से; चिवन्तु-लाल बना; तेन् ततुम्पुम्-और शहद से भरा रहता है; आकिन्-तो; कुरियुम् अःतु-निर्देश (उपमान) भी वही है । ७६८

नीलोत्पल-निभ और अञ्जनरंजित आँखों वाली सीता का मुख (अधर) इतना लाल है कि उसके सामने प्रवाल "किडै" (खुखरी ?) नाम की लता का तना, बिम्बफल, ताजा कुमुद, नवीन सेमर का फूल, इन्द्रगोप कीड़ा आदि सभी उसके सामने श्वेत कहे जायँगे । वह मधुभरा और शोभायमान है । बल्कि उसका उपमान भी वही है । ७६८

शिवन्ददो रमुद मिल्लैत् तेनिल्लै युळ्वैत् शालुम्
 कवर्न्दपो दन्ऱि युळ्ळ नितैप्पवोर् कळिप्पु नल्हा

पवर्न्दवा णुदलि नाडन् पवळवाय्क् कुवमै पाचित्
तुवन्दपो दुवन्द वण्ण मुरैत्तपो दुरैत्त दामो 769

चिवन्तु ओर-लाल रंग का कोई; अमृतम् इल्लै-अमृत नहीं; तेन् इल्लै-शहद नहीं; उळ अँत्तालुम्-हों तो भी; कवर्न्द पोतु अँत्ति-उठाकर खाये विना; उळळम् नितैप्प-मन में सोचने मात्र से; ओर कळिप्पु-अतुल आनन्द; नल्का-नहीं दंगे; पवर्न्द-सुनिर्मित; वाळ् नुतलित्ताळ् तन्-उज्ज्वल ललाट वाली सीता के; पवळम् वाय्क्कु-प्रवाल-सम मुख (अधरों) का; उवमै पावित्तु-उपमान सोचकर; उवन्त पोतु-जब मन हुआ तब; उवन्त वण्णम्-अपनी कल्पना के अनुरूप; उरैत्त पोतु-कहा जाय तब; उरैत्ततु-वैसा सही कहा गया; आमो-हो जायेगा क्या। ७६६

लाल रंग का अमृत नहीं होता। वैसा शहद भी नहीं होता। अगर होंगे तो भी उनको उठाकर विना खाये स्मरणमात्र से वे आनन्द नहीं देते। सुरचित, प्रकाशमय ललाट वाली सीता के प्रवालाधरों का उपमान सोचकर जैसा मन की रुचता है, वैसा कहने से ठीक तरह से कहना हो जायेगा क्या ?। ७६९

मुल्लैयु मुरुन्दु मुत्तु मुरुवलैन् रुरैत्त पोदु
शील्लैयु ममुदुम् बालुन् तेनुमैन् रुरैक्कत् तोन्ऱुम्
अल्लदौन् राव दिल्लै यमुदिऱ्कु मुवमै युण्डो
वल्लैये लऱिन्दु कोडि माऱिला वारु शान्ऱोय् 770

माऱ इला आऱ-अनुपम अनेक प्रकारों से; चान्ऱोय्-श्रेष्ठ; मुरुवल-सीताजी के दाँत; मुल्लैयुम्-कुन्दकलियाँ और; मुरुन्दुम्-मोरपंख (की रीढ़ का) सफ़ेद मूल; मुत्तुम्-और मोती हैं; अँत्त उरैत्त पोतु-ऐसा (उपमा) कहने पर; चील्लैयुम्-उसके वचन को; अमुतुम्-अमृत और; पालुम्-दूध और; तेत्तुम्-शहद को; अँत्त उरैक्क- (उपमान के रूप में) कहने को; तोन्ऱुम्-मन में सूझेगा; अल्लतु- (कहने का रीतिपालन मात्र) होने के सिवा; आवतु अँत्त इल्लै-सधता कुछ नहीं; अमुत्तिऱ्कुम् उवमै उण्टो-अमृत का भी उपमान है क्या; वल्लैयेल्-सामर्थ्य हो तो; अऱिन्तु कोडि-जान लो। ७७०

अनुपम अनेक प्रकार से श्रेष्ठ ! सीता के दाँत कुन्दकलियों और मोर-पंख के सफ़ेद नोक की समानता करेंगे। तो उसकी वाणी की तुलना में अमृत, दूध और शहद को कहने का विचार उठेगा। फिर कहने के लिए कहना छोड़कर (उपमा का) कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। अमृत का भी कोई उपमान है क्या ? तुममें सामर्थ्य हो तो तुम ही दाँतों का सौन्दर्य अनुमान कर लो। ७७०

ओदियु मँळुन् दौळैक् कुमिळ्मूक् कौक्कु मँत्तऱाल्
शोदिशैय् पीन्नु मिन्नु मणियुम्बोऱ् रुळङ्गित् तोन्ऱा

एदुवु मिल्ले वल्ला रळुदुवार्क् कळुद वीण्णा
नीदियै नोक्कि नीये नित्तैदिया नैडिदु काण्वाय् 771

नैटितु काण्वाय्-दीर्घदर्शी; ओतियुम्-गिरगिट (की नाक); अळळुम्-तिल का फूल और; तौळ्ळै कुमिल्लम्-रंघ्रसहित 'कुमिल' नामक फूल; मूक्कु-सीता की नाक की; ओक्कुम् अन्नाल्-समानता करेंगे कहें तो; चोति चैय्-ज्योतिमय; पोत्तुम्-स्वर्ण; मिन्नुम्-चमकती; मणियुम् पोल्-मणि की तरह; तुळङ्कि तोन्ना-(वे) प्रभापूर्ण नहीं दिखते; एतुवुम् इल्लै-उनमें हेतु भी नहीं है; अळुदुवार् वल्लार्क्कु-चित्र खींचने में समर्थ (चितेरे) के लिए भी; अळुत ओण्णा-जिसका चित्र लिखना असम्भव है, उस; नीतियै नोक्कि-प्रकार को देखकर; नीये नित्तै-तुम ही कल्पना कर लो । ७७१

दीर्घदर्शी ! गिरगिट, तिल का फूल, रंघ्रसहित "कुमिल" नामक फूल आदि देवी की नासिका की समानता करेंगे —अगर ऐसा कहें तो वे कान्तिमय स्वर्ण और चमकनेवाली मणियों के समान शोभासहित नहीं दिखते । उनमें ऐसी शोभा का कोई हेतु भी नहीं है । इस नासिका की सुन्दरता के, जिसका चतुर चितेरा भी चित्रण नहीं कर सकता, प्रकार को तुम ही नेक रीति से सोच-समझ लो । ७७१

वळ्ळैहत् तरिहै वाम मयिर्वित्तैक् करुवि यैत्तप्
पिळ्ळैह्ळु रैत्त वौप्पैप् पेरियव ररैक्किन् पित्ताम्
वैळ्ळिवैण् डोडु शैय्द विळुत्तवम् विळैन्द वैन्ने
उळ्ळुदि युलहुक् कैल्ला मुवमैक्कु मुवमै युण्डो 772

वळ्ळै-वळ्ळै (नाम की जललता के) पत्र; कत्तरिकै-कैची (रूपी); वामम्-अच्छा; मयिर् वित्तै करुवि-बाल बनाने का औजार; अैत्त-ऐसा; पिळ्ळैह्ळु-बालकों के; उरैत्त-कथित; औप्पै-उपमान को; पेरियव-बड़े विद्वान् लोग; उरैक्किन्-कहें तो; पित्तु आम्-पागलपन होगा; वैळ्ळिवैण् तोडु-अत्यधिक श्वेत कर्णाभरण; चैय्-कृत; विळु तवम्-महान तप ने; विळैत्ततु-पैदा किया; अैन्ने उळ्ळुत्ति-ऐसा ही समझो; उलकुक्कु अैल्लाम्-सारे लोकों के; उवमैक्कुम्-उपमान का भी; उवमै उण्डो-अन्य उपमान हो सकता है क्या । ७७२

स्त्रियों के कानों को "वळ्ळै" नाम की जललता के पत्र के साथ और बाल काटनेवाली कैची के साथ लोग उपमित करते हैं । ये बालकों के कहे उपमान हैं । बुद्धिमान बड़े लोग अगर ऐसा कहें तो वह पागलपन है । श्वेत चाँदी के ताटकों ने कड़ी तपस्या की थी; वे ही सीता के कान के रूप में पैदा हो गयी हैं । सीता के कान दुनिया की सभी वस्तुओं के लिए उपमान हैं । उनके लिए और कोई उपमान हो सकता है क्या ? । ७७२

पेरियवाय्प् परवै यौव्वा पिडिदौन्ऱु नित्तैन्ऱु पेश
 उरियवा यौरव रुळ्ळत् तौडुङ्गुव वल्ल वुण्मै
 तैरियवा यिरक्का नोक्किर् रेवर्क्कुन् देव नैन्ऱक्
 करियवाय् वैळिय वाहुम् वाट्टड्ड् गण्गळम्मा 773

तेवर्क्कुम् तेवन्-देवदेव (श्रीनारायण); अँत्त-जँसा; करिय आय्-काली वनकर; वैळिय आकुम्-श्वेत भी रहनेवाली; वाळ् तट कण्कळ्-तलवार-सम विशाल आँखों को; उण्मै तैरिय-सच्चाई जानने हेतु; आयिरम् काल् नोक्किन्-सहस्र बार देखें तो; पेरिय आय्-विशाल; परवै-समुद्र भी; औव्वा-उपमान नहीं वन सकता; पिडित्तु औन्ऱु-फिर अन्य कोई; नित्तैन्ऱु पेच-सोचकर कहने योग्य; ओरवर् उळ्ळत्तु-किसी के मन में; ओट्टुङ्कुव अल्ल-समानेवाले नहीं हैं; अम्मा-मैया री । ७७३

देवाधिदेव विष्णु के समान नीले और श्वेत रंग से युक्त तलवार-सम उसकी बड़ी आँखों का सच्चा रूप देखने के इरादे से सहस्र बार देखो, तो भी वे विशाल सागर के उपमान को मान ही नहीं सकेंगी । उनकी आँखें ऐसी नहीं, जिनको कोई पूर्ण रूप से मनोगत करके अन्य उपमान द्वारा वर्णित कर सकें । ७७३

केळीक्कि नन्ऱि यौन्ऱु किळत्तित्ताल् कीळ्मैत् तामे
 कोळीक्कु मँन्नि नल्लार् कुडियौप्पक् कूरिर् इन्ऱाल्
 वाळीक्कुम् वडिक्क णाडन् पुरुवत्तुक् कुवमै वैक्किन्
 ताळीक्क वळैन्ऱु निरप् विरण्डिल्लै यनङ्ग शावम् 774

वाळ् ओक्कुम्-तलवार-सदृश; वटि कणाळ्-सुन्दर आँखों वाली; तन् पुरुवत्तुक्कु-की भौहों की; उवमे वैक्किन्-उपमा कहें तो; केळ् ओक्किन् नन्ऱि-परस्पर सम वे अपने ही समान हैं, इसके सिवा; औन्ऱु-अन्य किसी वस्तु को; किळत्तित्ताल्-उपमान कहें तो; कीळ्मैत्तु आम्-अल्प ही होगा; कोळ् ओक्कुम्-हमारी (मनोधर्म) कल्पना में समानता होगी; अँत्तिन् अल्लाल्-उसे छोड़कर; कुडि औप्प-उपमा-धर्म के अनुसार; कूरिर् इन्ऱाल्-कहा गया नहीं होगा; ताळ् ओक्क-दोनों छोर समान हैं; वळैन्ऱु निरप्-ऐसा झुके हुए जो है; इरण्डु अनङ्क चापम्-वे दो अनंगचाप; इल्लै-संसार में (प्राप्य) नहीं हैं । ७७४

तलवार के समान तीक्ष्ण नेत्रों वाली सीताजी की भौहों की उपमा रचना चाहें तो कठिन है । क्योंकि परस्पर सम वे अपने ही समान हैं । दूसरी वस्तु को लेकर उपमित करने का प्रयास नीच काम है । ऐसा करना अपने-अपने विचार के अनुरूप कथन ही सकता है, पर सचमुच उपमा का कार्य अर्थपूर्ण नहीं होगा । दोनों ओर के दण्ड सुडौल रूप से झुके रहें—ऐसे दो अनंगचाप दुनिया में नहीं हैं । (इसलिए अनंगचाप भी कहा नहीं जा सकता ।) । ७७४

नन्नाळु नळित नाणु मुहत्तितळ नुदलै नाडिप्
 पन्नाळुम् पन्ति याड्रा मदियेनुम् पण्ब दाहि
 मुन्नाळिन् मुळैवैण् डिङ्गण् मुळनाळुड् गुडैये याहि
 अँन्नाळुम् वळरा दँन्ति निरैयोक्कु मियल्बिड् रामे 775

मुन् नाळिन्—(शुक्ल पक्ष के) आरम्भ के दिनों में; मुळै—उदित; वैळ् तिङ्कळ्—श्वेत (कला-चाँद); नल् नाळ्—अच्छे दिवा में; नळितमुम्—कमल भी; नाणुम्—शरमायेगा; मुहत्तितळ्—ऐसी आनना; नुदलै—के ललाट को; नाडि—जाँच करके; पल् नाळुम् पन्ति—अनेक काल वही विचारकर; आड्रा—सह न सककर; मति अँनुम् पण्पतु आकि—(चिन्तक) (पूर्ण-) चन्द्र कहलाने की योग्यता पाकर (भी); मुळ् नाळुम् कुरैये आकि—पूर्णिमा के दिन में भी कला से हीन रहता है; अँ नाळुम् वळरातु—कभी भी पूर्ण नहीं बनता; अँन्तित्तु—तो; इरै ओक्कुम्—तो जरा भी समानता करने का; इयल्पिड् आम् ए—भाग्यवान होगा क्या । ७७५

शुक्लपक्ष का कलाचन्द्र और मध्याह्न में खिला हुआ कमल भी जिसको देखकर लज्जा से युक्त होते हैं, वैसे मुख वाली सीता के ललाट के सौन्दर्य को अनेक दिन तक चन्द्र सोचता रहा और उसे असह्य लगा । वह चन्द्र तो कहाता है, लेकिन पूर्णिमा के दिन भी सारी कलाओं से पूर्ण नहीं रहता । तो वह सीता के ललाट की कुछ-कुछ ही समता कर सकेगा । (चन्द्र को तमिळ में “मदि” कहते हैं । मदि का अर्थ सतत चिन्तन है । वह चन्द्र सीता के ललाट का हमेशा चिन्तन करता रहा— इसलिये उसका “मदि” यानी ‘चिन्तक’ नाम उपयुक्त है ।) । ७७५

वन्नैबव रिल्लै यन्ऱे वन्नत्तुणाम् वन्द पित्तनै
 अन्नैयन वँत्तिन्नु दान्द मळहुक्को रळिवुण् डाहा
 वित्तैचैयक् कुळन्ऱ वल्ल विदिशैय विळैन्द नीलम्
 पुत्तैमणि यळह मँन्ऱुम् पुट्टुमैया मुवमै पूणा 776

नाम्—हमारे; वन्नत्तुळ् वन्न पित्तनै—वन में आने के पश्चात्; वन्नैपवर इल्लै—केशशृंगार करनेवाला नहीं है; अन्ऱे—न; ताम् अन्नैयन अँत्तिनुम्—केश ऐसे रहे तो भी; तम् अळक्कुक्कु—अपनी मनोहारिता में; ओर् अळिवु उण्टाका—कुछ कभी नहीं रखते; वित्तै चैय कुळन्ऱ अल्ल—कलाकृत्य के आधार पर घुँघराले नहीं बने; विति चैय—ब्रह्मा के ऐसा सृजन करने से; विळैन्त—ऐसे बने है; नीलस् मणि पुत्तै—नीली मणि के समान (ललाट पर हिलनेवाले); अळकम्—अलक; अँन्ऱुम् पुट्टुमै आम्—नित-नवीन हैं; उवमै पूणा—किसी भी उपमान को धारण नहीं करेंगे । ७७६

हमारे वन में आने के बाद सीता के अलकों को सँवारने-सजाने वाले कोई नहीं हैं न ? ऐसी स्थिति में भी उनकी रमणीयता में कोई कमी नहीं हुई । क्योंकि उनका घुँघुरालापन कृत्रिम रूप से आया नहीं है । लेकिन ब्रह्मदेव की सृष्टि में ही वे केश ऐसे बने हैं । ऐसे नीले रत्न के

समान ललाट के ऊपर के वे अलक नित-नवीन हैं। वे किसी भी उपमान को सह नहीं सकते। ७७६

कौण्डलित् कुळवि याम्बल् कुनिशिले वळ्ळै कौरुक्
कौण्डेयौण्ड डरळ मॅन्ऱिक् केण्मैयिर् किडन्द तिङ्गण्
मण्डिल वदन मॅन्ऱु वैततनन् विदियो नीयप्
पुण्डरी हत्तै युर्रु पौळुदु पौरुन्दित् तेर्वाय् 777

कौण्डलित् कुळवि-मेघखण्ड; याम्बल्-लाल कुमुद; कुनि चिले-झुके धनुष; वळ्ळै-‘वळ्ळै’ (जल-लता) के पत्र; कौरुम् कौण्डै-मत्त (कौण्डे नाम की) मछलियाँ; ओळ् तरळम्-उज्ज्वल मोती; अँन्ऱु-ऐसे; इक् केण्मैय-इनसे उपमेय वस्तुएँ; किडन्द-जिस पर रहती है; तिङ्कळ् मण्डिलय-चन्द्रमण्डल को; वितियोन्-विधाता ने; वतनम् अँन्ऱु-वदन के नाम पर; वैततनन्-रचित कर रखा; नी-तुम; अ पुण्डरीकत्तै-उस (मुख-) कमल को; उर्रु पौळुतु-जब पास से देखोगे तब; अतु पौरुन्ति-उस (मेरे कथन) को सही लगता हुआ; तेर्वाय्-जानोगे। ७७७

ब्रह्मदेव ने ऐसे एक चन्द्रमण्डल को ही सीता के श्रीमुख के रूप में रच लिया था, जिसमें मेघखण्ड, रक्त कुमुद, वक्र धनुष, “वळ्ळै” लता, मत्त मत्स्य, कान्तिमय मुक्ताएँ आदि उपमान योग्य वस्तुएँ रहती हों। जब तुम उस कमल-मुख को पास से देखोगे तो समझ लोगे कि मैं सही वर्णन ही कर रहा हूँ। ७७७

कारितैक् कळित्तुक् कट्टिक् कळ्ळित्तो डावि यूट्टिप्
पेरिर्ळ् पिळ्म्बु तोय्तु नैऱिवुडीइप् पिऱ्ङ्गु कऱ्ऱैच्
चोर्हुळ्ऱ् रीहुदि यँन्ऱु च्चुम्मैशैय् दनैय दम्मा
नेर्मैयैप् परुमै शैय्द निऱैन्नरुड् गून्द नीत्तम् 778

नेर्मैयै-सूक्ष्मता को; परुमै चैय्त-घनीभूत जो किये गये; निऱैन्नरु-वे सुवासपूर्ण; कून्तल् नीत्तम्-केशों की राशि; कारितै-जल-भरे काले मेघ को; कळित्तु कट्टि-काटकर, वाँधकर; कळ्ळित्तो-मधु के साथ; आवि-(अगर आदि का) धुआँ; ऊट्टि-मिलाकर; पेर् इरुळ् पिळ्म्बु-घने अन्धकार-पुंज में; तोय्तु-निमग्न करके; नैऱिवु उडीई-कुंचित करके; पिऱ्ङ्गु-शोभायमान; कऱ्ऱै-घना; चोर् कुळल् तौकुत्ति-लटकनेवाले केश का जाल; अँन्ऱु-कहकर; च्चुम्मै चैय्तु अन्नैयतु-भार बनाया गया हो ऐसी है। ७७८

उसकी सुवासित केशराशि सूक्ष्म की घनीभूत वस्तु है। काले मेघ को चीरकर बाल बनाये गये और उनकी राशि वाँधी गयी। उसमें सुरा और धुआँ चढ़ाया गया। फिर उसको घने अन्धकार-पुञ्ज में सन लिया। फिर उसमें कुंचन रचित कर लटकनेवाला बनाकर केश नाम दिया गया और वह सीता का केश-भार बन गया (उसका केश वैसा ही है)। ७७८

कुळल्पडैत् तियाळैच् चैय्दु कुयिलौडु किळियुड् गूट्टि
 मळलैयुम् पिरवुन् दन्दु वडित्तहैम् मलरिन् मेलान्
 इळैपौरु मिडैयि त्राड तित्तुशौर्क् ळियैयच् चैय्दान्
 पिळैयिल दुवमै काट्टप् पेरुलिलन् पेरुङ्गी लिन्नुम् 779

कुळल् पटैत्तु-वंशी बनाकर; याळै चैय्दु-‘याळ’ बनाकर; कुयिलौडु किळियुम्
 गूट्टि-और कोयल के साथ शुक की सृष्टि करके; मळलैयुम् पिरवुम्-मधुर तुतली बोली
 और अन्य ऐसी मधुर वस्तुएँ; तन्नु-बनाकर; वडित्त-अभ्यस्त; क-हाथों वाले;
 मलरिन् मेलान्-कमल पर आसीन (ब्रह्मा ने); इळै पौरुम्-सूत्र से लड़नेवाली; इट्टियिताळ्
 तन्-कमर वाली सीता के; इन् चोर्क्क-मधुर-भाषण को; इयैय-युक्त रीति से;
 चैय्दान्-बनाया; पिळै इलत्तु-निर्दोष; उवमै काट्ट-उपमान दिखाने (बनाने);
 पेरुलिलन्-नहीं पाये; इन्नुम् पेरुम् कौल्-आगे ही बनायेगा क्या । ७७६

ब्रह्मा के हस्तों ने “वंशी” बनायी, “याळ” बनायी और कोयल
 और शुक की सृष्टि की । अस्पष्ट तुतली वाणी का भी सृजन किया ।
 इस तरह कमलासन ब्रह्मादेव के हाथ (सीता की वाणी से उपमित होने योग्य
 वस्तुओं की सृष्टि के) अभ्यस्त थे । सूत्र को भी पराजित करनेवाली
 पतली कमर से शोभित जानकी की मधुर वाणी तब जाकर बनायी । तो
 भी वह उनको निर्दोष रीति से उपमान बनने की शक्ति नहीं दे सका ।
 आगे भी उपमानयोग्य वस्तु बनायेगा क्या ? —हम नहीं जानते । ७७९

वानिन्ऱु वुलह मून्ऱुम् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द वेनुम्
 नानिन्ऱु शुवैमर्ऱु ओन्ऱो वमुदन्ऱि नल्ल दिल्ल
 मीनिन्ऱु कण्णि नाडन् मैन्मौळिक् कुवमै वेण्डिन्
 तेनौन्ऱो वमिळ्द मीन्ऱो ववैशैक्किन् वज्ज जैय्या 780

वान् निन्ऱु उलकम् मून्ऱुम्-स्वर्ग आदि स्थायी त्रिलोक; वरम्पु इन्ऱि-असीम
 रूप से; वळर्न्द एन्नुम्-फैल गये है तो भी; मीन् निन्ऱु-मछली-सम; कण्णिताळ्
 तन्-आँखों वाली सीता की; मैल् मौळिक्कु-कोमल वाणी का; उवमै वेण्डिन्-उपमान
 चाहो तो; तेन् ओन्ऱो-या तो शहद एक है; अमिळ्त्तम् ओन्ऱो-या दूध एक
 है; अवै-(पर) वे; चैक्कि-कानों को; इन्पम् चैय्या-आनन्द नहीं दे सकते;
 मर्ऱोन्ऱु अमृतो-अन्य देवामृत तो; ना निन्ऱु-जिह्वा का; चुवै अन्ऱि-स्वाद छोड़कर;
 नल्लत्तु इल्लै-अन्य गुण से युक्त नहीं है । ७८०

स्वर्ग आदि तीनों लोक असीम रीति से विस्तृत हैं । तो भी
 मीनाक्षी सीता की मृदुल वाणी के वचनों का उपमान कहना चाहें तो शहद
 एक है और दूध एक है । लेकिन वे श्रुतिमधुर नहीं हैं । और एक
 अमृत है, वह भी जीभ को मधुर लग सकता है, पर दूसरा गुण उसमें
 नहीं है । ७८०

पूवरु	मळलै	यत्नम्	पुत्तैमडप्	पिडियैन्	रिन्न्
तेवरु	मरुळत्	तक्क	शैलवित्त	वैत्तिन्नुन्	देरेन्
पावरुड्	गिळमैत्	तौन्मैप्	परुणितर्	पहरुम्	वत्ति
नावरुड्	गिळविच्	चैव्वि	नडैवरु	नडैय	णल्लोय् 781

नल्लोय्-सत्पुरुष; पू वरुम्-कमल के फूलों के साथ सम्पर्क-रखनेवाले; मळलै-मधुरभाषी; अत्तुम्-हंस; पुत्तै-सुन्दर; मटम् पिटि-वाल-हथिनी; अत्तु इत्त-आदि ऐसे; तेवरुम् मरुळ तक्क-देवो को भी आश्चर्य में डालनेवाली; चैलवित्त-चाल वाले है; वैत्तिन्नुम्-तो भी; तेरेन्-उपमान नहीं चुनूंगा; पा वरुम् किळमे-(आशु) कविता बनाने की शक्ति के अधिकारी; तौन्मै परुणितर्-सनातन और श्रेष्ठ विद्वान्; पकरुम्-जो रचना करते हैं; पत्ति-लगातार; ना वरुम् किळवि-जिह्वा से निकलनेवाली उस वाणी की; चैव्वि नडै-प्रवाह-प्रसादपूर्ण शैली की; वरुम्-समानता करनेवाली; नडैयळ्-चाल की है। ७८१

भलेमानुस, कमल पर रहनेवाले और अस्पष्ट बोली वाले हंस, सुन्दर बाल-हथिनियाँ आदि की चाल ऐसी है कि देव भी देखकर चकित हो जाते हैं। तो भी मैं उनको उपमान मानने में तृप्ति नहीं पाता। आशु कविता बनानेवाले ज्ञानवृद्ध विद्वानों की जीभ से निकलनेवाले वाक्यों की रचना-शैली की समानता करनेवाली चाल से युक्त है सीता। ७८१

अैन्निड	मुरैक्केत्	मावि	त्तिळन्दळिर्	मुदिर्	मडुंप्
पौन्निडड्	गरुहु	मैन्नात्	मणिनिड	मुवमै	पोदा
मिन्निर्	नाणि	यैङ्गुम्	वैळिप्पडा	दौळिक्कुम्	वैण्डिन्
तन्निडन्	दाने	यौक्कु	मलर्निडज्	जमळ्क्कु	मन्ने 782

माविन्-आम्र का; इळम् तळिर्-कोमल पल्लव; मुतिरुम्-(सीता के शरीर की आभा के सामने) पका दिखेगा; पौन् निडम्-स्वर्ण का रंग भी; करुक्कुम्-काला दिखेगा; अैन्नाल्-तो; मणि निडम्-रत्नों की प्रभा में; उवमै पोता-उपमान बनने का दम नहीं; मिन् निडम्-बिजली का रंग; नाणि-लजाकर; अैङ्कुम् वैळिप्पटानु-कहीं भी प्रकट न होकर; औळिक्कुम्-छिप जायगा; मलर् निडम्-कमलपुष्प का रंग; चमळ्क्कुम्-खेद करेगा; अै निडम् उरैक्केन्-कौन सा रंग बताऊँ; वेण्डिन्-कहना ही चाहिए तो; तन् निडम्-उसकी ही शोभा (का रंग); तात्तै औक्कुम्-खुद उसी से उपमेय है। ७८२

आम्रपल्लव, उसके रंग के सामने पके और फीके लगते हैं। स्वर्ण का रंग काला लगता है, तो रत्न की उपमा योग्य छवि नहीं दिखा सकती। बिजली का रंग लजाकर कहीं प्रकट नहीं होगा और छिप जायगा। कमल की छटा पछताकर पीछे हट जायगी। तो कौन सा रंग कहूँ मैं? उसका रंग उसी के रंग के समान है। ७८२

मङ्गैय रिचळै यौप्पार् मङ्गिल रैन्नुम् वण्णम्
 शङ्गैयि लुळ्ळन् दाने शान्त्तैक् कौण्डु शान्त्तैय्
 अङ्गव णिल्लै यैल्ला मळन्दरिन् दरुहु शान्दु
 तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नादकुच् चैप्पैतप् पित्तुम् जैप्पुम् 783

चान्त्तैय्-श्रेष्ठ मारुति; इचळै औप्पार्-इसकी समानता करनेवाली; मङ्ग
 मङ्कैयर्-कोई अन्य रमणियाँ; इलर्-नहीं; रैन्नुम् वण्णम्-ऐसा कहने योग्य रीति
 से; चङ्कै इल्-संशयरहित; उळ्ळम् तात्ते-अपने ही मन को; चान्त्तै अत्त कौण्डु-
 प्रमाण मानकर; अङ्कु-वहाँ; अवळ् निल्लै यैल्लाम्-उसकी स्थिति सभी; अळन्तु
 अरिन्तु-परखकर, समझकर; अरुक् चान्त्तु-समीप जाकर; तिङ्कळ्-चन्द्र-सम;
 वाळ् मुक्त्तितादकु-और उज्ज्वल मुख वाली उससे; चैप्पु-कहो; अत्त-कहकर;
 पित्तुम्-फिर भी; जैप्पुम्-श्रीराम बोले । ७८३

श्रेष्ठ गुण वाले ! इसकी समानता करनेवाली और कोई स्त्री नहीं
 है । इस प्रकार अपने अशंकित मन को प्रमाण मानकर सीताजी को ढूँढ़
 लो । वहाँ उसकी स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर, हो सके तो पास जाओ
 और चन्द्रानना से ये बातें कहो । यह कहने के बाद श्रीराम यों
 बोले । ७८३

मुत्तैनाण् मुनियौडुम् मुदियनीर् मिदिलैवाय्च्
 चैन्तिनीण् मालैयान् वेळ्विका णियशैल
 अन्तमा डुन्दुरैक् करुहुनिन् डाडनैक्
 कन्तिमा डत्तिडैक् कण्डुडुम् कळ्ळुवाय् 784

मुत्तै नाळ्-पहले किसी दिन; मुनियौडुम्-विश्वामित्र मुनि के साथ; मुतिय
 नीर्-पूर्ण-जल; मिदिलै वाय्-मिथिला में; चैन्ति-सिर पर; नीळ् मालैयान्-बड़ी
 माला धारण करनेवाले (जनक) का; वेळ्वि काणिय-यज्ञ देखने; नात्तु चैल-जब मैं
 गया तब; अन्तम् आटु-जहाँ हंस खेल रहे थे, उस; तुडैक्कु अरुक्-(कृत्रिम)
 जलाशय के पास; कन्ति माट्त्तिटै-कन्या-सौध पर; निन्त्ताळ् तत्तै-स्थित उसको;
 कण्टुम्-जो मैंने देखा; कळ्ळुवाय्-वह (समाचार) कहो । ७८४

कभी पहले मैं मुनि विश्वामित्र के साथ जलसमृद्ध मिथिला में
 मालाधारी सिर के महाराजा जनक के यज्ञ को देखने गया । तब उस
 जलाशय के पास, जिसमें हंस क्रीड़ा कर रहे थे, “कन्यासौध” पर सीता
 खड़ी थी । उसको मैंने जो देखा, वह बात उससे कहो । ७८४

वरैशैय्दाळ् विल्लिळ्त्त तवन्नमा मुनियौडुम्
 विरशिन्ना तल्लनेल् विडुवल्या नुयिरैत्ताक्
 करैशैया वेलैयिर् पेरियका दलडैरिन्
 दुरैशैय्दाळ् लः(ह्)देल्ला मुणरनी युरैशैय्वाय् 785

करै चैया वेलैयिन्-अपार समुद्र-सम; पेरिय कातलळ्-अतिगहन प्रेम करनेवाली; वरै चैय् विल् ताळ्-(मेरु) पर्वत-सम धनु का दण्ड; इरुत्तवन्-तोड़नेवाला; अ मा मुत्तियोट्टम्-उस महान (कौशिक) मुनि के साथ; विरचितान्-जो आया; अल्लत्तेल्-वह नहीं हो तो; यान् उयिरै विटुवल्-मैं अपना प्राण त्याग दूंगी; अँता-ऐसा; तैरिन्नु-समझदारी से विचारकर; उरै चैय्ताळ्-(उसने) वचन कहा; अ. तु अँलाम्-वह सब; उणर-समझाते हुए; नी-तुम; उरै चैय्वाय्-कहो । ७८५

सीता का प्रेम अपार सागर-सम विशाल है । उसने खूब सोचकर प्रण किया कि अगर पर्वत-धनु का भंजक उस दिव्य मुनि के साथ आया हुआ नहीं होगा तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी । वह समाचार समझाकर कहो । ७८५

शूलिमाल्	यानैयिन्	रुणैमरुप्	पिणैयैत्क्
केळिला	वनमुलैक्	किरिशुमन्	दिडैवदोर्
वाळिवान्	मिन्निळड्	गौडियिन्वन्	दाळैयन्
राळिया	नरशवैक्	कण्डडुम्	मरैहुवाय् 786

चूळि माल्-मुखपट्ट से अलंकृत बड़े; यानैयिन्-गज के; तुणै मरुप्पु इणै अँत-परस्पर सम दन्त-द्वय के समान; केळ् इला-पर उनसे जो उपमेय नहीं; वतम्-मनोरम; मुलै किरि-स्तनगिरियों को; चुमन्नु-ढोते हुए; इटैवतु-जो बल खाती है; ओर वान् मिन्-आकाश की एक विजली की; इळ कौटियिन्-एक लता के समान; वन्ताळै-आती हुई को; अन्ड-उस दिन; आळियात्-चक्रवर्ती (जनक) की; अरचवै-राजसभा में; कण्टतुम्-मेरा देखना भी; अरैकुवाय्-कहना । ७८६

मैंने सीता को चक्रवर्ती जनक की राजसभा में उस दिन देखा, जब वह मुखपट्टालंकृत गजराज के दन्तद्वय-सम बलिक उनसे अनुल्य स्तन-गिरियों को ढोने के कारण बल खाती हुई आकाश की अनुपम विजली की बाललता-सदृश आ रही थी । ७८६

मुन्बुना	नरिहिला	मुळिनैड्डु	गान्तिले
अँन्बिने	पोदुवान्	निनैदियो	वैळ्ळीनी
इन्वमा	यारुयिर्क्	किन्नियैया	यिनैयित्ति
तुन्बमाय्	मुडिदियो	वैन्डुडु	जौल्लुवाय् 787

ऐळै-अवोध; नी-तुम; मुन्पु-पहले; नान्-मैं; अरिक्किला-जिसकी नहीं जानता; मुळि नैडु-शूलसे, विशाल; कान्तिले-वन में; अँन् पित्ते-मेरे पीछे; पोदुवान्-आने का; निनैतियो-विचार रखती हो क्या; इन्पम् आय्-(अब तक) मुख देनेवाली रहकर; आर् उयिर्क्कु इतियै आयित्तै-प्राण-प्यारी रहीं; इति-आगे; तुन्पम् आय्-दुःख (दायी) बनकर; मुटितियो-वन चुकोगी क्या; अँन्डुत्तुम्-ऐसा मेरा कहना भी; जौल्लुवाय्-उससे कहो । ७८७

“अबोध ! जला-भुना जंगल मेरे लिए अपरिचित है। उस बड़े जंगल में मेरे पीछे आने की बात सोचती हो क्या ? अब तक तुम आनन्ददायिनी रही, प्राणप्यारी रही। आगे दुःख-कारण बन चुकोगी क्या ?” यह मैंने उससे जो कहा वह उसे बताओ। ७८७

आतपे	ररशिल्लन्	दडविशेर्	वायुत्तक्
कियात्तला	दत्तवैला	मिनियवो	वित्तियेना
मीनुला	नैडुमलर्क्	कण्णितीर्	विळिविळुन्
दूतिला	वुयिरिन्वेन्	दयर्बदु	मुरैशैवाय् 788

आत पेर् अरच्चु-तुम्हारा जो बना वह साम्राज्य; इळुन्तु-खोकर; अटवि चेर्वाय्-वन जानेवाले; इत्ति-आगे; यान् अलातत्त अलाम्-मेरे विना सभी; उन्नक्कु इत्तियवो-तुम्हारे लिए मीठे होंगे क्या; अँता-ऐसा; कौटुमै कूडि-निष्ठुरता का वचन कहकर; मीन् उलाम्-मछली-सी; नैटु मलर्-आयत कमल-सम; कण्णिन् नीर् विळ-आँखों से आँसू बहने देते हुए; विळुन्तु-नीचे गिरकर; अन् निला उयिरिन्-शरीर में न टिकनेवाली जान के समान; वेन्तु-जलकर; अयर्बतुम्-उसका छटपटाना भी; उरै चैवाय्-उससे कहो। ७८८

तब सीता ने कहा कि अपना जो हुआ, उस राज्य को खोकर जंगल जानेवाले ! आगे मुझसे रहित सभी वस्तुएँ सुखदायिनी हो रहेंगी क्या ! यह आर्तवचन कहते हुए उसने मछली के समान चंचल और आयत कमल-सम आँखों से आँसू बहाये और नीचे गिर गयी। शरीर छोड़कर जाने को उद्यत प्राणों के समान छटपटायी और दुःखतप्त होकर शिथिल हुई। यह सब बात उसे स्मरण कराओ। ७८८

मल्लन्मा	नहरदुडन्	देहुनाण्	मदितौडुम्
कल्लिन्मा	मदिन्मणिक्	कडैहडन्	दिडुदन्मुन्
अँल्लैतीर्	वरियवैड्	गानम्या	दोवैत्तच्
चौल्लित्ता	ळः(ह्)दँला	मुणरन्ती	शौल्लुवाय् 789

मल्लल् मा नकर्-सर्वसमृद्ध बड़े नगर (अयोध्या) को; तुडन्तु-त्यागकर; एकुम् नाळ्-(वन) जाने के दिन; मति तौडुम्-चन्द्रस्पर्शी; कल्लिन् मा मतिल्-पत्थरों के बड़े प्राचीरों के; मणि कटै-रत्नमय गोद्वार को; कटन्तिटुतन् मुन्-पार करने के पूर्व ही; अँल्लै तीर्वु अरिय-असीम; वैम् कात्तम्-भयंकर वन; यातो-कौन सा है; अँत-ऐसा; चौल्लिताळ्-पूछा (उसने); अःतु अँलाम्-वह सब; नी-तुम; उणर चौल्लुवाय्-समझाकर कहो। ७८९

जब हम सर्वसमृद्ध, विशाल अयोध्या नगर छोड़कर जाने लगे तब चन्द्रस्पर्शी विशाल प्रस्तरप्राचीरों के गोद्वार को पार करने से पूर्व ही उसने प्रश्न किया कि असीम भयंकर जंगल कौन सा है ? उसका वह प्रश्न करना उसे समझाकर कहो। ७८९

इनैयवा	शुरैशैया	विनिदिने	हुदियैना
वनैयुमा	मणिनन्मो	दिरमळित्	तडिन्नित्
विनैयैला	मुडिहैत्ता	विडैहौडुत्	तुदवलुम्
पुनैयुम्बार्	कळलिना	नरळौडुम्	पोयिनान् 790

इतैय आरु-इस रीति से; उरै चैया-वातें करके; इतितिन्-सुख से; एकुति
अंना-चलो कहकर; मा मणि वनैयुम्-उत्तम रत्न-जड़े; नल् मोतिरम्-श्रेष्ठ मुंदरी
को; अळित्तु-देकर; अडिन्न-विद्वान्; निन् चित्तै अँलाम्-तुम्हारे सारे काम;
मुटिक-पूरे हों; अँता-कहकर; विटै कौटुत्तु उतवलुम्-विदा देकर कृपा दिखायी तो;
पुनैयुम् बार् कळलितान्-धृत पायल वाले चरणों के श्रीराम को; अरळौडुम्-कृपा को
पुरस्सर करके; पोयितान्-(हनुमान) चला । ७६०

श्रीराम ने हनुमान से ये सारे अभिज्ञान-समाचार कहे; 'सुख से जाओ'
कहकर आशीर्वाद दिये । फिर श्रेष्ठ रत्नजटित मुंदरी उसके हाथ में धर
कर उन्होंने कहा कि विज्ञ ! तुम्हारे कार्य सिद्ध हों ! यह कहकर विदा
दी । तब हनुमान सवन्ध पायलधारी श्रीराम की आज्ञा लेकर उनकी
कृपा को पुरस्सर करके चल पड़ा । ७९०

अङ्गदक्	कुरिशिलो	डडुशिनत्	तुळवराम्
वैङ्गदत्	तलैवरुम्	विरिहड्	पडैयौडुम्
पौङ्गुविर्	इलैवरैत्	तौळुडुमुन्	पोयिनार्
शौङ्गदिरच्	चैल्वनैप्	पणिवुळ्	जैत्तनियार् 791

अङ्कतन् कुरिचिलोट्ट-कुमार अंगद के साथ; अट्ट चित्तत्तु-संहारक क्रोधी;
उळवर् आम्-वीर; वैम् कतम्-(और) भयंकर आवेगपूर्ण; तलैवरुम्-यूथप; चैम्
कतिर् चैल्वनै-लाल किरणमाली के पुत्र (सुग्रीव) के आगे; पणिवुळ्-झुके हुए;
जैत्तनियार्-सिरों वाले होकर; पौङ्कु विल् तलैवरै-अतिश्रेष्ठ धनुवीरों को; तौळु-
नमस्कृत करके; विरिक्कटल्-विशाल सागर-सम; पडैयौडुम्-सेना के साथ; मुन्
पोयितार्-आगे गये । ७६१

अंगद के साथ संहारक क्रोधशील अन्य आवेगपूर्ण भयंकर वानर वीर
लाल किरणमाली सूर्य के पुत्र को नमस्कार करके, और श्रेष्ठ धनुवीर
श्रीराम और लक्ष्मण के आगे सिर झुकाकर प्रणमन करने के बाद विशाल
सागर-सम वानर-सेना लेकर प्रस्थान कर गये । ७९१

कुडदि शैक्कण् णिडवन् कुवेरन्वाळ्, वडदि शैक्कट् चदवलि वाशवन्
इडदि शैक्कण् विन्दन् विड्डुर्, पडैयौ डुर्रुप् पडरुहैनप् पन्निनान् 792

कुट तिचैक्कण्-पश्चिम दिशा में; इटपन्-ऋषभ; कुपेरन् वाळ्-कुबेराबाद;
वट तिचैक्कण्-उत्तर दिशा में; चतवलि-शतवली और; वाचवन् इटम्-वासवी;
तिचैक्कण्-(पूर्व) दिशा में; विन्दन्-विन्द; विडल् तरु-विजयदायिनी; पट्टै
योडु उड्डु-सेना को लेकर; पटर्क-चलें; अँत-ऐसा; पन्तितान्-कहा । ७६२

“पश्चिम दिशा में ऋषभ, कुबेर-दिशा (उत्तर) में शतबली, इन्द्र-दिशा (पूरब) में विद विजयशील दो वैळ्ळम् सेना को लेकर चलें।”
—सुग्रीव ने यह आज्ञा सुनायी । ७९२

वैर्ऱि वानर वैळ्ळ मिरण्डौडुज्, जुर्ऱि योडित् तुरुवि यौरुमदि
मुर्ऱु इादमुन् मुर्ऱुदि रिर्विडैक्, कौर्ऱु वाहैयि नीरैन्नक् कूरिन्नान् 793

कौर्ऱुम् वाकैयितीर्-विजयी और ‘वाहै’ माला के धारण योग्य वीर; वैर्ऱि वानरम्-विजयशील वानर; वैळ्ळम् इरण्डुट्टन्-दो ‘वैळ्ळम्’ (संख्या) के साथ; चुर्ऱि ओटि-धूम दौड़कर; तुरुवि-खूब खोज लगाकर; और मति-एक मास के; मुर्ऱुइात मुन्-पूरा होने से पूर्व; इ इटै-यहाँ पर; मुर्ऱुतिर्-आ जाओ; अन्न कूरिन्नान्-ऐसा (सुग्रीव ने अन्य वानर वीरों से) कहा । ७९३

“विजय पाकर ‘वाहै’ की माला पहनने की क्षमता रखनेवाले वीर! तुम दो-दो ‘वैळ्ळम्’ सेना के साथ जाओ। सब स्थानों में जाओ और ढूँढ़ो। एक मास के पूरा होने से पूर्व ही यहाँ लौट आ जाओ।”
—सुग्रीव ने यह दृढ़ आज्ञा सुना दी । ७९३

13. पिलम् पुक्कु नीङ्गु पडलम् (बिल-प्रवेश व निर्गमन पटल)

पोयितार् पोयपित् पुर्ऱुनैडुन् दिशैहडो, रेयित्ता निरविहा दलनुमे यिनपौरुट्
कायित्ता रवरुमङ् गन्तना लवदिधिर्, इायित्ता रुलहिनैत् तहैनेडुन् दातैयार् 794

पोयितार्-वे सब चले गये; पोय पित्-जाने के बाद; इरवि कातलनुम्-रविपुत्र ने भी; पुर्ऱुम् नैटु तिचैकळ् तोड्-(दक्षिण से) इतर सभी लम्बी दिशाओं में; एयित्ता-आज्ञा देकर भेजा; एयित् पौरुट्टु-आज्ञा-पालन-रत; आयितार्-होकर; उलकिन्नै-भूमि को; तक्कै-रोकने में समर्थ; नैटु तातैयार्-बड़ी सेना वाले; अवरुम्-वे वानर-सूयप भी; अन्न नाळ्-उतने दिनों को; अवतिथिल्-अवधि का ध्यान करते हुए; तायितार्-भाग चले । ७९४

अंगदादि वीर, सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले गये। उनके जाने के बाद सूर्यसूनु ने अन्य दिशाओं में जानेवाले वीरों को भी विदा कर भेजा। वे भी राजाज्ञा पर सीतान्वेषण के काम में प्रवृत्त हो जाने लगे। उनके पास सारे संसार को रोक सकनेवाली बलवान सेना थी। वे निश्चित अवधि के अन्दर आने के विचार से जल्दी जाने लगे। ७९४

कुन्ऱिशैत्	तन्वैन्नक्	कुववुतोळ्	वलियिनार्
मिन्ऱिशैत्	तिडुमिडैक्	कौडियैता	डित्तरविराय्
वन्ऱिशैप्	पडरुमा	रौळियवण्	डमिळ्ळैत्
तैन्ऱिशैच्	चैन्ऱुळार्	तिरुनैडुत्	तुरैशैय्वाम् 795

कुन्ऱु इचैत्तत-पर्वत ही लगे है ऐसा; कुववु तोळितान्-पुष्ट कन्धों वाले; मिन्

तिचैत्तिटम्-विद्युत् की भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली; इटै कौटि-कमर वाली, लता-सी सीता की; नाटित् विराय्-खोजनेवाले बनकर; वल् तिचै पट्टम्-अन्य दिशाओं में जो गये; आळ् ओळिय-उनका प्रकार छोड़कर; वण् तमिळ् उटै-समृद्ध तमिळ भाषा जहाँ प्रचलित है; तैन् तिचै-उस दक्षिण दिशा में; चैन् उळार्-जो गये उनका; तिरुन्-सामर्थ्य; अटुत्तु-लेकर; उरै चैय्वाम्-बखानेंगे। ७६५

पर्वत-सम उनके कन्धे थे। - और वे भुजवली विद्युत् की भ्रमित करनेवाली कमर से भूषित पुष्पलता-सी सीता की खोज में गये। हम उनकी बात छोड़ देंगे, जो दक्षिणोत्तर दिशाओं में गये। और तमिळ-भाषी दक्षिण-दिशागामी वानर वीरों की बात कहेंगे। ७९५

शिन्दुरा	हत्तौडुन्	दिरण्मणिच्	चुडर्शेरिन्
दन्दिवा	नत्तिनिन्	इविर्दला	नरविनो
डिन्दिया	इय्दला	निरेवन्मा	मौलिपोल्
विन्देना	हत्तिन्मा	डैय्दिनार्	वैय्दिनाल् 796

चिन्तु राकत्तौटुम्-सिन्दूर कणों के साथ; तिरळ् मणि चुटर्-वर्तुल रत्नों की कान्ति; चैरिन्तु-मिश्रित हो; अन्ति वात्तत्तिन्-सन्ध्या-गगन के समान; निन्डु अविर्तलान्-शोभायमान है, इसलिए; अरविन्नोटु-सर्पों के साथ; इन्तु याळ् अय्तलान्-चन्द्र और आकाशगंगा भी है, इसलिए; इरेवन् मा मौलि पोल्-परमेश्वर के जटाजूट के समान; विन्तै नाकत्तिन्-विन्ध्यपर्वत के; माटु-पार्श्व में; वैय्तिनाल्-जल्दी; अय्तिनार्-जा पहुँचे। ७६६

वे विन्ध्यपर्वत के पास सवेग गये। विन्ध्यपर्वत शिवजी के बड़े जटाजूट के समान था। क्योंकि सिन्दूर और वर्तुल माणिक्यों की प्रभा के कारण सन्ध्यागगन के समान था। उस पर(शिवजी पर जैसे) सर्प, चन्द्र आकाश-गंगा थी। ७९६

अन्नेडुड्	गुन्डमो	डविर्मणिच्	चिहरमुम्
पीन्नेडुड्	गौडुमुडिप्	पुरैहळुम्	पुडैहळुम्
नत्नेडुन्	दाळ्वरै	नाडिनार्	नवैयिलार्
पत्नेडुड्	गालमा	मैन्तवोर्	पहलिडै 797

नवै इलार्-अनिच्छ वे; अ नैटु कुन्डमोटु-उस ऊँचे पर्वत के साथ; अविर् मणि चिकरमुम्-कान्तियुक्त रत्नों से पूर्ण शिखरों; पीन् नैटु कौटि मुटि-सुन्दर उन बड़े शिखरों पर रहनेवाली; पुरैकळुम्-गुहाओं; पुटैकळुम्-और पास के स्थानों; नल् नैटु ताळ्वरै-सुन्दर विशाल तराइयों में; ओर् पकलिटै-एक दिन; पल् नैटु कालम् आम्-अनेक दिन हों; अन्त-ऐसा; नाटितार्-खोजा। ७६७

अनिच्छ उन वीरों ने उस उन्नत विन्ध्यपर्वत पर उज्ज्वल रत्नमय शिखरों, उन सुन्दर शिखरों में पायी जानेवाली गुहाओं, पार्श्वों और

मनोरम तराइयों में एक दिन खोजा । उस एक दिन में इतना काम हो गया कि अनेक दिनों का काम हो गया हो, ऐसा लगा । ७९७

मल्लन्मा	जालमोर्	मरुवुडा	वहैयित्त्
चिल्ललो	दियैयिरुन्	दुर्देविडन्	देडुवार्
पुल्लिता	रुलहितैप्	पौदुविला	वहैयिताल्
अल्लैमा	कडल्हळे	याहुमा	रैय्दिनार् 798

मा कटल्हळे-बड़े समुद्र ही; अल्लै आकुम्-उपमान (सीमा) है; आरु-इस प्रकार; अय्यित्तार्-जो चले; मल्लल् मा जालम्-(वे) समृद्ध भूमिदेवी; ओर् मरु उडा-किंचित भी दोषयुक्त न हो; वकैयित्-इस प्रकार अवतरित; अ चिल् अल् ओति-उन स्वर्णबन्धनयुक्त केश वाली सीताजी; इरुन्त-जहाँ ठहरीं, उस; उरैविटम् ऐ-वासस्थान को; तेडुवार्-खोजते हुए; उलकित्तै-सारी पृथ्वी पर; पौतु इला वकैयिताल्-अन्यों के लिए भी सम-स्थान न हो, ऐसा; अय्यित्तार्-व्याप गये । ७९८

पृथ्वी की सीमाएँ, जो सागर हैं, उनके ही समान थे, वे वानर वीर । वे सर्वसमृद्ध भूदेवी को दोषहीन बनाने के लिए अवतरित सुन्दर शिरोभूषण-सज्जित अलका-भूषित सीतादेवी के स्थान को खोजते हुए सारे संसार में इस तरह फैले कि दूसरों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया । ७९८

विण्डुपो	यिळिवर्मे	निमिर्वर्विण्	पडर्वर्वेर्
उण्डमा	मरत्तिन्म	मलैयित्त्वा	युर्देयुतीर्
मण्डुपा	रदत्तिन्वा	ळुयिर्हळम्	मदियित्तार्
कण्डिला	दत्तवयन्	कण्डिला	दत्तहौलाम् 799

अ मत्तियित्तार्-सुमति वे; विण्डु-अलग-अलग दल बनकर; पोय् इळिवर-नीचे की ओर जाते; मेल निमिर्वार्-ऊपर उठते; विण् पटर्वर्-आकाश में उड़ते; वेर् उण्ट-जड़-द्वारा जल लेनेवाले; मा मरत्तिन्-बड़े तरुओं और; अ मलैयित् वाय्-उस पर्वत पर; उरैयुम् नीर् मण्डु-जमा होकर रहनेवाले जलाशयों से भरे; पार् अतत्तिन्-स्थलों में; वाळ्-वास करनेवाले; उयिर्-जीव; कण्डिलात्त-जिनको उन्होंने नहीं देखा हो, ऐसे हों तो; अयन् कण्डिलात्त आम्-वे, वे ही होंगे जिनको अजदेव ने नहीं बनाया होगा । ७९९

बुद्धिशाली वीर, कभी अलग-अलग दलों में जाते, कभी नीचे उतरते, कभी चढ़कर ऊपर जाते थे, कभी आकाश में उछलते —इस तरह वे गये । (जड़ों के द्वारा जल सोखनेवाले) पादपों से भरे उस पर्वत पर जलाशयों से भरे थलों पर रहनेवाले अगर कोई जीव हों जिनको उन्होंने नहीं देखा, तो वे ही होंगे जिनको ब्रह्मा ने नहीं बनाया था । (यानी उन्होंने सभी जीवों को देख लिया ।) । ७९९

एहिन्नार्	योशनै	येळीं	डेलुपार्
शेकरत्	तैन्नृशक्	कडिटु	शैल्लिन्नृशार्
मेहमा	लैयित्तोडुम्	विरवि	मेदियिन्
नाहुशेर्	नरुमदे	यारु	नण्णिनार् 800

पार् चेकरम्-पृथ्वी का शिरोभूषण-स्वरूप; तैन् तिर्चै-दक्षिणी दिशा मे; कडिटु चैल्लिन्नृशार्-तेज जानेवाले वे; एळोट्टु एल्लु-सात और सात (चौदह); योचर्त्तै-योजन; एकिन्नार्-चले; मेतियिन् नाळु-भैंसों की पड़ियों; मेकम् मालैयित्तोट्टुम्-मेघमालाओं के साथ; विरवि चेर्-जहाँ मिली रहती हैं; नरुमदै आरु-उस नर्मदा नदी पर; नण्णिन्नार्-आये । ८००

दक्षिण दिशा भूमि का शिरोभूषण है। उस दिशा में वे चौदह योजन जाकर नर्मदा नदी के तीर पर आये जहाँ छोटी आयु की भैंसें, काले भेड़ों के साथ मिश्रित रहती हैं । ८००

अन्नमा	डिडङ्गळु	ममरर्	नाडियर्
तुन्निया	डिडङ्गळुन्	दुर्क्क	मेयवर्
मुन्निया	डिडङ्गळुञ्	जुरुम्बु	मूशुदेन्
पन्निया	डिडङ्गळुम्	वरन्दु	शूर्त्तिन्नार् 801

अन्नम् आट्टु इटङ्कळुम्-हंसों के क्रीडा-स्थलो; अमरर् नाटियर्-देवलोक-वासिनियों के; तुन्ति आट्टु-मिलकर स्नान करने योग्य; इटङ्कळुम्-स्थानो; दुर्क्कम् मेयवर्-स्वर्गवासी देवों के; मुन्ति आट्टु इटङ्कळुम्-चाह के साथ आकर जहाँ संचार करते हैं, उन स्थलों; चुरुम्पु-भ्रमर; मूशु तेन्-फूलों पर मँडरानेवाली मधुमक्खियाँ; पन्ति आट्टु-भ्रमराते हुए जहाँ उड़ती रहती हैं; इटङ्कळुम्-उन स्थानों में; परन्तु-व्यापकर; शूर्त्तिन्नार्-घूमे (घूमकर देखा उन्होंने) । ८०१

हंसों के क्रीडा-स्थलों, देवांगनाओं के स्नान-घाटों, स्वर्ग-वासियों के संचार-स्थलो और उन स्थलों में जहाँ भ्रमर और मधुमक्खियाँ भनभनाते हुए उड़ती हैं —सभी स्थानों में वे ढूँढ़ते चले । ८०१

पैरलरुन्	दैरिवैयै	नाडुम्	वैर्त्त्रियार्
अरुनरुङ्	गुन्दलु	मळह	चण्डुशूळ्
निरैन्नरुन्	दामरै	मुहमु	नित्तिल
मुळवलुङ्	गाण्वरान्	मुळुडुङ्	गाण्गिलार् 802

पैरल् अरु-अप्रतिम; दैरिवैयै नाटुम्-देवी की खोजने के; वैर्त्त्रियार्-काम में लगे उन्होंने; अरुल्-वाञ्छा में; नरु कून्तलुम्-सुवासित केश; अळकम् चण्डु- (और) अलक रूपी भ्रमरों से; चूळ्-आवृत; निरै नरु-सुगन्धपूर्ण; तामरै मुकमुम्-कमल में मुख; नित्तिलम् मुळवलुम्-मोती में दाँत; काण्पर्-देखा; मुळुतुम् काण्किलार्-(उनका) सम्पूर्ण रूप नहीं देख पाये । ८०२

अप्रमेय सीताजी की खोज में लगे वे वीर सीताजी के केश को काले बालूकणों के विस्तार में, मुख को अलक-सम अलिकलित कमल के फूल में, दन्तावली को मुक्ताराशि में देख सके। पर उनका पूर्ण रूप वे कहीं देख न पाये। ८०२

शौरुमद	याक्कैयर्	तिरुक्किल्	शिन्दैयर्
तरुमद	याविवै	तळुवु	तन्दैयर्
पौरुमद	यानैयुम्	बिडियुम्	पुक्कुळल्
नरुमदै	यामैन्नु	नदियै	नीङ्गितार् 803

शौरु मतम् याक्कैयर्-युद्ध-मत्त-शरीरी; तिरुक्कु इल्-वैषम्य-रहित; चिन्तैयर्-मन वाले; तरुमम्-धर्म; तथा-दया; इवै तळुवुम् तन्मैयर्-इनसे युक्त स्वभाव वाले; पौरुमतम् यानैयुम्-झगड़ालू मत्तगज (और); पिडियुम्-हथिनियाँ; पुक्कु उळल्-जहाँ उतरकर क्रीडा करते हैं; नरुमतै आम् अँतुम्-नर्मदा संज्ञित; नतियै-नदी को; नीङ्गितार्-छोड़ (आगे) चले। ८०३

युद्धमदमत्तशरीरी, अनन्यमन, धर्म-दयावान स्वभाव वाले उन्होंने नर्मदा नदी को, जिसमें झगड़ालू गज और हथिनियाँ प्रवेशकर क्रीडा कर रहे थे, तैरकर पार किया। ८०३

तामक्कु डम्तिरै तीरुत्त शङ्गमुम्, नामक्कु डप्पैरुन् दिशैयै नल्हिय
वामक्कु डच्चुडर् मणिव यङ्गुरुम्, एमक्कु डत्तडङ् गिरियै अय्यितार् 804

ताम कूटम्-प्रभामय शिखरों से उत्पन्न; तिरै तीरुत्त चङ्कमुम्-लहर-भरे जलाशयों का जमघट; वामम् कूटम् चुटर् मणियुम्-(और) सुन्दर कान्ति-पुंज रत्नों की राशियाँ; यङ्गुरुम्-जहाँ रहती हैं; नामम् कूटु-नामी; अ प्पैरु तिचैयै-उस बड़ी दिशा का; नल्किय-रक्षक; एम कूटम्-हेमकूट; तट किरियै-(नामक) विशाल पर्वत पर; अय्यितार्-जा पहुँचे। ८०४

वे हेमकूट (सात कुलगिरियों में एक) पहुँचे, जिसके शिखरों से तरंगों से पूर्ण नदियाँ बह रही थीं; जिस पर तेजपुञ्ज मणियाँ रहती थीं और जो प्रसिद्ध उस (दक्षिण) दिशा का रक्षक था। ८०४

माडुरु गिरिहळु मरनु मरुवुम्, शूडुरु पौन्नेनप् पौलिनदु तोनुरुप्
पाडुरु शुडरीळि परप्पु हित्तरुदु, वीडुरु मुलहितुम् विळङ्गु मैय्यदु 805

माटु उरु-पार्श्वस्थित; किरिकळुम्-गिरियाँ; मरतुम्-तरु; मरुवुम्-और अन्य वस्तुएँ; चूटु पौन् अँत-तप्त स्वर्ण के समान; पौलिनदु तोनुरु-प्रभामय दिखें, ऐसा; पाटु उरु चुटर् ओळि-महान उज्ज्वल प्रकाश; परप्पुकिन्नरु-फैलाता है; वीडु उरुम् उलकितुम्-स्वर्गलोक से भी; विळङ्गु मैय्यतु-अधिक दर्शनीय रूप का है। ८०५

वह इतनी कान्ति बिखेरता था कि पास वाली गिरियाँ, तरकुल और अन्य वस्तुएँ तप्त सोने के समान कान्तिमय लगीं। स्वर्गलोक से भी वह शानदार लगा। ८०५

पडवैयुम् पल्वहै विलङ्गुम् पाडमैन्, दुर्ऋवन कनहनुण् पूळि यौट्टलान्
निर्ऋन्दु मेरुवै चैर्न्द नीरवाय्प्, पौर्ऋन्दुम् पौन्नीळि पौळियुम् पौऋपतु 806

पाटु—उसकी बगलों में; अमैन्तु—लगकर; उर्ऋवन्—रहनेवाले; पडवैयुम्—पक्षीगण; पल् वकै विलङ्गुम्—अनेक तरह के जानवर; कतकम् नुण पूळि—स्वर्ण के बारीक कणों के; औट्टलाल—लगने से; निर्ऋन्दु मेरुवै चैर्न्त—बड़े और ऊँचे मेरु पर्वतवासी हों; नीर आय्—ऐसे लगकर; पौर्ऋन्दु पौन् औळि—भारी स्वर्ण की कान्ति; पौळियुम्—बरसानेवाली; पौऋपतु—शोभा से युक्त है। ८०६

उसमें इतने बृहत् रूप से स्वर्ण अपनी कान्ति फैला रहा था कि उसमें रहनेवाले पक्षी और विविध पशु, अपने ऊपर लगे हुए स्वर्णकणों के कारण मेरुपर्वतवासी ही—सम लगते थे। ८०६

परविय कनहनुण् पराहम् पाडुर्, अरिशुडर् चैम्मणि यौट्टत् तोडिळि
अरवियु नदिहळु मलङ्गु तीयिडै, उरुहोप् पोन् पाय्वपोन् ओळुहु हिन्ऋदु 807

परविय—बिखरे रहे; कतकम् नुण् पराकम्—बारीक स्वर्णकण; पाटु—उस पर जमे रहे, अतः; अरि चूटर्—कान्तिपूर्ण; चैम् मणि—लाल पद्मरागों की; औट्टत् तोट्टु—राशि के साथ; इळि—उतरनेवाले; अरवियुम् नत्तिकळुम्—झरने और नदियाँ; अलङ्कु ती इट्टै—जलती आग में; उरुकु—पिघला; पोन्—स्वर्ण; पाय्व पोन्ऋ—बहता हो, ऐसा; ओळुक्किन्ऋतु—बहनेवाली नदियों का है वह। ८०७

सर्वत्र फैले रहे स्वर्ण—सूक्ष्म-कणों और कान्तिमय पद्मरागों के साथ सरिताएँ वह रही थीं। वे भी जलती अग्नि के मध्य बहनेवाले पिघले स्वर्ण के समान लगीं। ८०७

विज्जैयर्	पाडलुम्	विशुम्बिन्	वैळ्वळैप्,
पञ्जिन्मैल्	लडियिना	राडर्	पाणियुम्
कुञ्जर	मुळक्कमुड्	गुमुरु	पेरियिन्
मञ्जिन	मुरड्ऋलुम्	मयङ्गु	माण्बदु 808

विज्जैयर् पाटलुम्—विद्याधरों के गाने; विचुम्पित्—व्योमलोक की; वैळ्वळै—श्वेत कंकणधारिणी; पञ्चिन्—लाक्षारसरंजित (या रुई—समान); मैल् अटियितार्—मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के; आटल् पाणियुम्—नृत्य और ताल के नाद; कुञ्चरम् मुळक्कमुम्—हाथियों की चिंघाड़; गुमुरु पेरियिन्—थरनिवाली भेरियों के समान; मञ्चु इत्तम्—मेघ-समूहों के; मुरड्ऋलुम्—वज्रनाद; मयङ्कुम्—जहाँ मिश्रित रहते हैं; माण्पतु—ऐसी महिमा का है वह पर्वत। ८०८

उस पर, विद्याधरों के गाने के स्वर, स्वर्ण की श्वेतकंकणधारिणी और

रुई-सम मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के नृत्यानुयायी ताल-स्वर, हाथियों की चिंघाड़, भेरी का-सा मेघसमूहों का गर्जन —यह सब सुनाई दे रहे थे । वह ऐसी विशिष्ट स्थिति का था । ८०८

अतैयदु	नोक्किता	रमर	रञ्जुरुम्
वितैवल	तिरावण	तिरुक्कुम्	वैरुप्पुम्
नितैविन्न	रुवरन्दुयर्न्	दोडुगु	नैञ्जितर्
शित्तमिहक्	कत्तुप्पौरिः	शित्तु	शैङ्गणार् 809

अतैयदु नोक्किता-उसको देखकर; अमरर् अञ्चुरुम्-देवों को भयभीत करनेवाले; वितैवल-अत्याचारी; इरावणन्-रावण का; इरुक्कुम् वैरुप्पु-रहने का पर्वत है; अतैयदु नितैवितर्-ऐसा सोचते मन के; उवनतु-(और) संतोष करके; उयर्न्तु ओडुक्कु-उमड़ उठनेवाले; नैञ्जितर्-चित्त (उत्साह) वाले; चित्तम् मिक-कोप के बढ़ने से; कत्तुप्पौरि-अंगारे; चित्तु-बरसानेवाली; चैम् कणार्-लाल आँखों वाले (हो गये वे वानर वीर) । ८०९

उन्होंने उस हेमकूट को देखा और सोचा कि यह देवों को भी भयभीत करते हुए नृशंस कर्म करनेवाला रावण का (तिकोण) पर्वत है । उनका मन संतोष और उत्साह से भरकर उमंग में आया । साथ-साथ क्रोध के कारण उनकी आँखें कोप के अंगारे उगलती हुई लाल बन गयीं । ८०९

इम्मलै	काणुदु	मेळै	मातैयच्
चैम्मलै	नोक्कुदुञ्	शित्तु	तीदैन्
विम्मलुः	रुवहैयिन्	विळङ्गु	मुळळत्तर्
अम्मलै	येरिना	रच्च	नोङ्गिनार् 810

इम् मलै-इस पर्वत पर; एळै मातै-अबोध हरिणी-सी देवी को; काणुदुम्-देखेंगे; अ चैम्मलै-उन महानुभाव के; चित्तु तीतु-मन के दुःख को; नोक्कुदुम्-दूर कर लेंगे; अतै-ऐसा सोचकर; विम्मलु उऱु- (आशा से) भरकर; उवकैयिन् विळङ्कुम् उळळत्तर्-प्रसन्नचित्त होकर; अच्चम् नोङ्किता-भयमुक्त होकर; अ मलै एरितार्-उस पर्वत पर चढ़े । ८१०

“इस पर्वत पर हम अबोध हरिणी-सी सीताजी को ढूँढ़ेंगे । वे मिल जायेंगी और हम प्रभु श्रीराम की चिन्ता दूर कर देंगे ।” ऐसा सोचकर वे हर्ष से फूल उठे । और भय से मुक्त हुए । ८१०

इरिन्दत्त	करिहळुम्	याळि	यीट्टमुम्
विरिन्दको	ळरिहळुम्	वैरुवि	नोङ्गित्त
तिरिन्दत्त	रङ्गणुन्	दिरुवैक्	काण्गिलर्
पिरिन्दनर्	शित्तु	पिरिदौन्	शामैन् 811

करिकळुम्-हाथी और; याळि ईट्टमुम्-'याळि' (कल्पित कोई जानवर जो सिंह के समान थे)-समूह; इरिन्तत्त-तितर-वितर हो गये; विरिन्त-व्याप्त; कोळ् अरिकळुम्-घातक सिंह; वैरुवि नोङ्कित-डरकर भाग गये; अँङ्कणुम्-पर्वत पर सर्वत्र; तिरिन्तत्त-धूमे; तिरुवै-श्रीलक्ष्मी को; काण्किलर्-न देख पाकर; पिडितु ओन्नाम्-(यह नहीं) अन्य कोई स्थान है; अँत चिन्तत्त-ऐसा चिन्तन लेकर; पिरिन्तत्तर्-अलग जाने लगे । ८११

उन वानर वीरों को देखकर हाथी, 'याळि' नाम के (सिंह-समान) जानवरों के झुण्ड, घातक सिंह—सब भयभीत होकर भाग गये । वे सब पर्वत पर सर्वत्र धूमे । पर श्रीदेवी के दर्शन न पा सके । तभी उन्हें सूझा कि यह रावण का स्थान नहीं है, कोई दूसरा है । वे वहाँ से हट कर आगे चले । ८११

ऐम्बदिर्	इरट्टिहा	वदत्ति	तालहन्
रुम्बरैत्	तौडुवदौत्	तुयर्वि	तोङ्गिय
शैम्वीनर्	किरियैयोर्	पहलिर्	ट्रेडितार्
कौम्बिनैक्	कण्डिलर्	कुप्पुर्	ट्रेहिनार् 812

ऐम्पतिर् इरट्टि-पचास के डुगुने (सौ); कावतत्तिताल्-काव (कोस); अकन्ऱ-चौड़ा; उम्परै तौडुवतु ओत्तु-आकाश को स्पर्श करता-सा; उयर्विन् ओङ्किय-उन्नत; चैम् पौन्-लाल स्वर्ण-सम (सुन्दर); नल् किरियै-उस हेमकूट पर्वत पर; ओर् पकलिल्-दिन भर; तेडिनार्-खोजने पर भी; कौम्पितै-पुष्पलता (सीताजी) को; कण्डिलर्-न देख पाये; कुप्पुर्-उतरकर; एकितार्-आगे चले । ८१२

उस पर्वत का विस्तार एक सौ कोस का था । वह गगनोन्नत था । वह लाल स्वर्णमय था । उस पर दिवा भर खोजने पर भी उन्हें पुष्पलता-सी देवी नहीं मिली । फिर वे उस पर से उतरकर आगे जाने लगे । ८१२

वैळ्ळमो	रिरण्डन्	विरिन्द	शेनेयैत्
तैळ्ळुनी	रुल्लैलान्	दिरिन्दु	तेडिनीर्
अँळ्ळरु	महेन्दिरत्	तैम्मिर्	कूडुमैन्
रुळ्ळित्तार्	रुयर्नैडु	मोङ्ग	तोङ्गिनार् 813

वैळ्ळम् ओर् इरण्डु-दो 'वैळ्ळम्'; अँत विरिन्त-की संख्या में विस्तृत; चेनेयै-सेना से; नोर्-तुम; तैळ्ळम् नोर्-स्वच्छ जल से आवृत; उलकु अँलाम्-सारे लोक में; तिरिन्तु तेटि-धूमकर खोज लेने के बाद; अँळ् अरु-अनिष्ट; मकेन्तिरत्तु-महेन्द्रपर्वत पर; अँम्मिल् कूटम्-हमारे पास आ मिलो; अँन्ऱ-ऐसा; उळ्ळितार्-विचार कहकर; उयर् नैटुम् ओङ्कल्-उन्नत विशाल पर्वत से; नोङ्कितार्-(अंगदादि नायक) हटे । ८१३

तब अंगद ने दो 'वैळ्ळम्' संख्या वाली सेना से कहा कि तुम स्वच्छ जलावृत भूमि पर सर्वत्र जाकर खोजो। फिर अनिद्य महेन्द्रपर्वत पर हमारे पास आकर मिलो। फिर वे हेमकूटपर्वत को छोड़कर चले। ८१३

मारुति	मुदलिय	वयिरत्	तोळ्वयप्
पोर्वलि	वीररे	कुळुमिप्	पोहिन्शार्
नीरेन्नुम्	वैयरुमन्	नैरियि	नीङ्गिडच्
चूरियन्	वैरुवुमोर्	शुरत्तैत्	तुन्निनार् 814

मारुति मुतलिय-मारुति आदि; वयिरम् तोळ्-सुदृढ़ कन्धों वाले; वयम् पोर्-विजयदायी युद्ध में; वलि वीररे-पराक्रम दिखानेवाले वीर ही; कुळुमि पोकिन्शार्-दल बाँधकर चले; अ नैरियिन्-उस मार्ग में; नीर् अन्नुम् पयैरुम्-जल का नाम तक; नीङ्किट-नहीं रहा, इसलिए; चूरियन् वैरुवुम्-सूर्य को भी भयभीत करनेवाले; ओर् चुरत्तै-एक मरुप्रदेश को; तुन्निनार्-जा पहुँचे। ८१४

मारुति आदि वज्रस्कन्ध युद्ध-विजयी वीर ही एक दल में चले। एक मरुप्रदेश में आये, जहाँ जल का निशान तक नहीं पाया गया और उस कारण गरम किरणमाली भी वहाँ आने से डरते थे। ८१४

पुळ्ळडै याविलङ् गरिय पुल्लौडुम्, कळ्ळडै मरन्तिल कल्लुन् दीन्दुहुम्
उळ्ळिडै यावुनुण् पौडियो डोडलित्, वैळ्ळिडै यल्लदीन् डिल्लै वैञ्जुरम् 815

अ वैम् चुरम्-उस उष्ण मरुप्रदेश में; पुळ् अटैया-पक्षी नहीं आते; विलङ्कु अरिय-जानवर अदृश्य; पुल्लौडुम्-घास के साथ; कळ् अटै-शहद-भरे पुष्पों के; मरन्तु इल-तब प्राप्य नहीं; कल्लुम्-पत्थर भी; तीन्तु उकुम्-जलकर राख बन जाता; उळ् इटै यावुम्-अन्तर्गत सभी; नुण् पौडियोट्टु-चूर-चूर होकर; ओडलित्-उड़ जाते हैं, इसलिए; वैळ् इटै अल्लतु-खाली स्थान के सिवा; औन्डु इल्लै-कुछ नहीं। ८१५

उस रेगिस्तान में पक्षी नहीं आये। जानवर देखना दुर्लभ था। घास या शहद भरे-फूलों के वृक्ष नहीं दिखायी दिये। पत्थर भी जल-भुनकर राख बन गया। उसमें रहनेवाले सभी पदार्थ चूर-चूर होकर उड़ रहे थे; इसलिए वहाँ शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं था। ८१५

नन्नुल नडक्कुड वृणर्वु नैन्दरप्, पुन्नुल याक्कैहळ् पुळ्ळङ्गिप् पौङ्गुवार्
तैन्नुलत् तवनेरि नरहिङ् चिन्दिय, अन्बिल्पल् लुयिरैन् वैम्मै यैय्दित्तार् 816

नल् पुलन्-स्वस्थ इन्द्रियाँ; नडक्कुड-काँपों; उणर्वु-बुद्धि; नैन्तु अड-क्षीण होकर मिट गयी; पेरुम् पुन् पुड-प्रभाहीन, बड़े बाह्य; याक्कैहळ्-शरीर; पुळ्ळङ्कि-स्वेद से भर गये; पौङ्गुवार्-तप्तमन हुए; तैन् पुलत्तवन्-दक्षिणी दिशा के अधिदेव (यम) के; अरि नरकिल्-जलते नरक में; चिन्तिय-गिरे हुए; अन्नु

इल्-अस्थिहीन; पल् उयिर् अंत-अनेक जीवों के समान; वैम्मे अयित्तार्-
झलसे । ८१६

वहाँ पहुँचकर उनकी इन्द्रियाँ काँप गयी । चेतना खो गयी । बड़े
बाह्यशरीर स्वेदयुक्त हो गये । उनका मन तप्त हो गया । दक्षिणी दिशा
के स्वामी यम के जलते नरक में पड़े अस्थिहीन जीवों के समान वे
शरीर और मन से तप्त-विगलित हो रहे । ८१६

नीट्टिय	नावित्तर्	निलत्तिर्	रीण्डुदो
ऊट्टिय	वैम्मैया	लुन्नयुड्	गालित्तर्
काट्टिनुड्	गायन्दुदड्	गायन्	दीदलाल्
शूट्टहन्	मैल्लु	पौरियिर्	शुळ्ळित्तार् 817

नीट्टिय नावित्तर्-बाहर निकली जीभ वाले; निलत्तिल्-भूमि पर; तीण्डु
तोळ्-ज्यों-ज्यों स्पर्श करते, त्यो-त्यों; ऊट्टिय-लगनेवाली; वैम्मैयाल्-गरमी से;
उल्लैयुम् कालित्तर्-छाले-भरे पैरों वाले; काट्टिनुम्-मरुप्रदेश से भी; काय्नुतु-
जलन पाकर; तम् कायम्-अपने शरीरों के; तीतलाल्-झलसने से; चूट्ट कल्
मैल्-तप्त प्रस्तर-पात्र से; अल्लु पौरियिन्-उठनेवाले खील के समान; शुळ्ळित्तार्-
उछले । ८१७

उनकी जीभ बाहर लटकने लगी । जब कभी भूमि से उनका स्पर्श
हुआ तो नीचे से लगनेवाली गर्मी की वजह से पैरों में छाले पड़ गये ।
उनका शरीर उस मरुप्रदेश से भी अधिक तप्त हो गया तो तप्त कुण्डी में
से उछलनेवाली खीलों के समान छटपटाने लगे । ८१७

औडुङ्गला	निळलित्तैक्	काण्णि	लाडुयिर्
पिडुङ्गला	मुडलिनर्	मुडिविल्	पीळैयार्
पदङ्गडीप्	परुहिडप्	पदक्किन्	शार्पल
विदङ्गळा	नैडुम्बिल	वळियिन्	मेवित्तार् 818

औडुङ्गल् आम्-पनाह लें, ऐसी; निळलित्तै-छाँह को; काण्किल्लातु-न देखकर;
उयिर् पितुङ्गल् आम्-जान जिनसे बाहर निकलने को थी, ऐसे; उटलित्तर्-शरीर
वाले बनकर; मुटिवु इल्-असीम; पीळैयार्-वेदनापीड़ित; पतङ्कळ्-पैरों को;
ती परुकिट-आग खा लेती है, इसलिये; पतैक्किन्शार्-छटपटाते हैं; पल
वितङ्कळाल्-अनेक प्रकारों से सोचकर; नैट्टु पिलम् वळियिल्-बड़ी विल के मार्ग में;
मेवित्तार्-बड़े । ८१८

कहीं कोई छाँह नहीं दिखी जहाँ वे पनाह पा सकें । प्राण शरीर से
बाहर निकलने को हो गये । असीम पीड़ा से, अग्निभुक्त पैरों के साथ वे
तड़प उठे । उनसे बचने के विविध उपाय सोचने के बाद आखिर वे एक
विल के द्वार पर आये । ८१८

मीचर्चेल	वरिदिनि	विळियि	तल्लडु
तीचर्चेल	वीळियवुम्	तडुक्कुन्	दिण्बिल
वाय्चर्चेल	नन्ऱुन्	मन्तत्ति	नैण्णितार्
पोय्चर्चिल	वडिडुमैन्	रदिनिर्	पोयितार् 819

इति—अब; विळियिन् अल्लतु—मरना छोड़कर; मी चैलवु—आगे जाना; अरितु—असम्भव है; तिण् पिलम्—बलवान बिल के; वाय् चैलल्—द्वार से अन्दर जाना; ती—मरु की आग से युक्त; चैलवु ओळियवुम्—(मरुप्रदेश में) बढ़ने से भी; तडुक्कुम्—रोकेगी; नन्ऱु—(अतः) बिल में जाना ही अच्छा है; अँत—ऐसा; मन्तत्तिन् अँण्णितार्—मन में सोचा; पोय्—जाकर; चिल अरितुम्—कुछ जान लेंगे; अँन्ऱु—कहते हुए; अतत्तिल्—उसमें; पोयितार्—गये । ८१६

“मरने के सिवा अब आगे जाना असम्भव है । इस बड़े बिल के द्वार से अन्दर जाने से कम से कम सन्तापक मरु में जाने से बच सकेंगे । इसलिए इसमें घुस जाना ही भला है ।” यह सोचकर वे उसमें घुस गये । उनका यह भी विचार था कि अन्दर जाकर थोड़ा देखें भी । ८१९

अक्कणत्	तप्पिलत्	तह्णि	यैय्दितार्
तिक्किन्नी	डुलहुर्च्	चैरिन्द	देङ्गिरुळ्
अँक्किय	कदिरवर्च्	कञ्जि	येमुर्प्
पुक्कदे	यनैयदोर्	पुरैपुक्	कैय्दितार् 820

अ कणत्तु—उस क्षण में; अ पिलत्तु अकणि—उस बिल के अन्दरूनी स्थान पर; अँय्दितार्—जाकर; तिक्किन्नी—चारों दिशाओं के साथ; डुलकु उर्—लोकों में भी लगा रहा; चैरिन्त तेङ्कु इरुळ्—घना जमा अन्धकार; अँक्किय—ऊपर चढ़े हुए; कदिरवर्च्कु अञ्चि—सूर्यदेव से डरकर; एमुर्—रक्षा पाने के लिए; पुक्कते—इसमें घुस गया हो; अनैयतु—ऐसी एक; पुरै—गुहा में; पुक्कु—प्रवेश करके; अँय्दितार्—चले । ८२०

वे वीर जब अन्दर एक गुहा में आये, जहाँ का अँधेरा ऐसा लगा मानो सारी दिशाओं में और सारी पृथ्वी पर जमा हुआ अन्धकार आकाश में चढ़े सूर्य से डरकर अपने जीवन की सुरक्षा को उसी के अन्दर साध्य मानकर उधर आ गया हो । ८२०

अँळुहिलर्	कालेडुत्	तेहु	मैण्णिलर्
वळियुळ्	दामैन्नु	मुणर्वु	माडितार्
इळुहिय	नैय्येन्नु	मिरुट्	पिळम्बितुळ्
मुळुहिय	मैय्यरा	युयिर्प्पु	सूट्टितार् 821

अँळुहिलर्—नहीं उठते; काल् अँटत्तु—पैर रखकर; एकुम् अँण् इलर्—बढ़ने की इच्छा नहीं करते; वळि उळुतु आम्—मार्ग भी है; अँनुम् उणर्वु—यह विचार; माडितार्—बदल गया; इळुक्किय नैय्—घने जमे हुए घी के समान; इरुळ् पिळम्पितुळ्—

अँधेरे के पुंज में; मुळुक्किय-मग्न; मँय्यराय्-शरीर वाले होकर; उयिर्प्पु मुट्टितार्-
ठण्डी आहें भरने लगे । ८२१

तब वे खड़े हो गये । उनके पैर नहीं उठे । आगे डग देने को मन
नहीं हो रहा था । आगे मार्ग भी होगा—यह सोच नहीं सके । जमे हुए
घी के समान उस अन्धकार में उनके शरीर मानो मग्न हो गये । उनका
दम फूलने लगा । ८२१

निन्ऱनर् शैय्वदोर् निलैमै योर्हलर्, पौन्ऱित् रामैन्प् पौरुमु पुन्ऱियर्
वन्ऱिरन्त् मारुदि वल्लै योर्वैमै, इन्ऱिडु काक्कवैन्त् ऱिरन्ऱु कूऱितार् 822

चैय्वतु-करणीय; ओर् निलैमै-कोई निर्णय; ओर्कलर्-जान नहीं पाते;
निन्ऱित्-स्तब्ध खड़े रहे; पौन्ऱित् आम् अँत-मर गये, ऐसे; पौरुमु पुन्ऱियर्-
निराशा-भरे मन वाले होकर; वल् तिऱल् मारुति-अति बलिष्ठ मारुति; इन्ऱु-
अव; अँमै-हमें; इतु काक्क वल्लैयो-इस (दुःख) से बचा सकोगे क्या; अँतु-
कहकर; इरन्तु कूऱित्-प्रार्थना का वचन कहा (वानर वीरों ने) । ८२२

वे किंकर्तव्यमूढ़ हो खड़े रह गये । मरणावस्था को पहुँच गये हों,
ऐसा दुःखी होकर अन्य वानर वीर हनुमान से विनय-याचना करने लगे कि
हनुमान ! अब हमें इस संकट से बचा सकोगे क्या ? । ८२२

उय्वु उरुत्तुवैन्-जीवित कलंगा (बचाऊंगा); मतम् उलैयिर्-मन मत मारो;
ऐयनक् कण्त्तित्ति लहलु नीणैऱि, कैयिन्ऱि रडविवैड् गालि नेहिनात् 823

उय्वु उरुत्तुवैन्-जीवित कलंगा (बचाऊंगा); मतम् उलैयिर्-मन मत मारो;
ऊळिन्-क्रम से (एक के पीछे एक) खड़े होकर; वाल्-मेरी पूँछ को; मँय् उड-
बूढ़ रूप से; पडुत्तिर्-पकड़ लो; विटुक्किलोर्-छोड़ो मत; अँत-कहकर;
अ कण्त्तित्ति-उसी क्षण; ऐयन्-नायक; अकलुम् नीड् नैऱि-गम्य उस लम्बे मार्ग
में; कैयित्ताल् तटवि-अपने हाथ से टटोलते हुए; वैम् कालिन्-जल्दी पैदल;
एकिनान्-गया । ८२३

मारुति ने आश्वासन दिया कि बचाने का उपाय करूँगा । मन मत
मारो । एक के पीछे एक खड़े होकर मेरी पूँछ पकड़ लो । मत छोड़ो ।
जब उन्होंने उसकी पूँछ को पकड़ लिया, तब हनुमान अपने हाथ से रास्ता
टटोलते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा । ८२३

पन्निरण्	डियोशनै	पडर्न्द	मँय्यिनन्
मिन्निरण्	उन्नैयहुण्	डलङ्गळ्	विल्लिडत्
तुन्निरु	डौलैन्दिडत्	तुरुवि	येहिनान्
पौन्नैडुड्	गिरियेनप्	पौलिन्द	मेत्तियान् 824

नैट् पौन् किरि-बड़ी स्वर्णगिरि; अँत पौलिन्त-(के) समान छविपूर्ण-शरीरी;
पन्तिरण्त् योचनै-बारह योजन; पडर्न्त मँय्यित्तन्-विशाल देह का; मिन् इरण्त्

अतैय-दो बिजलियों के समान; कुण्डलङ्कळ-कुण्डलों के; विल् इट-प्रकाश फैलाने से; तुन् इरुळ-घना अन्धकार; तौलैन्तिट-मिट्टा, तब; तुरुवि एकिनान्-खोजते हुए बढ़ा । ८२४

उन्नत स्वर्ण (मेरु) पर्वत-सम शोभायमान-शरीरी हनुमान का शरीर बारह योजन का बढ़ गया । बिजली के समान उसके दो कुण्डलों ने प्रकाश छिटकाया । उस प्रकाश में घना अन्धकार छूटा । उसी प्रकाश में मार्ग ढूँढ़ते हुए वह आगे गया । ८२४

कण्डत्तर्	कडिनहर्	कहनत्	तौण्गदिर्
मण्डल	मरैन्दुरैन्	दतैय	माण्बदु
विण्डल	नाणुर्	विळङ्गु	हिन्ऱुदु
पुण्डरि	हत्तवळ	वदन्म्	बोत्ऱुदु 825

कटि नकर् कण्टत्तर्-(अन्दर जाकर) उन्होंने एक सुन्दर नगर देखा; ककत्तु-आकाश में; ओळि कतिर् मण्डलम्-प्रकाशमय किरणों का सूर्यमण्डल; मरैन्तु उरैन्तु अतैय-छिपा रहता हो, ऐसा; माण्पतु-शानदार है; विण् तलम्-स्वर्गलोक; नाण् उर्-लजावे, ऐसा; विळङ्कुकिन्ऱु-शोभता है; पुण्डरिकत्तवळ-कमला श्रीलक्ष्मी के; वतन्म् पोत्ऱु-वदन के समान है । ८२५

वहाँ वीरों ने एक श्रेष्ठ नगर को देखा । वह ऐसा शोभायमान था, मानो प्रकाश की किरणों का सूर्यमण्डल उधर आकर छिपा रह रहा हो । स्वर्ग को भी लजाते हुए वह शोभा दे रहा था । कमलनिवासिनी लक्ष्मी-देवी के श्रीवदन के समान लग रहा था । ८२५

कऱ्पहक् कावदु कमलक् काडदु, पौर्पेरुड् गोपुरप् पुरिशै पुक्कदु
अऱ्पुद ममरु मय्द लावदु, शिऱ्पमु मयन्मन्म् वरुन्दिच् चैय्ददु 826

कऱ्पकम् कावतु-कल्प-काननयुक्त है; कमलम् काटतु-कमल-वन उसमें है; पौर् पेरु कोपुरम्-स्वर्णमय गुम्बजों के साथ; पुरिचै पुक्कतु-प्राचीर बने हैं; अमरुम्-अमरगण को भी; अऱ्पुतम् अय्त्तल् आवतु-विस्मित करनेवाला; चिऱ्पमुम्-शिल्प-कार्य; मयन्-मय का; मन्म् वरुन्ति-मन को कष्ट देकर (मन लगाकर); चैय्त्तु-किया हुआ । ८२६

उसके अन्दर कल्पकानन था । कमलसर थे । स्वर्णिम मीनारों के साथ प्राचीर थे । अमर लोग भी उसको देखकर विस्मित हों —ऐसी शोभा वाला था वह । वहाँ कि शिल्पकारी मय के द्वारा परिश्रम उठाकर की गयी थी । ८२६

इन्दिर नहरमु मिणैयि लाददु, मन्दिर मणियिन्ऱि पौन्निन् मन्निथे
अन्दरत् तविऱ्शुड रङ्गिन् रायिन्नुम्, उन्दरु मिरुडुरन् दौळिर निऱ्पदु 827

इन्तिरन् नकरमुम्-इन्द्र का नगर भी; इण् इलाततु-इसका साम्य नहीं कर सकता; अन्तरत्तु-आकाश में; अविर् चूटर्-उदित सूर्य व चन्द्र; अङ्कु इन्तु-वहाँ नहीं है; आयितुम्-तो भी; मन्तिरम् मणियित्तिल्-प्रासादों में जड़ित मणि-माणिक्यों और; पौन्तिन् मन्तिये-स्वर्ण से; उन्त अरुम्-जिसका निकालना कठिन है; इळ्-उस अन्धकार को; तुरन्तु-दूर करके; ओळिर निरुपतु-प्रकाशमय रहता है। ८२७

इन्द्र की अमरावती भी उसकी समानता नहीं कर सकती थी। आकाश के प्रकाशमण्डल सूर्य और चन्द्र वहाँ नहीं थे; तो भी वह नगर अपने सौधों पर जड़ित मणियों और स्वर्ण के द्वारा दुर्निवार अन्धकार दूर करके प्रकाशमय रह रहा था। ८२७

पुविपुहळ् शैन्निपे रवयन् इळ्पुहळ्, कविहड मन्नेनक् कनह राशियुम्
शवियुडैत् तूथुमैन् शान्डु मालैयुम्, अविरिळ्क् कुप्पैयु मळवि लादडु 828

पुवि पुकळ्-लोकसंशित; चैन्ति पेर् अपयन्-कुलोत्तुंग और अभय नामधारी चोळ राजा के; तोळ् पुकळ्-मुजबल की प्रशंसा में गानेवाले; कविकळ् तम् मन्-कवियों के भवनों; अँत्त-के समान; कत्तक् राचियुम्-स्वर्णराशि; चवि उटै तूचुम्-प्रकाशमय स्वर्णम्बर और; मैल् चान्तुम्-कोमल चन्दन का लेप; मालैयुम्-मालाएँ; अविर् इळ् कुप्पैयुम्-कान्तिमय आभरणों के ढेर; अळवु इलाततु-अपार हैं वहाँ। ८२८

लोकसंशित कुलोत्तुंग और अभय नाम के चोळ राजा के प्रशंसक भाट-कवियों के घरों के समान, कनकराशि, उज्ज्वल स्वर्णवस्त्र, चन्दन, सुवासित मालाएँ, कान्तिमय आभरणों के ढेर—इनसे वह इतना भरा था कि कोई गणना नहीं हो सकती थी। ('कुलोत्तुंग' का नाम देखकर कुछ विद्वान् कम्बन् के काल का अनुमान लगाते हैं। पर कुलोत्तुंग एक ही नहीं था।)। ८२८

पयिल्हुरर्	किण्गिणिप	पदत्त	पावैयर्
इयल्पुडै	मैन्दर्त्	त्रियक्कि	लामैयाल्
तुयिलवुम्	नोक्कवुम्	तुणैय	दन्त्रिये
उयिरिला	वोविय	मैन्तिनु	मौप्पडु 829

पयिल् कुरल्-क्वणनशील; किण्किणि पतत्त-मंजीरों से युक्त पैरों वाली; पावैयर्-रमणियाँ; इयल्पुडै मैन्दर्त्-(और) श्रेष्ठ गुणों के पुरुष; अँत्तु-इनके; इयक्कु इलामैयाल्-संचार के न होने से; तुयिलवुम् नोक्कवुम्-मूँदने, खोलने के; तुणैय-दो परस्पर मिले कार्य के; अन्त्रिये-बिना ही; उयिर् इला-निर्जीव रहनेवाला; ओवियम् अँत्तिनुम्-चित्र कहो; औप्पतु-उसके योग्य है। ८२९

वहाँ क्वणनशील नूपुरचरणा स्त्रियों और सद्गुणपूर्ण पुरुषों का संचार नहीं पाया गया। इसलिए वह निर्जीव चित्र के समान था जो सो या जाग नहीं सकता है। ८२९

अमिळ्दुर	लुयिनियै	यडुत्त	वुण्डियुम्
तमिळ्निहर्	नरवमुन्	दत्तित्तण्	डेरलुम्
इमिळ्हन्तिप्	पिरक्कमुम्	पिरवु	मिन्तन
कमळ्वुर्त्त	तोन्निय	कणक्किल्	कोट्पदु 830

अमिळ्त्तु उरळ्-देवसुधा-सम; अयित्तियै अटुत्त-भात आदि; उण्डियुम्-भोजनपदार्थ; तमिळ् निकर् नरवमुम्-तमिळ्-सम मधुर मधु; तत्ति तण् तेरलुम्-विशेष शीतल सुरा; इमिळ् कत्ति पिरक्कमुम्-मधुर फलों की राशि और; इन्तत्त पिरवुम्-ऐसे अन्य पदार्थ; कमळ्वु उर-मीठी गन्ध के साथ; तोन्निय-जहाँ भरे थे; कणक्कु इल् कोट्पदु-ऐसा अपार महिमाय है । ८३०

और उसमें यह विशेषता थी कि वहाँ देवामृत-सम भोजन, तमिळ्-मधुर शहद, अनुपम शीतल मद्य, मधुर फलों की राशियाँ और ऐसी अन्य वस्तुएँ अपार रूप से प्राप्त थी । ८३०

कन्निर्नेडु	मानहर	मन्तर्देदिर्	कण्डार्
इन्तहर	मामिहलि	रावणन	द्वर्न्
इन्तिगुरै	याडित्तर्	वन्दत्तर्	वियन्तार्
पोन्तिर्नेडु	वायिलद	नूडिनिडु	पुक्कार् 831

अन्तत्तु-वैसे; कन्ति-नितनवीन; नेडु मा नकरम्-लम्बे-चौड़े नगर को; अत्तिर् कण्डार्-सामने देखा (वानरों ने); इ नकर्-यह नगर; इक्ल् इरावणत्तु-शत्रु रावण का; ऊर् आम्-नगर है; अत्तु उन्नि-ऐसा सोचकर; उरै आटित्तर्-आपस में बात करते हुए; उवन्तत्तर्-खुश हुए; वियन्तार्-विस्मित हुए; पोन्तिन् नेटुवायिल्-स्वर्णपुरी के गोद्वार; अतन् ऊटु-से; इत्ति-सुख से; पुक्कार्-घुसकर गये । ८३१

ऐसे बहुत शानदार उस नित्यजीवी नगर को उन्होंने सामने जाकर देखा । सोचा कि यह रावण का नगर है । वे आपस में उस विचार के आधार पर बात करते हुए बहुत आनन्द और विस्मय से भर गये । फिर उस विशाल स्वर्णमय नगर के गोद्वार से सुख से प्रविष्ट होकर चले । ८३१

पुक्कनह	रत्तिन्निडु	नाडित्तर्	पुहुन्तार्
मक्कळ्कडै	तेवर्तलै	वानुलहिन्	वैयत्
तौक्कवुर्	वोरुव	मोवियम	लान्मर्
इक्कुडियि	नुळ्ळवुम्	दिर्न्दिलर्	तिरिन्दार् 832

पुक्क नकरत्तु-प्रविष्ट नगर में; इन्ति-खूब; नाटित्तर् पुहुन्तार्-खोजना आरम्भ करके; तेवर् तलै-देवों से लेकर; मक्कळ् कटै-मानव तक; वान् उलकिन्-स्वर्गलोक के; वैयत्तु औक्क-और भूलोक के साथ; उरैवोर् उरुवम्-वासियों के रूप; ओवियम् अलाल्-चित्र बनकर रहे, इसके सिवा; मर्-कोई दूसरा; कुडियिन् उळ्ळवुम्-जीवन के लक्षण के साथ रहनेवाले; अत्तिर्न्तिलर्-किसी को नहीं देखा; तिरिन्तार्-घूमे । ८३२

उस नगर में प्रविष्ट होकर उन्होंने उत्साह के साथ खोजना आरम्भ किया । देवों से लेकर मनुष्य तक, देवलोक और मानवलोक में रहनेवालों के चित्र थे, पर कहीं भी जीव का निशान नहीं मिला । वे ऐसे ही धूम-धूमकर देखने लगे । ८३२

वावियुळ	पौयहैयुळ	वाशमलर्	नारुम्
कावुमुळ	काविविळि	यार्मोळिह	ळैन्नुक्
कूवुमिळ	मैन्कुयिल्हळ्	पूर्वकिळि	कोलत्
तूविमड	वन्नमुळ	तोहैशुव	डिल्लै 833

वावि उळ-वापियाँ हैं; पौय्फै उळ-तडाग हैं; वाच मलर् नारुम्-पुष्प-सुगन्ध भरे; कावुम् उळ-वाग हैं; कावि विळियार्-नीलोत्पलाक्षी; मोंळिक्ळ् अन्न- (रमणियों) की वाणी के समान; कूवुम्-कूकनेवाली; इळ मैल् कुयिल्कळुम्-छोटी कोमल कोयलें हैं; पूर्व-सारिकाएँ; किळि-शुक; कोलम् तूनि-सुन्दर परों वाले; मटम् अन्नम्-वाल-मराल; उळ-हैं; तोफै-कलापी-निभ; चुवट्टु-(सीता का) निशान; इल्लै-नहीं । ८३३

उस नगर में वापियाँ थीं; सरोवर थे । सुवासपूर्ण पुष्पों के उद्यान थे । नीलोत्पलाक्षियों के समान कूकनेवाली वाल, कोमल कोयलें, सारिकाएँ, शुक और मनोरम परों से युक्त वाल-मराल पाये गये । पर कलापी-सी सुन्दर सीता का कोई पता नहीं मिला । ८३३

आयनह	रत्तिनियल्	बुळ्ळुड	वडिन्दार्
मायैहौलै	नक्करुदि	मडुन्नितै	वुड्डार्
तीयपिल	नुटपिडवि	शैन्नुविडु	वीन्नुडो
तूयटु	तुडक्कम्मै	नैन्नुतुणि	वुड्डार् 834

आय नकरत्तिन्-उस नगर की; इयलपु-सच्ची स्थिति की; उळ उड अडिन्तार्-अन्दर रहकर जिन्होंने जान लिया, उन्होंने; मायै कौल्-माया क्या; अन्न कर्त्ति-ऐसा सोचकर; तीय पिलनुळ्-बुरे विवर में; पिडवि चैन्नु-हमारा जन्म हो गया; मडुन्नितैवुड्डार्-दूसरा विचार किया; इतु औन्नुडो-यही एक है; तूयटु तुडक्कम्-पवित्र स्वर्ग है; अन्न-ऐसा; नैन्नु तुणिवुड्डार्-मन में दृढ़ कर लिया । ८३४

वे उस नगर की यथार्थ स्थिति को भीतर से जान गये । उन्हें सन्देह हुआ कि यह कोई माया है क्या ? हमारा जन्म भयंकर पाताल में हो गया ! यह भी विचार उनके मन में उठा । फिर सोचने लगे कि क्या वही एक विचार हो सकता है; नहीं ! यह पवित्र स्वर्ग ही है । उनका यह दृढ़ विचार हो गया । ८३४

इडुन्दिल	मिडडुरिय	दैण्णियिल	मैडुम्
मडुन्दिल	मयिर्प्पिनी	डिमैप्पुळ	मयक्कम्

पिंरुन्दवर् शैयङ्कुरिय शैयदल्पिळै पिन्नाल
तिरुन्देरिव दैन्नेन विशैत्तनर् तिहैत्तार् 835

इरुन्तिलम्—(स्वर्गवासी होना कैसे) हम मरे तो नहीं; इतङ्कु—इसकी; उरियतु—
वात; अण्णि इलम्—सोची नहीं; एतुम् मरुन्तिलम्—हम किसी बात को भूले नहीं;
अयिर्प्पितोटु—संशय के साथ; इमैपु उळ—पलक का गिरना भी चल रहा है;
इन्ऱु—अब; मयक्कम् पिरुन्तवर्—भ्रमग्रस्त के; चैयङ्कु उरिय—करने योग्य काम;
चैयत्तल् पिळै—करना गलत है; अँत्तिन्—तो; तिरुम् तैरिवतु—अपनी स्थिति जानना;
अँन्—कैसा; अँत—ऐसा; इचैत्तनर्—आपस में बोलते हुए; तिकैत्तार्—भ्रान्त
हुए । ८३५

(उन्हें इस विचार पर आपत्ति लगी ।) स्वर्ग पहुँचने के लिए हम
मरे तो नहीं हैं । यहाँ आने की बात हमने सोची भी नहीं थी । बीती
बातें हम याद करते हैं—वे नहीं भूलें । मन में संकल्प-विकल्प उठते हैं
और हमारी पलके उठती-गिरती हैं । अब भ्रान्त लोगों के समान कार्य
करना गलत होगा । तो हम सच्चा हाल जानें कैसे ? यों आपस में
बोलते हुए वे चकित खड़े रहे । ८३५

शाम्बन्नव नीन्ऱुरैशैय् वानैळु शलत्ताल्
काम्बनैय तोळियै यौळित्तपडु कळ्वन्
नाम्बुह वमैत्तपीरि नन्ऱुमुडि विन्नाल्
एम्बलनि मेलैविदि यान्मुडियु मैन्नान् 836

चाम्पन् अवन्—जाम्बवान जो था उसने; ओन्ऱु—एक बात; उरै चैय्वान्—
कही; अँळु चलत्ताल्—स्वाभाविक छल से; काम्पु अतैय—बाल-बाँस के समान;
तोळियै—कन्धों वाली सीता को; ओळित्त—जिसने छिपाकर रखा; पटु कळ्वन्—बड़े
चोर (रावण) का; नाम् पुक अमैत्त—हमारे प्रवेश के लिए रचित; पीरि—यन्त्रजाल;
नन्ऱु—अच्छा है; मुटिवु इन्ऱु—इसका निस्तार नहीं; एम्पल्—हमारा सन्तोष;
इत्ति—अब; मेलै वितियाल्—पूर्व कर्म के फल-स्वरूप; मुटियुम्—दूर हो जायगा;
अँन्नान्—कहा (जाम्बवान ने) । ८३६

तब जाम्बवान ने हताश होकर एक बात कही । हमें फँसाकर कष्ट
देने के विचार से पक्के चोर रावण का, जिसने छल से वंशतरु-सम कन्धों वाली
सीता को हर ले जाकर छिपा रखा है, बनाया हुआ यह फंदा भी बहुत
भला है ! इसका कोई अन्त नहीं दिखता । हमारा सन्तोष अब प्रारब्ध से
दूर जायगा । ८३६

इन्ऱुपिल नीदिडैयि तेररि दैनिऱुपार्
तिन्ऱुशह रर्क्कदिह माहिननि शैरुम्
अन्ऱुदैनिन् वज्जनै यरक्करं यडङ्गक्
कौन्ऱैळु मज्जलैन् मारुदि त्कीदितान् 837

मारुति-मारुति; इन्ऱु-अव; इट्टैयिन्-मध्यस्थित; पिलन् ईतु-इस विल से; एरु अरितु-ऊपर चढ़कर जाना दुस्तर है; अँतिन्-तो; चकरर्कु-सगर-पुत्रों से; नत्ति अतिकम् आकि-बढ़कर अतिबली बनकर; पार् तिन्ऱु-भूमि को चीरकर; चेऱुम्-पहुँच जायेंगे; अतु अन्ऱु अँतिन्-वह नहीं (हो सका) तो; वञ्चने अरक्कर-बंचक राक्षसों को; अट्टुक् कौन्ऱु-पूर्ण रूप से मारकर; अँळुतुम्-उठ चलेंगे; अञ्चल्-डरो मत; अँन-ऐसा; कौतित्तान्-(मारुति ने) तप्त होकर कहा । ८३७

तव मारुति ने वीर वचन कहे । इस विल से साधारण रूप से, ऊपर पहुँचना दुस्साध्य है, तो हम सगरपुत्रों से भी अधिक बलवान होकर भूमि को चीरते हुए सुख से बाहर चले जायेंगे । अगर वह सम्भव नहीं तो वचक राक्षसों को समूल नष्ट करके छोड़ेंगे । मत डरो । हनुमान का मन कोपाक्रान्त था । ८३७

मऱ्ऱवर्	मऱ्ऱट्टु	मन्नक्कौळ	वलित्तार्
उऱ्ऱत्तर्	पुरत्तिडैयव्	वौण्णुडरि	नुळ्ळोर्
नऱ्ऱव	मनैत्तुमु	नण्णियौळि	पैऱ्ऱ
कऱ्ऱैविरि	पौऱ्चडैयि	नाळैयैदिर्	कण्डार् 838

मऱ्ऱवर्म्-(अंगदादि) अन्य वीरों ने; अतु मत्तम् कौळ-उस वचन के मन मे (ठीक) लगने से; वलित्तार्-(वैसा ही) संकल्प करके; पुरत्तु इट्टै-नगर-मध्य; उऱ्ऱत्तर्-जाकर; अ औण् चुटैरितुळ्-अतिप्रकाशमय उस नगर मे; नल् तवम् अतैत्तुम्-श्रेष्ठ तप सारा; ओर् उर नण्णि-एक (स्त्री-) रूप लेकर; औळि पैऱ्ऱ-प्रमाशालिनी जो रहा; कऱ्ऱै विरि-उलझे केशो की; पौत् चटैयित्ताळै-स्वर्णमय जटा वाली (स्वयंप्रभा) की; अँतिर् कण्डार्-सामने देखा (उन्होंने) । ८३८

यह सुनकर अंगदादि अन्य वीरों में ऐसा ही कोप उदित हुआ । उन्होंने भी वही संकल्प किया । फिर वे नगर के अन्दर गये । उस प्रकाशमय नगर के मध्य उन्होंने तपस्विनी स्वयंप्रभा को देखा । वह तपस्या की मूर्ति बनी थी । उसकी जटाजूट सुन्दर और बड़ी थी । ८३८

मरुङ्गलश	वऱ्क्कलै	वरिन्दुवरि	वाळम्
पौरुङ्गलश	मौक्कुमुलै	माशुपुडै	पूशिप्
पैरुङ्गलै	मदित्तिरु	मुहत्तळ्पिऱुळ्	शैङ्गेळ्
करुङ्गयल्	कळिऱ्ऱिहळ्ऱ्हण्	मूक्कुनुदि	काण 839

पैरु कलै मत्ति-महिमामय सोलह कलापूर्णचन्द्र-सम; तिरु मुक्कत्तळ्-सुन्दर-मुखी; मरुङ्कु अलच-कमर को दुःख देते हुए; वऱ्क्कलै वरिन्दु-वल्कल बाँध; वरि वाळम् पौरुम्-रेखायुक्त चक्रवाक पक्षी के समान और; कलचम् औक्कुम्-कलश-सम; मुलै पुटै-स्तनों पर; माच् पूचि-धूल लगने देते हुए; पिऱुळ्-चंचल; चैम् केळ्-लाल रंग की; करु कयल्कळिन्-काली मछलियों के समान; तिकळ्-शोभित; कण्-आँखों; मूक्कु नुत्ति काण-नासिकाग्र को देखती रही; वैसा । ८३९

उसका श्रीमुख सोलहों कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान था । उसने कमर को दुःख देते हुए बल्कल बाँधा था । उसके रेखायुक्त, चक्रवाक और स्वर्ण-कलश के समान स्तनों पर गर्द जमी थी । चंचल और लालिमा और कालिमा के साथ शोभायमान 'कैण्डै' मछलियों के समान उसकी आँखें नासिकाग्र पर लगी हुई थीं । ८३९

तेरन्नैय	बल्हुल्शैरि	तिण्गदलि	शैप्पुम्
ऊरुविन्नो	डौडुङ्गु	वौडुक्कियु	वौल्हुम्
नेरिडै	शलिप्प	निरुत्तिनिमिर्	कौङ्गैप्
पारमु	ळौडुक्कु	वुयिर्प्पिडै	परिप्प 840

तेर् अन्नैय अल्कुल्-रथ-सम कटिप्रदेश को; चैरि-पुष्ट; तिण् कतलि चैप्पुम्-प्रवृद्ध कदली-सम; ऊरुविन्नो-ऊरुओं के साथ; औडुङ्गु औडुक्कि-लगाकर दबाये हुए; उयिर्प्पु इटै परिप्प-श्वास को रोकने से; उ उल्कुम्-खूब चलित होनेवाली; नेर् इटै चलिप्पु-पतली कमर का हिलना; अ निरुत्ति-एक दम रोककर; निमिर् कौङ्कै पारम्-उन्नत स्तन-भार को; उळ् औडुक्कु-दबकर रहने देते हुए । ८४०

रथ-सदृश भगप्रदेश को उसने परस्पर सम रम्भोरुओ के मध्य दबाकर रख लिया था । प्राणायामसाधना से उसकी चंचल कमर भी स्थिर रही । उन्नत स्तनभार भी उस योगमुद्रा के अन्दर छिपे हुए थे । ८४०

तामरै	मलर्क्कुवमै	शाल्वुरु	तळिर्क्कैप्
पूमरुवु	पौर्चैरि	कुडुङ्गौडु	पौरुन्दक्
काममुद	लुडुपहै	काडुळ	वाशै
नाममडि	यप्पुलनु	नल्लरिवु	पुल्ह 841

तामरै मलर्क्कु-कमल-फूल का; उवमै-उपमान बनने; चाल्पु उरु-योग्य; तळिर् कौ-पल्लवहस्त; पू मरुवु-सुन्दरतायुक्त; पौन्-स्वर्णवर्ण; चैरि कुडुङ्गौडु-सटे हुए ऊरुद्वय से; पौरुन्त-लगाए; कामम् मुतल्-कामादि; उडु पकै-अंतःशत्रु; काल् तळर्-मिटकर; आचै नामम् मटिय-राग का नाम तक नाश करके; पुलत्तम्-इन्द्रियों को भी; नल् अरिवु पुल्क-श्रेष्ठ बुद्धि के वश में रखते हुए । ८४१

कमल के फूल के उपमान बन सकनेवाले पल्लव-हस्त सुन्दर, स्वर्णिम और परस्पर सम ऊरुओं पर लगे थे । कामादि अन्तःशत्रु नष्ट हो गये थे । राग का निशान भी न रहा । उनकी इन्द्रियाँ भी अच्छे मार्गगामिनी बनी थीं । ८४१

नैरिन्दुनिमिर्	कडुन्नै	योदिनैडु	नीलम्
शैरिन्दुशडै	युडुडु	तलत्तिनैरि	शैल्प

परिन्दुविनै	परुडु	मनप्पेरिय	पाशम्
पिरिन्दुपैय	रक्करुणै	कण्वळि	पिडुङ्ग 842

नैरिन्दु-कुंचित होकर; निमिरु-उठे हुए; कडु-जटाओं (राशियों) में; निरु-भरे; नैटु नीलम् ओति-लम्बे काले केश; चैरिन्दु चट्ट उडु-उलझी हुई जटाओं में परिवर्तित रहे; तलत्तिन् नैरि चैल्ल-उनको भूमि पर लोटने देते हुए; विनै परिन्दु-कर्मबन्धन छूटकर; परुडु अडु-मिट गया; मतम्-मन का; पेरिय पाचम्-बलवान पाश; पिरिन्दु पेर-छूटकर अलग हो जाय, ऐसा; करुणै-करुणा; कण्वळि-आंखों द्वारा; पिडुङ्ग-प्रकट करते हुए । ८४२

घुंघराले, लम्बे केशजाल जटा बनकर लटक रहे थे और भूमि पर लोट रहे थे । पूर्वकर्म-फल उससे छूट गये थे । मन पाशों से मुक्त था । उनकी दृष्टि में करुणा व्यक्त हो रही थी । ८४२

इरुन्दन	ळिरुन्दवळै	यैय्दिन	रिरुञ्जा
अरुन्ददि	यैन्तुतहैय	शौदैयव	ळाहप्
परिन्दनर्	पदैत्तनर्	पणित्तुडु	पण्विल्
तैरिन्दुणर्दि	मडुडिवळ्हाँ	रेवियेन	लोडुम् 843

इरुन्दन-रहीं; इरुन्दवळै-ऐसा जो रहों, उनके; यैय्दिन-पास पहुँचकर; इरुञ्जा-नमस्कार करके; अरुन्दति अत तर्क्य-अरुन्धती-सम सीता; अवळ आक-वही है ऐसा; परिन्दनर्-सोचकर (मन में) आदर किया; पदैत्तनर्-उद्विग्न होकर; इवळ तेवि कौल्-यही देवी सीता हैं क्या; पणित्तु कुडि-श्रीराम निर्दिष्ट लक्षणों की कसौटी में; पण्विल् तैरिन्दु-कसकर परखो और; उणर्ति-तमझो; अँनलोडुम्-कहने पर । ८४३

इस साज के साथ वह योगरत थी । वे वानर उसके पास गये और नमस्कार कर उठे । उसको सीता ही समझकर वे स्नेहाद्रि होकर उत्तेजित हुए । उन्होंने हनुमान से पूछा कि क्या यही देवी सीता है; श्रीराम ने उनके लक्षण तुमसे जो बताये हैं, उनके आधार पर परखकर कहो ! तब । ८४३

अँक्कुडियो	डैक्कुण	मैडुत्तिव	णिशैक्केन्
इक्कुडि	युडैक्कीडि	यिरामन्मनै	याळो
अक्कुवड	मुत्तमणि	यारमदन्	नेरनिन्
रौक्कुमैनि	लौक्कुमैन	मारुदि	युरैततान् 844

मारुति-मारुति; अँ कुडियोडु-किस अंगलक्षण के साथ; अँ कुणम्-कौन सा गुण; इवण् अँडुत्तु-यहाँ लेकर; इचैक्केन्-(इसके पास है) कहूँ; इ कुडि उटै कौडि-इन लक्षणों की यह लता; इरामन् मत्तैयाळो-श्रीराम की पत्नी होगी क्या; अक्कु वटम्-अस्थिमाला; मुत्तम् मणि आरम् अतन्-मुक्ता व मणिमाला की; नेर निन् अँक्कुम्-समकक्ष बनकर समानता कर सकेगी; अँनिन्-तो; अँक्कुम्-(यह भी) समानता करेगी; अँत-ऐसा; उरैततान्-बोला । ८४४

मारुति ने उत्तर दिया कि कौन से लक्षण कहूँ, जो इसके पास हैं ? ऐसे अंगों वाली लता यह श्रीरामकी देवी हो सकती है क्या ? अगर कहीं अस्थिमाला मुक्ताहार या रत्नहार की समानता कर सके तो यह सीताजी की समानता कर सकेगी । ८४४

अन्तर्पोलु	दिन्तगणव	णङ्गुमडि	वुड्डाळ
मुन्तनैय	रल्लनैडि	मुन्दितरह	ळन्तन्त
तुन्तरिय	पोन्तहरि	यिन्तुडैवि	रल्लीर्
अन्तवर	वियावरुरै	शैय्मन्	विशैत्ताळ 845

अन्तर्पोलुतिन् कण्—उसी समय; अ अणङ्कुम्—वह स्वयंप्रभा; अडिबुड्डाळ—समाधि से जागी; मुन्—अपने सामने; अन्तैयर्—वे; अल्ल नैडि—अनुचित रीति से; मुन्तितर्कळ—आये है; अन्त—ऐसा सोचकर; तुन्त अरिय—अगम; पोन् नकरियिन्—इस स्वर्णनगरी में; उरैविर् अल्लीर्—वास करनेवाले नहीं हो; वरवु अन्त—आना कैसे; यावर्—कौन हो; उरै चैय्म्—उत्तर कहो; अन्त—ऐसा; इचैत्ताळ—प्रश्न किया । ८४५

तभी वह स्त्री भी समाधि से जागी । अपने सामने उनको देखकर उसने समझ लिया कि ये अनुचित मार्ग से इधर आए हुए हैं । उसने पूछा कि तुम अगम इस स्वर्णपुरी के वासी नहीं लगते हो ! फिर इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम कौन हो ? उत्तर दो । ८४५

वेदतै	यरक्करोरु	मायैविळै	वित्तार्
शोदैयै	योळित्तन्तर्	मडैत्तपुरै	तेरवुड्ड
रेदमि	लडत्तुडै	निरुत्तिय	विरामन्
तूदरुल	हिरुडिरिदु	मैन्तुमुदै	शौन्तान् 846

वेदतै अरक्कर्—(संसार को) पीड़ा देनेवाले राक्षसों ने; ओरु मायै—एक माया-कार्य; विळैवित्तार्—किया; चोतैयै ओळित्तन्तर्—सीतादेवी को छिपा दिया; एतम् इल्—अनिन्द्य; अडम् तुडै—धर्ममार्ग; निरुत्तिय—जिन्होंने स्थिर किया; इरामन् तूतर्—उन श्रीराम के दूत (हम); मडैत्त पुरै—सीताजी को जहाँ छिपा रखा होगा, उन स्थानों का; तेरवुड्ड—अन्वेषण करते हुए; उलकिल् तिरितुम्—संसार में घूमते हैं; अन्तुम् उरै—यह वचन; शौन्तान्—(हनुमान ने) कहा । ८४६

हनुमान ने उत्तर दिया । आततायी राक्षसों ने एक माया रची और सीताजी को हर ले जाकर कहीं छिपा रखा है । निर्दोष धर्म के संस्थापक श्रीराम के दूत हैं हम । सीताजी के छिपे हुए स्थान की खोज में हम संसार में घूम रहे हैं । ८४६

अन्तुलु	मिरुन्दव	ळन्तदन	ळिरडगिक्
कुन्तनैय	दायदोरु	पेरुवहै	कोण्डाळ

नन्नुवर
निन्ऱन

वाहनड
णैडुङ्गणिणै

नम्बुरिव
नीर्हलुळु

लैन्ना
नीराळ् 847

अँन्ऱलुम्-कहते ही; इरुन्तवळ्-जो बैठी हुई थी; अँळुन्तनळ्-वह स्वयंप्रभा उठी; इरुळ्कि-आर्द्र होकर; कुन्ऱु अर्त्तयतु आयतु-पर्वत-सम; और पेर्-उतना अधिक; उवकै-आनन्द; कौण्टाळ्-अनुभव किया; वरवु नन्ऱु आक-आगमन शुभ हो; नत्तम् पुरिवल्-आनन्द-नृत्य करूंगी; अँन्ना-कहकर; नैटु कण् इर्णै-आयत अक्षद्वय से; नीर् कलुळुम् नीराळ्-अश्रु बहानेवाली होकर; निन्ऱनळ्-खड़ी रही । ८४७

यह सुनते ही स्वयंप्रभा, जो बैठी थी, उठ खड़ी हुई । उन पर स्नेह करके 'पर्वत-जितने' आनन्द का अनुभव करने लगी । "तुम्हारा आगमन शुभ हो । मैं नाचूंगी !" उसने कहा और वह अपनी दोनों आयत आँखों से आनन्दाश्रु बहाती हुई ठक खड़ी रही । ८४७

अँव्वुळै
चैव्वुळै
अव्वुळै
वैव्वुळैविल्

यिरुन्दन
नैडुङ्गणवळ्
निहळ्न्ददत्तै
शिन्दनैडु

निरामत्तैन
शैप्पिडुद
यादियिनी
मारुदि

याणर्च्
लोडुम्
डन्दम्
विरित्तात् 848

इरामन्-श्रीराम; अँ उळै-कहाँ; इरुन्तत्तन्-रहे; अँत्त-ऐसा; याणर् चैव्व उळै-विचित्र सुन्दर मृग की-सी; नैटु कण् अवळ्-आयत आँखों वाली, उसके; चैप्पिटुतलोडुम्-पूछते ही; वै विळैवु इल्-तापक राग रूपी दोपरहित; चिन्तै-मन के; नैटु मारुति-महिमावान मारुति ने; अ उळै-उस स्थान पर; निकळ्न्ततनै-जो हुआ वह; आतिथितोडु-आदि से लेकर; अन्तम्-अन्त तक; विरित्तात्-विस्तार के साथ कहा । ८४८

जवान और सुन्दर मृग की-सी आँखों वाली स्वयंप्रभा ने पूछा कि श्रीराम रहे कहाँ ? तब हानिकारक राग-रहित मन वाले महिमामय हनुमान ने श्रीराम का चरित्र आद्योपान्त वर्णन किया । ८४८

केट्टवळु
काट्टियदु
आट्टियमिळ्
डूट्टिमन

मैन्नुडैय
वीडैत्त
दत्तन्शुवै
नुळ्ळुळिर

केडिरव
विरुम्पिनन्ति
यिन्ऱडिशि
विन्ऱुरै

मिन्ने
कानीर्
लन्बो
युरैत्ताळ् 849

केट्टु-सुनकर; अवळुम्-उसने भी; मैन्नुडैय केट्टु इल् तवम्-मेरे अनिन्द्य तप ने; इन्ते-आज ही; वीट्टु काट्टियतु-(शाप-) मुक्ति दिलायी; अँत्त-कहकर; विरुम्पि-उन वीरों से स्नेह दिखाकर; कान्ऱु नीर्-सुगन्धमिश्रित जल से; नत्ति आट्टि-खूब स्नान करवाकर; अमिळ्ऱु अन्त चूवै-अमृत-सम स्वादपूर्ण; इन् अट्टिचिल्-मधुर भोजन; अन्पोट्टु अट्टि-प्यार के साथ खिलाकर; मत्तन् उळ् कुळिर-उनके मन को आन्तरिक रूप से शीतलता (सुख) प्रदान करते हुए; इन् उरै-मधुर वचन; उरैत्ताळ्-कहे । ८४९

यह श्रवण करके स्वयंप्रभा ने कहा कि मेरे निर्दोष तप ने आज मुझे शापमुक्ति दिला दी है ! उसे उन पर प्रेम उमड़ आया और उसने उनका सुगन्धयुक्त जल से स्नान करवाकर देवामृत-सम स्वादयुक्त भोजन खिलाया । उसने उनके मन को खुश करनेवाले मधुरवचन से अभिनन्दन किया । ८४९

मारुदियु	मरुवण	मलरुचरण	वणङ्गा
यारिनह	रुक्किरेवर	यादुनि	तियरेप्
पारुपुहळ	तवत्तिने	पणित्तरुळ	हेन्नान्
शोरुहळु	मरुवनी	डुडुपडि	ज्ञान्ताळ 850

मारुतियुम्—मारुति ने भी; अवळ मलरु चरण वणङ्का—उसके कमल-चरण पर नमस्कार करके; यार्—कौन; इ नकरुक्कु—इस नगर के; इरेवर—राजा हैं; निन् इयल् पेर्—आपका शुभनाम; यातु—क्या है; पार् पुहळ—संसार-प्रशंसित; तवत्तिने तपस्विनी; पणित्तु अरुळुक—कहने की कृपा करें; हेन्नान्—पूछा; चोर् कुळलुम्—उसने भी, जिसकी जटा भूमि पर लोटती थी; अवनीट्टु—उस (हनुमान) से; उड्ड पटि—जैसा हुआ वैसा; चोन्ताळ्—बखाना । ८५०

मारुति ने उसके कमल-चरणों पर झुककर नमस्कार किया और यह जानना चाहा कि इस नगर के पति कौन हैं ? आपका नाम क्या है ? लोकशंसित तपस्विनी ! कहिए । तब स्वयंप्रभा ने, जिसका केश भूमि पर लोट रहा था, अपना चरित्र यथावत् कहा । ८५०

नन्मुह	नुनित्तनेरि	नूरुवर	नीय्दा
मेन्मुह	निमिरन्दुवैयिल्	कालीडु	विळुङ्गा
मान्मुह	नलत्तवन्	मयन्शैय्द	तवत्ताल्
नान्मुह	नळित्तुळदिम्	मानहर	नल्लोय् 851

नल्लोय्—साधु; मान् मुकम्—मृग-मुख; नलत्तवन्—श्रेष्ठ; मयन्—मय ने; नल् मुकम्—योग-शास्त्र में; नुनित्तु—सूक्ष्म रूप से कथित; नेरि नूरु वर—सौ-सौ प्रकारों से; नीय्दु आ—अनायास; मुकम् मेल् निमिरत्तु—मुख ऊपर करके; वैयिल् कालीडु विळुङ्का—धूप और हवा का अशन करते हुए; चैय्त्—जो (तपस्या) की; तवत्ताल्—उस तपस्या से; इ मा नकरम्—यह बड़ा नगर; नान् मुकन् अळित्तुळु—चतुर्मुख का दिया हुआ है । ८५१

साधु ! मृगमुख मय ने योगशास्त्रविहित सूक्ष्म प्रकारों के अनुसार अनायास मुख ऊपर करके धूप और पवन का ही अशन करते हुए कठोर तपस्या की । तब चतुर्मुख से तपस्या के फलस्वरूप यह नगर उसे प्रदान किया गया । ८५१

अन्तदिदु	तानव	नरम्बैयरु	ळाङ्गोर्
नन्नुदलि	ताण्मुले	नयन्दनत्त	नल्लाळ

अँनूयिर	नाळवळे	यानव	निरप्पप्
पौत्तुलहि	निन्ऱिडु	पिलत्तिडै	पुणरत्तेन् 852

इतु अन्ततु-यह नगर ऐसा है; तातवन्-दानव (मय) ने; अरम्पयर्ळ-अप्सराओं में; आङ्कु ओर्-वहाँ एक; नल् नुतलिनाळ्-सुन्दर भाल वाली (अप्सरा) के; मुलै नयन्तन्-स्तन-(सुख) भोग चाहा; अ नल्लाळ्-वह सुन्दरी; अँन् उयिर् अत्ताळ्-मेरी प्राण-समाना है; अवन् इरप्प-उस (मय) के प्रार्थना करने पर; यान् मैने; अवळे-उसको; पौन् उलकिन् निन्ऱु-स्वर्गलोक से; इतु पिलत्तिडै-इस विल में; पुणरत्तेन्-पहुँचाया । ८५२

यह नगर ऐसा बना । उस दानव ने अप्सराओं में एक सुन्दर ललाट वाली के स्तनों (भोग) की इच्छा की । वह अतिसुन्दरी मेरी सहेली थी । उस दानव ने मेरी सहायता की याचना की और मैंने उस अप्सरा को स्वर्गलोक से यहाँ इस विल में पहुँचाया । ८५२

पुणरन्दवळ्	मन्नवनु	मन्ऱिल्विळै	पोहत्
तुणरन्दिलर्	नैडुम्बहलिम्	मानहु	रुँन्दार्
कणङ्गुळैयि	नाळोडुयर्	कादलौर	वाडुऱ्
ऱिणङ्गिवरु	पाशमुडै	येनुड	तिरुन्देन् 853

अवळुम् अन्तवनुम्-वह (हेमा नामक अप्सरा) और मय; पुणरन्तु-मिले; अन्ऱिल् विळै-कौंच पक्षियों का भी मन लुभानेवाले; पोक्तु-भोग में; उणरन्तिलर्-भूले रहे; नैडु पक्ल्-लम्बे काल तक; इ मा नकर् उरुन्तार्-इस बड़े नगर में रहे; कणम् कुळैयित्ताळोट्टु-मोटे कुण्डलों वाली उसके साथ; उयर् कातल् ओरुवातु-श्रेष्ठ प्रेम को न छोड़कर; उरु इणङ्कि वरु-उसके साथ मिली रहनेवाली; पाचम् उट्टेयन्-और उस पर आसक्त मैं; उटन् इरुन्तेन्-उनके साथ रही । ८५३

वे इतने गहरे सम्भोग में लगे रहे कि क्रींचपक्षी भी वैसे सम्भोग की कामना करे ! सब कुछ भूलकर वे अनेक दिन अपने मिलन-वैभव में डूबे, इधर रह गये । भारी कुण्डलधारिणी से मेरा स्नेह गाढ़ा था, इसलिए मैं भी उसके साथ यहाँ रही । ८५३

इरुन्दुपल	नाळ्हळियु	मैल्लैयित्ति	नल्लोय्
तिरुन्दिल्लैये	नाडिवरु	देवरिऱै	शीऱिप्
पैरुन्दिरलि	तानैयुयि	रुण्डुपिळै	येन्ऱम्
मुरुन्दुनिहर्	मूरत्तहै	याळैयु	मुत्तिन्दात् 854

नल्लोय-साधु; इरुन्तु-उनको मिले रहकर; पल नाळ् कळियुम्-अनेक दिन जब बीते; मैल्लैयित्ति-उस समय; तिरुन्तु इळैये-श्रेष्ठ आभरणधारिणी (हेमा) को; नाटि वरु-चाहते हुए जो आया; तेवर् इरै-वह देवेन्द्र; चीरि-कोप करके; पैरु तिरुलित्तै-अतिवली (मय) को; उयिर् उण्टु-मारकर; अ मुरुन्तु निकर्

मूरत्-मोरपंख के नीचे के श्वेत भाग के समान दाँतों और; नकैयाळ्युस्-मन्दहास से युक्त उस पर; पिळै अँत्तु-अपराध कहकर; मुत्तिन्तान्-कुपित हुआ । ८५४

श्रेष्ठ गुणों वाले ! लम्बे अरसे के बाद सुन्दर कारीगरी युक्त आभरणधारिणी की देवेन्द्र ने टोह लगायी । कोप करके उसने बली मय को मार दिया । फिर उससे, जिसके दाँत मोर-पंख के श्वेत मूलभाग के समान मनोरम थे, क्रोध से कहा कि तुमने बड़ा अपराध किया है । ८५४

मुत्तिन्दवळे	युर्ऱ्शयल्	मुर्ऱ्मोळि	हँत्तक्
कत्तिन्दतुवर्	वायवळु	मँत्तैयिवळ्	कण्णाल्
वत्तैन्दुमुडि	वुर्ऱ्दत्त	मन्तनुमि	दँल्लाम्
नित्तैन्दिव	णिस्तित्तिन्हर्	कावत्ति	दँत्तान् 855

मुत्तिन्तु-क्रुद्ध होकर; अवळै-उससे; उर्ऱ् चँयल्-जो हुआ; मुर्ऱ्मोळिक-पूरा कहो; अँत्त-कहने पर; कत्तिन्त-पके; तुवर् वायवळुम्-प्रवाल-सम अधर वाली ने; अँत्तै-मुझे (दिखाकर); कण्णाल्-आँखों के इशारे से; इवळ् वत्तैन्त-इसका आयोजित; मुटिवुर्ऱ्-पूरा हुआ; अँत्त-कहा, तब; मन्तनुम्-देवराज ने; इतु अँल्लाम् नित्तैन्तु-यह सारा सोचकर; इवण् इस्तित्त-यहीं रह जाओ; नकर् कावल्-नगर-रक्षा का भार; नित्तु-तुम्हारे ऊपर है; अँत्तान्-आज्ञा की । ८५५

गुस्से में उसने उससे पूछा कि सारा हाल बता दो । तब प्रवृद्ध प्रवालाधरा ने (जिसका नाम हेमा था) मुझे पकड़ लेकर आँखों के इशारे से जताया कि इसी के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ । देवराज ने सोचा और मुझसे कहा कि तुम यहीं अकेली रह जाओ । इस नगर का रक्षण-कार्य तुम्हारा है । ८५५

अँत्तुलुम्	वणङ्गियिरु	ळेहुनेरि	यँन्नाळ्
ओत्तुरै	यँत्तक्कुमुडि	वँत्तुरैशँ	यामुन्
वन्ऱिर्ऱलि	रामन्नळ्	वानरर्हळ्	वन्ऱाल्
अन्ऱुमुडि	वाहुमिड	रँत्तुव	तहत्तान् 856

अँत्तुलुम्-कहने पर; वणङ्गिकि-नमस्कार करके; इरळ् एकुम् नेरि-अन्धकार (दुःख) दूर होने का मार्ग; अँ नाळ्-कब (होगा); अँत्तक्कु मुटिवु ओत्तु-मुझे एक अवधि; उरै-बताइए; अँत्तु-ऐसा; उरै चँयामुन्-(मेरे) पूछने के पूर्व; अवन्-देवेन्द्र ने; वल् तिरल् इरामन्-बहुत बलवान श्रीराम की; अरळ् वानरर्कळ्-कृपापूर्ण आज्ञा लेकर आनेवाले वानर; वन्ऱाल्-आयेंगे तो; इटर् मुटिवु आकुम्-दुःख अन्त को प्राप्त होगा; अँत्तु-कहकर; अकत्तान्-अपने स्थान को चले गये । ८५६

इन्द्र ने यह आज्ञा सुनायी तो मैंने उससे, नमस्कार करके पूछा कि यह अन्धकार (शाप का दुःख) छूटेगा कब ? कुछ अवधि निर्धारित कर कहिए । उसके पूछने के पूर्व ही देवेन्द्र यह कहते हुए हट गया कि अतिसशक्त

श्रीराम की आज्ञा लेकर उनके दूत, वानर, जब यहाँ आयेंगे तब तुम्हारा कष्ट दूर होगा । ८५६

उण्णवुळ	पूशवुळ	शूडवुळ	वीन्ऱो
वण्णमणि	याडैयुळ	मर्ऱुमुळ	पेर्ऱेन्
अण्णलवै	विट्टुमे	यडैन्दिडुदल्	वेण्डि
अण्णरिय	पल्पह	लिरुन्दव	मिळैत्तेन् 857

अण्णल्-महिमामय; उण्ण उळ-इधर भोजन करने के लिए बहुत (वस्तुएँ) हैं; पूच उळ-शरीर पर मलने के लिए बहुत है; चूट उळ-सिर पर धारण करने के लिए बहुत है; ओन्ऱो-यही क्या; वण्णम् मणि आर्ट-सुन्दर रंगों के मनोरम वस्त्र हैं; मर्ऱुम् उळ-अन्य पदार्थ भी हैं; पेर्ऱेन्-ये सब प्राप्त हैं मुझे; अवै विट्टु-उनको त्यागकर; उमे अटैन्तिटुतल् वेणिटि-तुमसे मिलने की साध लेकर; अण्णरिय पल् पकल्-असंख्यक अनेक दिन; इव तवम् इळैत्तेन्-कठोर तप करती रही । ८५७

महात्मा ! यहाँ खाने के लिए खूब है । देह पर मलने के लिए चन्दन आदि है । केशालकार के लिए आवश्यक वस्तुएँ हैं । यही हैं क्या ? रंग-विरंगे सुन्दर वस्त्र हैं । अन्य कितने ही भोग-पदार्थ यहाँ प्राप्त है ! तो भी मैंने उन पर आसक्ति नहीं रखी । तुम लोगों को देखने की इच्छा लेकर मैं अनेक दिनों से अचित्त कठोर तप करती रही । ८५७

ऐयिरुव	दोशनै	यमैन्दपिल	मैया
मैय्युळु	मेलुलह	मेऱुनैऱि	काणैन्
उय्युनैऱि	युण्डुदवु	वीरैन्नि	नुवायम्
शैय्युम्बहै	शिन्दैयि	निनैत्तिर्शिऱि	दैनऱाळ् 858

ऐया-श्रेष्ठ; अमैन्त पिलम्-बना हुआ यह विल; ऐ इरुपतु योचनै मैय्-सौ योजन दूर के विस्तार का; उळतु-है; मेलु उलकम्-ऊपर के (सुर) लोक में; एऱु नैऱि-चढ़ने का मार्ग; काणैन्-मुझे नहीं दिखता; उतवुवीर् अँनिन्-सहायता करेंगे तो; उय्युम् नैऱि-वचने का मार्ग; उण्डु-मिलेगा; उपायम् चैय्युम् वकै-उपाय करने का प्रकार; चिन्तैयिन्-मन में; चिऱितु निनैत्तीर्-थोड़ा सोच लो; अँन्ऱाळ्-कहा (स्वयंप्रभा ने) । ८५८

बड़े पुरुष ! यह विल शतयोजन विस्तार का है । स्वर्ग जाने का मार्ग मुझे नहीं दिखता । तुम्हीं सहायता करोगे तभी निस्तार होगा । उसके उपाय के बारे में थोड़ा सोचो । स्वयंप्रभा ने यह याचना की । ८५८

अन्तदु	कुऱित्तरिवै	कूऱवन्	सानुम्
मन्नुवुलन्	वैन्ऱव	मादवण्	मलर्त्ताळ्

शैन्तियिन् वणङ्गिननि वातवर्हळ् शेरम्
पौत्तुलह मीहुवें नितक्कैन्ल् पुहन्डान् 859

अन्तत्तु कुडित्तु-उस मार्ग के बारे में; अरिव कूड-स्त्री के कहने पर; अनुमानुम्-मारुति ने भी; मन्तु पुलम् वेंतु वर-युक्त इन्द्रियों को जो जीत चुकी, उस; मातवळ्-महातपस्विनी के; मलर् ताळ्-कमल-चरणों को; चैन्तियिन् वणङ्कि-सिर झुकाकर नमस्कार करके; नितक्कु-आपको; वातवर्कळ्-देव; ननि चेरुम्-जहाँ खूब एकत्रित है; पौन् उलकम्-उस देवलोक को; ईकुवन्-प्रदान करूँगा; अँत्ल् पुकन्डान्-यह कथन किया। ८५६

स्वर्गलोक-मार्ग की बात जब स्वयंप्रभा ने कही तब हनुमान ने शरीर के साथ लगी रहनेवाली इन्द्रियों की विजयिनी स्वयंप्रभा के चरणों को नमस्कार किया और कहा कि मैं आपको देवों से भरे स्वर्ग (-वास) को दिला दूँगा। ८५९

मुळैत्तलै यिरुक्कडलिन् मूळ्हिमुडि वेमैप्
पिळैत्तुयि रुयिर्क्कवरुळ् शैय्द पेरियोत्ते
इळैत्तिशैय लायवित्तै यैन्डन रिरन्दार्
वळुत्तरिय मारुदियु मन्न्डु वलित्तान् 860

मुळै तलै-इस बिल में; इरुळ् कटलिन्-अन्धकार-सागर में; मूळ्कि-डूँबकर; मुटिवैमै-जो मरने को थे, ऐसे हमें; उयिर् पिळैत्तु उयिर्क्क-जान बचाकर जीवित रहने; अरुळ् चैय्त्-देने की कृपा करनेवाले; पेरियोत्ते-श्रेष्ठ; चैयल् आय वित्तै-अव करणीय कृत्य; इळैत्ति-करो; अँन्डन्-कहते हुए; इरन्दार्-(वानरों ने) याचना की; वळुत्तु अरिय-जिसकी पूर्ण प्रशंसा दुर्लभ है; मारुदियुम्-उस मारुति ने भी; अन्तत्तु वलित्तान्-वही निश्चय किया। ८६०

तब अन्य वानर वीरों ने हनुमान से याचना की कि हे दयावान श्रेष्ठ गुणी ! जिसने बिल के अन्दर अन्धकार में दम घुटकर मरणोन्मुख रहे हमें जीवन दिलाने की कृपा की ! अब जो करना है वह शीघ्र करो। तब उस हनुमान ने वही करने का संकल्प कर लिया, जिसकी प्रशंसा पूर्ण रूप से करना असम्भव था। ८६०

नडुङ्गन्मि नैन्नुज्जलै नविन्नहै नार
मडङ्गलि नैन्नुन्नुमळै येररिय वात्त
तौडुङ्गलि पेरुन्दलै पुडत्तुलहौ डौन्ड
नैडुङ्गैहळ् शुमन्नुनैड् वानुड निमिर्न्दान् 861

नडुङ्कन्मिन्-मत डरो; अँत्तुम् चोलै-यह कथन; नविन्न-करके; नकै नार-मन्दहास को प्रकट होने देते हुए; मडङ्कलिन् अँन्नुन्नु-सिंह के समान उठकर; मळै एड् अरिय-जहाँ मेघों के लिए भी उठ जाना कठिन है, उस; वात्तत्तु उलकोट्टु-व्योमलोक के साथ; औडुङ्कल् इल्-जो छोटा नहीं था उस; पेरु तलै-बड़े सिर

को; पुरत्तु उलकौटु औत्तु-वाट्यलोक से लगाते हुए; नैटु ककळ् चुमन्तु-बड़े हाथों को उठा, बढ़ाकर; नैटु वान् उर-अपने शरीर को आकाश भर में व्याप्त करता हुआ; निमिर्न्तान्-ऊँचा बढ़ा । ८६१

हनुमान ने आश्वासन का वचन दिया कि डरो मत । मन्दहास करते हुए वह पुरुषसिंह के समान उठा । तब उसका बहुत बड़ा सिर आकाश से जा लगा, जहाँ मेघों का चढ़ जाना भी कठिन था । उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और वे बाट्यलोक को छू गये । आकाश में व्यापते हुए वह ऊँचा बढ़ा । ८६१

अँडुत्तुयर्	शुडर्पुय	मिरण्डुमैयि	रैन्त
मरुत्तुमह	नप्पडि	यिडन्डु	वळरन्दान्
करुत्तुनिमिर्	कण्णिनैदिर्	कण्डवर्	कलङ्ग
उरुत्तुल	हँडुत्तहर्	माविर्नैयु	मौत्तान् 862

मरुत्तु मकन्-मरुतपुत्र; अँडुत्तु उयर्-उठाये गये उन्नत; चुटर् पुयम् इरण्डुम्-दीप्तिपुत्र दोनों हाथों को; अँयिडु अँत्त-दाँतों के समान शोभित होने बैसे हुए; निमिर् कण्णिन् अँतिर्-ऊँची उठी हुई आँखों के सामने; कण्डवर्-देखनेवाले; करुत्तु कलङ्क-चित्ताक्रान्त हों, ऐसा; अ पटि इटन्तु-उस विल (के ऊपरी भाग) को चीरकर; उर वळरन्तान्-ऊँचा बढ़ा; उलकु उरुत्तु अँडुत्त-भूमि को क्रोध के साथ जिन्होंने उठाया; करु माविर्नैयुम्-बड़े आकार के वराह के; औत्तान्-समान लगा । ८६२

वायुपुत्र के दोनों उठे हुए उज्ज्वल हाथ दाँतों के समान लगे । वह ऐसा बढ़ गया कि उसको जिस किसी ने भी सामने से देखा उसका जी धक हो जाय । तब वह उस वराह (अवतार) के समान लगा, जिसने भूमि को (असुर पर) गुस्से के साथ अपने दाँतों के भीतर उठा लिया था । ८६२

मावडि	वुडेक्कमल	नान्मुहन्	वहुक्कुम्
तूवडि	वुडेच्चुडर्हौळ्	विण्डले	तौळेक्कुम्
मूवडि	कुडित्तुमुडै	योरडि	मुडित्तान्
पूवडि	वुडेप्पोरुविल्	शेवडि	पुरेन्दान् 863

मा वटिवु उटै-श्रेष्ठ रूपवान; कमलम् नान् मुकन्-नाभिकमलभव चतुर्मुख द्वारा; वकुक्कुम्-सृष्ट; तू वटिवु उटै-पवित्र दृश्य; चुटर् कौळ्-व (सूर्य और चन्द्र दो) तेजपुंजों से युक्त; विण्-आकाश के; तलै-उच्च भाग को; तौळेक्कुम्-छेदकर; जो गया; मू अटि कुडित्तु-तीन 'चरण' भर भूमि माँगकर; मुडै-क्रम से; ईर् अटि मुडित्तान्-दो चरणों से ही नाप (जिन्होंने) लिया; पू वटिवु उटै-(उन) सुन्दर-रूप; पोर्बु इल्-अप्रतिम; चे अटि-ओचरणों की; पुरेन्दान्-समानता कर रहा था । ८६३

बड़े ही सुरूप (विण्णु के) नाभि-कमल से उत्पन्न चतुर्मुख से रचित पवित्ररूप सूर्य आदि तेजपुंजों से युक्त आकाश की छत को चीरते हुए

त्रिविक्रम का सुन्दर चरण गया था, जिन्होंने बलि से तीन चरणों की उतनी भूमि माँगी थी और आकाश और भूमि को दो ही चरणों में नाप लिया । हनुमान उस सुन्दर और लाल श्रीचरण के समान भी लगा । ८६३

एलिरुब	दोशनै	यिडन्दुपडि	यिन्मेल्
ऊळु	वैळुन्ददनै	युम्बरु	मौडुङ्गप्
पाळिपौरु	वन्बिलनु	णिन्नुरपडर्	मेल्बाल्
आळियि	नैरिन्दनुम	नाळियेन	वार्त्तात् 864

अनुमन्-हनुमान; एळ् इरुपतु योचतै इटन्तु-एक सौ चालीस योजन का छेद बनाकर; पाळि पौरु-गुहा-सम; वल् पिलतुळ् निन्नुर-कठोर बिल के अन्दर से; पटियिन् मेल्-भूमि पर; ऊळ् उर अँळुन्तु-क्रम से चढ़कर; अततै-उस बिल-नगर को; उम्परुम् ओट्टुक्क-देवों को भी भयभीत होने देते हुए; पटर् मेल् पाल् आळियिन्-विशाल पश्चिमी सागर में; अँरिन्तु-फेंककर; आळि अँल-समुद्र के समान; आर्त्तात्-गरजा । ८६४

हनुमान उस बिल के एक सौ चालीस योजन विस्तार के भाग को चीरकर ऊपर भूमि पर आया । फिर उस नगर को उसने देवों के मन में भय भरते हुए उठाकर विस्तृत सागर में फेंक दिया । फिर वह सागर के समान नाद कर उठा । ८६४

अँन्नमुळ	मेल्हड	लियक्किल्बिल	तीवा
निन्नुरनिलै	पैरुळुडु	नीणुदलि	योडुम्
कुन्नुरपुरै	तोळव	रँळुन्दुनैरि	कौण्डार्
पौन्न्रिणि	विशुम्बित्तिडै	नन्नुदलि	पोत्ताळ् 865

अँन्नम् उळ-सदा रहनेवाले; मेल् कटल्-पश्चिमी सागर में; इयक्कु इल्-अनश्वर; पिल तीवु आ-बिलद्वीप के नाम से; निन्नुर निलै पैरुळुडु-विद्यमान और स्थायी है; नीळ् नुतलियोट्टुम्-लम्बे ललाट वाली (स्वयंप्रभा) के साथ; कुन्नुर पुरै-पर्वत-सम; तोळवर्-कन्धों वालों ने; अँळुन्तु-निकलकर; नैरि कौण्डार्-अपनी राह ली; नल् नुतलि-सुन्दर ललाट वाली; पौन् त्रिणि-स्वर्णजड़ित; विचुम्पित्तिटै-देवनगर में; पोत्ताळ्-चली । ८६५

वह नगर अब भी सदा रहनेवाले पश्चिमी सागर-मध्य बिलद्वीप नाम के साथ विद्यमान है । पर्वतोन्नत कन्धों वाले वानर वीर स्वयंप्रभा के साथ बाहर आये । उन्होंने आगे का मार्ग लिया । सुन्दर ललाट वाली स्वयंप्रभा स्वर्णमय स्वर्गपुरी चली । ८६५

मारुदिवलित्	तहैमै	पेशिमर	वोरुम्
पारिडै	नडन्दुपह	लैल्लंबड	रप्पोय्

नीरुडैय	पौय्हैयिनि	नीळ्हरे	यडैन्दार्
तेरुडै	नेडुन्दहैयु	मेलेमलै	शैन्डान् 866

मउवोरुम्-वीर भी; मारुति वलि तर्कमै-मारुति का वल-विक्रम; पेचि-कहते हुए; पकल् अल्लै पटल-दिन के अन्त तक; पारिटै नटन्तु-भूमि पर पंदल; पोय्-चलकर; नीर् उटैय पौय्कैयिन्-जल-भरे एक तटाय के; नीळ् करै-दीर्घ तीर पर; अटैन्तार्-पहुँचे; तेरुडै नैट्टु तर्कयुम्-एकचक्ररथी महिमावान देव (सूर्य) भी; मेले मलै-पश्चिमी (अस्त-) गिरि; चैन्डान्-गये । ८६६

पराक्रमी वानर वीर हनुमान के वल की स्थिति की प्रशंसा के वचन कहते हुए दिन के अन्त तक चले और एक जलाशय के बड़े तट पर आये । तब एकचक्ररथी सूर्यदेवता भी पश्चिमी (अस्त) अचल पहुँच गया । ८६६

14. आरु शैल् पडलम् (मार्ग-गमन पटल)

कण्डार्	पौय्हैक्	कण्णह	नन्नीर्	कैयार
उण्डार्	तेनु	मौण्गनि	कायु	मौरुशूळल्
कौण्डा	रत्तुओ	विन्ऱुयिल्	कौण्ड	कुऱियुत्तित्
तण्डा	वैन्ऱित्	तानवन्	वन्दात्	इहविल्लान् 867

कण्डार्-देखकर; कण् अकल्-विशाल; पौय्कै-जलाशय में; नल् नीर्-अच्छे जल को; कै आर-हाथों से खूब उठाकर; उण्डार्-(वानरों ने) पिया; तेनुम्-शहद और; औण् कति कायुम्-श्रेष्ठ फल और खाद्य कच्चे फलों को; उण्डार्-खाया; और् चूळल्-एक ओर; इन् तुयिल् कौण्डार्-बुख से सो गये; कौण्ड कुऱि उत्ति-उनके निद्रामग्न होने का आसरा पाकर; तण्डा वैन्ऱि-अप्रतिहत विजयशील; तक्कु इल्लान्-गुणहीन; तानवन्-एक दानव; वन्तान्-वहाँ आया । ८६७

वानर वीरों ने उस सरोवर को देखा और उस विशाल जलाशय से जल उठाकर जी-भर पिया । शहद पिया और वहाँ प्राप्त मधुर फलों को खाया । फिर वे वहाँ एक ओर लेटे और सो गये । उनके सोने की टोह पाकर एक दानव उधर आया, जो अच्छे गुण वाला नहीं था और जो अक्षुण्ण विजयशील था । ८६७

मलैये	पोल्वान्	माल्हड	लौपपान्	मउमुऱिक्
कौलैये	शैय्वान्	कूऱुऱै	निहर्प्पान्	कौडुमैक्कोर्
निलैये	पोल्दा	नीरुमै	यिलादा	निमिर्तिडिगळ्
कलैये	पोलुड्	गाल	वैयिऱ्डान्	कनल्कण्णान् 868

मलैये पोल्वान्-पर्वत ही सम; माल् कटल् औपपान्-विशाल समुद्र के समान; मउम् मुऱि-कठोरता में बढ़ा हुआ; कौलैये शैय्वान्-हत्या करनेवाला; कूऱुऱै निहर्प्पान्-यम की समानता करनेवाला; कौडुमैक्कु-कूरता का; ओर् निलैये-एक आश्रयस्थान; पोल्वान्-सम रहनेवाला; नीरुमै इलातान्-किसी भी अच्छे गुण से

विहीन; निमिर्-आकाश में उठकर शोभित रहनेवाले; तिङ्कळ् कलये पोल्म्-चन्द्र-कला के समान; काल् अँयिर्इत्-भयंकर दन्तुला; कतल्-कण्णान्-अग्निसम आँखों वाला । ८६८

वह पर्वत के ही समान आकार का और समुद्र के समान काला और लम्बा-चौड़ा था । वह अत्यधिक नृशंसकारी घातक यम के समान था । अत्याचार का आगार था । अच्छा गुण उसमें कोई नहीं था । उसके वक्र दाँत आकाश में उठे अर्धचन्द्र के समान थे । धधकती आँखों वाला था । ८६८

करुवि मामळै कैह डाविमी, डुरुव मेतिशैन् रुलवि यौर्इलाल्
पौरुविन् मारिमे लौळुहु पौर्पिताल्, अरुवि पाय्दरुड् गुन्ड मेयनान् 869

करुवि-(लोकवृद्धि का) साधन; मा मळै-बड़े मेघ; कैकळ् तावि-उसके हाथों में कूदकर; मेति मीतु-शरीर पर; उरुवि चैन्ड-सरककर; उलवि-फैलकर; यौर्इलाल्-जमे रहते हैं, इसलिए; पौरुवु इल् मारि-समता-रहित बारिश; मेल्-लौळु-उसके ऊपर गिरती है; पौर्पिताल्-उस शोभा से; अरुवि पाय् तरुम्-जिस पर सरिताएँ बहती हैं, वैसी; गुन्डमे अत्तान्-गिरि के ही समान रहनेवाला । ८६९

मेघ, जो लोकसमृद्धि के कारण हैं, उसके हाथों में कूदते और उसके शरीर पर चलते जम जाते । और उपमाहीन बारिश भी उस पर गिरती थी । इसलिए वह सरिताओं से युक्त पर्वत के समान लगता था । ८६९

वात वरक्कुमर् इवर्व लिक्कुनेर्, तात वरक्कुमे वरिय तन्मैयान्
आन वक्कल तवर्नी डाडवे, ऐन वरक्कुमौन् ईण्ण वौण्णुमो 870

वातवरक्कुम्-देवों; मर्इ-और; अवर् वलिक्कु-उनकी वीरता की; नेर् तातवरक्कुम्-समानता करनेवाले दानवों के लिए भी; मेवु अरिय-अजेय; तन्मैयान् आत-स्वभाव वाला; अ कलन्-वह खल था; अवर्त्तोडु आट-उसके साथ लड़ना; वेडु एतवरक्कुम्-अन्य किसी के लिए भी; औन्डु अँण्ण औण्णुमो-कुछ सोचने योग्य हो सकेगा क्या । ८७०

वह इतना बलशाली था कि देव और उनके समान बली दानव उसको जीत नहीं सकते थे । तब उस खल के साथ युद्ध करने की बात कोई सोच ही सकता है क्या ? । ८७०

पिड्डु	पड्गियान्	पैयरुम्	पैट्पितिल्
कड्डु	पोन्डुळान्	पिशैयुड्	गैयितान्
अड्डुगीळ्	शिन्दयार्	नेर्इशै	लयर्वित्ताल्
उड्डु	वारैवन्	दौल्लै	यैय्दितान् 871

पिड्डु पड्गियान्-ध्यानाकर्षक केश वाला; पैयरुम् पैट्पितिल्-चलने के प्रकार में; कड्डु पोन्डुळान्-प्रतंग की गति वाला; पिचैयुम् कैयितान्-हाथ मलते हुए;

अइम् कौळ् चिन्तैयार्-धर्मरत मन वाले; नैरि चैल् अयर्विताल्-मार्ग-गमन की थकावट से; उइङ्कुवारै-सोनेवाले उनके पास; ओल्लै वन्नु-तेजी से आकर; अय्यत्तितान्-पहुँचा । ८७१

ध्यान आकर्षित करते हुए विद्यमान केश वाला, गति में पतंग के समान वह अपने हाथों को मलता हुआ पथ-श्रान्त, निद्रामग्न, धर्म-चित्त वानरों के पास आया । ८७१

पीय्है	यैन्तदैन्	रुणर्न्दुम्	बुल्लियोर्
अय्यदि	नारहळ्या	रिदुवै	तावैन्ता
ऐय	त्तङ्गद	नलङ्गन्	मार्वितिल्
कैयिन्	मोदिनान्	काल	नेयनान् 872

कालते अत्तान्-यम ही सम; पीय्कै-जलाशय; अय्यत्तु अय्य-मेरा है, यह; उणर्न्दुम्-जानकर भी; बुल्लियोर् क्षुद्र; यार् अय्यत्तितार्कळ्-कौन आये हैं; इतु अय्य-यह क्या है; अय्य-कहते हुए; ऐयन् अय्यत्तन्-नायक अंगव के; अलङ्कल् मार्वितिल्-मालाधारी वक्ष पर; कैयिन् मोदितान्-हाथों से पीटा । ८७२

यम-सम उस दानव ने ऐसा कहते हुए अंगद के मालालंकृत वक्ष पर अपने हाथों से प्रहार किया कि ये क्षुद्र लोग कौन हैं, जो यह जानकर भी इस सरोवर पर आये हैं कि यह मेरा है। यह क्या है, क्या है यह ? । ८७२

मइइ	मैन्दनु	मुइक्क	माइत्तान्
इइइ	वन्गौला	मिलङ्गै	वेन्दैन्ता
अइइ	नान्ने	रैइइ	तात्तवन्
मुइइ	तात्तिहइ	कादि	मूरत्तियान् 873

अ मैन्दनुम्-उस बलिष्ठ कुमार ने भी; मइइ-उस पर; उइक्कम् माइत्तान्-निद्रा से छूटकर; इइइ-अब; इवन्-यह; इलङ्कै वेन्तु कौल् आम्-लंकाधिपति ही है शायद; अय्य-ऐसा सोचकर; अइइत्तान्-पीटनेवाले उसे; नेर् अइइत्तान्-बदले में पीटा; इक्कु-बल का; आत्ति मूरत्तियान्-आदिदेव-सम; अवन्-वह; मुइत्तान्-समाप्त हुआ । ८७३

उस बली अंगद ने भी निद्रा से जागकर पीटनेवाले उस दानव का "क्या यही लंकाधिपति है शायद" —यह सोचते हुए प्रतिप्रहार किया। पराक्रम के अधिष्ठाता के समान लगनेवाला वह दानव इस प्रकार से आहत होकर मर गया । ८७३

इडियुण्	डाङ्गणो	रोङ्ग	लिइइदौत्
तडियुण्	डान्उळर्न्	दलरि	वीळ्दलुम्

तौडियिन् शोळ्विशैत् तैळुन्दु शुड्रितार्
पिडियुण्ड डारैतत् तुयिलुम् बैड्रियार् 874

आङ्कण-तब; ओर् ओङ्कल्-एक पर्वत; इडि उण्डु-वज्राहत हो; इडुत्तु ओत्तु-ढहकर गिरा हो, ऐसा; अडि उण्डात्-पीटा जाकर; तळरन्तु-निर्बल हो; अलडि वीळ्तलुम्-चिल्लाते हुए जब वह गिरा; पिडि उण्डार् अँत-भूत-ग्रस्तों के समान; तुयिलुम् पैड्रियार्-सोने की स्थिति में रहे वे; तौडियिन् तोळ्-कंकणभूषित भुजाओं को; विचैत्तु-हिलाते हुए; अँळुन्दु-उठकर आये और; चूड्रितार्-उसे घेर गये । ८७४

अंगद से पीटा जाकर वह दानव वज्राहत पर्वत गिरता हो जैसा बल खोकर चिल्लाते हुए नीचे गिर गया । तब भूतग्रस्त के समान जो रहे थे, वे वानर जागे और वलयभूषित भुजाओं को हिलाते हुए आकर अंगद को घेर गये । ८७४

यार् हौलामिव तिळैत्त दैन्नेत्तात्, तारै शेयिनेत् तनिवि नायितान्
मारु देयन्मर् इवनुम् वाय्मैशाल्, आरि यार्देरिन् दडिहि लेनेत्तान् 875

इवन् यार् कौल् आम्-यह कौन हो सकता है; इळैत्तु अँन्-इसका किया हुआ क्या; अँता-ऐसा; मारुतेयन्-वायुपुत्र ने; तारै शेयितै-तारासुत से; तनि विनायितान्-विशेष रूप से प्रश्न किया; अवतुम्-उसने भी; वाय्मै चाल्-सत्यनिष्ठ; आरिया-श्रेष्ठ; तैरिन्तु अडिकिलेन्-जानता-समझता नहीं; अँत्तान्-कहा (उत्तर में) । ८७५

वायुपुत्र ने तारापुत्र से विशेष रूप से प्रश्न किया कि यह कौन है ? इसने क्या किया ? तब अंगद ने उत्तर दिया कि हे सत्यसन्ध साधु ! मैं कुछ नहीं जानता-समझता । ८७५

यान्ति वन्डनेत् तैरिय वैण्णिनेत्, तूनि वन्दवेड् रुमिर नेन्नुम्बे
रानिव् वाळ्बुनर् पोय् है याळुमोर्, तान वन्नेनच् चाम्बन् शार्डितान् 876

चाम्पत्-जाम्बवान ने; यान् इवन् तत्तै-मैंने इसके सम्बन्ध में; तैरिय वैण्णिनेत्-जानने के विचार से सोचा; तू निवन्त-(शत्रु-) मांसपूर्ण; वेल्-भालाधारी; तुमिरन् अँन्तुम् पेरात्-धूम्र नाम का है; इ आळ् पुतल्-इस गहरे जल के; पोय्कै-सरोवर का; आळुम्-शासन करनेवाला; ओर् तात्तवन्-एक दानव है; अँत-ऐसा; चार्डितान्-कहा । ८७६

तब जाम्बवान ने कहा कि मैंने इसके सम्बन्ध में खूब सोचकर देखा । शत्रु-मांसावृत भालाधारी यह धूम्र नाम का है । इस सरोवर का स्वामी और रक्षक है एक दानव । ८७६

वेरु मैय्दुवा रुळरहौ लामेन्नात्, तेडि यिन्नुयिर् शैलवु तीरुन्दुळार्
वीरु शैजुडर्क् कडवुळ् वेलेवाय, नाड नाणमलर्प् पण्णै नाडुवार् 877

वेळुम्-अन्य भी; अयुतुवार् उळर्-आनेवाले होंगे; कौलाम् अँता-शायद क्या, ऐसा शंकिता होकर; इन् तुयिल् तेरि-मधुर निद्रा से जागकर; चेलवु तीरन्तु उळार्-आगे जाना जिन्होंने रोका था, वे वीर; वीळु-गौरवमय; चैम् चूटर् कटवुळ-लाल किरणों के स्वामी सूर्य के; वेले वाय् नाडु-सागर के ऊपर उग आने पर; नाण् मलर्-सद्यविकसित कमल की; पेंणै-देवी की; नाटुवार्-खोज करते हुए चले । ८७७

वानर वीर यह शंका करते हुए आगे जाना रोककर खड़े रहे कि इसके अनुकरण में और कुछ लोग भी आ सकते हैं । अब गौरववान सूर्य पूर्वी सागर के ऊपर उग आया । इसलिए वे नवविकसित कमलासना श्री लक्ष्मीदेवी (के अवतार, सीता) की खोज में आगे जाने लगे । ८७७

पुण्णै वैम्मुलैप् पुळिन मेय्तडत्, तुण्ण वाम्बलिन-नमिळ्द मूळ्वाय्
वण्ण वैण्णहैत् तरळ वाण्मुहप्, पेंणै नण्णितार् पेंणै नाडुवार् 878

पेंणै नाटुवार्-देवी को खोजते जानेवाले; पुळ् नै-चक्रवाक पक्षी जिनको देखकर इस बात से दुःखी होते हैं (कि हम इनकी समानता न कर पाते); वैम् मुलै-ऐसे स्तनों के स्थान में; पुळितम् एय्-वालू के टीलों से युक्त; तटत्तु-तटो से; उण्ण-पान करने पर; अमिळ्त्तम् ऊळम्-अमृत बहानेवाले; आम्पलिन् वाय्-लाल कुमुद रूपी अधरों से; वण्ण वैळ् नकै-श्वेत रंग के दाँतों के स्थान में; तरळम्-मोतियों से; वाळ् मुक्कन्-कमल रूपी सुन्दर मुखों से शोभित; पेंणै-“पेंणै” (के पास); नण्णितार्-पहुँचे । ८७८

सीताजी की खोज में लगे वे ‘पेंणै’ नाम की नदी पर आये । (‘पेंणै’ का अर्थ तमिळ में ‘स्त्री’ है । उसका कर्म कारक ‘पेंणै’ होता है । कवि का चातुर्य यह बताता है कि ‘पेंणै’ की खोज में लगे वे ‘पेंणै’ के पास आ गये । फिर श्लेष के द्वारा उस नदी और ‘पेंणै’ या ‘स्त्री’ में साम्य दिखाता है ।) नदी के मध्य वालू के टीले (पुलिन) थे, वे ऐसे स्तनों के स्थान में रहे, जिनके कारण चक्रवाक पक्षी दुःखी होते हैं । (मानव-स्तनों से हार मानकर वे दुःखी होते हैं । पुलिनों पर पहुँचने के लिए वे लालायित होते हैं ।) पान करने पर अमृत सवनेवाले अधर कुमुद हैं । श्वेत मुक्ताएँ दाँत हैं । कमल मुख है । ८७८

तुरैयुन् दोहैनिन् राडु शूळलुम्, कुरैयुन् जोलैयुड् गुळिर्न्द शारनीर्च्
चिरैयुन् वैळ्ळुप्पुन् दडमुन् दैण्वळिक्, कुरैयुन् देडित्ता ररिविन् कोडियार् 879

अरिविन् कोटियार्-ज्ञानशिखर; तुरैयुम्-घाटों; तोकै-मोर; निन्ऱु आटुम्-जहाँ स्थित होकर नाचते हैं; चूळलुम्-उन स्थानों; कुरैयुम्-पुलिनों; जोलैयुम्-बागों; गुळिर्न्द चारल्-शीतल पवन करनेवाले; नीर् चिरैयुम्-जलाशयों; वैळ्ळुप्पुम् तटमुम्-स्वच्छ, सुन्दर उद्यानों; तैळ् पळिक्कुरैयुम्-और शुद्ध स्फटिक चट्टानों पर; तैटितार्-ढंढा । ८७९

वे वानर वीर मूर्धन्य ज्ञानी हैं। उन्होंने स्नानघाटों, मयूर-नृत्य-स्थलों, पुलिनों और पास के बागों में सीताजी के लिए ढूँढ़ा। पवन को शीतल करनेवाले जलाशयों और सुगन्धित करनेवाले पुष्पोद्यानों में भी उन्होंने ढूँढ़ देखा। ८७९

अणिहीं छित्तुवन् देवर माडित्तार्, पिणिहीं छित्तुवैम् बिइवि वेरिन्वन्
तुणिहीं छित्तरुज् जुळिह डोरुनन्, मणिहीं छित्तिडुन् दुइयिन् वैहिनार् 880

अणि कौछित्तु वन्तु-सुन्दरता को पछोड़ (संग्रह कर) लेते हुए; आदित्तार्-अवरुम्-स्नान करनेवाले हर किसी का; पिणि कौछित्तु-व्याधिग्रस्त; वैम् पिइवि वेरिन्-भयंकर जन्ममूल के; वन् तुणि कौछित्तु-कठोर अंश लेते हुए; अरुम् चुळिकळ् तोरुम्-अगम भँवरों में; नल् मणि कौछित्तिटुम्-श्रेष्ठ रत्न लेते हुए आनेवाली नदी के; दुइयिन्-एक घाट में; वैकित्तार्-(वे वानर वीर) ठहरे। ८८०

वह पवित्र नदी सुन्दरता को मानों छाँट लेकर ग्रहण किये बहती थी। (वह मनोरम थी।) जो भी उसमें स्नान करते उनके भवबाधा के मूल, कठोर जन्म की जड़ के अंशों, और भँवरों में मणियों को लेती हुई आ रही थी। वे उस नदी के तट पर एक ओर ठहरे। ८८०

आडु पेंण्णैनी राहु मेरित्तार्, काडु नण्णित्तार् मलैह डन्दुळार्
वीडु नण्णित्ता रेंत्त वीडुनोर्, नाडु नण्णित्तार् नाडु नण्णित्तार् 881

नाडु नण्णित्तार्-अन्वेषण में लगे; आडु नीर्-स्नानयोग्य जल से भरी; पेंण्णै आरुम्-'पेंण्णै' नामक नदी को; एरित्तार्-पार करके; काडु नण्णित्तार्-अनेक जंगल पार किये; मलै कटन्तु उळार्-पर्वत पार किये; वीडु नण्णित्तार्-अँत्त-मानो मोक्षलोक गये हों, ऐसा; वीडु नीर्-जल-समृद्ध; नाडु नण्णित्तार्-एक देश के पास आये। ८८१

फिर सीताजी की खोज में प्रवृत्त होकर वे उस पवित्र नदी को तैरकर ऊपर तट पर चढ़े, जिसके जल में लोग आकर स्नान करते थे। आगे अनेक पर्वतों और वनों को पार कर एक जलसमृद्ध देश पर ऐसे आये मानो मोक्षलोक को आ गये हों। ८८१

तशन वप्पैयर्च् चरळ चण्बहत्, तशन वप्पुलत् तहणि नाडोरीड
उशन वप्पैयर्क् कवियु दित्तपेर्, इशैवि दर्प्पना डैळिदि नैय्दिनार् 882

तचनवम् पॅयर्-दशनव नाम के; चरळ चण्पकत्तु-सुन्दर चम्पकतरुओं से भरे; अचन अ पुलत्तु-खाद्यपदार्थोत्पादक भूमि से युक्त; अकणि नाडु-'मरुदम' (खेतों के) प्रदेश को; ओरीड-पार कर; उचन अ पॅयर्-'उशनस' नाम के; कवि-कवि (भगवान् शुक); उतित्त-जहाँ जनमे उस; पेर् इचै-बड़े नामी; वितर्प्प नाडु-विदम्भदेश; अँळितिन्-अनायास; अँय्तित्तार्-जा पहुँचे। ८८२

उस देश का नाम दशनव था । उसमें चम्पकवन अधिक थे और खाद्योत्पादक धान के खेतों का 'मरुदम्' प्रदेश था । उसको पार कर वे विदर्भ देश में अनायास आये, जो उशनस-संज्ञित कवि शुक्र का जन्म-स्थान था । ८८२

वैद रूपमण् डलनिल् वन्दुपुक्, कैय्द रूपमत् तनैयु मैय्दिनार्
पैय्द रूपैन्तूल् पिडळु मेनियार्, शैय्द वत्तुळार् वडिविड् रेडिनार् 883

वैतरूप मण्डलतिल्ल—विदर्भ देश में; वन्दु पुक्कु—आ प्रवेश करके; मैय्तु अरूपम् अतूततैयुम्—जाने योग्य सभी स्थानों में; मैय्तितार्—गये; पैय् तरूपै—(कमर में) दर्भ की बनी रस्सी और; नूल्—(वक्ष में) यज्ञोपवीत; पिडळु मेनियार्—जिनको शोभित करते हैं, ऐसे शरीर वाले; शैय् तवत्तु उळार्—श्रेष्ठ तप-मार्ग में प्रवृत्त; वडिविल्—ब्राह्मण (ब्रह्मचारियों के) देश में; तेडितार्—(उन्होंने) सीता को खोजा । ८८३

विदर्भ देश में आकर वे सभी स्थानों में गये, जहाँ जाना था । वहाँ उन्होंने दर्भ की बनी करधनी और यज्ञोपवीत पहने हुए तपस्वी ब्राह्मणों के देश में घूमकर ढूँढ़ा । ८८३

अन्न तन्मैया लडिअर् नाडियच्, चैन्नेल् वेलिशूळ् तिरुनन् नाडोरीड्
तन्ने यैण्णुमत् तहैयु हुन्दुळार्, तुन्नु दण्डहड् गडिडु तुन्निनार् 884

अडिअर्—विज्ञ वे; अन्न तन्मैयाल्—उस प्रकार से; नाटि—सीता का पता लगाने; अ—उस; चैन्नेल् वेलि चूळ्—लाल रंग के धानों के खेतों से घिरे; तिरु नल् नाटु—श्रीसम्पन्न अच्छे देश को; ओरीड्—छोड़कर; तन्ने यैण्णुम्—आत्मध्यानलीन; अ तर्कै—रहने की उस स्थिति (समाधि) में; पुकुन्नुळार्—जो पहुँचे हैं; तुन्नु—उनसे भरे; तण्टकम्—दण्डक वन को; कडितु तुन्निनार्—शीघ्र पहुँचे । ८८४

विज्ञ वानर उस रीति से विदर्भ देश में सीताजी को खोजने के बाद लाल धानों के खेतों से पूर्ण उस देश को छोड़कर आगे चले । फिर दण्डकारण्य गये, जहाँ आत्मध्यानरत समाधिस्थ योगी बड़ी संख्या में रहते थे । ८८४

उण्ड हत्तुळा रुयैयु मैम्बोडिक्, कण्ड हरक्करुड् गाल नायितार्
दण्ड हत्तैयुन् दडवि येहिनार्, मुण्ड हत्तुडै कडिडु मुड्डिनार् 885

उण्ड—विषय-सुख भोगते हुए; अकत्तुळ् आर्—शरीर में; उरैयुम्—(रत) रहनेवाले; ऐम्बोडि कण्टकरक्कु—पंचेन्द्रिय रूपी कंटकों के; अरु कालन् आयितार्—प्रबल बम जो बने हैं; तण्टकत्तैयुम्—उनके (वास के) दण्डक वन में भी; तडवि—खोजकर; एकितार्—आगे गये; मुण्टकत् तुडै—मुण्डकघाट पर; कडितु मुड्डिनार्—शीघ्र जा ठहरे । ८८५

वे पाँच इन्द्रिय रूपी कंटकों के, जो विषय-भोग करते हुए शरीर में रहते हैं, प्रबल शत्रु थे । उनके दण्डक वन को भी उन वीरों ने खूब

टोलकर देखा । (सीताजी नहीं मिलीं ।) वे आगे चले । फिर मुण्डकघाट नामक स्थान पर शीघ्र जा पहुँचे । ८८५

अळ्ळ नीरैला ममरर् मादरार्, कौळ्ळै मामुलैक् कलवै कोदैयिर्
कळ्ळु नारलिर् कमल वेलिवाळ्, पुळ्ळु मीनुणा पुलवु तीरुदलाल् 886

अळ्ळल् नीर् अलाम्-पंकिल जल सब; अमरर् मातरार्-देवांगनाओं के; मामुलै-पीन स्तनों पर के; कौळ्ळै कलवै-अधिक चन्दन ले; कोदैयिल् कळ्ळुम्-और माला के मधु की; नारलिर्-गन्ध से भरा है, इसलिए; कमल वेलि वाळ्-उस मुण्डकघाट में रहनेवाले; पुळ्ळुम्-पक्षी भी; पुलवु तीरुदलाल्-मांसगन्ध से रहित होने के कारण; मीनु उणा-मछलियाँ नहीं खाते । ८८६

वहाँ देवांगनाएँ आकर स्नान करती थीं । उनके स्तनों पर लगा अधिक चन्दनलेप और माला के फूलों पर का शहद वहाँ के जल के तल में रहनेवाला पंक को भी सुवासित कर देता था । अतः वहाँ की मछलियों ने अपनी स्वाभाविक दुर्गन्ध छोड़ दी और वहाँ के पक्षी उनको पकड़कर नहीं खाते थे । ८८६

कुम्ज रङ्गुडैन् दौळ्ळु कौट्पदाल्, विञ्जै मत्तनर्पाल् विरह मङ्गैमार्
नञ्जु वीणैयि नडत्तु पाडलान्, अञ्जु वार्हणी ररुवि याडरो 887

विञ्चै मत्तनर् पाल्-विद्याधर राजाओं की; विरक मङ्कै मार-विरहिणी विद्याधर-स्त्रियाँ; नञ्चु-मन विगलित होकर; वीणैयिन्-वीणा पर; नडत्तु पाडलाल्-जो गीत स्वरित करते हैं, उनसे; अञ्चुवार्-प्रभावित स्त्रियों की; कण् नीर् अरुवि आळ्-आँखों के जल की बहनेवाली नदी में; कुम्जरम्-गज; कुटैन्तु ओळ्ळुकुम्-गोते लगाकर स्नान करते हैं; कौट्पु अतु-ऐसी स्थिति का है वह । ८८७

उस मुण्डकघाट पर विरहिणी विद्याधर स्त्रियों के अपने विद्याधर राजाओं के विरह में वीणा के साथ गाये गये गानों को सुनकर वहाँ की स्त्रियाँ दुःख करती थीं और उनकी आँखों से अश्रुजल झरनों के समान बहने लग जाता था । वे नदियाँ इतनी बड़ी और गहरी थीं कि मातंग भी उनमें गोते लगाकर स्नान करते थे । ८८७

कमुह वार्नैडुङ् गन्तह वृशलिल्, कुमुद वायित्तार् कुयिलै येशुवार्
शमुह वाळियुन् दनुवुम् वाण्मुहत्, तमुद पाडलार् मरुवि याडुवार् 888

कुमुत वायित्तार्-कुमुदमुख; कुयिलै एचुवार्-पिकहासिनी; चमुकम् वाळियुम्-शरसमूहों (सी आँखों) और; तनुवुम्-धनुओं (भौंहों) वाली; वाळ् मुकत्तु-उज्ज्वल मुखों वाली; अमुत पाडलार्-अमृत-मधुर गान करनेवाली (स्त्रियाँ); कमुक-क्रमुकतरुओं से बद्ध; वार् नैटुम् कत्तक ऊचलिल्-लम्बे और ऊँचे झूलों पर; मरुवि आटुवार्-मिलकर झूलती हैं । ८८८

वहाँ क्रमुक पेड़ों से बद्ध स्वर्ण के झूलों पर स्त्रियाँ झूलती हुई आनन्द

मना रही थीं। उन स्त्रियों के अधर लाल कुमुद के समान थे। उनकी वाणी कोयल का परिहास करती थी। उनके मुख उज्ज्वल थे, जिनमें शर-समूह के समान आँखें और धनुओं के समान भौहें थीं। वे सुधा के समान मधुर गीत गाती हुई झूल रही थीं। ८८८

इनैय वायवौण् डुरैये यैय्दिनार्, नितैयुम् वेलैवाय् नैडिडु तेडुवार्
वनैयुम् वार्हुळन् मादैक् कण्डिलार्, पुनैयु नोयिनार् कडिडु पोयित्तार् 889

इतैय आय-ऐसे एक; ओळ् तुरैये-सुन्दर घाट पर; अयैत्तितार्-पहुँचे; नैडितु तेडुवार्-बहुत दूर और देर से खोज लगाते आनेवाले थे; वनैयुम् वार् कुळल्-सुन्दर लम्बे केश वाली; मातै-देवी को; कण्डिलार्-देख न पाये; पुनैयुम् नोयितार्-अधिकृत दुःख वाले बनकर; नितैयुम् वेलै वाय्-जब सोच रहे थे, तब; कडितु पोयितार्-शीघ्र चले। ८८९

ऐसे सुन्दर मुण्डकघाट पर आये और वे खूब छान-बीन कर खोजने लगे। बहुत देर तक खोजने पर भी वे सँवारे हुए केश वाली सीताजी को देख न पाये। दुःख से अभिभूत हो वे सोचने लगे। फिर वे वहाँ से आगे चले। ८८९

नीण्ड मेत्तिया नैडिय ताळिनिन्, डीण्डु कङ्गैवन् दिळिव दैत्तनलाय्
पाण्डु वम्मलै पडर्वि शुम्बितैन्, तीण्डु हिन्डतण् शिहर मैय्दितार् 890

नीण्ड मेत्तियान्-त्रिविक्रमावतार में जिन्होंने बहुत बड़ा रूप धरा उनके; नैडिय ताळिन् मिन्नु-दीर्घ चरण से; ईण्डु-यहाँ; कङ्कै वन्तु इळिवतु-आकाशगंगा आकर गिरती है क्या; अत्तल आय्-ऐसा मान्य; पाण्डु अम् मलै-पाण्डु नाम के उस पर्वत के; पटर् विचुम्पितै तीण्डुकिन्डत-विस्तृत आकाश को छूनेवाले; तण् चिकरम्-शीतल शिखर पर; अयैत्तितार्-पहुँचे ८९०

वे पाण्डुपर्वत के गगनचुम्बी शिखर पर पहुँचे। त्रिविक्रम के श्रीचरण को धोती हुई जो निकली वह गंगा मानो इधर आकर बह रही हो, वैसा शीतल लगता था वह (श्वेत वर्ण) पर्वत। ८९०

इरळ् इत्तुमी दैळुन्द दैणिला, मरळ् इत्तुवण् शुडर्व् लङ्गलाल्
अरळ् इत्तिला वडल रक्कन्मेल्, उरळ् इत्ततितण् कयिलै यौत्तदाल् 891

इरळ् अरुत्तु-अन्धकार काटकर; मीतु अळुन्त-आकाश में उठा हुआ; तैळुनिला-स्वच्छ चाँद; मरळ् उरुत्तु-मोहक; वण् चुटर्-घना प्रकाश; वळङ्कल् आल्-फँलाता है, इसलिए; अरळ् उरुत्तु तुईला-दया के अनुत्पादक मन वाले; अटल् अरक्कन् मेल्-बली राक्षस (रावण) पर; उरळ् उरुत्त-उसे लुढ़काते हुए जिसने उसको दबाया; तिण् कयिलै-उस कठोर कैलास; औत्ततु-के समान थी (वह पाण्डु गिरि)। ८९१

वह उस कैलासपर्वत के समान लगा, जिसने निर्मम रावण को नीचे

लुढ़काते हुए दबोच दिया; क्योंकि उस पर संसार पर फँसे हुए अन्धकार को मिटाते हुए जो चन्द्र आकाश पर उठा था, वह मादक और पुष्कल चाँदनी को उसके ऊपर बरसा रहा था । ८९१

विण्णुः	निवन्त	शोदि	वैळ्ळिय	कुन्ऱ	मेविक्
कण्णुः	नोक्क	लुऱ्ऱार्	कळियुऱक्	कत्तिन्त	कामर्प्
पण्णुः	किळविच्	चैव्वाय्प्	पडैयुऱ	नोक्कि	नाळै
अण्णुः	तिऱत्तुऱ्	गाणा	रिडरुऱ	मन्तत्	रैय्त्तार् 892

विण् उऱ-गगन छूते हुए; निवन्त-उन्नत; चोति-ज्योतिर्मय; वैळ्ळिय कुन्ऱम्-श्वेत रंग के उस (पाण्डु) पर्वत पर; मेवि-चढ़कर; कण् उऱ नोक्कल् उऱ्ऱार्-सीताजी को (ढूँढ़) देखने के काम में प्रवृत्त; कळि उऱ-उनको आनन्द देते हुए; कत्तिन्त-सम्यक् बने; कामर् पण् उऱ-चाहनीय गीत के समान; किळवि चैव्वाय्-बोली बोलनेवाले लाल अधर; पडै उऱ-(भाले, तलवार आदि) हथियारों के समान; नोक्किताळै-आँखों वाली सीताजी को; अण् उऱ तिऱत्तुम्-ध्यान के साथ ढूँढ़े हुए सभी स्थानों में; काणार्-(कहीं भी) न देख पाकर; इटर् उऱ मन्तत्तर्-दुःख-ग्रस्त मन वाले होकर; रैय्त्तार्-शिथिल हुए । ८९२

आकाश का स्पर्श करते हुए उन्नत ज्योतिर्मय उस श्वेत पर्वत पर जाकर खूब देखने लगे । पर मन को आनन्द देते हुए सुस्वरित मोहक गाने के समान बोली वाली और भाला, तलवार आदि के समान आँखों वाली सीताजी को न देख पाने के कारण दुःखी बनकर श्रान्त हुए । ८९२

ऊदैपोल्	विशैयिन्	वैङ्ग	णुळुवैपोल्	वयव	रोङ्गल्
आदियै	यहन्ऱु	शैल्वा	ररक्कत्ताल्	वञ्जिप्	पुण्ड
शीदपो	हिन्ऱाळ्	कून्तल्	वळ्ळीइवन्ऱु	पुवन्ऱ	जेर्न्त
कोदैपोऱ्	किडन्त	कोदा	वरियिन्ऱैक्	कुऱ्हिच्	चैन्ऱार् 893

ऊतै पोल्-पवन-सदृश; विशैयिन्-वेगवान; वैम् कण्-भयभीत करनेवाली आँखों के; उळुवै पोल्-बाघों के समान; वयवर्-वीर; ओङ्कल् आतियै-पर्वत आदि स्थान को; अकन्ऱु-छोड़कर; चैल्वार्-आगे बढ़े; अरक्कत्ताल्-राक्षस (रावण-) द्वारा; वञ्जिप्पु उण्ट-अपहृत; चोतै पोकिन्ऱाळ्-हो जानेवाली सीता के; कून्तल् वळ्ळीई वन्तु-केश से सरक आकर; पुवन्तम् चेर्न्त-भूमि पर पड़ी; कोतै पोल्-माला के समान; किटन्त-पड़ी हुई; कोतावरियिन्तै-गोदावरी के; कुऱ्किच् चैन्ऱार्-समीप गये । ८९३

पवन के समान गति वाले और भयानक आँखों के बाघों के समान बलशाली वे वीर उस पर्वत को भी छोड़कर आगे बढ़े । सामने गोदावरी नदी दिखायी दी । वह सीताजी के, जो रावण से अपहृत हो जा रही थीं, केश से गिरी हुई माला के समान लगती थी । ८९३

अळुहिन्ऱ तिरैयिऱ् राहि यिळिहिन्ऱ मणिनीर् याऱु
 तौळुहिन्ऱ शनहन् वेळ्वि तौडङ्गिय शुरुदिच् चोल्लाल्
 उळुहिन्ऱ पौळुदि तीन्ऱ वौरुमहट् किरङ्गि जालम्
 अळुहिन्ऱ कलुळि वारि यामेनप् पौलिन्द दन्ऱे 894

अळुकिन्ऱ-उठनेवाली; तिरैयिऱ् आकि-तरंगों से युक्त होकर; इळिकिन्ऱ-पर्वत से झरनेवाली; मणि नीर् याऱु-मणिसम जल की नदी; तौळुकिन्ऱ-वन्दनीय; चनकन् वेळ्वि तौडङ्गिय-जनकयज्ञारम्भार्थ; चुरुति चोल्लाल्-वेदोक्त रीति से; उळुकिन्ऱ पौळुतिन्-जोतते समय; ईन्ऱ-(भूमि द्वारा) दत्त; औरु मकट्कु-अप्रमेय देवी के; इरङ्कि-दुःख से सहानुभूति में कातर होकर; जालम्-माता भूमि; अळुकिन्ऱ-जो रोयीं उससे निकली; कलुळि वारि आम्-अश्रुधारा है, ऐसा; पौलिन्तु-दृश्य-देती रही। ८९४

उस पर तरंगों उठती-गिरती थीं। मणि-सम स्वच्छता के साथ वह नदी पर्वत से उतर रही थी। जब पूज्य जनक ने यज्ञारम्भ में वेदमन्त्रों के साथ हल चलाया तब भूमिदेवी ने सीता को जनाया था। उस अप्रतिम देवी को रावण हर ले गया और माता भूमि सहानुभूति से आँसू बहाने लगी। यह गोदावरी नदी उस भूमिदेवी की अश्रुधारा के समान लगती थी। ८९४

आशिल्पे रुलहिऱ् काण्पोर् अळवैन् लैन्नु माहिक्
 काशौडु कतहन् द्वविक् कवितुऱक् किडन्द कान्या
 ऐशिल्पो ररक्कन् मार्वि त्रिडैपडित् तैरुवं वेन्दत्
 वीशिय वडह मीक्को लीडेन विळङ्गिऱ् इन्ऱे 895

काचौटु कतकम् तूवि-रत्न व स्वर्ण छितराते हुए; कवित् उऱ-आकर्षणयुक्त; किडन्त कान् याऱु-बहनेवाली वह जंगली नदी; आचु इल्-दोषहीन; पेर् उलकिल्-इस बड़ी भूमि पर; काण्पोर्-उसको देखनेवाले; अळवै नूल् अँतलुम् आकि-तर्कशास्त्र-सम बनकर; अँरुवं वेन्तन्-गीधों के राजा द्वारा; एचु इल्-अनिन्द्य; पोर् अरक्कन्-युद्धचतुर राक्षस (रावण) के; मारपित् इटै-वक्षमध्य से; परित्तु वीचिय-छीनकर फेंके हुए; मी कोळ् वटकम् ईतु अँत-श्रेष्ठ रत्नहार क्या यह, ऐसा; विळङ्किऱ्-शोभित रही। ८९५

वह उन्मत्त नदी अपनी लहर-हस्तों द्वारा रत्न के साथ स्वर्ण बिखेरती हुई बह रही थी। वह अनिन्द्य इस भूमि पर दर्शकों के लिए तर्कशास्त्र के समान शोभायमान थी। (तर्कशास्त्र अनेक अर्थों को देनेवाला है, यह नदी भी अनेक वस्तुओं को देनेवाली है।) वह रावण के रत्नहार के समान भी लगी, जिसको गीधों के राजा जटायु ने छीनकर फेंक दिया था। ८९५

अन्नदि मुळुडु नाडि याय्वलै मयिळै याण्डुम्
 शन्नदि युऱ्ऱि लादार् नैडिदुपिन् रविरच् चन्ऱार्

इत्तदी दिलाद दीदेत् रियावैयु मँण्णुड् गोळार्
 शौत्तदी विनैह डीर्क्कुञ् जुवणहत् तुरैयिर् पुक्कार् 896

इत्ततु ईतु-यहाँ यह है; इलाततु ईतु-जो नहीं है, वह यह है; यावैयुम्-(ऐसा जानकर) सभी को; मँण्णुम् कोळार्-सोचकर देखने को प्रवृत्ति वाले; अ नति मुळुतुम्-उस नदी-प्रदेश भर में; नाटि-खोजकर; आय् वळै मयिलै-(श्रेष्ठ) चुने हुए कंकण-धारिणी मयूर-निभ सीता के; याण्टुम्-कहीं भी; चत्तितियुर्-रिलातार्-दर्शन न करके; नैटितु-लम्बे मार्ग को; पिन् तविर-पीछे छोड़ते हुए; चैन्शार्-आगे बढ़े; चौत्त-शास्त्रों में कथित; तीविनैकळ्-पापों का; तीर्क्कुम्-निवारण करनेवाली; चुवणकम्-शोणक (शोन); तुरैयिर् पुक्कार्-के तट के प्रदेश में प्रविष्ट हुए । ८९६

वे वानर वीर बुद्धिमान थे । यहाँ रहता यह है, यहाँ यह नहीं रहता —इस तरह खूब सोच-समझनेवाले उन्होंने नदी तट पर सर्वत्र अन्वेषण किया । पर कहीं भी चुने हुए श्रेष्ठ कंकण वाली कलापी-सी सुन्दरी सीता को देख नहीं पाये । लम्बे मार्ग को तय करते हुए वे बढ़ते चले । फिर पापनाशक शोण नदी पर आये । ८९६

शुरुम्बोडु तेनुम् वण्डु मन्तमुन् दुवन्त्रिप् पुळ्ळुम्
 करुम्बोडु शौन्न्र् काडुड् गमलवा विहळु मल्हिप्
 पेरुम्बुनन् मरुदम् जूळ्न्द किडक्कैपिन् किडक्कच् चैन्शार्
 कुरुम्बेनोर् मुरञ्जुञ् जोलैक् कुलिन्दमुम् पुस्तुक् कौण्डार् 897

चुरुम्पोट-भ्रमरों के साथ; तेनुम् वण्डुम्-मधुमक्खियाँ और अलिकुल; अन्तमुम्-और हंस; पुळ्ळुम्-और अन्य पक्षी; तुवन्त्रि-मिलकर; करुम्पोटु-ईख के साथ; चै नैल् काटुम्-शालि के खेत; कमल वाविकळुम्-कमलसर; मल्कि-अधिक है; पेरुम् पुतल्-अधिक जल के साथ; मरुतम् चूळ्न्त-‘मरुदम्’ प्रदेशों से आवृत; किटक्कै-स्थान; पिन् किटक्क-पीछे रह जाये, ऐसा; चैन्शार्-जो गये; कुरुम्पे तीर्-डाभ; मुरञ्चुम्-जहाँ अधिक संख्या में हैं; जोलै-ऐसे नारियल के खेतों के बागों से पूर्ण; कुलिन्दमुम्-कुलिन्द देश को भी; पुस्तु कौण्डार्-पीछे छोड़ चले । ८९७

बाद वे उन जलसमृद्ध ‘मरुदम्’ प्रदेशों को पार करके गये, जिनमें ईख और लाल धान के खेत भरपूर थे और जहाँ भ्रमर, मधुमक्खियाँ, हंस और अन्य पक्षी कसरत से पाये गये और अनेक कमल-सर थे । वे कुलिन्द देश में आये, जहाँ नारियल के फलों सहित नारियल के तरुओं के घने भाग थे । वहाँ खोजने के बाद उसको भी छोड़ वे बढ़े । ८९७

कौङ्गण मेळु नीङ्गिक् कुडहडर् उरळक् कुप्पै
 शङ्गणि पान्न नैय्द उण्बुत्त इविर वेहित्
 तिङ्गळिन् कौळ्न्दु शुरुञ् जिमयनीळ् कोट्टुत् तेवर्
 अङ्गहळ् कप्प निन्ऱ वरुन्ददिक् करुह रात्तार् 898

कोंङ्कणम् एळुम्-कोंकण के सातों भागों को; नीङ्कि-छोड़कर; कुट कटल्-पश्चिमी सागर में उत्पन्न; तरळक् कुप्प-सुन्दरताओं के ढेर; चङ्कु-शंख; अणि पात्तल्-सुन्दर नीलोत्पल पुष्प; नैय्तल्-'नैय्दल' के फूल; तण् पुत्तल्-इन्से पूर्ण शीतल जलाशयों वाले प्रदेशों को; तविर एकि-छोड़ जाकर; तिङ्कळिन् कौळुन्तु-चन्द्र-पल्लव, चाँदनी से; चुरुम्-आवृत; चिमय-शिखरों वाले; नीळ् कोट्टु-लम्बे शीर्ष भागों से युक्त; तेवर अङ्ककळ्-देवों के सुन्दर हाथ; कूप-गुड़े रहें, ऐसे; निन्नु-उन्नत; अरुन्तत्तिकु-अरुन्धती गिरि; अरुक् आत्तार्-के समीपस्थ हुए । ८६८

फिर वे कोंकण देश के सातों भागों को पार करके उन स्थानों में गये जहाँ पश्चिमी सागर में उत्पन्न शंख, नीलोत्पल और 'नैय्दल' के फूल से भरी शीतल नीची जमीन थी । आगे वे अरुन्धती पर्वत के पास पहुँचे । उस पर्वत के शिखरों को चन्द्र का पल्लव रूपी चाँदनी आवृत करती थी । उसके शिखर ऊँचे थे । वह पर्वत इतना ऊँचा उठा हुआ था कि देवतागण भी उसके सामने अजलिवद्ध खड़े रहे । ८९८

अरुन्ददिक्	करुहु	शैन्डाण्	डळहिनुक्	कळहु	शैय्दाळ्
इरुन्ददिक्	कुणरन्दि	लादा	रेहिन्ना	रिडैयर्	मादर्
पैरुन्ददिक्	करुन्दैन्	माळु	मरहदप्	पैरुङ्गुन्	रैय्दि
इरुन्ददिङ्	डीरन्डु	शैन्डार्	वेङ्गडत्	तिस्रत्त	कालै 899

अरुन्तत्तिकु-अरुन्धती गिरि के; अरुक् चैन्ड-पास जाकर; आण्ट-वहाँ; अळकिन्नुक्कु-सुन्दरता को; अळ्कु चैय्ताळ्-सुन्दरता प्रदान करनेवाली (अति सुन्दर); इरुन्त तिकु-(सीता) जहाँ रहें, वह दिशा; उणरन्तिलातार्-न जान सके; एकितार्-जो जाते हुए; इटैयर् मातर्-गवालिन-स्त्रियाँ; पैरुम् तत्तिकु-अपने अधिक दही को; अरुम् तेन् माळुम्-वदले में देकर जहाँ अप्राप्य शहद प्राप्त करती हैं; मरकत पैरुम् कुन्ड-बड़ी मरकतिगिरि; अय्ति-पहुँचकर; इरुन्तु-(कुछ देर) ठहरकर; अतिल् तीरन्तु-उससे हटकर; चैन्डार्-आगे जाते वने; वेङ्कटत्तु-वेंकटगिरि पर; इडत्त कालै-जब आये रहे, तब । ८६६

अरुन्धती के पास जाने पर भी उन्हें 'सुन्दरता कहँ सुन्दरता दिलानेवाली' सीताजी का पता नहीं लगा । वे आगे जाकर मरकतपर्वत पर आये, जहाँ गोपांगनाएँ अपना जमा हुआ दधि देकर उसके वदले में पर्वत-कुमारियों से शहद लेती थीं । वहाँ कुछ देर ठहरने के बाद उसको भी त्यागकर जब वे श्रीवेंकटगिरि पर आये, तो (देखा) । ८९९

मुनैवरु	मडैव	लोर्	मुन्देनाट्	चिन्दै	सूण्ड
विनैवरु	नैडियै	माळु	मैय्युणर्	वोरुम्	दिण्णोर्
अनैवरु	ममरर्	मादर्	यावरुज्	जित्त	रैन्वोर्
अनैवरु	मरुवि	नन्नीर्	नाळम्बन्	दाड	हिन्डार् 900

मुत्तैवरुम्-महर्षियों; मरैवलोहम्-और वेदवित ब्राह्मणों ने; मुन्तै नाळ्-पूर्व-जन्म में; चिन्तै मूण्ट-मन लगाकर जो किया, उसके फलस्वरूप मिलनेवाले; वितै वरु नैरियै-जन्म-मार्ग को; माड्डुम्-बदलनेवाले; मैय् उणर्वोहम्-तत्त्वज्ञ और; विण्णोर् अत्तैवरुम्-सभी देवता; अमरर् मातर यावरुम्-सभी देवांगनाएँ; चित्तर् अत्तैवरुम्-सिद्ध जाति के सभी; अरुवि नल् नोर्-नदी के पवित्र जल में; नाळुम्-प्रतिदिन; वन्तु आटुकिन्डार्-आकर स्नान करते हैं। ६००

उस गिरि पर महर्षि लोग, वेदपाठी ब्राह्मण, वे तत्त्वज्ञ जो प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मिलनेवाले नरक-मार्ग को रोककर सन्मार्ग अपना सकते हैं, देवता लोग, देवांगनाएँ और सिद्ध लोग आकर वहाँ की पवित्र नदी में स्नान करते हैं। ९००

पैय्द वैम्बोर् डि युम्बैरुड् गासमुम्, वैद वैज्जोलुम् मङ्गैयर् वाटकणित्
अय्द वज्जह वाळियु म्ण्णरुच्, चैय्द वम्बल शैय्हुनर् देवराल् 901

तेवर्-देवता लोग; पैय्त-मदमत्त; ऐम् पोरियुम्-पंचेन्द्रिय को; पैरुम् काममुम्-बड़ी कामेच्छा को (और); वंत वैम् चोलुम्-गाली के कठोर वचनों; मङ्कैयर्-स्त्रियों के; वाळ् कणित्-तलवार-सी आँखों से; अय्त-प्रेषित; वज्जक वाळियुम्-वंचक (दृष्टि रूपी) शरों को; अण् अड्-उनके अभिप्राय को नष्ट करते हुए (जीतकर); चैय् तवम्-करणीय तप; पल चैय्कुत्तर्-विविध रूप से करनेवाले बने हैं। ६०१

उस श्रीवेंकटाद्रि पर देवगण भोगाभिलाषी पञ्चेन्द्रिय, कामवासना, दूसरों की गाली के वचनों और स्त्रियों की तलवार-सम आँखों के फेंके हुए दृष्टि रूपी शरों पर विजय पाकर तपस्या कर रहे थे। ९०१

वलङ्गो	णैमि	मल्लैनिड	वात्तवत्
अलङ्गु	ताळिणै	ताङ्गिय	वम्मलै
विलङ्गुम्	वीडु	हिन्डु	मैय्न्नैरिप्
पुलङ्गोळ्	वार्हट्	कनैयडु	पौय्क्कुमो 902

वलम् कौळ् नेमि-विजयशील सुदर्शन चक्रधर; मल्लै निड वात्तवत्-मेघश्याम विष्णुदेव (वेंकटपति) के; अलङ्कु ताळ् इणै-शोभायमान चरणद्वय को; ताङ्किय-धारण करनेवाले; अ मल्लै-उस वेंकटाद्रि पर रहनेवाले; विलङ्कुम्-जानवर भी; वीडु उडुकिन्डुत्त-मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं; मैय् नैरि-सच्चा मार्ग; पुलङ्ग कौळ्वार्क्कु-(पर) जाकर जितेंद्रिय बने हुआ के लिए; अनैयतु-वह मोक्षप्राप्ति; पौय्क्कुमो-अप्राप्य हो सकती है क्या। ६०२

विजयशील सुदर्शनचक्रधर और मेघश्याम श्री विष्णुदेव के उज्ज्वल चरणद्वय के धारक उस वेंकटाचल पर रहनेवाले पशु भी मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। तब उत्तम उपायों द्वारा इन्द्रियों का दमन जो कर चुके हैं, उन तपस्वियों के लिए मोक्ष चूका रहेगा क्या ?। ९०२

आय कुन्त्रिन्नै यैय्दि यरुन्दवम्, मेय शैल्वरै मेवित्तर् मैय्न्नैरि
नाय हन्त्रुन्नै नाळुम् वणङ्गिय, तूय नड्डवर् पादङ्गळ् शूडित्तार् 903

आय कुन्त्रिन्नै—ऐसे उस पर्वत को; अय्यति—पहुँचकर; अरुम् तवम् मेय—कठिन तप में लगे हुए; शैल्वरै—तपोधनों के पास; मेवित्तर्—जाकर; मैय्न्नैरि नायकन् तन्नै—मोक्षदायक स्वामी श्रीवेकटनाथ की; नाळुम् वणङ्किय—प्रतिदिन जिन्होंने पूजा की उन; तूय नल् तवर्—पवित्र श्रेष्ठ तपस्वियों के; पातङ्कळ् चूडित्तार्—चरणों पर अपने सिर धरे। ६०३

वानरयूथप उस श्रीवेकटाचल पर गये। कठिन तप में लीन उन तपोधनों के पास पहुँचे। वे प्रतिदिन मोक्ष के स्वामी श्रीवेकटाचलपति की पूजा करनेवाले थे। वानरों ने उन पवित्र और उत्तम तपस्वियों के पादारविन्द को अपने शीशों में धर लिया (दण्डवत् की)। ९०३

शूडि याण्डच् चुरिहुळ् र् रोहैयैत्, तेडि वार्पुनर् इण्डिरैत् तौण्डैन्
नाडु नण्णुहिन् इरम्मर् नावलर्, वेड मेयित्तर् वेण्डुरु मेवुवार् 904

वेण्डु उरु—मनमाने रूप; मेवुवार्—ले सकनेवाले वे, चूटि—चरणों पर सिर नवाकर; आण्डु—उस पर्वत पर; अ चुरि कुळल् तोक्यै—उन घुँघराले केशों वाली (सीता) को; तेडि—खोजकर; मर् नावलर्—वेदवित ब्राह्मणों का; वेडम् मेयित्तर्—वेश धरकर; तैळ् तिरै—स्वच्छ लहरो वाले; वार् पुनल्—अधिक जल से भरे; तौण्डैन् नल् नाटु—‘तौण्डे’ नामक श्रेष्ठ देश में; नण्णुकिन्ऱार्—पहुँचते हैं। ६०४

वे वानर कामरूप थे। वे पूर्वोक्त तपस्वियों के चरणों को नमस्कार करके उस पर्वत पर घुँघराले केश वाली सीताजी की खोज में लगे। पर वे मिलीं नहीं। अतः वेदवित ब्राह्मणों का वेश धरकर आगे गये और ‘तौण्डे’ प्रदेश में आये, जो तरंगों से पूर्ण श्रेष्ठ जलाशयों से समृद्ध था। ९०४

कुन्ऱु शूळ्न्द कडत्तौडुङ् गोवलर्, मुन्ऱिल् शूळ्न्द पडप्पैयु मीय्पुनल्
शैन्ऱु शूळ्न्द किडक्कैयुन् देण्डिरै, मन्ऱु शूळ्न्द परप्पु मरुङ्गैलाम् 905

कुन्ऱु चूळ्न्त—पर्वतों से घिरे हुए; कडत्तौटुम्—जंगली (कंकड़ीले) प्रदेश; गोवलर् मुन्ऱिल् चूळ्न्त—गवालों के आँगनों को घेरते हुए रहनेवाले; पडप्पैयुम्—बाग और; मीय् पुनल्—अधिक जलराशि; चैन्ऱु चूळ्न्त—जहाँ भरी रहती है; किडक्कैयुन्—ऐसे खेतों के प्रदेश; तैळ् तिरै मन्ऱु—स्वच्छ तरंगों से आवृत; मन्ऱु चूळ्न्त—जहाँ बालू के टीले रहते हैं; परप्पुम्—ऐसे समुद्रतटीय प्रदेश; मरुङ्कु अलाम्—सर्वत्र (पाये जाते हैं, ऐसा देश है वह देश)। ६०५

उस ‘तौण्डे’ देश में पाँचों प्रकार के भूभाग थे। पर्वतावृत कंकड़ीले जंगल (पाले); गवालों के आँगनों के सामने बाग; जलसमृद्ध ‘मरुदम्’ (खेतों के प्रदेश) और स्वच्छ समुद्री लहरों से आवृत बालू के स्थलों से

युक्त 'नैयदल' (समुद्र-तटीय प्रदेश) आदि पाँचों भूभाग, कुरिञ्जि, मुल्लै, मरुदम्, नैयदल और पालै उस देश में पाये गये । ९०५

शूल डिप्पल विन्शुळै तूङ्गुदेन्, कोल डिप्प वैरीङ्क्कुल मळ्ळरेर्च्
चाल डित्तरुज् जालियिन् वैण्मुळै, तोल डिक्किळै यन्नन् दुवैप्पत्त 906

कुलम् मळ्ळर्-झुण्डों में कृषक; एर् कोल् अटिप्प-जब जोतते और (बैलों को) वेत से मारते हैं; तोल् अटि-चमड़े से संयुक्त पैरों वाले; किळै अत्तम्-हंसों के समूह; वैरीङ्-डरकर; चूल् अटि-गर्म (फल) को जड़ में ही धारण करनेवाले; पलविन् चुळै-कटहल के फलों से; तूङ्कु तेन्-चूनेवाले शहद द्वारा; चाल् अटि तरुम्-हल के द्वारा बने कूंडों में पले हुए; चालियिन् वैळ् मुत्तै-शालि के श्वेत अंकुरों को; तुवैप्पत्त-पैरों से रौंदनेवाले बने हैं । ६०६

झुण्डों में कृषक हल जोतते हैं और बैलों को अपने बेंतों से पीटते हैं । उससे डरकर हंसकुल, जिनके पैर चमड़े से मिले हुए होते हैं, भागते हैं और कूंडों में उन शालि के अंकुरों को रौंद देते हैं । वे अंकुर उस कटहल के फलों के रस से उगे हैं । वे ऐसे कटहल के तरु हैं, जिनकी जड़ में ही कटहल के फल लगते हैं । ९०६

शैरुहु रुङ्गणिर् रेङ्गु वळैक्कुलम्, अरुहु रङ्गुम् वयन्मरुङ् गाय्च्चियर्
इरुहु रङ्गु पिङ्गिय वाळैयिर्, कुरुहु रङ्गुङ् गुयिलुन् डुयिलुमाल् 907

वयन् मरुङ्कु-खेतों में; चैरु कुरुम् कणिल्-चंचल पुतलियों की आँखों के समान; तेम् कुवळै कुलम्-मधुमक्खियों-सहित कुवलय; अरुहु उरङ्कुम्-पास-पास सोते हैं (बन्द रहते हैं); आय्च्चियर्-ग्वालिनों के; इरु कुरुङ्कु-दो ऊरुओं के समान; पिङ्गिय-शोभायमान; वाळैयिल्-कदली तरुओं पर; कुरुहु उरङ्कुम्-सारस सोते हैं; कुयिलुम् तुयिलुम्-कोयलें भी सोती हैं । ६०७

वहाँ के खेतों में कुमुद-कलियाँ मीलित हैं, जो अपने ऊपर रहनेवाली मधुमक्खियों के कारण ग्वालिनों की चंचल पुतलियों-सहित आँखों के समान लगती हैं । ग्वालिनों के पुष्ट ऊरुओं के समान केले के तरुओं पर सारस सोते हैं, कोयलें भी सोती हैं । ९०७

तैरुवि नार्प्पुरुम् बल्लियन् देरुमयिल्, करुवि मामळै येन्ऱु कळिप्पुरा
पोरुनर् तण्णुमैक् कत्तन्मुम् बोहल, मरुवि नार्क्कु मयक्कमुण् डाङ्गौलो 908

तैरुविन् आर्प्पु उरुम् वीथियों में बजनेवाले; पल्लियम्-वाद्यों को; तेर्-सुनकर समझनेवाले; मयिल्-मोर; करुवि मा मळै अँन्ऱु-बारिश के कारणभूत मेघ समझकर; कळिप्पु उरा-मुदित नहीं होते; अत्तन्मुम्-हंस भी; पोरुनर् तण्णुमैक्कु-नर्तकों के मृदंग-नाद से डरकर; पोक्कल-नहीं हटते; मरुवितार्क्कु-चिर-परिचितों में; मयक्कम् उण्णाम् कौलो-भ्रम होगा क्या । ६०८

वीथियों में (सौधों के अन्दर से) विविध वाद्य बज उठते हैं। उनको सुनकर मोर यह समझकर खुश नहीं होते और नाचते कि वे वारिश के मूल-भूत कारण जो मेघ है उनका गर्जन है। वैसे ही नर्तक लोगों के मृदंग की ध्वनि सुनकर हंस इस डर से नहीं भागते कि वह मेघगर्जन है। क्योंकि लोगों को परिचित वस्तुओं के सम्बन्ध में संशय या भ्रम हो सकता है क्या ? । ९०८

तेरै वेंन्ऱुयर् तेंड्गिळम् पाळैयै, नारै येंन्ऱिळ्ड् गेंण्डै नडुङ्गुव
तारै वत्तुलैत् तण्णिळ वाम्बलैच्, चेरै येंन्ऱु पुलम्बुव तेरैये 909

तेरै वेंन्ऱु-रथ को जीतकर; उयर्-ऊँचे उगे हुए; तेंड्कु-नारियल के; इळम् पाळैयै-छोटे डण्ठलों को (वालों की); इळम् केंण्टै-छोटी 'केंण्डै' मछलियाँ; नारै अेंन्ऱु-सारस समझकर; नडुङ्कुव-भयभीत होती है; तारै-लम्बी; वन् तलै-बड़े अग्रभाग की; तण् इळ आम्पलै-शीतल छोटी कुमुदकलियों को; तेरै-दादुर (मेंढक); चेरै अेंन्ऱु-"शारै" सर्प समझकर; पुलम्बुव-कलपते हैं। ६०६

रथों से भी ऊँचे नारियल के तरुओं पर सफेद डठल दिखायी देते हैं। उनको देखकर 'केंण्डै' नाम की मछलियाँ सारस समझ लेती हैं और भय खाती हैं। वैसे ही शीतल और बाल-कुमुद-कलियों को 'शारै' सर्प समझकर दादुर (मेंढक) डरते हैं और चिल्लाते हैं। ९०९

नळ्ळि वाङ्गु कडयिळ नव्वियर्, वेंळ्ळि वाल्वळै वीशिय वेंण्मणि
पुळ्ळि नारै शिन्नैपौरि यादवेंन्, रुळ्ळि यामै मुडुहि नुडैप्पराल् 910

नळ्ळि वाङ्कु-केकड़ों को पकड़नेवाली; इळ-जवान; कटै नव्वियर्-नीच जाति की भृगनयनियाँ; वेंळ्ळि वाल् वळै-श्वेत प्रकाशमय शंखों से; वीशिय-निकली हुई; वेंण् मणि-श्वेत मुक्ताओं को; पुळ्ळि नारै-चित्तियों वाले सारस के; पौरियात् चित्तै-न दृष्टे अण्डे; अेंन्ऱु-समझकर; यामै मुतुक्किल्-कछुओं की पीठ पर; उटैप्पर्-तोड़ती है। ६१०

उस देश में नीचकुल की भृगनयनी नारियाँ केकड़े पकड़ती हैं। तब श्वेतशंखों से निकले श्वेत मोती पाये जाते हैं। वे उनको चित्तियों से भरे सारस के अण्डे समझ लेती हैं और उनको कछुए की पीठ पर मारकर तोड़ने का प्रयास करती हैं। ९१०

शेट्टि लङ्गडु वन्ऱिशि पुन्ऱैयिर्, कोट्ट तेम्बल चित्तुगन्निक् कून्ऱुळै
तोट्ट मैन्दवौ दुन्ऱरिर् रुङ्गुतेन्, ईट्ट मङ्गदिर् रीयत्तित्ति दुण्णुमाल् 911

चेट्ट इळम् कटुवन्-बहुत छोटी उम्र का बन्दर; चिर् पुन्ऱु कैयिल्-अपने बहुत छोटे हाथ से; कोट्ट-डाल पर के; तेम् पलाविन् कनि-मधुर कटहल के फल के; कन् चूळै-वक्र कोओं को; तोट्टु-नीच लेकर; अमैन्त पौतुम्परिल्-जहाँ वह रहा

उस बाग में; तूङ्कु तेन्-लगातार झरनेवाले शहद की; ईट्टम् अङ्कु अतित्-वहाँ धार में; तोयत्तु-मग्न कर लेकर; इतितु उण्णुम्-मजे के साथ खाता था । ६११

(उस तौण्डै देश की समृद्धता देखिए:) एक छोटा वानर अपने छोटे हाथ से मीठे कटहल के फल से कोए नोच लेता है । वहाँ बाग में शहद लगातार झर रहा है । उसमें मग्न करके उस कोए को खाता है । ९११

अन्न तौण्डैनल् नाडु कडन्दहन्, पौन्ति नाडु पौरुविल दैय्दिनार्
शौन्ने लुङ्गरुम् बुङ्गमु हुज्जिन्, दिन्नल् शैय्यु नैरियरि देह्वार् 912

अन्न-ऐसे; तौण्डै नल् नाटु-‘तौण्डै’ नाम के अच्छे देश की; कटन्तु-पार करके; अकल्-विस्तृत; पौरु इलतु-और अनुपम; पौन्ति नल् नाटु-कावेरी के श्रेष्ठ देश; अय्तिनार्-पहुँचे; चैम् नैलुम्-लाल शालि के धान और; करुम्पुम्-ईख; कमुकुम्-और गुवाक के तरुओं से; चैरिन्तु-पूर्ण हो; इन्नत्तल् चैय्युम्-जो मार्ग कष्ट देता था; नैरि-उस मार्ग में; अरितु एकुवार्-सायास गये । ६१२

ऐसे समृद्ध उस देश को पार कर वे कावेरी (पौन्नि) देश में आये । उस विशाल देश में मार्ग सुगम नहीं था, क्योंकि ईख, शालि, क्रमुकतरु आदि उतने घने रूप से उगे हुए थे । ९१२

कौटिऱु ताङ्गिय वाय्क्कुळु नारैवाळ्, तडऱु ताङ्गिय कूनिळन् दाळैयिन्
मिटऱु ताङ्गुम् विरुप्पुडैत् तीङ्गनि, इडऱु वार्नरुन् देन्नि निळुक्कुवार् 913

कौटिऱु ताङ्गिय-जबड़ों के साथ युक्त; वाय्-चोंचों वाले; कुळु-झुण्डों में रहनेवाले; नारै वाळ्-सारस जहाँ रहते हैं; तडऱु ताङ्गिय-पत्ते होते हुए; कून्-झुके हुए; इळम् ताळैयिन्-छोटी आयु के नारियल के पेड़ों के; मिटऱु-गले में; ताङ्कुम्-धत; विरुप्पुडै-प्यारे लगनेवाले; तीम् कति-मीठे फलों को (जो नीचे गिरे पड़े हैं); इडऱु वार्-पैरों से ठोकर मारकर जो चलते हैं; नरुम् तेत्तिन्-वे वहाँ के सुवासित शहद में; इळुक्कुवार्-फिसलते बनते हैं । ६१३

सारस की चोंचों से चमड़े की थैली का-सा अंग लगा हुआ है । ऐसी चोंचों से युक्त सारस पक्षी उस देश में कसरत से पाये जाते हैं । उस देश में सब जगह डंठलों वाले नारियल के तरुओं के ऊपर से नारियल के प्यारे लगनेवाले मीठे फल गिर पड़े हैं । लोग पैदल चलते हैं तो उनसे ठोकर खाते हैं; और, पास शहद बहता रहता है और उसमें फिसल जाते हैं । ९१३

कुळुवु मीन्वळर् कुट्ट मैत्तक्कीळा, अळुवु पाड लिमिल्हरप् पेन्दिरत्
तौळुहु शार्रहन् कून्नेयि नूळुमुडै, मुळुहि नीर्क्करुड् गाक्कै मुळैक्कुमे 914

करु नीर् काक्कै-काले करंड; कुळुवु-मिलकर; मीन् वळर्-मछलियाँ जहाँ पलती हैं; कुट्टम् अँत्त-छोटे कुण्ड; कौळा-समझकर; अळुवु-उठकर; पाटल् इमिळ्-गाने के समान स्वर देनेवाले; करुप्पेन्तिरत्तु-ईख के यन्त्रों (कोल्हों)

से; ओळुक्कु-निकलकर जो वह रहा था; चारु-वह रस; अकन् कर्तयिन्-मरे बड़े कुण्डों में; ऊळ् मुर्-क्रम से; मुळुकि मुळैक्कुम्-गोते लगाकर उठते थे । ६१४

वहाँ ईख के कोल्लुओं से वहनेवाले इक्षुरस से भरे कुण्डे हैं । उनको काले रंग के करंड पक्षी मछलियों के साथ रहनेवाले कुण्ड समझकर उनमें बारी-बारी से गोते लगाते और ऊपर उठते हैं । ९१४

पूने रङ्गिय पुळ्ळुरै शोलैहळ्, तेनी रङ्गु शौरिदलिर् रेर्विल
मीने रङ्गुम् वैळ्ळ मँत्तावैरीइ, वान रङ्गण् मरङ्गळिन् वैहुमाल् 915

पू नेरङ्किय-फूलों पर घने रूप से मिलकर मँड़रानेवाले; पुळ् उरै-भ्रमर जहाँ रहते हैं; चोलैकळ्-वे बाग; तेन्-शहद; ओरङ्कु-अधिक; चौरितलिन्-गिराते हैं, तो; तेर्विल-(सच्चाई) न जानकर; मीन् नेरङ्कुडम्-मछलियों से भरा; वैळ्ळम् अँता-प्रवाह समझकर; वैरीई-डरकर; वानरङ्कळ्-वानर; मरङ्कळिन् वैकुम्-पेड़ों के ऊपर ही रह जाते हैं । ६१५

वहाँ के बागों में फूल अधिक हैं और उन पर भीरे गुँजते, मँड़राते रहते हैं । वहाँ शहद इतना बहता है कि वानर उसमें मछलियों के साथ वहनेवाले प्रवाह का धोखा खाते हैं, और डर के मारे डालों से नीचे नहीं उतरते । ९१५

अनेय पौन्ति यहन्वुत्त नाडौरीइ, मनैयिन् माट्चि कुलामलै मण्डलम्
विनैयि न्नीङ्गिय पण्बिनर् मेयितार्, इनिय शैन्दमिळ् नाडुशैन् ईय्दितार् 916

विनैयिन् न्नीङ्किय-बुरे कर्म से छटे हुए; पण्पितर्-श्रेष्ठ गुणी वे वानर; अनेय-उस समृद्ध; पौन्ति अकल्-कावेरी-सिंचित विशाल; पुत्तल् नाटु-उर्वर प्रदेश (चोळ देश) को; ओरीई-छोड़कर; मनैयिन् माट्चि-गृहस्थी का गौरव; कुलाम-जहाँ विद्यमान था; मलै मण्डलम्-पार्वत्य देश (चेर देश); मेयितार्-पहुँचे; इतिय चैन्तमिळ् नाटु-मधुर श्रेष्ठ तमिळ देश (पाण्ड्य देश); ईय्दितार्-पहुँचे । ६१६

बुरी प्रवृत्तियों से मुक्त और सुसंस्कृत वे वानरयूथप ऐसे समृद्ध, कावेरी-सिंचित और विशाल चोळ देश को पारकर पार्वत्यप्रदेश चेर नाटु में आये, जहाँ गृहस्थी के सारे श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे । बाद वे प्यारे और मधुर तमिळ (पाण्ड्य) देश में आये । ९१६

अत्ति रुत्तहु नाट्टिन् यण्डर्ना, डौत्ति रुक्कुमेन् शालुरै यौक्कुमो
अँत्ति उत्तिनु मेळुल हुम्बुहळ्, मुत्तु मुत्तमि लुन्दन्नु मुन्दुमो 917

अ तिरु तकु-उस श्रीसम्पन्न; नाट्टिन्-देश को; अण्टर् नाटु-देवलोक को; औत्तिरुक्कुम्-समानता करनेवाला; अँनुशल्-कहें तो; उरै औक्कुमो-कथन योग्य होगा क्या; अँ तिउत्तितुम्-किसी भी विध; एळ् उलकुम् पुकळ्-सातों लोकों में शंसित; मुत्तुम्-मोती और; मु तमिळुम्-(गद्य, गीत, नाटक की) त्रिविधा तमिळ; तन्तु-देकर; मुन्तुमो-वह देवलोक बढ़ सकेगा क्या । ६१७

‘उस श्रेष्ठ श्रीसम्पन्न देश की देवलोक समानता कर सकता है’ ऐसा कहें तो क्या वह कथन ठीक हो सकेगा ? नहीं । किसी भी तरह देखें—सभी लोकों में प्रशंसित मोती और त्रिविधा (गद्य, गीत और नाटक तीनों शैलियों में साहित्यसम्पन्न) तमिळ के लिए वह कहाँ जायगा ? स्वर्ग ये दोनों दिला सके तभी न श्रेष्ठता में इतना बढ़ सकेगा ? । ९१७

अँन्र तँन्रमिळ् नाट्टिनै यँङ्गणुम्, शँन्र नाडित् तिरिन्दु तिरुन्दित्तार्
पौन्र वारिर् पौरुन्दिनर् पोयित्तार्, तुन्र लोदियैक् कण्डिलर् तुन्रबित्तार् 918

तिरुन्दित्तार्—सुसंस्कृत वे वीर; अँन्र—ऐसे उक्त (यशस्वी); तँन्र तमिळ् नाट्टिनै—दक्षिणी तमिळ् देश में; अँङ्कणुम् तिरिन्दु—सर्वत्र घूमकर; तुन्र नल् ओतियै—घने काले केश वाली (सीता) को; कण्डिलर्—न देख पाते; तुन्रपित्तार्—दुःखी होकर; पौन्रवारिर्—मरणोन्मुख-से; पौरुन्दित्तर्—हतोत्साह; पोयित्तार्—जाते रहे । ६१८

सुसंस्कृत उन वीरों ने दक्षिणी तमिळ् देश में सर्वत्र घूमकर अन्वेषण किया । लेकिन काले घने केश वाली देवी कहीं न मिलीं । वे दुःखमग्न होकर मरणोन्मुख से शिथिल बने जाने लगे । ९१८

वन्त्रि शँक्कलि उन्नतम येन्दिरक्, कुन्त्रि शँत्तदु वल्लैयिर् कूडित्तार्
तँन्रि शँक्कडर् चीहर मारुदम्, निन्त्रि शँक्कु नैडुनैर् नीडुगित्तार् 919

तँन्र तिचै कटल्—दक्षिणी सागर की; चीकर मारुदम्—सीकरों से युक्त वायु; निन्त्रि इचैक्कुम्—स्थिर रूप से शब्द के साथ जहाँ बह रही थी; नैडु नैर् नीडुगित्तार्—लम्बे मार्ग तय करके; वन्त्रि तिचै कळिञ्ज अन्न—सबल दक्षिणी दिशा के बाहक गज के समान; इचैत्ततु—(और सुग्रीव से) जो कहा गया था; मयेन्त्रिरक् कुन्त्रि—उस महेन्द्र पर्वत पर; वल्लैयिल् कूडित्तार्—शीघ्र जा पहुँचे । ६१९

वे उस लम्बे मार्ग में गये, जहाँ दक्षिणी सागर की बूंदों से युक्त हवा शब्द के साथ चल रही थी । फिर वे शीघ्र महेन्द्रपर्वत पर आ गये, जिसका संकेत सुग्रीव ने दिया था और जो बलिष्ठ दक्षिणी दिशा के धारक दिग्गज के समान था । ९१९

15. सम्पादिप् पडलम् (सम्पाति पटल)

मल्लैत्तविण्	णहमैन्	मुळङ्गि	वानुर्
इल्लैत्तवैण्	डिरैक्कर	मैडुत्ति	लङ्गैयाळ्
उल्लैत्तडङ्	गण्णियैन्	तुळैयैन्	रोडिवन्
दल्लैप्पदे	कडुक्कुमद्	वाळि	नोक्कित्तार् 920

मल्लैत्त—वर्षागर्भ; विण् अकम् अँत—मेघों के समान; मुळङ्गि—गर्जन करते हुए; वान् उर—आकाश से लगाकर; इल्लैत्त—उठी हुई; वैण् तिरै करम्—श्वेत

तरंग रूपी हाथों को; अँदुत्तु-उछालते हुए; इलङ्कैयाळ्-लंकादेवी; उळै तट कण्णि-हरिण की-सी आयत आँखों वाली (सीता); अँन् उळै-मुझमें है; अँन्-कहती हुई; ओटि वन्तु-दौड़ती आकर; अळैप्पते-मानो घुला रही हो; कट्टक्कुम्-ऐसा लगनेवाले; अ आळि-उस समुद्र को; नोक्किन्नार्-देखा (उन्होंने) । ६२०

उन्होंने दक्षिणी समुद्र को देखा । वह मेघों के समान गर्जन करता हुआ ऐसा लगा, मानो अपने श्वेत तरंग रूपी हाथों को ऊपर उठाते हुए लंका की देवी उनको यह कहते हुए आमन्त्रित कर रही हो कि हरिणी की-सी, आयत आँखों वाली सीता मेरे यहाँ है । ९२०

विरिन्दुनी	रँण्डिशै	मेवि	नाडित्तिर्
पौरुन्दुदिर्	मयेन्दिरत्	तैन्ऱु	पोक्किय
अरुन्दुणैक्	कविहळा	मलहिल्	शेनैयुम्
पैरुन्दिरैक्	कडलैतप्	पैयर्त्तुडः	गूडिऱ्ऱे 921

नीर्-तुम लोग; विरिन्दु-व्यापकर; अँण् तिच्चै-आठों दिशाओं में; मेवि-जाकर; नाडित्तिर्-खोजने के बाद; मयेन्दिरत्तु-महेन्द्र पर्वत पर; पौरुन्दुतिर्-आकर मिलो; अँन्-ऐसा कहकर; पोक्किय-जिनको भेजा था; अरु तुणै-उन प्रिय साथी; कविहळ् आम्-वानरों की; अलकिल् चेतैयुम्-अपार सेना भी; पैरु तिरै कटल् अँत-उत्तुंग-तरंग-सागर के समान; पैयर्त्तुम्-लौटकर; कूडिऱ्ऱ-आ मिली । ६२१

वहाँ वह सेना भी उनके पास आ मिल गयी, जिसको अंगदादि वीरों ने वहाँ यह कहकर भेज दिया था कि तुम सब आठो दिशाओ में जाकर सीतादेवी को ढूँढ़ो और बाद महेन्द्रपर्वत पर आकर हमसे मिल जाओ । वह सेना ऐसी आयी मानो बड़ी लहरों वाला दूसरा सागर आया हो । ९२१

अऱ्ऱु	नाळ्वरै	यवदि	काट्चियुम्
उऱ्ऱिल्	मिराहव	नुयिरुम्	बौन्ऱुमाल्
कौऱ्ऱव	नाणैयुडः	गुडित्तु	निन्ऱुनम्
इऱ्ऱु	नज्जैय	लित्तियैन्	इण्णिन्नार् 922

नाळ्वरै अवति-अवधि के दिन; अऱ्ऱु-पूरे हो गये; काट्चियुम्-(सीता के) दर्शन भी; उऱ्ऱिल्-न प्राप्त कर सके; इराकवन्-श्रीराघव के; उयिरुम्-प्राण भी; बौन्ऱुम्-छूट जायेंगे; नम् कौऱ्ऱवन्-हमारे राजा की; आणैयुम्-आज्ञा; गुडित्तु निन्ऱुनम्-मानकर चले; इत्ति-अब; नम् चैयल्-हमारा काम; इऱ्ऱु-पूरा हो गया; अँन्-ऐसा; अँण्णिन्नार्-वीर सोचने लगे । ६२२

तब वानरयूथप सोच में पड़ गये । अवधि बीत गयी । देवी के दर्शन भी नहीं हो सके । यह समाचार पायेंगे तो श्रीराम अपने प्राण त्याग देंगे । हमारे राजा की आज्ञा के हम बद्ध हैं । अब हमारा कार्य इति (अन्त) को पहुँच गया । ९२२

अरुन्दवस्	बुरिदुमो	वत्तु	दत्तरेनिन्
मरुन्दरु	नैडुङ्गडु	वुण्डु	मायुदुमो
तिरुन्दिय	दियादु	शैयुदु	तीरुदुमन्
तिरुन्दनर्	तम्पुयिर्क्	किरुदि	यैण्णुवार् 923

तन् उयिर्क्कु-अपने प्राणों का अन्त; अण्णुवार्-संकल्प करके; अरुम् तवम्-कठोर तप; पुरितुमो-करें; अन्तु-वह; अन्नु अँतिन्-नहीं तो; मरुन्तु अरुम्-लाइलाज; नैटु-बहुत घातक; कटु-विष को; उण्डु-खाकर; मायुतुमो-मर जायें; तिरुन्दियतु यातु-(इन दो में) श्रेष्ठ क्या है; अतु-वह; चैयुतु तीरुतुम्-कर चुकेंगे; अँनु-कहकर; इरुन्तनर्-रहे। ६२३

वे अपने प्राण त्यागने की बात भी सोचने लगे। हम जाकर क्या कठोर तपस्या करें? नहीं तो क्या प्रत्यवाय-रहित भयंकर विष खाकर मर जायें? इनमें बेहतर क्या है? वही कर जायेंगे। —ऐसा निश्चय किया उन्होंने। ९२३

करैपोरु	कत्तैहडल्	कनह	माल्वरै
निरैतुवन्	रियवैन्	नैडिदि	रुन्दवर्क्
कुरैशैयुम्	वोरुळुळ	दैन्वु	णर्त्तितान्
अरशिळङ्	गोळरि	ययरुज्	जिन्दैयान् 924

अरचु इळम्-युवराज; कोळ् अरि-सिंह-सदृश (अंगव); अयरुम् चिन्तैयान्-व्याकुल-मन हो; करै पोर्-तट से टकरानेवाले; कत्तै कटल्-गर्जनशील सागर के पास; कत्तक माल् वरै निरै-स्वर्ण मेरुपर्वतों की श्रेणियाँ; तुवन् रिय अँत-भरी खड़ी हों जैसे; नैटितु इरुन्तवर्क्कु-बड़ी संख्या में रहे वीरों से; उरै चैयुम् पोर्ळु-कहने की एक बात; उळतु-है; अँत-कहकर; उणर्त्तितान्-बताने लगा। ६२४

युवराजकेसरी अंगद बहुत शिथिल-मन हुआ। उसने उन वानर-नायकों से, जिनके कन्धे सागर-तीर के पास रहनेवाले स्वर्णपर्वत के शिखरों की लसी श्रेणियों के समान थे, कहा कि तुमसे कहने की एक बात है। वह कहने लगा। ९२४

नाडिनाड् गौणरुदु नळिनत् ताळवान्, मूडिय वुलहिने मुर्रु मुट्टियेन्
राडवर् तिलहनुक् कन्बि तारैत्तप्, पाडवम् विळम्बिनम् पळियिन् मूळ्हित्तोम् 925

नाम्-हम सब; वान् मूटिय-आकाश से आच्छन्न; उलकम्-संसार; मुर्रु मुट्टि नाटि-भर में सामने जाकर खोजते हुए; नळितत्ताळ-कमलाजी को; गौणरुतुम् अँनु-लाएँगे, कहकर; आटवर् तिलकत्तुक्कु-पुरुष-तिलक को; अन्पितार् अँत-प्यारों के समान; पाटवम्-पटु वचन; विळम्पित्तम्-कहा; पळियिन् मूळ्हित्तोम्-अब निंदा में डूब गये। ६२५

हमने पुरुषतिलक श्रीराम से पटुता के साथ यह वादा किया कि हम

आकाश से आच्छादित भूमि पर सर्वत्र ढूँढकर सीताजी को लाकर समर्पित करेंगे; मानो हम वड़े स्नेही हों। पर अब अपयश में मग्न हो गये। ९२५

शैय्दुमैन्	रमैन्ददु	शैय्दु	तीर्न्दिर्लेम्
नौय्दुशैन्	रुर्दु	नुवल	हिर्रिर्लेम्
अय्दुम्वन्	दन्बदो	रिरैय्दुऴ	गण्डिल्लैम्
उय्दुमैन्	रालिदो	रुरिमैत्	ताहुमो 926

चैय्त्तुम् अन्तु-कर देंगे, कहकर; अमैन्ततु-जिसको हाथ में लिया; चैय्त्तु तीर्न्दिर्लेम्-कर नहीं चुके; नौय्त्तु चैन्तु-शीघ्र (अवधि के बीत जाने के पहले) जाकर; उर्दुत्तु-जो घटा उसको; नुवलकिर्दिर्लेम्-निवेदन नहीं कर सके; वन्तु अय्त्तुम्-सिद्धि मिल जायगी; ओर् इरैय्त्तुम्-इसका कोई आसरा; कण्ठिल्लैम्-नहीं देखते; उय्त्तुम् अन्ताल-जीते रहेंगे तो; इतु-यह; ओर् उरिमैत्तु-कोई योग्य काम; आकुमो-होगा क्या। ६२६

जो कर चुकने का वादा किया, उसे हम कर नहीं पाये। न तो यही कर सके कि अवधि के पूर्व ही उनके पास जाकर सच्ची घटना कह देते। अब कार्यसिद्धि होने का कोई आसरा देखते नहीं। इस स्थिति में जीवित रहना चाहें तो वह क्या योग्य काम होगा ?। ९२६

अन्दैयु	मुनियुमैम्	मिरैयि	रामनुम्
शिन्दनै	वरुन्दुमच्	चैय्है	काण्गुर्न्
नुन्दुवै	नुयिरिनै	नुणङ्गु	केळ्वियीर्
पुन्दियि	नुर्दु	पुहल्वि	रामैन्तान् 927

अन्तैयुम् मुत्तियुम्-मेरे पिता भी कुपित होंगे; अम् इरै-हमारे प्रभु; इरामनुम्-श्रीराम भी; चिन्ततै वरुन्दुम्-खिन्न-मन होंगे; अ चैय्कै-वह कार्य; काण्कुर्न्- (अपनी आँखों) देख न सकूँगा; उयिरिनै नुन्तुवैन्-प्राण त्याग दूँगा; नुणङ्कु-सूक्ष्म; केळ्वियीर्-श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान से युक्त; पुन्तियिन् उर्दुत्तु-तुम्हारी बुद्धि में जो उठता है; पुक्ल्विर्-(वह विचार) कहो; अन्तान्-कहा। ६२७

इस स्थिति में हम उनके पास जायँगे तो मेरे पिता (चाचा) कुपित होंगे। हमारे प्रभु श्रीराम का मन दुःखी होगा। उनको मैं नहीं (देख) सह सकूँगा। इसलिए मैं अपने प्राण त्याग दूँगा। सूक्ष्म श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले ! तुम जो अपनी बुद्धि में आता है, वह कहो। अंगद ने उनसे कहा। ९२७

विळ्मिय	दुरैत्तनै	विशयम्	वोर्दिर्न्
दैळ्वोऴु	मलैयोऴु	मिहलुन्	दोळिताय्
अळ्दुमो	विर्न्दुनम्	मन्नु	पाळवडत्
तौळ्दुमो	शैर्न्तच्	चाम्वन्	शैल्लितान् 928

चाम्पन्-जाम्बवान; विचयम् वीर्रिरुन्तु-विजयांकित; अँलुवौटुम्-स्तम्भ और; मलैयौटुम्-पर्वत के साथ; इकलुम्-टकरानेवाले (समान रहनेवाले); तोळिताय्-कन्धों के; विळुमियतु-श्रेष्ठ बात; उरैत्ततै-कही; इरुन्तु-जीवित रहकर; अळुतुमो-रोधेंगे क्या; नम् अन्नपु-अपने प्रेम को; पाळ् पट-कलंकित करते हुए; चैन्ऱु-जाकर; तौळुतुमो-(श्रीराम और सुग्रीव की) सेवा करेंगे; अँत-ऐसा; चौल्लितान्-कहा । ६२८

तब जाम्बवान ने कहा । विजयांकित व स्तम्भ और पर्वत की टक्कर के कन्धों वाले ! तुमने (क्या ही) उत्तम बात कही ! (तुम मरो और उसके बाद) हम जीवित रहकर रोते रहें ? अपने प्रेम को कलंकित करते हुए हम उनके पास जाकर उनकी सेवा करते रहेंगे क्या ? । ९२८

मीण्डिनि	यौन्ऱुनाम्	विळम्ब	मिक्कदँत्तु
माण्डुरु	वदुनल	मैन्नव	लित्ततन्नम्
आण्डहै	यरशिळ्ड	गुमर	वत्तन्दु
वेण्डलि	निन्नुयिर्क्	कुरुदि	वेण्डुडुम् 929

आण्टकै-पुरुषश्रेष्ठ; अरचु इळम् कुमर-युवराज कुमार; मीण्डु-लौट जाकर; इति-अब; नाम्-हमसे; यौन्ऱु विळम्प-एक बात कहने के लिए; मिक्कतु अँत्त-बची क्या है; माण्डु उरुवतु-मर जाना; नलम् अँत्त-श्लाघ्य है, ऐसा; वलित्ततन्नम्-निश्चय किया है हमने; अत्ततु वेण्डलित्तु-वह चाहते हैं, इसलिए; निन्नु उयिर्क्कु-तुम्हारे प्राणों की; उरुति-रक्षा का निश्चय; वेण्डुडुम्-चाहते हैं । ६२९

पुरुषश्रेष्ठ ! राजकुमार अंगद ! वहाँ लौटकर हमारे पास उन्हें देने के लिए क्या समाचार बाकी है ? इसलिए हमने मरने का निश्चय किया है । जब हम मरना चाहते हैं तब हम यह निश्चय कर लेना चाहते हैं कि तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा । ९२९

अँत्तुव	नुरैत्तलु	मिरुन्द	वालिशेय्
कुन्ऱुळ्ळन्	दँन्नवळर्	कुववुत्	तोळिनीर्
पौन्ऱिनीर्	मडिययान्	पोव	तेलदु
नन्ऱुदो	वुलहमु	नयक्कर्	पालदो 930

अँत्तु अवन् उरैत्तलुम्-ऐसा उसके कहते ही; इरुन्तु वालि चेय्-उसको जो सुनता रहा वह वाली-पुत्र; कुन्ऱु उरुळ् अँत्त-पर्वत से टकराते-से; वळर्-बढ़े हुए; कुववु तोळिनीर्-पुष्ट कन्धों वाले; नीर् पौन्ऱि मडिय-तुम सब मर जाओ और; यान् पोवत्तेल्-मैं वहाँ जाऊँ तो; अतु नन्ऱुतो-वह ठीक होगा क्या; उलकमुम्-लोक (श्रेष्ठ लोग) भी; नयक्कल् पालतो-स्वागत करें, ऐसा होगा क्या । ६३०

जाम्बवान ने यों कहा । अंगद जो सुनता रहा कहने लगा । पर्वत से टकरानेवाले के समान बढ़े हुए पुष्ट कन्धों वाले ! तुम सबको

मरने देकर मैं अकेले वहाँ जाऊँ तो वह श्लाघ्य होगा क्या ? लोकसम्मत होगा क्या ? । ९३०

शान्स्वर्	पळियुरेक्	कञ्जित्	तन्नुयिर्
पोन्स्वर्	मडिदरप्	पोन्दु	ळानेन
आन्स्वे	रुलहुळो	रइन्दन्	मुत्तनम्यान्
वान्स्वीडर्	हुवैनेन	मडित्तुड्	गूळवान् 931

चात्स्वर्-श्रेष्ठ लोगों के; पळि उरक्कु-निन्दा-वचन से; अञ्चि-डरकर; तन्नुयिर् पोन्स्वर्-अपने प्राण-सम लोगों को; मडि तर-मरने देकर; पोन्नुळान्-आ गया; अँत-ऐसा; आन्स्-उत्कृष्ट; पेर् उलकु उळोर्-विशाल लोकों के वासी; अइतल् मुत्तम्-कहें, इसके पूर्व ही; यान्-मैं; वान् तोट्टर्कुवैन्-स्वर्ग चला जाऊँगा; अँत-कहकर; मडित्तुम् कूळवान्-और भी कहा । ६३१

“ बड़े लोगो के अपवाद-कथन से डरकर अंगद अपने प्राण-सम मित्रों को मरने देकर स्वयं जीवित आ गया ।’ संसार के श्रेष्ठ लोग यह निन्दा करें —इसके पूर्व ही मैं स्वर्गवासी हो जाऊँगा ।” —यह कहकर अंगद आगे बोला । ९३१

अँल्लेनम्	मिरुदि	याय्क्कु	मैन्दैक्कुम्	याव	रेनुम्
शौल्लवुड्	गूडुड्	गेट्टार्	रुञ्जवु	मडुक्कुड्	गण्ड
विल्लियु	मिळैय	कोवुम्	वीवदु	तिण्ण	मच्चौल्
मल्लनी	रयोत्ति	पुक्काल्	वाळ्वरो	वरतत्	मर्रोर् 932

नम् इइति अँल्ले-हमारे अन्त का परिणाम; यावरेत्तुम्-कोई; याय्क्कुम्-मेरी माता को; अँन्तैक्कुम्-मेरे पिता (सुग्रीव) को; चौल्लवुम् कूट्टम्-(समाचार) दिला सकेगा; केट्टाल्-वे मुनें तो; तुञ्चवुम् अटुक्कुम्-मर भी सकते हैं; कण्ट-देखकर; विल्लियुम्-धन्वी श्रीराम; इळैय कोवुम्-और छोटे राजा (लक्ष्मण) का; वीवतु-मरना; तिण्णम्-ध्रुव है; अ चौल्-वह समाचार; मल्लल् नीर्-अधिक जलसमृद्ध; अयोत्ति पुक्काल्-अयोध्या पहुँचे तो; परतत् मर्रोर्-भरत आदि अन्य; वाळ्वरो-जीवित रहेंगे क्या । ६३२

समझो कि हम सब यहाँ मर गये । तो यह समाचार कोई न कोई मेरे पिता को सुना देगा । तब वे मर जायँगे । उसको देखकर हमारे प्रभु धन्वी श्रीराम और छोटे राजा लक्ष्मण मर जायँगे । यह ध्रुव है । यह समाचार समृद्ध अयोध्या जायगा तो भरत आदि और अन्य लोग जीवित रहेंगे क्या ? । ९३२

वरदत्तम्	पित्तु	ळोत्तुम्	बयन्दैडुत्	तवरु	मूरुम्
शरदमे	मुडिवर्	कैट्टेन्	शतहियैन्	रुलहब्	जाइरुम्

विरदसा दवत्तिन् मिक्क विळक्किता लुलहत् तियार्क्कुम्
करैर्तेरि विलाद दुत्तम्बम् विळैन्दवा वेंतक्क लुळ्न्दान् 933

परतत्तुम्-भरत; पिन् उळोटुम्-और उनके अनुज; पयन्तु अँटुत्तवरम्-और उनकी जननियाँ; अरुम्-और नगरवासी; चरतमे मुटिवर्-निश्चय ही मरेंगे; कँट्टेत्त-मैं मिटा; चतकि-जानकी; अँत्त उलकम् चार्डम्-ऐसा लोक-शंसित; विरत सातवत्तिन् मिक्क-व्रतधारिणी, तपस्या में श्रेष्ठ; विळक्किताल्-दीप-सी देवी के कारण; उलकत्तु-इस संसार में; यार्क्कुम्-सबके लिए; करै तैरिवु इलात-जिसका पार नहीं दिखता, ऐसा (अपार); तुन्पम्-दुःख; विळैन्त आ-पैदा हो गया तो; अँत्त-ऐसा कहकर; कलुळ्न्दान्-उद्विग्न हुआ। ६३३

“भरत, उनके अनुज, इन भ्राताओं की जननियाँ और नगरवासी सभी निश्चय ही मर जायँगे। हाय ! मैं मिटा ! व्रतधारिणी महान तपस्विनी जानकी संज्ञित इन दीप-सी देवी के कारण संसार के सभी लोगों को कितना दुःख पैदा हो गया !” अंगद ऐसा कहते हुए अधीर हुआ। ९३३

पौरुप्पुडळ् वयिरत् तिण्डोड् पौरुशिनत् ताळि पोल्वान्
तरिप्पिला डुरैत्त माड्डन् दडुप्परन् दहैमैत् ताय
नैरुप्पैये विळैत्त पोल नैञ्जमु मरुहक् केट्टु
विरुप्पिना लवने नोक्कि विळम्बित नैण्गिन् वेन्दन् 934

पौरुप्पु उडळ्-पर्वत-सम; वयिरम् तिण् तोळ्-वज्र-दृढ़ कन्धों वाला; पौरु चित्तत्तु-युद्ध-सन्नद्ध; आळि पोल्वान्-‘याळि’-सा अंगद; तरिप्पु इलातु-अधीर होकर; डुरैत्त माड्डम्-जो बोला, वह कथन; दडुप्पु अरुम् तकैवैत्तु आय-अवार्य प्रकार की; नैरुप्पैये-आग को ही; विळैत्त पोल-लगाया हो, ऐसा; नैञ्जम् मरुहक्-चित्त के आक्रान्त होने से; केट्टु-सुनकर; अँण्किन् वेन्तन्-रीछों का राजा; विरुप्पिताल्-प्यार से; अवने नोक्कि-उसको देखकर; विळम्पितन्-बोला। ६३४

पर्वत-सम वज्रदृढ़ कन्धों वाला, युद्धरत ‘याळि’ के समान वह अंगद अधीर होकर ऐसा जो बोला वह वचन अवार्य आग के समान लगा और जाम्बवान का मन तप्त और उद्विग्न हुआ। रीछों के राजा जाम्बवान ने अंगद से प्यार के साथ यों कहा। ९३४

नीयुनिन् डादैयु नीङ्ग निन्गुलत्, तायम्बन् दवरक्कौरु ततय रिल्लेयाल्
आयट्टु करुत्तै मन्न दन्ऱैन्निन्, नायह रिरुदियुम् नविलङ् पालंदो 935

नीयुम्-तुम्हारे और; निन् तातैयुम्-तुम्हारे पिता के; नीङ्क-सिवा; निन् कुल तायम् वन्तवरक्कु-तुम्हारे कुल में अधिकार के साथ उत्पन्न; और ततयर् इल्लेयाल्-एक पुत्र नहीं है, इसलिए; आयतु करुत्तैम्-वैसा विचार किया हमने; अन्तत्तु अन्ऱ-वह नहीं; अँत्तिल्-तो; नायर् इरुत्तियुम्-हमारे नायकों का मरना भी; नविलल् पालतो-कहना ठीक है क्या। ६३५

अंगद ! तुम भी मर जाओगे और तुम्हारे तात (सुग्रीव) भी चले गये तो तुम्हारे वंश में राजा बनने के लिए कोई पुत्र नहीं है । इसीलिए हमने चाहा कि तुम जीवित रहो । तुम अपने मरने की बात नहीं उठाते तो अपने प्रभुओं की मृत्यु की बात कहाँ उठती ? हमारा यह बात करना उचित भी होता ? । ९३५

एहिनी यव्वळि येंय्दि यिव्वळित्, तोहैयैक् कण्डिला वहैयुञ् जील्लियैम्
शाहैयु मुणर्त्तुदि तविर्दिशोहम्बोर्, वाहैयायेंन्ऱनन् वरम्बि लाऱ्ऱलान् 936

वरम्पु इल् आऱ्ऱलान्-असीम बलशाली; पोर् वाकैयाय्-(अंगद से) युद्धविजयी;
नी-तुम; एकि-जाओ; अ वळि अय्ति-वहाँ पहुँचो; इ वळि-इधर; तोकैयै
कण्डिला-मयूराभा सीता की अप्राप्ति का; वकैयुम् चैल्लि-प्रकार (समाचार)
कहकर; अय्म् वाकैयुम्-हमारा मरना भी; उणर्त्तुति-समझा दो; तविर्ति
चोकम्-छोड़ो शोक को; अय्न्ऱनन्-कहा । ९३६

असीम बली जाम्बवान ने अंगद को सलाह दी कि युद्ध-विजयी वीर !
तुम वहाँ जाओ । इधर हमारा सीतान्वेषण का विफल प्रयास कहो ।
हमारी मृत्यु का भी समाचार दो । तुम शोक करना छोड़ दो । ९३६

अवनवै	युरैत्तपिन्	त्तनुमन्	शौल्लुवान्
पुवत्तमून्	ऱिनुमोर्	पुडैयिऱ्	पुक्किलैम्
कवत्तमाण्	डवरैत्तक्	करुत्ति	लारैन्त्
तवत्तवे	हत्तुनोर्	शलित्ति	रोवैन्ऱान् 937

अवन्-उस (जाम्बवान) के; अवै-वे वचन; उरैत्त पिन्-कहने के बाद;
अनुमन्-हनुमान; शौल्लुवान्-कहने लगा; पुवन्म् सून्ऱितुम्-तीनों लोकों में;
ओर् पुटैयिल्-एक भाग में भी; पुक्किलैम्-पूर्ण रूप से प्रवेश न कर पाये; तवत्त
वेकत्तु नीर्-सूर्य की-सी गति वाले तुम; कवत्तम् माण्टवर् अय्त्त-गमन-शक्ति मिट
गयी हो, ऐसा; करुत्तु इलार् अय्त्त-और मन नहीं हो, ऐसा; चलित्तिरो-चलित हो
गये क्या; अय्न्ऱान्-बोला । ९३७

जब जाम्बवान ने अपनी बात कही तब हनुमान ने कहा कि वीरो !
हमने अभी तक तीनों लोको में एक कोना भी पूर्णरूप से खोजा नहीं है !
सूर्य की-सी गति रखनेवाले तुम क्या कहने लग गये ? क्या ऐसे चलित गये
मानो तुमने जाने की शक्ति खो दी हो, या आगे जाने का मन रखते नहीं
हो । ९३७

पिन्ऱरुड्	गूऱ्वान्	पिलत्तिल्	वात्तत्तिल्
पौन्ऱवैक्	कुडुमियिऱ्	पुऱ्ऱत्ति	त्तण्डत्तिल्
नन्नुदऱ्	ऱेवियैक्	काण्डु	नामैन्ऱिल्
शौत्त	नाळवदियै	यिऱैवन्	शौल्लुमो 938

पितृत्तम् कूडवान्-और भी कहा; पितृत्तिल्-बिल (पाताल) में; वान्तत्तिल्-स्वर्ग में; पौत्त वरै-स्वर्ण-पर्वत (मेरु) के; कुट्टुमितिल्-शिखर में; पुत्तत्तिल् अण्टत्तिल्-बाह्याण्ड में; नत्तुत्त तेवियै-मनोरम भाल वाली देवी को; नाम् काण्टुम्-हम पा जायेंगे; अत्तिल्-तो; इत्तैवत्-राजा से; चौत्त नाळ् अवतियै-कथित दिनों की अवधि को; चौल्लुमो-कहेंगे क्या (सुग्रीव आदि) । ६३८

हनुमान आगे बोला । पाताल में, स्वर्ग में और स्वर्णमय मेरुपर्वत के शिखर पर या बाह्याण्डों में जाकर सुन्दर भाल वाली को खोज पा लें तब भी क्या सुग्रीव अवधि के उल्लंघन की बात कहेंगे ? । ९३८

नाडुद लेनल मित्तु नाडियत्, तोडलर् कुळलिदन् रुयरिर् चैत्तुमर्
वीडिय शडायुवैप् पोल वीडुदल्, पाडव मल्लदु पळियिर् रामैन्नान् 939

नाटुतले नलम्-अन्वेषण करना ही अच्छा है; इत्तुम् नाटि-और खोजकर; अ-उन; तोटु अलर्-पुष्पालंकृत; कुळलि तन्-सुकेशिनी को; तुयरिल् चैत्तु-दुःख में जाकर; अमर् वीडिय-जिसने युद्ध में प्राण दिये; चटायुवै पोल-उस जटायु के समान; वीडुत्तल्-हमारा मरना भी; पाटवम्-पाटव है; अल्लतु-नहीं तो; पळियिर् आम्-अपयशकारी होगा; अँन्नान्-बोला । ६३९

इसलिए अन्वेषण ही अच्छा है । इसलिए आगे ढूँढ़ेंगे और उस जटायु के समान, जिसने सीता के दुःखनिवारणार्थ युद्ध करके अपने प्राण छोड़ दिये थे, अन्वेषण-कार्य में प्राण देना ही पाटव होगा । नहीं तो ऐसा मरना निन्दा का कारण बन जायगा । ९३९

अँन्नुलुङ् गेट्तन् नैरुवै वेन्तन्नुन्, पिन्नूणै ग्राहिय पिळैप्पिल् वाय्मैयान्
पौन्नित्तन् तैन्नुशौर् पुलम्बु नैञ्जित्तन्, कुन्नैन् नडन्दवर्क् कुरुहन् मेयित्तान् 940

अँन्नुलुम्-कहने पर; अँरुवै वेन्तन्-गीधों का राजा सम्पाति; तन् पित्तु नूणैयकिय-अपना अनुज; पिळैप्पु इल् वाय्मैयान्-अडिग सत्यसंध; पौन्नित्तन्-मरा; अँन्नु चौल्-यह समाचार; केट्तन्-सुनकर; पुलम्पु नैञ्जित्तन्-रोते मन के साथ; कुन्नैन् अँन्-पर्वत के समान; नटन्तु-चलकर; अवर् कुरुक्कल्-उनके समीप; मेयित्तान्-आने लगा । ६४०

जब हनुमान ने जटायु का नाम लिया, तब सम्पाति उसे सुन रहा था । गीधों के राजा, सम्पाति ने सुना कि मेरा अनुज, प्रिय जटायु, अडिग सत्यसन्ध मरा । तो उसका मन दुःख से भर गया । वह रोने लगा । वह एक पर्वत के समान चलता हुआ उनके पास जाने लगा । ९४०

मुत्तैयुडै यैम्बियार् मुडिन्द वावैन्नाप्, पत्तैयिडु नैञ्जित्तन् पदैक्कु मेत्तियन्
इत्तैयुडैक् कुलिशवै लैरिह लामुत्तम्, शिरैयुरु मलैयैन्तच् चैल्लुज् ज्यैयैयान् 941

मुत्तैयुडै-न्यायमार्गी; अँम्पियार्-मेरा भाई; मुटिन्त आ-मरा कैसा; अँन्-ऐसा; पत्तै इट्टु-(ढोल के समान) थरनिवाले; नैञ्जित्तन्-मन का; पदैक्कुम्

मेतियन्-कांपनेवाले शरीर के साथ; इरु उटै-देवेन्द्र का; कुलिच वेल्-कुलिश नामक हथियार के; अँरिक्ला मुत्तम्-फेंकने से पहले; चिरै उरु-पंखसहित; मलै अँत-रहे पर्वत के समान; चैलुम्-जाने का; चैय्कैयान्-काम करनेवाला । ६४१

‘न्यायमार्गी मेरा भाई मरा कैसे ?’ इस संशय से उसका मन थरने लगा । शरीर कांपने लगा । वह उस पर्वत के समान तेजी से आया, जो देवेन्द्र के वज्रायुध फेंककर काटने से पहले पंखसहित था । ९४१

मिडलुडै यैम्बियै वीट्टु वैज्जित्तप्, पडैयुळ रायिनार् पारिल् यारैना उडलिनै यिल्लिन्दुपो युवरि नीरुहक्, कडलिनैप् पुरैयुरु मरुवक् कण्णिनात् 942

मिडलुडै अँम्पियै-शवितमन्त मेरे भाई को; वीट्टुम्-मार सकनेवाले; वैम् चित्तम्-भयंकर क्रोध के साथ; पडैयुळर् आयित्तार्-हथियार रखनेवाले; पारिल्-इस संसार में; यार् अँता-कौन है, ऐसा सोचते हुए; उडलित्तै इल्लिन्नु-शरीर से गिरकर; पोय्-चलनेवाले; उवरि नीर् पुक्-नमकीन अश्रु बहाने से; अ कडलित्तै-उस समुद्र को; पुरै उरुम्-समानता करनेवाली; अरुवि कण्णिनात्-सरिता-सी आँखों वाला । ६४२

उसके मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा था कि अतिवली मेरे भाई को मार सकनेवाले, बड़े क्रोध के साथ हथियार चलानेवाले इस संसार में कौन है ? उसकी आँखों से नमकीन अश्रु निकलकर उसके शरीर पर से गिरा और भूमि पर जमा होने लगा । तब उसकी आँखें समुद्र के समान लगी और अश्रु नदी के समान । ९४२

उळुङ्गदिर	मणियणि	युमिळु	मिन्नन्नान्
मळुङ्गिय	नैडुङ्गणित्	वळङ्गु	मारियान्
पुळुङ्गुवा	नळुङ्गिनान्	पुडवि	मीदितिल्
मुळङ्गिवन्	दिल्लिवदोर्	मुहिलुम्	वोल्हिन्रान् 943

उळुम् कतिर् मणि-तराशी हुई कान्तियुत मणियाँ; अणि-जिनमें जड़ित हों, ऐसे आभरणों से; उमिळुम्-निःसृत; मिन् अन्नान्-विजली के समान रहनेवाला; मळुङ्किय-कुण्ठित; नैट्टु कणित्-दीर्घ आँखों से; वळङ्गु मारियान्-निकलनेवाली (अश्रु) धारा से युक्त; पुळुङ्गुवान्-दुःखतप्त; अळुङ्किनान्-उद्विग्न; पुटवि मीदितिल्-भूमि पर; मुळङ्कि वन्नु-शब्द करते हुए; इल्लिवतु-उतरकर आनेवाले; ओर् मुकिलुम् पोल्किन्त्रान्-एक मेघ के समान दिखनेवाला । ६४३

उसके शरीर से मणि-जटित आभरण से जैसी कान्ति छूट रही थी । उसकी मन्द-प्रभ और दीर्घ आँखों से बारिश के समान आँसू गिर रहा था । उसका मन वेदनाविद्ध था । दुःख के साथ आता हुआ वह गर्जन के साथ आनेवाले एक मेघ के समान भी लग रहा था । ९४३

वळ्ळियु	मरङ्गळु	मलैयु	मण्णुडत्
तैळुनुण्	पौडिपडक्	कडिडु	शैल्हिन्रान्

तळ्वुवन्
वैळ्ळियम्

काल्वौरत्
बैरुमलै

तरणि
पौरुवु

यिर्इवळ्
मेत्तियान् 944

वळ्ळियुम्-लताएँ; मरड्कळुम्-और वृक्ष; मण् उर-भूमि पर गिरते हैं; मलैयुम्-पर्वत भी; तळ्वु नुण् पौटि पट-स्वच्छ और महीन चूर्ण बनते हैं; कटितु चैल्किन्नरान्-ऐसा वेग के साथ चलता है; तळ्वु वन् काल्-उत्पाटक बलवान पवन; पौर-ढकेलता है, इसलिए; तरणियिल् तवळ्-भूमि पर मन्द गति से आनेवाले; वैळ्ळि-चाँदी के; अम् पेरु मलै-सुन्दर श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत की; पौरुवु-समानता करनेवाले; मेत्तियान्-आकार का । ९४४

वह इतनी तीव्र गति से आया कि लताएँ और तरु धराशायी हो गये । पर्वत चूर-चूर हो गये । वह सबको उखाड़ फेंक सकनेवाले पवन के ढकेलने से भूमि पर चलते आनेवाले कैलास के चाँदी के बड़े पर्वत के समान भी लग रहा था । ९४४

अय्दिन
ऐयन्म
कैदव
उय्दिहो

निरुन्दव
मारुदि
निशिचर
लिनियेत्ता

रिरियल्
यळ्ळुड्
कळ्ळ
वुरुत्तु

पोयितार्
गण्णिन्नान्
वेडत्तै
मुत्तिन्नरान् 945

अय्त्तितन्-आया; इरुन्तवर्-(वहाँ जो) रहे वे; इरियल् पोयितार्-तितर-बितर हुए; ऐयन्-नायक; अ मारुति-वह मारुति; अळ्ळुन् कण्णिन्नान्-जलती आँखों के साथ; कैदव-वंचक; निचिचर-निशिचर; कळ्ळ वेडत्तै-कपटवेश-धारी; इति उय्ति कौल्-अब बचोगे क्या; अत्ता-कहते हुए; उरुत्तु-कोप दिखाकर; मुत्तिन्नरान्-उसके सामने जा खड़ा रहा । ९४५

वह वानरों के पास आया । तब वानर डर के मारे तितर-बितर हो गये । तब नायक मारुति ने गुस्से से भरकर सम्पाति को डाँटा । उसकी आँखें जलती आग के समान थीं । उसने कहा—वञ्चक ! निशिचर ! कपटवेशधारी ! अब तुम बचोगे क्या ? ऐसा डाँटते हुए हनुमान उसके सामने जा खड़ा हुआ । ९४५

वैङ्गदम्
पौङ्गिय
शङ्गैयिर्
इङ्गिद

वीशिय
शोरिनोर्
चळ्ळकिल
वहैयिन्ना

मनत्तन्
पौळियुड्
तैन्नुन्
लैय्द

विस्मलन्
गण्णिन्नान्
दन्मैयै
नोक्किन्नान् 946

वैम् कतम्-क्रूर कोप से; वीचिय-रिक्त; मनत्तन्-मन वाला; विस्मलन्-सिसकियाँ भरनेवाला; पौङ्गिय चोरी-ऊपर उठी हुई, वर्षा के समान; नीर् पौळियुम् कण्णिन्नान्-अश्रुजल बहाती हुई आँखों वाला; चळ्ळकै इल्-निस्संदेह;

चळक्कु इलन्-झगडालू नहीं; अँत्तुम् तन्मैयै-ऐसे स्वभाव को; इङ्कित वक्यिताल्-इंगितों के प्रकारों से; अँयत् नोक्कितान्-खूब देख लिया (हनुमान ने) । ६४६

हनुमान ने उसे सावधानी से देखा । सम्पाति के मन में नृशंस क्रोध नहीं पाया गया । वह सिसकियाँ भर रहा था और उसकी आँखों से अश्रुजल की बारिश-सी हो रही थी । निस्सन्देह रूप से यह बुरा नहीं है । हनुमान ने उसके स्वभाव को इंगितों से जान लिया । ९४६

नोक्कित	निन्ऱुन	नृणङ्गु	केळवियान्
वाक्किता	लौरुमोळि	वळङ्ग	लादमुन्
ताक्करुन्	जडायुवैत्	तरक्कि	तालुयिर्
नोक्कित	रियारदु	निरप्पु	वीरँत्तान् 947

नृणङ्कु केळवियान्-सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नोक्किनन्-देखते हुए; निन्ऱुनन्-खड़ा रहा; वाक्किताल्-मुख से; और मोळि-एक वात; वळङ्कलात मुन्-कहने से पहले ही; ताक्करुन् चटायुवै-अप्रतिहत जटायु को; तरक्किनाल्-अपने बल से; उयिर् नोक्कितर्-प्राणहीन करनेवाला; यार्-कौन था; अतु-उसको; निरप्पुवीर्-विस्तार से कहे; अँत्तान्-(सम्पाति ने) प्रश्न किया । ६४७

हनुमान सूक्ष्मश्रवणज्ञानी था । जब वह सम्पाति को देखता ही खड़ा रहा तब उसके मुख से वात निकलने के पूर्व ही सम्पाति ने पूछ लिया कि जटायु पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता । ऐसे जटायु के प्राण निकालनेवाला कौन है ? ज़रा सविस्तार कहो । ९४७

उन्ऱैनी	युळ्ळवा	रुरैप्पि	नुर्रुदु
पिन्ऱैया	निरप्पुदल्	पिळैप्पिन्	राहुमाल्
अँत्तमा	रुदियैदि	रैरुवै	वेन्दनुम्
तन्ऱैयान्	दन्मैयैच्	चार्रन्	मेयिनान् 948

मारुति-हनुमान (के); उन्ऱै-अपने को (सम्बन्ध में); नी-तुम; उळ्ळ आरु-यथार्थ रीति से; उरैप्पिन्-कहोगे तो; पिन्ऱै-वाद; यात्-मैं; उर्रुत्तु-जो हुआ; निरप्पुदल्-पूरा कहूँगा, यह कहना; पिळैप्पु इन्ऱु-गलत नहीं; आकुम्-होगा; अँत्त-कहने पर; अँतिर्-उत्तर में; अँरुवै वेन्दनुम्-गीधों का राजा भी; तन्ऱै आम्-अपनी; तन्मैयै-वात; चार्रल् मेयितान्-कहने लगा । ६४८

उस पर मारुति ने कहा कि अगर तुम अपने बारे में यथार्थ समाचार कहो तो मैं सारा विवरण दे दूँगा । वही गलती-रहित होगा । उसके उत्तर में गीधों के राजा ने अपना यथार्थ हाल कहा । ९४८

मिन्ऱुविन् दालैन् विळङ्गे यिर्ऱिनाय्, अन्ऱुविन् दारुहळि नदिह नाहियैन्
पिन्ऱुविन् दान्ऱुणैप् पिरिन्द पेदैयेन्, मुन्ऱुविन् देनैन् मुडियक् कूरिनान् 949

मिन् पिशन्ताल् अँत-विजली उठी जँसे; विळङ्कु-चमकनेवाले; अँयिर्झिनाय्-
दन्तुले; अत्तपु इशन्तार्कळिन्-स्नेहहीन; अतिकन् आकि-से बढ़कर; अँन् पिन्
पिशन्तान्-मेरे अनुज से; तुणै पिरिन्त-संग से त्यक्त; पेतैयेन्-बेचारा मैं; मुन्
पिशन्तेन्-उसका अग्रज हूँ; अँन-कहकर; मुटिय-पूरा (वृत्तान्त); कूशितान्-
कहा । ६४६

हनुमान से सम्पाति ने कहा कि हे विद्युत्-सम दाँत वाले ! अब मैं निर्ममों
से अधिक निर्मम हो गया हूँ । अपने भाई के साथ से हीन हो गया हूँ ।
दयनीय मैं उसका ज्येष्ठ भाई हूँ । फिर उसने अपना सारा वृत्तान्त कह
सुनाया । ९४९

कूशिय वाशहङ् गेट्ट कोदिलान्, ऊशिय तुन्वत्ति नुवरि युट्पुहा
एरित्त नुणर्त्तित्त निहलि रावणन्, वीशिय वाळिडै विळैन्द दामैन्शान् 950

कूशिय वाचकम्-(सम्पाति का) कहा वचन; केट्ट-जिसने सुना; कोतु इलान्-
अकलंक; ऊशिय तुन्वत्तिन्-गहरे दुःख के; उवरियुळ पुका-सागर में डूबकर;
एरित्तन्-कूल पर चढ़ा; इकल्-शत्रु रावण की; वीशिय वाळ् इटै-शान के साथ
चलायी हुई तलवार की वार से; विळैन्तु आम्-(जटायु का मरण) हुआ; अँन्शान्-
(हनुमान ने) कहकर; उणर्त्तित्तन्-समझाया । ६५०

सम्पाति का हाल सुनकर अकलंक हनुमान ने गहरे दुःख-सागर से
डूबने के बाद कूल पर चढ़कर सम्पाति से कहा कि शत्रु रावण की शान के
साथ चलायी गयी तलवार की वार से जटायु का मरण हो गया । ९५०

अव्वुरै केट्टलु भशन्ति येर्झिनाल्, तव्विय गिरियेन्तत् तरैयिन् वीळैन्दनन्
वैव्वुयि रावुयर् पदैप्प विम्मितान्, इव्वुरै यिव्वुरै यैडुत्ति यम्बितान् 951

अ उरै केट्टलुम्-उस वचन को सुनते ही; अचन्ति एर्झिनाल्-भयंकर गाज से;
तव्विय-चलित हुई; किरि अँत-गिरि के समान; तरैयिल् वीळैन्तनन्-भूमि पर
गिरा; वैव्वुयिरा-गरम साँसें छोड़ते हुए; उयिर् पतैप्प-प्राणों के छटपटाते;
विम्मितान्-सिसकियाँ भरीं; इ उरै इ उरै-निम्न बाते; अँटुत्तु इयम्पितान्-बताने
लगा (सम्पाति) । ६५१

वह समाचार सुनते ही सम्पाति वज्राहत गिरि के समान नीचे गिर
गया । गरम साँसें निकलीं और प्राण छटपटाने लगे । सिसकते हुए वह
यों बोला । ९५१

इळैया नीळशिर हन्ऱु वैन्दुहत्, तळैया तनुयिर् पोव इक्कदाल्
वळैया नेमियन् वन्मै शाल्वलिक्, किळैया नेयिडु वैन्त मायमो 952

इळैया-जो कभी नहीं थकते; नीळ् चिरकु-वे मेरे पक्ष; अन्ऱु वैन्तु उक-उस
दिन जलकर गिर गये तब; तळैयात्तेन्-प्रतिबद्ध मेरे; उयिर् पोतल्-प्राण चले गये
होते तो; तक्कु-उचित होता; वळैया नेमियन्-नेक आज्ञाचक्रधर (वशरथ)

के; वत्तमै चाल् वलिककु-कळीर वल से; इळैयाने-कम वली नहीं हो तुम; इतु
अँत्त मायमो-यह क्या हो माया है । ६५२

उस दिन जब मेरे बलवान पंख, जो कभी नहीं थकते थे, जलकर नष्ट
हुए उसी दिन प्रतिबद्ध होकर जीवित रहने से मर जाता तो अच्छा होता ।
हे अनुज ! जिसका बल नेक दण्डधर दशरथ के बल से कुछ भी कम नहीं
था ! यह क्या माया-कार्य हो गया ? । ९५२

मलरो नित्ऱुळन् मण्णुम् विण्णुमुण्, डुलैया नीडर मिन्नु मुण्डरो
निलैयार् कर्प्पमु नित्ऱु दिन्ऱुनी, इलैया नायिदु वेत्तन तन्मैयो 953

मलरोन्-कमलासन; नित्ऱुळन्-जीवित है; मण्णुम् विण्णुम्-भूमि और
आकाश; उण्टु-ज्यों के त्यों है; उलैया नीड अरम्-अक्षय श्रेष्ठ धर्म भी; इत्तुम्
उण्टु-अब भी है; निलै आर्-स्थायी; कर्प्पमुम्-काल कल्प भी; नित्ऱु-रहता
है; इन्ऱु-आज; नी इलै आताय्-तुम नहीं रहे हो गये; इतु-यह; अँत्त तन्मैयो-
क्या हो क्रम-गति है । ६५३

अभी कमलासन जीवित है ! भूमि, आकाश, अचल धर्म, सतत काल
कल्प — सभी अविनष्ट हैं ! पर तुम नहीं रहे ! यह क्या विधिक्रम है ? । ९५३

उडत्ते यण्ड मिरण्डु मुन्दुयिर्त्, तिडनाम् वन्दिर वेमु मैय्दित्तोम्
विडनी येदनिच् चैनर् वीरमुम्, कडत्तो वैङ्गलु लरकु मेनमैयाय् 954

वैम् कलुळरकुम्-बली गरुड़ से भी; मेनमैयाय्-चढ़कर रहनेवाले; मुन्दु-पहले;
अण्टम् इरण्डुम्-दो अण्डे; उयिर्त्तिट-हुए तब; उटत्ते-एक साथ; नाम्
इरुवेमुम्-हम दोनों; वन्दु अँय्दित्तोम्-आकर पैदा हुए; विट-छोड़कर; नीये-
तुम ही; तनि चैन्ऱु-अकेले गये; वीरमुम्-वह वीरता; कडत्तो-क्रम है क्या । ६५४

बलवान गरुड़ से भी अधिक बलशाली ! पहले दो अण्डे हुए जिनमें
से हम दोनों एक साथ बाहर आये । अब तुम मुझे छोड़कर अकेले ही चले
गये ! यह कैसा वीरकृत्य ? । ९५४

औन्ऱा मून्ऱुल हत्तु लोरैयुम्, वेन्ऱा नन्ऱुत्तिनुम् वीर निरुक्नेर्
नित्ऱा नेयव् वरक्क तित्तैयुम्, कौन्ऱा नेयिः(ह) देंनन कौळ्ऱैयो 955

वीर-वीर; औन्ऱा-अपनी अधीनता न माननेवाले; मून्ऱु उलकत्तु उळोरैयुम्-
तीनों लोकों के वासियों को; अ अरक्कन्-उस राक्षस ने; वेन्ऱान् अँत्तिनुम्-जीता
तो भी; निरुक् नेर् निन्ऱात्ते-तुम्हारे सामने खड़ा रह सका क्या; नित्तैयुम् कौन्ऱात्ते-
तुम्हें मार भी सका क्या; इतु अँत्त कौळ्ऱैयो-यह क्या कुसमाचार सुनता हूँ । ६५५

वीर ! उस रावण ने अपनी अधीनता न माननेवाले तीनों लोकों को
युद्ध में जीत लिया, सही । पर वह क्या युद्ध में तुम्हारे विरुद्ध खड़ा हो
सका ? तुम्हें मार सका ? यह कैसा विचित्र समाचार है ? । ९५५

अँत्तु रेङ्गि यिरङ्गि यित्तलाल्, पौत्तुन् दन्मै पुहुन्द पोदवर्
कौत्तुन् जीर्को डुणर्च्चि नल्हितान्, वन्निण् डोळ्वरै यन्न मारुदि 956

अँत्तु अँत्तु-ऐसा, ऐसा; एङ्कि इरङ्कि-तरसकर रोकर; इत्तलाल्-दुःख
से; पौत्तुम् तन्मै-मरण-स्थिति को; पुकुन्त पोतु-जब सम्पाति पहुँच गया तब;
वन् तिण् वरै अन्त-कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम; तोळ् मारुति-कन्धों वाले मारुति ने;
अवर्कु-उससे; अँत्तुम् चोल् कौटु-अनुकूल शब्दों से; उणर्च्चि नल्कितात्-धीरज
बँधाया । ६५६

सम्पाति इस तरह विलाप करते हुए तरस और दुःख के बढ़ने से
आसन्नमरण हो गया । तब कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम कन्धों वाले हनुमान ने
अनुकूल वचन कहकर धीरज दिलाया । ९५६

तेरुत् तेरि यिरुन्द शेंङ्गणान्, कूर्त्तु पान्कोलै वाळ रक्कतो
डेरुप् पोर्शैय्द वेत्ति मित्तैत्तक्, काऱ्त्तिन् शेयिडु कट्टु रैक्कुमाल् 957

तेरु-धीरज देने पर; तेरि इरुन्त-सँभला जो रहा, उस; चैम् कणान्-
अरुणाक्ष (सम्पाति) ने; कूर्त्तु औप्पान्-यम-सम (जटायु) को; कोलै वाळ्-घातक
तलवारधारी; अरक्कतोडु-राक्षस के; एरु-सामने जाकर; पोर् चैयत्तु-युद्ध
करना; अँत् निमित्तु- (पड़ा) किस हेतु; अँत्-पूछने पर; काऱ्त्तिन् चेय्-पवन-
पुत्र ने; इतु-यह; कट्टुरैक्कुम्-कहा । ६५७

हनुमान के धैर्य देने से सँभलकर उस अरुणाक्ष सम्पाति ने पूछा कि
यम-सम जटायु का घातक तलवार (चन्द्रहास) के धारक रावण से लड़ना
किस निमित्त हुआ ? हनुमान ने उत्तर दिया । ९५७

अँङ्गो मानव् चिराम निल्लुळाळ्, शेंङ्गो लान्महळ् शीदै शैव्वियाळ्
वेंङ्गोल् वञ्जन् विळैत्त मायैयाल् तङ्गो नैप्पिरि वुर्त्त तन्मैयाळ् 958

अँम् कोमान्-हमारे नायक; अ इरामन्-उन श्रीराम की; इल् उळाळ्-गृहिणी;
चैम् कोलान्-न्यायसम्मत आज्ञा-दण्डधर; मकळ्-(जनक) की दुहिता; चैव्वियाळ्-
उत्तम; चीतै-सीतादेवी; वेंम् कोल् वञ्चन्-क्रूर दण्डधर वञ्चक रावण की; विळैत्त-
की हुई; मायैयाल्-माया से; तन् कोतै-अपने राजा (पति) से; पिरिवुर्त्त
तन्मैयाळ्-बिछुड़ी हुई स्थिति वाली हो गयी । ६५८

हमारे प्रभु नायक श्रीराम की गृहिणी, नीतिसम्मत शासक जनकराज
की दुहिता और उत्तम देवी सीता क्रूर शासक वञ्चक रावण के माया-कार्य से
अपने पति से वियुक्त हो गयीं । ९५८

कौण्डे हुङ्गोले वाळ रक्कनैक्, कण्डा नुम्बि यरङ्ग इक्कलान्
वण्डार् कोदैयं वत्तु नीड्गैत्तात्, तिण्डे रात्तेदिर् शिन्दै शीरित्तान् 959

कौण्डु एकुम्-उनको ले जानेवाले; कोले वाळ् अरक्कतै-घातक तलवारधारी

राक्षस को; अरुम् कटककलान्-धर्म का उल्लंघन न करनेवाले; उम्पि-तुम्हारे भाई ने; कण्टान्-देखा; वण्टु आर् कोतैयै-भ्रमरावृत मालाधारिणी सीता को; वंतु-छोड़कर; नीडकु-हट जाओ; अँता-फहकर; तिण् तेरान् अँतिर्-मुदृढ़ रथ वाले (रावण) के विरुद्ध; चिन्तै चीरित्तान्-मन का कोप दिखाया। ६५६

संहारक तलवारधारी रावण उन्हें ले जा रहा था। तब धर्म का उल्लंघन न करनेवाले तुम्हारे भाई जटायु ने उसे देख लिया। उसने रावण से कहा कि भ्रमरावृत मालाधारिणी देवी को यहीं छोड़कर भाग जाओ। फिर क्रुद्धमन उसने रथ पर जानेवाले रावण का सामना किया। ९५९

शोरित् तीयव नेरु तेरैयुम्, कीरित् तोळ्हळ् किळित्तु छित्तपिन्
तेरित् तेवर्ह डेवन् तैयववाळ्, वीरप् पौन्ऱिनन् मैयम्मे योन्नैरान् 960

मैयम्मैयोन्-सत्यसंध जटायु; चीरि-कुपित होकर; तीयवन्-खल के; एड तेरैयुम्-सवार हुए रथ को; कीरि-तोड़कर; तोळ्कळ्-उसके कन्धों को; किळित्तु-घीरकर; अळित्तु पित्त-मिटाने के बाद; तेरि-(रावण ने) धैयं अवलम्बित कर; तेवर्कळ् तेवन्-देवाधिदेव की; तैयव वाळ्-दिव्य तलवार (चन्द्रहास) को; वीर-चलाया; पौन्ऱित्तन्-(तब जटायु) मरा; अँन्नैरान्-कहा (हनुमान ने)। ६६०

सत्यसंध जटायु ने क्रोध के साथ रावण के वाहन रथ को तोड़ा; उसके कन्धों को क्षत-विक्षत किया। उसको हरा दिया। बाद रावण ने दृढ़संकल्प हो देवाधिदेव, परमेश्वर-प्रदत्त दिव्य तलवार से वार किया। तब जटायु (पंखों के कट जाने से) मर गया। ९६०

(मूल-टीकाकार इधर एक सरस बात कहते हैं। युद्ध के सिलसिले में रावण ने जटायु से जान लिया कि जटायु का मर्मस्थान पंखों में था। जटायु ने सत्य कह दिया था। पर रावण ने झूठ कहा कि मेरे प्राणों का मर्मस्थान पैर का अँगूठा है। यह वृत्तान्त एक शैवसंत ज्ञानसम्बन्ध मूर्ति के स्तुतिगीतों में पाया जाता है। इसी के आधार पर इस पद्य में जटायु को 'सत्यसंध' कहा गया है।)

पैन्दार्त् तोळ् निरामन् पत्तित्ति, शैन्दाळ् वञ्जि तिरुत्ति उन्दवन्
मैन्दा रैम्बि वरम्बिल् शीरुत्तियो, डुय्न्दा तल्लु दुलन्द दुण्मैयो 961

पैन्तार् तोळन्-नवीन पुष्पों की मालाधारी कन्धों वाले; इरामन् पत्तित्ति-श्रीराम की धर्मपत्नी; चैम् ताळ्-लाल चरण की; वञ्चि-वल्लरी-सी सीता; तिरुत्तु-के निमित्त; इरुन्तवन्-जो मरा; मैन्तु आर्-वल्लयुक्त; अँम्पि-(वह) मेरा भाई; वरम्पु इल् चीरुत्ति योटु-अपार यश के साथ; उय्न्तान्-अमर हो गया; अल्लतु-ऐसा कहे बिना; उलन्तु-मरा कहना; उण्मैयो-सत्य (कथन) होगा क्या। ६६१

नवीन पुष्पों की माला से अलंकृत श्रीराम की धर्मपत्नी, लाल (ललाई लिये) चरणों की, लता-सी देवी के निमित्त मरा मेरा भाई ! वह बड़ा बलशाली है । अपार यश के साथ वह तर गया ! ऐसा कहना छोड़कर 'हत हो गया' कहना क्या सत्यकथन होगा ? । ९६१

अश्मन् तानुड तैम्बि यन्बिनो, डुरवुन् नावुयिर् औन्ड वोवितात्
पैरवीण् णाददोर् पैरुडि पैरुवर्, किरवैन् तामिदि लिन्ब मियावदे 962

अँम्पि-मेरे अनुज भाई ने; अश्म अन्तानुटन्-धर्म-विग्रह श्रीराम से; अन्पितोटु उडवु उन्ता-प्रेम का नाता मानकर; उयिर् औन्ड-प्राण लगाने से; ओवितात्-(प्राण) दे दिये; पैर औण्णाततु-अप्राप्य; ओर्-अनुपम; पैरुडि-लाभ; पैरुवर्कु-जिसे मिला उस जटायु के लिए; इडवु अन्ताम्-मरा कहना क्या गौरव देगा; इतिल्-इससे बढ़कर; इन्पम्-सुखद; यावते-क्या होगा । ९६२

मेरे भाई ने धर्ममूर्ति श्रीराम के साथ अपना नाता जोड़ लिया । उसमें उसके प्राण मिले हुए थे । इसलिए उसने प्राण छोड़ दिये और सम्बन्ध निबाह लिया ! दुष्प्राप्य लाभ उसे मिल गया । ऐसे उसके सम्बन्ध में मृत्यु के शब्द का प्रयोग क्या अर्थ रखेगा ? इस मरण से बढ़कर आनन्द-दायक क्या हो सकता है ? । ९६२

वाळ्वित् तीरनै मैन्दर् वन्दुनीर्, आळ्वित् तीरलिर् तुन्ब वाळिवाय्
केळ्वित् तीविनै कीरि नीरिरुळ्, पोळ्वित् तीरुर् पीययि नीङ्गिनीर् 963

केळ्वि-श्रवण से; तीविनै कीरितीर्-पाप का नाश कर चुकनेवाले; इरुळ्-(अज्ञान-) तिमिर को; पोळ्वित्तीर्-तोड़ चुके; उरै पीययित्-असत्य-कथन से; नीङ्कितीर्-दूर रहनेवाले; मैन्दर्-वीर; नीर् वन्तु-तुम लोगों ने आकर; अँतै-मुझे; तुन्प आळि वाय्-दुःख-सागर में; आळ्वित्तीर् अलीर्-डुबो दिया नहीं; अँतै वाळ्वित्तीर्-मुझे तार दिया । ९६३

तुम लोगों ने श्रवण-ज्ञान से अपना पाप नष्ट कर दिया है ! अज्ञान-तिमिर को भगा दिया है ! असत्य-कथन से दूर रहनेवाले हो गये । हे ऐसे वीर ! तुमने इधर आकर जटायु की मृत्यु का समाचार सुनाकर दुःख-सागर में मग्न नहीं कराया । पर मुझे तार दिया । ९६३

अँल्ली रुम्पव् विराम नाममे, शौल्ली रँन्शिर् तोन्नुज् जोरविला
नल्ली रप्पय नण्णु नल्लशौल्, वल्लीर् वाय्मै वळ्ळर्क्कुम् माण्वितीर् 964

नल्ल चौल् वल्लीर्-श्रेष्ठ वक्ता; वाय्मै वळ्ळर्क्कुम्-सत्यपालक; माण्वितीर्-गौरवपूर्ण; अँल्लीरुम्-तुम सब; अ इराम नाममे-उन श्रीराम का ही नाम; चौल्लीर्-कहो; अँन् चिर्-मेरे पंख; तोन्नुम्-प्रकट हो (उग) आयेंगे; चोर्वु इला-अक्षय; नल् ईर पयन्-अच्छी कृपा का फल; नण्णुम्-मिलेगा । ९६४

हे मंगलवक्ता ! सत्यपालक गौरवशाली ! तुम सब अब श्रीराम के

नाम का उच्चारण करो । तो मेरे पंख उग आयेंगे । श्रीराम की अचल कृपा का फल मिलेगा । ९६४

अँन्ना नन्नदु काण्डुम् यामेना, निन्ऱार् निन्ऱुळि नील मेनियान्
नन्ऱा नाम नविन्ऱु नल्हिनार्, वन्ऱो ळान्शिर्ऱै वानन् दायवे 965

अँन्नान्-(सम्पाति ने) ऐसा कहा; याम् अन्नतु काण्डुम्-हम वह देखेंगे;
अँता-कहकर; निन्ऱार्-स्थित हुए; निन्ऱुळि-उसी स्थिति में; नील मेनियान्-
नीलवर्ण; नन्ऱु आम् नामम्-(श्रीराम का) शुभ नाम; नविन्ऱु नल्किनार्-उच्चारण
कर हित किया; वन् तोळान् चिर्ऱै-सबल कन्धो वाले सम्पाति के पंख; वातम् ताय-
आकाश तक बढ़ गये । ९६५

सम्पाति ने ऐसा कहा । वानरों को कुतूहल हुआ । सोचा कि वह करामात देखेंगे । वहीं खड़े होकर उसी स्थिति में वे श्रीराम के शुभनाम का उच्चारण करने लगे, यह बड़ा उपकार हुआ । बलिष्ठ कन्धों वाले सम्पाति के पंख उगकर आकाश को छूते हुए बढ़ गये । ९६५

शिर्ऱैवैर्ऱु ङान्ऱिहळ् हिन्ऱु मेनियान्, मुर्ऱैवैर्ऱु ङामुल हेंडुगुम् मूडिनान्
निर्ऱैवैर्ऱु ङावि नैरुप्पु यिर्क्कुम्वाळ्, उर्ऱैपैर्ऱु ङालैन् लामु ङप्पिनान् 966

चिर्ऱै पेंऱान्-पंख-प्राप्त; तिकळ्ऱिन्ऱु-शोभनेवाले; मेनियान्-शरीर का;
मुर्ऱै पेंऱु आम्-क्रम से सृष्ट; उलकु अँड्कुम्-सारे भूतल को; मूडिनान्-ढँककर;
निर्ऱै पेंऱु-खूब वर्धित होकर; आवि नैरुप्पु-धुआँ-सहित अग्नि; उयिर्क्कुम्-
निकालनेवाली; वाळ्-तलवार; उर्ऱै पेंऱान् अँतल् आम्-म्यान पा गयी जैसे;
उङ्गप्पिनान्-अंगो-सहित हुआ । ९६६

तब सम्पाति पंखसहित होकर शोभायमान दिखा । उसने क्रम से बढ़े हुए अपने पंखों से सारी भूमि को ढँक दिया । वह पूर्णरूप से सर्वांग-सम्पन्न होकर एक तलवार के समान लगा, जिससे धुआँसहित आग-सी निकल रही हो और जो म्यान में रखी जा चुकी हो । ९६६

तैरुण्डान् मैय्पपैयर् शैप्प लोडुम्बन्, दुर्ऱुण्डा नुर्ऱु पयत्तै युन्ऱित्तार्
मरुण्डार् मानवर् कोत्तै वाळ्त्तित्तार्, वैरुण्डार् शिन्दै वियन्ऱु विम्मुवार् 967

तैरुण्डान्-ज्ञानियों द्वारा जो परब्रह्म बताया जाते हैं; मैय्पपैयर्-उन श्रीराम का
सत्य नाम; शैप्पलोडुम्-उच्चारण (जप) करने पर; वन्ऱु उरुण्डान्-जो लोटता-
पोटता आया; उर्ऱु पयत्तै-उसको मिली उपलब्धि; युन्ऱित्तार्-सोचकर; मरुण्डार्-
विस्मय-विमूढ़ हुए; वैरुण्डार्-डरे; वियन्ऱु-आश्चर्य से; चिन्तै विम्मुवार्-
मन सरा हो; मानवर् कोत्तै-नरपुंगव की (या मनुकुलपुंगव की); वाळ्त्तित्तार्-
स्तुति की । ९६७

वानर वीरों ने ज्ञानियों द्वारा परब्रह्मनिर्दिष्ट श्रीराम के नाम की महिमा देखी । सम्पाति लोटता-पोटता हुआ आया था । पर श्रीराम के

नाम के जप करने से उसके पंख उग आये। उस करामात को देखकर वे विस्मित हुए। उन्हें भय भी हुआ। आश्चर्य से भरकर उन्होंने नरपुंगव मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम की स्तुति की। ९६७

अन्ता नैक्कडि दञ्ज लित्तुनी, मुन्ता लुड्डु मुड्डु मोर्देनच्
चीन्तार् शौड्डु शिन्दै तोय्वुड्, तन्ता लुड्डु तान्वि लम्बुवान् 968

अन्तान्तै-उससे; कटितु-शोध; अञ्चलित्तु-हाथ जोड़कर; नी-तुम; मुन् नाळ् उड्डु-पहले जो घटनाएँ घटीं; मुड्डुम्-पूरा; ओतु-कहो; अँत-ऐसा; चीन्तार्-कहा; तात्-वह; चौड्डु-उनका कहना; चिन्तै तोय्वु उड्डु-मन में प्रभाव कर गया, इसलिए; तन्ताल् उड्डु-आप बीती को; विळम्बुवान्-कहने लगा। ६६८

उन्होंने तुरन्त पंख-प्राप्त सम्पाति को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और याचना की कि पहले जो हुआ वह सारा वृत्तान्त पूर्णरूप से कहो। उनकी बात ने उस पर प्रभाव किया। उसने आप-बीती बातों का यों विवरण दिया। ९६८

तायैन्त् तहैय नण्पीर् शम्बादि शडायु वैनवेम्
शैयीळिच् चिरैय वेहक् कळुहिनुक् करशु शैयवेम्
पाय्दिरैप् परवै जालम् पडरिळ् परहुम् पण्विन्
आय्हदिरक् कडवुट् टेरु ररुणत्तुक् कमैन्द मैन्दर् 969

ताय् अँत तकैय-माता मानने योग्य; नण्पीर्-मित्रो; चम्पाति चटायु अँत्पेम्-सम्पाति और जटायु नाम के हम; चैय् ओळि चिरैय-लाल प्रकाशमय पंखों वाले; वेक-अति वेगी; कळुकिन्तुकु-गीधों के; अरच्चु चैय्वेम्-राजा रहे; पाय् तिरै परवै-लपकती आनेवाली लहरों वाले समुद्र से वलयित; जालम्-भूमि पर; पडर् इरुळ्-व्याप्त अन्धकार को; परहुक् पण्विन्-दूर करने में समर्थ; आय् कतिर् कटवुळ्-श्रेष्ठ किरणों के सूर्यदेव के; तेर् ऊर्-रथ के सारथी; अरुणत्तुकु-अरुण के; अमैन्त मैन्तर्-योग्य पुत्र। ६६९

माता-सम मान्य मित्रो ! हम सम्पाति और जटायु नाम के दो भाई हैं। हम लाल प्रकाशमय पंखों वाले और अतिवेगी गीधों पर शासन करनेवाले हैं। लहराती आनेवाली तरंगसकुल सागर से वलयित इस भूमि के अन्धकार के नाशक किरणमाली सूर्यदेव के रथ के सारथी, अरुण के युक्त पुत्र हैं। ९६९

आयुय रुम्बर् नाडु काण्डुमैन् उरिवु तळळ
मीयुयर् विशुन्बि नूडु मेक्कुड् चैल्लुम् वेलै
काय्हदिरक् कडवुट् टेरेक् कण्णुड्डु गण्णु डामुन्
तीयैयुन् दीय्क्कुन् दैय्वच् चैङ्गदिरच् चैल्वन् शीरि 970

अ उयर् उम्पर् नाटु-उस उत्कृष्ट देवलोक को; काण्डुम् अँनू-देखने को; अँम् अरिवु तळ्ळ-हमारी बुद्धि ने प्रेरित किया तो; मी उयर् विचुम्पित् ऊटु-ऊपर रहनेवाले आकाश में; मेक्कु उड-ऊँचे; चैल्लुम् वेल-जब चले तब; काय् कतिर्-सन्तापक किरणों के; कटवुळ् तेर-देव (सूर्य) के रथ को; कण् उड्रेम्-आँखों से देखा; कण्णुरामुत्त-देखने से पहले ही; तीयैयुम् तीयक्कुम्-आग को भी जला सकनेवाले; तैय्वम्-देवता; चैम् कतिर् चैल्वन्-लाल किरणमाली के; चीडि-कुपित होते । ६७०

हमारी इच्छा हुई की स्वर्गलोक जाकर देखें । उससे प्रेरित होकर हम आकाश में ऊपर उड़े । तब जलानेवाली किरणों के स्वामी सूर्यदेव का रथ दृष्टि में पड़ा । उसको देखते ही आग को भी जला सकनेवाले लाल किरणों के स्वामी सूर्य ने कोप करके— । ९७०

मुन्दिय	वैम्वि	मेनि	मुळ्ङ्गळन्	मुडुहुम्	वेलै
अँन्दैनी	कात्ति	यैन्शान्	यानिरुन्	जिरैयु	मेन्दि
वन्दन्नन्	मरैत्त	लोडु	मडूरवन्	मडैयप्	पोत्तान्
वन्दुमैय्	यिरुहु	तीयन्दु	विळुन्दन्नन्	विळिहि	लादेन् 971

मुन्तिय-मेरे आगे जो गया; अँम्पि मेत्ति-मेरे भाई के शरीर को; मुळ्ङ्कु अळल्-दाहक अग्नि से; मुट्टुक्कु वेल-जलाने लगी, तब; अँन्तै-तात; नी कात्ति-तुम वचाओ; यैन्शान्-कहा; यान्-मैंने भी; इरुम् चिरैयुम् एन्ति-दोनों पंखों पर (धूप) धारण करके; वन्तत्तैन् आकर; मरैत्तलोडुम्-उसको छिपा लिया तब; अवन् मडैय पोत्तान्-वह (मेरे पंखों के नीचे) छिपे-छिपे गया; मैय् वैन्तु-(इसलिए मेरा) शरीर झूलस गया; इरुक्कु तीयन्तु-पंख जल गये; विळिकिलातेन्-मरा नहीं; विळुन्तत्तैन्-(भूमि पर) गिर गया । ६७१

मेरे आगे (मुझसे पहले) जानेवाले मेरे भाई के शरीर को अपनी किरण की दाहक आग से दग्ध किया । तब अनुज ने मुझसे याचना की कि तात ! मुझे वचाओ । मैंने अपने पंख फैला लिये और उसको उनके नीचे कर लिया । वह उनके नीचे छिपे-छिपे आने लगा । पर मेरा शरीर झूलस गया और पंख जल गये । भाग्य से मरा नहीं । मैं नीचे गिर गया । ९७१

मण्णिडै	विळुन्द	वैन्नै	वानिडै	वयङ्गु	वळ्ळल्
कण्णिडै	नोक्कि	युर्ऱ	करुणैयार्	चनहन्	कादर्
पेण्णिडै	यीट्टित्	वन्द	वानर	रिमान्	पेरै
अँण्णिडै	युर्ऱ	कालत्	तिरुहर्पेर्	रैळुदि	यैन्शान् 972

मण् इटै विळुन्त-भूमि पर गिरे हुए; अँन्नै-मुझे; वानिटै-आकाश में; वयङ्कुम् वळ्ळल्-शोभनेवाले देवता ने; कण्णिडै नोक्कि-आँखों से देखकर; उर्ऱ

करुणयात्-हुई करुणा के साथ; चतकन् कातल् पण्-जनक की प्यारी दुहिता; इट्ट ईट्टिन् वन्त-(के निमित्त) मध्य आनेवाले; वानरर्-वानर; इरामन् पेर्-श्रीराम नाम का; अण्णिट्ट उरु कालत्तु-जब जाप करेंगे, उस समय; इरकु पेर्-पंख पाकर; अळुत्ति-उठोगे; अन्नान्-यह करुणा-वचन कहा । ६७२

आकाशचारी सूर्यदेव ने भूमि पर गिरे हुए मुझे देखा और मुझ पर हुई करुणा से कृपावचन कहा कि जनक की प्यारी दुहिता के निमित्त (उनकी खोज में) वानर वीर आयेंगे । जब वे श्रीराम के दिव्य नाम का जाप करेंगे तब तुम्हारे पंख उग आयेंगे और तुम उड़ सकोगे । ९७२

अम्बियु मिडरिन् वीळ्वा तेयदु मरुक्क वज्जि
अम्बरत् तियङ्गुम् याणर्क् कळ्हिनुक् करश नान्नात्
नम्बिमी रीवन् दन्मै नीरिव णडेन्द वाऱ्ऱै
उम्बरु मुवप्पत् तक्की रुणर्त्तुमि नुणर वन्नात् 973

उम्परुम् उवप्प तक्कीर्-देवों से भी प्रशंसनीय; नम्पिमीर्-श्रेष्ठ वीर; इट्टरिन् वीळ्वात्-मेरे दुःख से दुःखमग्न; अम्पियुम्-मेरा भाई; एयत्तु मरुक्क-मेरी आज्ञा इनकार करने से; अज्जि-डरकर; अम्परत्तु-आकाश में; इयङ्कुम्-उड़नेवाले; याणर् कळ्हित्तुक्कु-बलिष्ठ गीधों का; अरचन् आत्तान्-राजा बना; ईत्तु-यही; अम् तन्मै-हमारा वृत्तान्त है; नीर्-तुम्हारे; इवण्-यहाँ; अट्टैन्त आऱ्ऱै-पहुँचने का हाल; उणर उणर्त्तुमिन्-समझाकर बताओ; अन्नान्-कहा । ६७३

देवों से भी प्रशंसनीय काम करनेवाले ! श्रेष्ठ वीरो ! मेरा अनुज बहुत दुःखी हुआ । मेरी आज्ञा टालने से डरकर उसने मेरी बात मान ली और वह आकाशचारी बलिष्ठ पंखों वाले गीधों का राजा बना । यही हमारा वृत्तान्त है । अब कहो तुम्हारे इधर आने का वृत्तान्त । सम्पाति ने यह पूछा । ९७३

अन्नुलु मिरामन् रत्तनै येत्तिन् रिऱैज्जि येन्दाय्
पुत्तौळि लरक्कन् मरुत्त तेवियैक् कौण्डु पोन्दात्
तैन्निशै येन्त वुन्नित् तेडिनाम् वन्दु मेन्नार्
नन्ननीर् वरुन्दल् वेण्डा नान्तिदु नविल्व लेन्नात् 974

अन्नुलुम्-(सम्पाति के यों) कहने पर; इरामन् तन्तै-श्रीराम की; एत्तिन्नर्-स्तुति की; इरैज्जि-प्रार्थना करके; अन्ताय्-तात; पुत्तौळिल् अरक्कन्-नीचकर्मों राक्षस; अ तेवियै-उन देवी को; तैन् तिचै कौण्डु पोन्तात्-दक्षिण दिशा में ले गया; अन्त-ऐसा; उन्नित्-विचार कर; नाम् तेटि वन्तुम्-हम खोजते हुए आये; अन्नान्-कहा (वानरों ने); नन्नु-अच्छा; नीर् वरुन्तल् वेण्डा-तुम दुःख न करना; नान् इत्तु नविल्वल्-मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा; अन्नान्-कहा । ६७४

सम्पाति के यों पूछने पर वानरों ने श्रीराम की स्तुति की और विनय

प्रकट की । फिर उन्होंने कहा कि तात ! वह क्षुद्रकर्मी राक्षस उन देवी सीता को दक्षिण की ओर ले गया । इस विचार से हम उनकी खोज में इधर आये । तब सम्पाति ने उत्तर में कहा कि अच्छा ! मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा । सुना । ९७४

पाहोन्ऱु	कुदलै	याळैप्	पादह	वरक्कन्	पऱ्ऱिप्
पोहिन्ऱ	पोळुदु	कण्डेन्	पुक्कन्	निलङ्गै	पुक्कु
वेहिन्ऱ	वुळ्ळत्	ताळै	वैज्जिरै	यहतु	वैत्तान्
एहुमिन्	काण्डि	राङ्गे	यिरुन्दन	ळिरैवि	यित्तुम् 975

पाकु ओन्ऱु-चासनी-सम; कुतलैयाळै-मधुरभाषिणी को; पातक अरक्कन्-पातक राक्षस; पऱ्ऱि-पकड़कर; पोकिन्ऱ पोळुतु-जब जा रहा था, तब; कण्डेन्-मैंने देखा; इलङ्कै पुक्कन्-लंका में घुस गया; पुक्कु-वहाँ जाकर; वेकिन्ऱ उळ्ळत्ताळै-दग्धचित्त उनको; वैम् चिरै अकत्तु-फठोर कारागृह में; वैत्तान्-रख लिया; इरैवि-देवी; इत्तुम्-अब भी; आङ्कै-वहीं; इरुन्तळ्-रहती है; एहुमिन् काण्डि-जाकर देख लो । ६७५

जब रावण चासनी-सम मधुरभाषिणी सीता को ले जा रहा था तब मैंने उसे देखा । वह लंका में गया और वहाँ जाकर उसने दग्ध मन वाली सीतादेवी को भयंकर कारागृह में बन्दी बनाकर रखा है । ईश्वरी अब भी वहीं हैं । जाकर देखो । ९७५

अँल्लोरु	जैऱलैन्ब	वैळिदन्ऱव	विलङ्गै	मूदूर्
वल्लोरे	लोऱवरेहि	मऱैन्दव	णौळुहि	वाय्मै
शौल्लोरे	तुयरै	नीक्कित्	तोहैयैत्	तैरुट्टि
अल्लोरे	लैन्शौऱ	रेऱि	युणर्त्तुमि	नळुहर्क्
				कम्मा 976

अ इलङ्कै मूतूर-उस प्राचीन नगर, लंका में; अँल्लोरुम्-तुम सबका; चेऱल् अँत्तपु-पहुँचना; अँळितु अन्ऱु-आसान नहीं; वल्लोरेल्-कर सको तो; ओऱवूर् एक-एक जाकर; अवण् मऱैन्तु ओळुकि-वहाँ छिपे-छिपे चलकर; वाय्मै चौल्लोर्-श्रीराम के वचनों को कहो; तोक्कै-मयूरनिष देवी को; तुयरै नीक्कि-दुःखमुक्त करके; तैरुट्टि-धीरज विलाकर; मीटिर्-लौट आओ; अल्लोरेल्-नहीं तो; अँत्त चौल् तेऱि-मेरे कहने पर विश्वास करके; अळक्कु-सुन्दरराज से; उणर्त्तुमिन्-बताओ; (अस्मा-पूरक ध्वनि) । ६७६

पर उस प्राचीन लंका नगर में तुम सबका जाना सुलभ काम नहीं है । अगर कर सको तो तुममें से एक जाओ । वहाँ छिपे-छिपे घूमो और देवी से मिलकर श्रीराम के कहे वचन कह दो । देवी को दुःख-मुक्त कर दो और लौट आओ । अगर यह नहीं कर सको तो तुम मेरी बात पर विश्वास करो और सुन्दरराज श्रीराम से जाकर निवेदन कर दो । ९७६

काक्कुन रिन्मै यालक् कळुहिन मुळुडुङ् गन्त्रिच्
 चेक्कैविट् तिरियल् पोहित् तिरिरु मदनैत् तीरुप्पान्
 पोक्कैन्क् कडुत्त दाहुम् नल्लदु पुरिमि नैन्ना
 मेक्कुडु विशैयिडु चैन्नान् शिरैयिनाल् विशुम्बु पोर्प्पान् 977

काक्कुनर् इन्मैयाल्-रक्षक न होने से; अ कळुकु इतम्-वह गीधों का समूह;
 मुळुडुम्-सारा; कन्त्रि-दुःखी होकर; चेक्कै विट्टु-वासस्थान छोड़कर; इरियल्
 पोकि-तितर-बितर जाकर; तिरि तरुम्-फिरेगा; अतनै तीरुप्पान्-उस (स्थिति)
 को दूर करने; पोक्कु-उनके पास जाना; अतक्कु अटुत्ततु आकुम्-मेरा योग्य कर्तव्य
 है; नल्लदु पुरिमिन्-जो बेहतर लगे वह करो; नैन्ना-कहकर; चिरैयिनाल्-
 अपने पंखों से; विशुम्बु पोर्प्पान्-आकाश को छाता हुआ; मेक्कु उर-ऊपर;
 विचैयिल्-वेग के साथ; चैन्नान्-गया। ६७७

गीधों का कुलरक्षक राजा के बिना दुःखी होगा और वासस्थान
 छोड़कर तितर-बितर हो जायगा। उसको कष्ट से बचाने के लिए मेरा
 उनके पास जाना आवश्यक है। मैंने जो दो उपाय कहे, उनमें जो बेहतर
 जँचता है वह करो। ऐसा कहकर उसने अपने पंख फलाये जिससे आकाश
 ही आच्छादित हो गया ! वह ऊपर उड़कर अतिवेग से चला गया। ९७७

16 मयेन्दिरप् पडलम् (महेन्द्र पटल)

पौय्युर शैय्यान् पुळ्ळर शैन्त्रे पुहलुड्डार्
 कय्युरै नैल्लित् तन्मैयि नैल्लाड् गरैहण्डाम्
 उय्युरै पेरुडा नल्लवै यैल्ला मुडुवैण्णिच्
 चैय्युमि नौय्दिर् चैय्वहै यावुम् शैय्वल्लीर् 978

पुळ् अरचु-गीधों का राजा; पौय् उरै शैय्यान्-झूठी बात नहीं कहेगा; शैन्त्रे-
 यही; पुहलुड्डार्-कहते हुए; कै उरै नैल्लित् तन्मैयिन्-करतलामलकवत; नैल्लाम्
 करै कण्टाम्-सब साफ़ जान गये हैं; उय् उरै-बचानेवाला समाचार; पेरुडाम्-पा
 गये; नल्लवै नैल्लाम्-भलाकारी सब; उरै अण्णि-खूब सोचकर; चैय्वकै
 यावुम्-करणीय सब; नौय्दित् चैय्वल्लीर्-जो शीघ्र कर सकते हैं; चैय्युमिन्-
 कर लो। ६७८

गीधों का राजा झूठ नहीं बोलेगा। इस विश्वास पर वे आपस में
 बोलने लगे। किन्हीं ने कहा कि करतलामलकवत हमने सब ठीक-ठीक
 जान लिया। हमको बचानेवाला शुभवचन मिल गया। अब जो अच्छा
 होगा वही सोचकर शीघ्र काम करने का सामर्थ्य जिनमें है, वे तुम लोग
 करो। ९७८

माळ वलित्ते मन्नुमिम् माळा वशैयोडु
 मीळवु मुडुर् मन्नुवै तीरुम् वैळिपेरुडुम्

काळ	निऱुत्तो	डोप्पवर्	माळक्	कडरावुर्
राळु	नलत्ती	राळुमि	नैम्मा	रुयिरम्मा 979

माळ वलिऱुत्तेम्-मरने का निश्चय किया; अँनुऱुम्-सदा; इ-इस; माळा वचैयोऱुम्-अचल अपयश के साथ; मौळवुम् उऱुऱेम्-लौट जाना भी सोचा; अन्नूतवै तीरुम्-उनको दूर करते हुए; वैळि पँऱुऱेम्-मार्ग पा लिया; काळ निऱुत्तोऱु-विष-वर्ष का; ओप्पवर्-साम्य रखनेवाले (राक्षस); माळ-मरे, इसके निमित्त; कटल् तावुऱु-समुद्र लाँघकर; आळुम नलत्तीर-जाने का पौरुष रखनेवाले; अँम् आरुयिर्-हमारे प्यारे प्राणों को; आळुमिन्-सुरक्षित करो । ६७६

उन्होंने आगे कहा । हमने मरने की बात सोची थी । फिर देवी को खोजे बिना ही अचल अपयश लेकर लौट जाने का संकल्प भी किया । पर वे दोनों स्थितियाँ अव टल गयी । कुछ अच्छा मार्ग दिखायी देने लगा है । इसलिए हममें, जिनमें काले विष के-से रंग वाले राक्षसों को मारने का मौका पैदा करने के निमित्त समुद्र लाँघकर जाने का सामर्थ्य है, वे हमारे प्राणों की रक्षा करें । ९७९

शूरियन्	वैऱुऱिक्	कादल	नोडुज्	जुडर्विऱुक्
आरिय	नैच्चेन्	रेदोळ्	दुऱुऱ	दऱैहिऱुपिन्
शौरिय	दन्ऱु	तेरुदल्	कोऱुऱच्	चैयलम्मा
वारिह	डप्पार्	याव	रैन्तुत्तम्	वलिशौल्वार 980

वैऱुऱि-विजयी; शूरियन् कातलतोऱुम्-सूर्य के प्यारे पुत्र के साथ; चुटर् विल्-उज्ज्वल धनु को; कै आरियनै-हाथ में लिये रहनेवाले आर्य को; चैन्ऱे-जाकर; तोळुतु-नमस्कार करके; उऱुऱु-धीती बात; अऱैकिऱुपिन्-कहेंगे तो; चीरियतु अन्नू-श्लाघ्य नहीं होगा; तेरुतल्-खोजना; कोऱुऱ चैयल्-विजयसूचक काम है; वारि कटप्पार्-समुद्र लाँघ सकनेवाले; यावर् अँत-हममें कौन है, पूछने पर; तम् वलि-अपना-अपना बल; चोल्वार्-बखानने लगे । ६८०

जिस कार्य को करने की आज्ञा ले आये, उसे पूरा किये बिना हमारा सूर्य के प्यारे पुत्र सुग्रीव और उज्ज्वल धनु के धारक श्रीराम के पास जाना और नमस्कार करके बीती बातों को कहना श्लाघ्य नहीं होगा । सीताजी का अन्वेषण ही वीरोचित कार्य है । इसलिए हममें कौन हैं, जो इस समुद्र को लाँघ सकते हैं ? इस प्रश्न पर सब अपने-अपने बल का प्रमाण देने लगे । ९८०

नीलन्	मुदऱुपेर्	पोर्हैळु	कोऱुऱ	नैडुवीरर्
शाल	वुरैन्तार्	वारि	हडक्कुन्	दहविन्मै
वेलं	कडप्पैन्	मोळ	मिडुक्किन्	रैन्विट्टान्
वालि	यळिक्कुम्	वीर	वयप्पोर्	वशैयिल्लान् 981

नीलन् मुतल्-नील आदि; पेर्-बड़े; पोर् कँळु-युद्ध-चतुर; कौइस् नँटु वीरर्-विजय पाने में श्रेष्ठ वीर; वारि कटक्कुम् तकवु-समुद्र लाँघने की शक्ति का; इन्मै-अभाव; चाल-खूब; उरँतर्-बोले; वालि अळिक्कुम्-वाली दत्त; वीर वयम् पोर्-वीरता और विजयशीलता के साथ युद्ध करनेवाला; वचै इल्लान्-अनिष्ट अंगद ने; वेले कटप्पेन्-समुद्र लाँघ जाऊँगा; मीळ-लौटने की; मिटुक्कु इन्ऱु-शक्ति नहीं; अँत-ऐसा; विट्टान्-पूरा किया (वचन) । ६८१

नील आदि युद्ध-समर्थ वीरों ने अपने में समुद्र-तरण की शक्ति का अभाव स्पष्ट रूप से मान लिया। वाली के पुत्र, वीरविजयी योद्धा अंगद ने कहा कि मैं समुद्र के उस पार चला जाऊँगा। पर लौट आने की शक्ति मुझमें नहीं है। ऐसा कहकर उसने अपने को छुड़ा लिया। ९८१

वेद	मत्तैत्तुन्	देर्दर	वैट्टा	वोरुमैययन्
पूदल	मुइऱु	मोरडि	वैत्तुप्	पौलिपोळ्दिन्
मादिर	मैट्टुज्	जूळ्परे	वैत्ते	वरमेरु
मोद	विळैत्ते	ताळुळै	वुइरेन्	विइत्तुमैयम्बीर् 982

नालु मुकत्तान्-चतुर्मुख के; उतवुइरान्-दत्त पुत्र (जाम्बवान) ने; विइल् मौयम्पोर्-बलवान कन्धों वाले; वेतम् अत्तैत्तुम्-सारे वेद; तेर् तर-खोज देखें तब भी; अँट्टा-अप्राप्य; ओरु मैययन्-एक दिव्यशरीरी; पूतलम् मुइऱुम्-सारी भूमि को; ओर् अटि वैत्तु-एक पग में समाकर; पौलि पोळ्तिन्-जब शोभायमान रहे, तब; मातिरम् अँट्टुम्-आठों दिशाओं में; परै वैत्ते-ढिँढोरा पीटते हुए; चूळ् वर-घूमता गया; मेरु मोत-तब मेरु से टकराया और; इळैत्ते-थककर; ताळ् उळैवु उइरेन्-मेरे पैरों में दर्द हुआ। ६८२

(चतुर्मुखपुत्र जाम्बवान ने कहा कि) हे शक्तिमन्त वीर ! जब सारे वेदों के ज्ञान के परे रहनेवाले दिव्यशरीरी त्रिविक्रम सारी भूमि को एक चरण के अन्दर नापते हुए शोभ रहे थे तब मैं ही भूमि भर में उस बात का ढिँढोरा पीटते हुए घूमा। तब मेरु से टकराया और मेरे पैरों में दर्द हो गया। ९८२

आदलि	निप्पे	रार्हलि	कुप्पुइ	इहळिब्बि
मीदु	कडत्ति	तीयव	रुटकुम्	विनेयोडुम्
शोदै	तत्तैत्तेरन्	दिङ्गुडन्	मीळुन्	दिइन्निन्ऱैन्
शोदि	यिरुत्ता	नालु	मुहत्ता	तुदवुइरान् 983

आतलिन्-इसलिए; इ पेर् आर् कलि-इस बड़े समुद्र को; कुप्पुइ-पारकर; अकळ् इन्चि-खाई और प्राचीरों के; मीतु कटत्ति-पार जाकर; तीयवर् उटकुम्-क्रूर राक्षसों को भय देनेवाले; विनेयोडुम्-कर्म के साथ; चीतै तत्तै-सीताजी को; तेरन्तु-खोज पाकर; इङ्कु उटन् मीळुम्-यहाँ तुरन्त लौट आने का; तिइन्-बल; इन्ऱु-नहीं; अँन्ऱु-ऐसा; ओति इइत्तान्-कह दिया। ६८३

इसलिए अब इस समुद्र को लाँघने, खाई और प्राचीरों को पार कर जाने और उन बुरे राक्षसों को भयभीत करते हुए साहस दिखाकर सीताजी को खोज पाकर लौट आने की शक्ति मुझमें आज नहीं है। (—कहा चतुर्मुख-सूनु ने) । ९८३

यामिनि	यिप्पो	दारिडर्	तुय्त्तिङ्	गित्तियारैप्
पोर्मन्	वैप्पे	मैन्वदु	पुन्मैप्	पुहळन्ने
कोमुदल्	वर्क्के	डाहिय	कौड्डक्	कुमरानम्
नाम	निळुत्तिप्	पेरिशं	तैक्कु	नवैयिल्लोन् 984

अयन् मैन्तन्-ब्रह्मा का पुत्र; को मुत्तल्वर्क्कु-वानर नायकों में; एराकिय-सिंह-सम; कौड्ड कुमरा-राजकुमार; याम् इति इ पोतु-हम आगे अब; आर् इटर् तुय्त्तु-बहुत कष्ट सहते हुए; इड्डु-यहाँ से; इत्तियारै-इच्छा करनेवालों को; पोम् अँत वैप्पेम्-जाओ कह भेजें; अँत्तु-यह; पुन्मै पुकळ् अन्ने-यश पर कलंक होगा न; नम् नामम् निळुत्ति-हमारा नाम अमर करके; पेरै इवै-बड़ा यश; तैक्कुम्-दिलानेवाला; नवै इल्लोन्-निर्दोष । ६८४

जाम्बवान को हनुमान का स्मरण आया । उसने अंगद से कहा । वानरयूथपों में सिंह, अंगद ! हम अब क्यों संकट उठा रहे हैं ? जो जाने को सम्मत होंगे, उनको भेजने की बात सोच रहे हैं ? यह हमारे यश पर बढ़ा होगा न ? हमारा नाम अमर करनेवाला, बड़ा यश दिलानेवाला निर्दोष— । ९८४

आरियन्	मुत्तर्प्	पोटुड	वुड्ड	वदत्तानुम्
कारिय	मैण्णिच्	चोर्वड	मुड्डु	गडनानुम्
मारुदि	यौप्पार्	वैरिलै	यैत्ता	वयन्मैन्दत्
शौरियन्	मड्डो	ळण्मै	तैरिप्पा	निवैशैप्पुम् 985

आरियन्-श्रीराम से; मुत्तर्-पहले; पोतुड उड्ड-जाकर (सुग्रीव को) सखा बना दिया; अतत्तात्तुम्-उस कारण; कारियम् अँण्णि-कर्तव्य समझकर; चोर्वु अड्ड-विना किसी शैथिल्य के; मुड्डुम्-पूरा करनेवाली; कटत्तानुम्-कर्तव्यपरता के कारण; मारुदि औप्पार्-मारुति की समानता करनेवाला; वैरु इलै-और कोई नहीं है; अँत्ता-कहकर; अयन् मैन्तन्-ब्रह्मा के पुत्र ने; शौरियन्-श्रेष्ठ हनुमान का; मल् तोळ् आण्मै-मल्लयुद्ध में चतुर भुजबल; तैरिप्पान्-समझाने के लिए; इवै चैप्पुम्-निम्नलिखित ये वचन कहने लगा । ६८५

और श्रीराम से नाता जोड़कर उस कारण और कर्तव्य को समझकर उसको पूरा करने में तत्पर रहनेवाला जो हनुमान है, उसके समान और कोई नहीं है । फिर जाम्बवान उस हनुमान से उस मल्लवीर के भुजबल का वर्णन करते हुए यों बोला । ९८५

मेलै	विरिञ्जत्	वीयितुम्	वीया	मिहैनाळीर्
नूलै	नयन्तु	नुण्णि	डुणर्न्दीर्	नुवर्क्कीर्
कालन्तु	मञ्जुड	गायत्ति	मौय्म्बीर्	कडन्तिर्
आल	नुहर्न्दा	नैन्	वयप्पो	रडर्हिर्पीर् 986

मेलै विरिञ्चत्-सर्वश्रेष्ठ विरंचि; वीयितुम्-मर जायँ तो भी; वीया-अक्षय; मिहै नाळीर-लम्बी आयु वाले हो; नूलै-शास्त्रों को; नयन्तु-चाहकर; नुण्णितु उणर्न्तीर्-सूक्ष्म रूप से जानते हो; नुवल् तक्कीर्-भाषण-समर्थ; कालन्तुम् अञ्चुम्-यम को भी डरानेवाले; काय् चित्त-भयंकर क्रोध के साथ; मौय्म्बीर्-शक्ति रखनेवाले हो; कटन् तित्तीर्-कर्तव्य पर अटल रहनेवाले; आलम् नुकर्न्तान् अन्न-हलाहल-भोगी (शिवजी) के समान; वय पोर्-विजयी युद्ध में; अटर्किर्पीर्-सबका हनन कर सकनेवाले होओगे । ६८६

सर्वश्रेष्ठ देवता ब्रह्मा चाहे मिट जायँ तो भी तुम अचल, अक्षय आयु वाले हो ! शास्त्र के सूक्ष्म ज्ञान रखनेवाले; भाषणविदग्ध; यम को भी भयभीत करनेवाले क्रोधयुक्त बलवान; कर्तव्यपरायण और हलाहलभक्षक शिवजी के समान युद्ध में शत्रुसंहारक हो तुम । ९८६

वैप्पु	शैन्दी	नीर्वळि	यालुम्	विळियादीर्
शैप्पु	दैवप्	पल्बडै	यालुञ्	जिदैयादीर्
औप्पुर्	नौप्पार्	नुम्मल	दिल्ली	रौरहाले
कुप्पुर्	नण्डत्	तप्पुड	मेयुड	गुदिहौळ्वीर् 987

वैप्पु उड्ड-गरम; चैम् ती-लाल आग से (और); नीर्-जल; विळियालुम्-और पवन से; विळियातीर्-तुम मरनेवाले नहीं; चैप्पु उड्ड-कथित; पल् तैय्व पटैयालुम्-विविध दिव्यास्त्रों से; चित्तैयातीर्-तुम अभेद्य हो; औप्पुर्-तुलना करके देखें तो; औप्पार्-तुम्हारे समान; नुम् अलतु-तुमको छोड़; इल्लीर्-कोई नहीं है; और काले कुप्पुर्-एक ही छलाँग में; अण्डत्तु अप्पुर्मेयुम्-इस अण्ड के उस पार भी; कुत्ति कौळ्वीर्-जाकर कूद सकोगे । ६८७

गरम लाल अग्नि, जल और पवन से भी तुम मर नहीं सकते । प्रशंसित विविध दिव्यास्त्रों द्वारा भी तुम अभेद्य हो । उपमा ढूँढ़ने पर अपने समान तुम ही हो; और कोई तुम्हारी समानता नहीं कर सकता । एक ही छलाँग में तुम इस अण्ड के उस पार कूद सकते हो ! । ९८७

नल्लवु	मौन्नी	तीयवु	नाडि	नवैतीरच्
चौल्लवुम्	वल्लीर्	कारिय	नोरे	तुणिहिर्पीर्
वैल्लवुम्	वल्लीर्	मीळवुम्	वल्लीर्	मिडलुण्डेल्
कौल्लवुम्	वल्लीर्	तोळ्वलि	यैन्नुड	गुरैयादीर् 988

नल्लवम् औन्नी-अच्छे ही क्या; तीयवुम् नाडि-बुरे भी सोचकर; नवै तीर-

दोष दूरकर; चोल्लवुम् वल्लीर्-बोलने में चतुर होओगे; कारियम् नीरे तुणिकिर्पीर्-कर्तव्य तुम ही निश्चय कर सकते हो; वेल्लवुम् वल्लीर्-सफल भी होओगे; मीळवुम् वल्लीर्-(कार्य पूरा कर) लौट सकोगे; मिटल उण्टेल-युद्ध होगा तो; कौल्लवुम् वल्लीर्-मार भी सकोगे; तोळ वलि-भुजबल में; अन्नुम् कुरैयातीर्-कभी हीन नहीं होओगे । ६८८

अच्छा, बुरा —सबकी विवेचना करके दोषहीन बातें कहने में तुम समर्थ हो । क्या करना है —यह तुम ही निश्चय करके उसको करने का सफलता पाने का और सफल होकर लौट आने का अद्भुत सामर्थ्य रखनेवाले हो । वहाँ कोई लड़ने आवे और युद्ध छिड़ जाय तो तुम उनको मार भी सकते हो । तुम्हारे भुजबल में कभी क्षीणता नहीं पड़ेगी । ९८८

मेरु	किरिक्कु	मीदुर्	निङ्कुम्	पेरुमैय्यीर्
मारि	तुळिक्कुन्	दारं	यिडुक्कुम्	वरवल्लीर्
पारं	यैडुक्कुम्	नोन्मै	वलत्तीर्	पळियर्डीर्
शूरिय	नैच्चैन्	रैण्णै	यहतुन्	दौडवल्लीर् 989

मेरु किरिक्कुम्-मेरु गिरि से भी; मीदु उर् निङ्कुम्-उन्नत रहनेवाले; पेरु मैय्यीर्-बड़े शरीर वाले; मारि तुळिक्कुम्-वर्षा से गिरनेवाली; तारं इटुक्कुम्-धार के बीच से भी; वरवल्लीर्-आ सकनेवाले हो; पारं अटुक्कुम्-भूमि को भी उठाने की; नोन्मै वलत्तीर्-बड़ी शक्ति रखनेवाले; पळि अर्डीर्-अनिष्ट हो; चैन्नु-ऊपर जाकर; चूरियन्-सूर्यदेव को; ओळ्-अपने उज्ज्वल; कं अकत्तुम्-हाथ से; तौट वल्लीर्-स्पर्श कर सकते हो । ६८९

तुम्हारा शरीर मेरुपर्वत से भी बड़ा है । फिर भी वारिश की दो धारों के बीच से जा निकलने की शक्ति रखते हो ! भूमि को उठाने की क्षमता तुममें है । इतना होते हुए भी अनिष्ट हो । ऊपर जाकर सूर्य को अपने उज्ज्वल हाथ से छूने की शक्ति रखनेवाले हो तुम । ९८९

अडिन्दु	तिरुत्ता	रैण्णि	यडुत्ता	इळियामै
मडिन्दुरु	ळप्पोर्	वालियै	वैल्लु	मदिवल्लीर्
पौरिन्दिमै	यारहोन्	वच्चिर	बाणम्	बुहमूळ्ह
अडिन्दुळि	यिर्डीर्	पुन्मयि	रेनु	मिळवादीर् 990

तिरुत्तु आ-श्रेष्ठ मार्ग; रैण्णि अडिन्दु-सोच-समझकर; अडुत्तु आइळियामै-धर्म-मार्ग न बिगाड़कर; वालियै-वाली को; पोर्-युद्ध में; मडिन्दु उरुळ-औंधे गिरकर लोटने देते हुए; वैल्लुम्-जिताने की; मति वल्लीर्-बुद्धिशक्ति से युक्त थे; इमैयार् कोन्-देवराज; वच्चिर पाणम्-वज्र-बाण; पौरिन्दु-आग उगलते हुए; पुक् मूळ्क-शरीर में घुसकर धंस जाय ऐसा; अडिन्दुळि-फेंकेगा तब भी; ओर् पुन् मयिरेन्नुम्-एक छोटा बाल भी; इर् इळवातीर्-नष्ट नहीं होगा, ऐसे बलवान हो तुम । ६९०

तुमने ही श्रेष्ठ उपाय सोचकर धर्म का मार्ग बिगाड़े विना वाली को युद्ध में मरकर लोटने दिया । वह तुम्हारी ही बुद्धि-शक्ति का परिणाम था । देवराज का वज्र आग उगलते हुए आकर तुम्हारे शरीर पर घुस जाये तो भी वह तुम्हारा एक छोटा बाल भी नष्ट नहीं कर सकता —तुम ऐसे क्षमताशाली वीर हो । ९९०

पोरुमु	नेदिर्न्दान्	मूवुल	हेनुम्	बीरुळाहा
ओरुविल्	वलङ्गोण्	डौल्हलिल्	वीरत्	तुयर्दोळीर्
पारुल	हेंडुगुम्	पेरिरुळ्	शीक्कुम्	पहलोन्मुन्
तेरुमु	नडन्दे	यारिय	नूलुन्	दैरिवुर्डीर् 991

मू उलकेतुम्—तीनों लोक भी; पोर मुत्—युद्ध में सामने; अँतिरन्ताल्—लड़ें तो; पोरुळ् आका—कोई चीज न मानकर; ओरुवु इल्—दूसरों के लिए अगम; वलम् कीण्टु—बल के साथ; ओल्कल् इल्—अक्षुण्ण; वीरत्तु—साहस के साथ; उयर्—उन्नत रहनेवाले; तोळीर्—भुजाओं वाले; पार् उलकु अँड्कुम्—भूतलों के साथ अन्य लोकों में सर्वत्र; पेर् इरुळ्—घने अन्धकार को; चीक्कुम्—मिटानेवाले; पकलोत् मुन्—दिवाकर के सामने; तेर् मुन् नटन्ते—उसके रथ के सामने (मुख करते हुए) चलते-चलते ही; आरिय नूलुम्—संस्कृत के ग्रन्थों का भी; तैरिवुर्डीर्—अध्ययन कर चुके हो । ९९१

तीनों लोक भी युद्ध में तुम्हारा सामना करेंगे तो भी वे कुछ चीज नहीं रहेंगे । तुम्हारा बल कोई जान भी नहीं संकता । बड़े बलिष्ठ और अक्षय साहसी हो ! बल और साहसयुक्त कन्धों वाले ! सभी लोकों के अन्धकारनाशक सूर्यदेव के सामने उनकी ओर मुख करके चलते हुए तुमने उनसे सभी संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया था । ९९१

नीदिय	तिन्नीर्	वाय्मै	यमैन्दीर्	निन्तैवालुम्
मादर्	नलम्बे	णाडु	वळर्न्दीर्	मरैयैल्लाम्
ओदि	युणर्न्दी	रुळि	हडन्दी	रुलहीनुम्
आदि	ययन्डा	नेयैत	याडु	मरैहिन्नीर् 992

नीतियिन् तिन्नीर्—नीति पर अटल रहनेवाले; वाय्मै अमैन्तीर्—सत्यसंध; मादर् नलम्—स्त्री-सुख; निन्तैवालुम्—मन से भी; पेणातु—न चाहकर; वळर्न्तीर्—बड़े हुए हो; मरै अँल्लाम्—सारे वेदों का; ओति उणर्न्तीर्—अध्ययन करके अर्थ जानते हो; अळि—युग को भी; कटन्तीर्—बिताकर रहनेवाले हो; उलकु ईन्नुम्—लोकसर्जक; आति अयन्—आदि ब्रह्मा; तात्ते—ये ही हैं; अँत—ऐसा; यातुम्—सबसे; अरैकिन्नीर्—कहे जाते हो । ९९२

तुम नीति पर अटल रहनेवाले हो; सत्यसंध हो । मन से भी स्त्री-सुख नहीं चाहकर बड़े हुए ब्रह्मचारी हो ! वेदों को पढ़कर उनका अर्थ जान

શ્રી, કવને ગીરવણી સ્ત્રી । ૧૧૨

ಗೃಹಿಣಿ
ಮಗ
ಪುತ್ರಿ
ನಿವೃತ್ತಿ
ಮೃತ್ಯು

निम्न : अर्थात् कोणार्द्ध-रेखा धारणा समाप्त । २५३

३४४।१७

कृष्णगिरि
 चवथा
 पृथ्वी
 दुर्गेता
 लिखायाह १९९४

आपे नो ची; सुपानोरे-पुनि सुपेवोले नोरो नो । ५५४

১৯৯১ খ্রিঃ

ईण्डिय	कौडुत्	तिन्दिर	नैन्वान्	मुदल्यारुम्
पूण्डुन	डक्कु	नन्नेरि	यानुम्	पौरैयानुम्
पाण्डिदर्	नीरे	पार्त्तित्ति	दुय्क्कुम्	बडिवल्लीर्
वेण्डिय	पोदे	वेण्डुरु	वैय्दुम्	वित्तैवल्लीर् 995

कौडुत्तु ईण्डिय-वीरतापूर्ण; इन्तिरन् अन्तपान् सुतल्-इन्द्र आदि; यारुम्-सभी; पूण्डु नटक्कुम्-जिस मार्ग को अपनाकर चलते हैं; नल् नैरियात्तुम्-ऐसे अच्छे आचरण से; पौरैयानुम्-क्षमा से; पाण्डित् नरीरे-पण्डित तुम ही हो; पार्त्तु-खूब सोचकर; इत्ति उय्क्कुम्पटि-अच्छे प्रकार से (कार्य) करने में; वल्लीर्-चतुर हो; वेण्डिय पोते-इच्छा करते हो; वेण्डु उरु अय्युम्-मनचाहा रूप लेने के; वित्तै वल्लीर्-कार्य में भी कुशल हो । ६६५

बलसमृद्ध देवेन्द्र आदि जिस मार्ग को महत्त्व देते हैं, उसी मार्ग पर चलने और क्षमता रखने से तुम पंडित हो ! तर्क-वितर्क करके किसी भी काम को योग्य रीति से चलाने में तुम दक्ष हो । जब चाहो तभी मन-माना रूप लेने के कार्य में तुम बड़े कुशल हो । ९९५

एहुमि	नेहि	यैम्मुयिर्	नल्हो	रिशैकौळ्ळीर्
ओहै	कौणरन्दे	मन्नेयु	मिन्नर्	कुरैयिल्लाच्
चाहर	मुडुन्	दाविडुम्	नीरिक्	कडशवुम्
वेहम	मैन्दी	रैन्शुवि	रिजन्	महन्विट्टान् 996

नीर्-तुम; ई-इस; कटल् तावुम्-समुद्र लांघने की; वेक्म् अमैन्तीर्-गमनगति से युक्त हो; एकुमिन्-तुम जाओ; ओक् कौणरन्तु-खुशखबरी लाकर; अम् उयिर्-हमारे प्राण; नल्कीर्-रक्षित करके; इचै कौळ्ळीर्-यश अर्जित कर लो; अम् अन्नेयुम्-हमारी जननी (सीतादेवी) भी; कुरैवु इल्ला-अक्षय; इत्तल् चाकरम्-दुःख-सागर; मुडुम्-पूरा लांघ सकेंगी; अन्नु-कहकर; विरिञ्चन् मकन्-ब्रह्मा के पुत्र ने; विट्टान्-अपनी बात समाप्त की । ६६६

तुम्हारे पास समुद्र-तरण की गमन-शक्ति है । तुम ही जाओ और सन्तोष-समाचार लाओ । हमारी जान बचाओ और यशस्वी बनो । हमारी जगज्जननी जानकी भी दुःख-सागर-तरण कर लेंगी । जाम्बवान ने अपनी बात यह कहकर समाप्त की । ९९६

चाम्बनि	यम्बत्	ताळ्वद	त्तत्ता	मरैनाप्पण्
आम्बल्वि	रिन्वा	लन्त	शिरिप्पा	त्तिवाळन्
कम्बलौ	डुज्जेर्	कैक्कम	लत्तन्	कुलमैल्लाम्
एम्बल्व	रत्तन्	शिन्दे	तैरिप्पा	तिवैशौन्तान् 997

चाम्बन् इयम्प-जाम्बवान के कहने पर; अत्तिवाळन्-वृद्धिमान-हनुमान; ताळ्वत्तम् तामरै-उतरे हुए चेहरे रूरी कमल; नाप्पण-के मध्य; आम्बल् विरिन्ताल

अर्ध-शुद्ध विकसित हुआ जैसे; विरिण्पाते-मन्दहोस करते हुए; कर्मपल्लवित् के-
 लोडकर बन्द किए हुए; के कमलतल्ल-होत-कमल; कुलम् अल्लाम-सारें सगुं
 के; एम्पल्ल वर- (वागरी की) आनन्द देते हुए; तम् विनो-अपने मन की बात;
 विरिण्पाते-प्रकट करते हुए; इवें चोरोत्तम-ये (निम्न) वचन कहे । ६६७

नीपिरे निनैपिम् मुने नैजुनैरिप् परवै येळम्
 नायल इवैवैम् वेत्रु नैयल्लै नवड्डु कोनैवीरु
 पायिडु पुरिडि मुनेळु पुल्लुनैरु पुनेसे काण्डु
 केपिनि रैनेवि नैनेवि पिउनेववरु पाव विनेम् 998

नीपिरे निनैपिम्-आप स्वयं सोचें तो; मुने-पढ़ें हो; नैजुनै-उत्तम
 वरंगी बाले; परवै एळम्-साली समुद्र की; नाय-लालिकर; उल्लु अल्लैवैम् वेत्रु-
 सयी लोको की जीतकर; नैयल्लै-सीतादेवी की; वल्लड्डु-ले आते; अविनैरु-भीम
 है; पाय-वृम जाया; इव पुरिडि अल्ल-यह काम करी, कहेकर; पुल्लै नीरु पुनेसे-
 अपनी बुद्धिहीन लड़ना को; काण्डु-कु-बेह-समझने को; एविनैरु-(मुझे) प्रिय
 किया, आपने; अविनै-तो; अविनै-मुझसे वरकर; पिउनेववरु-सफल-जन्म;
 इवैवैम् पावरु-और कौन है । ६६८

है जाववान ! आप मन करते तो आप स्वयं पढ़ें हो उत्तम
 तरंगीहोवित्त सागरी का तरंग करते, सारे लोकों की हरा दें और
 देवी को ला दें । आपसे इतनी सामर्थ्य है । लेकिन आपने मुझसे आशा
 दी कि तुम जाओ और यह काम करी, ताकि मैं अपनी बुद्धि-हीनता को
 जान लूँ ! तो मुझसे वरकर सफल-जन्म कौन होगा ? । ९९८

मुउडुनी कलह मुउडुम् विळङ्गुवान् मुळङ्गिा मुनैरु
 उरुडु पिनै मण्ड मुडुनैरुपि मुपुनैरु देवम्
 इउरुवैम् मळळ मङ्गी नैवळु मिण्डु मिण्डु पावुम्
 कउरुवार् पिउडु पिउडु कळुळिउरु कउपपल्ल काण्डिउ 999

नीरु मुउडुम्-जलवल्लित; उलकम् मुउडुम्-संसार भर को; विळङ्गुवान्-
 निगलने के लिए; मुळङ्गि-गर्जन करते हुए; मुनैरु उरुडु-समुद्र उमग आते;
 अल्लैवैम्-तो भी; अण्डम्-आव; उडुनैवै पीय-दंडकर; उपुनैवैवैम्-आकाश
 ऊँचा हो जायगा तो भी; इउरु-अव; पुम् अळम्-आपकी ऊँचा और; अम्
 कोते-होमारे साथ श्रीराम की; एवळुम्-आशा; इण्डु पावुम्-दोनों बाँधों में;
 कउरु वार् विळङ्गळ आक-संकुलित और लम्बे पल्ल बनाकर;
 समान; कउपपल्ल-तरंग कहेगा; काण्डिउ-देवा । ६६९

अब जल-धिरे भूतल भर को लीलने के लिए (त्रि-विध जल का) समुद्र ही क्यों न उमड़ आए, या अण्ड ही फूटे और आकाश ऊपर उड़ जाए, तो भी आपके आशीर्वाद और हमारे प्रभु की आज्ञा दोनों को दो बाजुओं के पक्ष बनाकर मैं गरुड़ के समान इस सागर को लाँघ लूँगा । देखो । ९९९

ईण्डित्ति दुर्इमिन् यात्ते यँरिहड लिलङ्गै यँय्दि
मीण्डिवण् वरुदल् कारुम् विडेदम्मिन् विरैवि नैन्ता
आण्डव रुवन्दु वाळ्त्त वलरम्ळै यमरर् तूवच्
चेण्डीडर् शिमयत् तैय्व मयेन्दिरत् तुम्बर्च् चैन्त्रान् 1000

यात्ते—मैं ही; अँरि कटल्—तरंगाकुल समुद्र के मध्य रहनेवाली; इलङ्कै—लंका में; अँय्ति—जाकर; मीण्डु इवण् वरुतल्—लौट यहाँ आऊँ; कारुम्—तब तक; ईण्डु—यहाँ; इत्तितु—सुख से; उरैमिन्—ठहरो; विरैविन्—शीघ्र; विटै तम्मिन्—विदा दो; नैन्ता—कहने पर; आण्डु—तब; अवर्—उन वीरों के; उवन्तु वाळ्त्त—संतोष के साथ बधाई देते; अमरर्—देवों के; अलर् मळै—पुष्प-वर्षा; तूव—गिराते; चेण् तौटर्—आकाशव्यापी; चिमय—शिखरों-सह; तैय्व—दिव्य; मयेन्तिरत्तु—महेन्द्र के; उम्पर्—ऊपरी भाग पर; चैन्त्रान्—गया । १०००

मेरे अकेले ही उठती तरंगों वाले समुद्र-मध्य-स्थित इस लंका में जाकर लौट आते तक तुम लोग निश्चित होकर यहीं रहो । शीघ्र विदा दो । —हनुमान ने यों कहा । तब उन वानर वीरों ने आनन्द के साथ बधाई दी । देवों ने फूल बरसाये । हनुमान गगनचुंबी शिखरों वाले उस महेन्द्रपर्वत पर चढ़ चला । १०००

पौरुवरु वेलै तावुम् पुन्दियान् पुवत्तन् दाय
पैरुवडि वुयर्न्द मायोन् मेक्कुउप् पयर्न्द ताळ्पोल्
उरुवडि वडिवि नुम्ब रोङ्गित्त नुवमै यालुम्
तिरुवडि यैन्नुन् दन्मै यावर्क्कुन् दैरिय निन्त्रान् 1001

वेलै तावुम्—समुद्र-तरण में लगा हुआ; पौरुव अरु—अप्रतिम; पुन्तियान्—बुद्धिमान; पुवत्तम् ताय—भूमि को जिन्होंने नापा; पैरुवटिवु उयर्न्त—बहुत बड़े आकार में वद्धित; मायोन्—उन मायावी श्रीविष्णु के; मेक्कु उरु—ऊपर जाकर; पयर्न्त—व्याप्त; ताळ् पोल्—श्रीचरण के समान; उरुव अरि—सबके लिए दृश्य; वटिविन्—रूप में; उम्पर्—आकाश में; ओङ्कित्तन्—ऊँचा बढ़ा; तिरुवटि अँन्तुम् तन्मै—‘श्रीचरण’ का युक्तत्व; उवमैयालुम्—उपमा के रूप में भी; यावर्क्कुम् तैरिय—सबके दृष्टिगोचर होते हुए; निन्त्रान्—खड़ा रहा । १००१

तब समुद्र-तरण में प्रवृत्त बुद्धिमान हनुमान त्रिभुवन-मापक त्रिविक्रम-देव के श्रीचरण के समान लगा, जो आकाश में जाकर व्याप्त हुआ था । उसको विष्णुभक्त ‘छोटे विष्णुपाद’ (शिरिय तिरुवडि) के नाम से आदर

अपने शरीर पर लपेटे उस पर्वत पर सबके सामने ऐसा खड़ा रहा, मानो श्रीविष्णु के अवतार कच्छप पर स्थित मन्दर पर्वत हो । १००३

मिन्नेडुङ्	गौण्ड	राळिन्	वीक्किय	कळलि	तारप्पत्
तन्नेडुन्	दोर्ऱम्	वातोर्	कट्पुलत्	तैल्लै	ताव
वन्नेडुञ्	जिहर	कोडि	मयेन्दिर	मण्डम्	ताङ्गुम्
पीन्नेडुन्	तूणिन्	पाद	शिलैर्येनप्	पौलिय	निन्ऱान् 1004

मिन् नेडुम् कौण्टल्-बिजली-सहित बड़ा मेघ; ताळिन् वीक्किय-अपने पैरों में बद्ध; कळलिन्-पायल के समान; आरप्प-स्वरित होते; तन् नेडुम् तोर्ऱम्-अपने बड़े आकार के; वातोर् कण् पुलत्तु-देवों की दृष्टि-पथ के; ताव-पार जाते; वल् नेडुम्-कठोर और बड़े; चिकर कोटि-अनेक शिखरों-सहित; मयेन्तिरम्-महेन्द्र पर्वत; पात चिलै अत-पादप्रदेश के समान; पौलिय-प्रकाशमान दिखा; अण्डम् ताङ्कुम्-इस अण्डगोल को धारण करनेवाले; पीन् नेडुम् तूणिन्-स्वर्ण के ऊँचे खम्भे के समान; निन्ऱान्-खड़ा रहा । १००४

विद्युत्सहित मेघ उनके चरणों में बद्ध चरणवलय के समान नाद कर रहे थे । उनका बड़ा रूप देवों के दृष्टिपथ के भी आगे दिख रहा था । शिखर-युत महेन्द्रपर्वत उसके चरणतल के समान लग रहा था । इस रीति से हनुमान अण्डगोल का वहन करते रहनेवाले स्वर्णस्तम्भ के समान खड़ा रहा । १००४

॥ किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥



❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

सुन्दरकाण्डम्

1. कडल् तावु पडलम् (समुद्र-तरण पटल)

कडवुळ् वाळत्तु (ईश्वर-स्तुति)

❀ अलङ्गलिर् ओत्तुम् बौय्मै यरवैत्तप् पूद मैन्दुम्
विलङ्गिय विहारप् पाट्टिन् वेरुपा डुड्ड वीक्कम्
कलङ्गुव देवरैक् कण्डा लवरैत्तव कैवि लेन्दि
इलङ्गैयिर् पोरुदा रन्ने मरैहळुक् किरुदि यावार् 1

अलङ्कलिल्-माला पर; तोत्तुम्-दिखनेवाले; बौय्मै अरवु-मिथ्या सर्प;
अत्त-के समान; पूतम् ऐन्तुम्-पाँचों भूतों के; विलङ्किय-बने; विकारप्पाट्टिन्-
परिवर्तन के; वेरु पाट्टु उड्ड-बदले हुए; वीक्कम्-बहुत्व (के रूप); अवरै
कण्डात्-जिनके दर्शन से; कलङ्कुवतु-दूर होता है; अवर-वे ही; मरैहळुक्कु-
वेबों के; इत्ति आवार्-अन्त (उपनिषद्-प्रतिपाद्य) विषय हैं; अन्ने-उन्होंने ही न;
कै विल् एन्ति-हाथ में धनु लेकर; इलङ्कैयिल् पोरुतार्-लंका में युद्ध भी किया;
अन्प-ऐसा (तत्त्वदर्शी लोग) कहते हैं । १

माला पर सर्प का विपरीत ज्ञान जैसा होता हो वैसे पाँचों भूतों के
परिवर्तन और मिश्रण पर बने इस प्रपञ्च का निराकरण किनके दर्शन के
फलस्वरूप होगा ? वे ही वेदान्त (उपनिषद्)-प्रतिपादित परब्रह्म हैं और
उन्होंने हाथ में धनुष लेकर लंका में युद्ध किया था । यही तत्त्वविदों का
कहना है । १

नूल् (ग्रन्थ)

आण्डहै याण्ड वातोर् तुउक्कना डरुहिर् कण्डान्
ईण्डदु तान्गौल् वेलै यिलङ्गैयैन् रैय मैय्दा
वेण्डरुम् विण्णा डेन्नुम् मैय्मैहण् डुळ्ळ मोट्टान्
काण्डहुड् गौळ्ळहै युम्ब रिल्लैन्तक् करुत्तुद् कोण्डान् 2

आपू लक्ष-पुस्तक (हजमान) में, आपू-बही, बाही-पुस्तक नई-
देवनागरी का स्वर्णालिपि, अक्षर कण्टार-अपने पास में देखा, ईपूतलू ताने की-
पही का नौ क्या; बेल डलङ्के-समुद्रबलित लंका नगर; अन्ध-पेसा; ऐपुस-
अपुना-संशय करके; बूण्ड अकस- (फिर) जिसकी देवने की आयककन नही;
विपुण्डि-व्यामलोक; अन्धेसं मुपुसं कण्ट-है, यह सपु जानकर; उल्लसं
मिडल-अपने मन की फिर लिपि; काण लक्ष कण्टके-देवने का काण्ड; उमपू
ईल-आकाशालोक में नही; अल-पेसा; कल्लु उद कण्टार-विचार मन में कर
लिपि । २

पुस्तकाल हजमान ने बही (जब बहे अपने बड़े रूप में खड़ा रहा)
पास में देवलीक की देखा । एक पल उसे भ्रम हुआ कि क्या यही समुद्र-
बलित लंका नगरी है । फिर उसे आत हो गया कि यह व्यामलोक है,
जहाँ-जाना आवश्यक नहीं है । यह सपु जान लेने पर उसने अपने विचार
की बहाना लिपि । उसने विचार कि 'मेरी खोजने का कार्य स्वर्ग में नहीं
है' । २

कण्डल निरङ्ग मुद्रके कडिपण्डि कनह नाबिल
मण्डल मदिङ्ग गीरु वण्डि मणिपुत्र वपुद
बूण्डलके कडल मड वपुद मूललम
अपुङ्गुन विपुह डेदु मदिननोळ कण्टि पारुननन 3

डलङ्के मुद्र-लंका के प्राचीन नगर के; कडि पण्डिल-रक्षक उद्यान; कल
नाबिल-स्वर्णमय प्राचीर के माल; मण्डल मणिपुत्र-और गोल परकण्टे; कण्डल
वण्डि-विपुह-विपुह-विपुह; मणिपुत्र-वपुद-मणि-बहि; वपुद लळ कडल-यवन वपु-लेप
लने हुए; मड वीतिपुत्र-सोपों की वीथियाँ; पडरुप अल्लाम-और अन्य सभी की;
कण्डल-देवकर; अपुङ्गुन-अपुह और; विवक डेदु-अपुह विपुहों की;
अतिर-कण्टे हुए; लोळ कण्टि-मुग ठोककर; आरुननन-नवन किप । ३

उसने पर्वत पर से देखा तो उसे प्राचीन लंका नगर के रक्षक उद्यान,
स्वर्ण-प्राचीर के विपुह माल, गोलकार प्राचीर, विपुहकार, यवन वने
की मणिमय दीवारों के बने सोपों वाली वीथियाँ और अन्य विपुह भी
दिखायी दिये । जब उसने आनन्द और उत्साह के साथ अपने कान्धे ठोकते
हुए गान किप, जिससे आठों दिशाएँ और अण्डगोल भरी उठी । ३

वपुनर वरिही गण्डम वपुङ्गळ वृमिळम वपु
पुनर वपुह डेदु वपु पुनरुपु पुण्ड
विनर वपु मणल मणर मणिपुडकी डेदु मणि
कुनर वपु वपु कण्डि कण्डि कण्डि कण्डि 4
अपुन वपुन-विनर वपु के; निरङ्ग अण्ड-वड डेकर पुन देवने से; गोल
कुनर-गोल पर्वत; मणिपु-देकर; कण्ड अण्ड-गोल-गोल वपुकर; लक्ष वपु

कीर्ति-अपने पेट के चिरने से; पितुङ्कित कुटर्कळ् मात-बाहर निकली आँतों के समान; पौन् तन्त-स्वर्णदायी; मुळैकळ् तोड़म्-सभी गुहाओं से; वन् तन्त-कठोर दाँतों के; वरि कौळ्-धारीदार; नाकम्-सर्प; वयङ्कु अळल्-जलती (विष की) आग; उमिळुम् वाय-उगलते मुख के साथ; पुत्तु-बाहर; उराय्-मलते हुए; पुरण्टु-लोटते हुए; पोन्त-आये । ४

चिरजीव हनुमान ने पर्वत को अपने पैर से दबाया और उससे नीले रंग का वह पर्वत नीचे धँसा । तब उसकी स्वर्णमय कन्दराओं से कठोर दाँतों वाले और धारीदार चमड़े वाले सर्प अपने मुखों से जलता विष निकालते हुए लोटते और टकराते हुए बाहर आये । वे उस पर्वत की आँतों के समान लगे, जो पर्वत के दबने से बाहर निकल रही हों । ४

पुहलरु	मुळैयुट्	टुञ्जुम्	पौङ्गुळैच्	चीयम्	बौङ्गि
उहलरुड्	गुरुदि	कक्कि	युळ्ळुड्	नैरिन्द	वूळिन्
अहलरुम्	बरवै	नाण	वरङ्गु	कुरल	वाहिप्
पहलौळि	करप्प	वानै	मरैत्तन	पडवै	यैल्लाम् 5

पुक्क अरुम्-प्रवेश-निरोधक; मुळैयुळ्-गुफाओं में; तुञ्जुम्-सुप्त; पौङ्कु उळै-छिटके हुए अयाल वाले; चीयम्-सिंह; पौङ्कि-उठकर; उक्क अरुम्-जिसको कभी उसने निकाला नहीं था; कुरुति कक्कि-रक्त वमन करते हुए; उळ्-अन्दर; उड् नैरिन्द-खूब दब गये; पडवै अल्लाम्-सभी पक्षी; उळिन्-युगान्त में; अक्क-विस्तृत; अरुम्-दुस्तर; परवै नाण-समुद्र को लजाते हुए; अरङ्गु कुरल-चिल्लाते कण्ठ के; आकि-वनकर; पक्क ओळि करप्प-सूर्य का प्रकाश छिप जाए, ऐसा; वातै-आकाश को; मरैत्तन-ढकते हुए छा गये । ५

उस पर्वत में कन्दराएँ थीं, जो दुर्गम थीं । उनमें सिंह सो रहे थे । अब वे सिंह अपने अयालों को उछालते हुए क्रोध और डर से उठे और रक्त बहाते हुए अन्दर ही दब गये और उनके शरीर से रक्त निकल आया, जो कभी बाहर दिख ही नहीं सका था । उस पर जो पक्षी थे, वे युगान्त-कालीन विशाल समुद्र के गर्जन के समान आर्तनाद उठाते हुए ऊपर उड़े और सूर्य का प्रकाश और आकाश छिप गये । ५

मौय्युरु	शैविह	डाळ्न्डु	मुडुडु	मुडैका	उळ्ळ
मैयुरु	विशुम्बि	तूडु	निमिर्न्दवान्	मदिय	मज्ज
मैयुडत्	तळीइय	मैल्लैन्	पिडियौडुम्	वैरुव	लोडुम्
कैयुड	सरङ्गळ्	शुर्गिप्	पिळिरिन्	कळिनल्	यानै 6

कळि नल् यातै-मत्त और उत्तम गज; मौय् उरु-सबल; चैविकळ्-कर्ण; ताळ्न्तु-झुककर; मुत्तु उड्-पीठ से लगे रहें ऐसा; मुडै काल् तळ्ळ-क्रम से पैर न रख सककर लड़खड़ाते; मै उरु विचुम्पिन् ऊट्टु-मेघ-भरे आकाश में; निमिर्न्दवान्-उठायी हुई दुम के कारण; मतियम् अञ्च-चन्द्र डर गया; मैय् उड् तळ्ळविय-

वह महेन्द्रपर्वत, जिस पर सागौन के वृक्ष थे, विकृत होकर फट गया। तब विद्याधर राजा लोग तलवारों और ढालों को ऊपर उछालते हुए त्वरित-गति से उठे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो वे युद्ध में लड़ने आये हुए शत्रुओं के प्रयासों को विफल बनाने के विचार से ऊपर उठते हुए लपककर जा रहे हों। ८

तारहै	शुडरहण्	मेह	मैन्त्रिवै	तविरत्	ताळ्नुडु
पारिडै	यळुन्नु	हिन्नु	पडर्नेडुम्	बत्तिमाक्	कुन्नुडम्
कूरुहिरक्	कुववुत्	तोळान्	कूमबैतक्	कुमिळि	पौङ्ग
आरुहलि	यळुवत्	ताळुडु	गलमैत	लायिर्	इन्नु 9

तारकै-नक्षत्रमण्डल; चुटर्कळ-सूर्य-चन्द्र-मण्डल; मेकम्-मेघमण्डल; अँनु इवै-आदि इनको; तविर-छोड़कर; ताळ्नु-नीचे जाकर; पार् इटै-भूमि में; अळुन्नुकुन्नु-धँसनेवाला; नैडुम् पटर्-लम्बा-चौड़ा; पत्ति मा कुन्नुडम्-हिमाच्छादित महेन्द्रपर्वत; कूर् उकिर्-तीक्ष्ण नखों और; कुववु तोळान्-पुष्ट कन्धों वाला हनुमान; कूमपु अँत-मस्तूल हो ऐसा; आर् कलि अळुवत्तु-समुद्र में गहरे स्थान में; कुमिळि पौङ्क-बुल्लों को उठाते हुए; आळुम् कलम्-डूबनेवाला पोत; अँतल् आयिर्-हो, ऐसा बना। ९

वह पर्वत नक्षत्रमण्डल, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल और मेघमण्डल के निकट तक चला गया था। अब वह उस स्थान को छोड़कर नीचे जाने लगा। तब वह अतिविस्तृत शीतल पर्वत एक पोत के समान लगा, जो बुलबुलो को ऊपर निकालते हुए समुद्र की गहराई में डूब रहा हो; और हनुमान उस मग्नशील पोत के मस्तूल के समान लगा। ९

ताडुहु	नरुमैन्	शान्दडु	गुङ्गुमडु	गुलिहन्	दण्णैन्
पोडुहु	पौलन्दा	दैन्त्रित्	तौडक्कत्त	यावुम्	पूशि
मीडुरु	शुनैनी	राडि	यरुविपो	लैहितम्	वीळ्व
ओदिय	कुन्नुडु	गोडिक्	कुरुदिनोर्	शौरिव	दौत्त 10

तातु उकु-चूर्ण के रूप में गिरे; नरु-सुवासित; मैन् चान्तम्-मृदु चन्दन; कुङ्कुमम्-केसर; कुलिकम्-इंगुर; तण् अँन् पोतु-शीतल पुष्पों के; उकु-गिराये; पौलम् तातु-स्वर्णवर्ण मकरन्द; अँनु इ तौडक्कत्त यावुम्-आदि सभी; पूचि-मलते हुए; मीतु उरु-ऊपर रहनेवाले; चुत्तै नीर्-झरने के जल में; आटि-स्नान करके; अरुवि वीळ्व पौल्-नदियाँ गिरतीं जैसे; अँकितम् वीळ्व-हंस पक्षी गिरते है; ओतिय कुन्नुडम्-ऐसा वर्णित पर्वत; कोडि-शरीर के फटने से; कुरुति नीर् चौरिवतु-रक्त बहाता हो; औत्त-जैसे लगा। १०

उस पर्वत से हंस नीचे झरनों के समान गिरने लगे। उन पर चन्दन का चूर्ण, केसर, इंगुदी, शीतल पुष्पों का स्वर्णवर्ण मकरन्द और ऐसी

है। १०

कञ्चुक् मन्त्रि द्युतकं कारवर्त्तं विरिपुङ्गुं गालं
मिदञ्च पुनर्गच्छं वृक्षं मयूतवर्त्तं विष्णुमिव वृक्षं
विदञ्चुक् विरिपुङ्गुं वृक्षं वृक्षं वृक्षं वृक्षं
उदञ्चुक् पाशं वीणां वृक्षवर्त्तवत्तं वार्त्तं योत्नारं ॥

कारं वरं-काला पर्वतः कञ्चुक् उक्तं मयूतं उक्तं अग्नि-समुद्र-मध्य मयूता है यह
ऐसा कहने योग्य हो कि विरिपुङ्गु काल-वृक्षवा रक्षः मिदञ्च उक्त-वृक्षवर्त्तवत्तः विष्णुमिव उदञ्चुक्-आकाश
पुनर्गच्छं वृक्षं-विदञ्चुक्-मयूतवर्त्तवत्तः मयूतवर्त्त-मयूतवर्त्तवत्तः विष्णुमिव उदञ्चुक्-आकाश
में चले गये; विदञ्चु उक्त-दीर्घा वारः विरिपुङ्गु-उक्त पर्वत पर; मयूत वृक्षवर्त्तवत्तः
मुदञ्चु-अपना-अपना कञ्चुक् (वृक्ष) पूरा करके; उदञ्चु उक्त पाश-वृक्षवर्त्तवत्तः मुदञ्चु
वीणा-पूरा रूप से मयूतवाकर; उदञ्चु वृक्षवर्त्त-आकाश में (सगरीर) जावार्त्तः
आवर्त्त-के समाप्त दिखे। ११

मयमण्डित होने से काला दिखनेवाला वह पर्वत समुद्र में मयूता के
समान जब धूम, तब सशक्त इन्द्रियों के निगहों से चले तपस्वी आकाश में
जाने लगे। तब वे ऐसे लगे मानो पर्वत के उद्यत समान स्थलों पर
अपना तपोकर्म पूरा करके सगरीर हो, गरीर-सगरीर छोड़े बिना ही ऊपर
चलाये जा रहे हों। ११

वृषिलयः कृत्स्नः गिरि वृद्धितेजः ननुकं मयूतं
मयिलयः इन्द्रकं मारु ननुकं कोष्णं पालिनेद वानरे
अपिलयः इन्द्रकं ननुकं मयूतं विरिनेद ननुकं
कपिलयः लिखनेद वेवने नलिनेन कर्तुनेन ॥ १२

वृषिल इयल-उदञ्चलः कृत्स्न-पर्वतः कीरि वृद्धितेजस्य-जब वरार पङ्कज
दंडः मयिल इयल-काला-पी-पी; नलिनेकं मारु-फलव-समान दृष्टां बाली अपराधों
में; ननुकं मयूत-कपिली इन्द्रः ननुकं कोष्ण-आलिंगन कर लिया तो; पालिनेद-
उक्त स्थिति में शीघ्रमयान; वानरे-वृक्षमयारी; अपिल अलिङ्ग-दीर्घा दृष्टावर्त्तः
अरककृत्-राक्षस के; अञ्च-उद्यत पर; विरिनेन मयूत-जब कलस पर्वत धूम उठा,
उक्त स्थिति में; पृथल-आलिंगन कर लेने से; कपिलयिने-उक्त
कलस पर्वत पर; इन्द्र-इन्द्रः (शिव) के; नलि नलि-पुष्प-पुष्पः
कर्तुनेन वृक्षवर्त्त-समान दिखे। १२

वह उदञ्चल पर्वत वरार जाकर फटा। तब मयूतविष्णु पलवहने

देवतर्णियों ने डरकर अपने प्रेमियों का आलिंगन कर लिया । उनके साथ शोभनेवाले वे देवगण एक-एक उन परमेश्वर के समान लगे, जिनको उमादेवी ने तीक्ष्ण दाँतों वाले रावण के कैलासपर्वत को उखाड़ लेने और उस पर्वत के घूमने पर कैलासपति का आलिंगन कर लिया था । १२

ऊरिय	नरवै	युण्ड	कुरुरन्द	मुणर्व	युण्णच्
शीरिय	मनत्तर्	दैय्व	मडन्दैय	रूड	रीर्वुर्
रात्रिन	रञ्जु	हिन्त्रा	रन्बरैत्	तळुवि	युम्बर्
एरित्त	रिट्टु	नीत्त	पैङ्गिल्किक्	किरङ्गु	हिन्त्रार् 13

ऊरिय नरवै-पुरानी सुरा को; उण्ट कुरुरम्-पीने के दोष से; तम् उणर्वै-अपनी चेतना को; उण्ण-नष्ट करने से; चीरिय मनत्तर्-कुपित मन वाली; तैय्व मडन्दैयर्-देवरमणियाँ; ऊटल्-रूठन (जो पालती थीं, उस) को; तीर्वुर्-अब पर्वत की स्थिति के कारण) छोड़कर; आरित्तर्-शान्त हुई; अञ्चुकिन्त्रार्-भय से त्रस्त हैं; अत्परै तळुवि-प्रियों को आलिंगन में ले; उम्पर् एरित्तर्-आकाश में चढ़ गयीं; इट्टु नीत्त-जो छोड़े गये हैं; पैङ्गिल्किक्-छोटे शुकों के लिए; इरङ्कुकिन्त्रार्-दुःखी होती हैं । १३

देवांगनाएँ अपने पतियों से रूठी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने पुरातन सुरा का पान कर लिया था, जिसके फलस्वरूप देवों का मन भ्रान्त था और स्त्रियों की इच्छा पूरी नहीं हुई थी । अब चूँकि पर्वत हिलने और घँसने लगा, इसलिए वे अपनी रूठन छोड़कर शान्त हो गयीं और भय खाकर उनसे लिपटकर व्योमलोक जाने लगीं । जाते-जाते वे अपने शुकों को छोड़ जाने के कारण दुःखी हो रही थीं । १३

इत्तिर्	निहळुम्	वैलै	यिमैयवर्	मुनिवर्	मर्ळुम्
मुत्तिर्	तुलहत्	तारु	मुर्मुर्	विशुम्बिन्	मोयत्तार्
तीत्तु	मलरुम्	जान्दुम्	जुण्णमु	मणियुन्	द्वि
वित्तह	चेरि	यैन्त्रार्	वीरनुम्	विरैव	दानान् 14

इ तिरम् निकळुम् वैलै-इस तरह जब सब हो रहे थे, तब; इमैयवर्-व्योमवासी; मुनिवर्-मुनि; मर्ळुम् मु तिरत्तु उलकत्तारुम्-और अन्य त्रिलोकवासी; मुर्मुर्-बारी-बारी से; विचुम्पिन् मोयत्तार्-आकाश में आकर जुट गये; तीत्तु उरु मलरुम्-गुच्छों में फूल; चान्तुम्-चन्दन; जुण्णमु-सुगन्ध-चूर्ण; मणियुम्-और रत्न; त्वि-बरसाकर; वित्तक-निपुण; चेरि-चलो; यैन्त्रार्-कहा (उन्होंने); वीरनुम्-वीर भी; विरैवतु आत्तान्-गतिमान हुआ । १४

जब ऐसी बातें हो रही थीं तब देवगण, मुनिवृन्द और तीनों लोकों के वासी पंक्तियों में आकाश में जमा हो गये । उन्होंने फूल के गुच्छों, चन्दन और सुगन्ध-चूर्ण बरसाते हुए हनुमान से कहा कि कार्यनिपुण ! चलो ! वीर हनुमान भी जाने में वेग दिखाने लगा । १४

देवी ने उसका रूप देखा । विस्मय हुआ कि हेतुमान का इतना बड़ा रूप लंका में समा भी नहीं सकता । यह इतना भी है । जब लटकती माला से अलंकृत वस्त्र वाले हेतुमान ने दोनों पुरों को देखाया । ली कुँछ-कुँछ ऊपर दिखनेवाले स्थानों का वह पर्वत भीम में धूस गया और कुँछ-कुँछ ऊपर पावर्ष में रही गिरिया भी धूस गयी । १६

वाल्विशैत् तैडुत्तु वन्त्राण् मडक्किमार् बीडुक्कि मानत्
 तोल्विशैत् तुणैहळ् पौङ्गक् कळुत्तित्तैच् चुरुक्कित् तूण्डिक्
 काल्विशैत् तिमैप्पिल् लोरक्कुम् कट्पुलन् दैरिया वण्णम्
 मेल्विशैत् तैळुन्दा नुच्चि विरिञ्जत्ता डूरिञ्ज वीरन् 17

वीरन्-वीर; वाल् विचैत्तु अँटुत्तु-लांगूल को फटकारकर; वन् ताळ्
 मडक्कि-बलवान पैरों को मोड़कर; मार्पु औटुक्कि-वक्ष सिकोड़कर; मात-बड़े;
 विचै-विजयशील; तोल् तुणैकळ्-जोड़े के कन्धों को; पौङ्क्-फुलाकर; कळुत्तित्तै
 चुरुक्कि-ग्रीवा को अन्दर खींचकर; तूण्टि-फिर बाहर करके; काल् विचैत्तु-पवन-
 सी गति पैदा करके; इमैप्पु इल्लोरक्कुम्-अपलक देवों के लिए भी; कण् पुलम्
 तैरिया वण्णम्-आँखों से अदृश्य होकर; मेल् विचैत्तु-ऊपर की तरफ वेग करके;
 उच्चि विरिञ्चन् नाटु-बहुत ऊपर के ब्रह्मलोक से; उरिञ्च-टकराते हुए; अँळुन्तान्-
 उठा। १७

वीर हनुमान की मुद्रा देखिए। उसने अपना लांगूल फटकारा।
 अपने सीने को संकुचित किया। बड़े और विजयभूषित कन्धों को फुलाते
 हुए ग्रीवा को अन्दर खींचकर फिर बाहर उछाला। पवन के समान
 इतने वेग से वह ऊपर उठा कि अपलक देवों की आँखें भी उसे उठते हुए
 नहीं देख सकीं और सबसे ऊपर रहनेवाला ब्रह्मा का लोक उससे टकरा
 गया। १७

आयव नैळुद लोडु मरुम्बण मरङ्ग डामुम्
 वेयुयर् कुन्ऱुम् वैन्ऱि वेळुमुम् पिऱवु मैल्लाम्
 नायहन् पणियी दैन्ता नळिर्हड लिलङ्गै तामुम्
 पाय्वत्त वैन्त वानम् बडर्न्दत्त पळुव मान 18

आयवन्-उसके; अँळुत्तलोडुम्-उछलने पर; अरुम् पणै-अपूर्व और बड़ी
 शाखाओं वाले; मरङ्कळ् तामुम्-तरु; वेय् उयर्-और बाँस के पेड़ों के साथ उन्नत
 रहे; कुन्ऱुम्-छोटे-छोटे पर्वत; वैन्ऱि वेळुमुम्-विजयी गज; पिऱवुम् अँल्लाम्-
 अन्य सभी; नायकन् पणि ईत्तु-नायक (श्रीराम) का कार्य यह है; अँन्ता-समझकर;
 तामुम्-वे खुद; नळिर् कटल् इलङ्कै पाय्वत्त अँन्त-शीतल समुद्र-मध्य लंका में कूदते-
 से; वातम् पळुवम् मान-आकाश को उद्यान-सा बनाते हुए (उछलकर); पटर्न्तत्त-
 फैल। १८

जब वह उछल उठा तब बड़ी-बड़ी डालों-सहित वृक्ष, ऊँचे बाँसों के
 पेड़ों के साथ गिरियाँ और विजयी गज और अन्य पदार्थ भी साथ उछल
 उठे और शीतल समुद्रवलित लंका की ओर उड़े, मानो वे इसे नायक
 श्रीराम की सेवा समझकर उड़ते हों और आकाश को ही उपवन का दृश्य
 देते हुए फैल गये। १८

उसके नीचे जो रहा; नाकर् वेण्टिय-नागों का प्यारा; अलकम् अँल्लाम्-लोक सारा; वैळिप्पट-बाहर प्रकट हो गया तो; मणिकळ् मिन्न-मणियाँ चमकने लगीं तब; आण् तर्कै-पुरुषश्रेष्ठ ने; अतन्नै नोक्कि-उसको देखकर; यान्-मैं; अरवितुकु अरचन्-नागराज का; वाळ्वुम्-(वैभव) जीवन भी; काण् तकु-देखने का; तवत्तन् आनेन्-भाग्यवान हुआ; अँत-ऐसा; करुत्तिल्-मन में; कौण्टान्-विचार किया । २१

अच्छे समुद्र का जल फट गया । नीचे रहा नागों का प्यारा पाताल-लोक प्रकट हुआ और मणियाँ चमकीं । पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने उनको देखा और अपने को इस कारण बड़ा भाग्यवान समझा कि उसे नागराज के जीवन का वैभव देखने को मिला । २१

वैय्दुवान्	शिर्इयि	नानोर्	वेलैयैक्	किळिय	वीशि
नौय्दिना	लमुदङ्	गौण्ड	नोन्मैयै	नुवलु	नाहर्
उय्दुना	मैन्ब	दैन्ने	युरुवलिक्	कलुळ	तूळिन्
अँय्दिना	नामैन्	रञ्जि	यलक्कणुर्	इरियल्	पोनार्

22

वान् चिर्इयिताल्-बड़े-बड़े पंखों को; नीर् वेलैयै-जलनिधि को; किळिय-चिरते हुए; वीचि-झटकाकर; वैय्तु नौय्तिताल्-बहुत ही क्षिप्र गति से; अमुतम् कौण्ट- (गरुड़ के) अमृत उठा लेने को; नोन्मैयै-कुशलता को; नुवलुम् नाकर्-हमेशा कहते थे जो, वे नाग; ऊळिन्-हमारे प्रारब्ध से; उरुवलि-बड़ा पराक्रमी; कलुळन्-गरुड़; अँय्तितात् आम्-आ गया तो; नाम् उय्तुम् अँत्पतु-हम बचेंगे कहना; अँन्ने-कैसा, ऐसा; अञ्चि-डरकर; अलक्कण् उर्ऊ-उद्विग्न होकर; इरियल् पोतार्-तितर-बितर हो गये । २२

वहाँ के नाग सदा गरुड़ की बात लेकर बात कर रहे थे । गरुड़ ने अपने बड़े पक्षों को झटकाकर समुद्रजल को विभक्त किया और झट अमृत को शीघ्र और अनायास उठा लिया था । उसके बल की बात का स्मरण करते जो रहे वे नाग अब समुद्रजल को दो भागों में विभक्त करते हुए आनेवाले हनुमान को गरुड़ ही समझने लग गये । यह कहते हुए वे डरकर उद्विग्नता के साथ तितर-बितर हो गये कि हमारे प्रारब्ध के कारण भयानक बलयुक्त गरुड़ फिर से आ रहा है । हम बचेंगे कैसे ? । २२

तुळ्ळु	महर	मीन्ग	डुडिप्पुर्	चुर्बु	तूङ्ग
औळ्ळिय	पनैमीन्	रुञ्जत्	तिवलैय	डूळिक्	कालिन्
वळ्ळुहिर्	वीरन्	शैल्लुम्	विशैपौडा	मरुहि	वारि
तळ्ळिय	तिरैहण्	मुन्दुर्	इलङ्गैमेर्	उवळ्ळन्	मादो

23

ऊळि-युगान्तकालीन; तिवलैयतु-सीकर-सहित; कालिन्-पवन के समान; वळ् उकिर् वीरन्-तीक्ष्ण-नख वीर की; चैल्लुम् विचै-गमन-गति; पौडा-न सह सककर; तुळ्ळु-उछलनेवाली; मकर मीन्कळ्-मगर-मछलियाँ; तुट्टिप्पु उर्-

उदपटायी; चरुव दूक-‘शुर्’ नामक मण्ड निरवेष्ट पड़े रहे; अष्टोदिय-रोनक-
दर; पदे मोन-‘पदे’ नामक मण्ड; पुत्र-मर गये; बारि मणीक-समुद्र विजित
हुआ; मण्डिय निरवेष्ट-उससे चालित तरंग; पुत्र उरु-आगे जाकर; इलके
से मण्डन-लंका पर बहे। २३

हेतुमान युगान्तकालीन जनसीकरवाही पवन के समान जा रहा था।
तीक्ष्ण नाखूनों से युक्त उस वीर के वेग की न सह सकने से चंचल मगरमण्ड
उपटपड़े। ‘शुर्’ नामक मण्ड अचने पड़े रहे। प्रकाशमय ‘पन’ नामक
मण्ड मर गये। समुद्र आलोलित हुआ और तरंग आगे जाकर लंका पर
बहे। २३

इलकेकुम्भ बौद्धे जेना मण्डियां शुभनद याने
नटकेकुम्भ विद्युमयिउं चूचू नामहेन ऊद बाहेम
आँकेकुम्भ काल वनगार रजियाँ मण्डित वनगण्ड
मुँकेकुम्भ कडलिउं चूचू मुनेवलके किरिय मोनेन 24

शुभ निवे चमन-आठ दिशाओं के बाहेक; याने-दिगज; नटके उर-कोप
गये; विद्युमयिउं-ऐसा, आकाश में; चूचू-जानेवाला; नामकने वने-नामक
शौरस का डूल; नाम अँकेकुम्भ काल-‘जव पवन के साथ पयूँ में’ आविरोपना
ने (मर की) दबाये रहा था; वने काले-बलवान पवन ने; रजियाँ-विद्युत के
साथ; आँकेकुम्भ अ गण्ड-लौं था, उस दिन; मुँकेकुम्भ-वेग के साथ; कडलिउं
चूचू-समुद्र में जानेवाले; मुनेवल किरिय-लिकट पवन के भी; आनेन-समान
लगा; इलके उर-बीच में जानेवाली; पण्डके-वरुओं का डूल; अने
आम-क्या होगा। २४

अष्ट दिगज कोप। इस तरह जो आकाश में उड़ा जा रहा था,
वह शौरस नामक का डूल हेतुमान लिकट पवन के समान लगा, जो समुद्र
की तरफ जा रहा था। एक बार रोपना और पवन में अपनी-अपनी
शक्ति के प्रदर्शन में पयूँ हो गयी। रोपना ने मरपवन की लपेटकर
दबा दिया था। सब पवन ने उस दिन विद्युत के साथ उस पवन को
लौं दिया था। तब उस पवन का तीन पिछरी बाल अंग अलग टूटा
और वही लिकोण या लिकट पवन कहा गया। (वह समुद्र में जा गिरा।
उसी के ऊपर लंका नगर का निर्माण हुआ।) हेतुमान जाते हुए उस
पवन के समान लगा। २४

कौटुम्भ पुरविने लपक कौटुम्भ कलिधने कलिधने
कटुलउं गडव लाहा वहेनेनारु कडल कडल मण्यम
उदपटके कौं पण्ड दानव विनयेमरु पाव मोनेन 25

कौटु पु उरु-जोर का चक्कर काटनेवाले; तैय्व पुरवि-(उच्चैःश्रवा नाम के) दिव्य अश्व के; कूर नुति-तीक्ष्ण नोक के; तैय्व कुलिचत्तार्कुम्-दिव्य कुलिश के स्वामी (इन्द्र) के लिए भी; कण् पुलम् कतुवल् आका-आँख की इन्द्रिय द्वारा ग्रहण न हो सके ऐसी; वेकत्ताल्-गति के कारण; कटलुम् मण्णुम्-समुद्र और भूमि; उट्पटक्कूटि-दोनों अपने अन्दर समा जायें इतना बड़ा होकर; अण्टम् उरु-अण्ड की चोटी के भाग को छूता हुआ; उळ चैलवित्तु-चलने की गति के कारण; ओरुर् पुट्पक विमात्तम् तान्-अनुपम पुष्पकयान स्वयं; अक् इलङ्क मेल्-उस लंका पर; पोवतु औत्तान्-जाता हो, ऐसा लगा । २५

बहुत तेज धूमनेवाले (उच्चैःश्रवा नाम के) अश्व और तीक्ष्ण नोक वाले दिव्य वज्रायुध का स्वामी इन्द्र की आँखें भी उसको नहीं देख सकीं —हनुमान इतनी तेजी से उड़ा जा रहा था । वह इतने बड़े आकार का था कि भूमि और समुद्र दोनों एक साथ उसमें समा जायें । अण्ड की चोटी के भाग से लगता हुआ वह महान् और अनुपम पुष्पक विमान के समान लगा जो लंका की तरफ जा रहा हो । २५

विण्णव	रेत्त	वेद	मुत्तिवर्हळ्	वियन्तु	वाळत्त
मण्णव	रिरेञ्जच्	चैल्लु	मारुदि	मरमुर्	कूर
अण्णल्वा	ळरक्कन्	इन्नै	यमुक्कुर्वै	तिन्न	मैन्नाक्
कण्णुद	लौळियच्	चैल्लुङ्	गयिलैयङ्	गिरियु	मौत्तान् 26

विण्णवर् एत्त-स्वर्गवासियों के स्तुति करते; वेत्त मुत्तिवर्हळ्-वेदज्ञ मुनियों के; वियन्तु वाळत्त-विस्मित होकर साधुवाद देते; मण्णवर् रिरेञ्ज-भूलोकवासियों के प्रणमन करते; चैल्लुम् मारुदि-चलनेवाला हनुमान; मरम् मुत् कूर-वैर-भावना के बढ़ने के कारण; इन्नै-और भी; अण्णल् वाळ्-महिमामय (चन्द्रहास) तलवार के स्वामी; अरक्कन् तत्तै-राक्षस रावण को; अमुक्कुर्वै अन्ता-दबाऊंगा कहकर; कण्णुतल् लौळिय-भालनेत्र शिवजी से रहित होकर; चैल्लुम्-जानेवाले; कयिलै अम् किरियुम्-श्रेष्ठ कैलास पर्वत के भी; औत्तान्-समान रहा । २६

देवलोग हनुमान की स्तुति कर रहे थे । वेदज्ञ मुनिगण साधुवाद कर रहे थे । भूमि के वासी नमस्कार कर रहे थे । इस रीति से जा रहा था हनुमान । उसके मन में वैर-भाव उमग आ रहा था । तब वह उस सुन्दर कैलास पर्वत के समान लगा जो यह संकल्प करके भालनेत्र शिवजी को त्याग कर दौड़ रहा हो कि मैं महिमामय चन्द्रहास तलवारधारी राक्षस रावण को और भी दबोच लूंगा । २६

केळुला	मुळुनि	लाविर्	किळरौळि	यिरुळैक्	कीरुप्
पाळिमा	मेरु	नाण	विशुम्बिडैप्	पडर्न्द	तोळान्
आळिशू	ळलह	मैल्ला	मरुङ्गतन्	मुरुङ्ग	वुण्णुम्
ऊळिनाळ्	वडपाश्	रोत्तु	मुवामुळ	मदियु	मौत्तान् 27

अथ देवकं अथ च नमं-अथ देवता के; पारे आभिर्गुप्तं-समस्त-वक्र; अवैषमं आचार्य-

समान रहा । ३१

नगरी है कि धर्मदेवता का वक्र करकर्मों राक्षसों के वासस्थान उस महानगर के बाहर रहने से भी डरकर कहीं दूधरे सुरक्षित स्थान में रहना था । अब वहे उस स्थान से बाहर आकर मनुकुलोत्पन्न प्रजापति श्रीराम के वल का आश्रय लेकर लंका पर जा रहा है । ऐसे धर्मदेवता के समरूपीय वक्र के समान भी नगरी द्रुममान । ३१

अथ नगरे विहिरे मायुः कर्मोदभवः नारुतलः कादिके
कुडलानां मवृणरुः श्वानदकं कुतूहलकं कुडिलं विनरु
निजलानां नीडरुतुः श्वानलवः वेणुविश्वम् वीडुतगले नैयवके
कडलानाडः गडककले नारुम ककुलं मन्म नानामं 32

अतः उलाम-शिवसम्पन्न; विकिर-वक्रवर्ती; मायुः अमन-मायावी
देव श्रीविष्णु के अधीन रहनेवाले; नरु आरुतल कादिक-अपने पराक्रम विजाले हुए;
अवृणरुः श्वानल-सभी अशुरों की; कुडलः श्वान-आलों के निरले; कुतूहल
कुडिलं विनरु-प्रबल नाम के साथ रहनेवाले; निजलाना-सभी टीलों की;
नीडरुतुः श्वानल-नगरीवार पार करके; वेणु विषमगु-ऊपर का आकाश; आविष्क-
रु रहता; नैयवके कडल-श्वान-सभी देवी सागरों की; कडकक नारुम-पार करने
के लिए समर्पितवाले; ककुलं अमन्-आचार्य-गर्व के समान भी बना । ३२

प्रबल वक्रवर्ती मायावी श्रीविष्णु के अधीनस्थ अपनी सारी बल
प्रदर्शन करते हुए, गहरे अपनी माना की वासता के निवारणार्थ पड़ेले गया
था न ! तब अशुरों की आँखें जितरी । वहे प्रवर्तों की टीलों के समान
पार करता गया । आकाश भी डूर डूर गया । सभी समुद्रों का उसने
तरल किया । द्रुममान उस गहरे के समान गया । (पहे कहानी इसके
पूर्व भी इंगित की गयी है ।) ३२

नालिनी डूलडे मन्त्र कडकुड नडकुड नडकुड वडकुड नाडरु
मनिनेस निनरु काडु वनरुकी ननरु लनेनि न विणुडि
कालिना लडनरु वान लडनरु मुडेदेमुडे गडककक काल
वालना लडनरु वनरु मडलवः वनरुनं 33

अदिकु मनिन मन्-एक के ऊपर एक; निनरु नालिनी मुनरु-स्थान वार और
तीन (साल); नाकर उलकम् काडुम-सभी नाम (स्वर्ग) लोको की; नडकुडरु
वनरु-कपाते हुए भी बडे चले; कालविनरु-अति सुन्दर; विणुडि-श्रीविष्णु से;
कालिना लडनरु-अपने पूरे से लिसकी माया; वान मुकटमुम-उस आकाश की
बाँटी की भी; कडकक-पार करके; काल नालिनाल-कालदेव-सम अपनी पूँछ से;

अळन्तान्—(हनुमान ने) माप लिया; अँत्तु—ऐसा; वातवर्—देवता; मरुळ—चक्रित हो जाएँ ऐसा; चँत्तुत्त—गया । ३३

शोभायमान त्रिविक्रमदेव बनकर श्रीविष्णु ने एक के ऊपर एक रहनेवाले सातों देवलोकों को भय में डालते हुए अपने श्रीचरण से आकाश को नापा था । उस आकाश की चोटी को भी पार करने के निमित्त हनुमान अपनी कालदेव-सम पूँछ से उसको नाप रहा है क्या ? ऐसा सोचते हुए देव चक्रित हुए । ऐसा हनुमान जा रहा था । ३३

वैळित्तुपपिन् वेलै - तावुम् वीरन्वाल् वेद मेय्क्कुम्
अळित्तुपपि तनुम नैन्तु मरुन्दुणै पेरुत्ता तायुम्
कळित्तुपुप्पुन् उँळिन्मे तित्त्तु वरक्करहण् गुरुव रँत्तु
ओळित्तुपपिन् शैल्लुङ् गाल पाशत्तै यीत्त दन्ने 34

वैळित्तुपपिन्—सविस्तार और प्रवालयुक्त; वेलै तावुम्—समुद्र लाँघनेवाले; वेतम् एय्क्कुम्—वेद से तुल्य; वीरन् वाल्—महावीर (हनुमान) का लाँगूल; कळित्तु—ताड़ी पीकर; पुन् तौळिल् मेल् तित्त्तु—नीच कर्म अपनाए रहनेवाले; अरक्कर् कण् उरुवर्—राक्षस देख लेंगे; अँत्तु—ऐसा सोचकर; अळि—करुणा व; तुपपिन्—बल से युक्त; अनुमन् अँत्तुम्—हनुमान के रूप में; अरुन्दुणै पेरुत्ताय्—अपूर्व सहायक पाकर; पिन् ओळित्तु चैल्लुम्—उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जानेवाले; काल पाचत्तै—यम-पाश के; ओत्तुत्तु—समान रहा । ३४

बड़े विस्तार के और प्रवालयुक्त समुद्र को वेद-सम वीर हनुमान लाँघ रहा था । तब उसका लाँगूल कालपाश के समान लगा । यह कालपाश (लाँगूल) मद्यप और नीचकर्मी राक्षसों की दृष्टि में पड़ने से डरकर करुणामय प्रतापी हनुमान की सहायता पाकर उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जा रहा हो—ऐसा लग रहा था । ३४

मेरुवै मुळुदुण् जूळन्नु मीदुर्त्तु वेह नाहम्
कार्निडत् तण्ण लेवक् कलुळन्वन् दुर्त्तु कालैच्
चोर्वुळ् मनत्त दाहिच् चुर्त्तिय चुर्त्तु नीड्गिप्
पेर्वुळ् हिन्त्तु वारु मीत्तदप् पिर्त्तु पेळ्वाल् 35

पिर्त्तु पेळ्—शोभायमान बड़ा; अ वाल्—वह लाँगूल; कार् निडत्तु—काले वर्ण के; अण्णल्—महिमावान श्रीविष्णु के; एव—आज्ञा देने पर; कलुळन् वन्तु उर्त्तु—गरुड़ जब आया; कालै—तब; मेरुवै—मेरुपर्वत को; मुळुत्तु चूळन्तु—पूरा लपेटकर; मीदुर्त्तु—उसके ऊपर फन फैलाये जो रहा; वेक नाकम्—भयंकर वेगवान शेषनाग; चोर्वुळ् मतत्तु—थकित-मन; आकि—होकर; चुर्त्तिय चुर्त्तु नीड्कि—अपनी लपेटें हटाकर; पेर्वु उरुकिन्त्तु आळम्—अलग हटता जाता हो; ओत्तुत्तु—ऐसा भी लगा । ३५

एक बार नीलवर्ण श्रीविष्णु की प्रेरणा पर गरुड़ मेरुपर्वत के पास

आया । तब वहाँ शेषनाग उस पर्वत की पूरी तराई से लपटकर उसके ऊपर अपना कान फँसाये हुए था । गहड़ की छेखकर डर के मारे वह अपना लपट निकालकर दूर भागने लगा । हनुमान की वज्रा और शोभायमान पूँछ उस शेषनाग के समान लगी । ३५

कुनैरुई कुलकुलुई गीरुके कुवनेरुई करकुव वीयम
 श्वेतरु वहेरु विणगा लीरुवरु नेरु वहुम
 मिनेरुईरु वारु वारु विमानुगळ विपियरु रूमिपु
 गीनेरुईरु वरु मारु 36

कुनैरुई कुलकुलुम-पवत-वुय; कौरुम-विजय-वाहक; कुवव नीळ-रुपल
 कथी वाला; कुरकुई वीयम-वानर केसरी; वुंरु उर-उसके गमन से उरुम;
 वीकम लिण-वैगवान और प्रवल प्रभजन; अरिहर-वहेरु, अतः; मिने नीरु-
 उरुवल; वारुवै आन-आकाश में उडनेवाले; नेवरु वीरुम विमानुकेऊ-वैगाल
 विनमं वडे हुए जाते थे, वे यान; विवैपुन-पवन के शोकी से; लमपिने ओनेरुई
 ओनेरु-आपस में एक दूसरे से; वाकिक उरुय-उकरीकर दटे; मा कडम उरु-वडे
 समुद्र से निरे । ३६

हनुमान के कानों विजय के आगर थे । पर्वत-सम थे । ऐसे वानर-
 केसरी के गमन से वहुत वैगवान प्रभजन उठा । उसके शोक वाकर
 आकाश में विजली के साथ चलते रहे देव-यान आपस में टकराये, दटे और
 समुद्र से निरे गये । ३६

वलङ्गपिम् वियर वेदि वेनेवमं वहु नाडुम
 कलङ्गुर वहु वानरु कलनेनेगी लनेरु गउपाल
 विनङ्गपि लियरु वीरु मुडिय वहुम वुपुयरे
 वलङ्गपि नळवमं रूनेरा विमवरेगा विरिनेद वनेरु 37

वलङ्कपिम्-दाहिने होय में; वियर पति-वज्रायुध; वेनेवमं-धारण करनेवाला
 (कूट); वुंरुम नाडुम-जहाँ रहता है वह लोक; कलङ्कुर-अरत-धरत हो; एकवाम
 लने-ऐसा जानेवाले का; कलनेव ओने कीले-अभिप्राय क्या है; अनेरुम कउपाल-रुस
 विवार से; वुमपरे नाडु-यह लोक; विनङ्क अपिल ओनेरु-अलग-अलग और नीलग
 रडेनेवाले दांती का; वीरु-वीर; मुडिय वीकम-विषके साथ जाना है, वह क्या;
 वुपुयरे वलङ्कपिम्-ऊँर राक्षसों की लंका; अळव अनेरु-लक का नही (को सीमा
 बनाकर नही); अनेरा-सीवकर; अनेरु-उस दिन; इरिनेव-डरकर भागा । ३७

उसे देखकर यह लोक सीपने लगा कि यह अपने दाहिने होय में
 वज्रायुध धारण करनेवाले कूट के वासस्थान की भी भयभीत करती हुआ
 जा रहा है । इसका अभिप्राय क्या होगा ? वेडो दांती से मुक्क इस वीर
 का क्या ऊँर राक्षसों की लंका तक सीमित होगा, ऐसा नही लगता । इस
 विचार से डरकर वह भाग गया । ३७

ओशनै	युलपि	लाद	वुडम्बमैन्	दुडय	वैन्तत्
तेशमु	नूलुम्	जौल्लुन्	दिमिङ्गिल	किलङ्ग	ळोडुम्
आशैयै	युङ्ग	वेलै	कलङ्गवन्	इण्णल्	याक्कै
वीशिय	कालिन्	वीन्तु	मिदन्दत्त	मीन्ग	ळैल्लाम् 38

उलपपिलात-अक्षुण्ण; उटम्पु-शरीर; ओचत्तै अमैन्तुटैय-एक योजन बड़ा है, ऐसा बना; अँन्त-ऐसा; तेचमुम् नूलुम्-देशवासी और ग्रन्थ; चौल्लुम्-जिनके बारे में कहते हैं; तिमिङ्गिल किलङ्कळोटुम्-'तिमिगिलगिलों' के साथ; आचैयै उङ्ग वेलै-दिगन्त तक फैला हुआ सागर; कलङ्क-क्षुब्ध हुआ; अन्ङ-तब; अण्णल् याक्कै-महान् हनुमान के शरीर से; वीचिय कालिन्-बहे पवन से; मीन्कळ् अँल्लाम्-सभी मछलियाँ; वीन्तु मितन्तत्त-मरकर तिरै । ३८

उसके शरीर के वेग से चलने के कारण प्रबल रूप से पवन उठकर बहने लगा । तब ऐसे 'तिमिगिलगिल' नामक जन्तुओं से, जिनके सम्बन्ध में लोक और ग्रन्थ कहते हैं कि उनका अक्षुण्ण शरीर एक योजन विस्तार का है, भरा समुद्र क्षुब्ध हो उठा । तब सभी मछलियाँ मरकर तिर गयीं । (तिमिगिल से भी बड़े जन्तु को कवि तिमिगिलगिल कहते हैं ।) । ३८

पौरुवरु	मुखत्	तन्तान्	पोहित्	पोडु	वेहम्
तरुवन्	तडक्कै	तळ्ळा	निमिर्च्चिय	तम्मु	ळौप्प
औरुवरुङ्	गुणत्तु	वळ्ळ	लोरुपिर्त्	तम्बि	यैन्नुम्
इरुवरु	मुत्तर्च्	चैन्त्रा	लौत्तदव्	विरण्डु	पालुम् 39

पौरुवु अरुम्-अप्रमेय; उरुवत्तु अन्तान्-आकार वाला वह; पोकिर्त्तु पोतु-जब जाता रहा तब; वेकम् तरुवन्-उसे वेग देनेवाले; तळ्ळा निमिर्च्चिय-विना थके बढ़े रहनेवाले; तम्मुळ् औप्प-परस्पर समान रहनेवाले; तडक्कै-विशाल हाथ; अ इरण्डु पालुम्-उसके दोनों पाश्वर्कों में; औरुवु अरुम्-अचल; कुणत्तु वळ्ळल्-गुणशील महानुभाव श्रीराम और; ओर् उयिर् तम्पि-उनका अनुपम प्राणप्यारे भाई लक्ष्मण; अँन्तुम् इरुवरुम्-दोनों; मुत्तर्च् चैन्त्राल् औत्त-आगे जाते जैसे लगे । ३९

जब अतुल रूप से बढ़े अपने शरीर को ले हनुमान जा रहा था, तब उसके हस्त उसे गतिवेग दे रहे थे । वे हाथ परस्पर सम थे । वे थकते नहीं थे और सदा आगे रहते थे । उनको देखकर ऐसा लगा, मानो सद्गुण-सम्पन्न श्रीराम और उनके प्राणप्यारे अनुज लक्ष्मण दोनों उसकी रक्षा करते हुए वगल में आगे जा रहे हों । ३९

इन्नाह	मन्त्रा	नैरिहालैन्	वेहुम्	वेलैत्
तिन्नाह	माविङ्	चैरिक्कीळ्त्तिशै	कावल्	शैय्युम्

कृत्तनाह् मन्नाह् स्रुवै मल्लवात्रि वनद कटवि लोत्र ४०

जब पर्वत-सम दृजमान आँधी के समान जा रहे थी, तब भौकाकपर्वत आकाश की दृग्ग करती हुआ समुद्र से ऊपर उठ आया। तब वह उस ऐरावत गज के समान लगा जो आठ दिशाओं में धनी पूर्ब दिशा की रक्षा ऐरावत गज के समान का उठ आया, उस दिन ऐरावत के क्षीरसागर से उठ आने के समान लगा। ४०

[illegible]

श्री अश्वत्थ-उपनिषद् ॥ ४९ ॥
 त्रिषु पात्रेण अग्निरस्य दृष्टि-लाल तपोमय सहेल
 निभारः । त्रिषु दृष्टेय-वसक र हे भूः । आपा अर्वावेतिरुद्ध-अक्षय सवर्ग-सद्वैदः ।
 उद्वेगविरुद्धेर्वाप-उत्तरीय के समान ज्ञानाः । त्रीणां रू उद्वेगविरुद्ध काल-काले जा उव
 अपावत कर्त्तव्ये तवः । त्रीषु त्रीरेषामग्नि-उत्तरे दृष्टेयानां के निराकरणायाः । पात्रा-
 न्निविष्टाः । सकर कर्त्तव्य निर्वृत्त-सकरालय से । अग्निं सार्वाग्ने आहिक-उठ आले,
 त्रीणां रू के साथ । ४९

उस पर्वत का मकरालय से जादे निकलकर आता मायावी श्रीवर्ण के, दुष्कृता विनाशाप, क्षीरसागर की शेषशय्या से उठकर आने के समान लगा। श्रीवर्ण सहस्रशीर्षा: पुरुष: है। इस पर्वत के भी देवार जाल स्वर्णमय शिखर है, जिससे कानि छट रही है। श्रीवर्ण के उत्तरीय के स्थान पर पर्वत पर भी निरय पूर्ण सूरितारुं बहे रहते हैं। मृनाक का एक नाम हिरण्यनाभ भी है। बहे विर्ण का भी नाम है। ४४

मल्लेनडु	कळेलि	निनेर	छनेदिक्	बोडुगु	नडुमनेदर	मेय	माल
मल्लेनडु	कळेलि	निनेर	छनेदिक्	बोडुगु	नडुमनेदर	मेय	माल
मल्लेनडु	कळेलि	निनेर	छनेदिक्	बोडुगु	नडुमनेदर	मेय	माल

पुनः पुनः कृद्वि-याद्विभक्तौ जातः प्रकृत-एव नष्टो भवति; पुनः पुनः लोकोक्तं
वर्तते-अथ कृद्विभक्तौ द्वे वचः पाले-के समाप्तः पर्वतः निर्देशः-(अथ समाप्तः-)

मथन के समय मन्दरगिरि को) जो धारण करती रही; तन्नियाळ्-वह निस्सहाय भूदेवी; मैय् पौरातु-शरीर न सह सकने से; नीङ्क-डगमगायी; काल्-मन्दरगिरि का नीचे का भाग; आळन्तु अळुन्ति-गहरे धँसकर; कटल् पुक्कुळि-समुद्र के अन्दर चला गया तब; माल्-मायापति (श्रीविष्णुदेव); कच्चम् आकि-कच्छप बनकर; एन्त-उसको अपनी पीठ पर धारण करने लगे; ओङ्कुम्-तब जो ऊपर आकर खड़ा रहा; नैट् मन्तरमेयुम् मात-उस बड़े मन्दर के समान भी । ४२

क्षीरसागर-मथन के समय मन्दरपर्वत भूमि पर रखकर घुमाया गया । तब निस्सहाय भूदेवी उसको धारण नहीं कर सकी और मन्दरपर्वत उन लोगों की तरह नीचे जाने लगा, जो शास्त्रोक्त ज्ञान का अनुसरण न करके इन्द्रियों के दास बनकर विषय-भोग में लीन रहते हैं । तो श्रीविष्णु कच्छप बने और उन्होंने मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर रखवा लिया । उस मन्दरपर्वत के पुनः उठते वक्त जैसा दृश्य था वैसा ही दृश्य अब इस उठते हुए मैनाक पर्वत का था । ४२

तळ्ळर्	करुन्	चिरैमाडु	तळैप्पो	डोङ्ग
अँळ्ळर्	करुन्	निरुमैल्लै	यिलाडु	पौङ्ग
वळ्ळर्	कडलैक्	कैडनीक्कि	मरुन्दु	वौवि
उळ्ळर्	रैळ्मो	रुवणत्तर	शेयु	मौप्प 43

तळ्ळर्कु अरु-दुर्निवार; नल् चिरै-श्रेष्ठ पक्ष; माडु-पार्श्वों में; तळैप्पोटु ओङ्क-पुष्कल रीति से उठे हुए थे; अँळ्ळर्कु अरु-अनिष्ट; नल् निरुम्-अच्छी छवि; अँल्लै इलातु-असीम रीति से; पौङ्क-बिखरी; वळ्ळर् कटलै-समृद्ध सागर को; कैड नीक्कि-विकृत करते हुए चीरकर; मरुन्तु वौवि-अमृत पकड़ते हुए; उळ्ळर्कु अँळुम्-समुद्र के अन्दर से बाहर उठ आनेवाले; ओर् उवणत्तु अरचेयुम्-अनुपम पक्षीराज गरुड़; औप्प-के भी समान । ४३

वह गरुड़राज के समान भी लगा । दुर्वार दो घने पक्षों को दोनों बाजूओं में ले, अनिष्ट आकर्षक देहकान्ति बिखेरते हुए जलसमृद्ध समुद्र को चीरकर गरुड़ गया और अमृत ग्रहणकर उस समुद्र से बाहर निकला था । उस समय का-सा दृश्य अब यह पर्वत उपस्थित कर रहा था । ४३

आत्ताळ्	नैडुनीरिडै	यादियौ	डन्द	माहित्
तोत्ताडु	नित्ता	नरुडोत्त्रिड	मुन्दु	तोन्ऱुम्
मून्ऱा	मुलहत्	तौडुमुर्ऱुयि	राय	मुर्ऱुम्
ईन्ऱानै	यीन्ऱ	शुवणत्तनि	यण्ड	मैन्त 44

आत्ताळ्-बहुत गहरे; नैट् नीरिटै-प्रलयसागर में; आतियौटु अन्तम् आकि-आदि व अन्त; तोत्तातु-न जानने देते हुए; नित्तात्-जो खड़े रहे; अरुळ् तोत्त्रिट-उन श्रीविष्णु के मन में (सृष्टि की) कृपा के उदित होने पर; मुन्तु तोन्ऱुम्-सर्वप्रथम जो प्रकट हुए; मून्ऱ् आम् उलकत्तौटम्-त्रिभुवनों के साथ; मुर्ऱ्

उत्तराय-पूर्व जीर्ण के साथ; मुखमें ईर्ष्या- (निर्दोष) सभी का सुजन किया; ईर्ष-उत्तर अर्थात् ईर्ष्या- जिससे बाहर भ्रष्ट करायो; नहिं सुवण अर्थात् ईर्ष- उस अग्रिम स्वर्ण के अणु के समान । ४४

प्रलय के दिनों में आदि और अन्त भ्रष्ट न होने देते हुए विषयक में रहे श्रीनारायणदेव । उनके मन में सुष्टि रचने की इच्छा हुई । तब एक अणु हुआ, जिससे लोकसत्त्वक, आदिर्मुष्टि अर्थात् उद्भूत हुए । यह पर्वत उस स्वर्णअणु के समान लगा । ४५

इतनीरि स्रजवेत प्रसन्नप्रदय तत्प्रसन्नप्रदय
स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत
अननीरि अननीरि अननीरि अननीरि
स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत
स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत
45

अने नीरि-उस प्रलयज में; न्योनिनं वरत-शीघ्र जो भगद हुए; सुवर्ण अर्थात्-पहेले अस्त्रिय अस्त्र; इतनीरि-इस जल में; अर्थात् नक्ष-वेत स्रजक; अर्थात्-वेत जनक की; अर्थात् अनिर-प्रलय किये विना; स्रजवेत-अपना अर्थात् काम; स्रजवेत अर्थात्-नहीं कह्या, ऐसा; विरतेवे स्रज-सोवकर; आनि गान-प्रथम दिवस; अ स्रजवेत-उस स्रज में; स्रजक-मान रहकर; तबमें स्रजि-तब पूरा करके; मुदवेतवा नीर-बाहर उग आय, वैसे ही । ४५

उस प्रलयजल से उत्पन्न अर्थात् स्रजक किये कि अपने स्रजक नारायण के प्रथम दशम किये विना मैं अपने सुष्टिकर्म में न लग्या; तो उसी प्रथम दिवस में वहे उस जल के अन्दर नष्टया करने पूठ गये । तब पूरा करके जो वे बाहर निकल आय, उनके भी समान दिखो यह पर्वत । ४५

पुर्वानि स्रजवेत प्रसन्नप्रदय तत्प्रसन्नप्रदय
स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत
अननीरि अननीरि अननीरि अननीरि
स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत
स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत स्रजवेत
46

पुर्वान-मान के कारण; इतदुक्त मुक्तन-बाधा आयो; न्योनिनं पूरा-मन की समा लोकर; कीवा मुनि-मुदवेत (इतना) मुनि के; न्योनिनं-कोय से गण देते पर; वेत इतिवत-जो स्रज में बले गये; अर्थात्-वे सव; सी-फिर से मिल, तदर्थ; स्रज-अमर; सुवर्ण न्योनिनं-आदिदेव (की आना से); स्रजवेत-देवा अर्थात् वे जिस दिन प्रलय किया; अर्थात्-उस दिन; वेतनिन-उस समार से; वरत अर्थात्-उठ जा आया; निष्कण्ड अर्थात्-उस वर के समान । ४६

(इतना ने श्रीलक्ष्मी की भक्ति से गण मान इन्द्र की दी । उसने उसे ऐरावत की पहेना दिया ।) उस माना स्रज-ली (इन्द्र के द्रव्य) अर्थात् (अमर) अर्थात् से कण्ट हो गया । (अपमान न सह्य सककर कोणी स्वभाव

के) दुर्वासा कुपित हुए। उसके फलस्वरूप देव-वैभव सारे समुद्र में जाकर डूब गये। उनको फिर से बाहर लेने के लिए अमर आदिनायक श्रीविष्णु ने उपाय बताया और तदनुसार देवों और असुरों ने क्षीरसागर-मंथन किया। उस समय पूर्णचन्द्र उग आया था। उसी के समान लगा मैनाक। ४६

निरङ्गुङ्गुम्	मौपपत्त	नीतिरुम्	वाय्न्द	नीरिन्
इरङ्गुम्बव	लक्कोडि	शुर्रित्त	शैम्बो	नेय्न्द
पिरङ्गुज्जिह	रप्पडर्	मुन्डि	रीरुम्बि	णावो
डुरङ्गुम्मह	रङ्ग	ळुयिरप्पो	डुणरन्दु	पेर 47

निरुम्-रंग में; कुङ्कुमम् औपपत्त-कुङ्कुम के समान हैं; नील् नीरुम् वाय्नुत्-नीले रंग से भी युक्त; नीरिन् इरङ्कुम्-जल में फैलनेवाली; पवळक्कोडि-प्रवाल-लताओं से; चुर्रित्त-आवृत; चैम् पौन् एय्नुत्-लाल स्वर्णमय; पिरङ्कुम्-शोभाशाली; चिकरम् पटर्-शिखरों के; मुन्डिल् तोरुम्-अग्रभागों में; पिणाओट्टु-अपनी स्त्री-जातियों के साथ; उरङ्कुम्-सोनेवाले; मकरङ्कळ्-मगरमच्छ; उयिरप्पोट्टु-निःश्वास के साथ; उणरन्तु-जागकर; पेर-जाने लगे (ऐसा)। ४७

मैनाक के शिखर कुकुम वर्ण के भी थे। उन पर नीला रंग भी फैला था। जल में फैलनेवाली प्रवाललताएँ उनको लपेटे थीं। उन पर लाल स्वर्ण जमा था और उनसे कान्ति छूट रही थी। उन शिखरों के तलों पर मगरमच्छ अपनी स्त्री-मच्छों के साथ जो रहे थे, अब वे जागकर इधर-उधर भागने लगे। ऐसे दृश्यों के साथ वह पर्वत निकल आ रहा था। ४७

कून्शून्मुदि	रिप्पि	कुरैक्क	निरैत्त	पाशि
वान्शून्मळै	यौप्प	वयङ्गु	पळिङ्गु	मुन्डिल्
तान्शूलि	नाळिर्	इहैमुत्त	मुयिर्त्त	शङ्गम्
मोन्शूळ्वरु	मम्मुळु	वैण्मदि	वीरु	कीड 48

वान् चूल् मळै औप्प-आकाश के जलगर्भित मेघों के समान; निरैत्त पाचि-उस पर्वत पर जमी हुई परतों की काई; वयङ्कु-जिन पर रहती है उन; पळिङ्कु मुन्डिल्-स्फटिक पत्थर के आँगनों में; कून्-वक्र; चूल् मुतिर्-पूर्ण-गर्भ; इप्पि-सीपियाँ; कुरैक्क-स्वर करती हैं; चङ्कम्-शंख; चूलि नाळिल्-प्रसव-समय; तान् उयिर्त्त-जनित; तकै मुत्तम्-श्रेष्ठ मोतियों के साथ; मोन् चूळ्वरुम्-ताराओं से घिरे हुए; अ वैण् मुळु मति-उस श्वेत पूर्ण चन्द्र का; वीरु कीड-शान कम करते हुए। ४८

उस पर्वत के अग्रभाग के स्फटिक पत्थरों पर आकाश के जलगर्भित मेघों के समान काई फैली थी। उसमें रहकर वक्र रूप की गर्भिणी शक्तियाँ नाद उठा रही थीं। शंखों के जनाये मोती बिखरे पड़े थे। इस साज में

वह पर्वत उस प्रवेग पूर्णचन्द्र के शान की कम करता हुआ उठ रहा था, जिसके चारों ओर तारागण घरे आ रहे हैं। ४८

पर्वतशिखर	माधिरङ्ग	गाधिराम	बाहि	सैकुण्ठ
कलनाशिखर	धनवडङ्ग	गवतल	नीण्ड	काटिनि
तीक्ष्णारदोल	प्रदुष्ट	सुदोल	वपङ्गु	तीक्ष्ण
तलनामणि	पाट	सुदुर्लभ	बाग	सुवर्ण 49

पर्व आधिराम आधिराम—अनेक सहस्र-सहस्र; काष्ठ दहनम—रत्नराशिधर; पर्व सैकुण्ठम—सुन्दर रूप से कानिब विखरती है; कल आरं विमल नदम—प्रतरमय शिखर-तल; कैवल्यम—(रूपी) हथों की; नीण्ड काटिनि—वर्तते हुए; नील आरं कलियुद्ध-प्राचीन समुद्र में; एक सुदोलिक—(मीनी-सुदोल करत है) नीले लगाकर; वपङ्गु-तीक्ष्णरुद्र-उत्पन्न रूप के; अनेक मणि दंडम—सार मणिधर के समूहों की; सुकर्तु-लेते हुए; अष्टवाम्भ अनेक उठ आनेवाले (गोलाधारी) के समान भी। ४९

उसके शिखर ऊपर बड़े हुए थे और उन पर सहस्र-सहस्र रत्न वमक रहे थे। वे शिखर उसके हथों के समान थे। इसलिये वह उस गोलाधारी के समान लगा जो प्राचीन समुद्र में डूबकर अपना हथों में अत्युच्चवर्ण मणिधर की राशिधा लेते हुए बाहर निकल आ रहा हो। ४९

मनीषारपील	माह	नैडङ्गोहि	माल	धर्मप
विश्विषारपील	बल्लभ	विश्वर	डङ्ग	वील
निश्विषारकड	लङ्ग	सुण्डर	नीडङ्ग	नीडङ्ग
सुनीषारपर्व	मनीषारि	नीडङ्ग	नीडङ्ग	नीडङ्ग

निश्विषल—कुल निरुप करके; कडङ्ग अनेक—समुद्र से जब पर्वत उठ आया; मनीषल पील—मवनी में शीशा के साथ विद्यमान; माक नैडङ्गोहि माल—आकाश-धारा पतिकाओं की श्रेणी; धर्मप—के समान; विश्विषल पील—धूम के समान रहनेवाले; सुद अरवि निरु—प्रवेग रंग के धरती; नैडङ्ग वील—ऊपर से नीचे बहने है; पर्व मनीष निमल—(निम) पर्व नामक मलिया, निमल नामक मलियों के साथ; नीडङ्ग—अदल रहती है; सुनीषल—उन पर्वतीय तालाबों से; उण्डरुद्र—वात समझकर; नीडरुद्र गुच्छ—कम से उलबती है, ऐसे। ५०

वह पर्वत कोई सकलप लेकर उठ आ रहा था। तब उस पर बहनेवाली सिराएँ मवनी पर फहरानेवाली आकाशधारा पतिकाओं की राशिधरों और स्रकर्मों के समान (जो निरुवर क्रियाशील है) लगी। तब वहों के शीलों से 'मनी' और 'निमल' नामक मलिया समझकर डूब-उधर लड़पकर से 'मनी' और 'निमल' नामक मलिया समझकर डूब-उधर लड़पकर से 'मनी' और 'निमल' नामक मलियों से थे और उनसे कभी अलग नहीं हुए थे। ५०

कौडुनालो	डिरण्डु	कुलप्पहै	कुड्ड	मून्डम्
शुडुजातम्	वैळिप्पड	वुयन्द	तुयक्कि	लार्बोल्
विडनाह	मुळैत्तलै	विम्म	लुळन्नु	वीङ्गि
नैडुनाळ्	पौरैयुड्ड	वुयिर्प्पु	निमिर्न्दु	निड्प 51

कौटुम्-क्रूर; नालौटु इरण्डु-चार के साथ दो (छ:); कुल पकै-शत्रुसमूह; मून्ड कुड्डमुम्-तीन दोष; चुट्टु-दग्धकारी; जातम्-ज्ञान के; वैळिप्पट-प्रकट होने पर; उयन्त-उससे बचे हुए; तुयक्किलार् पोल-निर्लिप्तों के समान; मुळैत्तलै-कन्दराओं में; नैटु नाळ्-बहुत दिनों से; विष्मल् उळन्नु-दम घुटकर कष्ट उठाने से; वीङ्कि-शरीर सूझकर; पौरै उड्ड-बन्द रहे; विट नाकम्-विषैले सर्प के; उयिर्प्पु-साँस के; निमिर्न्दु निड्प-उत्थित होते (वह पर्वत उठा) । ५१

काम-क्रोधादि षड्रिपुओं को और त्रिदोषों (अज्ञान, अन्यथा ज्ञान और विपरीत ज्ञान) के दाहक, सच्चे ज्ञान-प्राप्त व निर्लिप्त महात्माओं के समान कन्दराओं में, जो बहुत दिन से दम घुटने से व्यथित पड़े थे, उन व्यालों के श्वास चलने लगे थे । यह साध्य करता हुआ वह पर्वत ऊपर उठा । ५१

अळुन्दोडि	विण्णोडु	मण्णौक्क	विलङ्गु	माडि
उळुन्दोडु	कालत्	तिडैयुम्बरि	नुम्ब	रोङ्गिक्
कौळुन्दोडि	निन्ड	कौळुङ्गुन्रै	वियन्दु	नोक्कि
अळुन्दामत्त	तण्ण	लिदैन्गौ	लैताव	यिर्त्तान् 52

इलङ्कुम् आटि-प्रकाशमय आईने पर; उळुन्नु ओट्टु-उड़द के दौड़ने के; कालत्तु इट्टै-काल में; अळुन्नु ओटि-ऊपर आकर जो फैला रहा; विण्णोडु मण्णौक्क-आकाश-भूमि को एक करके; उमपरिन् उम्पर ओङ्कि-आकाश पर सर्वत्र छाकर; कौळुन्नु ओटि-शिखर फैलाकर; निन्ड-जो स्थित रहा; कौळुम् कुन्रै-बड़े पर्वत को; अळुन्ता मत्तत्तु-अदम्य-मन; अण्णल्-महिमावान ने; नोक्कि वियन्नु-देखकर विस्मित होकर; इतु अँन् कौल्-यह क्या है; अँता-ऐसा; अयिर्त्तान्-संशय किया । ५२

एक शीशे पर उड़द का एक दाना जितनी कम देरी में लुढ़कता चला जायगा, उतनी देर के अन्दर मैनाक जल के ऊपर उठा और भूमि और आकाश में सर्वत्र व्याप गया । वह आकाश के ऊपर भी चला गया । अदम्य-मन महान् हनुमान ने इसको देखा, और विस्मित होकर संशय किया कि यह क्या है ? । ५२

नीर्मेड्	पडर्नन्	नैडुङ्गुन्रु	निमिर्न्दु	निड्डल्
शीर्मेड्	पडरा	दैन्चिन्दै	युणर्न्दु	शैल्वान्
वेर्मेड्	पडवन्	रलैकौळ्प्पड	नूक्कि	विण्णोर्
ऊर्मेड्	पडरक्	कडिडुम्बरि	नूडु	पायन्दान् 53

नौरे भैले-समुद्र-जल पर; पटर-झाल; नलें भैदम कुरेन्द्र-अच्छा और बड़ा पवन; निमिरनरु निरुल-जो उबल खड़ा रहा वह काम; चौर भैले पटरुि-अच्छे उदय का नही होला; भैल-ऐसा; निरुल उणरुनरु-यम में सीवकर; भैलवाने-जो जाता रहा वह; भैरे भैले पट-निखले भाग को ऊपर; वरें नलें कीछे पट-बलवान फिर का भाग नीचे करके; नैकीक-ढकलकर; विण्णौर ऊरे भैले पटर-देवलीक पर धूपके के विचार से; उमपरिरे ऊट-अनरिख भै; कडिउ पायनराने-भैल से बला । ५३

इस तरह उस पवन का सामने आकर लनकर खड़ा रहने अच्छे आशय का नही हो सकता । यह सीवकर हेतुमान ने आगे बढकर उसे ऐसा ढकल दिया कि उसका सिर नीचे की ओर और लल ऊपर की ओर गया । हेतुमान आकाश में देवलीक की ओर उठा । ५३

उमदायु नुलैनुदुपरु भैले धीमिनेल कुमुदम धीमिनेल कुमुदम उमदायु निरुदकिल मुदुरु पिनेनरुन दौरेवि ननेवाल कुमुदम वनदेविला यण्णौरु निरुमानिड वेड माहि दनेरे 54

उपर भैले-उर्लंग (नरंगी बाले) समुद्र में; आभिनेल कुमुदम-दिपा रहा वह (नौका) पवन; उमदा मुने-उमसे ढकला जाकर; उलैनु-सकटयुतल होकर; निरुदकिलम उदुरु-निरुदकिल हुआ; निरुदकम-बाद भी; नौरेविने-अधम; अमपाल-यम से; आण्णै-बहो; और विरु-एक छोटे; माहिड वेदम आकि-मयल का रूप से; वरु ओङ्कि-आकर सीधे खड़े होकर; अनेवायु-भैरे नाल; इरु केळ-यह सुनी; भैल-ऐसा कहकर; इमन इवैलेनु-गो बोला । ५४

इस व्यवहार से नौनाक के गरीर में चोट और मन में टीस लगी । बहुत दिन से समुद्र के अन्दर दिपा-लुका पड़ा रहा वह यम से प्रेरित होकर उठ आया था । अब उस अटल यम के कारण वह एक छोटा मानव-रूप धरकर हेतुमान के पास आकर खड़ा हुआ और बोला । भैरे नाल । ५४

वेरुदु पुलनेली नलैय विरुङ्गा ललैलाम वेरुदु मादुव विरुयुन ररिवविार माण वीचव वेरुदु पवन रिपवैलिपुन वेले युपेनुके कादुक्क किरुव वेनेक्कावेनन सनेवु कावेद 55 ऐय-नाल; वेरुदु पुलनेली-शब्द; अलने-नही हूँ; अरि-इन्द्र से; विरुक्कल भैल्लाम-सभी पवनो के; विरु मादुद-पधो की दूर करी; अनेद-कहेकर; ववैविरुप-वज्रायुध की; माण ओचव-खूब बलाया; वीरुदुपट-पध अलम हो ऐसा; नैरिय वेलेविने-काटा जब भाग लव; कादुक्क इरुवने-पवनवेव से; अनेपु कावेन-यम प्रकट करके; भैले-मुझ; वेले उपेनु-समुद्र से पडुवाकर; कावेनलने-बलाया । ५५

मित्र ! मैं विरोधी पक्ष का नहीं हूँ । जब इन्द्र ने पर्वतों के पक्षों को छेदने के लिए वज्र चलाया तब पवनदेव ने मुझ पर प्रेम प्रकट करके मुझे समुद्र में छोड़ा और मेरी जान बचायी । ५५

अन्तान्तरुड्	गादल	नादलि	नन्बु	तूण्ड
अन्तालुतक्	कीण्डु	शैयङ्कुरित्	ताय	तन्मै
पौन्तार्शिह	रत्तिरै	यारिन्नै	पोदि	यैन्त्रे
उन्तावुयर्न्	दैनुयर्	विङ्कु	मुयर्न्द	तोळाय् 56

उयर्विङ्कुम्-उन्नत से भी; उयर्न्त-बढ़े हुए; तोळाय्-कन्धों वाले; अन्तान्-उस (पवनदेव) के; अरुम् कातलन्-प्यारे पुत्र हो तुम; आतलिन्-इसलिए; अन्पु तूण्ड-प्रेम से प्रेरित होकर; अन्ताल्-अपने से; उतक्कु-तुम्हारे प्रति; चैयङ्कु उरित्ताकिय-करणीय; तन्मै-काम; पौन् आर् चिकरत्तु-स्वर्णमय शिखर-प्रदेश पर; इरै-थोड़ी देर; आरिन्नै-विश्राम कर लो और; पोति-जाओ; यैन्त्रे-ऐसा; उन्ता-कहने के लिए ही; उयर्न्तेन्-समुद्र के ऊपर बढ़ आया । ५६

ऊँचे से ऊँचे कन्धों वाले ! तुम उस वायुदेव के प्यारे पुत्र हो । इसलिए प्रेम से प्रेरित होकर मैं तुम्हें कुछ करूँ वह यही है कि तुम मेरे स्वर्ण-भरे शिखर पर कुछ देर विश्राम करके जाओ । यही सोचकर मैं ऊपर आया हूँ । ५६

कार्मेहवण्	णन्बणि	पूण्डवन्	कालिन्	मैन्दन्
तेर्वान्बुरु	हिन्त्रन्	शीदैयैत्	तेव	रुय्यप्
पेर्वान्बयल्	शेरि	यिदिङ्परुम्	बेरि	लेन्त
नोर्वेलैयु	मिन्त	दुरैत्तडु	नीदि	निन्त्राय् 57

नीति निन्त्राय्-नीतिनिष्ठ; नोर् वेलैयुम्-जलसमृद्ध समुद्र; कार् मेक वण्णन्-मेघश्याम की; पणि पूण्डवन्-सेवा का व्रती; कालिन् मैन्तन्-और पवनकुमार; तेवर् उय्य-देवों को तारने हेतु; चोतैयै तेर्वान्-सीता को खोजते हुए; पेर्वान्-जानेवाला; वरुकिन्त्रन्-आ रहा है; अयल् चेरि-उसके पास जाओ; इतिल्-इससे; पैरुम् पेरु-बड़ा भाग्य; इल्-नहीं; अन्त-ऐसा; इन्तु-ये वचन; उरैत्तु-बोला । ५७

हे नीतिनिष्ठ ! जल-भरे समुद्र ने भी मुझसे कहा कि मेघश्याम श्रीराम की सेवा में प्रवृत्त पवनकुमार देवों के रक्षणार्थ सीताजी की खोज में जाता हुआ आ रहा है । उसके पास जाओ । इससे बढ़कर कोई सौभाग्य नहीं है । ५७

नन्त्रायितु	नल्ल	तमक्किव	तैन्नु	नाडि
इन्त्रैयिरे	यैय्दियि	शैन्दु	कोडि	यैन्ताल्

[illegible]

पविं वारं-रवणहृत्पालकतल; अकल मारुप-विशाल वष वाल; इवण-यह; अमकुं नलन-हेमारे लिण हिलकारी है; अमकुं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे धर्मशूराध्यायः समाप्तः ॥

57. 1. 2ኛ (ደ ቀለቱ) - 1. 1. 2ኛ : 2ኛው ዘወትር : 1. 1. 2ኛ : 1. 1. 2ኛ
 1. 1. 2ኛ - 1. 1. 2ኛ : 1. 1. 2ኛ : 1. 1. 2ኛ : 1. 1. 2ኛ

महाकवि जगन्नाथ शंकराचार्य महाराज की कृपासे यह पुस्तक प्रकाशित हुई है।

म करो आर मरो अरु अतिथ्य गृहो करो । अवन घरे परे कसो
लागे देखेको तथी उसको आतिथ्य करो—इससे घरको कलह थपे

१५५
उद्देवतादे
यातिव
नदिन
नैव
वृत्ति

विदेवामर्दे	वाण्डुदेम	विदेवि	उङ्गा	वृषल	ग्रीकिक
विरिदेवामर्दे	वृषाडि	वृषविश्व	वृषल	ग्रीकिक	

वर्तमानादिभूतं पार्श्वकृतं मिश्रितं मातृ कालात् 59

बाळें विरदें विळ्ळक-उठवल रूप सें गीसायमान जें, पेंसा (प्रसव) जें काकें;

अथ विद्वत्पुत्र-श्रीः सुकृत्याः अविषीका-उपदिशा की नरकः । तदेव-नलहृदित्त-सहितः । इति श्री कर्तिका-उपनिषद् समाप्तम् ।

महावीर ने मुनाक का बचन सुना । समझ गया कि यह अहित

[illegible]

४ । १३४-२७११ । १४१०७२३ ५ ५११५ ४४ १३११-१४१२१३१३ २५११० ५ ११३११ ।

वर्तमानेन अकरोति नित्यं यावत्तु वर्तकणं वानवन् वीक्ष्य नित्यं यत्नलल

[illegible]

वचनोन्वय-संकर नहीं पाऊँगा; अतः वह; अतः वृत्ति-भेदे सहायक; वाचवत्-
 शक्ति (शक्ति); वचनोन्वय-संकर पर जो रचित है, उस वचन का कल है; वृत्ति-

अथ आर्य विद्वान् अनेकान् अथवा-अथवा कथमा पुनः विना । अथवा

अरुन्तेन्-कुछ नहीं खाऊँगा; निन् अन्पु-तुम्हारा प्यार; पैरुम् तेन् पिळि-अति मधुर मधु-रस; चार-मिला है; पिणित्त पोते-उसने जब मुझे बद्ध किया तभी; इरुन्तेन् नुकर्न्तेन्-ठहरकर भुगतनेवाला बन गया; इति-अब; इतन् मेल्-इससे बढ़कर; ईवतु अँन्तो-देने के लिए क्या रखा है । ६०

हनुमान ने कहा । मैं यात्रा से श्रांत नहीं होऊँगा । मेरे सहायक प्रभु श्रीराम की मुझ पर कृपा उसका कारण है । मेरी कामना पूरी नहीं हो तब तक कुछ नहीं खाऊँगा । तुम्हारे प्रेम ने बहुत ही प्रिय शहद के-से मधुर रस के साथ मुझे बद्ध कर लिया । उसी से मेरा ठहरना और आतिथ्य भोगना हो गया, समझो । इससे बढ़कर तुम दोगे क्या ? । ६०

मुन्बिर्चिर्न्	दारिडै	युळ्ळवर्	कादन्	मुर्ऱ्प
पिन्बिर्चिर्न्	दारुगुण	नन्ऱिदु	पैर्ऱ	याक्कैक्
कैन्बिर्चिर्न्	दायदी	रुर्ऱमुण्	डैन्	लामे
अन्बिर्चिर्न्	दायदीर्	पूजत्तै	यार्ह	णुण्डे 61

मुन्पिन्-बल में; चिर्न्तारिडै-श्रेष्ठ लोगों पर; कातल् उळ्ळवर्-प्यार रखनेवाले; मुर्ऱ्-प्रेम के बढ़ने से; पित्पिर् चिर्न्तार्-पीछे श्रेष्ठ बन जाते हैं; कुणम् नन्ऱिदु-यह गुण उत्तम ही है; पैर्ऱ याक्कैक्कु-प्राप्त शरीर को; अँन्पिल् चिर्न्तायतु-अस्थि से बढ़कर; ओर् ऊर्ऱम्-बलदायक; उण्टु-और कोई है; अँन्तलामे-ऐसा कहा जा सकता है क्या; पूजत्तै-पूजा-सत्कार में; अन्पिन् चिर्न्तु आयतु-प्यार से बढ़कर कुछ; ऊर्ऱम्-बल; यार्कण्-किसके पास; उण्टु-है । ६१

धार्मिक बल में श्रेष्ठ महानों के प्रति प्रेम रखनेवाले पीछे जीवन में श्रेष्ठ बन जाते हैं । यह गुण अच्छा ही है । (प्रारब्ध-) प्राप्त इस शरीर को बल देनेवाला, अस्थि को छोड़कर और किसी को कह सकते हैं क्या ? वैसे ही वन्दना के लिए प्रेम से बढ़कर बल किसके पास है ? । ६१

ईण्डेकडि	दैहि	विलङ्ग	लिलङ्गै	यैय्दि
आण्डान्निडि	मैत्तौळि	लार्ऱलि	नार्ऱ	लुण्डे
मीण्डानुहर्	वेनुन्	विरुन्दैन्	वेण्डि	मैय्मै
पूण्डानवन्	कट्पुलम्	बिर्पड	मुन्बु	पोत्तान् 62

मैय्मै पूण्डान्-सत्यवान; ईण्डे-अभी; कटितु एकि-शीघ्र जाकर; विलङ्कल् इलङ्कै-(त्रिकूट) पर्वत पर स्थित लंका में; यैय्ति-जाकर; आण्डान्-मेरे स्वामी का; अटिमै तौळिल्-दास-योग्य काम; लार्ऱलिन्-पूरा करने से; लार्ऱल् उण्डे-दूसरा कार्य है क्या; मीण्डाल्-लौट आऊँ तब; मुन् विरुन्तु-तुम्हारी दावत; नुकर्वेन्-भोगूँगा; अँन्-कहकर; वेण्डि-प्रार्थना करके; अवन् कट्पुलम्-मैनाक की दृष्टि; पिन् पट-बिछड़ जाय ऐसा; मुन्पु पोत्तान्-आगे गया । ६२

सत्यसंध हनुमान ने आगे कहा । अभी त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका जाऊँ, अपने स्वामी श्रीराम की सेवा का कर्तव्य अदा करूँ, इसके

৮৩। প্রাচীন গ্রন্থ সংগ্রহ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

६३ । १३२ ॥ ५ ॥ ५५५

पदार्थ ऐसे विचार्यते हैं कि उनमें अक्षय्यत्व महेवाम हो गया । ६३

आरंभकर्तृत्वे
रूपिण
यत्कर्मकम्
सूय
सुरेयम् ०५

83 | 1. 1949 12-15-1949 12-15-1949

॥ जलधि के ऊपर चलनेवाले हनुमान का बेग और उत्थान देखो अंक ३ ॥
 वहे सोखने लगा कि यह वही है जो उस शूराव में, जबकि उसके मंडल
 बरग भूमि पर चढ़ी खलने लगे थे, उलककर मेरे रथ पर कूटा था ॥ सुंद

के मन में प्रश्न उठा कि यह अब किस पर कूदने का संकल्प लिये जाता है ? । ६४

वाळीतुतुळिर्	वालैयि	ऊळिन्	मरुङ्गि	मैप्प
नीळीतुयर्	तोळिन्	विशुम्बु	निरैन्द	मैय्यिल्
कोळीतवन्	मेनि	विशुम्बिरु	कूरु	शैय्युम्
नाळीतुतु	मेलौळि	कीळिरु	ळुङ्ग	जालम् 65

वाळ् औतु-तलवार के समान; औळिर् वाल् अयिङ्-चमकनेवाले बड़े दाँत; मरुङ्कु-(दोनों) बाजूओं में; ऊळिन्-क्रम से; इमैप्प-प्रकाश छिटकाते हैं; नीळ् औतु-लम्बाई में सम; उयर् तोळिन्-उन्नत कन्धों के साथ; कोळ् औतवन्-(राहु या केतु के) ग्रह के समान; मेनि-(हनुमान का) शरीर; विशुम्बु निरैन्त-जो आकाश भर में व्यापा; मैय्यिल्-उस प्रकार में; विशुम्बु-आकाश को; इरु कूरु शैय्युम्-दो भागों में विभक्त जिस दिन किया गया; नाळ् औतु-उस दिन के समान लगा; मेल् जालम्-उसके ऊपर के लोकों को; औळि-प्रकाश; कीळ् जालम्-नीचे के लोकों को; इरुळ्-अन्धकार; उङ्ग-प्राप्त हो गया । ६५

हनुमान के दाँत तलवार के समान थे । और वे दोनों बाजूओं में चमक रहे थे । उसकी भुजाएँ परस्पर सम थी और उसके कन्धे ऊपर उठे हुए थे । उसका शरीर (राहु या केतु के) ग्रह के समान था । ऐसा वह आकाश भर में छा गया था । इसलिए आकाश को दो भागों में विभक्त करनेवाले काल के समान लगा । उसके ऊपर के लोक प्रकाश से भरे और नीचे के लोक अन्धकार से भर गये । ६५

मून्नुङ्ग	तलत्तिडै	मुर्ऱिय	तुन्बम्	वीप्पान्
एन्नुङ्ग	वन्दात्	वलिमैय्मै	युणर्त्तु	नीयैन्
डान्नुङ्ग	वानोर्	कुरैनेर	वरक्कि	याहित्
तोन्नुङ्ग	निन्ऱाळ्	शुरशैप्पैयर्च्	चिन्दै	तूयाळ् 66

आन्नुङ्ग-भीड़ लगाये; उङ्ग-आगत; वातोर्-देवों ने; मून्नु उङ्ग तलत्तिडै-तीनों (स्वर्ग, मध्य, पाताल) तलों में; मुर्ऱिय तुन्बम्-प्रवृद्ध दुःख को; वीप्पान्-नाश करने के लिए; एन्नुङ्ग-दायित्व लेकर; वन्तान्-जो आया है; वलि मैय्मै-उसके बल की स्थिति को; नी उणर्त्तु-तुम बताओ; अन्नुङ्ग-ऐसा; कुरै नेर-प्रार्थना की तब; चुरचै प्यैर्-सुरसा नाम की; चिन्तै तूयाळ्-पवित्रमना; अरक्कि आकि-राक्षसी बनकर; तोन्नुङ्ग-प्रकट होकर; निन्ऱाळ्-खड़ी रही । ६६

तब देव उधर एकत्र हो आये । उन्होंने सुरसा से कहा कि यह हनुमान तीनों लोकों की ग्लानि दूर करने का दायित्व अपनाकर आया है । उसकी सच्ची शक्ति की परीक्षा लो और हमको बताओ । इस पर सुरसा नाम की नेक मन वाली देवी एक राक्षसी का रूप धरकर मारुति के सामने आकर प्रकट हुई । (सुरसा को वाल्मीकि नागमाता कहते हैं ।) । ६६

पूरेवापरी ररकैक पूरेकैकीडे पूरेपि नोडेनिके
 कोडेवापरी विनयुलन नपुहोडेडे गुरेक मुदेक
 वाडेवापुनक कामिड मापुवर वापुहो लोचन
 नोडेवापुविग्रमे विरुन डुववि नैकैक लिगुडि 67

पूरे वापु-वडे मुख की; ओरे अरकैक उर-एक राखी का रूप; कोडे-
 लकर; पूरेपुन ओडेक-शान के साथ ऊंचा उठकर; कोडे वापु-पराकाम;
 अरिपुन कुलनवापु-वानरकुलन; कोडेम कूरुम-कूरु यम की भी; उठक वाडे-
 मयशीन करदे हुए रडेवले; वापु अरकैक-मुख वाली मुख; अमिडमापु-अमिष
 शोजन बनकर; वरवापु कोले-आये मया; अंगुना-एसा कहली हुई; लवु वरवापु-
 अपने सिर से; नोडे विवर्मपुन नैकैक-विशाल आकाश की दवाले हुए; निगुडि-
 छडी रही । ६७

बहल हो वडे मुख के साथ राखी का रूप लेकर वडे शान से खड़ी
 हुई और डुगमान से बोली । हे वलवान वानरकुलनदेव ! आओ ! यम
 की भी मयशीन करनेवाले मेरे मुख का अमिष बनकर आये हो ? —यह
 कहकर अपने सिर की आकाश से लगाती हुई स्थित हो गयी । ६७

नीयेपुन लय पविपुलि नीरेनन श्रुवान
 आयेवरे वरुडेन पपुमिने वपुसे पण्ड
 नोयेपुलि वनेडे निण्डेगोडे पिण्डेगो
 वापुपुडे वापुवडि मरुडिने वलि
 नैगुडि 68

वपुधवाड-दानशीन; नीये अनलय-आग हो कहे; ऐसी; पविपुलि-मुख के
 रीग की; नीरेनन वपुवान आये-वरे करनेवाले हो बनकर; विरेवरेक-शीघ्रता
 अपनाकर; अँडे-मेरे; अणुमिने-पास आये; डनि-आने भी; नीये-यम हो; वने-
 आकर; निण्डे-कोडे-मसिपुवन; पिण्डेक अविरेडिने-वेडेने रूप से रडेवले दल-
 पविनयी के; वापु-मुख से हो; पुकुवापु-धूस जाओ; वलिने-आकाश से; मरुड
 वाडे-वसती मारी; डले अँडेगुडे-नहो है कहे । ६८

वडे उपकारी दान ! आग हो कहने योग्य है मेरी वृक्ष ! उस
 रीग की शान करने के निमित्त तुम वरु की साथ मेरे पास आये हो !
 और भी आग हो आग इस मुख से आ जाओ, जिसके दाव पविनयी से
 नहो है और जिसके दाँतों के बीच मांस फँसा हुआ है ! आकाश से और
 कोडे ररती नहो, जिससे तुम वष निकली । ६८

पुणवानिक नीपुशिप नीडे पुरैकक नीनदाम
 उणवापुन दाकैकपु यनवे वरुके नैरवने
 विणवानवर नपुडे नव निळनेवु मोण्डल
 नपुवानव नपुलिन वनेवि वण्ड 69

नल् अडिवाळन्-सद्बुद्धि के स्वामी (ने); नी और पण्पाल-तुम स्त्री-जाति हो; पचि पीछे-भूख का कष्ट; ओइक्क-सताने से; नौन्ताय्-पीड़ित हो; विण्पालवर्-स्वर्गवासियों के; नायकन्-नायक श्रीराम की; एवल्-आज्ञा; इळैतु-पूरा करके; मोण्टाल्-लौट आऊँ तो; अँतु आक्कैयै-अपने शरीर को; यात्-मैं; उण्पाय् अँत-खाओ कहकर; नण्पाल्-मित्रता के साथ; उतवर्कु नेर्वल्-देने को-सम्मत हो जाऊँगा; अँत चोल्लिनन्-ऐसा कहा-हनुमान ने; नक्काळ्-सुरसा हँसी। ६६

अच्छे बुद्धिमान हनुमान ने इसके उत्तर में कहा कि तुम स्त्री-जाति हो ! बेचारी तुम्हें भूख का दुःख सता रहा है और तुम पीड़ित हो रही हो । देवों के नायक श्रीराम की आज्ञा पूरा करके लौट आऊँ तब मैं अपने शरीर को स्नेह के साथ तुम्हें खाने के लिए सौंप दूँगा । यह सुनकर सुरसा हँसी । ('हनुमान यह कहकर हँसा' का भी पाठ है ।) । ६९

काय्न्देळुल	हङ्गळुङ्	गाणनिन्	याक्कै	तन्ने
आर्न्देपशि	तीर्वैति	दाणैयैन्	रन्नळ्	शौन्ताळ्
ओर्न्दानुमु	वन्दौर	वेत्तिन्	इळिळ्	पेळ्वाय्च्
चेर्न्देहु	हिन्ऱे	नैयामैनिऱ्	इत्तिऱि	डैन्ऱान् 70

अन्नळ्-उसने; एळुलक्कळुम् काण-सातों लोकों के देखते; काय्न्तु-कोप दिखाकर; निन् याक्कै तन्ने-तुम्हारे शरीर को; आर्न्ते पचि तीर्वैन्-खाकर ही भूख मिटाऊँगी; इतु आणै-यह निश्चित है; अँन्ऱ चोन्ताळ्-ऐसा कहा; ओर्न्तानुम्-उसका आशय जिसने ताड़ लिया, उसने भी; उवन्तु-सन्तुष्ट होकर; ओर्वेन्-बचकर नहीं जाऊँगा; निन्नतु-तुम्हारे; ऊळिल्-बेढंगे; पेळ् वाय्-बड़े मुख-में; चेर्न्तु एकुत्तिन्ऱेन्-घुसकर जाऊँगा; आम् अँतिल्-हो सका तो; अँते तिन्ऱिटु-मुझे खा लो; अँन्ऱान्-कहा । ७०

सुरसा ने कहा कि मैं तुम्हारे शरीर को सातों लोकों के देखते कोप के साथ खाकर ही अपनी भूख मिटाऊँगी । यह निश्चित है । हनुमान ने उसका मन ताड़ लिया । उत्साह के साथ कहा कि ठीक है । मैं हटकर नहीं चलूँगा । तुम्हारे बेढंगे और बड़े मुख से होकर ही जाऊँगा । हो सके तो मुझे खा लो । ७०

अक्कालै	यरक्कियु	मण्ड	मन्नन्द	माहप्
पुक्कानिरै	याद	पुळैप्पेरु	वाय्ति	उन्दु
विक्कादुवि	ळुङ्गनिन्	ऱाळुदु	नोक्कि	वीरन्
तिक्कानैऱि	वाय्शिरि	दाम्वहै	शेणि	तीण्डान् 71

अक्कालै-उस समय; अरक्कियुम्-राक्षसी भी; अण्डम् अन्नन्तमाक पुक्काल्-अनन्त अण्ड भी घुसें तो; निऱैयात पुळै-न भरनेवाले द्वार के; पेरुवाय् तिन्ऱन्तु-बड़े मुख को खोलकर; विक्कातु-विना हिचकी लिये ही; विळुङ्क-निगलने के लिए; निन्ऱाळ्-खड़ी रही; वीरन्-महावीर ने; अतु नोक्कि-वह देखकर; तिक्काम्

১০। দলীয় কাজে ইচ্ছা-বশতঃ যোগদান করিয়াছেন; কিন্তু ইচ্ছা-বশতঃ
 (অন্যভাবে) দলীয় কাজে যোগদান করিয়াছেন; কিন্তু ইচ্ছা-বশতঃ

वर्तते हि; चित्तं-आकाशं; शीतान्तं-वक्षःस्थितिः । ७१

ਨਵ ਸੁਰਬੀ ਨੇ ਅਧਨਾ ਮੁਖ ਫੁਲਨਾ ਗੰਧਾਰੀ ਕਿ ਅਗਨਿਵ ਅਧ ਧੂਸ ਨੀ ਘੀ
 ਵਫ਼ਾ ਪੂਰਾ ਹੋ । ਫਿਰਾ ਫਿਰਕੀ ਕੇ ਹੋ ਦੁਸਮਾਨ ਕੀ ਨਿਗਲ ਲੇਨੇ ਕੇ ਲਿਓ ਵਫ਼ੇ
 ਸਬਫ਼ ਭਰੀ ਰਹੀ । ਚੀਰੇ ਨੇ ਫੇਰਾ ਆਰੇ ਫਿਰਾਰੀ ਮੇਂ ਫੰਦੇ ਹੋਏ ਉਸਕੇ ਮੁਖ-ਵਿਚਰ
 ਕੀ ਭੀਰਾ ਬਜਾਇ ਹੋਏ (ਧਾਨੀ ਉਸਥੇ ਬਠਕਰ) ਚਫ਼ੇ ਆਕਾਸ਼ ਮੇਂ ਧਰਵਫ਼ੇ ਹੋਆ । ੭੬

नौगडा	मडन	शुद्धेगाविभरं	वायि	उनेनिमं
ऊण्डा	नीनवरं	इरीविरपृथि	एद	मुनेममं
मीगडा	चडकणं	उनरेविणायं	वीरुहं	झमे
आण्डा	निवनं	इनरेधुनलि	दाणि	शीवेरं 72

नीलादाम्-जा वडा हुआ; उदने चूड़का-पूरन छोडा वना; निमरु-
वायिदमनिम-बहं हूरु पुरसा के मुलिवर स; ऊग नाम् ओवन-गाम के समान; उरु-
मिवर होकर; और उमिरपु-एक घास के; उमिरास मुनेम-निकलने से पहले
हो; नीलादाम्-बाहिर आ गया; निम उरुवरकछे-आकाशवासी हो स; अरु
कामरु-उमका होकर; उवने ओमने आपादाने-उमने होमकी पालिस कर लिया;
औरु-कहकर; अनरु मये-पुष्प वरसाकर; निरु-पुष्कल; आनि चामरु-
आशीर्वाद दिव्य । ७२

८७ । अङ्गिर्वत् । ७२

ऐसा बड़ा रूप लेकर हेतुमान घट छिटा बन गया और सुरक्षा का बहुत बड़ा मुद्दा सं उसकी शास के रूप में सुरक्षा और मौसम भरने से पहले ही बाहर आ गया। देवी ने यह अद्भुत कार्य देखा और कहा कि इसने हमें पालित कर लिया। उन्होंने उस पर फूल बरसाये और आशीर्वाद के बचन कहे। ७२

[illegible]

भूमे भूमे पट्टे-उत्तरीतर बहनेवाले; भूप्रतिभु-शरीर वाली; आनवले-जो
 बनी थी, वहे; वीककर्म नीडिक-भूजन छिडकत; अवले तने भूतिप्रलय-अपना निजी
 रूप लेकत; वायुनर्म अग्रे लाले-माला से भी अधिक बारसल के साथ; भूमे
 प्रतिधान-आगे प्रमसे जो न हो सके ऐसा है; अंगुठ-कटकत; इतिवृ
 पदोति-सुख रूप से प्रयास करती; निरंतरले-छडी रहती; पृथ्वे भूतिप्रलय-प्रवाहण
 दुर्गमान भी; इतिवृ-सुखद; आदि प्रवृत्त-आणीवचन कहेकर; पृथिवी-बला ७३

साधुवाद दिया कि आगे तुमसे जो न हो सकेंगे, ऐसे कौन कार्य हैं ? उसने हनुमान को मुदित करते हुए उसकी संस्तुति की। स्वर्णवर्ण हनुमान भी उसको आशीर्वाद देकर (या उसके आशीर्वाद लेकर) आगे चला। ७३

कीदङ्ग	ळिशैततर्	किनृतरर्	कीद	नित्त्र
पेदङ्ग	ळियम्बितर्	पेदैय	राडन्	मिक्क
पूदङ्ग	डौडर्न्दु	पुकळ्न्दन	पूशु	रेशर्
वेदङ्ग	ळियम्बितर्	-तैत्तुल्	विरुन्दु	शैय्य 74

तैत्तुल्-दक्षिणी (मलय) पवन के; विरुन्दु चैय्य-दावत (आनन्द) देते; किनृतरर्-किनर लोगों ने; कीतङ्कळ् इचैत्तुतर्-गीत गाये; पेतैयर्-स्त्रियों ने; कीतम् नित्त्र पेतङ्कळ्-गीतों के भेद; इयम्पितर्-गाये; आटल् मिक्क पूतङ्कळ्-नर्तनशील भूत; तौडर्न्दु-लगातार; पुकळ्न्दन-स्तुति करते रहे; पूशुरेचर्-भूसुरेशों ने (ब्राह्मण-श्रेष्ठों ने); वेतङ्कळ्-वेदमन्त्र; इयम्पितर्-उच्चार (मन्त्र-आशीर्वाद कहे)। ७४

मलयपवन ने हनुमान को आनन्दित किया। किन्नर गाये। स्त्रियों ने भेद-प्रभेद के साथ गीत गाये। नर्तनसमर्थ भूतों ने उनके अनुरूप प्रशंसा के वचन उच्चार। भूसुरों ने वेदमन्त्र उच्चारण कर आशीर्वाद दिया। ७४

मन्दार	मुन्दु	महरन्द	मणन्द	वाडै
शैन्दा	मरैवाण्	मुहत्तुच्	चैरिवेर्	शिदैक्कत्
तन्दा	मुलहत	तिडैविज्जैयर्	पाणि	ताळाक्
कन्दार	वीणैक्कळि	शैज्जैविक	कादु	नुङ्ग 75

मन्तारम् उन्तु-मन्दार-निःसृत; मकरन्तम् मणन्त-मकरन्द-सुगन्धित; वाटै-उदीची हवा ने; चैन्तामरै-लाल कमल-सम; वाळ् मुकत्तु-(हनुमान के) उज्ज्वल मुख पर; चैरि-बहुत रहनेवाले; वेर् चितैक्क-स्वेदकणों को दूर किया; विज्चैयर्-विद्याधरों के; तम् ताम् उलकत्तितै-अपने-अपने लोक में रहकर; पाणि ताळा-तालबद्ध; कन्तारम्-गान्धारस्वरकारी; वीणैक् कळि-वीणा का मधु (आनन्द); चैम् चैवि कातु-हनुमान के श्रेष्ठ श्रवणेत्रियों ने; नुङ्क-सुना (सुनते हुए हनुमान गया)। ७५

मन्दार-सुगन्ध-वाही पराग से युक्त पवन ने (हनुमान के) अरुणकमल-सम और उज्ज्वल मुख में रहे स्वेदकणों को सुखाया। विद्याधर लोग अपने-अपने लोक में स्थित होकर ताल-बद्ध गान्धार राग में वीणा के सहारे गा रहे थे। हनुमान अपने कानों में उस मधुर-गीत मधु का ग्रहण करता हुआ चला। ७५

वैङ्गार्	निरप्पुणरि	वेरैयु	मीत्तुप्
पीङ्गार्	कलिप्पुन	उरप्पोलिव	देपोल्

इदं गारं कडवैतिरुं नारं पतिं पुनं दालालं सत्तेनां 76
वृद्धेतेनां

प्रतिवृ-अथ एकः आलालस्य अनेनां-इलाहिल-समानाः अङ्कारारारं-
अंगारारारं नाम की राखी; अने-पुत्री; इच्छु कडवैतिरं-वर्षित करके जानेवाले;
आरं-कौन हो; अङ्गवा-कहेवा छुई; अ पूछु आरं कलि पुनलं-उस उमागरे समुद्र
के जल के; बड़ेपुत्र आने-इसरे हो एक; कारं निरं-काले रंग के; पुनरि-समुद्र
की; तर-पूरा करने से; पुल्लवने पालं-विद्यमान उसके समान; अङ्गुतेनां-
(उस समुद्र से से) उठ आया। ७६

तब इलाहिल-समाना अंगारारार नाम की राखी वाधा बनकर आयी।
पहली कौन है मुझे पार कर जानेवाला ? वह समुद्र के ऊपर ऐसे उठ आयी।
मानो उमड़ते हुए उस समुद्र ने एक और काले समुद्र की पूँछ कर दिया
हो। (इसका नाम पुल से सिद्धिका है।) ७६

कादकं कडुङ्गुडि कणककिंकादि कणक कडवै
पादव पिलमपिलनील विलेयील पमव सनां
वेदकं कीळुंखुडै नाडिनरि सनां
आदेति नोडिमड कडवै यीतेनां 77

काल कणककु-दस मील के दिसाव की; इहिल-इरी के अगल तक; कडु
कुडि कण्णाळ-वेग से देखनेवाली आँखें-सहित वहे; पाल पिलमपिसे आँल-पमव
की छलिके; विलेयील-समुद्र-स्वर के समान; पमप-स्वरित होने; सने नाळ-
याचीन दिनों से; विल कीळुम सुदे-देवान-विषय श्रीविष्णु की उद्देश्य करके; नरि
नाडि-माना अवेष्ण करने हुए; आनेतेतिरं आदे-समुद्र से जो बौड़े; सव कडवै-
उन मधु-कटायों के; अनेतेनां-समान थी। ७७

उसकी दहि डलनी तीव्र थी कि वह एक 'काद' (दस मील) की दूरी
तक की वरतुआ की पड़ेवान सके। उसकी पामल की छलिन समुद्र-गालन
के समान उठ रही थी। वह उन मधु-कटायों के समान थी, जो प्राचीन
समय में वेदान के विषय श्रीविष्णु की छील में समुद्र-मान में बौड़े आये
थे। ७७

पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं
कण्डवं कण्डवं कण्डवं कण्डवं कण्डवं कण्डवं कण्डवं कण्डवं
सुण्डवं सुण्डवं सुण्डवं सुण्डवं सुण्डवं सुण्डवं सुण्डवं सुण्डवं
अण्डवं अण्डवं अण्डवं अण्डवं अण्डवं अण्डवं अण्डवं अण्डवं
पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं 78

प्रियं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं पुण्ड्रं
अपिराळ-एक दाली से पुनल थी; कण्डवैतेरु इडे-कण्ड से; कडुं उडे-(विष)
कलकसहित; कडवै-देव शिवजी; कसमा सुण्डवै-शुडी के शरीर से; उरितेन

उरियाल-उधेड़ी गयी खाल से; मुळरि वन्तान्-कमलभव ब्रह्माजी द्वारा सृष्ट;
अण्टत्तिनुक्कु-अण्ड के लिए; उरै अमैतत्तैय-एक आवरण बनाया गया हो ऐसे;
वायाळ्-मुखविवर वाली । ७८

उसके दो खड्गदाँत थे, जो चन्द्र के दो खण्डों के समान थे । उसका मुख बहुत बड़ा था और वह भूमि पर आच्छादित उस गज-चर्म के समान था जिसको नीलकण्ठ शिव ने गज से उधेड़कर भूमि को ढँक दिया हो । ७८

निन्ऱा	णिमिर्न्दलै	नडुङ्गडलि	नीर्दन्
वन्ऱा	ळलम्बमुडि	वान्मुहडु	वौव
अन्ऱाय्	तिरत्तव	त्तरत्तै	यरुळोडुम्
तिन्ऱा	ळौरुत्तियिव	ळैन्बडु	तैरिन्दान् 79

नैटुम् अलै-लम्बी लहरों के; कटलिन् नीर्-समुद्र का जल; तन् वन् ताळ् अलम्प-उसके कठोर पैरों को धो रहा था; मुटि-सिर; वान् मुकटु-आकाश की चोटी से; वौव-टकरा गया; निमिर्न्तु निन्ऱाळ्-ऊँची होकर खड़ी रही; आय् तिरत्तवन्-विवेकपूर्ण हनुमान; अन्ऱ-तब; इवळ्-यह; अरुत्तै-धर्म को; अरुळोडुम्-दया के साथ; तिन्ऱाळ् औरुत्ति-भक्षण कर लिया (जिसने) ऐसी एक है; अँन्पतु-यह बात; तैरिन्तान्-ताड़ ली । ७९

बहुत बड़ी तरंगों वाला समुद्र उसके सबल पैरों को धो रहा था । उसका सिर आकाश की चोटी को छू रहा था । इस तरह आकर जो खड़ी हुई उसको बुद्धिमान हनुमान ने देखा तो समझ लिया कि यह धर्म-दया की भक्षिका है ! । ७९

पेळ्वा	यहत्तलदु	पेरुलह	मूडुम्
नोळ्वा	नहत्तिनिडे	येहुँनैरि	नेरा
आळ्वा	नणुक्कनव	ळाळ्पिल	वयिर्ऱैप्
पोळ्वा	निनैत्तिनैय	वाय्मोळि	पुहन्ऱान् 80

आळ्वान्-स्वामी श्रीराम के; अणुक्कन्-अन्तरंग सेवक ने; पेर् उलकम् मूटुम्-विशाल विश्व के आच्छादक; नोळ् वान्तत्तिन् इटै-विस्तृत आकाश में; पेळ् वाय् अक्तु अलतु-इसके बड़े मुखविवर से होकर नहीं तो; एकुम् नैरि-गम्य मार्ग; नेरा-न पाकर; अवळ् आळ् पिल वयिर्ऱै-उसके गहरे बिल के समान पेट को; पोळ्वान् नितैत्तु-चोरने का विचार करके; इतैय वाय्मोळि-ये वचन; पुक्कन्ऱान्-कहे । ८०

स्वामी श्रीराम के अन्तरंग सेवक हनुमान ने यह भी जान लिया कि विशाल विश्व के आच्छादक आकाश में आगे जाने का अंगारतारा के मुख-विवर के अलावा कोई मार्ग नहीं है । उसने निश्चय कर लिया कि उसके

विष-सम गहरे पद को चीरकर जाना पड़ेगा । उसने अंगारगिरा से यह

ਸਾਧਾ	ਬਰੇਰੇਭੇਰਿ	ਰਾਖੇਰਿਭ	ਪ੍ਰਿਥੇਰਿਭ
ਅਧਾ	ਬੰਦਰੇਰਿ	ਕਾਧੇਰਿਭ	ਕਿਰੇਰਿਭ
ਬਾਧਾ	ਭਰੇਰਿਭ	ਬਾਧੇਰਿਭ	ਧਰੇਰਿਭ
ਨੀਧਾਰੇ	ਪ੍ਰਿਥੇਰਿਭ	ਭਿਰੇਰਿਭ	ਪ੍ਰਿਥੇਰਿਭ

81

बापा घर में लड़िकाय-लगा (हारा) गहेल-गलिल के घर से गुप्त लीक
लिया; लिये पदमे-लुल्लन के बाद भी; आपा उपरन-ली यमल नही पर
बहना है, बहे; लिक कलमे-बेग देलकर भी; उगरेलिकलाम-नही समझी (मेरी
गलिल); नंदे बाने-बहे आकाश में; बापाल अल्ले-मुल कलकर; बलि अदलेलाम-
मानी अवरलिकिया; नी पादे-गुप्त कल देल; देव लिले निल-देवर लहे देले का
कारण; अलेन-बग है; अलेलाने-पुला (देवमान ने) । ८१

गुप्त है किसी की छाया पकड़कर उसे खींच लेने का वर प्राप्त है। उसके बल से तुमने मुझे खींच लिया। तब भी मेरा वेग कम न हुआ। उसकी देखकर भी तुम मेरा बल सोच नहीं सकती। जन्मे आकाश की अपने मुख से ध्यान कर मार्ग रोक दिया। कौन हो तुम ? पहले खड़े होने का कारण क्या है ? दुर्भाग्य ने यह प्रश्न किया। ८१

ପୂର୍ବା	ଲଗକେକଟ୍ଟି	ପଟ୍ଟପାରି	ପୁଟ୍ଟଲ	ସ୍ତମ୍ଭ	ସ୍ତମ୍ଭ	କର୍ମ	ବର୍ଣ୍ଣ
ବିର୍ଣ୍ଣ	ବର୍ଣ୍ଣକୃଷ୍ଣି	ବିବିଧ	ସ୍ତମ୍ଭ	ସ୍ତମ୍ଭ	କର୍ମ	ବର୍ଣ୍ଣ	ବର୍ଣ୍ଣ
କର୍ମ	ବର୍ଣ୍ଣକୃଷ୍ଣ	କର୍ମ	ସ୍ତମ୍ଭ	ସ୍ତମ୍ଭ	କର୍ମ	ବର୍ଣ୍ଣ	ବର୍ଣ୍ଣ
ବର୍ଣ୍ଣ	ବର୍ଣ୍ଣକୃଷ୍ଣ	କର୍ମ	ସ୍ତମ୍ଭ	ସ୍ତମ୍ଭ	କର୍ମ	ବର୍ଣ୍ଣ	ବର୍ଣ୍ଣ

82

पूणपाल-स्त्री-जात; अतः कश्चि पुरंदर-पुंसा मानने का भाव; अहिंसे-त्याग
दो; उरुदाल-से सामने आया तो; विष्णुपाल अवतरकर्म-योग्यताकाविषय का था;
उपरि लिखित-ग्राम त्यागना; भूमे-प्रद है; उपरि कालमे-बलवति यम था;
कण् पात्र अर्द्धक-भरी आदि से पास; बलवत्-पुंसा आया तो; उष्णपाल अर्द्धविष्णु-
छाने की इच्छा; अहिंस्पृह अस्त्रि-निवारण करना कठिन है; अंगुदाल-कहा । ८२

४३	पुष्पदेवदेवदे	कालि	सुवर्णदेव	विजयदेव
	सुवर्णदेव	सिंहदेवदेव	नृनक्षत्र	देवदेव
	देवदेवदेव	देवदेवदेव	नरदेव	अनन्द
	सुवर्णदेव	यथायचित्	विजयदेव	विजयदेव

तिङ्गन्ताळ्—(उसने अपना मुख) खोला; अण्णल्—महिमावान्; इट्टे वळि—उससे होकर; वयिर्त्तिन् चैत्तुशान्—पेट में गया; अरम्—धर्मदेवता; अयर्त्तु—थकित होकर; अरर्त्तियत्—रोया; इङ्गन्तान् अत्त कौटु—मर गया समझ लेकर; अमरर् अय्त्तार्—देवगण व्याकुल हुए; इमैप्पत्तिन् मुत्तम्—पलक मारने के अन्दर; पिङ्गन्तान् अत्त—जन्म लिये, ऐसा कहने योग्य रीति से; पेरिय कोळरि—महान् सिंह; पेर्यन्तान्—बाहर आया । ८३

यह कहकर अंगारतारा ने अपना मुख खोला । महिमावान् हनुमान उस मुख में घुसकर उसके पेट में चला गया । तब धर्मदेवता स्वयं डरकर श्रान्त हुआ और रोने लगा । देव लोग यह सोचकर थकित हुए कि हनुमान मर गया है । पर पलक मारने के अन्दर बली सिंह, हनुमान मानो दूसरा जन्म लिया हो ऐसा, बाहर आ गया । ८३

कळ्वा	यरक्किकद	इक्कुडर्	कणत्तिल्
कौळ्वार्	तडक्कैयन्	विशुम्बिन्मिशै	कौण्डान्
मुळ्वाय्	पौरुप्पिन्मुळै	येय्दिमिह	नौय्दिन्
उळ्वा	ळरक्कौडैळु	तिण्कलुळ	नौत्तान् 84

कळ् वाय् अरक्कि—ताड़ी पीनेवाले मुख की वह राक्षसी; कतड—चिल्लायी; वार् कुटर्—लम्बी आँतों की; कौळ् तडक्कैयन्—जिनमें ले लिया था, ऐसे विशाल हाथों वाला; कणत्तिल्—एक पल में; विचुम्पिन् मिचै कौण्डान्—आकाश पर चला गया; मुळ् वाय्—काँटों—सहित; पौरुप्पिन् मुळै—पर्वत—कन्दरा में; अय्ति—घुसकर; मिक् नौय्तिन्—बहुत सुगम रीति से; उळ् वाळ्—(कन्दरा के) अन्दर रहनेवाले; अरकौटु अळु—साँपों के साथ उठनेवाले; तिण्—बलवान्; कलुळन् औत्तान्—गरुड़ के समान लगा । ८४

सुरापायी मुख वाली अंगारतारा को चिल्लाने देते हुए हनुमान उसकी आँतों की पकड़ लेकर आकाश में उठा । एक ही पल में इस तरह उठते हुए उसे देखकर बलवान् गरुड़ का स्मरण आया, जो कंटकाकीर्ण कन्दरा में घुसकर बहुत ही सुगमता से कन्दरा के अन्दर रहे साँपों की पकड़कर ऊपर उठ आ रहा हो । ८४

शाहा	वरत्तलैव	रिर्त्तिलह	मन्तान्
एहा	वरक्किक्कुडर्	कौण्डुड	नैळुन्दान्
माहाल्	विशैक्कवड	मण्णिलुर्	वालो
डाहाय	मुर्त्तकद	लिक्कुवमै	यानान् 85

चाका वर तलैवरिल्—चिरंजीवी वर—प्राप्त लोगों में; तिलकम् अन्तान्—तिलक—सम हनुमान; एका—(राक्षसी के पेट में) जाकर; अरक्कि कुटर्—राक्षसी की आँतें; उटन् कौण्डु—साथ लेकर; अळुन्तान्—(जो) उठ आया; माकाल् विचैक्क—बड़े पवन के चलने से; वटम् मण्णिल् उर—डोरी को भूमि पर छोड़कर; वालोटु आकायम्

ኢኮኖሚክስ

ଆକାଶ ମୁଁ ଚାହେଁ ଚାହେଁ । ୧୫

प्राज्ञेनमज्ञं मृगानामग्नं अग्निः । अग्निर्ब्रह्म ४६

32 । 1229 24242424-24242424 24242424

देवकर आनन्द का अनुभव किया । मुनिवरों ने आशावचन कहे । ८६

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

၆၁။ ၁၂၂၂ ခု ခုနှစ် ခုနှစ် ခုနှစ် ခုနှစ်

चौरारहळ्	चौररुपहै	पलतीहैय	दन्रो
मुर्रा	मुडिन्दनेडु	वानिनिडे	मुन्नीर्
इर्रावि	यैरैरैतिनुम्	यानिनि	यिलङ्गे
उर्राल्	विलङ्गुमिडे	यूरैत	वुणरुन्दान् 88

चौरारहळ्-जिन्होंने मुझसे कहा; चौर-उन्होंने जो कहा; पकै-बाधाएँ; पल् तौकैयतु अन्नी-अनेक समूहों की है न; अरु अतितुम्-जो भी हों; मुर्रा मुटिन्त-अनन्त बने; मुन्नीरिल्-समुद्र के ऊपर; नैटु वानिन् इटै-लम्बे आकाश में; तावि-लाँघ जाकर; यात् इलङ्कै उर्राल्-मैं लंका जाऊँ तो; इति-उस पर; इटैयूर-बाधाएँ; विलङ्कुम्-दूर होंगी; अत उणरुन्तान्-ऐसा समझा । ८८

हनुमान ने तब सोचा कि सुग्रीव आदि ने जो कहा वह ठीक ही है । बाधाओं के समूह बहुत होते हैं । चाहे जो हों इस अनन्त समुद्र को लाँघकर लंका में पहुँच जायेंगे तभी बाधाएँ दूर होंगी । हनुमान ने यह समझा । ८८

ऊरुकिडि	दूरुवत्त	वूरिलर	मुन्नात्
तेरलि	लरक्करपुरि	तीमैयवै	तीर
एरुम्बहै	यिङ्गुळदि	रामवैत्त	वैल्लाम्
मारुमदिन्	मारुपिडि	दिल्लैत्त	वलित्तान् 89

ऊरु-कण्ट; कटितु ऊरुवत्त-शीघ्र हो जाते हैं; ऊरु इल् अरम्-अक्षय धर्म; उन्ना-न माननेवाले; तेरल् इल्-विवेकहीन; अरक्कर-राक्षस; पुरि-जो करते हैं; तीमै अवै तीर-उन हानियों को दूर करने के लिए; एरुम् वकै-तरण के मार्ग; इङ्कु उळतु-यहाँ है; इराम अतै-‘राम’ कहने पर; वैल्लाम् मारुम्-सब बदल जायेंगे; अतितु-उससे बढ़कर; मारु पिडितु इल्-विकल्प अन्य नहीं; अत-ऐसा; वलित्तान्-निश्चय किया । ८९

कण्ट अकस्मात् आ जाते हैं । अक्षय धर्ममार्ग न जाननेवाले और विवेकहीन राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले संकटों का सागर तारकर उद्धार पाने का एक मार्ग यही है । वह है ‘श्रीराम’ नाम का जाप । उससे सभी बाधाएँ दूर हो जायेंगी । इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं । हनुमान ने ऐसा निश्चय कर लिया । ८९

तशुम्बुडैक्	कत्तह	नाञ्जिर्	कडिमदि	रणित्तु	नोक्का
अशुम्बुडैप्	पिरशत्	तैयवक्	कत्पह	नाट्टै	यण्मि
विशुम्बिडैच्	चैल्लुम्	वीरन्	विलङ्गिवे	रिलङ्गे	मूदूर्प्
पशुम्बुडैच्	चोलैत्	ताङ्गोर्	पवळमाल्	वरैयिर्	पाय्न्दान् 90

अचुम्पु उटै-चिपचिपे; पिरचम्-शहद-भरे; कत्पक-कल्पतरुओं से पूर्ण; तैयव नाट्टै-देवलोक के; अण्मि-पास जाकर; विचुम्पु इटै-व्योममार्ग में; चैल्लुम्

अति मया उरुं क-पूरं भूमि मं लग्ना रह्यै; मयि-चोटी; वायं उरुम-आकाश से लग्ना जा रह्यै; वरमपि नं नयंसे-उसकी माय का हिसाब; भ्रम अति उरुं-न हो सका ऐसै; कुंठित-पूवत पर; निबलत निवृत्त-विश्व उरुं होकर; उरुं नोक्ति-आम से देखकर; विष्णुति उलकम भूतं भूष-प्योमलक रूपी; मूर्तिलयल-कामल स्त्री; मति नोक्ति-अपना शरीर (प्रतिविम्ब) देखने के लिए; कण्ठादि वनेतव-आदि राखी गया; अनेन-चोटी; इलङ्कय-लंकागुटी की; त्रैलोक्य कण्ठादे-सामने से देखो । ६२

उस पर्वत का पैर भूमि पर था और उसका सिर आकाश को छू रहा था। उसके आकार का नापना कठिन था। उस पर हनुमान स्थिर-रूप से खड़ा हुआ। उसने वहीं से लंका को देखा, जो स्वर्गलोक रूपी अंगना के अपने शरीर का सौन्दर्य देखने के वास्ते रखे हुए आईने के समान लगा। ९२

नत्तहर्	तत्तै	नोक्कि	नळितक्कै	मरित्तु	नाहर्
पौत्तनह	रिदनै	यौक्कु	मैन्बदु	पुल्लि	दम्मा
अन्नह	रिदिनि	नत्तरे	यण्डत्तै	मुळुदु	माळ्वान्
इन्नह	रिरुन्दु	वाळ्वा	निदुवदर्	केदु	वैन्डान् 93

नल् नकर् तत्तै—श्रेष्ठ नगर को; नोक्कि—देखकर; नळित कै मरित्तु—कमलहस्त हिलाकर; नाकर् पौत्तनह—देवों की स्वर्णपुरी (अमरावती); इततै ओक्कुम्—इसके समान रहेगी; अत्तपु—कहना; पुल्लितु—अर्थहीन है; इतत्तिन्—इससे बढ़कर; अ नकर्—वह नगर; नत्तरे—सुन्दर होगी क्या; अण्डत्तै मुळुत्तुम्—सारे अण्डों पर; आळ्वान्—शासन करनेवाला; इन् नकर् इरुन्तु वाळ्वान्—इस नगर में रहता है; इ—यह गौरव; अत्तर्कु एतु—उसका हेतु है; वैन्डान्—कहा (अम्मा—विस्मय ध्वनि)। ६३

हनुमान ने उस श्रेष्ठ नगर को देखकर अपने कमलहस्तों को विस्मय-सूचक मुद्राओं में हिलाता हुआ अपने आप कहा कि देवों की स्वर्ण-नगरी अमरावती इसके समान होगी क्या? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। क्या वह नगर इससे बढ़कर सुन्दर हो सकेगा? सारे अण्ड का शासन रावण यहीं रहकर करता है, उसका हेतु ही इसका अमरावती से अधिक सुन्दर होना है!। ९३

माण्डदोर्	निलत्तिर्	रामैन्	उणर्त्तुदल्	वाय्मैत्	तन्डाल्
वेण्डिय	वेण्डि	नैय्दि	वैरुप्पित्तिर्	विळैन्दु	तुय्क्कुम्
ईण्डरुम्	बोह	विन्व	मीडिल	दियाण्डुक्	कण्डाम्
आण्डदु	तुडक्क	मः(ह्)दे	यरुमरैत्	तुणिवु	मम्मा 94

वेण्डिय—इच्छित वस्तुएँ; वेण्डित् नैय्ति—इच्छित प्रकार से प्राप्त करके; वैरुप्पु इन्डि—अघाये विना; विळैन्तु—चाह के साथ; तुय्क्कुम्—भोगा जानेवाला; ईण्ड अरुम्—अलभ्य; पोक इन्पम्—भोगसुख; ईरु इलतु—अनन्त रूप से; याण्डु कण्टोम्—जहाँ देखते हैं हम; आण्डतु तुडक्कम्—वही स्वर्ग है; अरु मरै—श्रेष्ठ वेदों का भी; तुणिवुम् अ.ते—निर्णय भी वही है; अतु—वह; माण्ड—महिमावान; ओर् निलत्तिर् इरु आम्—एक स्थान में होगा; अन्डु—ऐसा उणर्त्तुतल्—समझाना; वाय्मैत्तु अन्डु—सच्चा नहीं होगा। ६४

स्वर्ग क्या है? जो भी चाहें वह सब वैसे ही जहाँ प्राप्त हों; और जहाँ

उनका अलक्ष्य सुख-योग अर्थात् जीवन प्रकार से सम्भव हो—उसी को स्वर्ग कहा जाता है। श्रेष्ठ वेद भी वैसा ही कहते हैं। उस स्वर्ग को एक स्थान विशेष में रहता हुआ बताया गया है। १४

उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं
उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं
उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं
उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं

उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं
उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं
उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं
उत्पन्नं स्रजं रोगं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं विद्वत्पुत्रं

लंका नगर का आन्तरिक विस्तार सात सौ योजन का बताया जाता है। तीनों लोकों में प्राण्य सभी चने हुए पदार्थ इस लोक में भरपूर है। जो यह उन लोगों की मनो-वृत्ति में भी समावेशिता नहीं है, जिनकी धर्म-शुद्धि का श्रेष्ठ अवलोकन द्वारा खूब विकास हुआ है। आखिरी द्वारा दृश्य विस्तार की भी सीमाएँ होती हैं। १५

2. ऊर् वेद पञ्चम (लंका-नगर-अवधारण पटल)

लंका नगर के प्रासाद स्पर्शान्वित हैं। मणिजडित हैं। या विद्युत् के बने हुए हैं। प्रासाद सुवर्ण-रश्मि के बने हैं। उनकी देखकर ऐसे भाव उठते हैं। पर असल में वे किसके बने हैं—यह जानना कठिन है। वे भवमण्डल की पारकर चन्द्रमण्डल से टकरा रहे हैं। १६

लंका नगर के प्रासाद स्पर्शान्वित हैं। मणिजडित हैं। या विद्युत् के बने हैं। प्रासाद सुवर्ण-रश्मि के बने हैं। उनकी देखकर ऐसे भाव उठते हैं। पर असल में वे किसके बने हैं—यह जानना कठिन है। वे भवमण्डल की पारकर चन्द्रमण्डल से टकरा रहे हैं। १६

लंका नगर के प्रासाद स्पर्शान्वित हैं। मणिजडित हैं। या विद्युत् के बने हैं। प्रासाद सुवर्ण-रश्मि के बने हैं। उनकी देखकर ऐसे भाव उठते हैं। पर असल में वे किसके बने हैं—यह जानना कठिन है। वे भवमण्डल की पारकर चन्द्रमण्डल से टकरा रहे हैं। १६

नाहाल	यङ्गळीडु	नाहरुल	हुन्दम्
पाहार	मरुङ्गुतुयि	लैन्नुवुयर्	पण्व
आहाय	मज्जवहन्	मेरुवै	यनुक्कुम्
माहाल्	वळङ्गुशिरु	तैन्ऱलैन्	निन्ऱ 97

नाकालयङ्गळीडु-देव-प्रासादाओं के साथ; नाकर् उलकुम्-सुरलोक; तम्-लंका के; पाकु आर् मरुङ्कु-आंशिक रिक्त स्थानों में; तुयिल् अँन्न-रहते हों, ऐसा; उयर् पण्व-ऊँचाई रखते हैं; आकायम् अज्ज-आकाश को डराते हुए; अक्ल् मेरुवै-विशाल मेरु को; अत्तुक्कुम्-शिथिल होने देते है; मा काल्-प्रबल प्रभञ्जन को; वळङ्कु चिऱु तैन्ऱल् अँन्न-बहनेवाले मन्द मलयपवन बनाते हुए; निन्ऱ-स्थित थे (वे लंका के सौध) । ६७

देवों के महलों के साथ देवलोक इन सौधों के मध्य स्थलों में हों, इस तरह ये उन्नत हैं। आकाश को डराते हुए जो खड़ा रहता है, वह मेरुपर्वत भी इसको देखकर काँप जाता है। बहुत प्रबल प्रभञ्जन भी उनके विषय में मन्द दक्षिणी पवन के समान शक्तिहीन बन जाय, ऐसी दृढ़ता के साथ वे खड़े हैं । ९७

माहारिन्	मिन्गीडि	मडक्किन	रडुक्कि
मोहार	मैङ्गणु	नरुन्दुहळ्	विळक्कि
आहाय	कङ्गैयितै	यङ्गैयित्ति	लळ्ळिप्
पाहाय	शैज्जौलवर्	वीशुपडु	कारम् 98

कारम्-वे सौध; पाकु आय-चासनी-सम; चैज् चौलवर्-मधुर बोली वाली दासियों द्वारा; मा कारिन्-बड़े मेघों की; मिन् कौटि-विजली की लताओं को; मटक्किन् अटुक्कि-मोड़कर गढ़ा बाँधकर; मो कारम् अँङ्कणुम्-सौधों के ऊपरी भागों में सर्वत्र; नरुम् तुकळ्-सुगन्धित धूल; विळक्कि-झाड़ देकर; अङ्कैयितिल्-चुल्लू में; आकाय कङ्कैयितै-आकाशगंगा (के जल) को; अळ्ळि-भर लेकर; वीचु पटु-छिड़के जाते हैं । ६८

उन प्रासादों में चासनी-सम बोली वाली दासियाँ विद्युत्-किरणों का बना झाड़ू लेकर बुहारती है और वहाँ कूड़े के रूप में जो पड़ा है, उस सुगन्ध-चूर्ण को दूर करती हैं। आकाशगंगा से हाथ में जल लेकर छिड़कती है । ९८

पज्जि	यूट्टिय	पाडमै	किण्किणिप्	पदुमच्
चैज्जै	विच्चैळम्	ववळत्तित्	कौळुज्जुडर्	चिदरि
मज्जि	नज्जन	निऱमरैत्	तरक्कियर्	वडित्त
अज्जि	लोदियो	डमैवन्	ववैदमक्	कुवमै 99

पज्जि ऊट्टिय-लाक्षारस-रंजित; पाटु अमै-कारीगरीयुक्त; किण्किणि-

[illegible]

मैय्मै निन्ऱु-सच्चे रूप से; अरिवु अरु-जानना कठिन है; निलैय-ऐसे प्रासाद थे वे । १०१

उन प्रासादों में स्त्रियाँ रहकर शुकों को वंशी, वीणा और 'याळ्' नामक वाद्य को मधुरता में हरानेवाली बोली सिखाती रहती हैं। तब उनके प्रतिबिम्ब प्रकाश-भरी, ऊँची और सुन्दर दीवारों पर पड़ जाते हैं। ये स्त्रियाँ उनमें और अपने में भेद नहीं कर पातीं। १०१

इत्तैय	माडङ्ग	ळिन्दिरऱ्	कमैवर	वैडुत्तु
वत्तैयु	माट्चिय	वैन्निलच्	चौल्लुमा	शुण्णुम्
अत्तैय	दामैत्ति	नरक्कर्दन्	दिरुवुकुक्कु	मळवै
नित्तैय	लामन्ऱि	युवमैयु	मन्ऱदा	निऱ्कुम् 102

इत्तैय माटङ्कळ्-ऐसे प्रासाद; इन्ऱिरऱ्कु अमैवर-इन्द्र के वास के योग्य रीति से; वैडुत्तु वत्तैयुम्-रचित और सज्जित; माट्चिय-शानदार है; वैन्नितिल्-कहें तो; अ चौल्लुम्-वह कथन भी; माच्चु उण्णुम्-दोषपूर्ण होगा; अत्तैयताम् अत्तिन्-वैसा है तो; अरक्कर् तम् तिरुवुकुक्कुम्-राक्षसों के वैभव की; अळवै-सीमा; नित्तैयलाम् अन्ऱि-कल्पना कर सकें तो कर सकते हैं, उसको छोड़; उवमैयुम्-उपमा कहने लगे; अन्ऱता निऱ्कुम्-वह भी (वैसी) दोषपूर्ण होगी। १०२

ये सौध इन्द्र के रहने योग्य रीति से बने हैं क्या? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। तब सोचिए ऐसे सौधों के स्वामी राक्षसों के वैभव का क्या कहा जाय? मन से अनुमान लगा सकते हैं, वस। उसको छोड़कर उपमान कहें तो वह भी असफल और निरर्थक ही होगा। १०२

मणिह	ळैत्तुणै	पैरियन	माल्तिरु	मार्विन्
अणियुङ्	गाशिनु	महन्ऱत्त	वुळवैत्ति	लरिदाल्
तिणियु	नन्ऱैडुन्	दिरुनहर	दैय्वमात्	तच्चन्
तुणिविन्	वन्दवन्	तौट्टळ	हिळैत्तवत्	तौळिल्हळ् 103

मणिकळ् अत्तत्तै पैरियत्त-मणियाँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों; माल्-विष्णुदेव के; तिरु मार्विन्-श्रीवक्ष में; अणियुम् काच्चिनुम्-जो पहनते हैं, उस (कौस्तुभ-) मणि से; अकन्ऱत्त उळ-बड़ी हैं; अत्तिल् अरितु-कहा जाय, यह कहना दुर्लभ है; तैय्व मा तच्चन्-श्रेष्ठ देवशिल्पी; तुणिविन् वन्ऱु-निश्चय लेकर आया; नल् नैटुम् तिरु नकर्-अच्छा और बड़ा श्रीनगर (लंका) में; अवन् तौट्टु-उसने अपने हाथ से स्पर्श करके; अळकु इळैत्त-जिन्हें सुन्दर बनाया; अत् तौळिल् कळ्-वे शिल्पकार्य; तिणियुम्-सौन्दर्य से कूट-कूटकर भरे हैं। १०३

अन्यत्र प्राप्य मणियाँ चाहे जितनी बड़ी या उत्कृष्ट हों पर श्रीविष्णु के वक्षःस्थल की कौस्तुभमणि से बड़ी हो ऐसी मणि का मिलना दुर्लभ है। वैसे ही बहुत ही कुशल देवशिल्पी ने इस उत्तम लक्षणों से पूर्ण सुन्दर लंका

६०४ । श्री गुरुभ्यो नमः

नगरि में अपनी कला की जो कारीगरियाँ खूब रची हैं, वे अत्यन्त सौन्दर्य

मरम	उत्तमावृत्तिः	गर्भपट्टे	मनुष्यलङ्घः	गर्भसं
अरम	उत्तमपदं	श्रित्तिय	ररकोक्तिपदं	कमरं
वरम	उत्तमिषमं	कुट्टपरा	कुट्टलं	रुक्मिणी
नरम	उत्तमिष	द्विर्द्वि	नवोत्तमं	नरमलं

मरम् अट्कलुम्-वह्म के सारे वृक्ष; कउकम्-कलपव है; सनें औलम्-
 सारे गहूँ; कलकम्-रवर्णमिप्त है; अरककियरककु-राक्षसियाँ की; अरमटनैयर्-
 देविषयाँ; विनलियर-बासियाँ है; अमर-घुर लोम; उरम् अट्किक वनव-
 वल लोकर आये; उळयराय उळलुवर-वपरासियाँ के रूप में वटकर आते है; इव-
 यरु; आरिवर-किसी की; नरम् अट्कुव अरु-पोयल के अधीन हैनिवाला नहै
 है; नवम् वुपनकुम्-नय हो कनैय है । १०४

बढ़ते तब सब करपत रहे । धवन सब स्वर्णधवन है । राक्षसियां
की राक्षियां देवनागि है । देवता लोग अपना अधिकार छोकर सेवा-
उहल करते धमते हैं । यह सब किस्ती की योग्यता के अधीनस्थ हो सकते
हैं क्या ? नहीं यह सब तपस्या के ही फलस्वरूप मिल सकते हैं । इसलिये
तप हो सबके लिए करणीय काम है । १०४

नैव	रुंनैववरं	यातामिव	निरननदूरकं	किरुवरं	रुंनैमिवं	मुपलिवं	वडिमां 105
कवले	शुपुववरं	शुपुविला	इवरं	इवरं	रुंनैमिवं	मुपलिवं	वडिमां 105
सुवरं	नममुळं	मिववरं	रुंनैमिवं	रुंनैमिवं	रुंनैमिवं	मुपलिवं	वडिमां 105
नमिवं	मादव	मवलडं	मिववरं	मिववरं	मिववरं	मुपलिवं	वडिमां 105

नेवर् अंगवर् पाठम्—देव सभा; इ विरनकर्कट—इस श्रीनगर के; इडवरकै-
राजा के; एवम् इवपवर्-कैकय करनेवाले है; चपूकलावर्-न करने; अवर-
कौन; अंगवित्र-पूछे तो; मुवर् लमपुम्प-विदेवा में; इववर्-दी है; अंगवर्-
तो; इति मुपल्ल-अव प्रयास करने; तो इव-निर्दोष; मा लवम्-सहाने लप;
अल्लवि-छांकर; पिछि अंगुष्ठ-इंसरा कोई; लकुमा-पाप हो सकत है क्या। १०५

पारि	पत्ररथ	नौरुद्रवृक्ष	विहङ्गविर	गुडमलय	नारक	राजिष	आरि	वृरि
पत्ररथ	पत्ररथ	विश्ववृक्ष	विहङ्गविर	गुडमलय	नारक	राजिष	आरि	वृरि
पत्ररथ	पत्ररथ	विश्ववृक्ष	विहङ्गविर	गुडमलय	नारक	राजिष	आरि	वृरि
पत्ररथ	पत्ररथ	विश्ववृक्ष	विहङ्गविर	गुडमलय	नारक	राजिष	आरि	वृरि

पोर् इयन्त्र-युद्ध करके; तोर्-हार गये; अन्त्र-ऐसा; इकल्लतलिल्-
अवमाने जाने से; पुर् इयन्त्र-आमने-सामने; नेर् इयन्त्र-आमने-सामने;
वन् तिचै तीरुम्-सुदृढ़ दिशा-दिशा में; निन्त्र मा-जो दिग्गज खड़े हैं, वे; निर्क-
एक ओर रहें; आरियन्-हरिहर-पुत्र शास्ता का; तति-अप्रमेय; तैय्व-दिव्य;
मा कळिरुम्-महान् (वाहन) गज और; चूरियन्-सूर्य का; ओर आळि तति तेरुमे-
अनुपम एक-चक्र-रथ ही; इ नकर्-इस नगर में; तीकात-न मिल पाये । १०६

लंका में सभी गज और रथ थे । पर उनमें केवल निम्नांकित गज
और रथ नहीं मिले थे । आठ दिग्गज जो रावण से लड़कर हार गये और
अपमानित होकर सभी दिशाओं में जाकर खड़े हो गये थे; और वह
उत्तम गज जो हरिहर-पुत्र 'शास्ता' का वाहन है । रथों में सूर्य का
एकचक्र-रथ नहीं मिला था । (क्षीरसागर-मंथन से उद्भूत अमृत को प्राप्त
करने के लिए देवासुरों में लड़ाई मची । तब विष्णु मोहनी का रूप धर
आये थे । तब शिवजी उन पर मोहित हो गये । उनके पुत्र पैदा हो
गया । दक्षिण में उन हरिहरपुत्र देव की बड़ी महिमा है । वे 'शास्ता'
कहे जाते हैं ।) । १०६

वाळु	मन्नुयिर्	यावैयु	मौरवळि	वाळुम्
ऊळि	नायहन्	रिरुवयि	औत्तुळ	दिव्वूर्
आळि	यण्डत्ति	नरुक्कन्	नलङ्गुदेर्प्	पुरवि
एळु	मल्लत	वीण्डुळ	कुदिरैह	ळैल्लाम् 107

इव वूर्-यह नगर; वाळुम् मन् उयिर् यावैयुम्-संसार में जीनेवाले अक्षय सभी
जीव; ओर वळि वाळुम्-जिसमें एक साथ मिलकर रहते हैं; ऊळि नायकन्-युगान्त
में श्रीविष्णु के; तिरु वयिर् औत्तुळ-दिव्य उदर के समान था; आळि अण्डत्तिन्-
गोल अण्ड के (अश्वों में); अरुक्कन् तन्-सूर्य के; अलङ्कु तेर्-हिलनेवाले रथ में
जुते हुए; पुरवि एळुम्-सातों अश्व; अल्लत-जो नहीं थे; कुतिरैकळ् अल्लाम्-
वे सभी अश्व; ईण्डु उळ-यहाँ हैं । १०७

यह लंका नगर युगान्तकाल में सभी जीवों का वासस्थान जो श्रीविष्णु
का श्रीउदर है, उसके समान लगा । इसमें अण्ड के सभी अश्व पाये गये;
केवल सूर्य के हिलते चलनेवाले रथ के सातों अश्व उनमें नहीं मिले
थे । १०७

तळङ्गु	पेरियि	नरवमुम्	तहैनेडुङ्	गळिरु
मुळङ्गु	मोदैयु	मूरिनीर्	मुळक्कोडु	मुळङ्गुम्
कीळङ्गु	रङ्गुपुदुक्	कुदलैयर्	नूबुरक्	कुरलुम्
वळङ्गु	पेरुळ्	जदिहळु	वयिन्नीरु	मरैयुम् 108

तळङ्कु-बजनेवाली; पेरियिन् अरवमुम्-मेरी का नाद; तक्-श्रेष्ठ; नेटुम्

અઢકે પચ્ચમ-સૌર્ય-સમિતિ; રૂ નકર-રૂસ નગર કી; પુત્રે ઓઢિ-પુલકલ કાનિત; પરતેલિતે-ધાપતી હૈ, રૂસલિપ; લિજી વૃષ લિસેલે-રૂટે ઓર અપકર કીપ થાલે; અરકેકરમ-રાસથ યી; કલે લિરમ લીરેલાર-કાલે રા સે મુલત હૈ ગા; અરકે વીકિરે-ગાસ સે જાતેલા; લિજીકરમ-વર યી; મર અરેર-કલકરોન હૈ ગા; અલકે મલે રવલિ-પુલકી કી ધરે રહેતેલા મયુર; પચ્ચમ પીતે-ગોઢા રવળ; રૂરકીકરેરુ પીરુર રઢરુ-પુલકલ-ગા હૈ । ૧૧૦

सौन्दर्य को जिसने अपने में समाहित कर लिया था, उस लंका नगरी की कान्ति के पड़ने से राक्षस भी काले रंग से मुक्त हो गये थे। पास से जानेवाला चन्द्र भी कलंक-हीन हो गया। पृथ्वी को घेरे रहनेवाला सागर भी पिघलते स्वर्ण के समान लगा। ११०

अण्ड	मुद्गुवुम्	विळुङ्गिरु	ळहृङ्गिनिन्	इहल्वान्
कण्ड	वत्तन्निक्	कडिनहर्	नैडुमनै	कदिर्हट्
कुण्ड	वाङ्गुलैन्	उरैप्परि	औप्पिडिर्	रम्मुन्
विण्ड	वाय्च्चिरु	मिन्मिनि	यैन्नवुम्	विळङ्गा 111

अ तत्ति कटि नकर्—उस अनुपम सुरक्षित नगर के; नैडु मन्—उन्नत प्रासाद; अण्डम् मुद्गुवुम्—अण्ड भर को; विळुङ्गु इरुळ्—लीलनेवाले अन्धकार को; अकङ्गि निन्नु—दूर करके खड़े है; अकल् वान् कण्ट—विस्तृत आकाश को स्पर्श करते है; अ आङ्गुल्—वह शक्ति; कतिर् कट्कु—अन्य (सूर्य आदि) ज्योतिषुजों के पास; उण्डु—है; अँन्नु—ऐसा; उरैप्परितु—कहना कठिन है; औप्पिटिल्—तुलना करें तो; तम्मुन्—उनके सामने; विण्ड वाय्—खले मुख के; चिरु मिन्मिति—छोटे खद्योत; अँन्तवुम्—सम भी; विळङ्का—प्रकाशमान नहीं होंगे। १११

उस अनुपम व सुरक्षित नगर के उच्च प्रासाद अण्डग्रासक अँधेरे को भगाते हुए और विशाल आकाश में व्याप्त खड़े थे। वह शक्ति द्वादश आदित्य आदि तेजोवानों के पास है—यह कहना ठीक नहीं होगा। तुलना करेंगे तो वे इनके सामने विदीर्ण (खुले) मुख वाले खद्योत-सम भी नहीं रह सकेंगे। ११२

तेनुञ्	जान्दमु	मान्मदच्	चैरिनरुञ्	जेरुम्
वान	नाण्मलर्	कर्प्पह	मलर्हळु	वयमात्
तात्	वारियि	नीरौडुम्	बडुत्तलिर्	उळीइय
मीनुन्	दानुमोर्	वैरिमण्ड	गमळुमाल्	वेलं 112

तेनुम्—शहद; चान्तमुम्—चन्दन; मान्मत—कस्तूरी; चैरि—मिश्रित; नरुम् चेरुम्—सुगन्धित लेप; वान् मलर्—स्वर्ग में पुष्पित; नाळ् कर्प्पक मलर्कळुम्—सद्यविकसित कल्पसुमन; वय मा—सशक्त गजों के; तात् वारियिन् नीरौडुम्—मद-धार के जल के साथ; वेलं पडुत्तलिल्—बहकर समुद्र में जा मिलते हैं, अतः; तात्तुम्—वह समुद्र और; तळीइय मीनुम्—उस पर रहनेवाली मछलियाँ; ओर् वैरि मणम्—अनुपम गम्भीर सुगन्ध; कमळुम्—देती हैं। ११२

शहद, चाँद, मृग-कस्तूरी का लेप, स्वर्गलोक के सदाबहार कल्पतरु के नवविकसित फूल—ये सब सशक्त गजों के मद-नीर के साथ मिलकर समुद्र में पहुँच जाते हैं। इस कारण समुद्र और समुद्र में रहनेवाली मछलियों से एक अनुपम सुगन्ध छिटकती है। ११२

नैव नै	नव वनं	गृहेष्टमा	शुद्धाभावा	उत्कृष्टं
सुप्रां	नारुद्रिय	नव नै	विपनैमा	विश्वनं
ऐयं	पाडिना	वर नै	मदिनैमा	वडिपां
नीयय	विनैवेयं	याव	यावदेष्ट	वृष्टिपयं

113

[illegible]

इसकी देखकर क्या देवगिरणी निवृत्तकर्मा की प्रशंसा करें ? या भयंकर रक्तश्राव रोग की कायबले-सहित की गयी वस्तु की महिमा पर विस्मय करें ? या विरक्ति के द्वारा दिये गये अमोघ वरों की मान्यता दें ?
 निकटवर्षिभूत होकर गढवाले मन की लेकर हम इन चीजों में किसकी ओर कौसी प्रशंसा करें ? । ११३

वाचंम	निनरुम	वृक्षमारिणि	सखं	मुण्डे	रात्रिम	पुनम	नेमम
काचम	वीळिवु	सिद्धशङ्कान	देवेलि	चात्रिम	पाचम	एनम	वेमम
		सियरुडिय	वेउम				
		गानियुनवरुव	वूपव				

११४ श्रीपदै

कर्म पाणिनिम् इव-वन, उपवन ये हे;
 वृषं कर्मनिवादिम्-लाल (बाल)
 कर्म ते; पदं मणिपद्मि-अन्य मणिपद्मि से;
 इष्येत्त्रिवर्षम्-निमित्त गो जी;
 पशुम्-वे सव; नैवम् मलवम्-शरद और पुष्य;
 कतिपयं नर-कल देव हे;
 वृषम्-वे सव; इति वृक्षमात्र-अव कर पाय;
 मरुत्तम् उषाटी-यद् और कर्त्तुं हे यथा । ११४

लंका के वन और उद्यान लाल (चोखे) रंगवाँ और अन्य मणिपाँ के पादपों आदि के वन हैं। नी पाँ उनसे गहिर, फूल और कल प्राप्त होते हैं। ऐसी (रत्न-रंगवाँ वस्त्रों और लताओं से वस्त्रों का) काम रंगवाँ या भूलाक में और कहीँ हो, वस्त्रों काई माँ है क्या ? । ११२

नीरुमं	वृष्य	नृष्यम्	निमिरुनृष्ये	गामिम्	वळरेवमि	गिरुवम्	विमरुक्कुमामि	मुळुमुळुम्	वळरे	115
मामि	वामयम्	वळरेगल	वाडिनदम्	वळरेवमि	मिरुवम्	गिरुवम्	विमरुक्कुमामि	मुळुमुळुम्	वळरे	115
ऊरि	मिरुनृष्ये	गिरुवम्	गिरुवम्	विमरुक्कुमामि	मुळुमुळुम्	वळरे	115			
मेर	वृङ्कनम्	विमरुक्कुमामि	मुळुमुळुम्	वळरे	115					
ऊरिमे-लकागुरी मे की;	उ नृष्यं कागुरम्-ये लवा मीनारु;	नम् वळरेवमि-	अपनी ऊवाडु मे; नीरुम्-वल;	वृष्यम्-ममि;	नृष्यम्-अनल और;	मे मे निमिरे				

नैटुङ्कालुम्—ऊपर उठकर फैलनेवाला पवन; मारि वातमुम्—और मेघों से युक्त आकाश; वल्लङ्कल आकुम्—इनको आने से रोकती हैं; उयर्च्चि कण्टु—ऊँचाई देखकर; उणरन्ताल्—समझना हो तो; मेरु—मेरुपर्वत; वैळ्कि—लजाकर; मुळु मुर्ळुम्—पूर्ण रूप से; अँडुतम् विळर्क्कुमो—कितना ही पांडुर हो जायगा । ११५

इस नगर की मीनारें बहुत उन्नत रहकर जल, भूमि, अग्नि ऊपर उठकर बहनेवाला पवन और मेघाश्रय आकाश —किसी को लंका के अन्दर आकर संचार करने नहीं देतीं । उनकी ऊँचाई की बात मेरु सोचे तो वह मन में लज्जा का अनुभव कर शरीर का कितना ही पांडुर हो जायगा ? (भय या लाज से शरीर का रंग श्वेत हो जाता है ।) । ११५

मुत्तम्	यावरु	मिरावणन्	मुत्तियुमेन्	रैण्णिप्
पौत्तिन्	मानहर्	मीर्च्चेलान्	कदिरैतप्	पुहल्वार्
कन्ति	यारैयि	नुयर्च्चिहण्	डिदुकडप्	परिदेन्
इन्ति	नाडौरुम्	विलङ्गिनन्	पोदलै	युणरार् 116

मुत्तम्—पहले; यावरुम्—सब; कतिर्—सूर्य का; कन्ति आरैयिन्—सुरक्षा के प्राचीरो की; उयर्च्चि कण्टु—ऊँचाई देखकर; इतु कटप्परितु—यह लाँघना कठिन है; अँत्तु उत्ति—ऐसा सोचकर; नाडौरुम्—प्रतिदिन; विलङ्कितन्—हटकर; पोतलै—जाना; उणरार्—न जानकर; इरावणन् मुत्तियुम्—रावण कोप करेगा; अँत्तु अँण्णि—ऐसा सोचकर; पौत्तिन् मा नकर्—श्रेष्ठ स्वर्णपुरी के; मी चेलान्—ऊपर से नहीं जाता; अँत पुक्ल्वार्—ऐसा कहते रहे । ११६

लंका नगर के रक्षक प्राचीरों की ऊँचाई को देखकर सूर्य ने सोचा कि इसको पार करना असम्भव है । अतः वह प्रतिदिन उनसे हटकर दूर जाता था । पर पहले सबको यह बात नहीं विदित हुई । वे तो यही कहते थे कि 'रावण कोप करेगा' —इस विचार से सूर्य स्वर्णपुरी लंका के ऊपर से नहीं जाता था । ११६

तीय	शैय्हुन	रमररा	लनैयवर्	शेरुम्
वायि	लल्लदोर्	वरम्बमैक्	कुर्वैन्त	मदियाक्
काय	मैन्नुमक्	कणक्कुरु	पदत्तैयुङ्	गडक्क
एयु	नत्तुमदि	लिट्टनन्	कयिलैयन्	रैडुत्तान् 117

अत्तु—उस दिन; कयिलै अँडुत्तान्—जिसने कैलास को उठा लिया; तीय चैय्कुत्तर् अमरर्—हमारी हानि करनेवाले देव हैं; अतैयवर्—वे; चेरुम् ओर् वायिल् अल्लतु—आवें तो एक ही मार्ग से आवें, यह सोचकर उसको छोड़कर; (ओर्) वरम्पु अमैक्कुर्वैन्—रुकावट डालूंगा; अँत मतिया—यह सोचकर; कायम् अँत्तुम्—आकाश के; कणक्कु अरु—असीम; अ पदत्तैयुम् कटक्क—स्थान को भी पार करके; एयुम् नल् मतिल्—बहुत ही बलवान प्राचीर; इट्टत्तन्—बनाया (उस रावण ने) । ११७

कैलास के उत्थापक रावण ने सोचा कि देवगण हमारे हानिकारक हैं। वे व्योमलोक में हैं और सुगमता से लका में आ सकते हैं। उनका आने का मार्ग एक ही होता था। अतः राजद्वार को छोड़कर आकाश का मार्ग बन्द कर देंगे। इसलिए उसने उन प्राचीनों की आकाश से भी अधिक ऊँचा और बलवान बनवा दिया था। ११७

करङ्ग कालगुह्य कालगुह्य कालगुह्य कालगुह्य
मरुमर्ष दृष्टान्त वातवरं पृष्टान्तं वसुधे विदेया
तिरुमर्ष कालवेगम् यावद्युजं विदेयिष्ये विदेया
अरुमर्ष दृष्टान्त पदियुषं पदियुषं पदियुषं पदियुषं 118

करङ्क काल-वधवर बनकर बनेबाली देवा; गुका-बहो प्रवेश नहीं कर सकते; कार-धूम; गुका-धूम नहीं; कलर-गुका-धूम की किरण अन्दर नहीं जा सकती; कालि-आग के; मरु-कूर काम; गुका-नहीं चल सकते; अग्नि-वा; वातवर-गुकार-धूर नहीं आये; अनेक-कहेना; वसुध-अर्थ है; तिरुमर्ष कालवेग-प्रवचनाश के समय में भी; यावद्युषं विदेयिष्ये-अथ सभी भिन्न जायते भी भी; विदेया अरुम-जो नष्ट नहीं होगा, वह धूम भी; गुकाविषाल-नहीं पड़ेंगे, इसलिए; इत्युपलिख्य- (उसी कारण) यह गुरु नष्ट होगा; अथ-ऐसा; अपिरनेनाने-सशय किया (माहि ने)। ११८

इस नगर के अन्दर चकवात प्रवेश नहीं कर सकता। भय नहीं घुसने। किरण अन्दर नहीं जाती। आग की ऊँच करलिया नहीं पहुँचती। ऐसा कहने के बाद यह कहना कि 'देव नहीं आये' व्यर्थ है। लोक-नाश के समय में भी, जब सभी भिन्न जाते हैं, जो नहीं भिन्नता वह धूम भी नहीं प्रवेश कर पाता। उसी एक कारण से यह लंका नगरी नष्ट हो जायगी। यह सोचकर हेतुमान ने सन्देश किया। ११८

कालगुह्य वाग्विरुक्ते कुरङ्गे विडिपदायके कुरङ्गि
अण्ड वाविद्युर्ष वृद्धेतिषं त्रिभुक्किर्षं विपलवाले
पण्ड रावणं पण्डिया वृद्धेतिषं वृद्धेतिषं पण्ड
अण्ड मयुषीते मयुषीते मयुषीते मयुषीते 119

कालगुह्य-भयविशय; वाग्वं विरु-बड़ी तरंग; कुरं कदल-विषमें गरजती है, उस समुद्र के; वृद्धेतिष आण-मध्य में स्थित; कुरङ्गि-मकानों के निवासी; अण्ड रावण-विषमं वृद्ध-आकाश को छोटे हुए; त्रिभु-छोटे है; त्रिभुक्किर्ष इत्यलवाले-और प्रकाश विखरते हैं, उस रीति से; इ आण नकर-इस घुम्बर नगर की; अश्लि-रचना; अरवाण पण्डियाभाने-शेषायणी (अविष्णु) ने; पण्ड-पहले; वृद्धेतिष पण्डित-अपने उतर से जो बनाया था; अण्डमेयुषं आगेविषयन-उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान भी था। ११९

यह नगर उस समुद्र के मध्य में था, जिसमें भय जसे थे और लहरें

गरज रही थीं। उसके सौधों के शिखर अनन्त आकाश को पहुँचे हुए थे और प्रकाशमय थे। इससे वह नगर उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान लगा, जो शेषशायी भगवान श्रीविष्णु के श्रीउदर से उत्पन्न हुआ था। ११९

पाडु	वार्पल	रैन्तिन्मर्	रवरिनुम्	बलराल्
आडु	वार्नि	नवरिनुम्	बलरुळ	रमैदि
कूडु	वारिडै	यित्तिनियड्	गौट्टुवार्	वीडिल्
वीडु	काण्गुरुन्	देवराल्	विळ्ळुनड्ड	गाण्वार् 120

पाटुवार्-गानेवाले; पलर्-अनेक है; रैन्तिन्-तो; अवरित्तुम् मर्-उनसे अधिक अन्य; पलर्-अनेक; आट्टुवार्-नाचते हैं; रैन्तिन्-तो; अमैति कूट्टुवार्-ताल-मेल (समाँ) बैठानेवाले; इट्टै-मध्य में; इत्तिनियम् कौट्टुवार्-मृदंग आदि बजानेवाले; अवरित्तुम् पलर् उळर्-उनसे अनेक है; वीटिल् वीटु-अबाध मोक्ष; काण्कुडुम्-देखना चाहनेवाले; तेवराल्-देवों द्वारा; विळ्ळु नटम्-श्रेष्ठ नृत्य; काण्वार्-देखते हैं। १२०

गानेवाले बहुसंख्यक हैं तो नाचनेवाले उनसे भी अधिक संख्या में हैं। तो लयन-क्रिया में लगे हुए और 'मर्दल' नामक (ढोल-सा) वाद्य बजानेवाले उनसे भी अधिक संख्या में। ये सब देव (करते) थे, जो अबाध मोक्ष के आकांक्षी थे। राक्षस लोग उनके ये नृत्य देखकर आनन्दानुभव कर रहे थे। १२०

वान्त	मादरो	डिहलुवर्	विज्जैयर्	महळिर्
आन	मादरो	डाडुव	रियक्किय	रवरैच्
चोने	वारुळ	लरक्कियर्	तौडर्हुवर्	तौडर्न्दाल्
एनै	नाहिय	ररुनडक्	किरियैयाय्न्	दिरुप्पार् 121

विज्जैयर् सकळिर्-विद्याधर-स्त्रियाँ; वान्त मातरोट्टु-अप्सरारों से; इकलुवर्- (नाच में) होड़ लगाती; आन मातरोट्टु-उन (विद्याधर-स्त्रियों) से; इयक्कियर् आट्टुवर्-यक्षबालाएँ (स्पर्द्धा करके) नाचती; अवरै-उनका; चोने वार् कुळल्-मेघ-सम और लम्बे केश वाली; अरक्कियर्-राक्षसियाँ; तौडर्कुवर्-अनुकरण करके नाचती है; अव्वारु तौडर्न्ताल-वैसा सिलसिला जब रहता; एनै-जो छूटी रहीं वे; नाक्कियर्-नाग-स्त्रियाँ; अरु नट किरियै-श्रेष्ठ नृत्यकार्य का; आय्न्तु इरुप्पार्-विश्लेषण करती रहतीं। १२१

विद्याधरियाँ देवांगनाओं से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। यक्षकन्याएँ उन विद्याधरियों से स्पर्द्धा करती हैं। काले मेघों के समान केश वाली राक्षसबालाएँ उन यक्षस्त्रियों से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। जब वे सब ऐसा नाच रही हैं तब जो बची रही वे नागकन्याएँ उस नृत्य-कार्य के अनुकूल क्रियाओं में ध्यान देती रहतीं। १२१

मकर वीणयित्-मकराकार वीणा के; मनुतर कीततु-मन्द स्वर में; चकर वेलयित्-सागर की; आर् कलि-बड़ी ध्वनि; मरुन्त-छिप गयी; चिकर माळिके-सशिखर महलों के; तिचै मुकम् तळुवुम्-दिशाओं के अन्तों को छूनेवाले; तलम् तौळुम्-तलों में; तैरिवैयर्-स्त्रियाँ; तीरुळुम्-जो अपने केशों को रमा रही थीं; अकर तूमत्तित्-उस अगरु के धूप में; मुकिर् कुलम्-मेघराशियाँ; अळन्तित-दब गयीं । १२४

मकर के आकार की वीणा से जो मंथरस्वर उठा उसमें सगरपुत्र-खनित सागर के गर्जन लीन हो गये । सौध-शिखरों के दिगंत तक व्याप्त तलों पर स्त्रियाँ अपने केशों को जो अगरु-धूप लगा रही थीं, उस धूप में मेघसमूह छिप गये । १२४

पळिक्कु	माणिहैत्	तलन्दौळु	मिडन्दौळुम्	वशुन्देत्
तुळिक्कुळ्	गर्पहत्	तण्णळु	जोलैह	डोळुम्
अळिक्कुन्	दैरुलुण्	डाडिनर्	पाडित	राहिक्
कळिक्किन्	डारलाड्	कवल्हिन्ऱा	रौरवैक्	काणेम् 125

पळिङ्कु माळिके-स्फटिकनिर्मित महलों के; तलम् तौळुम्-स्थल-स्थल में; कर्पकम्-कल्पतरु; इटम् तौळुम्-यत्र-तत्र; पचुम् तेन्-ताजे शहद को; तुळिक्कुम्-जिनमें गिराते थे; तण नळुम्-(उन) शीतल सुगन्धित; चोलैकळ् तौळुम्-नन्दनवनों में; अळिक्कुम्-(जो प्रेमी) देते हैं; तेरुल् उण्डु-ताड़ी को पीकर; आटितर् पाटितर् आकि-नाचनेवाली, गानेवाली बनकर; कळिक्किन्ऱार् अलाल्-मत्त जो रहती हैं (राक्षसियाँ) उनको छोड़कर; कवल्किन्ऱार्-चिन्तित रहनेवाली; औरवै काणेम्-किसी (एक) को नहीं देखते । १२५

स्फटिक-निर्मित प्रासादों में सर्वत्र, और ऐसे शीतल-सुगन्धित उद्यानों में सर्वत्र, जहाँ कल्पवृक्ष ताजा शहद गिराते हैं, प्रेमियों द्वारा दी गयी ताड़ी को पीकर नारियाँ मत्त हो नाचती-गाती हैं । उनको छोड़कर कोई चिन्ता-मग्न रहनेवाले नहीं दिखते । १२५

तेरुन्	मान्दिनर्	तेनिशै	मान्दिनर्	शैव्वाय्
ऊरुन्	मान्दिन	रिन्नुदै	मान्दिन	रूडल्
कूरुन्	मान्दिन	रनैयवर्त्	तौळुदवर्	कोवत्
तारुन्	मान्दिन	ररक्कियर्क्	कुयिरन्त	वरक्कर् 126

अरक्कियर्क्कु-राक्षसियों के लिए; उयिर् अन्त-प्राण-सम; अरक्कर्-राक्षसों ने; तेरुल् मान्तितर्-ताड़ी पी; तेत्तिचै मान्तितर्-मधु (मधुर) गीत सुना; शैव्वाय् ऊरुल्-लाल अधर-रस का; मान्तितर्-पान किया; इन् उरै-मधुर वाणी का; मान्तितर्-भोग किया; ऊटल् कूरुल्-रूठन के वचन; मान्तितर्-सन्तोष के साथ सुने; अतैयवर् तौळु-उनको नमस्कार करके; अवर् कोपत्तु आरुल्-उनके कोप का शान्त होना; मान्तितर्-देख आनन्द पाया । १२६

के केशों के कारण । उनके हथियार-सम नेत्रों के कारण कुवलयसंकुल जलाशय के समान लगी और शीतल (मनोरम) मुखों को लेकर कमलवन (-सी) बन गयी । १२८

अँळुन्दनर् तिरिन्दु वैहु मिडत्तदा यिन्ऱु काऱुम्
किळिन्दिल तण्ड मैन्नु मिदन्नैये किळप्प दल्लाल्
अळिन्दुनिन्ऱु श्राव दैन्ने यलरुळो नादि याह
अँळिन्दवे रुयिर्ह लैल्ला मरक्करुक् कुऱैयुम् बोदा 129

अण्डम्-यह अण्ड; इन्ऱु काऱुम्-आज तक; अँळुन्ततर्-(राक्षस) उठे; तिरिन्दु-धूमे; वैकुम्-और रहे; इटत्तताय्-उनको स्थान देती रही; किळिन्दिलतु-तो भी फटी नहीं; अँत्तुम् इतन्नैये-इस बात को; किळप्पतु अल्लाल्-विस्मय के साथ कहने के सिवा; अळिन्दु निन्ऱु-मन में थक जाने से; आवतु अँन्ने-होगा क्या; अलर् उळोन् आतियाक-कमलासन आदि; अँळिन्त वेऱु-बाकी अन्य सभी; उयिर्कळ् अँल्लाम्-जीवराशियाँ; अरक्करुक्कु-राक्षसों के लिए; उऱैयुम् पोता-गिनती के निशान भी नहीं बन सकतीं । १२९

यह अण्ड आज तक राक्षसों के घूमने, फिरने और रहने का स्थान रहकर भी बिना चिरे वैसे ही यथावत रहता है ! यह विस्मय प्रकट करके मन को तृप्त कर लेने के सिवाय मन मारे रहने से क्या मिलनेवाला है ? कमलासन ब्रह्मा से लेकर सारे जीव लंका के राक्षसों की संख्या के प्रतिनिधि-चिह्न भी नहीं बन सकते । १२९

कायत्तार् पेरियर् वीरड् गणक्किल रुलहड् गल्लुम्
आयत्तार् वरत्तिन्ऱु इन्मै यळवऱ्ऱा रऱिदऱ्ऱु इऱ्ऱा
मायत्ता रवरक्कैड् गेनुम् वरम्बुमुण् डामे मऱ्ऱोर्
तेयत्तार् तेयञ् जेऱल् तैऱुविलार् शैरुविर् चैऱल् 130

कायत्ताल्-(लंकावासी सभी) आकार में; पेरियर्-बड़े हैं; वीरम्-वीरता में; कणक्कु इलर्-अमाप है; उलकम् कल्लुम्-पृथ्वी को भी उखाड़नेवाले; आयत्तार्-कार्यचतुर हैं; वरत्तिन्ऱु तन्मै-वरों की संख्या; अळवऱ्ऱार्-अनगिनत (वाले) है; अऱितल् तेऱ्ऱा-न जानने योग्य; मायत्तार्-मायावी है; अवरक्कु वरम्पुम्-उनकी सीमा भी; अँड्केत्तुम् उण्डामे-कहीं हो सकती है क्या; मऱ्ऱोर् तेयत्तार्-अन्य देश के लोगों का; तेयम् चैऱल्-इस देश में पहुँचना; तैऱुविलार्-बलहीन लोगों का; चैरुविल् चैऱल्-युद्ध में जाना (सा) होगा । १३०

लंका नगर के राक्षस आकार में बड़े हैं । वीरता में भी अमाप हैं । ससार को ही खोद लेने का उपाय रच सकनेवाले हैं । उनसे प्राप्त वरों की गणना नहीं । ऐसे माया-कार्य करनेवाले, जिन्हें दूसरे जान नहीं सकते । उनकी संख्या या वीरता की सीमा भी है ? अन्य देशवासियों का इस लंका

०६७ । (। गङ्गा नदी के किनारे

मठलप्राङ्के ऊदलव वववपु मादर भलल भल 131

बाल अष्टयं बाली; सातसंम-दिव्या; इत्येव-गर्भा ॥ १३१

१३३ । हो । मिता छार केधो छार लवछिदार और गुजिजात से

ಪರಮೇಶ್ವರ ಕೃಷ್ಣ ಕೆರೆ ಸುರೇಶ್ವರಿಯ
 ಪುಸ್ತಕ 132

कावेर-२५ सारा १३२

निर्कलनी है और कामगारों के साथ समर जगते पीछे चलते हैं। वे प्रबलवर्ण

दाँतों वाले हैं; लाल सिरोँ वाले काले शरीरी; मन में मस्ती लिये हुए; पर्वत के समान ऊँचे। इससे वे शहद के समान लाल रंग वाले केशों से युक्त राक्षसों के समान लगते थे। १३२

वळ्ळिनुण्	मरुङ्गु	लैन्न	वानवर्	महळि	रुळ्ळम्
तळ्ळुउप्	पाणि	तळ्ळा	नडम्बुरि	तडङ्गण्	मादर्
वैळ्ळिवैण्	मुश्व	तोन्न	मुहत्तियर्	वैळ्हु	हिन्नार्
कळ्ळिशै	यरक्कर्	मादर्	कळित्तिडु	कुरवै	काण्वार् 133

वळ्ळि-लता-समान; नुण् मरुङ्कुल् अँन्न-अपनी क्षीण कमरों के समान; उळ्ळम् तळ्ळुउ-मन के लचकते; पाणि तळ्ळा नटम्-तालबद्ध नृत्य; पुरि-करनेवाली; तडङ्गण् मातर्-आयतनयना स्त्रियाँ; वानवर् मकळिर्-देवांगनाएँ; वैळ्ळि वैण्-चाँदी-सम श्वेत; मुश्वल्-हास; तोन्नम्-जिन पर प्रकट है; मुहत्तियर्-ऐसे मुख वाली; वैळ्ळुकित्तुडार्-लजाते हुए; कळ इच्च-ताड़ी पीकर गानेवाली; अरक्कर् मातर्-राक्षस-स्त्रियों के; कळित्तिट्टु कुरवै-किये 'कुरवै' नाम के नाच को; काण्वार्-देखती है। १३३

सुरनंदिनियाँ राक्षस-कुमारियों का 'कुरवै' नृत्य लज्जा का अनुभव करती हुई देख रही हैं। विशाल आँखों वाली देवांगनाएँ अपनी कमरों के समान लचकते मन के साथ तालबद्ध लय-सहित नाच सकनेवालियाँ हैं। वे अब श्वेत दाँतों को प्रकट करती हुई उनका नाच देख रही हैं! 'कुरवै' नृत्य में स्त्रियाँ परस्पर तालियाँ पीटते हुए नाचती हैं। (देवांगनाएँ इसलिए लज्जा का अनुभव करती और मन्दहास करती हैं कि वे राक्षसियाँ नशे में रहती हैं और उनके शरीरों पर वस्त्र ठीक नहीं रहते।)। १३३

औरुत्तलो	निर्क्क	मर्ऱैम्	मुयर्पडैक्	कौरुङ्गिव्	वूर्वन्
दिरुत्तलु	मैळिदा	मर्ऱुम्	यावर्क्कु	मियक्क	मुण्डे
करुत्तवा	ळरक्कि	मारु	मरक्करुड्	गळित्तु	वीशि
वैरुत्तपूण्	वैरुक्कै	याले	तूरुमिव्	वीदि	यैल्लाम् 134

औरुत्तलो निर्क्क-युद्ध करना एक ओर रहे; अँम् उयर् पडैक्कु-हमारी श्रेष्ठ (वानर) सेना के लिए; इव्वूर्-इस नगर में; कौरुङ्कु वन्तु-एक साथ आकर; इरुत्तलुम्-आ पहुँचना भी; अँळितु आम्-सुलभ हो सकता है; मर्ऱुम्-तो भी; यावर्क्कुम्-उन सबके लिए; इयक्कम् उण्डे-संचार के लिए स्थान मिलेगा क्या; करुत्त वाळ्-काली छटा से युक्त; अरक्कि मारुम् अरक्करुम्-राक्षसियों और राक्षसों ने; कळित्तु-उतारकर; वीचि वैरुत्त-जिनको फेंक दूर किया है; पूण् वैरुक्कैयाले-आभरणों की पुष्कल राशि से; इ वीति अँल्लाम्-ये सारी वीथियाँ; तूरुम्-पट गयी है। १३४

(हनुमान सोचता है—) हमारी सेना का इधर आकर युद्ध करना एक ओर रहे; शायद उनका एकत्र होकर इधर आना सुगम होगा। पर

उन बीरों के लिए इधर चलना-फिरना सुगम होगा क्या ? सभी वीरियाँ तो उन आश्रयों से पटी हुई हैं, जिनको काल प्रकाश वाले राक्षसों और राक्षसियों ने उकताकर उतार फेंका था । १३४

वड्डेगळ्डे	गुळ्डेस	बू	मालपुत्र	जान्डेस	पानेक
कड्डेगळ्डे	गलिन	मालि	लाळ्डेपुत्र	गणकिक	लड
इड्डेगळ्डे	नरड्डेग	डोड्डेस	पारड्डे	मड्डेन	बुल्लेनस
अड्डेगळ्डे	डूनेन	लूनेन	पालिडि	गळ्डेनर	डूण्डे 135

वड्डेकळ्डेस-होर और; कुळ्डेस-कुण्डल और; गुणस-आश्रय; मालपुस-मालपु; चानुस-चन्दन; पानेक-कड्डेकळ्डेस-गाली के सदनीर की धारापु; कलिन मा-रास से युक्त अरबों की; विलालिपुस-लार और शाय; कणककिलान-अमाप है; इड्डेकळ्डेस इड्डेकळ्डे लोड्डेस-अनेक स्थलों में; पारड्डे सदनेन-नदियों से मिलकर; बुल्लेनस-सभी; अड्डेकळ्डेस-अनेक गहरा; अनेके उण्डे-क्या हो है । १३५

(इस पक्ष में समुद्र की गहराई का संकेत है ।) होर, कुण्डल, आश्रय, गुण-मालापु, चन्दन, होशियाँ का, सदजन, जगाम-जगै अरबों के मुख से निकलनेवाला शाय-ये सब युव-वत अत्यधिक परिमाण में नदियों से मिलकर समुद्र में आ समाहित हो गये । तो उस समुद्र से गहरा क्या है ? । १३५

विड्डे	परिद्वे	गो	वेड्डे	मिड्डेस	गो
मड्डे	पुड्डेनेस	गो	वाड्डे	मलिबुस	गो
कड्डेगळ्डे	दण्डे	पुलि	पालसुने	रिनेय	कानुड्डे
मड्डे	परिद्वे	गो	नापड्डे	कुट्टेकुकु	मालिब 136

मामकड्डेक-अपने स्वामी से; उट्टेकुकुस मालिब-बब कड्डे नव; विड्डेपुड्डे-धुवुर बीरों की सेना; परिद्वे-बड़ी है; अनेकेनी-कड्डे क्या; वेड्डेपुड्डे-मालाधारों बीरों की सेना; मिड्डेस अनेकेनी-अधिक है कड्डे; सब पट उट्टेपु-सबलों की सेना रखता है; अनेकेनी-कड्डे; बाळ पट-नलवार-धारी बीरों की सेना; मलिब अनेकेनी-अधिक है कड्डे; कड्डेगळ्डे-कड्डेदार गदा; दण्डे-दण्ड; पुलिपलस-मिड्डेपल; अनेके-आदि; इनेय कानुड्डेस-ऐसे होशियारी से शक्ति; मड्डेपुड्डे-(बीरों की) अच्छी सेना; परिद्वे-बड़ी है; अनेकेनी-कड्डे क्या । १३६

(हेतुमान अपने आप कहने लगा ।) जब मैं अपने स्वामी श्रीराम से जा मिलूँ और यहाँ की सेना-स्थिति बताऊँ तो क्या कहूँगा ? धुवुर बीरों का सेना बड़ी है, कड्डे ? या मालाधारों बीरों की सेना को ? या यही सबलों की सेना को बड़ा कड्डे या नलवारधारों बीरों की सेना को ? या यही कहूँगा कि 'कड्डेगळ्डे' नामक कड्डेदार गदा, दण्ड, मिड्डेपल आदि बलानेवाले बीरों की सेना बड़ी है ? । १३६

अँत्तुत्त निलङ्गै नोक्कि यिनैयत्त पिऱवु मैण्णि
 निन्ऱव णरक्कर् वन्दु नेरित्तु नेर्व रेन्त्तात्
 तन्ऱहै यरिय मेत्ति शुरुक्कियच् चारल् शार्न्ऱु
 कुन्ऱिडै यिरुन्दात् वैय्योन् कुडकडर् कुळिप्प दानान् 137

इलङ्कै नोक्कि-लंका को देखकर; अँत्तुत्त-ऐसा कहते हुए; इत्तैयत्त-यो;
 पिऱवुम्-और अन्य बातें; अँण्णि निन्ऱ-सोचते हुए खड़े रहकर; अवण्-वहाँ;
 अरक्कर् वन्दु-राक्षस आकर; नेरित्तुम्-मिले तो; नेर्व-मिल सकेंगे; अँत्ता-
 सोचकर; तन् तकै अरिय-अपने ही सम अपूर्व; मेत्ति-शरीर को; चुरुक्कि-संग्रह
 करके; अ कुन्ऱिटै-उस (प्रवाल) पर्वत के; चारल्-पार्श्व में; चार्न्तु इरुन्तान्-
 जाकर रहा; वैय्योन्-किरणमाली; कुड कटल्-पश्चिमी सागर में; कुळिप्पतु
 आत्तान्-डूबने लगा । १३७

हनुमान प्रवाल पर्वत पर विराजे हुए यह सब सोच रहा था । तब
 उसे विचार आया कि राक्षस लोग वहाँ आ सकेंगे —इसकी सम्भावना है ।
 इसलिए उसने अपने आकार को, जो उसके उन्नत स्वभाव के ही अनुरूप
 बड़ा था, छोटा कर लिया । फिर वह पर्वत के पार्श्वस्थल में जाकर रहा ।
 तभी उष्णकिरण सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूबा । १३७

एय्वित्तै यिरुदियिर् चैल्व मैय्दित्तान्
 आय्वित्तै मत्तत्तिला नऱिअर् शौर्कोळान्
 वीवित्तै निनैक्किला तौरवन् मैय्यिलान्
 तीवित्तै यैन्विरुळ् शैरिन्द दैङ्गुमे 138

एय्वित्तै-पूर्वकर्म से; इरुति इल् चैल्वम्-अपार धन; अँय्दित्तान्-जिसे प्राप्त
 हो; मत्तत्तु आय्वित्तै-मन में सोचकर कार्य करनेवाला; इलान्-जो नहीं है; अऱिअर्
 चोल्-विद्वानों का कहना; कोळान्-जो ग्रहण नहीं करता; वीवित्तै-अपने मरण को;
 नितैक्किलान्-जो नहीं सोचता; मैय्यिलान्-जो सत्यसंध नहीं; तौरवन्-ऐसे एक
 के; तीवित्तै अँत्त-पाप के समान; अँङ्कुम्-सर्वत्र; इरुळ्-अन्धकार; चैरिन्तु-
 घने रूप से छा गया । १३८

तब अन्धकार छाने लगा । वह अन्धकार उस पापी के पाप के समान
 फैला जिसके पास पूर्व-सृकृत्य के फलस्वरूप धन मिला था; पर जिस
 अविवेकी असत्यवादी और ज्ञानी के उपदेशों को न सुननेवाले ने अपने सम्भाव्य
 मरण की बात भी नहीं सोची और पापकर्म करना आरम्भ कर दिया । १३८

करित्तमून् रैयिलुडैक् कणिच्चि वान्ऱवन्
 अँरित्तलै यन्दण रिळैत्त यान्ऱै
 उरित्तपे हरिवैया लुलहुक् कोरुऱै
 पुरित्तत्त तान्मुह नैन्ऱम् वीरपदे 139

वर्णस्य नीलकण्ठ-दासनीलता से लो रङ्गित न हुआ; नई मर्यादा वर्तन-उस लम्ब कुल से उत्पन्न; अर्थात् नीलकण्ठ-उस स्त्री-ल-सुधुवन; कर्तुंयम् वेतये-वर्तितवती अर्थात् बाला सीताजी की; विष्णुस्य नीलकण्ठवर्न-लो बलहीन महो रङ्गो उस (सबल रावण) ने; विडं वेतनम्-कारणह्ने से बन्द किया; अर्धम-यद्; वर्णस्य नीलकण्ठ पुच्छ- (अस्ति यथा =) निम्न; विरिजतु-कृत्वा; अर्धवे-वर्से (अथकार कृत्वा)। १४१

वह अन्धकार प्रकाश (गौरव) से रहित उस अपयश के समान फैला कि दानशीलता से अविच्छिन्न दीर्घ कुल में उत्पन्न और स्त्रीत्व के गौरव से अत्यक्त चरित्रवती सती सीता को अबलहीन रावण ने कठोर कारा में बन्द कर रखा । (वैष्ण्वै नीङ्किय पुकळ की शब्द-योजना अनूठी है । उसका सीधा अर्थ 'यश, जिससे श्वेतता दूर हो गयी हो' — है) । १४१

अव्वळि	यव्विरुळ	परन्त	वायिडै
अव्वळि	मरुङ्गिनु	मरक्क	रय्यित्तार्
शव्वळि	मन्दिरत्	तिशैय	राहैयाल्
वव्वळि	यिरुडर	मदित्तु	मीच्चल्वार् 142

अ वळि—उस रीति से; अ इरुळ—वह अन्धकार; परन्त आ इटै—जब फैला तब; अरक्कर्—राक्षस; अ वळि मरुङ्गित्तुम्—सब स्थानों में; अय्यित्तार्—आये; मन्तिर चैम् वळि—मन्त्रों के बल से अच्छे मार्ग बनाकर; तिचैयर्—सभी दिशाओं में जा सकनेवाले होने के कारण; वैम् इरुळ वळि तर—भयंकर अन्धकार ने भी मार्ग दिया; मदित्तु—उसका मथन करके; मी चैल्वार्—आगे गये । १४२

जब अन्धकार वैसा फैल रहा था तब राक्षस सब स्थानों में आ गये और मन्त्रबल से जाने का सामर्थ्य रखने के कारण अन्धकार उन्हें रोक नहीं सका; बल्कि उसने मार्ग दिये । वे उस अन्धकार को रौंदते और पीसते हुए आगे जाने लगे । १४२

इन्दिरन् वळनहर्क् केहु वारैळिल्, चन्दिर नुलहिनैच् चार्हु-वारशलत्
तन्दह-नुरैयुळै यणुहु वारयिल्, वन्दौळि लरक्कत्त देवन् मेयित्तार् 143

अयिल्—भालाधारी; वैम् तौळिल्—क्रूरकर्मा; अरक्कत्तु—राक्षस रावण की; एवल् मेयित्तार्—आज्ञा धारण कर; इन्दिरन् वळ नरक्कु—इन्द्र के समृद्ध नगर; एकुवार्—जाते; अळिल्—सुन्दर; चन्तिरन् उलकितै—चन्द्रलोक; चार्कुवार्—पहुँचते; चलत्तु—कोपिष्ठ; अन्तकन् उरैयुळै—यम के वासस्थान के; अण्कुवार्—निकट जाते । १४३

वे राक्षस क्रूरकर्मा रावण के आज्ञाकारी थे । वे इन्द्र के समृद्ध नगर जाते; सुन्दर चन्द्रलोक पहुँचते । क्रोधशील यम के वासस्थान में ही जा पहुँचते थे । १४३

पोन्तहर्	मडन्दैयर्	विज्जैप्	पूवैयर्
पन्तह	वनिदैय	रियक्कर्	पावैयर्
मुन्तिरन्	पणिमुडै	मारि	मुन्दुवार्
मिन्तिरन्	मिडैन्दै	विशुम्बिन्	मेर्चैल्वार् 144

पोन्तकर् मडन्तैयर्—सुररमणियाँ; विज्जै पूवैयर्—विद्याधर-विलासिनियाँ; पन्तक

तीण्डरुन्	दीविनै	तीक्कत्	तीन्दुपोय्
माण्डरु	वुलरुन्ददु	मारु	दिपर्पेयर्
आण्डहै	मारिवन्	दळिक्क	वायिडै
ईण्डरु	मुळैत्तैन	मुळैत्त	दिन्दुवे 147

तीण्ट अरुम्-जिनके पास जाना असम्भव है; तीविनै तीक्क-उन पापों के जलाने से; अरुम्-धर्म; तीन्तु पोय्-जल गया और; माण्डु-मरकर; अरु उलरुन्तु-पूरा-पूरा सूख गया; मारुति पर्पेयर्-मारुति नामक; आण्टकै मारि-पुरुषश्रेष्ठ रूपी वर्षा ने; वन्तु अळिक्क-आकर कृपा की, इससे; आयिडै-तब; ईण्टु (अरुम्) मुळैत्तु-फिर से (धर्म) अंकुरित हुआ; अँत-ऐसा कहने योग्य रीति से; इन्तु मुळैत्तु-चन्द्र उग आया । १४७

(तब चन्द्र उग आया— उसका वर्णन देखिए ।) ॥ मानो धर्म को अस्पृश्य भयंकर पाप ने जला दिया । वह जला, मरा और एक दम सूख गया । अब मारुति नाम की वर्षा ने आकर कृपा बरसायी तो वह फिर से जीवित हो आया । उस धर्म के जैसे इन्दु उदित हुआ । १४७

वन्दन्	निराहवन्	रूदन्	वाळुन्दन्तन्
अँन्दैये	यिन्दिर	नामन्	रेमुडा
अन्दमिल्	कोळुत्तिशै	यळह	वाणुदल्
शुन्दरि	मुहर्मेत्तप्	पौलिन्दु	तोन्निर्इरु 148

इराकवन् तूतन् वन्ततन्-श्रीराघव-दूत आया; अँन्तैये इन्तिरन्-हमारे धाता इन्द्र; वाळुन्तन्तन् आम्-जीवन्त हो गये; अँन्डु-कहकर; एमुडा-मुदित होकर; अनुतम् इल् कोळुत्तिचै-अनन्त पूर्व दिशा रूपी; अळक वाळु नुतल्-अलकावृत उज्ज्वल भाल वाली; चुन्तरि-सुन्दरी के; मुकम् अँत-आनन के समान; इन्तु-चन्द्र; पौलिन्दु तोन्निर्इरु-शोभायमान लगा । १४८

वह चन्द्र पूर्वदिशा रूपी श्वेत भाल वाली सुन्दरी के मुख के समान शोभा, जो इस विचार से प्रफुल्लित हुई थी कि श्रीराघव का दूत आ गया और मेरे धाता इन्द्र जीवन्त हो गये । १४८

कडुँवैण्	कवरिपोल्	कडलिन्	वैण्डिरै
चुर्ऱुनिन्	रुलमरप्	पौलिन्दु	तोन्निर्इराल्
इर्ऱुदँन्	पहैयँन्	वैळुन्द	विन्दिरन्
कौर्ऱुवैण्	गुडैयैत्तक्	कुळिर्वैण्	डिङ्गळे 149

अँन् पकै-मेरा शत्रु; इर्ऱुतु-मिट गया; अँत अँळुन्त-ऐसा सोचकर जो उठा; इन्तिरन्-इन्द्र के; वैण् कौर्ऱु कुटै अँत-श्वेत विजय-छत्र के समान; कुळिर् वैण् तिळ्कळ-शीतल श्वेत चन्द्र; कडलिन् वैण् तिरै कडुँ-समुद्र की श्वेत तरंगों के समूह के; वैण् कवरि पोल्-श्वेत चँवर के समान; चुर्ऱुम् निन्डु-चारों ओर रहकर; अलमर-हिलते; पौलिन्दु तोन्निर्इरु-शोभायमान प्रकट हुआ । १४९

४४४ । श्री श्री गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव श्री गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

विहितादृक् चूषाणिना भवितुं शक्यं १५०

बुद्धों तथा भगवानों के साथ; भस्म की छिड़म-ऊपर और नीचे; विरिचनवृ-फल १५०

0781 124

बर्तमान स्थिति निर्वाह हेतु 151

ऐसे निरुद्ध के समान रहें। निरुद्धि-वर्द्धि का द्वय । १५१

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री गुरुभ्यो नमः	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	श्री गुरुभ्यो नमः	श्री गुरुभ्यो नमः
-------------------	-----------------------	-------------------	-------------------

मीन् अलाम्-आकाश के नक्षत्र सब; अण् उटै-कर्तव्य की चिन्ता में रत; अनुमन् मेल्-हनुमान पर; इल्लिन्त पू मल्लै-गिरी पुष्प-वर्षाएँ हैं; अण्णल् वाळ् अरक्कतै-गौरवयुक्त तलवारधारी राक्षस (रावण) से; अञ्चि-डरकर; मण्णिटै वीळ्किल-भूमि पर नहीं गिरीं; मरित्तुम् पोकिल-लौटकर ऊपर भी नहीं गयीं; आय् कतिर्-शुद्ध किरणों से युक्त; विण् इटै-अन्तरिक्ष में; तौत्तित पोन्ऱ-लटकती जैसे लगीं । १५२

आकाश में तारे प्रकट हुए । वे कर्तव्य-रत हनुमान के ऊपर देवों द्वारा बरसाये गये पुष्पों के समान लगे, जो तलवारधारी, रावण से डरकर न नीचे पृथ्वी पर गिरे, न ऊपर ही जा सके और जो बीच में लटके रहे । १५२

अल्लियि	निमिरिरुट्	कुडैयु	मिव्विरुळ्
कल्लिय	निलविन्वैण्	मुडियुड्	गौवित्त
पुल्लिय	पहैर्यत्तप्	पौरुव	पोन्ऱत्त
मल्लिहै	मलर्त्तौरुम्	वदिन्द	वण्डैलाम् 153

मल्लिकै मलर् तौरुम्-चमेली के सभी फूलों पर; वतिन्त वण्डु अलाम्-जो रहे वे सभी भ्रमर; अल्लियिन्-रात के; निमिर् इरुळ् कुडैयुम्-भरे अन्धकार के खण्ड; इ इरुळ् कल्लिय-इस अन्धकार द्वारा खोदकर लिये गये; निलविन् वैण् मुडियुम्-चाँदनी के सफेद खण्ड; कौवित्त-आपस में दाँतों से पकड़ लेकर; पुल्लिय पकै अँत-पकड़ में आये शत्रुओं के समान; पौरुव पोन्ऱत्त-झगड़ते जैसे लगे । १५३

चमेली के फूलों पर भ्रमरों को देखकर ऐसा लगा, मानो रात में व्याप्त अन्धकार के खण्ड और उस अन्धकार को नोचनेवाली चाँदनी के खण्ड आपस में प्रबल शत्रुता के साथ परस्पर ग्रसकर भिड़ रहे हों । १५३

वीशुरु	पशुङ्गदिर्क्	कडै	वैण्णिला
आशुऱ	वैङ्गणु	नुळैन्द	ळायदु
काशुरु	कडिमदि	लिलङ्गैक्	कावलूर्त्
तूशुऱै	यिट्टदु	पोन्ऱु	तोन्ऱिऱु 154

पचुम् कतिर् कडै-शीतल किरणों की राशियों को; वीचुरु वैण् निला-छिटकानेवाली श्वेत चाँदनी; आचु उऱ-शीघ्रता से; अँङ्कणुम् नुळैन्तु-सर्वत्र घुसकर; अळायतु-फँली जो; काचु उऱ-रत्नजड़ित; मतिल् इलङ्कै-प्राचीरों की (घिरी) लंका; कटि कावल् ऊर्-(के) सुरक्षित नगर के; तूचु उऱै-वस्त्रावरण; इट्टु पोन्ऱु-लगाया गया हो, ऐसा; तोन्ऱिऱु-लगी । १५४

शीतल किरणों की राशियाँ बिखरनेवाली चाँदनी शीघ्र सर्वत्र घुसकर व्याप गयी । उसको देखकर ऐसा लगा मानो मणिमण्डित प्राचीरों वाली व पहरे से सुरक्षित लंका पर श्वेत वस्त्र का खोल चढ़ा दिया गया हो । १५४

[illegible]

अनिष्ट गुणश्रेष्ठ श्रीराम के बलाये एक अमावस रात्र की भाँति हेतुमग्न
जा रहा था। उसकी संगति के बल से चाँदनी लका की छड़ें में घुसी,
और अन्य सुरक्षा के स्थलों में घुसी और ऐसी महिमा पा गयी मानो वह
श्रीराम का पक्ष हो जा सके था। १५५

[illegible]

ब्रह्मवर्ति-अर्थ माग पर; अविर्लोकित-बलने के स्वभाव का; अविमर्श-
द्विमान भा; नेवर पुन-देवा के रूति करते; पाप-लाकर; ब्रह्म वर्ति अरुकर-
पर-प्रांक्त माग (व्यवहार) का अवलम्बन करनेवाले राजाओं के; ऊरु मेवले भविष्यत-
नगर में जगत् बाह्यकर; अथ वर्ति-नव; अथ वर्ति-किम माग से; अथकले आस
वर्ति-अरु नाने का राना है; अथपने-उसका; उगरेविसे अर्थानाने-मन में
सीधने लगा । १५६

उत्तम मातागामि हनुमान का संकरण था कि देवों की स्तुति का भागी बनकर मैं भयंकर मार्ग पर चलनेवाले राक्षसों की लंका में जाऊँ, इसलिए वह विचारने लगा कि किस विषय वहाँ जाऊँ ? । १५६

આગિયદે	ઘડેવલ	કાવમરર	વાઝેમ
પૂજનદેવ	સેવૃઝિ	કાઠમર	કેરિક
કર્તરય	પૂર્વેકાર્ક	શમ્ભેવેનિકર	વેઝેવ
ગૈરિદર	નાઝેમલ	યામાદેલ	પરરરાર

157

आदि अकलाक-समूह का ही परिणाम होता है; अकला-अधम, अमर, बाह्य-देवी के वासस्थान; एवं उल्लिखित-साली लोको के; सब प्रदि काक्रम-अपर के अन्तर्गत तक; मुकट पत्रि-अपनी चोटी पहुँचाकर; अरि-अपव; के प्रदी

कौटु-रंग के स्वर्ण से; चमैतुत-निर्मित; ऊळि किळर् वैळ्ळत्तु-युगान्त में उठनेवाले प्रलय-समुद्र के कारण; तिरि नाळुम्-जब लोक मिट जाते हैं उस दिन में भी; उलैया-जो नष्ट नहीं होता; मतिलै-उस प्राचीर पर; उरुडान्-पहुँचा। १५७

वह लंका के प्राचीर पर जा पहुँचा। उस प्राचीर की खाई समुद्र ही था। वह देवों के वास के सातों लोकों के ऊपर के खुले आकाश तक ऊँचा उठा था। बहुत सुन्दर वर्ण वाले स्वर्ण से निर्मित था। युगांतकालीन व उफनकर आनेवाले प्रवाह में भी वह नष्ट होनेवाला नहीं था। १५७

कलङ्गलिल्ह	डुङ्गदिरहण्	मीदुकडि	देहा
अलङ्गलयिल्	वज्जहनै	यज्जियैन्ति	नन्ऱाल्
इलङ्गैमदि	लिङ्गिदनै	येरलरि	देन्ऱे
विलङ्गियहल्	हिन्ऱनवि	रैन्ऱेन	वियन्ऱान् 158

अलङ्कल्-मालाधारी; अयिल् वज्जकनै-भाला रखनेवाले वंचक से; अज्जि-डरकर; कलङ्कल् इल्-अचल; कटुम् कतिरकळ्-गरम (सूर्य-) किरणें; मीतु-इस प्राचीर पर; कटितु एका-शीघ्र नहीं जा सकती; अँत्तिन्-कहें तो; अन्ऱु-नहीं; इङ्कु-यहाँ; इलङ्कै मतिल् इततै-लंका के प्राचीर इस पर; एरल् अरितु-चढ़ना कठिन है; अँन्ऱे-समझकर ही; विलङ्कि-उससे हटकर; विरैन्तु-अकल्किन्ऱुत्त-शीघ्र दूर चलती है; अँत्त-ऐसा सोचकर; वियन्ऱान्-विस्मित हुआ (हनुमान)। १५८

मालालङ्कृत भालाधारी रावण से डरकर धीरे सूर्य किरणें भी इस प्राचीर के ऊपर से शीघ्र नहीं जायँगी —ऐसा कहना युक्तिसंगत नहीं होगा। उन्हें यह विदित था कि वे इस प्राचीर के ऊपर चढ़ नहीं पायँगी। इसलिए वे दूर से ही शीघ्र चली जाती हैं। यह सोचकर हनुमान विस्मय-विभोर हुआ। १५८

तैव्वळवि	लादविरै	तेरलरि	दम्मा
अव्वळव	दन्ऱरण	मण्डमिडै	याह
अँव्वळवि	नुण्डुवैळि	यीरुमडु	वैन्ऱा
वैव्वळ	वरक्कनै	मन्ऱक्कौळ	वियन्ऱान् 159

तैव् अळवु इलात-शत्रु असंख्यक है; इरै-थोड़ा भी; तेरल्-जानना; अरितु-कठिन है; अरणम्-गढ़; अण्टम्-अण्ड को; इटैयाक-अपने मध्य में लेने के लिए; वैळि-अन्तरिक्ष; अँ अळविन् उण्टु-जितना है; अ अळवल् अन्ऱु-केवल उतना विस्तृत नहीं है; ईरुम् अतु-उसका अन्त भी वैसे ही (अपार है); अँन्ऱा-ऐसा सोचकर; वैम् वळ अरक्कनै-भयंकर और धनी राक्षस (रावण की समृद्धि) को; मन्ऱम् कौळ-मन में सोचकर; वियन्ऱान्-विस्मित हुआ। १५९

(हनुमान आगे सोचता है—) शत्रु असंख्यक हैं। उनका बल ताड़ना बहुत कठिन लगता है। गढ़ ऐसा बड़ा है कि उसके मध्य सारा अण्ड समा

जाय—उतने तक सीमित नहीं। उसका अन्त पाना भी वैसे ही कठिन है। इस तरह सीवने-सीवने हिंसमान ने यथानक रूप से वृथवाशाली रहनेवाले रावण की बात सीची और वह विस्मय से भर गया। १५५

महत्तमलि	युद्धमद	मालदेहिछ	नाग
नडनडदलि	युद्धदु	नमनिनलि	मुद्धर
अडङ्गलि	नामयलि	ननददेल	दणक
कडुनदिलि	वायवय	वायिलिदर	कण्डलि

मडङ्कले-यम के समान; अरि पङ्क-नरसिंह और; मम माले कछुम-मम और बड़े गज की; नाग-शरम का अनुभव करने देते हुए; नडनदु-चलकर; नलि सुवरे-अलि प्राचीन नगर में; नलिपे युद्धुम-अकले जातेवाले; नमपि-महिमामय हिंसमान ने; अडङ्कलिपि नाली-निनली में न आनेवाली सेना के; अलिपे अनेकसु-मालधारी यम की; आल-आला के अर्थान रहनेवाले; कडुम लिचलिपे बापु अर्थ-कूर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान; वायिले-(लंका के) राजद्वार की; अलिरे कण्डालि-सामने देखा। १५६

महिमावान हिंसमान पदल चलकर पुरातन नगरी लंका की ओर गया। उसकी चाल देखकर स्वयं नरकेशरी और बड़ा तथा मल गज भी लज्जा का अनुभव करते थे। वही गोद्वार पर पहुँचा जो उस भयंकर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान था, जो अशुभ्य सेना का स्वासी और माले के धारक यम की है। १५७

महत्तम	निरुतलि	वमननपड	कालदेहि	विणोर
अरुद्ध	वमननपड	कालदेहि	विणोर	हेल्लम
शरिलि	निलकनड	विदददर	वैणी	
नारुद्ध	कडरकुवलि	योवव	निननदाल	161

महत्तम निरुतलि-महत्तम की वडा करके; वलि वमनन काल-द्वार बनाया गया क्या शायद; विणोर ऊरे एक-देवलीक में पहुँचने के लिए; अमनन-रिलि; पड काल काल-सीविया है क्या; उलक पुडुम-साली लंका की; वरिलि निलक-दक्षिण न होकर स्थिर रहने के लिए; नड विददु-बीच में निमित्त; और वैणी-एक वामा है क्या; कडरकु-समुद्र का; नार पुडु-जल-प्रवेश के लिए; वलिपि-मान है क्या; अम-ऐसा-ऐसा; निननदालि-सीव। १५९

महत्तम की लाकर वडा किया गया और उसके मध्य (द्वार का) खूना स्थान छोड़कर बनाया गया क्या यह देवी के लंका में प्रवेश करने के लिए रखी गयी सीवने है? साली लोक स्थित होकर अत्यन्त लिर न जाय, तदर्थ उनके मध्य गाडा गया वामा है? या समुद्र की भरने के लिए जल वही उसके लिए बनाया गया मान है?—हिंसमान लोरण-द्वार के बारे में ऐसा सीवने लगा। १६१

एळुलहिन्	वाळुमुयिर्	यावैयु	मैदिरन्दाल्
ऊळिन्मुर्	यिन्त्रियुड	नेपुहुमि	दौन्त्रो
वाळियरि	यड्गुवळि	यीदैन	वहुत्ताल्
आळियुळ	वेळिन्नळ	वन्नरूपहै	यैन्त्रान् 162

एळ् उलकिन्-सातों लोकों के; वाळुम् उयिर् यावैयुम्-वासी सभी जीव; अँतिरन्ताल्-सामने आवें तो; ऊळिन् मुर् इन्त्रि-विना किसी क्रम के; उदत्ते पुकुम्-एक साथ घुस सकेंगे; इतु औन्त्रो-यही एक है क्या; वाळियर्-यहाँ रहनेवाले; इयड्कुम् वळि ईतु-आते-जाते हैं इसी मार्ग से; अँत्र-ऐसा; वकुत्ताल्-विचार करके सोचें; पकै-तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण; आळि एळिन् अळवु-सातों समुद्रों की नाप का; उळ अन्त्र-है नहीं (उससे अधिक है); अँन्त्रान्-कहा । १६२

मानो कि सातों लोकों के जीव एक साथ इस नगर में घुसने आयँ तो वे विना क्रम से जाने की आवश्यकता के एक साथ प्रवेश कर सकेंगे — ऐसा विशाल है यह द्वार । उसका गौरव क्या यही एक है ? यह लंका नगर के वासियों के आने-जाने का द्वार है — इसको लेकर सोचा जाय तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण सातों समुद्रों का उतना बड़ा है, यह मानना भी सही नहीं होगा (यानी यह उनसे भी अधिक विपुल है) । हनुमान ने यों सोचा । १६२

वैळ्ळमौरु	नून्नीडिरु	नूरुमिडै	वीरर्
कळ्ळवित्तै	वैव्वलि	यरक्करिरु	कैयुम्
मुळ्ळैयिरुम्	वाळुमुर्	मुन्नमुर्	निन्त्रार्
अँळ्ळरिय	कावलित्तै	यण्णलु	मैदिरन्दान् 163

और नून्नीडु इर नूरु-तीन सौ; वैळ्ळम्-‘वैळ्ळम्’ संख्या के; मिटै वीरर्-योद्धा वीर; कळ्ळ वित्तै-वंचक काम; वैम् वलि-और गजब का बल; अरक्कर्-इनसे युक्त राक्षस; इर कैयुम्-दोनों ओर; मुळ् अँयिरुम्-काँटे के समान दाँत; वाळुम्-तलवारें; उर्-लेकर; मुन्न मुर्-युद्धसन्नद्ध; निन्त्रार्-खड़े थे; अँळ् अरिय-अनुपेक्षणीय; कावलित्तै-पहरे को; अण्णलुम्-महिमावान ने भी; अँतिरन्तान्-सामने देखा । १६३

उस द्वार के दोनों ओर राक्षस खड़े थे । उनकी संख्या (एक और दो) तीन सौ ‘वैळ्ळम्’ थी । वे मायावी थे और भयंकर वीर थे । उनके मुखों में काँटों के समान तेज दाँत थे और हाथों में तलवारें थीं । वे ऐसे खड़े थे मानो युद्ध-सन्नद्ध हों । हनुमान ने उस अनिच्छ पहरे को अपनी आँखों से देखा । १६३

शूलमळु	वाळौडयि	रोमर्	मुलक्कै
कालवरि	विर्पहळि	कप्पण	मुशुण्डि
कोलकणै	नेमिकुलि	शज्जुरिहै	कुन्दम्
पालमुद	लायुदम्	वलत्तिनर्	परित्तार 164

हृदयमान ने उनके पास और एक अखबार माग-समा सेवा का विवरण

पड़ा हुआ देखा । वहाँ असंख्यक दीप जल रहे थे, जो अन्धकार को लील रहे थे । वह सेना उस द्वार के समीप ही थी, जिसे देखकर अत्यन्त काले रंग का यम भी डर जाता था और जो रत्नों से खचित सुन्दर था । १६६

अव्वमर	रव्ववुण	रव्वरुळ	रत्तने
कव्वैमुदु	वायिलि	नैडुङ्गडै	कडप्पार्
तैव्वरिवर्	शेममिदु	शेवहनुम्	यामुम्
वैव्वमरिन्	मेलित्तिये	नाय्विळैयु	मैन्नात् 167

कव्वै—आरवयुक्त; मुतु वायिलिन्—प्राचीन किले के द्वार के; नैडुङ्कटै—लम्बे किनारे को; अँ अमरर्—कौन देव; अँ अवुणर्—कौन दानव; कटप्पार्—पार करेंगे; अव्वर् उळर्—कौन हैं (अन्य); अँत्तने—क्या ही खूब है; इवर् तैव्वर्—ये हैं शत्रु; इतु चेमम्—यह उनका संरक्षण; चेवक्तुम्—नायक श्रीराम और; यामुम्—हम; इत्ति मेल्—आगे जो करेंगे; वैम् अमरित्—उस भयंकर युद्ध में; अँताय् विळैयुम्—क्या होने वाला है; अँन्नात्—हनुमान ने आप ही आप कहा । १६७

वह द्वार आरवपूर्ण था । उसका किनारा बहुत लम्बा था । उसको कौन देव पार कर सकता था ? कौन असुर था जो उसे पार कर जाये ? फिर कितनों के पास इतना साहस था ? इसका महत्त्व कितना है ? ऐसे हैं हमारे शत्रु ! उनके पहरों का बल ऐसा है ! तो जब हमारे स्वामी और हम आकर युद्ध छेड़ देंगे तो उस भयंकर युद्ध का फल क्या होगा ? —हनुमान इस भाँति अपने आप शंका के स्वर में बोला । १६७

करुङ्गडल्	कडप्पतरि	दन्नुनहर्कु	कावल्
पैरुङ्गडल्	कडप्पदरि	दैण्णमिडै	पेरा
दरुङ्गडन्	मुडिप्परि	दारमर्	किडैप्पिन्
नैरुङ्गमर्	विळैप्पर्नैडु	नाळैत्त	नितैन्नात् 168

करुम् कटल्—काले सागर को; कटप्पतु—पार करना; अरितु अत्तु—असाध्य काम नहीं; नकर् कावल्—नगर की रक्षा (रक्षक सेना) का; पैरुम् कटल्—बड़ा सागर; कटप्पतु अरितु—पार करना कठिन है; आर् अमर् किटैप्पिन्—बड़ा युद्ध होगा तो; नैटु नाळ्—अनेक दिनों तक; नैरुङ्कु अमर् विळैप्पर्—घमासान युद्ध करेंगे; अँण्णम्—(सीताजी के अन्वेषण का) मेरा संकल्प; इडै पेरानु—किंचित भी पूरा नहीं होगा; अरुम् कटन्—और मेरा महान् कर्तव्य; मुडिप्पतु अरितु—पूरा करना असाध्य होगा; अँत्त नितैन्नात्—ऐसा सोचा । १६८

हनुमान ने और सोचा— इस काले सागर का तरण कठिन नहीं होगा । पर नगर-रक्षक सेना-सागर को पार करना अवश्य दुस्तर होगा । अगर बड़ा युद्ध छिड़ जायगा तो ये लोग बहुत काल तक घमासान युद्ध करेंगे । तब सीताजी के अन्वेषण का मेरा मंशा कुछ भी सफल नहीं होगा और अपना कर्तव्य पूरा करना दुःसाध्य हो जायगा । १६८

वापिबवळि	शेखरि	दशरुप	वज्रवतीर
आपिबवर	वज्रवळि	पुढलळ	हेमराल
कामदेवि	रघुकेशिमहि	लोककहि	गविप
पापिबहरे	पुकेकिहरे	वज्ररौरयल	पानासे 169

वापिब वळि-नोरण हारा; वज्रल अरिपु-अन्दर जाना असाध्य है; अशुखिपु-
 और भी; वज्रवतीर आपिब-वज्रवान हो नी; अवर वदेव वळि-उनके हारा निमित्त
 मान से; एकल-जाना; अठकमंड-हीक नहीं होणा; काय कतिरे-जानावाले सुय
 का; इयकड डल-सवार विष पर नहीं है; मजिल-उस प्राचीर को; कटिपु नावि-
 शीघ्र लपिकर; पीप-(पार) जाकर; इ नकर-इस नगर से; पुकेकिहरे-प्रवेश
 कर लंगा; अमंड-ऐसा निश्चय करके; और अयल-एक तरफ; पानासे-गया। १६६

इस फिले के हार से होकर आन्दर जाना असाध्य है। और भी
 वज्रवान वीरों के लिए शत्रु के निमित्त हार का उपयोग करना अच्छा नहीं
 होना। यह प्राचीर ऐसा है कि जगानेवाले सुय की किरण भी इस पर
 सञ्चार नहीं करती। इसकी कंदकर पार कळणा और आन्दर पहुँच
 जाऊंगा। —ऐसा सोचकर हनुमान हार की ओङ्कर प्राचीर के पास दसरे

रखान पर गया। १६७

नाणा	छनेदा	बलहिय	काव	नविमहरे
वाणा	उनेनाळ	पीवदम	मले	वळिनारुळ
दणा	सुनेन	दोळई	पानेव	वुडरोवेक
काणा	वनेद	कदवेवि	पुनेनके	कनवेहणाल 170

नाळ नाळम-दिने-दिने; नाके कावब नलकिय-अपने हारा संरक्षित; ना
 सुनेर-वहिन पुरान नगर की; बाळ नाळ अनेनाळ-आपु-पी रहनेवाला; कनव
 कणाल-अंगार उगलनेवाली आँखों की; वुडरोवे काणा वनेन-सुय को देखकर अंध;
 कदवेवि अनेन-अवगाथ (सुय) राई के समान; दणा आम अनेन-छाये ही माने
 जाने योग्य; नाळ उदेयासे-कंधा वाले के; मले पीवदम वळि-आगे जाने के माग
 से; निहुराळ-(आकर) खंडी हुई। १७०

(तब लंकादेवी सामने आयी।) लंकादेवी अपनी संरक्षित नगरी
 की आयु के ही समान थी। उसकी आँखों से अंगारे निकल रहे थे। वह
 लंकादेवी रत्न-सम कंधा वाले हनुमान के सामने इस तरह आयी मानी
 सुय को देखकर राई सुय आ रहा हो और उसके माग से उसे रोकती हुई
 खंडी हो गयी। १७०

अदेदेने	नीला	पावि	सुदेवना	छनेदेम
नीदेप	पुके	जादि	निरनेनाळ	मुळलकणाल
मुदेदिप	पाविम	सुवल	देवेव	मुदलोडम
कदेवि	चोडई	गालने	वलनेवळ	कसपिलेनाळ 171

अँट्टु तोळाळ्-अष्टभुजा; नालु मुक्त्ताळ्-चतुर्मुखी; उलकु एळुम्-सातों लोकों की; तौट्टु पेरुम्-स्पर्श कर लौटनेवाले; चोति निरुत्ताळ्-प्रकाशमय वक्ष वाली; चुळल् कण्णाळ्-चारों ओर घूमनेवाली दृष्टि की; मूवुलकत्तै-तीनों लोकों से; पोरिन् मुट्टि-युद्ध में टकराकर; मुतलोट्टुम् कट्टि-मूल से बाँधकर; चीरुम्-कोप करनेवाली; कालन् वलत्ताळ्-यम का-सा बल रखनेवाली; कमै इल्लाळ्-क्षमा न करनेवाली । १७१

(१७०वें पद से १७६वे पद तक लगातार उस लंकादेवी का वर्णन है ।) उसके आठ भुजाएँ थीं । चार मुखों की उसका वक्ष ज्योतिर्मय था और वह तेज सातों लोकों को छूकर आ सकता था । उसकी आँखें घूम रही थीं । वह इतनी शक्तिमती दिखी कि वह तीनों लोकों को युद्ध में समूल बाँध ले सकती थी । उसका क्रोध भी उतना भयंकर था । यम की-सी शक्ति रखनेवाली उसमें क्षमा करने का गुण नहीं था । १७१

पारा	निन्ऱा	ळण्डिशै	तोऱुम्	बलरप्पाल्
वारा	निन्ऱा	रोवैन्	मारि	मळ्ळैपोल्
आरा	निन्ऱा	णूबुर	मच्चन्	दरुताळाळ्
वेरा -	मैय्याळ्	मिन्नि	निमैक्कु	मिळिर्पूणाळ् 172

अच्चम् तरु-भय पैदा करनेवाले; ताळाळ्-पैरों की; नूपुरम्-नूपुर; मारि मळ्ळै पोल्-वर्षाऋतु की वर्षा के समान; आरा निन्ऱाळ्-बजाते हुए खड़ी रही; वेरा मैय्याळ्-स्वेद-पूर्ण शरीर वाली; मिन्निन् इमैक्कुम्-विजली-से चमकनेवाले; मिळिर् पूणाळ्-प्रकाशमय आभरण वाली; अँण् तिच्चै तोऱुम्-आठों दिशाओं के; अप्पाल्-उधर से; पलर्-अनेक; वारा निन्ऱारो अँत-आ रहे हैं क्या; पारा निन्ऱाळ्-ऐसा देखती रही । १७२

उसके भयंकर पैरों पर पायलें पड़ी थीं । वह उन्हें हिला रही थी; जिससे वर्षाऋतु की वर्षा के समान शब्द निकल रहा था । उसके शरीर पर स्वेद वह रहा था । विद्युत्-से चमकनेवाले उज्ज्वल आभरणों से वह अलंकृत थी । वह सारी दिशाओं को देख रही थी । यह टोह लगाने के लिए कि क्या दूर से कोई आ तो नहीं रहा हो ? । १७२

वैल्वाळ्	शूलम्	वैङ्गदै	पाशम्	विळिशङ्गम्
कोल्वाळ्	शाबड्	गौण्ड	करत्ताळ्	वडकुन्ऱम्
पोल्वा	डिङ्गट्	पोळि	नैयिर्ऱाळ्	पुहैवायिल्
काल्वाळ्	काणिर्	कालनु	मुट्कुङ्	गदमिक्काळ् 173

वैल्-भाला; वाळ्-तलवार; शूलम्-शूल; वैम् कतै-भयंकर गदा; पाशम्-पाश; विळि चङ्कम्-बजनेवाला शंख; कोल्-वाण; वाळ् चापम्-उज्ज्वल चाप; कौण्ट करत्ताळ्-लिये हुए हाथों वाली; वट कुन्ऱम् पोल्वाळ्-उत्तर के मेरु के समान रहनेवाली; तिङ्कळ् पोळिन्-चन्द्र के खण्डों के समान; नैयिर्ऱाळ्-दाँतों वाली; वायिल्-मुख से; पुकै काल्वाळ्-धुआँ निकालनेवाली; काणिल्-देखने पर; कालत्तुम् उट्कुम्-काल भी डर जाए; कतम् मिक्काळ्-ऐसा अधिक क्रोध से युक्त । १७३

उसके दो आँखें में आँसू, लालवाँ, खूब, अत्यन्त प्रकाशमय धरु थे । उतार के मुख पर्वत के समान आकार वाली उसके दाँत के दृक्छाँ के समान थे । उसके मुख से छिछो-सा निकल रहा था । वह दलना छोड़ी लगी कि उस भी देख ले जाय । । १७३

[illegible][illegible]

वह पञ्चरत्नी वस्त्र पहने थी । उसकी गति गहलू की-सी थी जिस दृष्टिकर सारे सप्त ढर जाते हैं । वह अकथन थी । स्वर्णसिंघ और लहरसकल समुद्र-शाल-जलित मीनियों का हरे उसके शरीर की अलंकृत कर रहे थे । (इस पर सँ यमकालंकार है) १७४ ।

175	<p> ಸಹಿಷ್ಣುತೆಯಲ್ಲಿ ಕಡಿಹೆ ಒಡ್ಡುಮನ ತೋರಿಸುವಲ್ಲಿ </p>	<p> ಸಮಾನ ಕಡೆ ಅನುಭವ ಸ್ವೀಕಾರ </p>	<p> ಸಮಾನ ಸ್ವೀಕಾರ ಸ್ವೀಕಾರ ಸ್ವೀಕಾರ </p>	<p> ಸಮಾನ ಸ್ವೀಕಾರ ಸ್ವೀಕಾರ ಸ್ವೀಕಾರ </p>
-----	--	--	--	--

आर्यदेविर्-वचन कः विनय-ललककर कले; सुवच-लेप कः; अणिवचन-
मले द्वय श्री; यादे लीले नल-यादे (एक तरहे की बोली) सववली शारवो से उचल;
अम् नारदेविर्-सुन्दर, 'नार' रवर के; नर वर वीचलादे-समान निकलनेवाली
वाणी की; अरु वृषय-गुआरदेवाले अमर; कले कर्तव्यरदेविर् इव-सधुर, 'गोधर'
रवर; इव पर्वति-संगीत गाले द्वय; कले कर्म- (जिन पर) मन रहले श्री; माले अलमयुग्म-माला हिल रही श्री;
मकटवेलादे-ऐसे मुकुट वाली । १७५

पढ़े चन्दन-लेप से वर्णित थी। 'यादें' (वीणा) के स्वरों के सम्बन्ध में बतानेवाले संगीतशास्त्र में वर्णित 'दादा', स्वर (उच्च स्वर) के से स्वर में बोलनेवाली थी। उसके सिर पर एक मुकुट था। उस पर मन्दार-पुष्पों की माला लिये रहती थी। उस माला पर गांधार-स्वर में गुंजारते हुए अमर मन्द-मन्द हो बैठे हुए थे। १७५

अँल्ला	मुट्कु	माळियि	लङ्गे	यिहन्मूदूर्
नल्ला	ळवूर्	वैहुरै	पोलुम्	नयत्तत्ताळ्
निल्लाय्	निल्ला	यँत्तूरै	नेरा	नित्तैयामुत्त
वल्ले	शँन्नाण्	मारुदि	कण्डान्	वरुहँन्नाण् 176

अँल्लाम् उट्कुम्-सभी जीवों को भय दिलाते हुए; आळि इलङ्क इकल् मूतूर्-समुद्रवलयित प्राचीन व बलवान (लंका) नगर का; नल्लाळ्-हित करनेवाली; अव्वूर् वैकु-उस नगर के रहने के; उरै पोलुम्-स्थान के समान; नयत्तत्ताळ्-आँखों वाली; निल्लाय् निल्लाय्-खड़े रहो, खड़े रहो; अँत्तूरै नेरा-कहते हुए; नित्तैया मुत्त-सोचने की देर के अन्दर; वल्ले चँत्ताळ्-शीघ्र गयी; मारुति-हनुमान ने; कण्डान्-देखा; वरुह-आओ; अँन्नाण्-कहा । १७६

वह सबको भयभीत करनेवाले समुद्र से वलयित प्राचीन नगर लंका की हितैषिणी थी । उसकी आँखें मानो लंका का वासस्थान थीं । उसने हनुमान को देख लिया । रुको, खड़े हो जाओ —चिल्लाती हुई वह सोचने की देर के अन्दर तेज़ चली । हनुमान ने भी उसे देख लिया और बुलाया कि आओ । १७६

आहा	शँय्दा	यञ्जलै	पोलु	मरिविल्लाय्
शाहा	मूलन्	दिन्ऱुळल्	वार्मेऱ्	चलमँन्नाम्
पाहा	रिञ्जिप्	पौन्मदि	राविप्	पहैयादे
पोहा	यँत्ताळ्	पौङ्गळ	लँन्तप्	पुहैकण्णाळ् 177

पौङ्कु अळल् अँन्त-दहकती आग के समान; पुक् कण्णाळ्-धुएँ-सहित आँखों वाली; चाका मूलम्-शाक और कन्द; तिन्ऱु उळ्ळवार् मेल्-खाते फिरनेवालों पर; चलम् अँत्त आम्-क्रोध करने से क्या होगा; अरिविल्लाय्-बुद्धिहीन; आका-जो करना नहीं चाहिए; चँय्ताय्-वह काम किया है (तूने); अञ्चलै पोलुम्-शायद भय का अनुभव नहीं किया क्या; पाकु आर्-सुन्दरता से युक्त; पौन् इञ्चि मतिल्-स्वर्ण-निर्मित किले के प्राचीर को; तावि-लाँघकर; पकैयाते-शत्रुता मत करो; पोकाय्-चले जाओ; अँत्ताळ्-(डॉक्टर) कहा । १७७

उसकी आँखें धूम निकाल रही थीं, मानो वे भभककर जलती आग हों । उसने सोचा कि शाखामृग (पेड़ों पर रहनेवाले पशु या शाक-भाजी खानेवाला जीव) पर कोप करके क्या मिलेगा ? तो भी उसने डाँट बतायी—मूर्ख ! तुमने वह काम किया जो किसी को इस नगर में नहीं करना चाहिए । तुममें भय नहीं है शायद क्या ? सुन्दर और स्वर्णमय प्राचीर पर कूदकर मेरी शत्रुता मोल मत लो । चलो दूर । १७७

कळिया	बुळ्ळत्	तण्णन्	मत्तत्तिर्	कदमूळ
विळिया	निन्ऱे	नीदि	नलत्तिन्	विन्नैयोर्वान्

अळिया लिक्कुरे काण नललेला लिक्कुरे
अळिये तुरुराले पाव कुक्कुरे
लिक्कुरे तुरुराले पाव कुक्कुरे

लिक्कुरे तुरुराले 178

कळिया उळलेलु-त्यामाविक रुप से लिमका मन गवामन न होला या; अण्णले-
उस मदिमावन हुरुमान न; मललेल कलम मूळ-मन म कोय के उळले से; लिळिया
लिक्कुरे-उसकी रोककर; नीलि नललेल्ले-त्यामाविक के हुरे; लिक्कुरे-आव-काय
का महेरन जलनेवाला बनकर; अळियाले-(लंका-दशान का) इळ्ळक बनकर; इक्क
ऊर काणम-इस गुरी को देवन की; नललेलाले-सिक्कुरे से; अण्णिकुरे-आला
है; अळिये-गरीव म; उरुराले-आला ले; उवक्कु-लेरा; इक्कु-यहै;
इळ्ळ-कुक्कुरे; पाव-यया है; अंरुराले-पूला। १७८

मदिमामय हुरुमान अरुदियमन (या कणी डीग मारनेवाला नही)
या। उसके मन म कोप उठा। पर उसने उसे दवा दिया। नीलि-
मार्ग के काय को जाननेवाले उसने उस लंकादेवी से शानि के साथ कहा
कि मैं लंका देखने की अच्छी इच्छा करके यहाँ आया। मैं गरीब आया
ले तुम्हारी यया होनि हो गयी ?। १७८

अनेन मुनेन मेनेन वेडा
गोनेनय नीये पाव नललेल
अनेन रूदरु कयुव रसपा यळियनेनय
उनेन लूक्कु मुरेडी लिक्कुरेन
उरुराले 179

अनेन मुनेन-यह कहें वकने के पूरे हो; एक अं-जाओ कहें सब या;
नीये एकानु-गुम हो; न चलकर; अरि मारुम चोनेनय-उवर म बांल हो;
अटा-रे; नी-गुम; पावने-कौन हो; नीले-यावोन; गुरम-लियुरी को;
अट्टेले-लिहोले जलाया या; अनेन-उन शिवजी के समान (नील) या; अनेन-कु-
यह आने से; अनेन-उरुरे-उरुरे है; अळियनेनय-करणा योग; इ ऊर-यह गुर;
उनेनय अण्णम ऊर कौले-गुहारे आने योग गुर है यया; अनेन-कहकर; उर-
इळ; नक्काळ-हो। १७९

हुरुमान अपना बचन पूरा करे इसके पूरे हो उसने कहा कि जाओ,
कहेली है; पर जाने नही और बात बताने हो। रे गुम कौन हो ?
लिपुल्लक जैसे देव भी इधर आने से उरुरे है। गुम करणा के योग हो।
यह यया ऐसा सदा गार है कि गुम आओ ? यह कहकर वह खड़े हो
(अममा-मुपा रे।)। १७९

नक्काळ लक्कण डेयन मनलेरी नहेकौण्डान
अक्का नीदा गुरेगोल वनेदा युनदावि
उक्का लगेरु योडले युनरा लिक्कुरे
गुक्का लगेरु पोडले नुरुराले गुरेहोण्डान 180
पुन-आदरणीय; नक्काळ कण्ड-हैसनेवाली को देखकर; मानये-मन म;

ओर् नकै कौण्डान्-हँसा; अक्काल्-तब; आर् तान् चोल-किसके ही कहने से;
नी वन्ताय्-तुम आये; उत्तु आवि-तुम्हारे प्राण; उक्काल् अन्त्रि-मिटे विना;
ओटलै-नहीं भागोगे; अँन्त्राळ्-कहा (लंकादेवी ने); पुक्कळ् कौण्डान्-यशस्वी
हनुमान ने; इत्ति-इतना होने के बाद; इ ऊर् पुक्काल् अन्त्रि-इस पुरी में घुसे
विना; पोक्कलैन्-नहीं जाऊँगा; अँन्त्रान्-कहा । १८०

हँसती हुई उसको देखकर महिमावान हनुमान मन में हँसा । तब
उससे लंकादेवी ने पूछा कि तुम किसकी आज्ञा से यहाँ आये ? मरोगे
तभी भागोगे ? नहीं तो चलोगे नहीं क्या ? तिस पर यशस्वी हनुमान ने
अपना हठ दिखाया— अब इसको देखे वगैर लौट नहीं जाऊँगा । १८०

वञ्जड्	गौण्डान्	वानर	मल्लन्	वरुहालन्
तुञ्जुड्	गण्डा	लैन्नै	यिवन्शूळ्	तिरैयाळि
नञ्जड्	गौण्ड	कण्णुद	लैप्पो	तहुहिन्डात्
नैञ्जड्	गण्डे	कल्लैन	निन्ऱे	नितैहिन्डाळ् 181

वर कालन्-(मेरा शत्रु बनकर) आनेवाला यम भी; अँन्नै कण्डाल्-मुझे देखे
तो; तुञ्चुम्-मर जायगा; इवन्-यह तो; तिरै चूळ् आळि-लहरों से आवृत
समुद्र के; नञ्चम् उण्ट-विष के खादक; कण्णुतलै पोल्-भाल-नेत्र (शिवजी)
के समान; नकुकिन्ऱान्-हँसता है; वञ्चम् कौण्डान्-मन में वंचना रखता है;
वानरम् अल्लन्-वानर नहीं है; नैञ्चम् कण्डु-मन ताड़कर; कल् अँत्त-पत्थर के
समान; निन्ऱ-अचल खड़ा रहकर; नितैकिन्ऱाळ्-सोचती है । १८१

यह सुनकर लंकादेवी सोचने लगी । मुझसे शत्रुता करने यम
आयगा तो वह मर जायगा । यह तो भालनेत्र शिव के समान हँसता है,
जिन्होंने लहरावृत समुद्र से निकले विष को निगल लिया । यह वंचक
है । सचमुच वानर नहीं होगा । वह हनुमान का मन समझने का प्रयास
करती हुई पत्थर के समान अचल खड़ी रही । १८१

कौल्वा	मन्ऱेर्	कोळुरु	मिव्वू	रैन्ल्कौण्डाळ्
वैल्वाय्	नीयेल्	वेऱि	यैत्तत्तन्	विळितोरुम्
वल्वाय्	तोरुम्	वैङ्गन्नल्	पौङ्ग	मदिवानिल्
शौल्वा	यैन्ना	मूविलै	वैलैच्	चैलविट्टाळ् 182

कौल्वाम्-इसको मार दोगे; अन्ऱेल्-नहीं तो; इव्वूर्-यह पुर; कोळुरुम्-
नष्ट हो जायगा; अँत्तल्-ऐसा; कोण्डाळ्-सोचकर; नी वैल्वायेल्-तुम जीत सको
तो; वेऱि-जीत लो; अँत्त-ऐसा कहकर; वैम् कत्तल्-भयंकर (कोप की) अग्नि;
तन् विळि तोरुम्-अपनी आँख-आँख में; वल् वाय् तोरुम्-बलवान मुखों से; पौङ्क-
निकलने देते हुए; मति वानिल्-चन्द्र के आकाश में; चैल्वाय् अँन्ना-जाओ कहते
हुए; मू इलै वैलै-त्रिशूल को; चैल विट्टाळ्-(उसने) जाने को फेंका । १८२

उसने संकल्प किया कि हम इसे मार दें । नहीं तो इस नगर का

गण ही जायगा । उसने देवमान से कहा कि तुम जीव सकते हो जी जी ! फिर उसने अपनी आँखों और बलवान (आठों) मुखों से आग उगलती हुई विद्या की उस पर चलायी और चिल्लायी कि चलो चन्द्र के आकाश में (= स्वर्ग में = मरी) । १८२

तटितना	मन्त्रन	तन्त्रनिर	श्रुतन	दलनवलक
कटितना	गहम	विष्णुनि	मुरिकक	गुलनवल
अटितना	कपा	लुमब	दवप	वृपरकालम
पटितना	गुलन	दुगुलन	दुगुम	विद्यदात 183

तटितु आम अर्चन-तटितु ही कहने योग्य; तन् अतिर वल्लुम-अपनी और आनेवलि; तल्ल वेन-अतिन-सम शूल की; अण्णम पिळयाना-अपने संकल्प में कभी न चकनेवाले ने; कटितना-अपने दाँतों से काट; उसपर उवप-देवों की आनन्द देने हुए; उपर कालम पिटितना-वहिल काल जो जीवित रहे गयो उसके; वृवम गुणन-मन की मय से भरने हुए; कपाल-देवों से; विष्णुनि-आकाश में; कल्लुम-गहम; नाकम मुरिककम पाल-सर्प की जैसे लोडना हो; अटितना-तोड़ दिया । १८३

बड़े शूल तटितु के समान देवमान की ओर आ रहा था । दृढकल्प देवमान ने उस अतिन-सम शूल की अपने दाँतों से पकड़ लिया । फिर उसने उसकी आकाश में गहम सर्प की जैसे लोड़ लोड़ देव देवित हुए और लम्बी आयु वाली लंका का तोड़ दिया । उसे देखकर देव देवित हुए और लम्बी आयु वाली लंका का मन दहल उठा । १८३

इरुव	वल	नीरुल	काणा	वरियुपुल
मरुन	नेपुप	पलवड	काले	मलवल
उरुवक	कपा	लापुद	मलना	मलियमल
परुकि	कल्लुल	विष्णु	लरितन	पलियलान 184

वलम उरुव-शूल टटकर; नीरु अल्ल कण्ट-चूर्ण हुआ देखकर; अरि अण्ण-आम के समान ममककर; मरु-अन्ध; पल नेपुव पट-अनेक दिव्य आयुधों की; काले-ले; मलवल-लड़नेवाली उसके; उरुव-पास लाकर; आयुम अल्लाम-सभी आयुधों की; पलियलान-अपमय से हीन देवमान ने; अलियमल-विना बाकी छोड़; कपाल परुकि कल्लुल-अपने देवों से पकड़कर; विष्णुनि अटितना-आकाश में फूँक दिया । १८४

शूल की टटकर चूर्ण होते देख अनिममाना लंकादेवी अन्ध दिव्य आयुध चलाकर युद्ध करने लगी । अल्ल देवमान ने उन सबकी पकड़कर आकाश में फूँक दिया । १८५

वळङ्गुन्	दैवप्	पलबडं	काणाण्	मळैवान्मेल्
मुळङ्गुम्	मेह	मैन्त	मुरङ्गि	मुत्तिहिन्डाळ्
कळङ्गुम्	बन्डुम्	कुन्ऱुहो	डाडुङ्	गरमोच्चित्
तळङ्गुञ्	जैन्दीच्	चिन्द	वडित्ता	डहविल्लाळ् 185

तकव् इल्लाळ्-योग्यताहीन (लंकादेवी); वळङ्कुम्-अपने द्वारा चलाये गये; तैवप् पल् पटं-अनेक दिव्यायुधों को; काणाळ्-न देखकर; मेल् वान्-ऊपर आकाश में; मुळङ्कुम्-गरजनेवाले; मळै मेकम् अँन्त-जल-भरे मेघ के समान; मुरङ्गि-नारे लगाते हुए; मुत्तिकिन्डाळ्-कोप करके; तळङ्कुम् चैन् ती-शब्द के साथ लाल आग; चिन्त-बरसाती हुई; कुन्ऱु कौटु-गिरियों से; कळङ्कुम् पन्तुम्-"कळङ्कु" नाम के गोल बीजों और गेंदों को ले; आटुम्-खेलनेवाले; करम् ओच्चि-हाथों को उठाकर; अटित्ताळ्-मारा । १८५

लंका ने देखा कि वह जो भी हथियार फेंक रही थी उनका कहीं पता नहीं। वह बरसनेवाले घटाटोप के समान गरजकर कोप के साथ पर्वतों को उखाड़कर फेंकने लगी; मानो वह गेंद या 'कळङ्गु' नाम के गोल बीज को खेल में उछाल रही हो। उनमें से आग निकलने लगी। वह हाथ उठाकर जोर से हनुमान को उन पर्वतों से मारने लगी । १८५

अडिया	मुन्त	मङ्गै	यनैत्तु	मौरुकेयाल्
पिडिया	वैन्ते	पैण्णिवळ्	कौल्लिल्	पिळैयैन्ता
औडिया	नैञ्जत्	तोरडि	कौण्डा	नुयिरोडुम्
इडिये	रुण्ड	माल्वरै	पोन्मण्	णिडैवीळ्न्दाळ् 186

अडिया मुन्तम्-मारने से पहले; अङ्क अत्तैत्तुम्-उसके सुन्दर सभी (आठों) हाथों को; और केयाल्-अपने एक हाथ में; पिडिया-पकड़ लेकर; अँन्ते-यह क्या है; इवळ् पैण्-यह स्त्री है; कौल्लिल् पिळै-मारने पर (ही तो) अपराध लगेगा; अँन्ता-सोचकर; औडियान्-न हिचककर; नैञ्जत्तु-उसके हृदय पर; ओर् अटि कौण्डान्-एक प्रहार किया; इटि एरु-बहुत बड़े वज्र से; उण्ड-आहत; माल् वरै पोल्-बड़े पर्वत के समान; उयिरोटुम्-प्राणों के साथ; मण्णिटै वीळ्न्ताळ्-पृथ्वी पर गिरी । १८६

लंका के उन्हें छोड़ने से पूर्व ही हनुमान ने अपने हाथ से उसके आठों हाथों को ग्रस लिया। वह इस विचार से थकित नहीं हुआ कि यह क्या? यह तो स्त्री है। इसको जान से मारना ही तो अपराध होगा। (हम जान से नहीं मारेंगे)। उसने लंका के वक्ष पर एक प्रहार किया। वह प्रहार पाकर अंशनि-प्रहरित बड़े पर्वत के समान लंका पृथ्वी पर गिर गयी। उसके प्राण नहीं गये । १८६

विळुन्दा	णीन्दाळ्	वैङ्गुरु	दिच्चैम्	वुत्तल्वैळ्ळत्
तळुन्दा	निन्डा	णान्मुह	तार्द	मरुळ्न्डि

बकादेवी जी, नीचे गिरी, बहिन दुःखी हुई । गरम रक्त के प्रवाह
 में डूबी । फिर चतुर्मुख बहालाजी ने ऊँचा करके जा कहा या उसका निवर्तन
 करती हुई बहिन चली । फिर सर्वव्यापक श्रीराम के हँस हँसमान के सामने
 खड़ी होकर पड़ी बोली । १८७

[illegible]

देय-आदरणीयः कृते-पुत्रीः अपयम् ननुकृम-अपयप्रदान करीतवतिः अपय-
 अस्तीति कीः अस्ते अस्तिपाकि-कृपा का सत्त्व लोकरः इ मुदेर अयति-इस प्राचीन
 मगर स आकरः कापुत्र-संरक्षण करती आ रती है; यात इलडके आनेम-सं स्वय
 लका (नाम की) है; वीप नालिख-अपने कनेय (संरक्षण) काय स; इडकेकि-
 सूक गयीः उडमस निकले-मन अमित हो गया; इनेन लिख-पडे लयती;
 चरुते-पा गयी; वयति-वव जाओ; अने-कडकर; अडिनेति-अपयप्रान वी;
 याम-सं श्रीः उगस-सयः उगरेविवल-वला देगी; अडुड-कडो । १८८

आदर्शीय ! सुनी । अथप्रदायक अजदेव की कृपा का सत्त्व लेकर मैं इस लंका का संरक्षण करती आयी । मेरा नाम भी लंका है । अपने पहर के काम में बरा-सी चक हूँ और मन अमिल हो गया । उसके फलस्वरूप इस लघुता को पहुँच गया हूँ । तुम अथप्रदान दो और मुझे जीवित छोड़ दो । मैं तुमको सत्य पटना बताऊँगी । १८८

अनेन कालः गणपूर्वं यावन्नद मूर्धं
 सुतेन विनवि नरेकु मुरणवलिकं कुरङ्गानं रुतेनके
 कनेनलनं दनेनारं उणोडिके कायनदवनं उनेनके काणोडि
 विनेनिरं नरेरमं विनेनं विदेवडं निणं मनेरनं 189
 सुतेनं-सुत (ज अद्याल) से; यानं-सं; दनेन मूर्धं-दस यावीन नगर
 का; अनेनं कालमं-कालना समय; कापूर्वं-एषा कङ्गा; अनेनं-एषा;

वित्तवित्तेरुक्-पूछनेवाली मुझसे; मुरण् वलि-बहुत सबल; कुरङ्कु औत्तु-एक वानर; उन्तै-तुम्हें; कै तलम् तन्ताल्-हाथ से; तीण्टि-स्पर्श कर; कायन्त अन्तु-जब क्रोध दिखायगा; अन्तै काण्टि-उस दिन मुझसे मिलोगी; चित्तिर नकरम्-सुन्दर (लंका) नगर; पित्तै-वाद; वित्तैवतु-मिट जायगा; तिण्णम्-ध्रुव है; अन्तान्-कहा (ब्रह्मा ने) । १८६

मुक्त ब्रह्माजी से मैंने पूछा कि मैं कितने दिन इस प्राचीन नगर पर पहरा दूँ ? तब उन्होंने कहा कि अति बलिष्ठ एक वानर आयगा और अपने हाथ से स्पर्श कर तुम्हें दण्ड देगा । तब तुम अपना कार्य छोड़कर मुझसे आकर मिलोगी । उसके पश्चात् उस सुन्दर नगर का नाश हो जायेगा । यह ध्रुव है । १८९

अन्तदे मुडिन्द दैय वरम्बैल्लुम् बावन् दोरकुम्
अन्तुमी दियम्ब वेण्डुन् दहैयदो यिन्निम् इन्ताल्
उन्निय वैल्ला मुर्ऱु मुनक्कुमुर्ऱु राद दुण्डो
पौत्तन्हर् पुहुदि येन्ताप् पुहळ्न्दव छिर्ऱैज्जिप् पोनाळ् 190

ऐय-आदरणीय; अन्तते-वही; मुडिन्तु-क्रियान्वित हुआ; अरम्-वैल्लुम्-धर्म की जय होगी; पावम् तोरकुम्-पाप की पराजय होगी; अन्तुम् ईतु-यह कथन; इयम्ब वेण्डुम् तकैयतो-समझाने की आवश्यकता भी है क्या; इत्ति-आगे; उन्ताल्-तुमसे; उन्निय अल्लाम्-सोचा जो जायगा वह सभी; मुर्ऱुम्-पूरा होगा; उतक्कुम्-तुमसे; मुर्ऱातु-असाध्य; उण्डो-कुछ होगा क्या; पौत्त नकर् पुकुत्ति-स्वर्णनगरी में प्रवेश करो; अन्ता-ऐसा; पुहळ्न्तवळ्-उसकी महिमा गाकर; इर्ऱैज्जि-विनय करके; पोताळ्-चली । १९०

महिमावान ! ब्रह्माजी की वाणी अब चरितार्थ हो गयी । हाँ ! धर्म जीतेगा और पाप हार जायगा । यह कथन दुहराने की आवश्यकता भी है क्या ? आगे तुम जो भी चाहोगे वह सब पूरा होगा । तुमसे बन नहीं पड़े, ऐसा कोई कार्य भी होगा क्या ? जाओ ! स्वर्णनगर में प्रवेश करो । यह कहकर लंकादेवी ने हनुमान की सम्मान-सहित स्तुति की और विनय प्रदर्शन करके चली गयी । १९०

वीरनुम् विरुम्बि नोक्कि मैय्मैये विळैवु मः(ह्)दैन्
आरियन् कमल पाद महत्तुउ वणङ्गि याण्डप्
पूरिय रिलङ्गै मूदूर्प् पौन्मदि राविप् पुक्कान्
शोरिय पालिन् वेलैच् चिर्ऱिपिरै तैळित्त दन्तान् 191

वीरनुम्-वीर हनुमान; विरुम्पि नोक्कि-प्यार से देखकर; मैय्मैये-सच ही; विळैवुम् अ.तु-सम्भाव्य भी वही; अन्तु-सोचकर; आरियन् कमल पातम्-आर्य श्रीराम के कमल-चरणों का; अकत्तु उर-मन में लगाकर (स्मरण कर); वणङ्कि-नमस्कार करके; चोरिय-श्रेष्ठ; पालिन् वेलै-क्षीर-सागर में; चिर्ऱिपिरै-

छोटा-सा जामन; ढिंढोलेतु अंगुली-जो छिड़का गया हो उसके समान; आण्ड-
तब; अ-उत; पुरिपर-नीच लीगों के; डलङ्के मुँदरे-प्राचीन लंका नगर में;
पूँ में मलिन गति-स्वर्ण-प्राचीर की लक्ष्मण; पुष्पका-ने-प्रविष्ट हुआ। १६१

घोर हेतुमान ने उस पर प्यार की दृष्टि डाली। मन में सोचा कि
उसका कहेना सब है। वही होनेवाला है। उसने आधा श्लोक श्रीराम
के चरण-कमलों का ध्यान किया। फिर उसने जग-विख्यात नीच राक्षस
लीगों के उस प्राचीन लंका नगर में, स्वर्णप्राचीर की लक्ष्मण प्रवेश
किया। उसका प्रवेश श्लोक श्रीरामनगर में जामन की वृद्ध के छिड़कने के
समान था (सब विगड़ जानेवाला है)। १६१

वातुराडर मणिपुत्र सैयद सैयद मणिपुत्र
आनुरूप रिखलेव चीतरेप पहेलेशपद बळहे नोकि
अनेरिय वदपद वृचिव धीरुवा धीरुवा वृचिके
लीगुडिनन कोबलो वीरवा वीरवने दृष्कके गोणुडान 192

वातुराडर-आकाश से लगे; मणिपुत्र सैयद-रत्ननिर्मल; सैयद-निर्दोष;
मणिपुत्र-मणिपुत्र (कोटि-कोटि) असंख्यक सैयद; आनुर-पत; पुरे डलङ्के-गहरे अण्डकार
की; चीतरे-दूर करके; पकल सैयद-(रात की) दिन में बदल रहे थे, उस;
अनेक नोकि-सोचने की देवकर; अनेरिय-स्थायी; वनपद वृचिव-उदय के
वदन में; वातुराडर-आकाशवाती; धीरु डलङ्के-लीग-एकवक्त्रवा; लीगुडिनन
कोबलो-उत आया था; अनेर-ऐसा; आनुर-ऐसा-दृष्टिमान हेतुमान था; दृष्कके
कोणुडान-छिड़क गया। १६२

उस नगर में कितने ही प्रासाद थे। सब गगनध्यापी थे। रत्नों
से जड़ित थे। वे धने और विशाल अण्डकार की दूर करके दिन-रात बनी
रहे थे। उस सौंदर्य की देवकर दृष्टिमान हेतुमान भी बरा छिड़क गया
कि था स्थायी और उदयकालीन वदन ले एकवक्त्रवा सैय आ गया
है। १६२

मणिपुत्रमणि मण्ड मण्ड मण्डिख लहेरुन दाने
सुसुसुसु सुपरिव गानो मिहेयन विखडिप पोवाले
इसमदि विखडिप नपप पुपुपुपु उतपु नपुपु
मिपमिपि पवन नीवव वीपुडकिदि वनेद नपमा 193

मणिपुत्र-पवन रत्नों से जड़ित; मण्ड-सौंदर्य से मने; मण्डरे-वह प्राचीन नगर;
सुसुसुसु सुपरिव-गहरे अण्डकार के; - अकरुडन सुसुसुसु-हेरा रहे थे,
इस तथ्य की; उपरविवाले-समझकर; अ-वह; वीपु कतिरे वनेवने-गरम
किरणों का अध्यापन (सुंद); मिके-(अपना आना) अनपपपक; अने-समझकर;
विखडिप पोवाले-दूर से चला गया; इ मलिन डलङ्के नपपप-इस प्राचीरबलिप

लंका के मध्य; अँयुतुमेल्-आयगा तो; तन् मुत्-उसके सामने; अँयुतुम्-आनेवाले;
मिम्मिति अल्लत्तो-खद्योत नहीं होगा क्या । १६३

घने रूप से रत्नों से निर्मित सौधों से भरा नगर स्वयं और अकेले
सारे अन्धकार को मिटा रहा था । इस तत्त्व को हनुमान ने देखा और
सोचा कि गरम किरणों का स्वामी सूर्य यह सोचकर लंका के पास न आकर
दूर ही से चला गया कि वहाँ मेरा जाना अनावश्यक है । अगर वह
प्राचीरों से युक्त इस नगर के मध्य आयगा तो वह खद्योत के समान क्या
अल्प-प्रकाश न हो जायगा ? । १९३

पौशिवुर्	पशुम्बोर्	कुन्त्रिर्	पौन्मदि	नडुवट्	पूतु
वशैयर्	विळङ्गुर्	जोदि	मणियिना	लमैत्त	माडत्
तशैविलिव्	विलङ्गै	मुद्द	रारिर्	ळिन्मै	यालो
निशिशर	रायि	नारन्	नेडुनहर्	निरुद	रैल्लाम् 194

पौचिवु उरु-पिघलनेवाले; पचुम् पौन्-हरे (चोखे और पीले) स्वर्ण के;
कुन्त्रिल्-(त्रिकूट) पर्वत पर; पौन् मतिल् नडुवण्-स्वर्ण-प्राचीरों के मध्य; पूतु-
खिलकर; वशैयर्-निर्दोष; विळङ्कुम्-शोभित; चोति मणियिताल्-ज्योतिमय
मणियों से निर्मित; माडत्तु-सौधों से युक्त; अचैवु इल्-अचल; इ इलङ्कै मूत्तर्-
इस प्राचीन लंका में; आर् इरुळ्-भरा अन्धकार; इन्मैयालो-नहीं है, क्या इसलिये;
अ नेटु नकर्-उस विशाल नगर के; निरुत् अल्लाम्-राक्षस सभी; निचिचरर्
आयितार्-निशिचर बन गये । १६४

पिघलने का स्वभाव रखनेवाले उस पीले स्वर्ण के पर्वत पर वह
प्राचीन लंका बसा था । स्वर्ण प्राचीरों के मध्य था । उसमें निर्दोष रत्नों
से युक्त और प्रकाश फैलानेवाले अनेक प्रासाद थे । वह अकंपन था ।
उस नगर में कभी अँधेरा नहीं होता था । हनुमान ने यह सोचा तो उसे
एक बात सूझी । “तब क्या इसी कारण इस विशाल नगर के राक्षस
लोग निशाचर (रात में चलनेवाले) बन गये ?” । १९४

अँत्तुत्त	तियम्बि	वीदि	येहुद	लिळ्ळुक्क	मैन्नात्
तन्त्रहै	यरिय	मेत्ति	शुरुक्किमा	ळिहैयिर्	चारच्
चैन्त्रन	नेन्ब	मन्नो	तेवरुक्	कमुद	मीन्द
कुन्त्रैन्	वयोत्ति	वेन्दन्	पुहळैत्तक	कुववुत्	तोळान् 195

तेवरुक्कु-देवों को; अमुतम् ईन्त-जिसने अमृत दिलाया; कुन्त्रु अँत्त-उस
मन्दर पर्वत के समान रहनेवाले; अयोत्ति वेन्तन्-अयोध्याधिपति के; पुक्कळ् अँत्त-
यश के समान; कुववु-विशाल; तोळान्-भुजा वाला; अँत्तुत्त इयम्पि-ऐसा आप
ही आप कहते हुए; वीति एकुतल्-वीथियों पर जाना; इळ्ळुक्कम् अँत्ता-गलत
सझकर; तन् तकै-अपने स्वभाव के अनुरूप रहनेवाले; अरिय-अतिशय बृहत्; मेत्ति-

पूर्य-वई; गळ-नखरी के; आळि कळि-मकाश से युक्त; गारावित
मल पतित पतित-विषय मल-वहित मिश्रण की पवित्रता; वीर्य-म-वी छिद्रकारी
है; मा निजल-वे श्रवण व्यतिथी; अङ्ककङ्के-यव-नख; चूरनल-चरनी है
कसिल; कालिन् लोचन-वायुपुत्र; काण्डक-देवन के लिए; अपिपय-
कुंभ; अविपय-पर सुलभाप्य रहकर; नवे अकतव उर-अपने हृदय से स्थित;
अङ्कक पाल-पुनर-अरीय के समान; कटिपय-एक स्थान पर विद्य की
मालि) काल; वीज्य आक-ईसरे स्थान स्थित (अष्टा) वनत; श्रुतय-
(वीसरे स्थान पर रह की वरई) जाल; काटम-रसाला १६७

वहाँ के प्रासादों की दीवारें नाना मणियों से जड़ित थीं, जो नक्षत्रों के समान प्रकाश बिखेर रही थीं। स्थल-स्थल पर वह प्रकाश पुञ्जीभूत था। उनके बीच से जाते हुए हनुमान कभी लाल, कभी काला और कभी श्वेत वर्ण का हो जाता था। तब वह शिवजी, विष्णु और ब्रह्माजी के समान लगा। ये तीनों उन सुन्दर श्रीराम के ही विविध रूप हैं जो कि प्रत्यक्ष देखने को कठिन और ध्यान में प्राप्त करने को सुलभ होकर हनुमान के मन में विराजे हुए थे। १९७

ईट्दुवार्	तवम	लान्मर्	रीट्टिना	लियैव	दिन्मै
काट्दुवार्	विदिया	रिन्तुड्	गाण्गिर्पार्	काण्मि	तम्मा
पूट्दुवार्	मुलैपौ	राद	पौय्यिडै	नैयप्	पूनीर्
आट्दुवा	रमरर्	माद	राडुवा	ररक्कर्	मादर् 198

वित्तियार्-विधाता; ईट्दुवार्-अर्जन करनेवाले; तवम् अलाल्-तप के सिवा; मर्डू ईट्टिताल्-अन्य (धन आदि) अर्जन करें तो; इयैवतु इन्मै-युक्त नहीं होता इसको; काट्दुवार्-अनेक प्रकार से दरसा देंगे; इन्तुम् काण्किर्पार्-और भी देखना चाहनेवाले; काण्मिन्-देख लें; अमरर् मातर्-देवांगनाएँ; पूट्दुवार् मुलै-अँगियाबद्ध स्तनों के; पौरात पौय् इटै-भार को न सह सकनेवाली, और नहीं है ऐसा क्षीण रहनेवाली कमर के; नैय-दुःखी होते; पू नीर्-पुष्प-मिले जल से; आट्दुवार्-स्नान करातीं; अरक्कर् मातर्-राक्षस-स्त्रियाँ; आटुवार्-स्नान करतीं; अम्मा-आश्चर्य है मैया। १९८

विधाता लोगों को यह दरसाते हैं कि कमाना हो तो तप का फल कमाना है। अन्य धन आदि कमाने में कोई युक्तता नहीं है। यह आगे भी वे साबित करते रहेंगे। और जो इस बात का प्रमाण देखना चाहते हैं वे इधर देख लें। देवांगनाएँ अँगियाबद्ध भारी कुर्चों को सह न सकनेवाली और अभाव का सन्देह पैदा करने की उतनी क्षीण अपनी कमरों को दुःख देती हुई राक्षस-स्त्रियों को पुष्प (वास) -भरे जल से नहलाती हैं और वे राक्षस-स्त्रियाँ स्नान कर रही हैं। १९८

कान्ह	मयिल्ह	ळैन्नक्	कळिमड	वन्न	मैन्न
आन्न	कमलप्	पोडु	पौलिदर	वरक्कर्	मादर्
तेनुहु	शरळच्	चोलैत्	तैवनी	राड्डिर्	रैण्णीर्
वानवर्	महळि	राट्ट	मज्जन	माडु	वारै 199

तेन् उकु-शहद जहाँ चूता है; चरळ चोलै-(तरुओं से भरे) उन उद्यानों में; तैव नीर्-देवी जल से भरी; आड्डु-(आकाशगंगा) नदी के; तैळ नीरिल्-स्वच्छ जल में; वानवर् मकळिर्-देववालाएँ; मज्जतम् आट्ट-मज्जन कराती हैं और; कान्तक मयिल्कळ् अन्न-वन-मयूरों के समान; कळि मट अन्नम् अन्न-मत्त बाल-मरालों के भी समान; अरक्कर् मातर्-राक्षस-स्त्रियाँ; आन्न कमलम् पोतु-

मुख-कमल; पलितर-शीश ऐसा; मञ्जवम् आदर्श-मञ्जन करनेवाली जो है वनकी । १६६

शब्द चनेवाले पदों से भरे उद्यानों में देवलतापू दिव्य आकाशागंगा के स्वरुचि बल में राक्षसियों की स्तान करा रही है और वे राक्षसियाँ वन-मधुरी और मल बालमयानों के समान मुख रूपी कमलों को खिलाने हुए स्तान कर रही थीं । हनुमान ने उनको देखा । १६९

इलकेका मरिच केरू बड़बड़े नरमवि नरपाछे
अलतलहेले लीकरके नीव बळनहेले नसेले पावले
कलकेकुर घुङ्गा नीकेक कनेनियरु ओह मारुहेले
मनरेकेकयाने-माडले गुमवर मळियवप पावेले वारे 200

इलकेका मरिचके-शास्त्रोक्त सीत से; पुर-पुत्र; अछे बक-सीत नरहे के; नरमवि-रार निकलनेवाली) नवियों के साथ रहनेवाली; नले पाछे-अछे 'पाछे' नाम की बोली को; अलतलक-लाक्षारसिद्ध; लीकरके-फलव-समान उगलियाँ को; नीव-डूँडावे हुए; अळन गुहारे-वाल के अगुसार मापकर; असेले पाडल-गाथा गाना; कलकेकुर-विगाडले हुए; घुङ्गा-क-सेव) गरजे तब; नीके-देकर; कनेनियरु चिसारके-देवक्यापू जो चिरियाँ थी; मने कयाने-अपने गुहारेलो से; माडले उमर-सीध के ऊपर; मळियव वाप-सेवा के मुखा को; पलितर-अरु करनेवालियों को । २००

चिरियाँ (पाछे नाम की) बोली का वादन कर रही थीं । उनमें सीत स्वयं के लिए सीत वलियाँ लगी थीं । उनका वादन शक्ति-सात रवियों के लिए सीत वलियाँ लगी थीं । उनका मुख वन्दे मुख गुरुजने लगे ली चिरियाँ ने अपने गुह-सम होयों से उनका मुख वन्दे कराया । २००

अनदपुम अनदर अनदर नमनिय वरुनियरु उडनिय
चिरनिलेन उडवम देवव मलिवळके कीळरुम केकेके
वतुडरु वरुनिलेन वरुनिलेन वरुनिलेन वरुनिलेन
कनदरुप मरुडि रडि नाडहेले गणनिय ३१ 201

अनद-अनदर; पुम अनदर देवव-गुहों के विमान बड़े लगे थे; नमनिय अरुडकेल-स्वर्णविभक्त नादप्रभवनी से; चिरनिलेन उडवम-मन की चाली चोख देनेवाली; देवव मलिवळके-दिव्य मलिवीप; अळिरुम-प्रकाश दे रही था; केकेके लक्ष्मि-आमनों पर आसीन होकर; वतुडरु निरलेन माकेके-आकर उड्डे हुए नम-आमनों के; वरुनिय नरि-कहे मार्ग से; वळनिलेन-न डिगकर; कनेनियरु मकळिर-गणवक्यापू; अडि मरुडके-जो नाटक प्रदर्शन करती है, उन नाटकों को; कालिकनरु-देवनेवाली को (हनुमान देवता गथा) । २०१

(हनुमान कैसे-कैसे लीगों को देखता गया ? —उनकी सुची दी जाती)

है ।) स्वर्ण-निर्मित रंगमञ्च है । उसमें सुन्दर पुष्पों का वितान तना है । - चिन्तामणि (जो माँगी हुई वस्तु दिला सकती है) दीप का काम दे रही है । उधर आसनों पर बैठे हैं राक्षस लोग । गंधर्व-स्त्रियाँ नर्तन-शास्त्र के ज्ञाताओं के निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार नाच दिखा रही हैं । उनको और राक्षस दर्शकों को (हनुमान ने देखा) । २०१

तिरुत्तिय पळिक्कु वेदित् तैळ्ळिय वेल्ह लैन्नक्
करुत्तियल् पुरैक्कु मुण्गट् करुङ्गयल् शैम्मै काट्ट
वरुत्तिय कौळुनर् तम्बाल् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द कामम्
अरुत्तिय पयिर्क्कु नीर्पो लरुन्ऱ वरुन्दु वारै 202

तिरुत्तिय-सुनिर्मित; पळिक्कु वेति-स्फटिक वेदियों पर; तैळ्ळिय वेल्ह लैन्न-साफ़ (तीक्ष्ण) भालों के समान; करुत्तु इयल्-मन की बात; उरैक्कुम्-कहनेवाले; उण् कण्-काजलयुक्त; करुम् कयल्-काली आँखें रूपी कयल मछलियाँ; शैम्मै काट्ट-लाल दिखें ऐसा; वरुत्तिय-दुःख देनेवाले; कौळुनर्-पति लोग; तम् पाल्-अपने पास; वरम्पु इन्ऱि-सीमा-रहित; अरुत्तिय-प्यार से जनाकर; वळर्न्त-पालित; काम पयिर्क्कु-काम रूपी पौधे को; नीर् पोल्-जलवत; अरु न्ऱवु-श्रेष्ठ सुरा को; अरुन्तुवारै-पीनेवालियों को । २०२

उसने सुरचित स्फटिक-वेदियों पर राक्षस-स्त्रियों को देखा जो सुरापान कर रही थीं । (उनके पति उनको दुःख देकर चले गये थे । अब लौटने पर स्त्रियाँ रूठी हुई थीं ।) उनकी कजरारी आँखें भाले के समान तीक्ष्ण थी और उनके मन (के रोष) को प्रतिबिम्बित कर रही थीं । पतियों ने मनवा लिया और उन्हें असीम प्रेम (काम की तृप्ति द्वारा) दे रहे थे । उस काम रूपी पौधे को मानो वे सुरा रूपी जल से सींच रही थीं । २०२

कोदरु कुवळै नाट्टड् गौळुनर्हण् वण्णम् कौळ्ळत्
तूडुळ्ड् गनियै वैन्ऱु तुवर्त्तवाय् वैण्मै तोन्ऱ
मादरु मैन्दर् तामु मौरुवर्पा लौरुवर् वैत्त
कादलड् गळ्ळुण् डार्पोन् मुऱैमुऱै कळिक्किन्ऱु शारै 203

कोतु अरु-निर्दोष; कुवळै नाट्टम्-कुवलय-सी आँखों ने (राक्षसियों की); कौळुनर्-प्रेमी पतियों को; कण् वण्णम्-आँखों का रंग; कौळ्ळ-अपना लिया; तूडुळ्ड् कत्तियै वैन्ऱु-"तूडुळ्म्" नाम की लता के लाल फलों को (रंग में) हराकर; तुवर्त्त वाय्-जो लाल था, उस मुख के; वैण्मै तोन्ऱ-श्वेत दिखते; मातरुम् मैन्तर् तामुम्-पुरुष और स्त्रियाँ जो; मौरुवर् पाल् मौरुवर् वैत्त-परस्पर करते थे; कातल् अम् कळ्ळुण्डार् पोल्-उस प्रेम रूपी सुरा का पान कर रहे हों; मुऱै मुऱै कळिक्किन्ऱु-शरीर-बारी-बारी से सुखानुभव करनेवालों को । २०३

(इस पद्य में भी संगम का दृश्य है ।) स्त्रियों की निर्दोष नील

३०८ । ॥ १५२ ॥ ॥ ॥

कर्मपद्धतः गौडिन्धक वाङ्मनक कलनरुतिनं दणिनिनं २०४

अभिज्ञानशकुन्तल-प्रारम्भे १०४ ।

২০৮ । ১৯৫৬ ৫ ৫।৫।৫৬ ৫ ৫৫৬

ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବୃଦ୍ଧକୃଷ୍ଣ ରାଜ ମଧ୍ୟସୂତ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ ୩୮ ୨୦୫

पुनर्जात होवे, उतको । २०५

कृ. क्रि.सं. नये अग्रराज से छठ गायी । वहे अग्रराज चनेके सम पर लाग

गया । प्राण विह्वल हो गये । वे अब अमृत-भरे मुख के द्वारा विष-भरी लम्बी साँसें छोड़ने लगीं । उनकी कमरें बिजली के समान तड़पकर शिथिल हुई । तब वे नूपुरों को शब्दित करते हुए लातें मारने लगीं तो उन स्त्रियों के (या पतियों के) शरीर पुलक से भर गये । २०५

उळ्ळडै मयक्का लुण्गण् शिवन्दुवाय् वैण्मै यूरित्
तुळ्ळिडैप् पुरुवड् गोट्टित् तुडिक्कवेर् पौडिक्कत् तूय
वैळ्ळिडै मरुड्गु लार्दम् मदिमुहम् वेडौन् इहिल्
कळ्ळिडैत् तोत्तुर् नोक्किक् कणवरैक् कन्नल्हित् इरै 206

तूय-स्वच्छ; वैळ् इटै-शून्य स्थान के समान; मरुड्कुलार्-कमर वालियाँ; उळ् उटै मयक्काल्-(सुरा-पान के) आन्तरिक नशे से; उण् कण्-कजरारी आँखें; चिवन्तु-लाल करके; वाय् वैण्मै ऊरि-मुखों के सफेद बनते; तुळ् पुरुवम्-चलित भौंहों के; इटै कोट्टि-मध्यभाग के कुचित होकर; तुडिक्क-तड़पते; वेर् पौडिक्क-स्वेद के बूँदों में निकलते; कळ् इटै-सुरा के (पात्र के) अन्दर; तम् मति मुक्कम्-उनके मुख के; वेडौन् इहिल् तोत्तुर्-दूसरे रूप में प्रतिबिम्बित होते; नोक्कि-उसको देखकर; कणवरै-अपने पतियों के साथ; कन्नल्किन्नारै-(उस प्रतिबिम्ब को अपने पति द्वारा छिपाये रखी गयी अन्य स्त्री समझकर) कोप करनेवालियों को । २०६

राक्षसी नारियों की कमरें इतनी महीन थीं कि स्वच्छ शून्य स्थान-सी लग रही थी । सुरापान से उत्पन्न नशे में उनकी आँखें लाल हो गयीं, अधर श्वेत बन गये । चञ्चल भौंहों के मध्यभाग कुचित होकर फड़क उठे । शरीर पर स्वेदकण भर आये । उन्होंने अपने सुरापात्र के अन्दर अपने ही मुखों को देखा । पर उनके चन्द्रानन विकृत लगे । तो उन्होंने समझ लिया कि उनके पतियों ने अन्य स्त्री को छिपा रखा है । वे अपने पतियों से कोप करने लगीं । ऐसी नारियों को भी हनुमान ने देखा । २०६

आलैयिन् मलैयिर् चालि मुळैयित्ति लमुद वाशच्
चोलैयिर् रुवश रिल्लिर् चोनहर् मत्तैयिर् रूय
वैलैयिर् कौळवी णाद वेर्कणार् कुमुदच् चैव्वाय्
वालैयिर् रूः तीन्देत् मान्दिन्ऱ् मयड्गु वारै 207

आलैयिल्-ईख में; मलैयिल्-पर्वत में; चालि मुळैयितिल्-शालि के अंकुर में; अमुत वाच-मधुर सुगन्धित; चोलैयिल्-उद्यानों में; तुवच् इल्लिल्-मधु-विक्रता के घर में; चोत्तर् मत्तैयिल्-यवनों के घरों में; तूय वैलैयिल्-पवित्र क्षीरसागर में; कौळ औणात-अप्राप्य; वेल् कणार्-भाला-सी आँखों वाली स्त्रियों के; कुमुत चैव्वाय्-कुमुद-मुख के; वाल् अयिर्ऋ-श्वेत दाँतों के मध्य; ऊः तीन्देत्-बहनेवाले मधुर रस को; मान्दिन्ऱ्-पान करके; मयड्कुवारै-मोहित रहनेवालों को । २०७

उसने पुरुषों को भी देखा, जो अपनी प्रेमिकाओं का अधर-रस पी कर मदमत्त हुए थे । वह रस ऐसा था, जो ईख में, पर्वतों पर, शालि के

अक्षरों में, सुवासित उद्यानों में मधुलिकों के घर में, यवनों के यवनों में या पवित्र क्षीरसागर से भी प्राप्य नहीं आ । २०७

अलमस सुलपुख मलरुमिषा मुलवृत्त कलवरं तमसू नवयुरप पिरित्तं विप्रमुम च्छेगळ सुळिरच सुळिल्लो लीय वीथ वळक्कपाल वधन दालि रारि

अलमस सुलपुख मलरुमिषा मुलवृत्त कलवरं तमसू नवयुरप पिरित्तं विप्रमुम च्छेगळ सुळिरच सुळिल्लो लीय वीथ वळक्कपाल वधन दालि रारि २०८

मनरे उक्क-हिन करतवेवाले; कणवारं तममे-पविष्या से; नवे उर-उरु:धामन
होकर; पिरित्तु-विड्डंकर; विमममे-उपर उठेवाले; मुले उक्क-रनने से विचल;
कनवे तीप-लेप के सुखले; मुळेळिलाला-काटा-होना; सुमे कळं मुळरि मलर मिने-
लाल, सुन्दर कमल फूल पर; मलरं पुरेलेगुन-ओर एक फूल फूला हो जसे; वळे
कपाल-ककणमण्डित होय पर; वनवमं ताळिका-वदन का पारण करके; अलमसमं
रविचित्रोदय-अकलाले प्राणी के साथ; न्हिदु वरिचरतु-ठंडी लम्बी आहें मरकर;
अपरिक्रम्यारं-युक्ति होवेवालिप्रां को । २०८

अथर्वकण्ठार-शक्तिन विनिर्वाहियां को । २०८

कृष्ण विदुषा अपन प्रियया से विछुड़ो था। वे अच्छे और अच्छे गानों से घरे प्रेम थे। प्रेमिकाओं को वियोग-दुःख सताते लगे। उनके फड़कते रंगों का चन्दन-लेप सूँघ गया। उनके गान छपटाते लगे। इस स्थिति में वे अपनी दुखियाँ पर मुख रखे गुमगुम बैठो थीं। तब ऐसा लगा मानो कार्ट-रहित गाल वाले कमल के एक लाल फूल पर और एक कमल फूल हो। वे निःशवास छिड़ते हुए शोक-शक्त हो रही थीं। २०

પૃથિવ્યઃ પૃથ્વીર્નરં દમ્પતી લ્પદિય કાદ લાલે
 નાદિયઃ ગમ્યિત્વં લેકકં પુષ્પિના ષુઙ્ગિત્વં ચારંવારં
 માદ્યપરં કાદ ક્ષણં વલિયુષ્મણં વૃત્તેન કળ્યાણરં
 સૈદ્યપરં મુકુત વીકૃતિ પુષ્પરંવત્સુ પૃથિકૃતિનં રૂપં 209

पुति-आयुधधारी; अम-लपवान; कठिनरं नम पाल-पतिप्रां पर; अयुध-प-
रल द्रुप; काललाल-प्रम के करण; चपटिला उलिन-निर्वीर शरीर के समान;
लातु द्रुक्क-पराग से मरी; अमठि सेकके-गड़ेवार शय्या पर; चारैवार-आ-
निरा; मा गुपर-बहुत दुःख देवाली; काल गुण-कामंडल की प्रणाल से;
बलिपुत्र मल-राह पर; ब्रह्म कण्ठार-लिठके आँखों के साथ; पैलपर मुकल
नोकरिक-द्विप्रा की मुकुटाहेत से; चपिर बमि-गण फिर से पाकर;
मुटिकोकरनर-संभवानिया को । २०६

५०६ । श्री महाभारत-संस्कृत-विश्वकोश

(और ऊँठ बिरहियायों का निवर्ण है—) ये दिवयों अपने प्यारे वीर पतियों पर अगाध प्रेम रखती हैं। वे वीर दैवियायों हैं। वे वीर गंध हैं और ये बिरहियायों अपनी सुध-बुध खोकर निर्जीव-वी बन जाती हैं और शय्या पर जाकर मिर जाती हैं, जिस पर पराना फैलाया गया है। उनकी

कामेच्छा तीव्र हो जाती है और उनकी आँखें पतियों के आने की राह पर लगी हुई हैं। तब दूतियाँ आती हैं और उनके मुखों में हँसी की झलक देखकर नायिकाएँ आश्वासन पाती हैं। उनके गये प्राण फिर आ जाते हैं और वे बेचैन होती हैं। हनुमान ने उनको देखा। २०९

शङ्गोडु शिलम्बु नूलुम् बादशा लहमुन् दाळप्
 पोङ्गुपेर् मुरश मारप्प विल्लुर् तैय्वम् बोड्डिक्
 कोङ्गलर् कून्दर् चैव्वा यरम्बैयर् पाणि कीट्टि
 मङ्गल कीदम् पाड मलर्प्पलि वहुक्किन् शरै 210

चङ्कोटु-शंख-कंगनों के साथ; नूलुम् चिलम्पुम्-मंगलसूत्र और नूपुर; पातचालकमुम्-'पादजालक' नामक पैजनियाँ; ताळ-लटकों; पोङ्कु पेर् मुरचम्-ऊँचा शब्द करनेवाली भेरियाँ; आरप्प-वज्रों; कोङ्कु अलर्-सुगन्धित फूलों के साथ शोभनेवाले; कून्तल्-केश; चैव्वाय्-लाल अधर; अरम्पयर्-(इनसे युक्त) अप्सराएँ; पाणि कीट्टि-तालियाँ पीटती हुई; मङ्कल कीतम् पाट-मंगल-गीत गा रही है; इल् उट्टै तैय्वम्-गृहस्थ देवताओं की; पोड्डि-पूजा करके; मलर् पलि-फूलों की बलि; वहुक्किन्शरै-जो चढ़ाते हैं उन लोगों को। २१०

अप्सराएँ तालियाँ पीटकर मंगल-गीत गा रही थीं। तब उनके शंख-कंगन, मंगलसूत्र, पैरों के नूपुर, पैजनी आदि आभरण लटके। भेरियाँ ठनकती थीं। सुवासित पुष्पों से अलंकृत केश और लाल अधरों वाली अप्सराएँ गा रही थीं और राक्षसियाँ अपने घर के देवताओं को पुष्प-बलि (पुष्पाञ्जलि) चढ़ा रही थी। हनुमान ने उनको देखा। २१०

इळैतौडर् विल्लुम् वाळु मिरुळौडु मलैय याणर्क्
 कुळैतौडर् नयनक् कूर्वेल कुमरर्नैञ्जु जुरुवक् कोट्टि
 मुळैतौडर् शङ्गु पेरि मुहिलैन् मुळङ्ग मूरि
 मळैतौडर् मञ्जै यैन्न् विळावौडु वरुहिन् शरै 211

इळै तौटर्-आभरणों से छूटनेवाले; विल्लुम् वाळुम्-धनु और तलवार के आकार के प्रकाश की रेखाएँ; इरुळौडु मलैय-अन्धकार के साथ युद्ध करतीं; याणर् कुळै तौटर्-सुन्दर कुण्डलों तक आयत; नयनम्-आँखें; कूर् वेल्-रूपी तीक्ष्ण भालों को; कुमरर्-वीर तरुणों के; नैञ्चु उरुव-वक्षों को छेदते हुए; कोट्टि-वक्र गति से चलाकर; मुळै तौटर् चङ्कु-अन्दर छेद के साथ रहनेवाले शंख; पेरि-भेरियाँ; मुहिलैन् मुळङ्क-मेघों के समान गरजती है; मूरि मळै तौटर्-मेघ को देखकर नाचनेवाले; मञ्जै अँन्त-मीरों के समान; विळावौडु-मंगल उत्सव मनाते हुए; वरुकिन्शरै-आनेवाली नवोढ़ा स्त्रियों को। २११

हनुमान ने नवोढ़ा युवतियों को देखा। उनके अंगों में आभरण शोभ रहे थे, जिनसे प्रकाश छूटता था और वह प्रकाश तलवारों और धनुओं के रूप में था और अन्धकार से युद्ध कर रहा था। वे सुन्दर कर्ण-कुण्डलों

तक आगत आँखें खड़ी दीक्षा मालों की अपने तरुण प्रेमियों के दिनों की निफर जाय, ऐसा वक-रीति से फँक रही थी। भिरियाँ और शीख भयों के गर्जन के समान गद उठा रहे थे। इस सज के साथ वे भय देखकर गावनेवाले मोरों के समान विवाहेतिसव में लगे आ रही थी। २११

पञ्चलिपत्तं सैन्यं रात्रिं संहिय पण्डितं नोड्मि
उच्छेद्य कलविपुं पृथुं वृद्धरुद्धरं कुरिय नृपेन्द्रं
सूक्ष्मे प्रियेयं नौकिकं यशजन विवृद्धं वेपुनरं
कळयवा ययन सैन्येयं वाळुं कळिकुकिनं ३१ २१२

पञ्चलिपत्तं-अथवा. सैन्यं सैन्यरहित-अपने प्रेमियों के साथ; कुरिय पण्डित-कुरुने; सूक्ष्मे-धीरे-धीरे; वृद्धरुद्धरं-उपर्य-करने में वन; नौकिक-विनवालिपत्तं; यशजन-प्रियेयं; कळयवा-वचक और उज्ज्वल आँखें; सैन्येयं-खड़ी; वाळु-नलवारों की; वृद्ध कळिकुकिन-रथान से बाहर जो निकालती रहती, उनको। २१२

शुद्धा में विनोदपूर्ण दृश्य उपस्थित हो रहे थे। प्रेमिका, जो पनि से लठ गयी थी, अब लठन छोटकर सफागी की इच्छा करती है। वह धीरे-धीरे मनोरम नयन खड़ी ललवारों की अपनी (नयन-) पलकों की खोजकर बाहर निकाल रही है। ऐसी प्रेमिकाओं की हनुमान ने देखा। २१२

आविय मनय माद लजिन कणरवां डूळ्ळम्
सविय करण मरुड्ळं गळ्ळनरी वळ्ळिय मीण्ड
वृवियम् वेडं वृनन मिनेविडं पुवळ वेहि
आवियुनं वासुं मयुके कळ्ळगद वड्ळुकिनं ३१ २१३

आवियम्-अन्य मानर-विन-सम दिव्या; कणरवां-कडों; उणरवां-बोव के साथ; वळ्ळम्-वेविय करण मरुड्ळम्-मन आदि अनन्यकरण और अन्य सब; कळ्ळनरी-आँखों के साथ चले गये; वृविय-प्रेमियों के साथ चले गये; मिनेविडं-पुवळ-वन वा गयी; मीण्ड-निकर; आवियुनं-मनय-माण और स्वयं; पुकेण्ड-एक-प्रविष्ट हो, जाकर; वड्ळुकिन-वचक करनेवालिपत्तों की। २१३

विन-सम दिव्या अपने प्रेमियों के चले जाने से लठ थी। वे बाहर आकर खड़ी रहती। उनके मन आदि अनन्यकरण प्रेमियों के साथ चले गये। अब वे लठरना निरर्थक समझकर आन्दर आयी। जब वे कोमल परी वाली दृष्टिनी के समान कमरों की लवकाती हुई केवल अपने प्राणों की अपने साथ ले बैठे कण्ड के साथ किवाड़ बन्द कर रही थी। हनुमान ने ऐसी दिव्या को देखा। २१३

किन्नर मिदुत्तम् बाडक् किळरुमळे किळित्तुत् तोन्नुम्
 मिन्नेनत् तरळम् वेय्न्द वेंण्णिर विमान मूर्न्दु
 पन्नह महळिर् चुर्त्तिप् पलाण्डिशै परवप् पण्णप्
 पौत्तहर् वीदि तोरुम् बुदुमनै पुहुहिन् शारै 214

पण्णै-स्त्रियों की भीड़ से भरी; पौत्तकर्-स्वर्णनगरी की; वीति तोरुम्-सड़क-सड़क में; किन्नर मिदुत्तम् पाट-किन्नर-मिथुन गा रहे हैं; चुर्त्ति-घेरकर; पन्नक मकळिर्-पन्नगकन्याएँ; पलाण्डिचै परव-‘अनेक बरस जिओ’ (जयजीव) का मंगल-गान गाती है; किळरु मळे-शोभायमान मेघों को; किळित्तु तोन्नुम्-चीरकर प्रकट होनेवाली; मिन् अँत्त-बिजली के समान; तरळम् वेय्न्त-मुक्ताओं से अलंकृत; वेंण्णिर विमानम् ऊर्न्तु-श्वेतवर्ण विमानों पर सवार होकर; पुत्तु मत्तै पुकुकिन्शारै-नये घरों में प्रवेश करनेवालों को । २१४

उस स्वर्ण नगरी की, जिसमें नारियाँ बहुत संख्या में पायी गयीं, वीथी-वीथी में किन्नर (जाति के पक्षी) -जोड़े गाते पाये गये । पन्नग-रमणियाँ धूम-धूमकर जयजीव के गान गा रही थीं । मेघ चीरकर प्रकट होनेवाली बिजली के समान मुक्ताओं से अलंकृत यानों पर बैठे हुए लोग अपने नये घरों में प्रवेश कर रहे थे । हनुमान ने उनको देखा । २१४

कोवैयुङ् गुळैयु मिन्नक् कौण्डलिन् मुरश मारप्पत्
 तेवर्निन् राशि कूड मुत्तिवर्शो बत्तङ्गळ् शैप्पप्
 पावैयर् कुळाङ्गळ् शूळप् पाट्टोडु वान् नाट्टुप्
 पूवैयर् पलाण्डु कूडप् पुदुमणम् पुणर्हिन् शारै 215

कौण्डलिन्-मेघ के समान; मुरचम् आरप्प-भेरियाँ बजती है; तेवर्-देव; निन्ड-खड़े होकर; आचि कूड-आशीर्वाद देते हैं; मुत्तिवर्-मुनिगण; चोपत्तङ्कळ्-चैप्प-वेदमन्त्र द्वारा मंगल शब्द उच्चारण करते हैं; पावैयर् कुळाङ्कळ्-स्त्रियों के समूह; पाट्टोडु-गाना गाते हुए; शूळ-घेरकर आते हैं; वान् नाट्टुप् पूवैयर्-व्योमलोक की अंगनाएँ; पलाण्डु कूड-जयजीव का गान करती हैं; कोवैयुम् गुळैयुम्-हार और कुण्डल; मिन्न-चमकते हैं; पुत्तु मणम् पुणर्किन्शारै-इस साज के साथ अभिनव विवाहोत्सव में लगे हुआँ को । २१५

जल-भरे मेघों के समान भेरियाँ नर्दन कर उठीं । देवगण स्थित होकर आशीर्वाद दे रहे थे । मुनिगण मंगल-वचन कह रहे थे । स्त्रियों के समूह गाते हुए घेरे आये । अप्सराएँ जयजीव के गान गा रही थीं । इस साज के साथ आभरणों और कुण्डलों को चमकने देते हुए नवविवाह में लगे रहे लोगों को भी देखा, हनुमान ने । २१५

इयक्किय ररक्कि मार्ह णाहिय रँज्जिल् विज्जै
 मुय्क्कडै यिलाद तिङ्गण् मुहत्तियर् मुदलि तोरै

216 ലിഖിത

362 1. 10. 1999

388 1 11 1972

॥ अकरुण-भाकरुण ! आनंद-वचन वना रसना ॥ २७

ଉତ୍ତର । ମାତ୍ର ସେ ମାତ୍ର

ᄃᆞᆫ ᄇᆡᆯ

[illegible]

राजा के समान लेटा हुआ था। वह समुद्र के भी समान लगा। सारा अन्धकार एक स्थान पर एकत्र हो गया हो, ऐसा और सभी पापों ने आकार लिया हो, ऐसा भी (वह दिख रहा था)। २१८

मुत्तिय कनैहडन् मुळुहि मूवहैत्, तन्तियल् कदियौडुन् दळुवित् तादुहु
मन्नेडुङ् गड्पह वतत्तु वैहिय, इन्तिळन् दैन्ऱुल्वन् दिळुहि येहवे 219

तातु उकु-पराग चूनेवाले; मन् नैटुम्-स्थायी तथा विशाल; कड्पक वतत्तु-कल्पक तरुओं के वन में; वैकिय-जो रहा; इन् इळम् तैन्ऱुल्-वह मधुर-मन्द मलयपवन; मुत्तिय-अपने सामने रहे; कनै कटल् मुळुकि-गर्जनशील सागर में डूबकर; तन् इयल्-अपने स्वभाव की; मूवकै कतियौडुम् तळुवि-त्रिविध (मन्द, साधारण, त्वरित) गति अपनाकर; वन्तु इळुकि-आकर (उसके शरीर में) लगकर; एकत्र-जाता रहा, तब। २१९

मन्द मलयपवन, जो पराग चूनेवाले अमर कल्पवन में संचार कर रहा था, समक्ष रहे शब्दायमान समुद्र में डूबकर अपनी त्रिविध (मन्द, साधारण और तीव्र) गतियों में आता था और उसके शरीर का स्पर्श करके जाता था। २१९

वानवर् महळिर्हाल् वरुड मामदि, आननङ् गण्डमण् डबत्तु लाय्हदिर्क्
कानहु कान्दमीक् कान्ऱ कामर्नोर्त्, तूनिऱ नरुन्दुळि मुहत्तिऱ् तोऱ्ऱवे 220

वातवर् मकळिर्-सुरनन्दिनियों; काल् वरुड-उसके पैर सहला रही थीं; आततम् मामति-उनके आनन रूपी श्रेष्ठ चन्द्र की; कण्ट-जहाँ देख सके; मण्टपत्तुळ्-उस मण्डप के अन्दर; आय् कतिर्-श्रेष्ठ प्रकाश-किरणों की; काल्-प्रकट करनेवाले; नकु-शोभायमान; कान्तम्-चन्द्रकान्त पत्थर; मी कान्ऱ-ऊपर जो निकाला; कामर्-मधुर; तू निऱ-स्वच्छ रंग की; नरुम्-सुवासित; नीर् तुळि-जल की बूँदें; मुकत्तिल् तोऱ्ऱवे-उसके मुख पर पड़कर झलक रही हैं, उस स्थिति में। २२०

देवललनाएँ उसके पैर सहला रही थीं। उनके आनन रूपी चन्द्र की सन्निधि के कारण, उस मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ प्रभा फैलानेवाली चन्द्रकान्त मणियों से जल की बूँदें निक्षित हुई। वे शुद्ध और सुगन्धित बूँदें कुम्भकर्ण के मुख पर छितरी दिखीं। २२०

मूशिय	वुयिर्प्पेन्नु	मुडुहु	वादमुम्
आशैयिन्	पुऱत्तिडै	यळवि	वन्मैयाल्
नाशियि	तळवैयि	नडत्तक्	कण्डवन्
कूशिनन्	कौदित्तनन्	विदिर्त्त	कैयिनान् 221

मूचिय-गहरा; उयिर्प्पु अँतुम्-साँस रूपी; मुडुकु वातमुम्-तीव्र पवन भी; आशैयि-पुऱत्तिडै-दिशाओं के पार; यळवि-फैलकर; वन्मैयाल्-जोर के कारण;

नाविप्रियं अय्यविप्रियं-नाक लक; नन्देनके कण्ठ-लक्षिताना वृषकर; अवर्ण-वर्ष
(द्विमान); विविरेते कथितानि-दोष उल्लेखे द्वे; कथितानि-दोषा के लक्षण से
उत्तर; कथितानि-कथित द्विआ। २२१

उसका खोस बहते हो, घना, शब्दा के संगम था और वह दिगंत तक फैलता था। फिर कुम्भकर्ण के अन्दर खोचने के बल से लौट-आया। उसको उसकी वासिका से छूटने और लौट आने का प्रकार देखकर हेनुमान हँस हिलाले हुए प्रभावित हुआ। उसे भय लगा और उसने उस देवा के माग से अपने को बचाये रखा। उसे अपना क्रोध आया। २११

पूँतिपुन	पूँतिवसुम	वणव	पुपुपुपुपु	कीजला	मावम	दीवने
कितवुड	गुडियव	कुडकुड	पुपुपुपु	कीजला	मावम	दीवने
वाडिय	वडवला	कुडकुड	पुपुपुपु	कीजला	मावम	दीवने
अडिय	वरवपुन	पुपुपुपु	पुपुपुपु	कीजला	मावम	दीवने

पुष्टिपत्रं नांकि-धनं का सप्तैः विवर्त्य अणव-आकाशं जले ह्रिपः । पापं पुष्क-
लं नागा हैः क्वे इव-अग्रिमः । ध्वं काटियवर्-सधकर कूर (कुरसकण) काः
उत्तिरपुण्य-धवासः कटिल-अधम रीति सः वाण्ड्य-रुदनेवालेः । उलकलास-सादे
नांकी काः । पुष्टकृत्सु मावनम्-मिदनेवाला । चण्डमावन हैः । अष्टिपत्रं वरव-अनय
का आवासः । पादेति-दैवकर (प्रतीक्षा करते ह्रिप) : । उठनेवले अतिवत-धूम रही है, ।
पुसा नागा । १२१२

क्रिश्चकर्म ते जे उच्छेवास ओई उनके कारण धूलपतल रही ओर
आकाश तक जा गयी । उस अन्तम कर रीक्षस के भयकर उवास क्या है
साक्षात् लोकनाथक चण्डमाखन है, जो गुगान की पतीक्षा में समता रही
है । २२२

पद्धिर्मुन	महिषिर्मुन	पद्धिर्मुन	महिषिर्मुन
अद्वैतबोधे	बापमहिने	बापमहिने	बापमहिने
गुह्येर्गात्रे	मुक्तकृष्ण	मुक्तकृष्ण	मुक्तकृष्ण
महिषिना	मुक्तिमुहने	मुक्तिमुहने	मुक्तिमुहने

पार्श्वे 223

सतिप्रति-सद को; एक अंग पकृत-शरीर समझकर उसको दो भागों में चीरकर;
अर्क इल-स विगड़नेवाले; पड़े बाप-अपने बड़े मुल के (दोनों ओर); पाद उर-
युवन रीति से; सदने-प्रासाद; अरवतुवासे अंग-जाना हो जैसे; पुष्पादे
मुलक-धूप के साथ शब्द करनेवाला; पर उदिरपु-बड़ा श्वास; प्राक्किप-लिप्त
उपर आना आ; नकिल-उस हंस-हीन; मुलमुकत-बड़े मुल से; अंगि

लीन-एक दाँत प्रकट करने हुए । २२३

उसके मुख के दोनों ओर बकदल दिखायी दिये । वे पूर्णवयस्क के दो खजूरों के समान लगे । ऐसा लगा कि कृत्यकर्ता ने वयस्क की भाँति

मानकर उसके दो टुकड़े किये और अपने मुख में दोनों कोरों में डालकर उसे खा रहा हो ! धुएँ के साथ (खुरटि के) शब्द निकालनेवाले उसके हास-हीन भयंकर बड़े मुख में उसके वक्रदाँत ऐसे लगे । २२३

तडैपुहु	मन्दिरन्	दहैन्द	नाहम्बोल्
इडैपुहु	लरियदो	रुक्क	मैय्दिनान्
कडैयुह	मुडिर्वेनुड्	गाल	मोर्न्दयल्
पुडैपेय	रानैडुड्	गडलुम्	बोलवे 224

तटै पुक्कु मन्तिरम्-वेग मिटानेवाले मन्त्र द्वारा; तर्कन्त नाकम् पोल्-रोके गये नाग की तरह; कटै युक्कु मुटिर्वेतुम्-(चौथे) आखिरी युग का अन्त; कालम्-काल; ओर्नु-देखकर (प्रतीक्षा करके); अयल् पुटै पयरा-बाजू में न हटनेवाले (और चुप पड़े रहनेवाले); नैदुम् कटलुम्-विशाल सागर; पोल्-के समान; इटै पुक्कु अरियतु-मध्य पहुँचकर जिसका भंग न किया जा सका; ओर् उरक्कम्-ऐसी एक निद्रा में; अय्यत्तितान्-मग्न रहा । २२४

अवरोधनमन्त्र-वद्ध नाग के समान, और युगांत की प्रतीक्षा में, इधर-उधर न चलकर अवरुद्ध पड़े हुए विशाल सागर के समान कुम्भकर्ण अभग्न, गहरी निद्रा में मग्न पड़ा था । २२४

आव	दाहिय	तन्मैय	वरक्कत्तै	यरक्कर्
कोर्वै	तानिन्ऱ	कुणमिलि	यिवत्तैन्क्	कोण्डान्
काव	नाट्टङ्गळ्	पौरियुहक्	कनलैन्क्	कनन्ऱान्
एव	तोविवै	निरैवर्	सूवरहळ्	नुमीट्टान् 225

आवताकिय-ऐसी; तन्मैय-स्थिति में रहे; अरक्कत्तै-राक्षस (कुम्भकर्ण) को; इवन् सूवर् इरैवर्कळ्-यह तीन राक्षस-पतियों के; अँतुम् ईट्टान्-समूह में एक है; एवतो-कौन है; इवन्-यह; अरक्कर् को अँता निन्ऱ-राक्षसों का राजा जो है वह; कुणमिलि-गुणहीन (रावण) ही; अँतक् कोण्डान्-ऐसा मान लिया; कावल् नाट्टङ्गळ्-रक्षणसमर्थ आँखों में; पौरि उक्-अंगारे उगलते हुए; कनलैन्-आग के समान; कनन्ऱान्-कुपित हुआ । २२५

हनुमान ने इस तरह सोते हुए कुम्भकर्ण को देखकर विचार किया कि यह तीन राक्षसों में एक होगा । वह उनमें कौन होगा ? फिर उसने सोचा कि यही वह राक्षसाधिपति, गुणहीन रावण होगा । यह विचार करते ही उसके मन में अत्यन्त क्रोध उमड़ उठा । उसकी आँखों से अंगारे छूटने लगे । वह ऐसा आग-बबूला हो गया मानो वही आग बना हो । २२५

कुरुहि	नोक्किमऱ्	इवन्ऱलै	यौरुबडुड्	गुन्ऱत्
तिरुहु	तिण्बुय	मिरुबडु	मिवर्किले	यैन्ना
मरुहि	येरिय	मुनिर्वेनुम्	वडवैवैड्	गनलै
अरिवै	तम्बैरुम्	बरवैयम्	बुत्तलिता	लवित्तान् 226

इसकावत् एक-यह शीराम के यश का ही दूसरा रूप है; अर्ध-प्रेम मात्र; नलनेत्र-गुण बाला; मरुत कंडक-अद्वैतिकाया, सबर्ण; माणिक्य-अलक-सर्वना की कलरि स; मणिक्य-विषय के; आदि अरुणक-वर्ण के सभा; अमरम-समागच्छा; देवामुच्छ-देवावर्ण; पादल वेदिक-गान के सवर्ण; पदति मण्डप-विद्या-विवादमण्डप; सुतल पल्लव-आदि अनेक स्थानों से; गति-खिला हुआ; पृथिवी-गण १ २२८

हनुमान श्रीराम का यश ही माना जाय ऐसा श्रेष्ठ और गुणपूर्ण था । वह सीताजी को खोजते हुए अनेक सौधो, भवनों की पंक्तियो, स्त्रियों के खेल के मञ्चों, विद्या-विवादमण्डपों, देवालियों, संगीतसभामण्डपों आदि सभी स्थानों में भ्रमण करता गया । २२८

मणिहोळ्	वायिलिङ्	चाळरत्	तलङ्गळिन्	मलरिल्
कणिहो	णाळत्तिङ्	कालेत्तप्	पुहैयनक्	कलक्कुम्
नुणुहुम्	वीङ्गुम्	इवन्निलै	यावरे	नुवल्वार्
अणुविन्	मेरुवि	ताळिया	नैनच्चेलु	मरिवोन् 229

आळियान् अँत-चक्रधारी (विष्णु भगवान) के समान; अणुविन्-अणु के रूप में; मेरुविन्-मेरु के समान; चेलुम्-जा सकनेवाला; अरिवोन्-बुद्धिमान; मणि कोळ् वायिलिल्-रत्नालंकृत द्वारों; चाळरत् तलङ्कळिल्-झरोखों में; मलरिल्-पुष्पों; कणि कोळ्-सूक्ष्म; नाळत्तिल्-नालों में; काल् अँत-हवा के समान; पुक्कै अँत-धुएँ के समान; कलक्कुम्-जाता; नुणुकुम्-बहुत ही महीन रूप में पहुँचता; वीङ्कुम्-स्थूल हो जाता; इवन् निलै-इसकी स्थिति; यावरे-कौन ही; नुवल्वार्-बता सकता है । २२६

हनुमान बुद्धिमान और चतुर था । वह कभी धुएँ के समान जाता, कभी हवा के समान । मणिमण्डित कपाटों वाले द्वारों, झरोखों में ही क्या ? सूक्ष्म नालों में और फूलों पर भी खोज लगाता जा रहा था । अणु से भी छोटा और मेरु से भी बड़ा बनकर चक्रधारी विष्णुदेव के समान जाने का सामर्थ्य रखनेवाले उसके सम्बन्ध में कौन बता सकेगा ? । २२९

एन्द	लिव्वहै	यैव्वळि	मरुङ्गिन्	मैय्दिक्
कान्दण्	मैल्विरन्	मडन्दैयर्	यारैयुङ्	गाण्वान्
वेन्दर्	वेदियर्	मेलुळोर्	कीळुळोर्	विरुम्बप्
पोन्द	पुण्णियन्	कण्णहन्	कोयिलुट्	पुक्कान् 230

एन्तल्-सम्मान्य; कान्तल् अँल् विरल्-'कान्दळ' (नामक पुष्प) के समान मृदु उँगलियों वाली; मटन्तैयर्-रमणियाँ; यारैयुम्-सभी को; काण्पान्-देखता; इव्वक्कै-इस रीति से; अँ वळि मरुङ्किन्-सभी मार्गों व स्थलों में; अँय्ति-जाकर; वेन्तर्-राजा; वेतियर्-ब्राह्मण; मेलुळोर्-उच्च; कीळुळोर्-और नीच; विरुम्ब-सभी के प्रिय; पोन्त पुण्णियन्-जो प्रकट हुआ था, उस धर्मात्मा (विभीषण) के; कण् अकन् कोयिलुट्-विशाल महल में; पुक्कान्-प्रविष्ट हुआ । २३०

सम्मान्य हनुमान 'कान्दळ' पुष्प के समान उँगली वाली रमणियों में भी सीताजी की खोज करता चला । इस तरह सभी भागों और स्थलों में घूमते हुए वह विभीषण के विशाल महल में आया । विभीषण राजा लोग, ब्राह्मण, देव, नाग सभी लोगों के प्यार और सम्मान का पात्र था । २३०

सुन्दर रसवत्परं सुन्दरितरं सुष्ठुमतिं सुष्ठुतेजसं
 चित्रं रसवत्पुलं वायुचित्रितरं पलरूपं दूरितं
 मन्दि रसवल कञ्जद्वयं मनवित्तमं शूलवान्
 इति रसिभिरुपनिर्दिष्टं 233

मुत्तु-पहली श्रेणी के; मुळुमति मुकत्तु-पूर्णचन्द्र के समान आननों में; चिन्तुरम् पयिल्-लाल रंग के; वाय्चचियर्-अधरों के साथ रहनेवाली; अरम्पयर् मुतलितर् पलरैयुम्-रम्भा आदि अनेक स्त्रियों को; तैरिन्तु-देखकर; पल मन्तिरम् कटन्तु-अनेक घरों को पार कर; तन् मत्तत्तिन् मुन् चैल्वान्-अपने मन से भी आगे जाता हुआ; इन्तिरन् इरुन्त-(पहले) इन्द्र जहाँ कैद रहा; चिर् वैयिलिन् कटै-उस कारागृह के द्वार को; अँतिरन्तान्-सामने देखा । २३३

उनमें रम्भा आदि चन्द्रानना सिद्धराधरा देवांगनाओं को देखकर हनुमान आगे गया । अनेक प्रासादों को पार करके हनुमान अपने मन की गति से भी अधिक तीव्र गति से चलकर उस कारागृह के द्वार पर पहुँचा जिसमें देवेन्द्र कभी बन्दी रहा । २३३

एदि	येन्दिय	तडक्कैयर्	पिरैयैयि	डिलङ्ग
मूडु	रैप्पैरुडु	गदैहळुम्	बिदिर्हळु	मौळिवार्
ओदि	लायिर	मायिर	मुरुवलि	यरक्कर्
काडु	वैञ्जित्तक	कळियितर्	कावलैक्	कडन्दान् 234

ओतिल्-कहें तो; एति एन्तिय-आयुधधारी; तडक्कैयर्-विशाल हाथों के; काटु वैञ्चित्त-घातक भयंकर क्रोध रूपी सुरापान से; कळियितर्-मत्त; पिरै अँयिड्ड इलङ्क-अर्धचन्द्राकार (वक्र) दाँतों को प्रकट करते हुए; मूतुरै पैरु कत्तैकळुम्-पुराने बड़े चरित्रों और; पितिरकळुम्-पहेलियों को; मौळिवार्-आपस में कहते हुए; आयिरम् आयिरम्-सहस्र-सहस्र; उरु वलि अरक्कर्-अतिबली राक्षसों के बने; कावलै-पहरे को; कटन्तान्-पार करके अन्दर गया । २३४

वहाँ की स्थिति कहनी हो— तो आयुधधारी, शत्रुसंहारक और क्रोध रूपी आसवपान से मत्त सहस्र-सहस्र अति बली राक्षस आपस में पुराने चरित्र और पहेलियाँ कहते हुए पहरा दे रहे थे । हनुमान उस पहरे को पार कर आगे गया । २३४

मुक्क	णोक्किनन्	मुडैमह	तरुवहै	मुहमुम्
तिक्कु	नोक्किय	पुयङ्गळुञ्	जिलकरन्	दत्तैयान्
ऑक्क	नोक्कियर्	कुळात्तिडै	युरङ्गुहिन्	डानैप्
पुक्कु	नोक्किनन्	पुहैपुहा	वायित्तुम्	बुहुवान् 235

पुके पुका-जहाँ धुआँ भी प्रवेश नहीं कर सकता; वायित्तुम्-वहाँ भी; पुकुवान्-जो घुस सकता था, वह हनुमान; पुक्कु-प्रविष्ट होकर; मुक्कण् नोक्कितन्-त्रिनेत्र शिवजी के; मुडै मकन्-औरस पुत्र; अरुवकै मुक्कुम्-(कार्तिकेय) छः मुखों; तिक्कु नोक्किय पुयङ्कळुम्-दिशाओं की ओर बढ़े हुए करों में; चिल करन्ततैयान्-कुछ को छिपा लिया हो ऐसा; ऑक्क नोक्कियर्-एक समान उसकी ओर आँखें किये; कुळात्तिडै-सोनेवाली स्त्रियों के समूह के मध्य; उरङ्कुकिन्डानै-जो सो रहा था उसको (इन्द्रजित् को); नोक्कितन्-देखा (हनुमान ने) । २३५

धुएँ के लिए श्री अगस्त्य स्वामी में धुसकर जा सकवेवाला हेतुमान इन्द्रजित के शय्यागृहे में श्री धुस गया। परमेश्वर के औरस पुत्र कार्तिकेय के समान इन्द्रजित पर ईसा भी रहा था, जिन्होंने अपने अन्य दोषों और शिक्षायापी करों को छोड़ा लिया हो। उसके पास उसी की ओर आँख लगाये रहनेवाली स्त्रियों का समूह बैठा था। २३५

वड्युम्	वाळिपिर्	उरककनी	कणिविषयान्	महेवी
अळिपिन्	वाळिर्	यन्ययवन्	यावनी	वडियुम्
इळय	वीरन्	सनदयि	मिहववम्	वलनाळ्
उळयुम्	वृज्वम	मिववड	नैळवन	वृणरैतदान्

अळिपिन्-कादरा में; वाळ् और-सकुर सिह; अश्वयज्ञ-सदय यह; वड्युम्-वक; वाळ् अगिर्ह-उज्जवल दाँतों का; अरककनी-राक्षस है क्या; कणिविषयान् मकनी-परेश्वर (या जलने लगे) का आग्रह रखनेवाले जिवली। का पुत्र है; यावनी-और कौन है; अडियुम्-नहीं जाना; इळय वीरविम्-छोटे वीर (लक्ष्मण); एतेनखिम्-और सम्मान्य बड़े वीर औरास; इवववम्-दाँतों; पननाळ्-अनेक दिन; इववडम् उळयुम्-इसके साथ मिलने; वम् वमम्-ऐसा सपकर पुत्र; उळु-होने को है; अश्व उणरैतदान्-ऐसा अश्वमान कर लिया, हेतुमान ने। २३६

हेतुमान ने उसकी देखकर मन में सन्देह किया—क्या यह, जो कन्दरा में रहनेवाले और सिंह के समान सी रहा है, वकदल राक्षस है? या जिवली का सुपुत्र 'मुत्तान' (कार्तिकेय) ही है? कौन है? मैं नहीं जान पाता। जो है, इसके साथ छोटे राजा लक्ष्मण और सम्मान्य औरास की अनेक दिन लड़ना पड़ेगा। ऐसा वमासान युद्ध होने को है!—हेतुमान ने यह विषयस कर लिया। २३६

इवनं	पिण्डण	पुड्यपी	तिराण	वेवेन
इवानं	नात्तमुदन्नं	वीरवन्नं	तिरन्नं	मालाम्
अवनं	यवलवर्	निदरैयव	रैतवड्	मडिवा 237

निवनं-जिवली की; नात्त मुकत्तु अश्विनं-वसुध स्वामी की; निन्नं नद मालाम् अवन्-और विविकम विष्णु की; अल्लवर्-छोटे अन्य कोई; निकरैयवर्-इसकी सम्मान करणे; अन्नयुम्-ऐसा कहना था; अडिवा-वृद्धिमान होना क्या; इवनं-इसकी; इव वृत्त-विश्वरत्न सहस्रक के रूप में; उटय-जिसने भोजन किया है; पीर इरावणन्-युद्धोत्साही राजा; युवनम् मुत्तयुम्-नीनों लोको का; वड्युव-अप्य इआ; और पण्डित्- (सी)-कोई (बड़ा) बात हो; अश्व पुकरन्-ऐसा कहना; अश्वेन-इसकी सम्मानना ज्ञाव, वसुध और विविकम इन निवेदों से अन्य कोई भी कर सकेंगे—यह कहना वृद्धिमान होना क्या? (नहीं होगा)। इसकी क्या बात है। २३७

इसकी सम्मानना ज्ञाव, वसुध और विविकम इन निवेदों से अन्य कोई भी कर सकेंगे—यह कहना वृद्धिमान होना क्या? (नहीं होगा)। इसकी

रावण ने अपने सहायक के रूप में पाया है, तो युद्धप्रिय उसके तीनों लोकों के जीतने में कौन सी बड़ाई है ? । २३७

अँनू	कैम्मरित्	तिडँनिनू	कालतूतै	यिहपप
दनू	पोवदँत्	रायिर	मायिरत्	तडङ्गात्
तुनू	माळिहै	योळिह	डुरिशरत्	तुरुविच्
चँनू	तेडित	तिन्दिर	शित्तिनैत्	तीरुन्दान् 238

अँनू-ऐसा कहकर; कै मरित्तु-हाथ मटकाकर; इटै निनू-बीच में खड़ा रहकर; कालतूतै इकपपतु-समय नष्ट करना; अनू-(उचित) नहीं; पोवतु-जाना; अँनू-सोचकर; इन्तिर चित्तितै-इन्द्रजित् को; तीरुन्दान्-छोड़ गया; आयिरम् आयिरत्तु-सहस्र-सहस्र की गिनती में भी; अटङ्का-जो समा नहीं सके; तुनू-सटे रहे; माळिकै ओळिकळ्-सौधों की पंक्तियों में; तुरिचु अर-विना भूल-चूक के; तुरुवि चँनू-टटोलते हुए जाकर; तेडितन्-खोजा । २३८

यह कहते हुए उस भाव के समर्थन में उसने अपना हाथ झटकाया । फिर विचार किया कि स्थान-स्थान में खड़ा होकर समय नष्ट करना अच्छा नहीं है, पर जाना ही कर्तव्य है । उसने इन्द्रजित् को रहने देकर आगे सहस्र-सहस्र सौधों की पंक्तियों में घुस-घुसकर विना भूल या चूक के टटोलता हुआ जाता रहा । २३८

अक्कन्	माळिहै	कडन्दुपोय्	मेलदि	हायन्
तौक्क	कोयिलुन्	दम्बिय	रिल्लमुन्	दुरुवित्
तक्क	मन्दिरत्	तलैवर्हण्	मत्तैहळुन्	दडविप्
पुक्कु	नोङ्गित	निराहवन्	शरमेत्	पुहळोन् 239

पुक्कळोन्-यशस्वी; अक्कन् माळिकै-अक्षकुमार के महल को; कडन्तु-पार करके; मेल् पोय्-आगे जाकर; अतिकायन् तौक्क-अतिकायनिवसित; कोयिलुम्-प्रासाद में भी; तम्पियर् इल्लमुम्-कनिष्ठ भ्राताओं के गृहों में भी; तुरुवि-खोजकर; तक्क-योग्य; मन्तिरत् तलैवर्कळ्-मन्त्रीश्रेष्ठों के; मत्तैहळुम्-गृहों में भी; इराकवन् चरमेत्-श्रीराघव के बाण की तरह; पुक्कु-प्रवेश करके; तटवि-खोजकर; नोङ्कितन्-आगे गया । २३९

यशस्वी हनुमान अक्षकुमार के महल को पार कर अतिकाय के प्रासाद में आया । उसको भी छोड़कर उनके कनिष्ठ भ्राताओं के भवनों में गया । वहाँ खोजने के बाद सुयोग्य मन्त्रीवर्यों के महलों में जाकर खोज लगायी । वह श्रीराघव के शर के समान चलता रहा । २३९

इन्न	रामिरम्	बैरुम्बडैत्	तलैवर्ह	ळिरुक्कैप्
पोन्निन्	माळिहै	यायिर	कोडियुम्	बुक्कान्
कन्ति	मामदिर्	पुडत्तवन्	करन्दुर्	काण्बान्
शौन्	मून्तिन्	णडुवण	दहळियैत्	तीडरुन्दान् 240

इतनेर आम-ऐसे हो; इरुमपुलम-वहिल वडै; पडैलेलळवरुळ-सेना-पडियु के; इरुक्क-वासस्थान; अपिर कोटि-सहस्र कोटि; पडैलिये माळिकुम-स्वर्णशायो में थी; पुक्काय-प्रवेश करके; कर्त्तिल या मालि पुत्रिये-लिय और वडै प्राचीर के अन्दर; अवयु-रावण के; कर्त्तिय उरु-दिपकर रहने का स्थान; काण्णाय-देवते के लिए; चीनेन मूर्तिवडै-(पडैले) कथित तीन रसक खाद्यो में; नडवण-बीच की; अकळिय-खाई के पास; नडैरनेलाने-जा पडैवा । २४०

इस तरहे ऐसे वडैल वडै-वडै सेनापतियों के सहस्र-सहस्र स्वर्णमाल अतिनयवर प्राचीर के अन्दर तीन महल थे, जो तीन खाद्यों के मध्य थे । रावण लिप्टा रहला था । पडैले हो कहे गया है कि उस अवल और सौधों में गया । वडे रावण के स्थान को देवते को उरुक था, जहाँ इस तरहे ऐसे वडैल वडै-वडै सेनापतियों के सहस्र-सहस्र स्वर्णमाल

नलिकेक डक्कळ डूनवीर वुण्डिलाने डय
पलिकेक डरुपुवडै गडवडै पविचन डुडुपुपाने
इलिकेक डपपडै डुळुडैल किरनेदवडै डियानेन
कलिकेक डरुकिर नैडैरनेदव नडैलियुके कण्डाने 241

कलिकुट्ट-(सूय को फल समझकर उस) फल के लिए; अल कलिर-गाम किटामाली पर; नडैरनेलवडै-जा सपटा था; नल-अग्रभय; कडम कळिर अने-मल गल के समान; अरि वुण्डिलाने-अकेल; नय-लव गय, इसलिये; पलिके कडै पुलम कडवडै-शीतल सागर का अधिष्ठाता वडा देवता (वरुण); नरु पविचन वडैपुपाने-(इसमान के तरण से प्राप्त) अपने परिसर को पालने के लिए; इल कडपुवडै अने-अव नडै लव सका; एळे कडल किरनेलव-सात समुद्र मिलकर एक हो पडा है; अल कडवडैलाने-ऐसा सीमा (इसमान में); अकळिय कण्डाने-उस खाई की देवा । २४१

यह इतमान वही है जिसने अपने वचन में सूय को फल समझकर उस पर छल्ला मारी थी । वह अकेले महमल गल के समान समुद्र लव आया था । इस पर जल के अधिष्ठाता वरुणदेव ने अपना अपमान मान लिया और अब सीमा समुद्र अलव्य बनकर इतमान के सामने आकर पडै रहै । ऐसी खाई को इतमान ने सामने देवा । २४२

पलिकेक ननेनेड्डे निडङ्गन वणरवेनेल पलपे
अळिकेक कालनने कलहेलडै गल्लिले मुलवा
आळिकेक वुण्डिलनने नरुक्कनने यण्डिलयळ कडलडैळ
एळे मिनेनडैरुवै वुण्डियकी लामने निनेनेदने 242

पलिके-वही; नल नुदम किडङ्कु-अवली और लामो पडैवा; अने-ऐसा; अण्डरवेनेल-सातों गी (नडै); पल पर निडङ्ग-अनेक लोण वडै होकर; अळिकेक कालन-पुगी लक; उलकलाम कलिलेम-सात लोको को खोव डाले; उलवा-नी सी ऐसा नडै बन सकला; आळ कडलकळ एळेम-सीमा गडै सपडै; आळिकेक वम

चित्ततु-आज्ञाचक्र चलानेवाले क्रूर क्रोधी; अरक्कतै अञ्चि-राक्षस से डरकर;
इ नकर-इस नगर को; चुलाय कौल् आम्-घेर आये हैं शायद क्या; अँन नितैन्तान्-
ऐसा सोचा (हनुमान ने) । २४२

हनुमान ने विस्मय के साथ विचारा । इसको लम्बी खाई समझना
कोई मतलब नहीं रखता ! अनेक लोग युग-युगान्तर में सारे लोकों को
खोद डालें तब भी ऐसी खाई नहीं बन सकती । लगता है कि सातों
समुद्र आज्ञाचक्रधारी, क्रूर और क्रोधी रावण से डरकर इस नगर को घेरे
पड़े हैं ! । २४२

आय	दाहिय	वहन्बुत	लहळियै	यडैन्दान्
ताय	वेलैयि	तिरुमडि	विशैकोण्डु	ताविप्
पोय	कालत्तुम्	बोक्करि	दामैन्	पुहन्नान्
नाय	हन्पुहळ्	नडायपे	रुलहैला	नडन्दान् 243

नायकन् पुकळ् नटाय-नायक श्रीराम का यश जहाँ फैला था; पेरुलकैलाम्-उस
बड़े विश्व में सर्वत्र; नटन्तान्-जो घूम आया; आयतु आकिय-ऐसी; अकन्
पुत्तल्-विशाल जलराशि को; अकळियै अटैन्तान्-खाई को पहुँचा; ताय वेलैयिन्-
पहले तरित समुद्र से; इरु मटि विचै-दुगुनी तीव्र-गति; कौण्डु-अपनाकर; तावि
पोय कालत्तुम्-लाँघ चलूँ तो भी; पोक्कु अरितु आम्-तारना कठिन होगा; अँन्ड
पूकन्तान्-ऐसा (आप ही आप) बोला । २४३

हनुमान उन सभी लोकों में घूम आया था (या व्याप आया था),
जहाँ हमारे नायक प्रभु श्रीराम का यश व्याप्त है । वह उस खाई के पास
आया । आप ही आप कहने लगा कि जिस गति से मैंने समुद्र को लाँघा
उसकी दुगुनी तीव्र गति से लाँघने पर भी यह खाई पार नहीं कर
सकूँगा । २४३

मेक्कु नाल्वहै मेहमुड् गोळ्विळत्, तूक्कि तालन्न तोयत्त दायत्तुयर्
आक्कि तान्बडै यन्त वहळियै, वाक्कि नालुरै वैक्कवु माहुमो 244

मेक्कु-ऊपर के; नाल् वकै मेकमुम्-नानाविध मेघ; कोळ् विळ-नीचे गिरे;
तूक्किताल् अन्त-उनको उठा रही हो ऐसी; तोयत्तताय्-जलमय; तुयर् आक्कितान्-
लोकों को क्षुब्ध करनेवाली; पटै अन्त-(रावण की) सेना के समान रही; अकळियै-
खाई को; वाक्किताल्-शब्दों से; उरै वैक्कवुम् आकुमो-वर्णित किया जा सकता
है क्या । २४४

उसमें इतना जल भरा था कि लगता था कि नानाविध मेघ नीचे गिर
गये हों और उस खाई ने उन्हें अपने में धारण कर लिया हो । वह लोक-
त्रासक रावण की सेना के समान विशाल थी । उस खाई की महिमा
शब्दों द्वारा वर्ण्य हो सकेगी क्या ? । २४४

आनें सुमसद सुमवारि पाठियुम, मात मङ्गपर कुङ्गियुम
 मात मादर नईहूँ पाठियुम, नेतुं मादरुन देपवैयुं नाइस 245
 आत सुमसतयुम-गाँ के विमद-नीर; परि आठियुम-अरयो के मुख का बाग;
 मात-मात; मङ्कपर कुङ्कुम-विषयो के कुङ्कुम-जल के प्रवाह; मात
 मादर-रान करतवाली विषयो के; कुल नई पाठियुम-केशी पर लगी खूबदार
 कर्तरी; नेतुं-आह; आरुम-और माला; नेपवैयुम-और अन्य लेप; नाइम-
 (उसमें) गल देवे थ १२४५

उसमें गाँ के (बीज, आँखों और गण्डस्थल के) तीनों मदनीर;
 अरयो की लार, मात मलिनियों के कुङ्कुम का जल, रान करतवाली
 विषयो के केश से मली कर्तरी, आह, माला; अन्य सुगन्धित लेप-समी
 की गल पायी गयी १२४५

उत नार मङ्गिरेल पुदाविळ, अनेम कोळिवण उानडेग ठाळपुळ
 किनेम रङ्गुरण उङ्गिळिके कयोलारल, वनेमडे गाहडे गुणालम शालमवुस 246
 उनेम- (एक तरह का) हंस; नार-सार; मङ्गिरेल-कर्तुल पक्षी;
 पुदा-पुदा (बड़ा) पक्षी; उळि-उळि, नामक पक्षी; अनेम-हंस;
 कोळि-जलगा; वण्डास-और एक तरह के बड़े सारस; आठिपु पुळ-वक्रवाक;
 किनेमर-किनेर; ऊरुण्ड-कह; किळिकेक-किळिक नामक पक्षी; अम विरल
 वनेम-विरल और वनेम नाम के पक्षीगण; काकम-काक; कुणालम-कुणाल नामक
 पक्षी; विमसुस-बड़ेकने रहे १२४६

उसमें समी जलपक्षी बड़ेक रहे थ १
 'उतम', नार (सारस), 'उळि', हंस, 'जलकुपकुट',
 कर्तुल, पुदा (बड़ी तरह का सारस), 'उळि', हंस, 'जलकुपकुट',
 'वक्रावक' (वीथरी तरह का बड़ा सारस), 'वक्रवाक, किनेर, कण्ड, 'किळिक',
 विरल, वनेम, काक, कुणाल आदि पक्षी थ १२४७

नलनेत मादर नईयहि लालियुम, अलनेत हकेकुळम वुञ्जिये दाडि
 नलनेत मादर नईयहि पाठिळ सनेनडेक, कुलपण डिङ्कमो उडल कोङ्कुकुमाल 247
 नलनेत मादर-मनीरम रमलियो के; नई अकल-सुवासिब आह का; आठियुम-
 युआ और; अलनेतक कुळमसुम-लाला का लेप; वुञ्जिये आठि-वुञ्ज अपने थरी
 पर लग जाणू, ऐसा बी रान कर आये; हलकेकणक कटियाह-उत लघणपुडल हलियो
 से; हल सनेनडे-अलिमद गलि वाला; कुल पिङ्कुकुम-उतम गलि की कटिलियो
 की; और ऊडल कोङ्कुकुम-ऊतम पुदा कर देवे १२४७

उसमें सुलक्षण मलमल रान कर आए ती उनके थरीर पर से
 सौंदर्यगुणपूर्ण विषयो के केश का अगच्छम, लालारस आदि की गल
 लग गयी १ वडे छोटी आयु की मन्द गलि वाली हलिनियो की, इन
 हलिनियो से ऊतम का कारण बन गयी और वे उठ गयी १२४७

नडवु नारिय नाणरुन् दामरं, तुडैह डोरु मुहिल्लत्तन तोन्नुमाल्
शिरैयि तैय्दिय शैल्वि मुहत्तिन्नो, डुडवु तामुडै यारौडुड् गार्हळो 248

नडवु नारिय—मधु-गन्ध भरे; नाळ् नडुम् तामरं—नवविकसित सुगन्धित कमल;
तुडैकळ् तोन्नुम्—सभी घाटों में; मुकिल्लत्तन—बन्द; तोन्नुम्—दिखते हैं; चिरैयिन्
अय्यितिय—कारा में आयी; चैल्वि—देवी के; मुकत्तित्तोडु उडवु उटैयार्—मुख से रिश्ता
माननेवाले; ताम् ओटुड्कार्कळो—स्वयं म्लान नहीं होंगे क्या । २४८

उस खाई के घाट में शहद की गन्ध से युक्त उसी दिन खिले कमल बन्द
दिखे । कारण ? कारा में वन्दिनी रही देवी सीता के मुख के साथ नाता
रखनेवाले कौन म्लान हुए विना रह सकेंगे ? । २४८

पळिङ्गु शैर्डिक् कुयिर्डिय पायौळि, विळिम्बुम् वैळ्ळुम् मैय्दैरि यादुमाल्
तैळिन्त शिन्दैय रुज्जिरि यार्हळो, डळिन्द पोदरि दर्कळि दावरो 249

पळिङ्कु चैर्डि—स्फटिक पत्थर खूब सटा बिछाकर; कुयिर्डिय—सम बनाया
गया; पाय् ओळि—उज्ज्वल; विळिम्पुम्—किनारा और; वैळ्ळुम्—जल; मैय्
तैरियातु—सत्य न जाना जाय ऐसा रहते हैं; माल् तैळिन्त चिन्तैयर्म्—मोह-रहित
शुद्धमन; चिरियार्कळोडु—अशुद्धमन नीचों के साथ; अळिन्त पोतु—जब मिले रहते
हैं; अडितर्कु—पृथक्-पृथक् जानने के लिए; अळितु आवरो—सुलभ रहेंगे क्या । २४९

खाई के किनारे स्फटिक-पत्थरों से निर्मित थे । अतः जल में और
उसमें भेद नहीं दिखायी दे रहा था । वह ऐसा है मानो मोहमुक्त परिशुद्ध
मन वाले ज्ञानी कलक-मन नीच लोगों से मिल गये हों ! तब उनमें भेद
परखना सुलभ होगा क्या ? २४९

नील मेमुद नन्मणि नित्तिलम्, मेल कीळयल् माडौळि वीशलाल्
पालिन् वेलै मुदरुपल वेलैयुम्, काल्ह लन्दन वेयैतक् काट्टुमाल् 250

नीलमे मुतल्—नीलम आदि; नन्मणि—श्रेष्ठ रत्न; नित्तिलम्—मोती; मेल
कीळ्—ऊपर, नीचे; अयल्—पायवों में; माडु ओळि—विभिन्न प्रकाश; वीचलाल्—
बिखेरते हैं, इसलिए; पालिन् वेलै मुतल्—क्षीर-सागर आदि; पल वेलैयुम्—अनेक
सागर; काल्—युगान्त के पवन के कारण; कलन्तत्तवे—मिश्रित हो गये; अत्त—ऐसा;
काट्टुम्—दरसाते हैं । २५०

उस खाई में नीलम आदि श्रेष्ठ रत्न बारी-बारी से विभिन्न तथा विविध
छटाएँ बिखेर रहे थे । इसलिए वह, क्षीरसागर आदि अनेक समुद्र
पवनचालित हो एक हो गये हों—ऐसी लगी । (समुद्र सात हैं—लवण,
इक्षु, सुरा, घृत, दधि, क्षीर और जल के) । २५०

अन्न वेलै यहळियै यार्हलि, अन्न वेहडन् दिज्जियुम् बिर्पडत्
तुन्न रुङ्गडि मानहर् तुन्नित्तान्, पिन्न रैय्दिय तन्मैयुम् बेशुवाम् 251

अन-ऐसी; वेले अकलि-सगर-सम छई की; आर कलि अनेव-वई शब्दप्रमाण सगर की वई; कदंब-लवकर; इंडियन लिप-शायरी की वी पीछे छई करके; प्रवर्ध-आम; कडि मा नकर-प्रतिव वई नगर में; प्रविश-पडैवा; प्रवर-उसके बाद; अल्पि नमसु-वो हुआ वई समावर; प्रवर्ध-कहे। २५१

ऐसी परिवा की इमान ने शब्दप्रमाण सगर की वई लवकर पार किया। फिर गच्छी की वी पार करके आम उस सुप्रतिव नगर में प्रविष्ट हुआ। फिर क्या हुआ? — यह बताएँ। २५२

किय गलिहै गलिहल कालमें, वरिष योई मरकरकरदम वमवदि अरुव नयार पविरण लिप्यानेने, नरुव सुमनेन खियरने देविन 252 कालमें-यम वी; वरिष ओइस-डर कर माग जाए, ऐसी; अरुकर नम-राखी के; वम पति-उस मरकर नगर में; किय गलिह-काली रात के समय; गलिहल-के आठ में; अरु पविरण योवने-वारह योजन की; सुमने नखियरने वरुम-वीन बाव की लिप्या में; अरुवने-अकेले हो; देविन- (इसम में) खोला। २५२

वई राखी का मरकर नगर यम की मन में मय मरकर मगानेवाला था। उसमें काली अंधरी रात के आठ समय के अंदर वई अकेले वारह योजन लम्बी दीन बाव लिप्या में लिखी की खोज कर चुका। २५२

विरुम अटकिन-मखी का शब्द यम गय; नरुम कलि विवककेम-अधिक विवककेम-वड्डेन-वड्डेन-यम गय; पाटने अटकिम-गाने वरुम-कमिप-कड-करीगरी में; किय अटकिन-अपने काम बरुम-सुमने विरुम-वीन वरुम की लिप्या; अटकिन-रुक गयी; वरुमकेम-विह; नरुमकेम-आरम हो गयी। २५३

विरुम मड्डेन मड्डेन मड्डेन विवककेम
किय मड्डेन मड्डेन मड्डेन मड्डेन
पाटने मड्डेन मड्डेन मड्डेन मड्डेन
विरुम मड्डेन मड्डेन मड्डेन मड्डेन

विरुम मड्डेन मड्डेन मड्डेन विवककेम
किय मड्डेन मड्डेन मड्डेन मड्डेन
पाटने मड्डेन मड्डेन मड्डेन मड्डेन
विरुम मड्डेन मड्डेन मड्डेन मड्डेन

उस अधिन्या में सुरापायी लीगों का शोर बन्द हो गया। अधिक आनन्ददायी वार्ता का बजना बन्द हो गया। गाते, कारीगरों के काम और लीनो वरुम की धीरे-धीरे गयी — सभी बन्द हो गये। सबको निद्रा ने घेर लिया। २५३

निःस्त्र् कौळ् परि-विविध रंगों के अश्व; इन्द्रकिन्त-सिर लटकाकर सोये;
मरुम् कौळ्-वीरता युक्त; अँयिल् कावलर्-प्राचीरों के रक्षकों के; तुटि कण्-
डमरुओं की आँखों ने; एमम् उर-सुरक्षा प्रदान करते हुए; अँडकुम् कडङ्किन्त-
सर्वत्र शब्द किये; अँतिर् पिणङ्कि-सामने से झगड़ाकरके; ऊटित्तरकळ् अललार्-
जो नहीं रुठीं वे; अन्पर् पिरियातोर्-प्रेमियों से जो अलग नहीं रहें वे; पिण्डङ्किन्त
नरङ्कुळलर्-घने और सुवासित केश वालियाँ; उरङ्किन्तर्-सोयीं । २५४

विविध रंगों के अश्व सिर लटकाकर सो गये । प्राचीरों के रक्षक,
वीरता-भरे पहरेदारों के डमरु का नाद सबको रक्षा का आश्वासन दिलाते
हुए सर्वत्र फैला । जो अपने पतियों से नहीं रुठी थीं और जो अपने प्रेमियों
से अलग नहीं हुई थी वे शोभायमान सुगन्धित केशिनियाँ सोयीं । २५४

वडन्दरु	तडङ्गौळ्पुय	मैन्दर्कल	विप्पोर्
कडन्दन	रिडन्दनर्	कळित्तमयिल्	पोलुम्
मडन्दैयर्	तडन्दन्न	मुहट्टिडै	मयङ्गिक्
किडन्दनर्	नडन्ददु	पुणर्च्चितरु	केदम् 255

वटम् तरु-(हार की) लड़ियों से भूषित; तटम् कौळ-विशाल; पुय मैन्तर्-
भुजाओं वाले तरुण; कलविप् पोर् कटन्ततर्-सम्भोग-समर पूरा करके; इटन्ततर्-
यकित्त हुए; कळित्त मयिल् पोलुम्-मत्त मयूरों के समान; मडन्तैयर्-जो मनोहर
थीं, उन अपनी प्रियतमा स्त्रियों के; तटम् तन्न मुकट्टिटै-विशाल स्तनों की चोटी पर;
मयङ्कि किटन्ततर्-मोहित पड़े रहे; पुणर्च्चि तरु-संसर्गजनित; केतम्-थकावट;
नटन्ततु-क्रियमाण रही । २५५

हारालङ्कित विशाल भुजा वाले कुलीन राक्षस तरुण संभोग-समर पूरा
कर थक चुके । वे मत्त मयूरों की-सी आभा वाली अपनी प्रेमिकाओं के
विशाल स्तनशिखरों पर सिर रखे सोये । संसर्ग-आयास अपना राज्य चला
रहा था । २५५

वामनरै	यिन्नुरै	नुहरन्दवर्	मडन्दार्
कामनरै	यिन्त्रिऱम्	नुहरन्दवर्	कळित्तार्
पूमनरै	वण्डुरै	यिलङ्गमळि	पुक्कार्
तूमनरै	यिन्नुरै	ययिन्त्रिलर्	तुयिन्डार् 256

वाम तुरैयिन्-वाममार्ग की; नरै नुकरन्तवर्-सुरा जिन्होंने पी थी वे;
मडन्तार्-विस्मृति की दशा में थे; काम नरैयिन् तिरम्-काम-भोग की सुरा का
पान; नुकरन्तवर्-जिन्होंने किया था वे; कळित्तार्-मत्त होकर; पूम
नरै-अति सुगन्धित; वण् तुरै-समृद्ध शय्यागृह में; इलङ्कु अमळि-मनोरम
रहनेवाली शय्या में; पुक्कार्-लेटकर; तूम नरैयिन् तुरै-धुएँ के बास के सुख को;
अयिन्त्रिलर्-न भोगते हुए; तुयिन्डार्-सोये । २५६

वाममार्गावलम्बी लोग उसके अंग के रूप में सुरापान करके अपने

ਭਾਗ ੧ । ਪੰਨਾ ੧੨੩ । ਭਾਗ ੧ । ਪੰਨਾ ੧੨੩ । ਭਾਗ ੧ । ਪੰਨਾ ੧੨੩ । ਭਾਗ ੧ । ਪੰਨਾ ੧੨੩ । ਭਾਗ ੧ । ਪੰਨਾ ੧੨੩ ।

कर्मोपनिषद् यजुर्वेद अथर्ववेद 257

ନେତା । ମୁଁ ପଞ୍ଚମ ଶ୍ରୀ

၈၄၆ ၊ ဤ မှီ မှီ ဤ ဤ ဤ ဤ ၊ ဤ မှီ မှီ မှီ မှီ

अतिशय पितृश्रद्धा भ्रातृप्रेम नृपश्रेयः 258

८५६ । श्री गुरुभ्यो नमः

विद्यार्थकपदं नृनरनपदं शिरवपदं वारिव

अळक्करो विळक्कैन्त डळक्करिय विळङ्गुमणि वाशैयुर् मैय्युर् वीया विळक्कम् 259

पकं चोर-शत्रुओं के शिथिल पड़ते समय; उयर्वोरिन्-ऊँचा उठनेवालों के समान; इळक्कम् इळुतु-स्निग्ध तेल के; अँञ्च-बाकी न रहने पर; विळुम्-बुझनेवाले; अँण् अरुम् विळक्कै-असंख्यक दीपों को; तैत्तुर्-मलयपवन ने; तुळक्कियतु-पूर्णरूप से शान्त कर दिया; अळक्करोटु-समुद्र-सदृश; अळक्करिय-अपार; आचै उर-प्रेम बढ़ाते हुए; मणि मैय् उरु विळक्कम्-सुन्दर (स्त्रियों के) शरीरों की कान्ति; वीया विळक्कु अँन्त-अमर दीप के समान; विळङ्कुम्-छिटकी । २५६

घृत पूरा हो गया और असंख्य दीप बुझ गये । तब मलयपवन ने उनको बुझा दिया । यह ऐसा था मानो शत्रु के शिथिल-पड़ते समय कोई अपना सिर उठाए आरुढ़ हो रहा हो ! तब भी सागर की समानता पार कर जो प्रेम बढ़ गया था उसको उत्तेजना देते हुए सुन्दरी प्रेमिकाओं के मनोरम शरीरों की कान्ति अक्षय दीप के समान उज्ज्वल बनी रही । २५९

नित्तनिय मत्तौळिल रायनिर्ऱैयु ज्ञानत्तु
तुत्तमरु उड्गित्तरहळ् योहियर् तुयिन्ऱार्
मत्तमद वैड्गळि रुड्गिन मयड्गिप्
पित्तर् मुड्गिन रित्तिप्पिऱि दैन्नाम् 260

नित्त नियमत् तौळिलराय्-नित्य नियमित कर्म पूरा करते हुए; निर्ऱैयुम्-पूर्ण बने; ज्ञानत्तु उत्तमर्-ज्ञान श्रेष्ठ; उड्गित्तरहळ्-सोये; योहियर् तुयिन्ऱार्-योगी भी सुप्त रहे; मत्त मत्त वैम् कळिङ्ग-मद मत्त भयंकर गज; मयड्गि उड्गित्त-मुग्ध-हो सोये; पित्तर्मु उड्गित्तर-पागल लोग भी सोये; इत्ति-इस स्थिति में; पिऱर् इतु-अन्यों की यह (निद्रित दशा); अँन् आम्-क्या होगी । २६०

ज्ञान में बड़े हुए वे नित्य-नियम करनेवाले कर्मयोगी भी सो गये । योगियों को भी निद्रा ने अपनी चपेट में ले लिया । मदमत्त मातंग भी निद्रित हो गये । दीवाने भी सो गये । फिर दूसरों की निद्रा की स्थिति का क्या कहना है ? । २६०

आयपीळु दम्मदि लहत्तरशर् वैहुम्
तूयर्त्तैरु वौन्ऱौडौरु कोडितुरु विप्पोयत्
तीयव निरुक्कैययल् शैय्दवह् लिञ्जि
मेयडु कडन्दनन् विनैप्पहैयै वैन्ऱान् 261

आय पीळुतु-ऐसे उस समय; वितैप् पकैयै वैन्ऱान्-कर्म रूपी शत्रु का विजेता; अम् मतिल् अकत्तु-(मध्य स्थित उस नगर के) प्राचीर के अन्दर; अरचर् वैकुम्-राजा लोग जहाँ रहते थे; तूय-उन साफ; औन्ऱौटु और कोटि तैरु-दो करोड़ वीथियाँ; तुरुवि पोय्-खोज लगाते पार कर; तीयवन्-खल (रावण) के; इरुक्कै

अथ चैत्र-वासस्थान के निकट बनी; सप्त अकष्ट दशवि-पुत्र लई और प्रचीर
का; कष्टवत्तव-पार कर गया। २६१

जब इस प्रति सारा नगर निदा के वध में रहता था, तब कर्म-शरी-
विजेता हनुमान उस प्रचीर-वलय के मध्य में स्थित नगर की राजवीथियों
में गया, वही राजा लोगों का निवास था। वही दी करोड़ वीथियों में
लौ लोने के बाद वह ऊँर राजा के महल की लई और प्रचीर की पार
कर आकर गया। २६१

पौर पुर के पिरावण में पौनम, शीर पुर के निरम्विय निरम्विय
नार हैकृष्ट विरुद्ध नैत्रिय, पौर पुर के वसिष्ठ नर्णाना 262
पौर पुर के-गुड करनी निरका स्वभाव था; इरावण में पौन मने-उस राजा
का प्रसाद; शीर पुर के निरम्विय-श्वेतगोत्री (कलाश्री) से युक्त; निरुद्ध-
वद बनी; नार के कुंठित-नाराश्री के सप्त के समान; लुद्ध अक्षिप-प्रकाशमय
और उन्नत रहे; नारिकरु वरु आये इतम-उसकी निरु के वासरयानों;
नर्णाना-के पास पहुँचा। २६२

रावण स्वभाव से युद्धिय था। उसका स्वर्णमहल सभी कला-
कृतियों व वैभवों से पूर्ण था। उसके चारों ओर उसकी प्रिय नारियों के
निवासस्थान थे। राजा का महल कलापूर्ण चन्द्र के समान लगा और
नारियों के भवन उज्ज्वल नारि-समूह के समान लगे। २६२

सुपुत्रक कङ्का नैत्रिय नैत्रिय नैत्रिय, अपिरुक्कर्म बाणपुद्धि नारु दमनवर
इपुक्कर्म मङ्गापूर पावर निम्वुड, नपुक्कर्म माळिहै वीरिय नर्णाना 263
सुपुन-शशक के; कर्म कर् नैत्रिय-कलक से रहित; सौ सति-प्रकाशमय
पुनवर; अपिरुक्कर्म-निरकी देवकर महिल ही बाण; बाळ सुकव-पुसे सुवर
मुख की; आर अगु अन्नवर-पूर्व अगुन के समान; इपुक्कर्म मङ्कापूर पावरम-
पुष्पकान्त सव; इरुड नपुक्कर्म-निरकी वृद्ध पसव करनी थी; माळिक वीरिय-
उन सौधों की वीथी का; नर्णाना-पहुँचा। २६३

पहले वह पक्ष-रमणियों के प्रसादों की वीथी में गया। वे
परिधिपूर्ण अति सुन्दर थीं। शशकलकहेन चन्द्र थी उनके मुख की
देवकर स्वर्ण रहे जाता। कालिमय अन्न व लो वे समूह अमृत-समान
थी। २६३

लुद्धेन पेरुति सौमणिल नाडिकम, लुद्धेन नलिनि विरुद्ध गालिचम
पुद्धेन नैत्रिय सपुत्र नैत्रिय, विरुद्ध नैत्रिय वेरु वीराना 264
विरुद्ध नैत्रिय-राम के कारण उरुप का; वेरु वीराना-निरने
निर्भल कर दिया था (उसने); वेरु अलि लुद्धेन-वृद्ध प्रकाशमय; सौ सति
नाळ नाडिकम-वने रूप से रानी की वडकर निमित्त लो-लोने में; लुद्धेन नैत्रिय-

पतले कते सूत्र से भी; इत् इळम् कालितुम्—मन्द मधुर पवन से भी; नोय्तिन्—महीन रूप से; नुळैन्तु—घुसकर; मै अर्—विना चूक के; नोक्कितान्—देखा । २६४

हनुमान रागविमुक्त था और उसने राग से उत्पन्न होनेवाले सभी पापों को दूर कर दिया था । ऐसा वह सूत्र और पवन से भी महीन रूप में रत्नजटित तालों के द्वार में घुसकर अन्दर गया और विना नागा के सब जगह खोजने लगा । २६४

अत्ति रम्बुनै यानै यरक्कत्तुमेल्, वैत्त शिन्दैयर् वाङ्गु मुयिर्प्पित्तर्
पत्ति रम्बुरै नाट्टम् बदैप्पअच्, चित्ति रङ्ग लैनविरुन् दार्शिलर् 265

चिलर्—(उन यक्षनन्दिनियों में) कुछ; अत्तिरम् पुतै—कामास्त्र लगे; यानै अरक्कत्तु मेल्—गज-सम राक्षस पर; वैत्त चिन्तैयर्—मन ललचाकर; वाङ्कुम् उयिर्प्पित्तर्—निःश्वास छोड़ती हुई; पत्तिरम् पुरै नाट्टम्—अस्त्र-सम आँखें; पतैप्पअ—निश्चेष्ट रखते हुए; चित्तिरङ्कळ् अत—चित्रवत; इरुन्तार्—रहीं । २६५

(वे कैसी स्थिति में थीं ? —इसका वर्णन देखिए ।) उनमें कुछ अपना मन मदनास्त्राहत गज के समान रहनेवाले रावण पर लगाए दीर्घ निःश्वास छोड़ रही थी । उनकी आँखें टकटकी लगाये निस्पद थीं । वे चित्रवत रहीं । २६५

अळ्ळल् वैञ्जिलै मारनै यञ्जियो, मैळ्ळ विन्गत्त विन्बयन् वेण्डियो
कळ्ळ मैन्गौ लरिन्दिलङ् गण्मुहिळ्त्, तुळ्ळ मिन्त्रि युर्ङ्गुहिन् दार्शिलर् 266

चिलर्—और कुछ; कण् मुकिळ्त्तु—आँखें बन्द करके; उळ्ळमिन्त्रि—विना इच्छा के; उर्ङ्गुकुकिन्त्रि—सोने का बहाना करती है; अळ्ळल्—पंकीले खेत में उत्पन्न होनेवाली ईख का; वैम् चिलै—भयानक धनु; मारनै अञ्चियो—रखनेवाले कामदेव से डरकर क्या; मैळ्ळ—चुपके-चुपके; इन् कत्तिन्—(रावण सम्बन्धी) मधुर स्वप्न; पयन् वेण्डियो—का सुख चाहकर; कळ्ळम्—वंचना; अन् कौल्—क्या है; अरिन्तिलम्—नहीं जानते । २६६

और कुछ थी, जो आँखें बन्द किये पड़ी थी; पर सो नहीं रही थीं । सोने का बहाना कर रही थी । वे क्यों ऐसा कर रही थी ? पंकजनि त इक्षुधनुधर काम से डरकर ? या कोई मधुर स्वप्न देख रही थी जिसका सुख छोड़ना नहो चाह रही थीं ? हम उनकी वञ्चना क्या जानें ? । २६६

पळ्ळुदिन् मन्मद नेय्हणै पन्मुट्टै, उळ्ळुद कौङ्गैय रुश लुयिर्प्पित्तर्
अळ्ळुदु शैय्वदै नाणै यरक्कत्तै, अळ्ळुद लाङ्गौलैन् ईण्णुहिन् दार्शिलर् 267

चिलर्—और कुछ; मन्मतन् अय्—मन्मथप्रेषित; पळ्ळुतिल् कणै—अचूक शर; पल् मुट्टै उळ्ळुत—जिनको अनेक बार जोत (विद्ध कर) चुके; कौङ्कैयर्—उन स्तनों के साथ; ऊवल्—झूले की तरह आने-जानेवाले; उयिर्प्पित्तर्—श्वास छोड़ती हुई;

अर्द्धं धूपवत् अन्त-रीकर करे वया; आण अरककन्त-आवाकाऱा रावण का विव;
अर्द्धनलान् काँल-लिख-वया; अर्द्ध-पुसा; अर्द्धाणिकिन्तार-साँव रही-है। २६७

ଗୁଡ଼ି । ଯୁ ଲୁଲୁ ଲୁଲୁ

आव दौंउरु ङांन दौवुकु, कूँ हिनैरिन कूँन शूँउरनए
 एव दौवु, एउंकण एनएगुउए, एव एउिसं वुनमंउरिनं उरंरिणरं 268
 विनरं-ओर कुठ; कण एनएगु उउ-आंणं स आंसं वइलें वुए; एवंपाउंस-एरिक
 के साय; एव दौव एन-विन एण कन दौं वंस; आवु-इनेवला कय; ओंउ
 अउण-एक कने की दया नही करलें; अतवु आवु-सेरे एण (सम-एवण)-
 की; कूँविकैरिन-नही-पुकारलें; वंस कूँन-वाकर नही कहलें; अवा-एवा
 कहकर; पुनमंउिकउरं-विनपनी है । २६८

और कौन यथामानुषी नीली आँखों से आँसु बहाते हुए अपनी साँकियाँ
 की बोलते बिब-के समान उलटित है रही थी । वे मुदा कोई हिल नहीं
 करती ! मेरे प्राण, रावण की नहीं बुलाती । ऐसा कहते हुए वे विजाप
 रही थी । २६८

८३८ । १६ १२८

२६९ । लगी ।

४३८ । ५५७

२७०
 नकेक शममलि नरिय नीलिउल, पकेकम वीउइ पळिपिउर पलपडेल
 अकेक वागु गुलरुतल वलरुतदवर, अकेक वागुउरु दिङ्गळीर नारिउलर
 विनर-ऊठ; नकेक-उववव; शममलि-लल मालिक पयरी से; नरिय-
 मर; नीळ निळ-लववी कानियी; पकेकम वीउइ-लिसके पयव से पडनी हे उम;
 पळिपिउर-शय्या से; पल पकल-अनीक दिनी से; अकेक आब उलरुतल-लगाविर

उनकी कामना के सुख जाने (असफल रह जाने) से; उलर्न्तवर्-सूखकर; चैक्क वान् तरम्-लाल गगन में उदित; तिक्कळ् ओत्तार्-(अर्ध) चन्द्र के समान दिखीं । २७०

कुछ पलंग पर लेटी हुई थीं । पलंग के चारों ओर लाल पत्थर कांति दे रहे थे । वे स्त्रियाँ अनेक दिनों से वियोगाग्नि में तप चुकी थीं, सूखकर काँटे हो गयी थीं । उस स्थिति में वे अपनी शय्याओं पर लाल गगन में प्रकट अर्द्धचन्द्र के समान लगीं । २७०

वाळि नार्ऱिय कर्प्पह वल्लियर्, तोळि नार्ऱिय तूङ्गम छित्तुयिल्
नाळि नार्चैवि यिर्ऱुहु नामयाळ्त्, तेळि नार्ऱिहैप् पेंय्दुहिन् इर्ऱिशिल् 271

वाळिन्-कान्ति के द्वारा; नार्ऱिय-प्रदत्त; कर्प्पक वल्लियर्-कल्पलताएँ-सी (यक्ष बालाएँ); तोळिन्-दोले के समान; नार्ऱिय-लटकाये जाकर; तूङ्कु-लटकनेवाली (झूलनेवाली); अमळि तुयिल् नाळित्ताल्-शय्या पर सोते समय; चैवियिल् पकु-कानों में घुसनेवाले; नाम याळ् तेळित्ताल्-भयावह 'याळ्' के स्वर रूपी बिच्छू से; चिलर्-कुछ; तिकैप्पु अय्तुकिन्ऱार्-भ्रान्त और बेसुध हो जाती है । २७१

कुछ प्रकाश की बनी कल्पवल्ली-सी यक्षस्त्रियाँ झूले की तरह की लटकनेवाली शय्या में पड़ी 'याळ्' नामक वीणा के मधुर स्वर से ऐसा कष्ट पाती हैं और बेसुध हो जाती हैं, मानो वह संगीत बिच्छू हो । २७१

कव्वु तीक्कणै मेरुवैक् काल्वळैत्, तैव्वि नान्मलै येन्दिय वेन्दोळ्
वव्वु शान्दुदम् मामुलै वौविय, शंव्वि कण्डु कुलावुहिन् इर्ऱिशिल् 272

चिलर्-कुछ; मेरुवै काल् वळैत्तु-मेरु को धनु के रूप में झुकाकर; कव्वु-उस पर चढ़ाये गये; ती कणै-अग्नि-सदृश (विष्णु रूपी) अरत्र को; अय्वित्तान्-जिन्होंने चलाया था; मलै-उन शिवजी के कैलास पर्वत को; एन्तिय-जिसने उखाड़कर उठाया; एन्तल्-उस राजा रावण के; तोळ्-कन्धों में; वव्वु चान्तु-जो लग गया था वह चन्दन का लेप; तम् मा-मुलै वौविय-अपने स्तनों ने जो अपनों पर मलवा लिया था (आलिंगन के समय); चैव्वि कण्डु-उस सौष्ठव को देखकर; कुलावुकिन्ऱार्-मोद का अनुभव कर रही हैं । २७२

शिवजी ने मेरु को धनु के रूप में दोनों बाजुओं में झुकाया था और श्रीविष्णु को अग्निवर्षक अस्त्र बनाकर चलाया था । ऐसे शिवजी के कैलास पर्वत को रावण ने उखाड़कर अपने हाथों पर उठा लिया । कुछ यक्षस्त्रियाँ अपने स्तनों पर उस रावण के सबल कन्धों पर लिप्त चन्दन को मला देखती हैं । यह तब मला था, जब रावण ने उन्हें आलिंगन किया था । अब ये यक्षस्त्रियाँ उस चन्दनापहरण की खूबी पर इठला रही हैं । २७२

कॉडि ताम्रगुप्परे वैल्लुङ्गु गोककनिन, उलि ताम्रुङ्गुळ्ळु नरसविमल

नाडि ताम्रुङ्गुळ्ळु नमपुङ्गु, पाडि ताम्रुङ्गुळ्ळु पाडुडिने उरिङ्गिलर 273

विनर- (और) कूठ (यस ललनाण्ड) ; ताम्रुङ्गु-चारी और के; उप्परे वैल्लुङ्गु-

वड्डे सपुडि के; कूडि कोक-मिलकर प्रलय बनने समय; विनर आदिना-विनरि

ताडव नम्र किया; कूळ-उस विवली के यश को; नाडि-समरु व अन्वेषण करके;

अङ्के नम्रविना-अपने सुन्दर हाथों को नशों को मोड़कर; नाले पुरे पणुम-चारी

ओळ रानी को; नमपुङ्गु उर पाडिना-विनरि मनोहारी रूप से गाया था; कूळ-

उस रावण के यश का; पाडुडिने उर-गात करती है। २७३

कूठ यशगताण्ड रावण के यशगान से मन बहला रही है। रावण

ने विवली के यश का गान किया था। विवली ऐसे थे, जिन्होंने प्रलय

के समय में, जब चारी और के वड्डे-वड्डे समुद्र मिलकर एक हो गये थे,

ताडव नम्र किया था। २७३

इतने नम्र विपक्किय रीण्डिय, मनेयी रीपर मापरम वावियण्ड

अन्य वसुंलन ताम्रवळ पारिङ्गम, निववि वृपुडि वीडि वृपुडिना 274

नीविमि अयिनिन-याममागामी; इतने नम्र विपक्किय-ऐसी स्थिति

में जो रही, उस स्थिति को; इण्डिय-मरी; और मापरम आभिरम-सहल-सहल;

मने वावियण्ड-वृपुडिना से वृषकर; अनन्यवम कुलवृ- (पुववा) उसके कुल को;

आय वळपारिङ्गम-चूने हुए कंकणी को धारणी राक्षसियों के स्थान में; निववि-

सीतान्वेषणविन होकर; अयिनिन-पड्डिना। २७४

याममागामी इतमान ऐसी स्थिति में रहनेवाली सहल-सहल

यक्षिणियों के घरी में जाकर बैठा। पुववा वड्डे सीतान्वेषण में विन

वृकर रावण के ही कुल की (राक्षस-) चारियों के वासरयान पर गया। २७४

अरिचुडर मलिमि शङ्गे लिळविय लिळविय लिळविय लिळविय

विरिपिळ्ळ पवडि ताम्रम विळक्किनरि विळ्ळु माले माले

नरिचुडर कूळु नीडा वायुन वीयुन वीयुन वीयुन

अरिचिडर विचुडर पान वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन

वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन

वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन

वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन

वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन वळ्ळुन

प्रकाश देनेवाले लाल पत्थर थे । उनसे लाल रंग की सुखद रोशनी छूट रही थी । उसमें एक नायिका अकेली खड़ी थी । उसने दासीवृन्दों को हटा दिया था । वह केवल अपने प्रेम को ही संगिनी बनाकर अकेली खड़ी अपने मन से रूठ रही थी । ऐसी कुछ राक्षसियों को हनुमान ने देखा । २७५

नहैरैरिक्	कइरै	नैरि	नावितोयन्	दतैय	वोदि
पुहैरैन्त	तुम्बि	शुइरुप	पुदुमलर्	पौङ्गु	शेक्कै
पहैरैन्त	वेहि	यान्त्र	पळिङ्गुडैच्	चीदप्	पळ्ळि
मिहैरौडुङ्	गाद	काम	विम्मलित्	वैदुम्बु	वारुम् 276

नकै औरि कइरै-ज्वलन्त अग्नि-लपट के; नैरि-छोर में; नावि तोयन्ततैय-कस्तूरी-मले से; ओति-केश की; पुकै अँत-धुआँ समझकर; तुम्पि-भ्रमर; चुइर-घूमकर भागते हैं; पुतु मलर् पौङ्कु-ताजे सुमनों से भरी; चेक्कै-शय्या की; पकै अँत-शल्लुवत; एकि-छोड़ दूर जाकर; आन्त्र पळिङ्कु उटै-चौड़े स्फटिक-पत्थरों से बनी; चीत पळ्ळि-शीतल शय्या पर; मिक्कै आँटुङ्कात-बढ़ना कम जिसका नहीं हुआ; काम विम्मलित्-काम के वर्धन से; वैदुम्बुवारुम्-जो तप रही थीं, वे और । २७६

राक्षसियों के केश कस्तूरी-लगी आग की लपटों के समान थे । उसे देखकर भ्रमर धुआँ समझते और डरकर उड़ जाते । उन राक्षसियों ने नवीन सुमनों की शय्या को भी शल्लुवत त्याग दिया । फिर वे स्फटिक के चबूतरे पर जाकर लेटीं, जो शीतल था । तो भी उनका ताप कम नहीं हुआ और वे झुलस रही थीं । २७६

शविपडु	तहैशाल्	वानम्	तानीरु	मेति	याहक्
कुवियुमी	तार	माह	मिन्कीडि	मरुङ्गु	लाहक्
कविरीळिच्	चैक्कर्	कइरै	योदिया	मळैरौण्	कण्णा
अविर्मदि	नैरि	याह	वन्दिया	ळौक्किन्	शारुम् 277

चवि पटु-छविमान; तकै चाल् वातम् तान्-श्रेष्ठ आकाश ही; और-अद्वितीय; मेति आक-शरीर बना और; कुवियुम् मीन्-भीड़ बने रहनेवाले तारे; आरमाक-हार बने; मिन् कीडि-बिजली की लताएँ; मरुङ्कुल् आक-कमर बनीं; कविर् ओळि-कटिदार पलाश के फूलों की-सी; चैक्कर् कइरै-लाल गगन की ज्योति; ओति आ-केश बनी; मळै-मेघ; औण् कण् आ-प्रकाशमय आँखें बने; अविर् मति-न्यून कला चन्द्र; नैरि आक-ललाट बना; अन्तियाळ्-ऐसी सन्ध्यादेवी की; ओक्किन्शारुम्-समता करनेवाली राक्षसियाँ और । २७७

कुछ राक्षसियाँ स्वयं सायं सन्ध्यादेवी के समान लगी, जो ज्वलन्त आकाश का शरीर ले, तारागणों का हार पहने हुए, विद्युत् की कमर से

जाती हों । २७७

युक्त और कटिदार पल्लवाक्यों के समान लाल गान के कण से शोभिष और स्रवों के उज्ज्वल नेत्रों के साथ और अर्द्धचन्द्र के धाल से युक्त पायी

पावत्युग्म कण्ठ्युग्म वण्ण्युग्म पङ्क्तिगुह्युग्म मातृपु
चोत्रेण्युग्म रजिह्वयुग्म पद्मवृक्ष्युग्म श्रुतिह्वयुग्म कर्तुर्युग्म शौर्य
सेनियुग्म ह्वयुग्म मातृ वण्ण्युग्म सुनरि वण्ण्युग्म
वानमोत्र्युग्म कर्पूर्युग्म वारि मणिककण्डूयुग्म गार्ह्युग्म वारुण्युग्म 278

सब निवर्तु अर्द्धचन्द्र-ऊपर की ओर उन्नत उठे हुए; मातृ-भासावों की; वृद्ध
निना मुनिवृत्त-चन्द्रशाला, नण्ण्यु-वाकर; कर्पूर-अपने हृदयों से; वान मोत्र्यु
वारि-आकाश के तारों की उठा लेकर; पान्यु उष्ण वण्ण्यु-नीलारिपलजयी
रंग वाली अर्द्ध; पटि गुह्य मातृ-ऊपर नीचे देखे हुए; पण्ण्यु अलिकण्डू-शुद्ध से
अलि; चात्रे पौन्य-स्रव के समान; पद्मसु-लाल पर मण्डराते हैं; वरि कण्डूयु
कर्तुर्यु-वे धृष्टरात्रि बाल की लट्; वारि-निधिल पड़ें हुए; मणि कण्डूयु-उन नक्षत्रों
के बीच; आर्द्धचन्द्र-वृद्धचन्द्र नीलारिप २७८

कौटु राक्षसिया ताराओं की लेकर 'कण्डूयु' का खेल खेल रही थी ।
(यह तीन या उससे भी अधिक काठ के रंगीन गोल गेंदों से खेला जाता है ।
कुछ विविष्ट चीज भी ऐसे होते हैं । विषया अपने एक या दोनो हथेलियों
से उन गेंदों की उठालती है और पकड़ती है । यह उनके उठने या गिरने का
क्रम कौटु दबना तीव्र और विविध व मनोरम लगता है ।) वे उन्नत स्रवों की
चन्द्रशालाओं से गयी । वे जब ताराओं से 'कण्डूयु' खेलती है तब उनकी
नीलारिपल-सी अर्द्ध ऊपर-नीचे जाती है । उनके केश, लिन पर झुंडों से
धमर मण्डराते हैं, खूबकर निधिल पड़ जाते हैं । २७८

वर्द्धयुग्म परन्द वान मातृकनिम्न कम्पवर् मातृक
कुल्लयुग्म ववरन्द वन्द पुनलकुल्लयुग्म पिनवर्न ह्वि
कुल्लयुग्म निलङ्ग्य मातृव निडवन्द मातृ वैरि
मण्ण्युग्म वीज्युग्म नीरार्य मयजन मातृ वारुण्युग्म 279
उठे उठे-सर्वतः परन्द-कैली; वान मातृ-आकाशगंगा नदी से; उम्प
मातृ-धूम लोक की; कुछ मुक्तववरकण्डू-निनाय मुख वाली; नन्द- (वर्णनाओं
से) जो लाकर दिया; पुनल-वह जल; कुल्लयुग्म कुल्ल-शीतल नदी; अर्द्ध-कण्डूयु
कण्डू-कण्डूयुग्म-पवित्रा स आभरणों से अलङ्कित रहनेवाली;
मातृव-अदारी पर; इदं नन्दमातृ-कम्परी की ह्वि देखें; पटि-वह वाकर;
मण्ण्यु-स्रव को धुँधकर; अर्द्धयुग्म नीरार्य-गिरनेवाले जल से; मयजनस
आर्द्धचन्द्र-रत्न कर देनेवाली तारिया । २७९

राक्षसियों के स्रवों पर सर्वत आकाशगंगा फली बहती है । देवगंगापु
मुखों पर खूब-रहने का भाव दिखती हुई उससे जल लाकर राक्षसियों

को दे रही हैं। पर वे 'पर्याप्त शीतल नहीं' कहकर रुष्ट हो जाती हैं और सीढ़ियों पर कमर को दुखाते हुए चढ़ती हैं और मेघों में छेद बनाकर गिरनेवाले जल में स्नान करती हैं। २७९

पन्नह वरशङ् चैङ्गेळ्प पणामणि वलियिङ् पङ्गि
इन्नुयिर्क् कणव नीन्दा नीदेन विरुत्ति विञ्जै
मन्नवर् मुडियुम् बूणु मारमुम् वणैय माहप्
पौन्ननिम् बलहैच् चूडु तुयिल्हिलर् पौरुहिन् डारुम् 280

तुयिल्हिलर्-नहीं सौतीं; इन् उयिर् कणवन्-बड़े मधुर प्राणप्यारे पति ने; पन्नक अरचन्-पन्नगराज के; पणा चैम् केळ् मणि-फनों पर के लाल सुन्दर रत्नों को; वलियिल् पङ्गि-बलात छीनकर; ईन्तान्-मुझे दिया; ईतु अँत-यही कहकर; इरुत्ति-दाँव पर चढ़ाकर; विञ्चै मन्नवर्-विद्याधर राजाओं के; मुडियुम्-मुकुटों; पूणुम्-आभरणों और; आरमुम्-हारों को; पणैयमाक-दाँव के रूप में; पौन्ननिम् अम् पलकै-स्वर्ण के चौपट में; चूडु पौरुकिन्डारुम्-जुआ खेलनेवाली राक्षसनारियाँ और। २८०

कुछ राक्षसियाँ थीं जो सो नहीं पायीं। वे द्यूत खेल रही हैं। बाजी क्या लगाती हैं? मेरे प्राणप्यारे रावण ने ये रत्न पन्नगराजा के फनों से छीनकर मुझे दिये थे। लो इसे दाँव पर चढ़ाती हूँ। या ये लो—विद्याधर-राजाओं के किरीट, हार और अन्य आभरण! ऐसी वस्तुएँ वे दाँव पर लगा रही हैं। उनकी बिसात स्वर्णनिर्मित है। ऐसी स्त्रियों को हनुमान ने देखा। २८०

तैन्नवैन् उमुदप् पाडल् शित्तिय रिशैप्पत् तीञ्जौल्
पन्नह महळिर् वळ्वार्त् तण्णुमैप् पाणि पेणप्
पौन्नहर्त् तरळप् पन्दर्क् कङ्पहप् पौडुम्बर्प् पौङ्गोळ्
इन्नहै यरम्बै मारै याडल्हण् डिक्किन् डारुम् 281

कङ्पक पौतुम्पर्-कल्पोद्यान में; पौन्नकर्-स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये; तरळ पन्नर्-मोतियों के वितान के नीचे; चित्तियर्-सिद्धजाति की स्त्रियाँ; तैन्न अँन्-‘तेन्न’ के संगीत संकेत के साथ; अमुत् पाटल् इचैप्प-अमृत-सम मधुर गीत गा रही थीं; तीम् चौल्-मधुर स्वर वाली; पन्नक मळिर्-पन्नग-नारियाँ; वळ्-घने; वार्-फीतों से बँधे; तण्णुमै-मर्दल के; पाणि पेण-ताल देते; पौन् तोळ्-मनोरम भुजा वाली; इन् नकै अरम्पै मारै-मनोहर दाँतों वाली अप्सराओं को; आटल् कण्टु-नर्तन करने की आज्ञा देकर उसे देखकर; इक्किन्डारुम्-आनन्द के साथ रहनेवालियों को। २८१

और कुछ स्त्रियाँ नाच-गान का आनन्द भोग रही थीं। कल्पवन में स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये मोतियों से निर्मित वितान के नीचे सिद्ध जाति की स्त्रियाँ ‘तेन्न’ नाम के संगीत-संकेत के अनुसार अमृत-सम

गान गा रही थी। मधुर वाणी पञ्चकान्यापू 'मदल' बजा रही थी। और मनोरम कन्धी वाली और मनोहर दाली वाली अचरापू नाच रही थी। २८१

आलिपिउं किडनद काद लडेअउड वरवि पुणगण
शेणय रुककेकन दोरेनद शिअदेपर शीयव दोरे
वीणयुमं कुळुव दलेम पिडमवेरु रुषीपिउं डीरेनद
पाणिअळ म्हा पाड लघुडदेप पाड वारुम 282

आलिपिउं-कौल के समान; किडनद कातल-गाड़ा रदा जो प्रेम; अकम चट-हृदय को जलाता है; अरवि उण कण-सरिता के समान आँसु बहाती आँखों में; वण उपर उरककम-गहरी नींद; बीरेनद-नही रही; विनयेपर-विनित रहने वालियाँ; वृषवु आरि-खा करना यह नही जानती; वीणयुमं कुळुवम-बीणा और वंशी; लदेम पिडम-और उनके कण्ठ; वेरुशुषिपिउं बीरेनद-परम्पर पिडम रहे; पाणि लळलत-नाल से अवल जो नही; पाडन-बैसे गाने; अघुव उक-अमृत वरसाते हुए; पादेवारुम-जो गानी रही उनको। २८२

कौल तिरया वीणा और वंशी के साथ अपने कण्ठ को भी मिलाकर समी वृषाकर गालमेल के साथ गा रही थी। उनके मन में कौल के समान राधा-प्रेम गाँ पड़ा था। विरहे-वेदना उनके हृदय को जला रही थी। आँखों से सरिता के समान आँसु बहे रहते थे। मन दुःखी था। नही मालूम हुआ कि क्या किया जाय। तब वे गाने में समय बिताते लगीं। हेतुमान ने उनको भी देखा। २८२

वाळ पनन कुरङ्गिड पनड्डु रदेवळ
कौण्डणनं दुडिउं गावके कलनगळये जोरके कुरङ्गळ
उण्डल मनद कणगा रुशिलदे दलाव दिनेर
कौण्डलनं दिरिवलं वीशके कुरवपिउं कुळळ वारुम 283

करमं कळ-अति सादक गाड़ी; उण्ड-पीकर; अलमनन कणगा-उपसे लज्जल वनी आँखों वाली कुल राक्षसियाँ; गण्डलं वाळ अर्जत-बाग के केले के समान; कुरङ्गिड-ऊरधारी पर; लदे अलकुलित-रख के समान भागी पर; कौण्ड-पहने हुए; पुमं पुकिपुम-महीन वरव; कौव कलनकळम-मेलना आदि आसरण; वीर-शिथिल पड़ जाते; ऊवलिददे उलाविकिनेर-मनो हृण डोलनेवाले; कौण्डलम-कुण्डल; तिर विलं वीर-मनोहर आभा बिखरते; कुरवपिउल-"कुरव" गान गाते हुए नाचने में; कुळळवारुम-लड्डुवाली भी है उनको भी। २८३

कौल तिरया ने खूब सादक गाड़ी पी ली। वे 'कुरव' नाच गीतों के साथ नाच रही थी। उनके बाग के केले के पड़ के समान अपने ऊरधारी और रख के समान जघन-पदेधारी पर पहने हुए वरव विषक गये। मेलना आदि आसरण भी गिर गये। इस स्थिति में वे 'कुरव' नाच नाचते

लगीं तो उनके कानों के कुण्डल जोर से डोल रहे थे और वे स्वयं लड़खड़ा रही थीं । २८३

नच्चैनक् कौडिय कण्णार् कळ्ळौडु कुरुदि नक्किप्
पिच्चरिर् पिदर्रि यल्हुर् पून्दुहिर् कलाबम् बीरिक्
कुच्चरित् तिरत्ति नोशै कळङ्गौळक् कुळ्क्कोण् डीण्डिच्
चच्चरिप् पाणि कौट्टि निरैतडु मारु वारुम् 284

नच्चु अंत-विष के समान; कौटिय कण्णार्-घातक आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; कळ्ळौडु कुरुदि नक्कि-ताड़ी के साथ रक्त चाटकर; पिच्चरिल्-पागल के समान; पितर्रि-बकती हुई; अल्कुल्-कटि प्रदेश के; पून् तुकिल्-महीन वस्त्रों और; कलापम् पीरि-मेखला को चोरकर; कुच्चरि तिरत्तिन्-'गुर्जर' राग में; ओच्चै-जो गाती हैं वह ध्वनि; कळम् कौळ-उनके गलों में निकलता है; कुळ्क् कौण्डु-समूह बनाकर; ईण्टि-जमा हो; चच्चरि पाणि कौट्टि-चञ्चरी नामक वाद्य को बजाते हुए; निरै तट्टुमाड्वारुम्-मन में अस्त-व्यस्त रहनेवालियों को भी । २८४

कुछ विष-सी घातक (मादक) आँखों वाली राक्षसियों ने ताड़ी के साथ रक्त भी पी लिया । पागलों के समान बकते हुए उन्होंने अपनी कटि के वस्त्र को और मेखला आदि आभरणों को उतार फेंका । वे सब मिलकर 'गुर्जर' राग में 'चञ्चरी' के वाद्य को बजाते हुए चंचल मन के साथ लड़खड़ा रही थीं । २८४

तयिर्निरक् कळ्ळुण् डुळ्ळन् दळ्ळत्त मरिवु तळ्ळप्
पयिरुत् तैय्व मेन्मेर् पडिन्दु पारमि तेन्ता
उयिरुयिर्त् तिरण्डु कैयु मुच्चिमे लुयर नीड्टि
मयिर्शिलिर्त् तुडलङ् गूशि वाय्विरित् तौडुङ्गु वारुम् 285

तयिर् निर-वहो के रंग की; कळ् उण्डु-ताड़ी पीकर; उळ्ळम् तळ्ळ-मन के झूलते; तम् अरिवु तळ्ळ-विवेक के भ्रमित होते; पयिर् उर-पुकार मचाते हुए; तैय्वम् अन् मेल् पटिन्ततु-देव मुझ पर उतर आया है; पारमिल्-देखो; अन्ता-कहकर; उयिर् उयिर्त्तु-लम्बी साँसें छोड़कर; उच्चि मेल्-सिर पर; इरण्डु कैयुम्-दोनों हाथों को; उयर-ऊँचा; नीड्टि-बढ़ाते हुए; मयिर् चिलिर्त्तु-पुलक से भरकर; उडलम् कूचि-शरीर के कम्पन के साथ; वाय् विरित्तु-मुख बाकर; औडुङ्कुवारुम्-फिर थकी हो जानेवालियाँ और । २८५

कुछ स्त्रियों ने दही के समान ताड़ी पी ली थी । उनका मन चक्रित हुआ और बुद्धि भ्रमित हो गयी । वे चिल्ला रही थीं— मुझ पर देवता का आवेश हुआ है ! देखो । वे लम्बी श्वास छोड़ रही थीं । उनके हाथ सिर के ऊपर बढ़े हुए थे । उनके रोंगटे खड़े हुए थे । शरीर काँप रहा था और मुख खुला । कुछ देर के बाद वे थकी गिर गयीं । २८५

पुरियु नन्नैरि मुत्तिवरुम् पुलवरुम् पुहलिलाप् पौरैहूर
 अरियुम् वैज्जिनत् तिहलडु कौडुन्दिरत् तिरावणर् कैज्जान्नुम्
 परियु नैज्जिन रिवरैन वयिर्त्तोरु प्पहैयोडु पत्तित्तिङ्गळ्
 शौरियुम् वैङ्गदिर्प् पणैमुलैक् कुवैशुड वमळियिर् रुडिक्किन्ऱार् 288

पत्ति तिङ्गळ्-शीतल चन्द्र; इवर्-ये स्त्रियाँ; अरियुम् वैम् चित्तत्तु-आग-से जलनेवाले क्रोध के साथ; इकल् अटु-शत्रु का संहार करनेवाले; कौडुम् तिडत्तु-भयंकर बलशाली; इरावणर्कु-रावण के प्रति; नन्नैरि पुरियुम्-सत्कार्य ही करनेवाले; मुत्तिवरुम् पुलवरुम्-मुनि और देवता लोग; पुकल्किला-विना खोलकर कहे; पौरै कूर-सहते रहे; वैज्जान्नुम्-सदा; पारियुम् नैज्चितर्-प्रेम करनेवाले मन की है; अत्त अयिर्त्तु-ऐसा सन्देह करके; ओरु पकैयोडुम्-एक शत्रुता के साथ; चौरियुम् वैम् कतिर्-जो छिटकाता है वह गरम किरणें; पणै मुलै कुवै-पीन स्तनों के समूहों को; चुट-जलाती है; अमळियिल्-शय्या में; तुटिक्किन्ऱार्-(उस गरमी से) तड़पती है। २८८

शीतल चन्द्र को यह गुस्सा था कि ये स्त्रियाँ अग्नि के समान दाहक और बड़े क्रोध के साथ शत्रु का संहार करनेवाले रावण पर सदा प्रेम रखती है। उसके द्वारा सत्कार्यरत ऋषि और देवगण अपार कष्ट पाते हैं, पर भय से मुख तक न खोलकर कष्ट सह रहे हैं। अतः वह एक शत्रुता के साथ उनके पीन स्तनों के समूह को अपनी क्रूर किरणों से जला रहा था। वे इससे आहत होकर अपनी-अपनी शय्या में पड़ी तड़प रही थीं। २८८

शिरुहु कालङ्गळ् लूळिह लाम्वहै तिरिन्दुशिन् दत्तैशिन्द
 मुरुहु कादलित् वेदनै युळप्पवर् मुयङ्गिय मुलैमुन्ऱिल्
 इरुहु शान्दमु मैळुदिय कुडिहळु मित्तुयिर्प् पौरैयोर
 मरुहु वाट्कण्गळ् शिवप्पुर नोक्किन्ऱ मयङ्गित्त रुयिर्क्किन्ऱार् 289

मुरुकु कातलित्-परिपक्व प्रेम से; शिरुहु कालङ्गळ्-छोटी-छोटी अवधियाँ भी; अळिकळ् आम् वकै-युग दिखे ऐसा; चिन्तत्तै-मन के; तिरिन्दु चिन्त-बदलकर टूटने पर; वेतत्तै उळप्पवर्-पीड़ित हो; मुयङ्किय-पहले रावण के साथ संश्लिष्ट जो रहे; मुलै मुन्ऱिल्-उन स्तनों के तटों में; इरुहु चान्तमुम्-जमा चन्दन; मैळुतिय कुडिक्कुम्-और बने नखक्षत; इत् उयिर्प्पौरै ईर-प्यारे प्राणों को चीरते हैं; मरुहु वाळ् कण्कळ्-चंचल और उज्ज्वल नेत्र; चिवप्पु उर-लाल करते; नोक्किन्ऱ-देखती; मयङ्किन्ऱ-मोहित होती और; उयिर्क्किन्ऱार्-आहें भरती है। २८९

कुछ विद्याधरियों को रावण-विरह में अल्पकाल भी युग के समान लग रहा था। उनका मन टूट गया। रावणालिङ्गनसुखमुक्त स्तन वेदनाविद्ध हो गये और उन पर का चन्दन-लेप और उन पर पड़े नखक्षत उनके शरीरों को चीर रहे थे। उनके दुःखविलोडित नेत्र लाल हो गये। वे उन आँखों से देखती हुई भ्रमित होकर लम्बी साँसें छोड़ रही थीं। २८९

आम विजयपर मजदर कलित मारण उभेकोटि
 मय हेतवेर मीपल मण्णवान कण्डव नीरुदनि मयनमहेण मणिमाडम 290
 आम-ऐसी; विजयपर मजदरपर-विद्यापर लिखां का; उरुदिस-वासवान;
 आरिण्ट कीटि-वारहे करिङ; वृम मालिक असे-पवित्र प्रासादां की; मृदम नैर-
 लखी सङ्क म; वृदवि पोय-टटीलले वाकर; नीलव दून-नी कपो न हेराला उम;
 मृद्व उल्लिखित-नीनां लोकां के; नायकन-नायक रावण के; पुरम कीपिल-वृ-
 महेल की; मण्णवान-आ पृथ्वी; नीरुद लिङ्कळ-शीलन वंद; मय-मय म
 हो जाय, ऐसा; नरविम-शीमागाली; वाळ मुकदु-आमासय मुल की; ओस
 लल-अग्रम; मयन मकळ-मयुवती के; मणि माडम-रदनमय प्रासाद की; कण्डवने-
 देवा (हनुमान से) । २८०

ऐसी विद्यापरी दिवयो के प्रासाद वारहे करिङ् म् । उन पवित्र
 मकानों की वीथी में हेतुमान सीताजी की वंदना हुआ गया । वह नीनां
 लोको का अजेय नायक रावण के महल की जाना चाहती था । उसके
 पहले वह मयुवती मन्दारि के सुन्दर महल में आयी । मन्दारि ऐसे
 शोभा-भरे मुख की थी कि शीतल चन्द्र भी उसके सामने लज्जा से भर
 जाय । २७०

कण्डू कण्णोड्ड मरुतीड्ड मडपिवन करण्ड मडिनिर
 डूण्डि वीरु विरपुड्डा णावड्ड कियिस् मिनिपाळके
 कीण्डि पानदवन वनददी रुडुळ्ड गुलमणि मनेककेललाम्
 विण्डि विगुरि मारुविनि मणिपानेन विद्वन विपपुड्डरि 291

कण्ड-उम महल की देवकर; कण्णोड्डम-आवा से और; कवनेरुड्डम-मन से;
 कटापिनर-माया; वीरु विरपुड्ड-एक अनाथ विद्यवान; वण्ड- (इस प्रासाद की)
 है; कुल मणि मनेककेललाम्-सभी थोड़ा रदनमय प्रासादों में; डू-मह; विण्डिनि-
 श्रीविष्णु के; विर मारुपुनि-श्रीवध की; मणि आनेरु- (श्री कीर्तिम) मणि के
 समान है; कारणम् कडे निरुड्ड-उद्देश्य अपनी मीलन पर आयी है; ओङ्कळ नायकरु-
 हेमारे नायक की; उल्लिखित-प्राणी से प्यारी सीताजी की; अवन कीण्डि
 पान्ड-उमने से आकर; वनेरु-जहाँ रखा है; और उड्डुळ आम-वह स्थान यहाँ
 है; अल-ऐसा सींचकर; विपपुड्डरि-विनिम हुआ । २८१

हेतुमान ने उस महल की अपनी आँखों से खूब देखा और मन से उस पर
 सोच-विचार करने लगा । उसे लगा कि इस महल की अनाथी विशेषता
 है । मणिपों में जैसे श्रीविष्णुवध की श्रीकीर्तिमणि थोड़नम है, वैसे
 यह महल सर्वशून्य है । मेरी याता का उद्देश्य यहाँ पूर्ण हो गया । यह
 वही स्थान है, जहाँ रावण ने हेमारे नायक श्रीराम की प्राणी से भी प्यारी
 सीताजी को लाकर रखा है । हेतुमान विस्मयान्वित हो गया । २७९

अरम्बै मेनहै तिलोत्तमै युरूपशि यादिया यवर्कामन्
 शरम्बैय् तूणिपौड् उळिरडि करन्दोडच् चामरै तडुमाड्क्
 करम्बै यिन्शुवै कड्पित्त शौल्लियर् कामरड् गनिहिन्ड
 नरम्बि निन्तिशै शैविपुह नाशियिड् कड्पह विरैनाड् 292

अरम्बै-रम्भा; मेनकै-मेनका; तिलोत्तमै-तिलोत्तमा; उरूपचि-उर्वशी; आतियायवर्-आदि अप्सराएँ; कामन् चरम् पैय् तूणि-कामशरों का पात्र, तूणीर-सी; कणैककालिल विळड्कुम्-पिंडलियों के नीचे रहनेवाले; पौन् तळिरडि-सुन्दर पल्लव-चरणों को; करम् तौट-अपने हाथों से सहला रही थीं; चामरै तडुमाड्-चैवर बारी-बारी से डुल रहे थे; करम्बै इन् चुवै कड्पित्त-ईश को जिसने मधुरता सिखा दी; शौल्लियर्-ऐसी मधुर वाणी बोलनेवाली स्त्रियाँ; कामरम् कत्तिकिन्ड-‘कामर’ नामक राग में गाये जानेवाले; नरम्पिन् इन् डच्चै-(याळ्) तन्त्री से उत्पन्न संगीत; चैवि पुक-कानों में प्रवेश कर रहा था; नाचियिल्-नाकों में; कड्पक विरै नाड्-कल्पसुमन की सुगन्धि घुस रही थी । २९२

रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी आदि अप्सराएँ उस स्त्री के कामदेव के तूणीर-सम पिंडलियों-सहित पल्लव-चरणों को सहला रही थीं । चैवर डुल रहे थे । इक्षुरस-सम मधुरवाणी स्त्रियाँ ‘कामर’ राग में वीणा पर गा रही थीं और उस स्वर को अपने कानों से सुनती हुई और कल्पसुमन की सुगन्धि को नाक से सूँघती हुई वह लेटी हुई थी । हनुमान ने उसको देखा । २९२

विळैवु नीड्गिय मेन्मैयो रायितुड् गीळ्मैयोर् वैहुळ्वुड्गाल्
 पिळैहौ ततमैहौल् पेरुवदेन् रैयुरु पीळैबोर् पेरुन्देन्डल्
 उळैयर् कूवप्पुक् केहैनप् पेरुवदो रुशलि तुळदाहुम्
 पळैयम् यामेनप् पण्बिल शैय्वरो परिणदर् पयमोर्वार् 293

विळैवु नीड्किय-वैरागी; मेन्मैयोर् आयितुम्-श्रेष्ठ लोग हों तो भी; गीळ्मैयोर् वैकुळ्वुड्गाल्-नीच लोग गुस्सा करें तब; पेरुवतु-जो मिलेगा वह फल; पिळै कौल् नन्मै कौल्-बुरा होगा या अच्छा; रैयुरु-ऐसा; ऐयुरु पीळै पेरल्-संदेह करके दुःखी होते जैसे; पेरुन् तैन्डल्-गौरवयुक्त मलयपवन; उळैयर् कव-मन्दोदरी की पास वाली दासियों के बुलाने पर; पुक्कु-प्रवेश करके; एकु अँत-जाओ कहने पर; पेरुवतु-लौट जो जाता है वह; ओर् ऊचलित् उळताकुम्-एक झूले का-सा काम था; परिणतर्-परिपक्व लोग; पयम् ओर्वार्-फल का विचार करके; याम् पळैयम् अँत-हम चिर परिचित हैं, ऐसा समझकर; पण्पु इल-अनुचित काम; चैय्वरो-करेंगे क्या । २९३

(और भी आश्चर्य की बात देखी ।) गौरवमय मलयपवन उसकी दासियों के ‘आओ’ कहने पर आता, ‘जाओ’ कहने पर जाता और झूले की तरह पेंग भरता रहता । उसको देखकर उन वैरागी बड़ों का स्मरण हो आता जो नीच लोगों के क्रोध दिखाने पर इस पसोपेश में पड़ जाते

यह दृश्य देखकर मेरे अविश्वसनीय यह शरीर जीने से प्रसन्न हो गया

मिट गया। वह एक ओर रहे ! भारी कर्णकुण्डलधारिणी ने श्रेष्ठ प्रेम-बन्धन को, उत्तम कुल में जन्म (के गौरव) को छोड़ दिया और दिव्य पातिव्रत धर्म को भी तिलाञ्जलि दे दी, ऐसा लगता है। अगर यह बात सच हुई तो सब गया—श्रीराम का यश और गौरव; मैं, यह लंका और उसके राक्षस सभी अभी मिट जायेंगे। २९५

मानु यर्त्तिरु वडिविन लवळिवण् मारुहोण् डनळ्कूरिल्
तान्नि यक्कियो तान्नवर् तैयलो वेंयुडुन् दहैयात्ताळ्
कानु यिर्त्तदा रिरामन्मे नोक्किय कादलोन् इडुकाणेन्
मीनु यर्त्तवन् मरुड्गुरा निडकुमे निनैन्ददु मिहैयैन्त्रान् 296

अवळ-वे; मानुयर्-मानव-स्त्री; तिरु वडिवित्तळ्-के पवित्र रूप वाली हैं; इवळ-यह तो; मारु कौण्टतळ्-भिन्न रूपधारिणी है; कूरिल्-कहें तो; तान्-यह; इयक्कियो-यक्षिणी है; तान्नवर् तैयलो-दानव-स्त्री है; वेंयुडुम्-ऐसी संशय योग्य; तकैयात्ताळ्-स्त्री लगती है; कानु उयिर्त्त तार्-सुगन्धित मालाधारी; इरामन् मेल् नोक्किय-श्रीराम पर रखा हुआ; कातल् ओन्डु अतु काणेन्-कोई प्रेम नहीं देखता; मीन् उयर्त्तवन्-मकरध्वज; मरुड्कु उरा निडकुमे-पास आये बिना रहेगा क्या; निनैन्ततु मिक्कै-हमारा विचार सत्य का उल्लंघन कर गया है; अन्त्रान्-हनुमान ने ऐसा सोचा। २९६

(फिर भी बुद्धिमान उसने गहराई से विचारा और अपना अभिप्राय बदल लिया।) सीता तो मानवशरीरी है। यह भिन्न शरीर वाली है। विचारकर कहें तो इसके सम्बन्ध में यही संशय हो सकता है कि यह यक्षिणी है या दानवदयिता? पुष्पमालाधारी श्रीराम पर प्रेम रहता हो या विरह का अनुभव कर रही हो, ऐसा कोई लक्षण नहीं दिखता! मकरध्वज इतना निष्क्रिय होकर पास खड़ा रहेगा क्या? नहीं, नहीं! यह देवी जानकी नहीं है। मेरा विचार उद्दण्ड था, असत्य था। हनुमान को यही ठीक लगा। २९६

इलक्क णड्गळुज् जिलवुळ वेंन्निनु मेल्लैशैन् रिक्किल्ला
अलक्क णैय्दुव दणियदुण् डेन्डैडुत् त्रैहिन्ड दिवळ्याक्कै
मलर्क्क रुड्गुळ् शोर्न्दुवाय् वेंरीइच्चिल माड्इङ्गळ् परैहिन्डाळ्
उलक्कु मिङ्गिवळ् कणवन् मळिवुमिव् वियनहरक् कुळवैन्त्रान् 297

चिल इलक्कणड्कळुम् उळ-और भी कुछ लक्षण हैं; अन्निनुम्-तो भी; इवळ याक्कै-इसका शरीर; मेल्लै चैन्डु-सीमा तक जाकर भी; इक्कु इल्ला-जिसका अन्त नहीं होगा ऐसे; अलक्कण् अय्युवन्-दुःख की प्राप्ति; अणियतु उण्डु-पास ही है; अन्डु-ऐसा; अडैत्तु अरैकिन्डतु-साफ़ बताता है; इवळ मलर् कड्कुळल्-इसका पुष्पालंकृत केश; चोर्न्तु-खुला है; वाय् वेंरीइ-जीभ लड़खड़ाती है; चिल माड्इङ्कळ्-कुछ शब्द; परैकिन्डाळ्-बोलती है; इवळ कणवन्-इसका

१५

हेतुमान ने आगे भी सोचा । इसके पास उत्तम रत्नोत्पन्न कुंठ पाये जाते हैं । फिर भी इसके भारीर को देखने पर ऐसा लगता है कि इसके असीम दुःख पाने का समय निकट ही है । इसके उपलब्धके केवल असीम दुःख पाने का समय निकट ही है । जो भी लक्ष्मणी है और कुंठ अपभ्रष्ट लक्ष्मणी करती है । लगता है कि इसका पति भी भीम यहाँ पर जायगा । इस विशाल नगर का नाश भी निश्चित है । हेतुमान ने यह भविष्यवाणी करी । १९७

[illegible]

इन्द्रावर्तक अर्द्धपञ्चम-राग के लिए उल्लास से कठिन, कति अंग-मि-
सम; निराल लीला-गुह काली बाला; अर्द्ध-पञ्चम; अर्द्ध-पञ्चम (मिथ्यावाणी)
समझकर उल्लास रहे; पञ्चम विनिवर्त-सन्निपद्यमान मन के साथ; इन्द्रावर्त
अर्द्ध-पञ्चम-गुह बाल रहे, कठिन; पञ्चम विनिवर्त-मन की लीलाकर; अमम पञ्चम-
वस महल की पीछे लोडकर; पञ्चम विनिवर्त-अंगी गाय; पूरक मकर-वर्द्ध मकरवर्त;
व्यवर्तनवर्द्ध-महल के लय में) उल्लास रहे गाय बया; पञ्चम-इस तरह साथ विनिवर्त
हूँ; आर्द्धपञ्चम-लीला बया गाय; कर्द्ध-पञ्चम (राग के) विनिवर्त और; मणि
कीपिल-रत्नमय गायार; पञ्चम उल्लास-गो पञ्चम। २६८

हनुमान के कंधे ऐसे पर्वत थे, जिन्हें रावण भी हिला नहीं सके। जब उसे यह भविष्यवाणी सुझी तो उसे सुख हुआ। फिर उस विचार के शिलसिले को, रहे यह, करेकर छोड़ दिया। फिर वह मन्दोदरी का सहल त्यागकर आगे गया। फिर रावण के महल में बैसा, जो मणिमण्डल था और इतना ऊँचा था कि आम होना था कि मेरेपर्वत महल के रूप में बर्त खड़ा है। २१८

निबन्धे निवेन भूवरे निवेन निबद्धरे गुलमादरे
प्रीलने निवेनगु मरुगुलपारे कण्णळमे व्रवममे वीरेरेलेमे
वलने निवेन मादरे निवेन ननिवेनिमरे मदिवानमे
कनने निवेन वनिवेन पूरण मङ्गलके कलदाङ्गळे 299

कलन्तु-मिलकर; तटित्तु इन्द्रि-विद्युत् के बिना ही; इटित्तत-गरजे; मङ्कल
पूरण कलचङ्कळ-मंगलद्योतक पूर्णकुम्भ; वैटित्तत-आप ही आप टूट गये । २९६

जब वह रावण के महल में प्रविष्ट हुआ तब भूमि के कुछ भागों में
कम्पन हुआ । बड़े-बड़े पर्वत हिल उठे । राक्षसियों के बायें अंग, आँखें,
भौंहें और मनोरम कन्धे— उनकी कमरों के समान फड़के । दिशाएँ काँप
उठीं । चन्द्र-सहित आकाश के घटाटोप से, बिना विद्युत् के ही गाजें
गिरीं । मंगलकलश स्वतः फूटे । २९९

पुक्कु निन्नुदन् पुलत्तगीळ नोक्किन्न् पोर्वरुन् दिरुवुळ्ळम्
नेक्कु निन्नुन नीङ्गुमन् दोविन्द नैडुनहर्त् तिरुवैन्ना
अक्कु लङ्गळिल् यावरे यायिन् मिर्वित्तै यैल्लार्क्कुम्
ओक्कु मूळ्मुदै यल्लदु वलियदौन् इल्लैन् वुणर्वुड्डान् 300

पुक्कु निन्नु-प्रवेश करके स्थित होकर; तन् पुलन् कौळ-अपनी बुद्धि को खूब
लगाकर; नोक्किन्न्-उसकी (हनुमान ने) देखा; पोर्वु अरुम्-अनुपम; तिरु
उळ्ळम्-श्रेष्ठ मन; नेक्कु निन्नुतन्-पिघला, ऐसा खड़ा रहा; अन्तो-हन्त; इन्त
नैटु नकर्-इस बड़े नगर की; तिरु-श्री; नीङ्कुम्-मिट जायगी; अँन्ता-ऐसा
सोचकर; अँक्कुलङ्कळिल् यावरे आयिन्-किसी भी कुल का कोई भी क्यों न हो;
इरु वित्तै अँल्लार्क्कुम् ओक्कुम्-दोनों (पाप व पुण्य) कर्म सब पर समान रूप से लागू
होगा; उळ् मुदै अल्लतु-विधि के क्रम को छोड़; वलियतु अँन्नु-बलवान अन्य कुछ;
इल्-नहीं है; अँत-ऐसा; उणर्वुड्डान्-सोचा । ३००

रावण के प्रासाद में प्रवेश करके हनुमान ने रावण पर खूब दृष्टि गड़ाकर
देखा । उसका अनुपम मन पिघल उठा । उसे यह सोचते हुए दुःख
हुआ कि हन्त ! इस विशाल नगर की सारी श्री और सारे वैभव इसके
कारण मिट जायँगे । उसे यह मसल सूझा कि चाहे जो हों, जिस किसी
कुल के भी हों, पाप और पुण्य के दोनों कर्म सभी पर समान रूप से अपना
प्रभाव डालेंगे ही । विधि के विधान से अधिक बलवान कोई वस्तु
नहीं है । ३००

नूर्प्पे रुङ्गड नुणङ्गिय केळ्विया नोक्किन्न् मरुङ्गूरुम्
वैर्प्पे रुम्बडै पुडैपरन् दीण्डिय वैळ्ळिडै वियन्गोयिल्
पार्प्पे रुङ्गडर् पत्तमणिप् पः(ह्)इलैप् पाप्पिडैप् पडर्वैलै
माङ्करुङ् गडल् वदिन्ददै यत्तैयदोर् वत्तप्पिनिर् रुयिल्वानै 301

पैरुङ् कटल्-विशाल सागर-सम; नल्-शास्त्रों का; नुणङ्किय केळ्वियात्-
सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान रखनेवाले ने; मरुम् कूरुम्-वीरता से पूर्ण; वेल् पैरुम् पटै-
भालाधारियों की बड़ी सेना; पुटै परन्तु ईण्टिय-जिसको पार्श्वों से घेरकर ठस खड़ी
रही; वैळ्ळिटै-ऐसे खुले मैदान के मध्य रहनेवाले; वियन् कोयिल्-बड़े राजमहल
में; पैरुम् पाल् कटल्-बड़े क्षीर-सागर मध्य; पल् मणि-अनेक रत्नों के साथ; पल्

[illegible]

उन श्रेष्ठ भुजाओं को; कळिन्तु-पार करके; पुक्कु-प्रवेश करके; इटं करन्त-शरीर में जो छिपे रहे; अनङ्क वेळ् कटुम् कण-मारदेव के भयंकर शर; पाय-निफर गये; वैम् चमतु उळन्त-भयंकर युद्ध में जो पीड़ित हुए; तिचै उयर् यात्तैयिन्-उन बड़े दिग्गजों के; ओळिर् मरुप्पु उर्ऱु-उज्ज्वल दाँत गये; इर्ऱु-जहाँ टूटे; पळम् तळम्पित्तुक्कु इटं इटैये-उन पुराने चिह्नों के बीच-बीच; चिल पचुम्पुण्कळ्-कुछ ताजे घाव; अचुम्पु ऊर्-रक्त बहा रहे थे, (इस भाँति सो रहा था रावण, उसे) । ३०३

बालचन्द्रशेखर शिवजी के कैलास को जिन्होंने हिला दिया, उन रावण की भुजाओं को पार कर क्रूर अन्नगशर उसके शरीर के अन्दर घुस रहे थे । कठोर युद्ध में रावण ने कभी दिग्गजों को त्रस्त किया था । तब उनके उज्ज्वल दाँत इसके वक्ष में गड़ गये थे । उन दागों के मध्य अब ताजे घाव लगे थे और उनसे होकर रक्त रिस रहा था । ३०३

आय पौर्ऱलत् ताय्वळै यरम्बैय रायिर रणिनिर्ऱु
तूय पौर्ऱक्व रित्तिर ळियक्किडच् चुळिपडु पशुङ्गाऱ्ऱिन्
वीय कर्ऱपहत् तेर्ऱुळि विरायत्त वीळ्तीर्ऱु नैडुमेत्ति
तीय नर्ऱ्ऱोडिच् चीदैयै निनैतीर्ऱु मुयिरत्तुयिर् तेय्वात्तै 304

पौन् तलत्तु आय-स्वर्णनगरी अमरावती-वासिनी; आय् वळै-श्रेष्ठ कंकणधारिणी; अरम्पैयर् आयिरर्-सहल अप्सराएँ; अणि निर्ऱु-पास खड़ी होकर; तूय पौर्ऱक्वरित्-तिरळ्-शुद्ध, स्वर्णमूठ वाले चँवर डोल रही है; चुळि पटु-उससे वर्तुल उठनेवाले; पचुम् कार्ऱिन्-मन्द पवन से; कर्ऱपक् वीय-कल्पसुमन के; तैन् तुळि-शहद की बूँदें; विरायत्त वीळ् तीर्ऱुम्-जब-जब छितरकर गिरती है; नैडु मेत्ति तीय-उसका बड़ा शरीर झुलसता है; नल् तौटि-श्रेष्ठ कंकणधारिणी; चीतैयै निनैतीर्ऱुम्-सीता का ज्यों-ज्यों स्मरण करता है; उयिरत्तु-त्यों-त्यों लम्बी साँसें छोड़ते हुए; उयिर् तेय्वात्तै-जिसके प्राण क्षीण हो रहे थे, उसको । ३०४

स्वर्णनगरी अमरावती की वासिनी और श्रेष्ठ चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराएँ उसके पास खड़े होकर-स्वर्णमूठ के चँवर डुला रही थीं । उससे जो धूमकर पवन उठा उससे कल्पसुमन से शहद चूने लगा । ज्यों-ज्यों वे शहद-कण उसके शरीर पर गिरे, त्यों-त्यों उसका शरीर तप्त हो उठा । ज्यों-ज्यों वह सीताजी का स्मरण करता, त्यों-त्यों उसकी ठण्डी आँहें निकलीं और उसके प्राण क्षीण होते जा रहे थे । (ऐसे रावण को हनुमान ने देखा) । ३०४

चान्द ळाविय कलवैमेर्ऱु इवळ्वुर्ऱु तण्डमिळ्प् पशुन्दैन्ऱल्
एन्डु कामवैर्ऱु गत्तलिनुक् कुमिळ्ऱत् दुरुत्तियि नुयिरप्पेर्ऱुक्
कान्दण् मैन्ऱ्विरर् चत्तहिमेन् मनमुदर्ऱु करणङ्गळ् कडिदोड्प्
पान्द णीङ्गिय मुळ्ळैयैन्ऱु कुळ्ळैवुर्ऱु नैञ्जुपाळ् पट्टात्तै 305

कनई अळिवय-अनेक गण्डवय-मिथल; चान्ने मेल-वन्दन के लेय पर; तवळैवई-मन्द-मन्द वडैनेवाली; तण तमिळ पवुम तैरैल-शीतल मयुर मन्द दक्षिणी देवा (मलयवत); एतै काम-सही ईई काम कपी; वूम कनैलैकई-गरम आग के लिप; उमिळ अनळ वुडैलैलिप-लगावैली वमई की सायी की; उयिरैपु-देवा के समान; एर-लगावै से; मयम मुतल करण्डकळ-मन आदि अलःकरण; कामेळ मूँ तिरल चरक मेल-‘कांदळ’ पुण-सदश उगली वाली देवी जानकी के प्रति; कटि ओट-दोडैवै है, इमलिप; पानेळ नीडिकिय-सपु तिससै बाहर चल गय है उस; मुळे अन-बावो के समान; कुळैवई नैवेच-डुवल हिए इदय के साथ; पाळै पट्टेन-डिखल जा है गय, उसकी। ३०५

उसके शरीर पर विविध गण्ड-द्रव्य से मिथिल चन्दन-लेप पड़ा था। उसके ऊपर से मयुर मलयपवन मन्द-मन्द बहा। वडे रावण के अवलम्बित काम की अग्नि के लिए आँधी की देवा के समान लगी। तब उसके मन आदि अलःकरण, ‘कांदळ’ के समान उगली वाली जानकी के पास कूच कर गये। सपुर्विहीन बाँवो के समान उसका हृदय सारहीन बन गया। उसका पिचला दिल डुबल हो गया। (ऐसा उसकी)। ३०५

कौण्डय रुक्क मूळ तिशदोड्ड गुडिल्ले मनाळ मण्डिय शैविवन माने नीळैळल वारि वारि उण्डै नीवटटिपु प्पेवपुके कडैडै रीळैटिपु पपुम अण्डैरदम वुडैळैर रीवेळम वळैळियर उषैव पावै 306 कौण्ड-जा अपनपा; पर ऊकम-वडा उरसाहै; मूळ-ओर वडा; मूँ माळ-मालीन दिन; तव नीळम-दिशा-दिशा मूँ; कुरिवे-लक्ष बनकार; मण्डिय चुरविल-पवै मुळ मूँ; मान नीळकळ-अपनी वडाँ मुवाली से; वारि वारि उण्डै-उठ-उठाकर तिसकी छाया; पूँ वायु नीवटटि-वडाँ मुळ अपा गय; कडैकळ नीळम-मुळ के कोनों से; आँळिक-तिसकर; पापुम-जा वडाँ; अण्डै तम पुकळिल-उस देवो के पय के समान; नीवेळम-जा लगे; वूँ अयिरु अमैलियावै-उन मूँव (वक) दानो के साथ रहैनेवाले की। ३०६

पडले वडैले उरसाहै के साथ रावण ने दिविचय की ओर सधी दिशाओं में समासात मुळ किया। तब अपने वडै दायो से उसने उठा-उठाकर विजयय का अथान किया था। वडे पय डलेने अधिक परिमाण में आदर लिया गया कि उसका वडैत वडाँ मुळ भी उसकी समा नही सका और उसके दोनों कोरों से वडे वडैने लगी। उस पय के समान यकट रहे छद्मा दानों के साथ वडे सो रहा था। (उसकी)। ३०६

वळैळिवय शैके वनै पाडियळ वैपुव सनि पुळैळिवय मीकई जेवण पाडिवुवैर कीवैवुव पाडैयके

कळ्विळ मालै तुम्बि वण्डौडु गरिन्दु शाम्ब
 ओळ्ळिय मालै तीय वुयिर्क्किन्ऱु वुयिर्प्पि तानै 307

वैळ्ळि वैण् चेक्कै-चाँदी के समान श्वेत शय्या; वैन्तु-झुलसी; पौरि अँळ-
 अंगारे छूटे; वैन्तुप्पु मेत्ति-तप्त शरीर में; वेर्-स्वेद; पुळ्ळि-बूंदों में; वैण्
 मौक्कुळ् अँन्त-श्वेत फफोलों के समान; पौटित्तु-छिटककर; कौतित्तु पौङ्क-
 उबलकर उभरी; कळ् अविळ् मालै-मधु-चूती मालाएँ; तुम्पि वण्टौडुम्-अलियों और
 भ्रमरों के साथ; करिन्तु चाम्प-जलकर मिटीं; ओळ्ळिय मालै-उज्ज्वल (मुक्ता-)
 हार; तीय-झुलस गये; उयिर्क्किन्ऱु उयिर्प्पितानै-ऐसा साँस छोड़नेवाले को। ३०७

उसकी शय्या चाँदी के समान श्वेत थी। उसके शरीर के ताप से
 वह जली और उससे अंगारे छूटने लगे। उसके तप्त शरीर पर स्वेदकण
 फफोले के समान खिल गये। उनसे गरमी उठी जिससे शहदसावी मालाएँ
 सूखकर राख बनी। उनके साथ भ्रमर और अलिकुल झुलसे। हार भी
 राख बन जायँ, ऐसा जो साँसें छोड़ रहा था उसको (देखा हनुमान
 ने)। ३०७

तेविय नेमि यानिर् चिन्दैमैयत् तिरुवि नेहप्
 पूविय लमळि मेलाप् पौय्युक् कुडुङ्गु वानैप्
 कावियड् गण्णि तन्वाऱ् कण्णिय काद नीरिन्
 आवियै वुयिर्प्पेन्ऱु इडु सम्मियिट् टरैक्किन्ऱु तानै 308

ते इयल्-दिव्य; नेमियात्तिल्-चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; चिन्तै-मन;
 मैय् तिरुविन्ऱु एक-सच्ची श्रीसीता की ओर गया; पू इयल् अमळि मेला-पुष्पमय
 शय्या पर; पौय् उक्कु-झूठी नींद; उडुङ्कुवानै-सोनेवाले को; कावि अम्
 कण्णि तम् पाल्-नीलकमल-सम आँख वाली के प्रति; कण्णिय कातल् नीरिन्-रखे हुए
 प्रेम के जल से; आवियै-अपने प्राणों को; उयिर्प्पु अँन्ऱु ओतुम्-साँस कहलानेवाले;
 अम्मि इट्टु-सिल पर रखकर; अरैक्किन्ऱु-जो पीस रहा था, उसको। ३०८

दिव्य चक्रधारी श्रीविष्णु के मन के समान इसका चित्त सच्ची
 श्री सीताजी के पास चला गया था। वह पुष्पकलित शय्या पर झूठी नींद
 सो रहा था। नीले कमल के समान आँखों वाली सीता के प्रति प्रेम रूपी
 जल सींच-सींचकर वह अपने प्राणों को साँस रूपी सिल पर रखकर पीस
 रहा था। (उसको—)। ३०८

मिहुन्दहै निनैप्पु मुऱ्ऱु वूरुवळिप् पट्ट वेलै
 नहुन्दहै मुहत्तन् काद नडुक्कुरु मत्तत्तन् वान्ऱेन्
 उहुन्दहै मौळियाण् मुन्नि यौरुवहै युळ्ळि नुळ्ळे
 पुहुन्दन्ऱु लन्ऱो वैन्ऱु मयिर्पुऱुम् बौडिक्किन्ऱु तानै 309

निनैप्पु मुऱ्ऱु मिक्कुम् तकै-(सीता का) स्मरण अधिक होता गया; उरु वळि
 पट्ट वेलै-(सीता का) रूप आँखों में लगा तब; कातल्-प्रेम से; नकुम् तकै मुक्कत्तन्-

ਨਵੰਬਰ ਵਿਖੇ-ਅਪਰ (ਤਦਪਾਸਲ) ਦੇ ਨਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖੋ ; ਕਰਮ ਕਰਨੇ ਸਾਹਿ-ਕਾਲ ਦੇ ਮਾਤ ਕ
 ਸਮਾਨ-ਮਧਮ ; ਤਦਪ ਕਿਸਿਖ-ਤਦਪਾਸਲ ਪਰ ; ਚੰਦਰੇ ਰਾਤਕ-ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਮਕਾਸ
 ਖੁਸ਼ੀ ਦੇ ਨੇ ਹੁੰਦੇ ; ਅੰਞਵਾਂ ਦੇ ਅੰਞ-ਅੰਞਵਾਂ ਦੇ ਸੁਖ ਦੇ ਸਮਾਨ ; ਸਿਖੇ ਕੁਝਕੁਝ-ਵਿਖੇ
 ਕੁਸਾ ਰਮਕਰਨਾਵਾਂ ! ਮਾਤਮ-ਬਖ਼ ; ਨਿਕਰਮੇ ਕੁਝਵਿਖੇਤ ਅ-ਸਾਜ਼ਨਾਵਾਂ ਵਾਂਗ ਵਾਂਗ ;
 ਸੁਝੇ ਨਾਵਾਰਮ-ਪ੍ਰਾ ਕੁਪ ਦੇ ਵਾਂਗ ਬਾਕਰ ; ਅੰਞ ਸੁਝੇ ਤਲਕੁਮ-ਦੀਨਾਂ ਨਾਂਕਾਂ ਕਾਂ ;
 ਕਾਕੁਝ-ਤਖ਼ਾ ਕਰਨੇਵਾਂ ; ਸੁਝੇ ਨੇਵਾਰ-ਮਧਮ ਵਿਖੇਵਾਂ ਕਾਂ ; ਮਝੇਵਾਂ-ਪਰ ; ਸੇਜ-

सुदर्शन चक्र; कुलिचतृतिन्—कुलिश के; वाय्मै—बल को; तुटैतत्—जिसने मिटाया; वलियातै—उस बलिष्ठ रावण को । ३११

रावण का वक्ष आभरणों से भूषित था, जो उसको घेरे लगे रहे काले सागर के मध्य रहनेवाले उदयाचल पर उगे सूर्य के समान आभा बिखेर रहे थे । और उस वक्ष ने पूर्ण देवत्व का भागी तीनों देवों के परशु, चक्र और कुलिश की सच्ची शक्ति को निकम्मा बना दिया था । ऐसे बलवान रावण को हनुमान ने देखा । ३११

तोडुळुद तार्वण्डुन् दिशैयानै मदनदुदेन्द वण्डुञ् जुर्इरि
माडुळुद नरुङ्गलवै वयक्कळिर्इरिन् शिन्दुरत्तै माळु हौळळक्
कोडुळुद मार्वान्तैक् कौलैयुळुद वडिवेलिन् कौर्इ मञ्जित्
ताडौळुद पहैवेन्दर् मुडियुळुद तळुम्बिरुन्द शरणत्तानै 312

तार् तोटु—(रावण के वक्ष की) माला के फूलों को; उळुत वण्डुम्—जो कुरेद रहे थे, वे भ्रमर; तिचै यातै मतम्—दिग्गजों के मद पर; तुतैन्त वण्डुम्—जो अधिक मँडरा रहे थे, वे भ्रमर; चुर्इरि—मिलकर मँडराते हुए; माटु उळुत—पाश्वर्षी में जिसकी कुरेद रहे थे; नरुम् कलवै—वह चन्दन का लेप; वय कळिर्इरिन्—सशक्त गजों के (मस्तक पर मले); चिन्दुरत्तै—सिन्दूर से; माळुकोळ—स्थान बदल ले ऐसा; कोटु उळुत मार्वान्तै—हाथी दाँतों से कुरेदे गये वक्ष वाले को; कौलै उळुत—संहारक; वडिवेलिन्—तीक्ष्ण भाले की; कौर्इम् अञ्चि—विजयशीलता से डरकर; ताळु तौळुत—पैरों पर जिन्होंने विनय की; पक्कै वन्तर्—उन शत्रु राजाओं के; मुटि उळुत—किरीटों के रगड़ने से; तळुम्पिरुन्त—वने चिह्न जिन पर रहे; चरणत्तानै—उन चरणों वाले को । ३१२

उसने कभी दिग्गजों से युद्ध किया था । तब उसकी माला के फूलों को जो कुरेद रहे थे वे भ्रमर और दिग्गजों के मदजल पर जो मँडरा रहे थे वे भ्रमर आपस में स्थान बदलते हुए मँडराने लगे । तब दिग्गजों के मस्तक के सिन्दूर में और रावण के वक्षःस्थल के चन्दन-लेप में स्थानांतरण हुआ था । ऐसे, दिग्गजों के दाँतों द्वारा जिसका वक्ष खुद गया था उस रावण को; और जिसके चरणों में उसके संहारक तीक्ष्ण भाले से डरकर (उसके चरणों में) पड़े राजाओं के किरीटों के रगड़ने के दाग लगे थे उसे (हनुमान ने देखा) । ३१२

कण्डतन् काण्ड लोडुङ् गरुत्तिन्मुन् कालच् चैन्दी
विण्डन कण्गळ् शिन्दि वैडित्तन् कोळु मेलुम्
कौण्डदो रुख मायोन् कुर्ळिनुङ् गुरुहि निन्नान्
तिण्डलै पत्तुन् दोळ्ह ळिखवदुन् वैरिय नोक्कि 313

मायोन् कौण्डतु—मायावी विष्णु ने जो लिया था; ओर् रुख—उस रूप; कुर्ळितुम्—वामन से; कुर्ळि निन्नान्—जो छोटा बना रहा; तिण्डलै पत्तुम्—

मुदुद दसों सिर; तीळकळ इक्कपुम्-वीसों कळ; तिरु-प्रकट; नीक्कि-देवकर; कण्डनन-समसा; कण्डन अडेम्-समसावे हो; कवेलिनन मुन्-उसके मन के पडले हो; कण्कळ-उसकी आँख; कीळुम् सेलुम्-नीचे और ऊपर; वीदेववन-विरुकारिण इड्ड; काल वृषवी-युगान्तकालीन अग्न उगलकर; विण्डन-वृषी। ३१३

हेतुमान मयावी श्रीवर्ण के अपनाये वामन-रूप से श्री लोटे रूप में था। उसने रावण की दस सिरों और बीस होथों के साथ पड़ा हुआ देखा जो समझ लिया कि यही रावण है। यह जान पावे हो उसका मन जोष से फटने लगा। उसके पडले हो उसकी आँखें ऊपर और नीचे विरुकारिण हुईं। उनसे लाल आग निकली और वे और भी खूब गयीं। ३१३

तीळुड लीनार्डु मीरुडुम् वील्लननम
वाळुडुड कण्णळ वीळिवेनान् मणिमुडियुन्
ताळुड लालिवेवुन् तलपवुन् वदेरुवेवुदरि
आळुडुड कान्देन कडियेनय कडियेनय मुडिये 314

वाळु आडुड-लववार की शपथ का प्रथम करनेवाली; कण्णळ-आँखें वाली (सीताजी) की; वीळिवेनान-जो छल से डर लाया; मणि मुडि-उसके रत्न-किरीटों की; अर्ध वाळु आडुडल-अपने पुरों के बल से; वदेरुवे-लवराकर; लले पदुम्-दसों सिरों की; तकरुवे-तीड सिराकर; उदरि-छुटकाकर; आळु आडुड-अपनी पुष्प-शपथ; कान्देन-प्रदधान नहीं कहे ली; कडियेनय-श्रीराम का दस; मुडिये-नहीं बर्णना; तीळ आडुड-सुजबल; अर्ध आडुड-आँखें होना; लले निरुडुम् वाली-आने का यश-वचन; अर्ध आम्-अर्ध होना। ३१४

दीश में आकर हेतुमान ने श्री सीता। लववार की-सी शक्ति रखनेवाली आँखों की रवामिनी सीतादेवी को छल से डर लानेवाले इसके मणिमय किरीटों की अपने पुरों के बल से ठुकराकर, दसों सिरों की सिराकर श्रीराम पर छुटका न दे और इस तरह अपने बल का प्रदर्शन न कराऊ जो श्रीराम का दस कहें रङ्गा में। वना नहीं रङ्गा। और मेरा बाहुबल क्या होगा ? मेरी यात्री यश भी क्या होगा ?। ३१४

तडिवेवुवाळु तडेमपदी वडिमेला तडेमपदी
पडिवेनवा डरकवारु यान्कण्डुम् विळुपपारी
अडिवेवुवान् रळिवेवुन् वलपवुन् मुदुवेवुदरि
मुडिवेनवर् मुडिवेनान् मय मुडिवेनय मुडिवेनय 315

अडिसे नाम-वेवकाड्ड; तडिवेवु वाळु-वगावटी जीवन के; तकेमपदी-स्वभाव की है क्या; तडिवेवु-मुन्दर बाल वाली देवी की; पडिवेन-जो पकड़ लाया; वाळु अरुक्कनार-ऊँर राक्षस; यान् कण्डुम्-देरे वीरुगीवर होने के बाद भी; विळुपपारी-बसा रहे क्या; वाने तीळ अर्धवेवुम् आडिवेवु-उसकी सगरी बड़ी यशायों की लोडकर; लले पदुम्-दसों सिरों की; उदरुवे उदरि-लाल मारकर छुटकाकर; इववर्

मुदित्तु-इस नगर का नाश करके; मुदित्ताल्-कार्य पूरा करूँ तो; मेल् मुदिन्तवा-
आगे जो होगा; मुदिन्तु औल्लिक-हो जाय । ३१५

सेवा क्या केवल अभिनय की वस्तु है ? यह क्रूर राक्षस, जिसने सुरम्य
भाल वाली देवी को हर लिया, मेरी दृष्टि लगने के बाद भी जी जाए ?
उसकी सारी बड़ी भुजाओं को तोड़ दूँगा; उसके सारे सिरों को लात
मारकर लुढ़का दूँगा और इस नगर को ही मिटा दूँगा । आगे जो होगा
वही हो ! । ३१५

अँनूक्कि यँयिरुक्कडित् तिरुहरमुम् विशँन्दळुन्नु
निनूक्कि युणरन्दुरैप्पा नेमिया नरुळत्तुडाल्
औनूक्कि यौन्रिळैत्त लुणर्वुडैयोर्क् कुरित्तत्तुडाल्
पिन्नुक्कि लिवैशालप् पिळैपयक्कु मँत्तप्पैयर्न्दान् 316

अँनू-ऐसा कहते हुए; ऊक्कि-(मन में) उमंग से भरकर; अँयिरु कटित्तु-
दाँत पीसकर; इरु करमुम् पिचैन्तु-दोनों हाथों को मलकर; अँळुन्नु निनू-ऊँचा
खड़ा होकर; ऊक्कि उणरन्तु-फिर उदबुद्ध हो विचारकर; उरैप्पान्-कहने लगा;
औनू ऊक्कि-एक संकल्प करके; औनू इळैत्तल्-दूसरा कार्य करना; उणर्वुडै-
योर्क्कु-समझदारों के लिए; उरित्तत्तु-उचित नहीं होगा; नेमियान्-चक्रधारी
श्रीराम की; अरुळ् अन्नु-आज्ञा भी नहीं; पिन्-फिर; तूक्किल्-तोलकर देखें
तो; इवै-ये कार्य; चाल-बहुत; पिळै-अपराधों को; पयक्कुम्-पैदा कर देंगे;
अँत-सोचकर; पँयर्न्दान्-(शान्तचित्त हो) कोप छोड़ गया । ३१६

ऐसा कहते-कहते उसका मन उमंग से भर गया । उसने दाँत पीसे
और हाथ मले । इस तरह उमड़ने के बाद वह थोड़ा शान्त हुआ ।
विचार कर कहने लगा कि एक कार्य करने को उत्साह से बढ़ना और मध्य
में दूसरे कार्य में प्रवृत्त होना समझदार को नहीं सोहता । यह प्रभु श्रीराम
की आज्ञा के अनुसार भी नहीं होगा । सोचकर देखा जाय तो ये कृत्य
बहुत ही दुष्ट हैं; अपराध होंगे । तब वह कोप को लाँघ गया । ३१६

आलम्बार्त् तुण्डवन्बो लाड्डलमैन् दुळरैन्तिनुम्
शीलम्बार्क् कुरियोर्ह ङैण्णाडु शैय्बवो
मूलम्बार्क् कुरिनुलहै मुरुक्किक्कु मुरैरैन्तिनुम्
कालम्बार्त् तिरैवैलै कडवादक् कडलौत्तान् 317

चीलम्-शील-चरित्र पर; पार्क्क उरियोर्कळ्-दृष्टि रखने अर्ह लोग; आलम्
पार्त्तु उण्डवन् पोल्-हलाहल निकलता देख उसको जिन्होंने खाया, उन शिवजी के
समान; आड्डल् अमैन्तुळर् अँतिनुम्-शक्तिमन्त हों तो भी; अँण्णातु-विचारे विना;
शैय्पवो-कर्म करेंगे क्या; मूलम् पार्क्कुलिन्-आधार देखना हो तो; उलकै
मुड्डक्किक्कुम् मुरै-लोक-संहार का उपाय; तैरित्तम्-जानने पर भी; कालम् पार्त्तु-

उस (शान्त) स्थिति में खड़ा रहा वह आगे यों बोला । चुने हुए कंकणों की धारिणी और आभरणभूषिता स्त्रियाँ इसके साथ सोती नहीं । इसकी स्थिति भी घृणायोग्य कामताप से तपनेवाली स्थिति है और यह बता रही है कि चिड़िया-सी सीता स्वस्थ दशा में हैं । ३१९

अँन्रँण्णि योण्डिनियोर् पयनिल्ले यँतननैयाक्
कुन्ऱुत्तन् तोळवन्ऱुत्त कौडुङ्गोयिर् पुऱुङ्गोण्डान्
निन्ऱुँण्णि युत्तुन्वा नन्ऱुदोविन् नँडनहरिल्
पौत्तुन्नु मणिप्पूणा ळिलळैन्नुन् पौरुमुवान् 320

अँन्रँ अँण्णि—ऐसा सोचकर; इति ईण्डु—अब यहाँ; ओर् पयन् इल्ले—कोई काम नहीं; अँत नितैया—ऐसा सोचकर; कुन्ऱु अन्त-पर्वत-सम; तोळवन् तन्-भुजाओं वाले रावण के; कौडुङ्ग कोयिल्—गोलाकार महल को; पुऱुम् कौण्डान्—छोड़ जाकर; निन्ऱु अँण्णि—खड़ा होकर सोचने; उन्नुवान्—विचारने लगा; अन्तो-हन्त; इ नँडु नकरिल्—बड़े नगर में; पौत्तु तत्तुम्—स्वर्ण में जड़ित; मणि पूणाळ्—रत्नमय आभरण-भूषिता; इलळ्—नहीं है; अँन्त—यह सोचकर; पौरुमुवान्—दुःख से भर गया । ३२०

इस तरह विचार करके उसने निश्चय किया कि अब यहाँ रहने से कोई लाभ नहीं । वह पर्वत-सम भुजा वाले रावण के गोलाकार महल को छोड़कर आगे गया । फिर चिन्ता उसे सताने लगी । हन्त ! शायद इस विशाल नगर में स्वर्ण-रत्न आभरणधारिणी सीताजी नहीं हैं । उसके मन में दुःख उमड़ आया । ३२०

कौत्तुऱानो कऱ्पळियाक् कुलमहळैक् कौडुन्ऱौळिलाल्
तिन्ऱुऱानो वप्पुऱत्तो शैऱित्तात्तो शिरैयिरियेन्
औत्तुऱानु मुणरहिलेन् मीण्डित्तिप्पो यँन्नुरैक्केन्
पौत्तुऱाद पौळ्ळैत्तक्किक् कौडुन्ऱुय्यरम् बोहादाल् 321

कऱ्पु अळिया—अच्युतचरित्रा; कुल मकळै—श्रेष्ठ कुल-जाता सीता को; कौडुम् तौळिलाल्—क्रूर घातक कर्म करके; कौत्तुऱात्तो—मार दिया; क्या; तिन्ऱुऱात्तो—खा लिया क्या; अ पुऱत्ते—उधर दूर पर; चिरै चैऱित्तात्तो—जेल में डाल दिया क्या; अरियेन्—जान नहीं पाता; औत्तुऱात्तुम् उणरकिलेन्—किसी भी विध समझ नहीं सकता; इति—आगे; मीण्डु पोय्—लौट जाकर; अँन् उरैक्केन्—क्या बताऊँ; इ कौडुम् तुय्यरम्—यह कठोर दुःख; पौत्तुऱात्त पौळ्ळुन्—नहीं मरने पर; अँतक्कु पोकात्तु—मुझसे दूर नहीं होगा । ३२१

(हनुमान पसोपेश में पड़ गया । उसे सन्देह होने लगा ।) क्या रावण ने अच्युतशीला श्रेष्ठकुलकन्या सीताजी की हत्या करके मिटा दिया ? या उसे खा लिया ? या उनको सुदूर कहीं बन्द कर रखा है ? कुछ समझ में नहीं आता, जान नहीं पाता । जानने का कोई मार्ग भी

ऊल्लियान् पँरुन्देवि यौरुत्तियुमे यात्गाणत्
आल्लिता यिडराळिक् किडैयेवीळ्न् दल्लिवेनो 324

एळु नूळ ओचनै-सात सौ योजन; चूळन्तु-घेराव के; अँयिल्-प्राचीर के साथ; किटन्त-रहनेवाले; इ इलङ्क-इस लंका नगर में; वाळुम्-जीनेवाले; मा मन् उयिर्-श्रेष्ठ नित्य जीवन के प्राणियों में; यात् काणात इल्लै-जो मैंने नहीं देखा, वह कोई नहीं है; ऊल्लियान्-युगान्त के बाद भी रहनेवाले देव की; पँरु तेवि औरुत्तियुमे-आदरणीय देवी एक को; यात् काणेत्-मैंने नहीं देखा; आल्लि ताय्-(जल का) समुद्र लाँघकर; इटर् आळिक्कु इटैये-दुःख के समुद्रमध्य; वीळ्न्तु अल्लिवेनो-गिरकर मर जाऊँगा क्या । ३२४

सात सौ योजन लम्बे प्राचीर के अन्दर रहनेवाली इस लंका नगरी के जीवों में कोई नहीं बचा, जिसको मैंने नहीं देखा हो ! पर युगान्त में अमर रहनेवाले श्रीराम की आदरणीया देवी, एक ही दृष्टि में नहीं आयीं । जल का समुद्र पार करके दुःख-सागर में गिरकर मर जाऊँगा क्या ? । ३२४

वल्लरक्कन् रत्तैप्पड्रि वाय्पत्तुड् गुरुदिवरक्
कल्लरक्कुड् गरदलत्ताड् काट्टैर्न् काण्गेत्तो
अँल्लरक्कु मयिलार्वे लिरावणन् भिव्वूरुम्
मँल्लरक्कि नुरुहिविळ् वँन्दळलिट् टेहेनो 325

वल्ल अरक्कन् तत्तै-क्रूर राक्षस को; कल्ल अरक्कुम्-चट्टान को चूर कर सकनेवाले; गर तलत्ताल्-करतल से; वाय् पत्तुम्-दसों मुखों से; कुरुति वर-रक्त बहता आए ऐसा; पड्रि-पकड़कर; काट्टु अँर्न्-दिखाओ उन्हें, कहकर; काण्गेत्तो-नहीं देखूँ क्या; अँल्-सूर्य को; अरक्कुम्-त्रास देनेवाले; अयिल् आर्-तीक्ष्णता से युक्त; वेल् इरावणन्तुम्-भालाधारी रावण और; इ ऊरुम्-यह नगर; मँल् अरक्किन्-कोमल लाख के समान; उरुकि विळ्-पिघलकर गिर जाएँ ऐसा; वँम् तळल् इट्टु-गरम आग लगाकर; एकेत्तो-नहीं जाऊँगा क्या । ३२५

कितना चाहता हूँ कि पर्वत-चूर्णकारी अपने हाथों से निर्मम राक्षस रावण को उसके मुखों से रक्त बहने देते हुए पकड़ूँ और कहूँ कि सीताजी को दिखाओ और उसके दिखाने पर देवी को देख लूँ ! सूर्य को भी अपनी चमक से कष्ट देनेवाले तीक्ष्ण भाले के धारक रावण को और इस नगर को क्या आग लगा देकर नहीं जाऊँगा, ताकि वे लाख के समान पिघलकर गिर जाएँ ? । ३२५

वानवरे मुदलोरे वित्तवुर्वनेल् वल्लरक्कन्
तानीरुव नुळनाह वुरैशैय्युन् दरुक्किलराल्
एनैयव रँड्गुरैप्पा रँव्वण्णन् दैरिक्केत्तो
ऊनौळिय नीङ्गाद वुयिर्शुमन्द वुणर्विलियेत् 326

ऊन् ओळिय-यह शरीर छूट जाए ऐसा; नीङ्कात-जो नहीं जाता; उयिर्-

उस जान की; समस्त—जो ही रहा है; उग्राविलिये—वह पावहीन है; बावरे सुलारि—देवी आदि से; विवर्तवर्तल—पूछें तो; वल अरककनं ताम्—कठोर राक्षस; आरवम—एक; उल्लूक आक—बल रहता है तब; उरं वृष्टं तवकुं कलर—उनसे उतर देने का साहस नहीं; पतंजलर—अथ कीड़े; अकुं उरं पार—कहो वलाएंगे; अथ वण्णसं तिरिककेतो—कैसे जान पाऊंगा। ३२६

ये राशरीर नहीं छूटता। प्राण नहीं निकलने और मैं उन्हें व्यर्थ ही रहा हूँ। निर्वृत्त मैं देवी से पूछूँ तो उनमें कौन राक्षस की उपस्थिति में सचची बात बताने का साहस नहीं रहेगा। फिर और कोई कहाँ कहेंगे? फिर मैं कैसे जान लूँगा?। ३२६

अरवककु सुदलाय शसंवादि पिलङ्गपिलनं
तिरवककु उन्नतयः नवन्नरुणं निवन्नदालं
करवककु नृनन्दरकः कवलितंय करंयादे
उरवककु विन्नमसुना नृनवादे पुनर्वेवो 327

अरवककु सुदलाय—गोशों के अधिपति; शसंवादि—सम्पत्ति (ने); अ निवन्नं—उन श्री की; इलङ्कपिलं कण्ठनैव—लंका में देखा; अन्ननैव—कहो; अवन्नं उरुमं विन्नं नन्द—उसका वचन वृथा ही गया; कर वककुमं नृनं नकरं—(अज्ञा हारा) विषकी रत्न—गम्य—निष्—किपा की गयी उस वड़े नगर की; कवलितंय करंयादे—विषकी के बीच में गलाये विना; नात्र—मैं; इन्नंमसुम—अथ श्री; उरव कण्ठ उन्नं आकि—अपना शरीर धारण करदेवाला बना; उन्नंवेवो—कह उठाना रहें क्या। ३२७

गोशों के नायक सप्तपत्नी ने तो कहा था कि मैंने सीताजी की लंका में देखा है। उसका कहा श्री झूठा हो गया है। वद्वेव ने नीव के “गम्य” में रत्न आदि रखने का रत्न अदा करके इस नगर की सृष्टि करायी थी। इस नगर की समृद्ध में गलाये विना मैं अपना शरीर लौटा हूँ आ हूँ। ख करला किछूगा क्या? (“कर वककु” के गम्य रखकर; गम्य में रख कर, दोनों अर्थ हैं। “नीव” डालते समय रत्न, स्वर्ण आदि रखकर उसके ऊपर दीवार चूनना प्रचलित है। उसके आधार पर इस पथ में हमने ज्ञाता हारा “गम्य” व्यस का अर्थ किया है। अपने गम्य में यानी अपने अन्दर सुरक्षित स्थान में जो लंका नगर सीताजी की रखती था उस नगर की—यह अर्थ श्री संगत है ही।। ३२७

वतिनारपुङ्गु गजलालं वानरिय मण्णारियं
पिलङ्गपिलनं वलरककं वृन्मार्उमं विळ्ळदालं
अन्नंवाळि पिलङ्गपिलनं पिलङ्गपिलनं विरिवेव
सुविन्नंवाले यान्मुविदमं मुन्नमन्नं वृन्नंयारवन् 328
वतिनारपुङ्गु—गजलालं वानरिय मण्णारियं

वतिनारपुङ्गु—गजलालं—गजोत्तम के अथ वाली सीता की;

इ अटल् अरक्कत्-इस बलिष्ठ राक्षस ने; वान् अरिय-स्वर्ग के लोक के जानते; मण् अरिय-भूलोक के जाने; पिटित्तान्-ग्रस लिया; अँतुम् मारुम्-यह प्रवाद; पिळैयातु-झूठा नहीं होगा; आळि इलङ्कैयितै-समुद्रवलयित लंका को; अँटुत्तु-उत्पाटित कर; इरुम् कटलिन् इट्टु-विशाल सागर में डालकर; इवतै मुटित्ताले-इसका अन्त करूँ, तभी; यान् मुटितल्-मेरा मरना; मन्ऱ मुटै-उत्तम क्रम होगा; अँन्ऱु उणर्वान्-ऐसा विचार किया । ३२८

सँवारे-सँजोये सुन्दर केश वाली सीताजी को यह बलिष्ठ राक्षस देवों के और भूलोकवासियों के जाने, ग्रस लाया था । यह अपवाद दूर नहीं होगा । इसलिए समुद्रमध्य लंका को उखाड़ लेकर समुद्र में फेंक कर इसको भी मारकर मिटा दूँ तभी जाकर अपना अन्त कर लूँ, यही श्रेष्ठ मार्ग है । ३२८

अँळुऱैयु	मीळियामल्	याण्डैयिनु	मुळत्ताहि
उळुऱैयु	मीरुवन्तैप्पो	लैम्मरुङ्गु	मुलाविन्नान्
पुळुऱैयु	मानत्तै	युरनोक्किप्	पुऱम्बेर्वान्
कळुऱैयु	नरुञ्जोलै	ययलौन्ऱु	कण्णुऱान् 329

अँळ उऱैयुम्-तिल जहाँ रह सकता है, उस छोटे स्थान को भी; अँळियामल्-विना छोड़े; याण्डैयित्तुम्-सर्वत्र; उळत्ताकि-विद्यमान होकर; उळ उऱैयुम् ओरुवन्तैप्पोल्-अन्तर्यामी की तरह; अँ मरुङ्कुम् उलाविन्नान्-सब स्थानों में घूमा; पुळ उऱैयुम्-जहाँ पक्षी रहे; मानत्तै-एक चैत्य को; उऱ नोक्कि-ध्यान से देखकर; पुऱम् पेर्वान्-बाहर जो आया; कळ उऱैयुम्-शहद जहाँ था; नरुम् चोलै ओन्ऱु-ऐसे सुगन्धपूर्ण एक उद्यान को; अयल्-पास में; कण् उऱान्-(उसने) देखा । ३२९

वह अन्तर्यामी श्रीराम के समान तिल रखने का उतना स्थान भी नहीं छोड़कर सर्वत्र घूमकर आया । फिर एक चैत्य में गया जिसके गुम्बज में पक्षी रहते थे और उसे ध्यान से देखने के बाद बाहर गया । वहाँ उसके पास उसने एक उपवन को देखा, जो शहद और सुवास से भरा था । ३२९

3. काटचिप् पडलम् (सीता-दर्शन पटल)

माडु	निन्ऱवम्	मणिमलर्च्	चोलैयै	मरुवित्
तेडि	यिव्वळिक्	काण्पेत्तेऱ्	ओरुमैन्	शिरुमै
ऊडु	कण्डिलै	नैन्ऱपि	नुरियदौन्	डिल्लै
वीडु	वैन्मर्ऱिव्	विलङ्गन्मे	लिलङ्गैयै	वीट्टि 330

माडु निन्ऱ-पार्श्व में स्थित; अ मणि मलर् चोलैयै-उस सुन्दर पुष्पोद्यान को; मरुवि-जाकर; इ वळि तेडि-यहाँ खोजकर; काण्पेत्तेल्-देखूंगा तो; अँन् चिरुमै-मेरा दुःख; तीरुम्-दूर होगा; ऊडु-उसके अन्दर; कण्डिलैन् अँन्ऱ पिन्-नहीं देख पाया तो फिर; इ विलङ्कल् मेल् इलङ्कैयै-इस पर्वत पर की लंका को; वीट्टि-

गण करके; वीरवैभवं-मैं भी मर जाऊंगा; मरऊ-और; उरियवु-करने योग्य; अविच्छ-छुट; डलने-गहो। ३३०

அறிவு-குற! துவ-புது! 330

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

शुद्ध	गालुक्क	कूपुदिन	निरादेवन	ऊवन
आगेरि	वाववर	पुमळ	पुलिन्नन	ववनार
अनक	वाळरक	कगिगुड	पुववळि	ववन
वुनर	नारिदन	निनियिन्न	वनिव्विवा	कणिन्नन 331

भूत-नेमा निवय करकः इराकवर्षं पुनर्-प्राप्तिवय का पुनः । बालं पुष्क-
 तवान्नं पृथ्वः अप्रतिवर्ष-गणः वातवर्ष-क्षयः अग्नि-वय होकरः पृ मन्-
 गुणवर्षः प्राणवर्ष-करकः उवर्षवर्ष-गिवन हृष्टः वाळ अरकक-वर्षवर्ष-
 धारि राक्षस रावण नः अर्ध-वय दिनः अ वधि-वर्षः विष्ट वनेन-विनकी वयो
 वनाकर रण आः पुनश्च अल आपिन वने-एन काले काले वानी कीः । नन-दिपतिः
 इति-अवः । बौद्धिवासे पुनिवर्ष-कहेने की राना (हमने) । ३३१

पूज्य श्रीराधव का दून दुर्गमात्र ऐसा सोचकर उस उद्यान में जा पहुँचा। सभी देवी ने मिलकर उस पर फूल बरसाये। और वे हँसित हुए। हम (कवि) अब उन घने अश्वकार-घम के भाँसी सीताजी का होल बनाम करने का साहस करते हैं, जिन्हें नवलराष्ट्रादि राज्या ने उस उपवन में बन्दी बना के रखा था। (साहस करना पड़ता है इसलिए कि देवी का दुःख असह्य है।) । ३३१

१३३ । (१) १३३३ ॥ १३३३ ॥

वर्गम	उरुगालवा	उरुकरिकयूर	नूरुकरकवड	गिरुगेरुडळ
कर्मम	उरुगीळने	दुनकुमार	पुडिवरक	काणा
नर्मम	उरुदुर्ग	नलनर	वृणडंगिय	नडंग
सुर्मम	उरुगुणवनि	वेकुळ	वडंगु	सुनिनेरुडळ

332

कलं महच्छृङ्ग-परधर मः, शूलनव-उगकरः, शैवेन्द्रम-कभी मः, आरु विन्द-
(जल की) एक वृद्ध मः, वर काणा-आती जा न देखती, मत् महत्तु पाल-उस
शूठ शेषवि के समान, मत्त अर-सुमीते से रहित, उगच्छिकय-जी सुखायी रहती,
महक-दही, मत् महच्छृङ्ग पाल-शैल कपर के समान, वैर उल्ल अहकमुप-अप
अगो से मः, मलिनमाल-शैलपति पाकर, महच्छृङ्ग-पाम मः, मत्-कठोर,
माल-नलवारधारिणी, अरककिकपर नरकक-राक्षसियों के पास बैठे, अहक इवमाल-
वर्षा रहती । ३३२

સેવી રમ જીવ જીવિષ કે સમાન મુશ્કેલી હૈઈ જા, જો વચ્ચર કે

मध्य उगी थी और जिसे जल की एक बूंद भी देखने का भाग्य नहीं हुआ था। विगतसौन्दर्य उन देवी के सारे अंग उनकी ही कमर के समान क्षीण हो गये थे। उनके पास चारों ओर कठोर और तलवारधारिणी निशाचरियाँ रहकर उनको त्रास दे रही थीं। देवी उस स्थिति में पायी गयीं। ३३२

तुयिल् नक्कण्ग छिमैत्तलु मुहिळ्त्तलुन् दुऱन्दाळ्
वैयिल् डैत्तन्द विळक्कैन् वीळियिला मय्याळ्
मयिल् यङ्कुयिन् मळलैयाण् मानिळम् बेडै
अयिल् यिर्ऱुवैम् बुलिक्कुळात् तहप्पट्ट दन्ताळ् 333

तुयिल् अँत-नींद के नाम पर; कण्कळ् इमैत्तलुम्-पलक उठाना और; मुकिळ्त्तलुम्-बन्द करना; तुऱन्ताळ्-जिन्होंने छोड़ दिया था; वैयिल् इटै-धूप में; तन्त विळक्कु अँत-रखे हुए दीप के समान; ओळि इला मय्याळ्-निष्प्रभ शरीर वाली; मयिल् इयल्-मयूराभा; कुयिल् मळलैयाळ्-कोकिल-मधुरभाषिणी; इळम् मान् पेदै-बाल-हरिणी; अयिल् अयिर्ऱु-तीक्ष्ण दाँत वाले; वैम् पुलि कुळात्तु-भयंकर व्याघ्रों के झुण्ड में; अकप्पट्टतु अन्ताळ्-फँस गयी हो, ऐसी स्थिति में रहीं। ३३३

देवी ने नींद के नाम पर पलकें बन्द करना और खोलना छोड़ दिया था। वे आतप-मध्य दीप के समान निष्प्रभ-शरीर थीं। मयूर-सम सुन्दरी और कोकिल-सम मधुर-वाणी देवी उस बाल-हरिणी के समान लग रही थीं, जो तीक्ष्ण दाँत वाले क्रूर व्याघ्रों के झुण्ड के मध्य फँस गयी हो। ३३३

विळुदल् विम्मुदन् मय्युऱ वैदुम्बुदल् वैरुवा
अँळुद लेङ्गुद लिरङ्गुद लिरामत्तै यैण्णित्
तौळुदल् शौरुद रुळङ्गुद इयुरुळन् दुयिर्त्तल्
अँळुद लन्ऱिमर् इयलीन्ऱुन् जैय्हुव दऱियाळ् 334

विळुतल्-गिरना; विम्मुतल्-सिसकना; मय्य-शरीर का; उऱ वैतुम्पुतल्-बहुत तप्त होना; वैरुवा-डरकर; अँळुतल्-उठना; एङ्कुतल्-तरसना; इरङ्कुतल्-रोना; इरामत्तै अँण्णि-श्रीराम का स्मरण करके; तौळुतल्-नमस्कार करना; चोरुतल्-शिथिल पड़ना; तुळङ्कुतल्-काँपना; तुयर् उळन्तु-दुःखपीड़ित हो; उयिर्त्तल्-निःश्वास छोड़ना; अँळुतल्-मुख खोलकर रोना; अन्ऱि-अलावा; मऱु अयल् औन्ऱम्-अन्य कोई काम; चैय्कुवतु अऱियाळ्-करना नहीं जानती। ३३४

नीचे गिरना, सिसक-सिसककर रोना, शरीर का तप्त होना, डरकर फिर उठना, तरसना, दुःखी होकर रोना, श्रीराम का स्मरण करके नमस्कार करना, शिथिल पड़ना, काँपना, वेदना-विदग्ध हो निःश्वास छोड़ना, फूट-फूटकर रोना —इनको छोड़कर वे और कोई काम ही नहीं जानती हों, ऐसा व्यवहार कर रही थीं। ३३४

नञ्चन	प्राज्ञमुत्तमं	नञ्चनञ्चन	दक्षिणपार्श्व	उत्तमं
पुञ्चन	प्राज्ञादं	निरनञ्चनम्	वृत्तिविज्ञानं	प्राज्ञिवाचं
उञ्चकञ्च	उत्तमिय	मकङ्गिला	विष्णुनैवेद्यं	किञ्चिद्विवाचं
मञ्चकञ्च	प्राज्ञवर्द्ध	कारणकं	वर्द्धनवाचं	वर्द्धनवाचं

इच्छेकस्मिन् गुणायाम-पूर्व से भी महीनः, महच्छेदनात्-कमर बाली, नीर-
 (अर्थ) जलः, पुच्छेदेन पाल-छेदकर जाता हो जाँसे; लच्छेदेन-घृष्ट; पूर्वं पूर्व
 नदीसे की और बढ़ता है; निरवतारम्-निरन्तर; पालिकान्ते-निरता रहे जा;
 पालिवान्-उस दृश्य से; इत्थं नदीसं कर्णकम्-आपत अवश्य का; महच्छेकम् अंगुष्ठ-
 'वदस्यतां आहू' की उपाधि का; कारणात् क्रियमान्-हेतुबोधक नाम के अङ्गलः
 वच्छेदेनान्-(वर्त से) बर्ता लिया था । ३३५

सूत्र से श्री क्षीण कटि वाली देवी का अभ्युत्पन्न स्वन-वटी पर छिदे-से निरकर सरिता के समान बहे । उस दृश्य से “वरसाती आँखें” का नाम उनकी आँखों के लिए सायूक सावित हो रहा था । “वरसाती आँखें” या मेघ-सदृश आँखें” इस अर्थ में कही जाती है—‘ऊँचा वरसानेवाली शीतल आँखें’ । इधर वरसात के समान आँसू बहेला था । अतः यह नाम सायूक बन गया । ३३५

अरिय	समंविमो	उज्जल	मिबुमुद	नदिदम	कयिउवळ	कल्ल	रुववरो	उरुववरो	पुल्लि	पिपिपळ	336
अरिय	समंविमो	उज्जल	मिबुमुद	नदिदम	कयिउवळ	कल्ल	रुववरो	उरुववरो	पुल्लि	पिपिपळ	336

अरिपु मरुतिवर्तु-अर्धं भवति के भाग्यः
अतिक्रमं करिष्य-एते अष्टिक काले पदायुर्गो कोः
नारि-आर्तु के अर्थः कलत्रं पुत्रक-संगार से प्रवेश्य कर जाय ऐसा (इतना) कष्टवर्ध-
कृतु करनी ऐनी; उल्लिखित-इस संसार में; अरिपु कालर अर्धवर्तु आर्धवर्तु-
मध्यम-वर्ध भूषा एक-इसरे से; अरिपु अर्धमं पुत्र-विद्यागम्य कृतुः (ने); उरुव
कलत्राल अर्ध-मानो रूप धरा हो ऐसा; अरिपुमाद-रोगप्राप्तिवर्णा । ३६६

सोताजी काले मेघों, अंबन आदि को देखतीं तो उनकी शीतल का स्मरण हो आता। तब उनकी आँखों से आँसू जो बहता वह समुद्र में जाकर मिले इतना अधिक होता। देवी परम्पर वरावती सचच प्रेमी-युगलों के वियोग-दुःख के साकार रोग के समान लग रही थी। ३३६

[illegible]

तुपिप्ताल् चैयूत-प्रवाल के बने; कैयौटु काल् पॅरु-हाथों के साथ पॅर पाये हुए; तुळि मञ्चु-जलकण बरसानेवाले मेघों के; औपिप्ताल् तत्तै-समान रहनेवाले श्रीराम को; नितै तौङ्गम्-जब-जब स्मरण करतीं; नैटुम् कण्कळ्-दीर्घ आँखों ने; उकुत्त-जो आँसू गिराये; अपिप्ताल्-उस जल से; नत्तैन्तु-भीगकर; अरुम् तुयर्-कठोर दुःख के कारण; उयिर्प्पु उटै याक्कै-निःश्वास छोड़नेवाले शरीर के; वैपिप्ताल्-ताप से; पुलर्न्तु-सूखकर; और निलै उद्रात-एक स्थिति में जो नहीं रहा; मैन् तुक्किलाळ्-वैसे महीन वस्त्रावृता । ३३७

जब कभी वे विद्रुमनिर्मित चरणों और हस्तों-सहित मेघ के समान शोभनेवाले श्रीराम का स्मरण करतीं तब उनकी आँखों से जल बहता । उस जल से उनका महीन वस्त्र भीग जाता । फिर गरम निःश्वास छोड़नेवाली उनके शरीर का ताप उस वस्त्र को सुखा देता । इस तरह वे ऐसे महीन वस्त्र से आवृत थीं, जो एक स्थिति में नहीं रह पाता था । ३३७

✽ अरिदु	पोहवो	विदिवलि	कडत्तलैन्	रञ्जिप्
परिदि	वात्तवन्	कुलत्तैयुम्	बळियैयुम्	बाराच्
चुरुदि	नायहन्	वरुम्वरु	मैन्बदोर्	तुणिवाल्
करुदि	मादिर	मत्तैत्तैयु	मळक्किन्ऱ	कण्णाळ् 338

वितिवलि कटत्तल्-विधि के बल को परास्त करना; पोहवो अरितु-अगम है; अँत्तु-ऐसा; अञ्चि-डरकर; चुरुति नायकन्-वेदनायक; परिति वात्तवन् कुलत्तैयुम्-सूर्यकुल का और; पळियैयुम्-उस पर (अपने कारण) लगे कलंक का; पारा-विचार करके; वरुम् वरुम्-आयेंगे, आयेंगे; अँत्तपतोर् तुणिवाल्-ऐसे एक निश्चय से; करुति-सोचकर; मातिरम् अत्तैत्तैयुम्-सारी दिशाओं को; अळक्किन्ऱ कण्णाळ्-नाप रही आँखों वाली । ३३८

वे दिशा-दिशा में दृष्टि डालकर श्रीराम के आने की बाट जोह रही थीं । उनका विचार था कि वेदनायक श्रीराम अवार्थ विधि-बल को मानकर अपने सूर्यकुल के अपयश को दूर करने हेतु अवश्य और शीघ्र आ जायेंगे । ३३८

कमैयि	नाडिरु	मुहत्तयर्	कटुप्पुऱ्क्	कटुविच्
चुमैयु	डैक्कऱ्ऱै	निलत्तिडैक्	किडन्दत्	मदिये
अमैय	वायिर्प्पैय्	दुमिळ्हिन्ऱ	वयिलैयिर्	इरविल्
कुमैयु	इत्तिरिण्	डौरुशडै	याहिय	कुळलाळ् 339

कमैयिताळ्-क्षमाशालिनी के; तिरुमुकत्तु अयल्-श्रीमुख के दोनों ओर; कटुप्पु उऱ्-गालों पर लगे; कटुवि-पकड़कर; चुमै उटै-भारी; कऱ्ऱै-केश-लटों की राशि; निलत्तु इटै किटन्त-भूमि पर रहे; तू मतियै-पवित्र पूर्णचन्द्र को; अमैय-खब लगे; वायिल् प्यैतु-मुख में निगलकर; उमिळ्किन्ऱ-जो उगलता है; अयिल्

सुीतली सुीतने लगी । श्रापद देवर लक्ष्मण ने भरे नाथ की नही देखा क्या ? श्रापद दोनो गरजने सागर-मध्य रहनेवाली लंका की बात नही जानते । लोकनिकायवासक रावण के मुझे डेर ले आने की बात श्रापद

नहीं जानते ! ऐसी बात सोचती हुई वह इस तरह वेदनाविद्ध हुई मानो खुले व्रण में आग घुस गयी हो । ३४१

❀ माण्डु	पोयिन	नैरुवैयर्क्	करशन्मड्	रवरो
डाण्डे	यैन्निलै	युरैप्पव	रिल्लैयिप्	पिडप्पिल्
काण्ड	लोवरि	दैन्ऱुळम्	विम्मुळ्	गलङ्गुम्
मीण्डु	मीण्डुपुक्	कैरिनुळैन्	दालैन्	मैलिवाळ् 342

अरुवैयर्क्कु अरचन्-गीधों के राजा; माण्डु पोयित्तन्-मर गये शायद; अवरोट्टु-श्रीराम के पास; अन्न निलै-मेरी स्थिति; आण्टै-वहाँ; उरैप्पवर् इल्लै-कहनेवाले नहीं रहे; इप्पिडप्पिल्-इस जन्म में; काण्डलो अरितु-दर्शन दुर्लभ है; अन्न-कहती हुई; उळम् विम्मुळ्-चिन्ता से भर जाती; कलङ्कुम्-व्याकुल बनती; मीण्डुम् मीण्डुम्-फिर-फिर; अरि पुक्कु नुळैन्ताल् अन्त-आग (व्रण में) घुस गयी हो जैसे; मैलिवाळ्-दुर्बल पड़तीं । ३४२

गीधों के राजा जटायु भी मर गये शायद ! उनके सिवा उधर कोई नहीं हैं, जो मेरे पति से मेरा हाल कहे । इसलिए इस जन्म में फिर उनसे मिलना असम्भव हो गया । यह सोचकर वे पीड़ा से भर जातीं । उनका मन आकुलित हो जाता । फिर-फिर आग घुस रही हो, ऐसा वे दुर्बल पड़ती जातीं । ३४२

अन्नै	नायह	तिळवलै	यैण्णिला	विनैयेन्
शौन्न	वार्त्तकैट्	ट्रिविल	ळैन्तुत्तुन्	दानो
मुन्नै	यूळ्वितै	मुडिन्ददो	वैन्ऱैन्ऱु	मुर्ऱैयाल्
पन्ति	वाय्पुलर्न्	डुणर्वुतेय्न्	दारुयिर्	पदैप्पाळ् 343

अण् इला विनैयेन्-अगणित पापकर्म जो कर चुकी उस मैंने; इळवलै चौत्त-लघु भाई के प्रति जो कहे; वार्त्तकैट्टु-वे वचन सुनकर; नायकन्-मेरे नाथ; अन्नै-मुझे; अत्रिवु इलळ्-बुद्धिहीन; अन्त-समझकर; तुन्ऱन्तातो-छोड़ गये क्या; मुन्नै ऊळ्वितै-मेरे पूर्वकर्मों का; मुडिन्ततो-फल मिला है क्या; अन्न अन्न-ऐसा; मुर्ऱैयाल्-क्रम से; पन्ति-कहकर; वाय् पुलर्न्तु-मुख सूखा; उणर्वु तेयन्तु-मुख क्षीण हुई; आरुयिर् पदैप्पाळ्-प्राण छटपटाने लगें ऐसा, तड़प रही थीं । ३४३

मैं बड़ी पापिनी हूँ, जिसने असंख्यक पाप किये हैं । मैंने देवर से कुवचन कहे । शायद मेरे पति ने वह बात सुनकर मुझे मूर्ख समझकर त्याग दिया है क्या ? मेरे पूर्वजन्म के पाप ने अब फल दे दिया क्या ? वे क्रम से ऐसे विचार प्रकट करती हुई सूखते मुख और क्षीण होती सुध लेकर विकलप्राण हो रही थीं । ३४३

अरुन्दुम्	मैल्लड	हारिड	वरुन्दुमैन्	उळ्ळुङ्गुम्
विरुन्दु	कण्डपो	दैन्ऱु	मोवैन्ऱु	विम्मुम्

चोर्इ वाण्डेला मुर्देन्दन्त्रि यन्नहरत् तुन्नान्
उर्इ दुण्डेत्ताप् पडरुळन् दुडादन वुरुवाळ् 346

पेर्इ तायरुम्-जननी माताएँ; तम्पियुम्-छोटे भाई भरत; पैयर्त्तुम् वन्तु
अय्यति-फिरकर आ पहुँचकर; कोर्इ मा नकर् कोण्डु-विजयी नगर को लेकर;
अळुन्तार्कळो-गये हैं क्या; कुर्इत्तु चोर्इ-निर्धारित कर कहे हुए; आण्डु अलाम्-
पूरे वर्ष; उर्इन्तु अन्त्रि-(जंगल में) रहे विना; अ नकर् तुन्नान्-उस नगर को
नहीं जायेंगे; उर्इत्तु उण्डु-(इसलिए) कुछ आक्रांत होगी; अँता-ऐसा विचार
करके; पटर् उळन्तु-दुःख में पड़कर; उडातत-अभूतपूर्व; उरुवाळ्-कष्ट से
पीड़ित हुई। ३४६

उधेड़बुन में लगकर वे आगे सोचतीं कि क्या उनकी जननी
माताएँ और अनुज भरत फिर से वहाँ आकर उन्हें विजयशील बड़े नगर
अयोध्या लिवा ले गये हैं ? पर श्रीराम तो अवधि पूरा होते तक अयोध्या
नहीं लौटेंगे। तब इसलिए लगता है कि कुछ (अनिष्ट) हो अवश्य गया
है। इस विचार के आते ही वे बहुत उद्विग्न हो गयीं और उन्हें अभूतपूर्व
दुःख सताने लगा। ३४६

मुरन् तत्तह मीयम्बितोर् मुत्तबोरु दवर्पोल्
वरन्मु मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बिल वल्लार्
पौरनि हळन्ददोर् पूजालुण्ड डार्मेनप् पौरुमाक्
करन् दिर्न्ददु कण्डत्त ठार्मेनक् कवल्वाळ् 347

मुरन् अँतत्तकुम्-मुर आदि; मीयम्बितोर्-सबल; मुत्त पौरुतवर् पोल्-पहले
श्रीविष्णु से जो लड़े उनके समान; वरम्पु इल वरन्तुम्-असीम वर-प्राप्त; मायमुम्
वञ्चमुम्-माया और वञ्चना में; वल्लार्-समर्थ; पौर-लड़ने आए हों;
निकळन्ततोर् पूचल् उण्डाम्-और युद्ध हुआ हो; अँत-सोचकर; पौरुमा-दुःखी
होकर; करन् अँतिर्न्ततु-खर ने जो सामना किया; कण्डत्त आम् अँत-उसको
(फिर से) प्रत्यक्ष मानो देखतीं; कवल्वाळ्-वैसे पीड़ित होतीं। ३४७

‘मुर’ नामक राक्षस आदि अनेक बलवानों ने जैसे (श्रीविष्णु से)
युद्ध किया था वैसे अगाध वर, माया और वञ्चना के धनी राक्षस आकर
भिड़ गये हैं; इसलिए घमासान युद्ध हो गया है ! यह सन्देह मन में उठा
तो वे ऐसे उद्विग्न हुई, मानो अभी खर के साथ हुए युद्ध को फिर से देख
रही हों। ३४७

ॐ तैम्म डङ्गिय शेणिलङ् गेहयर्, तम्म डन्दैनिन् उम्बिय दार्मेन
मुम्म डङ्गु पौलिनन्द मुहत्तितन्, वंम्म डङ्गलै युत्ति वैदुम्बुवाळ् 348

कैकयर् तम् मटन्ते-कैकयपुत्री ने; तैम् मटङ्किय-शत्रु जिसको देखकर फिरकर
भाग जाँ वह; चेण् निलम्-श्रेष्ठ (कोसल) देश; निन् तम्पियतु आम्-तुम्हारे
भाई का होगा; अँत-कहा तो; मु मटङ्कु-तिगुना; पौलिनत्त मुकत्तितन्-शोभायमान

मुख निजका बना उन; वसुं सहकल-बहिर सिह (श्रीराम) को; उज्ज्वल-स्मरण करके; वसुंमगुवाळ-सुरक्षा जाती। ३४८

कैकयराजकुमारी (कैकी) ने जब कहा कि यह कोसल देश, जिससे शत्रु लोग डर से मुँहकर भाग जाते हैं, तुम्हारे भाई का होगा जब श्रीराम का श्रीमुख लियेता श्रीभाग्यमान हुआ। ऐसे सबल कैसी का स्मरण करके वे सुरक्षायी। ३४८

ॐ मयूरेति रुपपद मयूरेण पीडितम्, इवेति रुतुरग्नं देहेनैर पीडितम्
 शिवेति रतेतिव नरेन्दश्वेन दामरे, श्रीवति रुतदसु इवेतिव पुनर्वबाळ 349

सुख निरुपपन्न-अथ श्रीमान राजा के पद को; मयूरे पीडितम्-ले लो, कहने पर भी; इति-यह भी; रुतुर-छोड़कर; पृथु-जाओ; अनेर पीडितम्-मयूरे कहने समय भी; शिवेतिरतेतिव अलरेतेन-विष में के छिने; मयूरेन-जाल कमल को; श्रीवतिरुतव-समानता करनेवाले; मुकतेतिव-मुख की सुन्दरता को; उज्ज्वल-बार-बार स्मरण करती। ३४९

जब उनसे कहा गया कि सुन्नी राजपुत्री को तुम अपना लो; या यह कहा गया कि इस श्री की त्यागकर चले जाओ, दोनों हेलो में विचलित हो गये। उस समय के समान उनका श्रीमुख छिना हो आ। उस श्रीमुख की सुन्दर कमल का स्मरण करके उनका मन कपीट उठा। ३४९

देह्यु कङ्गाते निरुमुचि चङ्गाणाव, वाङ्गु कोल वज्रवरे वारिधाल
 एङ्गु मानेतिरते निरुतिरण वाङ्गुविळ, वाङ्गु नीळ निरुतेवृमळ 350

कङ्क के लेङ्क-गंगा जिस पर उठती है; निरुमुचि-ऐसी जटाधारी और; चङ्गाणाव-अरुणाक्ष शिवजी के; वाङ्क कोल-मुँह के हुए सुन्दर; वज्रवरे वारि-विष-उत्तर के मुखवत् के समान लम्बे धनुष को; एङ्क मानेतिरते-जब जनक आदि समय करके हुआ हो रहे थे तब; इरुङ्क इत्यादि विळ-दंडकर दो टुकड़े बनकर गिरे तब; वाङ्क नीळ-जो कंधे बसित हुए उन कंधों को; निरुतेवृ-सोवकर; मूलिमुळ-उज्ज्वल-पनली हुई थी। ३५०

गंगाधारी जटावट वाले और अरुणाक्ष शिवजी के मुँह के हुए उत्तर के मुख-समान रहे धनु की क्या कोई उठा सकेगा ? इस मुँह में जब जनक आदि पङ्ककर चिन्तित रहे, तब जिन भुजाओं ने उसे दो टुकड़े बनाते हुए तोड़ दिया उन फूल कंधों का स्मरण करके वे हिल हो गयी थी। ३५०

इतेव	लम्बर	वेनेदर	किपरुति
पुनव	लम्बदि	वालापि	रम्बदे
कनैवने	मुनिरु	कळपवक	कालवळ
विनव	लम्बुदेले	देहि	वृद्धमववाळ
अमपर वेनेरुङ्क-देवरज को;	इतेवने इपरुति-जिह्वेले बास दिवा;	पम्	

नलम्—उन अनेक विशेषताओं से युक्त; पतितालाधिरम् पटै—चौदह सहस्र सेनाओं को; कन्तल् मूत्तिल्—तीन (घड़ियों) 'नाळियों' के अन्दर; कळप्पट—खेत रहे ऐसा; काल् वळै—पाश्वों में झुके; विल् नलम्—धनु के युद्ध की कुशलता की; पुकळ्नुतु—प्रशंसा करते हुए; एङ्कि—तरसकर; वेंतुम्पुवाळ्—मुरझायीं । ३५१

सीताजी ने श्रीराम के खर-दूषण आदि के साथ युद्ध का स्मरण किया । उनका धनुष—जिसने देवेन्द्र को भी त्रास देनेवाली और विशेष रूप से विविध गुणों से युक्त चौदह सहस्र सेनाओं का एक ही मुहूर्त में नाश किया । वे उसकी प्रशंसा करतीं और तरसतीं और मुरझा जातीं । ३५१

ॐ आळ नोर्क्कङ्गं यम्बि कडाविय, एळै वेडनुक् कैम्बिनिन् उम्बिनी
तोळन् मङ्गे कौळुन्दि येतच्चौन्त, वाळि नण्बित्तै युत्ति मयङ्गुवाळ् 352

आळम् नोर् कङ्क—गहरे जल की गंगा पर; अम्बि कटाविय—नावे चलानेवाले; एळै वेडनुक्कु—साधारण निषाद से; अम्पि—मेरा छोटा भाई; निन् तम्पि—तुम्हारा छोटा भाई है; नो तोळन्—तुम मेरे मित्र हो; मङ्कै—यह देवी; कौळुन्ति—तुम्हारी भाभी है; अँत चौन्त—ऐसा जो कहा; नण्बित्तै—उस मित्रता को; उन्ति—सोचकर; मयङ्कुवाळ्—दुःख-विह्वल होतीं । ३५२

(सीताजी ने प्रभु की शक्ति का स्मरण किया । अब वे शील व सौलभ्य गुण का स्मरण करती हैं ।) गहरी गंगा नदी पर नाव चलानेवाला था गरीब निषाद गुह । श्रीराम ने उससे कहा कि यह जो मेरा छोटा भाई लक्ष्मण है, वह तुम्हारा छोटा भाई है । तुम मेरे मित्र हो । यह देवी तुम्हारी भाभी है । उस मित्रता का स्मरण करके सीताजी व्याकुल हुईं । ३५२

मैयूत्त तादै विरुप्पित नीट्टिय, कैत्त लङ्गळैक् कैहळि नोक्किवे
इयूत्त पोडु तरुप्पैयि लोण्पदम्, वैत्त वैदिहच् चैय् है मत्तक्कौळ्वाळ् 353

मैयूत्त तातै—सत्यज्ञानी जनक के; विरुप्पित्तु—चाह के साथ; नीट्टिय कै तलङ्कळै—बढ़ाये (सीता के) करतलों को; कैहळिन् नोक्कि—उनके करों से अलग करके; वेडु उयूत्त पोतु—दूसरे स्थान पर जड़ (उन्हें) रखा तब; तरुप्पैयिल्—दर्भ पर; ओळ् पतम् वैत्त—उज्ज्वल उनके चरण को जो पकड़कर रखा; वैतिक चैय्कै—उस वैदिक-क्रिया को; मत्तक्कौळ्वाळ्—मन में लातीं । ३५३

(अब वे अपने विवाह के समय हुए रस्मों का स्मरण करती हैं ।) विवाह के अवसर पर सत्यज्ञ जनक ने बड़ी ही उत्कंठा तथा प्यार के साथ सीताजी के हाथों को अपने हाथों में ले उनको आगे किया । श्रीराम ने जनक के हाथों को दूर कर सीताजी के करतलों को ग्रहण कर लिया । फिर सीता के दक्षिण चरण को पकड़कर सिल पर रखे दर्भ पर रखवाया ।

ፎክሎር ፡ ገጽ ገጽ ፡

ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ 354

४५६ । १५१३

ጸሐፊ ፡ ኔቢ ኪከዐ

355 തിരുവല്ല

አንድ ፡ ይህ ይህ

श्रीराम अपने घर में आये राज्य की रक्षाकर जब वनवास की तैयारी में थे, तब लालसा से भरे (विजय नाम के) ब्राह्मण की गोदान किया। तब उस ब्राह्मण की बड़ी लालसा को देखकर प्रभु की हँसी आ गयी। तब वे किञ्चित् हँसे। उस हँसी का कारण करके देवी विष्णुमान हुई। (यह समाचार अयोध्याकाण्ड में नहीं कहा गया है। उसको लालच की कल्पित कहानी थी है— उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपनी छुई फुँगी। तब वह जहाँ गिरती है वहाँ तक की गायों का समूह मुझे दान में दिये जाय। श्रीराम ने उसकी आर्ति देखकर सोचा कि यह आखिर किसनी हुई

तक फेंकेगा ? पर उस शरीर से दुर्बल ब्राह्मण के लालच का बल इतना था कि छड़ी अप्रतीक्षित दूरी पर जा गिरी। तब श्रीराम मुस्करा उठे। ३५५

मळुवि	तान्मुत्	मन्तरै	मूर्वेळु
पौळुदु	नूरिप्	पुलवुरु	पुण्णिनीर्
मुळुहि	तान्उवम्	मौय्म्बौडु	मूरिविल्
तळुवु	मेत्तुमै	निनैन्दुयिर्	शाम्बुवाळ् 356

मळुवितान्-परशुधर; मन्तरै-राजाओं को; मुन्-पहले; मूर् अँळु पौळुतु-तीन के सात (इक्कीस) बार; नूरि-मारकर; पुलवु उरु-मांसगन्ध; पुण्णिनीर्-रक्त में; मुळुकितान्-जिसने स्नान किया; तवम्-उसके तप को; मौय्म्पु औटु-उसके बल के साथ; मूरि विल्-सशक्त उसके धनुष को; तळुवु-हस्तगत कर लेने का; मेत्तुमै नित्तैन्तु-श्रेष्ठ सामर्थ्य सोचकर; उयिर् चाम्पुवाळ्-प्राण जिनके क्षीण हो रहे थे, वे। ३५६

सीताजी अपने नाथ की परशुराम-विजय की स्मृति करती हैं। परशुधर ने राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक लगातार मारकर उनके मांसगन्धयुक्त रक्त में स्नान किया था। श्रीराम का उनके तप के साथ बल और धनु को भी हथिया लेना सोचकर वे क्षीणप्राण हुईं। ३५६

एह	वाळियव्	विन्दिरन्	शैम्मन्मेल्
पोह	वेवि	यदुकण्	पौडित्तनाळ्
काह	मुर्ऱुमोर्	कण्णिल	वाक्किय
वेह	वैन्ऱियैत्	तन्ऱलै	मेर्कोळ्वाळ् 357

एक वाळि-एक ही बाण; अ इन्तिरन् चैम्मल् मेल्-उस इन्द्रकुमार (जयन्त) पर; पोक एवि-जा लगे ऐसा प्रेषित करके; अतु-वह बाण; कण् पौडित्त नाळ्-जिस दिन उसकी आँख का नाश कर गया उस दिन; काकम् मुर्ऱुम्-सारे कागों को; ओर् कण् इल-एक आँख से हीन; आक्किय-जो बना दिया; वेक वैन्ऱियै-उस शीघ्र की विजय को; तन् तलै मेल् कोळ्वाळ्-अपने सिर चढ़ाकर गर्व का जो अनुभव करतीं। ३५७

श्रीराम ने इन्द्र के प्रिय पुत्र जयन्त पर एक बाण प्रेरित किया और उससे उसकी ही एक आँख नहीं गयी, बल्कि सारे कौए काने हो गये। अतिशीघ्र सम्पन्न उस विजय की बात का स्मरण करके सीताजी इतना हर्ष मानी, मानो उस विजय के गौरव का भार उन्हीं के सिर पर लगा हो। ३५७

वैव्वि	रादत्तै	मेवरुन्	दीवित्तै
वव्वि	माऱ्ऱुऱुन्	जाबमुम्	माऱ्ऱिय

नलन्दुडिक्	किन्ऱदो	नान्शैय्	तीविनै
शलन्दुडित्	तिन्तमुन्	वरुव	दुण्मैयो
पीलन्दुडि	मरुङ्गुलाय्	पुरुवड्	गण्णुदल्
वलन्दुडिक्	किन्ऱिल	वरुव	दोर्हिलेन् 361

पीलन् तुटि-स्वर्ण-डमरू-सम; मरुङ्गुलाय्-कमर वाली; पुरुवम् कण् नुतल्-भौहें, आँखें और भाल; वलम् तुटिक्किन्ऱिल्-दायीं ओर नहीं फड़कते; नलम् तुटिक्किन्ऱतो-सौभाग्य आने को है क्या; नान् चैय् तीविनै-मेरा कृत कुकर्म; तुटित्तु-उठकर; इन्तमुम् चलम् तरुवतु-और दुःख देने को है; उण्मैयो-वही होगा क्या; वरुवतु ओर्किलेन्-भविष्य नहीं जानती । ३६१

स्वर्ण के डमरू-सी कटि वाली त्रिजटा ! मेरी दाहिनी भौह, आँखें और मेरा दाहिनी तरफ का भाल नहीं फड़कता । (यानी बायें अंग फड़कते हैं ।) क्या कोई हित आनेवाला है ? या मेरा पूर्वकृत पाप जल्दी आकर कष्ट देने को है ? क्या आनेवाला है, समझ नहीं पाती । ३६१

मुत्तियौडु	मिदिलैयिन्	मुत्तैवन्	मुन्दुनाळ्
तुनियरु	पुरुवमुन्	दोळु	नाट्टमुम्
इत्तियन्	तुडित्तन	वीण्डु	माण्डैन्
नत्तितुडिक्	किन्ऱन्	वायि	तल्लुवाय् 362

मुत्तैवन्-मेरे नायक; मुत्तियौडु-(विश्वामित्र) मुनि के साथ; मिदिलैयिन् मुन्तु नाळ्-जब मिथिला में आये उस दिन; तुन्-अरु-अकलंक; पुरुवमुम् तोळुम् नाट्टमुम्-भौहें, भुजाएँ और आँखें; इत्तियन् तुडित्तन्-सुखव रूप से फड़की; ईण्डुम्-अब भी; आण्डु अँत-वहाँ के समान; नत्ति तुटिक्किन्ऱन्-खूब फड़कती हैं; वायिल् नल्लुवाय्-हेतु बताओ । ३६२

मेरे नाथ जब विश्वामित्र ऋषि के साथ मिथिला पधारे, उस दिन मेरी अनिन्द्य भौह, भुजा और आँख (बायी) हित का संकेत देती हुई फड़की थीं । अब भी मिथिला में जैसे बायें अंग अच्छे फड़कते हैं । इसका हेतु क्या है ? बताओ । ३६२

मरुन्दनै	निदुवुमोर्	मारुड्	गेट्टियाल्
अरुन्दरु	शिन्दैर्यन्	त्तावि	नायहन्
पिरुन्दपार्	मुळुवदुन्	दम्बि	येपैरत्
तुरुन्दुहान्	पुहुन्दनाळ्	वलन्दु	डित्तदे 363

मरुन्दनैन्-भूल गयी; इतुवुम् ओर् मारुड् केट्टि-यह भी एक बात सुनो; अरुम् तरु चिन्तै-धर्मचित्त; अँन् आवि नायकन्-मेरे प्राणनाथ; पिरुन्त पार्-जन्म-सिद्ध अधिकार जिस पर था, उस भूमि को; मुळुवतुम्-पूर्ण; तम्पिये पैर-कनिष्ठ भ्राता को लेने देते हुए; तुरुन्तु-त्यागकर; कान् पुकुन्त नाळ्-जिस दिन जंगल आये उस दिन; वलम् तुटित्तु-मेरे दाहिने अंग फड़के । ३६३

हैं तुमसे एक बात कहना और गयी थी। वह बात थी सुन लो। धर्ममन मेरे प्राणनाथ जन्मसिद्ध-अधिकार से प्राप्त अपने राज्य की अपने भाई की जेने देकर जिस दिन वग में पधार, उस दिन मेरे दाहिने अंग फड़के थे। ३६३

नगजने	पानेवनने	निळकेक	नगणिय
वजने	नाळेवनने	हुडिनेन	वापुसेपाले
अजेजिले	ननेसुपा	लिडनेहु	डिकेकुमाले
अजेजलेने	डिरडेगुवा	पडुपपडि	पादेनेरले 364

नगज अनेपाने-विष-सदृश; वजेवनने डळकेक-बचक काय करते; वसने नगणिय नाळे-जिस दिन जंगल में आया उस दिन; वसने हुडिनेन वापुसेपाले-दाहिने अंग जो फड़के उस नग्य से; अजेवजिले ननेसुपाले-अधोम हिम के लिए; डडने हुडिकेकुमाले-बाए फड़कते हैं; डडलिय; अजेवनने-मन डरी; अजेड डरडेकुवापु-ऐसा तुम सहाय्यलिय करी नदय; अडेपपु-जो आया; पाडि-वहे कौन होना; अजेरले- (सीताजी ने) पूछा। ३६४

जिस दिन विष-सा कर रीवण प्रवचना करने-वन में आया था तब मेरे दाहिने अंग फड़के थे। उस बात से, और आज वापु अंग फड़कते हैं इस बात से, 'तुम क्या समझती हो ? मुझ पर तरस जाकर 'मन डरी' का आश्वासन देना साध्य बनता है आ आनेवाला दिन क्या हो सकता है ? ३६४

अजेरले	डिरशडे	पियनेद	शीवनने
ननेरडे	ननेरवा	नयनेद	जिनेदेपाले
वजेकुवाके	कणवनने	पुडेव	हुपुसेपाले
अनेरियुडे	नेटेरियुने	डडेदने	सेपिनाळे 365

अजेरले-ऐसा कहते हैं; निरिबडे-जिबडा; डडेनेन चीपनने-आया शीवन; ननेरियु ननेर-अच्छा होना अच्छा; अना-कहेकर; नयनेन विनेदेपाले-(सीता के प्रति) निराप मन वाली; वने गुण-अपने साजन; कणवनने-नाथ की; उडेव-प्राप्त करी; उपासे-यह अवश्य होना; अनेरियुने-और भी; केटेडि अनेर-पुनो कहेकर; अडेनेन सेपिनाळे-कहते लगी। ३६५

देवी की पों कहते ही जिबडा ने उत्तर में कहा। यह सब पुनर्देरे शीवन के लक्षण हैं। बहुत ही मंगलकारी लक्षण हैं। यह कहेकर सीता के प्रति प्यार रखनेवाली वह बोली-तुम अपने सींगी प्यारे नाथ की प्राप्त कर लगी थी सुनो। और भी सुनो। वह आगे कहने लगी। ३६५

उन्निउम्	बशप्पउ	वुयिरु	यिरप्पुउ
इन्तिउत्	तैन्निशै	यिनिग	नण्वित्ताल्
मिन्निउ	मरुङ्गुलाय्	शैवियिन्	मैळ्ळवे
पौन्निउत्	तुम्बिवन्	द्वदिप्	पोयदाल् 366

मिन् निउ-विद्युत्-से रंग वाली; मरुङ्गुलाय्-कमर वाली; उन् निउम् पवप्पु-आपके रंग में हुई (विरह-जन्य) विवर्णता; अउ-दूर हो; उयिर उयिरप्पु उउ-प्राणवन्त रहें इसलिए; इन् निउ-मधुर स्वभाव और; तैन् इच्चै-मीठे स्वर का; पौन् निउ तुम्पि-स्वर्णवर्ण भ्रमर; वन्तु-आपके पास आकर; चैवियिल्-आपके कान में; इत्तिय नण्वित्ताल्-मधुर मित्रता से; मैळ्ळ ऊति-धीमे-धीमे फूँककर; पोयतु-गया । ३६६

विद्युत्-सी (रंग में और आकार में) कटि वाली ! मैंने एक स्वर्णवर्ण भ्रमर को आपके कान के पास आकर फूँकते हुए (गुंजारते हुए) देखा । उसका आशय था कि आपके शरीर में विरहजन्य पाण्डुरता जो फैली है, वह दूर होगी और आपके प्राण नहीं जायँगे । वह भ्रमर मधुर और हितकर प्रेम के साथ धीरे-धीरे गुंजार कर गया । ३६६

आयदु तेरिनुन् नावि नायहन, एयदु तूदुवन् वैदिरुद लुण्मैयाल्
तीयदु तीयवर्क् कय्द रिण्णमैन्, वायदु केळैन् मरित्तुड् गूशवाळ् 367

आयतु तेरिन्-उस पर सोचें तो; उन् आवि नायकन्-आपके प्राणनाथ द्वारा; एयतु-प्रेषित; तूतु वन्तु-दूत आकर; अँतिरुत्-भेंट करेगा; उण्मै-वह ध्रुव है; तीयवर्क्कु-बुरों को; तीयतु अँयत्-हानि मिलना; तिण्णम्-निश्चित है; अँन् वायतु केळ्-मेरा समाचार भी सुनो; अँत्त-कहकर; मरित्तुम्-फिर भी; गूशवाळ्-कहने लगी । ३६७

उसके कृत्य पर विचार किया जाय तो यह निश्चित है कि आपके प्राणपति द्वारा प्रेषित एक दूत आयगा और आपसे भेंट करेगा । खलों का नाश निश्चित है । और भी मुझ पर बीते समाचार सुनिए । ३६७

तुयिल्लै	यादलिउ	कनवु	तोन्ऱुल
अयिल्विळि	यन्नैकण्	णमैय	नोक्किन्नेन्
पयिल्वन	पळुदिल	पण्वि	त्ताण्डन
वैयिल्लु	मैय्यन्	विळम्बक्	केट्टियाल् 368

अयिल् विळि अन्नै-भाले-सी आँख वाली माते; तुयिल् इलै आतलिल्-अनिद्र हो, इसलिए; कनवु तोन्ऱुल-स्वप्न नहीं आते; कण् अमैय-खूब आँखों में प्रकट; नोक्किन्नेन्-मैंने देखा; पयिल्वन-देखे सो; पळुतु इल-व्यर्थ नहीं जायँगे; पण्विन् आण्टन्-श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण हैं; वैयिल्लुम् मैय्यन्-सूर्य जैसे सत्य हैं; विळम्प केट्टि-कहूँगी, सुनो । ३६८

अग्नि; ईण्टिल-वर्द्धित नहीं हुई; इतम् कौळ्-झुण्डों में; चैम् चितल्-लाल दीमकें; पिउन्त-निकलीं; तूण्ट अरु-जिनकी बत्तियों को तेज करने की आवश्यकता न हो ऐसे; मणि विळक्कु-मणिमय दीप; अळलुम्-जिनमें जलते हैं; तौल् मतै-प्राचीन प्रासाद; वात्त एरु-आकाश के वज्र के; अँरिय-प्रहार से; कौळ् नाळ्-उषाकाल में; कीण्टतु-टूट गये । ३७१

रावण पुरुषश्रेष्ठ है । वह अपने घर में अग्नि का पालन करता है । वह वैदिकी अनुष्ठान की अग्नि वर्द्धित नहीं हुई पर बुझ चली । उस स्थान में लाल दीमकों के झुण्ड पैदा हो आये । जिन दीपकों को उकसाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती, वे मणिमय दीप प्रासादों में जलते रहते थे । वे प्रासाद आकाश के वज्र के उन पर गिरने से, सवेरे-सवेरे, टूट गिरे । ३७१

पिडिमदम्	पिउन्त	पिउङ्कु	पेरियुम्
इडियैत्त	मुळङ्गिन	विरट्ट	लिन्ऱिये
तडियुडै	मुहिर्कुल	मिन्ऱित्	ताविल्वान्
वैडिपड	वदिरुमा	लुदिरु	मीन्ऱैलाम् 372

पिडि मतम् पिउन्त-हथिनियाँ मत्त हुई; पिउङ्कु पेरियुम्-श्रेष्ठ भेरियाँ; इरट्टल् इन्ऱिये-विना पिटे ही; इडि अँत्त-वज्र के समान; मुळङ्कित्त-नर्द्धित हुई; तडि उटै-तडित्-सह; मुकिल् कुलम् इन्ऱि-मेघ समूह के विना ही; तावु इल् वात्त-निराधार आकाश; वैडि पट-दलक जाय ऐसा; अतिरुम्-थर्रा उठा; मीन्ऱैलाम्-नक्षत्र, सभी; उतिरुम्-गिर गये । ३७२

(यह विपरीत बात देखने में आयी कि) हथिनियाँ मदमत्त हो गयीं । श्रेष्ठ भेरियाँ विना बजाये ही नर्दन कर उठीं । निराधार आकाश, तडित्-सहित मेघों के विना ही फट गया और थर्रा गया । नक्षत्र सब चू गये । ३७२

विउपह	लिन्ऱिये	यिरवु	विण्डरु
अँरुपह	लैरित्तुळ	दैन्ऱन्	तोन्ऱुमाल्
मरुपह	मलरुन्ददोण्	मैन्दर्	शूडिय
करुपह	मालैयुम्	बुलवु	कालुमाल् 373

विल् पकल्-प्रकाशमय अहस्; इन्ऱिये-नहीं हुआ तभी; इरवु-रात्रि; विण्टु अरु-मिट जाए ऐसा; अँल् पकल्-सूर्य दिन में; अँरित्तुळतु-जल रहा है; अँत्त-ऐसा; तोन्ऱुम्-दिखनेवाले; मल् पक मलरुन्त-सशक्त; तोळ्-कन्धों के; मैन्ऱर् चूडिय-राक्षस-युवकों की पहनी हुई; करुपक मालैयुम्-कल्पसुमन-मालाएँ भी; पुलवु कालुम्-मांसगन्ध निकालती है । ३७३

राक्षस युवकों के कन्धे इतने प्रकाशमय हैं, मानो दिन के अभाव में भी रात को भगाते हुए सूर्य अहस् के अवसर पर प्रकाश दे रहा हो ।

ऐसे सबल स्कांधों के राक्षस-वीरों की पटवों द्वि कल्पसुप्तन मालाएँ अपनी स्वाभाविक गंध छोड़कर मांस-दुग्ध निष्ठ करने लगीं । ३७३

विष्णुमा	लिलङ्गायुम्	मद्विज्जम्	दिकेकलाय
अरिष्युमा	कनदरपप	नहेर	सुङ्गायम्
वैरिष्युमा	मङ्गल	कलयाय	जिनेदिन
विष्णुमाल	विळकोकिन	विळङ्ग	मालिखळ 374

इलङ्कयुम्-लंका नगर और; मलिषुम्-यावीर; विरिषुम्-पुंस जाते; विळङ्कयुम्-सारा दिशाएँ; अरिषुम्-जल उठी; अङ्कयुम्-सर्वज; कनदरपप नकरम्-गन्धर्वनगर; वैरिषुम्-दिवाणी देते; मङ्गल कलयाय-मंगल-कलया; विनेदिन विरिषुम्-जल बहाते हुए फट जाते; विळकोकिन-दीपा की; इळ विळङ्कयुम्-अधकार लीज जाता (वृक्ष जाते) । ३७४

लंका नगर और यावीर धूम उठी । सारी दिशाएँ जल उठीं । सर्वज गन्धर्व-नगर दिखे । (यह वृद्ध हो बुढ़ा स्वप्न समझा जाता है ।) मंगल-कलया टूट पड़े और उनका पवित्र जल बहे गया । दीपा की अँधेरे ने निगल लिया । दीप वृक्ष गये । ३७५

वीरुण	सुरिषुमा	खळङ्गिष	वर्णिमा
वारुण	सुरिषुमाल	वलनेन	वाग्मवय
पारुण	मनेदिरने	नरिअर	नारैदिय
पूरुण	कुडनेवुवीर	नरवि	प्रीङ्गुमाल 375

वीरुण सुरिषुम्-वीरुण-रत्न टूट जाते; वर्णि-मुखपट्टालकेत; मा वारुणम्-बड़े गजों के; वलनेन वाग्म मवय-सबल प्रवेश दाँत; वृळङ्किक-कपिकर; सुरिषुम्-टूटते; आरुण मनेदिरने-वेदमन्त्रविदाय; अरिअर नारैदिय-बाइली द्वारा स्थापित; पूरुण कुटनेवु-पूवाकुम्भ का; वीर-पवित्र जल; नरविष प्रीङ्कयुम्-धुरा के समान उफनाता । ३७६

सूने देखा—वीरुण खरु टूटते । मुखपट्टालकेत बड़े-बड़े गजों के सबल प्रवेश दाँत लचकते और टूटते । वेदमन्त्रविदा द्वारा स्थापित पूवा-कुम्भों के पवित्र जल में वाड़ी के समान उफन पड़ा होता । ३७७

विष्णुङ्कित	मदिविषय	प्रिषुमा	मण्डमर
पुण्ड्रीङ्क	कुवदिय	विदिविवा	नण्ड्री
मरीच्युम्	प्रीळ्युम्	उर्ववने	त्रिनेन
मार्ड 376	मार्ड	मार्ड	मार्ड

मरीच-मखल; विष्णु वीर-आकाश में चलामान; मलिषु विषय-वज्र का चीरते हुए; अरुम्-ऊपर-जाते; पार मण्ड-आच्छादित रहनेवाले मेघ; पुण्ड्री कुवदिय-वज्र के समान; वीर कुवदिय-वज्र के समान; प्रीळ्युम्-(जल) बरसता; नण्ड

औटु-दण्ड और; तिकिरि-चक्र; वाळ-तलवार; तनु अँतु-धनु आदि; इत्त-ऐसे (हथियार); आळि मारु उर-समुद्र अस्थिर हो जाए ऐसा; मण्डु अमर पुरियुम्-आपस में स्वतः भिड़ जाते । ३७६

नक्षत्र आकाशचारी चन्द्रमण्डल को भेदकर ऊपर जाते । आच्छादित-से रहनेवाले मेघों से व्रण से बहनेवाले रक्त के समान बारिश होती । दण्ड के साथ चक्र, तलवार, धनु आदि ऐसे हथियार आपस में युद्ध करते और सागर में उथल-पुथल मच जाता । ३७६

मङ्कयर्	मङ्गलत्	तालि	मङ्गवर्
अङ्कयिन्	वाङ्गुवा	रवर्	मन्त्रिये
कौङ्कयिन्	वीळ्न्दन	कुडित्त	वाङ्गिनाल्
इङ्गिदि	तङ्गुद	मिन्नुड	गेट्टियाल् 377

मङ्कयर्-राक्षस-दयिताओं का; मङ्कल तालि-मंगलमय अहिवात-सूत्र; मङ्गवर् अँवरुम्-दूसरे किसी के; अङ्कयिन् वाङ्कुवार् अन्त्रि-अपने हाथ से छीने विना ही; कौङ्कयिन्-(कटकर) स्तनों पर; वीळ्न्त-गिरे; कुडित्त आङ्गिनाल्-मेरे सूचित इन कार्यों से; इङ्कु-यहाँ; इतिन् अङ्गुतम्-इन दुर्निमित्तों से भी (विपरीत और) विचित्र; इन्नुम् केट्टि-और भी सुनिए । ३७७

राक्षस-स्त्रियों के मंगलसूत्र स्वयं विना किसी के छीने ही कट जाते और उनके स्तनों पर गिरते । मैं जो कह रही हूँ, उसी रीति से और भी क्या-क्या विस्मयकारी कुनिमित्त हुए, सुनिए । (त्रिजटा आगे भी अपने स्वप्नदृष्ट विषय बताने लगी ।) । ३७७

मन्नुवन्	रेवियम्	मयन्म	डन्वैतन्
पिन्नुवि	लोदियुम्	बिरङ्गि	वीळ्न्दन
तुन्नरुम्	जुडर्गुडच्	चुरुक्कोण्	डेरिङ्गाल्
इन्नुलुण्	डैन्मिदस्	केदु	वैन्वदे 378

मन्नुवन् तेवि-राक्षसराज की देवी; अम् मयन् मटन्त तन्-उस मयसुता (मन्दोदरी) के; पिन् अविळ् ओतियुम्-बिखरे और पीछे लटकते केश भी; पिङ्गु वीळ्न्त-फँलकर गिरे; तुन् अरुम् चुटर्-अगम अग्नि के; चुट-जलाने से; चुरुक् कोण्डु ऐरिङ्ग-दुर्गन्ध के साथ ऊपर उठे; इत्तु एतु-इसका हेतु है; इत्तल् उण्डु-अवश्य कष्ट होगा; अँनुम् अँनुपते-यही बताना है । ३७८

राक्षसराज रावण की पत्नी मयसुता, मन्दोदरी के वेणी-बने केश खुले और बेतरह बिखरे । उनमें आग लगी और दुर्गन्ध निकालती हुई बढ़ी । इसका अर्थ 'अनर्थ होगा' यही है । ३७८

अँन्निवै	यियम्बिवे	रिन्नुड	गेट्टियाल्
इन्निव	णिपपीळ	दँदिर्न्द	दोरकना

सूत्रं ब्रह्मण्य-मधुरमाणिषी; आतिरम्भं निरि विळकृत्-सहस्र वतिकायां स युक्त
दोषक; अक्षय-सुन्दरं रूपं स; मारुतिप-निषं लो भु; स्यु अग्नि विळकृत्-
लाल रंगिनी की एक द्वापावली; अतिरुतं पति-एक जेने हूय; स्युपवम्-लाल रंग
की एक रत्नी; मायकम् रत्नि मयं निरुत-रासपति (रावण) के अहिनीय सहस्र स;
बोदयम् कोपित-विभीषण के सहस्र स; नगण्यत्वं सेपितम्-जाने लगी । ३८१

मधुरभाषिणी भामिनी सीते ! एक लाल रंग की स्त्री सहस्र वक्तियों की लाल रोशनी की एक दीपावली हाथ में लिये राक्षसनायक रावण के महल से निकली और विभीषण के प्रासाद में घुसी । ३८१

पौत्तमत्ते	पुक्कवप्	पौरुविर्	पोदिन्निल्
अत्तैनी	युणर्त्तित्तै	मुडिन्द	दिल्लैन्
अत्तैये	यदत्तुक्कुर्	काण्णन्	आयिळ्ळै
इत्तमुन्	दुयिल्लैन्	विरुहै	कूपपित्ताळ् 382

पौत्तमत्ते पुक्क-स्वर्ण-प्रासाद में जो प्रविष्ट हुई; अ पौरु इल् पोतिन्निल्-उस अनुपम शुभ घड़ी में; अत्तै नी उणर्त्तित्तै-तुमने मुझे जगा दिया; मुडिन्तु इल्-स्वप्न पूर्ण नहीं हुआ; अत्तै-(त्रिजटा के) यों कहने पर; आयिळ्ळै-चुने हुए आभरणों से अलंकृत देवी ने; अत्तैये-माते; अत्तन् कुर् काण्-उसका बचा भाग देखो; अत्त-कहकर; इत्तमुम् तुयिल् अत्त-और भी सोओ; अत्त-प्रार्थना करके; इरु कूप्पित्ताळ्-अपने दोनों हाथ जोड़े । ३८२

विभीषण का महल स्वर्णमहल था । जब वह उस प्रासाद में घुसी तभी तुमने मुझे जगा दिया । मेरा देखा स्वप्न अधूरा रह गया । तब चुने हुए आभरणधारिणी सीताजी ने उससे हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि माते ! बाकी स्वप्न को भी देख लो । और तुम सोओ । ३८२

ॐ इव्विडै	यण्णलव्	विराम	तविय
वैव्विडै	यत्तैयपोर्	वीरत्	तूदनुम्
अव्विडै	यैय्दिन	तरिदि	नोक्कुवान्
नौव्विडै	मडन्ददत्	तिरुक्कै	नोक्किनान् 383

इ इटै-इतने में; अण्णल् अ इरामन्-महिमावान उन श्रीराम का; एविय-प्रेषित; वैम् विटै अत्तैय-मयंकर ऋषभ-सम; पोर् वीर-युद्धवीर; तूतत्तुम्-दूत हनुमान भी; अरितिन् नोक्कुवान्-कष्ट के साथ सर्वत्र खोजते हुए; अ इटै अयत्तिन्नन्-वहाँ आ पहुँचा; नौ इटै मटन्तै तन्-उस क्षीणकटि देवी के; इरुक्कै-रहने का स्थान; नोक्कितान्-देखा । ३८३

इसी समय महिमावान श्रीराम से प्रेषित, दर्शक के दिल में भय उत्पन्न कर सकनेवाले ऋषभ-सम दूत हनुमान भी सर्वत्र कष्ट के साथ खोज लेने के बाद वहाँ आ पहुँचा । उसने क्षीणकटि देवी सीता के रहने के स्थान को देख लिया । ३८३

अव्वयि	तरक्किय	रडिवुर्	इम्मवो
शैव्वयि	रुयिनमैच्	चैय्द	तोड्गैन्
अव्वयिन्	मरुड्गिन्	मैळुन्दु	वीड्गितार्
वैव्वयिन्	मळवैळुच्	चूल	मेन्दिये 384

अ वलिने-तव; अरकंकिपर-राक्षस-विषया; अरिउरुउ-जायते-होकर; अमंसवी-होय, होय; चववे इल, गुलिने-जो अल्लो नहो, उस नोद ने; नसे इहकु चपुनव-हसे अब यह (डोतल) करा हो; अल-कहनी हुई; अल्लेनव-उठकर; वस अलिने-अयकर माले; मल्ले-परयु; अल्ले-वकदव; वलम पुनलि-गुल आदि उठावे हुए; अ वलिने मरुहकिबुम-सव ओर; वीहकिनार-मोड से छडी हो गयी। ३८४

तयो राक्षसियां यो जाग उठी। वे अयागुर हो गयीं। होय। यह बुरी चीज है। उसने हमारी यह दुर्गात कर दी है। वे उठीं। होय मे गुल, माले, परयु, वकदव आदि होयियार लेकर चारों ओर से आ गुर गयीं। ३८५

वलिउरिउ	वालिउर	वळनेद	नरुलिपि
कुलिउरिउ	विळिपिउर	कोडिय	नोकोकिनर
अलिउरिउके	किउलिउ	यान	याळिय
गुलिउरकौळवेम	विलवेवने	वीदद	वालिउर 385

वलिउरिउ वालिउर-वेद-मल्ल मुलवालिपि; वळनेद नरुलिपि-वादेर निकले माले पर; कुलिउरिउ-वडिन; विळिपिउर-आलो वालिपि; कोडिय नोकोकिनर-कर दूडि वालिपि; अलिउरिउके कुद दूद-दान के मल्ल; यान-गल; याळि-गरम; य-यल; गुलिने कौळ-मोले रहे ऐसे; वय पिमने अल-अयकर गुफा के समान; वीदद वालिउर-वड मुल, वालिपि। ३८५

(वे यो अयकर तथा रवमाल-विपरीत आकृति वालिपि यो।) कुल के पेट के मल्ल मुल थे। कुल के माल वादेर निकले हुए थे और उनसे आले जडी हुई-सी लगती थी। उनको दूडि वडी कर थी। उनके चडे, अयकर गुहा के समान मुलों के अन्दर दान-दान के मल्ल गल, 'याळि' (यारम) नामक अयकर जानवर, यल आदि मोले थे। ३८५

अलिपय	कपिन	रौउरु	वैलिपय
इववड	नलपिन	रिरण्ड	कपिनर
ववव	वीउरुनर	विहड	वैउरनर
पवव	यनमुल	पलव	वाउरिगर 386

अलिपय कपिनर-दस हया वालिपि; अरुउ वैलिपय-(वे) एक हो पिर वालिपि यो; इवपु नलपिनर-वोस हया वालिपि; इरण्ड कपिनर-पर दो हया वालिपि; ववव वीउरुनर-अयावने आकार वालिपि; ववव वैउरनर-विचिब रूप वालिपि; पवव अल-मोडे पवन के समान; मुले पलवम-अनेक लवा को; वाउरिगर-मरकाले रहनेवालिपि। ३८६

किहो के पिर लो एक-एक हो थे, पर होय दस-दस थे। किहो के पिर वीस-वीस थे, पर होय लो दो-दो हो थे। अयमाल करनेवाले

आकार की थीं राक्षसियाँ। निपट विधि-विपरीत रूप वाली थीं। उनके स्तन बड़े-बड़े पर्वतों के समान थे और लटकते थे। ३८६

शूलम्बाळ्	शक्करन्	दोदटि	तोमरम्
कालवैल्	कप्पणङ्	गरुड	कैयितार्
आलमे	युरुवुहोण्	डनैय	मेत्तियार्
पालमे	तरित्तवन्	वैरुवुम्	बान्मैयार् 387

शूलम्-शूल; बाळ्-तलवार; चक्करम्-चक्र; तोदटि-अंकुश; तोमरम्-तोमर; कालवैल्-यम-से भाले; कप्पणम्-'कप्पण' नामक हथियार; गरुड-चलाने में अभ्यस्त; कैयितार्-हाथों वालियाँ; आलमे उरुवु कौण्टतैय-हलाहल के ही साकार बने से; मेत्तियार्-शरीर वालियाँ; पालमे तरित्तवन्-कपालधारी (भैरव); वैरुवुम्-डरे ऐसे; बान्मैयार्-स्वभाव वाली। ३८७

इन राक्षसियों के हाथ शूल, चक्र, अंकुश, तोमर, यम-से भाले, कप्पण नामक हथियार आदि चलाने के अभ्यस्त थे। हलाहल के ही मूर्तरूप-सम थीं। कपाली भैरवजी को भी भयातुर करनेवाले स्वभाव वालियाँ थीं। ३८७

करिपरि	वेङ्गैमाक्	करडि	याळिपेय्
अरिनरि	नार्येन्	वणिमु	हत्तितर्
वैरिनुडु	मुहत्तितर्	विळिहण्	मूत्तितर्
पुरितरु	कौडुमैयर्	पुहैयुम्	वायितार् 388

करि-गज; परि-अश्व; वेङ्गै-व्याघ्र; मा करडि-बड़े रीछ; याळि-'याळि' (नाम के जानवर); पेय्-भूत; अरि-सिंह; नरि-गीदड़; नार्येन्-कुत्ते आदि; अणि मुक्त्तितर्-पहने हुए मुखों वालियाँ; वैरित् उडु-पीठ पर बने; मुक्त्तितर्-मुख वालियाँ; विळिकळ् मूत्तितर्-तीन आँखों वालियाँ; पुरि तरु कौडुमैयर्-क्रूर काम करनेवालियाँ हैं; पुहैयुम् वायितार्-धुआँ निकालनेवाले मुखों वालियाँ। ३८८

गज, अश्व, बाघ, बड़ा रीछ, 'याळि', पिशाच, सिंह, शृगाल और कुत्ते आदियों के (-से) मुखों से वे युक्त थी। उनकी पीठ के मध्य मुख भी थे। वे बड़े ही क्रूर काम करनेवालियाँ थी। उनके मुखों से धुआँ निकलता था। ३८८

अण्णिनुक्	कळविड	लरिय	वीदटितार्
कण्णिनुक्	कळविड	लरिय	काट्चियार्
पेण्णनप्	पैयर्होडु	तिरियुम्	वैड्डियार्
तुण्णनत्	तुयिलुणर्न्	वैड्डुन्डु	शुर्त्तितार् 389

अणुलिङ्गक अथ इदं अरि-संख्या कहेकर निने सँ असाध्य (अपर); इदं विना-बनशांलिनिपा; कणुलिङ्गक-आँखो इरा; अथ इदं अरि-भाषा नही जा सके, ऐसे; कादं विपर-आकर वालिया; पूरा अथ पूरा कहे-रही नाम धारण करके; लिङ्गम पुंरिपर-वैम-फिरने का नाम-याच; पूरा अथ-अकसमा; विषय उपाय-वृत्त-सीध से जाणकर; अथ-वृत्त-उठी और; सुंरिपर-सीध की धर आयी। ३६६

वे अपर अविष से समचित्त थी। आँखें पूरा देख नही सक-ऐसे डील-डौल वालीया थी। विवतवना यह थी कि रवी नामधारिणी होकर फिरती थी। वे शठ नीद से जागी और उठकर सीताजी की धर आयी। ३६५

आपडे	पुंर्याविन	दळें	इविपुम
नीयन	यवरपुडे	नीकोकन	वेमविनाळ
नायन	ऊदम	विरवि	नगोणिना
आपविन	नयर्मरप	पणीय	नमवरान

390

आपडे-नय; अठकन विविपुम-पुंरपर श्रीराम की देवी; उर अविनव-अवाक होकर; ती अथपुवर पुंरुम नीकोक-अनि-सम उनके मुख की देखकर; वेमविनाळ-संकटग्रस्त हुई; नायकन वनवैम-नायक श्रीराम का देव था; विरविन नगोणिना-सीध आयी; आयुव इल-अविनव; उपर मर-ऊँचे वृक्ष की; पणीय उमपरान-आँख पर का (स्थल) होकर। ३६०

नय सुंदर पुरुष श्रीराम की देवी उनको देख स्तब्ध और अवाक रहे गयी। उनके अनि-सम मुख की देखकर संकटग्रस्त हुई और सहेमी। नायक का देव देवमान भी शीघ्र आया और अविनव एक अत्युन्नत नर की आँखा पर चढ़ बैठे (और -)। ३५०

अरकोकिय	रविमंमुद	लेन	मङ्गापर
नरकोकिय	कुंठिवनर	गुलि	नीङ्गिना
इरकोकनर	मरिदर	केड	वृनवैवप
प्रीरकोकन	वपरिडप	प्रीरनर	नीकोकिना

391

अरकोकपर-(पुंर देवी रवी) राक्षसिया; अविन मुन-माला आदि; पुंरुम अठकपर-धारण करवेचले हाथ की होकर; नरकोकिय कुंठिवनर-मरी बाँड की; विविपुम नीकोकिना-निदा रणकर; इरकोकनर-(सक) रहती है; इनरकोक पुंरुम अथ-इसका हेतु क्या है; अथ-सीवकर; प्रीरकोक अथ-शीघ्र; अवर इड-उनके मध्य; प्रीरनर नीकोकिना-ध्यान के साथ देखा। ३६१

पुंरुम रवी राक्षसिया हाथों में चाले आदि लिये हुए, सटे समूह में मिले निदा रणकर सचेत रहें। इसका हेतु क्या है? यह जानने के लिए देवमान ने शीघ्र उन राक्षसियों के बीच में सावधानी से दृष्टि लगाकर देखा। ३६१

❖ विरिमळैक्	कुलङ्गिळित्	तीळिरु	मिन्नैतक्
करुनिरुत्	तरक्कियर्	कुळुविर्	कण्डन्नत्
कुरुनिरुत्	तीरुदत्तक्	कीण्ड	लामेनत्
तिरुवुरप्	पौलियुमोर्	शैल्वन्	रेवियै 392

कुरु निरुत्तु-गहरे रंग के साथ; और तन्नि कीण्डल् आम् अँत-एक अनुपम मेघ के समान; तिरु उर-अतिसौन्दर्य के साथ; पौलियुम्-शोभनेवाले; ओर् चैल्वन्-श्रियःपति की; तेवियै-देवी की; विरि मळै कुलम्-फैले हुए मेघसमूह की; किळित्तु-चीरकर; ओळिरुम्-चमकनेवाली; मिन्न अँत-विद्युत् के समान; करु निरुत्तु अरक्कियर्-काले रंग की राक्षसियों के; कुळुविल्-दल में; कण्डन्न- (हनुमान ने) देखा । ३६२

उसने गहरे नीले रंग के श्रेष्ठ मेघ-सम सौन्दर्ययुक्त श्रियःपति श्रीराम की देवी सीता को विशाल मेघसमूह को चीरकर प्रकाश छिटकानेवाली विद्युत् के समान राक्षसियों के समूह-मध्य देखा । ३९२

कडक्करु	मरक्कियर्	कावर्	चुर्कुळाळ्
मडक्कोडि	शोदैया	माद	रेहौलाम्
कडर्कुणं	नैडियदन्	कण्णि	नीर्प्पेरुन्
दडत्तिडै	यिरुन्ददो	रन्नन्	तन्मैयाळ् 393

कडल् तुणै नैटिय-सागर-सम विशाल; तन् कण्णिन्-अपनी आँखों के; नीर् पेरुम् तडत्तिटै-अश्रुजल के बड़े जलाशय-मध्य; इरुन्नतु-जो रही; ओर् अन्न तन्मैयाळ्-एक हंसिनी-सी ये; कडक्करुम्-अलंध्य; अरक्कियर् कावल् चुर्कु-राक्षसियों के पहरे के घेरे में; उळाळ्-रहती है; मडक्कोडि-बाल-लता; चीतैयाम् मातरे आम्-सीतादेवी ही होंगी । ३६३

उनकी समुद्र-सम विशाल आँखों से जो अश्रुजल बहता रहा वह विशाल जलाशय के समान था, और उसके मध्य सीताजी हंसिनी के समान रहती है तथा राक्षसियों के अलंध्य पहरे के अन्दर रहती हैं। इसलिए यह अवश्य वही बाल-लता सीताजी ही होंगी। हनुमान ने अनुमान किया । ३९३

❖ अँळरु	मुरुवुळ	विलक्क	णङ्गळुम्
वळ्ळरुत्	तुरैयोडु	मारु	कीण्डिल्
कळ्ळवा	ळरक्कनक्	कमलक्	कण्णतार्
उळ्ळुरै	युयिरिनै	यीळित्तु	वैत्तवा 394

अँळरुम्-अनिद्य; उरु उळ्-अंगलक्षण हैं; इलक्कणङ्कळुम्-वे लक्षण भी; वळ्ळल् तन् उरैयोडु-वदान्य श्रीराम के वर्णन से; मारु कीण्डिल्-भ्रिज नहीं हैं; कळ्ळ वाळ् अरक्कन्-वंचक और तलवारधारी राक्षस ने; अ कमल कण्णतार्-उन

गुडरीकाक्ष के; उन्ने उन्ने उन्ने—हृदयस्थ प्रण (सीता) को; अलिखित वृत्त आ-
 लिखा रखा है, क्या हो अन्यथा है । ३६४

इनके अंग-लक्षण अलिख है । और भी वे लक्षण वदान्य श्रीराम के
 वर्णन से भिन्न नहीं है । हा ! ललवारधारी वक्क रावण ने उन गुडरीकाक्ष
 श्रीराम के हृदयस्थ प्राणी-सी इनकी लाकर लिखा रखा है ! क्या हो अन्यथा
 है ! ३६४

सुवहे	मुलहेयुम	मुदुलि	नौकीकिय
प्राविप	रुपिरुहोळवा	निळवेन	पणावदान
आवदे	परवणवे	वृथिल	नौडिगिय
नेवने	यवनिवळे	कमलव	वर्णविधे

सु वक उलकमुम-विधिय लोको को; मुदुलि नौकीकिय-सामान से निळवेन हवा
 दिवा; प्राविपर-उम प्राविप के; उदिर कौळवण-प्रण हरेते हेतु; इळवेन
 पणु-किपा गण काम; हव आवने-यह है अवध; अवने-वे; अरवण वृथिलि
 नौडिकिय-शेषनगानिद्रास्थानी; नेवने-श्रीविष्णु सावान हो है; इवळ कमलव वर्णविधे-
 ये कमलसना लक्ष्मीदेवी हो है । ३६५

हो ! यह काम लिखीकवासियो को अपने अच्छे मार्ग से हटानेवाले
 प्राणी राक्षसों के नाश का हेतु बन गया । श्रीराम शेषनगानिद्रास्थानी
 श्रीविष्णुदेव हो है । और ये देवी कमलासना श्री हो है । ३६५

बोडिन	वतुंउउन	यावुम	बोडिलेव
नेडिनेम	कणुडनेम	रुवि	येयवना
आडिनव	पाडिन	नौण्डु	मौण्डुमवायने
बोडिन	मूलविन	नवहेन	नेनुण्डान

अउम बोडिनव अमुंउ-अम मिटा नहीं; यावुम बौकलेन-सौ भी नहीं मळगा;
 नेडिनेम-अवेण किपा; कणुडनेम-देख लिपा; नेविसे अवा-देवी सीता हो है, कहेकर;
 उवक नेम-मौदमय; उणुडने-पौकर हेतुमान; आडिनव-मवा; पाडिनव-गया;
 आणुडिम ईणुडिम-उवर और इवर; पायनेव आडिनव-छलांग मारकर दौड़ा;
 उलविनव-सुमा । ३६६

अउला, अब धर्म नष्ट नहीं होगा । सौ भी मळगा नहीं । लिनकी
 छला लगीला रहा उनको मने देख लिपा । ये अवधय सीतादेवी हो है ।
 हेतुमान ने ऐसा हठ विचार कर लिपा जो मौदमयुपीत हो गया । नाचने-
 गाने लग गया । इवर से उवर दौड़ता हुआ सुमा । ३६६

मयिण्ड मयिणनळ विङ्गळ सूनन वयङ्गि वङ्गाविरने नेयनेळळ

काशुण्ड

कून्दलाळ

करपुङ्

गावलुम्

एशुण्ड

दिल्लैया

लरत्तुक्

कीरुण्डो 397

माचु उण्ड-मैल-लगे; मणि अत्ताळ-रत्न-सम; वयङ्कु वैम् कतिर् तेचु उण्ड-
पृथुल गरम (सूर्य-) किरणों में डूबे; तिङ्कळुम् अन्त- (नष्टप्रम) चन्द्र के समान;
तेयन्तु उळाळ-जो मलिन हुई थीं; काचु उण्ड कून्तलाळ-धूलि-धूसरित केशिनी की;
करपुम्-चरित्र-दृढ़ता और; कावलुम्-उसके पालन की रीति पर; एचु उण्डतु इल्ल-
दोष नहीं लगा है; आल्-इसलिए; अरत्तुक्कु ईरु-धर्म का नाश; उण्डो-होगा
क्या (नहीं) । ३६७

सीताजी मैल-लगे रत्न के समान और सूर्य की गरम किरणों से
मन्दप्रद बने चन्द्र के समान लगीं । वे मलिन थीं और उनके केश पर धूल
जमी थी । उनके चरित्र और चरित्र-पालन-दृढ़ता पर कोई आंच नहीं
आयी थी । अतः धर्म नष्ट होगा क्या ? नष्ट नहीं होगा । ३९७

पुनैहळ

लिराहवन्

पौरुपु

यत्तैयो

वनिदैयर्

तिलहत्तिन्

मन्तुत्तिन्

माण्पैयो

वन्नेहळ

लरशरिन्

वण्मै

मिक्किडुम्

जनहरदङ्

गुलत्तैयो

यादु

शाङ्कहेन् 398

कळल् पुनै-पायलधारी; इराकवन् पौन् पुयत्तैयो-श्रीराघव की मनोरम भुजाओं
को; वनिदैयर् तिलकत्तिन्-स्त्री-तिलक सीता के; मन्तुत्तिन् माण्पैयो-मन की
दृढ़ता के गौरव को; वन्नेहळ् अरशरिन्-पायलधारी राजाओं से; वण्मै मिक्किडुम्-
अधिक उदार; चनकर तम् कुलत्तैयो-जनक के कुल को; यादु चारुङ्केन्-किसको
गाऊँ । ३६८

अब हनुमान विस्मय से अभिभूत हो गया । पायलधारी श्रीराम की
भुजाओं की प्रशंसा की जाय, या स्त्रीतिलक सीताजी के मन की दृढ़ता
की ? या पायलधारी राजाओं में सर्वश्रेष्ठ उदार दानी जनक के कुल के
गौरव का यशोगान किया जाय ? किसका गान करूँगा ? हनुमान ने
कहा । ३९८

तेवरुम्

विळैत्तिलर्

तैय्व

वेदियर्

एवरुम्

विळैत्तिल

ररमु

मीरिन्नाल्

यावदिङ्

गिनिच्चैय

लरिय

दैम्बिरार्

कावर्वेन्

नडिमैयुम्

विळैप्पिन्

डामरो 399

तेवरुम् पिळैत्तिलर्-देव भी अपराधी नहीं बने; तैय्व वेतियर् एवरुम्-विध्य
ब्राह्मण कोई भी; पिळैत्तिलर्-दोषी नहीं बने; अरमुम् ईरु इन्-धर्म का भी अन्त
नहीं हुआ; दैम्बिरार्कु आव-मेरे आराध्य के प्रति; अन् अटिमैयुम्-मेरी दासता
भी; पिळैप्पिन्नराम्-निर्दोष रही; इति-अब; इङ्कु-यहां; चैयल् अरियतु-कार्य
असाध्य; यावतु-क्या है (कुछ भी नहीं) । ३६९

देव अपराधी नहीं रहे। विष्णु गुणी शशिपुत्र भी अपराधी नहीं रहे। धर्म का अर्थ नहीं हुआ। भरे आराध्य नायक की भरी दासता भी निर्दोष हो रही। अब कौन सा काम है, जो दुस्साध्य होगा ? ३१९

कठिन	विशुद्धि	कोण्ड	दासिनि
आख्यान	सुनिबन्ध	माख	मीककठ
कठिण	निर्विद्वन्	दुष्प्र	कर्मनिबन्ध
वाङ्मय	वलद्विनि	वरमणि	वाङ्मय 400

कठे इलाख-अपवित्र; निर- (सीताली का) संघस; दुई कोण्ड आस अविन-
 धाई भी दरार था गया तो; आख्यान-वकवद श्रीराम का; सुनिबन्ध अविन आखि-
 कोण्डसागर; सी कील-उमग उठेगा; कठिणनिबन्ध इति-पुनान; वरु उठे-आ
 जाया; अनेक उद्विग्न-ऐसा सीता; इति-अव; उलक-ससार; वरमणि
 गाढे अविन-अनल काल तक; वाङ्मय-जीते रहे। ४००

हेतुमान ने विचार व्यक्त किया कि मैंने सीता या कि अपवित्र
 देवी के चरित्र में किये अंश में दरार पड़ गयी तो वकवद श्रीराम के
 कोण्डसागर के उमग आने से सारे लोकों का अन्त करनेवाला प्रलय हो
 जायगा। अब ऐसा कुछ नहीं होगा। अब लोक अन्त काल तक
 चिपूँ ! ४००

वृत्तान्त	मुनिद्विप	पुलनगाढ	वीककिपुम्
वृत्तव	वक्तव	मीकिक	नीरुवर
अखण्ड	कुलननिबन्ध	निबन्ध	माण्ड
नरगाय	मननव	निबन्ध	पालदे 401

वृत्त कन-संगीतक पञ्चानि में; मुनिद्विप-रहेकर (नरगाय करके); पुलनकठ
 वीककिपुम्-इन्द्रिय-निगृह करके और; वृत्तव अखण्ड-निगलने योग्य और वृत्त
 मान; मीकिक-सागाकर; नीरुवर-वदपानन करनेवाले; अखण्ड-कहे हैं;
 कुलननिबन्ध वरु-अखण्ड में पूरा होकर; इनिबन्ध माण्ड उठे-गृहस्थी योग्य अखण्ड से
 युक्त; नरकपुत्र सब वदम-विनयी का मनोवृत्त; निबन्ध पालने-वर्णन योग्य है क्या
 (वर्णनानि है) ४०१

कठोर पञ्चानि-मध्य स्थित हो नरगाय करनेवाले इन्द्रियनिगृही,
 निगलने योग्य या वृत्त सीजन-पदार्थों के पञ्चमी वदवी कहे निबन्ध है ?
 अखण्डकुलजाता, गृहस्थधर्म-परिपालिका के मनोवृत्त का वर्णन करना हमारे
 वस का है क्या ? ४०१

क पञ्चानि
 नारायण
 रघुमन्त्र
 विरति
 नरगाय
 नीरुवर

माणनोर्	रीण्डिव	ळिरुन्द	वार्लाम्
काणनोर्	डिलन्नवन्	कमलक्	कण्गळाल् 402

नङ्कं तोन्डलाल्-इस देवी के जन्म होने से; मत्तं पिडवि-कुलजन्म; पेण-सबके द्वारा पालन-योग्य हो; नोर्डु-इसका तप कर चुका; पेणमै पोल्-स्त्रीत्व के समान; नाणम्-लज्जा भी; नोर्डु उयरन्तु-तपस्या करके श्रेष्ठ हो गयी; ईण्डु-यहाँ; इवळ्-ये; माण नोर्डु-चरित्रतपस्या करती; इरुन्त-रहीं; आळ् अलाम्-वह प्रकार सब; अवन्-उन्होंने (श्रीराम ने); कमल कण्कळाल्-अपने कमल-नेत्रों से; काण-देखने का; नोर्डिलन्-व्रत (भाग्य) नहीं किया । ४०२

इन देवी के जन्म से उत्तम कुल में जन्म लेना तप कर गया, जिसके फलस्वरूप सब उसका पालन करेंगे । (सब उत्तम कुल में जन्म लेना चाहेंगे ।) स्त्रीत्व के समान लज्जा भी भाग्यशालिनी बन गयी । ये देवी इधर जो तपस्या कर रहीं हैं, इसकी रीति अपनी आँखों से देखने का भाग्य पुण्डरीकाक्ष श्रीराम का नहीं रहा । ४०२

मुनिवर्ह	ळरुन्दवर्	मुरैयिन्	निन्डुळार्
इनियव	डानला	दियारु	मिल्लैयाल्
तत्तिमैयुम्	पेण्मैयुन्	दवमु	मित्तदे
वत्तिदैयर्क्	काहनल्	लरत्तिन्	माण्बैलाम् 403

अवळ् तान् अलातु-उनके सिवा; यारुम् इल्लैयाल्-कोई अन्य नहीं हैं ये, इसलिए; मुनिवर्कळ् अरुन्तवर्-मुनि जो श्रेष्ठ तपस्वी हैं; इत्ति मुरैयिन् निन्डुळार्-अब व्रती जीवन के क्रम में स्थिर रहेंगे; तत्तिमैयुम्-एकाकीपन; पेण्मैयुम्-स्त्रीत्व; तवमुम्-पातिव्रत्य तप; इन्तते-यही है; नल्ल अरत्तिन् माण्पु अलाम्-श्रेष्ठ धर्म का सारा गौरव; वत्तिदैयर्क्कु आक-स्त्रियों का हो । ४०३

अवश्य ये सीताजी हैं । अन्य कोई नहीं । इससे यह ध्रुव हो गया कि कठिन तपस्यारत मुनि लोग अपने आचरण में स्थिर रहेंगे । यही एकाकीपन, स्त्रीत्व और (पातिव्रत्य के) सद्धर्म का गौरव (इनका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण) हैं । अच्छे धर्म की सारी श्रेष्ठताएँ स्त्रियों को प्राप्त हो जायँ । ४०३

तरुममे	कात्तदो	जनह	तल्वित्तैक्
करुममे	कात्तदो	कड्पिन्	कावलो
अरुमैये	यरुमैये	यारि	दाडुवार्
औरुमैये	यैम्मनोर्क्	कुरैक्कड्	पालदो 404

तरुममे कात्ततो-धर्मदेवता ने (इनके शील को) बचाया; चत्तकन् नल् वित्तै करुममे-जनक के सत्कर्म ने; कात्ततो-बचाया; कड्पिन् कावलो-इनके पातिव्रत्य-पालन ने रक्षा की; अरुमैये अरुमैये-अपूर्व है, अपूर्व है; इतु आडुवार् यार्-यह करनेवाला कौन होगा; औरुमैये-अद्वितीय है; अम्मनोर्क्कु-हम जैसों के लिए; उरैक्कल् पालतो-कथनशक्य है क्या । ४०४

इसकी इस तरह की सहायता ? धर्म ने इसकी रक्षा की ? या जनक के कर्म के गुण ने इसका पालन किया ? या इसकी चरित्र की वृद्धि ? इसकी रक्षा हुई ? या नहीं ? अर्थात्, किन्तु अर्थात् ? ऐसा कौन कर सकता ? यह इनकी अद्वितीय विशेषता है । हम जानें से जानें हैं । १०४ ।

श्रीवचसा	वदुववर	लोक	योगिबु	राजवृषवार	यादिनि	मृगमृषयल
अवलिमने	पदेयिनिने	वक्ववरकका	कुकेण	रामर	यादिनि	
बुलेयिमा	लोलिने	यउने				

[illegible]

बहो! मैंने देखा—राक्षसों का बूझव बहो! वृषा। उनका ऊँ-
कायू ऐसा। देवगण अहीराव रहेकर उनकी गुलामी कर रहे हैं। इस
द्विजित में ऐसा अपना पालन करा जेना किसी के लिए साध्य होगा क्या ?
देवी हो यह असंभव कार्य कर सकती। इससे बहकर इन पर क्या कर
आ सकता ? सब है पाप पुण्य की जीत नहीं सकता। ४०५

अपिच	पुनप	वृणा	वणवामे
पुनरिणि	मुमरु	पुमरु	पुमरु
मरुम	मरुम	मरुम	मरुम
पुमरु	पुमरु	पुमरु	पुमरु

406

अथैक-प्रां, इवै इवैयव-यै और ऐसो वातै; औगोल-सोवकर; बगोल वातै-सुन्दर और वसत; पुरां तिल-रगलतिल; सुत मर पुरिमर-गोबिन वर के कोटर सै; एकड़-वसकर; अवग निमरुत-वहो रतै; अ वडि-वहो (तव); निकळतव-वत; यावु अतिव-यया है पुरो तै; वुतु पूम वातै वातै-पुण-यतै वस अगोकवत सै; अरकरकव तैमुरिवातै-राधस (राध) भक्त हुआ । ४०६

हरेमान इस तरह की बातें सोचते हुए एक मुन्दर और ऊँचे मुन्दरे पर के कोटर में जाकर रहता । तब हुआ क्या ? तब राक्षसाधिपति रावण उस पुष्पकलि अशोक वन में आया । ४०६

શિદ્ધરવળાં કુટુંબિ નૃત્તવરૂં ધૃત્યુ
મૌલિવલિનં તિરંગલન ત્રિવળ

મદિરદ્દે વપિર કીંગલ મલમલ
તિળાંતરલ તીળ્યુલે વપલગલ

शहरनीर् वेलै तळुविय कदिरि इलैदोरुन् दलैदोरुन् दयङ्गुम्
वहैयपन् महुड मिळवैयि लैरिप्पक् कङ्गुलुम् बहलपड वन्दान् 407

चिकर वण् कुटुमि-शिखर रूपी समृद्ध चोटियों वाले; नैदुवरै अवैयुम्-सभी पर्वत;
और वळि तिरण्टत्त-एक स्थान पर इकट्ठे हुए; चिवण-जैसे; मकरिकै-मकराकार
बाहुवलय; वयिर कुण्डलम्-हीरे के कुण्डल; अलम्पु-जिन पर हिलते थे; तिण्
तिरळ् तोळ्-बहुत बलवान कन्धे; पुटै वयङ्क-पार्श्व में शोभे; चकर नीर् वेलै-
सगरपुत्र-खनित जल-भरे सागर को; तळुविय कतिरिन्-आलिंगन करते हुए उठनेवाले
सूर्य की तरह; तलै तौरुम् तलै तौरुम्-हर सिर पर; तयङ्कुम् वकैय-शोभायमान;
पल् मकुटम्-अनेक किरीट; इळ वैयिल् अँरिप्प-बाल आतप-समान प्रभा छिटाते
रहे; कङ्कुलुम् पकल् पट-रात भी दिन बनी; वन्तान्-(ऐसा) आया । ४०७

उसके कन्धे, शिखर-सहित लम्बे पर्वत सभी एकत्र हुए हों, ऐसे शोभ
रहे थे । उनको मकराकार बाहुवलय अलंकृत कर रहे थे और कानों के
हीरे के कुण्डल उन पर लगे डोल रहे थे । ऐसी बीस भुजाएँ उसके दोनों
बाजुओं में विद्यमान थीं । उसके सिरों पर मुकुट जो थे, वे सगरपुत्र-
खनित सागर से उठनेवाले सूर्य के समान लगे और बालआतप-सी कान्ति
बिखेर रहे थे; जिसके कारण रात भी दिन में बदली हुई लगी । इस
ठाट के साथ रावण आया । ४०७

उरुप्पशि युडैवा लेन्दित डौडर मेनहै वैळ्ळडै युदवच्
चैरुप्पितैत् ताङ्गित् तिलोत्तमै शैल्ल वरम्बैयर् कुळाम्बुडै शुङ्गर्क्
करुप्पुरञ् जान्दुङ् गलवैयु मलरुङ् गलन्दुमिळ् परिमळ गन्दम्
मरुप्पुडैप् पौरुप्पेर् मादिरक् कळिङ्गिन् वरिक्कैवाय् मूक्किडै मडुप्प 408

उरुप्पचि-उर्वशी के; उटैवाळ् एन्तितळ्-तलवार लिये हुए; तौडर-पीछे
आते; मेनकै-मेनका के; वैळ्ळटै उत्तव-पान देते रहते; चैरुप्पितै ताङ्कि-चप्पलें
उठाए हुए; तिलोत्तमै चैल्ल-तिलोत्तमा के साथ आते; अरम्पैयर् कुळाम्-अप्सराओं
के समूह के; पुटै चूङ्ग-चारों ओर घेरे आते; करुप्पुर चान्तुम् कलवैयुम्-कर्पूर-
चन्दन-लेप; मलरुम्-और पुष्प; कलन्तु-मिलकर; उमिळ्-जो निकालते हैं;
परिमळ कन्तम्-श्रेष्ठ गन्ध; मरुप्पु उटै-दाँतों से युक्त; पौरुप्पु एर्-पर्वत-सम;
मातिर कळिङ्गिन्-दिग्गजों की; वरिक्कै-झुरियों से युक्त, सूँडों के; वाय् मूक्किडै-मुख
और नाकों में; मडुप्प-भरकर ठहरी, ऐसा । ४०८

(और भी) उर्वशी तलवार लिये साथ आ रही थी । मेनका
ताम्बूलवाहिनी के रूप में उसे पान देती आ रही थी । तिलोत्तमा चप्पल
लिये जा रही थी । अन्य अप्सराओं के समूह उसके चारों ओर घेरे आ
रहे थे । कर्पूरचन्दन-लेप और विविध फूलों से उठती महक दाँत-सहित
पर्वतों के समान रहनेवाले दिग्गजों की झुरियों-सहित सूँडों के द्वारों और
मुखों में जा भर रही थी । ४०८

है ? इसका क्रोध किस पर उतरने के बाद किसके अहित के बाद शान्त होगा ? ऐसा सोचकर देव व्यग्र हुए और अपलक वे श्वास को भी रोके रहे । ४१०

नीतिरक् कुन्दि नैडिडुडन् डाळ्न्द नीतुतवळ् लरुवियि निमिरुन्द्
पानिउप् पट्टु मालैयुत् तरियम् पशपुत् पशुम्बोत्ता रत्तिन्
मानिउ मणिह् लिडैयुत् पडरुन्दु वरुहदि रिळवैयिल् पोरुवच्
चूनिरक् कौण्मुच् चुळित्तिडै किळिक्कु मिन्नेत्त मारुबिन् रुळङ्ग 411

नील् निउ कुन्दिन्-नीले पर्वत पर; नैटिउ उडत् ताळ्नुत-अधिक लम्बे आकार की; नीतुत वळ् अरुवियिन्-प्रवहमान श्वेत सरिता के समान; निमिरुन्त-लम्बी; पाल् निउ-दुग्धवर्ण; पट्टु-कौशेय; मालै उत्तरियम्-माला के समान उत्तरीय; पचपु उउ-वर्ण बदलकर रहा; पचुम् पोत् आरत्तिन्-चोखे स्वर्ण के हार के; माल् निउ मणिकळ्-श्रेष्ठ रंग के रत्न; इटैयुत्-बीच-बीच में; पडरुन्तु-रहकर; वरु कतिरु-उदीयमान सूर्य की; इळवैयिल् पोरुव-बाल-किरणों के समान; चूल् निउ-गर्भ-सहित और घने रंग के; कौण्मु-मेघ को; चुळित्तु-लपेटकर; इटै किळिक्कुम्-बीच में चीरकर चमकनेवाली; मिन् अँत्त-बिजली के समान; मारुपिन्-वक्ष में; नूल् तुळङ्क-यज्ञोपवीत हिल रहा था, इस रीति से । ४११

उसका श्वेत कौशेय उत्तरीय उसके वक्षःस्थल पर ऐसा लग रहा था, जैसे नीले रंग के पर्वत पर लम्बी सरिता गिर रही हो । उसके रंग को बदलते हुए चोखे स्वर्णहार में जटित श्रेष्ठ कान्तिमय रत्न बीच-बीच में रहकर उदय-सूर्य की किरणों के समान प्रकाश फैला रहे थे । उसके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभ रहा था, जो जलगर्भित मेघ को लपेटे रहकर उसको चीर कर चमकनेवाली बिजली के समान शोभायमान था । ४११

तोडौरुन् दौडरुन्द महरवाय् वयिरक् किम्बुरि वलयमाच् चुडरुहळ्
नाडौरुन् जुडरुङ् गलिहैळ् विशुम्बि ताळौडु कोळित्ते नक्कत्
ताडौरुन् दौडरुन्दु तळङ्गुपीड् कळलिन् तहैयोळि नैडुनिलन् दडवक्
केडौरुन् दौडरुन्द मुळुवल्वेण् णिलविन् मुहमल रिरविनुङ् गिळर 412

तोळ् तौरुम् तौटरुन्त-हर भुजा में पहने हुए; मकरवाय्-मकरमुख के; वयिर किम्पुरि वलय-हीरे-जड़ित किपुरी नामक वलयों के; मा चुटरुक्क-पृथुल प्रकाश; नाळ् तौरुम् चुटरुम्-हर दिन प्रकाश देनेवाले; कलि कौळ् विचुम्पित्-खूब विशाल आकाश के; नाळौडु कोळित्ते नक्क-नक्षत्रों को और ग्रहों को मानो चाट लेते हैं; ताळ् तौरुम् तौटरुन्तु-दोनों पैरों में लगाये जाकर; तळङ्कु-जो स्वर निकालती हैं; पीडुक्कलिन्-उन स्वर्ण-पायलों की; तकै ओळि-श्रेष्ठ प्रभा; नैडु निलम् तटव-लम्बी भूमि को सहलाती आती है; केळ् तौरुम् तौटरुन्त-(उसके साथ आनेवाले) परिवार के हर सदस्य के प्रति दिखाये गये; मुळुवल्वेण् निलविन्-हास रूपी श्वेत चाँदनी से; मुक्क मलर्-मुख रूपी सुमन; इरविन्नुम् किळर-रात के समय में भी खिला रहता है, इस रीति से । ४१२

उसकी सभी आँखों में मकरमुख के आकार के किर्पूरी नामक बाहुबल्य थे। उनमें दोरे के रत्न बड़े थे। उनसे जो कानि छँटी वह घने आकाश में प्रतिदिन चमकनेवाले तारों और ग्रहों की चाट रहो थी। उसके परो में कवचानशील स्वर्ण-पायल थी। उनसे जो कानि छँट रहो थी, वह भीम की सहलाती-सी लग रही थी। वह अपने साथ आनेवाले परिवार के हर सदस्य की हसमुख वदन के साथ देख रहा था। उस दोस कपी खेत बाँदनी में उसके मुखसुमन रात में भी चिल रहे थे। ४१२

[illegible][illegible]

उसकी धोती में नीच के नीचे मिलवट्टे अधिक लगी थी। वह सुनहला रेखाती वस्त्र था। वह काले पर्वत पर पड़नेवाली बालसूई की रेखाती के समान लग रहा था। बिजली के-से रंग वाली, चमकदार स्थला रेखाती के समान लग रहा था। सुंदरियों के रंगों से निकलनेवाली कानिनी की लट्टे दीर्घ प्रकाश से शीघ्रापमान करपवन के समान लगी। ४१३

[illegible]

वर्षन वीरतेन-‘शशवती’ नामक हार के; कावे वीरे तरुम-लडियाँ से रहे येवन
 मोती; अछियाँ उडलिय-युगाव से; पौन नैद वरैय-रवा के वडै (मर) पवन
 को; नडल वलैलिय-लवडकर जा लडक रहे है; कोडम नामेय आतेव-तारे और
 गडै की समाना पाकर; हडै हडै पालिय-मडय-मडय समकते है; मिम आळि
 मोल-बिबले के समान समकतेवाले किरीट; उतयमान वरैयि से-उतयलारि पर;
 पडर-कली रही; वम कलर-गरम किरण के; बबवर-देवता (शिवश) खाँ

में; पत्नित्ववरितुम् इत्वरुम् तविर-दो को छोड़ अन्य; उतित्ततु ओर् पटि-उदित हों जैसे; ओल्लि परप्प-प्रकाश फैला रहे थे, इस रीति से । ४१४

उसने 'शन्नवीर' नाम का हार पहन रखा था । उसमें मोती लड़ियों में लगे थे, वे युगान्त में स्वर्ण-मेरुपर्वत पर लगे लटकनेवाले नक्षत्रों और ग्रहों के समान उस हार में मध्य-मध्य लग रहे थे । बिजली के समान कान्ति बिखेरनेवाले किरीट बारह आदित्यों में दो कम करके बाकी दस आदित्यों के समान लगे, जो बड़ी उदयगिरि पर दिखायी देते हों । किरीट उनके समान प्रकाश बिखेर रहे थे । ४१४

पयिलैयिर् इरिट्टैप् पणैमरुप् पोडियप् पडियिनिर् परिबवञ् जुमन्द
मयिलडित् तोळुक्कि ननैयमा मदत्त मादिरक् कावन्माल् यानै
कयिलैयिर् इरिण्ड मुरण्डोडर् तडन्दोळ् कन्नहन् दुयर्वरड् गडन्द
अयिलैयिर् इरियिन् शुवडुतन् करत्ता लळैन्दमाक् करियिनिन् उञ्ज 415

पयिल् अयिर् इरिट्टै-युक्त दो-दो; पणै मरुप्पु-बलवान दाँत; ओडिय-टूटे, इसलिए; पडियितिल्-भूमि पर; परिपवम् चुमन्त-अयश धारण करनेवाले; मयिल् अडित्तु-मोर के पैर के; ओळुक्किन् अनैय-प्रकार के समान तीन धाराओं में बहनेवाले; मा मतत्त-अधिक बहाव से मद्युक्त; मातिर कावल्-दिग्पालक; मा यानै-बड़े गज; कयिलैयिल् तिरण्ड-कैलास पर्वत के समान पुष्ट; मुरण् तोट्ट-सबल; तडम् तोळ् कतकनतु-विशाल भुजा वाले कनककशिपु के; उयर् वरम् कटन्त-बहुत श्रेष्ठ वरों को जीतनेवाले; अयिल् अयिर्-तीक्ष्ण दाँतों से युक्त; अरियिन्-नृसिंह की; चुवटु-पदछाप को; तन् करत्ताल्-अपनी सूँड़ से; अळैन्त-टटोलने वाले; मा करियिन्-बड़े गज; निन् अञ्च-खड़े होकर डर रहे हैं; इस रीति से रावण आया । ४१५

दिग्गजों के चार-चार दाँत (रावण के साथ युद्ध में) टूटे और उन्हें अपमान लगा । उनके गण्डस्थल में तीन धाराओं में मदनीर बह रहा था, जो मोर के पैरों के तीन नाखूनों का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा था । वे दिग्गज रावण की पद-छाप को देखकर ऐसे डरे, मानो कैलासपर्वत के समान कठोर और बलवान कन्धों वाले हिरण्यकशिपु के बहुत श्रेष्ठ वरों को भी जो व्यर्थ कर चुके थे, उन नृसिंह की पद-छाप को अपनी सूँड़ों से टटोलते हुए डर रहे हों । ४१५

अङ्गयर् करुङ्ग णियक्कियर् तुयक्कि लरम्बैयर् विज्जैयर् क्कमैन्द
नङ्गैयर् नाह मडन्दैयर् शित्त नारिय ररक्कियर् मुदलाम्
कुङ्गुमक् कोम्मैक् कुविमुलैक् कन्निवाय्क् कोहिलन् दुयर्रुड् गुदलै
मङ्गैय रीट्ट माल्वरै तळीइय मञ्जैयड् गुळुर्वन वयङ्ग 416

अम् कयल्-सुन्दर 'कयल' मछली-सी; करम् कण् इयक्कियर्-काली आँखों की

अन्तपूजं जवुक्कज् जामरं युक्क मादियाय् वरिशैयि तमैन्द
उन्तरुम् पौन्तिन् मणियिनिर् पुत्तैन्द वुळैक्कुलम् मळैक्कुल मन्तैय
मिन्निडैच् चैव्वाय्क् कुविमुलैप् पणैत्तोळ् वीडुगुदे रल्हुलार् ताङ्गि
नन्तिरक् कारिन् वरवुहण् डुवक्कुम् नाडह मयिलैन् नडप्प 418

अन्त-इस भाँति; मळैक्कुलम् अन्तैय-मेघवृन्दों के समान; मिन् इटै-बिजली-
सी कमर; चैव्वाय्-लाल अधर; कुवि मुलै-और सुडौल स्तन; पणै तोळ्-बाँस
के समान कन्धे; वीडुक्कु तेर्-बड़े रथ के समान; अल्कुलार्-भग, इनके साथ शोभित
राक्षसियाँ; पूम् चवुक्कम्-पुष्प-चतुष्कोण वितान; चामर-चँवर; उक्कम्-पंखे;
आतियाय् वरिचैयिन् अमैन्त-आदि यथाक्रम जो थे वे; उन्तरुम्-अचित्य रूप से
उत्कृष्ट; पौन्तिन्-स्वर्ण से; मणियितिल्-और रत्नों से; पुत्तैन्त-रचित; उळै
कुलम्-हरिणों को; ताङ्कि-धारण करके; नल् निर कारिन्-अच्छे रंग के मेघ का;
वरवु कण्टु-प्रकट होना देखकर; उवक्कुम्-मुदित होनेवाले; नाटक मयिल् अँत-
नर्तक मयूर के समान; नडप्प-साथ चलती आतीं । ४१८

इस रीति से रावण जा रहा था । उसके साथ मेघसमूह के समान
राक्षसियों का झुण्ड भी जा रहा था । वे राक्षसियाँ, विद्युत्कटि,
अरुणाधरा, पीनस्तनी, वंशस्कन्धा, रथनितंबिनी स्त्रियाँ थीं । वे चौकोर
पुष्पवितान, चामर, पंखे आदि राजोचित मर्यादा-चिह्न और अत्यन्त मनोहर
स्वर्ण और रत्नों से निर्मित हरिणों को लेकर श्रेष्ठ काली घटा को देखकर
मुदित होनेवाले नर्तनशील मोरों के समान जा रही थीं । ४१८

तन्दिरिक् कण्णिर् डाक्कुरु करवि तूक्किन् रैळुविय शदियिन्
मुन्दुरु कुणिलो डियैवुरु कुडट्टिर् चिल्लरिप् पाण्डिलिन् मुद्रैयिन्
मन्दर कीदत् तिशैप्पदन् दीडरन्द वहैयुरु कट्टळै वळामल्
अन्दर वान्तत् तरम्बैयर् करम्बिन् पाडला ररुवन् दाड 419

तन्तिरिक् कण्णिल्-तन्त्रियों पर; ताक्कुरु करवि-जो चोट खाती है (और
स्वर निकालती है), उस वीणा आदि वाद्यों को; तूक्किन्-बजानेवाले; रैळुविय
चतियिन्-जो 'यति' निर्धारित करते हैं, उनके अनुरूप; मुन्दुरु-पहले शब्दित होनेवाले;
कुणिलोट् डियैवु उरु-चोब के प्रहार से स्वर निकालनेवाले; कुडट्टिल्-'कुड्डु' नाम के
चमड़े के वाद्य के; चिल्लरि पाण्डिलिन्-छोटे कंकड़-भरे 'पाण्डिल' नामक वाद्य के;
मुद्रैयिन्-उचित क्रम से; मन्दर कीदत्तु-मध्य स्वर के गीत के; इच्चै पतम्
तीट्टैन्त-स्वरित शब्दों के अनुरूप; वक्कै उरु कट्टळै-विधिक्रम का; वळामल्-
उल्लंघन किये बिना; अन्तर वान्तत्तु-अन्तरिक्ष की; अरम्पैयर्-अप्सराएँ; करम्पिन्
पाटलार्-इक्षु-सदृश मधुर संगीत जाननेवालियाँ; अरुकिल् वन्तु-रावण के पास आकर;
आट-नाचती आतीं । ४१९

व्योमलोक की अप्सराएँ, जो इक्षुरसमधुर गान में भी चतुर थीं, रावण
के पास-पास नाचती हुई आ रही थीं । तब तंतीनाद-वीणावादक भी आ

रहे थे। उन अक्षराओं का नाब उनके वादन द्वारा निर्वारित 'यनि' के अर्जकप हो रहा था। चौब से प्रवाहित 'कुरई' नामक वमई-मई वाद्य से निकला गान, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से निकला गान, आसन्ननिर्धारित और मद्धिम स्वर में गाया कण्ठ-संगीत—इन सबका अन्तः समाई हुआ था और नाब उससे गान-मेल के साथ हो रहा था। ४१९

अनैद्विज नवङ्गा नळपडवै पुनन्द वयिभमुडै पडैजवा पडवैत वनङ्क पुण्णिन वैल्लुवुनै वैवमं वृण्मिदु पण्डेगदिर् विरव मनदमा वदमवाय मनरनौमय वारि वयङ्गुनोर् मारिपिन वरवैमं विनङ्कुरुण्डु विळियन रीहरन विवले पुक्किकय श्रमवैननै विरिप 420

अनैद्विज-सायकाल में; अवङ्कम्-ममय होरा; अळवै पट-जाल के लिए; पुनन्द-प्रतिन; अयिल मुक-नीयामुल; पकळि वाय-शरीरें; अऊतन-कटक वन; वृण्डु पुण्णिन-नाब वणों में; वैल्लुवुनैवैन-माला घुसा हो जैसे; वृण्मिदु पण्डेगदिर्-प्रव वन की शीतल किरणें; विरव-मिल गया; मनन मावम-मनर नौमय-मनर-पुण्ड-पुण्ड पर जाकार; वारि वर-जो ले आता है; वयङ्कुरोर् वारिपिन-अंगीभूत रहनेवाले जल की मध-वर्षा के समान; वेन-शरद की; विनङ्कुरुण्डु विळियन-दपकनैवाली छोटी वृक्षों के; वीकार निवले-छोटे कणों के; उक्किकय वृण्डु-पिचले नाब; अन्न-के समान; विरिप-विटकले (रावण आया)। ४२०

प्रवत वाद की शीतल वादनी छिटक रही थी, वह रावण की ऐसा लग रहा था, मानो सन्ध्या-वेला में ममय होरा जलाने के लिए प्रेषित था रविद्व वण में माला घुसा हो। मन्द मलयमोहन के साथ पुण्ड-पुण्ड पर जा संगीतित मधु-धारा के छोटे-छोटे कण आ रहे थे और वे रावण पर पिचले नाब के कणों के समान पड़कर नाप दे रहे थे। ४२०

वडैपुर् मरङ्गु लिळिमळ मनव मिळिहिला ववमुले पिरददै वडैपुर् श्रपपि नौळिदर मडैनन वनैररी यवैनिन रीवैहिके वडैपुर् गमलक कौटिन्नर नौक्कुङ्क गुन्ननैके कुमुदवपु मरैळिर् मडैपुर् प्रीण्णण शङ्गाडै पीट्ट मारिविन्नै रौळिन्नै वयङ्गा 421

वडैपुर्-सूक्ष्मम; मरङ्कुल-कमर; वङ्कम् वङ्कम् अववम्-दड़नी, दड़नी, ऐसा कहने योग्य; वङ्किकला-नी भी मही दड़नी, ऐसा (कठिन); वन मुले वरददै-मनोरम स्तनद्वय; वडै पुर्क-आवर धुंसे हुए; वृण्मि-कटोरियों के समान; शौळिन्नर-श्रीमा वैले है; मडैनन-उनकी आठोदित करनैवाले; उवैररीयवैनिनर-उवरीयों से अलङ्कृत; अल्लिक-नरम वनकर; कुळै पण्डम्-कुण्डलों से टकरातिवाली; कसलम-कमलमयनी वालिया (वा); कौटिन्नर-नौकम्-तिरछी रीति से रावण की वैवली है; कुन्नन-क-समस्त-सहित; कुमुन वायु मकळि-कुमुदधारा स्थियों के; मडै पुर्-मध-मम (काली); श्रप कण-प्रकाशमय आँखों की; वृण् कट्टे दड़म्-जाल कीरों का

समूह; मारपितुम् तोलितुम्—(रावण के) वक्ष और भुजाओं पर; वयङ्क-लगा रहता है, ऐसा । ४२१

सुन्दरी स्त्रियों की दृष्टि रावण पर लगी हुई थी । सूत्र-सम उनकी कमरें अभी टूटी, अभी टूटी की स्थिति में थीं । तो भी नहीं टूटीं । सुदृढ़ स्तनद्वय वक्षों में धँसे हुए कटोरो के समान शोभ रहे थे । उन स्तनों को उत्तरीय आच्छादित कर रहा था । उनकी आँखें कुण्डलों तक गयी थीं, मानो उनसे भिड़ने चली हों । मन्दहासवदना कुमुदाधरा स्त्रियाँ अपनी आँखें तिरछी करके मेघ-सम काली, उज्ज्वल उन आँखों की लाल बनी कोरों से रावण पर अपनी दृष्टियों को डाले जा रही थीं । ४२१

मालैयुम् जान्दुङ् गलवैयुम् ब्रूणुम् वयङ्गुनुण् डूशौडु काशुम्
शोलैयिन् शौळदिक् कर्पहत् तरुवु निदिहळुङ् गौण्डुपिन् शौडरप्
पालित्वेण् परवैत् तिरैकरुङ् गिरिमेर् परन्तैन् चामरै पदैप्प
वेलैनिन् इयर् मुयलिल्वान् मदियिन् वैण्गुडै मीदुर् विळङ्ग 422

चोलैयिन् तोलुति-वन के समान घने; कर्पक तरुवुम्-कल्पतरु; नितिकळुम्—(शंख, पद्म आदि नव) निधियाँ; मालैयुम्-मालाएँ; चान्तुम्-चन्दन; कलवैयुम्-मिश्रित लेप; ब्रूणुम्-आभरण; वयङ्कु नुण् तूचौटु-शोभायमान महीन वस्त्रों के साथ; काशुम्-और रत्न; कौण्डु पिन् तौटर-लेकर पीछे आते हैं; पालित्व-क्षीर; परवै वैण् तिरै-सागर की श्वेत तरंगें; करुम् किरि मेल्-काले पर्वत पर; परन्तै-फैलों जैसे; चामरै पदैप्प-चामर डुलते हैं; वेलै निन्नु-समुद्र से; उयर्-उत्तरोत्तर ऊँचा चढ़नेवाले; मुयल् इल्-शशकहीन; वाल् मतियिन्-श्वेत चन्द्र के समान; वैण् कुटै-श्वेत छत्र; मीदु उर् विळङ्क-ऊपर सुन्दर रूप से शोभता है, इस तरह । ४२२

वन के समान अधिक संख्या में कल्पतरु और शंख, पद्म आदि नव-निधियाँ भी साथ आ रही थी । वे मालाएँ, चन्दन, मिश्रगन्ध-लेप, आभरण, शोभायमान महीन वस्त्र, रत्न आदि लेकर उसका अनुगमन कर रही थीं । चामर डुल रहे थे, और वे क्षीरसागर की तरंगों के काले पर्वत पर फैलने का दृश्य पैदा कर रहे थे । श्वेत छत्र उसके ऊपर एक कलंकहीन चन्द्र के समान शोभित हो रहा था, जो समुद्र से उत्तरोत्तर ऊपर उठ रहा हो । ४२२

आर्हलि यहळि यरुवरै यिलङ्गै यडिपैयर्त् तिडुतौर् मळत्त
नेर्करुम् बरवैप् पिळ्ळुदिरै तवळ्न्दु नैडुन्दडन् दिशैतौर् निमिरच्
चार्वरुङ् गडुवि नैयिळ्ळुडैप् पहुवा यन्नन्दन्नुन् दलैतडु माऱ
मूरिनी राडै यिरुनिलप् पावै मुडुळुक् कुर्रुत्त नैळिय 423

आर् कलि अकळि-समुद्र जिसकी परिखा हो; अरु वरै इलङ्कै-श्रेष्ठ (त्रिकूट) पर्वत पर बसी लंका; अडि पयर्त्तिदुम् तौर्-जब पग धरता है; अळत्त-दवाने

से, ने-सामने के; कर्म परबे-काले सागर पर; फिर लहे-लहेरीवाली तरंग; लवले-वलकर; नैम नदम-जसकी लहरी और चौड़े; लहे लोहम-सारी दिशाओं में; निमित्त-सर जाती है; चारु अक्षम-आम; कर्तव्य अधिदे-विषले दलों बाल; पक्षपात अतन्त्रम-फटे जंसे बड़े मुख बाले अतन्त्रम के भी; लहे लदमा-सर के कारण (अपने) फिर लड़खड़ाते हैं; फिर नीरे-सबल जल; आटे-लसका घस है; इह लिल पावे-बहे भूदेवी; मुक्ति उल्लेख-रत-पीठ पर बल पड़ते हैं; नीलम-हिल उठी । ४२३

लंका नगरी बड़े निकट पर्वत पर स्थित थी और उसके चारों ओर शब्दप्रमाण सागर घेरे हुए था । ज्यों-ज्यों रावण अपना एक चरण उठाकर दूधरा रखता, र्यों-र्यों लंका दब जाती । तब सामने के बड़े सागर पर उठनेवाली तरंग चारों दिशाओं में फैलतीं और निकट तथा विषले दलों के और फटे हुए-से दिखनेवाले बड़े मुखों के अतन्त्रम के फिर जगमगा जाते और भूदेवी की पीठ में वेदना के साथ बल पड़

जाता । ४२३

कैहले लोह मल्लोव ल मङ्गुशङ्ग गणपण्डे लिहै
 डाहले चहरेवा लिखलिखलि कलिषा मुदलिय बाहुद मनेनम
 नाहैके फिरते धुल्लवल ललेन लहेसपर लहेसपर पौककर्म
 बहले लककच चहिलाने लहुपी ररकिकपर ललेदीख जमप 424
 लककक इरते-लकका के हुये; अल्लवल ललेन-अधिक बलसुवन;
 लकसपर-धीप; लदवे पौककर्म-बड़े पर्वतों की धारण करनेवाले; लक लक-
 ककालक बड़े दिशा से पुवन; लु विनदेव-संवाक कोधी; अह पर अरकिकपर-
 लहेरक पुल्लुवाल राक्षसिया; कककलेते-दलों के साथ; मल्ल-पर; अल्ल-
 मल; लम-और गुल; अल्लम-अक्षम; कणपणम-और कणपण लमक
 हियार; किके ओटे-किके लमक हियार के साथ; आक लदरे बल्ल-मुनहली
 उल्लवल ललवार; अल्ल-और बाल; लिल-धु; किलिम-और किलि;
 मुनलिय-आदि; आयुम अलेहुम-सारे हियार; लले लोहम-अपने-अपने फिर
 पर; समप-धारण किये आ रहे हैं । ४२४

उस रावण के साथ लकका से हुाने बल से संयुक्त, बड़े-बड़े पर्वतों की भी उठा सकनेवाले कंकणशीघ्रत हाथों की और संवाक कोषशीला और युद्ध में दास मचानेवाली अनेक राक्षसियां डाल, परचु, लोहे का मुंसल, लिखल, अक्षम और कणपण लमक कटदार गदा, काठ की बनी 'किहल' नामक डाल और मुनहली उल्लवल ललवार आदि सभी हियार अपने-अपने स्थिर पर लीते हुए जा रहे थी । ४२४

विरतिरि मुहैक कोमबह मुदले रिबेयला मलिपानाल वेपने
 लकपर बोले लिखदीख गिरप ललेलि लिपरपुसने उवले

तिरुमह लिरुन्द दिशैयरिन् दिरुन्दुन् दिहैप्पुरु शिन्दैयाल् कंडुत्त
दौरुमणि नेडुम् पः(ह)रुलै यरवि नुळैदौरु मुळैदौरु मुलावि 425

विरि तळिर्-विकसित पल्लव; मुकै-कलियाँ; पू-और फूल; कौम्पु-और
टहनियाँ; अटै-पत्ते; मुत्तल्-तने; वेर्-जड़ें; इवै अलाम्-ये सब; मणि
पोन्नाल् वेय्न्त-रत्न और स्वर्ण-निमित्त जैसे (जिसमें थे); तर उयर् चोलै-तरलसित
वन; तिचै तौरुम्-(रावण जिस-जिस दिशा में देखता है) उस-उस दिशा में; करिय-
झुलस जाता है, ऐसा; तळल् उमिळ्-आग उगलता हुआ; उयिर्प्पु-श्वास जो
छोड़ता है; मुन् तवळ-वह आगे-आगे जाता है; तिरु मकळ् इरुन्त-जहाँ श्रीलक्ष्मी
रहीं वह; तिचै-दिशा; अरिन्तिरुन्तुम्-जानता था तो भी; तिकैप्पु उरु
चिन्तैयाल्-भ्रान्त मन का था, इसलिए; कंडुत्ततु और मणि-खोयी हुई श्रेष्ठ मणि
को; नेडुम्-खोजनेवाले; प.रुलै अरविन्-अनेक सिरों के सर्प के समान; उळैतौरुम्
उळैतौरुम्-स्थान-स्थान पर; उलावि-फिरता हुआ । ४२५

विकसित कल किसलय, कुडमल, सुमन, छोटी टहनियाँ, पत्ते, तने और
जड़ें ये सब मानो स्वर्ण और रत्न के बने लगे । ऐसे तरुओं से परिपूर्ण
वह वन, जिस दिशा में रावण की दृष्टि पड़ी, उस दिशा में जल, झुलस
जाता था । ऐसा अग्निमय श्वास को आगे जाने देते हुए वह जा रहा
था । उसे मालूम था कि देवी कहाँ थीं । तो भी उसका मन वश में
नहीं रहा इसलिए भ्रमित होकर खोई हुई अपनी मणि की खोज में जानेवाले
बहुसिर नागसर्प के समान स्थान-स्थान पर घूमता फिरता । ४२५

इत्तैयदोर् तन्मै यैरुळ्वलि यरक्क रेन्दल्वन् दैय्दुहिन् शानै
अत्तैयदोर् तन्मै यञ्जन्तै चिरुवन् कण्डन् त्तमैवुर् नोक्कि
वित्तैयमुञ्ज जैयलुम् मेल्विळै पौरुळु मिव्वळि विळङ्गुमेन् रैण्णि
वत्तैहळ लिरामन् पेरुम्बैय रोदि यिरुन्दन्तन् वन्दयन् मरैन्दे 426

इत्तैयतु ओर् तन्मै-ऐसे अपूर्व स्वभाव का; यैरुळ् वलि-अपार बल का;
अरक्कर् एत्तल्-राक्षसों का राजा (रावण); वन्तु अय्त्तुकिन्शानै-वहाँ जो आ रहा
था उसे; अत्तैयतु ओर् तन्मै-वैसे स्वभाव के; अञ्जन्तै चिरुवन्-अंजनामुत्त ने;
कण्टन्तन्-देखा; अमै उर नोक्कि-सावधानी से सोचकर; वित्तैयमुम् जैयलुम्-उपाय,
कार्य और; मेल् विळै पौरुळुम्-आगे होनेवाला नतीजा; इ वळि विळङ्कुम्-अब
विदित हो जायगा; अन्तु अण्णि-यह सोचकर; वत्तै कळल् इरामन्-वीरपायलधारी
श्रीराम के; पेरुम् पेरु ओत्ति-श्रेष्ठ पावन नाम का जप करके; अयल् वन्तु-पास
आकर; मरैन्तु इरुन्तन्तन्-छिपा बैठा रहा । ४२६

इस तरह के ठाट के साथ अपार बलवान राक्षसों का राजा रावण
वहाँ आ रहा था और ऊपर वर्णित अञ्जनामुत्त ने उसे देखा । मन लगाकर
सोचा । रावण क्या करेगा, क्या नीति अपनाएगा और उसका फल क्या
होगा —आदि बातें अब ज्ञात हो जायँगी । ऐसा सोचकर हनुमान

දුරු | 121 180 25 111 11

कापडिने वडेव विगिनिय वगदे कलविजय विगुपुनक कदेनदे 427

କୃଷ୍ଣ ମତ୍ସ୍ୟ ଓ ଶିଳା

ଗୌରୀ । ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ

428 ਉਲੇਖਣ

८८४ । १६३-१६३०५ । १६३०५-१६३०५

निर्देश देवदत्त को साक्षी बनकर (यानी निर्विकल्प में) ले जा। ४८२

❖ बाळि शान्ति बाळिष रविष, बाळि नामसु बाळिष रवणर
बाळि नवलर सुवदुवक बाळिषिबाण, अळि लीक सुपरवड्ड गीरवलिषान 429

ऊळि तोरुम्-प्रतियुग; उयरवु उरुम्-उत्तरोत्तर उन्नत होनेवाले; कीर्त्तियान्-यशस्वी; वाळि चात्तकि-जानकी जिऐ; वाळि इराकवन्-श्रीराघव जिऐ; वाळि नान् मर्रे-जिऐ चतुर्वेद; वाळियर् अन्तणर्-ब्राह्मण जिऐ; वाळि नल्लरम्-जिए सद्धर्म; अँन्ऱु अँन्ऱु-ऐसा अनेक बार; वाळ्त्तित्तान्-जय बोला । ४२६

हनुमान एकदम भावोद्वेलित हो गया । प्रतियुगविवर्धितयश उसने जय-जयकार किया; जानकी जिऐ; श्रीराघव की जय हो । चतुर्वेद जिऐ; ब्राह्मण जिऐ ! सद्धर्म जीता रहे ! । ४२९

अव्वि डत्तर् ह्यदिय रक्कन्ऱान्, अँव्वि डत्तैन्क् किन्नर् ठीवदु
नौव्वि डैक्कुयि लेनुवल् हेन्ऱत्तन्, वँव्वि डत्तै यमुदैन वेण्डुवान् 430

वैम् विटत्तै-भयंकर गरल को; अमुतु अँत-अमृत समझकर; वेण्डुवान्-चाहनेवाले; अरक्कन्-राक्षस ने; अ इटत्तु अरुक्-उस स्थान के पास; अँय्ति-पहुँचकर; नौ इटै कुयिले-क्षीणकटि कोकिला; अँतक्कु-मुझे; इन् अरळ् ईवतु-मधुर कहना का दान करना; अँ इटत्तु-कब; नुवल्-बताओ; अँन्ऱत्तन्-पूछा । ४३०

रावण भयंकर गरल को अमृत समझकर कामना करता था । वह श्रीसीताजी के पास आकर बोला—क्षीणकटि सीते ! मुझ पर दया करोगी कब ? कहो न । ४३०

ॐ ईशर् कायिन्नु मीडळि वुर्ऱिरे, वाशिप् पाडळि याद मत्तत्तिनान्
आशैप् पाडमैय्न् नाणु मडर्त्तित्तिडक्, कूशिक् कूशि यिवैयिवै कूशित्तान् 431

ईशर्कु आयित्तुम्-शिवजी के सम्बन्ध में भी; ईट्टु अळिवु उर्ऱु-बल खोकर; इरे-थोड़ा भी; वाचिप्पाटु अळियात-अहंभाव जिसने नहीं खोया वैसे; मत्तत्तिनान्-मन वाला रावण; आचैप्पाटुम्-कामना; मैय्न् नाणुम्-और (असफलता पर) सच्ची शर्म के; अडर्त्तित्ति-कष्ट देने से; कूचि कूचि-सकुचाकर-सकुचाकर; इवै इवै कूशित्तान्-यों, यों बोला । ४३१

शिवजी के सामने हारकर भी उसका मन अहंभाव नहीं छोड़ता था । अब उसे सीता-प्रेम और उसे प्राप्त करने में असफलता के कारण उठी शर्म क्लेश दे रही थी । इसलिए वह सकुचाते हुए यों कहने लगा । ४३१

इन्ऱि र्न्दन् नाळैयि र्न्दन्, अँन्ऱि र्न्दरुन् दन्मैयि दालैन्क्
कौन्ऱि र्न्दपिन् कूडुदि योक्कुळै, शँन्ऱि र्ङ्गि मरन्ऱु शँङ्गणाय् 432

कुळै चैन्ऱु इरङ्कि-कर्णकुण्डल तक जाकर; मरम् तर-(मुझे) कष्ट देनेवाली; चैम् कणाय्-अरुण आँखों की देवी; इन्ऱु इरन्तत्त-‘आज’ अनेक अदृश्य हो गये; नाळै इरन्तत्त-अनेक ‘कल’ भी बीत चले; अँन् तिर्म्-मेरे प्रति; तरम् तन्मै-जो तुम दया करती हो वह; इताल-इस प्रकार है तो; अँतै कौन्ऱु-मुझे मारकर; इरन्त पिन्-मेरे मरने के बाद; कूटतियो-मिलोगी क्या । ४३२

कण्ठकुञ्जल तक आयत और भरे साथ करता। बदलनेवाली आँखों की सीते ! आज कइके किलने हो दिन बीत गये ! वैसे ही किलने 'कल' भी बीत गये ! यही भरे प्रति गुहारा रख है तो क्या गुहारे मारने के कारण भरे मरने के बाद ही मुझे प्राप्त होअगी ? । ४३२

उलहे मीरेही हिरण्य मोमबुझ, अलहिल शूलवने तरणिय लाण्डिले
लिलहे मयुरे हिरणवतनहे गभूरु, कलहे मल्ल दंडिमयुङ गण्डिया 433
उलकम् अहिरुहें हिरण्ये-एक और दो) दोनों लोको का; ओमृम-पालन
करनेवाले; अमृ-भरे; अलक हल चलववु-आगलन सम्पत्ति के; अरविमल
आण्डिल-राज्यशासन में; लिलकम्-स्त्रीलिलक; उमृ हिरण्य-गुहारे लिए; अलहेकम्
लक-समय-वन; कलकम् अलवु-कलहे छोड़कर; अहिमृम-अन्य लघुता;
काण्डिया-देखती हो क्या । ४३३

मैं लिलोकाधिपति हूँ । भरे अनन्त वैभवपूर्ण राज्य-शासन में, हे
स्त्रीकुललिलक ! अन्त-कलहे को छोड़ कोड़े दूसरा मुझे लघुता दिलानेवाला
काम्य होता हुआ देखती हो क्या ? । ४३३

पुनदण बारहुँठर पौरुकीलने देगुहले, एतहु शूलव मिहलेनने धिमेनिरक
कानदने माण्डिलने काहले उमृपय, वायुनेव बाळवहु माण्ड रोडुंरु 434
यम नण बारहुँठल-गुणालंकृत शीलल लपडे केश बाली; पौरु कीलने-स्वर्ण-
किमलय; एकले एतहु-प्रकीर्तित; धूलवम इकलेनने-धन-वैभव की निरवा करनी
हो; इले उमृर कानेनने-मयुर माणाय; इरामने-राम; माण्डिलने-दिना भरे;
काह कडवु पय-वनवास पूरा करके जाकर; वायुनेव बाळवहु-सुख के साथ जीना
भी; माण्डिरुहें अनेही-मयुज के साथ हो न । ४३४

गुणालंकृत लपडे केश की स्पर्शकिसलय-समान सीते ! यशोधर भरे
वैभव की अवहेलना करती हो ! (पर सीते) गुहारा चारा माणाय
वनवास की अवधि पूरा करके अयाध्या जाएगा और पुन उसके साथ
मिलकर रहेगी-समझो ! तो भी गुहारा जीवन एक मानव के साथ हो न
होगा ? । ४३४

नौरुकिने	उरुहले	गुणवीर	णण्डिलने
पारुकिने	उरुम	पुममयम	पारनेतिथने
वारुकुने	उमृले	यनेअने	मर्वलियाने
पुंकिने	उरुते	उडेने	धिवममाने 435

बारु कुंरु मुले-अणिप मं न समानेवाले रत्नों की सीते; नौरुकिने-उरुकले-
अनपलन करनेवाले और; गुण वीर-पुम नरवी के; गुण्डिलने पारुकिने-उरुम-
सुखमय भी; पुम मयम-जी प्राप्त करने वाले कल; पारनेतिथने-देखती तो;

अँन् चोल्-मेरी आज्ञा; मवुलियाल्-सिर पर; एरूक्निराँटु-धारण करनेवाले;
उठन् उरै-(देवों) के साथ रहने का; इन्पम्-सुख ही है । ४३५

अँगिया में न समानेवाले स्तनों से शोभित सीते ! सोचो ! व्रतधारी
और सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी लोग आखिर क्या पद पाते हैं ? देवों का सहवास ही
न ? वे देव आखिर मेरी आज्ञा को अपने सिर पर धारण करनेवाले ही
हैं ? । ४३५

पोरुळुम् याळुम् विळरियुम् बूवैयुम्, मरुळ नाळु मळलै वळङ्गुवाय्
तैरुळु नान्मुहन् शैय्ददुन् शिन्दैयिल्, अरुळु मिन्मरुङ् गुम्मरि दाक्कियो 436

पोरुळुम्-(तोतले) बच्चे और; याळुम्-वीणा; विळरियुम्-'धैवत' स्वर;
बूवैयुम्-सारिका; मरुळ-भ्रमित रह जाँएँ ऐसा; नाळुम्-हमेशा; मळलै वळङ्कुवाय्-
मधुर वचन बोलनेवाली; तैरुळुम्-सुलझी हुई बुद्धिवाले; नान्मुकन्-ब्रह्मा ने; उन्
चिन्तैयिल्-तुम्हारे मन में; अरुळुम्-कृपा; मिन् मरुङ्कुम्-और बिजली-सी कमर;
अरितु आक्कियो-अभाव करके (तुम्हें) रचा है क्या । ४३६

ऐसी मधुरभाषिणी, जिसके सामने तोतले शिशु, वीणा, धैवत स्वर
और सारिका आदि मधुर स्वरवाले भ्रमित होकर तरसें ! सुलझी हुई
बुद्धि वाले ब्रह्मा ने तुम्हारे शरीर में विद्युत्-सी कमर के और मन में दया
के विना ही तुम्हारी सृष्टि की क्या ? । ४३६

ईण्डु नाळु मिळमैयु मोण्डिल, माण्डु माण्डु पिर्रिदुळु मालैय
वेण्डु नाळ्वैरि देविळिन् दालिन्, याण्डु वाळ्व दिडरुळन् डाळ्दियो 437

ईण्डु-इस संसार में; नाळुम्-जीवन के दिन; इळमैयुम्-और यौवन के दिन;
मोण्डिल-लौट नहीं आते; माण्डु माण्डु-धीरे-धीरे बीतकर; पिर्रितु उळु मालैय-
बिगड़कर नष्ट होनेवाले स्वभाव के हैं; वेण्डु नाळ्-वांछनीय यौवन के दिन; वैरि
विळिन्ताल्-व्यर्थ बीत गये तो; इन्नि-फिर; याण्डु वाळ्वतु-कहाँ सुखी रहना;
इटर् उळ्ळन्-संकट में पड़कर; आळ्दियो-मग्न रहना चाहती हो क्या । ४३७

इस संसार में आयु और यौवन अगर बीत गये तो फिर लौट नहीं
आयँगे । उनकी प्रकृति भी धीरे-धीरे बिगड़कर नष्ट होने की है ।
वांछनीय यौवन व्यर्थ बीत गया तो तुम्हें सुखी जीवन कब मिलेगा और तुम
संतुष्ट कैसे रहोगी ? संकटमग्न ही रहोगी क्या ? । ४३७

पैण्मै युम्मळ हुम्बिर लामत्त, तिण्मै युम्मुदल् यावैयुञ् जैय्वाय्क्
कण्मै युम्बोरुन् दिक्करु णैप्पडा, वण्मै यैन्गोल् शतहन् मडन्दये 438

चतकन् मटन्तये-जनकसुता; पैण्मैयुम्-स्त्रीत्व; अळकुम्-सौन्दर्य; पिर्ल्ला-
अचंचल; मत्ति तिण्मैयुम्-मन की दृढ़ता; मुत्तल् यावैयुम्-आदि सभी गुणों से;
जैय्वाय्-खूब भरी होकर भी; कण्मैयुम् पोरुन्ति-वाक्षिण्ययुक्त हो; करुणैप्पडा
वण्मै-करुण-सह न रहने का स्वभाव; अँन् कोल्-क्यों । ४३८

हे जनकराजर्षि ! स्वीत्य, सौन्दर्य और अचंचल मन की स्थिरता
आदि अच्छे गुण तुमसे खूब भरे हैं । तो भी दाक्षिण्य और दया से रहित
क्या हो ? । ४३८

इन्हें नकटिय रूपादि मृदुहृद, कृष्ण हृदयनिष्ठ मित्रवत् कीर्तिवाच
पठहि विरुद्ध पण्डित्य कामवत्, इहहि नृकोक्तिं पाठ्य रावरी 439
कृष्ण मुकट-सुरक्षाये मन की; मित्र-सुरक्षा; मित्रवत् कीर्तिवाच-मन भी
विश्व हुआ तो; अनेक उपाय इन्हें अयिनिष्ठ-सुख प्राप्ताय भिन्न तो भी;
अनुक-मित्र भाव; पठहि विरुद्ध उक्त-भरे साथ हिल-मिलकर रहनेवाले; पण्ड
इय-सुरक्षित; कामवत्तिष्ठ अष्टिकेक-पार और कमनीयता के लिए; इति याव
उक्त आचर- (सुख छोड़) आगे कौन होगा । ४३९

सुरक्षाये मुख वाली गुहादे मन की विमुखता के कारण भरी मृदु हो
तो हो जाय । पर गुहादे कौन मित्रगा, विषयों भरे पास लगा रहनेवाला प्रम
और सौन्दर्य पाया जाय ? । ४३९

वादेह	गाल	नलिय	मृकुकल
कदेह	गाल	किरनेतिह	किरनेति
नादेह	गाल	नलन	निवयन
उदेह	गाल	तिह	इहगाल 440

किरने-शुक्र; वादेहम कालव- (जब राम ने मारीच की) मारी उस समय;
अलिय-राम विरलया; मृ कुरल-उसका सच्चा स्वर; कदेह-पुनकर भी;
नी-गुम; कालदेह-इहने की इहने लेकर; इहनेति काल-रहने भया; नादेह
काल-देह रूप से समझाऊ तो; नृ नल अरनेति-दीर्घ अरने के; पयन-कल
की; अदेहम कालव-जब तुमकी मारीया जा रही है तब; इहनेति उक्त कीर्ति-
अवहेलना करना, उचित काम करना (हुआ) क्या । ४४०

शुक्र-समान ! मारीच के मरने समय तुमने श्रीराम की विरलदेह में
राम का हो असली स्वर सुना था । तो भी क्या आशा करती हो कि उसे
देख सकोगी ? सच्ची बात कहूँ तो दीर्घ और अच्छे धर्मों का फल गुहादे
पास गुहादे भीगने के लिए आया है । तब उसकी उपेक्षा करना उचित
काम होगा क्या ? । ४४०

नक कृष्ण उपाय उपाय-अर भरे गाल; वादे उर-छेद जाए; नाहिकला-विना
कम हुए; नृकोक वलव-गुहा मयति; नलिय-नर हो जायगी; अहनेति
नी-अवयम गुम; मुकट-भरे घर में आया; उपरनेति-और भरी कुल उक्त हुआ;

अँतुम् पुकळ् पोक्कि-ऐसी कीर्ति छोड़कर; वेरु उक्कतु-उसके विपरीत नष्ट हुआ;
अँनूतुम्-ऐसा; उरु पळि-बड़ा अपयश; कोटियो-लोगी क्या । ४४१

सब तरह से श्रेष्ठ मेरे प्राण छूट जायँगे तो मेरी अक्षय धनराशि भी नष्ट हो जायगी । तुम मेरे गृह में आयीं और मेरा कुल उन्नत हुआ, तो तुम्हें उसका यश मिलेगा । उसे त्यागकर, “उसका नाश हो गया”—यह बड़ा अपयश लेना चाहोगी क्या ? । ४४१

❖ तेवर् तेवियर् शेवडि कैतौळुम्, ताविन् मूवुल हिन्ऱन्ति नायहम्
मेवु हिन्ऱुदु नुनगण् विलक्किन्, एव रेळैयर् निन्ऱन्ति निलङ्गिळ्ळाय् 442

इलङ्किळ्ळाय्-शोभनेवाले आभरणधारिणी; तेवर् तेवियर्-देवता और देवियाँ;
शेवडि कै तौळुम्-तुम्हारे मनोरम पैरों के आगे हाथ जोड़ें, ऐसा; तावु इल्-अक्षय;
मू उलक्किन्-तीनों लोकों का; तन्ति नायकम्-अद्वितीय आधिपत्य; तुन् कण्
मेवुक्किन्ऱुदु-तुम्हारे हाथ में आ रहा है; विलक्किन्-तुम उसे दूर हटा रही हो;
निन्ऱन्तिन्-तुमसे बढ़कर; एवर्-कौन; एळैयर्-अबोध है । ४४२

शोभायमान आभरणधारिणी ! निर्दोष त्रिलोकाधिपत्य तुम्हारे पास आ रहा है, जिससे देवी और देवता तुम्हारे लाल (मनोरम) चरणों में गिरकर नमस्कार करेंगे । पर तुम उसको छोड़ रही हो ! तुमसे बढ़कर बुद्धिहीन कौन होगा ? । ४४२

❖ कुडिमै	मूनुरुल	गुज्जैयुड्	गौऱुत्तुन्
अडिमै	कोडि	यरुळुदि	यालैन्ता
मुडियिन्	मीदु	मुहिळ्त्तुयर्	कैयित्तन्
पडियिन्	मेऱ्पडिन्	दान्पळि	पार्क्कलान् 443

पळि पार्क्कलान्-अपयश की परवाह न करनेवाला; मूनुरुल उलकुम्-तीनों लोक;
कुडिमै चैय्युम्-अपनी प्रजा बनाकर शासन करनेवाली; गौऱुत्तु-विजयशीलता का
स्वामी; अँन् अडिमै-मेरी दासता; कोटि-अपनाकर; अरुळुत्ति-कृपा करो; अँन्ता-
कहकर; मुडियिन् मीतु-सिर पर; मुकिळ्त्तु उयर्-जुड़कर बढ़े; कैयित्तन्-
हाथों वाला बनकर; पडियिन् मेल्-धरती पर; पडिन्तान्-गिरा । ४४३

रावण अपने कार्य में कोई दोष या उससे मिलनेवाले अपयश को देख नहीं रहा था । तीनों लोकों को प्रजा बनाकर पालने की विजयशीलता के स्वामी, मुझे अपना दास बना लो और मुझ पर कृपा करो —कहकर वह सिर पर हाथ जोड़े भूमि पर गिरा । ४४३

❖ काय्न्दन	शलाहै	यन्त	वुरैवन्दु	कदुवा	मुत्तन्
तीन्दन	शैविह	ळुळ्ळन्	दिरिन्दुदु	शिवन्द	शोरि

[illegible][illegible]

राजपू के बचन के तब शालाकारों के समान सीताजी के कानों में लगी हो उनके कान मानी चल गये । मन विकल हुआ । बाल रत्न आँखों में बड़े आया । उन्हीं अगनी जान की कोई चिन्ता नहीं की; पर रवी के लिए उचित, सरहनीय और कठोर ये (निर्णय) शब्द कहे । ४४९

मन्त्रादि निरुद्धा मनेवर् मन्त्रविद्द मन्त्रेणैव दक्षिणं वयाम्
कर्मलाडिनं दीडरुनद नूनवड गउरिममेर कण्ड उण्डो वयम्
इल्लाडिनं दीडरुनद मादरुको कपवन वल्ल वयम्
शावल्लाडिनं दीडरुदे करुदं पुठमविन्नं नीकोकिम् शावल्लं ४५

इस अदिम त्रिरत्न-गुरुभाषी में लगी; सातरेकृत्-विषयी के लिए; उपवन
अन्त-अध्याय; वृष-कूर; बालवर्द्धि त्रिरत्न-गुरुभाषी से उपवन वचन; केरु-
सुनकर; वृक्षमृत्त नोक्ता-(सामने रखे) वृष की देखकर; बालवर्द्ध-कहेने लगी;
मत्त अदिम-वल के साथ; त्रिरत्न में प्रवेष्ट-गुरु काशी वाले वीरों का; मत्त-
मत्त; त्रिरत्नमृत्त वरणम-वदनकर सम्भाषण पर जाए, ऐसा; कवलवर्द्ध त्रिरत्न-
परवर के समान अङ्गा; नृवचन-विनय; कर्त्तव्य में सन्-प्रातिवचन से श्रोत कृत;

राजा के वचन गहरे-गहरे में लगी ओठ कुल्लिखी के सामने कहेने योग्य वचन नहीं थे। ऐसे वचनों की सुनकर सीताजी ने अपने सामने एक गुण डालकर उसे (और राजा की गुण वगैर) साबोहित कर कहा। सबल छोट कंधों वाले वीरों के (कुमारगामी) मन को बदलने में समर्थ परशुराम वृद्ध मन के प्रतिबन्ध से अन्य किसी को किसी ने देखा है क्या ? । ४४५

* मरुतं युवतं वेणुतिनं विण्णपिण्णं देहं वेणुतिनं
 कूरुं युवतं यवमं मुरङ्गिणं विड्ढं वेणुतिनं
 आरियं पट्ठि वल्लं दडिन्दिहं दडिहि लदापुं
 क्षीरियं वल्लं श्रील्लिणं - लल्लपल्लं विनडुं वीया 446
 अरिक्कं कलामप-मल्लिणं; आरियं पक्खि-अपुं (अरिम) का वल्लं; मरुतं
 उरु वेणुतिनं-वेरु को विहर नामा वाहे; विण्णं पिण्णं-आकाश पण्डित; एक

वेण्टिन्-जाना चाहे; ईर् एळु-चौदह; पुवत्तम् यावुम्-भुवनों में सभी को;
मुर्ऱु वित्तिटुत्तल्-नष्ट करना; वेण्टिन्-चाहे; वल्लतु-समर्थ है; अट्टिन्तिरुन्तु-
जानते हो तो भी; चीरिय अल्ल चोल्लि-अशिष्ट कहकर; तले पत्तुम्-दसों सिरों
को; चिन्तुवायो-गिरा लगे क्या । ४४६

मुख ! आर्य श्रीराम का शर मेरु को वेध चलना चाहे, या आकाश
को चीर चलना चाहे, या सातों लोकों का अन्त करना चाहे तो करने में
समर्थ है । यह तुम जानते हो । तो भी अशिष्ट (अनर्थकारी) वचन
कहकर दसों सिरों को गिराना चाहते हो क्या ? । ४४६

अञ्जितै	याद	लाले	याण्डहै	यर्ऱु	नोक्कि
वञ्जितै	मात्तौत्	रेवि	मायैयाल्	मर्ऱुत्तु	वन्दाय्
उञ्जितै	पोदि	याहिल्	विडुदियुन्	कुलत्तुक्	कैल्लाम्
नञ्जितै	यैदिर्न्द	पोदु	नोक्कुमे	नित्तु	नाट्टम् 447

अञ्चितै आतलाल्-डरे थे, इसलिए; वञ्चितै भाङ्ग औत्ऱु-मायामृग एक;
एवि-भेजकर; आण्टके-पुरुषश्रेष्ठ की; अर्ऱुम् नोक्कि-अनुपस्थिति जानकर;
मायैयाल्-माया से; मर्ऱुत्तु वन्ताय-छद्मवेश में आये; उञ्चितै-बचकर; पोति
आकिल्-जाना चाहो तो; विटुति-(मुझे रामचन्द्रजी के पास ले जा) छोड़ो; उन्
कुलत्तुक्कैल्लाम्-तुम्हारे कुल के सारे लोगों के लिए; नञ्चितै-विष (-सदृश श्रीराम)
का; अँतिरुन्तु पोतु-सामना करोगे तो; नोक्कुमे-देख सकेंगी क्या; नित्तु
नाट्टम्-तुम्हारी आँखें उन्हें । ४४७

तुम भयभीत थे; तभी तो तुम वंचक मृग को प्रेरित करके श्रीराम
की अनुपस्थिति कराके रूप छिपाकर आये ! तुम बचना चाहो तो मुझे छोड़
दो । तुम्हारे कुल के राक्षसों के लिए घातक विष (के समान) हैं श्रीराम ।
जब उनका सामना करोगे तब क्या तुममें इतनी हिम्मत होगी कि तुम अपनी
आँखें उठाकर उन्हें देख सको ? । ४४७

पत्तुळ	तलैयुन्	दोळुम्	पलवुळ	पहळि	तूवि
वित्तह	विल्लि	नार्कुत्	तिरुविळै	याडर्	केर्ऱु
चित्तिर	विलक्क	माहु	मल्लदु	शैरुवि	लेर्कुम्
शत्तियै	पोलु	मेत्ताट्	चडायुवाऱ्	उरैयिन्	वोळ्न्दाय् 448

मेल् नाळ्-पहले (उस) दिन; चडायुवाल्-जटायु द्वारा; तरैयिल् वोळ्न्ताय्-
भूमि पर गिरे; पत्तु उळ तलैयुम्-दहाई के सिर; तोळुम्-और हाथ; पलवुळ
पकळि-विविध शर; तूवि-छितराकर; वित्तक विल्लित्तार्कु-अपूर्व कोदण्ड
धनु के धारक के लिए; तिरु विळैयाटर्कु एर्ऱु-श्री केलि के लिए; चित्तिर-
चित्र; इलक्कमाकुम्-लक्ष्य बनने; अल्लतु-नहीं तो; चैरुविल् एर्कुम्-युद्धयोग्य;
चत्तियै पोलुम्-शक्तिमान हो क्या । ४४८

(मुझे जब ले आये) उस दिन जटायु द्वारा प्रहरित होकर तुम धरती

पर निरे । पुनरिदं दर्शक के निर और शेष वर्तुल्य-विशेष शरीर क लिए विविध अस्व प्रति करके खलने के योग्य विधान मान है । वे विषम लक्ष्य वर्तते । तद्विती क्या तुम शुद्ध करने की शक्ति भी रखते

ಕರ್ತೃವು	ಕರ್ತೃ	ವೀರ	ವೀರಕುಲಕರ್ತೃ	ಗೀತೆ	ಕರ್ತೃ
ನೀರನು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು
ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು
ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು	ನೀರು

[illegible]

उस दिन तुम एक पक्षी सं हूँ ! प्रवाहमय जल की गंगा को अपने
 चिर-पर धारण करनेवाले शिखरों की दी गयी चन्द्राक्ष जलधार के चल से
 तुम जलछू पर जीव पा सके ! नहीं तो मर जाते न ? वपस्या के कारण जो
 वर और आयु आदि तुम्हें दिये गये हैं, वे यम की वनिस्वर दिये गये हैं ।
 शीतोरतराव के शरीरों को उद्धृत्य मानकर कहे गये थे क्या ? । ४४९

[illegible]

पूछते वरतन-पार पर और; गळम-आणु के बिना; पुरातन उत उरतन-
कामनास बल; पुरतन मरुत उत अंगुम-और आय मनी; नरत-नारत बिदा;
मरतन गुलारी; पारतन-कमलाम आनि के बल; इराम-औराम (नर);
बिम्बिते कातिव-पु मार संपान कर; पुरतनपुन-छोते नर; अंगमम बिबक
उपदे-मनी नाराम होकर; इरु उत नर-व-पम दकर; इरतन मपु-नर
हो, मर मर है; पुरककिने पुन-वीपक के मनी; इरुत उपादाम-अवकार
रहीम-मय । ४५०

विषय चिन्तक वर से प्राप्त हुए वे चतुर्मुख आदि के बचनों द्वारा दिये गये हैं।
 पुनर्दिष्ट प्राप्त वर, आर्य के दिन, जन्मसिद्ध वर और अन्य सभी
 वे सब श्रीराम के भार को धरु पर र रखकर छोड़ते ही अपना रक्षणप्राप्त

खो देंगे और तुम्हारा नाश होगा । यह ध्रुव सत्य है । दीपक के सामने-
अन्धकार ठहर सकेगा क्या ? । ४५०

कुन्तूनी	यैडुत्त	नाडन्	शेवडिक्	कौळुन्दा	लुन्तै
वैन्डवन्	पुरङ्गळ्	वेवत्	तनिच्चरन्	दुरन्द	मेरु
अैन्डणैक्	कणव	नाड्डु	कुरनिना	दिड्डु	वीळुन्दा
अन्डैळुन्	दुयर्न्द	वोशै	केट्टिलै	पोलु	मम्मा 451

नो कुन्तू अैडुत्त नाळ्-जब तुमने कैलासपर्वत को उठाया, उस दिन; तन् चेट्टि
कौळुन्ताल्-अपने दिव्य चरण की उँगली के छोर से; उन्तै वैन्डवन्-जिन्होंने तुमको
हराया, उन शिवजी ने; पुरङ्गळ् वेव-त्रिपुर जलाते हुए; तनि चरम् तुरन्त-(जिस
पर रखकर) अनुपम शर छोड़ा वह; मेरु-मेरु जैसे द्यंबक धनु; अैन्डुणै कणवन्-
मेरे संगी प्रिय नाथ के; आड्डु-बल के सामने; उरन्डु इलातु-शक्ति के बिना;
दिड्डु वीळुन्त अन्डु-जिस दिन टूटकर गिरा उस दिन; अैळुन्तु उयर्न्त ओचै-जो
उठा और बढ़ा वह नाद; केट्टिलै पोलुम्-तुमने सुना नहीं शायद क्या । ४५१

शिवजी के द्यंबक धनुष में मेरे प्रिय संगी पति श्रीराम की शक्ति के
सामने ठहरने की शक्ति नहीं थी और वह टूट गया । वे शिव कौन थे ?
जब तुमने कैलास को उठाया तब अपने श्रीचरण की उँगली के छोर से उन्होंने
तुम्हारे ऊपर जीत पायी थी । वह धनु भी वही धनु था, जिस पर शर
रखकर शिवजी ने छोड़े थे और त्रिपुर को जलाया था । उस धनु के
टूटने के दिन जो उच्च नाद उठा और फैला उसे शायद तुमने सुना नहीं था
क्या ? । ४५१

मलैयैडुत्	तैण्डिशै	काक्कु	माक्कळै
निलैयैडुत्	तैन्नु	माड्डु	नेरुनी
शिलैयैडुत्	तिळैयव	निड्क्	चेरुन्दिलै
तलैयैडुत्	तिन्नमु	महळिर्त्	ताळ्दियो 452

मलै अैडुत्तु-पर्वत उठाकर; तैण्डि चै काक्कुम्-आठ दिशाओं के पालक;
माक्कळै-गजों की; निलै कैडुत्तेन्-स्थिति मैंने बिगाड़ दी; अैतुम् माड्डुम् नेरुम्
नी-ऐसी डींग के वचन कहनेवाले तुम; इळैयवन्-(श्रीराम के) कनिष्ठ भ्राता; चिलै
अैडुत्तु निड्क्-जब धनु लेकर खड़े थे; चेरुन्दिलै-नहीं आये; तलै अैडुत्तु-सिरों
को लेकर; इन्तमुम्-अब भी; महळिर् ताळ्दियो-स्त्रियों के सामने झुकाओगे
क्या । ४५२

तुम डींग मारते हो कि मैंने कैलास को उठाया था और आठों
दिशाओं के पालक, गजों की दुर्गति करा दी थी । ऐसे तुम तब नहीं आये
जब मेरे देवर लक्ष्मण धनु लेकर मेरी रक्षा में खड़े थे । अब भी सिर

नहीं होती ?) १५२

उठाए हुए रहोगे और दिव्यों के सामने वह फिर झुकाओगे क्या ? (आरम

पूछती थीं कि वे तुम्हारे पिताजी के समान, बाँझपूँछ गोमद नरिय बनें नाले

आँखें मिटने लगीं मलिन नाले, ऊँछपूँछ दिरगुलिन नैलिय डोहती 453

पूछे-सूँध; नी-सूय; आँखें उठे-बहे लिय रहते हो वह स्थान; इमे

हटते-कहते हैं; अल-यह बाल; बाँझ-संसार की जीवन दिवालेबाले; अमे

कोमल-हमारे चकवली-सुत; अरिय बनें नाले-लिय दिन समझे उस दिन;

आँछपूँछ-समुद्र और; इल्लेकपूँछ-लंका; आँछपूँछ-मिट जायगी, उसी तक; नाले-

एक जायगा क्या; लिये उलिये-वृहदे गायों को लेकर; ओहो-समाप्त होगी;

सूँध ! जब मेरे चकवलीयुत जान लगे कि वह स्थान यह है, जिसमें

तुम लिप-लिप जाती हो तब क्या इस समुद्र और इस लंका के नद होने तक

से अनर्थ एक जायगा ? वृहदे जान लेकर समाप्त होगी ? नहीं !

युग भी बिगाड़ जायगा ! १५३

बूझलिन वरककर वीपुलेस वीपु, बूझलें नीशिय वळलें ओररनदाम

बूझलिन वळलिन मूँछ मूँछपूँछ, उल्लिहिन उलिये कडपूँछ जावेरती 454

वळलें नीशिय-बनना तुमने की, इससे; वळलें वीररुम नाने-वहार मूस का

जा होगा वह कोप; वूँ लिय-मयकर कोही; अरककर-राखों की; वीपुलेस-

मारने तक से; वीपुनी-गाल होगी क्या; अल्ले इल-अल्ले; लल्ले अल्ले-

मार लोको का; अल्ले अल्ले-सय हो जायगा, नद हो जायगा; अल्ले-एसा;

अल्लेकिकरने-डरती है; इल्ले-इल्ले; अरुम वाने-समय समान होगी १५४

तुमने जो वचक काम किया उससे मूस का कोप होगा ! क्या वह

कोप मयकर कोही राखसमूँछ की नद कर गाल हो जायगा ? अल्ले

लोको का क्षय हो जायगा, अवश्य क्षय हो जायगा ! यह झूठ सत्य है ।

यही मेरा डर है । इसके समान्य हो समान है । १५४

अल्लेगामा अल्लेगामा अल्लेगामा अल्लेगामा

वृद्धेगामा वृद्धेगामा वृद्धेगामा वृद्धेगामा

पूछेगामा पूछेगामा पूछेगामा पूछेगामा

पूछेगामा पूछेगामा पूछेगामा पूछेगामा

अमे कण मा अल्लेगामा-लियल स्थल का सुनल और; वीपुलेस-आकाश की;

अल्ले-डरने की मजबूर करते हुए; बाँझ-जीवन दिवालेबाले; वृद्धेकामा-कौर;

पूछे नी-सूँध तुमने; अल्लेकल नालेकपूँछ-हमारे नाल की भी; वूँ कण माल-

अल्लेगामा अल्लेगामा; नाले मयकर-समुद्र और; लियल-लियल; अल्ले काले-हो;

नितेन्तु-समझ लिया क्या; पुन् तोलिल् विलक्क-नीच कार्य छोड़ना; उळ् कौळाय्-ठानो । ४५५

रे क्रूर ! जो विशाल स्थल के भूतल को और आकाश को भयभीत करते हुए जी रहे हो ! मूर्ख ! तुमने मेरे श्रीराम को भी अरुणाक्ष विष्णु समझ रखा है ? या चतुर्मुख, या शिव ? अपना नीच काम छोड़ने का विचार करो । ४५५

मानुय	रिवरैत	मन्क्कोण्	डार्यैत्तिन्
कानुयर्	वरैनिहर्	कार्तुत	वीरियन्
तानौरु	मनिदनाल्	तळर्नुडु	ळार्त्तैत्तिल्
तेनुयर्	तैरियलान्	उन्मै	तेर्दियाल् 456

इवर्-ये; मानुयर् अंत-मनुष्य है, ऐसा; मन्-मन में; कौण्डाय् अँत्तिन्-विचार रखोगे तो; कान्-जंगल में; उयर् वरै निकर्-उन्नत बाँस के पेड़ों के समान; कार्तुत वीरियन् तान्—(हाथों वाले) कार्तवीर्य स्वयं; और मत्तित्तान्-एक मानव से; तळर्नुळान्-नष्ट हुआ; अँत्तिल्-तो; तेन् उयर्-अधिक शहद से युक्त; तैरियलान्-मालाधारी श्रीराम के; तन्मै-महत्व को; तेर्त्ति-जान लो । ४५६

अगर तुम इनको मानव मानकर हेय समझोगे तो जंगली बाँसों के समान उन्नत हाथों वाला कार्तवीर्य स्वयं एक मानव (परशुराम) द्वारा पराजित हुआ, यह सोचो और शहद बरसानेवाली माला के धारक श्रीराम का (परशुराम को पराजित करनेवाला) बल-पराक्रम जान लो । ४५६

इरुवरैन्	रिहळुन्दनै	यैन्निन्	याण्डिनुम्
औरुवन्नन्	उयुल	हळिक्कु	मूळियान्
शौरुवण्डु	गालमैन्	मैय्मै	तेर्दियाल्
पौरुवरुन्	दिरुविळुन्	दावि	पौन्नुवाय् 457

पौरुवु अरुम्-उपमाहीन; तिरु इळुन्तु-श्री खोकर; आवि पौन्नुवाय्-प्राण खोनेवाले; इरुवर्-दो ही हैं; अँनु-ऐसा इकलन्ततै-हेय मानोगे; अँन्त्तिन्-तो; याण्डितुम्-सर्वत्र; उलकु अळिक्कुम्-लोकनाशक; ऊळियान्-प्रलयकारी रुद्र; औरुवन् अन्ने-अकेला है न; चैरु वरुम् कालम्-युद्ध प्राप्ति के दिन; अँत मैय्मै-मेरे वचन का सत्य; तेर्त्ति-जान लो । ४५७

हे, अनुपम श्री को भी खोकर प्राण छोड़ने को उद्यत मूर्ख ! अगर तुम समझते हो कि वे केवल दो ही हैं और हेय हैं तो युगनाशक प्रलयंकर रुद्र सदा अकेले ही है न ? जब श्रीराम से युद्ध करने का समय आयगा, तब मेरी बात की सत्यता जान लो । ४५७

पौक्कणान्	उम्बियैन्	रिनैय	पोर्त्तीळिल्
विर्क्कणान्	पौरुददो	ळवुणर्	वेरुळार्

[illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

पुर्विली गदि यद्वेय पुनर्गच्छये नीरियिउं पीहिल
नेवरी ववणरे वलठिय पुन्यच निनीनक विवीयिउं डीरेवडारे
एवलले एलयय ज्ञेयय च्छेवविउं केशवेर बुधेखिल पासिय ५३९

पुनरेकम् नाम-इतिहासं त्रिषु भागं सः जातो है; त्रिहिमं पृथक्-उत्तमं न
 जातवान्; पृथिवीं आतिथक-कमलेव आदि; त्वरी-देव ही या; अथवा त्वानी-
 (इतिहास) दातव ही; त्रिं त्रिह-रथाप ररुकर; त्रिहिमं त्वीरुतार- (कीन)
 कथमुक्त है; अथ उलङ्घन-सार लोक; त्रिह्नु एव त्वय-वृद्धादी आमा माने
 है; त्वयम इव त्वन-देवा वयम स युक्त है; अत्रात्र-नो; मय नो वयन-पहले
 जो वृषते क्रिया; त्वममी-वह वयं है या; पवमी-पप (के कारण) है; त्रिप
 पाप-वैव समझकर देव । ४५६

इन्द्रिय-निग्रही ब्रह्मा आदि देव हो चाहे दानव, कौन स्थायी रहकर कर्मफल हुए ? तुम्हें ऐसा धनवशव मिता है कि सोरे लोक तुम्हारे आशाकारी बने हैं—तो यह तुम्हारे पूर्वकृत पुण्य का फल है या पाप का । खूब सोचो और समझो । ४५९

[illegible][illegible]

यह परमेश्वर की दी हुई विशाल धन-सम्पत्ति क्या इसीलिए नहीं कि तुम महान् तप के मार्ग में स्थित रहकर उस विपुल धन का भोग करो। मूर्ख ! अनुपम इस श्री से हाथ धोकर अपने बन्धुजनों के साथ मर-मिटने के लिए धर्म पर आस्था छोड़कर धर्म से हट रहे हो ! । ४६०

मइन्दिरम् बाढ तोला वलियिन रैनितु माण्डार्
अइन्दिरम् बितरु मक्कट् करुडिरम् बितरु मन्त्रे
पिरन्दिरन् दुळलुम् बाशप् पिणक्कुडैप् पिणियिर् डीरन्दार्
तुइन्दरुम् बहैहळ् मून्नुन् दुडैत्तवर् पिरर्यार् शौल्लाय् 461

मइम् तिइम्पात-बल में निरन्तर स्थिर रहनेवाले; तोला-कभी न हारनेवाले; वलियित् अँतिनुम्-बलवान हों तो भी; अइम् तिइम्पितरुम्-धर्मच्युत और; मक्कट्कु-लोगों के प्रति; अरुळ् तिइम्पितरुम्-दया न दिखानेवाले; माण्डार् अन्त्रे-मर गये न; तुइन्नु-आसक्ति छोड़कर; अरुम् पक्कळ् मून्नुम्-अन्तश्शत्रु तीनों को; तुडैत्तवर्-मिटा चुकनेवाले; पिरन्नु इइन्नु-मरकर जन्म लेकर; उळलुम्-संकट उठाना जिसमें हो; पाच पिणक्कु उटै-पाशबन्ध रूपी; पिणियिल्-रोग से; तीरन्दार्-मुक्त हुए; पिरर् यार्-अन्य कौन; शौल्लाय्-कहो । ४६१

जो बलवान अपने बल-पराक्रम में बिना किसी परिवर्तन के रहते हैं और कभी नहीं हारते वे अगर धर्ममार्ग छोड़नेवाले, लोगों पर दया न दिखाने वाले हों तो वे मर ही गये न ? अनासक्ति और तीनों शत्रुओं (काम, क्रोध, मोह) के जयी ही जन्म-मरण-कष्ट रूपी पाशबन्धन के रोग से विमुक्त हुए । फिर कौन है ? तुम ही कहो । ४६१

तैन्त्रिमि ङुरैत्तोन् मुत्तनात् तीडुतीर् मुनिवर् यारुम्
पुन्नीळि लरक्कर्क् काइरे नोर्किलम् ब्रुहन्द् पोदै
कौन्नुह ङुन्ना लन्तार् कुरैवदु शरदङ् गोवे
अँन्नुत्तर् याने केट्टे नोयदु कियैव शैय्दाय् 462

पुक्कन्त पोते-जब (श्रीराम दण्डकवन में) प्रविष्ट हुए तभी; तैन् तमिळ् उरैत्तोन्-दक्षिणी (मधुर) तमिळ् के व्याकरणकार (अगस्त्य) के; मुत्तना-नेतृत्व में; तीडु तीर्-निर्दोष; मुनिवर् यारुम्-सभी मुनि; पुन् तीळिल् अरक्कर्क्कु-नीच-कर्मी राक्षसों (के दुष्कृत्यों) का; काइरेम्-सहन नहीं कर सकते; नोर्किलम्-व्रतपालन नहीं करते; कौन्नु अरुळ्-उनका नाश कर हम पर कृपा कीजिए; गोवे-राजा; उन्ताल्-तुमसे; अन्तार् कुरैवतु-उनका मरना; चरतम्-निश्चित है; अँन्नुत्तर्-बोले; याने केट्टेन्-मैंने स्वयं सुना; नो-तुमने; अतङ्कु इयैव-उसके ही अनुरूप; चैय्ताय्-(कार्य) किया है । ४६२

जब श्रीराम दण्डकारण्य में घुसे तभी तमिळ् के (व्याकरण के) रचयिता अगस्त्य के नेतृत्व में निर्दोष मुनिगण आये और उन्होंने श्रीराम से निवेदन किया कि नीचकर्मी राक्षसों से हम बेचैन हैं । उनके दिये कष्ट सह नहीं

सकते हैं। वर आदि का पालन भी कर नहीं पाते। उनकी मारी और इस पर दया करो, हे राजन! तुम्हारे होश बे मरेगे। यह निश्चय है। यह मैंने अपने कानों से ही सुना था। तुमने भी वैसे ही, उनकी शिकायत को सत्य प्रमाणित करते हुए काम किया है। ४६२

उत्तरेयुः गेहं मरुतं मरुतं मुडय गळम
पुनर्विषं वरकंकरं शैवपु पुनर्व
वर्षेनविषं गेहं मरुतं मुडय गळम
विषेनविषं गेहं मरुतं मुडय गळम

सुनिवर-सुनिवर्ष के; पल-अतिर होकर; उत्तरेयु-गुहारा चरित; उत्तरेयु-गुहारा बल; उडय गळम-गुहारी आयु के दिन; इ अरककर वैषं पुनर्विष-इस राक्षस-सेना का गौरव; शैवपु-कहेते पर; केहं- (अप सुवर्ष से भी) सुनकर; पुनर्व-उसके बाद; उडकं मरुतु-गुहारी बहने की नाक की और; उमपु-गुहारे आद्यों के क-धों की; गळम-पूरी की; विषेन पुनर्विष-सुन-वो उड-उड किया; अत-उस (श्रीराम और लक्ष्मण के) काम की; नी विषेनविष-गुम सोचो नहीं क्या। ४६३

उन मुनिवर्षों ने आतिरता के साथ गुहारा चरित, बल, गुहारी आयु की बात, इन राक्षसों की सेना का गौरव आदि कहे। श्रीराम ने अत्य सुवर्ष से भी वे बातें सुनीं। इसके बाद ही उन्होंने गुहारी बहने की नाक के और गुहारे आद्यों के क-धों और पूरों के उड-उड किया थे। उस पराक्रम के काम की गुम सोचो नहीं क्या?। ४६३

आधिरन दडकं यनिनं नंनानपु करमु वरि
बायवळि कुवि शोरक कुवेतिवर्ष विडिपु वंन
पुवर्षं वधिरनं गळह उल्लेनवर्ष रीलेनद मारुम
नीयडिनं दिनेयो नदि नदि नदि नदि नदि नदि नदि नदि

नीति-धन्याय; अतिरतिता-न जाननेवाले; नीचा-नीच; नि-गुहारे; ये नाति करमु-बोसो होशों की; वरि-एकडकर; बाय वळि-सुख से; कुवि शोर-इन वडे निकले ऐस; कुवेति-बोस मारकर; बाय विडिपु वंन-वडी कारा में जिसने बाद किया; पुवर्ष-उस थोड; आधिरनं वर कथान-सहस्र बड होशों वाले (कावेवीय) के; वधिर गळह-बख (कठोर) क-धों की; उल्लेनवर्ष-निहारे काट दिया; रीलेन मारुम-उन परशुराम के हारे की समाचार; नी अतिरतिनेयो-गुमने जाना नहीं है क्या। ४६४

नीति-न्याय न जाननेवाले नीच। थोड और सहस्रहत्त कावेवीय ने गुहारे बोसो होशों की एकडकर, गुहारे मुवर्ष से रक्त बहाते हुए बोसो मारी और गुहारे बडे कारागह में बन्दी बनाकर रखा। उसके वज-कठोर

कन्धों को जिन्होंने काटा था वे परशुराम श्रीराम से हारकर भागे । क्या यह समाचार तुमने नहीं जाना ? । ४६४

ॐ कडिक्कुम्वा लरवुड् गेट्कु मन्दिरिड् गळिक्किन् शोयै
अडुक्कुमी दडाद दीदन् इरिविन्ना लेदुक् काट्टि
इडिक्कुन रिल्लै नीये यैण्णिय दैण्णि युन्तै
मुडिक्कुन रैन्ऱ पोडु मुडिविन्ऱि मुडिव दुण्डो 465

कटिक्कुम् वाळ् अरवुम्-डसनेवाला क्रूर सर्प भी; मन्तिरम् केट्कुम्-मन्त्र सुनता है (मानकर चुप रहता है); कळिक्किन्शोयै-मदमत्त तुम्हें; अडुक्कुम् ईतु-यह कर्तव्य है; अटाततु ईतु-अकर्तव्य यह है; अँन्ऱ-ऐसा; अरिविन्नाल् एतु काट्टि-बुद्धि से हेतु समझाकर; इडिक्कुनर् इल्लै-टोकनेवाले नहीं है; नी-तुम; अँण्णियते अँण्णि-जैसा सोचते हो वैसा ही खुद सोचकर; युन्तै मुटिक्कुनर्-तुम्हें मिटानेवाले (मन्त्री) है; अँन्ऱ पोतु-ऐसी स्थिति में; मुटिवु इन्ऱि-सर्वनाश के सिवा; मुटिवतु उण्टो-कोई (अन्य) अन्त होगा क्या । ४६५

काटनेवाला सर्प भी मन्त्र सुनकर दबा रहता है ! तुम मदमत्त हो । तुम्हें यह कर्तव्य है, यह अकर्तव्य —ऐसा कहकर टोकनेवाले नहीं हैं । जो तुम्हारे मन्त्री हैं वे तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही सोचते हैं और तुम्हारा नाश कर रहे हैं । उस हालत में सर्वनाश के सिवा अन्त क्या (शुभ) होगा ? । ४६५

ॐ अँन्ऱ इत्तुरै केट्टलु मिरुवदु नयत्तम्
मिन्ऱि इप्पन्न वीत्तन्न वयिल्विडु पहुवाय्
कुन्ऱि इत्तैळित्तु दुरप्पिन्न कुरिप्पदन् कामन्
तन्ऱि इत्तैयुड् गडन्ऱदु शीऱ्ऱत्तिन् इहैमै 466

अँन्ऱ-ऐसा; अऱत्तु उरै-धर्म-वचन; केट्टलुम्-सुनते ही; इरुपतु नयत्तम्-बीसों आँखें; मिन् तिरप्पन्न-बिजली प्रगटी; वीत्तन्न-जैसे लगों; वयिल् विडु-धूप-सा निकालनेवाले; पकुवाय्-फटे बड़े मुखों से; कुन्ऱ इऱ-पर्वतों को फोड़कर; तैळित्तु उरप्पिन्न-(रावण ने) डाँट बतायी और गर्जन किया; कुरिप्पतु अँन्-क्या कहा जाय; शीऱ्ऱत्तिन् तकमै-कोप का प्रकार; कामन् तन् तिरत्तैयुम्-मन्मथ की शक्ति को भी; कटन्ऱतु-पार कर गया । ४६६

सीताजी के ये धर्मोपदेश-वचन कहते ही रावण की बीसों आँखों से बिजली-सी छूटी । उसने अपने मुख खोलकर धूप-सा निकालते हुए गरज कर डाँट बतायी कि पर्वत भी टूट गये । तात्पर्य क्या बताया जाय ? कोप का वेग मन्मथ की शक्ति को भी लाँघ गया । ४६६

वळर्न्द ताळिन्न मादिर मनैत्तैयु मरैवित्
तळन्द तोळिन तन्नल्शौरि कण्णिन तिवळैप्

पृथ्वी ४६७

১৯৪৮। ১৫ই জানুয়ারি তারিখের সভার কার্য-সম্পাদিত : ১৫ই জানুয়ারি

वह आगे नहीं बढ़ा, पर काप क साज खड़ा गया। ४६

468 ॥१॥

[illegible]

532 1 1110

469 **विष्णुसूक्तम्**

प्राप्तमं वनविष-शालिन समुद्र के आनन्द; कीड़े उर पापवर्षि-धुवाले हुए मिलवाकर;

पुत्तित-पावन; मा तवत्तु-महती तपस्विनी; अण्डकित्तै-देवी को; चुमन्ततन्-धारण करके; इतितित् पोर्वेत्-सुख से जाऊंगा; अन्तपुत्तुम् नितैन्तु-यह भी सोचकर; तन् करम् पिचैन्तु-अपने हाथ मलते हुए; इरुन्तान्-(मौके की ताक में) रहा । ४६६

एकाकी मैं सामने स्थित रावण के दसो सिरों को गिराते हुए प्रहार करूंगा; लंका को शीतल सागर के अन्दर नीचे पहुँचा दूंगा और पवित्र महान् तपस्विनी देवी को धारण कर सुख से चला जाऊंगा । यह भी सोचकर हनुमान अपने हाथ मलते हुए मौके की ताक में बैठा रहा । ४६९

आण्ड	वाळरक्	कन्नहत्	तण्डत्तै	यळिप्पान्
मूण्ड	कालवैन्	दीयैन्	मुर्त्तिय	शीर्त्तम्
नीण्ड	कामनीर्	नीत्तत्तित्	वीवुर्	नितैवित्
मीण्डु	निन्ऱोर्	तन्मैया	लित्तैयन्	विळम्बुम् 470

आण्डु-तब; अ वाळ् अरक्कन्-उस निमंम राक्षस के; अकत्तु-मन में जो उठा; अण्डत्तै अळिप्पान्-अण्डों का नाश करने; मूण्ड-उठी; काल वैम् ती अन्त-युगान्त की भयंकर आग के समान; मुर्त्तिय चीर्त्तम्-सुवर्धित कोप; नीण्ड काम नीर् नीत्तत्तित्-दीर्घ काम रूपी जलप्रवाह में; वीवु उर्-बुझ गया; नितैवित् मीण्डु निन्ऱ-अपनी सुध में फिर आकर; ओर् तन्मैयाल्-एक प्रकार से; इत्तैयन् विळम्बुम्-यों कहने लगा । ४७०

तब क्रूर रावण के मन में जो गम्भीर क्रोध अण्डनाशक युगान्त की भयंकर अग्नि के समान उठा था, वह दीर्घ प्रेम रूपी जल-प्रवाह में बुझ गया । फिर अपनी पुरानी स्मृति पाकर एक स्थिति में वह यों कहने लगा । ४७०

कौल्वैन्	रुडन्ऱे	नुत्तनैक्	कोर्लैन्	कुर्त्तितुच्	चीन्त
शौल्लुळ	ववर्ऱुक्	कैल्लाड्	गारणन्	दैरियच्	चौल्लिन्
ओल्वदी	दौल्ला	दीदैन्	रैन्क्कुमोन्	रुलहत्	तुण्डो
वैल्वदुन्	दोर्ऱ	रानुम्	विळैयाट्टिन्	विळैन्द	मेनाळ् 471

उत्तै कौल्वैन् अन्ऱ-तुमको माळंगा कहकर; उटन्ऱैन्-कुपित हो उठा; कोर्लैन्-पर नहीं माळंगा; कुर्त्तितु चौन्त-मुझे उद्देश्य करके जो तुमने कहा; अवर्ऱिक्कु ओल्लाम्-उस सबका; कारणम् तैरिय चौल्लिन्-कारण समझाकर कहना चाहूँ तो; चौल् उळ-मेरे पास कहने को विषय हैं; अन्तक्कु ओल्वतु ईतु-मुझसे साध्य यह; ओल्लालु ईतु-असाध्य यह; अन्ऱ-ऐसा; ओन्ऱ-कुछ; उलकत्तु उण्डो-दुनिया में है क्या; मेताळ्-पहले; वैल्वतुम् तोर्ऱल् तानुम्-जीतना या हारना; विळैयाट्टिन् विळैन्त-खेल में हुए थे । ४७१

मैंने कोप के कारण तुम्हें मारने की बात कही । पर अब मैं तुम्हें नहीं माळंगा । तुमने जो भी अपराध मुझ पर लगाये, उन सबका हेतु-सहित खण्डन करूँ, इसके लिए मेरे पास विषय (तर्क) है । इस संसार में

१७२ । श्री प्रो. कृष्ण प्र. लाल-लाल प्र. प्र.

अनुक्रमार्थं वार्त्तात्तं ज्ञानं दत्तं कर्मार्थं नरैर्वा ४७२

५७४ । श्रीमद्भक्तिसुखाश्रयः । ४७५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । १०८ ।

गतिमत्तव दक्षिणतः पश्चिमतः तिर्यग्ध्वजं चक्रं य

၆၈၈ ၊ ၂၃၁၂ ၂၃၁၂ ၂၃၁၂

मैंने विरोध में वर्तित करने ? । ४७३

वैन्शोरु	मिरुप्प	यार्क्कु	मेलवर्	विळिवि	लादोर्
अँन्शोरु	मिरुप्प	वन्शे	यिन्दिर	तेवल्	शैय्य
ओन्श्राह	बुलह	मून्शु	माळ्हिन्शु	वोरुवन्	याने
मैन्शोळा	यिदरुक्कु	वैशोर्	कारणम्	विरिप्प	दुण्डो 474

मैन् तोळाय्-मृदुल भुजाओं वाली; वैन्शोरुम् इरुप्प-मेरे विजयी (वाली आदि) के रहते; यार्क्कुम् मेलवर्-सबके ऊपर रहनेवाले; विळिवु इलातोर अँन्शोरुम् इरुप्प-अमर कहलानेवाले देवों के भी रहते; अन्शे-न; इन्तिरन् एवल् चैय्य-इन्द्र मेरी भृत्यता करे ऐसा; याते-मैं; ओन्श्राक उलकम् मून्शुम्-अकेले तीनों लोकों को; आळ्किन्शु ओरुवन्-पालनेवाला एक बना रहता हूँ; इतर्कु-इसका; वेरु ओर् कारणम्-(मेरे बल के सिवा) कोई अन्य कारण; विरिप्पतु उण्टो-विस्तार से कहना भी है क्या । ४७४

मृदु कन्धों वाली । तुम मेरे विजेताओं की बात कहती हो ! जब वे हैं और ये सर्वोच्च अमर देख ही रहे हैं; तब भी न इन्द्र मेरी सेवा-टहल करता है और मैं अकेला त्रैलोकाधिपत्य का काम कर रहा हूँ । इसका कोई अन्य हेतु है, बिना मेरे पराक्रम के, जिसका मुझे वर्णन करना पड़े ? । ४७४

मूवरुन्	देवर्	तामु	मुरणह	मुर्शुङ्	गोर्शुम्
पावैनिन्	पौरुट्टि	नालोर्	पळिपैरुप्	पयन्शोर्	नोन्बिन्
आवियन्	मत्तिदरु	तम्मै	यडुहिले	नवरै	यीण्डुक्
कूविनिन्	रेवल्	कौळ्वैन्	काणुदि	कुदलैच्	चौल्लाय् 475

कुतलै चौल्लाय्-तोतली (मधुर) भाषिणी; मूवरुम्-त्रिमूर्ति; तेवर् तामुम्-देव; मुरण उक-बल खो जायें ऐसा; - मुर्शुम् कौर्शुम्-जो पूर्ण हुई वह विजय; पावै-स्त्री; निन् पौरुट्टिताल्-तुम्हारे कारण; ओर् पळि पेरु-एक अपवाद पा ले; पयन् तीर् तोन्पिन्-असफल व्रतधारी; आ इयल्-गाय के-से स्वभाव वाले; मत्तिदरु तम्मै-मनुष्यों को; अटुहिलेन्-नहीं मारूँगा; अवरै-उनको; ईण्डु-यहाँ; कूवि-बुलाकर; निन्शु एवल् कौळ्वैन्-सामने खड़ा करके आज्ञा का पालन करवा लूँगा; काणुति-देखोगी । ४७५

तोतली (मधुर) बोली वाली ! मैंने त्रिमूर्ति और अन्य इन्द्रादि देवों के बल का नाश करके विजय का गौरव पाया है । उस विजय पर कलंक लगाते हुए निरर्थक व्रतधारी, गऊ-सम मानवों को नहीं मारूँगा । उन्हें इधर लाऊँगा, और वे मेरे सामने खड़े होकर मेरी सेवा-टहल करें —ऐसा करूँगा । तुम देख लो । ४७५

चिर्शियर्	चिरुमै	यार्शुर्	चिरुतीळिन्	मत्तिद	रोडे
मुर्शिय	दायिन्	वीर	मुनिवैन्गण्	विळैया	देनुम्
इर्शैयिप्	पहलि	तीय्दि	निरुवरै	योरुहै	याल्यान्
पर्शिनैन्	कौणरुन्	दन्मै	काणुदि	पळिप्पि	लादाय् 476

पठिष्य इत्यादि-अभिध (पुर्वी) ; विर्यियल-अप-त्वभाव ; विर्यियु आर्यल-अपशक्ति ; विरु न्निष्ठल-क्षुद्रकर्म ; मलिनारु-मानवो के साथ ; पुर्यियु आदि-शब्दना पूर्णत्व से वर्तनी ; वीर मुनि-वीर्यवत कोप ; अर्ध कर्ण-मुनि ; विषयविषय-वृदा नही होगा तो भी ; इरुई इ पकलिल-अभी, आज, इसी पुरेव से ; नोपनिष-सुगम रूप से ; इवदर-दोनों को ; अर्ध कपाल-एक दोय से ; याम-सु ; पुर्यियल-पकड लाऊंगा वरु ; नगसे-(वल का) प्रकार ; कर्णित-देवोनी । ४७६

पदविधिनं मनिद रेनुम पुनर्दीडि निननेव वनद
उदविधुं युगर नोक्कि न्निपुदकेकोलके कुरिय रननरं
निदिवूरु लवरुक्कु वेण्डिरं वेण्डिनो वेण्डिन्नं काण्डि निननेम 477
पुनर्दीडि-मनोरम कंकणशोभनं; इतरेम-ओर मी; पनवि इम-शुळ पद
मं न रदनेवालं; मनिनरं एतुम-मयुज हो नो मी; निनने वनन-वुट्टे नो पुन
दिप; उदविधु-वड्डे उपकार; उगर नोक्किने-विवार कर देव नो; उगि
कल्लिके उरियरं अलनरं-जान से मारे जाले पोप न्हो ह्ये; अवरुक्कु-उवका;
विनव उरन-मरना; वेण्डिन-वुम वाडिनो (कि वे मर) नो; वेण्डि नो-वुम
करी; शूरे वेण्डिन्न-वेसा कडिनो नो; इते उवक्कु इतम आकिल-यड्डे वुट्टे हिन
मं होमा नो; इयउरुवने-कल्ला; काण्डि-देवो । ४७७

मनोरम कंकणधारिणी ! वे उच्चरत मनुष्य नहीं हैं। वो भी गुप्तको उन्हीं में से दिलाया है। उस उपकार को लेकर सोचा जाय तो वे मारे जाने योग्य नहीं हैं। पर अगर गुप्त चाहे कि वे मर जाय, इसी में गुप्तहारा भला है वो मैं नहीं कहूँगा। ४७७

[illegible]

मिथिलावासियों को; वेर् अरुतु-निर्मूल करके; अँळितिन् अँयति-आसानी से (लौट) आकर; निन् उयिरुम् कौळ्वन्-तुम्हारी भी जान हर लूंगा; अँन्तु अरिन्तिलै-मुझे नहीं समझतीं । ४७८

हे क्षीण हुई आयु वाली ! गहरे जल से समृद्ध अयोध्या जाकर भरत आदि वहाँ के सभी को मारकर फिर युगान्तकालीन अग्नि के समान जल-प्रवाह समृद्ध मिथिला जाऊँगा । वहाँ के सभी को मारूँगा । फिर अनायास इधर आकर तुम्हारे प्राण भी हर लूँगा । तुम मुझे नहीं समझीं ! । ४७८

ईदुरैत् तळन्ऱु पौङ्गि यैरिहदिर् वाळै नोक्कित्
 तीदुयिर्क् किळैक्कु नाळुन् दिङ्गळो रिरण्डिर् रेय्न्द
 दादलिर् पित्तर् नीये यरिन्दवा इरिदि यैन्ताप्
 पोदरिक् कण्णि नाळै यहत्तुवैत् तुरप्पिप् पोत्तान् 479

ईतु उरैत्तु-यह (सब) कहकर; अळन्ऱु पौङ्कि-क्रोध में भभककर; अँरि कतिर्-जलती-सी कान्ति वाली; वाळै नोक्कि-तलवार को देखकर; उयिर्क्कु तीतु इळैक्कुम् नाळुम्-तुम्हारे प्राणों की हानि करने का दिन भी; तिङ्गळ् ओर् इरण्डिल्-दो मासों में; तेय्न्तु- (पूरा) हो जायगा; आतलिन्-इसलिए; पित्तर्-बाद; नीये अरिन्त आरु अरिति-तुम जो समझो वही समझो; अँन्ता-कहकर; पोतु अरि कण्णिताळै-कमल-सम और लाल डोरों-सहित आँख वाली सीता को; अकत्तु वैत्तु-मन में रखते हुए; उरप्पि-डाँट बताकर; पोत्तान्-गया । ४७९

यह कहकर रावण ने भभकते क्रोध के साथ अग्नि के समान तेज उगलनेवाली अपनी तलवार को देखा । 'अब तुम्हारे मरने का दिन भी दो महीने में आ गया । इसलिए फिर तुम जैसा समझो वैसा समझो ।' उसने कमल-सम और डोरों-सहित आँखों वाली सीताजी से कहा और उनके रूप को अपने मन में लिए हुए, उन्हें डाँट बताकर चला । ४७९

अञ्जुवित् तानु मेन्मै यरिवुर्त् तेर्ऱि यानुम्
 वञ्जियिर् चैव्वि याळै वशित्तैन्वाल् वरच्चैय् यीरेल्
 नञ्जुमक् कावै तैन्ना नहैयिला मुहत्तुप् पेळ्वाय्
 वैञ्जिनत् तरक्कि मार्क्कु वेरुवे रुणर्त्तिप् पोत्तान् 480

वञ्चियिल् चैव्वियाळै-स्त्रियों में अति सुन्दर सीतादेवी को; अञ्जुवित्तातुम्-डरा-धमकाकर ही सही; मेन्मै-नरमी से; अरिवु उर-बात समझे ऐसा; तेर्ऱियातुम्-समझाकर; वचित्तु-मेरे वशीभूत करके; अँत पाल्-मेरे पास; वर चैय्यीरेल्-आने को मजबूर न करोगी तो; उमक्कु नञ्जु आवैन्-तुम लोगों के लिए विष बन जाऊँगा; अँन्ता-ऐसा; नहैयिला मुकत्तु-हासहीन वदन की; पेळ्वाय्-वड़े मुखों की; वैम् चित्तत्तु-भयंकर क्रोधशीला; अरक्किमार्क्कु-राक्षसियों से; वेरु वेरु-अलग-अलग; उणर्त्ति-सीख देकर; पोत्तान्-गया । ४८०

मैय्यन् बुन्बाल् वैत्तुळ दल्लाल् वितैवैन्डोन्
शैय्युम् बुन्मै यादुहो लैन्डार् शिलरैल्लाम् 483

चिलर् अल्लाम्-(अन्य) कुछ राक्षसियों ने; वैयम् तन्त-लोकोत्पादक; नान्मुकन् मैन्तन्-चतुर्मुख के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मैन्तन्-पुत्र विश्रवा के पुत्र; ऐयन्-(रावण) त्रिलोकाधिपति है; वेतम् आयिरम् वल्लोन्-सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता; अशिवाळन्-बुद्धिमान; उन् पाल्-तेरे प्रति; मैय् अत्तपु-सच्चा प्रेम; वैत्तुळतु अल्लाल्-रखता है वही नहीं; वितै वैन्डोन्-इष्ट कार्य में सफलता पानेवाले; चैय्युम् पुन्मै-(तो भी तेरी) यह मूर्खता; यातु कौल्-क्यों; अन्डार्-पूछा । ४८३

कुछ राक्षसियों ने समझाया कि लोकसर्जक चतुर्मुख के पुत्र पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा के पुत्र हैं हमारे अधिपति रावण । त्रिलोकाधिपति हैं, सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता । महा बुद्धिशाली । तुमसे प्रेम जो करते हैं, उस एक कार्य को छोड़कर उन्होंने सभी अभीष्ट कार्यों में सफलता ही पायी है । फिर क्यों तुम यह अज्ञता का काम कर रही हो ? । ४८३

मण्णिर् रेय्वोर् मानिडर् तत्तम् वळियोडुम्
पैण्णिर् रीयोय् निन्मुदन् माळुम् बिणिशैय्दाय्
पुण्णिर् कोलिट् टालन शौल्लल् पौदुनोक्काय्
अण्णिर् काणाय् मैय्मैयै यैन्डार् शिलरैल्लाम् 484

चिलर् अल्लाम्-कुछ; मानिडर्-मनुष्य; मण्णिल्-भूमि पर; तेय्वोर्-क्षय होनेवाले हैं; पैण्णिल् तीयोय्-स्त्रियों में क्रूरी; निन् मुतल्-तुमसे लेकर; तत्तम् वळियोडुम्-अपनी परम्परा के साथ; माळुम् पिणि-वे मर जाएँ ऐसा रोग (बुरा-कार्य); चैय्ताय्-तूने कर दिया; पुण्णिल् कोलिट् टाल् अत्त-व्रण में लकड़ी घुसी जैसे; शौल्लल्-मत कहो; मैय्मैयै-सत्य को; पौतु नोक्काय्-निष्पक्ष रहकर देखती नहीं; अण्णिल् काणाय्-सोचकर भी नहीं देखती; अन्डार्-बोलीं । ४८४

कुछ राक्षसियों ने बताया कि मानव मर्त्य हैं । तू स्त्रियों में क्रूर है । अपने से लेकर वे मानव अपने-अपने परिवारों के साथ मर जाएँ, तूने उनके लिए ऐसा रोग उत्पन्न किया है ! व्रण में लकड़ी घुसेड़ते-से वचन मत बोल । निष्पक्ष होकर सत्य नहीं देखती । सोचकर भी नहीं देखती । ४८४

पुक्क वळिक्कुम् बोन्द वळिक्कुम् वुहैवैन्दी
ओक्क विदेप्पा नुर्उन्नै यन्डो वृणर्विल्लाय्
इक्कण मिर्डा युन्नित्त मैल्ला मुयिर्वाळा
शिक्क वुरैत्तो मैन्ड कदित्तार् शिलरैल्लाम् 485

चिलर्-कुछ; अल्लाम्-सभी; उणर्वु इल्लाय्-विवेकहीन; पुक्क वळिक्कुम्-वध बनकर जिस कुल में आयी है, उस कुल में; पोन्त वळिक्कुम्-और जहाँ जनमी

उस कुल में; पुके वृक्ष की-पुष्पा-सहित आग; आँकेक विवेकपूर्ण-एक साथ लगाते के लिए; उरुत अरुत-तपस्व है न; इ कण्ठ इरुत-इसी क्षण नष्ट हो जाणी; वरु इतम अलम्-तेरे वरु के सभी; उधिर बाढा-जीवन नहीं रह्यो; विष्के उरुतेतीम्-साक-साक कहे दिया हमने; अरुड कतिवतार-ऐसा कोप के साथ बोलो । ४८५

कुछ लोगों ने गुस्सा दिखाया । विवेकहीन रही । जिस कुल में वृक्ष वनके गयी, उस वृक्ष में और जिसमें वृक्ष नगी, उसमें वृक्ष-सहित वरु वरु आग को एक साथ बीज के समान बीजे का काम कर चुकी । मरी वृक्षों में अग्नी । तेरे वरु के सभी (कोई) जीवित नहीं रह्यो । हमने साक-साक वना दिया । ४८५

कौलवा उरुतरे प्ररुडिसे पाहुँ प्ररुडिसे विवपुसपु विवपुसपु वरुवा वरुवा वरुवा वरुवा नलवापु नलवापु कण्ठाळ कण्ठाळ कळुनदा णडुहिनेरुळ 486

कौलवान उरुतरे-मारने ली आया व; अम् कोने-हमार राजा; प्ररुडिसे पाहुँ-प्रियवत कायु में सफलता प्राप्त में कोई भी; कुरुवालीने-कभी रहनेवाले नहीं है; वरुवापु-व अक्षय सफल होये; वरुवापु-व अयानक है; वरु वापु एवविने-कोर उतकी सुगन्धी गयी आना के अनुसार; वरुमिने-आया; इवड सुपु-इसके शरीर को; विवुमिने-छाया; अरुवा-कहेकर; समस वनेवार-सन लगाते लगी; नलवापु-अरु ववन बीजनेवाली; नलवापु-अरु बीजे; कण्ठाळ कळुनदा-आँखों से अक्ष्य बढ़ती हुई; नकुकिनेरुळ-अपनी दशा पर देखो । ४८६

वे सीताजी को मारने उठ आयी । हमारे राजा का गुण है कि वे अपन किसी निविधत कायु में असफल नहीं होते । वे हमेशा जीत जाते हैं । वे निर्मम हैं । उनको कठोर आवा का अग्नी हम पालन कर लेते । आगो सभी । इसके शरीर को खा लेते । कहते हुए वे ऐसा बर्ता, मानो उरुतेन वृक्ष संकरण कर लिए हों । अरु ववन बीजनेवाली सीताजी की आँखों से आँसू बढ़ने लगा । वे अपनी निविधत स्थिति पर देखी । ४८६

इनेवा रनेन वपुदिय कालने विडनिनेरुळ इनेवा सुनेने सुनेने शीनेने कण्ड कण्ड कवाविने मुडिवममा प्रनेने प्रनेने वरुवा वरुवा मरिवरुडरु 487

इनेवा अने-ऐसी (वृत्ति) स्थिति; अपुदिय कालवृत्त-जब हो गयी तब; इने निनेरुळ-जो उनके मध्य छड़ी रही उस (विजटा) ने; कण्ड कवाविने-अपने देखे स्वर का; मुदिव-अन; सुनेने शीनेने-पढ़ने हो मुने कहे; वरुवा-अपु; वरुवा-ऐसे-अपित हो हुआ करोगी लो; प्रनेने-वाद; प्रने-गलन होया; अनेरुळ-

कहा; अवर अल्लाम्-सभी राक्षसियाँ; अरिवुड्डार्-समझदार बनीं; अन्ते नन्ड-वही ठीक है; अन्तार्-कहा; (अम्मा-माँ) । ४८७

इस तरह की विकट स्थिति में उनके मध्य जो खड़ी थी, उस त्रिजटा नाम की राक्षसी ने उनसे कहा कि देखो । मैंने अपना देखा स्वप्न पहले ही बताया और उसका सम्भाव्य फल भी । व्यर्थ भ्रम में पड़कर संकट उठाओगी तो पीछे अपराध होगा । उसका समझाना सुनकर सभी राक्षसियाँ चेत गयी । उन्होंने त्रिजटा से कहा कि तुम्हारा कहना सही है । ४८७

अरिन्दा	रन्न	मुच्चडै	यैन्बा	ळवळ्शील्लप्
पिरिन्दार्	शोर्	मन्नतै	यज्जिप्	पिरिहिल्लार्
शैरिन्दा	राय	तीवित्तै	यन्तार्	तैरल्लेणार्
नैरिन्दा	रोदिप्	पेदैयु	मावि	निलैनिन्डाळ् 488

मुच्चटै अन्पाळ् अवळ्-त्रिजटा नाम की उसके; अन्त चौल्ल-वैसा कहने पर; चैरिन्तार् आय-(देवी को) ठस घेर आये; तीवित्तै अन्तार्-बुरे कर्म के समान वे; अरिन्तार्-स्थिति समझकर; चोर्म् पिरिन्तार्-कोप छोड़ गयीं; मन्नतै अज्चि-राजा से डरकर; पिरिकिल्लार्-हट्टी नहीं (तो भी); तैरल् अण्णार्-(देवी से) शत्रुता करना नहीं चाहती; नैरिन्तार् ओति पेतैयुम्-घुंघराले घने केश वाली देवी भी; आवि निलै निन्डाळ्-प्राण धारण किये रहीं । ४८८

त्रिजटा के वैसा कहने पर, जो सीता के घने बुरे कर्म के समान थीं, वे सब सत्य जानकर शान्तक्रोध हुईं । राजा से डर था; इसलिए वे दूर नहीं गयीं । फिर भी उन्होंने शत्रुता दिखाने की बात छोड़ दी । घने घुंघराले केश वाली सीताजी भी किसी तरह प्राणधारण किये रह गयी । ४८८

4. उरुक्काट्टु पडलम् (रूप-प्रकटन पटल)

❀ काण्डर्	कीत्त	कालमु	मीदै	तैरुकावल
तूण्डर्	कुर्र	तीयव	रैल्लान्	डुयिल्वुड्डार्
ईण्डत्	तुञ्जुम्	विज्जैहळ्	शैय्दा	तिहल्वोरन्
माण्डर्	डारा	मैन्डिड	वन्ना	रयर्वुड्डार् 489

इकल् वीरन्-युद्धवीर हनुमान ने; तैरु कावल-त्रासपूर्ण पहरे में; तूण्डर्कु उड्ड-अधिक सतर्कता दिखाने को उद्यत; तीयवर् अल्लाम्-कूर सभी राक्षसियाँ; तुयिल्वु उड्डार्-सोने लगी है; काण्डर्कु-देवी से भेट करने; औत्त कालमुम् योग्य समय भी; ईते-यही है; ईण्डत् तुञ्जुम्-खूब सोने को प्रेरित करनेवाली; विज्जैहळ् चैय्तान्-विद्या का प्रयोग किया; माण्डर् अड्डार् आम्-मर-मिट गयीं; अन्डिट-कहने योग्य रीति से; अन्तार्-वे; अयर्वुड्डार्-चूर पड़ी रहीं । ४८९

चैलला इरवे-अचल रात; चिरुका इरुळे-अक्षय अन्धकार; अँतैये मुत्तिवीर्-तुम सब मुञ्जी पर रुष्ट हो; नितैया-जो मेरे स्मरण नहीं करते; विल्लाळतै-उन कोदण्डपाणी से; यातुम् विळित्तिलिरो-कुछ भी गुस्सा नहीं करोगे क्या । ४६२

हे अशिक्षित चन्द्र ! अत्युज्ज्वल चाँदनी ! अगतिशील रात ! अक्षय अन्धकार; तुम सब मुञ्जी पर रुष्ट हो ! उन धनुर्धर से, जो मेरा स्मरण ही नहीं करते, कुछ गुस्सा नहीं करोगे क्या ? । ४९२

तळल्वी शियुला वरुवा डैदळीइ, अळल्वी रैनदा वियरिन् दिलिरो
निळल्वी रैनना नुडने नैडुनाळ, उळल्वीर् कौडियो रुरैया डिलिरो 493

कौडियोर्-हे निर्मम; तळल्वीचि-आग बरसाकर; उला वरु-यात्रा करनेवाली; वाटे तळीइ-उदीची हवा को साथ ले; अळल्वीर्-मुझे सताते हो; अँततु आवि अरिन्तिलिरो-मेरी जान (की स्थिति) नहीं जानते हो क्या; निळल्वी रैरे अत्तान्-छवि में सागर-सम श्रीराम; उदत्ते-के साथ; नैडु नाळ उळल्वीर्-बहुत दिनों से फिरते हो; उरै आटिलिरो-बात नहीं बताओगे क्या । ४६३

रे क्रूर (चन्द्र, चाँदनी, रात और अन्धकार) ! अंगार बिखेरते हुए विजययात्रा करती आनेवाली उदीची हवा के साथ मिलकर मुझे जला रहे हो ! मेरे प्राणों पर जो बन आयी है वह नहीं समझते क्या ? सागर-छवि श्रीराम से बहुत दिनों से मिले रहते हो । उनसे मेरी बात नहीं कहते क्या ? । ४९३

वारा ओळिया तैनुम्बन् मैयिनाल्, ओरा यिरको डियिडर्क् कुडैवेन्
तीरा ओरुनाळ वलिशे वहने, नारा यणत्ते तनिना यहने 494

वलि चेवकत्ते-सबल वीर; तत्ति नायकने-अनुपम स्वामी; नारायणत्ते-नारायण; वारातु ओळियान्-विना आये नहीं रहेंगे; अँनुम् वन्मैयिनाल्-इस दृढ़ विचार से; ओरुनाळ तीरा-एक दिन के लिए भी जो नहीं छोड़ते; ओर् आयिर कोटि-एक सहस्र कोटि; इडर्क्कु उटैवेन्-संकटों से पीड़ित हूँ । ४६४

सबल पराक्रमी ! अनुपम नायक, नारायण ! श्रीराम विना आये नहीं रहेंगे — इस दृढ़ विचार से मैं कितने ही सहस्र कोटि संकटों में पड़ी रहती हूँ जो एक दिन के लिए भी मुझे नहीं छोड़ते । ४९४

तरुवौन् रियका नडैवाय् तविर्नी, वरुवैन् शिलना लिनिन्मा नहरवाय्
इरुवैन् रनैयिन् तरुडा त्रिदुवो, ओरुवैन् रनिया वियैयुण् पुदियो 495

तरु ओन्ऱिय-तरुसंकुल; कान् अटैवाय्-वन जाना चाहनेवाली; नी तविर्-(वह इच्छा) तुम त्याग दो; चिल नाळितिन्-कुछ दिनों में; वरुवैन्-आ जाऊँगा; मा नकर् वाय् इरु-बड़े (अयोध्या) नगर में रहो; अँनुरत्तै-ऐसा समझाया; ओरु-एकाकिनी; अँन् तत्ति आवियै-मेरे प्राणों को; उण्णुतियो-त्तास देगे क्या; इन् अरुळ् तान्-हितकारिणी कृपा भी; इतुवो-यही क्या । ४६५

“हे तर-संजल-कानन-गमन-कामिनी ! वहे विचार छाँड़ो । कुछ ही दिनों में लौट आऊँगा । तुम इस महानगर (अयोध्या) में ही रहो ।” आपने मुझे ऐसा कहा । अकेली दुःख सहनेवाली मेरे माँ को आप वा लगे क्या ? यही आपकी ऊँचा का प्रकार है ? । ४९५

አስፈላጊ ፣ የሕግ ሥልጣን ለሕግ ተቀባይ ሆኖ ፣ ለሕግ ተቀባይ ሆኖ

❖ धर्मो रक्षति रक्षितः

कानून दुरुपुष्ट गठित रतिरनाम, पुण्य बलिपुत्र दुरात्म दुरात्म 496

[illegible]

४३२७ करती है, वस अथवा के
 डेती नहीं; नाम पृथक् पृथक्—मं वा (अथवा)
 सायः पृथक्पृथक्—वृम भी वा डेती क्या । ४३३

ये भरी परिपक्वित सुख ! भरे प्राण ! अनेक दिनों से तुम निरलस होकर भरे साथ संकट उठा रहे हो । जब तक मैं अपने अग्रिम प्राणनाथ से नहीं मिलूँ तब तक छोड़ो नहीं, आयाद । मुझे जो अपयश लगेगा उसी से तुम भी लो रहोगे क्या ? । ४९६

३४१ । ?

497
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रातिपद्य श्रुतिवत् इवमथ त्रुटिम्, कालियान् वरुणं रुद्रिण वरुण 497

मुदिप-दीवजावा; मुदि मयव-किरीटधारी वक्रवर्ती; मुदिमूलवर्ष-मर
 जारु; पदि पृष्ठ-सातों लोको म; मूदय-पुपर-अधिक दुःख; पाविदवम-कल
 जाप; पदि पय-धूलि-भरे; मरि वव-सातों म आकर; वम पुकुवम कोटियान-
 वम म आप विमम श्रीराम; वरु अरु-आपु सप्तभकर; कलवववनी-विनी म
 रू १४६७

वत स आत् विमम श्रीरामः
वत स भूत-आत् सप्तशकरः
कुलावतनी-वत स
१४६

दीर्घजीवी, किरौटधारी चक्रवर्ती सर गये; सातों लोको को दुःख ने व्यापकर सताया—ऐसी स्थिति पूरा करते हुए धर्ममण्डल मार्ग से आकर वन से आये श्रीराम । वे निर्भय आधुन—ऐसा मानकर विनोद करती रहें क्या ? । ४९७

682 1 2 1125

[illegible]

867 1151 5025 5025

॥ अनेक शीतल-हेम-हेमः ॥ शिरः विमल-यवाम मरुते वृष्टः ॥ इत्यत्र अमरवर्ण-
 रत्नकर विनिभ नो रक्षी यः ॥ मित्रं पुत्रैर्म-विजुषं का आश्रयः ॥ मरुत्तुल-कमरः
 विमलं कृष्णाल-शिर ममकले आभरणवातिनिः ॥ शीतं वसिरं शीतं वसिरं शीतं

विद्युत्-कुंड्यात्-और चमकने आसतगवाहिरणी; और चंद्र और चण्डे और-

मेरे प्राण नामक कुछ हो तो; इटर् उण्टु-पीड़ा होगी; यात् पौत्स्सु पौळुते-अपने मरते समय ही; पुकळ् पूणुम्-यशोधरिणी बनूंगी; अँता-सोचकर । ४६८

ऐसी-ऐसी बातें कहती हुई सीताजी विकलप्राण होकर शिथिल पड़ रही थी । क्षीण विद्युत्कटि और उज्ज्वल आभरणधारिणी सीता ने सोचा कि जब तब प्राण रहेंगे तब तक कष्ट साथ रहेगा । मरूंगी तभी यश होगा । ऐसा सोचकर— । ४९८

❖ पोरैयिरुन्	दारुयिँन्	नुयिरुम्	बोरुत्तिनेन्
अरैयिरुङ्	गळलवर्	काणु	माशैयाल्
निरैयिरुम्	बल्बह	निरुदर्	नीणहर्च्
चिरैयिरुन्	देनैयुम्	बुन्दिन्	तीण्डुमो 499

अरै-स्वरित; इरुम् कळल्-बड़ी पायलधारी; अवन्-उन (श्रीराम) को; काणुम् आचैयाल्-देखने की इच्छा से; इरुन्तु-यहाँ रहकर; पोरै आरुत्ति-सहनशील बनकर; अँन् उयिरुम् पोरुत्तिनेन्-अपने प्राण पालित किये; निरै इरुम्-अक्षय बड़े; पल् पकल्-अनेक दिन; निरुदर् नीळ् नकर्-राक्षसों के विशाल नगर में; चिरै इरुन्तेनैयुम्-कारागृह में रही मुझे; पुत्तिन्-पावन मूर्ति श्रीराम; तीण्डुमो-अपनाएँगे क्या । ४६६

क्वणनशील बड़ी पायलधारी श्रीराम के दर्शन की आशा से मैंने यहाँ रहकर, कष्ट सहकर प्राण पाल लिये । अक्षय अनेक दिनों से राक्षस-नगर में बन्दिनी रहती हूँ । क्या वे पावन मूर्ति श्रीराम मुझे अपनायेंगे ? । ४९९

❖ उन्नित्त	वुन्नित्त	वुणर्नुदु	चूळ्नुदवर्
शौन्नत्त	शौन्नत्त	शैवियिर्	रूङ्गवुम्
मन्नुयिर्	कात्तिरुङ्	गालम्	वैहित्तेन्
अँन्निन्वे	इरक्कियर्	याण्डे	यार्हौलो 500

उन्नित्त उन्नित्त-रावण ने जो-जो मेरे प्रति सोचे; उणर्नुतुम्-उनको जानने के बाद; चूळ्नुतवर्-जो मुझे घेरे रहें उनके; चौन्नत्त चौन्नत्त-कहे गये; चैवियिल् तूङ्क्वुम्-मेरे कानों में ठहरे रहने पर भी; मन्नु उयिर् कात्तु-(शरीर से) लगे प्राणों की रक्षा करके; इरुम् कालम् वैकित्तेन्-लम्बे काल तक रह गयी; अँन्तिन् वेळ् अरक्कियर्-मुझे छोड़ अन्य (क्रूर) राक्षसियाँ; याण्डे यार् कौलो-कहाँ कौन रहेंगी । ५००

रावण जो-जो विचार मेरे प्रति रखता है, वह सब मैं जान रही हूँ । मुझे घेरे रहनेवाली राक्षसियों के बार-बार कहे जा रहे शब्दों से मेरे कान भरे रहते हैं । तो भी प्यारे प्राणों को पालती हुई मैं अनेक दिनों से रह रही हूँ । मुझसे निकृष्ट राक्षसी कहाँ होगी, कौन होगी ? । ५००

[illegible]

अल्लिन्तु-योग्यता खोकर; उय्वतु-जीवित रहूँ, यह; तुडक्कम् तुन्तवो-स्वर्ग पहुँचूँ, यह विचार लेकर क्या । ५०३

जब इस बड़े अपयश का पात्र बनी तभी मर जाना ही मेरा कर्तव्य था । बड़े लोग जिसको (क्षम्य) मान ही नहीं सकते वैसा बड़ा कलंक मुझ पर लग गया है और लोग इसकी चर्चा करेंगे । अपमानित होकर जीवन रखना क्या स्वर्ग पाने के विचार से है ? । ५०३

❖ अन्बळि	शिन्दैय	राय	वाडवर्
वन्बळि	शुमक्किन्नुम्	जुमक्क	मड्डियान्
तुन्बळि	पैरुम्बुहळ्क्	कुलत्तुट्	टोन्त्रितेन्
अन्बळि	तुडेप्पव	रैन्निन्	यावरे 504

अन्तु अळि चिन्तैयर् आय-विगत प्रेम; आटवर्-वे दोनों पुरुष; वन् पळि-कठोर अपयश; चुमक्किन्नुम् चुमक्क-धारण करें तो करे; यान्-मैं; तून्तु अळि-दुःखरहित; पैरुम् पुक्कळ्-बड़े यशस्वी; कुलत्तुट् तोन्त्रितेन्-कुल में पैदा हुई; अन् पळि तुडेप्पवर्-मेरा अपयश मिटानेवाले; अन्त्रित्तिन् यावर्-मेरे सिवा कौन हैं । ५०४

श्रीराम और लक्ष्मण दोनों ने मेरे प्रति प्रेम और स्नेह त्याग दिया है ! वे (मुझे न बचाकर) अपयश धारण करना चाहें तो करें । मैं दुःखरहित बड़े यशस्वी कुल में आयी हूँ । इसलिए मेरे अपयश को पोंछनेवाला मुझसे अन्य कौन रहेगा ? । ५०४

❖ वञ्जत्तै	मानिन्बिन्	मन्नन्प्	पोक्कियैन्
मञ्जत्तै	वैदुपिन्	वळिक्कोळ्	वार्येन्ना
नञ्जत्तै	यानहम्	बुहुन्द	नङ्गैयान्
उय्जत्तै	निरुत्तलु	मुलहड्	गौळ्ळुमो 505

वञ्जत्तै मानिन् पिन्-वंचक मृग के पीछे; मन्नत्तै पोक्कि-अपने पति को भेजकर; अन् मञ्जत्तै वैतु-अपने पुत्र-सम देवर को गाली देकर; पिन् वळि कौळ्वाय्-उनके पीछे राह पकड़ो; अन्ना-ऐसा कहकर; नञ्चु अतैयान् अकम्-विष सदृश-राक्षस के घर में; पुकुन्त नङ्क् यात्-जो आ गयी, वह मैं; उय्जत्तैन्-जीवित; इरुत्तलुम्-रहती जो यह; उलकम् कौळ्ळुमो-लोक (श्रेष्ठ लोग) मानेंगे क्या । ५०५

मैंने वञ्चक मृग के पीछे अपने पति को भेजा । अपने पुत्र-सम देवर को गाली दी और कहा कि उनकी खोज में जाओ । फिर विष-सदृश राक्षस के (घर या) मन में (सूक्ष्म स्मरण के रूप में ही सही) घुस गयी । ऐसी स्त्री हूँ मैं । मेरा जीवित रहना क्या संसार ठीक मानेगा ? । ५०५

❖ वल्लियन्	मरवर्दन्	वरुक्क	माशड
वैल्लिनम्	वैल्हपोर्	विळिन्दु	वीडह

५०६
 वनं वृक्ष-सवनः । मरुवर्-वोर (श्रीराम और लक्ष्मण) ; तम वनकर्म मां
 अत्र-अपने कुल का कलंक दूर करने हेतु ; वनलिंगम वनलोक-जीने लो जीने ; पार
 विजित-या युद्ध में मरकर ; वीरक-मिष्ट जातु ; कुल वृक्ष अर्जुन-गृहेष्व धर्म को ;
 धान-भरे ; इत्यत्र बाह्यतः पिता-दोषकर जीवित रहने के बाद ; वनलिंगम
 पति-लोकोत्पन्न भरा अपव्यय ; अवर्त चरुधर्म-उत्तमो वरेणा कथा (महो) । ५०६

* वरुनदेविने	मातेमा	बनेप	मादेविघारे
वरुनदेव	महर्नदेपर	मुत्रे	वेदेयेने
करुनदेवि	मुदिविनेप	फिरिचू	कळवरे
वरुनदेव	जिवळेन	वेण	फिरूपणे 507

श्री ७ पाणिग्रन्थ-तपस्विनी विद्या के सामने, जो 'कवरी' मा' के समान
अपमान बनाते पर प्राण त्याग देती है, क्या यह निन्दा सुनते हुए जीवित
रहूँगी कि यह अश्विनी मेघयाम से अलग होकर एक चोर के घर में
रहती है ? । ५०७

ॐ अरुण	विश्वपति	वसुदेव	कश्यप
भरुकेश्वर	कालाह्वय	विश्वपति	वसुदेव
नृकेश	वसुदेव	विश्वपति	वसुदेव
वसुदेव	वसुदेव	वसुदेव	वसुदेव

अउरुवतन-अदम्यवसत गुणो वासे; अउरेकर तम वरकेकमे-राधस वता; आर्व
अउ-निराधार निभल कर; निव पणि कौण्डे-छतिकम् छटा; अधम विरियान्-इस
कठोर कारा से; सादे नाडे-पुस लिस दिन करो, उस दिन; इल एक-मेरे पर
से प्रवेश करने; लकवल अनन्तिन-योग नही हो कहे ता; पावे करेपुते-अपने
शाल को. अ परिच ईछेतु कादेकर-लिकस तरिक से प्रमाणित कर दिखिऊगी। ५०८

अद्भुत गुण वाले श्रीराम जिस दिन राक्षसवर्ग को अपने धनुकर्म से निराधार बनाकर निर्मूल कर देंगे और मुझे इस कठोर कारा से मुक्त कर देंगे, तब अगर मुझसे कहे कि तुम मेरे घर में प्रवेश करने योग्य नहीं रह गयी हो, तो मैं अपने पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर दिखा पाऊँगी ? । ५०८

❖ आदला	लिउत्तले	यउत्ति	नारिनाच्
चादल्काप्	पवरुम्बन्	इवत्तिर्	चाम्बिनार्
ईदला	दिडमुम्बे	रिल्लै	यैन्डीरु
पोदुला	मादविप्	पौडुम्ब	रैय्दिनाळ् 509

आतलाल्-इसलिए; इउत्तले-मरना ही; अउत्तिन् आरु-धर्ममार्ग होगा; अँता-यह निश्चय करके; चातल् काप्पवरुन्-मुझे मरने से बचाये रहनेवाली राक्षसियाँ भी; अँन् तवत्तिल्-मेरे तप (भाग्य) के कारण; चाम्पितार्-अचेत पड़ी है; ईतु अलातु-इसको छोड़कर; वेरु इट्टुम् इल्लै-दूसरा स्थान (सन्दर्भ) नहीं मिलेगा; अँन्डु-ऐसा सोचकर; पोतु उलाम्-पुष्प जिसमें हिलते थे; और मातवि पौतुम्पर्-उस एक माधवी-झाड़ के पास; अँयत्तिताळ्-पहुँची । ५०९

इसलिए मरना ही धर्ममार्ग है । मुझे मरने न देने का कर्तव्य लेकर जो मेरी रक्षा करती रहती है, वे राक्षसियाँ भी अब नींद में बेहोश पड़ी हैं । इस समय को जाने दूँ तो दूसरा अच्छा स्थान या समय नहीं मिलेगा । ऐसा निश्चय करके सीताजी एक पुष्पसहित माधवी के झाड़ के पास गयीं । ५०९

❖ कण्डन	ननुमनुङ्	गरुत्तु	मँण्णिन्नान्
कौण्डनन्	रुणक्कर्मय्	तीण्डक्	कूशुवान्
अण्डर्ना	यहनरु	इदन्	यार्त्तनात्
तीण्डैवाय्	मयिलित्तैत्	तीळुडु	तोन्निन्नान् 510

अनुमन्नुम् कण्टतन्-हनुमान ने भी देखा; गरुत्तुम् अँण्णिन्नान्-अभिप्राय ताड़ लिया; तुणुक्कम् कौण्टतन्-दहल उठा; मँय् तीण्ट-शरीर स्पर्श करने से; कूचुवान्-सकोच करता; अण्टर् नायकन्-अण्डनायक श्रीराम की; अरुळ् तूतन्-आज्ञा का पालक दूत; यान्-मैं हूँ; अँता-कहते हुए; तीण्टै वाय्-बिम्बाधरा; मयिलित्तै-कलापी-सी देवी को; तीळुतु-नमस्कार करते हुए; तोन्निन्नान्-प्रकट हुआ । ५१०

हनुमान ने यह देखा और ताड़ लिया कि सीताजी के मन में क्या भाव उठा है । उसे भय का अनुभव हुआ । वह उनका स्पर्श करने से सकुचाया । अतः वह यह कहते हुए बिम्बाधरा, कलापीनिभ सीताजी के सामने अंजलिबद्ध हो प्रकट हुआ कि मैं अण्डनायक श्रीराम का उनकी आज्ञा द्वारा प्रेषित दूत हूँ । ५१०

अष्टनद्वय	चित्रयन	निराम	नाणयान
कुडनद्वय	द्वेनद्वय	नाडक	गोटिपान
मिडनद्वय	रुनपिपर	ववव	वववान
मडनद्वय	वोवडि	ववड	नोकिनेम 511

मडनद्वे-देवी; इरायन आणयान-श्रीराम की आना से; अटिपनद्वे-मं, दाम; अष्टनद्वे-आ पडवा; उलक अवेतुम-सारे लोको मं; कुडेव गडम-पठकर-कुडे के; कटिपान-सकल से; मिडनद्वे-मिलकर जानवान; उलपु इलर-असंख्य है; ववव सेवान-वपवल के गणन होवे से; निम वेवडि-आपके नाम (विषय) वरग; वपु नोकिनेम-(मं) आकर दशन किये । ५११

देवी ! श्रीराम की आना से मं इधर आ पडवा हूँ । यों तो सारे लोकों की खाक छानने के इरादे से जो मिलकर चले वे असंख्यक है । पर मेरा धाम्य रहो । मुकुर्य का फल मिले; तभी मैं आपके विषय वरगों के दशन कर पाया । ५१०

कुण्डन	मिडनद्वे	मिडन	वड्डम
आण्डे	मिडनद्वे	मिडनद्वे	वड्डम
वोडम	परककरनम	वड्डकम	वेरीड
माण्डिल	वोडलान	मड्डम	वोडमो 512

कुण्ड नी इकरनने-आपका इधर रहना; इडन मिडन-विपान-इ; व से मान-इरादे नी इकरनने-आपका इधर रहना; अटिपनद्वे-नहो जानने; अनरु करणम-रहनेवाले; आण नक-पुखखे; अटिपनद्वे-नहो जानने; अनरु करणम-उसका प्रमाण; वेण्डम-कहेना हो नी; अरककर नम वड्डकम-राखों के वग; वेरीड माण्डिल-निर्मल नह नहो हूँ; इड अलान-इसके निवा; मड्डम वेण्डमो-और कोई चाहिए क्या । ५१२

विपानगुःखन पुखखेठ श्रीराम आपका यहाँ रहना नहो जानने । उसका प्रमाण चाहती हूँ तो यही प्रमाण है कि राखों के वग निर्मल नह नहो हूँ । और कोई प्रमाण चाहिए क्या ? । ५१२

पुण्ड	मुळद	माळ	मारियन
मपुड	वण्डनैलिय	वड्डम	वेळ
कपुड	नैलियड	गविपड	काण्डियान
नपुड	विळकनपुड	निनयन	वड्डनपुड 513

नपु उळ विळक अनाप-वन-मरे दीप के समान देवी; पुण्डन-सादेह मन कर; अटपान उळ-अभिमान है; मारियन-आदरणीय श्रीराम के; मपु उड-सत्य परिचायक; वण्डनैलिय वड्डम-समझाये गये वचन भी; वेळ उळ-अलग है; क उळ नैलिय अम कविपन-करनलामलकवन; काण्डि-देव न; वेळ निनयन-अन्या न समझे; अनाप-कहे । (इतिमान ने) । ५१३

घृतपूर्ण दीप-सी देवी ! आप कोई सन्देह न करें। मेरे पास अभिज्ञान हैं। और आदरणीय श्रीराम के कहे सत्यवचन के संदेश अलग हैं। आप करतलामलकवत समझ लेंगी। अन्यथा मत समझिए। हनुमान ने यों विनय के साथ कहा। ५१३

अँत्तुव	तिरैञ्ज	नोक्कि	यिरक्कमु	मुनिवु	मैय्दि
निन्त्तुव	तिरुद	नल्ल	नैरिनिन्ऱु	पौरिह	ळैन्दुम्
वैन्त्तुव	नल्ल	नाहिल्	विण्णव	त्ताह	वेण्डुम्
नन्ऱुणर्	वुरैयुन्	द्वय	नवैयिलन्	पोलु	मैन्ता 514

अँत्तु अवन् इरैञ्च-उसके ऐसा विनय करने पर; नोक्कि-देखकर; इरक्कमुम्-अनुताप और; मुनिवुम्-रंज; अँयति निन्त्तुवन्-गाकर जो रहता है; इवन्-वह यह; निरुतन् अल्लन्-नैर्ऋत नहीं हो सकता; नैरि निन्ऱु-सदाचारस्थित; पौरिक्क ऐन्तुम्-पाँचों इन्द्रियों पर; वैन्त्तुवन्-विजय पा चुका; अल्लन् आकिल्-नहीं तो; विण्णवन् आक वेण्डुम्-कोई देव होगा; उणर्वु नन्ऱु-इसके भाव श्रेष्ठ हैं; उरैयुम् तूयन्-पवित्रवचन; नवै इलन् पोलुम्-निर्दोष-सा लगता है; अँन्ता-सोचकर। ५१४

जब हनुमान ने यों विनय की तो सीताजी ने उसको ध्यान लगाकर देखा। हनुमान करुणा और दुःख से भरा है। यह राक्षस नहीं हो सकता। यह सन्मार्गावलम्बी इन्द्रियजयी मुनि होगा; नहीं तो कोई देव होगा। इसकी भावनाएँ श्रेष्ठ हैं। वचन पवित्र है। यह निर्दोष ही लगता है। ५१४

अरक्कत्ते	याह	वेरो	रमरने	याह	वन्ऱिक्
कुरक्किन्तु	तौरुव	नेदा	नाहुह	कीडुमै	याह
इरक्कमे	याह	वन्दिङ्	गैम्बिरा	तामम्	जौल्लि
उरक्कियैन्	नुणर्वैत्	तन्दा	नुयिरिदि	तुदवि	युण्डो 515

अरक्कत्ते आक-चाहे राक्षस हो; वेरु ओर् अमरत्ते आक-कोई दूसरा देव हो; अन्ऱि-चाहे वे न रहकर; कुरङ्कु इत्तत्तु औरुवने-वानर-वंश का एक; तान् आकुक्-ही हो; कीटुमै आक-(इसके द्वारा) हानि ही क्यों न मिले; इरक्कमे आक-सहानुभूति (का फल) ही मिले; इङ्कु वन्तु-यहाँ आकर; अँम्पिरान् तामम् जौल्लि-मेरे आराध्यदेव का नाम उच्चारण करके; अँन् उणर्वै उरक्कि-मेरे मन को द्रवीभूत करके; उयिर् तन्तान्-(इसने) मुझे प्राणदान किया; इत्तिन् उतवि उण्टो-इससे बढ़कर सहायता हो सकती है क्या। ५१५

फिर देवी ने सोचा। यह राक्षस ही हो तो क्या? या कोई देव ही हो। नहीं तो वानर-कुल का ही कोई हो! उसके हाथों मेरी हानि भी हो जाय! या वह करुणा करके हित ही करे। इसने इधर आकर मेरे आराध्य पति का नाम कहकर मेरे मन को द्रवीभूत कर दिया और मुझे प्राणदान किया। इससे बढ़कर कोई हित है क्या?। ५१५

अनविनये नृपद नोक्तिक पिरउगुम नळळ्ड गळ्ड ममनदले गुडय रपय वज्जदरे मारु ममनले विनवुडव वोरुक्कळ कण्णारे निममवुडव गुममवा विनरुगु विनवुडव कुरिय वीमना वीरनी पाव वीररुड 516

अन विनवु-एसा सोवकर; अणन नोक्तिक-वुव वळकर; अने उळळ्ड वरुक्कळ मरा मन (मरा मममकर) मडुविमल करला हे; कळळ्ड ममने-वीर रवपाव के; अकण्णु उट्टयराप-मन वाल; वज्जवकर-ववकी का; मारुम अनेल-ववन नही करला; विनव उट्ट-मवनी पावना के; वोरुक्कळ-ववनी की; कण्णारे-अण्णु की; निमम गुक-गुमि पर निरावे डूण; गुममपा विनरुगु-कडकर मलाम करता हे; विमवुडव उट्टयराप-ममन करत पाप्य हे; अनेल-सोवकर; वीर-वीर; नी-गुम; पावने-कीन; अनेरुड-कडग। ५१६

एसा सोवकर देवी ने हेतुमान पर वुव वुट्ट उली। इसकी देखकर मरा मन स्वयं पिबल जाता है। यह मन मे चोरी रखनेवाले वचक राजाओं का-सा बचन कहनेवाला नहीं हो सकता। यह अपना सदेखावता की बात, आँखों से आँसू की भीम पर निरावे डूण कर रहा है। अतः यह आगे प्रश्न करने (बालिगप करने) योग्य हो है। ऐसा निर्णय करके देवी ने उससे पूछा कि हे वीर, तुम कौन हो ? ५१६

आपिडे-वव; नले मल कोण्ड-सिर पर घरे; अम कंय-सुन्दर दुआँ वाला (बाला); अने-मालावी; गुवम-पविब आराम के; विनवे विरिन विनवे आपसे अलग होने के बाद; डेडिय-दुँडकर पापन; गुवमने-मिल; नाले-अल पावी काल से; काय कतिरे वीरवने-बलानेवाले उल्ल किरण सुपदेव का; मनेलने-गुड; कविक कुलम अनककु अलाम-कपिकुलसव का; मयकने-मयक; नवपिब नीरनेलम-निदोय; वककिरवीर अनेक-सुग्रीव नाम का एक; उळले-है। ५१७

वव हेतुमान ने. अपना सुन्दर हाथ जोड़कर अपने सिर पर रखे और विनय-निवेदन किया। माते! सुग्रीव नामक एक है, जिसे आपके विद्योग के बाद पविब आराम ने दुँड लेकर अपना मिला बना लिया। वह अलि पुरावन और तापक किरणमाली सुपदेव का पुत्र है और वानरकुलों का अधिपति है। वह निदोय (अच्छा) है। ५१७

मरउवने मुनेनी वनेना विरावण वलिदने वलिदने पायनेव कदरि वृद्धले विमपिनि मळुनड पायनेव

वैरिण्यन् रेवर वेण्ड वेलैयै विलङ्गन् मत्तिल्
शुर्रिमा नाहन् दैय वमुदेलक् कडैन्द तोळान् 518

अवन् मुत्तोन्-उसका बड़ा भाई; अ नाळ्-उस दिन; इरावणन् वलि इरु उर-रावण के बल को तोड़ते हुए; तन् वालिल् कट्टि-अपनी पूँछ में बाँधकर; अँट्टु तिचैयितुम्-आठों दिशाओं में; अँळुन्तु पाय्न्त-फाँदता जो गया; वैरिण्यन्-वैसा विजयी है; तेवर् वेण्ड-देवों के प्रार्थना करने पर; वेलैयै-समुद्र को; विलङ्कल् मत्तिल्-(मन्दर-) पर्वत की मथानी से; मा नाकम् चुर्रि-बड़े (वासुकि) सर्प को लपेटकर; तेय-उसको रगड़ते हुए; अमुतु अँळ-अमृत उठ आए ऐसा; कटैन्त तोळान्-मथनेवाली भुजाओं का है । ५१८

उसका ज्येष्ठ भ्राता रावण के बल को तोड़कर उसे अपनी पूँछ में बाँध लेकर आठों दिशाओं में उछल चला । वह ऐसा विजयी वीर था । देवों ने उससे प्रार्थना की तो उसने मन्दरपर्वत की मथानी पर वासुकि नाग को लपेटकर क्षीरसागर को मथा और अमृत निकाला । वह ऐसा भुजबली था । ५१८

अन्नवन् इन्नै युङ्गो तम्बोन्ना लावि वाङ्गिप्
पिन्नवर् करशु नल्हिट् तुणैयैन् पिडित्ता तैङ्गळ्
अन्नवन् इनक्कु नायेन् मन्दिरत् तुळ्ळेन् वात्तिन्
नन्नेडुड् गालिन् मैन्द नाममु मनुम तैन्बेन् 519

अन्नवन् तन्नै-उस (बली) वाली को; उम् कोन्-आपके नाथ ने; अम्पु ओन्नाल्-एक ही शर से; आवि वाङ्कि-प्राण हरकर; पिन्नवर्कु-उसके छोटे भाई को; अरवु नल्कि-राज्य देकर; तुणै अँत् पिडित्तान्-मित्र बना लिया; नायेन्-(कुत्ते-सा) दास मैं; अँङ्कळ् मन्नवन् तत्तक्कु-हमारे राजा (सुग्रीव) के; मन्तिरत्तु उळ्ळेन्-मन्त्रीमण्डल का सदस्य हूँ; वात्तिन्-आकाशचारी; नल् नैडुम् कालिन्-अति विपुल पवन का; मैन्तन्-पुत्र हूँ; नाममुम्-नाम का भी; अनुमन् अन्पेन्-हनुमान कहा जाता हूँ । ५१९

उस वाली को आपके नाथ ने एक ही शर से मार दिया और उसके कनिष्ठ सुग्रीव को राज्य दिलाया तथा सुग्रीव से मित्रता बना ली । कुत्ता-सम दास मैं अपने राजा सुग्रीव के मन्त्रीमण्डल का एक सदस्य हूँ । आकाशचारी अति महान् वायुदेव का पुत्र हूँ । मैं हनुमान नाम का हूँ । ५१९

अँळुबदु वैळ्ळड् गौण्ड वैण्णन वुलह मैल्लाम्
तळुविनिन् ईडुप्प वेलै तनित्तनि कडक्कुन् दाळ
कुळुविन वुङ्गोन् शैय्यक् कुरित्तडु कुरिप्पि नुन्ति
वळुविल शैय्दर कौत्त वातरम् वात्ति तीण्ड 520

वातरम्-वानर; अँळुपतु वैळ्ळम् कौण्ड अँण्णन्-सत्तर प्रवाह (वैळ्ळम्) संख्या के हैं; उलकम् अँल्लाम्-सारे लोकों को; तळुवि निन्न अँटुप्प-लपेटकर लेने

जब नीच रावण आपको हर ले जा रहा था, तब आपने वस्त्र में बाँधकर कुछ आभरण हमारे पर्वत पर फेंके थे। आपको देखकर विजयी वीर श्रीराम ने कुछ सोचा और मुझे अलग ले जाकर आज्ञा दी कि तुम दक्षिण दिशा में जाओ। उनकी आज्ञा निरर्थक हो सकती है क्या ? । ५२२

कौड्वत्तु काण्डुक काट्टिक कौडुत्तपो दडुत्त तन्मै
पैरिथि नुणरद्व पाड्रो वुयिरनिले पिडिदु मुण्डो
इरुना लळवु मन्ता यन्नुनी यिळित्तु नीत्त
मरुनल् लणिहळ् काणुन् मङ्गलङ् गात्त मन्तो 523

अन्ताय्-माते; कौड्वरकु-श्रीविजयराघव को; आण्डु काट्टि-वहाँ (उन आभरणों को) दिखाकर; कौडुत्त पोतु-जब उन्हें दिया गया; अडुत्त तन्मै-जो हुई वह स्थिति; पैरिथिन्-किसी प्रकार से; उणरत्तल् पाड्रो-समझने योग्य है क्या; उयिरनिले पिडित्तुम् उण्टो-उनके प्राणों के हेतु और कुछ है क्या; नी इळित्तु नीत्त-आपने जो उतारकर फेंके; मरुन् नल् अणिकळ्-वे दूसरे आभरण ही; इरुनाळ् अळवुम्-आज तक; उन् मङ्कलम् कात्त-आपके मंगल-सूत्र (सुहाग) को बचाते आ रहे हैं । ५२३

माते ! जब हमने उन आभरणों को दिखाया तब श्रीराम की स्थिति क्या हुई —उसको अब वर्णन करूँ तो भी उस प्रकार से वह समझी जा सकेगी क्या ? उनके जीने का और कोई हेतु है क्या ? आपने जो आभरण उतारकर फेंके थे, उन्हींने आपके मंगल-सूत्र (अहिवात) को बचा दिया है ! । ५२३

आयवन् इन्मै निङ्क वङ्गदन् वालि मैन्दन्
एयवन् ईन्बाल् वैळ्ळ मिरण्डिनो डैळुन्द शैत्तै
मेयितन् शौडरन्तु तोरा विनैयवन् विडुत्ता नैन्नैप्
पाय्दिरै यिलङ्गै मूदूर्क् कौन्ऱन्त पळियै वैन्ऱान् 524

पळियै वैन्ऱान्-निन्दापार (हनुमान); आयवन् तन्मै निङ्क-उनकी स्थिति वैसी रही वह बात रहे; तैन् पाल् एयवन्-दक्षिण की तरफ प्रेषित; अँळुन्त चैत्तै-साथ आयी; वैळ्ळम् इरण्टिनोदु-दो 'वैळ्ळम्' सेना के साथ; मेयितन्-जो आया; शौडरन्तु-लगातार; तोरा विनैयवन्-प्रयास करनेवाला; वालि मैन्तन्-वालीपुत्र; अङ्कतन्-अंगद ने; पाय् तिरै-लहराती तरंगों वाले समुद्र वलयित; इलङ्क मूदूर्क्कु-प्राचीन लंका नगरी को; कौन्ऱै विडुत्तान्-मुझे भेजा; अँन्ऱन्त-कहा । ५२४

अपयशजयी हनुमान ने आगे कहा कि उनकी स्थिति एक ओर रहे। अंगद ने भी मुझे इस लहरायमान सागरवलयित प्राचीन लंका नगरी की तरफ भेजा। उसे सुग्रीव ने इधर भेजा था। उसके साथ दो "वैळ्ळम्" की सेना आयी है। वह भी सततपरिश्रमी है और वाली का पुत्र है । ५२४

अस कौसं पवि-अपते राजा से प्रपिन हो; नेण्डितने-जी छोजल आपा, उस
 मं; कण्डे-आपकी देख लिया; नीवि डले- (असफलता के) कलक से रडित हो
 गया; आपा तक-पुस्तक; पाका-अण्ड; पापे चपिरादे-फिरा पापों के साथ;
 निवृत्त-रहे है; पापुट मूय चपिरा-उतके धून मचले थाण (आप); नेविम
 निवृत्त-उतके मन से; अकतिल-हरे गहो; डूण्ड-पहो; नी डरकक-आपके
 रहते; आपादे-बहो; डरामने-आपाम; श्री चपिरा विदसे-किस जान को छोड़ो;
 अण्डि उण्डामा-मग होमा क्या । ५२५

मेरे राजा ने मुझे भोजा और मैंने सभी स्थानों में आपकी हुंदा।
आखिर आपके दर्शन मिल गये और मैं असफलता के अपयश से बच गया
हूँ। पुण्ड्रभोज श्रीराम के, गण नही छूटे, सही। पर अब के उनके
गण मिष्टान्न गण हैं। उनके सच्चे गण आप हैं; वरु आप उनके हृदय
से दूर नहीं हूँ। आप यहाँ हैं तो वे वहाँ कौन से गण खा सकते हैं? उनके
गणों की हानि नहीं हो सकती। ५२५

ॐ (ॐ) देव
 निधातेन
 लडि
 सौम्यदेव
 पाडेनि
 पाडेन
 विमसि
 वातेर
 विमसि
 वाडेन
 उदयवर्ण
 उदर
 दोवने
 उवावनी
 रौडिडे
 गणगाळ
 अय्यशालि
 लवनेरने
 सनि
 प्रपडिने
 गरिव
 प्रुनेराले 526

जब हेर्मान ने यह कहते वब सीताजी के मन में आनन्द उठकर उमड़ा। दीर्घ श्वास स्वरय पड़ गये। शरीर आकाश तक बढ़ता हुआ फूल उठा। "आक ! मेरा भी भाग्य जग गया क्या ?" यह सोचा। उनकी आँखों से आँसु की नदी उमड़ आयी। उन्होंने हेर्मान से पूछा कि तब ! तुमने क्या जाना है कि श्रीराम का खपलक्षण कैसा है ? । ५२६

प्राङ्मुखं लङ्घयेत्कं कालदम् वज्रवेनकं पवित्रम् भृङ्गकिं मुनेना

तुडियिडै यडैया छत्तिन् रीडर्वैये तीडर्दि यैन्ता
अडिमुदन् मुडियो राह वरिवुड वनुमन् शौल्वान् 527

तुडि इटै-डमरू-सी कमर वाली; 'पटिवम्-दिव्यरूप; पटि उरैत्तु-उपमान कहकर; अँडुत्तु काट्टुम् पटित्तु अन्तु-वर्णन-योग्य नहीं; उवमैक्कु अँल्लाम्-सभी उपमाओं की; इलक्कणम् पण्पित्तु-व्याकरणविधिसम्मत; मुटिवु उळ-सीमाएँ होती हैं; उरैक्किन्-उन उपमाओं को कहें तो; - मुन्ता-श्रेष्ठ नहीं होंगी; अटैयाळत्तिन् तीडर्वैये-लक्षण के आगे; तीडर्ति-जाकर समझ लें; अँन्ता-कहकर; अटि मुतल् मुटि ईळ आक-पादादि केश तक; अरिवु उर-समझाते हुए; अनुमन् चौल्वान्-हनुमान कहने लगा । ५२७

हनुमान ने उत्तर दिया । डमरू-सी कमर वाली ! श्रीराम का दिव्य रूप उपमा-उदाहरण कहकर वर्ण्य नहीं है; क्योंकि अलंकार-शास्त्रों में उपमाओं के अर्थों की सीमा निश्चित है । उनको कहें तो वे उपमाएँ समर्थ नहीं रहेंगी । मेरे वर्णन को संकेत मात्र मानिए और अपनी कल्पना से उसी दिशा में आगे जाकर समझ लीजिए । हनुमान श्रीराम का नख-शिख-वर्णन करने लगा । ५२७

शैयिदळ्त् तामरै यैन्तु शैणुळोर्
एयित्त दन्तुणै यैळिय दिल्लैयाल्
नायहन् तिरुवडि कुडित्तु नाट्टुहिल्
पाय्दिरैप् पवळमुड् कुवळैप् पण्विराल् 528

नायकन् तिरुवटि-हमारे नायक के श्रीचरण; चेय् इतळ् तामरै अँन्तु-लाल दलों का कमल ऐसा; चेण् उळोर्-प्राचीन विद्वानों ने; एयित्तु-विधान किया हैं; कुडित्तु नाट्टुक्किल्-स्पष्ट निर्धारण करना चाहें तो; अतन् तुणै-उसके समान; अँळियतु इल्लै-अल्प नहीं है; पाय तिरै-उछलती लहरों के समुद्र में उत्पन्न; पवळमुम्-प्रवाल भी; कुवळैप् पण्विरळ्-कुवलय-पुष्प के समान हो जायगा (काला लगेगा) । ५२८

हमारे नायक के श्रीचरण प्राचीन विद्वानों की भाषा में लाल दलों के कमल कहें तो स्पष्ट सोचने पर वे चरण कमलों के समान अल्प नहीं हैं । उनके सामने उछलती लहरों वाले सागर में उत्पन्न प्रवाल भी कुवलय के समान काले लगेंगे । ५२८

तळङ्गिळर् कर्पह मुहिळुन् दण्डुर्
इळङ्गोडिप् पवळमुड् गिडक्क वेन्तवै
तुळङ्गोळि विरुक्किदि रुदिक्कुञ् जरियन्
इळङ्गदि रौक्किन् मौक्कु मेन्दिळाय् 529

एन्तिळाय्-धृत आभरण वाली; तळम् किळर्-दल-बहुल; कर्पक मुक्किळुम्-कल्पकली भी; तण् तुडै-शीतल घाटों वाले समुद्र में मिलनेवाली; इळम् कौटि पवळमुम्-बाल-प्रवाल-लता भी; किटक्क-एक ओर रहें; अवै अँन्-उनकी वया

है; पुच्छे आदि-पौछल; विरुद्ध और-उगली के सामने; विकर्षण और-उद्विगल युक्त; इन्में कतिर-वाल-किरण; आकिक्रम और-समता करे तो कर सकता है। ५२६

आमरणवारी देवी ! उनकी शोभायमान उगलियों के बारे में क्या कहा जाय ? दलसङ्गल कल्पकली और शीतल घाटी से युक्त सागर की बाल-प्रवाल-दलरी की एक ओर डाल दीजिए । उनकी क्या विषाल है ? उदीयमान सूर्य की बालिकरण समता कर सकती है, तो एक प्रकार से कर सकती है। ५२९

विद्युत्प्रसन्न विरयव
मरुतल पवुज
औरगुडर वप्ररमी
अरिल्ल र्दिरकृकिया
मामन 530

विहकली-चर ली; विद्युत्प्रसन्न विरयव आकिक्रम और वडा बनकर; मरुतल-कलकली; पवुज उल अल-वस नहीं है; मरुड इति-वसके अलावा; और वरु-ववलन; वप्ररमी-हीरे कहे ली; विरद्वि अयुतिल-पुछ नहीं है; विकर्षण ववम आलन-वरणनली की उपमाएँ जो बन सकती; यात्रे अरिल्ल-सं नहीं जानता। ५३०

उनके नली की क्या चन्द कहे ? पर छोटे-बड़े और कलकरहित दस चाँद कहे ? फिर हीरे कहे ? पर हीरे की कानि डलनी घनी कहाँ होती है ? इसलिउ उगलियों की उपमाएँ युक्त हैं नहीं मिलती। ५३०

पौरनदिवन विननीड
वकनदिवन वनिनड
विरनदड विनरड
औरगुडर गुणरवन
पावन 531

निनरड गुवम यावुम-विधर सगी सुवनी में; औरगुडर उडन गुणरवन-एक साय (जी) व्यान थे; विननीड- (वे चरण) अब घरनी पर; पौरनदिवन-लगी; पौरनदिवन-डू; वकनदिवन-डू; वपावे है; औरन-ली; अरु-वड; नले मरु कानि विरनदड-नक आदि साय के विपरीत जानता है; उणरनदड पावन-वे वपु है क्या। ५३१

श्रीराम के चरण (विक्रमवारा के अवसर पर) सगी लीको पर एक साय लगे थे। ऐसे चरण अब वन में चलते हुए डूब पा रहे हैं—ऐसा कहना नक-सगत नहीं जानता। ऐसे चरणों की महिमा क्या कहो जाय ?। ५३१

ताङ्गणैप्	पणिलमुम्	वळैयुन्	दाङ्गरा
वीङ्गणैप्	पळ्ळिया	नैनिनुम्	वेरितिप्
पूङ्गणैक्	काङ्कोरु	परिशु	तान्पोरुम्
आङ्गणैक्	कावमो	वाव	दन्नैये 532

अन्तैये-माताजी; अणै ताङ्कु पणिलमुम्-विषम तल वाला (झुरीदार) शंख; वळैयुम्-चक्र; ताङ्कुम्-धारण करनेवाले; वीङ्कु अरा-मोटे नाग रूपी; अणै पळ्ळियान्-शय्या-शायी; पूम् कणै काङ्कु-(श्रीराम की) सुन्दर पिंडलियों की; तान् पोर्मु-उनके द्वारा युद्ध में प्रयुक्त; कणैक्कु आम्-शरों के; आवमो-तूणीर; ओरु परिच्चु अँत्तिनुम्-एक उपमा है तो; इत्ति वेरु आवतु-और कोई तूणीर उपमान बन सकता है क्या । ५३२

सीढ़ीदार बाँधों के समान शिकनों के साथ रहनेवाले शंख और सुदर्शन चक्र के धारक, बहुत बड़ी शेषशय्याशायी विष्णु के अवतार श्रीराम की सुन्दर पिंडलियों की उपमा एक तरह से उनका ही युद्धशरों का तूणीर हो सकता है । और कोई तूणीर हो सकता है क्या ? । ५३२

अङ्गिळर्	पङ्गैयि	त्तरशि	नोङ्गिय
पिङ्गैरुत्	तनैयन	वैवरुम्	वैरुडै
मङ्गिळर्	मदहरिक्	करत्तै	माङ्गिन
कुङ्गिनुक्	कुवमैयिव्	बुलहिर्	कूडुमो 533

अङ्गिळर्-(मूर्त-) धर्म-सम शोभायमान; पङ्गैयित् अरचित्-पक्षीराज गरुड़ के; ओङ्किय पिङ्गै-उन्नत और पुष्ट; अँरुत्तु अतैयन-गलों के समान है; वैवरुम् पेंरुडै-सभी के लिए सुलभ; मङ्गिळर्-बलवान; मत करि करत्तै-मत्त गज की सूँड़ की; माङ्गिन-निरर्थक कर गये; कुङ्गितुक्कु-ऐसे ऊँहओं की; कुवमै-उपमा; इल्वुलकिल् कूडुमो-इस संसार में मिल सकती है क्या । ५३३

श्रीराम के ऊँह धर्मरूप पक्षीराज गरुड़ के उन्नत और स्थूल गले के समान रहते हैं । सभी आसानी से जिसकी उपमा देते हैं, उस सबल मत्तगज की सूँड़ की ठुकरा देनेवाले है । ऐसे जाँघों की उपमा इस संसार में कहीं मिल सकती है क्या ? । ५३३

वलज्जुळित्	तौळुहुनोर्	वळङ्गु	गङ्गैयिन्
पौलज्जुळि	यैत्तुलुम्	बुन्मै	पूवौडु
निलज्जुळित्	तैळुमणि	युन्दि	नेरिनि
इलज्जियुम्	बोलुम्वे	रुवमै	याण्डरो 534

पू ओटु-कमल के फूल में; निलम्-लोकों को भी; चुळित्तु अँळु-मिलाकर जिसने उत्पन्न किया; मणि उन्ति-वह सुन्दर नाभि; वलम् चुळित्तु-दाहिनी आवर्तन की भँवरों के साथ; ओळुक्कु-बहनेवाली; नीर वळङ्कु-जल देनेवाली; कङ्कै-

गंगा नदी की; पौलम सूँड़-सूँड़र (उपमा) है; अक्षरलिपि-कहेना भी; गुप्ते-अल्प है; इति नैरे-अव सम; इल्लोविपुम पौलिम-वकुल-सुमन होगा; वेर उवसे पाण्डे-अम उपमान कहै है । ५३४

श्रीराम की गणि से कमल पर सारे लोकों की भी सुँड़र किया । ऐसी गणि की दक्षिणावर्त शूवरों के साथ बहनेवाली गंगा नदी का सुन्दर शूवर (-सम) कहेना भी क्षुद्र उपमान होगा । आशुद वकुल का फूल हो सकता है । फिर और कोई उपमा कहै से मिले ? । ५३५

पौलव	मरहदप	पौलङ्गो	मालवै
वैवुर	विरिगुडपर	विलङ्गा	लाहेनप
पिरिउर	नोरुन	ळैरिउर	पिनेप
विरिविरिउर	विरुवळार	पावर	नैपवसे 535

नैपवसे-मावली; पौल अर-उपमाहीन; पौलम काँड़-सुन्दरतलुवत; मरकल माल वर-वडा मरकलपर्वत; वर उर-उर बाप ऐसा; विरिउर उपर-विशाल और उवन; विलङ्कल आकृति-पर्वत-सम वध से; पिरिउ अर-विना अलग हुए रहने का; नोरुनळ अँरिनिने-साथ किया (विमते); अ विरिविरिने-उस भी से बहकर; विर उळार-श्रीसामय; विने पावर-और कौन है । ५३५

मावली ! श्रीराम का वधःस्थल पर्वत-सम है । अनुपम सौन्दर्य से युक्त मरकल-पर्वत की भी लज्जानेवाली रीति से उन्नत और विशाल है । शीदवी की वपस्या का फल है कि वह उसमें निरन्तर बास करती है । उनसे बहकर सामयशालिनी कौन है ? । ५३५

नीडु कौटिडश निगुर पावैपिसे, कौडु करसवव विरिउ कौलामे
नीडु मलरनव वुरममु गुडरुडाल, नीडु नडककेवे उवसे पावैसे 536
नीड उर-बलुवत; मलर अँन-कमल है ऐसा; वुरममु वुरड अर-लिन पर अमरी का मूरुना कमी नहीं रहता; नळ गुड नडकके-आवागुलनिवत विशाल हैय; कौडुनिव निगुर पावैपिने-पूर्व दिशा में स्थित (ऐरावत) गज के; कौडु उर-लकीरों के साथ रहनेवाली; नीड उर करम अँन-लपवी सूँड़ है ऐसा; विरिउ कौलाम-शीडा कह सकते हैं; वेर उवसे पावैपि-कौड और उपमान मिल सकीया ५३६

श्रीराम के आवागुलनवे दीधो की, लिन पर अमर दलपकुल कमल-सुमन समझकर, वुरकर मूरुना नहीं छोड़ते, उपमा पूर्व दिशा में स्थित ऐरावत गज की शिकनी (शूरिया) से भी सूँड़ शीडा (सकोच से) कहो जा सकती है । और कौड उपमा कहो जा सकती है क्या ? । ५३६

पवविनने नामर पडेलकण उलम, कवववि मुडिळिहरे कनह नैपववने
ववविउर पाककेप वडिउरुद ववउलिउल, निववप मवउलि नैप नीडुपिसे 537

पचुमै इल तामरै-चिकने पत्रों-सहित कमल का फूल; पकल् कण्टाल् अँत-सूर्य को देख चुका हो ऐसा; कै चैरि-हाथों में लगे रहे; मुकिळ् उकिर-कली के समान नख; कतकन् अँत्पवन्-हिरण्य के; वच्चिर याक्कैयै-वज्रकठोर शरीर को; वकिर्न्त वन् तौळिल्-जिन्होंने चीर लिया था उनका काम; निच्चयम् अन्ऱु-संशय-रहित नहीं है; अँतिन्-ऐसा कहें तो; ऐयम्-वह संशय; नीङ्कुम्-(श्रीराम के नखों को देखने पर स्वयं) मिट जायगा । ५३७

श्रीराम के हाथों की उँगलियों के कलियाँ जैसे नख चिकने पत्रों-सहित रहनेवाले कमल के फूल सूर्य को देख गये —जैसे प्रकाशमान हैं । कनककशिपु के वज्र-सम शरीर को उन नखों ने चीरा था । क्या नख भी शरीर को चीर सकते हैं ? यह संशय जो उठ सकता है, उन नखों को देखने पर स्वतः दूर हो जायगा । ५३७

तिरण्डिल	वौळियिल	तिरुवुञ्	जेरहिल
मुरण्डरु	मेरुविन्	शिलैयिन्	मूरिनाण्
पुरण्डिल	पुहळिल	पौरुप्पोन्	औन्ऱुपोन्
रिरण्डिल	पुयङ्गळुक्	कुवमै	येङ्कुमो 538

तिरण्डु इल-पुष्ट नहीं हैं; औळि इल-कान्तियुत नहीं; तिरुवुम् चेरकिल-श्री से नहीं मिले हैं; मुरण् तरु-बलवान; मेरुविन्-मेरु के समान; चिलैयिन्-धनु को; मूरि नाण् पुरण्डु इल-बलवान डोरा उन पर लगा नहीं है; पुकळ् इल-यशस्वी नहीं; पौरुप्पु-पर्वत; औन्ऱु औन्ऱु पोन्ऱु-एक के समान-एक (परस्पर सम); इरण्डु इल-द्वय नहीं हैं; पुयङ्कळुक्कु-(इसलिए पर्वत) श्रीराम के कन्धों की; उवमै-उपमा का गौरव; एङ्कुमो-धारण कर सकेंगे क्या । ५३८

श्रीराम के कन्धों को पर्वतों से उपमित करें क्या ? वे उतने पुष्ट और वर्तुल कहाँ ? कान्तियुत नहीं; श्रीयुत नहीं और उन पर बलवान मेरु के समान धनु की डोरी नहीं लोटी है । वे प्रशंसा के पात्र भी नहीं हैं । और परस्पर सम पर्वतद्वय कहाँ प्राप्य हैं ? इसलिए वे श्रीराम की भुजाओं की उपमा का गौरव धारण नहीं कर सकते । ५३८

कडप्पडु	पणिलमुङ्	गन्तिप्	पूहमुम्
मिडर्ऱिनुक्	कुवमैयैन्	रुरैक्कुम्	वैळ्ळियोर्क्
कुडप्पड	वौण्णुमो	वुरहप्	पळ्ळियान्
इडत्तुर्ऱै	शङ्गमीन्	रिर्ऱुक्क	वैङ्गळाल् 539

उरक् पळ्ळियान्-शेषशायी; इटत्तु उरै-के पास रहनेवाला; चङ्कम् औन्ऱु-इरुक्क-शंख एक जब रहता है; कटल् पटु पणिलमुम्-सागर में उत्पन्न होनेवाला शंख; कन्तिप् पूकमुम्-छोटी आयु का पूग-तरु; मिटर्ऱित्तुक्कु उवमै-कण्ठ की उपमा है; अँन्ऱु-ऐसा; उरैक्कुम् वैळ्ळियोर्क्कु-जो कहते हैं उन अल्पमतियों के साथ; उटन् पट औण्णुमो-हम सहमत हो सकेंगे क्या । ५३९

शेषशायी श्रीराम के बायें होय में हो पाञ्चजन्य नामक शंख है। उस स्थिति में, अन्य सागरोत्पन्न शंख या बाल-पुंगव के उनके कण्ठ से उपमिष करनेवाले अल्पमतिधों के साथ हम सहमत हो सकते हैं क्या ? ५३९

अण्णउत्तं विरुमुदुत्तं तमल मासिन्नं
कण्णिन्नकं कुवसेव रिपुदुत्तं कादुदुत्तं
तण्णमदि याम्मन्न वरुत्तकव तक्कव
विण्णुत्तन्नं पण्णिन्नदुत्तं मल्लिन्नं त्रेयमालं 540

अण्णालं तन्नं विरुमुक्कम्-महिमवान् श्रीराम का शीघ्रः, कमलम् आम् श्लिन्न-कमल कहे जाय तो; कण्णिन्नकं-फिर आँखों के लिए; उवसे-उपमा; वेड पावु कादुदुत्तकं-और क्या दिखाऊंगा; अयु-बड़े; उदन्नं विण्णु पण्णिन्न-शरीर आकाश में शामिल होकर; मल्लिन्नं त्रेयमाल-शीघ्र होकर पड़ेगा इसलिये; तण्णं मलि आम्- (इसलिये) शीघ्र चन्द्र होगा; श्लेष् उरुत्तक तक्कव-ऐसा कहना उचित होगा क्या । ५४०

महिमवान् श्रीराम के मुख की कमल कहे हैं तो फिर आँखों की उपमा क्या बताऊंगा ? फिर चन्द्र कहें ? बड़े आकाश में एक बार पूर्णव के साथ प्रगट होने के बाद घटता जाता है ! अतः शीघ्र चन्द्र की मुख का उपमान कहना उचित होगा क्या ? ५४०

आरम्भ महिम्मा नीति पदेत्तदा जमलन् शिववाम्
नारम्भणं उलरुत्तदं श्लेष्मिन्नं नित्तमम् उरुत्तकं मल्लिन्नं
इरुत्तण्णं उदुत्तदं मय्मा विन्नवैरं विमम्मा देवम्
मूरुत्तवैण्णं मुत्तवत्तं पूवण्णं पवळम्मा मण्णिन्नं पादुत्तं 541

आरम्भम् अक्षिप्य नीति-चरन और आरंभ की ले-मली; अकम्प्य नीति-विशाल श्रुताओं वाले; अमलम् शिववाम्-विमल देव का लाल मुख; नारम्भ उण्ड अलरुत्त-बाल पीकर जा खिला है; वृम्भ कळ नित्तमम्-लाल रंग का कमल है; अरुत्त उरुत्तक मल्लिन्न-पड़े कहने से लाल (संकीर्ण) करोगे तो; इरुत्त उण्ड-आँखों के साथ; अयुत्तम् ऊरु-अयुत्त लिससे (नदी) रिसता है; इम् उरु इयम्पावेत्तम्-मयूर वन न कहने पर भी; मूरुत्त वृण्ण मुत्तवत्त-(कम से कम) जा दिलाँ छारा उज्ज्वल होंगी; पूव-नदी दिखा सकता है; पवळम्मा-बड़े प्रवाल क्या; मण्णिन्न पादुत्त-कहे जाते अर्द्ध होना । ५४१

चरन और आरंभ के लेप से शीघ्र विशाल श्रुताओं वाले पावनमूर्ति श्रीराम के लाल मुख से जल पीकर उगे हुए प्रफुल्ल लाल रंग के कमल की उपमिष करने से हम लजाएँगे। तो आँखों से रहित, अयुत्त न सरसाते हुए, मयूर वन न कहें तो भी कम-से कम सफेद दन्तावली खिलकर जा हँस नदी सकता, बड़े प्रवाल उपमा के रूप में बताया जा सकता है क्या ? ५४१

मुत्तङ् गौल्लो मुळुनिलविन् मुडियिन् रिउमो मौळियमिर्दिन्
 कौत्तिन् इळ्ळि वैळ्ळियेनत् तौडुत्त कौल्लो तुरैयउत्तिन्
 वित्तिन् मुळैत्त वङ्गुरङ्गौल् वेरे शिलकौन् मेय्म्मुहिळ्त्त
 दौत्तिन् उीहैकौल् यादेन्ऱु पल्लुक् कुवमै शौल्लुहेन् 542

पल्लुकुकु उवमै-दाँतों की उपमा; मुत्तम् कौल्लो-मोती होगे क्या; मुळु
 निलविन्-पूर्णचन्द्र के; मुडियिन् तिरुमो-टुकड़ों की पंक्ति हैं क्या; मौळि-प्रशंसित;
 अमिर्दिन् कौत्तिन्-अमृत-राशि की; तुळ्ळि-बूंदों को; वैळ्ळि अंत तौडुत्त कौल्लो-
 चाँदी कहने योग्य रीति से गूँथा गया है क्या; तुरै अउत्तिन्-(वत्तीस) अंशों में विभक्त
 धर्म के; वित्तिन् मुळैत्त-बीज से अंकुरित; अङ्कुरम् कौल्-अंकुर हैं क्या; वेरे
 चिल कौल्-या अन्य कुछ है; मेय् मुकिळ्त्त-सत्य (तरु) में पुष्पित; तौत्तिन्
 तोंकै कौल्-फूलों के गुच्छे हैं क्या; यातु अँन्ऱु-क्या है ऐसा; चौल्लुकेन्-कहूँगा । ५४२

श्रीराम के दाँतों की उपमा मोती बन सकते हैं ? पूर्णचन्द्र के टुकड़ों
 की पंक्ति है ? प्रशंसित अमृतराशि की बूंदों को चाँदी कहकर गूँथा गया
 है ? वत्तीस अंशों के बने धर्म से अंकुरित अंकुर है ? या और कुछ ? या
 सत्यतरु पर पुष्पित फूलों का गुच्छा है । क्या कहूँ मैं ? । ५४२

अँळ्ळा नीरिन् दिरनीलत् तैळुन्द कौळुन्दु मरहदत्तिन्
 विळ्ळा मुळुवा णिळ्ळिपिळ्ळुम् वेण्ड वेण्डु मेत्तियदे
 तळ्ळा वोदि कोपत्तैक् कौव वन्दु शार्न्ददुवुम्
 कौळ्ळा वळ्ळ रिरुमूक्किर् कुवमै पित्तुन्ऱु गुरिप्पामो 543

अँळ्ळा नीर्-अनिष्ट पानी वाले; इन्तिर नीलत्तु-इन्द्रनील नग से; अँळुन्दु
 कौळुन्दुम्-उठे किसलय और; मरकतत्तिन्-मरकत की; विळ्ळा-अखण्डित;
 वाळ् निळन् मुळु पिळ्ळुप्पु-लम्बी कान्ति की सम्पूर्ण राशि और; वेण्ड वेण्डुम् मेत्तियतु-
 चाहकर तपस्या करें ऐसा दिव्य शरीर है उनका; तळ्ळ-संयुक्त; ओति-गिरगिट;
 कोपत्तै-इन्द्रगोप की; कौव-ग्रसने; वन्दु चार्न्दतु-आ पहुँचा है, यह कहना;
 कौळ्ळा-मान्य नहीं है; वळ्ळल् तिरु मूक्किर्-उदार प्रभु की नासिका का; उवमै-
 उपमान; पित्तुम् कुरिप्पु आमो-और किसी वस्तु को बता सकते हैं क्या । ५४३

श्रीराम के दिव्य शरीर का रंग ऐसा है कि निर्दोष पानी वाले इन्द्रनील
 की किसलय-सी आभा और मरकत नग की दीर्घ और अक्षुण्ण आभा वैसा
 रंग पाने के लिए तपस्या करें । (उनकी नाक की उपमा क्या कहें ?)
 गिरगिट इन्द्रगोप को ग्रसने के लिए आ पहुँचा है —ऐसा कहना भी
 मान्य नहीं हो सकता । तो फिर कौन सी उपमा कही जाय ? (अधर का
 लाल रंग और नासिका का नीला रंग दोनों के आधार पर यह उपमा कही
 गयी है । जहाँ जयशंकर प्रसाद का “है हंस न शुक यह चुगने को मुक्ता
 ऐसे” —ये पंक्तियाँ स्मरण आती है । कम्बन् ऐसी चित्रमय कल्पना
 दस-बारह सौ वर्ष पहले कर सके ।) । ५४३

(आल की उपमा की अपरिचित योजना देखिए ।) अस्सी का चरम नाम से हो प्राप्त कलंक से होन होकर, वैसे ही घटना और वर्तन होकर, भयंकर सघुंटाई या कृष्टि द्वारा निगले जाने के दुःख से विमुक्त हो, अमावास्या के दिन पूर्णरूप से मर (अवस्य हो) जागा और दूसरे दिन प्रात होना—इस बाधाओं से भी मुक्ति पाकर आमक अवधार से नीली छाया के नीचे

अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो वह श्रीराम के भाल से उपमित किया जा सकेगा ! । ५४५

नीण्डु कुळन्नु नैय्त्तिरुण्डु नैरिन्दु शैरिन्दु नैडुनीलम्
 पूण्डु पुरिन्दु शरिन्दुकडै शुरुण्डु पुहैयु नरुम्बूवुम्
 वेण्डु मल्ल वैनर्त्तय्व वैरिये कमळु नरुङ्गुञ्जि
 ईण्डु शडैया यिनदैन्ऱान् मळैयैन् रुरैत्त लिळिवन्ऱो 546

नीण्डु-लम्बे; कुळन्नु-घुँघुराले; नैय्त्तु-चिकने; इरुण्डु-अन्धकार-सम काले; नैरित्तु-परतों में दबे; शैरित्तु-घने; नैडुनीलम् पूण्डु-पूरा-पूरा नीले रंग के; पुरित्तु-बटे हुए; शरित्तु-पीछे लटकते हुए; कडै चुरुण्डु-अन्त में कुंचित होकर; पुकैयुम्-धुआँ और; नरुम्बूवुम्-सुगन्धित सुमन; वेण्डुम् अल्ल-नहीं चाहिए; अँत्त-ऐसा; तैय्व वैरिये-दिव्य गन्ध हो; कमळुम्-देनेवाले; नरुम् कुञ्चि-सुवासपूर्ण केश; ईण्डु-इधर; चटै आयित्तु-जटा बने; अँन्ऱाल्-ऐसा कहा जाय तो; मळै अँन्ऱ उरैत्तल्-मेघ (-सम) कहना; इळिवु अन्ऱो-गलत होगा न । ५४६

केश को क्या मेघ-धारा कहें ? लम्बे, घुँघुराले, चिकने अन्धकार-सम काले, परतों में दबे, घने, नीला रंग लिये बटे हुए, पीछे की ओर अन्त में कुंचित होकर लटकनेवाले केश, जो विना अग्र-धुएँ के और पुष्पों के ही स्वतः सुवासित रहते हैं, आज जटा बने हैं । तो उनका उपमान मेघ है कहना क्षुद्र उपमा होगा न ? । ५४६

पुल्ल लेऱ्ऱ तिरुमहळुम् वूवुम् वौरुन्दप् पुवियेळिन्
 अँल्लै येऱ्ऱ नैडुञ्जैल्व मैदिरुन्द जान्ऱु मः(ह्)दन्रि
 अल्ल लेऱ्ऱ कानहतु मळिया नडैय यिळिवान
 मल्ल लेऱ्ऱि नुळदैन्ऱान् मत्त यानै वरुन्दादो 547

पुल्लल् एऱ्ऱ-सदा आलिंगन में रहनेवाली; तिरुमहळुम्-श्रीदेवी और; वूवुम्-भूदेवी; वौरुन्त-उनके पास जा लगे ऐसा; पुवि एळिन्-सप्तखण्डों की भूमि के; अँल्लै एऱ्ऱ-समाहित; नैडुम् चैल्वम्-विशाल-धन-वैभव को; अँतिरुन्त जान्ऱुम्-प्राप्त करते समय भी; अःत्तु इन्ऱि-उसके नहीं होने से; अल्लल् एऱ्ऱ-संकट उठाते हुए; कान्तकतुम्-जंगल (में आने) पर भी; अळिया-जिसका शान कम नहीं हुआ; नडैय-उस गमन-गति को; इळिवान्-अल्प एक; मल्लल् एऱ्ऱिन्-पुष्ट बेल में; उळवु-है; अँन्ऱाल्-कहें तो; मत्त यानै वरुन्तातो-मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या । ५४७

सदा आलिंगन में रहनेवाली श्रीदेवी और भूदेवी दोनों एक साथ उनकी बनीं, जब सप्तांश भूमि के वे पति हुए । उस समय भी, और राज्यश्री को छोड़कर कष्ट देनेवाले काननगमन के समय भी उनकी चाल समान रूप से कुछ भी कमी नहीं हुई । ऐसी चाल को

ଗଞ୍ଜ ୧ ଓ ୧୫ ୧୫୧୧

नमिपुनारु-548

[illegible]

ፍጻኔ ለዚህ ሁኔታ ለዘመን ሁለት ምሽት ለሆነ ሰዓት ሲቆይ፣

ᐅᐅ ᐅᐅᐅᐅ

मरे पास आकार ली खड़ी हुई! इतने पाप-बड़े करों। ५४५

ਭਗਤੀ ਜੀ ਗਾਇ । ਆਤਮਾ ਨੇ ਮੁਖਿ ਕਹਿ ਕੀਯੋ ਧਰਮ ਧਰਮ ਧਰਮ ॥ ੪੪ ॥

உதயம்

ପ୍ରତିନିଧି

துள்ளி

புதுச்சேரி

६६६६

အနုပညာ

உயிர்நீடி

சுருதிசுருதி *

आण्डनह
याण्डैयदु

रारैयोडु
कानैन्नवि

वायिलह
शैत्तदुमि

लामुन्
शैप्पाय् 550

नीण्ट मुटि-बड़े किरीटधारी; वेन्तत्-चक्रवर्ती की; अरुळ् एन्ति-कृपापूर्ण आज्ञा धारण करके; निरै चैल्वम् पूण्डु-विशाल धन अपनाकर; अतन्ने नीळ्कि-फिर उसे छोड़कर; नैरि पोतल् उरु-जंगल की राह जाने के; नाळिल्-दिन में; आण्डु-तब; अ नकर्-उस नगर के; आरै ओंडु वायिल्-प्राचीर के राजद्वार से; अकला मुन्-निकलने से पहले ही; कान् याण्डैयतु-जंगल कहाँ रहता है; अँत्त-ऐसा; इचैत्ततुम्-देवी का पूछना भी; इचैप्पाय्-तुम उनसे कहो । ५५०

‘दीर्घ किरीटधारी (किरीट बड़ा था और शासनकाल भी लम्बा —दोनों अर्थ हैं ।) चक्रवर्ती की आज्ञा धारण करके पहले राज्य-धन को स्वीकृत किया; फिर उसे छोड़कर जंगल की राह ली मैंने । तब सीताजी प्राचीर के राजद्वार छोड़ने से पूर्व ही मुझसे पूछ बैठीं कि जंगल कहाँ है ? (अभी दिखायी नहीं देता !) यह उन्हें स्मरण दिलाओ ।’ (तुलसी की कवितावली में भी यही बात आती है ।) । ५५०

❖ अँळरिय

तेरुदरु

सुमन्दि

निशैप्पाय्

वळ्ळन्मोळि

वाशह

मैन्तुयर्

मडन्ताळ्

किळ्ळैयोडु

पूर्वैहळ्

किळर्त्तल्किळ

वैन्नुम्

पिळ्ळैयुडै

यिन्त्रिड

मुणर्त्तुदि

पैयर्त्तुम् 551

अँळरिय-अनिद्य; तेरुदरु-रथचालक; सुमन्तिरु-सुमन्त्र के; वळ्ळल् मोळि-अर्थपूर्ण; वाचकम् इचैप्पाय्-सन्देश-वचन कहिए; अँत्त-कहने पर; तुयर् मडन्ताळ्-अपना दुःख भूलकर; किळ्ळैयोडु पूर्वैहळ्-शुकों के साथ सारिकाएँ; किळर्त्तल्-पालना; किळ-कहिए; वैन्नुम्-ऐसा कहने में; पिळ्ळै उरैयिन् त्रिडम्-(जो) नादान शिशु-वचन का गुण है; पैयर्त्तुम्-(वह) फिर से; उणर्त्तुति-स्मरण कराओ । ५५१

अनिद्य रथ के सारथी सुमन्त्र ने सीता से कहा कि देवी ! अर्थपूर्ण वाक्यों में अपना सन्देश-वचन कहें । तब सीताजी ने अपना कष्ट भूलकर कहा कि शुक-सारिकाओं को ठीक तरह से पालना —यह सन्देश पहुँचा दीजिए । शिशु-सम कपटहीन उसके वचन का प्रकार उसे स्मरण कराओ । ५५१

❖ मोट्टुमुदै

वेण्डुवन

विल्लैयन

मैयप्पेर्

तीट्टियदु

तीट्टरिय

शैय् हैयदु

शैव्वे

नीट्टिदत्त

नेरुन्दत्तनै

नानैडिय

कैयाल्

काट्टिननौ

राळियदु

वाणुदलि

कण्डाळ् 552

मोट्टुम्-फिर भी; उरै वेण्डुवन् इल्लै-कहना कुछ नहीं चाहिए; अँत्त-ऐसा

कहकर; भूपर; नीटदिय-मेरा सदा नाम अंकित है; नीटदिय चपकपु-कुलम रत्न-कीजल से बना है; ध्रुव नीट-सामने बड़ा; दू-इसे; धन-कहकर; नीरेसमने-(शिराम ने) मेरे पास दिया; आना-कहकर; आरे आछ-एक मणि-मुंदरी का; नीट कंगल-अपने लंबे हाथ से ले; काटिने-दिखाया; अरु-उसकी; बाळ गुनल-उज्जवल माल वाली देवी ने; कण्ठ-देख। ५५२

[illegible]

इ नत्तं पुनर्लिखितं—इतं पुनरुक्तं भागं बालो देवो का; चपक—इत्य; इत्यनेनवरं—निरपुंक
 लोचनं विमोचयति च; प्रियमेव पयसं अपुलितरं—सफलं ज्ञानं का फलं पा लिप्यते;
 चपकं कौलं अनेकी—उसका-भा ऊप्य है कर्त्तुं; मयमेववरं—जो किमी को भूल गये;
 अर्जुन—उसने उसको जानकर; उपादेयं वनेववरं—मुष्टि कर लो; चपकं कौलं अनेकी—
 उसका-भा ऊप्य कर्त्तुं; पुनरनु—पुनः उदकर; अ उपादे—फिर दे गयो; चपु—चपु—
 आकर; इदं लीटरेतवत् कौलं—मध्य मं नाम गये; अनेकी—कर्त्तुं; निरपुं निरपुं—
 प्रकार जानना; अनेके कौलं—कथा । ५५३

तब सुन्दर ललटिनी सीताजी ने जो मोद-बेल्हाएँ प्रगट कीं उनकी कथा कही जाय ? जिसने योग्य कर्म न करके अपना जीवन व्यर्थ किया उसे कलामू-जन्म का फल मिल गया तो उसको स्थिति वैसी होगी वैसी ही सीताजी की रही। —एहें कहूँ ? या—विस्मयित के बाद स्मृतिप्राप्त मनुष्य की—सी रही—कहूँ ? या छुटे प्राण फिर बीज में हो आ गया—वैसी स्थिति उनकी रही ? उमकी स्थिति का प्रकार कैसे जानें और वर्णन करें ? ५५३

[illegible]

मलटि-बंध्या; कुल्लन्तैयै उयिरत्ततत्कु-पुत्र पा गयी हो उसकी; उवमै कौण्टाळ्—उपमा बनीं; ओळिन्त विळि-खोयी दृष्टि; पेरुतीर् उयिरप्पोरुयुम्-जिसने पा ली उस जीवधारी शरीर के; ओत्ताळ्—समान भी बनीं । ५५४

वे उस सर्प के समान हो रहीं, जिसने अपना (नाग-) रत्न खोकर फिर से पा लिया हो । खोये प्राचीन धन को फिर से प्राप्त करनेवाले मनुष्य के समान भी हो गयीं । बंध्या ने पुत्र को जन्म दिया हो जैसी उनकी स्थिति हुई । और खोयी दृष्टि को जिसने पुनः प्राप्त कर लिया, उस जीव की जैसी भी हो गयीं । ५५४

वाङ्गित्तण्	मुलैक्कुवैयिल्	वैत्तनळ्	शिरत्ताल्
ताङ्गित्तण्	मलर्क्कण्मिशै	यीत्तित्त	डडन्दोळ्
वीङ्गित्तण्	मैलिनन्दत्तळ्	कुळिरन्दत्तळ्	वैदुप्पो
डेङ्गित्त	ळुयिरत्तनळि	दिन्नन्देन	लामे 555

वाङ्कित्तळ्—(देवी ने) उसे लिया; मुलैक् कुवैयिल् वैत्तत्तळ्—स्तनाग्र पर रखा; विरत्ताल् ताङ्कित्तळ्—सिर पर धारण किया; मलर् कण् मिचै—कमल-सी आँखों पर; ओत्तित्तळ्—(बार-बार रखा; तटम् तोळ्—विशाल भुजाएँ; वीङ्कित्तळ्—फूल गयीं ऐसी हो गयीं; कुळिरन्दत्तळ्—शीतल-(मुदित)-मना हुई; मैलिनन्दत्तळ्—डुबल हुई; वैदुप्पोट्टु—मुरझाकर; एङ्कित्तळ्—तरसी; उयिरत्तत्तळ्—दीर्घ निःश्वास छोड़े; इतु-यह; इत्तत्तु अँतल्—(क्यों) ऐसा है कहना; आमे—हो सकता है क्या । ५५५

सीतादेवी ने उस मणि-मुँदरी को हाथ में लिया । फिर कुचाग्र पर रखा । सिर पर धारण कर लिया । पंकज-नेत्रों पर रखा । उनकी भुजाएँ फूल उठीं । उनका मन शान्त-शीतल हुआ । श्रीराम का स्मरण कर क्षीण हुई । मुरझायीं और तरसने लगीं । लम्बी साँसें छोड़ने लगीं । यह स्थिति क्या है —यह कहा जा सकता है क्या ? । ५५५

ॐ मोक्कुमुलै	वैत्तुत्तुमु	यङ्गुमिळि	नन्नीर्
नीक्किनिरै	कण्णिणैत	तुम्बनेडु	नीळ
नोक्कुनुव	लक्करुदु	मौन्ननुवल्	हिल्लाळ्
मेक्कुनिमिर्	विस्मलळ्वि	ळङ्गलुरु	हिन्नाळ् 556

मोक्कुम्—(सीताजी) सूँघतीं; मुलै वैत्तु-स्तनों पर रखकर; उड् मुयङ्कुम्—गाढ़ा आलिंगन करतीं; इळि-नीचे की ओर बहनेवाले; निरै नल् नीर्—अधिक आनन्दाश्रुजल को; नीक्कि-पोंछकर; कण् इणै—दोनों आँखों में; तत्तुम्प-फिर से अश्रु के भरते; नैट्टु नीळ नोक्कुम्—बहुत देर तक उसे देखतीं; नुवलक् करुतुम्—(उससे) बात करना चाहतीं; औत्तुम् नुवल् फिल्लाळ्—कुछ कह नहीं पातीं; मेक्कु निमिर्—उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विस्मलळ्—तरस के साथ; विळुङ्कल् उरुकिन्नाळ्—उसको दवाने का प्रयास करतीं । ५५६

और सीताजी ने उसे सूँघा । स्तनों पर रखकर कस लिया । जो

तत्तियुह मँन्गुदलै तळळवुयिर् तन्दाय
उत्तमर्व ताविनैय वाशहमु रेंताळ 559

इत्तकैयळ आकि-इस तरह की बनकर; उयिर्-प्राणों के; एम् उर-लहलहाते; विळङ्कुम्-शोभायमान; मुत्त नकैयाळ-मोतियों के समान दाँतों वाली; विळियिन् आलि-आँखों की बूंदों के; मुलै मुत्तिल् तत्ति-कुचाग्र पर गिरकर उछलकर; उक-नीचे गिरते; मँन् कुतलै-कोमल तुतली बोली; तळळ-लड़खड़ाये ऐसा; उत्तम-उत्तम; उयिर् तन्ताय-प्राणदान किया; अँता-कहकर; इतैय वाचकम्-ये वाक्य; उरेंताळ-(हनुमान से) बोलीं। ५५६

सीताजी इस स्थिति में आयीं। उनके प्राण लहलहा उठे। उज्ज्वल दाँतों से युक्त देवी के अश्रु उनके स्तनाग्र पर गिरे, उछले और नीचे जा रहे। उनकी मधुर बोली गद्गद हो गयी। उन्होंने उद्गार निकाली कि उत्तम, तुमने मुझे प्राणदान किया। वे आगे यों बोलीं। ५५९

ॐ मुम्मैया मुलहन् दन्द मुदल्वरकु मुदल्वन् रुदाय्च्
चैम्मैया लुयिरुतन् दायक्कुच् चैयलैन्ता लैळिय दुण्डे
अम्मैया यप्प ताय वत्तत्ते यरुळिन् वाळ्वे
इम्मैये मरुमै दानु नल्हिनै यिशैयो उँन्नाळ 560

मुन्मैयाम्-त्रिविध (स्वर्ग, भूमि, पाताल) के; उलकम् तन्त-लोकों के सर्जक; मुतल्वरकु-आदिदेव ब्रह्मा के भी; मुतल्वन्-धाता श्रीराम का; तूताय्-दूत बनकर; चैम्मैयाल्-अपने कौशल से; उयिर् तन्ताय्क्कु-तुमने मुझे प्राणदान किया, ऐसे तुम्हारे प्रति; अँन्ताल् चैयल्-मेरा प्रत्युपकार; अँळियतु उण्डे-सुलभ है क्या; अम्मैयाय् अप्पताय-माता हो, पिता हो; अत्तत्ते-दैव हो; अरुळिन् वाळ्वे-दया के जीवाधार; इम्मैये मरुमै तानुम्-इह और पर (सुख) को; इचैयोदु-यश के साथ; नल्किन्नै-मुझे दिया; उँन्नाळ-कहा (सीताजी ने)। ५६०

त्रिविध लोकों के आदिनाथ ब्रह्मा के भी आदि हैं, विष्णु के अवतार श्रीराम। उनका दूत बनकर तुम आये और अपने सामर्थ्य से मुझे प्राणवान बनाया। ऐसे तुम्हें प्रत्युपकार में क्या दे सकूंगी? क्या प्रत्युपकार उतना सुगम है? माता हो तुम; पिता भी! दैव भी तुम्हीं हो। करुणा के जीवनाधार! तुमने इह-पर दोनों सुख दिलाया और वह भी यश-सहित!। ५६०

ॐ पाळिय पणैत्तोळ वीर तुणैयिलेन्न परिवु तीरुत्त
वाळिय वळ्ळ लेयान् मरुविला मत्तत्ते तैन्निन्
अळियोर् पहला योडुम् याण्डेला मुलह मेळुम्
एळुम्वी वुड्ड जान्नु मित्तुँन विरुत्ति यँन्नाळ 561

पाळिय-सशक्त; पणै तोळ वीर-स्थूल कन्धों वाले वीर; तुणैयिलेन्-असहाय मेरा; परिवु तीरुत्त-दुःखनिवारक; वळ्ळले-उदार पुरुष; यान्-मैं; मरु इला

मेघ-सम काले रंग का मायावी और मारीच नामक राक्षस मृग जाति का झूठा रूप धारण कर आया। आभरणालंकृत विशाल वक्षःस्थल वाले श्रीराम के शर चलाने पर वह भूमि पर गिरा। तब महिमावान श्रीराम के स्वर में उसने जो पुकारा, वह तुमुल नाद आपको भ्रम में डालने के लिए ही था। ५६३

इक्कुर लिळवल् केळा दीळिहैन विरैव तिट्टान्
 मैय्क्कुरु चाबम् बित्तनै विळैन्दु विदियिन् मैय्म्मै
 पौय्क्कुर लिन्नु पौल्लाप् पौरुळ्पित्तन् पयक्कु मैन्बान्
 कक्कुरल् वरिविल् लानु मिळैयवन् वरवु कण्डान् 564

इरैवन्-भगवान श्रीराम; इक् कुरल्-यह ध्वनि; इळवल् केळानु-लघु भाई के सुनने में न आकर; ओळिक-दब जाय; अँत-ऐसा सोचकर; मैय् कुरल्-सच्चे स्वर को; चापम् इट्टान्-अपने चाप से पैदा किया; पित्तनै विळैन्तनु-बाद जो घटा; वितियिन् मैय्म्मै-विधि की सच्ची करतूत है; पौय्क्कुरल्-मारीच का मिथ्यानाद; इन्नु-अभी; पित्तन्-बाद; पौल्ला पौरुळ् पयक्कुम्-विपरीत हानि-कारक कार्य करा देगा; अँत्पान्-ऐसा सोचकर; कं कुरल्-हाथ में रहे; वरि विल्लानुम्-सबन्ध धनु के धारक श्रीराम ने भी; इळैयवन् वरवु-छोटे भाई का आना; कण्डान्-देखा। ५६४

श्रीराम ने चाहा कि यह ध्वनि छोटा भाई न सुने। इसलिए उन्होंने अपने सत्य-धनु का स्वन निकाला। फिर जो घटनाएँ घटीं, वे असल में विधि की करतूत हैं। मारीच का मिथ्या स्वर अवश्य कुछ अनर्थ करनेवाला है—इस डर के साथ आनेवाले सबन्धधनुर्हस्त श्रीराम ने अपने भाई को आता देख लिया। ५६४

कण्डपि निळैय वीरन् मुहत्तिताऱ् कस्तुतै योर्न्द
 पुण्डरि हक्क गानु मुऱ्ऱु पुहलक् केट्टान्
 वण्डुऱै शालै वन्दा तित्तिरु वडिवु काणान्
 उण्डुयि रिरुन्दा तित्तन् लुळत्तुऱ्के वेदु वन्ऱो 565

कण्ट पिन्-देखने के बाद; इळैय वीरन् मुहत्तिताल्-छोटे वीर के मुखभाव से; कस्तुतै-उनके मन का भाव; ओरन्त-जो ताड़ गये; पुण्डरिक् कणानुम्-उन पुण्डरीकाक्ष ने भी; उऱ्ऱु-जो बीता; पुकल-उसको लक्ष्मण के कहने पर; केट्टान्-सुना; वण्डु उरै-अमर जहाँ रहते थे; चालै वन्तान्-उस पर्णशाला में आये; तित्तिरु वडिवु-आपका दिव्य रूप; काणान्-न देखा; उयिर् उण्डु इरुन्तान्-केवल प्राण ही रहे, ऐसी स्थिति में रहे; इन्तल् उळत्तुऱ्के-कण्ट उठाने का; एतु अन्ऱो-हेतु नहीं था क्या। ५६५

श्रीराम ने लक्ष्मण को देखा, उनकी मुखमुद्रा से मन का भाव ताड़ लिया। पुण्डरीकाक्ष ने लक्ष्मण के मुख से बीता समाचार सुना। फिर

एतत् सिद्धं त्वं च । इति चेन्न । अत्र नान्यथा

ನಗರಸಭೆ ಪ್ರತಿನಿಧಿ ವರದಿ ಸಾರಾಂಶ ಪರಿಷತ್ ೧೯೭೬

बदले निम्नलिखित हैं :—

3371 (17)

[illegible]

ଗୃହ । ଉଚ୍ଚ-ପ୍ରାଥମିକ

सुन्दरी देवी । श्रीराम ने उसके आगे पर पर दंडित डाली । उन्हें
अपराधक छुड़ा दिया । उन्होंने उससे पूछा कि बात । इस स्थिति को
कैसे मान लें ? वह प्रकार बताइए । बताइए मैं रावण का अपकर्म
निकाल दूँगा वृषक काम करेगा । जहाँ-जहाँ वृद्ध करेगा जाता था, जहाँ-जहाँ

श्रीराम की कोपाग्नि ऐसी उठ बढ़ी मानो सारे लोकों को जला डालेगी । ५६७

शोडशिव्	बुलह	सूनुन्	दीनुहुह्	चित्तवा	यस्बाल्
नूख्वे	तेनु	कैवि	नोक्किय	कालै	नोक्कि
ऊडौरु	शिडियोन्	शैय्य	मुनिदियो	बुलहै	युळ्ळम्
आरुवि	यैनु	तादै	याड्डलिड्	चीड्ड	मारि 568

चीडि-कुपित होकर; इ उलकम् सूनुम्-ये तीनों लोक; तीनु उक-जलकर भस्म हो जायें ऐसा; चित्तवाय् अम्पाल्-कोपमुख शरों से; नूख्वेन् अँनु-मिटा दूंगा कहकर; कै विल्-अपने हाथ के धनु को; नोक्किय कालै-जब श्रीराम ने देखा तब; तातै-तात जटायु ने; नोक्कि-देखकर; ओरु चिडियोन्-एक अल्प (राक्षस) के; ऊडु चैय्य-दुःख देने पर; उलकै मुनिदियो-लोकों पर गुस्सा करोगे क्या; उळ्ळम् आरुति-मन शान्त करो; अँनु-कहकर; आड्डलिन्-आश्वस्त करने पर; चीड्डम् आडि-कोप शान्त करके । ५६८

कुपित होकर श्रीराम ने यह कहते हुए अपने धनु को निहारा कि सारे लोकों को जलाकर भस्म करते हुए मिटा दूंगा । तब पिता-सम जटायु ने उनका गुस्सा देखकर कहा कि किसी क्षुद्र ने तुम्हें कष्ट दिया तो तुम प्रपञ्च पर गुस्सा उतारोगे क्या ? मन को शान्त करो । उनके आश्वासन देने पर श्रीराम ने अपना कोप शान्त करके (पूछा) । ५६८

अँव्वळि	यैय्दिड्	इत्तान्	याण्डैया	नुरैयुळ्	याडु
शैव्वियोय्	कूळ	हैन्तच्	चैप्पुवा	नुर्र	कालै
वैव्विय	विदियिन्	कौट्पाल्	वीडितान्	कळुहिन्	वेन्दन्
अँव्वियल्	वरिविड्	चैड्गै	यिरुवरु	मिडरिन्	वीळ्न्दार् 569

चैव्वियोय्-श्रेष्ठ गुण वाले; अत्तान्-वह; अँव्वळि-किस मार्ग पर; अँय्तिड्ड-गया; याण्डैयान्-कहाँ का है; उरैयुळ् यातु-वासस्थान कौन सा; कूळक अँन्त-कहो, पूछने पर; कळुकिन् वेन्तन्-गीधों के राजा ने; चैप्पुवान् उर्र कालै-जब कहना आरम्भ किया तब; वैव्विय वितियिन्-क्रूर विधि के; कौट्पाल्-विधान से; वीडितान्-जटायु मर गया; अँव्वु इयल्-शरप्रेरक; वरिविल् चैड्कै-सबन्ध धनु वाले सुन्दर हाथों के; इरुवरु-दोनों; इडरिन् वीळ्न्तार्-दुःख में गिर गये । ५६९

श्रेष्ठ गुण वाले ! वह रावण किस मार्ग पर गया ? वह कहाँ का है ? उसका निवासस्थान कौन सा है ? तब गीधों के राजा उत्तर देने ही लगे थे कि क्रूर विधि के विधान से वे मर गये । शरप्रेरक सबन्ध धनुर्धर लाल (सुन्दर) हाथों वाले वीर, श्रीराम और लक्ष्मण शोकमग्न हो गये । ५६९

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५७० ॥

०७४ । ए. ए. ए. - १९७७

०१४ । श्रीरक्षितं प्रकृतं मया कृत्वा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५७ ॥

வினாவுக்குரிய பதிலைக் கொடுக்கக் கேட்கும் முறை

नन्मत्त नाहन् दलैशूडिय नम्ब नेपोल्
उन्मत्त नात्तान् इतैयौन्ऱु मुणर्न्दि लादान् 572

जालततवर् उळर्-संसार में रहनेवाले; यारे-कौन ही; कन्मत्त कटन्तार्-कर्म के बाहर आ सके; पोन् मीयत्त तोळान्-श्रीनिलयस्कन्ध श्रीराम; मयल् कौण्टु-भ्रान्त होकर; पुलन्कळ् वेऱाय्-इन्द्रिय-संवेदना से दूर; ततै औन्ऱुम् उणर्न्तिलातान्-अपना कुछ न स्मरण करके; नल् मत्तम्-अच्छा धतूरा; नाकम्-और सर्प को; तलै चूटिय-सिर पर धारण करनेवाले; नम्पत्ते पोल्-नायक शिवजी के समान; उन्मत्तन् आतान्-उन्मत्त बने । ५७२

कौन संसारी जीव कर्म को तार सका ? श्रीराम मोहित मन वाले, इन्द्रियों के व्यवहारों से निर्लिप्त हो और अपनी सुध-बुध खोकर सर्प और धतूरे से अलंकृत सिर वाले श्रीशिवजी के समान उन्मत्त हो गये । ५७२

पोदायित पोदुत्त तण्बुत्त लाडल् पौय्यो
शीदापव लूक्कोडि यन्नवट् टेडि यैन्गण्
नीदातरु हिऱ्ऱिलै येर्नेरुप् पादि यैन्नाक्
कोदावरि यैच्चित्तड् गौण्डत्तन् कौण्ड लौप्पान् 573

कौण्डल् औप्पान्-मेघसदृश श्रीराम; कोतावरियै-गोदावरी से; पोतु आयित पोतु-जब सूर्योदय हुआ; पवळक्कोडि अन्तवळ्-प्रवालवल्लरी-सी; चीता-सीता का; उत्त तण् पुत्तल्-तुम्हारे शीतल जल में; आटल् पौय्यो-स्नान करना झूठ है क्या; अन्तवळ् तेटि-उसको खोजकर; अैन् कण्-मेरे पास; नी ता-तुम दे दो; तरुकिऱ्ऱिलैयैल्-नहीं दोगी तो; नेरुप्पु आति-आग बन जाओगी (आग लगा दूंगा); अैन्ना-ऐसा; चित्तम् कौण्डत्तन्-कुपित हुए । ५७३

मेघ-सदृश श्रीराम ने गोदावरी को सम्बोधित कर कहा कि गोदावरी ! सूर्योदय के समय जो प्रवालवल्लरी-सी मेरी सीता तुममें स्नान किया करती थी क्या वह असत्य है ? तुम उसे जाकर ढूँढो और मेरे पास लिवा ला दो । अगर नहीं दोगी तो तुम जल जाओगी ! श्रीराम ने गोदावरी पर कोप दिखाया । ५७३

कुन्ऱेकडि दोडिनै कोमळक् कौम्ब रन्त
अैन्ऱेवियैक् काट्टुदि काट्टलै यैन्नि तिव्वम्
पौन्ऱेयमै युम्मुत्तु डैक्कुल मुळ्ळ वैल्लाम्
इन्ऱेपिळ् वावैरि याक्करि याक्क वैन्ऱान् 574

कुन्ऱे-हे पर्वत; कटितु ओटित्तै-तेज दौड़कर; कोमळ कौम्पर् अन्त-कोमल पुष्पशाखा-सी; अैन् तेवियै काट्टुति-मेरी देवी को दिखाओ; काट्टलै अैन्तिल्-नहीं दिखाओगे तो; उन् उटै कुलम्-तुम्हारे कुल के; उळ्ळ-जो है; अैल्लाम्-उन सभी को; इन्ऱे पिळ्वा-आज ही तोड़कर; अैरिया-जलाकर; करियाक्क-भस्म कराने के लिए; इ अम्पु औन्ऱे-यह शर एक ही; अमैयुम्-पर्याप्त होगा; अैन्ऱान्-कहा । ५७४

वनंदातिष्ठ
 यान्ति
 किंचिद्व
 मृदुल
 गदमं
 वलिमं

शन्दार्तड्ड् गुन्त्रिनिर् रन्नुयिर्क काद लोत्तुम्
शन्दामरैक् कण्णनु नट्टनर् तेव ख्यय 577

वान्-आकाश में; उयर् तेरिन् वेंकुम्-श्रेष्ठ रथ पर रहनेवाले; नन्ता विळक्किन्-अमन्द दीप-से सूर्य के वंश में; वरुम्-आये; अम् कुल नातन्-मेरे कुल के नायक के; वालुम्-वासस्थान; चन्तु आर्-चन्दनतरु-लसे; तटम् कुन्त्रिन्त्रि-विशाल पर्वत पर; इळ्ळ्यात्तोडु-छोटे भ्राता के साथ; वन्तान्-आये; चन्तामरैक् कण्णनुम्-अरुणपंकजाक्ष श्रीराम और; तन् उयिर् कातलोत्तुम्-उनका प्राणप्रिय (सुग्रीव); तेवर् उय्य-देवों को उबारने के लिए; नट्टनर्-मित्र बन गये । ५७७

आकाश में श्रेष्ठ रथ पर संचार करनेवाले और ऐसे दीप के समान सदा जलनेवाले, जिसको उकसाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सूर्यदेव के वंश में आए हुए हैं हमारे कुल के नायक सुग्रीव । वे चन्दन-तरु-संकुल और विशाल ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे । श्रीराम अपने लघुभ्राता के साथ उस पर आये । अरुणपद्माक्ष श्रीराम और उनके प्राणप्यारे मित्र सुग्रीव दोनों ने आपस में सख्य कर लिया । ५७७

उण्डायदु मर्उदु मुर्उ मुणर्त्ति युळ्ळम्
पुण्डान्त नोवुर् विम्मुर् हित्त्र पोदिल्
अण्डानुळन् दिट्टनुम् मेन्दिल्लै याङ्गळ् काट्टक्
कण्डानुयर् वेदमुम् बोदमुम् काण्णि लादान् 578

उयर् वेतमुम्-उत्कृष्ट वेदों; पोतमुम्-और ज्ञान से; काण्किलातान्-अलक्ष्य श्रीराम; उण्डायतुम्-जो दुःख हुआ वह; मर्उतुम्-बाद जो बीता वह; मुर्उम् उणर्त्ति-पूरा बताकर; उळ्ळम् पुण् तान् अन्त-मन ही व्रण बन गया हो, ऐसा; नोवु उर्-पीड़ित हो; विम्मुर्किन्त्र पोतिल्-सिसकते समय; अण् तान् उळ्ळनु-चित्त में व्याकुल होकर; इट्ट-आपने जो डाला था; तुम् एन्तिल्लै-आपके आभरणों को; याङ्गळ् काट्ट-हमारे दिखाने पर; कण्डान्-श्रीराम ने देखा । ५७८

अवेदबोधगोचर श्रीराम आप-बीती बातें सारी सुग्रीव को बताकर जब व्रणमन हो वेदना के साथ दुःखी हो रहे थे, तब हमने आपके उन श्रेष्ठ आभरणों को दिखाया, जिन्हें आपने व्याकुलता में कुछ सोचकर नीचे डाला था । उन्होंने उन्हें देखा । ५७८

तणिहित्तर्नेञ् जिर्उर्डर् वैम्मैयत् तन्मै तन्नै
तुणिहीण्डिलड् गुज्जुडर् वेलवन् रुय नित्गण्
अणिहण्डुळि येयमु दन्दैळित् तालु माडाप्
पिणिहीण्डु पण्डुण् डायिनुम् बेर्प्प दन्नाल् 579

तुणि कौण्टु इलङ्कुम्-(शत्रु-शरीर के) टुकड़े बनाकर शोभित रहनेवाले; चुटर् वेलवन्-ज्वलन्त भाले के धारक श्रीराम; तूय-पावन; नित् कण् अणि-आपसे पहले

तमिऴ लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

तमिल लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

तमिल लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

तमिल लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

तमिल लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

तमिल लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

तमिल लिपि-तमिल लिपि (तमिल लिपि) ७१६

उसके आते तक; तिङ्कळ् इरण्टु इरण्टुम्-चार महीने; इटै-उस (ऋष्यमूक पर्वत) पर; एयान् इरुन्तान्-ठहरे रहे । ५८१

ऐसे वाली को एक ही शर द्वारा प्राणहीन कर दिया । फिर अपने स्नेही पवित्रमन सुग्रीव को वानरराजपद दिलाया । दिलाकर उससे कहा कि अपनी सेना-सहित आ जाओ । फिर वे चार महीने उस (ऋष्यमूक) पर्वत पर ठहरे रहे । ५८१

पिङ्कूडिय	शेत्तैपे	रुन्दिशै	पिन्त	वाह
विङ्कूडुनु	दङ्गिरु	निन्निडै	मेव	वेवित्
तेङ्कूडुरु	वक्कडि	देविनन्	शेरन्द	देन्त
मुङ्कूडित्त	कूरित्तन्	कालमोर्	मून्डम्	वल्लान् 582

विल् कूटु-धनु-सम; नुतल् तिरु-भाल वाली श्रीदेवी; पिन् कूटिय चेतै-पश्चात् एकत्रित सेना को; पैरुम् तिरु-बड़ी दिशाओं को; पिन्त आक-पीछे छोड़कर; निन् इटै-आपके पास; मेव-(ढूँढ़कर) आने के लिए; एवि-भेजकर; तेङ्कु ऊटु उरुव-दक्षिण दिशा में छानकर खोजने के लिए; कटितु एवित्तन्-(मुझे) शीघ्र भेजा; चेर्न्ततु-(यही मेरे इधर) आने का वृत्तान्त है; अँत्त-ऐसा; कालम् ओर् मून्डम् वल्लान्-त्रिकालज्ञ ने; मुङ्कूडित्त कूरित्तन्-पहले जो घटीं वह सारी बातें बतायीं । ५८२

उज्ज्वल धनु-सम ललाटिनी ! पश्चात् जब वे वानर-सेनाएँ एकत्रित हो आयीं, तब सुग्रीव ने उन्हें सभी दिशाओं में इतनी दूर-दूर भेज दिया कि दिशाएँ स्वयं पीछे रह जायँ ! फिर दक्षिण दिशा में खोजने के लिए मुझे शीघ्र प्रेषित किया । यही मेरे इधर आने का वृत्तान्त है । इस तरह, त्रिकालज्ञ हनुमान ने घटित घटनाएँ बतायीं । ५८२

✽ अन्बिन	तम्मोळि	युरैक्क	वारियन्
वन्बोर्	नैञ्जित्तन्	वरुत्त	मुत्तुवाळ्
अँत्बुड	वुरुहित	ळिरङ्गि	येङ्गिनळ्
तुत्तवमु	मुवहैयुञ्	जुमन्द	वुळ्ळत्ताळ् 583

अन्पित्तन्-भक्त के; अ मोंळि उरैक्क-वह वचन कहने पर; वन् पोर्-अतिशय क्षमाशील; नैञ्चित्तन् आरियन्-मन वाले पुरुषोत्तम का; वरुत्तम् उन्तुवाळ्-दुःख सोचती हुई; तुत्तपमुम् उवकैयुम्-दुःख और आनन्द; चुमन्त उळ्ळत्ताळ्-धारक चित्त वाली; अँत्तु उर-हड्डी तक (दुःख के) लगने के कारण; उरुक्कितळ्-द्रवीभूत हो गयीं; इरङ्कि एङ्कितळ्-दुःखी हो तरसीं । ५८३

श्रीराम के भक्त हनुमान ने जब यह सब कहा, तब सीता ने बहुत क्षमाशील श्रीराम का दुःख सोचा । वे स्वयं अधिक दुःख और सुख दोनों से भर गयी । उनकी हड्डी तक जलप्राय हो जाय, वे इतनी दुःखिनी हुई और तरसने लगी । ५८३

[illegible]

न उक्त विनयम्-विनयमना, नयनं वारिजम् नयनम्-अञ्जलिभारः कः
 द्रुमं वृद्धिपट-यदकर आवासीयं, वृष्टिकर्तुमं विनयम्-वृमनवले वारिजं की वेदी न,
 पुत्र-नलः, नो-वृमः, अन्धकृष्णम् अन्धकृष्णम्-अपारः सारः, नोविन-नरकरः
 अयुतिपुत्र-यद्वि आयुः, अयुति-कलेः, इयमपुत्राय-कलेः, अयुजम्-पुत्रा वेदी न । ५४

विगलित मन वाली, और नयनवर्षा की झूबारी में धुमनेवाली सीताजी ने दृष्टिमान से कहा कि ताव ! यह अपार सागर तुम कैसे तैर आये ? कहा । ५८४

५८५	कवचगङ्गलं	कवचदेवमं	कालि	गालदेवमं
	पुनरुद्गाढं	कवचदेवमं	सर्वदेवमं	सर्वदेवमं
	सर्वदेवमं	पुनरुद्गाढं	सर्वदेवमं	सर्वदेवमं
	पुनरुद्गाढं	पुनरुद्गाढं	पुनरुद्गाढं	पुनरुद्गाढं

[illegible]

हनुमान ने कहा कि क्षीणकटि देवी ! आपकें सभी पाप क्षीराम का पावन चरण एकाम्रचित से स्मरण करनेवाले महान नीम अक्षय माया-सागर चर लेते हैं । उसी प्रकार से मैं भी अपने पूरे (या श्रीराम की चरण-महिमा) से इस काले (या बड़े) समुद्र को लाँच आया हूँ । ५८५

इदं प्रमाणं	विद्यमानं	रूपान्तरं	यत्कर्म
नन्तु न	कलत्रं	नवनेत्रं	नामदा
प्रतिनिधि	प्रियंवदा	शृंग्य	वापुर्वेदे
प्रतिनिधि	निजनिधि	सुकवर्ण	मुद्रितमात्रं

५८६

पुर्वविशेष-मीना से, निवलिषण-और चन्द्रिका से वर्तकर; मुखन-दाँता
 की; मुखिना-अधिक प्रभावी से; इवेण विरिय-इतना होता; अणु इव-
 कुछ सी न मात्र; और वाक्य-एक शरीर के गुण; कठन तवित-समस्त लव
 आते; अणु-बड़े काम; तवति आनन्द-तप के फलस्वरूप हुआ; तवितिव
 इयमेव-सिद्धि के वन से प्राप्त हुआ; वृषण-करी; अणुना-कहा । ५८६

सीताजी के दाँत मोतियों और चाँदनी से बढ़कर सुन्दर थे । (कवि उनकी याद करते हैं यह संकेत करने के लिए कि सीताजी किंचित हँसती हुई बोलतीं । यह कवि की विदग्धता है, जो सर्वत्र पायी जाती है ।) सीताजी ने पूछा कि इतने छोटे से शरीर के होकर तुमने समुद्र लाँघा; यह काम तपस्या का फल था या सिद्धि द्वारा साध्य हुआ ? बताओ । ५८६

शुट्टित्	निन्नरत्तन्	रौल्लद	कंयिनन्
विट्टुयर्	तोळितन्	विचुम्बिन्	मेक्कुयर्
अट्टरु	नैडुमुह	उय्द	नीळुमेल्
मुट्टुमैन्	रुवौडु	वळैन्द	मूर्त्तियान् 587

तौल्लत कंयितन्-अंजलिबद्धहस्त; विट्टु-विशाल और; उयर् तोळितन्-उन्नत कन्धों वाला; विचुम्बिन् मेक्कु उयर्-आकाश के भी ऊपर; अय्यत् नीळुमेल्-पहुँच जाय इतना बढ़ेगा तो; अट्टु अरु-अगम; नैडु मुकटु-विशाल चोटी; मुट्टुम्-टकरायगी; अन्नड-यह सोचकर; उरुवौडु-उस बड़े शरीर के साथ; वळैन्त मूर्त्तियान्-कुछ झुके हुए रूप वाला; चुट्टितन्-अपना बड़ा रूप दिखाता हुआ; निन्नरत्तन्-खड़ा रहा । ५८७

यह सुनकर हनुमान ने अपने हाथों को जोड़ लिया । अपने विशाल कन्धों को उन्नत करते हुए वह बढ़ने लगा । आकाश के भी ऊपर बढ़ेगा तो उसका सिर आकाश की चोटी से टकरा जाय और वह ढह जाय, ऐसी स्थिति हो गयी । इसलिए अपने विश्वरूप में थोड़ा झुका हुआ रहकर उसने अपना विराट् रूप देवी को दिखाया । ५८७

शैव्वळिप्	पैरुमैयैन्	रुरैक्कुज्	जैम्मैदान्
वैव्वळिप्	पुदमो	रैन्दिन्	मेलदो
अव्वळित्	तन्ऱैन्ति	तनुमन्	पालदो
अव्वळित्	ताहुमैन्	ऱैण्णु	मीट्टदे 588

शैव्व वळि पैरुमै अन्नड उरैक्कुम्-उत्कृष्ट मान्य; जैम्मै तान्-श्रेष्ठता; वैम् वळि-सबल; पुदम् ओर् ऐन्तिन् मेलतो-पाँच भूतों के पास है; अ वळित्तु अन्नड अँतिल्-वहाँ नहीं हो तो; अनुमन् पालतो-हनुमान के वश में है; अ वळित्तु आकुम्-कहाँ होगी; अन्नड अँण्णुम्-ऐसा सोचने को विवश करनेवाले; ईट्टु-प्रकार का था हनुमान का विश्वरूप । ५८८

(उसके उस विश्वरूप की महिमा देखिए ।) उत्कृष्ट, श्रेष्ठता सबल भूतों में है या इस हनुमान के पास है ? कहाँ है ? उसका रूप दर्शक के मन में यह सशय पैदा कर रहा था । ५८८

औत्तुयर्	कनहवान्	किरियि	तोङ्गिय
मैयत्तुरु	मरन्दौरु	मिन्मि	निक्कुलम्

सौम्यवृद्ध	वामन	सुमंत्रम्	समिद्रिम्	सुत्रेन्द्रनाम् 589
तौमित्र	तारुह			

कवक वामं किद्रियम्-वड्डं रवण (मरु) पवनं पर; ओङ्किम मरुम तौम-उमन उतै वर-वर मं; मिमं मिमि कुलम्-वड्डावकुल; सौम्यवृद्धं उड्डवामं अम-लसं वड्डं है वस; अतिष्ठ उग्र- (मरु) सम रूप से उमन; सुम-शरीर पर; पुत्र-पुत्र; समिद्रिम् वृद्ध अलाम्-राम के पाम्प प्रदेयी पर; सुत्रेम् मिमंरुम्-आमि और पौडि; तारकं तौमित्र-ताराम्ण पकड्डं लटक रूहै । ५८६

तत्राग्रे मं वड्डावकुल लसे रूहै हौ । ५८९

कण्डल	मद्रिवाड्ड	कडवड	काडिवियम्
विण्डल	मिरुगुड्ड	विळङ्गुम्	सुम्युयक्
कुण्डल	मिरण्डुमक्	कोळिम्	माव्वुड्डर
मण्डल	मिरण्डुड्ड	माड	कोण्डव 590

कण ललम् ओड्ड-अळि के साथ; अद्रि-वृद्धि के मी; कडवड काडिवियम्-पर गये रूप वालं के; विण ललम्-आकाश के; वड्डं पुट्ट-दोनों ओर; विळङ्कुम्-सौम्यमामन; सुम्यं अ कुण्डलम् इरण्डुम्-वे दोनों कर्णकुण्डल; अ कोळिम्-उमन मम-पड्डे मं; मा वड्डरुप मण्डलम् इरण्डु ओड्ड-वड्डल उड्डवम (सुम-मरु के) दो मण्डलों के साथ; माड कोण्ड-अलम दिव्यायी दिव्य । ५८०

उसका रूप अळि की क्या वृद्धि की भी पार कर गया था । (न अळि हारा देखा जा सका, न कल्पना द्वारा अनुमान भी किया जा सका ।) आकाश में उसके दोनों पायनों में जो उसके कर्णकुण्डल लटक रहे थे वे आकाश में रहतेवाले नवों गडों में दो अत्यधिक उड्डवम गडे, सुम और मरु के मण्डलों से मिश्र अत्युच्चल दिव्यायी दिव्य । ५९०

एलि दौरुक्करु गीदुं रूणाल, अलिपुं युमसं यमय नौकुवामं
 इण्डु और कुरङ्कु-यड्ड एक मरकट है; एण्डु इलडु-बलहीन है; अमंड-पुमा;
 रूणाल-लिङ्ग के मरकट में न सीमा जा सके; अलिपु-उम पुट्ट के समान; अयुमव-
 हुमुमान की; अमय नौकुवाम-मलीयाति देवतेवाले (विबिकम मीन); उलकु
 अलाम अड्डल-विपमपपक; मयकम्-जगन्नाथ; वण्ड उग्र-पुड्डे-अत्युक्कड गौरव;
 और निरुवमड्ड अमंड-एक ही स्थान में गया जातेवाला गडों; अम-पुमा सीवकर
 माण्ड उड्डम्-लज्जित हौ । ५८९

सर्वलोकमापक विबिकम भी इस हुमुमान की खूब देखी, जो यह समझी कि इसे एक वरु और वडे भी निर्वल वरुद गडों समझना चाहिए ।

यह तो लोकों की धुरी के समान है। लगता है कि बहुत उन्नत गौरव केवल एक (मेरे पास) ही नहीं है ! यह सोचकर वे लज्जित होंगे। ५९१

अण्डिशै मरुङ्गिन्तु मुलहम् याविन्तुम्, तण्डलि लुयिरैलान् दन्तै नोक्किन्
अण्डमैन् इदिन्तुर् यमरर् यारैयुम्, कण्डन्तन् शानुन्दन् कमलक् कण्गळाल् 592

अण् तिचै-आठों दिशाओं के; मरुङ्कितुम्-स्थानों में; उलकम् यावितुम्-सभी लोकों में; तण्डल् इल्-अक्षुण्ण; उयिर् अलाम्-सभी जीवों ने; तन्तै नोक्किन्-उसको देखा; तानुम्-उसने भी; तन् कमल कण्कळाल्-अपने कमलनेत्रों से; अण्डम् अन्तुडितुन् उरै-आकाश के अण्ड के वासी; अमरर् यारैयुम्-सभी देवों को; कण्डन्तन्-समक्ष देखा। ५९२

आठों दिशाओं के स्थानों के और सभी लोकों के सभी जीवों ने हनुमान को देखा। हनुमान ने भी अपने कमलनेत्रों से व्योमलोकवासी देवों को देखा। ५९२

अळुन्तुयर्	नडुन्दहै	यिरण्डु	पादमुम्
अळुन्दुर्	वळुत्तलि	निलङ्ग	याळ्हडल्
विळुन्ददु	निलमिशै	विरिन्द	वैण्डिरै
तळैत्तन्	पुरण्डन्	मीनन्	दामैलाम् 593

अळुन्तु उयर्-इस तरह जो बढ़ा; नैटुम् तकै-उस विश्वरूप हनुमान के; इरण्डु पातमुम्-दोनों पैर; अळुन्तुर्-खूब दबाते हुए; अळुत्तलिल्-जमे रहे इसलिये; इलङ्कै-लंका; आळ् कटल्-गहरे समुद्र में; विळुन्तु-मग्न हो गया; वैण् तिरै-श्वेत तरंगों; निल मिचै विरिन्त-भूमि पर फैली; तळैन्तन्-सब जगह भरों; मीतम् तामैलाम्-मछलियाँ; पुरण्डन्-लोटती हुई इधर-उधर चलीं। ५९३

इस तरह जो बढ़ा था उसके दोनों पैरों ने ज़मीन को खूब दबाया। इसलिये लंका का द्वीप समुद्र में धँस गया। तब श्वेत ऊर्मियाँ भूमि पर फैल आयीं और व्याप गयीं। मछलियाँ उन तरंगों पर लोटती हुई चलने लगीं। ५९३

वज्जियम्	मरुङ्गुलम्	मरुविल्	कड्पिताळ्
कज्जमुम्	बुरैवन	कळलुङ्	गण्डिलाळ्
तुज्जित्	ररक्करैन्	रुक्कुज्	जूळ्चियाळ्
अज्जितै	निव्वुरु	वडक्कु	वायैन्शाल् 594

वज्जि अम् मरुङ्कुल्-'वज्जि' नाम की चल्लरी के समान कटि वाली; अ मरु इल् कड्पिताळ्-उस अनिष्ट पातिव्रत्यशीला; कज्जमुम् पुरैवन्-कंज-सदृश; कळलुम् कण्डिलाळ्-(हनुमान के) पैर नहीं देखे; अरक्कर् तुज्चितर्-राक्षस मर गये; अन्तु उवक्कुम्-ऐसा सोचकर सुख; चूळ्चियाळ्-माननेवाली सीता ने; अज्चितैन्-भय खाती हैं; इव्वुरु-यह रूप; अटक्कुवाय्-छोटा बना लो; अन्शाल्-कहा। ५९४

ॐ इत्येता युनां मलंपादे पालितेयाम् विद्युमव विद्युमव वपवित्रराले
पञ्चमेवा छन्दो धौककरवेतारं पडिरेता प्रविष्टम् वपवित्रराले

नडन्दा यिडैये यैन्नालु नाणा नितक्कु नळिकडलैक्
कडन्दा यैन्ना लैन्नाहुड् गाऱ्गा मत्तैय कडुमैयाय् 597

काऱ्ग आम् अत्तैय-पवन ही सभ; कडुमैयाय्-वेगवान; मलैयोट्टुम्-पर्वत-सहित; उलकै इटन्ताय्-भूतल को (तुमने) उखाड़ लिया; विचुम्पे इटित्ताय्-आकाश को ढहा लिया; इवै चुमक्कुम्-इनको धारण करनेवाले; पटम् ताळ् अरवै-फनों के साथ रहनेवाले साँप को; और करत्ताल् पडित्ताय्-एक हाथ से छीन लिया; अत्तितुम्-ऐसा सुना जाय तो भी; पयन् इन्ऱ-वह तुम्हारे बल का सबूत नहीं हो सकता; इटैये नटन्ताय् अँन्नालुम्-समुद्र-मध्य पैदल चलकर आये तो भी; नितक्कु नाण् आम्-(तुम्हारे बल की दृष्टि से) वह तुम्हारे लिए शरम की बात होगी; नळि कडलै-बड़े सागर को; कटन्ताय् अँन्नाल्-पार किया कहना; अँन् आकुम्-उससे तुम्हारा क्या गौरव बढ़ता । ५६७

पवन के ही समान वेगवान ! पर्वत-सहित भूमि को उखाड़ दिया; आकाश को ढहा दिया; या इनके धारक शेषनाग को एक हाथ से छीनकर दूर पटक दिया । तब भी कोई बड़ा काम नहीं हुआ ! समुद्र में पैदल चलकर आए होते तो भी वह काम तुम्हारे लिए (गौरवजनक नहीं) लज्जाजनक ही रहेगा ! इस स्थिति में तुमने समुद्र को लाँघ दिया —कहने से तुम्हारा क्या गौरव बढ़ेगा ? । ५९७

ॐ आळि नैडुङ्गै याण्डहैद तरुळुम् बुरुळु मळिविन्ऱि
ऊळि पलवु निलैन्ऱुत्तुत्तु कौरव तीये युळैयात्ताय्
पाळि नैडुन्दीळ् वीरानिन् पेरुमैक् केऱ्पप् प्पहैयिलङ्गै
एळु कडऱ्कु मप्पुऱत्तु दाहा दिरुन्द दिळिवन्ऱो 598

पाळि नैटुम् तोळ्-स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले; वीरा-वीर; आळि-चक्रधर; नैटुम् कै-दीर्घ भुजाओं वाले; आण्टकै तन्-पुरुषश्रेष्ठ की; अरुळुम् पुकळुम्-कृपा और यश के; अळिवु इन्ऱि-विना क्षय हुए ही; ऊळि पलवुम्-अनेक युग; निलै निरुत्तुत्तु-स्थापित करने के लिए; नी औरवत्ते-तुम एक ही; उळै आत्ताय्-योग्य रहे; निन् पेरुमैक्कु एऱ्प-तुम्हारे गौरव के अनुरूप; पकै इलङ्कै-शत्रुनगरी लंका; एळु कटऱ्कुम् अप्पुऱत्तु-सातों समुद्रों के उस पार की; आकातु इरुत्तु-बनी नहीं रही यह बात; इळिवु अन्ऱो-गौरव घटानेवाली हो गयी न । ५६८

स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले ! चक्रधर दीर्घ हाथों के श्रीराम की कृपा और यश को अनेक युगों तक अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अकेले तुम पर्याप्त बन गये हो ! यह शत्रु-नगरी लंका सातों समुद्रों के उस पार रहती तो वह तुम्हारे गौरव के अनुरूप होता । यह ऐसा नहीं रही (पर एक ही छोटे समुद्र के मध्य रही) । यह बात तुम्हारे लिए गौरववर्द्धक नहीं रही, महिमा पर कम करनेवाली रह गयी । ५९८

अखि मादे मुखीदे पाउर लीदे यमबुलबलिने
 अखि मादे अयलीदे नेउर मादे नेउरबलिने
 अखि मादे निबोदे नोदि योदे निवक्कबलिने
 अखि मादे कुण्डगळले विरिजले सुदला सुलालर 599

निवक्क-गुहारी; अखिबम-बुद्धि और; उखम-रूप और; आउरम-शक्ति; एमबुलबलिने अखिबम-पुर्वेदिमा का संयम; अयली-ऊपर; नेउरम-विबक; नेउरबलिने अखिबम-विबक का फल; निबम-विचार; नोदि-नय; ईदे-यही; अउरबलिने अयली-ऊपर; सुलालम-विबि आदि; सुलालर-उत्तम देव; कुण्डकळले-अपने गुणों से; अखिबम-अभाव-ग्रस्त है म। ५६६

गुहारी बुद्धि, गुहारी रूप, बल-विक्रम, गुहारी इन्द्रियसंयम, गुहारी ऊपर, गुहारी विबक, विबक का फल, गुहारी विचार, गुहारी नय-आहे। ऐसा है तो विरिब आदि देवों के पास गुणों का अभाव हो मानना चाहिए। ५९९

निबम रिपउर बलरकर बौक नोकि बोरउर बोरउर
 निबम रिपउर बलरकर बौक नोकि बोरउर बोरउर
 निबम रिपउर बलरकर बौक नोकि बोरउर बोरउर
 निबम रिपउर बलरकर बौक नोकि बोरउर बोरउर 600

निबम ने-विद्युत-सदृश; अखिउर-दलीरे; बल अरकर-सबल राक्षसों की; बौकम नोकि-बहुलता देवकर; बोरउर-बोर अरिभ का; निबम रिपउर-अज की छड़; और गुण बल-एक सहायक न रही; निबम नोकि-बहु कमी देवकर; उतना निबम-सीध-सीधकर; उदकिउर-जो मान हो रही थी वह म; अलम अखिउर-सर्वसंशयविमुक्त हो गया; अखि उखिउर-गुहारी की साक्ष ली; नोदि-उत्तम हो; अम कोम-से राजा के; गुण आल-साथ हो तो निबम अम आचार-राक्षस क्या हो। ६००

मुने बिजली-से दलीरे राक्षसों की बड़ी संख्या देवकर सोचा कि श्रीवीरराघव का उनके छोटे भाई के अलावा कोई सहायक नहीं है। यह अभाव सोचकर मैं मानमन हो रही थी। अब वह संशय सब मिट गया। राहत की साँस ले रही हूँ। जब गुहारी से परितेव के सहायक हो गये तो राक्षस क्या हो। —मिट जायों। क्या हो आश्रय (हो गया) है। ६००

अखि मादे बलरकर निबम मायान विरिनिर
 अखि मादे अखिबम अखिबम अखिबम
 अखि मादे अखिबम अखिबम अखिबम
 अखि मादे अखिबम अखिबम अखिबम 601

तिरुविन्-श्रीलक्ष्मीदेवी के; कळुत्तु तिरु अन्ताळ्-कण्ठ के अहिवातसूत्र के समान देवी; माण्टेन् अँतित्तुम्-मर जाऊँगी तो भी; पळुत्तु अन्ने-हानि नहीं; इन्ने-आज ही; माया चिरे निन्ऱ-कभी न छूटनेवाली कारा से; मीण्टेन्-मुक्त हो गयी; अँन्तै ओळुत्तार्-मुझे सतानेवालों को; तम् कुलङ्कळोटुम्-उनके कुलों के साथ; वेर् अशूत्तेन्-निर्मूल कर दिया; अँन् कोन्-अपने पतिदेव के; पौलम् कळुलुम्-सुन्दर चरण; पूण्टेन्-धर लिये; पुकळे अन्ऱि-यश के सिवा; पुन् पळियुम्-नीच अपयश; तीण्टेन्-स्पर्श नहीं कहूँगी; अँन्ऱ-कहकर; मत्तम् मकिळ्न्ताळ्-आह्लादित हुई। ६०१

स्वयं श्रीलक्ष्मीदेवी के कंठ के मंगलसूत्र (सुहाग-चिह्न) -सी देवी ने आनन्द के साथ कहा कि अब मैं मर जाऊँ तो भी कुछ नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि मैं आज लम्बे कारागृहवास से छूट गयी। मुझे दास देनेवाले राक्षसों के कुल को मैंने जड़ से काट मिटा दिया। अपने पतिराज के सुन्दर चरणों को सिर पर धारण कर लिया है। यश ही यश मिल गया; अपयश से सम्पर्क नहीं रहा। ६०१

अण्णङ् पेरियो नडिवणङ्गि यऱिय वुरैप्पा नरुन्ददिये
वण्णक् कडलि निडैक्किडन्द मणलिऱ् पलराल् वानरत्तित्
अँण्णङ् करिय पडैत्तलैव रिरामऱ् कडियार् यात्तवर्त्तम्
पण्णैक् कौरव नैत्तप्पोन्दे नेवक् कडव पण्णैय्वेत् 602

अण्णल् पेरियोन्-बहुत महिमामय हनुमान; अटि वणङ्कि-चरण-वन्दना करके; अऱिय उरैप्पात्-समझाते हुए बोला; अरुन्दतिये-अरुन्धती (-समाना); इरामऱ्कु अटियार्-श्रीराम के दास; अँण्णङ्कु अरिय-अगणित; वानरत्तित् पडै तलैवर्-वानरयूथपति; वण्णक् कडलिन् इटै-(काले) रंगीन समुद्र में; किटन्त-पड़े रहनेवाले; मणलिल् पलर्-बालुओं से भी अधिक अनेक है; यात् अवर् तम् पण्णैक्कु-मैं उनकी भीड़ में; कौरवन्-एक दास हूँ; अँत् पोन्तेन्-ऐसा भाग्य पाया हूँ; एव कडव-आज्ञापित; पणि चैय्वेन्-सेवाएँ अदा करूँगा। ६०२

महिमा में बढ़े हुए हनुमान ने देवी से वानर-सेना की महत्ता यों कही। उसने सीताजी के चरणों पर नमस्कार करके कहा कि अरुन्धती-समाना देवी! श्रीराम के अधीन जो वानरयूथ है, उनकी संख्या समुद्र-तल में के बालुओं की संख्या से भी अधिक है। उनका मैं एक दास बना हूँ। उनकी आज्ञा मानकर उनकी सेवाएँ अदा करता रहता हूँ। ६०२

वैळ्ळ मँळुव दुळदन्ऱो वीरन् शेत्तै यिव्वेलैप्
पळ्ळ मौरैहैन् नीरळ्ळिक् कुडिक्कप् पोदुम् बात्तमैयदो
कळ्ळ वरक्कर् कडियिलङ्गै काणा दौळिन्द दालन्ऱो
उळ्ळ दुणैयु मुळदाव दरिन्दु पित्तु मुळदामो 603

वीरन् चैत्तै-श्रीराम की सेना; वैळ्ळम् अँळुपु उळु-सत्तर 'वैळ्ळम्' की है;

श्रीराम के साथ जो सेना है, उसकी सहायता से नर ब्रह्मन् (प्रवर्त) है। यह समुद्र उनके सामने गाढ़ा है। एक चरुण पीने के लिए भी इसका जल प्यास न पड़ता। यह चौरों की लंका अदृश्य रहे गयी। तभी न अब तक वही विद्यमान रही। उसका अतिरव जान लेने के बाद भी उसका अतिरव भी रहेगा क्या ? । ६०३

वालि	प्रियव	नवमंभूतदमं	मपिनदमं	उमिनदमं	वयकुकुमुदमं	शामव	भूतेभवाभावमं	कवयमं	कवयामुकमं	मदमंभूतमं	604
वालि	मिहवमं	कुमुदामुकमं	पवशमं	कममवमं	मयमभूतमं	कवयमं	कवयामुकमं	कवयामुकमं	कवयामुकमं	मदमंभूतमं	604

[illegible]

वाली का आई सुगंध, वाली का पुल आंगद, मुंद, दुसिर, वाली कुसुंद, नील, शबरा, कुसुंदराक्ष, पनरा, जातब, बड़ जातबवान, कालदेव-सम दुसुर्ब, करब, गवरा, गवराक्ष और विषवविष्यात नल, शब, विरद, हिरद, मदन; । ६०४

तमवत्	जम्बू	रविपर्वरीषं	उदितम्	वदन्	शङ्खवलियुग्मं
दिग्ध	चलद्वा	हृदयवल्लि	सूक्तिके	मिष्टके	पिरामनगं
अमिव	नव्वम्	पञ्चमेनलेव	रवरं	नोक्कि	निववरकरकरं
वमिव	मुलपा	पुरुषिप्रवर्णम्	वीदारं	कणकं	वरमृगुल्डं

605

[illegible]

तलैवर्-यूथप; वरम्पु उण्टो-(क्या) सीमा भी है; अवरै नोक्किन्-उनको लेकर विचार करें तो; वम्पिन् मुलैयाय्-अंगियाबद्ध स्तनों वाली देवी; इव् अरक्कर्-ये राक्षस; उरै इटवुम् पोतार्-अदद के रूप में भी काफ़ी नहीं होंगे । ६०५

थम्ब, धूम्र, दधिमुख, शतबली —ऐसे नामों के वे इस लोक के साथ सारे लोकों को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले हैं । श्रीराम के हाथ के शरों के समान सद्योपकारी हैं । उनकी शक्ति और संख्या की कोई भी सीमा है क्या ? (नहीं) । अंगियाबद्ध स्तनों वाली माते ! उनकी संख्या देखो तो ये राक्षस सांकेतिक अदद के लिए भी पर्याप्त नहीं होंगे । (तमिळ में 'उरै' उसको कहते हैं जिसे अत्यधिक संख्या के पदार्थों को गिनते वक्त प्रतिनिधि अदद के रूप में रखा जाता है । उदाहरणार्थ— किसी पदार्थ के एक हजार को गिनने पर उन पदार्थों में से एक लेकर अलग रखा जाता है । पूरा गिनने के बाद "उरै यो" की संख्या का हजार से गुना करके पूरी संख्या आँकी जाती है ।) । ६०५

शैन्ऱे नडिये नुत्तक्किन्नल् शिरिदे युणर्त्तु मत्तुणैयुम्
अन्ऱे यरक्कर् वरक्कमुड नडैव दल्ला दरियिन्ऱे
मन्ऱे कमळुन् दौडैयन्ऱे निरुदन् कुळुवु मानहरुम्
अन्ऱे यिरैञ्जिप् पिन्नरुमोन् रिशैप्पा नुणर्न्दा नीरिल्लान् 606

अटियेन् चैन्ऱेन्-मैं जाकर; उतक्कु इत्तल्-आपके दुःख को; चिरिते-किंचित् भी; उणर्त्तुम्-ज्योंही बताऊँगा; अत्तुणैयुम्-त्योंही; अरक्कर् वरक्कम्-राक्षसवर्ग; उटन् अटैवतु-एक साथ (वानरों के हाथ) पड़ जायँगे; अल्लातु-वही नहीं; निरुदन्-कुळुवुम्-रावण का सारा परिवार; मानहरुम्-और उसका बड़ा नगर; अरियिन् कै-वानरों के हाथ में; मन्ऱे कमळुम्-सुगन्धि-निसारक; तौटै अन्ऱे-पुष्पमाला बन जायँगे न; अन्ऱे-ऐसा, साफ़ कहकर; इरैञ्चि-नमस्कार करके; पिन्नरुम्-फिर भी; ईरिल्लान्-अनन्तआयु ने; ओन्ऱु इचैप्पान्-एक बात कहने की; उणर्न्तान्-सौची । ६०६

दास मैं जाऊँ और आपका संकट थोड़ा ही समझाऊँ, इतने में ही राक्षसों का वर्ग ही नहीं, पर रावण के सारे परिवार और लंका नगर वानरहस्तगत सुगन्धित पुष्पमाला (यानी छिन्न-भिन्न) बन जायगी । (तमिळ में मसल मशहूर है— वानरहस्तगत पुष्पमाला-सा । —बन्दर उसका नाश कर देता है ।) हनुमान ने देवी को वानरों की शक्ति का साफ़ परिचय दिया । फिर उसने उनके चरणों पर नमस्कार किया । अनन्तआयु (चिरंजीव) हनुमान ने और एक बात कहनी चाही । ६०६

[illegible]

क्या लाय ? आपकी श्रीराम के सामने (ले जा) दिखाकर मैं उनके चरणों में नमस्कार कछूंगा। आप देखें। यही समय है। ६०८

अतिथेयं उरु-भारः कंदति-सुनिपः सुनिर्गमकमल-कोप मन करः
 केवल-शरीर-वशः वीरतिष्ठितु-भार-हेमा नोः अवत-विरु- (वाद) उमकी
 मारताः विन अमर- (अधुना) काम मर्तो होमाः कंदति-वर्त-वर्त-सेः इति
 अने पय-अव द्या लाभ हैः इति मने-आपकीः इति मने-अति-आराम के
 (पाम ले जाकर) समक्ष दिवाकरः अति तीव्र-वर्ण पर नमस्कार कर्माः इति

[illegible]

द्वैतमान ने यों सोचा— फुटरीकानिबया श्रीलक्ष्मीदेवी, ये वहुते कष्ट पा रही हैं। भैया ! इनके दुःख के समान दुःख कहीं पाना भी मुलभ है क्या ? इन आदि अष्टनायक श्रीराम की देवी को ले जाना ही बलाव्य होना । ६०७

७०

[illegible]

5. चक्राभ्यां चक्राभ्यां (चक्राभ्यां चक्राभ्यां)

मयिर् तुन्रि पौरुन्तिय-कोमल बालों से भरे; पुयत्तु-कन्धों पर; इतितु इस्तति-
सुख से रहिए; तुयर् विट्टाय्-दुःख दूर कर लेंगी; इन् तुयिल् विळैक्क-सुखद निद्रा
होगी और; ओर् इमैप्पिन्-पलक झपकते; इरै वैकुम्-जहाँ भगवान श्रीराम रहते
हैं; कुन्रिटै-उस पर्वत पर; उतै कौटु-आपको लिये हुए; कुतिप्पैन्-कूदगा;
इटै कौळ्ळैन्-बीच में नहीं ठहरेगा । ६०६

स्वर्णमय सुन्दर लता-समाना देवी ! आप मेरे कोमल बालों से युक्त
कन्धों पर सुख से आसीन हो जाइए, दुःख से विमुक्त हो जाइए ! सुख से
सो जाइए; एक पल में आपको ले उस पर्वत पर कूद पड़ूंगा जिसमें हमारे
देव प्रभु श्रीराम ठहरे हुए हैं । ६०९

❀ अरिन्दिडै	यरक्कर्त्तौडर्	वारहळुळ	रामेल्
मुरिन्दुदिर	नूरियैन्	मनच्चिन	मुडिप्पैन्
नैरिन्दकुळ	निन्तिलैमै	कण्डुनैडि	योन्बाल्
वैरुङ्गैबैय	रेनौरव	रानुम्विळि	यादेन् 610

नैरिन्त कुळल्-घुंघुराली केशिनी; अरक्कर् अरिन्तु-राक्षस जानकर; इटै
तौटर्वार्कळ् उळर्-बीच में लड़ते; आमेल्-बनेंगे तो; ओरुवरानुम्-किसी से भी;
विळियातेन्-मारा नहीं जाऊंगा; मुरिन्तु-छिन्न-भिन्न होकर; उतिर-गिर जायें
ऐसा; नूरि-उन्हें मारकर; अन् मन् चित्तम्-अपने मन का क्रोध; मुटिप्पैन्-
उताहूंगा; निन्तिलैमै-आपकी स्थिति; कण्डुम्-देखने के बाद भी; नैटियोन्
पाल्-ऊँचे क्रुद के श्रीराम के पास; वैरुम् कै-खाली हाथ; पैयेन्-नहीं जाऊंगा । ६१०

घुंघुराले केश वाली देवी ! अगर राक्षस लोग इसकी टोह पाकर बीच
में रुकावट डालेंगे तो मैं मरूंगा नहीं । (मुझे अमरता का वर मिला है ।)
उनको चूर-चूर करके मार दूंगा और अपना कोप साध लूंगा । आपको
इस स्थिति में देखने के बाद मैं विष्णु-रूप श्रीरामचन्द्र के पास खाली हाथ
नहीं जाऊंगा । ६१०

इलङ्गैयोडु	मेहुदिहौ	लैन्निन्तु	मिडन्दैन्
वलङ्गौळौर	कैत्तलैयिन्	वैत्तैर्दिर्	तडुप्पान्
विलङ्गिनरै	नूरिवरि	वैजिलैयि	नोर्दम्
पौलङ्गौळ्कळ	राळ्हुवैनि	दन्नैपौर	ळत्ताल् 611

अन्तै-माते; इलङ्कैयोडुम् एकुति-लंका के साथ ही ले जाओ; अन्तितुम्-
कहेंगी तो भी; इटन्तु-उखाड़ लेकर; अन्-अपने; वलम् कौळ् और कैत्तलैयिल्
वैत्तु-दाहिने हाथ पर रखे; अतिर् तडुप्पान्-सामने रोकने आये; विलङ्कितरै-
शत्रुओं को; नूरि-मारकर; वरि वैम् चिलैयितोर् तम्-सबन्ध भयंकर धनुर्धर श्रीराम
और लक्ष्मण के; पौलम् कौळ् कळल्-सौन्दर्ययुक्त चरणों पर; ताळ्कुवैन्-नमन
करूँगा; इतु पौरुळ् अन्-यह कोई (बड़ी) बात नहीं है । ६११

माते ! अगर आप यह कहें कि लंका के साथ मुझे ले जाओ, तो उसे

उछाड़ लेकर अपने दाहिने हाथ में रख लीं और सामने रोकने आनेवाली की मारकर सबंध कठोर धनुष और शीराम और लक्ष्मण के पास जाऊँगा और उनके सुन्दर पापलधारी चरणों पर नमस्कार कलूँगा । यह कोई बड़ी चीज नहीं है । ६११

ॐ अरुनदक्षिणं
रुतेतिपथं
हरेकचरुं
शुभेकनं
मरुनदक्षेय
देतिवने
वनेनरुधिरं
वर्षपिबं
पुनरेवपरि
वोडुमोर
वोडुपुत्रं
हिलेनाळं
इरुनदनाळं
नपपुडेरि
ननेनहिसे
युनेनामं 612

अरुनतिल-अरुधली-समाना; अळकरुं अरुं चनेक-ओ सुन्दर राम के पास जाकर; उने मरुनद अनेय देति-आपकी अमुन-सम देवी; वनेवर-बचकों की; नरे विरु वर्षपिब-बड़ी कारा में; पूरुम गुपरिवोडु-बड़े दुःख के साथ; आरु वोडु पुडुलिकनाळ-मुडिल पाय विना; इरुनतनाळ-रही; अने-यह; पकरिने-कलूँगा नै; अने अडिसे-मेरी दासना; अने आम-भया (अने रखती) होगी; उरुतेति-बनाडुप । ६१२

अरुधली-सी देवी ! अगर मैं सुन्दरमुडिल श्रीराम के पास जाकर यह कहूँ कि 'आपकी अमुन-सम देवी बचकों की दीर्घ वन्दना की दिशति में हैं; किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं' तो मेरी सेवकाई क्या रही ? आप ही सीवकर कहें । ६१२

ॐ गुणोडेरव
हरेडियय
यनेतिवने
मनेतिवने
विपरेवने
ननेनेयुमं
विरिवने
शुभेने
कपोडवर
हिरुडिने
विपरेकुकुडि
नककुळ
हरेनी 613

गुण नरेडेरु अकरुडिय-भग न लगी; गुपतेतिवने-सुजाओं के साथ; पुकेने-पुडुं; विपरेवर वनेनेयुम-शुभों का बल और; विरिवने-विरवार के साथ; उरु चनेने-बछाणें; कपोरु वरिकेरुडिने-नहीं ले आया; उडिरुकु उरुति कपोरु-प्राणी का हिस कर लिया; कपोरु वरिकेरुडिने-देख न आ सका; अने-ऐसा; कळकरुनी-कहूँ क्या । ६१३

मैं स्वयं गुणविहीन भूजाएँ लेकर जाऊँ और गुण का बल बछाणें ? उनसे कहूँ कि सीताजी की नहीं ले आ सका ! अपने प्राण ही बचा सका । सीताजी से मिली थी नहीं ! । ६१३

इरुककुमडिलं
शुळेरुडिय
नडुगेयि
मपपिनं
उरुकुडियरि
यानिलेन
रकेकरु
मोनेर
मुवकेडिनर
रकुलम
विलेविवने
मुडिय
पौरुकेकवडलं
हरेविनेम
विपुडेरि
हिनरे 614

मतिल् चूळ् इरक्कुम्-प्राचीरों से घिरी; कटि इलङ्कैयै-सुरक्षित लंका को;
इमैप्पित्तु-पलक झपकते; अरियाल् उरक्कि-आग में पिघला कर; इक्ल् अरक्करैयुम्-
शत्रु राक्षसों को; ओत्तुडा मुरक्कि-एकत्र मारकर; निरुत्त कुलम् मुटित्तु-राक्षस
कुल का नाश करके; वित्तै मुर्त्ति-कतव्य पूरा करके; पोरक्क अक्क-शीघ्र जाओ;
अन्तित्तुम्-कहेंगी तो भी; अतु-वह; इत्तु-आज; पुरिकित्तु-कहेंगा । ६१४

प्राचीर-सहित लंका को पलक झपकते आग से पिघला डालो; युद्ध
करने आनेवाले राक्षसों को एक साथ मारो । राक्षसकुल को ही मटिया-
मेट कर दो । यह सब करके शीघ्र चलो । —अगर आपकी यही आज्ञा
हो तो अभी वैसा कर दूंगा । ६१४

इन्दुनुद	निन्नीडव	णैय्दियिहल्	वीरन्
शिन्देयुरु	वैन्दुयर्द	विन्दर्त्तळि	वोडुम्
अन्दमिल	रक्करुल	मर्त्तविय	नूर्ति
नन्दलिल्पु	विक्कणिडर्	पिर्क्कळैद	नन्नाल् 615

इन्तु नुतल्-चन्द्र-ललाटिनी; निन्तीट्टु-आपके साथ; अवण् अय्ति-वहाँ जाकरं;
इक्ल् वीरन्-युद्धवीर श्रीराम का; चिन्तै उरु वैम् तुयर्-मानसिक सन्ताप; तविर्न्त
र्त्तळिवोडुम्-दूर होने से जो होगी उस निश्चिन्तता के साथ; अन्तम् इल्-निस्सीम;
अरक्कर कुलम्-राक्षसकुल को; अरु अविय-मार मिटाने हुए; नूर्ति-हत कर;
नन्तल् इल्-अक्षय; पुक्कण्-भूतल में; इटर्-दुःख को; पित्तु कळैतल्-बाद
दूर करना; नन्नु-अच्छा होगा । ६१५

चन्द्र-सम भाल वाली ! आपको उधर ले जाऊँगा । युद्धवीर श्रीराम
का कठोर दुःख दूर हो जायगा । उससे उत्पन्न निश्चिन्तता के साथ, बाद,
इधर आऊँ राक्षसों के वर्गों को निर्मूल करूँ और उनका नाश करके अक्षय
भूमि का संकट दूर करूँ —यही श्लाघ्य लगता है । ६१५

वेरिनिवि	ळम्बवुळ	दन्नुविदि	यालिप्
पेरुपैर	वैन्गणरु	उन्दरुळु	पिन्बोय्
आरुदुय	रज्जौलिळ	वज्जियडि	यन्त्रोळ्
एरुहडि	दैन्नुतीळु	दिन्नुडिप	णिन्दान् 616

अम् चोल्-मधुरवाणी; इळ वज्जि-बाललता-सी भगवती; वेरु-अन्य; इति
विळम्प-अब कहने के लिए; उळतु अन्नु-है नहीं; वित्तियाल्-आज्ञा करें तो;
इप्पेर् पेर-यह सौभाग्य पाने का; अन्तु कण्-मुझे; अरु तन्तुरुळु-मौका देने की
कृपा कीजिए; पित्तु पोय्-बाद; तुयर्म् आरु-दुःख शान्त कर लीजिए; अटियन्
तोळ-मेरे कंधों पर; कटितु एरु-शीघ्र चढ़ जाएँ; अन्नु-ऐसा; तौळुतु-विनय
करके; इन् अटि-सुखदायक चरणों पर; पणिन्तान्-नमस्कार किया । ६१६

मधुरभाषिणी 'वज्जि' लता-सी भगवती ! आगे कहने को कुछ नहीं
है । आप आज्ञा दें और मुझे यह सौभाग्य प्राप्त कराने की दया करें

अनृत्रि युम्बिरि दुळ्ळदौन् रारियन्, वेंत्रि वेंज्जिलै माशुणुम् वेरिति
ननृत्रि येंत्तबदम् वज्जित्त नाय्हळिन्, निन्त्र वज्जनै नोयु निन्नैत्तियो 620

अनृत्रियुम्-और भी; पिरितु औन्त्र-अन्य एक (बात); उळ्ळु-है;
आरियन्-पूज्य श्रीराम के; वेंत्रि वेंम् चिलै-विजयी कठोर धनु; माचु उणुम्-
कलंकित हो जायगा; इति वेर-और भी एक दूसरी बात है; ननृत्रि अन्तपतम्-
लोकक्षेमार्थ रचित यज्ञ की हवि को; वज्जित्त-वंचना से ले जानेवाले; नाय्हळिन्
निन्त्र-कुत्तों के पास जो रहती है; वज्जनै-वह वंचक बुद्धि; नोयुम् निन्नैत्तियो-
तुमने भी सोची क्या । ६२०

और भी एक बात है । पूज्य श्रीराम के विजयी धनु पर कलक लग
जायगा । इसके अलावा और भी एक कारण है । तुम भी उन वंचक
कुत्तों का-सा विचार अपने मन में लाये जो लोकरक्षक यज्ञ की हवि को
वंचना से चुरा ले जाते हों ! । ६२०

कौण्ड पोरिनैन् गौर्इवन् विर्इळिल्, अण्ड रेवर नोक्कवैन् ताक्कैयैक्
कण्ड पोररक् कन्विळि काहङ्गळ्, उण्ड पोदत्त्रि यानुळै नावैतो 621

कौण्ड पोरिन्-आगामी युद्ध में; अम् कौर्इवन्-मेरे राजा के; विल् तोळिल्-
धनुकर्म को; अण्डर् एवरम् नोक्क-सभी देवों के देखते (विस्मय करते) रहते;
अन् आक्कैयै-मेरे शरीर को; कण्ड-जिसने देखा; पोर् अरक्कन् विळि-युद्धरत राक्षसों
की आँखों को; काकङ्कळ्-कौए; उण्ड पोतु अनृत्रि-जब खाएँगे तब के सिवा;
यान् उळैन् आवैतो-मैं सचमुच जीऊँगी क्या । ६२१

देखो । आगामी युद्ध में देवों के मेरे श्रीराजाराम का धनुकार्य
देखते रहते कौए राक्षस रावण की उन आँखों को खाएँगे, जिन्होंने मेरे
पावन शरीर को कुदृष्टि से देखा था । तभी मैं कृतकृत्य होऊँगी ।
अन्यथा नहीं । ६२१

वैर्त्रि नाणुडै विल्लियर् विर्इळिल्, मुर्इ नाणिल रक्कियर् सूक्कोडुम्
अर्इ नाणिन रायित्त पोदत्त्रिप्, पैर्इ नाणमुम् वैर्त्रिय दाहुमो 622

वैर्त्रि नाण् उटै-विजयी डोरे-सहित; विल्लियर्-धनुर्धर; विल् तोळिल्
मुर्इ-अपने धनुओं का कार्य साध लें; नाण् इल् अरक्कियर्-निर्लज्ज राक्षसियाँ;
अर्इ सूक्कोडुम्-नासिकाहीन और; अर्इ नाणितर्-मंगल-सूत्र-रहित (विधवाएँ
बनकर); आयित्त पोतत्त्रि-नहीं वनँगी तब तक; पैर्इ नाणमुम्-मेरी लज्जा (मेरा
मान); पैर्त्रियतु आकुमो-अर्थयुक्त रहेगी क्या । ६२२

विजयशील डोरों-सहित धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण धनु का कार्य
साधेंगे और निर्लज्ज राक्षसियाँ नासिका (आभरणों) से और मंगलसूत्रों
से हीन हो जायँगी । तभी न मेरी लाज रहेगी ! नहीं तो रहेगी
क्या ? (इस पद में आये 'नाण्' शब्द के तीन अर्थ हैं— धनु का डोरा,

है (1) । ६२२

लज्जा या मान और मंगल-सुख जो दक्षिण में अहिंसा के चिह्न के रूप में
विवाद के अवसर पर पर धारा वध की पड़नाया जाता है । वह सुख
होना नैतन रहता जाता है । जहाँ होने पर पुनः वदल दिया जाता

प्रीति	उत्पल	लज्जा	प्रीतिवत्
अङ्ग	मानवत्	माहित	देहिनि
इति	उपमा	उत्कृष्टि	उत्कृष्टि
कर्म	मानवितरक	कर्मवत्	मानवितरक

६२३ गान्धर्व

प्रीति प्रकृत-स्वभाव-पवन पर स्थित; उत्कृष्ट-लका; प्रीतिवत्-अभिनी
की; अङ्ग मानव-इति का वडा पवन; आकलने अति-नही वनी तो;
इति प्रपुष्प-उत्तम कुल में जन्म; अति-कर्म-और अपना स्वभाव; उत्कृष्ट
इति कर्म-निर्दिष्ट पतिवत्; मान-मै; प्रकृत-इति की; उत्कृष्ट-कर्म-कर्म;
काटके-प्रमाण करने। ६२३

यह स्वर्णनगरी लका इति की निर न वनी तो मैं अपने
उत्तमकुल-जन्म, सदाचार और अविद्य पतिवत् की कैसे प्रमाण कर
सकती ? । ६२३

अवलम्बे माके मिलनेय दाहिनी, अनेने नीचे वल्लेगले दाहिने
शीर्षाले नार्वड वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले
अनेने माके-परतीक पय के समान दाहिनी की; उत्कृष्ट-आर्त-लका
लका; अने वल्ले-अने याप से; वल्ले-जना जना; अने-वले;
वृषव-पति और के; वल्ले आर्त-अने की वल्ले के लिए; मान-
कलक होना; अने-मानक; वल्ले-क विद्या । ६२४

सुनी ! मैं याप दे दे तो केवल लका तक ही उसकी मायाकारी वल्ले
सीमा रहेगी ? नहीं, निरसीमा सारे लोकों की जना जना। पर ऐसा
करने से पावनपति और के विजयकीदण्ड की वल्ले पर वल्ले लका
जाया। इसलिये मैंने उस विचार की एक दम त्याग दिया है । ६२४

वेह मुण्डरे केळ सुपुसुपुय, एह वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले
आह सुपुसुपुय निनेपु माणिक, कर्म वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले
सुनी; एह वल्ले-वल्ले यश के वल्ले के; वल्ले अनेने-यारी के वल्ले; वल्ले-
मय; आह पुपुसुपुय-यश वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले वल्ले
आकार; आह वल्ले-यश है; कर्म-वल्ले (विल्ले) लका कहे; वल्ले वल्ले-यश
६२५; कर्म-वल्ले (वली) ही सकेगा यश । ६२५

सत्यानुगामी ! और भी एक कारण है ! दिने-दिने बढ़नेवाली वीरता के अपने नाथ श्रीराम के शरीर के सिवा इन्द्रिय-संयमी तुम्हारा भी स्पर्श कर सकूंगी क्या ? क्योंकि लोग तुम्हारे इस शरीर को पुरुष ही तो मानते हैं ! । ६२५

तीण्डि तान्नेति तित्ततै शेण्बहल्, ईण्डु मोवुयिर् मैय्यि तिमैप्पिन्मुन्
माण्डु तीरवत्तै रेनिलम् वन्कैयाल्, कीण्डु हीण्डैळुन् देहितन् कीळ्मैयान् 626

कीळ्मैयान्-नीच-स्वभाव रावण; तीण्डित्तान् अँतिन्-स्पर्श करता तो; इत्ततै चेण् पकल्-इतने लम्बे दिन; उयिर्-प्राण; मैय्यिल्-शरीर में; ईण्डुमो-टिके रहते क्या; इमैप्पिन् मुन्-पलक मारने की देर के अन्दर ही; माण्डु तीरवन् अँत्तरे-मर जाती, समझकर ही तो; निलम्-भूमि को ही (मेरे साथ); वन् कैयाल्-कठोर हाथों से; कीण्डु कीण्डु-उखाड़ लेकर; अँळुन्तु एकितन्-ऊपर उठकर (आकाशमार्ग से) गया । ६२६

नीच-मन रावण ने मेरा स्पर्श किया होता तो क्या इतने दीर्घ दिन मेरे प्राण शरीर में टिके रहते ? रावण को मालूम था कि अगर वह मुझे छूता तो पलक झपटे मैं मर जाती । इसीलिए वह अपने कठोर हाथों से पर्णशाला के साथ भूमि को भी खोद ले आकाश में उठ आया । ६२६

मेवु शिन्दैयिन् मादरै मैय्तीडिल्, तेवु पौन्डलै शिन्दुह नीयैन्प
पूविन् वन्द पुरादत्त नेपुहल्, शाव मुण्डैत्त दारुयिर् तन्ददाल् 627

मेवु चिन्तै इल्-मिलने की इच्छा न रखनेवाली; मादरै-स्त्रियों को; नी मैय् तीडिल्-तुम शरीर छुओगे तो; तेवु-देवी वर प्राप्त; पौन् तलै-स्वर्णकिरीटयुक्त सिर; चिन्तुक-कटकर गिर जायँ; अँत-ऐसा; पूविन् वन्त-कमलपुष्प पर प्रकट; पुरातत्तत्ते पुकल्-पुरातन पुरुष ब्रह्मा का ही कहा हुआ; चावम् उण्डु-शाप एक है; अँतु- (उसी ने); दारुयिर्-मेरे प्राण; तन्तु-सुरक्षित रखे । ६२७

और एक शाप है जिसको कमलपुष्प पर प्रगट पुरातनदेव ब्रह्मा ने स्वयं उसे दिया था । जो तुमको नहीं चाहतीं उन स्त्रियों को बलात् स्पर्श करोगे तो तुम्हारे दिव्यवरसंयुक्त और स्वर्णकिरीटयुक्त सिर खण्डित होकर चू जायँगे । उसी शाप ने मुझे प्राणदान दिया है ! । ६२७

अन्न शाव मुळ्दैत्त वाणैयाल्, मिन्नु मौलियन् वीडणन् मैय्मैयान्
कन्ति येन्वयिन् वैत्त करुणैयाल्, शौन्त दुण्डु तुणुक्क महर्ऱुवाळ् 628

अन्न चापम्-वह शाप; उळ्ळु अँत-है ऐसा; आणैयाल्-शपथ खाकर; मिन्नु मौलियन्-चमकदार किरीटधारी; मैय्मैयान्-सत्यसंध; वीडणन् कन्ति-विभीषण की कन्या (त्रिजटा) ने; तुणुक्कम् अकर्ऱुवाळ्-मेरा डर दूर करने हेतु; अँन् वयिन्-मेरे प्रति; वैत्त करुणैयाल्-रखी दया के कारण; शौन्तु-जो कहा; उण्डु-वह समाचार है । ६२८

आद लान्तु कारिय मनुरैय, वेद नायहन् बालित्ति मीण्डत्तै
पोदल् कारिय मँनुरत्तळ् पूवैयक्, कोदि लानु मिनैयन् कूडित्तान् 632

ऐय-तात; आतलाल्-इसलिए; अतु-वह (तुम्हारा विचार); कारियम्-अतृप्त-करने योग्य कार्य नहीं; इत्ति-आगे; वेतनायकन् पाल्-वेदनायक के पास; मीण्डत्तै पोतल्-लौट जाना; कारियम्-कर्तव्य है; अँनुरत्तळ्-कहा; पूवै-देवी ने; अ कौतु इलातुम्-वह निर्दोष हनुमान ने भी; इतैयत्त-ये बातें; कूडित्तान्-कहीं। ६३२

तात ! इन कारणों से तुम्हारा विचार कार्यान्वित करने योग्य नहीं है। अब तुम्हारा वेदनाथ श्रीराम के पास लौट जाना ही कर्तव्य है। —देवी ने यों कहा। उस अनिद्य हनुमान ने भी निम्नोक्त बातें कहीं। ६३२

नन्नू नन्न्रिव् वुलहुडै नायहन्, तन्नू णैप्पेरुन् देवि तवत्तौळिल्
अँनू शिन्दै कळित्तुवन् देत्तित्तान्, निन्नू शङ्गं यिडरौडु नीड्गित्तान् 633

निन्नू इटरोटु-विद्यमान कष्टों के साथ; चङ्कै नीड्गित्तान्-शंकाओं से छटकर; उलकुटै नायकन् तन्-सर्वलोकनायक की; तुणै-संगिनी; इ पेरुम् तेवि-इन महीयसी देवी का; तवत् तौळिल्-तपकर्म; नन्नू नन्नू-साधु है, साधु; अँनू-ऐसा; चिन्नै कळित्तु-मन में मुदित होकर; उवन्तु-उत्साह के साथ; एत्तित्तान्-उनकी संस्तुति की। ६३३

हनुमान के मन में जो कष्ट और शंकाएँ थीं, उन सभी से अब वह निवृत्त हो गया। उसने सोचा कि सर्वलोकपति श्रीराम की संगिनी इन महीयसी देवी का तपकर्म बहुत ही उत्कृष्ट है। उसे अपार हर्ष हुआ। उसने देवी को बड़े ही उत्साह के साथ संस्तुति की। ६३३

इरुळु आल मिरावणा तालिडु, तैरुळु नोयित्तिच् चिल्पह इङ्गुरिन्
मरुळु मन्नवड् कियान्शौलुम् वाशहम्, अरुळु वायैन् उडियि तिरैञ्जित्तान् 634

नो-आप; इत्ति-अब; चिल् पकल्-कुछ दिन; तङ्कुरित्-ठहरेंगी तो; इरावणताल-रावण के कारण; इरुळुम् आलम् इतु-अन्धकारमग्न यह संसार; तैरुळुम्-प्रकाशमय हो जायगा; मरुळुम् मन्नवड्कु-दुःखमोहित राजा को; यान् चौलुम्-मुझसे कथनीय; वाचकम्-सन्देश; अरुळुवाय्-कहने की कृपा करें; अँनू-कहकर; अटियिन् इरैञ्जित्तान्-उनके चरणों पर विनय की। ६३४

देवी ! आप और थोड़े दिन यहाँ ठहरेंगी तो रावण के कारण अन्धकार में मग्न यह संसार प्रकाशमय हो जायगा। अब मैं आपके वियोग के कारण दुःख-मोहित श्रीराम के पास क्या कहूँ ? वह सन्देश कहने की कृपा कीजिए। हनुमान ने उनके चरणों में नमस्कार करके विनय की। ६३४

मेरा वृत्तांत वहाँ जाकर जब कहोगे तब प्रकीर्तित विजयशाली मेरे देवर से कहो कि श्रीराम की आज्ञा से जो मेरी रक्षा के कार्य में लगे रहे उनका अब मध्य में मुझे प्राप्त कारावास से छुड़ाना भी उन्हीं का कर्तव्य होगा । ६३७

❖ तिङ्ग	ऑत्तिन्	शैय्दवन्	दीउन्ददाल्
इङ्गु	वन्दिल	तेयैनिन्	याणर्नीर्क्
कङ्ग	याङ्ङ	गरैयडि	येङ्कुन्दन्
शैङ्ग	याङ्कडन्	शैय्हेन्	शैप्पुवाय् 638

तिङ्कळ् ऑत्तिन्—एक महीने में; अँन् चैय् तवम्—मेरी क्रियमाण तपस्या; तीरन्तताल—पूरी होगी, इसलिए; इङ्कु—यहाँ; वन्तिलन् अँतिन्—नहीं आयेंगे तो; याणर् नीर्—सुन्दर जल-प्रवाह की; कङ्कयाङ्ङ करै—गंगा के किनारे; अट्टियेङ्कुम्—दासी, मेरा भी; तन् चैम् कयाल्—अपने मनोरम हाथों से; कटन् चैय्क—क्रियाकर्म कर दें; अँन्—ऐसा; चैप्पुवाय्—कहो । ६३८

एक महीना जीवित रहने का मेरा संकल्प है । एक महीने में वह तप पूरा हो जायगा । तब तक वे इधर न आएँगे तो वे वहीं सुन्दर प्रवाह की गंगानदी के जल से मेरा क्रिया-कर्म अपने सुन्दर हाथों से कर दें । ऐसा उनसे कह दो । ६३८

❖ शिङ्कु	मामियर्	सूवर्क्कुञ्	जीदैयाण्
डिङ्क्किन्	राडौळ्	दाळ्नु	मिन्तशौल्
अरुत्ति	नायहन्	बालरु	ळिन्मैयाल्
मङ्कु	मायिनु	नीमर	वैलैया 639

ऐया—तात; चिङ्क्कुम्—गौरवपूर्ण; मामियर् सूवर्क्कुम्—तीनों सासों से; आण्टु डिङ्क्किन्नाळ् चीतै—वहाँ मरती रही सीता; तौळ्ताळ्—उसने आपको नमस्कार किया; अँन्म्—ऐसा; इन्त चौल्—यह वचन; अरुत्तिन् नायकन्—धर्म के नायक; पाल्—के पास; अरुळ् इन्मैयाल्—दया नहीं होने के कारण; मङ्कुमायिन्नुम्—भूल जाएँगे तो भी; नी मरवेल्—तुम मत भूलो । ६३९

तात ! मेरी श्रेष्ठ सासों से कहो कि वहाँ मरती रही सीता ने आपको नमस्कार किया । यह धर्ममूर्ति श्रीराम दयाहीनता के कारण भूल जाएँगे तो भी तुम मत भूलो । ६३९

वन्दे	नैक्करम्	बर्त्तिय	वैहल्वाय्
इन्द	विप्पिर	विक्किरु	मादरैच्
चिन्दै	यालुन्दी	डैत्तेन्	शैव्वरम्
तन्द	वार्त्तै	तिरुच्चेवि	शार्ऱुवाय् 640

वर्तु-आकर; अर्ध-पुष्प; कर्म परस्मि-जब पालियहल किया; वृक्षवर्ण-
उस दिन; इतने इ पुरविकरु-इस मज्ज-जन्म में; इह मारु-वो विषय
का; विनयेयसि वीरु-मन से जो रक्षा नहीं कहेंगा; अर्ध-पुष्प; वृक्षवर्ण
नये-वन अथ वर का; वारुवै-वचन; विषयविषय वारुवै-अज्ञान में
उल पौ । ६४०

हेतुमान ! तुम उनके दिव्य कानों में यह एक रहस्य हो जान करो ।
जब उद्देति मेरी पालियहल किया तब उद्देति अपना यह निश्चय माना
कि इस जन्म में मैं दो विषयों को अपने मन से जो रक्षा नहीं कहेंगा ।
यह मेरे लिये वरदान-सा वाक्य था । उसे उन्हें करो । ६४०

ॐ ईश्वरं गतिरुत्तमं दिव्यं विदुर्नृपः पुरतश्चैव
मार्गं च नृपः पुरतश्चैव पुरतश्चैव
मार्गं च नृपः पुरतश्चैव पुरतश्चैव
मार्गं च नृपः पुरतश्चैव पुरतश्चैव

विषयवर्ण 641

ईश्वरं गतिरुत्तमं-इतर में रहकर; इतने उचित मानिये-प्राप्त मान जोड़ें
मार्गं च नृपः-निर आकर; पुरतश्चैव-जन्म लेकर; तब मैनि-उनके शरीर को;
पुरतश्चैव-आवृ-रक्षा करने का; और मैनि-वो वर-एक निश्चय वर; तर्हि-
नमस्कार करके; वृक्षवर्ण-मार्ग; अर्ध-पुष्प-पुष्प कहें । ६४१
समझो कि मुझे इतर मरना ही पड़ा । जो भी मैं फिर जन्म लूँ
और आपके ही शरीर का आलिंगन करने का भाग्य मुझे मिले । उनसे
कहो कि मैंने यह वर उनसे नमस्कार करते हुए प्राप्त किया । ६४१

ॐ अरुं वीरिचरुं दण्डं वीरिचरुं
पुरं पुरं पुरं पुरं
विदुर्नृपः कलिहन्तं
उद्देति वीरिचरुं
पुरं पुरं पुरं पुरं

पुरतश्चैव 642

वीरिचरुं-विहोषन पर विराजमान होकर; अरुं आठवसे-शरीर राज
करे; आरु-वृष्टि-सहित; पुरं पुरं पुरं पुरं; पुरं पुरं पुरं पुरं;
राजगण पर; वीरिचरुं-वीरिचरुं से विजयवादा करे; विरुं कलिहन्तं-
ये मनोरम वर; कलि विरिचरुं-देवने के भाग्य से वीरिचरुं में; उद्देति-ऊँठ
कहें; इतने-अपना भाग्य है; अर्ध-ऊँठ-अपना पूर्वकृत पाप; उद्देति-उद्देति-
वीरिचरुं पुरं पुरं पुरं पुरं । ६४२

शरीरम का सिद्धोपनय होकर राज करना और कलापक-सहित
वृष्टि पुरं राजगण पर विराजमान होकर वीरिचरुं में अमण करना
देवने का मरा भाग्य नहीं रहा । अब ऊँठ कहने से क्या लाभ है ?
वृक्षवर्ण पूर्वकर्म सींचनी रहेंगी । ६४२

❖ तन्नै	नोक्कि	युलहन्	दळर्दकुम्
अन्नै	नोय्क्कुम्	बरदत्तङ्	गार्ङ्कुम्
इन्न	नोय्क्कुमङ्	गेहुव	दन्निये
अन्नै	नोक्कियिङ्	गेङ्ङन	मैय्दुमो 643

तन्नै नोक्कि-अपने वनगमन के कारण हुए; उलकम् तळर्तङ्कुम्-संसार के कष्ट को; अन्नै नोय्क्कुम्-माता के दुःख को; परतन्-भरत के; अङ्कु-वहाँ रहकर; गार्ङ्कुम्-जो सहते रहते हैं; इन्नत् नोय्क्कुम्-उस संकट को; अङ्कु एकवतु अन्नै-(दूर करने) उधर पधारने के सिवा; अन्नै नोक्कि-मेरी तरफ़; इङ्कु अङ्ङनम् अय्तुम्-इधर क्योंकर पधारेंगे । ६४३

अपने ही कारण लोकों, अपनी माता और भरत को दुःखपीडित हुए देखकर उनको अयोध्या ही जाना ठीक लगेगा । उसे छोड़कर मेरी सुध लेकर वे इधर क्योंकर पधारेंगे ? । ६४३

अन्नैयर्	मुदलितर्	किळैजर्	यार्क्कुमैन्
वन्दनै	विळम्बुदि	कवियिन्	मन्नत्तैच्
चुन्दरत्	तोळनैत्	तौडर्न्दु	कात्तुप्पोय्
अन्दमि	रिरुनहर्क्	करश	ताक्कन्बाय् 644

अन्नैयर् मुदलितर्-मेरे पिताजी आदि; किळैजर् यार्क्कुम्-सभी बन्धु-बान्धवों से; अन्नै वन्दनै-मेरा नमस्कार; विळम्बुदि-कहो; कवियिन् मन्नत्तै-कपियों के राजा से; चुन्दरत् तोळनै-सुन्दरबाहु (श्रीराम) को; तौडर्न्दु कात्तु-लगातार रक्षा करते हुए; पोय्-जाकर; अन्नतम् इन्-अक्षय; तिरु नक्कु-श्रीसमृद्ध नगर का; अरचन् आक्कु-राजा बनाओ; अन्नपाय्-यह कहो । ६४४

मेरे पिता और अन्य बन्धु-बान्धवों से मेरी वन्दना सुना दो । कपीश-सुग्रीव से मेरी ओर से प्रार्थना करो कि वे अयोध्या नगर को सुन्दरबाहु श्रीराम के पीछे जाएँ और उन्हें उसके राजा बना दें । ६४४

❖ इत्तिरु मनैयव ळियम्ब वित्तुन्नुम्, तत्तुउ वौळिन्दिलै तैय नीयैना

अत्तिरुत् तेदुवु मियैन्द वित्तुनुरै, अत्तत तैरिवु वुणर्त्ति नान्नरो 645

अत्तैयवळ्-उनके; इ तिरुम्-इस भाँति; इयम्प-कहने पर; तैयल्-देवी; नो इत्तुम्-आपने अब भी; तत्तुउवु-दुःख करना; अौळिन्दिलै-नहीं छोड़ा है; अत्ता-कहकर; अ तिरुत्तु एतुवुम्-सभी तरह के हेतुओं से; इयैन्त-युक्त; इन् उरै-मधुर (आश्वासन के) शब्दों से; अत्तत-युक्त; तैरिवु उर-समझ में आएँ ऐसा; उणर्त्तितान्-कहकर समझाया । ६४५

जब देवी ने इस रीति से बातें कहीं तो हनुमान को विल्कुल बुरा लगा । उसने कहा कि देवी ! आपने अब भी दुःख करना छोड़ा नहीं

है। फिर सब तरह के हेतुओं से युक्त और सब तरह से समीचीन वचन समझाते हुए कहते जागे। ६४५

[illegible]

हेतुमान में लीखे व्यंग्य के साथ कहा कि ऐसा ! आप इधर मर जायूँगी ! सब ! फिर विधोगक्षण और क्षयमाणक्षण औरामजी जियूँगे ! जंगल छिड़कर लकड़ अयाध्या नगर पहुँचेंगे और मुकुट धारण कर लेंगे ! सबसे यही होगा न ? (तस्मिन् में शब्द के अन्त में 'आम' लगावे से किसी की धारणा की निपट अस्वाभाविकता और असंभवता को लेकर लीख व्यंग्य खोलित हो जाता है ।) । ६४६

ॐ कवेनै ह्रींजिह कर्पयै, वनेनै निम्वेतिह वान्वेवानम्
 प्रीयेनेरि विम्विह्वे प्रीवाराम्, इनेनै ह्रींपदि पाद्विह्वे 647
 कर्पयै-प्रीवाम् आपकी; कवे अहेम-वृणा से निवसे इर मगले हे; निव
 वनेनेनै-उम कारागहे से निवसे इराम्; इने उतिह्वे वान्वेवानम्-वहे (२१वम्) अपने
 प्राम् लेकर निराम्; ओरि विम्विह्वे-अवृपम वृवृह्वर; प्रीयेने प्रीवाराम्-अपने
 कवेय को वृवृह्वर; इनेनेनै आनेपवृ-इवकी ममाना करवेवान् वाम्; पावि
 उवादे-इमरी कोम सो हे । ६४७

और पवित्रता आपकी पवित्र कठोर कंधेवाले में डालनेवाला पाप
 अपनै पाप निकर जीता रहेगा ; रहेगा न ; अतिसुखीर श्रीराम और
 लक्ष्मण सहे वन जायेंगे ; आहो ! इसकी समता में और क्या बात
 रहेगी ? । ६४

[illegible]

भला देवा ! आपकी वस्तु करनेवाले राक्षसों को हम नहीं मारेंगे !
अपने प्राणों की रक्षा करते हुए हम सब अयोध्या जाएंगे और हमारे राजा

श्रीराम भी धनु लेकर अयोध्या जाना चाहेंगे—यही न आप कहती हैं ? । ६४८

नीन्दा वित्तलि नीन्दामे तेयन्दा डाद पैरुज्जैल्वम्
ईन्दा नुक्कुने यीयादे, ओयन्दा लैम्मि नुयर्न्दार्यार् 649

नीन्ता इत्तलित्-अतरणयोग्य दुःख-सागर में; नीन्तामे-विना तैरते संकट उठाए ही; तेयन्तु आरात-अक्षय और अक्षुण्ण; पैरुम् चैल्वम्-बड़ा धन; ईन्तानुक्कु-जिन्होंने हमें दिया उन्हें; उत्तै ईयाते-आपको दिए विना; ओयन्ताल्-हम विरत रहें तो; अम्मिल्-हमसे; उयर्न्तार् यार्-श्रेष्ठ कौन होंगे । ६४९

श्रीराम ने अतरण योग्य दुःखसागर में तैरते रहे हमें अक्षय और अक्षुण्ण धन दिलाया था । उन्हें आपको न देकर अगर हम निष्क्रिय रहेंगे तो हमसे बढ़कर भलेमानुस कौन होंगे ? । ६४९

नन्दाय नल्विनै नल्लोरैत्, तित्तार् तड्गुडर् पेय्दित्तक्
कौन्दा लल्लडु कौळ्ळेना, डैन्दा नुक्किवै येलावो 650

नल् वित्तै-तपादि श्रेष्ठ कर्म; नन्दा आय्-खूब सोच-परखकर करनेवाले (मुनियों) को; तित्तार् तम्-मारकर जो खाते हैं, उनकी; कुटर्-आँतों को; पेय् तित्त-पिशाचों को खाने देते हुए; कौन्दा अल्लतु-विना मारे; नाडु कौळ्ळै- (कोसल) देश जाना न मानूँगा; डैन्तानुक्कु-ऐसा जिन्होंने कहा उन्हें; इवै एलावो-ये बातें नहीं सुहाएँगी न । ६५०

तप, यागादि कर्म खूब सोच-परखकर जो करते रहते हैं, उन उत्तम लोगों को मारकर खानेवाले हैं राक्षस ! उनकी आँतों को पिशाचों को खाने देते हुए उनको मारे विना मैं अयोध्या लौटना नहीं सोचूँगा । यह क्रसम जिन्होंने खायी उन श्रीराम के लिए ये सब योग्य कर्म नहीं रहेंगे क्या ? । ६५०

माट्टा दार्शिऱै वैत्तोयै, मीट्टा मैन्गिल मीळ्वामे
नाट्टार् नल्लवर् नन्नूलुम्, केट्टा रिक्वुरै केट्टारो 651

माट्टातार्-शत्रुओं द्वारा; चिऱै वैत्तायै-कारा में रखी गयी आपको; मीट्टाम् अँक्किलम्-छुड़ाया, यह यश कहे विना; मीळ्वामे-हम लौट जाएँगे क्या; नाट्टार्-देशवासी; नल्लवर्-भले लोग; नल् नूलुम्-उत्कृष्ट शास्त्र के; केट्टार्-श्रोता (ज्ञानी); इ उरै-यह बात; केट्टारो-सुनेंगे (और मानेंगे) क्या । ६५१

‘शत्रुओं द्वारा कारागार में बन्द रखी हुई आपको छुड़ा दिया हमने ।’ यह प्रशंसा का वचन न कहाते हुए हम लौट जाएँगे क्या ? देश के भले लोग और श्रेष्ठ शास्त्रज्ञ यह बात सुनेंगे और मानेंगे क्या ? । ६५१

पूण्डाळ् करुपुडै याळ्पौय्याळ्, तीण्डा वज्जहर् तीण्डामुत्
माण्डा लैन्नु मन्नन्दैरि, मीण्डाल् वीरम् विळङ्गादो 652

पुण्ड-धारण करके; आठ-पालित; कर्तु उद्देश-पालित्य बाली; पृथ्वी-
(सीतादेवी) अपने वचन की शक्ति न बनाकर; तीव्रता वञ्चक-अज्ञ वचकी के;
तीव्रता पुन-स्पर्श करने से पहले; माण्डाल-मर गयी; अज्ञ-जानकर; यम
देवि-मन में आशवासन पाकर; माण्डाल-बोध जागृत हो; तीव्र विच्छेदको-
बोली बोलती न ? । ६५२

कदम्ब नगुण्ड कदम्बाल, विट्टा धूम्रिडिम्ब वृषवमाल
अष्टिटा रीडल होरेडम्ब, शुट्टा लुगदाल पादना 653

कदम्ब-मरा में; नी-आपने; कदम्बाल-शोक के कारण; उग्र विट्टा-
पण ध्यान दिव्य; अष्टिडिम्ब-नी; वृष अमपाल-मयकर मर से; अष्टिटा-
शब्दों के साथ; और उल्लू पण्ड-साली लोको को; वृट्टा-जला देते हो भी;
बोलीयाव अज्ञ-अपघात विट्टा न । ६५३

मरा में ! (मगजान न करे) अगर आप शोक के कारण मर
जायगी तो फिर मयकर मर से शब्दों के साथ साली लोको को बलाया
गया तो भी निरा नही छेटी न ? । ६५३

शुट्टे कालवाल भूवलडम्ब, पौने पौडिग्य पौडिबलान
अज्ञे विडिबल पौडिबल, पौने शमसे पडिपाना 654

पौने-कालवाल; पौने-पडेल हो; भूवलडम्ब-नीली लोको को; कालवाल
पौडिबल-मरने की नी उल्लान हो उठे; पौडिबलान-वृषवमयुध; निने निने-
आपकी स्थिति; वृष अज्ञाल-देवी है जानकर; पौने-वाद भी; वृषसे पडिपाना-
समा का गुण धारण करने रहते क्या; अज्ञे-काली बाल । ६५४

कालन ! (विम्व में स्वर्ण लक्ष्मी की भी कहते हैं। 'कालन'
नाम वृषर वृद्ध प्रचलित है।) पहले ही श्रीराम तीनों लोकों को मराने
का निश्चय करके पृथ्वी देय में ले चुके थे। अगर उनकी विदित हो
गया कि आपकी ऐसी स्थिति है तो क्या वे आगे भी समा के गुण को
धारण किया रहेंगे ? । ६५४

काल नरुपिर् कालोडम्ब, कालोडम्ब, कालोडम्ब, कालोडम्ब
माळी वेलयल वेलयल, माळी वेलयल, माळी वेलयल, माळी वेलयल 655

माळी-साधारण रूप से भी नहीं उठता; वृष विराम-वृष (श्रीराम की) मयकर
कोप; काल आसार-वृद्ध लोको के; उग्रि काले-मरण-हरण के साथ; मर
आका-अन नहीं होना; माळी-वृष-कोप) आन न होना हो; पवि-श्रीराम;

वातोदुम्-आकाश के साथ; माळातो-मिट नहीं जायगी क्या; अयल् वेरु-भिन्न कुछ; उण्टो-हो सकता है क्या । ६५५

साधारण रूप से श्रीराम का क्रोध प्रकट नहीं होता । पर अब क्रोध उठा तो वह केवल बुरे राक्षसों को मारकर वहाँ शान्त हो जायगा ? नहीं होगा । अगर क्रोध शान्त नहीं हुआ तो क्या यह भूतल व्योमलोक के साथ मिलकर नष्ट नहीं हो जायगा ? उससे भिन्न कोई काम हो सकता है क्या ? । ६५५

❀ ताळित् तण्गड रम्मोडुम्, एळुक् केळुल हेल्लामन्
शालिक् कैयव तम्बम्मा, ऊळित्, तीर्येन वुण्णादो 656

अम्मा-माते; अन्नु-उस दिन; आळि कै-चक्रहस्त; अवन् अम्पु-उनका शर; ताळि-गहरे; तण् कटल् तम्मोडुम्-शीतल समुद्रों के साथ; एळुक्कु एळ् उलकु अल्लाम्-सात और सात लोकों को; ऊळि ती अंत-प्रलयाग्नि के समान; उण्णातो-नहीं खायगा क्या । ६५६

माँ ! (जिस दिन मैं जाकर श्रीराम से आपकी बात कहूँगा) उस दिन चक्रहस्त श्रीराम का शर गहरे शीतल समुद्र को चौदहों लोकों के साथ युगान्तकाल की अग्नि की तरह सोख नहीं देगा ? । ६५६

पडुत्तान् वान्तवर् पड्डारैत्, तडुत्तान् शीविनै तक्कोरै
अडुत्तान् नल्विनै यन्नाळुम्, कौडुत्ता तन्निशै कौळ्ळायो 657

वान्तवर् पड्डारै-देव-शत्रुओं को; पडुत्तान्-मिट दिया; ती वित्तै तडुत्तान्-पाप को रोका; तक्कोरै अडुत्तान्-साधुओं को उद्धारा; नल् वित्तै-अच्छे कामों को; अन्नाळुम्-सदा; कौडुत्तान्-बढ़ने दिया; अन्नु-ऐसा; इच्चै-यश; कौळ्ळायो-आप प्राप्त नहीं करेंगी क्या । ६५७

श्रीराम ने देवारियों को मिटाया; पाप को रोक दिया; साधुओं को उद्धारा और सत्कर्मों को वर्धित होने दिया । यह यश आप भी नहीं लेंगी क्या ? । ६५७

शिन्ना णीयिडर् तीरादे, इन्ना वैहलि तैल्लोरुम्
नन्नाळ् काणुद तन्नुन्नो, उन्ना नल्लर मुण्डामाल् 658

नी-आप; चिल नाळ्-कुछ दिन; इटर् तीराते-संकट-रहित न होकर; इन्ना वैकलित्-दुःख के साथ रहेंगी तो; तैल्लोरुम्-सभी का; नल् नाळ् काणुतल्-अच्छा दिन देखना; तन्नु अन्नो-श्लाघनीय नहीं है क्या; उन्नाल्-आपके द्वारा; नल् अरुम्-भला धर्म; उण्डाम्-पनपेगा । ६५८

आपके इधर और थोड़े दिन संकटग्रस्त होकर रहने से संसार के सारे लोग अच्छा दिन देख पायेंगे । क्या वह भला नहीं है ? आपकी दया से उत्कृष्ट धर्म बढ़ेंगे । ६५८

बहनेवाले अश्रुजल-सहित हो अपने मंगल-सूत्र तोड़कर नीचे डाल देंगी और वे कठिन सूत्र वाली द्वारा भी अलंघ्य बड़े पर्वत बन जायँगे । उनको आप देखेंगी । ६६१

विण्णिती	ळियनेड्ड	गळुडुम्	वैज्जिरे
अण्णिती	ळियपेरुम्	बडवै	यीट्टमुम्
पुण्णितीर्प्	पुणरियिड्	पडिन्दु	पूवैयर्
कण्णिती	राड्डित्तिड्	कुळिप्पक्	काण्डियाल् 662

विण्णिन् नीळिय-आकाश तक बड़े हुए; नैटुम् कळुतुम्-लम्बे क्रद के पिशाच और; अण्णिन् नीळिय-संख्या में बड़े; वैम् चिरे-भयंकर पंखों के; पेरुम् पडवै ईट्टमुम्-बड़े पक्षियों के झुण्ड; पुण्णिन् नीर् पुणरियिल्-व्रणनिर्गत रक्त में; पडिन्दु-मरन होकर; पूवैयर्-स्त्रियों के; कण्णिन् नीर् आड्डितिल्-अश्रुजल-सरिताओं में; कुळिप्प- (शरीर को साफ करने के लिए) स्नान करेंगे; काण्टि-आप देखेंगी । ६६२

आकाश तक बड़े हुए बड़े-बड़े भूत, पिशाच आदि और असंख्यक भयंकर पंखों के बड़े-बड़े पक्षियों के वृन्द राक्षसों के व्रणों से बहनेवाले रक्त-प्रवाह में पहले स्नान करेंगे और बाद स्त्रियों के अश्रुजल-प्रवाह में स्नान (करके अपने शरीर पर लगे खून, मांस आदि दूर) करेंगे । देखेंगी आप । ६६२

करम्बयिन्	मुरशितड्	गरडङ्गक्	कैतीडर्
नरम्बुह	ळिमिळिशै	नविल	नाडहम्
अरम्बैय	राडिय	वरङ्गि	ताण्डीळिल्
कुरङ्गुहण्	मुडैमुडै	कुत्तिप्पक्	काण्डियाल् 663

करम् पयिल्-हाथ से पीटी जानेवाली; मुरचु इत्तम्-भेरियों के वर्गों के; कुरङ्ग-शब्द करते; कै तीडर्-उंगलियों से सहलाये जानेवाली; नरम्पुकळ् इमिळ्-(जिनकी) तन्त्रियाँ स्वर निकालती हैं, उन वीणा आदि वाद्यों के; इच्चै नविल-संगीत निकालते; अरम्पैयर्-(जिन पर) अप्सराएँ; नाटकम् आटिय-नृत्य करती हैं; अरङ्किन्-(उन) मंचों पर; आण् तीळिल्-पुरुषोचित काम करनेवाले; कुरङ्कुक्कळ्-वानर; मुडै मुडै-बारी-बारी से; कुत्तिप्प-कूदेंगे, उसे; काण्टि-देखेंगे । ६६३

उन मंचों पर, जहाँ अप्सराएँ भेरियों के नाद और तन्त्री-सहित वीणा आदि वाद्यों के नाद के मेल में नाच रही थीं, अब पौरुषयुक्त वानर क्रम से नाचेंगे, कूदेंगे —आप वह भी देखिएगा । ६६३

पुरैयुरु	पुन्नीळि	लरक्कर्	पुण्बोळि
तिरैयुरु	कुरुदिया	रीर्प्पक्	चैल्वन्न
वरैयुरु	पिण्पैरुम्	विडक्क	मण्डित्त
करैयुरु	नेड्डुङ्गड	रुर्प्पक्	काण्डियाल् 664

गुरे उछ-अपरिधि; गुमे गीछिन्-गीवकम्; अरककर-राक्षसों के; गुण
प्रांछि-बणी से वडनेवाली; निरे उछ-नरंगसहित; कुबलि आछ-रवन-नदी के;
इरेप-छाँव लेने से; बूबबल-जो जाते हैं; वरे उछ-(वे) पवत-सम; पिण प्रसम्
पिरककम्-लाशों के वडे-वडे डेर; मण्डित-एकल होकर; कदे उछ-तीरे पर
डकरनेवाली नरंगों से युक्त; नरेप कडल-विशाल सागर की; वरेप-पाट देगी;
काण्डि-देखिए । ६३४

हुट और नीच-कम् राक्षसों के बणों के रक्त की नदी वहे निकलेगी
और वहे पवत-सम वडी-वडी लाशों की छाँव लेती हुई वहेगी । वे लाशें
अधिक सुख्या में जाकर तीर से टकरानेवाली नरंग-सहित विशाल समुद्र
की पाट देगी । देखते रहिए । ६३५

विभुड्ड परककरा पिननदे पिननदे
वनहिधुम खीरनछ नडवद डङ्गलाने
अनदेगो यमबुने मज्जि लदेयाने
कनदेगो डिलङ्गाने डुरदेके काण्डियाने 665

वर्तिक अंगु-जानकी के रूप में; और नळल-एक आग; नडवण-वीच में;
नळकल आल-रहती है, इसलिये; अतकने-अनघ औराम के; के अमण अंगुम-देग
के शरीर को; अळव डल-अपर; ऊनेयाने-लेव पवन से; विसे उदे-पानी;
अरककर आम् डकरने-राक्षस को किये; वरे उछ-जलकर (राख के रूप में)
स पूजेगी; कम्क नीटे डलङ्के-वडी रवणलका; निरे उछ उरक-स्थित होकर पियलेगी;
काण्डि-आप देखीं । ६३५

जानकी के रूप में लंका के मध्य आग रहती है इस कारण; और
अनघ औराम के हाथ के शरीर को अपार पवन वहेगा, इस कारण पानी
राक्षस को किये जलेगी और राख बनकर च पूजेगी; और सोने की वडी
लंका उनके मध्य रहकर पियल जायगी । उसे आप देखें । ६३५

लोकलि निरावणने रनेपिय रनेपिय
पाकिम मनेपनिने पछिपनिने सेनिने
नोकिम कणाने वडिहोणे मुक्किमाने
काककेड्ड कवरनेड्डहोणे डण्णके काण्डियाने 666

काककेड्ड-कोप; लोकल डल-अग्रहस्त; इरावणने ललेपिल-रावण के
शरीर पर; निपित-कडकर; पाकिम अनेप-सौभाग्य हो सम; निने-आपके;
पछिपु डल सेनिने-अनिघ शरीर की; नोकिम कणकडे-लिन आँखों से वरे निचार
के साथ देव, उन आँखों की; गुनि कौडे मुक्किमाने-नीक्षण बोंबों से; कवरनेप
काण्डि-हीन लेकर; उण्ण काण्डि-छाँव, देखिए । ६३६

कोप अपघितिल रावण के शिर पर वड वडेगी और उन आँखों की
अपनी नीक्षण बोंबों से नीचकर छाँवेगी; लिन आँखों से आपके सौभाग्य-सम

अप्राकृत दिव्य और अनिन्द्य मंगल-विग्रह को बुरी कामना के साथ देखा था । ६६६

मेलुऽ	विरावणऽ	कल्लिन्दु	वैळ्हिय
नीलुरु	तिशैक्करि	तिरिन्दु	निऽपत्त
आलुऽ	वत्तैयवन्	इलैयै	यव्ववै
कालुऽक्	कणैतडिन्	दिडुव	काण्डियाल् 667

मेल-पहले; इरावणऽकु-रावण से; उऽ अल्लिन्दु-पूर्ण रूप से हारकर; वैळ्हिय-लज्जित; नील् उरु-नील रंग की; तिचै करि-दिशाओं के दिग्गज; तिरिन्दु निऽपत्त-मन मारकर (जो) खड़े हैं; आल् उऽवु अत्तैयवन्-बरगद के वृक्ष के समान रावण के; तलैयै-सिरों को; अव्ववै-उन दिग्गजों के; काल् उऽ-पैरों पर जा गिरें, ऐसा; कणै-श्रीराम के शर; तडिन्दु-काटकर; इडुव-डालेंगे; काण्डि-आप देखिए । ६६७

नीली दिशाओं के दिग्गज पहले रावण से लड़े, बुरी तरह हारे और शरमाते हुए पस्त खड़े हैं । अब श्रीराम के बाण बरगद के समान दिखने वाले रावण के सिरों को काटकर उन दिग्गजों के चरणों पर डाल देंगे । वह आप देखेंगी । ६६७

नीर्त्तु	मुहित्तु	वळङ्गु	नीलवान्
वेर्त्तु	रिडैयिडै	वीशुम्	वेरऽप्
पोर्त्तु	पौलङ्गोडि	यिलङ्गैप्	पूळियो
डार्त्तु	कळुहिरैत्	ताडक्	काण्डियाल् 668

नीर्त्तु अँळु-जल के साथ उठे; मुकिल् मळै-मेघों की वर्षा; वळङ्कु-करनेवाला; नील वान्-नीला आकाश; वेर्त्तु अँळु-स्वेदयुक्त हुआ ऐसा मानकर; इटै इटै-रह-रहकर; वेर् अऽ-पसीना पोंछने के लिए; वीचुम्-फहरते हुए (हवा करते हुए); पोर्त्तु अँळु-आच्छादित कर उठनेवाली; पौलम् कौटि-सुन्दर पताकाओं से शोभित; इलङ्क-लंका में; पूळियोटु-धूल के साथ; आर्त्तु अँळु-जोर-शोर के साथ उठनेवाले; कळुकु इरैत्तु आट-गोध शब्द करते हुए घूमेंगे; काण्डि-देखिए । ६६८

लंका में ध्वजाएँ फहर रही हैं । जल-भरे मेघों द्वारा वर्षा करानेवाला आकाश स्वेदयुक्त हो गया —यह समझकर वे ध्वजाएँ हवा कर रही हों, ऐसा लगता है । अब उनकी जगह धूल के साथ शोर मचाते हुए गोध ऊपर उड़ेंगे । आप देखेंगी । ६६८

नीनिऽ	वरक्कर्दङ्	गुरुदि	नीत्तनीर्
वैलैमिक्	काऽरुडु	मीळ	वैलैशूळ्
आलमुऽ	रुरुहडै	युहतु	नच्चराक्
कालनुम्	वैरुत्तुयिर्	कालक्	काण्डियाल् 669

कौकल ? श्रीराम के दिव्यारवि रूप अण्ड में रहनेवाले राक्षसों की मारो, आगे जायें और विविध लोकों को प्रहरित करके उकराएँ। तब अण्ड-पर राक्षस भी मिटेंगे। यह आप देखेंगे। १७१

ॐ ईण्डोर	तिङ्गणी	यिडरिन्	वैहवुम्
वेण्डुव	दन्न्रियान्	विरैविन्	वीरत्तैक्
काण्डले	कुडैवुपिन्	कालम्	वेण्डुमो
आण्डहै	यित्तियोर	पौळुदु	माडूमो 672

ईण्डु-यहाँ; नी-आपको; और तिङ्कळ-एक महीना; इडरिन् वैकवुम्-दुःख में रहना; वेण्डुवतु अन्नु-नहीं पड़ेगा; यान्-मैं; विरैविन्-तुरन्त; वीरत्तै काण्डले-वीर से मिलूँ; कुडैवु-उतना ही कसर है; पिन् कालम् वेण्डुमो-फिर देरी भी चाहिए क्या; आण्डकै-पुरुषश्रेष्ठ; इति-अब; और पौळुतुम्-कभी; आडूमो-सहेंगे क्या । ६७२

आपको और एक महीना संकट में रहना नहीं पड़ेगा । मैं शीघ्र जाऊँ और वीर श्रीराम से मिलूँ, इतना ही कसर है, फिर विलम्ब काहे का ? क्या पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम एक पल (का विलम्ब) भी सहेंगे ? । ६७२

आवियुण्	डैन्नुमी	दुण्डुन्	तारयिर्च्
चेवहन्	रिर्वुरुत्	तीण्डत्	तीन्दिलाप्
पूविलै	तळिरिलै	पौरिन्दु	वैन्दिलाक्
काविलै	कौडियिलै	नैडिय	कानैलाम् 673

आवि उण्डु-प्राण है; अँन्नुम् ईतु उण्डु-यह कहने का स्थान है; नैडिय कान् अँलाम्-बड़े वन में सर्वत्र; उन् आरयिर्-आपके प्राणप्यारे; चेवकन्-वीर श्रीराम के; तिरु उर तीण्ड-श्रीशरीर के लगने से; तीन्तिला-जो नहीं जले; पू इलै तळिर् इलै-पुष्प नहीं, पत्ते नहीं; पौरिन्दु वैन्तिला-लाजा-सम जो नहीं भुने; का इलै-उपवन नहीं; कौडि इलै-लताएँ नहीं हैं । ६७३

श्रीराम की स्थिति ऐसी है कि प्राण ज्यों-त्यों करके टिके रहते हैं —यही कहा जाय । आपके प्राणप्यारे वीर के श्रीशरीर के बड़े कानन में सर्वत्र स्पर्श से जो नहीं मुरझाए ऐसे फूल नहीं है, ऐसे पत्ते नहीं हैं । लाजे के समान जो नहीं भुने ऐसे वन नहीं हैं, ऐसी लताएँ भी नहीं । (श्रीराम की विरहाग्नि ऐसी है ।) । ६७३

शोहम्बन्	दुरुवदु	तैळिवु	तोयन्तन्डो
मेहम्बन्	दिडित्तुरु	मेरु	वीळिन्नुम्
आहमुम्	बुयङ्गळु	मळुन्द	वैन्दलै
नाहम्बन्	दडर्प्पिन्नु	मुणर्वु	नारुमो 674

चोकन् वन्नु उरुवतु-शोक का आकर भरना; तैळिवु तोयन्तन्डो-वह मन निश्चिन्त रहे तभी न होगा; मेकम् वन्नु-मेघ आकर; उरुम् एरु-वज्र; इडित्तु वीळित्तुम्-टूटकर गिरें, तब भी; आकमुम् पुयङ्कळुम्-वक्ष और भुजाओं में; अळुन्त-वाँत गड़ाकर; ऐम् तलै नाकम् वन्नु-पंच-सिर नाग आकर; अडर्प्पिन्नुम्-दुःख दे तो भी; उणर्वु नारुमो-सुध होगी क्या । ६७४

2.63 । (1) $\frac{1}{2} \frac{d^2 y}{dx^2} - \frac{dy}{dx} + y = 0$; $y(0) = 1$

[illegible]

प्राण मयानी-मथित दही के समान मधु गाकर आदि-गादि और बीज में लड़खड़ाते हैं। इंसियाँ को बेकार करते हुए उनकी अपन बच्चा में रखती हैं पालन, उसके पी कितने ही प्रकार हैं। वे सब आपके विद्योग में जति दुःख के प्राप्ति हैं। वे गिन पी जा सकते हैं क्या ? । ६७५

[illegible][illegible]

ऐसी स्थिति में रूढ़िवाले शीराम प्राणधारण करके जीवित रहें
 सकेंगे—यह जो आप सोचती हैं वह कितना मिथ्यामूलक है यह आप
 स्वयं देख लीं, पीछे । इसलिये यह सच्ची स्थिति जानकर आप मुझे विदा
 दें । अपना कहो साया मैं करतलामलकबल सब प्रमाणित कर दिखो
 सकता हूँ । हनुमान ने कहा । ६७६

लीरुववववः	गविकेवल	लरुपुन	देवनिने
वारुववववुद	दवपुपवने	मुने	माकेकडने
वरुववव	वववगुपुव	ववुवेदु	माकेकडने
गरुववव	कददवने	वववने	पुवनेनी

अनुत्तै-माते; तीरुत्ततुम्-तीर्थ श्रीराम और; कवि कुलत्तु इरैयुम्-कपिकुल-पति; तेवि-देवी; निन् वारुत्तै केट्टु-आपके सन्देश-वचन सुनकर; उवप्पतन् मुत्तम्-मुदित हों, इसके पहले ही; मा कटल् तूरुत्तत-बड़े समुद्र को जो पाट देंगे; इलङ्कैयै चूळन्तु-और लंका को घेरेंगे; मा कुरङ्कु-वे बड़े वानर; आरुत्तत-गरजेंगे; केट्टु-सुनकर; उवन्तु-हर्ष करके; नी इरुत्ति-आप रहिए । ६७७

(उसने आगे कहा ।) माँ ! तीर्थ श्रीराम और कपिकुलाधिपति आपकी बात सुनकर मुदित हों, इसके पूर्व ही बड़े सागर को पाटकर लंका को आ घेर लेंगे वानर और उनका गर्जन सुनकर आप आनन्द के साथ रहेंगी । ६७७

अण्णरुम्	बैरुम्बडै	यीण्डि	यिन्नुहर्
नण्णिय	पौळुदु	नडुव	णङ्गैनी
विण्णुरु	कलुळन्मेल	विळङ्गुम्	विण्डुविन्
कण्णत्तै	यैन्नेडु	पुयत्तिल्	काण्डियाल् 678

नङ्कै-नायिका देवी; अण् अरुम्-अगणित; बैरुम् पटै-बड़ी सेना; ईण्डि-एकत्र होकर; इ नकर्-इस नगर में; नण्णिय पौळुतु-जब आएँगे तब; अतु नडुवण्-उस सेना के मध्य; विण् उरु-आकाशचारी; कलुळन् मेल-गरुड़ पर; विळङ्कुम्-शोभित रहनेवाले; विण्डुविन्-श्रीविष्णु की तरह; कण्णत्तै-श्रीराम को; यैन्नेडु पुयत्तिल्-मेरे बड़े कन्धों पर; नी काण्डि-आप देखेंगी । ६७८

देवी ! असंख्यक सेना एकत्र हो आएगी । तब उसके बीच आप देखेंगी नेत्राभिराम श्रीराम को मेरे बड़े कन्धों पर, आकाशचारी गरुड़ के कन्धों पर श्रीविष्णु के समान शोभायमान ! । ६७८

अङ्गदन्	डोण्मिशै	यिळव	लम्मलैप्
पौङ्गिळ्ड	गदिरैन्प	पौलियप्	पोरप्पडै
इङ्गुवन्	दिरुक्कुनी	यिडरि	तैय्दुरुम्
शङ्गैयु	नीङ्गुदि	तनिमै	नीङ्गुवाय् 679

अङ्कतन् तोळ मिचै-अंगद के कन्धों पर; इळवल-लघुराज; अम् मलै-सुन्दर (उदय) गिरि पर; पौङ्कु-उठनेवाले; इळम् कतिर् अँत-बाल सूर्य के समान; पौलिय-शोभेंगे और; पोरप्पटै-समरोद्यत सेना; इङ्कु वन्तु इङ्कुम्-यहाँ आकर डेरा डालेगी; नी-आप; इटरिन् अँयुत्तुम्-संकट में रहेंगे, यह; चङ्कैयुम्-शंका भी; नीङ्कुति-दूर कर दीजिए; तनिमै-एकाकीपन; नीङ्गुवाय्-दूर कर लेंगी । ६७९

अंगद के कन्धे पर, सुन्दर उदयाचल पर उगनेवाले बाल-रवि के समान लघुराज लक्ष्मण रहेंगे । समरोद्यत वानर-सेना यहाँ आकर पड़ाव डालेगी । अब संकटग्रस्त रहने का संशय त्याग दीजिए । एकाकिनी रहने की स्थिति भी हट जायगी । ६७९

कृतिवर्द्ध	गुडिलिनी	कृतिवर्त	गुडिलिनी
विश्वरू	नृद्विजि	मीदेक	नानिनि
परिवर्द्ध	वडिपूडि	पावम	मूर्द्धवर्द्ध
किरावण	वर्जलने	पिराम	नृवर्द्धन

680

कृता अरुम कुडिलि-कृता नामक पुण्यां से अलंकृत कियानी । आपसे निहिट अवधि के 'कृता' नामक पुण्यां से अलंकृत कियानी । आपसे निहिट अवधि के अन्दर, धरते रहनेवाले दीर्घ कारवासा से शीराम आपकी मुक्त नही करे तो वे क्या राखण है कि फलते अपयण के साथ पाप का भी पूर्ण रूप से समाप्त कर ले । वे शीराम है—यह स्मरण रहे । हेतुमान ने इस भाँति धृपु-वचन कहे । ६८०

आह	विमर्माहि	याजिल	केट्टरि	वर्द्धन	वर्द्धन
ओहै	कौण्डि	कडिकेक	मनन	ज्युर्नद	ज्युर्नद
पौहै	नयिर्व	नृवर्द्ध	पुनविपु	वर्द्धन	वर्द्धन
नौहै	पुनजिल	वाडाहै	मिगव	मीनन	मीनन

681

आक-इस भाँति; आप इल-निर्वाण; इमर्माहि-ये वचन; केट्ट-मुनकर; अर्द्ध वर्द्धन-स्वस्थित रहें; ओके कौण्ड कडिकेक-इह की बात से मुक्ति होनेवाले; मवर्द्धन-मन की होकर; उपर्युक्त-संभल पाया; इवर्न पौक-इसका जाना; नवर्द्ध-मन है; अर्द्धपु-इसका; पुनविपुर्न वर्द्धन-मन से विचार कर; लोकेपु-महाराजा देवी ने भी; इवर्न-भी; विल वाचक-कुल वचन; वीर्द्धन-कहे । ६८१

हेतुमान के ये दोष-रहित वचन मुनकर सीताजी स्वस्थित रहें । उनके मन में आनन्द उभूत आया और वे उन्नत अवस्था में आ गयीं । उन्होंने सीता कि अब इसका जाना ही अच्छा है । बुद्धि में यह सीवकर कलापी-सी ठरती वाली देवी ने निगमित वचन कहे । ६८२

शेखि	पुप	विर्नदने	नीपव	पुनलाम
वेरि	पानिनि	मीवर्द्धम	विमवर्द्धम	सेलेप
कू	हिर्नन	मुनगुडि	पुर्द्धन	कोमाइ
कू	मूर्द्धव	मीवर्द्धन	विमव	विमर्पण

682

पुन-नान; मीप-श्रेष्ठ; विर्नदने वेरि-वर्तित गति से जाना; नीपव पुनलाम-सभी सकट की; वेरि-जीवा; इति-अव; पान-स; मीवर्द्धम विमवर्द्धन-कई बात नही कहेंगी; कडिकेक-अव जो कहेंगी; मुन कूडि वर्द्धन-पहले ही

घटित हो गयी हैं; कोमाङ्कु एरुम्-हमारे अधिपति श्रीराम से स्वीकार्य हैं; अँन्ऱु-कहकर; अबे चोल्-उनको जाकर सुनाओ; अँत-कहकर; इन्त इचैप्पाळ्-निम्नांकित बातें कहने लगीं । ६८२

बाबा ! उत्तम ! शीघ्र चलो । सभी बुराइयों को जीतो । आगे कुछ अधिक ऐसी बातें नहीं कहूँगी । पर अब जो कहूँगी वह पूर्वघटित बातें हैं और अभिज्ञान के रूप में श्रीराम से स्वीकार्य होंगी । उनसे वे बातें कहो । यह कहकर वे बताने लगीं । ६८२

नाह	मौन्ऱिय	नल्वरे	यिन्ऱलै	मेत्ताळ्
आहम्	वन्दनै	वळ्ळुहिर्	वाळि	तळैन्द
काह	मौन्ऱै	मुत्तिन्दयल्	कल्लैळु	पुल्लाल्
वेह	वैम्बडै	विट्टु	मैल्ल	विरिप्पाय् 683

मेल् नाळ्-पहले कभी एक दिन; नाकम् औन्ऱिय-आकाशस्पर्शी; नल् वरैयिन्ऱु-सुन्दर (चित्रकूट) पर्वत पर; काकम् औन्ऱु-एक कौए का; वन्तु-आकर; अँतै-मेरे; आकम्-वक्ष को; वळ् उकिर् वाळिन्-तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से; अळैन्ततै-नोचना; मुत्तिन्तु-(देखकर) कोप करके; अयल्-पास में; कल् अँळु-पत्थर-मध्य उठी; पुल्लाल्-घास को; वेक-वेगवान; वैम् पटै-भयंकर (ब्रह्म-) अस्त्र (बनाकर); विट्टु-जो (श्रीराम ने) चलाया; मैल्ल विरिप्पाय्-धीरे-धीरे बताओ । ६८३

पहले एक दिन जब हम गगनचुम्बी चित्रकूट पर्वत पर रहे, तब एक कौआ आया और अपने तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से मेरे वक्षःस्थल को नोचने लगा । उसे देखकर श्रीराम ने गुस्से में आकर पास पत्थरों के बीच उगी रही एक (दर्भ की) घास को ब्रह्मास्त्र के रूप में अभिमन्त्रित किया और उस भयंकर अस्त्र को उस पर छोड़ा । यह बात तुम धीरे से उनसे कहो । ६८३

[आगे कुछ संस्करणों में पाँच पद पाये जाते हैं, जिनमें जयन्त का भागना और सभी देवताओं द्वारा अरक्षित होकर लौट आना और श्रीराम के चरणों पर गिरना आदि बातें विस्तार के साथ कही गयी हैं । श्रीराम ने उसको एक आँख से हीन कर उसे क्षमा कर दिया । यह कहानी है । उ० वे० स्वामीनाथय्यर का विचार है कि ये क्षेपक हैं ।]

अँन्नी	रिन्नुयिर्	मैन्गिळिक्	कार्पैय	रोहेन्
मन्न	वैन्ऱुलु	माशरु	केहयन्	मार्देन्
अन्नै	तन्बैय	राहैन्	वन्बिन्नी	उन्नाळ्
शौन्न	मैय्ममौळि	शौलुलुदि	मैय्ममै	तौडर्न्दोय् 684

मन्त-राजा; अँन्-मेरे; ओर् इन् उयिर्-मधुर प्राण-सम; मैन् किळिक्कु-

हुआ कि ओफ़ ! यह कौन सी वस्तु है ? उसका शरीर फूल गया । सातों लोकों को लीलकर जो फैला रहा वह अन्धकार भी सभी ओर से भाग गया । ६८६

मञ्ज	लङ्गीळि	योनुमिम्	मानहर-	वन्दान्
अञ्ज	लन्नेन	वङ्गण	ररक्क	रयिर्त्तार्
शञ्ज	लम्बुरि	चक्कर	वाहन्	दळिर्त्त
कञ्ज	मुम्मलर्	वुर्त्त	कान्दिन	कान्दम् 687

मञ्चु अलङ्कु-मेघों को छितरानेवाली; ओळियोनुम्-ज्योति का सूर्य भी; अञ्चलत्-निर्भय होकर; इ मानकर्-इस बड़े नगर; वन्तान् अंत-आया जैसे; वेम् कण्-भयंकर आँख वाले; अरक्कर्-राक्षस; अयिर्त्तार्-शंकित हुए; चञ्चलम् पुरि-शंकित रहे; चक्करवाकम्-चक्रवाक पक्षी; तळिर्त्त-लहलहा उठे; कञ्चमुम्-कंजपुष्प; मलर्वु उर्त्त-विकसित हुए; कान्तम्-सूर्यकान्त पत्थर; कान्तित-चमके । ६८७

मेघों को छितरा देनेवाली किरणों के स्वामी सूर्य को डर छोड़कर इस बड़े नगर में आया समझकर भयानक आँखों वाले राक्षस सशंक हो गये । भयचंचल चक्रवाक पक्षी लहलहा उठे । कञ्ज भी खिल उठे । सूर्यकान्त मणियाँ कान्ति बिखरने लगीं । ६८७

कून्दत्	मैन्मळक्	कौण्मुहिन्	मैल्लळ्	कोळिन्
वेन्द	नन्नुदु	मैल्लिय	रुन्डि	मेन्नि
शेन्द	दन्दमिल्	शेवहन्	शेवडि	यैन्तक्
कान्दु	हिन्डु	काट्टितन्	मारुदि	कण्डान् 688

मळै कौळ्-शीतल; मैल् कून्तल्-कोमल केश रूपी; मुकिल् मैल्-मेघ पर; ओळु कोळिन् वेन्तत्-सातों ग्रहों के राजा, सूर्य; अन्तत्-सरीखा; मैल्लियल् तन्-कोमल स्वभाव वाली देवी के; तिरुमेन्नि वेन्तत्-श्रीशरीर के समान अरुण; अन्तम् इल्-अनन्त; चेवक्त्-वीरता से पूर्ण श्रीराम के; चेवटि-श्रीचरण; अन्त-सदृश; कान्तुकिन्डु-चमकनेवाला वह चूडामणि; काट्टितळ्-(सीता ने) दिखाया; मारुति कण्डान्-मारुति ने देखा । ६८८

देवी के शीतल कोमल केश-मेघ पर सप्तग्रहों के राजा सूर्य के समान जो रहा करता था; सीताजी के श्रीशरीर के समान जो लाल था; अपार वीरता के साथ शोभायमान श्रीराम के चरणों के समान जो तेज निसृत करता था, उस चूडामणि को देवी ने दिखाया और हनुमान ने देखा । ६८८

ॐ शूडै	यिम्मणि	कण्मणि	यौप्पदु	तीन्नाळ्
आडै	यिन्गणि	रुन्ददु	पेरडै	याळम्
नाडि	वन्देन	दिन्नुयिर्	नल्हिनै	नल्लोय्
कोडि	यैन्नु	कौडुत्तन्	मैय्प्पुहळ्	कौण्डाळ् 689

भय से उड़ने को विवश करते हुए; पौल्लिल् इटै-उस अशोकवन-मध्य; कटितु पोवान्-शीघ्र जो गया; चिड् तौल्लिल् मुटित्तु-यह छोटा सा काम करके; अकडल्-छोड़ना; तीतु-भला नहीं; अँतल्-ऐसा; तँरिन्तान्-(उसने) सोचा; मडित्तुम्-फिर भी; ओर् चैयड्कु उरिय कारियम्-करने योग्य एक कार्य; मत्तित्तान्-सोचा । ६६१

हनुमान ने अपना मार्ग लेकर उत्तर दिशा में जाने की बात सोची । इसलिए वह अपना विराट् रूप लेकर अशोकवन-मध्य शीघ्र-शीघ्र जाने लगा तो भ्रमर आक्रान्त होकर ऊपर उड़ने लगे । तब उसने सोचा कि केवल यह छोटा सा काम करके लौट जाना कुछ अच्छा नहीं है । इसलिए करणीय किसी काम के बारे में सोचने लगा । ६९१

ईत्तमुख	पड्डलरै	यैड्डि	यैयिन्मूड्डर्
मीत्तनिल	यत्तित्तुह	वीशि	विळिमात्तै
मात्तवन्	मलर्क्कळलिल्	वैत्तुमिल्लै	तैन्डाल्
आत्तपौळु	दैप्परिशि	नात्तडिय	नावेन् 692

ईत्तम् उड्ड-नीचकर्म; पड्डलरै-शत्रुओं को; यैड्डि-पीटकर, मारकर; यैयिल् मूट्टर्-प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को; मीत्त तिलयत्तित्तु-मकरालय में; उक् वीचि-छितराते हुए फेंककर; विळि मात्तै-मृगनयनी सीता को; मात्तवन्-सम्मान्य श्रीराम के; मलर् कळलिल्-कमलचरणों पर; वैत्तुमिल्लै-ले जाकर नहीं छोड़ा; तैन्डाल्-तो; आत्त पौळु-तब; अँ परिचिन् नात्त-किस रीति से मैं; अट्टियन् आवेन्-दास बना । ६६२

नीच-कर्म शत्रु राक्षसों को पीटकर, प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को मकरालय में खण्ड-खण्ड करके न फेंककर मृगनयनी सीताजी को श्रीराम के कमल-चरण पर अर्पित नहीं किया मैंने । तो मैं किस तरह का सेवक बना ? । ६९२

वज्जुनै	यरक्कनै	नैरुक्किर्नेडु	वालाल्
अज्जिन्नुड	तज्जुदलै	तोळुड	वशैत्तै
वैज्जिर्ऱैयिल्	वैत्तुमिल्लैन्	वैन्ऱुमिल्लै	नैन्डाल्
तज्जुमौरु	वर्क्कौरुव	रैन्ऱुडह	वामो 693

वज्जुत्तै अरक्कत्तै-चोर राक्षस को; नैडु वालाल्-लम्बी पूँछ से; अज्जिन्नु उडन्-पाँच जोड़; अज्जु तलै-पाँच सिरों; तोळु उड-कन्धों को लगाकर; नैरुक्कि अवैत्तु-कसकर बाँधकर; वैम् चिर्ऱैयिल्-भयानक जेल में; वैत्तुम् इल्लैन्-न डाला भी; वैन्ऱुम् इल्लैन्-न हराया भी; तैन्डाल्-तो; ओरुवर्क्कु ओरुवर्-एक का दूसरा; तज्जुम् तैन्डाल्-आश्रयदाता है कहना; तक्कु वामो-युक्त होगा क्या । ६६३

मैंने अपनी लम्बी पूँछ में चोर रावण के दसों सिरों और बीसों भुजाओं को मिलाकर कस के बाँधकर कठोर कारागार में भी नहीं डाला । न

उसे कुछ करके दे दिया। तब एक के दूसरे (श्रीराम के सुग्रीव) आज्ञा-
 दाता है—यह कथन उचित (अभ्युपग) हो सकता है क्या ? । ६९३

कण्डलिनिक	दककडल	कलककिगुम	वलमेनल
निगडिड	लरककम	मिकककवारे	निडमेनि
मण्डवद	रमेनवद	वडिककुळ	पडिमेविक
कण्डुडिगुड	वैमेनिड	लिडकुडु	मुण्डो 694

कण्ट-अपना देला हुआ; निरल कडल-राक्षस-सगर; अंग वलमेनल-अपने
 वल से; कलककि-मयकर; निग निडल अरककमे-अलि वलवान राक्षस के भा;
 इरक-देखले रहले; और निडमेनि-अपनी अजुम शक्ति से; मण्ड उतरने
 लवळ-मन्द उतर वाली (मन्दोदरी) का; वडि कुळ-सवार का; पडिमेविक-एकड़कर;
 निड कण्डु वैमेनिडल-अल से ले जा डाल देना; कुडुम उण्डो-दीपयुक्त होगा
 क्या । ६९४

अपने देखे राक्षस-सगर की अपने वल से मयकर अलि वलिकठ
 रावण के देखले-देखले अपने अपविम वल से मद उतर वाली मन्दोदरी का
 सुवारा केण पकड़ खीच ले जाकर जोल में डाल दूँ तो वह क्या अपराध
 बन सकता है ? । ६९४

मिदुमिनि	मुणुमनिव	वेरुम	मरुवर	वृवलम	दरुल
अदिदिपव	वरककगि	रुण्डिरुम	कडुमवारे		
कादुमव	वेरुम	मरुवर	कडुमवारे		
मदुमव	यावडुहो	लेरुमुपल	विरेरुल		695

मिदुम-फिरकर; इनि-अव; अणुम निव-सोचने योग्य काम; वेरुम
 उल्लु अनेक-अन्य कुल नहीं है; इ अरककर उदिर-इन राक्षसों के भाल; अदि-
 इरकर; उण्ड-उमकी मारकर; उरुम अल्लाम-श्रीराम के दास का कर्तव्य सब;
 कादुम अगुव-कर दिखाना हो; कडुम-करणीय काम है; अवरे-व; कडुम
 मारे-घोर कुछ; मदुम-आरुम कर; वक पावु कलि-इसका उपाय कोन
 सा है; अमक-ऐसा; मुपलकिगुम-उपाय सोचने लगा । ६९५

आगे क्या कोई काम है जो किया जाना चाहिए। इन राक्षसों के
 भाल देर लेना ही कर्तव्य कार्य है। यही सबक के नाते अपना अधिकार
 जमाने का काम होगा। अब राक्षसों की घोर कुछ करने आने की मजबूर
 कल, इसका उपाय क्या है ? हेतुमान उपाय सोचने लगा । ६९५

इपुण्डि	निवककिड	दिडककुव	लिडमेनल
अपुडिप	मुणुमनिव	आरुवडु	मरककर
वपुड	विमेनलरुडिरे	मलेवरवर	वनेवल
उपुड	मुकककिगुम	रुणुवलडि	गुडाल 696

इ पौल्लिलिनै-इस् अशोक वन को; कटितु इरुक्कुवैन्-शीघ्र तोड़कर नष्ट कहेगा; इरुत्ताल्-मिटाऊं तो; अ पैरिय पूचल्-वह बड़ा शोर; चैवि चार्तलुम्-कान में पड़ेगा तो तुरन्त; अरक्कर्-राक्षस; वैप्पु उरु-गरम हो; चित्तत्तर्-कोप से भरे; अँतिर् मेल् वरुवर्-मुझ पर आक्रमण करने आएँगे; वन्ताल्-आएँ तो; तुप्पु उर-बल लगाकर; मुरुक्कि-मारहेगा और; उयिर् उण्पल्-जान खा लूंगा; इतु चूतु-यही उपाय है । ६६६

अब मैं इस अशोक वन को शीघ्र मिटाऊँगा । उसका शोर उनके कानों में पड़ेगा तो वे भयकर क्रोध के साथ मुझ पर धावा बोलने आएँगे; जब वे आएँगे तब उन्हें अपना बल दरसाकर उनके प्राण हर लूँगा । यही अच्छा उपाय है । ६९६

वन्दवर्हळ्	वन्दवर्हण्	मीळ्हिलर्	मडिन्दाल्
वैन्दिर	लरक्कतुम्	विलक्कर	वलत्ताल्
मुन्दुमेति	लन्तवन्	मुडित्तलै	मुडित्तैन्
शिन्दैयुरु	वैन्दुयर्	तविरत्तित्तु	शैल्वेन् 697

वन्तवर्कळ्-आनेवाले; वन्तवर्कळ्-और आनेवाले; मीळकिलर्-न लौट कर; मडिन्ताल्-मर जाएँगे तो; वैम् तिरल् अरक्कतुम्-कठोर बलशाली राक्षस रावण भी; विलक्कु अरु वलत्ताल्-अवायं बल के साथ; मुन्तुम् अँतिल्-सामने आया तो; अन्तवन् मुटि तलै-उसके किरीटधारी सिरों को; मुडित्तु-तोड़कर उसको मारकर; अँन् चिन्तै उरु-अपने मन में रहनेवाले; वैम् तुयर्-कठोर दुःख को; तविरत्तु-दूर करके; इत्ति तु चैल्वेन्-खुशी से लौट जाऊँगा । ६६७

जब चढ़ आनेवाले मरेंगे और लौट नहीं जाएँगे, तब कठोर बलिष्ठ रावण स्वयं अपार बल लेकर आयगा । तब उसके किरीटधारी सिरों को तोड़ दूँगा और उसे मार दूँगा । तब मेरे मन का बड़ा सन्तापक दुःख दूर हो जायगा और मैं खुशी से लौट जाऊँगा । ६९७

अँन्नूनिनै	याविरवि	चन्दिर	नियङ्गुम्
कुन्नरुमिर	तोळनैय	तन्नुरुवु	कौण्डान्
अन्नूल	हँयिरुडिकी	ळेनमेन	लानान्
तुन्नूहडि	काविनै	यडिक्कौडु	तुहैत्तान् 698

अँन्नू नितैया-ऐसा सोचकर; इरवि चन्तिरन्-रवि और शशि; इयङ्कुम्-जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्नरुम् अतैय-उस मेरु के समान; इरु तोळ्-दो कन्धों वाला; तन् उरुवु-अपना विराट् रूप; कौण्डान्-धर लिया (हनुमान ने); अन्नू-उस (प्राचीन) दिन; उलकु-भूमि को; अँयिरु इटै-दाँतों के मध्य; कौळ् एत्तम् अँत्तल् आत्तान्-जिन्होंने उठा लिया उन वराहावतार के समान बना; तुन्नू-तरुओं से खूब भरे; कटि कावितै-मुरक्षित अशोक वन को; अटि कौडु-पैरों से; तुक्कैत्तान्-रौंदकर मिटाने लगा । ६६८

कुछ वर निमग्न हुए । कुछ झूलसे । कुछ आकाश में जाकर
 सूर्यो के साथ घट गये । कुछ हवा के साथ उड़कर समुद्र में गिरे और
 एक में धूसर मिट्टे । कुछ धमरों के साथ उठकर स्वर्ग से जाकर टकराए ।
 कुछ चूर-चूर होकर चू पड़े । कुछ दबकर निहित हो गये । ७००

शोतैमुदन्	मर्खवै	शुळ्ळिउय	तिशैपपोर्
आनैनुह	रक्कुळहु	मानवडि	पर्खा
मेनिमिर	विट्टन	विशुम्बित्वळि	मीपपोय्
वानवर्ह	णन्दन	वतत्तैयु	मडित्त 701

चोतै मुतल्-मेघ-सहित रहे; मर्खवै-अन्य कुछ पेड़; चुळ्ळिउय-घूमते हुए; तिचै पोर् यानै-युद्धोत्साही दिग्गजों के; नुकर-खाने के लिए; कुळकुम् आत-पत्तों के गोलक बने; अटि पर्खा-तना पकड़कर; मेल् निमिर विट्टन-जो ऊपर उछाले गये; विचुम्पित् वळि-उन्होंने आकाश मार्ग से; मी पोय्-ऊपर जाकर; वानवर्कळ् मन्तत्त वतत्तैयुम्-देवों के नन्दनवनों को भी; मडित्त-मिट्टा दिये । ७०१

मेघाच्छादित कुछ पेड़, जो हनुमान से फेंके गये, युद्धोत्साही दिग्गजों के खाने के 'गोलक' बने । हनुमान ने कुछ पेड़ों के निम्न भाग को पकड़कर ऊपर फेंका । उन्होंने आकाश में जाकर देवों के नन्दनवनों को मिटा दिया । ७०१

अलैन्दन	कडर्खिरै	यरक्करहन्	माडम्
कुलैन्दुह	विडिन्दन	कुलक्किरिह	ळोडु
मलैन्दुपौडि	युर्जन	मयङ्गिर्नेडु	वानत्त
तुलैन्दुविळु	मीनिनीडु	वैण्मल	रुदिर्न्द 702

कटल् तिरै-समुद्र की तरंगें; अलैन्तत्त-हिलोरे लेने लगीं; अरक्कर-राक्षसों के; अकल् माटम्-बड़े-बड़े मकान; कुलैन्तु उक-ढहकर गिरते हुए; इटिन्तत्त-टूटे; कुल किरिकळोडु-आठ कुलगिरियों के साथ; मलैन्तु-वे तह टकराकर; पौटि उर्जत्त-चूर-चूर हो गये; नैटु वानत्तु-लम्बे आकाश में; उलैन्तु विळु-अस्त-व्यस्त होकर; गिरनेवाले; मीत्तिनीडु-नक्षत्रों के साथ; मयङ्कि-मिश्रित होकर; वैण्मलर्-श्वेत पुष्प; उतिर्न्त-नीचे गिरे । ७०२

कुछ पेड़ समुद्र में जाकर गिरे और उसकी तरंगें उद्वेलित हुईं । ऐसे पेड़ों के गिरने से उस नगर के राक्षसों के विशाल प्रासाद टूट-फूट गये । कुछ तह आठ कुलगिरियों (हिमालय, मन्दर, कैलास, विन्ध्य, निषाद, हेमकूट, नील, गन्धमादन) से जाकर टकराये और चूर-चूर हो गये । आकाश से नक्षत्र अस्त-व्यस्त होकर गिरे और इन पेड़ों के श्वेत रंग के पुष्प भी मिश्रित होकर नीचे गिरे । ७०२

मुडक्कुर्नेडु	वेरीडु	मुहन्डुलह	मुर्खम्
कडक्कुम्बहै	वीशिन	कळित्तदिशै	यानै
मडप्पिडियि	नुक्कुदव	मैयिनिमिर्	कैवैत्
तिडुक्कियत्त	वीत्तन	वैयिर्निडि	नाल्व 703

मुडक्कु-कुंचित; नैटु वेरीट्ट-लम्बी जड़ों के साथ; मुकन्तु-उठाकर; उलकम्

लगे । वे आपस में टकराकर जब चूर-चूर हो चू पड़े, तब युगान्त में गिरनेवाले तारासमूहों के समान लगे । ७०५

पुळ्ळिन्नोंडु	वण्डुमिजि	रुङ्गडिहीळ	पूवुम्
कळ्ळुमुहै	युन्दळिर्ह	ळोडिनिय	कायुम्
वैळ्ळन्नैडु	वेलैयिडे	मीन्निनम्	बिळ्ळुङ्गित्
तुळ्ळित्त	मरन्बड	नैरिन्दत्त	तुडित्त 706

पुळ्ळिन्नोंडु-खणों के साथ; वण्डुम् मिजिन्-भ्रमर और ततये; कटि कौळ् पूवुम्-सुगन्धित फूल; कळ्ळुम्-शहद; मुकैयुम्-कलियाँ; तळिर्कळोटु इत्तिय कायुम्-पल्लवों के साथ मधुर अपक्व फल; वैळ्ळ नैडु वेलैयिटै-जल-भरे विशाल समुद्र-मध्य; मीन् इत्तम्-मछलियों का झुण्ड; बिळ्ळुङ्कि-निगलकर; तुळ्ळित्त-उछले; मरन् पट-पेड़ों के लगने से; नैरिन्दत्त तुडित्त-दबकर तड़पे । ७०६

समुद्र की मछलियाँ पक्षियों, भ्रमरों, सुगन्धित पुष्पों, मधु, कलियों, पत्रों और फलों को खाकर उछल-कूद मचाने लगी । पर पेड़ों के लगने से, बेचारी दबकर तड़पने लगी । ७०६

तूविय	मलर्त्तौहै	शुमन्नुतिशै	तोरुम्
पूविन्मण	नारुव	पुलाल्कमळ्हि	लाद
तेवियर्ह	ळोडुमुयर्	तेवरित्ति	दाडुम्
आवियेत्त	लायदिशै	यार्हलिह	ळम्मा 707

तूविय मलर् तौकै-बिखरी पुष्प-राशियाँ; चुमन्तु-धारण करके; तिच्चै तोरुम्-दिशा-दिशा में; पूविन् मणम् नारुव-पुष्पगन्धगन्धित; पुलाल् कमळ्क्किलात-मांसगन्धरहित; तिच्चै आर्कलिकळ्-चारो दिशाओं में रहनेवाले सागर; तेवर्-देव; उयर् तेवियर्कळोटुम्-उत्तम देवियों के साथ; इत्ति तु आडुम्-आराम से जिनमें स्नान करते हैं; आवि अत्तल्-वापियों के समान; आय-बने । ७०७

चारों दिशाओं में स्थित सागरों पर सुगन्धित फूल तैर रहे थे । इसलिए वे सर्वत्र पुष्पवास से वासित थे और उनमें मांसगन्ध नहीं पाया गया । इस कारण वे उन वापियों के समान लगे, जिनमें देवी और देवता लोग आराम और आनन्द के साथ स्नान करते हैं । ७०७

इडन्तमणि	वेदियु	मिरुत्तकडि	कावुम्
तौडर्न्दन	तुरन्दत्त	पडिन्दुनैरि	दूरक्
कडन्नुशैल	वैन्बदु	कडन्ददिरु	कालाल्
नडन्नुशैल	लाहुमैन्त	लाहियदु	नन्नीर् 708

इडन्त-हनुमान द्वारा फेंकी गयी; मणि वेतियुम्-मणिमय वेदियाँ; इरुत्त कटि कावुम्-और नष्ट हुआ सुरक्षित अशोक वन; तौडर्न्दत्त-एक के पीछे एक

लगाकर; गुरतनन-जो तेज बले; पटितु- (समुद्र में) जाकर गिरे और; ब्रि पूर-
पाटकर मार्ग के समान बना दिया; इसलिय; नवीन-अच्छे जल का वह सागर;
कदतु ब्रह्मपु-तेरकर या लंबिकर जाने योग्य; कदतनव-यह स्थिति छोड़कर;
इस काल-दोनों पूरे से; नदतु-बनकर; ब्रह्म आहुत-बन सकते हैं; अथवा
आत्मपु-प्रेमा बन गया। ७०८

हनुमान ने रत्न-वेदिकाओं की उवाङ्कन फंका; उनके पीछे पड़े को
फंका। वे एक के पीछे एक जाते रहे और समुद्र में गिरकर उसे पाट
गये। अब समुद्र पर पक्का मार्ग हो गया और लंबिकर या तेरकर पार
किया जाय ऐसी स्थिति में नहीं था। कोई उस पर पदल चलकर ही
उसे पार कर सकता था। ७०८

वेदितविले	पाडुयुड	रोनिनीड	विमपुम
बानिनिड	बोशिय	विममवण	मरवनाल
नावररुहण	माडिहै	नहरुनतुपुडि	याव
वानवविह	यालितियु	मानवररुहण	मान

वित्त-योग्य ऋतु में; विष्णु-अपनी पूरी उम्र में रहनेवाले; बुरेदिवस-
किरणमाली की तरह; अलि विमपु-प्रकाश से भरे; ब्रिह्म इडे-आकाश में;
बोविय-फंके गये; इतने पण मरुतनाल-बड़े और रम्य नदियों से; वान इडिपाव-
आकाश के वज्र से; इडियुम मान वरुंकळ मान-दंडनेवाले बड़े पर्वतों की शक्ति;
नानवरकळ माडिक-दानवों के प्रासाद; नकरतुपु पुडि आल-इहकर ब्रह्म हुए। ७०९

आकाश योग्य-विजयिणी युद्ध के समान बढ़ते ही उबलने लग गया।
नव हनुमान-पूरे नदियों से आकाश-वज्राहत पर्वतों के समान दानवों के
प्रासाद इडे-फंके और बुरे हुए। ७०९

अणुपिउर	कोडिहै	ळिनिदेव	ब्रिनिदे
नणुनमळ	पुलिड	नळनवतु	अलवेनाल
अणुलतु	मानड	निरावणन	दरनाळ
विणुपिउमपुडे	गोलियुड	दासन	विनिननाल

बलवेनाल-कोय के साथ; अतिरतन-हनुमान से जो फंके गये; अणु इले-
असंख्यक; नव कोडिकळ-ब्रह्मवन्द; ब्रिनिनु-उस भरकर; नणु अने मळेपाने-
गोनन सेवों के समान; इडे नळवेतवु-अनरिख में घने रूप से लटके रहे; अणुल-
अनुमान-महिमावान हनुमान से; अ नाले-उस दिन; अडल इरावणतु-बलवान
रावण का; विणुपिउम और गोल-आकाश में भी एक अशोक बन; उळतु आणु अने-
है जैसे; विनिननाल-फला दिया। ७१०

हनुमान के द्वारा अपार कोय के साथ फंके गये असंख्य नदियों के
समूह अनरिख में सेवों के समान दिखे। महिमामय हनुमान ने इस तरह

उन तरुओं को बिखेर दिया, मानो वहाँ (अन्तरिक्ष में) बलवान रावण का और एक उपवन बन गया हो । ७१०

तेनुरै	तुळिप्पनिरै	पुट्पल	शिलम्बप्
पूनिरै	मणित्तरु	विशुम्बिनिडै	पोव
मीन्मुरै	नैरुक्कवौळि	वाळौडुविल्	वीश
वान्निडै	नडक्कुनैडु	मात्तमैन्	लान्न 711

तेन् उरै—शहद की बूँदें; तुळिप्प-टपकीं; निरैपुळ्-वहाँ मिले रहे पक्षी; पल चिलम्प-अनेक चहक उठे; पू निरै-पुष्पकलित; मणि तरु-मणिमय तरु; विचुम्पिन् इटै-आकाश-मध्य; पोव-जाकर; मीन् मुरै नैरुक्क-नक्षत्रों को आक्रान्त करने लगे; औळि वाळ् औटु-प्रकाश तलवार के समान; विल् वीच-और धनु के समान छिटका; वान्निडै नडक्कुम्-आकाशचारी; नैटु मात्तम् अँतल् आत्त-बड़े यानों के समान लगे । ७११

पुष्पों से भरे रत्नमय तरु आकाश में जा रहे थे और उनसे शहद की बूँदें टपक रही थीं; और उन पर से अनेक पक्षी चहक रहे थे । नक्षत्र उनसे मिल गये । तब प्रकाश तलवार और धनु के आकार में छूट रहा था । ये तरु इस साज में आकाश में चलनेवाले यान के समान, दिखे । ७११

शाकनैडु माप्पणै तळैत्तत्त तनिप्पोर्, नाह्मतै यानैरिय मेनिमिर्व नाळुम्
माहनैडु वान्निडै यिळिन्दुपुत्तल् वारुम्, मेहमैन् लान्नैडु माहडलिन् वीळ्व 712

तत्ति-अप्रतिम; पोर् नाकम् अतैयान्-युद्धगज के समान (जो रहा) उस हनुमान के; अँरिय-फेंकने के कारण; नैटु मा पणै चाकम्-लम्बी बहुत मोटी शाखाओं और; तळैत्तत्त-पत्तों से युक्त; मेल् निमिर्व-उद्गत; नैटु मा कटलिन्-अति विशाल समुद्र में; वीळ्व-गिरनेवाले तरु; नाळुम्-सदा; नैटु माक् वान्-अति विस्तृत आकाश; इटै इळिन्तु-मध्य से उतरकर; पुत्तल् वारुम् मेकम्-जल-ग्राही मेघों; अँतल् आत्त-के समान भी बने । ७१२

अप्रतिम और युद्धगज के समान उस हनुमान के फेंकने के कारण, लम्बी और मोटी शाखाओं से युक्त, आकाश में उड़कर समुद्र में गिरनेवाले वृक्ष, अति विस्तृत नभ के मध्य से उतरकर आनेवाले जल-ग्राही मेघों के समान लगे । ७१२

ऊत्त मुर्ऱिड मण्णि नुदित्तवर्, जान् मुर्ऱुबु नण्णिनर् वीडैन्त
तात्त कर्प्पहत् तण्डलै विण्डलम्, पोन् पुक्कन मुत्तुनुरै पीत्तनर् 713

ऊत्तम् उर्ऱिट-मल (अज्ञान) के होने से; मण्णिल् उतित्तवर्-जो भूमि में जन्म ले चुके वे; जान् मुर्ऱुपु-ज्ञान पूर्ण होने पर; वीटु नण्णिनर् अँत्त-स्वर्ग पहुँच जाते जैसे; तात्त कर्प्पक-दानशील कल्पतरुओं का; तण्डलै-वह अशोक वन; विण् तलम्

पौन-आकाश में जाकर; भूत उड़-पूब वास के; पौनकर एककल-स्वालोका पड़ैव गये । ७१३

कोई (अविद्याजन्म) अपकृत्य होने से स्वर्ग छोड़कर जो भूमि पर जन्म ले चूके हों, वे जैसे जल की पूर्णता प्राप्त करने पर स्वर्ग पड़ैव जाते हैं, वैसे ही कल्पवत्-लसित अशोक वन के तरे ज्योम में जाकर अपना पूर्ववासस्थल स्वालोका में पड़ैव गये हों, ऐसे जागे । ७१३

मणिहोइ कुट्टिम सद्विनेव कुट्टिम कुट्टिम कुट्टिम
गुलिव कुट्टिमवल कुट्टिमवल कुट्टिमवल कुट्टिमवल
लिगुलि वरुनेलल कुट्टिमवल लिगुलि वरुनेलल
पुलिव कुट्टिमवल कुट्टिमवल कुट्टिमवल कुट्टिमवल
वडुनेलरी 714

मणि कौले-मणिमण्डल; कुट्टिमम-वडुनेलरी की; सद्विनेव-सदियामे करके; मण्डपम गुलि पद्वेव-मण्डप की छिन्न-मिन्न करके; अथ-पास की; बालिक-मण्डप की; वरुनेल-पादकर; अलि-शोभामान और सुदृढ़; वरुनेल-दीवार की; ललम विनि-लोड-कोडकर भूमि पर बिखेरकर; वरुनेल अथ-कुट्टिम; पणि पद्वेव-काया वने पवाया का नाश करके; उपर कुट्टिम-ऊबे पवली की; पद्वेव-मिटाकर । ७१४

हेतुमान ने मणिमय वडुनेलरी की लोड-कोडा । मण्डप की लहेस-नहेस किया । पास रहे जलधारा की पोट दिया । और पास रही सबल दीवार की छेदकर छिन्न दिया । वडुव परिश्रम के साथ जो बनये गये थे, उन सब (मण्डप, मार्ग, उद्यान) का नाश करा दिया । ऊंची निरियाँ (या ऊँचे टीले) की भी मिटा दिया । ७१४

वडुग लोडुग कडुपडुम पुरी मरामरम वरुपडिने
पाडुगारुव वणवडेण पवलि पडिनेवपल
मडुग विपणु सद्विनेव मरडिने 715

वडुके 'वडु-वडु' लक्यों की लहेस-नहेस करके; मरामरम-सालवधों की; वरु पडिनेव-उ-मूलन करके; ओडुडु कडुपडुम-ऊँबे कल्पवत्तों की; पुरी और अडिनेव-गुलियों के साथ मिटाकर; पाडुकर उराम-पाडुव में रहे; वणपक पवलि-वणकलर-पडिनेवों की; पडिनेव-उछाड फेंककर; अथ म कलि पण-पास में रहे आम के कलों से युक्त जलो की; सद्विनेव मरडि-लोडकर विगाडकर (नल-मल किया) । ७१५

हेतुमान ने 'वडु' नाम के पडु, सालवध, कल्पवत्, वणकलर-पडिनेव सबको निर्मूल किया, पुरियों के साथ मडियामे कर दिया । आम के पडु थे । उरुने भी कलों के साथ जलियाँ लोडकर नल कर दिया । ७१५

शब्द तङ्ग उहर्न्दन ताम्बडर्, इन्द तङ्गळिन् वैन्दरि शिन्दित
मुन्द नङ्गन् वशन्दन् मुहङ्गोड, नन्द तङ्गळ् कलङ्गि नडुङ्गवे 716

तकर्न्तत्त-उत्पाटित; चन्तत्तङ्कळ् ताम्-चन्दन-तरुओं ने; अतङ्कन् मुन्तु-
मन्मथ के पहले आनेवाले; वचन्तन् मुकम् कँट-वसंत का चेहरा (तेज) बिगाड़ते हुए;
नन्तत्तङ्कळ्-आकाश के नन्दनवनों को; कलङ्कि नटुङ्क-व्याकुल और भयभीत करते
हुए; इन्तत्तङ्कळिन्-ईधन की भाँति; वैन्तु-जलकर; पटर् अँरि-लगातार
आग; चिन्तित-बरसायी । ७१६

चन्दनतरु, जो छिन्न-भिन्न किये गये, ईधनों के समान निरन्तर
आग उगलते रहे, जिससे अनङ्गमित्र वसन्त का मुख निष्प्रभ हुआ और व्योम
के नन्दनवन भयभीत हुए । ७१६

काम रङ्गति वण्डु कलङ्गिड, माम रङ्गण् मडिन्दन मण्णोड
ताम रङ्ग वरङ्गु तहर्न्दुहप्, पूम रङ्ग ळैरिन्दु पौरिन्दवे 717

कामरम् कति-कामर राग सधे रूप से गानेवाले; वण्डु कलङ्किट-भ्रमर बेचैन
हुए; मा मरङ्कळ्-बड़े-बड़े वृक्ष; मण्णोडु मटिन्तत्त-भूमि पर मुड़कर गिरे;
अरङ्कु ताम्-नाट्यमंच; अरङ्क-मिट गये; तकर्न्तु उक-टूटकर गिरे ऐसा;
पू मरङ्कळ्-पुष्पतरु; अँरिन्तु पौरिन्त-जले-भुने । ७१७

‘कामर’ राग का गान सधे रूप से गानेवाले भ्रमरों को अस्त-व्यस्त
करते हुए बड़े-बड़े वृक्ष मिट्टी में मिल गये । अनेक पुष्पतरु जल-भुन गये,
जिससे नृत्यशालाएँ मिट्टी और ढहकर खाक में मिल गयीं । ७१७

कुळैयुड्	गौम्बुड्	गौडियुड्	गुयिर्कुलम्
विळैयुन्	दण्डळिर्च्	चूळु	मैन्मलर्प्
पुळैयुम्	वाशप्	पौदुम्बुम्	बौलन्गौडेन्
मळैयुम्	वण्डु	मयिलु	मडिन्दवे 718

कुळैयुम्-पत्ते; कौम्पुम्-और टहनियाँ; कौटियुम्-लताएँ; कुयिल् कुलम्
विळैयुम्-कोकिलकुल के प्यारे; तण् तळिर् चूळुम्-शीतल लताकुंज; मैन् मलर्
पुळैयुम्-कोमल फूलों से भरे मार्ग; वाच पौतुम्पुम्-सुगन्धपूर्ण झाड़ियाँ; पौलन् कौळ्-
स्वर्णवर्ण में; तेन् मळैयुम्-गिरनेवाली शहद की धारें; वण्डुम्-भ्रमर; मयिलुम्-
और मयूर; मटिन्त-मिट गये । ७१८

क्या-क्या मिटे ! पत्ते, टहनियाँ, लताएँ, कोकिलकुल, प्यारे शीतल
लताकुंज, कोमल पुष्पावृत मार्ग, सुवासित झाड़, स्वर्ण के रंग की शहदवर्षा,
भ्रमर और मयूर सब मटियामेट हो गये । ७१८

पवळ	माक्कौडि	वोशिन	पन्मळै
तुवळु	मिन्नेन्च्	चुर्त्तिडच्	चूळ्वरं

विषय	प्राप्त	मास	वर्ष
विषय	प्राप्त	मास	वर्ष
कव	प्राप्त	मास	वर्ष
प्राप्त	प्राप्त	मास	वर्ष
प्राप्त	प्राप्त	मास	वर्ष

719 कान्तव्य

विषय—(हिसा) कही गयी; पव मा कीट-प्रवाल-लाल-लाला के; पव मछे प्रवर्ध-सुवर्ध लवकनेवाली; मिने अल-विजली के समान; वृद्ध वर-लका की घरे रहे पवली की; चुरिड-लपट लिप; चुरेनल-वर्षा ली पृष्ठे; विवर्ध-वे शीमापमान; पवि पव-रवर्ध-लाली के; मा मर-वर्ष वृष; कव प्रविध-कौर खानेवाले गजों के; ओटिपल-मुवपट्टी के समान; कान्तव-नेजाम रहे । ७१९

पुनर्वापन द्वारा कही हुई प्रवाल-वर्ण लताएँ प्रमथ्य समकनेवाली विजली के समान पवली पर लिपट गयी । और रवर्धम्य जालियाँ-सहित बड़े-बड़े पृष्ठ बड़े-बड़े कौर खानेवाले गजों के मुखपट्ट के समान प्रकाशमय दिखे । ७१९

पुनर्वापन कर उठे, वहे शीर; अनेक ल-टटकर गिरे, लव उठा वज-सम शीर; धमकेप हुजमान गजान कर उठा, वहे शीर—सब अउ-पार सब पार कर सुनायी दिया । ७२०

पुनर्वापन कर उठे, वहे शीर; अनेक ल-टटकर गिरे, लव उठा वज-सम शीर; धमकेप हुजमान गजान कर उठा, वहे शीर—सब अउ-पार सब पार कर सुनायी दिया । ७२०

पुनर्वापन कर उठे, वहे शीर; अनेक ल-टटकर गिरे, लव उठा वज-सम शीर; धमकेप हुजमान गजान कर उठा, वहे शीर—सब अउ-पार सब पार कर सुनायी दिया । ७२०

पुनर्वापन कर उठे, वहे शीर; अनेक ल-टटकर गिरे, लव उठा वज-सम शीर; धमकेप हुजमान गजान कर उठा, वहे शीर—सब अउ-पार सब पार कर सुनायी दिया । ७२०

पुनर्वापन कर उठे, वहे शीर; अनेक ल-टटकर गिरे, लव उठा वज-सम शीर; धमकेप हुजमान गजान कर उठा, वहे शीर—सब अउ-पार सब पार कर सुनायी दिया । ७२०

वण्टु अलम्पु-भ्रमर जिन पर मँड़राते भन्ना रहे थे; नल् आइरिन्-उद्यान के सुन्दर मार्गों में रहे; मरामरम्-(वे) सालवृक्ष; वण्टल्-तलौछ (पंक) के साथ बहने-वाली; अम् पुतल्-और मनोरम जल वाली; आइरिन्-नदी में गिरकर; मटिन्त-नष्ट हुए; विण् तलम् पुक-व्योमलोक में जा गिरे ऐसा; नीङ्किय नीळ् मरम्-फँके गये लम्बे वृक्ष; विण्टु अलम्पु-श्रीविष्णु के चरण जिससे प्रक्षालित किये गये; कम्-जो आकाश में बहती थी; वेण् पुतल्-उस (आकाशगंगा) के श्वेत जल में; वीळ्न्त-गिरे । ७२२

उस अशोक वन के मध्य मार्गों पर सालवृक्ष थे और उन पर भ्रमर भन्नाते हुए मँड़रा रहे थे । वे तलौछ के साथ बहनेवाली नदी में गिरकर पंक में मग्न होकर मिट गये । हनुमान द्वारा आकाश पहुँचाते हुए फँके गये कुछ वृक्ष आकाशगंगा के श्वेत जल में गिरे; जिस नदी के दिव्य जल से श्रीविष्णु भगवान के श्रीचरणों का प्रक्षालन (ब्रह्मा द्वारा) किया गया था । ७२२

ताम	रैत्तडम्	बोय्हैशैज्	जन्दनम्
ताम	रैत्तन्	वौत्तदु	कैत्तलिन्
काम	रङ्गळि	वण्डौडुड्	गळ्ळौडुम्
काम	रङ्गमळ्	पूक्कडल्	कण्डवे 723

उकैत्तलिन्-फँकने से; तामरै तडम् पोय्कै-विशाल कमल-सर; चैम् चन्ततम् ताम्-लाल चन्दन की लकड़ियों को; अरैत्तन्-पीसकर वह लेप उसमें घोल दिया गया हो; औत्ततु-बँसा हो गया; का मरम्-उस वन के वृक्षों ने; कामरम् कळि-कामर राग स्वरित करते हुए मत्त रहनेवाले; वण्टौडुम्-भ्रमरों के साथ; कळ्ळौडुम्-शहद के साथ और; कमळ् पू कटल् कण्ट-सुगन्ध-भरा पुष्प-सागर (के दृश्य) प्रस्तुत किये । ७२३

हनुमान द्वारा फँके गये पेड़ों की वजह से कमल-सर चन्दनजलपूर्ण जलाशय-से हो गये । और वे सर अशोक वन के उन पेड़ों, कामर-राग गानेवाले मत्त भ्रमरों और शहदों के कारण पुष्पसागर-से बन गये । ७२३

शिन्दु वारन् दिशैतौरुज् जैन्डन, शिन्दु वारम् बुरैतिरै चेरन्दन
तन्दु वारम् बुहन्डुन् दाळ्वरै, तन्दु वारन् दुहळ्पडच् चाय्न्दवे 724

चिन्तुवारम्-काली निर्गुण्डी के पेड़; तिचै तौरुम्-सभी दिशाओं में; चैन्डन्-गये; चिन्तु-सिन्धु में; वार्-लम्बी; अम् पुरै तिरै-अँची सुन्दर तरंगें बनाते हुए; चेरन्त-गिरे; तम् तुवारम् पुक-गुफाओं में वे तरंगें घुसीं, इसलिये; नैदुम् ताळ् वरै-विशाल सानुओं से युक्त पर्वत; तम् तुवारम् तुकळ् पट-लंका के द्वारों को चूर करते हुए; चाय्न्त-लुढ़क गये । ७२४

(सिंदुवार) काली निर्गुण्डी के पेड़ चारों ओर गये और सिन्धु में उन्नत तरंगें उठाते हुए गिरे । वे तरंगें पर्वतों की गुफाओं में घुसीं और

उन पर्वतों ने लंका के प्रासादों के द्वारों को तोड़कर उन पर गिरे और उनकी

[illegible]

अशोक वन नाम के उस मन्द वन के फल आकाश में बिखरे और नक्षत्रों के समान लगे । हमलों के पड़, जो फलों गये थे, आकाश में ऊँचाई तक जाकर तरंग-भरे समुद्र में गिरे, जो बमकदर भव्य लाल रंग (गाली) बिखरते हुए इधर-उधर फिरे । (७२२ से ७२५वें पद्य तक के सभी

[illegible]

हनुमान द्वारा स्वर्णजालियों-सहित विविध मणिमय वस्त्र आकाश की ओर फेंके गये। वे रात में उत्पन्न-संकेत देते हुए इन्द्रधनुष के समान लगे, जिससे यह भासित होता था कि अभी (बड़ा उत्पन्न होवेना है यानी) हनुमान लंका का नाश करा देगा। (रात में इन्द्रधनुष का दिखना उत्पन्न का संकेत है।)। ७२६

सम्यक्किं पार्त्तिकं वल्लिहळं वारिनेर, इयक्क उरुविशुं नीरु म्मिरेन
 व्मिउक्क विरक्कउरु विरुवि ठेनेव, पुयउक्क उरुउरु एक्कन पविन 727
 सम्यक्क उरु-अशय; पार्त्तु कुल वल्लिकउ-रवणनारु; वारि-उरुकर;
 नेर इयक्कु अउ-पुमाकर (इउमान इरु); विवुं वीउय अरिरेन-समी विशुअं मे
 (वी) कुकी गयी; व्मिउक्क कविउ कउरु-अप की किरुया की नरु; उरुउ-करकर;
 विउरेन अउ-गिरु वसे; पुयल कउरु वल्ले-मेवाउविन सपुअ मे; एक्कन पविन-
 वसवी गयी । ७२७

शुद्ध स्वर्णमय वल्लरियों को हनुमान ने उठाकर, घुमाकर चारों दिशाओं में दूर फेंका । वे मेघाच्छादित समुद्र में गिरीं जैसे धूप की किरणें कटकर गिरी हों । ७२७

आनैत् तान्मु माड लरङ्गमुम्, पान्त तान्मुम् बाय्परिप् पन्दिद्युम्
एनैत् तारणि तेरोडु मिर्इन्, कान्त तार्वरु वण्णल् कडाववे 728

अण्णल्-महिमावान हनुमान के; कान्तु आर् तरु-अशोक वन में रहे तरुओं को; कडाव-फेंकने पर; आनै तान्मुम्-गजशालाएँ और; आटल् अरङ्कमुम्-नृत्य-शालाएँ; पान् तान्मुम्-मधुशालाएँ; पाय् परि-सरपट दौड़नेवाले अश्वों को; पन्तिद्युम्-शालाएँ; ऐनै-और; तार् अणि-हारालंकृत; तेरोडुम्-रथों के साथ; इर्इन्-मिटे । ७२८

महिमामय हनुमान ने अशोक वन के पेड़ों को उखाड़कर फेंका जिससे गजशालाएँ, नृत्यशालाएँ, मधुशालाएँ और अश्वशालाएँ हारालंकृत रथों के साथ तहस-नहस हो गयीं । ७२८

पेरिय मामर नुम्बेरुड् गुन्ऱुमुम्, विरिय वीशलिल् मिन्नेडुम् बीन्मदिल्
नैरिय माड नैरुप्पेळ् नोरेळ्, इरियल् पोन् विलङ्गैयु मैङ्गणुम् 729

पेरिय मा मरतुम्-बड़े-बड़े पेड़ों को; पेरुम् कुन्ऱुमुम्-और बड़े पर्वतों को; विरिय वीशलिल्-दूर-दूर तक फेंकने से; मिन्-चमकदार; नैडुम् पौन् मतिल्-दीर्घ स्वर्ण-प्राचीर; नैरिय-दरार-लगे हो गये; माटम्-प्रासाद; नैरुप्पु अँळ-जल उठे; नोरे अँळ-राख उड़े; इलङ्कैयुम्-लंका नगरी के सभी; अँङ्कणुम्-सब ओर; इरियल् पोन्-भाग गये । ७२९

हनुमान बहुत बड़े-बड़े तरुओं और गिरियों को उखाड़कर फेंक रहा था, जिससे प्रभापूर्ण प्राचीर दरारें खा गये । प्रासाद आग हो उठे और राख निकली । लंकावासी सभी भयभीत हो सर्वत्र तितर-बितर भाग गये । ७२९

तौण्डैयड् गनिवाय्च् चीदै तुवक्किना लैन्नैच् चुट्टाय्
विण्डवा तवर्हण् मुन्ने विरिपीळिल् लिस्तुत्तु वीक्कक्
कण्डनै निन्ऱा यैन्ऱु काणुमे लरक्कन् काय्दल्
उण्डेन् वैरुवि नान्बो लौळित्तन् नुडिविन् कोमान् 730

तौण्डै अम् कन्नि वाय्-सुन्दर विम्बाधरा; चीदै तुवक्किनाल्-सीता के (स्नेह) बन्धन से; अँन्ने चुट्टाय्-तुमने मुझे ताप दिया; विण्ड वात्तवर्कळ्-मुझसे डरकर पलायित देवों; मुन्ने-के सामने; विरि पीळिल्-विस्तृत उपवन को; इस्तुत्तु वीक्क- (हनुमान द्वारा) नष्ट होते; कण्डनै-देखते (चुप); निन्ऱाय्-खड़े रहे; अँन्ड-ऐसा सोचकर; काणुमेल-देखेगा तो; अरक्कन् काय्दल् उण्डु अँत-राक्षस रावण त्रास देगा, ऐसा सोचकर; वैरुवित्तान् पोल्-डर गया हो जैसे; उडुविन् कोमान्-उडपति; औळित्तन्-छिप गया । ७३०

चन्द्र लिप गण । (कवि की उत्पत्ति है कि) चन्द्र ने सोचा कि रावण मुझे देखेगा तो सताएगा, क्योंकि वह सोचता होगा कि मैंने विष्णुपुराणी के स्तोत्र-छन्द के कारण उसे जगाया । फिर किसी वानर ने अशोक वन के विशाल उद्यान की मिट्टी में मिलाया और मैं वृष देखते-देखते रक्षा । उद्भूत मानी इससे डरकर लिप गण । ७३०

काशक	मणिपुत्र	वीरनन्द	कानन्दसुख	गजवध	वाय
माशक	मरुतग	महक	कुपिरिय	मदनव	बोल
आशक	डोह	सुपुत्र	कहेला	लखेला	पखेला
वीथिन	विठकक	लाले	विठङ्गिन	बलदे	सुलाल 731

कार्य अष्ट-दोषहीन; मणिपुत्र-रत्न; वीरनन्द-और रत्न; कानन्दसुख-सुपुत्र और चन्द्रकान्त मणिपुत्र; कानन्द आग-वीरमोहिनी रूप से विद्यमान है; मातृ अष्ट-दोषहीन; मरुतग-कुपिरिय-वैश्वं के रूप में जटिन; मदनव-बोल-मदन-वास-पुत्र वह अशोक वन; आनेक नन्द-समी विगाओ में; पुरन-समाप्त हेतुमान के; ककाल अखिल वीरव-दोषों से उठा-उठाकर फूट गये; विठकलाल-दंडा प्रकाश फूल रहे थे, इसलिये; जलकमलाल-सार लोक; अशकार में श्री) हाथ रूप से विद्यमान दिव । ७३१

वह मदनवास-पुत्र अशोक वन निर्दोष रत्न, रत्न, सुपुत्र और चन्द्रकान्त मणिपुत्र अति से जटिन प्रकाशमान वैश्वं से भर आ । हेतुमान ने उनको अपने दोनों दोषों से उठा-उठाकर आकाश में फेंका तो सारे लोक अशकार में श्री उज्ज्वल दिव । ७३१

कदरिन	वैश्व	पुच्छ	गलङ्गिन	विजय	कणाल
कुदरिन	पुच्छ	बैल	कुलिनेन	कुलिनेन	लाल
पदरिन	पुच्छ	वागिर	पुच्छ	मरुतग	पारवोद
दुदरिन	पुच्छ	पुच्छ	पुच्छ	पुच्छ	पुच्छ

विजय कुलिनेन-पुच्छ विजय उठे; वैश्व-डरकर; उच्छ-कलङ्कित-मन में अशिम हुए; कणक कुलिनेन-उनकी आँखें धाव वनकर रत्न से भर गयीं; पद-पुच्छी गण; वैल कुलिनेन-सुपुत्र में डब गये; कुलिनेन-वीर वैल नही वे; पञ्चीगण; वैल कुलिनेन-सुपुत्र में डब गये; वागिर पञ्चन-आकाश में उठे; मरुतग-लौटकर; पार वीरनन्द-पुच्छ पर निरकर; उनरिन विरक-पुच्छ कडकडाकर; मी अङ्कित-फिर उठे समरकर; जलन पुन-पुच्छ गये (मर गये) । ७३२

उस अशोक वन के पुच्छ विजय गये । डरकर व्यकुलमान हुए । उनकी आँखें बग-सी हो गयी और उनसे रत्न उभरा आया । पञ्चीगण सुपुत्र में निरकर डब गये । वीरमोहिनी डब वे वैश्व हो उठे । आकाश में उठे, फिर नीचे गिरे । उन्हीं अपने पुच्छ कडकडाये फिर समस्त लिप और गण स्थान दिव । ७३२

तोट्टोडुन् दुवैन्द तैय्व मरन्दोरुम् तौडुत्त पुट्टड्ड
 गूट्टोडुन् दुरक्कम् बुक्क कुन्ऱत्त कुववुत् तिण्डोळ्
 शेट्टहत् परिदि मारब्न् शीरियुन् दीण्ड इन्नाल्
 मीट्टवन् करुणै शैय्दाऱ् पेरुम्बदम् विळम्ब लामो 733

कुन्ऱ अत्त-पर्वत-सम; कुववु तिण् तोळ्-पुष्ट और सबल कन्धों; चेट्ट अकल्-
 (और) सुन्दरता में विशाल; परित्ति मारपन्-सूर्य-सम प्रकाशमय वक्ष का; चीरियुम्-
 (हनुमान की) कोप के साथ भी; तीण्डल् तन्नाल्-स्पर्श-महिमा से; तैय्व मरम्
 तोरुम्-हर दिव्य तरु पर; पुळ्-पक्षी; तोट्टोडुम्-पत्नों के साथ; तुतेन्त तौटुत्त-
 घने रूप से निर्मित; तम् कूट्टोडुम्-अपने घोंसलों-सहित; तुडक्कम् पुक्क-स्वर्ग
 पहुँचे; मीट्टु-फिर; अवन् करुणै चैय्ताल्-वह कृपा करे तो; पेरुम् पतम्-
 (कृपापात्र) जो पद प्राप्त करेंगे; विळम्पल् आमी-उसको कह सकेंगे क्या । ७३३

हनुमान के कन्धे पुष्ट और सबल थे । उसका वक्ष अति सुन्दर
 रूप से विशाल था । वह क्रोध में ही पेड़ों का नाश करता था और
 खगकुल मरे । तो भी उसके स्पर्श की महिमा थी कि वे मृत पक्षी स्वर्ग
 पहुँचे । अगर वह इसके विपरीत कृपा दिखाता तो वे किस (अत्युन्नत)
 पद को प्राप्त होंगे ? यह हम कह सकते हैं क्या ? । ७३३

पौय्मुऱै यरक्कर् काक्कुम् बुळ्ळुऱै पुडुमैन् शोलै
 विम्मुऱु मुळ्ळत् तन्न मिक्कुम्बु विरक्क मीन्ऱुम्
 मुम्मुऱै युलह मैल्ला मुऱ्ऱुऱ मुडिव दान्त
 अम्मुऱै यैयन् वैहु मालैन् नित्ऱ दन्ऱै 734

पौय् मुऱै-असत्य के मार्गगामी; अरक्कर् काक्कुम्-राक्षस-पालित; पुळ् उऱै-
 पक्षी के वास के; पुतु मैन् चोलै-नवीन और कोमल उद्यान में; विम् उडुम्-दुःख-
 भरे; उळ्ळत्तु अन्नम्-मन की हंसिनी-सी देवी; इक्कुम् अ विरक्कम् ओन्ऱुम्-
 (जिसके नीचे) रहती थीं, केवल वह एक शिशुपा वृक्ष; मु मुऱै उलकम् अल्लाम्-
 त्रिविध (भू, पाताल, स्वर्ग के) सारे लोक; मुऱ्ऱु उऱ-सम्पूर्ण रूप से; मुडिवतु आत्त-
 नष्ट करने आनेवाले; अ मुऱै-उस प्रलयकाल में; ऐयन् वैकुम्-प्रभु श्रीविष्णु जिस
 पर रहते हैं; आल् अन्-उस वटपत्र के समान; नित्ऱत्तु-स्थिर रहा । ७३४

असत्यमार्गगामी राक्षसपालित, खगावास उस अशोक वन में सिर्फ
 वह एक 'शिशुपा' वृक्ष बचा, जिसके तले दुःख-विलोडित मन वाली हंसिनी-
 सी सीताजी बैठी थीं । वह वृक्ष उस वटपत्र के समान बचा रहा, जिस पर
 त्रिलोकनाशक प्रलयकाल में प्रभु श्रीविष्णु शयन करते रहते हैं । ७३४

उरुशुडर्च् चूडैक् काशुक् करशित्तै युयिरोप् पानुक्
 करिहुऱि याह विट्टा छादलान् वऱिय लन्दो
 शैरिहुळर् चीदैक् कन्ऱोर् शिहामणि तैरिन्दु वाङ्गि
 अरिहड लीव दैन्ऱ वैळुन्दल न्तिरवि यैन्वान् 735

उत्पन्न-इव भाति कामः । निरुद्धं चैव-इव होति तदेतत् । अतस्त्विदं-

राक्षसियाँ; अँलुत्तु-जाग उठीं और; पौङ्कि-खौल उठीं; पौन् मलै अँन्त-स्वर्ण-गिरि-समान; निन्त्र पुतिततै-स्थित पावन हनुमान को; पुरिन्तु नोक्कि-खूब देखकर; अन्तै-मैया; ईतु अँन्त मेत्ति-यह कैसा रूप है; यार् कौल्-कौन है; अँन्त्र-ऐसा; अच्चम् उर्ऱार्-भयभीत हुई; नत्तुतल् तन्तै-मनोरम ललाटिनी को; नोक्कि-देखकर; नङ्कै-स्त्री; अरितियो-जानती हो; अँन्ऱार्-पूछा (उनसे) । ७३७

जब अशोक वन इस भाँति मिट रहा था तब राक्षसियाँ जाग उठीं । यह नाश देखा तो उनका मन उबल उठा । स्वर्णमेरु-सदृश खड़े रहे पावन हनुमान को उन्होंने खूब आँखें गड़ाकर देखा और उद्गार निकाला कि मैया ! यह क्या रूप है ? यह है कौन ? उन्होंने भयभीत होकर मनोरम ललाटिनी सीताजी से पूछा कि देवी ! तुम इसे जानती हो क्या ? । ७३७

तीयवर्	तीय	शैय्द	रीयवर्	तैरियि	नल्लाल्
तूयवर्	तुणिद	लुण्डे	नुम्मुडेच्	चूळ	लैल्लाम्
आयमा	नैय्द	वम्मा	निळैयव	नरक्कर्	शैय्द
मायमैन्	रुरैक्क	वेयु	मैय्यैन्	मैयल्	कौण्डेन् 738

तीयवर्-बुरे लोग; तीय चैय्तल्-बुरा काम करें, वह; तीयवर् तैरियित् अल्लाल्-बुरे लोग ही जानें, नहीं तो; तूयवर् तुणितल् उण्टे-अच्छे लोग जान सकेंगे क्या; अँल्लाम्-सब; नुम्मुटे चूळल्-तुम लोगों का षड्यन्त्र है; आय मात्-मृग बना; अय्त-(मारीच) मेरे पास आया; अ मात्-वह हरिण; अरक्कर् चैय्त मायम्-राक्षसों की की हुई माया है; अँन्त्र-ऐसा; इळैयवन् उरैक्कवेयुम्-देवर लक्ष्मण ने कहा तो भी; मैय् अँत-सच के; मैयल् कौण्डेन्-भ्रम में पड़ी । ७३८

देवी ने कुछ विचित्र उत्तर दिया । बुरे मनुष्य ही बुरों की बात जानते हैं । नहीं तो अच्छे मनुष्य जान सकेंगे क्या ? यह सब तुम लोगों का ही षड्यन्त्र होगा । जंगल में हरिण बनकर मारीच आया और मेरे देवर ने कहा कि यह माया-मृग है । पर मैं उसे सच्चा मृग मानकर मोहित हुई थी । ७३८

अँन्ऱन	ळरक्कि	मार्हळ्	वयिऱलैत्	तिरियल्	पोहिक्
कुन्ऱमु	मुलहुम्	वानुङ्	गडल्हळुङ्	गुलैय	वोड
निन्ऱदोर्	शयित्तड्	गण्डा	नीक्कुव	लिदनै	यैन्ऱात्
तन्ऱडक्	कैह	णोट्टिप्	पऱऱित्तान्	रादे	यौप्पान् 739

अँन्ऱत्तळ्-ऐसा कहा; अरक्किमार्क्कळ्-राक्षसियाँ; वयिऱ अलैत्तु-पेट पीटती हुई; इरियल् पोकि-तितर-वितर होकर; कुन्ऱमुम्-पर्वतों; उलकुम्-लोक; वानुम्-आकाश; कटल्कळुम्-समुद्रों के; गुलैय-अस्त-व्यस्त होकर; ओट-भागते; तातै ओप्पान्-अपने पिता (वायु-) सम जो रहा उसने; निन्ऱतु-वहाँ स्थित; ओर् चयित्तम्-एक 'चैय्य' (यज्ञशाला) को; कण्टान्-देखा; इततै नीक्कुवल्-इसको

ସୂଚକ । ଯେଉଁ ଶୁଦ୍ଧ ଲେଖକ-ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ! ଶୁଦ୍ଧ

ପଢ଼େ । ଲେଖି ଶୁଦ୍ଧ ହେ

ഗുണാൽ വ്യവർത്ത ഭവനാർ പാർവ്വത വർട്ട പരിമ്പ 740

पञ्च कविषु ज्ञेयैः आम्-२१। ७४०

026 1 1h

[illegible]

ऑळि-वर्धनशील प्रकाश को; नैटु नाळ्-अनेक दिनों से; ईट्टि-खोजकर एकत्रित कर; अळकु मात-सुन्दरता में बढ़े हुए; पचुम् पौताल्-चोखे स्वर्ण से; पटैत्ततु-रचित किया शायद जो था वह था यह चैत्य; अम्मा-मैया । ७४१

दुग्ध-सम प्रकाश फैलानेवाले चन्द्र को भी जो अन्धकार चाट लेता है, उस अन्धकार को एक दम उठाकर खाने के लिए बीस हाथों वाले राक्षसराज रावण की आज्ञा के अनुसार स्वयं कमलासन ने अनेक-अनेक दिन प्रकाश को एकत्रित कर, उस पुञ्जीभूत प्रकाश से, सुन्दरता में बढ़े हुए उस चैत्य को निर्मित किया था —ऐसा लगता था वह चैत्य । ७४१

तूणैलाञ् जुडरुड् गाशु शुर्इला मुत्तज् जैम्बौन्
पेणला मणियिन् पित्तिप् पिडरैला मौळिहळ् विम्मच्
चेणैलाम् विरियुड् गरुइच् चैयौळिच् चैल्वर् केयुम्
पूणला मैम्म तोराड् पुहललाम् बीडुमैत् तन्ऱे 742

तूण् अलाम्-खम्भे सब; चुटरुम् काचु-चमकीले रत्नमय; चुर्इ अलाम्-घेरे सब; मुत्तम् चैम्पौन्-मोती और लाल स्वर्ण के; पेणल् आम् पित्ति पिटर् अलाम्-दर्शनीय दीवारों के ऊपर सर्वत्र; मणि-रत्नमय; ऑळिकळिन्-छटाओं की; चेण् अलाम् विम्म-आकाश भर को भरते हुए; विरियुम् कर्इ-व्यापनेवाली लटे; चैय् ऑळि चैल्वर्कु एयुम्-लाल किरणों के धनी सूर्य के लिए भी; पूणल् आम्-अपनाने योग्य हैं; मैम्म तोराल्-हम जैसों से; पुकलल् आम्-वर्णन योग्य; पौतुमैत्तु अन्ऱ-साधारण वस्तुएँ नहीं । ७४२

खम्भे चमकते रत्नों के; घेरे सब मोतियों और लाल स्वर्ण के; और मनोरम भित्तियों के ऊपरी भाग रत्नों के थे । इनके प्रकाश की व्योमव्यापी लटें ऐसी थीं कि लाल किरणों के धनी सूर्य भी उनकी चाह करे ! फिर हम जैसों द्वारा उसका वर्णन कैसे किया जाय ? वह वैसी कोई साधारण चीजें नहीं । ७४२

वैळ्ळियड् गिरियैप् पण्डु वैन्दौळि लरक्कन् वेरो
डळ्ळिना नैन्नक् केट्टा नत्तौळिर् कळिवु तोन्ऱप्
पुळ्ळिमा मेरु वैन्नुम् पौन्मलै यैडुप्पान् पोल
वळ्ळुहिरत् तडक्कै तन्नान् मण्णिन्ऱुम् वाङ्गि यण्णल् 743

अण्णल्-उत्तम हनुमान; वैम् तौळिल् अरक्कन्-क्रूरकर्म राक्षस रावण ने; पण्डु-पहले; वैळ्ळि अम् किरियै-चाँदी की गिरि कैलास को; वेरोडु अळ्ळित्तान्-जड़ के साथ उठा लिया; नैन् केट्टान्-ऐसा सुनकर; अ तौळिर्कु-उस काम को; अळिवु तोन्ऱ-नीचा दिखाने के लिए; पुळ्ळि-विदियों के समान विविध रंगों से रंगीन; मा मेरु-बड़े मेरु के; पौन् मलै अँटुप्पान् पोल-स्वर्णगिरि को उठाता हो जैसे; वळ् उकिर् तट के तन्ताल-तीक्ष्ण नखों के अपने विशाल हाथों से; मण् निन्ऱुम्-भूमि से; वाङ्कि-उस चैत्य को उठाकर । ७४३

हेतुमान ने सुन रखा था कि पहले कैरुम रावण ने खजुरि कैलास की जड़ से उठाया था। मानो उस कार्य के गौरव को मिटाने के वास्ते हेतुमान ने विजियी (विजय राणी) सहित महीमेरु पर्वत की उठाना जैसे अपने तेज गज्जनों वाले हाथ से उस चैत्य की उठा लिया। ७४३

विद्वंस	विजय	ननेव	विणय	विनिद	माडम
पदम	प्रीति	जान	परदेस	प्राण	विनय
शुद्वंस	प्रीति	बोव	वृद्धेजान	ररककर	गामम
कद्वंस	वीर	रममा	प्रीपपरी	कई	शुद्धेजान

इसके तम मल-लंका पर; विद्वंस-फंका; विण उर-आकाश में लगी; विनिद माडम-विजाल वने रहे प्रासाद; पदम-दकराकर; प्रातिक्रम आन-वैर हुए; पादक परानेन विनय-प्रास जो विपन थे उन सबकी; शुद्धेजान-उठी अनि से उन प्रासादों ने जग दिया; प्रातिक्रम बोव-आगे निरने से; अरककर गामम-प्रास था; वृद्धेजान-मयानी हुए; वीर कद्वंस-वीर मरे; कई शुद्धेजान-हुराई करवैवलि; प्रीपपरी-वचो भया; अममा-भेया। ७४४

और उसकी हेतुमान ने लंका पर वीर से फंका। उसके टकराने से लंका के गानचुवाती प्रासाद चूर हुए। उससे आग उठी जिससे पास रहे पदाथ जल उठी। आगारे जितरे और राक्षस डरे। वीर मरे। पर-प्रीति वचो भया ? भया। ७४५

वीर	वृद्ध	रस	नरप्रीति	ननेव	प्रीति
प्रीति	शुद्ध	मद्वर	प्रीति	गामम	प्रीति
कद्वर	प्रा	नार	वृद्धेजान	प्रीति	प्रीति
प्रीति	प्रीति	प्रीति	प्रीति	प्रीति	प्रीति

प्रांर दृष्ट-माम पर लंकार पालि; पद्वर बोव-वद्वंस (अशोक) वन; प्रातिक्रम पद्वर-वैवलि (उसकी) पालनेवाले श्रुति के देवता; वीर दृष्ट प्रीति-प्रास से मारी हुए कपड़े वाले; अद्वर नरप्रीति दृष्ट-मय की अनि-सहित; ननेव-मन वाले; ननेव प्रीर दृष्ट-म-बोव लंका उठानेवाले रसमय; उद्वर-वीर वाले; ननेव प्रीति-आपस में मिलकर लड़खड़ाते हुए; गामम-प्रीति वाले; पद्वर-प्रीति वाले; कई पद्वर आर-लंका गगर में बड़ा गौर मचाते हुए; वृद्धेजान-रीति-विलाले हुए; गाम उद्वर-माम और रावण के पास गये। ७४५

रावण ने व्यामलीक से लंका अशोक वन उगाया था। उसका पालन करते रहे श्रुतिदेवता। उनकी अब दुर्गात हो गयी। मम-माम वद्वर, मय की अनि-लगी मन, रस-निरासक गरीर और लड़खड़ाते प्रीति वाले होकर वे अपने वड़े मुखों की खिलकर लंका भर में व्याप जाय, ऐसी चोर की दृष्टि निकालते हुए विल्लाकर रावण के पास दौड़ पड़े। ७४६

अरिपटु शीरूत् तान्त्र नरुहूशन् इडियिन् वीळ्न्दार
 करिपटु तिशैयि नीण्ड कावलाय् काव लाश्शोम्
 किरिपटु कुववुत् तिण्डोत् कुरङ्गिडै किळित्तु वीश
 अरिपटु पञ्जि नौय्दि निरुडु कडिहा वैन्रार् 746

अरि पट—सिंह का-सा; चीरूत्तान् तन्-क्रोध करनेवाले (रावण) के; अरुहु चैन्ड-पास जाकर; अडियिन् वीळ्न्तार्-पैरों पर गिरे; करि पटु-गजों से रक्षित; तिच्चैयिन् नीण्ड-दिगन्त तक फैले; कावलाय्-शासन वाले; कावल् आश्शोम्-रक्षण में असमर्थ हो गये; किरिपटु-गिरि को पछाड़नेवाले; कुववु तिण् तोळ्-पुष्ट सबल कन्धों के; कुरङ्कु-एक वानर के; इटै किळित्तु वीच-मध्य में घुसकर नष्ट करने से; कटि का-रक्षण में रहा, वह अशोक वन; अरि पटु पञ्चिन्-आग में पड़ी हुई के समान; नौय्तिन् इरुत्तु-शीघ्र मिट गया; वैन्रार्-कहा । ७४६

सिंह-सदृश क्रोधी रावण के पास जाकर वे उसके पैरों पर गिरे । गज-रक्षित दिगंतों तक व्याप्त शासनक्षेत्र के स्वामी ! हम अब अशोक वन का रक्षण नहीं कर सके । गिरिनाशक पुष्ट कन्धों वाले एक वानर ने उसके मध्य घुसकर उसको मिटा दिया । वह सुरक्षित वन आग में पड़ी हुई के समान बहुत शीघ्र मटियामेट हो गया । ७४६

चौल्लिड वैळिय दन्शार् चोलैयैक् कालिर् कैयिल्
 पुल्लीडु तुहळु मिन्न्रिप् पौडिपड नूत्रिप् पौत्ताल्
 विल्लिडु वीमन् दन्तै वेरौडुम् वाङ्गि वीशच्
 चिल्लिड मीळियत् तैय्व विलङ्गैयुञ्ज जिदैन्द दन्शार् 747

चौल्लिट-कहना; वैळियत् अन्ड-सुलभ नहीं; चोलैयै-उस अशोक वन को; कालिर् कैयिल्-पैरों और हाथों से; पुल्लीडु तुहळुम् इन्न्रि-घास, धूल से रहित करके; पौटि पट नूत्रि-चूर करते हुए मिटाकर; पौत्ताल्-स्वर्ण से; विल् इटु-धनु के समान प्रकाश देनेवाले; ओमन् तन्तै-चैत्य को; वेरौडु वाङ्गि वीच-नीव-सहित उखाड़कर फेंकने से; चिल् इटम् ओळिय-बहुत थोड़े से स्थान को छोड़कर; तैय्व इलङ्गैयुम्-दिव्य लंका नगरी भी; चितैन्तु-मिट गयी; वैन्रार्-कहा (ऋतुदेवताओं ने) । ७४७

ऋतुदेवताओं ने आगे कहा कि उस वानर के कृत्य हमसे कथ्य नहीं हैं । उसने अपने पैरों और हाथों से अशोक वन को मिटा दिया । उसमें न घास बची, न धूल ही । स्वर्णमय चमकदार चैत्य को भी उसने जड़ से उखाड़कर फेंक दिया । कुछ ही स्थानों को छोड़कर सारी दिव्य लंका नगरी तहस-नहस हो गयी । ७४७

7. किङ्गरर् वदैप् पडलम् (किङ्कर-वध पटल)

आडहत् तरुविन् शोल पौडिपडुत् तरक्कर् काक्कुम्
 तेडह मोमम् वाङ्गि यिलङ्गैयुञ्ज जिदैत्त दम्मा

कवि
महिम्न
पिताकाकर
महानि
मुद्रवर्ण
श्रीधर 748

कातरम् आर्त-वद एक हो है; आदक लविन चीन-रवर्-लक्षों के वन की; पृष्टि पदवि-मूल बनाकर; अरकेकर काकुरम्-राक्षस-रक्षित; वेद अरम् आम्स वाङ्कि-अर्ध प्रमथ (चप) उलटकर; इलककुम् विनोतलु-लका का भी गाय क्रिया; इराककर-राक्षसी की; कीरुम्-वीरवा; नर्गिनु-मली है; चीरुल-पद कथम; मंदम् मीठिपर-मूल भी नदी करत; अनेक कंठि-ऐसा करेकर; मन्त्रम्-राजा है; मुकल चपलम्-मन्दोस दिव्या । ७४८

राजपूत ने यह बात सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि क्या एकाकी बनने से स्वर्णमय नखों के धरे उस वन की चर कर दिया ? राजपूत-राक्षस अणुवृक्ष की उछाड़ दिया ? लंका की भी विजय-विभव कर दिया ? हाँ ! राजपूत की बीरता भी खली रहने ! यह बात सुन लंका भी नहीं कहने । राजपूत यह कहकर मुँह रूखा । ७४८

[illegible][illegible]

श्रद्धापूर्वकता भा में उत्तर में कहा कि उस धरती की न सदाहना करने चाहिए, जो सदा से इस वातर के धारे (के धार) की बहन करती रहती है ? उसे देवशासित निदेवों में एक कहे सकते हैं जो भी वहे उसकी अपार शक्ति का शोक नही हो सकता । वहे वाल (रक्तर्जित) होय वाला वातर आने भी, अगर आपकी आवा से कुछ होगा तो बड़ा अनर्थ मचा देगा । आप ही देखें । ७४९

[illegible]

चीरते हुए; मरि कटल्-प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र का जल; मोल्लै-भूमि के नीचे की नदी बनकर; वायिल् मण्ट-लंका-द्वार पर बहे ऐसा; अण् तिवै चुमन्त मावुम्-अष्ट दिग्गजों को; तेवरुम्-देवों को; इरियल् पोक-भगाते हुए; तौण्ट वाय् अरक्किमारुळ-बिम्बाधरा राक्षसियों के; चूल् वयिरु-गर्भ सहित पेट; उटैन्तु चोर-टूटकर गिर जाएँ, ऐसा; अण्टमुम् पिळन्तु-अण्ड दरार खाकर; विण्टु आम् अँत-फूटा हो, ऐसा; आरुत्तान्-एक गर्जन किया । ७५०

ये यह कह ही रहे थे कि हनुमान ने गर्जन का ऐसा स्वर निकाला कि भू तथा व्योममण्डल दरार खाकर फूटे; प्रत्यावर्तनशील तरंगों का सागर भूमि के नीचे से नदी के रूप में बहकर लंका के द्वार के पास चला; दिग्गज और देवता लोग तितर-बितर हो भाग गये; और बिम्बाधरा राक्षसियों के गर्भ गिर गये । अण्ड ही फट गया हो ऐसा था वह शोर । ७५०

अरुवरै	मुळैयिन्	मुट्टु	मशनियि	निडिप्पु	माळि
वैरुवरु	मुळक्कु	मोशन्	विल्लिरु	मौलियु	मैन्नक्
कुरुमणि	महुड	कोडि	मुडित्तलै	कुलुङ्गुम्	वण्णम्
इरुवदु	शैवियि	नूडु	नुळैन्ददव्	वैळुन्द	वोशै 751

अरुवरै-बड़े पर्वतों की; मुळैयिन् मुट्टुम्-गुहाओं पर जा लगनेवाले; अचनियिन् इडिप्पुम्-वज्र का निनाद; आळि-(और) सागर का; वैरुवरु मुळक्कुम्-भयावना गर्जन; ईचन् विल् इरुम्-परमेश्वर के धनु के टूटने का; मौलियुम्-शोर; मैन्नक्-ऐसा; कुरुमणि-बड़े-बड़े रत्नों से अलंकृत; मकुट कोटि-किरीटपंक्ति से भूषित; मुटि तलै-केशयुक्त रावण के सिर; कुलुङ्गुम् वण्णम्-हिल जाएँ, ऐसा; अँळुन्त-जो उठा; ओचै-वह शोर; इरुपतु शैवियिन् ऊटु-बीसों कर्णों के द्वार से; नुळैन्तु-घुस चला । ७५१

बड़े पर्वत की गुहा पर गिरनेवाले वज्र का नाद; प्रलयकालीन डरावना समुद्रगर्जन, परमेश्वर के धनु की टंकार का घोर नाद-जैसा उसका गर्जन मोटे रत्नों से युक्त किरीट-पंक्ति से अलंकृत रावण के सिरों को हिलाते हुए उसके बीसों कर्ण-विवरों में जा घुसा । ७५१

पुल्लिय	मुखव	रोन्ऱप्	पौऱामैयुज्	जिरिडु	पौङ्ग
एल्लैयि	लाऱुन्	माक्क	ळैण्णिन्	दारै	येवि
वल्लैयि	तहला	वण्णम्	वानैयुम्	वळियै	माऱुङ्क्
कौल्ललिल्	कुरङ्गै	नौय्दिर्	पऱुदिर्	कौणर्मि	नैन्ऱान् 752

पुल्लिय मुखवल्-अल्पहास; तोन्ऱ-प्रकट करके; पौऱामैयुम्-ईर्ष्या; चिरिटु पौङ्क-किञ्चित उठी; अँल्लै इल् आऱुन्-अपार वलशाली; माक्कळ् अँण् इऱुन्तारै-दासों, असंख्यकों को; एवि-प्रेरित करके; वानैयुम्-आकाश को भी; वळियै माऱुङ्क्-मार्गहीन बनाकर; कुरङ्कै-उस बन्दर को; अकला वण्णम्-वचने न देकर; वल्लैयिल्-शीघ्र; कौल्ललिल्-बिना मारे; नौय्तिल्-सुगम रीति से; पऱुतिर्-पकड़ो और; कौणर्मिन्-लाओ; अँन्ऱान्-कहा (आज्ञा सुनायी) । ७५२

रावण के अधरों में मन्दह्रास खेल गया। मन में किंचित दुःखी उठी। उसने अगार बली असह्यक दासों को बुलाया। आशा सुनायी कि जाओ। उसने अगार की रोक। उस वानर को बचने न दो। उसे मारी जाय। श्रीमत् । श्रीमत् पकड़कर लाओ। ७५२

शैलमंवाणं मुशालं गुरवे रोमरने दण्डे पृण्डि
पालसे मुदला वृद्धे पडककलम वरिवने कयरे
आलसे यनय मयय रदेलिड मडिबु श्रुयुम
कालसे लुनेदे मूरिके कडलेक कडि शैलवारे 753

वृक्ष-लैशाल; बाढ-लववार; मुवलम-मुवल; कुरे वेल-नीशाल; लोमर-लोमर; लण्ड-दण्ड; पृण्डिपालम-पृण्डिपाल; मुदला वृद्ध-आदि जो थे; पडककलम-देलियार; पविने कयरे-(उनकी) ह्रास में लिखे हुए; आलसे अनेप-हलाहल हो सम; मयय-आकार बाले; अकल दंस-विशाल श्रुम को; अडिबु श्रुयुम-नद करेबाले; कालम-यलकाल में; वेल अडिबुम-वडि हुए; मूरि कडले अने-यवल समुद्र के समान; कडिबु शैलवारे-सबो जाते लगे। ७५३

वे वीर विजाल, ललवार, मुसल, नीशाल, लोमर, दण्डायुध, पृण्डिपाल आदि हेलियार ह्रास में लिखे हुए बले। हलाहल हो सम काले आकार के वे विशाल लोक के नायक युगारनकालीन मयों के समान शीम-शीम कंठ कर जाते लगे। ७५३

नालिन मदन नण्ड पोरन नलिन नवचाल
वैलिवड गण्डयुव श्रुयुअ लिनेदयरे वरिवने
कालिनेम वरिय रीश कडलिनेम वरियरे कुरिवेलि
वालिनेम वरियरे सेनि सेनि मलियुम वरियरे मावो 754

नालिन-अनलिन-(चुविद्या) श्रुम पर; पोर उण्ड-युद्ध चलेगा; अने नलिन-ह्रास जव कडो जाला है नव; अ चाल-वडि ववन; वेलिवने कडिपु श्रुयुम-शुद्ध से श्री मयुर जग; विनेदयरे-ह्रास मन बाले; वरिवनेम अनेवने-समझाना चाहें लगे; कालिनेम वरियरे-जंगल से श्री अधिक (काले रंग बाले) है; अने-नद करत में; कडलिनेम वरियरे-समुद्र से श्री वडि है; कुरिवेलि-कालि में; वालिनेम वरियरे-आकाश से श्री अधिक वडि है; सेनि-शरीर से; मलियुम-ववन से श्री; वरियरे-अधिक वडि है। ७५४

वे कैसे वीर थे? कडो ह्रास चुविद्या श्रुम पर युद्ध होनेवाला है—युद्ध समाचार उन्हें शुरु से श्री अधिक मयुर जगाल और उनके मन को मन कर देता। उनका स्वभाव आदि का वर्णन करना हो, लो सुनिप; वे वने जंगल से श्री रंग में अधिक वडि (काले) थे। गजान में समुद्र से वडि थे। उनका यश आकाश से श्री वडि था। उनका आकार पर्वत से श्री वडि था। ७५४

तिरुहुरुञ्ज जिनतुत् तेवर् तातव रैन्नुन् देववर्
 इरुहुरुम् बैरिन्दु नित्त्त विशैयिताल् वशैयैन् रैण्णिप्
 पौरुहुरुम् बैन्ऱु बैन्ऱि पुणर्वदु पूवुण् वाळ्क्कै
 औरुहुरुङ्ग गुरङ्गेन् रुळ्ळि नैडिदुना गुळ्ळक्कु नैञ्जर् 755

तिरुक्कु उळ्ळम्-ऐंठे हुए; चित्ततु-क्रोधी; तेवर् तातवर् अँत्तुम्-देव और दानव-कथित; तैववर्-शत्रु; इरु कुळ्ळम्पु-छोटे-छोटे अधीन राजाओं को; अँत्तिन्नु नित्त्त-हराकर प्राप्त; इचैयिताल्-यश से; पौरु कुळ्ळम्पु अँत्तु-युद्धयोग्य शत्रु मानकर; बैन्ऱि पुणर्वदु-लड़ाई में विजय पाना; वचै-निध; अँत्तु अँण्णि-ऐसा समझकर; पू उण् वाळ्क्कै-फूल आदि पर जीवित रहनेवाला; और कुळ्ळम् कुरङ्कु-एक छोटे आकार का शाखामृग; अँत्तु उळ्ळि-ऐसा समझकर; नैडितु-गम्भीर रूप से; नाण् उळ्ळक्कुम्-लज्जा से व्याकुल; नैञ्जर्-मन वाले । ७५५

ऐंठे हुए क्रोध में उन्होंने देवों और दानवों पर जीत पायी थी । यद्यपि वह छोटे मातहत राजाओं पर प्राप्त जीत के समान ही थी, तो भी उनमें इतना घमण्ड हो गया था कि वे सोचने लगे कि आखिर इस सुमनाहारी और छोटे आकार वाले शाखामृग के साथ युद्ध करना निध है । इसलिए उनके मन को गम्भीर लज्जा से उत्पन्न दुःख संकट दे रहा था । ७५५

कट्टिय वाळ् रिट्ट कवशत्तर् कळलर् तिक्कैत्
 तट्टिय तोळर् मेहन् दडविय कैयर् वानै
 अँट्टिय मुडियर् ताळा लिडरिय पौरुप्प रोट्टिक्
 कौट्टिय बेरि यैत्तन मळैयैन्क् कुमुञ्ज जील्लार् 756

कट्टिय वाळर्-कमर में बद्ध तलवार वाले; इट्ट कवचत्तर्-कवच से लैस; कळलर्-पायलधारी; तिक्कै तट्टिय-दिगन्त को ढकेलनेवाले; तोळर्-कन्धों वाले; मेकम् तट्टिय-मेघ को सहलाए; कैयर्-ऐसे बड़े हुए हाथों वाले; वानै अँट्टि-आकाश-स्पर्शी; मुडियर्-सिर वाले; ताळाल्-पैरों से; इडरिय-ठुकराये गये; पौरुप्पर्-पर्वत वाले (पर्वतों को भी ठुकरा दे, ऐसे पैर वाले); इट्टि कौट्टिय-एक साथ बजी; बेरि अँत्त-भेरियों के समान; मळै अँत्त-मेघों के समान; कुमुञ्ज जील्लार्-घहरते शब्द वाले । ७५६

उनकी कमरों में तलवारें बँधी थीं । वे कवच और पायलधारी थे । उनके कन्धे दिगन्तों से टकरा रहे थे । उनके हाथ मेघों को सहला रहे थे । सिर आकाश को ढकेलते थे । पर्वतों को अपने पैरों से ढकेलनेवाले थे । अनेक भेरियाँ एक साथ बज उठी हों या अनेक मेघ मिलकर गरजते हों, ऐसे नर्दनयुक्त थे उनके शब्द । ७५६

वान्तव रैरिन्दु दैववप् पडैयिडुम् वडुक्कण् मडुरैत्
 तानवर् तुरन्दु वैदित् तळुम्बोडु तयङ्गु तोळर्

यावैयुम् विविडुम् वारि विडुम्बिल वय रीनरु
कैनेवैवु पुरैयिर् एनरु मयिरुतिनरु कौडिकुडु गण्णारु 757

वाववरु अतिरुत-वैवयुविल; तैयु पडै इरुम्-विथारुवै इरा ववै;
वडैकुकुड-वय; मरु-अय; वाववरु वुरत-वान-युविल; वैलि नळुमपुडै-वैय्यारु
के दायी के मय; तयडु वीळरु-शोमयामान कय्यो वाने; यानैयुम् विडुयुम्-णल और
गजियु को; वारि इरुम्-उठाकरु विनके अवरु इला जय, ऐवै; पिल वयपु-विल-
सदुश युव वाने; इरु-उरयय; कनेवु वैयुपुडियल-वक अवयव-के समान; तौनरुम्
अतिरुतिनरु-विथवै दान के है; कौडिकुडुम् कण्णारु-वौलनी अथो के है। ७५७

उनके कण्ठ वैवयुविल विथ अरुवो इरा लो वयो के दायी और
दानवो के वैय्यारु इरा युविल अरुवो के वने वयो के दायी के मय
शोय रहे थे। उनके मुख विल के समान इतने बड़े थे कि गज और
गजिनयो को एक साथ उठाकर उनमें डाला जा सकता था। उनके मुँहो
में एक कलाचक्र के समान दाँत उजलते दिखते थे। उनकी आँखें कोप से
छलीनी थीं। ७५७

वककरु मुलककै नण्डु वारुवाळु पुरैयु वारुवै
मुंकरु मुयुण्डि पण्डि पालमवैवै नौल मुंकरु
पौरुकरु कुलिशम् पयाम् वुरैरुमळु वळुवैलु कनेवुम्
विडुकरु गण्णारु डरु कळैकुकुडु मुंकरुकायु मिनेन 758

वककरुम्-वकयुध; वलकै-मुल; नण्ड-वण्डयुध; नरु वान-यारवारु
तलवारु; पुरिकम्-पुरिध; वडु-शाल; मुंकरुम्-मुंदारु; मुयुण्डि-मुयुण्डि
(मुंङ्गो?) नाम के वैय्यारु; पण्डिपालम्-पण्डिपाल; वने-वण्डयो; वलम्-
विशुल; मुंकरु-कौडिकारु छिड्यु; पौन कर-वाने को मुं के; कुलिशम्-कुलिश;
पयाम्-पय; पुरुकरु मळु-उज्ज्वल पुरु; अळु-वो के गडै; कोल-शर; कुनेनम्-
कुल; विल-यु; कयम् कण्-वैयु शर; विडैरु-कै वानेवाने वैय्यारु;
कळैकुकुड-नौकदारु; अळैकुकुड-वण्ड; मिनेन-इतनी वयकने वैने हूँ। ७५८

वे जब गये तब निम्नलिखित वैय्यारु वयवमा रहे थे। वकयुध,
मुंल, वण्ड, यारदारु तलवारु, पुरिध, शालवाल, मुंदारु, 'मुयुण्डि'
(मुंङ्गो?) पण्डिपाल, शाल, विशुल, स्वर्णमुठ वाने कुलिश, पय, उज्ज्वल
पुरु, लोहे के वण्ड, शर, कुल, धनु, दौध शर, फेके वानेवाने 'विडैरु'
वैय्यारु-विशेष और नौकदारु लौहवण्ड। ७५८

पौनैतिनरु कययुन - वैयवप पौनरु पौरुपुवै वीळरु
मिनेतिनरु पडैयुडु गण्णायु वैयिवैविरु के कनेरु मयपुडि वरुनैवै
अनेवैवैरुके कनेनेवै नैयुडु वैयुडिध वरुनैवै लोदारु
मुनेतिनरु मुडुडु वीयु पण्णैतिनरु मुडुडु विनेरु 759
पौनैतिनरु-वैयवप पौनरु पौरुपुवै वीळरु
मिनेतिनरु पडैयुडु गण्णायु वैयिवैविरु के कनेरु मयपुडि वरुनैवै
अनेवैवैरुके कनेनेवै नैयुडु वैयुडिध वरुनैवै लोदारु
मुनेतिनरु मुडुडु वीयु पण्णैतिनरु मुडुडु विनेरु 759

पौनैतिनरु-वैयवप पौनरु पौरुपुवै वीळरु
मिनेतिनरु पडैयुडु गण्णायु वैयिवैविरु के कनेरु मयपुडि वरुनैवै
अनेवैवैरुके कनेनेवै नैयुडु वैयुडिध वरुनैवै लोदारु
मुनेतिनरु मुडुडु वीयु पण्णैतिनरु मुडुडु विनेरु 759

वाले; पौंरुपु तोळर्-पर्वत-सम कन्धों वाले; मिन् निन्ऱ पटैयुम्-बिजली-सम हथियार; कण्णुम्-और आँखें; वैयिल् विरिक्किन्ऱ-जिसमें रहकर प्रकाश छिटका रही थीं, वैसे; मैय्यर्-शरीर वाले; अँन्-क्यों (रुके हो); अँन्ऱार्कु-पूछनेवालों से; अँय्तिथतु अरिन्तिलातार्-जो हुआ वह न जाननेवाले; पिन् निन्ऱार्-जो पीछे खड़े थे; मुन् निन्ऱार् मुतुकु तीय-सामने खड़े रहनेवालों की पीठ को (गरम साँस से) जलाते हुए; अँन् अँन् अँन्ऱार्-क्या, क्या पूछते हुए; मुटुकुकिन्ऱार्-सवेग आगे बढ़ते हैं । ७५६

वे स्वर्ण की चमक लिये हुए दिव्य आभरणों से भूषित थे । पर्वत-सम कन्धों वाले, विद्युत् के समान हथियारों और आँखों की चमक से विशिष्ट शरीर वाले । जब वे जाते रहे तो भीड़ की वजह से सामने वाला रुक गया तो पीछे वाले “क्यों” कहकर ढकेलते । तब सामने वाले झुंझलाकर अपने सामने वाले की पीठ पर झुलसानेवाली गरम साँस छोड़ते हुए “क्या, क्या हुआ ?” पूछते और ढकेलते हुए बढ़ते जाते । ७५९

वैय्दुऱु	पटैयिन्	मिन्ऱर्	विल्लितर्	वीशु	कालर्
मैयुऱु	विशुम्बिर्	रोन्ऱु	मेतियर्	मडिक्कुम्	वायर्
कैपरन्	दुलहु	पौङ्गिक्	कडैयुह	मुडियुङ्	गालैप्
पैय्यवैन्	रैळुन्ऱ	मारिक्	कुवमैशाल्	पैरुमै	पैर्ऱार् 760

वैय्दुऱु-पीडक; पटैयिन्-हथियारों की; मिन्ऱर्-चमक वाले; विल्लितर्-धनुर्धर; वीशु कालर्-अपनी गति से पवन को चालित करनेवाले; मै उऱु विचुम्पिल्-मेघ-मण्डित आकाश के समान (काले); तोन्ऱुम् मेतियर्-दिखनेवाले शरीर वाले; मडिक्कुम् वायर्-चबाए हुए ओंठ वाले; कै परन्तु-पार्श्वों में फैलकर; उलकु पौङ्कि-भूतल पर उसगकर; कडैयुक्-युगान्त; मुडियुम् कालै-जब पूरा होगा तब; पैय्य अँन्ऱु अँळुन्त-बरसने के लिए जो उठेंगे; मारिक्कु-उन प्रलय-मेघों की वर्षा की; उवमै चाल्-समानता करने का; पैरुमै पैर्ऱार्-गौरव प्राप्त । ७६०

बहुत ही हिंस्र हथियारों की चमक उनके साथ थी । धनुर्धर वे अपनी गति से पवन को चालित करते हुए गये । मेघाच्छन्न आकाश के समान रंग वाले वे अपना ओंठ चबाते हुए गये । तब, समुद्र फैलकर भूतल पर जब बहता है, उस युगान्तकाल में बरसने के लिए उठनेवाली प्रलयवर्षा की समानता करने का गौरव उन्हें प्राप्त हो रहा था । ७६०

पतियुऱु	शंयलैच्	चिन्दि	योममुम्	बरित्त	दम्मा
तनियौरु	कुरङ्गु	पोला	नन्ऱुनन्	दरुक्कैन्	गिन्ऱार्
इतियौरु	पळिमर्	रुण्डो	विदन्तिन्	रिरैत्तुप्	पौङ्गि
मुनिवुऱु	मनत्तिर्	रावि	मुन्ऱुऱ	मुडुहु	हिन्ऱार् 761

पति उऱु-शीतल (मनोरम); शंयलै चिन्ति-अशोक वन को नष्ट करके; ओममुम् परित्तु-होम-मण्डप को भी उखाड़ा; तति और कुरङ्कु पोल् आम्-एकाकी

एक बार है तो; नरक-माला है; नमः लक्ष्मी-देव्यार। बलः
 हृष्टः स्वस्ति-इत्येतः; इति-अथ; श्री पण्डित-एक लिखतः
 हो सकत है क्या; अंतर्गत-कहेत हूँ और सवाकतः; पण्डित-बालकतः;
 सुनिवृत्त-रुद्रः; सतत-विष्णु-मन के साथ; सुनिवृत्त-एक-इत्येतः को पण्डित
 सामने उल्लेखतः; मुद्रा-कृत-एतः-इति । ७६१

वे धीं कहते हुए जा रहे थे कि एकाकी एक वानर ने शीतल अशोक वन की मिटा दिया और यमवृक्ष की भी उखाड़कर फेंक दिया तो हमारा बल भी बढ़त (प्रशंसनीय) भला रहा ! इससे बढ़कर क्या अप्रयत्न होगा ? इस विचार से उनके मन में अपार कोप भर आया । वे शीर मचाते हुए एक-एक आगे जानेवाले दूसरे की पीछे टकलते हुए चलकर बढ़ रहे थे । ७६ ?

ಅನುಕ್ರ	ಪ್ರಶ್ನೆ	ನಿಗಮ	ಘಟಿಸಿದ	ದೊರೆನ	ವಾರ್ತೆಯು	ಮುಕ್ತ	ಕಡಲಿನ	ಯಾವ	ಮಹಿಮೆ	ನಾವ	ತಕ್ಕ	762
ಅನುಕ್ರ	ಪ್ರಶ್ನೆ	ನಿಗಮ	ಘಟಿಸಿದ	ದೊರೆನ	ವಾರ್ತೆಯು	ಮುಕ್ತ	ಕಡಲಿನ	ಯಾವ	ಮಹಿಮೆ	ನಾವ	ತಕ್ಕ	762

[illegible]

उनकी आँखें मंसे में गहरे उठे— पिछलेबाली शिरियों का नाद, धुप पर चढ़ी प्रदोषा की टंकार का नाद, पुरी की पायलों का बबलान, शंखनाद और छौट-छपट का शोर। इन सबों ने उठकर गुगल के समुद्र के गर्जन और सवार् की जीभ की (खनि की) सुप करा दिया। ७६२

नैवविड	मिलने	रूपमि	वालिङ्ग	बोलेहिने	खरम
आववि	नोवर	भुनेद	भुङ्गमरने	वेरुकेकिने	खरम
प्रवरभुम	बिनेभुङ्ग	गादेदिप	गुहेयुमिरने	वेमिरकेकिने	खरम
विरविन	दिनङ्ग	भुने	वलिङ्गडा	बलिङ्गकेकिने	खरम

763

नर इदम् इव-सर्वको पर स्थान गते; श्रेष्ठ श्रौति-यदे सोवकर; वाम इद-नम
 म; चूलिकेन्द्राक्ष-वलनवाले और; मूत्र मूत्रवृ-कष का कम लोडकर; अश्वविमं
 शीवर मुनि-एक-इसरे के आगे जाकर; उदकेन्द्राक्ष-बालनवाले; एवमम्
 बिलम् काटि-माहे और धर्म का शुकाकर; २; पुके श्रित्त-इश्वार यवास;
 चित्तेकामेन्द्राक्ष-जोइनेवाले; विरि इव-विरुन गते; इल्लके-लका; श्रेष्ठ-इस

कारण से; वल्लि पैंडा-जाने का मार्ग न पाकर; विळिक्किन्ऱारुम्-ताकने वाले । ७६३

उस भीड़ में, भूमि पर मार्ग न पाकर अन्तरिक्ष में उड़ते जानेवाले थे; कूच का क्रम भंगकर आगे जानेवाले थे; आपस में स्थान के लिए झगड़ने वाले थे; धनु और भौंहों को झुकाते हुए धुआँधार श्वास निकालनेवाले थे । लंका पर्याप्त विस्तृत न रहा देख मार्ग न पाने की वजह से आँखें फाड़कर देखते खड़े के खड़े रहनेवाले भी थे । ७६३

वाळितै विदिर्क्किन्ऱारुम् वायितै मडिक्किन्ऱारुम्
तोळुर्क् कौट्टिक् कल्लैत् तुहळ्पडत् तुहैक्किन्ऱारुम्
ताळ्पैयर्त् तिडम्बै शडु तरक्किन्ऱ नैरुक्कु वारुम्
कोळ्वळै यैयिरु तित्तुर् तौर्येनक् कौटिक्किन्ऱारुम् 764

वाळितै विदिर्क्किन्ऱारुम्-तलवारों को हिलानेवाले; वायितै मडिक्किन्ऱारुम्-ओंठ काटनेवाले; तोळ्-कन्धों को; उड्-खूब; कौट्टि-ठोंककर; कल्लै-पत्थरों को; तुहळ् पट-धूल में परिवर्तित करते हुए; तुहैक्किन्ऱारुम्-रौंदनेवाले; ताळ् पैयर्त्तु-डग बदलने; इटम् पैंडातु-स्थान न पाकर; तरक्किन्ऱ-घमण्ड करके; नैरुक्कुवारुम्-पिल पड़नेवाले; कोळ् वळै यैयिरु-कठोर वक्र दाँत; तित्तुर्-पीसते हुए; तौर्येन-आग के समान; कौटिक्किन्ऱारुम्-खौलनेवाले-बने । ७६४

तलवार घुमानेवाले, ओंठ चबानेवाले, कन्धे ठोंकनेवाले, पत्थर को चूर-चूरकर रौंदनेवाले, पैर उठाकर रखने का स्थान न पाने से खीझकर दूसरों को ढकेलनेवाले, अपने सुदृढ़ वक्र दाँतों को पीसनेवाले और आग-से खौलने वाले (होकर वे जा रहे थे ।) । ७६४

अत्तैवरु मलैयैत्त निन्ऱारु रळवुरु पडैहळ् पयिन्ऱार्
अत्तैवरु मरियि नुयर्न्दा रहलिड नैळिय नडन्दार्
अत्तैवरुम् वरत्ति तमैन्दा रशनिमि तणिह्ळ ञणिन्दार्
अत्तैवरु ममरै वेन्ऱारु रशुररै युयिरै ययिन्ऱार् 765

अत्तैवरुम्-सब; मलैयैत्त-पर्वत के समान; निन्ऱार्-खड़े रहे; अळवु अरु-अगणित; पटैकळ् पयिन्ऱार्-अस्त्राभ्यस्त; अत्तैवरुम्-सभी; अरियिन् उयर्न्तार्-सिंह-सदृश (बल-विक्रम में) उन्नत; अकल् इटम्-विशाल भूमि को; नैळिय-लचकाते हुए; नडन्तार्-चले; अत्तैवरुम्-सभी; वरत्तिल् अमैन्तार्-अनेक वरों को प्राप्त कर चुके थे; अचत्ति मिन्-वज्र के साथ कौधनेवाली बिजली के समान; अणिकळ् अणिन्तार्-आभरण पहने हुए; अत्तैवरुम् अमररै वेन्ऱार्-सब देवजयी हैं; अचुररै उयिरै-असुरों के प्राणों को; अयिन्ऱार्-खा (हर चुके) थे । ७६५

राक्षस पर्वतों के समान खड़े रहे । वे सब असंख्य-अस्त्राभ्यस्त थे । सब सिंह-सदृश बल में बढ़े हुए थे । जब वे चलते तब भूमि लचक जाती थी । सबको अनेक वर मिले थे । उनके आभरण अशनि के साथ

कविनेपाली विजली की-सी चमक और गद से युक्त थे । वे सब देव-विजयी थे । असुरों की भी जान के गढ़क थे । ७६५

不

ਭੁਕਤਿ	ਅਵਗਣ	ਮਿਸਰੀ	ਭੂਟੇ	ਉਪਦੇਸ	ਬੰਬੇ
ਮੁਖਿ	ਪਾਇ	ਜੈਨਵਾਰ	ਮੁਤ੍ਹਿ	ਮੁਕਲ	ਪਾਇਰ
ਫੁਲ	ਜਾਇਓ	ਬੰਬੇ	ਪਿਯੋੜ	ਬਡੇ	ਪੁਰਿਜਾਰ
ਲੱਕੜ	ਚਿਰਸ਼ੀ	ਬਾਂਸ	ਛਿਜਰ	ਬੰਬੇ	ਜਿਰਿਜਾਰ

766

कुड्डिकम् कवचम्-कसं लो कवचं घालं निवर्तकवचं जालि कं दध्म; मित्रपालं-
 विजली-समं और; कुर्येकठलं-क्षवणशाल पालघाले; उरककम्-नाम; घनं
 पुरं-कठरं पुष्ट; मुक्तिकम पाठितं-जव उच्च दिशति ये आपा; उदंनं-होकर;
 मुवुक्तं इद-पुठ दिवसे ह्य आपा; मुक्कलं पण्डितं-(जव ये राक्षस) ह्ये ये;
 इत्तिकम गति किठलं-अथ-घन कुरे का; घरे इव कुरे-वर्ग पण नष्ट करे ह्य;
 अठकं अतिवर्त-अलकापुरे का ये नाश कर चके; लुक्कलं-इदंमिक्क-मिक्कलाल
 नदी मिले, इत्तिक; घनं लोठ-कठर कायां म; निनव उर-वृल्लो (पुष्ट की घाले)
 कुड्डि; उलक्क निरुत्तलं-लो क भर मं विजय-पाला कर आय ये । ७६६

तब उनके निरुद्ध निवातकवच जालि के अर्धरी और विजली के समान चमकनेवाली और कवचनशील पायलधारी नागों ने युद्ध ठाम आ, तब वे ही होरकर पीठ दिखाने हुए भागे और ये राक्षस हँसी उड़ाने लगे रहे। इन्होंने अक्षय निधि के देवता कुंवर की वज्जी कीर्ति को मिटाते हुए अलकापुरी को नष्ट कर दिया था। इनसे मित्रों की कोई नहीं आ रहे थे, इसलिए वे अपने कंधों पर की खूबानी लेकर (युद्ध की श्रृंख के कारण) संसार भर में विजययात्रा कर चुके थे। (वास्तविक के अनुसार निवातकवचों के और उरगों के साथ रावण का विनिवर्ण के अवसर पर युद्ध छिड़ा था। ये राक्षस वीर भी तब उसके साथ थे।)। ७६६

[illegible]

वरकळ-पवर्वा का; इंदुलिप्त-दुकराणी; अंग्रेजां-कहे ली; मरिचकडल-
 प्रयावर्तमशील तरंगी के सागर का; पक्कमिप्त अंग्रेजां-पी जाओ, कहे जाय ली;
 इरविधू-रवि का; लिळ लिळमिप्त-गिराणी; अंग्रेजां-कहे जाय ली; अळ मळ-
 उचियल सवर्षा का; लिळलिप्त-निवाडी; अंग्रेजां-कहे जाय ली; अरविचरु
 अरविचर-सपुला; अंग्रेजी-एक भया; तरुलिवाटे अरुपुमिप्त-सवका मीम पर दे मारी;
 जाय; अंग्रेजां-कहे जाय ली; तरुलिवाटे अंदम अंदम-मीम का उठा ली; अंग्रेजां-कहे
 जाय ली; अंग्रेजां-एक-एक; अ. लि-वहे; अमीनल-करने; सहीनलार-याय
 वल रहे । ७३

37 नमो से (राधा लाल) कदा वा कि पर्वते की प्रकृति,

तरंगायमान सागर को पी लो, रवि को ढहा दो, उठते मेघों को निचोड़ दो या एक क्या अनेक सर्पराजों को भूमि पर ले पटक दो या भूमि को उठाओ, तो वे एक-एक वे सब कार्य करने का सामर्थ्य रखते थे । ७६७

तूळियि	निमिर्पड	लम्बो	यिमैयवर्	विळिदुर्	वैम्बोर्
आळियि	निन्नमैन	वन्त्रा	ळडुपुलि	निरैयैन्न	विण्डोय्
मीळियि	नणियैन्न	वन्त्रो	ललैहडल्	विडमैन्न	वैञ्जार्
वाळियिन्	विशैहोडु	तिण्गार्	वरैवरु	वन्नवैन्न	वन्न्दार् 768

निमिर् तूळियिन् पटलम्-उठी धूल के पटल ले; पोय्-ऊपर जाकर; इमैयवर् विळि-देवों की आँखों की; तुर्-सींच दिया; वैम् पोर्-कठोर युद्ध करनेवाले; आळियिन् इतम् अँत-सिंह-समूहों के समान; वल् ताळ्-सुदृढ़ पैरों वाले; अट्टु पुलि-संहारक व्याघ्रों की; निरै अँत-पंक्ति के समान; विण् तोय्-गगनोन्नत; मीळियिन् अणि अँत-भूतों के वृन्द के समान; ओल् अलै कटल्-शब्दायमान तरंगों के सागर के; अन्नु विटम् अँत-उस दिन उत्पन्न विष के समान; अँञ्चार्-अथक; वाळियिन् विचै कौटु-शर-गति अपना लेकर; तिण् कार् वरै-प्रबल काले पर्वत; वरुवन्न अँत-चलते आते हों, जैसे; वन्तार्-(हनुमान पर चढ़) आये । ७६८

उनके कूच से धूलपटल उठा और उससे देवों की आँखें मुँद गयीं । वे घातक युद्ध-रत सिंहों के झुण्डों के समान, सबल पैरों वाले संहारक व्याघ्रवृन्द के समान और गगनोन्नत पिशाचों के समूहों के समान, पूर्वकाल में गर्जनशील सागर से उत्पन्न हलाहल के समान अथक रूप से अस्त्रगति-सी गति में बढ़ते जा रहे थे । वे कालें पर्वतों के समान हनुमान को घेर आये । ७६८

पौरिदर	विळियुयि	रौन्त्रो	पुहैयुह	वयिलौळि	मिन्बोल्
शौरिदर	वुरुमदिर्	हिन्त्रार्	तिशैदौरुम्	विशैहोडु	शैन्त्रार्
अँरिदरु	कडैयुह	वन्गा	लिडरिड	वुरुमि-	निन्नम्बोय्
मरिदर	मळैयहल्	विण्बोल्	वडिवळि	पौळिलै	वळैन्दार् 769

उयिर् औन्त्रो-केवल श्वास एक से नहीं; विळि-आँखें भी; पौरि तर-अंगारे निकालते रहे; पुकै उक-धुआँ उगलते; अयिल् औळि-शक्तियों का तेज; मिन् पोल्-विजली के समान; चैरि तर-घने रूप से चमका; उरुम् अतिरकिन्त्रार्-वज्रनाद करते; तिचै तौरु-दिशाओं से; विचै कौटु-क्षिप्रगति से; चैन्त्रार्-घेर आये; कटै युक्-युगान्त में; अँरि तरु-बहनेवाले; वन् काल् इट्रिट-प्रचण्ड पवन से उत्पाटित; उरुम् इतम् पोय् मरि तर-वज्रसमूह स्थानान्तर में गिरे हों जैसे; मळै अकल्-मेघरहित; विण् पोल्-आकाश के समान; वटिवु अळि-(जिसमें थे और जो अपना) मनोरम रूप खो चुका था; पौळिलै-अशोक वन की; वळैन्दार्-घेर गये । ७६९

उनके श्वास से ही नहीं, आँखों से भी अंगारे निकल रहे थे । धुआँ भी

કાં તો હવે દુનિયા બદલાઈ ગઈ છે. આ બદલાવને કારણે વર્તમાન સમાજમાં જે જે સુધારાની જરૂર છે તે સુધારાની જરૂર છે. આ બદલાવને કારણે વર્તમાન સમાજમાં જે જે સુધારાની જરૂર છે તે સુધારાની જરૂર છે.

୧୩୩ । ଦୁଇ ଲକ୍ଷ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଶୁଭ—

अथर्व	मदन	पतिनदा	नरहिनि	नमोय	वडनदा	पियनदा	युडनदा	मिडनदा	774
मिडनदा	कडपु	नडनदा	वडनदा	नडनदा	मडनदा	पडनदा	मडनदा	मिडनदा	

अव्ययम् अतः अविनाश-धर्मश्च ह्यस्मान् न यो बहो जातः, इति विनाश उच्यते-
 विकार इति (इदं) परं स मह्यता (प्रकार) करोति; नृप-राज-राज-
 उपरं मरु-ऊर्ध्वं एक पदं के; अतिक्रान्त-प्रायः अभय अद्वैत-समा गायः
 वरं वर-मदय आसु नव आचरति; तुं अतः-सहस्रक के समान; अतः उच्यते
 अतः-अकेल वचं रह्ये सहस्रक वसे; उक्तोक्त-वाह से; अतः के इत्युक्त-एक
 द्वयं निकरः; निरु कदल कदम्ब-मरे समुद्र को मयनेवाले; नृप-राज-वहं
 निवसे माग के साथ; मत् अत-पुत्र के समान; नदवर्ण निमित्त-राज-
 वन के मध्य) नगा छडा रहि । ७७४

धर्मरूप हितमान में यह जाना । वह एक ऊँचे पर्व के पास गया । वह मिटकर भी सहायता करनेवाला निकला । एकाकी अपक्काल-सहायक उसे उसने चाव के साथ एक ट्रेय में पकड़ लिया । फिर वह उस स्थान में सागरमथनकारी विशाल तलपट्टेय वाले पर्वत के समान तन कर खड़ा हुआ । ७७४

ମୂଳ । ଯେଉଁ ଯେଉଁ ଧୂଳି

[illegible][illegible]

हनुमान ने उस वर से उनको मारा, जिससे ऐसी छवि निकली जिसके सामने पर्वतचूल्होंका रो मुग्ध बन भी मान हो रहे। तब पर्वत छुटके-जैसे राक्षस लौट गये। वहीं तक बात नहीं चली। पर्वतों पर जैसे मैथ-वर्षा से उत्पन्न नदियाँ बहती हैं, वैसे ही उनके आगे पर से रक्त-नदियाँ

बह निकलीं जिससे घाट भर गये । वे एक-दूसरे के अनुकरण में अपना उन्नत सिर तुड़वा लेकर मरे । ७७५

परैपुरै विळिहळ् पडिन्दार् पडियिडै नैडिडु पडिन्दार्
पिरेपुरै यैयिह् मिळिन्दार् पिडरीडु तलैहळ् पिळिन्दार्
कुडैयुयिर् शिदरि नैरिन्दार् कुडरीडु कुरुदि शौरिन्दार्
मुडैमुडै पडैह डेरिन्दार् मुडैयुडन् मरिय मुडिन्दार् 776

मुडै मुडै-अनेक बार; पडैकळ् तैरिन्दार्-हथियार चुनकर फेंके; पडै पुरै-डोल के (गोल चमड़े के) समान; विळिकळ् पडिन्दार्-आँखे-उखड़े हो गये; पडि इटै-भूमि पर; नैटितु पडिन्दार्-लम्बे तान गये; पिरे पुरै-कलाचन्द्र-समान; अँयिहम् इळिन्दार्-दाँत खो गये; पिटर् ओटु-गलाओं के साथ; तलैकळ् पिळिन्दार्-फटे-सिर हो गये; कुडै उयिर्-विकल-प्राण होकर; चितरि नैरिन्दार्-अस्त-व्यस्त गिरकर दब गये; कुटर् ओटु-आँतड़ों के साथ; कुरुति-रक्त; शौरिन्दार्-बाहर निकाला; मुडै उटल्-दुर्गन्धपूर्ण शरीर; मरिय-मिटते हुए; मुडिन्दार्-टूटे और मरे, कुछ । ७७६

उन राक्षसों ने अनेक बार हनुमान पर चुन-चुनकर हथियार चलाए । पर क्या लाभ ? उनकी आँखें, जो ढोल के चमड़े के समान बड़ी और वर्तुल थी, फूट गयीं । वे भूमि पर लम्बा तान गये । चन्द्रकला के समान दाँत खोये । उनके गले चिरे और सिर फूटे । कुछ के थोड़े से प्राण बचे थे । वे भी एक-दूसरे पर गिरकर दबकर मर गये । कुछ की आँतड़ियाँ और रक्त बाहर निकल गया । कुछ अपने दुर्गन्धपूर्ण शरीर को तोड़ते हुए गिरे और मरे । ७७६

पुडैयुडै विळिहन् लिन्गाय् पौरियिडै मयिर्हळ् पुहैन्दार्
तौडैयोडु मुडुहु तुणिन्दार् शुळिपडु कुरुदि शौरिन्दार्
पडैयिडै यौडिय नैडुन्दोळ् पडिदर वयिह् तिडिन्दार्
इडैयिडै मलैयिन् विळुन्दा रिहल्पोर मुडुहि यैळुन्दार् 777

इकल् पौर-युद्ध लड़ने के लिए; मुडुकि अँळुन्दार्-शीघ्र उठ आये; पुडै उटै-दोनों ओर रहनेवाली; विळि कतलित्-आँखों से निकली आग के; काय् पौरि इटै-जलते अंगारों के मध्य; मयिर्कळ्-रोम; पुकैन्दार्-धुआँ-बने हुए; तौटै ओटु-जंघाओं के साथ; मुतुकु तुणिन्दार्-पीठ-कटे हुए; चुळि पटु-आवर्तयुक्त; कुरुति शौरिन्दार्-रक्त-नदियाँ बहायीं; पडै-हथियारों के; इटै ओटिय-बीच में टूटने से; नैडुम् तोळ्-लम्बी मुजाओं के; पडि तर-छिन जाते; वयिह् तिडिन्दार्-पेट फट गये; इटै इटै-इधर-उधर; मलैयिन् विळुन्दार्-पर्वत के समान भूमि पर गिरे । ७७७

युद्ध में लड़ने के लिए राक्षस वेग के साथ आये । उनके नेत्रों से निकली आग के अंगारे में उनके केश जल उठे । उनकी जाँघें और पीठें कट गयीं । उन्होंने रक्त का इतना बड़ा प्रवाह उगला कि उसमें भँवरें

उठी। उनके द्विपार बीच में रूट गये, कंधे शरीर से अलग हुए, पट छूँके और भागते-भागते पर्वतों के समान जगहे-जगहे पर गिरे पड़े रहे। ७७७

गुहपड बिछिमे मिडेनदार पीछिपिडे न्हिड पुरण्डार
विदेपड मुपिरर बिछेनदार बिछियीड बिछियु मिडेनदार
कडेहोड मुपिरर मनेनदार कण्णीरु मिनेपर कनेनदार
उदेपड वरुमे न्हिरनदार व्हिरनोड कुरिड मुमिडेनदार 778

कने कौडे-गदा निकर; मुपिरर मनेनदार-घोर गुह करवेवाले; कण्णीरु बिनेपर-शर बलाकर गुह करनेवाले घुघर; कनेनदार-जो वहा आ मिले; उदे पट-द्विपार की लाले छाकर; उरुमे मुपिरनदार-बस के दबकर फटने से; उहिरनोड-भागों के साथ; कुरिह-रखल भा; उमिडेनदार-उगले; इरिहमे मिडेनदार-अधकार के समान जा जुटे थे; पीछि इडे-घुल के मध्य; गुते पट-गडकर; न्हिड पुरण्डार-बहुत दूर लोडे; बिने पटुमे-बोले बीच के समान गिरे; उहिरर-जोडे; बिछेनदार-मरे गिरे; बिछि अडे-आँखों के साथ; बिछियुमे-बाके-शिवन भा; इडेनदार-छोले बने। ७७८

राक्षस गदा निकर लडने आये। कुछ लोग शर चलाने धनु के साथ आये। उन सबने लाले छापी, जिससे उनके वक्ष हल हुए और रक्त-वमन के साथ गला भा निकल गये। अधकार के समान आ जुटे वे घुल से धूसकर दूर तक लोडे। कुछ तो बीच बीचों के समान यल-यल गिरकर बिगल-गला हुए। उनकी आँखें भी गयी और बोलने की शक्ति भी। ७७८

अथलयमे मनेहोड उडेनदार रडेपडे यलवे यलवेनदार
बिथलिव मरुय बिचिनदार मिथुल इडेय मिडेनदार
गुयरीड मनेपुम बिछेनदार गुडेगुड बिशनीरु शोनेरु
उयरेवरु बिशपि न्हिरनदार कडलीड मुलडि मुडेनदार 779

अथले अथले-पल इधर-उधर के; मने कौडे-पर्वतों की लाकर; अडेनदार-फके (उन राक्षसों ने); अडे पके-घातक शर्बला के; अलवे अडेनदार-उच्चतम माप पर गये; बिथले इडेमे-बिथाल स्थल; मरुय-आच्छादित करने हुए; बिचिनदार-कले छडे रहे; मिथे उलक-ऊपर के लोक; अडेय मिडेनदार-मर से जा मर गये; गुयले न्हि-धेरपया; मनेपुमे-पर्वतों के समान; बिछेनदार- (द्विपार द्वारा हल होकर) गिरे; गुटे गुटे-पायल-पायल से; बिचे न्हि-सभी दिशाओं से; वुडेनदार-गये; उयरेवे उडे-नामवरी के लिए; बिचेपुमे अहिरनदार-वेग के साथ जा मिडे; उलवे अडेमे-(उहोने) शरीर के साथ; उलक गुडेनदार-इहोलेक भा छोडे दिया। ७७९

राक्षसों ने पास के स्थानों से पर्वत उठाकर फके। वे शर्बला की पराकाष्ठा तक पहुँच गये थे। बिथाल भीम पर फले छडे हुए। वे आकाश-

लोक को भरते हुए जा पहुँचे। मेघाच्छादित पर्वतों के समान वे हनुमान के प्रहारों से आहत होकर गिर गये। सब ओर सभी दिशाओं में भाग चले। कुछ लोग कीर्ति-लिप्सा लेकर हनुमान से भिड़े, तो बेचारे उनको शरीर के साथ इहलोक को भी छोड़ना पड़ा। ७७९

परित्त	ताळीडु	तोळपरित्त	तैरिन्दतन्	पारिन्
इरु	वैजिरे	वैरपिन	मार्मेतक्	किडन्तार्
कौरु	वालिडैक्	कौडुन्दौळि	लरक्करै	यडङ्गच्
चुरि	वीशलिड	पम्बर	मार्मेतच्	चुळन्तार् 780

परित्त-(हनुमान ने) उनको पकड़कर; ताळ ओटु तोळ परित्तु-पैरों के साथ हाथों को अलग छीन लेकर; तैरिन्दतन्-फेंक दिया; वैम् चिरे इरु-कठोर पंख-कटे; वैरु इतम् आम् अँत-पर्वतकुल के समान; पारित्त-भूमि पर; किडन्तार्-पड़े रहे; कौडुम् तौळिल् अरक्करै-नृशंसकारी राक्षसों को; कौरु वाल इटै-अपनी सबल पूँछ से; अटङ्क-दबा लेकर; चुरि वीचलिल्-घुमाकर फेंका (हनुमान ने) तो; पम्परम् आम् अँत-लट्टू के समान; चुळन्तार्-धूमे। ७८०

हनुमान ने उनको पकड़ा और पैरों तथा कन्धों को नोच लिया और दूर फेंक दिया। वे पंखहीन बड़े पर्वतों के समान भूमि पर पड़े रहे। हनुमान ने कुछ नृशंसकारी राक्षसों को अपनी पूँछ से लपेटकर घुमाया और झटका दिया और वे लट्टू के समान धूमे। ७८०

वाळ्ह	ळिरुन	विरुन	वरिशिलै	वयिरत्
तोळ्ह	ळिरुन	विरुन	शुडर्मळुच्	चूलम्
नाळ्ह	ळिरुन	विरुन	नहैर्यिड्	रीट्टम्
ताळ्ह	ळिरुन	विरुन	पडैयुडैत्	तडक्कै 781

वाळ्कळ् इरुन-तलवारे खण्डित हुई; वरि चिलै इरुन-सबन्ध धनु टूटे; वयिर तोळ्कळ् इरुन-वज्र-सम कन्धे कटे; चुडर् मळु-तप्त लोहे के समान; चूलम् इरुन-(तेजोमय) त्रिशूल टूटे; नाळ्कळ् इरु अत-नक्षत्र टूट गिरे जैसे; नक्कै अयिरु ईट्टम्-उज्ज्वल दाँतों के समूह; इरुन-चू गये; ताळ्कळ् इरुन-पैर कटे; पटै उटै-हथियारवाही; तडक्कै-विशाल हाथ; इरुन-कटकर गिरे। ७८१

हनुमान के प्रहारों से राक्षसों की तलवारें टूटीं; सबन्ध धनु टूटे; वज्र-सम कन्धे टूटे; तप्त लोहे के समान उज्ज्वल त्रिशूल टूटे; और नक्षत्र टूटकर गिरे जैसे वक्र दन्तों के समूह टूटे। पैर टूटे और हथियारवाही विशाल हाथ भी टूटे। ७८१

तैरित्त	वन्तुलै	तैरित्तन	शैरिशुडर्क्	कवशम्
तैरित्त	पैङ्गळल्	तैरित्तन	शिलम्बौडु	पौलन्दार्

સુરિવેન કૃત્તાલન સૂરિવેન અપામણ વિદાર્થિ 782

वत् तत्-सबल मिः, निरिवत-नितर गये, वृत्त वृत्ति-प्रकाशमय, कवचम

[illegible][illegible]

वसन्तः । वसिष्ठेन-अलम-अलम हो गये; कृष्णदेवस्य वसिष्ठेन-कुण्डल कहे;

॥ विवस्त्रि वस्त्रेन-आर्वा का पुनर्निपा जिनरी, विवस्त्र । ७८२

[illegible][illegible]

၁၀၂၂ နှစ်၊ စက်တင်ဘာလ ၁ ရက်နေ့

சுயம்
புகழ்
புகழ்
புகழ்
புகழ்
புகழ்

၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂
၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂	၂၃၂၂၂၂၂၂

[illegible][illegible]

महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई-४००००१

सुवर्णादिकम् चदेव चरुं चकान-भृशोऽतिविषादं विवरे; चककरम्

—वर्मापुष्ट कं दिकान् वने
उत्तमं निरगन्ध-शरीरं विदरे ओरः

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

जीकर बिखरे। अग्रणी नाम के इतिहास बिखरे।

२ खेले और पाठ विखरे । २ खेले नामक विद्यया (विनय) अस्ति

[illegible][illegible]

— ၁၂၃၃၂၂ —

[illegible]

5201E
 5201F
 5201G
 5201H
 5201I

ಗೌಡ	ಶರಣ	ಜ್ಞಾನಲಿಂಗ	ಪಾದಪದ	ಶೃಂಗೇರಿ
ಮಠ	ಮಠ	ಮಠ	ಮಠ	ಮಠ

ಕುಡ್ಲೆ	ಮಾತೃಭವನ	ಕರ್ನಾಟಕ	ಮಾತೃಭವನ	ಬರಗುಡಿ
--------	---------	---------	---------	--------

വാർഡ് മാർഗ്ഗനിർദ്ദേശം നാമപ്രകാരം സിബിസി 784

नामकमात्र—(हेतुमान के) धैर्य (के) प्रहार) से; पत्नर—अनेक; तद कैक्यात्—

विशाल हाथों से; पलर्-अनेक; ताक्कुम्-टकरानेवाले; तोळ्कळाल्-कन्धों से; पलर्-अनेक; चुटर् विळियाल्-आँखों की आग से; पलर्-अनेक; तौटरुम् कोळ्कळाल्-पकड़कर दवाने से अनेक; कुत्तुकळाल् पलर्-घूसों से अनेक; तत्तुम् वाळ्कळाल्-अपनी-अपनी तलवारों से; पलर्-अनेक; मरङ्कळिताल् पलर्-पेड़ों से अनेक (राक्षस); मट्टिन्तार्-हत हुए । ७८४

हनुमान के पैरों के प्रहार से अनेक राक्षस मरे । विशाल हाथों से अनेक, कन्धों से अनेक, ज्वलन्त दृष्टि की आग से अनेक, उसके पकड़ने से अनेक और घूसों से अनेक मरे । अपनी-अपनी तलवार की वार से भी अनेक मरे । उसने पेड़ों से पीटकर अनेकों को निपात दिया । ७८४

ईर्क्कप्	पट्टत्तर्	शिलर्शिल	रिडियुण्डु	पट्टार्
पेर्क्कप्	पट्टत्तर्	शिलर्शिलर्	पिडियुण्डु	पट्टार्
आर्क्कप्	पट्टत्तर्	शिलर्शिल	रडियुण्डु	पट्टार्
पार्क्कप्	पट्टत्तर्	शिलर्शिलर्	पयमुण्डु	पट्टार् 785

चिलर्-कुछ; ईर्क्क-खींचने से; पट्टत्तर्-मरे; चिलर्-कुछ; इटि उण्डु-धक्के खाकर; पट्टार्-मरे; चिलर्-कुछ; पेर्क्क-फेंके जाकर; पट्टत्तर्-मरे; चिलर्-कुछ; पिटि उण्डु-मुट्ठी में पिसकर; पट्टार्-मरे; चिलर्-कुछ; आर्क्क-बँध जाकर; पट्टत्तर्-मरे; चिलर्-कुछ; अटि उण्डु-पिटकर; पट्टार्-मरे; चिलर्-कुछ; पार्क्क-हनुमान की दृष्टि पड़ने से ही; पट्टत्तर्-मरे; चिलर् पयम् उण्डु-कुछ भय खाकर; पट्टार्-मरे । ७८५

कुछ लोगों को हनुमान ने पकड़कर खींचा और वे मर गये । धक्का खाकर कुछ लोग, फेंके जाने से कुछ लोग, केवल गह लेने से अनेक और कुछ लोग बँध जाने से मरे । पीटकर कुछ मरे और कुछ राक्षसों पर हनुमान ने दृष्टि डाली और वे मर गये । कुछ भय खाकर प्राण त्याग गये । ७८५

ओडिक्	कौत्तुन्नन्	शिलवरै	युडलुड	शोळ्म्
कूडिक्	कौत्तुन्नन्	शिलवरैक्	कौडिर्नेडु	मरत्ताल्
शाडिक्	कौत्तुन्नन्	शिलवरैप्	पिणन्दीळुन्	दडवित्
तेडिक्	कौत्तुन्नन्	शिलवरैक्	कड्डुर्गेनत्	तिरिवान् 786

कड्डुक्कु अँत-चक्र के समान; तिरिवान्-घूमनेवाले (हनुमान) ने; चिलवरै-कुछ राक्षसों को; ओटि कौत्तुन्नन्-दौड़कर पकड़ा और निपाता; चिलवरै-कुछ राक्षसों को; उटल् उटल् तोळ्म्-शरीर से शरीर; कूटि-भिड़ाकर; कौत्तुन्नन्-मारा; चिलवरै-कुछ राक्षसों को; कौटि नैडु मरत्ताल्-लम्बे ध्वज-स्तम्भ से; चाटि-पीटकर; कौत्तुन्नन्-मारा; चिलवरै-कुछ लोगों को; पिणस् तोळ्म्-लाशों के बीच; तटवि तेटि-ढूँढ़ पाकर; कौत्तुन्नन्-मारा । ७८६

वातचक्र के समान हनुमान घूमता रहा । उसने दौड़कर कुछ

राक्षसों की निपात । कुंठ राक्षसों की एक-दूसरे के शरीर से भिड़कर मारा । कुंठ राक्षसों की लम्बे ज्वलन्तरस से पीटकर मारा । लशों के मध्य दूँ पाकर कुंठ राक्षसों की मारा । ७८६

मृदति	नारपड	मृदतिनाम	मृदुमृदु	मृदुतिक्
कटति	नारपडक्	कटतिनाम	कड्डनाम	मृदुतिक्
नटति	नारपडले	नटतिनाम	मल्लुनाम	मृदुतिक्

787 नटुवाम

मल्ल अन्न लक्ष्मण-पर्वत-सम मान्य हेतुमान; मृदतिनाम-अपने से भिड़नेवालों की; पट-निपातले हुए; मृदतिनाम-उनसे भिड़ा; मृदु-मृदु-पवित्रता से; मृदुति-शरीर आकर; कटतिनाम-जो पास पहुँचे; पट-उनकी मारने; कटतिनाम-उनके पास पहुँचा; कटि अन्न-पर्वत के समान; नरुडुति-पास जाकर; कटतिनाम-जिन्होंने उसे बाँटा; पट-उन्हें मारने हुए उसने; कटतिनाम-पागलवड कर दिया; ककळाल-अपने हाथों से; मृदुतिनाम नटतिनाम-जिन्होंने उसके शरीर पर प्रपञ्च मारा; पट-उन्हें हल करते हुए; नटतिनाम-उसने भी प्रपञ्च मारा । ७८७

पर्वत-समान हेतुमान ने भिड़नेवालों से भिड़कर उन्हें प्राणहीन किया । कम से जो उसके पास दौड़े आये उन्हें उनके पास स्वयं दौड़ जाकर मारा । पर्वत के समान आकर जिन्होंने उसे पचाश में लेना चाहा उन्हें उसने बाँधकर निपात । कुंठ लोभों ने उस पर दण्ड लगाए जो उन्हें दण्ड से पीटकर उसने हल कर दिया । ७८७

उरककि	मृदुतिनाम	मृदुतिनाम	विद्युमपिब
पडककि	नटुमिल्लिम	वडतिनाम	गोल्लिम
नरककि	कड्डनाम	नरककरुड	नारिडुकिम
पडककि	निरुडुडि	पडुडुडुके	कड्डुडुडु

788 पियुमपिब

उरककिरुम-(राक्षस) लिखल रहे, नव भी; कल्लिरुम-उन्हें मारना; उरारिरुम कल्लिरुम-हेरा में रहते नव भी मारना; विद्युमपिब-आकाश में; पडककिरुम-उड़ते नव भी; कल्लिरुम-मारना; पडतिरुम कल्लिरुम-गैस पर चलनेवालों की भी नव भी; कल्लिरुम-मारना; पडतिरुम करनेवाले; कड्डुम निरु-काले धेयों के-से मारना; मिने पडककिरुम-विजली उत्पन्न करनेवाले; कड्डुम निरु-काले धेयों के-से मारना; कड्डुम अरककरुम-पायलवाली राक्षस; नरि नटुम-मार्गों में; पारिकड्डुम अंगार छिड़ते हुए; निरुडुडु-छड़ें होकर; अरि पडकड्डु-जो फूटते थे, उन लिप्यारों की; ककळाल विद्युम-(हेतुमान) अपने हाथों से पचाश लेता । ७८८

हेतुमान उनको भी मारता, जो लिखल या अपने को भूलें रहते; उनको भी मारता, जो सवक रहते । आकाश में उड़नेवालों की भी मारता, पृथ्व चलनेवालों की भी, विद्युज्वलनक मध-मध काले व पायल-वाली राक्षस लिप्यार फूटते और वे अपने मार्ग में अंगारों बिखेरते हुए आते । हेतुमान उन लिप्यारों की पकड़कर पीस लेता । ७८८

शेरुम्	वण्डलु	मूळैयु	निणमुमाय्च्	चैरिय
नीरु	शेरुनैडुन्	वैरुवला	नीतुतमाय्	निरम्ब
आरु	पोल्वरुड्	गुरुदियव्	वनुमत्ता	ललैप्पुण्
डीरिल्	वाय्दोरु	मुमिळ्वदे	यीतुतदव्	विलङ्गे 789

मूळैयुम्-भेजा; निणमुम्-और चर्बी; चेरुम् वण्डलुमाय्-पंक और तलौछ बनकर; चैरिय-घने रूप से मिली रही; नीरु चेरु-धूल-मिली; नैडुम् तैरु अलाम्-लम्बी सड़कों में; नीतुतमाय् निरम्प-प्रवाहमय हो जाएँ, ऐसा; आरु पोल्वरुम्-नदियों के समान आनेवाला; कुरुति-रक्त; अ अनुमत्ताल्-उस हनुमान द्वारा; अलैप्पुण्डु-हिलाया जाकर; अ इलङ्कै-वह लंका; ईरु इल्-अनन्त; वाय् तौरुम्-मुखों से; उमिळ्वतु औतुतु-क़ै करता हो जैसे लगा । ७८६

राक्षसों के भेजे और मज्जे के पंक और तलौछ बने । उनका रक्त नदी बना । वह धूल-भरी लंका की सड़कों पर वह चली । वह रक्त-नदी हनुमान द्वारा हिल गयी और ऐसा लगा कि वह लंका नगर असंख्य मुखों से रक्त वमन कर रहा हो । ७८९

करुदि	वालिनड्	कैयितुम्	कडिहैयिर्	कट्टिच्
चुरुदि	येयन्न	मारुदि	मरत्तिडैत्	तुरप्प
निरुद	रैन्दिरत्	तिडुहरुम्	वामैत	नैरियक्
कुरुदि	शार्त्तेनप्	पाय्न्ददु	कुरैहड्ड	कूत्तै 790

चुरुदि अन्त-वेद ही सम; मारुति-मारुति के; करुति-सोचकर; वालितुम् कैयितुम्-पूँछ और हाथों से; कट्टिकैयिल्-ईछ के टुकड़ों को जैसे; कट्टि-बाँधकर; मरत्तु इटै तुरप्प-पेड़ों के बीच में फँकने पर; निरुत्-राक्षस; अन्तिरत्तु इटु-यन्त्रों में डाले गये; कुरुम्पु आम् अन्त-ईछों के समान; नैरिय-पिसे; कुरुति-(और) रक्त; चारु अन्त-इक्षुरस के समान; कुरै कटल्-गर्जनशील सागर रूपी; कूत्तै-कड़ाहे में; पाय्न्तु-वहकर भरा । ७९०

वेद-समान (स्थिर, अमर, अक्षय और हितकारी) हनुमान ने खूब ध्यान लगाकर पूँछ और हाथों से उन्हें बाँध लेकर इक्षुखण्डों को जैसे पेड़ों के मध्य फेंका । वे राक्षस यन्त्र (कोल्हू) में ग्रस्त (इक्षुखण्ड-जैसे) पिर गये । रस के समान रक्त जो निकला, वह शब्दायमान समुद्र रूपी कड़ाहे के अन्दर वहा । ७९०

अँडुत्त	रक्करै	यैरिदोरु	मवरुड	लैरुड्क्
कौडित्तिण्	माळिहै	यिडिन्दन्	मण्डवड्	गुलेन्द
तडक्कै	यानैहण्	मडिन्दन्	गोवुरन्	दहरुन्द
पिडिक्कु	लङ्गळुम्	वुरवियु	मविन्दन्	परिय 791

अरक्करै अँडुत्तु-राक्षसों को उठाकर; अँरि तौरुम्-ज्यों-ज्यों फेंकता; अवरु

शत्रुघातक बड़े गज-जैसे हनुमान ने राक्षसियों पर कृपा करके कुछ राक्षसों को, 'घर जाओ' कहकर उन-उनके घर को भेज दिया। कुछ राक्षस नवविवाहित थे। उनको उनकी वधुओं को प्रदान कर दिया। कुछ स्त्रियाँ रूठन की अवस्था में रहीं। उनके पति राक्षसों को उनके पास भेज दिया। ७९३

तरुर्वे	लामुडर्	रडमदि	लैलामुडर्	चडुकुक्त्
तुरुर्वे	लामुड	लुवरिये	लामुड	लुळळूर्क्
करुर्वे	लामुडर्	कावुर्मे	लामुड	लरक्कर्
तैरुर्वे	लामुड	रेशर्मे	लामुडर्	चिदरि 794

चितरि-बिखरकर; तरु अँलाम् उटल्-तरु-तरु पर शरीर (लाश); तट मतिल् अँलाम् उटल्-चौड़े प्राचीरों पर सर्वत्र लाशें; चतुकुक्त्तु उरु अँलाम् उटल्-चौराहों के स्थलों पर लाशें; उवरि अँलाम् उटल्-समुद्र भर लाशें; उळळूर् करु अँलाम्-उस नगर के गर्भ-स्थानों में लाशें; कावुर् अँलाम् उटल्-उद्यान-उद्यान में लाशें; अरक्कर् तैरु अँलाम्-राक्षसों की सभी वीथियों पर; उटल्-लाशे; तेचम् अँलाम् उटल्-देश भर में शरीर (लाशे)। ७९४

हनुमान के उछालने से पेड़-पेड़ पर लाशें पायी गयीं। विशाल प्राचीरों पर, चौराहों पर, समुद्र में, लंका नगर के गर्भस्थानों में, उद्यानों में, राक्षसों की सड़कों पर, क्यों देश में सर्वत्र लाशें हो गयीं। ७९४

ऊर्ते	लामुयिर्	कवरवुड्ड	गालत्तोयन्	दुलन्दान्
तान्ते	लारैयु	मारुदि	शाडुहै	तविरान्
मीन्ते	लामुयिर्	मेहु	मैलामुयिर्	मेन्मेल्
वान्ते	लामुयिर्	मर्हुम्	लामुयिर्	शुर्रि 795

ऊर्त् अँलाम्-शरीरों से; उयिर् कवरवु उरुम्-प्राणों को हर लेनेवाले; कालन्-यम; ओयन्तु उलन्तान्-मिचलाकर थक गया; मारुति-मारुति ने; अँलारैयुम्-सबको; तान्-तो; चाटुकै-आहत करना; तविरान्-नहीं छोड़ा; चुर्रि- (इसलिए) धूम-धूमकर; मीन् अँलाम् उयिर्-नक्षत्र-मण्डलों में जानें; मेकम् अँलाम् उयिर्-मेघों में उनके आत्मा; मेल् मेल् वान् अँलाम्-ऊपर आकाश के सारे लोकों में; उयिर्-आत्मा; मर्हुम् अँलाम्-उनके पार भी सर्वत्र आत्मा ही आत्मा। ७९५

शरीरों से प्राण हरनेवाला यम भी मिचलाकर थक गया। मारुति तो मारने से विरत नहीं हुआ। इस कारण से उनके जीवात्मा नक्षत्र-मण्डलों, मेघमण्डलों और ऊपर के सभी लोकों, क्यों उनके परे अन्य लोकों में भी सर्वत्र पाये गये। ७९५

आह	विच्चेरु	विळैवुरु	ममैदियि	लरक्कर्
मोह	मुर्रिन्	रामेन्	मुर्मुर्	मुत्तिन्दार्

हनुमान ने राक्षसों को अपनी पूँछ, हाथों और पैरों से जकड़कर दबाया तो उनके सिर पिसे और रत्न गिरकर छितरे। सुर काँपे। इस रीति से जो गिरकर मरे, वे राक्षस उन नागों की समता करते थे जो गरुड़ के अमृत ले आने के दिन उसका पीछा कर आये थे। तो हनुमान गरुड़ के समान रहा। ७९८

मान	मुद्गदन्	पहैयिनात्	मुनिवुर्गु	वळैन्द
मीनु	डैक्कड	लिडैयिनि	नुलहैला	मिडैन्द
ऊत्त	रुक्कोत्तु	तुहैक्कवु	मौळिविला	निरुदर
आनै	यौत्तन	राळरि	यौत्तन	तनुमन् 799

मातृम् उद्ग-गर्वीले; तत् पकैयिनात्-अपने शत्रु राक्षसों पर; मुनिवुर्गु-गुस्सा करके; वळैन्त-गोल; मीनु उटै-मकर-सहित; कटल् इटैयिनिन्-समुद्र-मध्यस्थ; उलकु अलाम्-लंका भर में; मिटैन्त-अपने पास जुड़े आये; ऊत्त अर-शत्रुओं के शरीरों को बिलकुल; कौत्तु तुकैक्कवुम्-रौंदकर मारता रहा; औळिवु इला-अक्षय रहे; निरुदर-राक्षस; आनै औत्तन-गज-सम रहे; अनुमन्-हनुमान; आळ अरि-वीर सिंह; औत्तन-के समान रहा। ७९९

गर्वीले शत्रु राक्षसों से गुस्सा करके हनुमान ने गोलाकार मकरालय मध्यस्थ लंका में अपने से भिड़नेवाले राक्षसों को रौंदकर मार दिया। पर अक्षय बने रहे राक्षस गजों के समान दिखे और हनुमान वीरता में बढ़े हुए सिंह के समान लगा। ७९९

अय्द	वैरुत्ति	वैरिन्दन्	वीरुत्तन्	विहलिल्
पैय्द	कुत्तिन्	पौदुत्तन्	तुळैत्तन्	पिळन्द
कौय्द	चुर्त्तिन्	पर्त्तिन्	कुडैन्दन्	पौलिन्द
अय्यन्	मर्प्पुम्	बुयत्तन्	पुण्णळप्	परिय 800

इकलिल्-युद्ध में; अय्यन्-चलाये गये; वैरुत्ति-आघात करनेवाले; वैरिन्दन्-फेंके गये; ईरुत्तन्-छिने; पैय्यन्-वरसाये गये; कुत्तिन्-चुसाये गये; पौदुत्तन्-घुसाये गये; तुळैत्तन्-भेदनेवाले; पिळन्त-चीरनेवाले; कौय्यन्-चुने गये; चुर्त्तिन्-लपेटे गये; पर्त्तिन्-पकड़े गये; कुडैन्तन्-कुरेदनेवाले; पौलिन्तन्-(हथियारों के व्रणों के साथ) शोभित; ऐय्यन्-सम्मान्य हनुमान के; मल् पेरुम् पुयत्तन्-अति बलवान कन्धों पर के; पुण्-व्रण; अळप्पु अरिय-अनगिनत थे। ८००

उस युद्ध में विविध हथियारों ने हनुमान पर चोट की। कुछ हथियार चलाये जानेवाले थे। कुछों से प्रहार किया जा सकता था। कुछ उछाले जानेवाले थे। कुछ खींचे जानेवाले थे। कुछ चुभनेवाले, कुछ गड़नेवाले, कुछ भेदनेवाले, कुछ चीरनेवाले और कुछ कुरेदनेवाले हथियार थे। उनसे सम्मान्य हनुमान के कन्धों पर जो व्रण हुए वे अनगिनत थे। ८००

[illegible]

पैयर्क्कुम्-पैतरा बदलता; तिचै तौह्म् पैयर्विन्-आठों दिशाओं में घूमने से; विण् मिचै उयर्क्कुम्-आकाश में उछलता; ओङ्कलिन्-पर्वत के समान; मण्णिन् वन्तु-भूमि पर आकर; उरलिन्-लगने से; अरक्कराय् उळ्ळार्-राक्षस जो थे; अयर्त्तु-थकित हो; वीळ्न्तत्तर्-गिरते; अळिन्तत्तर्-मरते; वैयर्त्तिलिन्- (हनुमान थका नहीं) स्वेदयुक्त नहीं हुआ; मिचै उयिर्त्तिलिन्-श्वास भी तेज न हुआ । ८०३

धर्मवीर हनुमान ने क्षिप्रगति से पैतरे बदले । इधर-उधर घूमा । दिशाओं में चलता, आकाश में उछलता । कभी पर्वत के समान भूमि पर आकर गिरता; तब राक्षस चोट खाकर शिथिल हो गिरते और मर जाते । तो भी न हनुमान के शरीर पर स्वेद बहा, न उसका श्वास तेज हुआ । ८०३

अञ्ज	लिल्कणक्	कडिन्दिल	मिरावण	तेव
नञ्ज	मुण्डव	रामेन	वनुमन्मे	नडन्दार्
तुञ्जि	नारल्ल	दियावरु	ममर्त्तौळिर्	रीलैवुर्
उञ्जि	तारिल्लै	यरक्करिल्	वीरर्म्	रियारो 804

इरावणन् एव-रावण के प्रेरित करने से; अनुमत् मेल्-हनुमान पर; नटन्तार्-जो चढ़ आये; अञ्चल् इल् कणक्कु-(उनका) अक्षय हिसाब; अडिन्तिलम्-हमने नहीं जाना; नञ्चम् उण्टवर् आम् अँत्त-विष खाये हुआ के समान; तुञ्चित्तार्-मरे; अल्लतु-(मरना) छोड़कर; यावरुम्-कोई भी; अमर् तौळिल्-युद्ध का काम; तौलैवु उड्ड-त्यागकर; अञ्चित्तार् इल्लै-डर में भागे नहीं; अरक्करिल् वीरर्-राक्षसों से बढ़कर वीर; यारे-कौन है । ८०४

रावण की आज्ञा से जो किकर लड़ने आये, उनकी अक्षय संख्या का हिसाब हमने नहीं जाना । पर इतना जानते हैं कि वे, विष खानेवाले जैसे मरते, वैसे ही मरे । पर युद्ध छोड़कर डर से नहीं भागे । उन राक्षसों से अधिक वीर कौन होंगे ? । ८०४

वन्द	किङ्गर	रेयैन्नु	मात्तिरै	मडिन्दार्
नन्द	वान्तत्तु	नायह	रोडित्तर्	नडुङ्गिप्
पिन्दु	कालित्तर्	कैयित्तर्	पैरुम्बयम्	बिडरिल्
उन्द	वाथिरम्	बिणक्कुवै	मेल्विळुन्	डुळैवार् 805

वन्त किङ्करर्-(हनुमान के साथ लड़ने) आगत राक्षस; एय् अँत्तुम् मात्तिरै-'ऐ' कहने की मात्रा में; मटिन्तार्-मरे; नन्त वान्तत्तु नायकर्-नन्दन वन के रक्षक; ओटित्तर्-दौड़े; नडुङ्कि-डर से; पिन्दु कालित्तर् कैयित्तर्-पिछड़नेवाले पैरों और हाथों के; पैरुम् पयम्-बड़े भय के; पिटरिल् उन्त-गले में बैठकर उकसाते; आयिरम् पिण कुवै मेल्-हजारों लाशों के ढेरों पर; विळुन्तु-गिरकर; उळैवार्-व्याकुल हुए । ८०५

वे विकर 'रे' कहेन के समय के अन्दर भूतक हो गये । अशोक वन के रथक पुरल थागे । डर से उनके पूरे नही उठ रहे थे और होय काप रहे थे । पीछे पड़ते थे । पर डर ने उनके गले के पीछे से उमकी टकली । वे सहल-सहल लीगों के डेर पर ठीकर खाकर गिरे और दुःखी हुए । ८०५

विदेवि	वैदेवि	विमिभर	पादोन्नम	विमभार
करद	लवविभार	पदद	कट्टेके	किन्नर
नरीय	विदेविकर	विशदो	नोकिन्नर	शलिपपर
अरशने	मरुव	रलकण	पुरशय	वसिन्नर

विदेवि उरुवर-शीघ्र जाकर; विमिभर-दुःख से मरकर; पादोन्नम-कुल था; विमभार-न कह सके; पदद-जी घटा; करललवविमभार-होयों के डेर से; कट्टेकेकिन्नर-समझावे; नरीय-विदेविकर-धरनी पर उड़ नही रहे पावे; विदेविकर-सभी दिशाओं में; नोकिन्नर-देहि दौडावे; शलिपपर-बबल होवे; अरव-र-राजा ने; अर-अलकण-उनके सकटपूर्ण स्थिति के; उर-बय-कहेन से हो (हारा हो); अरिन्नर-समझ लिया । ८०६

वे (जिनगा हो सके उननी) जलदी रावण के समुख आये । दुःख से मरपूर वे कुल बोल नही सके । अपने होयों से डेरारे करने लगे । उनके पूरे लड़खड़ा रहे थे और वे स्थिर रूप से खड़े नही हो पाये । सभी दिशाओं पर दौड़ दौडावे हुए बबल रहे । उनके कट से रावण ने जान लिया कि उनका अभिप्राय क्या है ? । ८०६

वैदेवि	विमिभर	पादोन्नम	विमभार
करद	लवविभार	पदद	कट्टेके
नरीय	विदेविकर	विशदो	नोकिन्नर
अरशने	मरुव	रलकण	पुरशय

विदेवि उरुवर-शीघ्र जाकर; विमिभर-दुःख से मरकर; पादोन्नम-कुल था; विमभार-न कह सके; पदद-जी घटा; करललवविमभार-होयों से; कट्टेकेकिन्नर-समझावे; नरीय-विदेविकर-धरनी पर उड़ नही रहे पावे; विदेविकर-सभी दिशाओं में; नोकिन्नर-देहि दौडावे; शलिपपर-बबल होवे; अरव-र-राजा ने; अर-अलकण-उनके सकटपूर्ण स्थिति के; उर-बय-कहेन से हो (हारा हो); अरिन्नर-समझ लिया । ८०७

रावण का शरीर गर्व से लन उठा । अपने दलों मुलों से आग उगलते हुए रावण ने पूछा कि क्या वे आज मारे जाकर मिते ? या मेरी आज्ञा की अवज्ञा करके कुछ से भाग गये ? या कुछ डेरकर अपमान से मेरी उधेधा करके भाग गये ? क्या हो गया है ? बलाघी । ८०७

बलनदलके
कौण्डिन
कौण्डिन
कौण्डिन
कौण्डिन
कौण्डिन

पुलन्देरि
कुलङ्गळि

पौय्क्करि
नविन्दनर्

पुहलुम्
कुरङ्गि

बुत्तुगणार्
नालैन्डार् 808

चलम्-क्रोध; तलै कौण्टनराय-सिर पर चढ़ गया, ऐसी; तन्मैयार्-स्थिति में रहे वे; अलन्तिलर्-दुखी हो भागे नहीं; चैह कळत्तु-पुढभूमि से; अञ्चित्तार् अलर्-डरकर नहीं भागे; पुलम् तैरि-मन के जाने; पौय् करि-झूठी गवाही; पुक्लुम्-कहनेवाले (देनेवाले); पुत्तुगणार् कुलङ्कळित्-नीच लोगों के कुलों के समान; कुरङ्कित्तार्-मर्कट द्वारा; अविन्तत्तर्-मृतक हुए; अँन्डार्-कहा (रक्षकों ने) । ८०८

नन्दनवन-रक्षकों ने उत्तर दिया । क्रोध से भरे वे वीर किंकर कण्ट से दुखी हो नहीं भागे । न समरांगन से भय खाकर भागे । पर वे, जान-बूझकर झूठी गवाही देनेवाले नीच लोगों के कुल के समान मर्कट से मारे जाकर मिटे । रक्षकों ने कहा । ८०८

एवलि
तेवरै
यावदेत्तु
मुवहै

तैय्दित्त
नोक्किता
इरिन्दिलिर्
पुलहैयुम्

रिरुन्द
नाणुञ्ज
पोलु
विळुङ्ग

वैण्डिशैत्
जिन्दैयान्
मालैन्डान्
मूळ्हिन्डान् 809

मूवकै उलकैयुम्-त्रिविध लोकों को; विळुङ्क-निगलने को जैसे; मूळ्किन्डान्-कोपाक्रान्त होकर; नाणुम् चिन्तैयान्-लज्जित-मन (रावण ने); एवलित् अँयत्तिर् इरुन्त-सेवार्थ आकर स्थित; अँण् तिचै-आठों दिशाओं के पालक; तेवरै-देवताओं को; नोक्किता-देखकर; यावतु अँन्ड-क्या हुआ यह; अरिन्तिलिर् पोलुम्-नहीं जानते शायद; अँन्डान्-ऐसा डाँटकर प्रश्न किया । ८०९

यह सुनकर रावण का कोप इतना तीव्र उठ आया कि ऐसा लगा कि वह तीनों लोको को निगल लेगा । उसे किंचित लाज भी आयी । रावण ने पास सेवार्थ आगत दिग्पालक देवताओं को देखकर उनसे डाँटकर प्रश्न किया कि तुम लोग नहीं जानते कि क्या हुआ ? । ८०९

मीट्टव
तोट्टल
वीट्टिय
केट्टदो

रुरैत्तिलर्
रिणर्मलर्त्तु
दरक्करै
कण्डदो

पयत्तिन्
तौङ्गन्
यैन्नुम्
किळत्तु

विम्मुवार्
मोलियान्
वैव्वुरै
वीरैन्डान् 810

अवर्-वे; पयत्तिन् विम्मुवार्-भय में पड़कर; मीट्टु उरैत्तिलर्-उत्तर नहीं दे रहे थे; तोट्टु अलर्-दल-विकच; इणर् मलर्-गुच्छों में रहे; तौङ्कल्-पुष्पों की माला से अलंकृत; मोलियान्-किरीटधारी (रावण) ने; वीट्टियतु अरक्करै-निपाता राक्षसों को (एक वानर ने); अँन्नुम्-ऐसा; वैम् उरै-दिल जलानेवाला समाचार; केट्टदो-सुनी हुई बात है; कण्टदो-(आँख) देखी हुई; किळत्तुवीर्-साफ़ कही; अँन्डान्-कहा । ८१०

अंशद्वयम्-(उपके पुरा) कहे पर; अरुकरे वेतवम्-राधाराज ने; नीकेकि-देवकर; कर्मिउ-कोपप्रकाशक; पवळम् धैववाप-प्रवालावर की; श्रुति कुके अजैत-दाव से, धैसकर दवाए; कवैव-पुरा कटक; आनंद-कुण्डी; चरु आटाऊ कहेलाई-कहे के लिए न पार; चरुधर्म-शरीर और; विठ्ठल-आवां के; चप-चाल जेहे; विनय-पाव स्थित; वाठ अरुकरे लम्से-लवदारवादी राधारा की; नैवे वर-लपरी देव नक खै; नीकेकुम् काली-चव देवा, लव । ८१२

ಖರೀದಿ	ಮರಕತ	ವೀರ	ನೈರಿದೀ	ವಾಡ	ನೋಕಿಕ
ಕವೀಶ್ವರ	ಪವಡ	ವೀರ	ಪ್ರಸಿದ್ಧ	ಕಡೆನಕ	ಕವೀಶ್ವರ
ಅನೇಕ	ಪಾಡ	ಕವೀಶ್ವರ	ವೀರ	ವೀರ	ವೀರ
ವೀರ	ಮರಕತ	ವೀರ	ವೀರ	ವೀರ	ವೀರ

812

वर्षाभागे में उत्तर दिशा कि हमने एक और स्थल होकर यह स्थल देखा था। खवख लहरीं बाले समुद्र के समान लगे सेना घेर गयी थी, उसको उस वानर ने मण्डलाकार घेमकर एक बड़े बड़े से मारकर जनेके प्राण हर लिये। और भी बड़े वानर जोड़े जानेवाला नहीं लगता। ५१

अहिं पुटं निजं-एक ओर छं रक्षकर; कर्णकळाल-अपनी अर्धा से; कर्णदन्त-देहा; ब्रह्म निरं कदल-रवण परांगिवाल सागर; अर्ध-के समान; वल्लभ-जी घर आयी; वैद्य-उस सेना को; मण्डलम निरिन्धु-मण्डलकार धूमकर; अहिं मरुतिवाल-एक पक्ष से; उधर उधर-उत्तरी जान उसने वा ली; अ कुटुम्ब-बड़े वापर; इति-अब; अहिंछव अहिंछ-छां जाने का नहीं दिखाना; अहंरार-कहा (उमर शर्मा ने) । २११

कण्ठन	सूक्ति	निर्गुण	कण्ठगजान	शैव्य	सविप्र	दत्तमुखा	811
कण्ठन	कलन	वर्णन	कण्ठगजान	शैव्य	सविप्र	दत्तमुखा	
कण्ठन	कलन	वर्णन	कण्ठगजान	शैव्य	सविप्र	दत्तमुखा	
कण्ठन	कलन	वर्णन	कण्ठगजान	शैव्य	सविप्र	दत्तमुखा	

018 (හැප් ලැබ්) ණය 062

क्रोध का प्रकटन हो रहा था । उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं रह गया था । अपनी आँखों और शरीर को लाल बनाते हुए जब वह अपने पास खड़े रहे तलवारधारी राक्षसों को बहुत देर तक घूरता रहा— । ८१२

कूम्बित कैयि तिन्र कुन्निवर् कुववुत् तिण्डोळ्
पाम्बिवर् तरुहट् चम्बु मालियेन् बानैप् पारा
वाम्बरित् तानै योडु वळैत्तदत् वलियै माड्डित्
ताम्बिनिर् पड्डित् तन्देन् मत्तच्चित्तन् दणित्ति येन्डात् 813

कूम्पित कैयिन्-हाथ जोड़कर; तिन्र-जो खड़ा रहा, उस; कुन्निवर्-पर्वत-सम; कुववु-पुष्ट; तिण् तोळ्-कठोर कन्धों वाले; पाम्पु इवर्-सर्प के समान; तरुकण्-निडर; चम्पुमालि अँन्पातै पारा-जम्बुमाली को देखकर; वाम् परि तातैयोडु-सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के साथ जाकर; वळैत्तु-उसे घेरकर; अतन् वलियै माड्डि-उसके बल को व्यर्थ करके; ताम्पिनिल् पड्डि-रस्सी से बाँध; तन्तु-(लाकर) मुझे देकर; अँन् मत्त चित्तम्-मेरे मन का क्रोध; तणित्ति-शान्त करो; अँन्डात्-कहा । ८१३

तब जम्बुमाली पर उसकी दृष्टि गयी । वह हाथ जोड़े खड़ा था । उसके कन्धे पर्वत-सम पुष्ट और कठोर थे । वह सर्प-जैसा निडर था । रावण ने उसे आज्ञा दी कि अश्व-सेना लेकर जाओ । उस वानर के बल को चूर कर पकड़ लाओ और मुझे सौंप दो; तभी मेरा कोप शान्त होगा । ८१३

आयवन् वणङ्गि येय वळप्पर मरक्कर् मुन्ते
नीयिदु मुडित्ति येन्नु नेरन्दतै नितैवि नैण्णि
एयितै येन्तप् पेरडा लैत्तिल्पा रुयर्न्दा रेन्ताप्
पोयिन तिलङ्गै वेन्दन् पोर्च्चित्तम् बोव दौप्पान् 814

आयवन्-उस जम्बुमाली ने; वणङ्कि-नमस्कार करके; ऐय-प्रभु; अळप्पु अरुम्-अनगिनत; अरक्कर्-राक्षसों के; मुन्ते-सामने; नितैविन् अँण्णि-स्मरण करके; नी इतु मुडित्ति-तुम इसे साध लो; अँन्नु-ऐसा; नेरन्दतै-एयितै-आज्ञा दी (आपने); अँन्तप् पेरडाल्-यह भाग्य प्राप्त हुआ तो; अँन्तिन् यार् उयर्न्तार्-मुझसे कौन बड़े है; अँन्ता-कहकर; इलङ्क् वेन्तन्-लंकाधिपति का; पोर् चित्तम्-युद्धरोष ही; पोवतु औप्पान्-निकलकर जाता हो जैसे; पोयितन्-चला । ८१४

जम्बुमाली ने नमस्कार करके रावण से विनय के साथ निवेदन किया कि प्रभु ! असंख्यक राक्षसों के रहते आपने मुझे खूब सोच-समझकर चुना और आज्ञा सुनायी कि यह काम साधो । मेरा ऐसा भाग्य रहा तो कौन मुझसे बड़ा हो सकेगा ? कहकर वह ऐसा जाने लगा, मानो रावण का क्रोध ही साकार बन जा रहा हो । ८१४

कार्श्रितै मरुङ्गिर् कट्टिक् काल्वहुत् तुयिरुङ् गूट्टिक्
 कूर्श्रितै यियरुङ् यन्त कुलपरि कुळुवक् कुन्श्रित्
 तूर्श्रित् नैळुप्पि याण्डुत् तौहत्तत्त शुळल्पेङ् गण्ण
 वेरुश्रित्त्त पुलिये र्श्रन्त विरिन्ददु पदादि यीट्टम् 817

मरुङ्गिल्-पास के; कार्श्रितै कट्टि-पवन को बाँधकर; काल् वकुत्तु-उसके चार पैर बनाकर; उयिरुम् कूट्टि-जीवन्त बनाकर; कूर्श्रितै इयर्श्रि अन्त-यम को सृष्ट किया गया हो, ऐसा; कुल परि-श्रेष्ठ जाति के अश्वों के; कुळुव-एकत्रित होकर आते; कुन्श्रित्-पर्वतों से; तूर्श्रित्तिन्-व झाड़ियों से; नैळुप्पि-उठाकर; आण्डु तौकुत्तत्त-वहाँ (सेना में) मिला दिये गये जो; चुळल्-चंचल; पैम् कण्ण-रंगीन आँखों वाले; वेरु इत्त-विविध जाति के; पुलि एङ् अन्त-नर व्याघ्र के समान; पताति ईट्टम्-पदाति वीरों के दल; विरिन्तु-बहुत विस्तृत रहे। ८१७

श्रेष्ठ जाति के अश्व भी साथ गये। पास के पवन को एकत्र करके उसके चार पैर लगाकर और उसे जीवन्त बनाकर यम-सा बनाया गया हो, ऐसा था एक-एक अश्व ! पदाति वीर गये। पर्वतों की गुफाओं में से और झाड़ियों से उठाकर लाये विविध, विवृत्तनयन व्याघ्र-समूह के समान थे वे वीर। ८१७

तोमर मुलक्कै कूर्वाळ् शुडर्मळु कुलिशन् दोट्टि
 तामरन् दिन्ऱ कूर्वेल् चक्कर मेळुक्कळ् चापम्
 कामरन् दण्डु पिण्डि कप्पणङ् गाल पाशम्
 मामरम् वलयम् वैङ्गोन् मुदलिय वयङ्ग मादो 818

तोमरम्-तोमर; उलक्कै-मूसल; कूर् वाळ्-तेज तलवारें; चुडर् मळु-उज्ज्वल परशु; कुलिचम्-कुलिश; तोट्टि-अंकुश; ताम् अरम् तित्ऱ-रेती से पैनाये गये; कूर् वेल्-तीक्ष्ण भाले; चक्करम्-चक्रायुध; मेळुक्कळ्-लौहदण्ड; चापम्-धनु; कामरम्-'कामर'; तण्ट-गदाएँ; पिण्टि-भिन्दिपाल; कप्पणम्-'कप्पण'; काल पाचम्-कालपाश; मा मरम्-बड़े पेड़; वलयम्-छल्ले; वैम् कोल्-भयंकर बाण; मुतलिय-आदि; वयङ्क-रहे। ८१८

उनके पास तोमर, मूसल, तेज तलवारें, ज्वलन्त परशु, कुलिश, अंकुश, रेती से पैनाये गये भाले, चक्रायुध, लौहदण्ड, चाप, 'कामर' नामक हथियार, दण्ड, भिन्दिपाल, 'कप्पण' नामक काँटेदार गदाएँ, कालपाश, बड़े-बड़े तरु, वलय और भयंकर शर आदि विविध हथियार विद्यमान रहे। ८१८

अत्तिय वयिल्वेल् कुन्द मेळुमुद लितैय वेन्दिक्
 कुत्तिय तिलैप्प मीदिर् कुळुविन् मळैमाक् कौण्डल्
 पोत्तुहळ् पौरुवि तन्तोर् शौरिवत्त पोव पोलच्
 चित्तिरप् पदाहै यीट्टन् दिशैतौङ्ग जैरिव चैल्ल 819

अनन्य वेद-उपनिषद् से ना के; सुवन-वचन से; आर कलि वलक के आग-सुवचनविन लंका की; पौन नकर-द्वार-गरी; नकर-गु-जार्न होकर; आरेवु श्रुत-उपसे गीर के साय उठो; गुल-धन; पृष्ठिक-उठो आर; पौरप-ल-या; मिने नकु-प्रकाशमय; किरिकळु-धुवने-समी गिरिया; सुविने विठ्ठल-सु-से (या सु-से) प्रकाशमान; गीर-विष्णु; गीर नकर-वाचो नगर; पुरव

अल्लाम्-और अन्य सभी; तुरक्कम् अन्न-स्वर्ण के समान (स्वर्णमय); पौलित्त-
चमके । ८२१

ऐसे उसकी सेना जब चली तब समुद्रावृत स्वर्णनगरी लंका पिसी
और शब्द के साथ धूल जो उठी वह सब जगह छा गयी । इसलिए सारी
प्रभामय गिरियाँ (स्वर्णमय) मेरु के समान लगीं और प्राचीन वह नगर
और अन्य स्थल व पदार्थ स्वर्ण के समान बन गये । ८२१

आयिर	मैन्दौ	डैन्दा	माळियन्	दडन्दे	रततेर्क्
केयित	विरट्टि	यानै	यातैयि	निरट्टि	पाय्मा
पोयित	पदादि	शौत्त	पुरविधि	निरट्टि	पोलाम्
तीयवन्	इडन्देर्	शुर्इत्	तेर्इन्च	चैन्	शैत् 822

तीयवन्-क्रूर (जम्बुमाली) के; तटम् तेर् चूर्इ-विशाल रथ को घेरकर;
तेर्इ अन्न-क्षिप्रगति से; चैन् चैत्-जो गयी उस सेना में; ऐन्तोडु ऐन्तु आयिरम्-
पाँच और पाँच (= दस) सहस्र; आळि अम् तटम् तेर् आम्-पहियेदार सुन्दर बड़े रथ
थे; अ तेर्क्कु-उन रथों के; इरट्टि एयिन-दुगुने रहे; यातै-गज; यातैयित्
इरट्टि-गजों के दुगुने; पाय् मा-अश्व; पोयित पताति-जो पदाति वीर चले; चौत्त
पुरविधित्-उक्त अश्वों के; इरट्टि पोल् आम्-दुगुने हैं । ८२२

क्रूर जम्बुमाली के विशाल रथ को घेरे बड़ी सेना गयी । उसमें
दस सहस्र पहियोंदार रथ, उनके दुगुने गज और उनके दुगुने अश्व थे ।
पदाति वीर उनके दुगुने थे । ८२२

विन्मरैक्	किळवर्	नाना	विज्जैयर्	वरत्तित्	मिक्कार्
वन्मडक्	कण्ण	राइल्	वरम्बिला	वधिरत्	तोळार्
तौन्मडक्	कुलत्तर्	तूणि	तूक्किय	पुत्तर्	मार्वाम्
कन्मरैत्	तौळिरुज्	जैम्बौर्	कवशत्तर्	कडुन्दे	राळर् 823

कटुम् तेराळर्-वेगवान रथी; विल् मरै किळवर्-धनुर्विद्या-विशारद; नाना
विज्जैयर्-विविध कलाविद; वरत्तित् मिक्कार्-बड़े-बड़े वरों के धनी; वन् मड
कण्णर्-कठोर वीरता-प्रदर्शक नेत्रों वाले; वरम्पु इला-असौम; आइल्-शक्तिमान;
वधिर तोळार्-वज्रस्कन्ध; तौल् मड कुलत्तर्-प्राचीन वीरकुल में जनमे; तूणि
तूक्किय-तूणीर-बन्धी; पुत्तर्-पीठ वाले; मार्वु आम् कल्-वक्ष रूपी गिरि को;
मडैत्तु-छिपाते हुए; औळिरुम्-शोभायमान; चैम् पौन् कवचत्तर्-लाल स्वर्ण-
कवचधारी । ८२३

रथी वीर तीव्र गति में रथ चला सकनेवाले थे । उन्हें धनुर्विद्या
के अलावा अन्य नाना विद्याएँ भी आती थी । उन्हें अनेक वर प्राप्त थे ।
उनकी आँखें वीरता-प्रदर्शक थीं और कन्धे वज्र-सम सुदृढ़ । वे प्राचीन वीरों
के कुल में जनमे थे । पीठ पर तूणीर बाँधकर और वक्ष पर लाल स्वर्ण-
कवच पहने (जा रहे) थे । ८२३

अथर्ववेदा के वीर अपनी गन्ध दिशाओं और अथर्वों की अठारह विध गतियों का, और खूब सोच-समझकर युद्धायुधों की चलावे का अपार ज्ञान रखनेवाले विद्वान् थे । वे भी रथों वीरों और गजसेना के वीरों के समान प्रकार से अपने ही धटियार-सहित हार से अलंकृत अथर्वों के समान अपने मन के लपककर चलते आगे बढ़ते गये । ८२५

अन्नैडुन् दानै शुर्श्र वमररै यच्चञ् जुर्श्रप्
 पौन्नैडुन् देरिर् पोत्तान् पौरुप्पिडै नैरुप्पिर् पौङ्गित्
 तन्नैडुङ् गण्गळ् कान्दत् तमनियक् कवश मार्विन्
 मिन्नड वैयिलुम् वीश विल्लिडु मैयिर्रु वीरन् 826

विल् इटुम्-प्रकाश निकालनेवाले; अयिर्रु वीरन्-दंतोरा वीर; पौरुप्पु इटै-
 पर्वतमध्य; नैरुप्पिल् पौङ्कि-आग के समान भभककर; तन् नैटुम् कण्कळ्-अपनी
 दीर्घ आँखों को; कान्त-तेज से भरते हुए; तमनिय कवचम्-स्वर्ण-कवच के; मार्विन्
 मिन्नड-वक्ष पर चमकते; वैयिलुम् वीच-धूप के समान प्रकाश भी छिटकते; अ
 नैटुम् तान्नै चुर्श्र-(चतुर्विधा) सेना के घेरते आते; अमररै-देवों को; अच्चम् चुर्श्र-भय
 के घेरते; पौन् नैटुम् तेरिल्-स्वर्ण के बड़े रथ में; पोत्तान्-गया (जम्बुमाली) । ८२६

उज्ज्वल दाँत वाला जम्बुमाली पर्वत-मध्य उठती आग के समान अपनी
 आँखों से आग उगलते हुए बड़े रथ पर सवार हो गया । उसके वक्ष पर
 स्वर्ण-कवच चमक रहा था । वह कवच गर्मी भी उगल रहा था । उसके
 चारों ओर वह बड़ी सेना जा रही थी । इसका साज देखकर देवतागण
 दहशत खा रहे थे । ८२६

नन्दन् वनत्तु णिन्ऱ नायहन् रुदन् शान्तुम्
 वन्दिल ररक्क रैन्नु मत्तत्तिन्नन् वळियै नोक्किच्
 चन्दिर्न् मुदल वान मीनैलान् दळुव निन्ऱ
 इन्दिर् तन्नुविर् शोनरुन् दोरण मिवर्न्नु निन्ऱान् 827

ननुत्त वत्तत्तुळ् निन्ऱ-नन्दन वन में जो खड़ा रहा; नायकन् तूतन् तान्तुम्-
 नायक श्रीराम का दूत वह हनुमान भी; वन्दिलर् अरक्कर्-नहीं आये राक्षस;
 अँत्तुम् मत्तत्तिन्नन्-ऐसा सोचनेवाले मन का होकर; वळियै नोक्कि-रास्ता देखते
 हुए; चन्तिर्न्-चन्द्र के; मुदलवात मीन् अँलाम्-आदि सभी नक्षत्रों;
 तळुव निन्ऱ-के साथ स्थित; इन्तिर् तन्नुविल्-इन्द्रधनुष के समान; तोन्ऱुम्-
 दिखनेवाले; तोरणम्-तोरण पर; इवर्न्नु निन्ऱान्-चढ़कर खड़ा रहा । ८२७

उधर नन्दनवन में महावीर हनुमान बैठे हुए यह सोच रहा था कि
 अभी कोई वीर क्यों लड़ने नहीं आया ? वह एक तोरण पर चढ़ा बैठा वह
 तोरण उस इन्द्रधनुष के समान था, जो चन्द्र और अन्य नक्षत्रों के मध्य; शोभ
 रहा हो । ८२७

केळिर् मणियुम् वौन्नुम् विशुम्बिरुळ् किळित्तु नोक्कुम्
 ऊळिरुङ् गदिर्हळुडुन् दोरणत् तुम्बर् मेलान्
 शूळिरुङ् गदिर्हळुल्लान् दौक्किडच् चुडरुञ् जोदि
 आळियि तडुवद् टोन्ऱु मरुक्कने यन्नैय नान्तान् 828

केळ् इह मणियुम्-रंगीन रत्न; पौन्नुम्-और स्वर्ण; विचुम्पु इरुळ्-आकाश के

निचं कण्ठं निरुद्धं-निश्यासं मे वां छुटं रहैः । वेद्यम्-उप गतो कः । नृद्वयं कण्ठं चक्रेच्छु-अधिक सदमनता मे उपपद्य गतवर्कः । नीङ्क-दूर करतं द्रुपः । त्वं निचं नमस्ते-दक्षिण दिशा कं देवता यम के भाः । पुष्पकं औष-दहनकरः । उच्छ्वसं विपन-मन के विपणं देवैः । गजिन-आकाश मेः । पृथुर्वज्र इव-अविनश्यतः । गीतकम् औलाम्-सभा गमयः । पृ औष चतिर-कनो के समान वृ पडैः । पर्वमं कर्तव्यम् । पिपक-भूमि और पर्वत दलक गये । वेतं पुष्पकं चर-समुद्र मय गमयः । निचं कर्तवितान- (इमं सचको देवो वेतं द्रुप) द्रुपमान मे कण्ठ ठोके । ८३०

हनुमान ने अपने कन्धे ठोके, जिससे दिग्गजों के मदमत्तता से उत्पन्न गर्व चूर हो गये। दक्षिणी दिशा के पालक यम का भी मन दहल उठा। आकाश के अविनश्वर नक्षत्र सभी फूलों के समान गिर गये। भूमि और पर्वत दलक गये। समुद्र विलोडित हो गये। ८३०

अव्वळि यरक्क रँल्ला मलैन्डुड् गडलि नारत्तार्
 शैव्वळिच् चेर लार्रार् पिणप्पेरुड् गुन्नन् दैर्ऱि
 वैव्वळिक् कुरुदि वैळ्ळम् बुडैमिडैन् दुयर्न्दु वीड्ग
 अँव्वळिच् चेरु मँन्ऱार् तमरुडम् बिडरि वीळ्वार् 831

अ वळि-तब; अरक्कर् अँल्लाम्-सभी राक्षसों ने; अलै नैटुम् कटलिन्-तरंगायमान विशाल सागर के समान; आरत्तार्-नारे निकाले; चैम् वळि-सीधे मार्ग से; चेरल् आर्रार्-जा नहीं सके; पिण पेरुम् कुन्नम्-बड़े शव-पर्वतों से; तैर्ऱि-ठोकर खाकर; वैम् वळि-भयंकर मार्ग में; कुरुदि वैळ्ळम्-(आया) रक्तप्रवाह; पुटै मिटैन्तु-पार्श्व में अधिक हो; उयर्न्तु वीड्क-बड़ा और ऊँचा उठा; अँ वळि चेरुम्-किस मार्ग से जाँएँ; अँन्ऱार्-इसमें भ्रम करते हुए; तमर्-अपनों के; उटम्पु इडरि-शवों से ठोकर खाकर; वीळ्वार्-गिरे। ८३१

तब सभी राक्षसों ने मिलकर तरंगायमान विशाल समुद्र के समान नर्दन किया। वे सीधे मार्ग से जा नहीं सके, क्योंकि मार्ग में शवों के पर्वत-सम ढेर पड़े थे। उनसे ठोकर खा गये। पार्श्व में और सामने भयंकर मार्ग में रक्त बहा, बड़ा और भयंकर बाढ़ बना। किस तरह समराजिर जायेंगे? इस संशयजनित हड़बड़ाहट में वे अपने ही लोगों के शवों से ठोकर खाकर गिरते जा रहे थे। ८३१

आण्डुनिन् इरक्कन् वैव्वे इणिवहुत् तत्तिहन् दत्तै
 मूण्डिरु पुडैयु मुत्तु मुरैमुरै मुडुह वैवित्
 तूण्डिनन् रात्तुन् दिण्डेर् तोरणत् तिरुन्द शूरन्
 वेण्डिय दैदिर्न्द दैत्तन् वीड्गित्तन् विशयत् तिण्डोळ् 832

अरक्कन्-राक्षस जम्बुमाली ने; आण्डु निन्-वहाँ से; अत्तिकम् तत्तै-सेना को; वैव्वे इणिवहुत्-अलग-अलग पलटनों में विभाजित करके; इर पुटैयुम्-दोनों पार्श्वों में; मुत्तुम्-और सामने; मूण्डु-कूच कर; मुरै मुरै मुटुक-दलों में जाने की; एवि-आज्ञा देकर; रात्तुम्-स्वयं; तिण् तेर् तूण्डित्तन्-अपना प्रवल रथ चलाया; तोरणत्तु इरुत्त-तोरण पर जो रहा; चूरन्-उस शूर ने; वेण्डियत् अँतिर्न्तु-मन-वाञ्छित मिल गया; अँत्त-समझकर; विचय तिण् तोळ्-विजयी सुदृढ़ कन्धों को; वीड्कित्तन्-फुला दिया। ८३२

जम्बुमाली ने वहाँ अपनी सेना को पलटनों में बाँटकर व्यूह बना लिये। उसके दोनों पार्श्वों में आगे और पीछे सेना के भाग आने लगे। वह इनके मध्य अपना सवल रथ चलाता गया। तोरणद्वार पर जो बैठा

विचार से उसके कानों में गूँगुनी आने लगी।

[illegible]

आजिउपने-बकपाटी (आजिउपने के अवतार श्रीराम) का; अठव दस आठईरने-
अपार बलवान; ऐपनेम-सम्मान्य (हुँसमान) भी; भूप चरैर दिवकफिकने-घी डालकर
बनये गये दीप के; बौद्धम-समान दिवनेबलि; बौद्धिये-मान को हो; बौद्धि
आक-अग्रणी सेना बजाकर; भायु मयिर-गरीर के बालों के हो; सेने पौडक-सेना
के बीरों के समान छड़े रहलें; भुरग अश्व-सबल; उतिकर बाउ-मल खरी ललाचारे;
मोपेन ककड़-जिनसे लगी थी, उन होयों को; ककड़क-पायव की सेनाए बजाकर;
तिर बाले-मुहर पूछ को; कड़े कड़े आक-पिछले भाग को सेना बजाकर; अश्वनेव
निअरने-सपुर्ण छुट्टे बना छडा रहल। ८३३

द्वुमान की सेना के व्यूहों की विविधता देखिए । यक्यगरी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) के उस अविचली महेवीर दून का घाँव की दीप की ज्वाला के समान जलजल आल है आगे की पलटन बना ।) उसके शरीर के घने बाल ही सेना के वीर थे । सुदृढ़ नाखून रुढ़ी बलवासे से युक्त उसके दोनों हाथ दोनों ओर की पलटनें बन । उसका मनोरम भागल ही पीछे आगेवली सेना बनी । ८३३

[illegible]

बापूतकळ-गुरुरिपा और, बाबू वळकळ विपम-आर सक्त गेव वज उठे;
 बरि विबू विबू-सबाध धु के डोरे की टंकार उठो; साया पपूतकळ-परीषाँ का
 निरनर कलरव; आरपु अटप-उव वर से सुगयी दिपा; मूरि पालिपम-
 बापूदर अनेक बाबू; कुपूर-गोद कर उठे; बापूत कीळ-बेप-भरे; बाळ अरककर-
 लबावरावरा रास; बापूतम चुककिबर-कोलोमन होकर; बापूतकळ पाल-धुप-
 के सपाय; आळकळ बीच-प्रकाश निकाले धुप; पटकळ पउरि-होपूयार पकककर;
 विरत-ककले धुप; बापूत सेल-महोवीर हनुमान पर; कटिह विरदारे-नेवाँ से
 सलाय । ८३४

तब प्रेरेहिया और प्रबल आँख बज रहे । धनु की टंकारें उठी । पक्षियों का कलरव उठने लगा । विविध वाद्य धुमर उठे । ह्वण्ण

राक्षसों ने कोपाक्रान्त होकर धूप के समान गरम प्रकाश छितराते हुए जानेवाले हथियार लेकर महावीर पर बरसा दिये । ८३४

करुङ्गळ	लरक्करतम्	बडैक्कलड्	गरत्ताल्
पैरुङ्गड	लुरप्पुडैत्	तिळुत्तुहप्	पिशैन्दात्
विरिन्दत्	पौरिक्कुल	नैरुप्पेन	वैहुण्डाण्
डिरुन्दवत्	किडन्दौ	रैळुत्तरिन्	दंडुत्तात् 835

आण्डु इरुन्तवत्—वहाँ जो रहा; करुम् कळल्—बड़ी-बड़ी पायलधारी; अरक्कर्तम् पटैक्कलम्—राक्षसों के हथियारों को; पैरुम् कटल् उर—बड़े सागर में चले जायें, ऐसा; करत्ताल्—अपने हाथों से; पुटैत्तु—पीटकर; इळुत्तु—तोड़कर; उक् पिचैन्तात्—(हनुमान ने) चूर करते हुए पीस दिया; विरिन्तत्—जो फँलती है; पौरि कुल नैरुप्पु अँत—अंगारों की राशियों के साथ आग के समान; वैकुण्डु—गुस्सा करके; किटन्तु ओर् अँळु—वहाँ जो पड़ा रहा, उस लौहदण्ड को; तैरिन्तु—चुनकर; अँडुत्तात्—लिया । ८३५

महावीर ने, जो वहाँ बैठा था, उन बड़ी वीरपायल-धारी राक्षसों के हथियारों को पकड़ा, तोड़ा, पीसा और समुद्र में जा गिरें, ऐसा उछाल दिया । तब अंगारे-मध्य आग के समान (या “पौरि” के भ्रमर और अंगारे दो अर्थ होने से—भ्रमरों को उड़ाते हुए) क्रुद्ध बने उसने वहाँ पड़े रहे एक लौहदण्ड को चुन लिया । ८३५

इरुन्दन	नैळुन्दत्	तिळिन्दत्	नुयर्न्दात्
तिरिन्दत्	पुरिन्दन	तैन्नत्ति	तैरियार्
विरिन्दवर्	कुविन्दवर्	विलङ्गितर्	कलन्दार्
पौरुन्दितर्	नैरुङ्गितर्	कळम्बडप्	पुडैत्तात् 836

इरुन्तत्—जो बैठा रहा; अँळुन्तत्—उठा; इळिन्तत्—उतरा; उयर्न्तात्—तना; तिरिन्तत्—घूमा; पुरिन्तत्—युद्ध किया; अँत—ऐसा; नत्ति तैरियार्—ठीक जो जान नहीं सके; विरिन्तवर्—ऐसा फँले; कुविन्तवर्—एकत्र हुए; विलङ्गितर्—अलग हुए; कलन्तार्—मिले; पौरुन्तितर्—युद्ध में लगे रहे; नैरुङ्गितर्—सटे खड़े रहे; कळम् पट—(उन सभी को) खेत रहने देकर; पुडैत्तात्—पीटकर मार दिया । ८३६

जो बैठा रहा वह उठा, नीचे उतरा और तनकर सीधा हुआ । वह कहाँ रहता, कहाँ घूमता और युद्ध करता है, यह न जानते हुए राक्षस सर्वत्र फैले, इकट्ठे हुए और हटे और सटे । युद्ध में लगे और पास आ जुटे । उन सबको हनुमान ने खूब आहत कर खेत रहने दिया । ८३६

अँरिन्दत्	वैय्दन	विडिक्कुमुर्	मैन्तच्
चैरिन्दत्	पडैक्कल	मिडक्कैयिर्	चिदैत्तात्

मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन
837 मलककपिप मलककपिप मलककपिप मलककपिप मलककपिप

अतिरतन-जी फके गये; अतिरतन-जी चलाये गये; इतिरतन-उरुम अतिर-
दंडेवाली अगति के समान; अतिरतन-मई जो रहे; पट्टककम-उम इतिरतन की;
इत कपिप-बाय इत्य से; विवेतेवाले-विष-मिष कर दिया; वल कपिप मलकक-
बाय इत्य से गुह करन पर; उरुम करि-गुहमम गल; अतिरतन-दंडकर मरे;
उरुम मरे-विशाल रथ; अतिरतन-मिडे; परि निरु-अयवद; अतिरतन-
निरकर मरे । ८३७

राक्षसों ने जो इतिरतन फके, जिनकी चलाया और जो अगति के समान
सामने आये, उन सब इतिरतन की हेतुमान ने अपने बाय इत्य से वेकार
कर दिया । दाहिने हाथ से पीटकर आर्षुसहारक गजों की मरोड़ दिया ।
बड़े-बड़े रथ भी मिट गये । अथवर्तन भी दंड निरे और मरे । ८३७

निरितदेन निरितदेन निरितदेन निरितदेन निरितदेन
निरितदेन निरितदेन निरितदेन निरितदेन निरितदेन
838 मलककपिप मलककपिप मलककपिप मलककपिप मलककपिप

उरुम चर- (रथों की) बड़ी मिथिया; अतिरतन-दलक गयी; उरुम पर-
बड़े पाट; अतिरतन-विद गये; उरुम गुडे अतिरतन-कवर दंडे; अतन कान-
उनके पड़िये; अतिरतन-दलक गये; कानिचुचकळ-पीठ; अतिरतन-दंडे; विपन
सार-अठार; अतिरतन-दंडे; कटुम परि अतिरतन-वीकानि अथव विष गये;
उरुम मरे अतिरतन-बड़े रथ दलक गये । ८३८

रथों की मिथिया, पाट, और कवर सब दलक गये । उनके पड़िये
दंडे । आसन दंडे । अठार पटियादिर बाग दंडे । वीकानि अथव
दंड मरे । इस भीति बड़े-बड़े रथ मिट गये । ८३८

मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन
मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन मुद्रितदेन
839 मलककपिप मलककपिप मलककपिप मलककपिप मलककपिप

उरुम कवडे पावे-बड़े गण्डरथल बाले गल; उरुम कानि-दीप वजराय से;
अतिरतन-हीन हो गये; उरुम कानि-बड़े दंडे; अतिरतन-बाले गये; उरुम कटुम-
कानि-बड़े दंडे; अतिरतन-हीन हो गये; विपन बाळ-अठार पर; अतिरतन-बाले गये;
मुद्रितदेन-विषाडने का रवर; अतिरतन-बाले गये; मलक पाट अतिरतन-मदवल
निकाल बड़ेवा छोड़ गये; उरुम कलम-अपन बड़ा रोष; अतिरतन-बाले गये । ८३९

बड़े-बड़े गालों बाले गजों पर की वजरापु वरतन इहो और वे वजराहीन
हो गये । वे दावों, सूँडों और बड़े पुरों से भी विहीन हो गये । उनको

चिघाड़ने की शक्ति भी छूट गयी। मद का बहना भी रुक गया। उनका क्रोध भी उन्हें छोड़ गया। ८३९

औडिन्दन	वुरुण्डन	बुलन्दन	पौलन्तार्
इडिन्दन	वैरिन्दन	नैरिन्दन	वैलुन्दाळ
मडिन्दन	मरिन्दन	मुडिन्दन	वयप्पोर्
पडिन्दन	मुडिन्दन	किडन्दन	परिमा 840

परिमा-अश्व; औडिन्दन-टूटे; उरुण्डन-लुढ़के; उलन्दन-मरे; पौलन्तार्-उनके स्वर्ण-दाम (घंटियों वाले); इडिन्दन-खण्ड-खण्ड हुए; नैरिन्दन-जले; वैरिन्दन-पिसे; अलुम् ताळ-उठने को उद्यत अश्वों के पैर; मडिन्दन-मुड़े; मुडिन्दन-विकृत हुए; मुडिन्दन-टूटे; वय पोर्-कठोर युद्ध में; पडिन्दन-भूमि पर गिरे; मुडिन्दन-मरे; किडन्दन-पड़े रहे। ८४०

अश्ववृन्द मरोड़ खाकर लोटे और मरे। उनके स्वर्णमय दाम टूटे, जले और छितर गये। कुछ अश्व उठने लगे तो उनके पैर मुड़ गये, विकृत हुए और टूट गये। घोर युद्ध में वे भूमि पर गिरे, मरे और पड़े रहे। ८४०

वैरुण्डनर्	वियन्दनर्	विळुन्दन	रैळुन्दार्
मरुण्डनर्	मयङ्गिनर्	मडिन्दन	रिरुन्दार्
उरुण्डन	रुलैन्दन	रुळैन्दनर्	कुळैन्दार्
शुरुण्डनर्	पुरण्डनर्	तौलैन्दनर्	मलैन्दार् 841

मलैन्दार्-(हनुमान से) जो भिड़े थे; वैरुण्डनर्-(उनमें कुछ) भयातुर हुए; वियन्दनर्-विस्मित हुए; विळुन्दन-भूमि पर लोट गये; अलुन्दार्-उनमें कुछ उठे; मरुण्डनर्-भ्रमित हुए; मयङ्गिनर्-बेहोश हुए; मडिन्दन-औंधे गिरे; इरुन्दार्-मरे; उरुण्डनर्-(और कुछ) लुढ़के; उलैन्दनर्-पीड़ा का अनुभव किया; उळैन्दनर्-मुरझाये; कुळैन्दार्-पिसकर मर गये; चुरुण्डनर्-(और कुछ) गोल हुए; पुरण्डनर्-लोटे; तौलैन्दनर्-मरे। ८४१

हनुमान से जो भिड़े, वे भयातुर हुए, विस्मित हुए और धराशायी हुए। कुछ लोग उठे पर वे भ्रान्त हुए, बेहोश हुए और औंधे गिरे। कुछ लोग लोटे, मुरझाये और पिस गये। कितने ही लुढ़के, लोटे और मिट गये। ८४१

करिहौडु	करिहळैक्	कळप्पडप्	पुडैत्तान्
परिहौडु	परिहळैत्	तलत्तिडैप्	पडुत्तान्
वरिशिलै	वयवरै	वयवरिन्	मडित्तान्
निरैमणित्	तेरहळैत्	तेरहळि	नैरित्तान् 842

करि कौटु-गजों से ही; करिकळै-गजों को; कळप्पट-खेत रहें, ऐसा;

हेतुमान ने मलमूछ करके पर्वत-रक्षस राक्षसों की वक दूँवों, वज्र और सबल हथों, मोटे कोरों के बाणों, शक्तियों, बीरता, उच्च स्वर और उनके प्राणों के साथ भीम पर पकककर रौंद दिया । ८४४

पुहैनेडुम्	बौरिपुहुन्	दिशैतीरुम्	बौलिन्दान्
चिहैनेडुम्	जुडर्विडुन्	देरतीरुम्	जेन्शान्
तहैनेडुम्	गरिदीरुम्	बरितीरुम्	जरित्तान्
नहैनेडु	पडैदीरुन्	दलेदीरु	नडन्दान् 845

पुकै-धुएँ के साथ; नैटुम् पौरि-बड़े-बड़े अंगारे; पुकुम् तिचै तीरुम्-जहाँ घुसते चले उन सभी दिशाओं में; पौलिन्दान्-शान के साथ दिखायी दिया; चिकै-सिरों पर से; नैटुम् चुटर् विटुम्-दीर्घ छुति निःसृत करनेवाले; तेर् तीरुम्-रथ जहाँ-जहाँ थे; जेन्शान्-वहाँ गया; तकै नैटुम्-श्रेष्ठता में बड़े हुए; करि तीरुम् परि तीरुम्-गज और अश्व जहाँ-जहाँ थे वहाँ; चरित्तान्-संचार किया; नकै-उसकी हँसी उड़ानेवाले; नैटुम् पटै तीरुम्-विशाल सेना के हर वीर के पास; तलै तीरुम्-हर सिर पर; नटन्तान्-चला और ध्वस्त किया । ८४५

चारों दिशाओं में धुएँ-सहित अंगारे फैले और उनके साथ हनुमान भी दिखायी दिया । अपने सिरों से प्रकाश निकालनेवाले रथ-रथ पर, श्रेष्ठ गज-गज पर, अश्व-अश्व पर कूदा । उसकी हँसी जो उड़ा रहे थे, उन राक्षसों के सिरों पर चलकर उसने उनको निहत कर दिया । ८४५

वैन्त्रिवैम्	बुरविधिन्	वैरिनिनुम्	विरवार्
मन्त्रलन्	दारणि	मार्बिनु	मणित्तेर्
औन्त्रिनिन्	औन्त्रिनु	मुयर्मद	मळैताळ्
कुन्त्रिनुड्	गडैयुहत्	तुरुमैतक्	कुदित्तान् 846

वैन्त्रि-विजयशील; वैम् पुरविधिन्-भयानक अश्वों की; वैरिनिनुम्-पीठों पर; विरवार्-शत्रुओं के; मन्त्रल् अम् तार्-सुगन्धपूर्ण माला से; अणि मार्पितुम्-अलंकृत सुन्दर वक्षों पर; मणि तेर्-मनोरम रथ; औन्त्रिन् निनुड्-एक से; औन्त्रिनुम्-दूसरे पर; उयर् मत मळै-अधिक मद-वर्षा; ताळ्-बहानेवाले; कुन्त्रिनुम्-पर्वत-सम गजों पर; कटै युक्ततु-युगान्त में; उरुम् अँत-गिरनेवाली अशनि के समान; कुदित्तान्-कूदा । ८४६

वह विजयशील अश्व की पीठों पर, सुगन्धित पुष्पमालालंकृत (राक्षसों के) वक्षों पर, सुन्दर रथों में एक से दूसरे पर और अधिक मदसावी गजों पर प्रलयकालीन अशनि के समान कूदा । ८४६

पिरिवरु	मौरुपेरुड्	गोलैन्प	पैयरा
इरुविन्नै	तुडैत्तव	ररिवैन्	वैवरक्कुम्
वरुमुलै	विलैककैन्	मदित्तन्नर्	वळङ्गुम्
तैरिवैयर्	मन्नमैतक्	कडङ्गैन्त	तिरिन्दान् 847

पिरिवु अरुम्-निरन्तर वर्तमान; और पैरुम् कोल् अँत-एक बड़े राजा के वण्ड (शासन) के समान; पैयरा-अपृथक्; इरुविते तुडैत्तवर्-कामद्वययुक्त ज्ञानी के; अरिवु पोलवुम्-ज्ञान के समान; वैवरक् म-किसी से भी; वरु मुलै-गुण्ड उरोज;

विष्णुके अंग मतिवतनर-पण्य बनाकर; बड़हूँसे-संगाने देनेवाली; निरिधर; सप्तम अंग-वारिनाथों के मन के समान; कउहूँ अंग-वातवक के समान; निरिधनान-हुँमान धर्म-धर्मकर लखे। ८४७

वह कैसे धँसा ? इसका विवरण देखिए— निरनर वतमान बड़े राजा के आसन-दण्ड के समान (सजा), कर्मदयविभूषण शानियों के शान के समान (सुंदर) और अपने मनोरम स्तनों की पण्य-पदार्थ माननेवाली वारवनिताओं के मन के समान और वातवक (या पतंग) के समान (एक स्थान पर न रहकर) धँसा। ८४७

अण्णलव वरिधिसुके कडियव रवतेशीरे
नण्णव रूतमबोह णवयउने निरिपणने
मण्णिसुमे विभुसुमिने मरुत्तिसुमे वलिनेनरे
कण्णिसु मनेविनेने दानेनेनलि कलनेदाने 848

अण्णल-महावीर; अ अरिधिसुके अडियवर-उन हरि के दास; अवने वीरे मण्णवर-उन हरि के विष्णुओं की भ्रातृ करते; अनेम पाँख-यह आनख; नव अउ-निर्दण्ड रीति से; निरिपणने-बनाते हुए; मण्णिसुमे विभुसुमिने-धर्म-धर्म और आकाश से; मरुत्तिसुमे-पाण्डवों से; वलिनेनरे-वीर से लड़नेवाले राजाओं की; कण्णिसुमे मनेविनेने-आँखों और मन से; नलि नलि-अलग-अलग; कलनेदाने-मिला रहा। ८४८

श्रीविष्णुसक्त श्रिविष्णु के गुणों की भ्रातृ कर लेते हैं। यह आरनेवाले विषय है। इसकी हेतुमान विषयकेप बनकर अपने से प्रमाणित कर रहा था। धार्मिक वड़े आकाश, धर्म, पाण्डवों और सबल घोड़े। राजाओं की आँखों और मनों में अलग-अलग रहा। ८४८

कडिनेनउने देरीउहे गुरदहके
अडिनेनरे नउकेपि नलनेविनिदे टरेनेनने
इडिनेनने उडिरेदेने निरिउउवने पोरपण्ण
विडिनेनरे नउकेपि नउकेपि निरिउउवे 849

कडि-उपजा-सहित; नउसे ले आनेसे-बड़े राजा के साथ; कुरकन कुँवने-गुरा-समूह की; और नउ केपिसे-एक बड़े राज से; अडिनेने-पीडकर; निरनेनने-इददे-धर्म पर डालकर; अरेनेनने-धर्म डाला; इडिनेने निरिउ अडिरे-विजली की कउक के समान विधाउनेवाले; कननेने-कूडे; अडिउउ-दाने वाले; वने पोरपण-सबल पण्डवों (गर्ज) की; और नउ केपिसे-विडिनेने-इसरे बड़े राज से पकउकर; उडिरे उक-गर्जों की निकाले हुए; विडिनेनने-निबोडे दिया। ८४९

हेतुमान से एक राज से पताका-श्रित राजों के साथ गुरगवन्द की प्रहेरन करके धर्म पर डालकर पीस दिया। अपने इसरे राज से अशानि

के समान चिंघाड़ की ध्वनि निकालनेवाले, क्रुद्ध, बड़े दाँतों वाले और पर्वत-सम गजों को ऐसा निचोड़ा कि उनके प्राण निकल गये । ८४९

कस्तुर्तेल्लु	मन्तत्तिन	रैयिर्त्तिनर्	कयिर्त्तिनर्
शैर्त्तिनर्	विळिप्पवर्	शिहैक्कळु	वलत्तार्
वैर्त्तिनर्	मडलिह	ळिवर्त्त	वैदिर्न्तार्
और्त्तुर्त्तु	तिरन्तत्	तन्तिन्तन्ति	युदैत्तान् 850

कस्तुर्तेल्लु मन्तत्तिनर्-क्रुद्धमन; रैयिर्त्तिनर्-दंतोरे; कयिर्त्तिनर्-पाशहस्त; शैर्त्तिनर्-शत्रुता करके; अरि विळिप्पवर्-आग-जंसी दृष्टि फेंकनेवाले; चिकै-तीक्ष्ण; कळु-शूल के; वलत्तार्-वलशाली; वैर्त्तिनर्-शत्रुता करके चढ़ आनेवाले; मडलिकळु इवर्त्त-यम है ये, ऐसा; अतिर्न्तार्-चढ़ आये; और्त्तु-उनको दण्डित करके; उरुत्तिरन् अंत-रुद्र के समान; तन्ति तन्ति-अलग-अलग; उदैत्तान्-लात मारी (हनुमान ने) । ८५०

क्रुद्धमन, भयंकर दाँतों वाले, पाशहस्त, वैर के साथ आग बरसाते हुए देखनेवाली आँखों के और तीक्ष्ण त्रिशूलधारी राक्षस द्वेष से उठ आनेवाले यम के समान लगे, तो हनुमान ने रुद्र के समान उन्हें दण्डित करके अलग-अलग लताड़ा । ८५०

शक्करन्	दोमर	मुलक्कंदण	डयिल्वाळ
मिक्कन	तेरपरि	कुडैहोडि	विरवि
उक्कत	कुरुदियम्	वैरुन्दिरे	युद्धटप्
पुक्कत	कडलिडै	नैडुङ्गरप्	पूट्कै 851

उक्कत कुरुति अम्-(राक्षसों के) बहाए रक्त-प्रवाह की; वैरुन्दिरे-बड़ी-बड़ी लहरों के; उद्धट-लुढ़का ले जाने से; चक्करम्-चक्र; तोमरम्-तोमर; उलक्कै-मूसल; तण्डु-गदाएँ; अयिल्-शक्तियाँ; वाळ्-तलवारें; मिक्कत-अधिक हुई; तेर-रथ; परि-अश्व; कुटै-छत्र; कौटि-पताकाएँ; विरवि-मिलकर; नैडुम् कर-लम्बी सूँड़ों वाले; पूट्कै-गज; कटल् इटै-समुद्र में; पुक्कत-घुस गये । ८५१

राक्षसों के शरीरों से जो रक्त बहा उसका प्रवाह बना । उस प्रवाह की बड़ी-बड़ी लहरें चक्रायुध, तोमर, मूसल, दण्ड, शक्तियाँ और तलवारें बहा ले गयीं । वे बहुत सख्या में रहीं । उनके साथ रथ, अश्व, छत्र और ध्वजाएँ मिल गयीं । लम्बी सूँड़ वाले गज भी उनके साथ जाकर समुद्र में डूब गये । ८५१

अट्टिन	विशुम्बिने	यैरिपड	वैळुन्द
मुट्टिन	मलैहळै	मुयङ्गिन	तिशयै
औट्टिन	वौत्तुरैयोन्	रूडडित्	तुडैन्दु
तट्टुमुट्	टाडिन	तलैयोड	तलैहळ् 852

[illegible]

राक्षसों के पिर हनुमान द्वारा उछाले जाकर उठे और आकाश में पड़ूँ गये । पर्वतों से टकराये । बिष्णुओं में जा लगे । बीच में एक-दूसरे से खूब दवाए जाकर चिपक गये । अन्य पिरों के साथ मिलकर कूड़े-करकटों के समान निचर-निचर पड़े रहे । ८५२

कई-करकारी के समान निर-विपर पड़े। २५२

कल	कावले	वेळके	कणकणळ	कदवा	जिरहेलेल
वाने	युपदने	नसिये	निरु	मदयाने	वरयणीपणने
वेने	गुरहेण	कनले	शीरियेव	वीरुव	बुक्कुकिकेरुवने
नाने	यानने	यामुव	माने	कालने	रुवयणीपणने

853

काव्य-काल-वचन की ही अपनी सुरक्षा का स्थान माननेवाले, बौद्धकलाकर्म-गणपति की, कन बाळ और-कौट और छविमान विद् के, कालिदास-मार्ग पर, वाही अथवा-वे परकर स्वर्ग गये; लीये निज-नय जो अकेले छा रहा; सब माले-वर्-उस सब बड़े गल; अप्पान-के समान रहा; कालिदास-यस की; अप्पान-समना करनेवाला; समुपनि-अर्चुमाला; वाते आनन्द-अकेला हो गया; निरु-कथा-शब्द-सम (लाल) आँखें; कनले चौरिय-आग बरवाली; चौर-सुखकामिनी-गुह में बहना जाना । २५३

[illegible]

बन को ही अपना सुरक्षित स्थान समझनेवाले गनों को एक सिद्धे ने मार दिया तो वे सब व्योमलोक चले गये । तब एक ही गज बचा और वह एकाकी छड़ा रहा । ऐसे एक गज की स्थिति में यम-यम जन्ममाली, अकेला होकर बहुत कुछ हुआ और उसकी शरद के रंग की आँखों से आग होी बरस पड़ी । ८५३.

ଶ୍ରୀ ବ୍ରହ୍ମ ସଂହିତା । ୧୫୩

[illegible]

अळियन्-दीन (जम्बुमाली); विरैकिन्ऱान्-सवेग जाता (जाने का प्रयास करता) हैं । ८५४

वायु से भी अधिक तीव्र गति से चलनेवाले लगाम-लगे अश्वों के वीर खेत रह गये । रक्त-नदी में मांस-मज्जे के बने गहरे कर्दम में रथ फँस जाता था । आगे नहीं जा सके । उसके पहिये धँसते जाते थे, उस बात को जम्बुमाली नहीं जान सका । दूसरा कोई मार्ग भी नहीं रहा । जम्बुमाली, जो दयनीय स्थिति में रहा, अपने रथ को उस स्थिति में तेज़ चलाए जा रहा था । ८५४

एदि यौन्ऱाऱ् रेरु मः(ह्)दा लैळियो रुयिर्होडल्
नोदि यन्ऱा लुडन्वन् दोरैक् काक्कुम् निलैयिल्लाय्
शादि यन्ऱे पिऱिदैन् शैय्दि यवर्पिन् इत्तिनिन्ऱाय्
पोदि येन्ऱान् पूतत् मरम्बोऱ् पुण्णाऱ् पौलिहिन्ऱान् 855

पूतत् मरम् पोल-पुष्पित पेड़ के समान; पुण्णाल् पौलिकिन्ऱान्-व्रणों के साथ शोभायमान (हनुमान) ने; एति औन्ऱाल्-हथियार एक ही (तुम्हारे पास) है; तेरुम् अ. तु आल्-रथ भी वही; उटन् वन्तोरै-साथ आये लोगों की; काक्कुम् निलै इल्लाय्-रक्षा करने की स्थिति में नहीं हो; अवर् पिन् तति निन्ऱाय्-उनके (मरने के) बाद अकेले बचे हो; अळियोर्-दीनहीनों की; उयिर् कोटल्-जान लेना; नीति अन्ऱाल्-न्याय-सम्मत नहीं है, इसलिए; चाति-(लड़ोगे तो) मरोगे; पिऱितु अन् चैय्ति-फिर क्या करो; पोति-चले जाओ; अन्ऱान्-कहा । ८५५

पुष्पित तरु-सदृश व्रणों से शोभित पवनसूनु ने जम्बुमाली को समझाया । तुम्हारे पास एक ही हथियार बचा है । साथ आये वीरों की रक्षा करने की स्थिति में नहीं रहे । वे चल बसे और तुम एकाकी खड़े रहते हो । दीन-हीनों को मारना न्यायसंगत नहीं होगा । तुम लड़ोगे तो अवश्य मरोगे । फिर क्या करोगे ? जाओ । ८५५

नन्ऱु नन्ऱुन् करुणै येन्ना नैरुप्पु नहनक्कान्
पौन्ऱु वारि नौरुव नैन्ऱाय् पोलु मैनेयेन्ना
वन्ऱिण् शिलैयिन् वयिरक् कालाल् वडित्तिण् शुडर्वाळि
औन्ऱु पत्तु नूऱु नूऱा यिरमु मुदैप्पित्तान् 856

उत् करुणै-तुम्हारी दया; नन्ऱु नन्ऱु-भली रही, भली; अन्ऱा-कहकर; नैरुप्पु नक-आग प्रकट करते हुए; नक्कान्-हँसा (जम्बुमाली); अँतै-मुझे; पौन्ऱुवारिन् औरुवन्-मरनेवालों में एक; अँन्ऱाय् पोलुम्-एक कहते (गिनते) हो क्या; अँन्ना-कहकर; वन् तिण्-बड़े और कठोर; चिलैयिन् वयिर कालाल्-धनु के वज्र-सम पैरों द्वारा; वडि तिण् चुटर् वाळि-तेज़, कठोर और ज्वलन्त शर; औन्ऱु-एक-एक; पत्तु-दहाई में; नूऱु-सैकड़ों और; नूऱायिरमुम्-लाखों में; उतैप्पित्तान्-ठुकवाया (तमिळ में धनुओं के "पैरों से ठुकवाना" मुहावरा है ।) । ८५६

वर्द्धः यत्नं पित्र्यं यथा लब्धं वीर्यविनाशं ४५४
 भुङ्क्ते मुनिवत्-निपट कृद्; निवर्त-राक्षस; मुनिप-और यो प्रसा करके;
 मुनिपं पित्र्येप-सामने और पीछे; वृद्ध उर-जा जा ली; पकड़ि-वे घर;
 वरु-द्विमान पर न लगकर; मुनिप-दंडकर; वरिरेकिमरत-व जाते हैं, उसकी;
 वृत्ता-सीवकर; वृद्ध-द्विमान के चारों ओर घूमकर; नदमं वेरे अदि-वरे रथ
 का बजाते हुए; वीर्यविनाश-पास गया; वीर्यमं वृद्ध-(विजल) पास जाते का
 सार्थ; काणाभ-न देकर; वृद्धि अर्द्ध-विषय विनाश रहे लीहृदय की; पित्र्यप
 अर्थात्-अर्द्धवः द वाण से; अर्द्ध-कादकर; वीर्यविनाश-गिरा दिया । ५५५

जम्बुमाली पहले ही सम्पूर्ण रूप से क्रुद्ध था। अब वह और भी अधिक कोपाक्रान्त हुआ। उसने देखा कि वह जो शर हनुमान के चारों ओर, आगे, पीछे और पार्श्वों में भेज रहा है, वे सब हनुमान पर नहीं लगते वरन् टूटकर बिखर जाते हैं। अपने रथ को उसके पास पहुँचाना चाहा पर रास्ता नहीं मिला। उसने एक अर्द्धचन्द्र बाण से विजय दिलाते रहे उस लौहदण्ड को खण्ड-खण्ड बनाकर गिरा दिया। ८५८

शलित्ता त्रैयन् कैया लैय्युम् जरत्तै युहच्चाडि
 औलित्ता त्रमरर् कण्डा रारप्पत् तेरि नुट्पुक्कुक्
 कलित्तान् शिलैयैक् कैयाल् वाङ्गिक् कळुत्ति निडैयिट्टु
 वलित्तान् पहुवाय् मडित्तु मलैपोर् इलैमण् णिडैवीळ 859

ऐयन्-सम्मानित महावीर ने; अय्युम् चरत्तै-प्रेरित शरों को; कैयाल्-हाथों से; उक्-गिराते हुए; चाटि-पीटकर; चलित्तान्-ऊबकर; अमरर् कण्डु आरप्प-देवों के देखकर सन्तोष-रव करते; औलित्तान्-नारे लगाते हुए; कलित्तान्-गर्वीले; तेरितुळ् पुक्कु-(राक्षस के) रथ में घुसकर; चिलैयै-धनु को; कैयाल् वाङ्कि-अपने हाथ से छीन लेकर; पकुवाय् मडित्तु-बड़े अधर मोड़कर; मलै पोल् तलै-पर्वताकार सिर को; मण्णिन् इटै वीळ-भूमि पर गिराते हुए; कळुत्तिन् इटै यिट्टु-गले में डालकर; वलित्तान्-खींचा। ८५८

श्रेष्ठ हनुमान आनेवाले शरों को हाथों से रोककर उन्हें मारते-मारते ऊब उठा। इसलिए उसने एक ऐसा गम्भीर नारा लगाया, जिसको सुनकर अमरगण आनन्द ध्वनि कर उठे। वह गर्वीले जम्बुमाली के रथ में उछलकर घुसा। उसने उसके धनु को अपने हाथ से पकड़कर छीना और उसे उसके गले में डालकर खींचा कि उसका बड़ा खुला मुख बन्द हुआ और उसका पर्वत-सदृश मस्तक धरती पर लोट गया। ८५९

कुदित्तुत् तेरुङ् गोल्हो लालुम् बरियुङ् गुळम्बाह
 मिदित्तुप् पयर्नुदु नैडुन्दो रणत्तै वीरन् मेर्कोण्डान्
 कदित्तुप् पळिन्दु कळिन्दार् पेरुमै कण्डु कळत्तज्जि
 उदित्तुप् पुलर्न्द तोल्वो लुरुवत् तमर रोडित्तारल् 860

वीरन्-महावीर; कुदित्तु-नीचे कूदकर; तेरुम्-रथ और; कोल् कोळ् आळुम्-वेत्रधारी सारथी; परियुम्-और अश्वो को; कुळम्पाक्-कर्म बनाते हुए; मितित्तु-रौंदकर; पयर्नु-वहाँ से हटकर; नैडुम् तोरणत्तै-ऊँचे तोरण; मेर्कोण्डान्-पर चढ़ बैठा; अमरर्-(अशोकवन-पाल) ऋतुदेव; कति तुप्पु-चलने की शक्ति; अळिन्दु-खोकर; पेरुमै कण्डु-हनुमान का प्रताप देखकर; कळत्तु-समराजिर से; अज्चि कळिन्दार्-डरकर जो हटे; उदित्तुप् पुलर्न्द-मोटा बनकर जो सूख गया हो; तोल् पोल् उरुवत्तु-उस चमड़े के समान शरीर के होकर; ओदितर्-भागे। ८६०

महावीर उस रथ से नीचे कूदा । उसने रथ की, वेधधारिणी सारथी की और अश्वों की रीदकर कीच बगो दी । फिर वहाँ से गया और गोरग-हार पर चढ़ बैठ गया । अशोकवनामालक ऋतुदेवता यह देखकर अपनी चालने की शक्ति से भाग निकले । फौलकर सुँधी खाल के समान आकार के वे वहाँ से भाग निकले । फौलकर सुँधी खाल के समान आकार के वे

दाँड़े । ८३०

पिरिजई गुलमंघु महिउर कालक कणवर पणमवउरि
 पिरिजई कुविद पुरा रीरवु मवई उडिमवोश
 इरिजई दिवङ्ग पण्डित वड्डे पिमिउर गिवनले
 वरिजई वरककर वलिपुन रूणणि पुरपुन दण्डिरनेनदल 861
 पिरिजई कुविद पुरा रीरवु मवई उडिमवोश
 इरिजई दिवङ्ग पण्डित वड्डे पिमिउर गिवनले
 वरिजई वरककर वलिपुन रूणणि पुरपुन दण्डिरनेनदल 861

विरिजल-कैल हूए; कुविल-रखन की; पुर आठ-वर्षी नदी से; पिरिज
 गुलमंघु-विग्रह होकर विपननेवाली; सकलिर काल- (राक्षस-) विजया देव से
 ऐसा; कणवर पण्डित-उनके पतिपत्नी के शत्रु की एक; ईरनेनु-विवककर;
 मन्कळ लोडन-घर-घर से; बीच-कक दिया नी; इलङ्क-लका नगर (वासी);
 इरिजनेनु-अरन-अरन (हूए); अड्डक अड्डनेनु-देवन-देवर उठा; इङ्क-अव;
 इङ्क-मही; इवनाले-इधसे; अरककर वलि-राक्षसी का बल; वरिजनेनु-नद
 गया; अङ्क अण्णि-ऐसा सीवकर; अरगुम नळिरनेनु-धम भी लहेलहो उठा । ८३१
 फौल रफन-मवाइ वर्षी नदी के रूप में बहे । उसने विरज से विनाम
 करनेवाली राक्षसियों के प्रत्यक्ष देखने के लिए उनके पतिपत्नी के शत्रु की
 खीच लेकर घर-घर पहुँचा दिया । यह देखकर लका अरन-अरन हो गयी ।
 सदाब रदन का स्वर उठा । धम ने सीचा कि अब माविल इस लका से
 राक्षसी का बल हटो दिया । वह लहेलहो उठा । ८३२

गुकेका रमरर पौलनदा ररकेम पौविल पुरङ्गणिल
 विकेका विरेरर विममव लारेरर वरिव विममवारे
 नकेका वरकक नड्डेग लरेर नया नमरेनाम
 उकेकार शम्वु माल पुननदा नीरेर कुरङ्गनेरर 862

पौलन नार अरककन-स्वर्णहारालङ्कन राक्षस (रावण) के; पौविल इल-अनुपम;
 पुरम कणिल-वड्डे महेल से; अमरर गुकेकार-देव पड्डेवे; विकेका विममवारे-पुवकले
 छडे रहे; विममपल आरेर-बोल नहीं सके; वरिव-उरकर; विममवारे-नरसे;
 अरककन-राक्षस; नकान-हैसा; नड्डेकल अरेर-मल डरी, कहे; ऐना-मय;
 नमर अण्णि-देमसे सभो; उकेकार-मर गये; वमममाली-मवमाली; उलननले-
 मिड गया; अमरेर कुरङ्क-एक हो जानर है; अरेर-कहे (उरहे) । ८३२
 वे ऋतुदेवता स्वर्णहारधारिणी राक्षस के अनुपम और वड्डे महेल से
 गये । वहाँ पुवकले छडे रहे । बोलने की शक्ति भी जाती रही । डर से
 मरे रहे । राक्षस हैसा । मल डरी, कहेकर उसने धम वड्डे वड्डाया । नव

उन्होंने कहा कि हमारे सब निहत हो गये । जम्बुमाली भी मर गया ।
आखिर वानर एक ही है ! । ८६२

अँत्तु मळवि तैरिन्दु वीड्गि यँळुन्द वैहुळियान्
उन्त वुन्त वुदिरक् कुमिळि विळियू डुमिळ्हिन्त्रान्
शौन्त कुरङ्गै याने पिडिप्पेन् कडिदु तीडर्न्दन्त्रान्
अन्त दुणर्न्द शेनेत् तलैव रेव ररिवित्तार् 863

अँत्तुम् अळविल्—यह कहने मात्र से; अँरिन्दु—जलकर; वीड्कि अँळुन्त—बढ़कर
जो उठा; वैकुळियान्—उस कोप के राक्षस ने; उन्त उन्त—ज्यों-ज्यों स्मरण करता;
विळियूद—दृष्टि के साथ; उतिर कुमुळि—रक्त के बुलबुले; उमिळ्किन्त्रान्—निकालता;
शौन्त कुरङ्गै—तुम्हारे उक्त मकंद को; याने—मैं ही; कटितु तीडर्न्दु—शीघ्र जाकर;
पिडिप्पेन्—पकड़ूँगा; अँन्त्रान्—कहा; अन्ततु उणर्न्द—उसे सुनकर; चेत्तै तलैवर्
ऐवर्—पंच सेनापतियों ने; अरिवित्तार्—समझाया । ८६३

ज्योंही उन्होंने यह बात सुनायी, त्योंही रावण कोपाक्रांत हुआ ।
कोप जलते हुए बढ़ उठा । ज्यों-ज्यों जम्बुमाली के मरण की बात सोचता,
त्यों-त्यों उसकी आँखों से रक्त के बुलबुले छूटते । उसने कहा कि मैं ही
शीघ्र जाऊँगा और तुम्हारे उक्त वानर को पकड़ूँगा । पंच सेनापतियों ने
उसे सुना तो वे उसे समझाने लगे । ८६३

9. पञ्ज सेनापतिहळ् वदैप् पडलम् (पंच सेनापति-वध पटल)

शिलन्दि युण्बदोर् कुरङ्गिन्मेर् चेरियेर् रिउलोय्
कलन्द पोरिन्ति कट्पुलक् कडुङ्गनल् कटुव
उलन्द माल्वरै यरुविया रौळुकुर्उ दौक्कप्
पुलर्न्द मामदम् बूक्कुमन् रेदिशैप् पूटकै 864

तिउलोय्—शक्तिमन्त; चिलन्ति उण्पतु—मकड़ी (पकड़कर) खानेवाले; ओर्
कुरङ्किन् मेल्—एक वानर पर; चेरियेल्—चढ़ने जाएँगे तो; कलन्त पोरिल्—आपसे
हुए युद्ध में; निन् कण् पुलम्—आपकी आँख की इन्द्रिय से निकली; कटुम् कतल्—
घोर आग के; कटुव—जलने से; उलन्त माल् वरै—जो सूख गया उस उन्नत बड़े
पर्वत में; अरुवि आरु—बहती नदी के; ओळुकु अरुत्तु ओक्क—बहाव के सूख जाने
के समान; तिचै पूटकै—दिग्गजों का; पुलर्न्द मा मतम्—सूखा बड़ा मद; पूक्कुम्
अन्त्रे—फिर से ताजा हो जायगा न । ८६४

(उन सेनापतियों ने कहा—) शक्तिमन्त ! अगर आप मकड़ी खानेवाले
एक वानर पर चढ़ जाएँगे, तो दिग्गजों का मद फिर से ताजा होकर बहने
नहीं लगेगा? अभी यह गरमी में बड़े पर्वतों पर की नदी—जैसे सूखा हुआ है ।
वह तब सूखा था, जब आपके साथ हुए युद्ध में आपकी आँखों से निकली
आग उन पर पड़ी थी । ८६४

કલહ્ય	ભૂવંશિવને	ભગીવડ	પ્રહલ્લભલિંક	કલિએ
રવહંભિવ	મૂલ્યેને	દૂતેવની	કરહંભિવને	લિંકકલિને
અલહંભને	માલંભિવ	પ્રપાતિવને	રવભિવને	રહિવને
કલિહંભને	વતેરવર	તીરંગિમાલ	ભૂલંભિવહ	પ્રતેરવ

865

नन्त्रि यिन्त्रांश्च काण्डिये लैमैचर्चेल नयत्ति
 अन्त्र कैंतोळु दिरैञ्जिन ररक्कनु मिशैन्दान् 867

अरच-राजा; अन्त्रियुम्-इसके सिवा; उत्तक्कु-आपके; आळ् इन्मै-सेवकों का अभाव; तोन्त्रुम्-प्रकट होगा; वेंत्रि इल्लवर्-जो विजय नहीं पा सके उन्हें और; मेल्लियोर् तमै-निर्बलों को; चैल विट्टाय्-जाने दिया; इन्त्रु-आज; औन्त्र नन्त्रि-एक अच्छा कार्य; काण्डियेल्-देखना चाहो तो; अमै चैल-हमें भेजना; नयत्ति-चाहो; अन्त्रु-कहकर; कैंतोळु-हाथ जोड़कर; इरैञ्चितर्-विनय की; अरक्कनुम् इचैन्तान्-राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

राजन् ! और भी एक बात है। आपके स्वयं चढ़ जाने से ऐसा प्रगट होगा कि आपके और कोई सेवक या कर्मचारी नहीं है। आपने अब तक उन्हीं लोगों को भेजा है, जो विजय पाने में असमर्थ थे या निर्बल थे। अगर आप एक अच्छा कार्य देखना चाहते हों तो हमें भेजने की चाह कीजिए। सेनापतियों ने यह कहकर हाथ जोड़े और विनय की। राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

उलह मून्त्रैयु मौरुङ्गुपैर् इरैन वुवन्दार्
 तिलह मण्णुर् वणङ्गितर् कोयिलैत् तीरन्दार्
 अलहि इरपरि करियोडु मिडैन्दपो ररक्कर्
 तौलैवि इतैयैक् कदुमैन्त वरुहैन्तच् चौन्तार् 868

उलकम् मून्त्रैयुम्-तीनों लोकों को; मौरुङ्कु पैंडार्-एक साथ पा लिया हो; अत उवन्तार्-जैसा हर्षित हुए; तिलकम्-भाल का तिलक; मण् उर-भूमि पर पड़े, ऐसा; वणङ्कितर्-नमस्कार किया; कोयिलै तीरन्तार्-महल छोड़ निकले; अलकु इल्-असंख्यक; तेर्-रथ; परि-अश्व; करि ओटु-गजों के साथ; मिडैन्त पोर् अरक्कर्-इकट्ठे आये योद्धा वीर; तौलैवु इल्-(इनको) अक्षय; तातैयै-सेना को; कतुम् अतै-‘शीघ्र’; वरुहैन्त-आओ; चौन्तार्-कहा। ८६८

उन्हें इतना अपार हर्ष हुआ, मानो तीनों लोकों को एक साथ पा गये हों। भाल का तिलक भूमि पर लगे, ऐसा दण्डवत करके वे महल से बाहर आये। उन्होंने आज्ञा निकाली कि असंख्यक रथों, अश्वों, गजों और पदाति वीरों की सेनाएँ शीघ्र आ जाएँ। ८६८

आने मेन्मुर शरैन्दन्तर् वळ्ळुव रळैत्तार्
 पेन्त वेलैयिर् पुडैपरन् ददुपैरुन् जेन्ते
 शोन्त मामळै मुहिलैन्तप् पोर्प्पणै तुवैप्प
 मीन्त वानिडै मिन्तैन्तप् पडैक्कल मिडैन्द 869

वळ्ळुवर्-‘वळ्ळुव’ लोगों ने; आने मेल्ल-गजों पर से; मुरचु अरैन्तत्तर्-ढिड़ोरा पीटकर; अळैत्तार्-आमन्त्रित किया; पैंरुम् चेतै-बड़ी सेना; पेन्त वेलैयिल्-फेन-सहित सागर के समान; पुटै परन्तु-सब ओर फैली; चोन्त मा मळै-निरन्तर

वरसवेवली वर्षा के; मुकिल्लत-सर्षा के समान; पारे पत्त-पुष्टि-सिद्धि; विवेक-प-
 नगरी; मौल बाहिरे-नक्षत्र-सरे आकाश की; मित्र अंत-विजली के समान;
 पटकेकलस-हृदयार; मित्र-नक्षत्र-सरे । ८३६

वज्रवर् (विहारी पीठवेवली एक जालि) लोणी ने गज पर डोल
 चक्राकर मुनादी पिठवा दी। वज्र सेवा फल-सहित सगर के समान उठ
 आयी। चारों ओर फैली। निरंतर वरसवेवली वर्षा के सर्षा के समान
 साके डोल वज उठ। नक्षत्र-सरे आकाश में विजलियाँ के समान मुहूर्तपुष्टि
 जात आयें । ८३६

नाने	माकेकीहि	समैप्रीहि	पुपरनेडन	दाळ
मान	माउरु	माहि	मुनिपना	डलन
पान	माउरनर	पुठेनके	कालंपोरप	पुरण
वान	पाउरुवण	डिरेपुन	वरमंजिल	परनेद

समै प्रीतिव-सर्षा की छेदकर; उपर नैम-ऊपर चलनेवाले लखे; नान-
 पर वाले; वान पाउर-आकाशागंगा की; वज्र निर अंत-वदन नरणी के समान;
 वरसपु डोल-निरसोम; परनल-फल रहे; नाने मा कीहि-वस सेवा के वज्र-वज्र
 पाउर अर-अप्रतिहत; मान माहि-आदरणीय माहि; मुनिप-कोप (करके पुष्ट)
 करने पर; माउरु वलन पान-जिनकी आयु सुख गयी; माउरुनर-वम सर्षा के;
 पुकळ अंत-पश के समान; काल पार-हेवा के हिलाने से; पुरण-हिल । ८७०

अनेक प्रवेव डवजाएँ, हेवा में अप्रतिहत माहि के कोप के समान
 जिनकी आयु सुख गयी, उन सर्षा के पश के समान हिल रही थी।
 उनके वष मुष की छेदकर ऊपर गये थे। वे आकाशागंगा की लहरों
 की तरहे प्रवेववाणी थी । ८७०

विरव	प्रीकळ	विधानेवर	वरिच	विडवाव
वरमा	उकोकन	पुटिचि	वावेविनर	आमयके
करवि	पुकेन	ररकेरमाप	पल्लण्ड	गविनप
पुरवि	पुटनेर	पुटिन	पकसिले	पुटके

अरकेर-राक्षस ने; विरव पौने कळ-स्वर्णमय पायल; विविनेवर-वांछ
 ली; वरम आउकोकन-शरनिभय; पुटिचि-सुगौर मा; वरिच वर-पौठ पर
 लगी; विडके-सुंदर लगी, ऐसा; वावेविनर-आरुण कर लिपि; वसुप-वृष
 पुवन हे, ऐसा; करवि पुकेनर-कवच पदेन लिपि; पुटि-अरव; मा पल्लण-
 वज्र-वज्र लीने; कविन-कवली रीति से; डट-पुटनीय गये; नेर पुटि-र-र
 जुड़े गये; पुटके-गज; पकसिले-अलंकृत किये गये । ८७१

राक्षसों ने स्वर्णमय पायलें बाँध लीं। शरान्ध्र पृणीरों की पौठ की
 शोभित करते हुए पदेन लिपि। वृष पुवन रीति से कवच धारण कर
 लिये। अश्वों पर लीने कसी। रथ लीने और गज अलंकृत हुए । ८७१

आरू	शैयदन	वानैयित्	मदङ्गळव्	वाइरैच्
चेरू	शैयदन	तेरहळिन्	शिल्लियच्	चेरै
नीरू	शैयदन	पुरवियित्	कुरमइन्	नीरै
वीरू	शैयदन	वप्परिक्	कलिनवाय्	विलाळि 872

आनैयित् मतङ्कळ-गजमद ने; आरू चैयतन-नदियाँ बनायो; अ आरै-उन नदियों को; तेरहळिन् चिल्लि-रथों के पहियों ने; चेरू चैयतन-कर्म बना दिया; अ चेरै-उस कीच को; पुरवियित् कुरम्-अश्वों के खुरों ने; नीरू चैयतन-धूल बना दिया; अ नीरै-उस बुकनी को; अ परि-उन अश्वों के; कलित् वाय्-लगाम वाले मुख (निःसृत); विलाळि-लार ने; वीरू चैयतन-फिर फाड़ दिया । ८७२

गजमद नदी बना । उस नदी को रथों के चक्रों ने पंक बना दिया । उस पंक को अश्वों के खुरों ने धूल में परिवर्तित कर दिया । उस धूल को फिर से अश्वों के मुखों की लार और झाग ने सूखा पंक बना दिया, जिसमें दरारें पड़ी रहीं । ८७२

वळङ्गु	तेरहळि	तिडिप्पोडु	वाशियि	नारप्पुम्
मुळङ्गु	वैङ्गळिर्	इदिर्च्चियु	मौय्हळ	लौलियुम्
तळङ्गु	पल्लियत्त	मलैयुड्	गडैयुहत्	ताळि
मुळङ्गु	मोदैयित्	मुम्मड्ड	गैळुन्तदु	मुडुहि 873

वळङ्कु तेरहळिन्-चलनेवाले रथों के; इटिप्पु ओटु-शब्द के साथ; वाचियि नारप्पुम्-अश्वों का हिनहिनाना; मुळङ्कु-चिघाड़नेवाले; वैम् कळिङ्कु-भयंकर गजों की; अतिर्च्चियुम्-ध्वनियाँ; मौय् कळल् औलियुम्-घनी पायलों की ध्वनियाँ और; तळङ्कु-बजनेवाले; पल् इयत्तु-विविध वाद्यों का; अमलैयुम्-स्वर सब; कटै उकत्तु-युगान्त के; आळि मुळङ्कुम्-सागर के गर्जन के; ओतैयित्-नाद से; मुम् मटङ्कु-तिगुने; मुटुकि-जोर से; अँळुन्तु-उठे । ८७३

रथों की घरघराहट, अश्वों का हिनहिनाना, भयंकर गजों की चिघाड़, वीरों की पायलों का क्वणन और अनेक बाजों का नाद, सब मिलकर युगान्त-सागर-गर्जन-ध्वनि के तिगुने जोर से उठे । ८७३

आळित्	तेरुत्तौहै	यैम्बदि	तायिर	मः(ह)दे
शूळिप्	पूट्कैक्कुन्	दौहैयवर्	इरिट्टियित्	रौहैय
ऊळिक्	काइरुन्त	पुरविमर्	इवर्इत्तुक्	किरट्टि
पाळित्	तोण्डुम्	बडैक्कलप्	पदादियित्	पहुदि 874

आळि तेर् तौकै-पहियेदार रथों की संख्या; ऐम्पत्तितायिरम्-पचास सहस्र; चूळि पूट्कैक्कुम्-मुखपट्टालंकृत गजों की भी; तौकै-संख्या; अःते-वही; ऊळि काइरु अन्त-प्रलय-पवन के समान; पुरवि-अश्व; अवर्इत् इरट्टि तौकैय-उनकी दुगुनी संख्या के; पाळि तोळ्-सबल कन्धों और; नैटुम् पटै कलम्-बड़े-बड़े हथियारों

पूरा-सारा छुप, कुल माला घाँटियाँ-शेठ जालि के छुहर गवाँ के, पुट लहसुन-पायवाँ में; परतल-कले दिखे, अछि माला कुलम-प्रभाषण रतनों की रालियाँ; मछं-इँद-सेल-संभय; उरम अँत-बय के समान; अलियाँ-शेठ करत रहे; कण माला कुलम-आँखों की गुलियाँ की रालियाँ; कबल अँत-आग के समान; कानवुव-वलन रहे; कवुपुन-गालाँ पर के; लण माला कुलम-शोतल मालियाँ की रालियाँ; मछं अँदुम-सेल-गिनत; कतिर अँत-बद के समान; लठुप-भदरे शोष १ ८७६

जलाने (सावने) : अष्टौर्जन-अपर उठ चले । ८७५

उद्यो-उद्यो डेर डूँडे (बुलावा डूँआ), द्यो-द्यो सेना उलरीलर उठ
 आयी । बड्डीं झोडं लगा गयी और संचार का स्थान हो नही रहा ।
 अष्टौ पर तपकर बनए गये और अयंकर उबालए निकालनेवाले द्विपयारी
 ने आपस में ऐसी रगडं खायी कि अगार छूटे और सवाँ को जल-सुखा द्यो
 जसे ऊपर उठ गये । ८७५

बालः; पत्नित्विष्व पृथुति-पदाति वीर्यो की संख्या; अवर्द्धितकृच्छ्र-जनकी; इतरदि-
 दृष्टिनी । ८७४

चक्ररथों की संख्या पचास हजार थी । युध्पद्मालंकार गजों की
 संख्या थी बहो । पल्लवपवन-सरोखे अथर्वों की संख्या उषको दृष्टिनी थी ।
 रथाल-रक्षक और बड़े द्विधारायों से युक्त पदाति वीर्यो की संख्या जनकी
 सप्तमिल संख्या की दृष्टिनी थी । ८७५

समान प्रकाश छूट रहा था । गालों पर शीतल मोती थे और वे मेघनिर्गत चन्द्र की-सी रोशनी फैला रहे थे । ८७६

तौक्क	दाम्बडै	शुरिकुळन्	मडन्दैयर्	तौडिक्कै
मक्क	डायर्म्	श्रियावरुन्	दडुत्तनर्	मरुहि
ओक्क	वेहुदु	मैन्ऱत्तर्	कुरङ्गिन्मुत्	नौरुवर्
पुक्कु	मीण्डिल	रैन्ऱळ	दिरङ्गितर्	पुलम्बि 877

तौक्कतु अम् पटै-जुटी उस सेना के वीरों को; चुरि कुळल्-घुंघराले केश वाली; मटन्तैयर्-स्त्रियों; तौटि कै मक्कळ्-'तौडि' नाम के कंकण पहनी हुई बेटियाँ; तायर्-माताएँ; मरु-और अन्य; यावरुम्-सभी ने; मरुकि-व्याकुल होकर; कुरङ्किन् मुत्-उस वानर के समक्ष; नौरुवर् पुक्कु मीण्डिलर्-एक भी जाकर लौट नहीं आया; अँन्ऱ-ऐसा कहकर; पुलम्पि अळुत्तु-प्रलाप करती रोयीं; इरङ्किन्-दुःखी होकर; ओक्क एकुत्तुम्-साथ जायेंगे; अँन्ऱत्तर्-कहकर; तटुत्तत्तर्-रोका । ८७७

जो वीर इकट्ठे हुए उनको, उनकी घुंघराले केश वाली स्त्रियों, तौडि नाम के कंकणधारिणी बेटियों, माताओं और अन्यो ने व्याकुलमना होकर यह कहते हुए रोका कि इस वानर के समक्ष गये वीरों में कोई भी जीवित लौट नहीं आया । हम भी साथ जायेंगी । वे विलाप करती हुई दुःख से भरकर रोयीं । ८७७

कैप	रन्दैळ	शेनैयड्	गडलिडैक्	कलन्दार्
शैय्है	ताम्वरुन्	देरिडैक्	कदिरैन्च्	चैल्वार्
मैय्ह	लन्दमा	तिरैवरु	मुवमैयै	वैन्ऱार्
ऐव	रुम्बैरुम्	बूदमो	रैन्दुमीत्	तमैन्दार् 878

ऐवरुम्-पाँचों; पैरुम् पूतम्-बड़े भूतों; ओर् ऐन्तुम् औत्तु-पाँचों के समान; अमैन्तार्-बने थे; कै परन्तु अँळु-बाजूओं में फैलकर उठी; चैन् अम् कटल् इटै-सेना के सागर के बीच; कलन्तार्-जा मिले; ताम्-उनके; चैय्कै वरुम्-निरन्तर चलनेवाले; तेर् इटै-रथ पर के; कतिर् अँत्त-सूर्य के समान; चैल्वार्-जाते रहे; मैय् कलन्त-शरीर-प्राप्त; माल् निरै-मेघपंक्तियाँ; वरुम् उवमैयै-आती हों, उस उपमा को; वैन्ऱार्-जीत गये । ८७८

पाँचों सेनापति सम्मिलित पाँचों बड़े भूतों के समान सब ओर उठकर फैल आयी सेना के सागर के मध्य जाकर मिल गये । निरन्तर चलनेवाले एकचक्र-रथ के रथी सूर्य के समान वे चले । साकार आनेवाले मेघों की पंक्ति भी उनकी उपमा के योग्य नहीं रही । वे उस उपमा को हरा गये । ८७८

मुन्दि	यम्बल	कडङ्गिड	मुडैमुडै	पीरिहळ्
शिन्दि	यम्बुरु	कौडुञ्जिलै	युरुमैन्त	तैरिप्पार्

678 እኒክሊት
879 እከሊት

[illegible]

उत्तक आगे अनेक बाए बजते जा रहे थे । उन्होंने अंगारे छिन्नरते हुए जातेवाले आरों के प्रपक, धतूआ की टंकार निकाली । प्रधास-प्राप मुनिपों और देवों का सवल श्रवण जा है, उस इतिपत्रक के समान वे आकर पुष्ट में लगे । ७७९

वारा	वनं वयक्	कुलियाम्	वरणान्वन	कपिकम्
एषा	रुनेरिडाक्	किळवमर	विममम	मुळम
डूम	वनेरनिव	वलम	मुरिव	मानम
अगि	पालवदेरे	वडेवंवया	नडेमविप	मुडेपारे

880

[illegible]

उत्तरी लक्ष्मी भूभाग ऐसी कठोर बलसमूह थी कि वासव का बलवान बल, वरुणादेव का सवल पाश, वैजिदेव दक्षिण दिशा के अधिपति यम का लोहण नीक का दण्डायुध और परमेश्वर का अपविम कठोर विजय-दंडम कीड़े भी उन पर सूई-बुझी-निशान भी नहीं बना सकता था । ८८

शूरं चित्रवर्ण-शूरसङ्करकः मयिष्ये इत-(कारिकेय स्वामी के) मोर से;
पवित्रेन-छोने गये; बल लोके-सबल पला की; पाए प्रमत्तवर्ण-प्रमत्तवल्क यज्ञा के;
अन्तरालिगे इच्छु इते-इसी के पला से; पखिलेन-छोने हुए; मुनि वेम विरक्त-मुदई
और सुन्दर पला की; इते इददे-बीच-बीच में; लीडेनेन मुखकोकि-गंधकार पुंडकर;

वीर चूडिकं—(बनाया गया) “वीर चूडा”; नैर्ऋयित्—भाल पर; कयिरु इट्टु—रस्सी से; विचित्तार्—बाँध रखा था । ८८१

उनके भालों पर ‘वीर चूडिका’ नाम के आभरण बँधे थे । वे शूर-संहारक कार्तिकेय के वाहन मोर के सबल पंखों और भूमि के सर्जक ब्रह्मा के वाहन हंस के पंखों को मध्य-मध्य गूँथकर और बटकर बनाये गये थे । ८८१

पौत्रि	णिन्दतो	ळिरावणन्	मार्बोडुम्	बौरुद
अत्रि	ळन्दको	डरिन्दिडु	मळहुळ	कुळैयर्
निन्ऱ	वन्ऱिशै	नैडुङ्गळि	यानैयि	नैर्ऱि
मिन्ऱि	णिन्दन	वोडैयिन्	वीरपट्	टत्तर् 882

पौत्र तिणिन्त-स्वर्ण (आभरण) भूषित; तोळ्—कन्धों वाले; इरावणन्—रावण के; मारु ओडुम्—वक्ष के साथ; पौरुत अन्ऱु—जिस दिन (दिग्गज) भिड़े; इळन्त कोटु—उनके टूटे दाँतों के; अरिन्तिटुम्—काटकर बने; अळकु उळ्—सौन्दर्ययुक्त; कुळैयर्—कुण्डलधारी; निन्ऱ—(हारकर जो) रहे; वल्—बलवान; तिच कळि नैटुम् पार्तयित्—मत्त दिग्गजों के; नैर्ऱि—मस्तक में; मिन् तिरिन्तु अत्त—बिजली चलती हो ऐसे; ओटैयिन्—मुखपट्ट के बने; वीर पट्टत्तर्—वीरपट्टी वाले हैं । ८८२

उनके सुन्दर कर्ण-कुण्डल दिग्गजों के सबल रावण के स्वर्णभरणभूषित कन्धों और वक्ष से भिड़ते समय टूटे हुए दाँतों के खण्डों से बने थे । उनके भालों पर की वीरपट्टिका उन मत्त दिग्गजों के बिजली की-सी चमक के मुखपट्ट से बनी थी । ८८२

इन्दिर त्रिशैयिळन् देहु वासिहल्, तन्दिमुन्, कडावित्तन् मुडुहत् तामदत्त
मन्दर वालडि पिडित्तु वल्लैयैल्, उन्नुदि नीयैन् वलित्त वूर्ऱत्तार् 883

इचै इळन्तु—नाम खोकर; एकुवान्—जो लौटकर; इन्तिरन्—इन्द्र; इकल् तन्ति—सबल-दन्ती (ऐरावत) को; मुन् कटावित्तन्—तेजी से चलाते हुए; मुटुक—जब चला; ताम्—इन्होंने; अतन् मन्तर वाल्—उसकी कोमल दुम के; अटि पिडित्तु—मूल को पकड़कर; वल्लैयैल्—शक्त हो तो; उन्नुति नी—चलाओ तुम; अत्त—कहकर; वलित्त—छींचा, ऐसे; ऊर्ऱत्तार्—बलशाली । ८८३

रावण से लड़ाई में अपना यश गँवाकर इन्द्र जब पीठ दिखाकर भागने लगा, तब उसने अपने दन्ती ऐरावत को शीघ्र-शीघ्र चलाया । तब इन सेनापतियों ने ऐरावत की पूँछ का मूलभाग पकड़ लिया और कहा कि शक्त हो तो आगे चला लो । वे ऐसे बलशाली थे । ८८३

निदिनैडुड्	गिळवत्तै	नैरुक्कि	नीणहर्प्
पदियौडुम्	बैरुन्दिरुप्	परित्त	पण्डैनाळ्

हृदय

निमित्त आग्रहकारी १५८

၂၀၁၁ | ၂၆ ဩဂုတ် ၂၀၁၁

कालिका कालिका कालिका कालिका

परी और क्षमा की! कटिबारे-बोध विद्या, ऐसे दि० । २५

और राजा की वीणा था । २८५

988 වෘත්ත විකල්ප පද විකල්ප

शांति वार्ता । २५

वे पर्वतों की हँसी उड़ानेवाले वक्षःस्थल के हैं। समुद्र की उत्तुंग तरंगों का परिहास करनेवाले (ऊँचे) कन्धों के हैं (या लम्बी भुजाओं के हैं)। इनके खूनी कार्यों के सामने यम के मारक कार्यों की कोई गिनती ही नहीं थी। उनकी आँखें लुहार की फूँकी जानेवाली भट्टी का परिहास करनेवाली थीं यानी वे लाल थीं और आग बरसानेवाली थीं। ८८६

तोल्हिळर्	तिशैदीरु	मुलहैच्	चुर्इयि
शाल्हिळर्	मुळङ्गैरि	तळङ्गि	येइनुम्
काल्हिळर्न्	दडिप्पिनुङ्	गालङ्	गंयुइ
माल्हडल्	किळरिनुम्	जरिक्कुम्	वन्मैयार् 887

कालम् के उइ-प्रलयकाल के समीप आने पर; तोल् किळर्-दिग्गज-शोभित; तिचै तोइम्-आठों दिशाओं में; उलकै चर्इयि-सारे लोक को घेरकर; चाल् किळर्-खूब बढ़कर; मुळङ्कु अँरि-शोर के साथ जलनेवाली (प्रलय-) अग्नि; तयङ्कि एइत्तुम्-और जोर से उठे तब भी; काल्-पवन; किळर्न्तु-उठकर; अटिप्पितुम्-अत्यधिक जोर से बहे तब भी; माल् कटल्-बड़े सागर; किळरिनुम्-उमग आएँ तब भी; चरिक्कुम्-संचार करेंगे, ऐसे; वन्मैयार्-साहसी हैं। ८८७

युगान्त में जब दिग्गज-पालित दिशाओं में और अन्य सभी स्थानों में शब्द के साथ जलनेवाली आग उठे, और भयंकर आँधी बहे, और सारे सागर उमग आवें तो भी ये उनकी कुछ परवाह न करके घूमने का साहस रखनेवाले हैं। ८८७

इव्वहै यैवरु मैळुन्द तानैयर्, मौय्हिळर् तोरण मदत्तै मुइरिनार्
कैयोडु कैयुइ वेणियुङ् गट्टिनार्, ऐयनु मवरनिलै यमैय नोक्किन्नान् 888

इ वकै-ऐसे; ऐवरुम्-पाँचों सेनापतियों ने; मैळुन्द तानैयर्-चढ़ जानेवाली सेना के; मौय् किळर्-प्रबल रूप से विद्यमान; तोरणम् अतत्तै-तोरण को; मुइरिनार्-घेरकर; कैयोडु कैयुइ-एक बाजू से दूसरा लगाकर; अणियुम् कट्टितार्-सेना के भाग खड़ा किये; ऐयनुम्-महिमावान (हनुमान) ने भी; अवर् निलै-उनकी स्थिति; अमैय-खूब; नोक्किन्नान्-देख ली। ८८८

ऐसे पाँचों सेनापति अपनी बड़ी आयी सेना को लेकर शक्तियुत उस तोरण को घेर गये। उन्होंने सेना को दलों में विभाजित कर बाजूओं में मिल जाएँ, ऐसे व्यूहों में खड़ा कर दिया। महिमावान हनुमान ने उनकी स्थिति खूब निहारी। ८८८

अरक्कर्त्तु मारुडलु मळविल् शेत्तैयिन्, तरुक्कुमम् मारुदि तत्तिमैत् तन्मैयुम्
पौरुक्कैन् नोक्किय पुरन्द रादियर्, इरक्कुमु मवलमुन् दुळक्कु मैय्दितार् 889

अरक्कर् तम्-राक्षसों की; मारुडलुम्-शक्ति और; अळवु इल्-अमाप; शेत्तैयिन् तरुक्कुम्-सेना का गर्व; अ मारुति-उस हनुमान के; तत्तिमै तन्मैयुम्-और

कृतक कवि; अर्थविमर्श-अविमर्श कवि । २०२

सहाय्यता, ई.व. और अयकपन के भाव जो । ८८९

[illegible]

०५३ । ११११ ७५

[illegible]

अनेक
राष्ट्रवादी
जनता

१६८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

১১৫। ; (১৮৫১ খ্রিঃ) ১৮৫১ খ্রিঃ ১৮৫১ খ্রিঃ

महोदयः विद्यमानम् कथं च १९७२

अ इदं-तब; अनुमत्तुम्-हनुमान ने भी; अमरर् कोन्-देवराज; नकर् वायिल्
निन्नु-के नगर के द्वार से; इ वळि-यहाँ; कौणर्नु वेत्त-जो लाकर रखा गया
था; मा चे-अधिक लाल रंग की; ओळि-रोशनी से युक्त; तोरणत्तु-तोरण के;
उम्पर-ऊपर; चेण् नैट्टु-बहुत दूर; मी उयर्-ऊपर तक गये; विचुम्पैयुम् कटक्क-
आकाश को भी पार करते हुए; वीङ्किन्नान्-(फूला)विराट् रूप लिया। ८६२

तब हनुमान ने उस तोरण पर खड़े होकर विराट् रूप धारण कर
लिया। वह बड़ा तोरण देवेन्द्र के नगर के द्वार से लाकर इधर रखा गया
था और लाल स्वर्ण का बना था। हनुमान इतना ऊँचा बढ़ा कि आकाश
की चोटी को भी पार कर गया उसका सिर। ८९२

वीङ्गिय	वीरनै	वियन्तु	नोक्किय
तीङ्गिय	लरक्करुन्	दिरुहि	नार्शिनम्
वाङ्गिय	शिलैयितर्	वळङ्गि	नार्पडै
एङ्गिय	शङ्गित	मिडित्त	पेरिये 893

वीङ्किय वीरनै-उस तरह बड़े बने वीर को; वियन्तु नोक्किय-विस्मित होकर
देखनेवाले; तीङ्कु इयल्-परपीडन-स्वभाव के; अरक्करुम्-राक्षसों ने भी; चित्तम्
तिरुक्कार्-कोप में बढ़कर; वाङ्किय विलैयितर्-कुंचितधनु होकर; पटै वळङ्किन्नान्-
अस्त्र बरसाये; चङ्कु इतम् एङ्किय-शंखों ने ध्वनि निकाली; पेरि इटित्त-भेरियों
ने नाद किया। ८६३

नृशंसकारी राक्षसों ने उस वीर का ऐसा बड़ा आकार विस्मय के
साथ देखा, उनका कोप भी बढ़ा। उन्होंने धनुष उठाकर शरों को
हनुमान पर चलाया। तब शंख वज उठे और भेरियाँ ठनकीं। ८९३

अैरिन्दन	रैय्दन	रैण्णि	इन्दन
पौरिन्देळु	पडैक्कल	मरक्कर्	पोक्किन्नार्
शैरिन्दन	मयिर्पुउन्	दित्तवु	तीर्वुउच्
चौरिन्दन	वैनविरुन्	दैयन्	ळुङ्गिन्नान् 894

अरक्कर्-उन राक्षस वीरों ने; पौरिन्तु अैळु-अंगारे छोड़ते हुए उठ जानेवाले;
अैण् इरुन्तत्त पटै कलम्-असंख्यक हथियारों को; अैरिन्तत्तर् अैय्त्तत्तर्-फेंके, चलाये;
पोक्किन्नार्-हनुमान पर मारे; मयिर् पुउम्-रोमों के मध्य; चैरिन्तत्त-जो लगे;
तिन्नु तीर्वु उउ-खुजली मिटाते हुए; चौरिन्तत्त अैन्त-खुजलाते जैसे रहे; इरुन्तु-
उस स्थिति में रहकर; ऐयन् तूङ्किन्नान्-श्रेष्ठ हनुमान तन्द्रित रहा। ८६४

राक्षसों ने हथियार फेंके और चलाये। वे अंगारे छोड़ते हुए बढ़
आये, आकर हनुमान की खुजली को मिटाते-से उसके शरीर के बालों के
मध्य जाकर ठहर गये। उस स्थिति में हनुमान थोड़ा तन्द्रित बैठा
रहा। ८९४

रथों को तोड़ दिया । उन रथों के पहियों से मारकर वीरों के प्राण हर लिये । उनकी तलवारों से दामालंकृत अश्वों को काटकर मिटाया । ८९७

इरण्डुते	रिरण्डुकैत्	तलत्तु	मेन्दिवे
रिरण्डुमाल्	यानैपट्	टुरुळ	वैरुमाल्
इरण्डुमाल्	यानैहै	यिरण्डि	तेन्दिवे
रिरण्डुपा	लिनमुवरुम्	वरियै	यैरुमाल् 898

इरण्डु तेर्-दो रथों को; इरण्डु कै तलत्तुम्-दोनों हाथों में; एन्ति-उठा लेकर; वेरु इरण्डु-अन्य दो; माल् यानै-दो बड़े गजों को; पट्टु उरुळ-मारकर लोट जायें, ऐसा; वैरुम्-मारता; कै इरण्डिन्-अपने दो हाथों में; इरण्डु माल् यानै-दो बड़े गजों को; एन्ति-उठाकर; इरण्डु पालितुम्-दोनों ओर; वेरु वरुम्-अलग आनेवाले; वरियै वैरुम्-अश्वों पर दे मारता । ८९८

हनुमान दोनों हाथों में दो रथ उठाता और उनको चलाकर दो बड़े गजों को मारता और गज लुढ़क जाते । फिर दो बड़े-बड़े हाथी उठाते और दोनों ओर आनेवाले अश्वों पर पटककर उन्हें निपात देता । ८९८

मायिर	नैडुवरै	वाङ्कि	मण्णिलिट्
टायिरत्	तेरपड	वरैक्कु	मालळित्
तायिरड्	गळिरुडैयोर्	मरत्ति	तालडित्
तेयैनु	मात्तिरै	यैरुडि	मुरुमाल् 899

मायिरम्-पास रहे; नैडु वरै-बड़े पर्वतों को; वाङ्कि-अनायास उखाड़कर; आयिरम् तेर्-सहस्र रथों को; पट-मिटकर; मण्णिल् इट्टु-भूमि पर डालकर; अळित्तु अरैक्कुम्-बुकनी बनाते हुए पीसता; एय् अँतुम् मात्तिरै-'ए' कहने मात्र के अन्दर; आयिरम् कळिरुडै-सहस्र गजों को; ओर् मरत्तिताल्-एक पेड़ से; अटित्तु अँरुडि-मार-पीटकर; मुरुडुम्-हत करता । ८९९

हनुमान पास रहे एक बड़े पर्वत को आसानी से उखाड़कर उठा लेता और सहस्रों रथों को भूमि पर डालता और तोड़कर बुकनी बना लेता । 'ए' कहने के समय के अन्दर एक वृक्ष से सहस्रों गजों को पीटता और निपात देता । ८९९

विशैयिन्मान्	इरुहळुड्	गळिरुम्	विट्टहल्
तिशैयुमा	हायमुज्	जैरियच्	चिन्दुमाल्
कुशैहीळ्पाय्	परियोडुड्	गौरुड्	वेलौडुम्
पिशैयुमा	लरक्करैप्	पैरुङ्ग	रङ्गळाल् 900

विशैयिन्-अति क्षिप्र गति से; मान् तेरुहळुम्-अश्वयुक्त रथों; कळिरुम्-गजों को; विट्टु-उछालकर; अकल् तिचैयुम्-विशाल दिशाओं और; आकायमुम्-आकाश में; जैरियै-ठस भर जायें, ऐसा; चिन्दुम्-छितरा देता; अरक्करै-राक्षसों को; पैरुम्

००३ । १२३ २१५ २५५११-५५५११

[illegible]

ક્રીડકક્ષીસવર્ણ રત્નપાલક જાડકર્ણ ગુણવર્ણ 106

सिद्धिपदः ; कृतिशक्तिम्-कृतवतः ; कदाचित्कृतम्-कदाचित् ; कृतिविम-वस्तु- १०३ ।

७०४ । १२३ ॥ १२३ ॥ १२३ ॥ १२३ ॥ १२३ ॥ १२३ ॥

706 ପଞ୍ଜିକା ପଞ୍ଜିକା ମହାବିହାରୀ ପଞ୍ଜିକା

पाने-बूँदे जाते । ३०२

८०४ । एतत् एव-एवञ्च ह एहि एव एव एव एव एव

तारौडु	मुखौडुन्	दडकुकै	याडुन्ति
वीरन्विट्	टैडिन्दन्	कडलिन्	वीळ्वन्
वारियि	नैळुशुडर्क्	कडवुळ्	वातवन्
तेरितै	निहर्त्तन्	पुरवित्	तेरहळे 903

तन्ति वीरन्-अद्वितीय वीर ने; तट कैयाल्-विशाल हाथों से; विट्टु अँडिन्तन्-जिनको उठा फेंका; पुरवि तेरकळ्-वे अश्व-सहित रथ; तार् ओटुम्-घंटियों की माला के साथ; उरुळ् ओटुम्-पहियों के साथ; कटलिल् वीळ्वन्-समुद्र में जा गिरे, तब; वारियिन्-समुद्र से; अँळु-उगनेवाले; चुटर् कटवुळ्-किरणमाली; वातवन्-सूर्य-देवता के; तेरितै-रथ की; निकर्त्तन्-समानता कर रहे थे । ६०३

अद्वितीय महावीर द्वारा फेंके गये अश्व-जुते रथ गुरियों से युक्त दामों के साथ और पहियों के साथ समुद्र में जा गिरते हैं । तब वे समुद्र से उग आनेवाले किरणमाली सूर्यदेव के रथ की समता करते । ९०३

मीयुड विण्णिडै मुट्टि वीळ्वन्, आयर्प्पुन् दिरैक्कड लळुवत् ताळ्वन्
ओय्वन् पुरविवा युदिरड् गाल्वन्, वायिडै यैरियुडै वडवै पोत्तुवे 904

मी विण् इटै-ऊपर आकाश में; उड-लगे ऐसा; मुट्टि-जाकर टकराकर; वीळ्वन् आय-गिरकर; पँरुम् तिरै-उत्तुंग तरंगों के; कटल् अळुवत्तु-समुद्र की गहराई में; आळ्वन्-डूबनेवाले; ओय्वन्-शिथिल पड़े; पुरवि-अश्व; वाय् उतिरम् काल्वन्-मुख से रक्त वमन करते; वाय् इटै-मुख में; अँरि उटै-अग्नियुक्त; वडवै पोत्तु-बड़वाग्नि के समान लगे । ६०४

हनुमान के द्वारा ऊपर उछाले गये अश्व आकाश में जाकर टकराकर नीचे गिरते और उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र की गहराई में डूब जाते और निष्क्रिय बन जाते । तब अपने मुखों से रक्त निकालते हुए वे अग्निमुखी बड़वाग्नि के समान लगते । ९०४

वरिन्दुड	वल्लिदिड्	चुड्डि	वालिन्नाल्
विरिन्दुड	वीशलिड्	कडलिन्	वीळ्वुन्
तिरिन्दन्	शैरिक्कियिड्	उरवि	ताड्डि
अरुन्दिरन्	मन्दर	मत्तैय	रायित्तार् 905

वालिन्नाल्-पूँछ से; वल्लितिन्-कसकर; उड चुड्डि वरिन्दु-खूब लपेट बाँधकर; विरिन्दु उड-बहुत दूर; वीचलिन्-फेंकने से; कटलिल् वीळ्वुन्-समुद्र में जो गिरे वे; तिरिन्दन्-धूमे; चैडि कयिर्कु अरविन्नाल्-मोटी नेती, (वासुकी) सर्प से; तिरि-धूमनेवाले; अरुम् तिरुल्-बहुत बलवान; मन्तरम् अत्तैयर्-मन्दरपर्वत के समान; आयित्तार्-बने । ६०५

हनुमान अपनी पूँछ लपेटकर कसकर बाँध लेता, बहुत दूर जा गिरे,

ऐसा बीरों की धूमकर फंक देता। वे समुद्र में जा गिरते और (जड़ के समान) धुँसते। वे तब वायुकी की मोटी बेनी द्वारा घमाये गये प्रवल व सुबह मन्दरप्रवाल के समान लगते। १०५

वीरनेवर्ग	उत्कर्षण	लङ्घन	वीर्य
वारमदक	कठिखिख	उरि	वाशिष
मृद्व	गडगुडक	कड	धुनदिव
ऊरिनेव	गुहिया	उरिप	वीरि 906

वीर्य-महावीर द्वारा; वसे नद कागल-समयल वडे हवा से; अद्वैत-उत्कार; वीर्य-फंक गये; वार-वडेवाले मय के; कठिखिख-गवा से वा; नेर-रवा से वा; वाशिष-अवा से वा (अधिक बेनी से); ऊरि-लका से वडी; वसे ऊरिल आठ-मयकर रवल-नदी द्वारा; डुरप-विचकर; आदिव-जी चल वे; मृि वसे कडल-वडे और मयकर समुद्र में; गुक-डवने के लिए; कटि सुनेलिव-आगे गये। १०६

महावीर के द्वारा उसके सबल और विद्याल हवा से फंक जाकर मन्दरावी गज और अथव बेनी से समुद्र की ओर गये। पर उससे भी अधिक बेनी से जाते रहे समुद्र में डूबने के वारने वे गये, जिनकी लंका में बहनेवाली रवल की नदी गिरते खोच ले जा रही थी। १०७

पिङ्ककड	मृखिखिख	पिलनेलि	वापि
कडपुव	पुखिखिख	उमिख	गुगुलि
उरपुड	पडिप	वडिनेव	वाककेड
मडनेव	मडरनी	रगनेव	वावे 907

उरपु उठ-अपने पर खल ली (वै); पडिप-इधारा के साथ रडेनेवाले; पिङ्क कडे अखिखिख-चन्द्रकला के समान नीकदार दाँव वाले; पिलनेलि वापि-पिल-सरीखे गुली वाले; कड पुवल-विपकनेवाले रवल-जल की; पुखिखिख-अंगार के साथ; उमिख कगुलि-जालनेवाली आवा के; उरिनेव वाककेकडे-नीचे गिरे पडे (राक्षसों के) सुनक शरीर (डर); वावे उठ-आकाश तक जाकर; मकर नीरगनेव-मकराकार नीरग की; मडनेव-डक विधा (डर से)। १०८

गडे इधारा के साथ चन्द्रकला-सदृश वक दाँव, पिल के समान गुली और विपविध रवल के साथ आग जालनेवाली आवा से युवल राक्षस-शरीरों का डेर डलना ऊँचा था कि मकर-नीरग डी डक गया। १०९

कुनेड	मरम	कुलङ्गी	वेडे
अखिखिख	पलव	वपिख	वावे
पुनेव	पलख	रुप	कपिपिल
पुनेव 908			

कुन्त्र उळ-पर्वत हैं; मरम् उळ-पेड़ हैं; कुलम् कौळ-श्रेष्ठताधुवत; पेर् अळु-बड़े लौहदण्ड; औन्त्र अल-एक नहीं; पल उळ-अनेक हैं; उयिर् उण्पात्-जीव-खादक (यम); उळन्-है; अत्तिन्-शत्रु; पलर् उळर्-अनेक है; ऐयन् कैयितिल्-उत्तम (महावीर) के हाथों; पौन्त्रवतु अल्लतु-बिना मरे; पुत्तु पोवरो-अलग जा सकेंगे क्या । ६०८

हनुमान उठाकर फेंके, उस काम में आने के लिए पर्वत थे, पेड़ थे और श्रेष्ठ तथा बड़े लौहदण्ड अनेक प्राप्य थे । और जीवभक्षक यम भी प्रस्तुत था । मरने के लिए राक्षस भी अनेक थे । फिर क्या था ? बिना मरे वे कहीं बचके अलग जायेंगे क्या ? । ९०८

मुळुमुदर्	कण्णुदन्	मुरुहन्	डावैकैम्
मळूर्वत्तप्	पौलिन्दौळिर्	वयिर्	वान्त्रत्ति
अळुविनिर्	पौलङ्गळ	लरक्क	रीण्डिय
कुळुविनैक्	करियैत्तक्	कौन्त्र	नीक्कितान् 909

मुळु मुतल्-सर्वेश्वर; कण्णुतल्-भालनेत्र शिवजी; मुरुहन् तातै-‘मुरुगन’ (कार्तिकेय) के पिता के; कै मळु अतै-हाथ के परशु (या तप्त लौहखण्ड) के समान; पौलिन्तु औळिर्-शोभते हुए प्रकाश छिटकानेवाले; वयिर्-वज्रकठोर; वान्-श्रेष्ठ; तत्ति-अनुपम; अळुवितिल्-लौहदण्ड से; पौलम् कळल्-स्वर्ण-पायलधारी; अरक्कर्-राक्षसों के; ईण्टिय कुळुविनै-एकत्रित झुण्ड को; करि अतै-गज को जैसे; कौन्त्र नीक्कितान्-मारकर दूर किया (हनुमान ने) । ६०९

कार्तिकेय (तमिळ में मुरुगन, वेलन आदि नाम हैं उनके) के पिता, परमेश्वर और भालनेत्र शिवजी के हाथ के फरसे (या तप्त लोहे) के समान हनुमान का लौहदण्ड वज्र-सम कठोर, उज्ज्वल और अनुपम था । शिवजी ने अपने फरसे से जैसे गज को मारा था, वैसे ही हनुमान ने अपने लौहदण्ड से स्वर्णपायलधारी राक्षसों के इकट्ठे समूह को मारकर दूर किया । ९०९

उलन्ददु तानै युवन्दन रुम्बर्, अलन्दलै युर्ददव् वाळि यिलङ्गै
कलन्द दळुङ्गुरल् कण्डत्तर् निन्त्र, वलन्दरु तोळव रैवरुम् वन्दार् 910

तातै उलन्ततु-सेनाएँ मिटीं; उम्पर् उवन्तत्तर्-देव हर्षित हुए; अ आळि इलङ्कै-वह समुद्रावृत लंका; अलम् तलै उर्दु-दुःख से अभिभूत होकर; अळुम् कुरल्-रुदनस्वर से; कलन्ततु-भर गया; कण्डत्तर्-देखते; निन्त्र वलम् तरु-जो खड़े रहे वे बलवान; तोळवर् ऐवरुम्-कन्धों वाले पाँचों; वन्दार्-आये । ६१०

सेनाएँ मिटी । देव हर्षित हुए । उस समुद्रवलयित लंका में दुःख फैला और रुदनस्वर भर उठा । सबल भुजाओं वाले पाँचों सेनापतियों ने उसे देखा । वे हनुमान से युद्ध करने के लिए सामने आये । (उनके नाम वाल्मीकि के अनुसार, विरूपाक्ष, यूपक्ष, दुर्धर, भासकर्ण और प्रधस थे ।) । ९१०

ईरनेले श्रमवृत्त लकक रिळकेक, तेरेलेवा पाळि पळनेलेनरे श्रमरे
 आरेनेलेन रागिर श्रमवाले, तेरेनेलेन रजेनेलेन तेरेनेलेन श्रमरे 911
 श्रमवृत्त-रकनपवाहे के; ईरेले श्रम-वाले जाने से बने; अकक-बावुआ
 के टीले के; ईळके-वाले से; तेरे गुण आळ-रखे के चकटये के; अळनेलेनरे-
 वाले गुण; श्रमरे-वाले से उन पाये से; अळनेलेन-अजगपन का;
 पुरेरे-सामग लिपि; आरेनेलेनरे-नारे उठले; आगिरस आगिरस अमपावे-सहेल
 सहेल शरी से; तेरेनेलेनरे-उसके शरीर को ठक दिया । ९११

अपुद कडुकेण पावु सुपद, नपुदहे सुपवडि कहेळि मरेप
 पापुदहे जोगेण पापुदहे नपुदहे, पापुद कडुमवादि पापुद पापुदहेनेलेन 912
 अपुद-प्रतिन; कडुम कण-घातक शरीर को; पावुपु अयुत-किरी को पास
 न आने देते हुए; नपुद अकपुपडि-आसानी से हट जाए, ऐसा; कडुमरे मरे-
 जोगे से प्रगतिव कर मिडकर; पापुद-अदर काडकर; अकडु आगेण पापुदनेलेन-वाले
 से लगाये गये; नपुद तेरे सुपद-वडे रख से बने; कडुम पापुद आगेण-गोपगामी पावे,
 एक, को; श्रमनेलेनरे-मिडया । ९१२

उरुऊ तेरेवादे पापु सुपदनेलेन, मुरेन वागेन मुनिनेलेन
 पापुदरे पापुदरे पापुदरेनेलेन, मुरेन नः(हे)दवम विनेलिने लेरेने 913
 उरुऊ उरु-पाव लिखसे लगा था; तेरे-उस रख के; विनेया मुने-लिख-लिख
 हो जाने से पडले; उरुनेनेलेन-राखस ऊपर उठा; मुरेन वागेन-रीकवे हुए लिखने
 उसे घरे लिपि, उस महावीर से; वागेन-आकाश से हो रहकर; मुनिनेलेन-
 लडा; पापु लिख-काले स्वर्ण के बने; नोले अळ आगेण-लारे दण्ड को; पापुदनेलेन-
 उठा लेकर; अरेनेलेन-(हे)मुमान ने) पापु; अ.वृ-उसको; अवने-उस निगावर
 ने; विनेलिने-अपने धनु पर; पुरेने-रीक अले लिपि । ९१३

पाव-लगा रख टूट जाय, इसके पडले ही राखस-सेनापति (पाव से
 एक) ऊपर आकाश से उठल गया । वही भी हेमुमान ने उसे घरे लिपि,
 जो वही से वडे लडने लगा । काले स्वर्ण (नोले) के बने एक दण्ड को
 लेकर हेमुमान ने उस पर महीरे लिपि । राखस ने उसे अपने धनु पर
 रीक लिपि । ९१३

मुरिन्ददु मूरिवि लम्मुरि येहौण्, डेरिन्द वरक्कन्नोर् वैरूपै यैडुत्तान्
अरिन्द मन्तत्तव नन्दवै लुक्कीण्, डेरिन्द वरक्कन्नै यिन्नयि रुण्डान् 914

मूरि विल-बलवान धनु; मुरिन्तनु-टूटा; अ मुरिये कौण्डु-उसके खण्ड को ही लेकर; अरिन्त अरक्कन्-जिसने फेंका उस राक्षस ने; ओर् वैरूपै अँडुत्तान्-पर्वत को उठाया; अरिन्त मन्तत्तु अवन्-उसको ताड़नेवाले मन के हनुमान ने; अन्त अँडु कौण्डु-उस दण्ड को लेकर; अरिन्त अरक्कन्नै-फेंकनेवाले राक्षस को; इन् उयिर् उण्डान्-ध्यारे प्राणों से हीन बना दिया (मार दिया) । ६१४

धनु टूटा । उसके टोटे को हनुमान पर फेंकने के बाद राक्षस ने एक पर्वत को उठाया । हनुमान उसका अभिप्राय समझ गया । उसने उसी दण्ड से उस राक्षस के प्राण हर लिये, जिसने उस पर धनु का टोटा फेंका था । ९१४

ओळिन्दवर् नाल्वरु मूळि युरुत्त, कौळुन्दुरु तीर्यन्त वैज्जिलै कोवाप्
पौळिन्दवर् वाळि पुहैन्दन कण्गळ्, विळुन्दन्त शोरियव् वीरन् मणित्तोळ् 915

ओळिन्तवर् नाल्वरुम्-बाक्री रहे चारों ने; ऊळि-युगान्त में; उरुत्त-क्रोध से (भभक) उठी; कौळुन्तु उरु-ज्वालामयी; ती अँत-आग के समान; वैम् चिलै-सन्तापक चापों में; कोवा-सन्धान करके; वाळि पौळिन्तन्तर्-शर बरसाये; कण्गळ् पुकैन्तन्त-आँखें गुँगुआयीं; अ वीरन्-उस महावीर के; मणि तोळ्-सुन्दर कन्धों से; चोरि विळुन्तन्त-रक्तकण चुए । ६१५

(एक सेनापति मर गया ।) बाक्री चारों ने युगान्त की ज्वालाओं-सहित क्रुद्ध हो उठनेवाली आग के समान भयंकर धनुओं की डोरी लगाकर शर-वर्षा की । उनकी आँखें गुँगुआयीं । उन शरों के लगने से महावीर की सुन्दर भुजाओं से रक्त-कण ढलक आये । ९१५

आयिडै वीरनु मुळ्ळ मळन्नान्, माय वरक्कर् वलत्तै युणर्न्दान्
मोयैरि युयप्पदीर् कर्च्चैल विट्टान्, तीयव रच्चिलै यैप्पोडि शैय्दार् 916

अ इटै-तब; वीरनुम्-महावीर ने; उळ्ळम् अळन्नान्-तप्तमन होकर; माय अरक्कर्-बचक राक्षसों के; वलत्तै-बल को; उणर्न्तान्-समझकर; मी-ऊपर; अँरि उय्यप्पतु-आग बरसानेवाले; ओर् कल्-एक पत्थर (पर्वत) को; चैल विट्टान्-चलाया; तीयवर्-क्रूरों ने; अ चिलैयै-उस पर्वत को; पौटि चैय्तार्-चूर कर दिया । ६१६

तब हनुमान का मन भी उद्विग्न हो उठा । उसने मायावी राक्षसों के बल को जान लिया । उसने आग निकालते हुए जानेवाले एक पर्वत को उन पर चलाया । नृशंस राक्षसों ने उसे चूर कर दिया । ९१६

तीडुत्त तीडुत्त शरङ्ग डुरन्दार्, अडुत्तहन् मार्वि तळुन्द वळन्नान्
मिडुर्त्तौळि लान्निविड तेरीडु नौय्दित्, अँडुत्तोरु वन्नुन्नै विण्णि नैरिन्दान् 917

[illegible]

मूवर्-(बाक्री) तीनों ने; मूण्ट चित्तत्तवर्-उठे क्रोध से; मुत्तिन्तार्-हनुमान पर नाराज होकर; तूण्टिय तेरर्-उकसाये गये रथ वाले होकर; चरङ्कळ्-शर; तुरन्तार्-चलाये; वैण्टिय-इच्छित; वैम् चमम्-भयानक युद्ध; वेरु विळैप्पार्-और तरह के भी करते; याण्डु-कहाँ; इत्ति-अब; एकुत्ति-जाओगे; अँनू-कहते हुए; अँत्तिर् चँन्तार्-(हनुमान के) सामने आये । ६२०

(दो चल बसे ।) बाक्री तीनों पहले ही क्रुद्ध थे । (अब उनके क्रोध का पारा और भी चढ़ गया ।) अतिक्रुद्ध उन्होंने रथ को आगे चलाते हुए शर चलाये । वे अन्य प्रकारों के युद्ध करने को भी उद्यत हो गये । 'अब तू जायगा कहाँ ?' कहते हुए वे हनुमान के सामने गये । ९२०

तिरण्डुयर् तोळिणै यन्जलैच् चिङ्गन्, अरण्डरु विण्णुर् वार्हळु मज्ज
सुरण्डरु तेरवै याण्डौरु मून्ऱिल्, इरण्डै यिरण्डु कैयिर्की उँळुन्दान् 921

तिरण्डु उयर्-पुष्ट और उन्नत; तोळ् इणै-भुजाद्वय का; अज्चत्तै चिङ्कम्-अंजना का केसरी (-सप्त पुत्र); अरण् तरु-रक्षणदायक; विण्-आकाश में; उँ-वार्कळुम्-रहनेवालों के; अज्च-डरते; आण्डु-वहाँ; मुरण् तरु-सारयुक्त; तेर् अब और मून्ऱिल्-तीन रथों में; इरण्डै-दो को; इरण्डु कैयिल् कौटु-हाथों में उठा लेते हुए; उँळुन्तान्-ऊपर उछला । ६२१

दो पुष्ट और उन्नत कन्धों वाला अंजना का सिंह (-सदृश) हनुमान सुरक्षित आकाश के वासी देवों को भी भयभीत करते हुए वहाँ रहे सुदृढ़ रथों में दो को अपने हाथों में उठा लेकर ऊपर उछला । ९२१

तूङ्गिय पाय्परि शूद रुलैन्दार्, वीङ्गिय तोळवर् विण्णिन् विशैत्तार्
आङ्गडु कण्डवर् पोयह लामुन्, ओङ्गिनन् मारुदि यौल्लैयि तुर्ऱान् 922

तूङ्गिय-लटकते हुए; पाय् परि-सरपट दौड़नेवाले अश्व; चूतर्-और सूत; उलैन्तार्-मर गये; वीङ्गिय तोळ् अवर्-स्थूल कन्धों वाले वे दोनों; विण्णिन् विशैत्तार्-आकाश में तेज चले; आङ्गु अतु कण्डु-तब उसको देखकर; अवर् पोय् अकला मुन्-उनके दूर जाने से पहले; मारुति-मारुति; ओङ्कितन्-ऊपर उठा; औल्लैयिल् उर्ऱान्-शीघ्र पास गया । ६२२

तब जो अश्व और सूत लटके रहे, वे मिटे । स्थूल कन्धों वाले दोनों राक्षस आकाश में तेजी से जाने लगे । हनुमान ने वह देखा और उनके दूर जाने से पहले उछलकर उनके पास गया । ९२२

कान्तिमिर् वैज्जिलै कैयि निरुत्तान्, आन्तवर् तूणियुम् वाळु महैत्तान्
एनैय वैम्बडै यिल्लव रँज्जार्, वान्निडै निन्ऱुयर् मल्लिन् मलैन्दार् 923

काल् निमिर्-दो छोरों के साथ तने हुए; वैम् चिलै-कठोर धनु को; कैयिन् निरुत्तान्-हाथों से तोड़ा; आन्तवर्-उनके; तूणियुम् वाळुम्-तूणीरों और तलवारों

की; अक्षरेवार्त्त-वीरुकर मिदय; एतं वृमपट-अन्य वृथियारिं से; वृमवर्त्त-
 होन वे; अक्षरार्त्त-पिळुं न्हो; वार्त्त वृट् मिम्व-आकाश से विवत होकर; उयर्
 मवलिन्-उक्कट मलयुद्ध से; मवर्त्तार्त्त-मिडं । ६२३

हेतुमान ने दोनो छोरों के साथ उठे हुए उनके कठोर धनुषों की
 अपने दोनों हाथों से पकड़कर लोड़ दिया । उनके पुण्णोरों और उनके
 तलवारों की भी लोड़कर मिटा दिया । उनके पास कोई और माल
 हथियार नहीं थे । ती भी वे पिळुं न्हो । ऊपर अनरिष से हो
 रहेकर मलयुद्ध करने लगे । ९२३

वृळ् मृपिउउर कुरुवुयर् मृयर्, पिळ विरिन पुरुमविन वायर्
 कळिळ वुरुनवळ कळिळ वीरनार्, अळिळिय वीर नरुक्कन मीरनार् 924
 वृळ् मृपिउउर-यवन दलों वाले; कुरुवु-काले; उयर् मृयर्-ऊँचे शरीर
 वाले; पिळ-ऊँडे; विरिन-बुले; पुरुम-वड़े; विन वायर्-विन के समान
 मृवो वाले; कळिळ-पकड़ने के लिए; उयर्-उठनेवाले; अळिळिय वीर-वेजीमय
 कळिळ अरव मीरनार्-गह (राहु-केव) मृ के समान वने; मवर्त्तार्त्त-वेजीमय
 मवर्त्तार्त्त; अरुक्कन मीरनार्-मृ के समान लगा । ६२४

यवन दल वाले, काले और लगाड़े शरीर वाले, ऊँचे-से विन के समान
 वड़े मृव वाले वे दोनों राहु और केव नाम के बलवान मृ-गहों के समान
 लगे, जो (मृ के) पकड़कर निगलने के लिए उठ आते हों । वेजीमय
 हेतुमान मृ के समान शोभा । ९२४

नामवर्त्त वलिन् वरिनवुयर् नाली, वृमव लिनारि वळिळ् विरुवर्त्तार्
 नामवर्त्त वीरुमिन् पटनर् वीरुवर्त्तार्, आमव वृड्मवर्त्त पालवव मिन्वार्त्त 925
 एमपव वृनार्-अथक उनके; वृ उयर् नाली आटे-दी लम्बे पुरों के साथ;
 लीळकळ-लम्बी मृजालों की; वलिन्-अपनी पूँछ से; लामु अन्न-वाम-से जड़े;
 वरिनव-बाधकर; वृड्मवर्त्त-लौंछा; लामु अन्न-सर्पों के समान; वीरुवर्त्त-
 छटकर; पटनर्-विहल होकर; वीरुवर्त्तार्-नारे; आमपव-कुम्भ के; वृड्म
 पृक्-दोष धाव, मृ; पालववर्त्त-के समान लगे रहे; मिन्वार्त्त-वड़े (हेतुमान) विना
 आँव के वड़ा रहे । ६२५

हेतुमान ने अथक उन दोनों के पुरों और कंधों की अपनी पूँछ की
 रस्सी से कसकर उनके लोड़ दिया । वे राहु और केव नाम के सर्पों के
 समान दूर दूरे; फिर नारे और मरे । कुम्भ-धाव मृ के समान हेतुमान
 (विना किसी आँव के) वड़ा रहे । ९२५

मिन्वर्त्त नैमय मिन्वर्त्त कण्णन, कुन्निड वारु कळिर् पाल
 मिन्वर्त्त वरुन मीड् कुविनवार्, मीन्विम वरुवुवि वेरुड् पुक्काम् 926
 मिन्वर्त्त-वो वड़ा रहे, वड़े; एनैम-आली रहे एक की; मिन्वर्त्त-वड़ा रहेगा!

कण्टान्-देखकर; कुन्ड इटै-पर्वत पर; वावु उड्ड-लपकनेवाले; कोळरि पोल-सिंह के समान; मिन् तिरि-बिजली के समान रह-रहकर प्रकट होनेवाले; वन् तलै मोतु-कठोर सिर पर; कुतित्तान्-कूदा; अवन् पौन्नि-वह मरकर; तेर् ओट्टु-रथ के साथ; पुवि पुक्कान्-भूमि पर गिरा । ६२६

इस भाँति जो स्थित रहा, उस हनुमान ने उन पाँच सेनापतियों में एक को अपने सामने खड़ा हुआ देखा । उसका सिर उसकी माया-शक्ति के कारण बिजली के समान रह-रहकर प्रकट हो रहा था । उस कठोर सिर पर हनुमान, पर्वत पर झपटनेवाले केसरी के समान उछलकर कूदा । उस राक्षस ने अपने प्राण छोड़ दिये और वह रथ-सहित भूमि पर गिर गया । ९२६

वज्रमुड्	गळवुम्	वैः(ह)हि	वळियला	वळिमे	लोडि
नज्जिनुम्	कौडिय	राहि	नवैशैयर्	कुरिय	नीरार्
वैज्जिन	वरक्क	रैव	रौखत्ते	वैल्लप्	पट्टार्
अज्जैनुम्	बुलन्ग	ळौत्ता	रनुमनु	मडिवै	योत्तान् 927

वज्रमुम्-वंचना और; गळवुम्-चोरी; वैः.कि-चाहकर; वळि अला-बुरे; वळि मेल् ओट्टि-मार्ग में दौड़-फिरकर; नज्चितुम् कौटियर् आकि-विष से भी नृशंस बनकर; नवै चैयर्कु-परपीडन करने में; उरिय नीरार्-प्रवृत्त गुण वाले; वैम् चित्त-भयंकर क्रोधी; अरक्कर् ऐवर्-पाँच राक्षस; ओखत्ते वैल्लप्पट्टार्-अकेले हनुमान द्वारा ही जीते गये; अज्जु अँनुम् पुलन्कळ् ओत्तार्-पञ्चेन्द्रिय के समान रहे; अतुमनुम्-हनुमान भी; अडिवै ओत्तान्-ज्ञान के समान रहा । ६२७

वे पाँचों वञ्चना और चोरी पर आसक्त, कुमारगामी, विष से भी अधिक क्रूर और नृशंसकार्यतत्पर स्वभाव वाले थे । वे पाँचों एकाकी हनुमान द्वारा मारे गये । वे पञ्चेन्द्रिय के समान रहे और हनुमान ज्ञान के समान था । ९२७

नैय्दलै	युर्ऱ	वैर्कै	निरुदरच्	चैरुवि	नेर्न्दार्
उय्दलै	युर्ऱ	मीण्डा	रौखरु	मिल्लै	युळ्ळार्
कैदलैप्	पूशल्	पौङ्गक्	कडुहितर्	काल	नुट्कुम्
ऐवरु	मुलन्द	तन्मै	यत्तैवरु	ममैयक्	कण्डार् 928

अ चैरुविल् नेर्न्दार्-उस युद्ध में जो लड़े; नैय् तलै उर्ऱ-घृत-लगे सिर वाली; वैल् कै निरुदर-शक्ति-हस्त राक्षस; उय्दलै उर्ऱ-बचकर; मीट्टार्-लौटे; ओखरुम् इल्लै-कोई नहीं रहे; उळ्ळार् अत्तैवरुम्-जो (बचे) थे वे सभी; कालन् उट्कुम्-यम भी जिनसे डरता था वे; ऐवरुम् उलन्त तन्मै-पाँचों जैसे मरे उस प्रकार को; अटैय कण्डार्-समक्ष देखकर; कै तलै-युद्धभूमि से; पूचल् पौङ्क-शोर मचाते हुए; कटुकितर्-(रावण के पास) सवेग गये । ६२८

उस युद्ध में लगे रहे घृत-मले सिर वाले भालाओं के धारक राक्षसों

स कोई भी बचकर नहीं जाता । जो बिना लड़े लिये रहे, उन्हें ये मम को भी डरातेवाले उन पाँचों का मरना प्रत्यक्ष देखा । वे युद्धस्थल से थोर मचाते हुए रावण के पास पहुँच जा पहुँचे । १२८

इहककुह मिमं नममं कुरङ्गान विरङ्गि भङ्गि
महककुह विरङ्ग नञ्जिन मारु वडु नोकि
उहककुह श्रीवला नञ्जिन वलह भङ्ग
उहककुह नोक्कुवाउरन श्रीवनेवाळ नोपव 929

कुरङ्क-वानर; नममं-हम; वडु-आज हो; इहककुहम-मार देगा; भङ्ग-हम; उहककुह-डरकर; डरङ्क-डु:खो होकर; महककुह उहकिमं-मम; नञ्जिन-मम वाली; मारु-विषयों को; वडु नोकि-डरकर देवकर; उहककुह उह-उपक; श्रीवला-शब्दों में; अळि नी अर-प्रणामिन-मम; वलकम पुंम-साराँ लोको को; वडु कळि-जलाते-से; नोक्कुवाउ नमं-भरतेवाले (रावण) के; श्रीव नळि-कण-रङ्ग; नीय-जल जाए, ऐसा; श्रीवनेवाळ-बोले । १२९

बड़ी विषयाँ “यह वानर आज हो हमें मार देगा”—यह कहते हुए डर से डु:खी और उड़िन हो रही थीं और रावण उन्हें डाँट रहा था । उपक के शब्द कहते हुए उसने इनकी प्रणालकालिन अग्नि के समान ऐसा धरकर देखा, मानी साराँ लोको को जला दे । ऐसे उसके बीसों कण-रङ्गों को क्षलपाते-से उड़ते कहे (निर्नाकिन समाचार) । १२९

नानु मुनर देया नलवख नमनेवार नोक्कम
नानविन मोळवेम पास यडुवमवार गुरिह
वातियुम वलह ङार वल्लियन महिय नरि
पुनय रिमं श्रीमलि विरुनदवके कुरङ्ग 930

पुन-प्रम; नानियुम जलनेव-सेना थी मिट गया; नलवख नमनेवार-नयक (पुन सेनापति) थी एक गय (मिट गय); नोक्क-युद्ध करते; पास रिमं-जाते के पयवाले; पास मोळवेम-हमो वडे; अडुवम-वडे थी; गुरिहिकलम-वडु न करत से; अ कुरङ्क-वडे वानर; वातियुम वलह उळार-जिन्होने आकाश को भी जीता था, उन (पाँचों) को; वल्लियन-श्रीम; महिय नरि-मार-मिटाकर; पुनय डरमं-श्रीर के न होने से; श्रीमि-आलस्य अवलम्बन कर; वलनेव-रहा; अडुव-उड़तेवाले) कहा । १३०

मालिक ! सेनाएं सब (मिट) गयी है । नयक भी एक (मार) गये । युद्ध के बाद हम हो वडे । यह भी हमने लड़ाई में भाग नहीं लिया, इस वजह से । यह वानर अतिश्रीम देवलीकविजयी पाँचों सेनापतियों को मारकर योद्धा न होने के कारण आलस्य का अवलम्बन करके सब वडा रहा है । १३०

10. अक्ककुमारन् वदैप् पडलम् (अक्षकुमार-वध पटल)

केट्टलुम् वैहुळि वैनदीक् किळर्न्दळु मुयिर्प्प ताहित्
 तोट्टलर् तैरियन् मालै वण्डौडुम् जुक्कौण्डे डेर
 ऊट्टरक् कुण्ड पोळु नयनत्ता तौरुप्पट्ट टानैत्
 ताट्टुणै तीळुडु मैन्दन् इडुत्तिडै तरदि यैन्नान् 931

केट्टलुम्-सुनते ही; वैकुळि वैम् ती-क्रोध रूपी भयंकर अग्नि; किळर्न्दु
 अल्लुम्-भभक उठे ऐसा; उयिर्प्पन् आफि-लम्बी साँस छोड़नेवाला वनकर; तोट्टु
 अलर्-विकसित दलों के; तैरियल् मालै-चुने हुए फूलों की माला; वण्डु औट्टुम्-
 भ्रमरों के साथ; चुक्क कौण्डु एर-जल-झुलस जाय, ऐसा; ऊट्टु अरक्कु उण्ट
 पोळुम्-लाख जिनमें भरी हो, ऐसी; नयनत्तान्-आँखों के साथ; तौरुप्पट्टात्तै-
 (लड़ने को) उद्यत उसको; ताळु तुणै तीळुत्तु-चरणद्वय पर नमस्कार करके; तट्टुत्तु-
 रोककर; मैन्दन्-पुत्र (अक्षकुमार) ने; इट्टै तरत्ति-मुझे अवकाश दीजिए; यैन्नान्-
 कहा । ६३१

सुनते ही रावण की साँसें क्रोधाग्नि के साथ लम्बी उठीं। उसकी
 आँखें लाख के समान लाल हुईं और उनसे निकलनेवाले उष्ण से विकसित
 दल वाले और श्रेष्ठ फूलों की माला भ्रमरों के साथ झुलस गयी। वह
 युद्धोद्यत हुआ। तब अक्षकुमार ने उसके दोनों पैरों पर नमस्कार करके
 उसे रोका और निवेदन किया कि मुझे मौका दीजिए। (अक्षकुमार
 रावण का ही पुत्र था। मन्दोदरी के पेट से इन्द्रजित् के बाद
 जनमा ।) । ९३१

मुक्कणा नूर्दि यन्त्रे मूवुल हडियिर् रायोन्
 ओक्कवूर् पडवै यन्त्रे यवन्नरुयि लुरह मन्त्रे
 तिक्कय मल्ल देपुन् कुरङ्गिन्मेर् चेरि पोलाम्
 इक्कड तडियेर् कीदि यिरुत्तियोण्डि डित्तिदि तैन्दाय् 932

अैन्ताय्-पिताजी; मुक्कणान् ऊर्त्ति अन्त्रे-त्रिनेत्र शिवजी का वाहन (बैल)
 तो नहीं; मू उलकु-तीनों लोकों को; अडियिल्-पैरों से; तायोन्-जिसने लाँघकर
 नापा; ओक्क ऊर्-(उस विष्णु के) युक्त रूप से सवारी बने; पडवै अन्त्रे-पक्षी
 भी नहीं; अवन् तुयिल्-जिस पर वह सोता है, वह; उरकम् अन्त्रे-उरग नहीं;
 तिक्कयम् अल्लते-दिग्गज भी नहीं; पुन् कुरङ्किन् मेल्-अल्प मर्कट पर; चेरि
 पोलाम्-आक्रमण करो क्या; इ कटन्-यह कर्तव्य; अडियेर्कु ईति-दास मेरे पास वे
 दें; ईण्डु-इधर; इत्तिन्-मुख से; यिरुत्ति-आप रहें । ६३२

अक्षकुमार आगे बोला। पिताजी! क्या वह त्रिनेत्र का वाहन,
 बैल आ गया कि आप स्वयं जायें लड़ने के लिए? या त्रिलोकमापक
 त्रिविक्रमदेव विष्णु का वाहन गरुड़ पक्षी है? वह उसकी शय्या उरग भी
 नहीं है न! दिग्गजों में कोई भी नहीं। अल्प वानर है, उस पर चढ़

चलीये ? यह कर्तव्य मुझे सौंप दीजिए । आप यहाँ निप्रचरित के साथ रहिए । १३२

अण्डरहोम खूबेप परखने नरहेन वडिये निरकक
कौण्डने धूमधुने खूबेप पण्डन नरखडे गौण्ड
हण्डु नीर मखे पुरनिनाक कुरडेगोने खूमे
अण्डिगो वरेख नीय यवदि यवने धरेखने धरेखने 933

अधिये निरक-मेरे (बास के) रहने; अने धुने नरने-मेरे खेख (अनगद) से; अण्डर कोमे नरने-देवराज को; परखि नरक-एकडे लाओ; अने-ऐसा; पण कौण्डने-वडे सेवा आपने करता ली; अने-ऐसा; नरवम कौण्डने-मेरे मन से सेवा; उण्डे-या; उरने डल-निबल; कुरक अनेखेमे-बानर भी हो ली; अने-वडे नरय; नीरम अने-देर हो ली न; अण्ड निबे वरेख-आठ दिशाओं के निबयो; नीय-आप हो; अनेमे पुरनि-मुख अने; अनेख-कहा । ६३३

पहले भी, मेरे रहने आपने मेरे वडे याडे भयनाद को देवेन को एकडे काते का काय सौंपा और उनसे सेवा करता ली । नभी मेरे मन से यह बात लगी थी । अब निबल बानर हो सही, एक मौका दीजिए, ली वडे एक मिटेगी न । आठो दिशाओं के निबोता, आप हो स्वयं मुझे उस काय पर जाने की आज्ञा दीजिए । १३३

कौण्डिरे कौडेम बाळककक कौडरने वरव कौण्ड
कवडे गण्णो योण्डेरे थिळिपुळे थिळककडे गडेपाल
अधिये निभया मुकक योशने धुने धुने धुने
नीपुदिनिने वरेख परखने नरखेने नीडिपि नरेवाने 934

इसेया-जी पलक नही मारने; मुककण्डे वने-निब पुरमेखर स्वय; कौप निर किये-नीडे हिए पलव लाते का; बाळकक-जीवन निबनिबाले; कौडरनेने उरव कौण्ड-बानर का रूप धरकर; कौनवम कण्णो-बवना सेवकर; ईण्डे-यहो; और विडि थिळ-एक छोटा अपराध; इळककम कडेपाल-करने की परिकल्पना लेकर; अधियेने अनेख पौधम-आप हो ली थी; नीपुदिनिने वरेख-योष जीवकर; नीडिपिने-पल भर से; उडेपाल-आपके पास; परखि-एकडकर; नरखेवने-लाकर दे देंगे । ६३४

अपलक निबेन पुरमेखर स्वयं छिन्न पलवों की जाकर जीवने निबनिबाले बन्दर का रूप लेकर और वचनो के निवार से यहाँ छोटी होनि करने का संकल्प लेकर आया हो, ली थी से उसकी आसानी से जीवंगा और थोड़ा एकडे लाकर आपकी दे देंगे । १३४

पुण्डनेपे गदनिरे खीखडे गौळिखिरे वण गौडे
मण्डनेपे निमरनेपे पण्डि योपिय मनेपे लाडेखा

अण्डत्तैक् कडन्तु पोहि यप्पुत्त तहलि नैन्वाल्
तण्डत्तै यिडुदि यन्त्रे निन्वयिर् इन्दि लेतेल् 935

तुण्ड तूण अततिल्-टोटे खम्भे से; तोन्त्रम्-जो प्रकट हुआ वह; कोळरि-सिंह भी हो तो; चुटर् वैण् कोट्ट-चमकदार श्वेत दांतों में; मण् तौत्त-भूमि लटकी रही; निमिर्न्त-(वैसा) जो बढ़ा; पन्त्रि आयित्तुम्-वराह हो तो भी; मलैतल् आर्त्ता-मुझसे लड़ नहीं सकेगा; अण्डत्तै कडन्तु पोकि-अण्ड के पार जाकर; अ पुत्तु-उस तरफ के; अकलिन्-(अण्ड में) चला जाय तो भी; निन् वयिन्-आपके पास; तन्तु इलेन् अल्-नहीं दूंगा तो; तण्डत्तै इटुति-वण्ड दे दीजिए । ६३५

काष्ठांश एक खम्भे से जो बाहर आया, वह (नर)-सिंह भी क्यों न हो; या वह वराह क्यों न हो, जिसके दांतों में भूमि उठा ली गयी थी और जो बहुत अधिक बढ़ा था —दोनों मेरे विरुद्ध लड़ने में समर्थ नहीं हैं। वह वानर अण्ड को पारकर बाह्याण्ड में चला जाए, तो भी उसे पकड़ लाकर आपके पास नहीं दूँ तो आप मनमानी सजा दिला दें । ९३५

अँतविवै यियम्बि योदि विडैयैत्त विडैज्जि निन्त्र
वत्तैहल्ल वयिरत् तिण्डोण् मैन्दनै महिल्लन्तु नोक्कित्
तुनैपरित् तेरि नेरिच् चेडियैत्त रिन्नैय शौन्तान्
पुनैमलर्त् तारि तानुम् पोरणि यणिन्तु पोत्तान् 936

अँत-ऐसा; इवै इयम्पि-ये बातें कहकर; विटै ईति-आज्ञा दें; अँत-कहकर; इडैज्जि निन्त्र-सविनय खड़े रहे; वत्तै कल्ल-बद्ध पायलधारी; वयिर तिण् तोळ्-वज्रस्कन्ध; मैन्तनै-अपने पुत्र को; महिल्लन्तु नोक्कि-सहर्ष देखकर; तुनै-तीव्रगामी; परि-अश्व-जुते; तेरिन् एरि-रथ पर चढ़कर; चेडि-चलो; अँत्र-कहकर; इतैय शौन्तान्-ऐसी बातें कही (रावण ने); मलर् पुत्तै-पुष्पकलित; तारित्तानुम्-मालाधारी (अक्षकुमार) भी; पोर् अणि-युद्धसज्जा; अणिन्तु पोत्तान्-सजाकर गया । ६३६

ऐसी ये बातें कहकर बँधी हुई पायलधारी वज्रस्कन्ध अक्षकुमार यह विनय-निवेदन करके खड़ा रहा कि मुझे आज्ञा दें। रावण ने उसे सहर्ष देखा और कहा कि तीव्रगति अश्वों के जुते रथ पर सवार होकर जाओ। रावण ने और भी अन्य आवश्यक सलाहें दीं। पुष्पों की सुन्दर रीति से गुँथी मालाधारी अक्षकुमार भी युद्धोचित साज सजाकर गया । ९३६

एरिन् नैन्ब मन्त्रो विन्दिर त्रिहलिल् विट्ट
नूँडु नूँ पण्ड नौरिल्वयप् पुरवि नोन्त्रै
कूडिन् ररक्क राशि कुमुडिन् मुरशक् कौण्मू
अरिन् वुरवुत् तानै यूळिपेर् कडलै यौप्प 937

इन्तिरन्-इन्द्र ने; इकलिल् विट्ट-जिनको युद्ध में त्याग दिया था; नौरिल्-

(उसकी चतुरागिनी सेना की निगती देखो—) लहरप्रवाहित समुद्र के मकरों की निगकर बला सकते है ? तो गजों की भी निग जा सकता था । जल के सतह पर आकर सवार करनेवाली मछलियों की निग जा सकता है ? तो उस सेना में के लाल स्वर्ण के सबल रथों की निग जा सकता था । लहरों द्वारा एकवित्त वारुणों की सख्या की निगती पा सकते है ? तो सेना के वीरों की सख्या भी गणित की जा सकती थी । एक के बाद एक आनेवाली लहरों की पंक्तियों को निग सकते है ? तो सरपट दौड़नेवाले अश्वों की भी निग जा सकता था । १३८

[illegible]

काल तीयिन्-प्रलयाग्नि की; चैत्रि-घनी; चुटर्-ज्वलन्त; चिकैकळ् अन्तार्-ज्वालाएँ जैसे; आवि वेरु इला-अनन्यप्राण; तोळर्-साथी; वेन्त्रि अरक्कर् तम्-विजेता राक्षसों के; वेन्तर् मैन्तर्-राजाओं के पुत्र; अँणिल्-गिनती में; आरु इरण्डु अटुत्त-बारह के; आयिरम् कुमरर्-सहस्र कुमार; एरिय तेरर्-रथारूढ़; चूळन्तार्-घेर आये । ६३६

युगान्त में सृष्टि भर को मिटाने हेतु भभक उठी प्रलयाग्नि की घनी और तेजोमय ज्वालाओं के समान रहनेवाले, अक्षकुमार के अनन्यप्राण मित्र, और विजयशील राक्षस राजाओं के सुत, बारह सहस्र कुँअर रथों पर आरूढ़ होकर उसके साथ उसको घेरते हुए गये । ९३९

मन्दिरक्	किळवर्	मैन्दर्	मदिनिर्	यमैच्चर्	मक्कळ्
तन्दिरत्	तलैव	रीन्त्र	तत्तयर्हळ्	पिन्नन्	दादैक्
कन्दरत्	तरम्बै	मारिर्	रोन्त्रित्त	ररक्क	रात्तोर्
अँन्दिरत्	तेरर्	शूळन्दा	रीरिरण्	डिलक्कम्	वीरर् 940

मन्त्रिर् किळवर्-मन्त्रणा के पदाधिकारी लोगों के; मैन्तर्-पुत्र; मति निर्-बुद्धिमान; अमैच्चर् मक्कळ्-सचिवों के पुत्र; तन्त्रिर् तलैवर्-सेनापतियों के; ईन्त्र तत्तयर्हळ्-जनाये पुत्र; अन्तरत्तु अरम्पैमारिल्-आकाश की अप्सराओं के; तातैक्कु तोन्त्रित्तर्-पिता रावण द्वारा उत्पन्न; अरक्कर् आत्तोर्-राक्षस; पिन्नम्-और अन्य; ईर् इरण्डु इलक्कम्-चार लाख के; वीरर्-वीर; अँन्त्रिर् तेरर्-यन्त्रचालित रथों के; चूळन्तार्-घेर आये । ६४०

मन्त्रणा के अधिकारियों के पुत्र, बुद्धिमान सचिवों के पुत्र, सेनानायकों के पुत्र और अप्सराओं के गर्भ से जनमे अक्षकुमार के पिता रावण के पुत्र जो राक्षस थे वे और अन्य —सब मिलाकर चार लाख वीर यन्त्रयुक्त रथों पर आरूढ़ होकर उसके चारों ओर आकर इकट्ठे हुए । ९४०

तोमर	मुलक्कै	शूलन्	जुडर्मळु	कुलिशन्	दोट्टि
एमरु	वरिविल्	वैल्हो	लीट्टिवा	ळैळुविट्	टेरु
मामरम्	वीशु	पाश	वैळुमुळै	वयिरत्	तण्डु
कामरु	कणैयड्	गुन्दड्	गप्पणड्	गाल	नेमि 941

तोमरम्-तोमर; उलक्कै-मूसल; चूलम्-त्रिशूल; चुटर् मळु-प्रकाशमय फरसे; कुलिचम्-कुलिश; तोट्टि-अंकुश; ए मरुम्-शरासन; वरि विल्-सबन्ध धनु; वैल्-शक्तियाँ; कोल्-शर; ईट्टि-भाले; वाळ्-तलवारें; अँळु-लौहदण्ड; विट्टेरु-बरछे; मा मरम्-बड़े पेड़ों को भी; वीशु पाचम्-गिरा सकनेवाले पाश; अँळु-शत्रु पर चलनेवाले; वयिर मुळै तण्डु-हीरे के दण्डायुध; कामरु-मनोहर; कणैयम्-वक्रदण्ड; कुन्तम्-कुन्त; कप्पणम्-'अरिकण्ट' नामक हथियार; काल नेमि-कालचक्र । ६४१

(उस सेना के वीरों के साथ) तोमर, मूसल, त्रिशूल, तेजोमय फरसे,

कुलिश, अंकुश, सक्कश शरासन, शक्तिवर्षा, शर, शाले, लजवर्षा, लोहेदण्ड, वणिग, बड़े-बड़े पर्वों की भी नीचे गिरानेवाले पाश, शर्वपातक होरे के दण्ड, दशनीय वक्रदण्ड, कुल और 'कपण' (अरिकण्ड) नामक देविप्रपार । १४१

अर्धेन्द्रिच सुदल यावु श्रुतिरिदं पडै लीण्डि
मिर्धिरणु चयुष वाहि वयिनीडि मिलवु वीशने
पुर्धिरुणु ईळि पौडिनिने पुडदला लिडिदि शीलनप
पौर्धिरिणि पुलहेम यावुम पुदल मान मावै 942

अर्ध-पेसे; इव सुनल-ये आदि; यावुम-सभी; अलिख लिख-पुवरना-
लिसन; पडैक ईण्डि-देविप्रपार मिलकर; मिर्-विजलिया; लिण्डि अर्ध-
एकलिन डूई वीसे; आिक-वक्रक; वयिने अर्ध-युप के साथ; मिलवु वीच-वादेनी
लिडकाले डूय; पुर्ध-दाने रूप से; इवम वीळि-विपुल धूल-राशि; पौडि-उठो;
पुडदलाने-आकाश में सर गयी, इवलिप; इडल वीलाना-अन लिसका कहे मही जा
सकल; पौसे लिण्डि उलकम यावुम-स्वर्णमय (स्वर्ण) लीक सारा; पुनलम आन-
सुनल हो गया । ६४२

ऐसे और अन्य सभी सुन्दर देविप्रपार एकलिन होकर एकलिन
विजलिया के समान बने और उनसे धूप-सा गरम प्रकाश और चार्दनी-सी
शीतल किरणें छूट रही थीं । घने रूप से धूलपटल उठा और आकाश में
जा गया । इससे अमर स्वर्गलोक भी भूलोक के समान (मिट्टी का) दिखने
लगा । १४२

काहेपुडै गळैडैम बेपुडै गालनडै गणकलिन कालम
शौरि विवर्धिरु वीधैपुने वीधैपुने वीधैरुनेडु शीलनम
पाडियन किळिव चववप पडैविळि पणनेन वेपुनेनीळ
वीधैपुने ममपुडै गणाने डुमविपुने वीधैरुनेडु शुरैर 943

काकपुम-कौप; कळुमुम-और गीध; धुपुम-पुष्पाव; कालनेम-और यम;
कणकळि वने कालम-आगिन काल; चैकु वर-सुदंड रूप से; विवर्धिल चयन-
(वृ) कर्म वा किसे उतका; वीधैपुम-पाप; वीधैरुनेडु धूल-साध-साध गये;
पाकु इयल-चागनी की-सी; किळिव-(सुदरतपुवन) बोली वाली; वे वापु-लाल
अधर; पडै विळि-(लजवार, शाला, शर आदि) देविप्रपार के सर्वश आँखों; पणनेन-
पुडै; वेपु लीळ-वर्षा-सम काधो वाली; वीधैपुने-कलापी-सी (उतकी पानी-)
विषयी के; ममपुम कणपुम-मन और आँखों के; पुमपुम-और धमरों के;
वीधैरुनेडु-पौछे लगे; वीधैरुनेडु-वैरने जाने । ६४३

(अक्षकुमार के साथ क्या-क्या गये ? देखिए कवि की विदग्धता !)
कौप, गीध, धूल-पुष्पाव, यम, अनन्तकाल से राक्षसों के द्वारा सुदंड रूप
से किये गये इलकमों का पाप आदि पौछे लगे साथ गया । और चागनी-सी

बोली और लाल अधरों वाली, तलवार आदि हथियारों-सी आँखों वाली, स्थूल बाँस-से कन्धों वाली राक्षसियों के मन और आँखें तथा भ्रमर भी उन पर मँड़राते चले । ९४३

उल्लेक्कुल नोक्कि तार्ह लुलन्दवर्क् कुरिय मादर्
अल्लैत्तल्लु कुरलित् वेलै यमलैयि तरवच् चैत्तै
तल्लैत्तल्लु मौलियि नान्नाप् पल्लियन् दुवैत्त लाल्विण्
मल्लैक्कुर लिडियिर् चोन्न माऽऽङ्ग लीळिप्प मन्तो 944

उल्लैत्तवर्क्कु-पहले जो मरे उनकी; उरिय मातर्-पत्नी-स्त्रियाँ; उल्लै कुल नोक्कितार्कळ्-मृगनयनियाँ; अल्लैत्तु अल्लु कुरलित्-(अपने पतियों का नाम ले-ले) जो रोती हैं, उस स्वर से; वेलै अमलैयिन्-समुद्र के गर्जन से; अरव चैत्तै-आरवयुक्त सेना से; तल्लैत्तु अल्लुम्-बढ़ उठनेवाले; मौलियिन्-शोर से; नान्ना पल्लियम्-अनेक और विविध बाजे; दुवैत्तलाल्-बजे, इससे; विण्-आकाश में; मल्लै कुरल् इटियिल्-मेघ-गर्जन रूपी गाजों से; चोन्न माऽऽङ्कळ्-उच्चरित वचन; लीळिप्प-दब जाते (ऐसा) । ६४४

वे जाते रहे । तब पहले हनुमान द्वारा मारे गये राक्षसों की मृगनयनी प्यारी स्त्रियाँ अपने पतियों का नाम ले-ले रो रही थीं । वह स्वर; समुद्र-गर्जन; शोर के साथ चढ़ जानेवाली सेना का निविड नाद; विविध बाजों की ध्वनि और आकाश के मेघों का वज्रगर्जन—इन सब मिश्रित स्वरों की तुमुलता के कारण एक-दूसरे की बोली परस्पर सुनायी नहीं दे रही थी । ९४४

मैयिर्कर मणिहळ् वीशुम् विरिहदिर् विळङ्ग वैय्य
अयिर्कर वणिहळ् नील वविरोळि परुह वः(ह)दुम्
अयिर्ऱिळम् बिऱैह लोन्ऱ विलङ्गोळि योदुङ्ग याणर्
उयिर्क्कुल मिरवु मन्ऱु पहलन्ऱैन् रुणर्वु तोन्ऱ 945

मैयिल् करम्-(राक्षसों के) शरीर पर के कान्तियुक्त; मणिकळ् वीचुम्-रत्न जो बिखरते हैं; विरि कतिर्-वे विस्तृत किरणें; विळङ्क-मनोरम रूप से प्रकट होती हैं; वैय्य-झर; अयिल् कर-मालाधारी हाथों के; अणिकळ्-आभरण; नील अविर्-काले रंग में निकलनेवाली; ओळि परुह-कान्ति को पी जाती हैं (छिपा लेती हैं); अःतुम्-वह कान्ति भी; अयिर्ऱु इळम् पिऱैकळ्-दाँतों के बाल-चन्द्रों के; इलङ्कु ओळि-छिदके हुए प्रकाश में; ओतुङ्क-छिप जाता; उयिर्क्कुलम्-जीव-राशियों की; इरवुम् अन्ऱु-रात नहीं; पकल् अन्ऱु-दिन भी नहीं; अन्ऱु-ऐसा; याणर् उणर्वु तोन्ऱ-अनूठा अनुभव होता । ६४५

उन राक्षसों के शरीरों पर अलङ्कृतकारी रत्नों से छूटनेवाली किरणें प्रकाशमय रहीं । हिंस्र भालों के धारणकारी हाथों के आभूषण उनके शरीर के नील रंग को चाटकर मिटा रहे थे । उन आभरणों के प्रकाश दाँतों

रुणी बालवन्द-निःपुत्र प्रकाश सं हिम जा रहा था । इससे जीवों को एक विविध अनुभव हो रहा था कि अब न दिन लगता, न रात हो । १४५

अज्ञानिने वदनेदेर पूण्ड वदेवयप पूरवि प्रलक्षिते
प्रेङ्गिनि वीजने वीज्डे गणगळ मिजनेव वुळ
वोजेनिन मेदे मेङ्गुङ्ग गुफिदनीरे वुळि वीजपप
प्रेङ्गिनिन काहे मारपप विखिलेविण्ण लिङ्गिपप मादे 946

अज्ञान-उपन, इक्षु-वडे; वटम नेर-विशाल रथ सं; पुण्ड-जुने; उळ-
अपल-सहित; वय-विषय-सहेयक; पूरवि-अथ; अलौकिक-यकित होकर;
प्रेङ्गिक वीज-सी जाते; इदनेल वीजमे-वय कथ और; कण्कळमे-अळ;
वुळ-फडकी; वीङ्गिक मेकमे-वडे मेव; अङ्कमे-सवेव; कुविल नीरे वुळि-
रकल-जल की वडे; वीजपप-गिराते; काकमे-कीप; पुङ्गिक-उरकर; आरपप-
उचव रवर सं बोलते; इळ्डे इल-विण्ण आकाश; इडिपप-गरजता । ६४६

(क्या-क्या शक्ति हुए ?) उचल, विशाल और वडे रथों से जुते
अपल वाले, विजय-साधन अथव यकित हो ऊँचते जा रहे थे । वीरों के
बायें कंधे फडके और बायीं आँख फडकीं । वडे-वडे मेवों ने रकल की वडे
गिरायीं । कीप मेवों होकर उचव रवर सं बोल उठे । निमल आकाश से
वज्रवीच-सा सुनयी दिया । १४६

वुळवेव वीने पूळ विण्णुळेर वूवि विमम
उळवेनीन वुङ्गुङ्ग वृप कुरुरु मुजव इनेव
वुळिय गुळवेदे वृदे वीजपुङ्गे नारपपन लीवेइम
कळवेव वलङ्गा लानेक कारुङ्गिमेव वरव कण्डान 947

वुळ-‘वुळम’ की वडी संख्या सं रही; वीमे वीने-मयकर सेना के; वुळ-
वरे अल; विण्ण उळेर-धामलकवासी; वूवि विमम-मयाविर हुए; उळवेम
नीमि-विनाकुल हो; अवेङ्क-उडिय रहो; वृप-मयकर; कुरुरुम-यम श्री;
मुजव गुनेव-मुक्कुर उठा; वुळिय-उळवेवडे; वुळव कण-ववल्लव; वृपकळ-
मेल के; वीज पुङ्गेवु-कथ ठेककर; आरपप-कीलहेलनाद मवाते; लीवेइम-
श्रीमयमान; कळ अविळ-शुद्ध वीवली; अलङ्कलाने-मालाधारी की; कारुङ्गि-
वय-मवल्लु सं; वरव कण्डाने-आता हुआ । ६४७

“वुळवेम” की (वुडित-वुडित वडी) संख्या सं सेना गयी । देव उर
से धरे । मन मारकर जो वुःखी रहा, वडे कर यम अब मुक्कुरा उठा ।
विवलनयन मेलों ने कंधे ठेककर नारे लगाये । इस संजम के साथ
शुद्धवली पुण्णमालाधारी अक्षकमार की हेममान ने आता हुआ । १४७

इनेवर शिवने मरुव विरावण मेया वनेव
विवदेवि नवडे कीण्ड मुनिवुरुर करकुक वीयम

वन्दनन् मुडिन्द दन्डो मन्ककरुत् तैन्त वाळ्त्तिच्
चुन्दरत् तोळै नोक्कि यिरामत्तै तौळुदु शौन्तान् 948

मुत्तिवु उड्ड-क्रुद्ध; कुरङ्कु चीयम्-वानर-केसरी ने; इन्तिरचित्तो-इन्द्रजित्
वया; मड्ड-या दूसरा; अ-वह; इरावणत्तेयो-रावण ही; अँन्ता-ऐसा;
चिन्तैयिन् उवकै कौण्टु-मन में हर्ष करके; चुन्तर तोळै-अपनी सुन्दर भुजाओं को;
नोक्कि वाळ्त्ति-देखकर बधाई देकर; इरामत्तै तौळुदु-श्रीराम को (मन ही मन)
नमस्कार करके; वन्ततन्-(लक्षित राक्षस) आ गया; मन् करुत्तु-मन की कामना;
मुडिन्तु अन्डो-पूरी हुई न; अँन्त-ऐसा; चौन्तान्-आप ही आप कहा । ६४८

देखते ही वानरकेसरी हनुमान का क्रोध जाग उठा । वह सोचने लगा
कि क्या यह इन्द्रजित् है या रावण ही है (जिसको युद्ध में लाना चाहता
था) ? उसके मन में हर्ष उमड़ आया और उसने अपनी सुन्दर भुजाओं
को सगर्व निहारा और उनको बधाइयाँ दीं । श्रीराम को नमस्कार
किया । उसने आप ही आप कहा कि अच्छा, आ गया युद्ध का आधार !
पूरी हो गयी न मेरी मनोकामना ! । ९४८

अँण्णिय विरुवर् तम्मु ओरुवत्तेल् यान्मुन् शैय्द
पुण्णिय मुळदा लेंड्गोन् इवत्तौडुम् बोरुन्दि नान्ते
नण्णिय यानु निन्ऱेन् कालन्नु नणुहि निन्ऱान्
कण्णिय करुम मिन्ऱे मुडिक्कुवैन् कडिदि तैन्ऱान् 949

अँण्णिय-अनुमानित; इरुवर् तम्मुळ्-दो में; ओरुवत्तेल्-एक रहा तो;
यान्-मेरा; मुन् चैय्-पूर्वकृत; पुण्णियम् उळुदु-पुण्य-भाग्य है; अँन् कोन्-
मेरे राजा को भी; तवत्तौडुम्-अपने तप का शुभ फल; बोरुन्तित्ताते-मिल गया;
नण्णिय यानुम्-पास आया मैं; निन्ऱेन्-हूँ; कालन्नु-यम भी; नणुकि-पास
आकर; निन्ऱान्-खड़ा है; कण्णिय करुमम्-अपना सोचा काम; इन्ऱे-आज ही;
कडितिन्-शीघ्र; मुडिक्कुवैन्-पूरा करूँगा; अँन्ऱान्-(आप ही आप हनुमान ने)
कह लिया । ६४९

“अगर यह मेरे द्वारा अनुमानित दो में एक होगा तो मेरा पूर्वकृत
पुण्य सफलीभूत हो गया । मेरे राजा को भी तप का सुफल मिल गया ।
अच्छा ! मैं इसके सामने हूँ । यम भी समीप आकर है ! अपना संकल्पित
कार्य अभी शीघ्र ही पूरा कर लूँगा ।” —हनुमान ने आप ही आप
कहा । ९४९

पळियिल दुर्वैन् डालुम् बः(ह)रुलै यरक्क तल्लन्
विळिहळा यिरमुड् गौण्ड वेन्दैवैन् डानु मल्लन्
मौळियिन्मड् रेवर्क्कु मेलात्त मुरट्टौळिन् मुरुह तल्लन्
अळिविलौण् कुमरन् यारो वज्जन्तक् कुन्ऱ मन्तान् 950

उरु-इसका आकार; पळि डलतु-अनिच्छ है; अँन्डालुम्-तो भी; पळ् तल्लै-अनेक

सिरी का; अरककने अलने-रासस (रास) नही; बिड़िकले आपरगुमे कण्ट-सरेल
 आवाँ बाले; बेवने-वेवराज के; बेवेराखि अलने-बिजाल (इन्दबिल) भी नही;
 मुरण तौलिने-गुडकमचवुर; मुककने अलने-मुकान (कासिकेय) नही है; मण्डिअने-
 सोवकर कहै ती; अवरककुरे सेवाने-सर्वो के ऊपर का लागता है; अवेवस कुरेय
 अनेवने-कालल-तिरि-सम लागता है; अण्डि वने-अथय; बेम-परिकमो; कुमरने-
 कुअर; पारी-कोन है तो । ६५०

(हेतुमान ने और भी स्वगत कहे—) इसका रूप अनिष्ट लगता है। तो भी अनेक सिरो बाला रावण नहीं लगता। यह साक्ष देवेंद्र का विजिता इन्द्रविजे भी नहीं। युद्धकाल 'मुक्ता' (कालिकेय) भी नहीं। सोवकर कहे जाय तो लगता है कि वह इन सबसे अधिक भूष है। काजल-गिर के समान दृश्यमान है। यह अक्षय पराक्रमी कुँआर कौन होगा ? । १४०

अनुपव	नवम्व	विण्वा	पिगविद	शाल	सुवेव	यान	नककान
विम्वर	रणवि	सुम	रिखववरे	चोवि		यान	
ववरेवि	वरकक	चोकि	वावि	विलवा			
कविम्वरि	कुरवु	पाल	सरककरव	युविने			

951 सुवेव

धूर्तरत्न-एव सद्य-वचन लिखते कहै, वहे; उचनहु-होषन होकर; विष्णु-आकाश में लगे दिखतेवाले; इन्हेंर बापम अर्जुन-इन्द्रधनुष के समान; निरुर-जो बड़ा था; नीरुनेलिने उभरए-नीरुण के ऊपर; इहनेनहु-जा रहै; भीरे-नीतिमान-उस अग्रम न्यायी की; वन नीलिख अरकने-न्यासकाली राक्षस; नीकीकि-देवकर; इ कुटुम्ब-यही बानर है, निबने; अरककर तम कुछनेने-राक्षसों के वनों की; कानेरु पाल आम-मार दिया था बापद; अनेना-कहेकर; वाने अपिउ-उचनवल दानों की; इलङ्क-पगल करने हुए; नकेकाने-होषा । ६५१

इस तरह संशय करके उसके आधार पर हित होकर जा हेतुमान कायागत इन्द्रधनुष-से नीरज पर विराजमान था, उस न्यायी की न्याय क्षम ने देखा। वह यह कहते हुए उज्ज्वल दाँतों की प्रकट करके हँसा। क्या यही वह प्रकट है, जिसने राक्षसदलों की मार जाला था ? । ९५१

अनेव आस-वसा; गऊ चले-परदेसा-वचन; कंदर-कं आवा; चारुति-
(अक्षुमार के) सारथी ने; ऐय-नायक; केण्मा-सुनिप; उलक इयल-संसार की
रीति; इवेव आस-यही है; अवेव-ऐसा (निश्चय रूप से) कहेवा; आस-
सासव है क्या; इकठल-तिरकार मत कीजिए; सवेवोद-हमारे राजा के साथ;

अतिरुन्त वाली-जो लड़ा वह वाली; कुरङ्कु-वानर था; अन्त्राल-तो; मङ्गुम्
उण्टो-और कहने को कुछ होगा क्या; चीन्तु-मेरा कहा; तुणिविल् कीण्डु-दृढ़ता
के साथ धारण करके; चेडि-जाइए; अन्त्र-ऐसा; उणर-समझाकर; चीन्तान्-
कहा । ६५२

उसका व्यंग्य का वचन सुनकर उसके सारथी ने कहा कि नायक ! मेरा
कहना सुनो । संसार की रीति यही है —ऐसा निर्धारण भी सम्भव है
क्या ? उसका रूप देखकर उसका तिरस्कार मत कीजिए । (तुमको
मालूम ही है कि) हमारे राजा से जो लड़ा वह वाली भी तो एक वानर
था । फिर कहने को क्या है ? मेरी बात दृढ़ रूप से मन में धारण करके
युद्ध में जाओ । सारथी ने समझाया । ९५२

विडन्दिरण् डनैय मय्या नव्वुरै विळम्बक् केळा
इडम्बुहुन् दितैय शैय्द विदन्तुडु शीरुत्त मञ्जत्
तीडरुन्दुशैन् रुलह मून्नुन् दुरुवित्तै नौळिवु रामल्
कडन्दुपित् कुरङ्गोन् रोडुङ् गरुवैयुङ् गळैवै नैन्त्रान् 953

विटम् तिरण्डु अतैय-विष पुञ्जीभूत हुआ जैसे; मय्यान्-रूपवान ने; अ उरै-
वह वचन; विळम्प-कहा गया; केळा-सुनकर; चीरुम् अञ्च-कोप के बढ़ते;
इडम् पुकुन्तु-हमारे यहाँ प्रवेश करके; दितैय चैय-ऐसा जिसने किया; इतन् ओटुम्-
इसके साथ; तीडरुन्तु चैन्नु-इसको मारकर बाव लगा हुआ जाकर; उलकम् मून्नुम्-
तीनों लोकों में; नौळिवु उग्रामल्-कहीं भी न छोड़कर; दुरुवित्तै-खोजता; कडन्तु-
जाकर; पित्-बाद; कुरङ्कु अन्नु ओतुम्-वानर-कथित; गरुवैयुम्-गर्भशिशु को
भी; गळैवैन्-निरस्त कर दूंगा; अन्त्रान्-कहा । ६५३

पुञ्जीभूत विष-से रूपधर अक्षकुमार ने उसका वचन सुनकर उत्तर
में कहा कि देखो । कम न होकर बढ़ते जानेवाले क्रोध के साथ हमारे
ही यहाँ आकर ऐसा कार्य किया है । उसको भी मारूँगा और उससे
लगाकर तीनों लोकों में विना किसी स्थान को छोड़े सर्वत्र जाऊँगा और
वानर के नाम पर गर्भस्थित वानर-शिशु को भी मारकर निरस्त कर
दूँगा । ९५३

आरुत्तैळुन् दरक्कर् शेनै यञ्जत्तैक् कुरिय कुन्त्रैप्
पोरुत्तदु पौळिन्द दम्मा पौरुवडैप् परुव मारि
वैरुत्तनर् तिशैकाप् पाळर् चलित्तन विण्णु मण्णुम्
तारुत्तन्ति वीरन् शानुन् दन्तिमैयु मवरुमेर् चार्न्दान् 954

अरक्कर् चैत्तै-राक्षस-सेनाओं ने; आरुत्तु अळुन्तु-नर्दन कर उठी; अञ्जत्तैक्कु
उरिय-अंजनादेवी के; कुन्त्रै-पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर; पौरुवडै परुव मारि-
मारु हथियारों की मौसमी बारिश; पौळिन्तु-बरसाकर; पोरुत्तनु-ढँक दिया;
तिचै काप्पु आळर्-दिवपाल; वैरुत्तनर्-पसीना-पसीना हो गये; विण्णुम्-आकाश

और; मण्डप-धूमि; चलिनेल-दोनों बंचल हो गये; तारे तलि वीरने-होरुल
 अरुपम सहोदर; तलिधूम तारुम-तनहोई की हो महोपक वनाकर; अवर भेले
 चारनेलाने-अन पर वड गण । ६५४

ጸሐፊ ፡ ለከፊ ምክር ቤት ሰው-የሰውነት

तब राक्षस-सेना ने नारे लगाते हुए बर्कत अंजना के पुत्र, पर्वत-
सम हनुमान पर युद्ध-साधन अस्त्र छपा मौसमी वरसात बरसाकर उसे
ढूँक दिया । दिवपाल भी यह देखकर पसीना-पसीना हो गये । आकाश
और भूमि दोनों चलिब हूए । मालाधारो मद्गोरी तनहाई को ही अपना
साथी बनाकर उनसे लड़ते गया । १५४

[illegible][illegible]

निरुधर-राजसिंहादरः, धृतिमान् अतिरत्न-नेत्रा से कके गायः, अयुधम-अरी-
 बलाय गायः, परकण्डे पादुम-सभा देवियादरः, वीरसे मति-महोदर के शरीर से; सुदेवि-
 रकटाकरः, सुतिरत्न-देहे; मूरि पात्र-सवल दायी; मतिरत्न-मरु; नेत्रम-रथ
 अरिः, धार-सरपद बाल के; मा कुन्दवृक्ष-अवधार यी; मतिरत्न-मरु (अलि
 गिरि); इलङ्क-लंका; नम्र धृतिमान्-अयुगी दियति से; पर-ववल गायी; परमसु
 दृष्य पाकके-अलीस शरीर; धृतिरत्न-वकार कहे । २५५

इस प्रकार—असिम शरीर; नित्यत्व—द्वन्द्व १५५

राक्षसों ने जो अरब बनाए और जो इथियोपिया फैंके, वे सब महावीर के शरीर से टकराकर टूट गये। सबल गज सिर के बज गिरे और मरे। लंका के रूप को ही रथ और सरपट चाल के अथवाल भी मर मिटे। लंका के रूप को ही बदलते हुए अपार संख्या में वीरों के शरीर फूटकर लाशों बने और सब जगह भर गये। १५५

አክሶ | ቢሮ ሪፖርት

काष्ठरि	सुखिपुत्रं	काशिरं	कलत्रद्वयकं	कारुद्रिमं	शुभममलं	पिबेत्	प्रायेया	कर्ममा	956
पुष्पं	मलिनं	कालं	निवर्तकं	रुनेत्		वर्तने			
पायव	रुपिचमं	बाहिं	वेनेत्रमं	वर्तने					
वापिर	काशि	पदं	खट्वेला	नमस्के					

मुनि-सुखी; पुन कानिब-वास के वन में; काय अति-जलावेला आग;

भूमि-पूजा; पुनः काचित्-वास के वन में; काय अति-जलावेवाला आग;
 कनकसु अम-मिल (ला) गयी जैसे; काउटिङ्ग सुपम-पवनकुमार; पृथु अंग
 अमलिन-ऐ' कहने की बेर के अन्दर; कीलुम निवारकेकु-जिनकी को मार डालता, उन
 राजसी की; और अलङ्कार-कोई सीमा नहीं रखी; पीप-जो गये; अवर उल्लस-
 जकी जाने (जावना); जैसे पुन-दीप्ता (यम) लोक; पीक पदरल पीपवि-
 जाने से नहीं बूकी; समकृति-यम के; आदिर कीट वनर-सदृश कटिङ् देव;
 वनर कील-है यम । ६५६

ප්‍රශ්න කිහිපයක් - 1944

ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਬਾਸ ਕੇ ਬਰ ਸੇ ਆਗ ਨਾਮੇ ੫੨ ਜੋ ਜਿਥੇ ੧੨ ਵੇ, ਵੇਖੀ ਜਿਥੇ

राक्षसों की करते हुए पवननन्दन ने जिनको 'ऐ' शब्द के उच्चारण की देर के अन्दर मार डाला, उन राक्षसों की कोई सीमा नहीं रही। उनके प्राण भी (जीवात्मा भी) दक्षिणी (यम-)लोक में जा पहुँचे—यह भी अचूक था। फिर क्या यम के सहस्र कोटि दूत थे? माँ! । ९५६

वरवुड्डार् वारा निनुड्डार् वन्दवर् वरम्बिल् वैम्बोर्
 पौरवुड्डर् पौळुदुम् वीरन् मुम्भड्ड् गाड्डल् पौड्गि
 इरविपेर्क् कदिरो नूळि यिरुदियि नैन्त लानान्
 उरवुत्तो ठरक्क रैल्ला मैन्बिला वुयिर्ह लीत्तार् 957

वर उड्डार्—जो आनेवाले हैं; वारा निनुड्डार्—जो अब आये हैं; वन्तवर्—जो पहले आये थे, वे सभी; वरम्बिल्—अपार; वैम् पोर—भयंकर युद्ध; पौर उड्डर् पौळुदुम्—जब करने लगते; वीरन्—महावीर; आड्डल्—बल में; मुम् मटङ्कु—तिगुना; पौड्गि—बढ़कर; ऊळि इरुतियिन्—युगान्त में; इरवि—रवि; पेर्—नाम के; कतिरोन् अन्तल्—सूर्य के समान; आतान्—हो गया; उरवु तोळ् अरक्क अल्लाम्—सबल कन्धों वाले सभी राक्षस; अन्तु इला—अस्थिहीन; उयिर्कळ् ओत्तार्—जीवों के समान रहे। ९५७

युद्ध में आने को जो थे वे, जो आ रहे थे वे और जो पहले ही आ गये वे असंख्यक थे और भयंकर युद्ध करनेवाले थे। तो भी जब वे लड़ाई में आये तब हनुमान का बल तिगुना बढ़ा। वह युगान्त के रवि नाम के किरणमाली सूर्य के समान बना। सबल कन्धों के राक्षस सब अस्थिहीन जन्तुओं (कीड़ों) के समान बन गये। ९५७

पिळ्ळप् पट्टत्त नुदलो डैक्करि पिड्डुपौर् रेर्परि पिळ्ळैयामल्
 अळ्ळप् पट्टळि कुरुदिप् पौरुपुत्त लाडा हप्पडि शैशाह
 वळ्ळप् पट्टत्त महरक् कडलैन् मदिल्शुड्ड् त्रियपदि मडलिल्कोर्
 कौळ्ळप् पट्टन् वुयिर्न् तुम्बडि कौन्डा नैम्बुलन् वैन्डात्ते 958

अळ्ळप् पट्टु अळि—(हनुमान द्वारा) उठा लिये जाकर जो मिटे; पौरु कुरुति पुत्तल्—(उन राक्षसों का) लहरायमान रक्त-जल; आळु आक—नदी बना; पटि चेळु आक—भूमि पंक बनी; पिळ्ळ—हनुमान के फोड़ने से; पट्टत्त—जो मरे; नुत्तल् ओटे—वे भालपट्ट वाले; करि—गज और; पिड्डु—औंधे गिरे; पौन् तेर् परि—स्वर्ण रथ और अश्व; पिळ्ळैयामल्—अचूक (पहुँचे); मकर कटल्—मकरालय; वळ्ळप् पट्टत्त—समृद्ध हुए; अँत—ऐसा कहने योग्य; मतिल् चुर्रिय पति—प्राचीर-वलयित नगरी के; उयिर्—जीव; मडलिल्के—यम के ही; कौळ्ळप् पट्टत्त—माने गये; अँत्तुम् पटि—ऐसा कहने योग्य रीति से; ऐम्पुलन् वैन्डात्त—पञ्चेन्द्रिय-जेता हनुमान ने; कौन्डात्त—मार डाला। ९५८

हनुमान ने उठा-उठाकर राक्षसों को निपाता। उनसे रक्त जो बहा वह नदी बन गया और भूमि पंक बन गयी। पञ्चेन्द्रियजयी हनुमान

ने मुळश्रमि में दलने जीवों की मारी कि लोगों की कहना पड़ा कि उसके द्वारा फाड़े गये आलपट्टदार गजों, आँखें निरे रवण-रथों और घोड़ों के आँक रीति से समुद्र में जाने से मकरालय पुल बन गया और प्राचीर-मध्य लंका के सारे जीव यम के ही गये । १५८

नेरे पट्टन वेंगुडारु विनरुविनरु वेंगुडारु वेंगुडारु
कारे पट्टन मुदली डेक्कडु कारिये पट्टन कडिवेंगुडारु
पेरे पट्टन रेंगुडारु विनरुविनरु पट्टन पट्टिवेंगुडारु
नेरे पट्टनरु पडमा उवलि विनला वुविनरु विनरु 959

नेरे पट्टनरु-सामने आकर मरे सो; पट्ट-मरे-ही; मडे-पारुवो में; निनला वियरुडि-ववल प्राणी के साथ; तनि विनरुडारु-अलगा जा खड़े रहे; विनरु-ऊठ ने; नेरे पट्टन-रथ ही मिडे; अंगुडारु-कहा; विनरु-और ऊठ ने; बेंड कण-पूरनी आँखों; वूम पुक्कम-(पूरसे से) लाल मुख; वियरु लोडे-वज-सम कण; पड़े-ऊठ ने; पट्टिवे पट्टन-सोयों के ही सम; मुल अडे-आलपट्टधारी; कड कारि प-सम गज ही; कडिवु पट्टन-शीघ्र मरे; अंगुडारु-कहा । ९५९

समझ आकर जो मरे, वे मरे ही । पर जो डधर-उधर अरियर प्राण लेकर खड़े रहे उनमें ऊठ ने कहा कि रथ ही (अधिक संख्या में) ऊठ ने कहा कि कोय-मरी आँखों, लाल मुखों और वज-सम कणों के पटातिक वीर ही (अधिक) मरे हैं । और ऊठ राक्षसों ने कहा कि अथवा ही नष्ट हुए हैं । अन्य ऊठ लोगों ने कहा कि मय-समान और आलपट्टधारी मतगज ही अत्यधिक संख्या में शीघ्र नष्ट हुए । १५९

आळि पुरेपडै निरुप पूवलि पडली रायमडे उडुवैवायने
नाळि पडुदवि रीनारु मारिड तनिमने नैववदरु नैववायने
पुळि पुरवम मिडवा ठियरुडळै मरिवे लिळपय रिजमाडे
ऊळि पुरवदरु पुवलीने नारन लीनेनाने मारुद मीनेनाने 960
आळि-समुद्र-सम; पुरे पडे-मुळ-सेना के; निरुल-राक्षस; पूरे वलि-अतिवली; अडलरु-वीर; आय मकळे-वाल-वाल; अडे-(दूध) अडेकर लामन लमाकर जो रथ गयी है; पूळे वायु-(उध) वड़े मुख की; नाळि पडे-कडुही पर रहे; तियरु अंगुडारु-दही के समान लगे; मारिडि-मारिडि; तनि मयैव अंगुपु-अधम मयानी कहने; और लके आलपु-योग्य एक बना; अरि वेन डेळवदरु-ककी वा सकनेवाली बरुछी के धारक जवान वीर; इ पूळै पुवमम-ये साली श्रवण और; इडे वाळै वियरुकळम-उनमें रहनेवाले जीव; इवम आक-एक प्रवाडे में; ऊळि पुपुडवु-पुगाल में बहनेवाले; और पुवल्-प्रलय-प्रवाडे के; अंगुडारु-समान रहे; मारुद मीनेनाने-अल-सम लगे । ९६०

समुद्र के समान बढ़कर लड़नेवाली सेना के अतिबली राक्षस वीर ग्वालवाला के द्वारा बड़े मटके में जमाये हुए दही के समान बने; और हनुमान अनुपम मथानी-सा बन गया। भाले फेंकनेवाले नौजवान वीर सातों भुवनों और उनमें रहनेवाले जीवों के जमघट के समान रहते प्रलय-प्रवाह के समान रहे। पवन-सम मारुति (प्रलय-शोषक) बड़वाग्नि रहा। ९६०

कौन्डा नुडन्वरु कुळुवैच् चिलरपलर् कुरैहिन् शारुडल् कुलैहिन्डार्
पिन्डा निन्डत्त रुदिरप् पेरुनदि पेरुहा निन्डन् वरुकाह
निन्डार् निन्डिलर् तत्तिनिन् शानौरु नेमित् तेरोडु मवन्नेरे
शैन्डान् वन्डिर लयिल्वा यम्बुह डैरिहिन् शान्विळि यैरिहिन्डान् 961

उटन् वरु-साथ आनेवाले; कुळुवै-राक्षसदलों को; कौन्डान्-हनुमान ने मार डाला; चिलर् कुरैकिन्डार्-कुछ मरे; पलर्-अनेक; उटल् कुलैकिन्डार्-शरीर काँपते हुए; पिन्डा निन्डत्तर्-फिरकर जाने लगे; उतिर पेरु नति-रुधिर की बड़ी नदियाँ; पेरुहा निन्डत्त-वह उठी; अरुकु आक-पास; निन्डार्-जो खड़े रहे; निन्डिलर्-वे वहाँ खड़े नहीं रहे; तत्ति निन्डान्-अकेला जो रहा (अक्षकुमार); और नेमि-उपमाहीन पहियों वाले; तेर् ओटुम्-रथ के साथ; अवन् नेरे-उस (हनुमान) के समक्ष; चैन्डान्-गया; विळि अैरिकिन्डान्-आँखें जलती जैसे रखते हुए; वन् तिडल्-अति कठोर; अयिल् वाय्-तीक्ष्णमुख; अम्पुकळ्-शरों को; तैरिकिन्डान्-चुनकर चलाता। ९६१

हनुमान ने अक्षकुमार के साथ आगत राक्षसदलों को मार डाला। कुछ मरे। अनेक कंपित शरीरों के होकर फिर गये। रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह निकलीं। अक्षकुमार के पास जो रहे वे नहीं रह सके। अक्षकुमार अकेला रह गया। वह अनुपम पहियों वाले अपने रथ को चलाते हुए हनुमान के सामने आया और आँखों से आग-सी निकालते हुए चुन-चुनकर शर चलाने लगा। ९६१

उड्डा निन्दिर शित्तुक् किळैयव तौरुहा लेपल रुयिरुण्णक्
कड्डा नुम्मुह मैदिरवैत् तान्दु कण्डार् विण्णवर् कशिवुड्डार्
अैड्डा मारुदि निलैयैत् बारित्ति यिमैया विळियित्तै यिवैयौन्डो
पैड्डा मल्लडु पैड्डा मैनडन्त्त पिरिया दैदिरैदिर् शैरिहिन्डार् 962

इन्तिर चित्तुक्कु-इन्द्रजित् का; इळैयवन्-कनिष्ठ; उड्डान्-आया; और काले-एक ही बार में; पल उयिर्-अनेक जीवों को; उण्ण कड्डानुम्-खाना जिसने सीखा था, उसने भी; मुकम् अैतिर् वैत्तान्-अपना मुख उसके सामने किया; अतु-वह; कण्डार्-देखनेवाले; विण्णवर्-देवगण; कच्चि वु उड्डार्-शिथिल पड़े; मारुति निलै-मारुति की स्थिति; अैड्ड आम्-क्या होगी; अैन्डार्-कहते; इमैया विळियित्तै-अपलक आँखें; पैड्डाम्-हमने पायी है; इवै औन्डै-अकेले ये ही क्या;

પૂરૂંડામ્-પાણી; અલભ્ય-અદિત (કા અગ્રમ) બી; પૂરૂંડામ્-પાણ્ય; હૈ; અગ્રમ-રૂ-
 કહેલ; પરિપાત્ત-પ્રતા અભા શુદ્ધ; અપિરે અપિરે-અગમ-ગમત; અપિરે-રૂ-
 પ્રિત રહેલે હૈ । ૬૬૨

इन्द्रजित का छोटा भाई देवमान के समक्ष आया और एक ही अंश में अनेक को निहत करनेवाला देवमान उसकी ओर मुख करके युद्धोत्तरीय पहना। देवमान यह देखकर विस्मयित हुए और आपस में कहने लगे कि देवमान की स्थिति क्या होगी ? हम अपनाक नेव वाले हुए तो यह क्या अन्त आया हो रहा ? अहितकारी वालों का देखना भी भय हो गया। वे अलग नहीं हुए और आमत-सामने ठस जामे खड़े रहे। १६२

શ્રીપદાનં વાળિદે ઢોરિવા પ્રસિદ્ધવન શોરે ઢોરિવરવ પ્રારથોતરપૂ
 પ્રીપદાનં મળિયુદ્ધે લીમડા નગરકરૂ પ્રીણિયા પ્રુલિરૂવરૂ વજિવખિઠ
 રૂપદા પ્રિવનલ વિરટાનં શોરવૈમં શેરોર પર્જિયલનં માકલકરૂ
 ગૃષા સ્પ્રોક પર્જયા ફેરેલીકરૂ કાનારૂ જેરદનં મેલાનાનં

963

अति वायु चिह्नवत-आग वसन करीवलि;
 अतिर अयुवत- (अक्षमर नी) हनुमान पर चलाय; आव-व; पादे चोरे-सुनि पर
 निर जाय, ऐसा; मणि अड्ड आँखल-मुन्दर एक लोहदण्ड से; पायुवत- (हनुमान
 से) उसे प्रगटिब किया; अनेक-तव; अयु-वह; पायिवाय-चरे होकर; चिरद्वे
 वर-वै जाय ऐसा; द्वयु आगिब-संगमक; बटि बाळि-नीरुप था; पर निदरत-
 अनेक बलाय; चोरुस-महेचोर भी; वेड और पट डलन-निरुप हो; माया-
 वनक विरिय से; वृष के गले-सवन दियो को; पाह पट आक-पुष्ट का दियार
 बलाकर; गहरे काल आर-चलनेवलि चको से युक्त; नेर आवसे सेल-रय पर;
 आनार-वड गण । ६२३

अधर्कमार ने अनिवार्यक चौदहे बाण चलाये । उनका बेकार कर
 भूमि पर गिरावे हुए देवमान ने एक लौहदण्ड से उन पर प्रहार किया ।
 अधर्कमार ने उस दण्ड को चूर कर गिरावे हुए सन्तापक और लोभ
 बाण चलाये । अब महेश्वर निराश्रु रह गये । वह उन बाणों के
 विषह अपने हाथों को हो दहियायों के रूप में प्रयुक्त करते हुए अपने सामने
 धूमने आते पहियों वाले रथ पर चढ़ गये । १६३

१६६
 नीरुं चैरुदिरुं कौलद्वैलुं वानिपुं निगुनं पुंसवसु श्रुतिविशुं
 पातिरुं चैरुदुं पतिवदं दशववणं वतिवुं विवदिय पद्विकेकोलुं
 मारिवुं चैरुव निगपुं उतिवुं मरुवुं उतिविल वरुवोपुं
 नीरुं चैरुवव वतिरुं कुतिविल पुरुं कौलद्वैलुं रुतिवुं १६६

अवन् वरि विल्-उसके सबन्ध धनु से; चिन्तिय-निकले; पकळि कोल्-शरों में; चिल-कुछ; मारपिल् चैन्ऱत्त-(हनुमान के) वक्ष में घुस गये; चिल-और कुछ; पोन् तोळ् इट-स्वर्णमय कन्धों में; मरैवु उरुत्त-घुसकर अदृश्य हो रहे; अरवोत्तुम्-धर्मस्वरूप हनुमान भी; नेरिल् चैन्ऱु-(उसके) सामने जाकर; अवन्-उसके; वयिर-वज्रकठोर; कुत्ति चिलै-झुके धनुष को; प्ऱि कौण्डु-छीन लेकर; अँतिर् उर-सामने; निन्ऱान्-खड़ा रहा । ६६४

रथ पर पहुँचकर महावीर ने वेत्त लेकर अश्व चलानेवाले सारथी के प्राण हर लिये । वह अनुपम सबल रथ भी भूमि पर गिर गया और अश्व मर गये । अक्ष ने अपने सबन्ध धनु द्वारा अनेक शर जो चलाये, उनमें कुछ महावीर के वक्ष में घुसे । और कुछ स्वर्ण-सम मनोरम कन्धों में चुभकर अदृश्य हो रहे । धर्मस्वरूप महावीर उसके समक्ष गया और उसके वज्रकठोर और झुके धनु को छीनकर उसके सामने खड़ा रहा । ९६४

औरहै यालवन् वयिरत् तिण्शिलै युर्ऱुप् प्ऱुलु मुरवोत्तुम्
इरुहै यालैर् वलिया मुत्तम दिर्ऱो डियदिवर् पौर्ऱोळान्
शुरिहै वाळव नुरुविक् कुत्तलु मदत्तैच् चोर्ऱ्कोडु वरुत्तदन्
पौरुहै यालिडै पिदिर्वित् तान्मुदिर् पौर्ऱियो डुम्बडि प्ऱियावे 965

उरवोत्तुम्-महावीर के; और कैयाल्-एक हाथ से; अवन्-उसका; वयिर-वज्र-सम; तिण् चिलै-कठोर धनु; उरु प्ऱुलुम्-घुसकर पकड़ते ही; इरु कैयाल्-(अक्षकुमार अपने) दोनों हाथों से; अँतिर् वलिया-आगे खींचे; मुत्तम्-उसके पहले ही; अतु इरु ओटियतु-वह टूटकर गिर गया; अवन्-उसके; चुरिकै वाळ-छुरा; उरुवि-निकालकर; कुत्तलुम्-घुसेड़ते ही; इवर् पौन् तोळान्-उन्नत मनोहर कन्धों वाले; चोर्ऱ् कोडु-(श्रीराम की) आज्ञा ले; वरु-आगत; तूतन्-दूत (हनुमान) ने; अतत्तै-उसको; प्ऱिया-छीन लेकर; मुतिर् पौर्ऱि-अधिक अंगारे; ओटुम् पटि-बिखेरते हुए; पौरु कैयाल्-लड़नेवाले एक हाथ से; इटै पितिर्वित्तान्-बीच से तोड़ दिया । ६६५

महावीर हनुमान के एक हाथ से उस अतिबलसंयुक्त धनु को खूब पकड़ने पर, वह धनु अक्षकुमार के दोनों हाथों से छीन लेने से पूर्व ही टूटकर अलग हो गया । उसने अपना छुरा निकालकर हनुमान पर भोंका, तो मनोरम व उन्नत कन्धों वाले श्रीराम की आज्ञा से आये दूत, हनुमान ने उसको पकड़कर छीन लिया और बीच से तोड़कर पटक दिया जिससे बहुत अंगारे छूटकर निकले । ९६५

वाळा लेपीर लुर्ऱा निर्ऱु मण्शे रामुत्तम् वयिरत्तिण्
तोळा लेपीर मुडुहिप् पुक्किडै तळुविक् कोडलु मुडन्मुर्ऱुम्
नीळा रयिलैन् मयिर्दैत् तिडमणि नैडुवा लवन्नुड निमिर्वूर्ऱु
मीळा वहैपुडै शुरिक् कौण्डु प्ऱिक् कौण्डनन् मेलानान् 966

हस्त से घूँसा मारकर विजयशाली महावीर, टीले के समान पड़े रहे उसके शरीर से एक बाजू में नीचे कूद गया । ९६७

नीत्ता योडिन बुदिरप् पेरुनदि नीरा हच्चिलै पाराहप्
पोयत्ताळ् शेरिदशै यरिशिल् दिनपडि पौङ्गप् पोरुमुयिर् पोहामल्
मीत्ता निमिर्शुडर् वयिरक् कैहौडु पिडिया विण्णौडु मण्गानत्
तेयत्ता नूळियि तुलहेळ् तेयितु मौरुतन् पुहळिरे तेयादान् 968

ऊळियिन्-युगान्त में; उलकु एळ्-सातों लोकों के; तेयितुम्-मिटने के बाद भी; और-अनुपम; तन् पुकळ्-जिसका अपना यश; इरै-कुछ भी; तेयातान्-कम नहीं होगा वह; नीत्ताय् ओदित-प्रवहमान; उतिर पेरु नति-रुधिर की बड़ी नदी को; नीराक्-जल बनाकर; पार्-भूमि को; चिलै आक्-सिल बनाकर; पोय्-(भूमि पर) जाकर; ताळ्-पड़े रहे; शेरि तचै-घने मज्जों के; अरि चिन्तितपटि-चावल छितरे पड़े जंते; पौङ्क्-पड़े रहते; पोरुम् उयिर् पोकामल्-लड़ते रहे प्राण नहीं गये; मीत्तु आ निमिर्-ऊपर उठे हुए; चुटर् वयिर-उज्ज्वल और कठोर; कै कौटु-हाथों से; पिडिया-(शरीर को) पकड़कर; विण् ओटु-व्योमलोक के साथ; मण् काण-भूलोक को भी देखने देते हुए; तेयत्तान्-पीसा । ९६८

युगान्त में जब सातों लोक मिट जायँगे तब भी महावीर का यश नहीं मिटेगा । स्थायी रहेगा । ऐसे हनुमान ने प्रवाहमय रक्त-नदी से जल छिड़कते हुए, भूमि को ही सिल बनाकर उस राक्षस के नीचे छितरे मांस-मज्जों के टुकड़ों को धान के दाने बनाकर राक्षस के शरीर को, जिससे उसके प्राण बाहर निकलना न चाहकर लड़ रहे थे (छटपटा रहे थे), लोढ़े के रूप में अपने दोनों उज्ज्वल और वज्र-कठोर हाथों से पकड़कर पिसाई की और उसको व्योमलोक और भूलोक दोनों के वासी देख रहे थे । ९६८

पुण्डाळ् कुरुदियिन् वैळ्ळत् तुयिर्हौडु पुक्कार् शिलर्शिलर् पौदिपेयिन्
पण्डा रत्तिडै यिट्टार् तम्मुडल् पट्टार् शिलर्शिलर् वयमुन्दत्
तिण्डा डित्तिशै यरिया मरुहिनर् शैत्तार् शिलर्शिलर् शैलवड्डार्
कण्डार् कण्डदौर् तिशैये विशैहौडु काल्विट् टारपडै कैविट्टार् 969

चिलर्-कुछ; पुण् ताळ्-मांस-मज्जे जिसके अन्दर थे उस; कुरुदियिन् वैळ्ळत्तु-रक्तप्रवाह में; उयिर् कौटु-प्राणों को बचा ले; पुक्कार्-प्रविष्ट हुए; चिलर्-कुछ ने; पेयिन्-पिशाचों से; पौति-संगृहीत; पण्डारत्तिटै-शव-भांडारों में; तम् उटल्-अपने शरीरों को; इट्टार्-रखवा लिया; चिलर्-अन्य कुछ; पयम् उन्नत्-भय के उकसाने से; पट्टार्-मरे; चिलर्-कुछ; तिण्डादि-अस्त-व्यस्त होकर; तिचै अरिया-दिशा न जानते हुए; मरुकिन्-दुःखी होकर; चैत्तार्-मरे; चिलर्-कुछ; चैलव अड्डार्-गति खो गये; चिलर्-कुछ ने; पटै-हथियारों को; कै विट्टार्-हाथ से त्याग दिया; कण्डार् कण्डतु ओर्-(और) जिस दिशा को देखा उसी; तिचैये-दिशा में ही; विचै कौटु-सवेग; काल् विट्टार्-पेर बढ़ाये । ९६९

(अक्ष दिवंगत हो गया। फिर) कुछ रक्त-धारा में गण लेकर घुस गये; कुछ लोगों ने उन गायों के डेरे में अपने गुरीरों की छिपा लिया, गायें, कुछ अरत-अरत होकर दिशा जान नहीं सके और संकटग्रस्त होकर विगत-गण हुए। कुछ में चलने की शक्ति हो नहीं रहे गयी थी। और कुछ राक्षसों ने अपने हाथ के दण्डियार बहो छोड़े और जो दिशा देखी उसी दिशा में भागदर महा दी। ९६९

मीनापु बेलेपु गुरुराई झिलरझिलर पशुवापु बलिबोछ भयुवुरुराई ऊनार पुरबोपन बडिवा चारुझिलर झिलरनाम मरुपव रुववनाम सानार कणालि मडवा रापिवर मुने वड्युळल बहिरुवुरुराई आनार झिलरझिलर देवा निगार गुरुराई निगुरव ररिमुगुरुराई 970

झिलर-कुठ; मीनापु-(मीना से) मडली बनकर; बेलेपु उरुराई-समूह पशुव गये; झिलर-कुठ; पशुवापु-गाध बनकर; बलि वडिपु-मीना-मीना में; भयुवु उरुराई-बरने लगे; झिलर-कुठ; ऊपु आर-मांसमक्षी; पुरबोपन बडिब आनार-पशुवा के रुववापु बने; झिलर-कुठ; मातु आर कण-मुग की-सी आवा बाली; आनार-बेववापु बने; झिलर-कुठ; मातु आर कण-मुग की-सी आवा बाली; मडु; निने चरपु-आपके शरण है; अगुरुराई-कडकर शरणपु बने; निनेउवर-मासने; बहिरुवु उरुराई-मीना बवापु; आनार-रहो; झिलर-कुठ; ऐया-मडु; निने चरपु-आपके शरण है; अगुरुराई-कडकर शरणपु बने; निनेउवर-बाकी जो रहे वे और अगुरुराई-होरि-गाम बोले। ९७०

कुठ राक्षस माया से मडलिपु बनकर समूह में जा रहने लगे। कुठ गायु बने और माया में यव-वज्र चरने लगे। कुठ मांसपक्षी (कौपु, गीध आदि पक्षी) बने। कुठ लोगों ने चवुवोरी बाह्यो का रूप ले लिया। कुठ मानवनी बालापु बने और अपने कण में मांग निकाले, खड़े रहे। कुठ उसकी शरण में, "हम आपके शरणगत है" -कहेते हुए आ गये। बाकी जो रहे वे हरि-गाम बोले रहे। ९७०

ननदा रमुमुठ किळपुन दसुपुविर तळुवन दसुपुन दसुरलेम वनदेम वानव दसुं निनरझिलर झिलरमा मयुन वामुविउटार मनदा रङ्गिळरवामु वणुडहे जिनार झिलरझिलर मरुवुहोणुआर इनदा रङ्गिळर झिलर नारझिल ररिपुगुर कुञ्जिपु पिळरुविननार 971

झिलर-कुठ; नम वासुपु-जनकी विषयी और; उठ किळपुन-निकट के स्थितवापु ने; नम अहिर तळुवम मीळुम-जनका जब समाते आकर आलिंगन किया तब; गुम नमर अवलेम-(हम) गुम लोगों के (नानदार) नहीं; वानवद वनलेम-देव आय; अगुरुराई-होर वने गये (हनुमान के डेर से); मातुपु-मज्ज (हम, राक्षस नहीं); अम-ऐसा; वामु विउटार-उच्च स्तर में फही; झिलर-और

कुछ; मन्तारस् किळर्-मन्दारतरुकलित; पौळिल् वाय्-उपवन में; वण्टुकळ्
आतार्-भौरे बने; चिलर्-कुछ; मरुळ् कौण्टार्-भ्रमित हुए; चिलर्-कुछ
निशाचरों ने; इन्तु आर्-कलाचन्द्र-सम; अँयिरुकळ्-दाँतों को; इङ्गवित्तार्-
तुड़वा लिया; अँरि पोल्-आग-से; कुम्चियै-केश को; इरुळ्वित्तार्-काला
बना लिया । ६७१

कुछ राक्षसों ने, जब उनकी पत्नियों और रिश्तेदारों ने उनके स्वागत
में आलिंगन किया, तब (हनुमान से डरकर) कहा कि हम तुम लोगों के
बन्धु नहीं हैं । हम सब देव हैं इधर आये हुए । वे बचाकर भाग चले ।
कुछ राक्षसों ने उच्च स्वर में चिल्लाकर कहा कि हम मानव हैं । कुछ
राक्षस मन्दारतरुकलित अशोक वन में भ्रमर बनकर रह गये । कुछ लोग
भ्रमित होकर निष्क्रिय खड़े रह गये । कुछ राक्षसों ने बालचन्द्र-सम अपने
दाँतों को तुड़वा लिया और आग-से लाल अपने केशों को काला बना
लिया । ९७१

कुण्डलक्	कुळैमुहक्	कुङ्गुमक्	कौङ्गैयार्
वण्डलैत्	तेळहुळर्	कर्त्तैहाल्	वरुडवे
विण्डलत्	तहविरैक्	कुमुदवाय्	विरिदलाल्
अण्डमुर्	रुळदव्	रळुदपे	रमलैये 972

कुण्डल कुळै मुक्-कुण्डल मण्डित मुखों और; कुङ्कुम कौङ्कैयार्-कुङ्कुमचर्चित
स्तनों वाली राक्षसियाँ; वण्टु अलैत्तु अँळु-भ्रमरों को अस्त-व्यस्त उठने देते हुए;
कुळल् कर्त्तै-केश राशि के; काल् वरुट-चरणों को सहलाते; अलत्तक-लाल रुई
लगे; विरै-सुवासित; कुमुत वाय्-कुमुदारुण मुख के; विण्टु विरितलाल्-खूब
खुलने से; अ ऊर्-उस नगर के (वासियों के); अळुत्त-रोने का; पेर् अमलै-
बड़ा नाद; अण्टम् उर्ङ्ग उळुत्तु-अण्ड भर में व्याप्त हुआ । ६७२

कुण्डलों से अलंकृत मुखों और कुङ्कुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियों
ने अपने केश को खोल दिया, जिससे भ्रमर अस्त-व्यस्त हो उड़ने लगे ।
उनका केश उनके पैरों को सहला रहा था । वे अपने लाक्षारसरंजित
अधरों वाले मुखों को खोलकर रोयीं, जिससे जो शोर निकला वह अण्ड
भर में व्याप गया । ९७२

कदिरैळुन्	दनैयशैन्	दिरुमुहक्	कणवन्मा
डैदिरैळुन्	दडिविळुन्	दळुदुशो	रिळनलार्
अदिनलङ्	गोदैशै	रोदियो	उत्तुवूर्
उदिरमुन्	दैरिहिला	दिडैपरन्	दौळुहिये 973

कतिर् अँळुन्तु अतैय-रवि उगा हो जैसे; चैम् तिरु मुक्-लाल मुखों के;
कणवन् माटु-पतियों के पास; अँतिर् अँळुन्तु-सामने उठ जाकर; अटि विळुन्तु-

सद नगर-अवधि विषयः; उपरिक्लं नटु-प्रार्थी की (अभ्यास की) खोज में जातेवाले; उल्लंखल-पुनः-पुनः के समान; आदिवासे-संगीतः; वादितार-वादिवासे जातेवाले; नटु-मरकर सह पद रङ्गः; उल्लंखल वाद्य-शब्द-संगीतः; वादितार-खोज ललाकर; नटु इला नगपद-निर्देश संगीत की; उल्लंखल-उपकार करने के लिए; कलितार-(मरकर) उल्लंखल नगपदः; उल्लंखल-आकाशवाणिनी; कर्माद्य अतार-पुनः-पुनः (अभ्यास); कलितार-इला १७७

शरीरों के समान दौड़ीं। मरे पड़े राक्षसों के शवों के ढेरों के बीच में अपने-अपने पति को खोजा। आखिर ढूँढ़ लेकर वे अपने निर्दोष मित्र-से पतियों के साथ मिल गयीं तथा स्वर्ग गयीं। वहाँ व्योमलोकवासिनी पुष्पशाखा-सरीखी अप्सराएँ इनको देखकर रुष्ट हो गयीं। (जो मर जाते हैं, वे स्वर्ग जाकर देव बन जाते हैं। और अप्सराएँ उनको आनन्द प्रदान करती हैं। यह बात ग्रन्थों में कही गयी है। कम्बन ने भी उसकी अनेक स्थलों पर चर्चा की है।) । ९७५

तीट्टुवा	ळनैयकट्	टॅरिवैयोर्	तिरुवत्ताळ्
आट्टित्तिन्	उयर्वदो	रुडलैक्	कुडैयित्तैक्
कूट्टिनी	योरुयिर्त्	तुणैवन्नैड्	गोविन्नै
काट्टुवा	यादियैन्	रुळुडुकै	कूप्पित्ताळ् 976

तीट्टु-पैनायी गयी; वाळ् अतैय-तलवार-सी; कण्-आँखों वाली; तैरिवै-रमणी; ओर् तिरु अत्ताळ्-एक, लक्ष्मी-सरीखी; आट्टिल् नित्तु-नृत्यरत रहकर; अयर्वतु ओर्-थके गये एक; अरु तलै-सिर-कटे; कुडैयित्तै-कबन्ध को; कूट्टि-उसके सिर से लगाकर; नी-तुम; ओर् उयिर् तुणैवन्-अनुपम मेरे प्राण-सम पति; अँन् कोवित्तै-मेरे राजा को; काट्टुवाय् आति-दिखानेवाले बनो; अँत्तु-ऐसा; अळुतु-रोती हुई; कं कूप्पित्ताळ्-हाथ जोड़े (उसने) । ९७६

पैनायी गयी तलवार-सी आँखों वाली लक्ष्मी-सरीखी एक रमणी समराजिर में आयी। वहाँ सिर कटकर जो मर गया था, उसका रुण्ड नाच रहा था। उसने उसको उसके मुण्ड के साथ मिलाया और उससे रोते हुए पूछा कि मेरे जीवन-संगी, मेरे राजा को दिखाओ। ९७६

एन्दित्ता	उलैयैयो	रैळुदरुड्	गौम्बत्ताळ्
कान्दत्तिन्	डाडुवा	तुडुक्कवन्	दत्तित्तै
वेन्दती	यलशित्ताय्	विडुदिया	तडमैत्ताप्
पून्दळिर्क्	कैहळान्	मैय्युडप्	पुल्लित्ताळ् 977

अँळुत अरुम्-चित्र जिसका खींचना कठिन था; ओर् कौम्पु अत्ताळ्-ऐसी एक पुष्पलता-सी एक राक्षसदयिता ने; तलैयै एन्तित्ताळ्-(पति के कटे) सिर को उठा लेकर; नित्तु आट्टुवान्-खड़े होकर नाचनेवाले; कान्तन्-पति के; उटल कवन्तत्तित्तै-शरीर के रुंड को (पकड़कर); वेन्तन्-राजा; नी-तुम; अलचित्ताय्-थक गये हो; नटम् विटुति-नाचना छोड़ो; अँत्ता-कहकर; पूम् तळिर्-कोमल किसलय-से; कैकळाल्-हाथों से; मैय् उड्-शरीर से लगाकर; पुल्लित्ताळ्-आलिंगन कर लिया। ९७७

अचित्तार्पणशक्य एक राक्षसी रमणी ने अपने पति का कटा सिर हाथ में ले लिया। उसका कबन्ध नाच रहा था। अपने पति के नाचते उस

୧୧୧ । ଛାତ୍ର

अ वक्-वह सव ऊप; कण्ठवर्-निर्देश देवा; अरु पावर्-सप्त ऋ-
देवां नै; उप वक् अरि-गीतव रहै का माग कठिन है; अर्ध-ककड़; अर्ध-
पापाक; सप्तवर् व अरि निव-राज के अलग चला पर; वीरवर्-पाक;
अ वक् वृक्ष पर-किमी की सप्त; पावर्-सप्त का; सप्तवर्-सप्त;
कृष्णवर्-वर्णा । ॥१॥

श्रुतदेवताओं ने इस यज्ञि सवका मरना देखा तो उन्हें डर लग गया कि अब जीवित बचना कठिन है। वे वहाँ से भागे और राजस-राजा के जाल चरनों पर गिरे। उन्होंने सभी सेनाओं को मरने का सूचनाल करे सुनाया। १७८

५७८ । मन्त्रादि विषय प्रमाणं

कयमंमदिळें	कयल्लिण्	कळिळें	कातेंकडें
गुणमंमदिळें	गुलिळिळें	पुलिण्	जवें
अयमंमदिळें	मदिळें	वलिण्	वीळें
मयमंमदिळें	वयिळें	वलि	माळें

676 മലയാളം

सयत् सकृद्-सयत्तया; कयत् सकृद्-कयत् मयत् के सयत् वसत्; कय
 कृत्-कृत् के कृत् से; कर्त्तु कर्त्तु वक्तु-वक्तु निकलकर गिराते हुए; वृत्त
 सक्ति-सय-सम; पुर् कर्त्तु-वृत् के कृत् को; पृष्टि अर्थात् उर-वृत् पर बोट
 वेत्त हुए; अयत् सकृद्-वृत् के वृत् (वृत्त) के; सकृत् सकृद्-वृत् (विभव)
 के वृत् (रावण) के; अतिपुत्र वीर्यवतवत्-वराणां पर गिरा; वृत्त अर्थात्-वृत्
 पीठकर; अर्थात्-विलोकर; मातृवत्-राणी । ६७६

मधुसूता मन्दोदरी ने यह सुना तो वह अपनी 'कयल' मछली-सी मत आँखों से अश्रुधारा बहाती हुई और अपने मेघ-मेघ केश की बेणी को खोलकर भीम पर लोटने देती हुई ब्रह्मदेव के प्रणीत, पुलस्त्य के पौत्र, विश्वा के पुत्र रावण के चरणों में गिरी और पेट पीटती हुई रोयी, कलपी और व्यथ हुई । १७९

ବରଷ । ଶୁଣି କହେ ଅଧିକ

[illegible]

लेकर; एवरुम्-सभी; इटै विळुन्तु-चरणों पर गिरकर; इरङ्कि-दुखी होकर; एङ्किन्नार्-भयोद्विग्न रहे; कावल मा तेवरुम्-आदरणीय ऋतुदेवता भी; कळिक्कुम् चिन्तैयार्-मन में आनन्द पाकर; कावलन्-परिपालक के; काल् मिचै-चरणों पर; विळुन्तु-गिरकर; अळुत्तर्-(दिखावे के लिए) रोये । ६८०

निर्दोष उस श्री नगर की दयिताओं से लेकर सारे लोग उसके पैरों पर गिरकर रोये । ऋतुदेव भी औपचारिकतावश उसके चरणों पर गिरकर रोये; पर उनके मन पुलकित हो रहे थे । ९८०

11. पाशप् पडलम् [पाश(-बन्धन) पटल]

अव्वळि	यववुरै	केट्ट	वाण्डहै
वैव्वळि	यैरियुह	वैहुळि	वीङ्गितान्
अव्वळि	युलहमुड्	गुलैय	विन्दिरत्
तैव्वळि	तरवुयर्	विशयच्	चीर्त्तियान् 981

अ वळि-तब; अ उरै-वह वृत्तान्त; केट्ट-जिसने सुना; आण् टकै-पुरुष-श्रेष्ठ मेघनाद; अ वळि उलकमुम्-किसी भी लोक को (सभी लोकों को); कुलैय-कंपाते हुए; इन्तिर तैव्वु-इन्द्र की शत्रुता को; अळितर-मिटाकर; उयर् विचय-प्राप्त उत्कृष्ट विजय की; चीर्त्तियान्-कीर्तिमान; वैम् वळि-क्रूर आँखों से; अरि उक-आग बरसाते हुए; वैकुळि-वीङ्कितान्-कोप में बढ़ा । ६८१

यह समाचार इन्द्रजित् ने सुना । इन्द्रजित् पुरुषश्रेष्ठ था । उसने सब लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए शत्रु देवेन्द्र के बल को मिटाकर परास्त किया था, जिससे उसकी विजयकीर्ति बढ़ गयी थी । जब उसने अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुना, तो उसका कोप बढ़ आया जिससे उसकी भयंकर बनी आँखों से आग-सी निकली । ९८१

अरञ्जुडर्	वेरुन्न	दनुश	तिरुशौल्
उरञ्जुड	वैरियुिर्त्	तौरुव	तोङ्गितान्
पुरञ्जुड	वरिशिलैप्	पौरुप्पु	वाङ्गिय
परञ्जुड	रौरुवतैप्	पौरुवुम्	पान्मैयान् 982

अरम् चुटर् वेल्-रेती से रेतकर चमकनेवाले भाले के धारक; तत्तु अत्तुवन्-उसके भाई का; इरु चौल्-मरने के समाचार ने; उरम् चुट-उसके मन को तपाया; अरि उयिर्त्तु-अग्नि के समान श्वास निकालकर; पुरम् चुट-त्रिपुर को जलाने के लिए; वरि चिलै-सबन्ध धनु के रूप में; पौरुप्पु वाङ्किय-मेरुपर्वत को जिन्होंने झुका लिया; परम् चुटर् औरुवतै-परम ज्योति परमेश्वर के; पौरुवुम् पान्मैयान्-समान रहनेवाला; औरुवन्-अद्वितीय वीर; ओङ्कितान्-(मेघनाद) उठा । ६८२

रेती से पैनायी गयी शक्ति-धारी उसके भाई की मृत्यु के समाचार

ने उसके मन की जग-सा दिया । वह अग्रिम भवनद आग के समान गरम निःशवास छोड़ते हुए, विपुल जलाने के लिए जिन्दगी सेर की धनु के रूप में झुकाया था, उन व्योमिष्य परमेश्वर के समान युद्धोद्यत हो उठा । १८२

पुत्रनर विद्युत्प्रियके कलकल काटद्वय, आरिह नरकध्व गुण्ड वारिजनेर
कॉइन कॉइन शीर्षक कौनललाल, पॉइन नैजनेदिया पिजनेद दण्डसे 983
विद्युत्प्रियके-आकाश की सी; अलन काटद्वय-ऊँचाई की सीमा दिखानेवाले;
आठ डर नरक ध्व-बारह सी धूल; गुण्ड-लिसम जुते थे; आँखें बंद-समस्त पहिया
के रूप पर; ऐतिहास-वर्ण; कॉइन कॉइन-उसके द्वारा कहे गये; शीर्षक-
(कठोर) वचन; कावेनलाल-गुंथ हुए आये, इसलिए; नैजनेद लिख-लखी विद्याएँ;
पॉइन-बारीक सा गयीं; अण्डस पिजनेद-अण्ड फटा । १८३

वह अपने सारयुक्त पट्टिबंदार रूप पर चढ़ा जिसमें आकाश की सी ऊँचाई की सीमा दिखाने-से बड़े रङ्गे बारह सी धूल जुते थे । तब उसने कोष्ठ में लगातार ऊँछ कठोर वचन कहे, जिनकी उग्र कठोरता के कारण लखी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और अण्ड सी फट गया । १८३

आरनेनन कळुन दास वैद्य मयान धनेन
वेरनेविपुल कुलप शिब वृद्धमिव समर वेनेन
शीरनेनरु पाव शीरने वेरनेकुन देव रण
धुरनेनरु वामन दानम पोनेनेन सुखरि विदर 984

कळुन-पावल और; दास-द्वार और; वैद्य-भार्या; अचि अचन-
आरनेनन-नदन कर उठा; असर वेनेन-देवराज; विपु-
कुलप-व्यग्रह; शिब वेरने-देवदुक्त गरीर वाला होकर; वृद्धमिवन-बन
हुआ; वेरनेकुन वेर आन-देवादिदेव; धुरनेनरु-विद्युत् सी; पाव
शीरनेनरु-युद्ध सी वरम सीमा पर आ गया; शीर-सीवर; वम वम पोनेनेन-
अचन-अचन वाम के; सुखरि-अण्डस से; विदर-विरत हुए । १८४

वब वडे जने जग तब उसकी पायलों, डारों और शिरों ने अशानि का-सा नदन किया । देवराज काप गया और उसका शरीर पसीना-पसीना हो गया । देवदेव विदेवी ने भी युद्ध वरम सीमा पर आ गया —यह सीवकर अपना योगाभ्यास छोड़ दिया । १८४

वमविपु पुनेन दोन दादनीर नरुमवुड गणाने
वमविपु शिलपु नोकि वाममडिने वरने
कौमविपु मय वाळकेके करकेलिनरु करकेगा वारने
अमविपु वेपनेदा नैने वेपनेद पुनेनरु 985

तम्पिये उत्तुम् तोडुम्—ज्यों-ज्यों अपने कनिष्ठ का स्मरण करता; तारे नीर्—
 त्यों-त्यों अश्रुधारा से; ततुम्पुम् कण्णान्—भरी आँखों का; वम्पु इयल्—बन्धनयुक्त;
 चिलयै—धनु को; नोक्कि—देखकर; वाय् मदित्तु—अधर मोड़कर; उरुत्तु नक्कान्—
 कोप की हँसी हँसता; कौम्पु इयल्—शाखाओं में जीने का; माय वाळ्क्क—मर्त्य-
 जीवन जीनेवाले; कुरङ्किताल्—वानर से (क्या); कुरङ्का आड्डल्—अथक बली;
 अम्पियो तेयन्तान्—मेरा छोटा भाई क्या मरा; अन्तु पुक्कल् अन्त्रो—मेरे पिता की
 न; तेयन्ततु—मिट गयी; अन्त्रान्—कहा । ६८५

इन्द्रजित् ज्यों-ज्यों अपने भाई की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखें
 अश्रु से भर जातीं । उसने सबन्ध अपने धनु को देखा । फिर अधर
 दाँतों से काटते हुए कोप के साथ हँसा । उसने आहत अभिमान के स्वर
 में कहा कि शाखाजीवी मर्त्य बन्दर द्वारा क्या मेरा छोटा भाई ही नाश
 हुआ ? नहीं । मेरे पिताजी का यश न नाश हुआ ! । ९८५

वेरिरण्	डत्तवुम्	विल्लु	मिडैन्दवुम्	वैरुप्पन्	डालुम्
कूरिरण्	डाक्कुम्	वाट्कैक्	कुळुवैयुड्	गुणिक्क	लाड्डेम्
शेरिरण्	डरुहु	शैय्युज्	जैरिमदच्	चिरुहण्	यानै
आडिरण्	डज्जु	नूर्रि	तिरट्टितेरुत्	तौहैयु	मः(ह्)दे 986

वैरुप्पु अन्त्रालुम्—पर्वत ही क्यों न हों; कुरु इरण्डु आक्कुम्—(भिड़े तो) उसके
 दो भाग करनेवाले; वेल् तिरण्टतवुम्—शक्तियों—सहित वीर जो एकत्रित हुए; विल्लु
 मिडैन्तवुम्—धनु (वीर) जितने भीड़ लगाकर मिले; वाळ् के कुळुवैयुम्—खड्गहस्तों के
 बलों को; गुणिक्कल् आड्डेम्—गिनने की शक्ति हमारे पास नहीं है; इरण्डु अरुक्कु—
 दोनों बाजूओं (में भूमि) को; चेडु चैय्युम्—पंक बनानेवाले; चैरि मत—मदमत्त;
 चिरु कण्—छोटी आँखों के; यानै—गजों की संख्या; आडु इरण्डु अज्जु नूर्रिन्
 इरट्टि— $६ \times २ \times ५ \times १०० \times २ (= १२)$ हजार है; तेर् तौकैयुम्—रथों की संख्या
 भी; अ.ते—वही । ६८६

उसके साथ पर्वत को भी दो भागों में खण्डित करने की शक्ति
 रखनेवाले भाले (लिये हुए वीर) एकत्रित होकर गये । धनुर्धर वीर
 मिलकर गये और तलवारधारी वीर गये । पर उनकी संख्या जान लेना
 हमारी शक्ति के बाहर की बात है । पर दोनों ओर भूमि को पंक बनाते
 हुए चलनेवाले गजों की संख्या बारह हजार थी । रथों की संख्या भी
 वही । ९८६

आयमात्	तातै	तात्तवन्	दण्मिय	दण्म्	वेनैत्
तीयवा	णिरुदर	वेन्दर्	शैरुन्दवर्	शैरत्	तेरिन्
एयैनु	मळविन्	वन्दा	तिरावण	तिरुन्द	याणर्
वायिडोय्	कोयिल्	पुक्का	तरुविशोर्	वयिरक्	कण्णान् 987

जो हुआ वह सोचकर; उल्लैयकिर्त्ति-दुःख करते हैं; नी-आप; वन् तिरुत्
 कुरङ्किन्-अति चतुर वानर का; आङ्गुल् मरपु-बल-पराक्रम; उणर्न्तु-जानकर
 भी; चैन्नु-जाकर; नीर् पोहतिर् अन्नु-तुम जाकर लड़ो, कहकर; तिरुम् तिरुम्
 चैलुत्ति-बारी-बारी से भेजकर; निरुत्तर् तम् कुळुवै अल्लाम्-राक्षसों के सारे दलों
 को; नीये-आपने स्वयं; तेय-क्षीण कराते हुए; कौन्ऱुत्तै अन्नु-मरवाया न । ६८६

पिताजी ! आप अपना हित कुछ नहीं सोचते । जो बीत गया
 उसको सोचकर दुःखी हो रहे हैं । आपको अति बलशाली वानर की
 शक्ति की स्थिति विदित हो गयी थी । तो भी आपने 'जाकर लड़ो' कहकर
 बारी-बारी से राक्षसदलों को भेजा और उनको क्षय करते हुए मरवा
 दिया । ९८९

किङ्गरर् शम्बु मालि केडिला वैव रैन्ऱिप्
 पैङ्गळ् लरक्क रोडु मुडन्ऱैन्ऱु पहुदिच् चेतै
 इङ्गोर् पेह् मीण्डा रिल्लैयेर् कुरङ्ग देन्दाय्
 शङ्गर नयन्मा लैन्बोर् तामैन्नुन् दरत्त दामे 990

अन्ताय्-पिताजी; किङ्करर्-किंकरदल; चम्पुमालि-जम्बुमाली; केट्टु
 इला ऐवर्-अक्षयबल पंच सेनापति; अन्नु-ऐसे; इ पम् कळल्-इन चमकदार
 पायलधारी; अरक्करोट्टम्-राक्षसों के साथ; उटन् चैन्नु-उनसे मिलकर जो गयी;
 पकुत्ति चेतै-बड़े भाग की सेनाओं में; इङ्कु-यहाँ; ओह पेहम्-नाम मात्र के लिए
 भी एक; मीण्डार् इल्लैयेल्-नहीं लौटा तो; कुरङ्कु अतु-वह वानर; चङ्करन्
 अयन् माल्-शिव, ब्रह्मा और विष्णु; अन्पोर् ताम् अन्तुम्-कहलानेवाले वे ही हैं;
 तरत्ततु आम्-मानने योग्य ही है । ६६०

मेरे पिताजी ! किंकर, जम्बुमाली, अमिट पंच सेनापति —इन मनोरम
 चमकदार पायलधारी वीरों के साथ गयी बहुत बड़े अंशों की सेना का
 कोई भी लौट नहीं आया । तो वह वन्दर शिव, ब्रह्मा और विष्णु
 कथित त्रिदेव ही है —यही कहना पड़ेगा । ९९०

तिक्किनै वैन्नु मेता डिरिबुरन् दीयच् चैऱ्ऱु
 मुक्कणान् वाळै वाङ्गि युलहोर् सून्रुम् वैन्ऱाय्
 अक्कनैक् कौन्ऱु निन्ऱु कुरङ्गिनै याङ्गुल् काट्टिप्
 पुक्किनि वैन्नु सैन्ऱाऱ् पुलम्बन्ऱिप् पुलमैत् तामो 991

तिक्किनै वैन्नु-विशाओं की जीतकर; मेल् नाळ्-पहले; तिरिपुरम् तीय
 चैऱ्ऱु-त्रिपुर को जलाकर जिन्होंने मिटाया; मुक्कणान्-उन त्रिनेत्र (शिवजी) द्वारा
 दत्त; वाळै-तलवार (चन्द्रहास); वाङ्कि-लेकर; उलकु ओह सून्रुम्-
 तीनों लोकों को; वैन्ऱाय्-जीत लिया (आपने); अक्कनै कौन्ऱु निन्ऱु-अक्ष को मारकर
 जो खड़ा है; कुरङ्किनै-उस वानर को; आङ्गुल् काट्टि-बल प्रयोग करके;

मुखपट्टालंकृत भयंकर और क्रुद्ध गजों से भरी राक्षस-सेना युगान्त के भयंकर सागर के समान उसको घेरकर गयी। वह वीरता के आश्रय का बहुवचन मिटानेवाला (यानी वीरता का वही एकमात्र आश्रय) इन्द्रजित् समुद्र-मध्य एकाकी स्थित अप्रतिम बड़े मेरु के समान लगा। ९९३

शैतृजन्	तैत्त्व	मन्नो	तिशैहळो	डुलह	मैल्लाम्
वैत्तुव	तिवन्नैत्	शालुम्	वीरत्ते	निन्ऱ	वीरन्
अन्ऱुदु	कण्ड	वाळि	यनुमत्तै	यमरि	ताऱुल्
नन्ऱैन्	वुवहै	कौण्डान्	यावरु	नडुक्क	मुऱुऱार् 994

चैत्तृजन्-जो गया; इवत्-यह; तिचैकळोटु-दिशाओं के साथ; उलकम् अल्लाम् वैत्तुवन्-सारे लोकों का जीतनेवाला था; अन्ऱालुम्-तो भी; वीरत्ते निन्ऱ वीरन्-वीरचरित्र-स्थित वीर था, (इसलिए); अतु-(हनुमान का साहस) वह; अन्ऱ कण्ट-जिसने उस दिन देखा; वाळि अनुमत्तै-जययशस्वी हनुमान को (देखकर); अमरित् आऱुल् नन्ऱु-युद्ध का विक्रम अच्छा है; अँत-ऐसा; उवकै कौण्डान्-(कहकर) खुश हुआ; यावरुम्-सभी; नडुक्कम् उऱुऱार्-काँप उठे। ६६४

इस भाँति जो गया, वह इन्द्रजित् दिशाओं के साथ त्रिलोकविजयी था। तो भी वीरता का जीवन बितानेवाला था, इसलिए उसने हनुमान का साहस देखकर प्रशंसा की कि इसका युद्ध-पराक्रम बड़ा विशिष्ट है। वह बहुत मुदित हुआ। पर सभी लोग भय से काँप उठे। ९९४

इलैहुलाम्	बूणि	नानु	मिरुम्बिण्ड	गुरुदि	येऱुऱ
अलहिल्वैम्	बडैह	डैऱुऱि	यळविडर्	करिय	दाहि
मलैहळुड्	गडलुम्	याऱुड्	गात्तमुम्	वैऱुऱु	मऱुऱोर्
उलहमे	यौत्त	दम्मा	पोर्प्पेरुड्	गळमैन्	रुन्ता 995

इलै कुलाम्-पत्रचित्रित; पुणितानुम्-आभरणधारी (इन्द्रजित्) भी; पैरुम् पोर् कळम्-वह अतिविशाल समरभूमि; इरुम् पिणम्-बड़े-बड़े शवों; कुरुति-रक्त (के तालाव और नदियाँ); एऱुऱ-के द्वारा लाये गये; अलकु इल्-अगणित; वैम् पटैकळ्-भयंकर हथियार; तैऱुऱि-ठोकर लगाते हैं; अळवु इटऱुक्कु-मापने के लिए; अरियतु आकि-कठिन बनकर; मलैकळुम्-पर्वतों और; कटलुम्-सागरों; याऱुम्-और नदियों; कात्तमुम् पैऱुऱु-और जंगलों से युक्त होकर; मऱुऱु ओर् उलकमे औत्ततु-अन्य दूसरे भूलोक के समान रही; अँन्ऱु उन्ता-यह सोचकर। ६६५

इन्द्रजित् ऐसे आभरण पहने हुए था, जिनमें पत्र के आकार की चित्तकारी हुई थी। उसने युद्धभूमि में बड़-बड़े शव देखे; रक्त की नदी देखी। उनसे लाये गये भयंकर अनेक हथियार देखे। और सब वेशुमार थे। तब वह समरभूमि भूलोक के समान ही लगी, जिस पर पर्वत, समुद्र, नदियाँ और कानन भरे पड़े हैं। ९९५

जा मरे पड़े थे, वे आँखों और गालों के समान प्यारे थे और अपने दोषों के दृष्टिगोचरों के साथ युद्ध करने के बहुरंग उन्मादी थे। ऐसे वे अपार सङ्घर्ष में मरे पड़े थे। इन्द्रजित ने उन्हें भीम पर सर्वत्र देखा। उसका मन विचलित हुआ। अथर्व मोक्षकर लक्ष्मी छोड़ने लगा। न मरनेवाले बग में छुई घुस गयी हो जैसे वह अपमानित हो गया हुआ। १९७

कान्तिडै यत्तैक् कुर्र् कुर्र्मुड् गरत्तार् पाडुम्
 यानुडै यैम्बि वीन्द विडुक्कणुम् बिस्वु मैल्लाम्
 मान्तिड रिस्व रानम् वान्तर मौन्त्रि तानुम्
 आन्तिडत् तुळवैन् वीर मळहिर्ऱे यम्म वैन्ऱान् 998

कान् इटै-(दण्डक-) अरण्य में; अत्तैक्कु उर्ऱ-मेरी बुआ का जो हुआ वह;
 कुर्र्मुम्-हीनता; करत्तार् पाटुम्-और खर आदि का मरण; यान् उटै अम्पि-मेरे
 छोटे भाई के; वीन्त इटुक्कणुम्-मरने का दुःख; पिस्वुम् अल्लाम्-अन्य सभी;
 मान्तिड इस्वरात्तुम्-वो मनुष्यों और; वान्तरम् औन्ऱित्तालुम्-एक वानर द्वारा; आन्
 इटत्तु-जब हुए तो; अन् उळ वीरम्-मेरी वीरता; अळकिर्ऱे अम्म-बड़ी सुन्दर है,
 मैया; औन्ऱान्-(आहत स्वर में) कहा (इन्द्रजित ने) । ६६८

दण्डक वन में मेरी बुआ के अंग कटे । खर आदि मरे । इधर
 मेरा छोटा भाई मरा । यह सारा अपमान का और दुःखदायी काम दो
 मनुष्यों और एक वानर के हाथ हुआ । तो, मैया ! मेरी वीरता भी
 खूब प्रशंसनीय रही ! । ९९८

नीर्प्पुण्ड वुदिर वारि नैडुन्दिरेप् पुणरि तोन्ऱ
 ईर्प्पुण्डर् करिय वाय पिणक्कुव डिडिश् चैल्वान्
 तेय्प्पुण्ड तम्बि याक्कै शिवप्पुण्ड कण्ग डीयिल्
 काय्प्पुण्ड शैम्बिर्ऱोन्ऱक् कर्ऱप्पुण्ड मनत्तन् कण्डान् 999

नीर्प्पु उण्ट-द्रवमान; उत्तिर वारि-रक्त जल; नैडुम् तिरै-बड़ी-बड़ी तरंगों
 से युक्त; पुणरि तोन्ऱ-सागर के सामने दिखते; ईर्प्पु उण्टर्क्कु अरिय आय-
 छीनने के लिए कठिन; पिण कुवटु-शव-पर्वतों से; इडिश् चैल्वान्-ठोकर खाते हुए
 जानेवाला; तेय्प्पु उण्ट-पिसे हुए; तम्पि आक्कै-छोटे भाई के शरीर का;
 चिवप्पु उण्ट कण्कळ-लाली भरी आँखें; तीयिल्-आग में; काय्प्पु उण्ट-तपे हुए;
 शैम्पिल् तोन्ऱ-ताँबे के समान दिखें, ऐसा; कर्ऱप्पु उण्ट-(और) कालिमायुक्त
 (क्रुद्ध); मतत्तन्-मन वाले ने; कण्डान्-देखा । ६६९

इन्द्रजित् के सामने बहनेवाले रक्त का, बड़ी-बड़ी लहरों वाला समुद्र
 दिखायी दिया । उसका रथ उस रक्त-नदी से तिराये न जा सकनेवाले शवों
 से टकराता हुआ आगे बढ़ रहा था । तब उसने अपने भाई के शव को
 देखा, जो खूब पिसकर कर्दम बन गया था । उसकी लाल आँखें तप्त ताँबे
 के समान दिखीं । उसका मन कोप से काला हो गया । ९९९

तारुहन् कुरुदि यन्त कुरुदियिर्ऱ इत्तिमाच् चीयम्
 कूरुहिर किलैत्त कौर्ऱक् कन्तहन्मैय्क् कुळम्बिर्ऱोन्ऱत्
 तेरुहक् कैयिन् वीरच् चिलैयुह वयिरच् चैङ्गण्
 नीरुहक् कुरुदि शिन्द नैरप्पुह वयिरत्तु निन्ऱान् 1000

दासकर्म कुरुति अनेन-दासकायुर के रजस के समान; कुरुतिविश्व-रजसप्रदाह स; तसि मा चीयम्-अहिद्विष वहे (नर-) सिंह के; कर्त उतिकर किछदेव-नेत्र पावनों से चोरकर निकाले गये; कर्तोर कर्मकर्म-विशयी कर्मक (-कर्मक) के; मय कुञ्जमयिन-शरीर के कर्म म हेर के समान; तीक्ष्ण-विष्णु (अक्ष) ती; नेर उक-रय की जगामाते देवे हुए; क्षिप्त चीर विश्व-द्वेष के चीरघ्न की; उक-गिरति हुए; विपर धर्म कर्म-द्वेषपूर्ण लाल आँखों से; चीर उक-जल घरघाले हुए; कुरुति विश्व-रजस वहेते हुए; मयपु उक-आम जगाले हुए; उचिरदेव विश्वरज-लम्बे रजस निकाला हुआ उठा रहा । १०००

(कालिकादेवी द्वारा निरव) दासक राजस के रजस के समान रजसप्रदाह में अक्षकुमार उस कर्मकर्मक के समान पड़ा हुआ था, जिसके शरीर को अहिद्विष नृसिंह के नेत्र पावनों से चीर-चीरकर विरक्त कर्मक बना दिया था । यह देखकर इन्द्रजित की तिथति ऐसी हो गयी कि उसका रय जगामा गया । उसके द्वेष से घृष्ट छूट गया । द्वेषपूर्ण लाल आँखों से अश्व के साथ रजस और आम भी निकली । लम्बी साँसें छोड़ते हुए वह उठा रहा । १०००

वृषविषं ययिष्वे प्रियंवे प्रमयेयकं कर्षि कर्षि ययि
वववदलं कर्तुं सादृशं सादृमा कृलद्विं वल्लवार्
अववलं दृतेवुं जेरे लज्जव रीळिकं वपा
अववलं दृतेव प्रदृश प्रमयेयवे वल्लि प्रमदाय 1001

अनेनाय-जल; वृष दल-मयक और पवाकार फिर बाल; अयिष वेन-तीक्ष्ण बाल के; उचते-(धारण करनेवाले) वृष्टारे प्रिष के; प्रमयेय कर्षि-कृषि की सीवकर; कर्तुं-पुष्ट भी; आदि वववदल-वृष्टारे ग्राह्य हर; आदृश-नहीं सकली; सादृमा कृल-विष लोफों में; वल्लवार्-रहनेवाले; अ उलकवे-उस प्रमलक म; उचरे एन-रहे ती; अळिक-वृष्टे वहाँ छिपाये रखने से; अवेववर्-उचते; देया-बाधा; अमये-हमें; अळिष नीति-आसानी से छोड़कर; अ उलकवे-नृसिंह लोफ में; उदृश-पहुँचे । १००१

मरे जल ! अतिकर और पवाकार फिर बाले आलाधारी वृष्टारे प्रिष के कोप का विचार करके मृत्यु में भी वृष्टे भय लेने की शक्ति नही । विष लोफों के वासी भी अपने-अपने लोक में हों, तो वे वृष्टे वहाँ छिपाये रखने से उचते । बाधा ! हमें आसानी से छोड़कर किस लोक में पहुँच गये ? । १००१

आदृशल नादि यनवा लज्जवलिषं दयसं वेन
शीरुमं शीरुमं शीरुमं शीरुमं शीरुमं शीरुमं
नीरुमं नीरुमं नीरुमं नीरुमं नीरुमं नीरुमं
पदुमं पदुमं पदुमं पदुमं पदुमं पदुमं

आइलन् आकि-(दुःख) न सह सककर; अइवु अछिन्तु-बुद्धिनाश होकर;
अन्पाल्-प्रेम से; अयरुम् वेलै-जब थकित हुआ तब; चीइरुम् अँन्नु ओन्नु-कोप
नाम के उस भाव ने; तात्ते-स्वयं; मेल् निमिर्-उमग उठ; चैलविइरु आकि-
गतिशील बनकर; एइरुम् चाल् आणिककु-खूब अन्दर घुसी कील को; अँतिर् चैल-
पीछे चलाने; आणि कटायतु अँन्त-और एक कील मारी गयी जैसे; तोइरिय तुत्प
नोयै-(मन में) उठे दुःख-रोग को; उळ् उइ-अन्दर से; तुरन्ततु-निकाला । १००२

इन्द्रजित् अपने भाई की मृत्यु-जनित दुःख सह नहीं सका । बुद्धि नष्ट
हो गयी । प्रेम से अभिभूत होकर वह थकित हो रहा था । तब कोप
उठा । उसने, ऊपर रखकर पीटने पर जैसे एक कील अन्दर रहनेवाली
कील को बाहर निकाल देती है वैसे ही, दुःख के रोग को कोप द्वारा अन्दर
से बाहर निकाल दिया । १००२

ईण्डिवै निहळ्वुळि यिरवि तेरैन्तत्, तूण्डुर् तेरिन्मेर् शोन्नुन् दोन्नुल्लै
मूण्डुमुप् पुरञ्जुड मुडुहु मीशत्तिन्, आण्डहै वनैहळ् लनुम नोक्कितान् 1003

ईण्डु-यहाँ; इवै-यह सब; निकळ्वु उळि-जब होता रहा तब; इरवि तेर्
अँन्त-रवि और उसके रथ के समान; तूण्डु उरु-चलाये जा रहे; तेरिन् मेल्-रथ पर;
तोन्नुम् तोन्नुल्लै-विद्यमान राजकुमार को; मूण्डु-कोपाक्रान्त होकर; मु पुरम् चुट-
त्रिपुर जलाने हेतु; मुटुकुम्-शीघ्र जानेवाले; ईचित्तिन्-ईश्वर के समान; आण्
तकै-पुरुषश्रेष्ठ; वनै कळल्-पहनी हुई पायल वाले; अनुमन्-हनुमान ने;
नोक्कितान्-देखा । १००३

जब इन्द्रजित् की तरफ से यह हो रहा था, तब पायलधारी हनुमान
ने, जो त्रिपुरान्त करने के लिए उठकर शीघ्र जानेवाले परमेश्वर के समान
था, रवि और उसके रथ के समान, चलायमान रथ पर इन्द्रजित् को आता
हुआ देखा । १००३

वैन्नुरे	निदन्मुत्	शिलवीररै	यैन्नुम्	मैय्मै
अन्नुरे	मुडुहिक्	कडिदैय्दि	यळैत्त	दम्मा
ओन्नुरे	यिनिवैल्	लुदशोइ	लडुप्प	दुळ्ळ
दिन्नुरे	शमैयुम्	मिवत्तिन्दिर	शित्तु	मैन्वान् 1004

इतन् मुत्-इसके पहले; चिल वीररै-कुछ वीरों को; वैन्नुरेन्-(जो) मैंने जीता;
अँन्नुम् मैय्मै-वह सत्य; मुटुकि-जल्दी जाकर; कटितु अँय्ति अळैत्ततु-शीघ्र
पहुँचने बुला लाया; अन्नुरे-न; इत्ति-अब; वैल्लुतल्-जीतना; तोइल्ल-हारना;
ओन्नुरे-इनमें एक ही; अटुप्पतु उळ्ळतु-मिलनेवाला है; इन्नुरे चमैयुम्-वह आज
ही होगा; इवन्-यही; इन्तिरचित्तुम् अँन्पान्-इन्द्रजित् नाम का होना चाहिए;
(अम्मा-मैया) । १००४

मैंने इसके पहले कुछ वीरों को जीता था । यह सत्य तुरन्त इनको

द्वन्द्वजिने को मारने से होवेवाला लाभ केवल एक हो ले क्या ? इस
 यशस्वी को मार दूँ, तो दुन्द का भी दुःखान्त रहने देना । आज
 हो लंका और राक्षसों का गद्देनाश हो जायगा । रावण को भी जीवित
 नष्ट से काटनेवाला बन जाऊँगा मैं । ४००६

अकाल	परकल	मातृग	दे	मातृग	भरु
अकाल	अकाल	अकाल	अकाल	अकाल	अकाल

पुक्का तित्मुत्तुक् कुयर्पूशल् पेरुक्कुम् वेलै
मिक्कानुम् वहुण्डोर् मरामरड् गौण्डु मिक्कान् 1007

अ काले-तब; मुक्काल्-तीन बार; उलकम् और मूत्रैयुम्-तीनों लोकों को;
वैन्ऱु-जीतकर; मुर्ऱि-पूरा करके; पुक्कात्तिन् मुन्-लंका में प्रविष्ट जिसने किया था,
उसके आगे; अरक्करुम्-राक्षसवीर; आतैयुम्-गज; तेरुम्-रथसेना; मावुम्-
और अश्वसेना; पुक्कु-घुसकर; उयर् पूचल्-उच्च शोर; पेरुक्कुम् वेलै-मचाने
लगी तब; मिक्कानुम्-श्रेष्ठ हनुमान भी; वैकुण्डु-कोप करके; ओर् मरामरम्
कौण्डु-एक सालवृक्ष लेकर; मिक्कान्-प्रबुद्ध हो गया । १००७

तब जो तीन बार तीनों लोकों को जीत चुककर लंका में प्रविष्ट
हुआ था, उस इन्द्रजित् के सामने राक्षस वीरों, गजों, रथों और अश्वों की
चतुरंगिनी सेना ने प्रवेश करके उच्च युद्धघोष किया । श्रेष्ठ हनुमान
ने भी एक सालवृक्ष को उखाड़ लेकर अपना विराट् रूप धर लिया । १००७

उदैयुण् उतयानै युरुण्डत्त यान्नै यौन्ऱो
मिदियुण् उतयानै विळुन्दत्त यान्नै मेन्मेल्
पुदैयुण् उतयानै पुरण्डत्त यान्नै पोराल्
वदैयुण् उतयानै मरिन्दत्त यान्नै मण्मेल् 1008

यान्नै उतै उण्डत्त-गज लातें खा गये; यान्नै उरुण्डत्त-गज लुढ़क गये; यौन्ऱो
ओ-केवल एक ही क्या; यान्नै मिति उण्डत्त-गज रौंद गये; यान्नै विळुन्दत्त-गज
गिरे; यान्नै-गज; मेल् मेल्-एक के ऊपर एक; पुतै उण्डत्त-धँस गये; यान्नै
पुरण्डत्त-गज लोटे; यान्नै-गज; पोराल्-युद्ध में; वतै उण्डत्त-मारे गये; यान्नै-
गज; मण्मेल् मरिन्दत्त-भूमि पर चित गिर गये । १००८

(सेना का हर अंग विध्वस्त हुआ, किस प्रकार ? सो देखिए ।)
गज लात खाकर, लुढ़ककर मरे । वही ? नहीं । गज पैरों से रौंदे
जाकर, नीचे गिरकर, एक के ऊपर एक गिरकर दबाये जाने से, लोटते हुए,
युद्ध में मारे जाकर और भूमि पर चित गिरकर, इस भाँति विविध प्रकार
से मर गये । १००८

मुडिन्द तेर्क्कुल मुडिन्दन तेर्क्कुल मुरणिर्
रिडिन्द तेर्क्कुल मिडुत्त तेर्क्कुल मच्चिर्
रौडिन्द तेर्क्कुल मुक्कन तेर्क्कुल नैक्कुप्
पडिन्द तेर्क्कुलम् बरिन्दत्त तेर्क्कुलम् बडियिल् 1009

तेर्क्कुलम् मुडिन्द-रथवृन्द मिटे; तेर्क्कुलम् मुडिन्दत्त-रथकुल टूटे;
तेर्क्कुलम्-रथकुल; मुरण् इरु-बल खोकर; इटिन्द-ढकेले जाकर नष्ट हुए;
तेर्क्कुलम्-रथवृन्द; इरुत्त-खण्ड-खण्ड हुए; तेर्क्कुलम्-रथदल; अच्चु इरु-
धुरी टूटने से; औटिन्द-टूटे; तेर्क्कुलम् उक्कत्त-रथवर्ग चूर होकर छितर गये;

[illegible]

(अथवा की स्थिति—) कठि अथवा की सिर फट गये । कठि की आँखों की पुतलियाँ फट गयीं । कठि के सवाल पुरों के बंद फट । कठि की की पीठ टूटती और वे गिर गये । कठि के गुरियाँदार होराजकल वध कबल । कठि ने रक्त वसन किया । कठि के स्वर्णलंकन प्रकाशमय खुर पिय गये । कठि के स्थूल गले टूट गये । १०१०

[illegible]

३००७ । मम भद्र-भद्रं भवतु । मम भद्रं भवतु । मम भद्रं भवतु । मम भद्रं भवतु ।

टूटे कन्धे, फटे सिर, काट खाये गये, कण्ठहीन, सालवृक्ष से खूब पिटे, और भयभीत — इस भाँति वे राक्षस वीर मटियामेट हो गये । १०११

वट्ट	वैज्जिलै	योद्धिय	वाळियुम्	वयवर्
विट्ट	वैन्दिरु	पडैहळुम्	वीरन्मेल्	विळुन्द
शुट्ट	मैल्लिरुम्	बडैहलैच्	चुडुहला	ददुपोल्
पट्ट	पट्टन्	तिशैदौरुम्	बौरियौडुम्	वरन्द 1012

वयवर्-वीरों के; वट्ट-गोलाकार झुके गये; वैम् चिलै-भयंकर धनु से; ओद्धिय-चलाये गये; वाळियुम्-बाण और; विट्ट-फेंके गये; वैम् तिरुल्-क्रूर शक्ति के; पट्टैकळुम्-हथियार; वीरन् मेल् विळुन्त-महावीर पर गिरे; चुट्ट-तप्त; मैल् इरुम्पु-निर्बल लोहा; अट्ट कलै-निहाई को; चुट्टकलाततु पोल-जला नहीं पाता जैसे; पट्ट पट्टन्-जो लगे वे सारे; तिचै तौडुम्-दिशा-दिशा में; पौरि ओडुम्-अंगारे छोड़ते हुए; परन्त-फैले । १०१२

राक्षसों के द्वारा धनु को खूब वर्तुल झुकाकर तीव्रगति से प्रेरित बाण और प्रेषित गजब की शक्ति के हथियार महावीर पर जाकर जो गिरे वे, स्थूणे को जैसे तप्त लोहा कुछ नहीं कर पाता वैसे ही, सब के सब, नाना दिशाओं में अंगारे बिखरते हुए जाकर बिखर गये । १०१२

शिहैयै	ळुज्जुडर्	वाळिह	ळिराक्कदर्	शेन्नै
मिहैयै	ळुज्जिनत्	तनुमन्मेल्	विट्टन्	वैन्दु
पुहैयै	ळुन्दन्	वैरिन्दन्	करिन्दन्	पोद
नहैयै	ळुन्दन्	कुळिर्न्दन्	वानुळोर्	नाट्टम् 1013

इराक्कतर् चेतै-राक्षसों की सेना द्वारा; मिक्कै अँळुम्-बहुत उमड़नेवाले; चित्ततु-क्रोध के साथ; अनुमन् मेल् विट्टन्-हनुमान पर प्रेषित; चिकै अँळुम्-ज्वाला निकालनेवाले; शुट्टर् वाळिकळ-तेजोमय बाण; वैन्तु-(हनुमान के शरीर पर लगते ही) झुलसकर; पुक्कै अँळुन्त-गुंगुआते हुए; वैरिन्त-जले और; करिन्त पोत-राख बने; वान् उळोर् नाट्टम्-व्योमवासियों की वृष्टि; नक्कै अँळुन्त-वर्धित आनन्द के साथ; कुळिर्न्त-शीतल बनी । १०१३

राक्षसों ने बहुत क्रुद्ध होकर ज्वाला निकालते हुए चलनेवाले तेजोमय बाण छोड़े । वे हनुमान के शरीर पर लगकर उसकी गर्मी में झुलस गये । गुंगुआते हुए जले और राख बन गये । यह देखकर देवों की आँखें आनन्द-शीतल हो गयीं । १०१३

तेरुम्	यात्तैयुम्	बुरवियु	मरक्करुज्	जिन्दिप्
पारिन्	वीळ्दलुन्	दानौरु	तत्तिनिन्	पणैत्तोळ्
वीर	वीरन्	मुखलुम्	वैहुळियुम्	वीड्ग
वारुम्	वारुमैन्	उळैक्किन्	वनुमन्मेल्	वन्दात् 1014

नेरुम-रय और, पादुमु पुरियुमु-गल और अय, अरुकरुम-राय, चिन्ने-अल-अल होकर, पारिं वीळवुमु-यूसि पर निर गये वी, ताम और तमि चिन्ने-आप जो अकेल खड़ा रहो, पण तौळ-रुल कर्थां बाला, वीर वीरुमु-तमि चिन्ने-आओ, अनेक-कहकर, अळुकिन्ने-जुलवेवाले, अयुमने वने वनेवाले-हेनुमान पर आकमण करने आया। १०१४

रथी, गली, अथवा और पदल वीरों की सेनाएँ निर-निवर होकर यूसि पर निर गयीं। अकेला खड़ा रहा स्थूल कर्थां बाला वीरों में (अच्छे) वीर इन्दलिवे। उसे हँसी थी अधिक हँसे और गुस्सा भी बढ़ा। उधर हेनुमान 'आओ', 'आओ' कहकर उरसाह के साथ वीरों की लड़ने की आमन्त्रण दे रहा था। इन्दलिवे उस हेनुमान पर चढ़ आया। १०१४

पुरनेद रनेदल पारिवरिने दिवपुयल वानिल पदनेद पल्लिव मेरिनेय वीरिवेपिर पदपप वानिल निरनेद रमवुलि मुळवडुओ जुमनेद नीडेरुदेने वीरनेद 1015 वीरनेद वरकरुनेवो जलनेयल वीरनेदामे वीरनेदामे

पुरनेनरुने तले-पुरनेदर के निर के, पारिवरि वीरिवेद-करुण के वडले, वानिल पुरनेल-आकाश में ब्याल, पुयल-मेवा में, पल उरुम एरुड इवने-अनेक अगनिपा का वड, वीरिवे-मय से तनकर, उविर पदेप-गण लउळवडे, निरनेनरुम-निरनेद, पुवि मुळवडुमे वनेनल-साटी यूसि की वीवेवाले, नीडे उरकरु-लवे आदिशेय के, विरुमु गुळुकिद-निर कर्था, अरुकरुने-रायस से, वने विनेय-कठोर धनु की, ताम वीरिवेवाले-विजिजनी की इकुल किया। १०१५

उसने अपने अयुकर धनु की ताल की टुकते किया, जिसके वीर नाद से इन्द्र का निर कर्ण गया, आकाश पर मेघों में रहे वन मय होकर तन गये और उनके गण कर्ण उठे, और निरनेनर साटी यूसि की सिरी पर वीले रदनेवाले आदिशेय के सडख निर भी कर्ण। १०१५

आण्डे आयडेन नयडेने नयडेने किरिपुडे नीडेनिलडु मयवेडे पणडेम पिळिय नयडेने वीरनेयल 1016 पुण्डे नाण्डने नाण्डने तनेवेडेने वीळपुडेने वीरनेयल वीरनेयल

आण्डे-लोकपालक, तयकरुने-मयाय श्रीराम के, पुवनेमु-इने ने यी, अयडे अण्डेमु-अल का अण्ड, कीण्डे अण्डे-कड गया, अने-वडे, किरि उक-नियि वर हो विवर जाण्ड, ऐसा, नीडे निलमु-विशाल यूसि, किळिय-निर गया, नीण्डे सातिरुमु-लवा विजाण्ड, वीडे पड-कूट जाण्ड, ऐसा, अयने नीडेमे विनेयल-उसके वीध धनु की, पुण्ड-वैवा, ताम इर-वीरों की कडवे डिए, तने नीडेमे वीळे-अपने बडे कर्था की, पुडेवु-वीकर, आरेवेवाले-इवनि निकली। १०१६

लोकपालक जगन्नायक श्रीराम के दूत ने भी अपने कन्धे ठोंके और सिंहनाद किया, जिससे अजदेव का अण्ड भी फूटा; गिरियाँ चूर होकर छितरीं; भूमि पर और लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और स्वयं इन्द्रजित् के दीर्घ धनु में बँधी डोरी भी कट गयी । १०१६

नल्लै	नल्लैयिञ्	जालत्तु	निन्त्तौक्कु	नल्लार्
इल्लै	यिल्लैया	लैल्लवलिक्	कियारौडु	मिहल
वल्लै	वल्लैयिन्	राहुनी	पडैत्तुळ	वाणाट्
कैल्लै	यैल्लैयैन्	रिन्दिर	शित्तुवु	मिशैत्तान् 1017

नल्लै नल्लै-समर्थ हो समर्थ; इ जालत्तु-इस भूमि में; निन् ओक्कुम्-तुम्हारी समानता करनेवाला; नल्लार्-समर्थ; इल्लै-नहीं; इल्लै-नहीं; अल्लु वलिक्कु-बड़ी शक्ति को (देखा जाय तो); यार् ओटुम्-किसी के साथ भी; इकल वल्लै-लड़ सकते हो; नी पडैत्तु उळ-तुमको मिली; वाळ् नाट्कु अल्लै-आयु की सीमा का; अल्लै-(ही) अन्त; इन्ऱु आकुम्-आज होगा; अन्ऱु-कहकर; इन्तिरचित्तु उम् इचैत्तान्-इन्द्रजित् ने भी कहा । १०१७

तब इन्द्रजित् ने व्यंग्य किया । तुम बड़े कुशल हो, कुशल । इस संसार में तुम्हारे टक्कर का कोई नहीं । तुम्हारे बहुत बल को देखा जाय तो तुम किसी से भी लड़ सकते हो । पर आज का दिन तुम्हारी आयु का अन्तिम दिन हो जायगा ! । १०१७

नाळुक्	कैल्लैयु	निरुदरा	युलहतै	नलियुम्
कोळुक्	कैल्लैयुड्	गौडुन्दौळिर्	कैल्लैयुड्	गौडियोर्
वाळुक्	कैल्लैयुम्	वन्दन	वहैकौण्डु	वन्देन्
तोळुक्	कैल्लैयौन्	शिल्लैयैन्	इनुमनुञ्	जौन्तान् 1018

कौटियोर्-क्रूर (राक्षस); नाळुक्कु अल्लैयुम्-(तुम्हारी) आयु का अन्त और; निरुदर आय्-राक्षस बनकर; उलकत्तै नलियुम्-संसार को त्रस्त करने के; कोळुक्कु अल्लैयुम्-तुम्हारे सिद्धान्तों का अन्त और; कौटुम् तौळिर्कु अल्लैयुम्-क्रूर कर्मों का अन्त; वाळुक्कु अल्लैयुम्-तलवार का अन्त; वन्दत-सब आ गये; वहै कौण्डु वन्देन्-उपाय लाया हूँ; तोळुक्कु अल्लै-मेरे भुजबल की सीमा; औन्ऱु इल्लै-कुछ नहीं है; अन्ऱु-ऐसा; अनुमनुम्-हनुमान ने भी; जौन्तान्-कहा । १०१८

हनुमान ने भी कहा कि क्रूर राक्षसों ! तुम लोगों की आयु, राक्षसों के रूप में लोक को त्रस्त करने का तुम्हारा सिद्धान्त, क्रूर कार्यक्रम, तलवार आदि हथियार —इन सबका अन्त आ गया । उपाय लाया हूँ । मेरे भुजबल की कोई सीमा नहीं रहती । १०१८

इच्चि	रत्तैयैत्	तौलैप्पैन्	रिन्दिरन्	पहैअन्
वच्चि	रत्तिन्नम्	वलियन	वयिरवान्	कणहळ

पर्वत् रत्नमयम् दीर्घैश्च वानवरं पदम्
अर्चि रत्नैश्च मार्गैश्च मण्डनैश्च मयम् 1019

इतिरसं पञ्चसं-इन्द्राद्यैः इतिरत्नैश्च-यह विद्यास्येति; तैलपुत्र-नाम
कर्मणः अविश्वरत्नैश्च-वज्र से मी; अलियत-कठोर; अथि-समयत; नाम
कण्ठ-अष्ट दार्ण्यी को; पञ्चसं इत्येतत्-नामा ज्ञत; वरु अर्द्धिकट-आकर वहे
प्रेमा; वातवरं पदम्-देवगण वरत इति ज्ञाप्येमा; अ विरत्नैश्च-उस शिर पर
और; मार्गैश्च-वक्ष म; अण्डनैश्च-गङ्गा से; अयमसं-हेतुमान १०१९

इन्द्राद्यै न कदा कि पदे है तुन्दारा विद्यास ! इसको सिद्धां
कहेकर उसने वज्र से मी कठोर और बलवान् अष्ट दार्ण्यी को प्रति किया;
जिनके हेतुमान के शिर और वक्ष पर लगने से ताजा ज्वन वहे निकला और
अयमवर्षा उत्पन्न हो गये । १०१९

कुट्टि वानरं कुतूहलिनं कीर्तयन्ति वानरं
मरियुम् अण्डिरं मादंडं विलङ्घनम् वल्लभं
विश्रियं तपुश्रीनं विस्मयिष्यं शून्यिष्यं चंडि
नृतिषि विनूतदं नयदं पृथ्वेन विमरं नदं 1020

कीर्तयं विमं कीर्तय-मयानक कोप अयनाकर; वानं कुट्टि अष्ट-आकाश
की छोटा कहेन देता हुआ; कुतूहलिनं-छोटा न रहकर (यानी विवह होकर);
विश्रिय तपु-छोटी माता के; वानर-कहे गये; विस्मयि-आवयन; चण्डि
छाति-शिर पर धारण करके; मरियु-आवर्तमशाल; वृण विर-यवत वरुण के;
मा कटव-वहे सागर से बलियत; वल्लभ-सारे लोक को; वल्लभ-प्रदान
करके; नृतिषि विनूत-धममात्र पर स्थित; वनं नयक-अपने नयक को;
पृथ्वे अष्ट-कीर्ति के समान; विमरं नदं-विराट् रूप से बह गया । १०२०

हेतुमान कूट हुआ । आकाश की मी छोटा बनने हुए विवह हुआ ।
वहे इस प्रकार उन्नत हुआ, जिस प्रकार छोटी माता की आशा के वचन की
शिराधाय कर आवर्तमशाल यवत लहरी के वहे सागरों के मध्य स्थित
सादी मीम की अपने भाई भरत के पास देकर धमिलानवी रहे श्रीराम
का पक्ष उन्नत (और विरत्न) बना था । १०२०

पदं मल्लं कण्डिलं नयमयं पारं नदं
मादं वनं विश्रियं पारं नदं
कटं नदं पृथ्वेनं नदं विश्रियं
सेदं नदं मयदं नदं वानरं
वियनं नदं 1021

साक वनं विव-वडा आकाश आदि; पारं-दसों विद्याओं; अयम-के साथ;
वरमण्ड इला-निरसीम; वल्लभ-अनेक लोको के; एक नान-एक नयक (इन्द्र)
को; अण्डे वल-वहेन सवल; नदं विश्रिय-कष वल्लभ; इन्द्र-नाम-जो छव
लाया; भूकानातम-उस इन्द्रादि से; अयमसं पारं नदं-हेतुमान को देवा;

पाकम् अल्लतु-एक भाग को छोड़कर; कण्टिलन्-(पूरा नहीं) देखा; मयङ्कितन्
आम् अत-चकित-सा; वियन्तान्-विस्मित हुआ । १०२१

इन्द्रजित् ने विश्वरूप हनुमान को देखा । इन्द्रजित्, बड़े आकाश
को मिलाकर दसों दिशाओं और अनन्त लोकों के एक-नायक इन्द्र के बलवान
कन्धों को बाँधकर खींच लाया था । वह इन्द्रजित् भी हनुमान का एक
भाग ही अपनी दृष्टिपथ में ला सका । वह विस्मित-भ्रमित हुआ । १०२१

नीण्ड	वीरन्	नैडुन्दडक्	कैहळै	नीट्टि
ईण्डु	वैज्जर	मैय्दन्	वैय्दिडा	वण्णम्
मीण्डु	पोय्विळ	वीशियड्	गवन्विट्ट	तडन्देर्
पूण्ड	पेयीडु	शारदि	तरैप्पडप्	पुडैत्तान् 1022

नीण्ड वीरन्-लम्बोतरे वीर (महावीर) ने भी; नैडुम् तटम्-लम्बे और
विशाल; कैहळै नीट्टि-अपने हाथों को बढ़ाकर; मैय्दन्-चलाये जाकर; ईण्डु-
सवेग आनेवाले; वैम् चरम्-संतापक शरों को; वैय्दिडा वण्णम्-अपने पास न आने
देते हुए; मीण्डु पोय्-लौट जाकर; विळ-गिराते हुए; वीचि-फेंककर; अङ्कु-
वहाँ; अवन् विट्ट-उसके चलाये गये; तटम् तेर्-विशाल रथ को; पूण्ड पेय्
ओट्टु-जुते भूतों के साथ; चारति-सारथी भी; तरै पट-भूमि पर गिरकर मर जाएँ,
ऐसा; पुडैत्तान्-आघात किया । १०२२

लम्बोतरे महावीर ने भी अपने लम्बे विशाल हाथों को बढ़ाकर
इन्द्रजित्-प्रेरित भयंकर शरों को पास न आने देकर लौटाते हुए झटकार
दिया और उसके द्वारा चलाये गये विशाल रथ को उसके जुते भूतों के साथ
लेकर भूमि पर ऐसा पटका कि वे भूमि पर गिरकर मिट गये । १०२२

ऊळिक्	काड्डुन्न	वीरुपरित्	तेरव	णुदवप्
पाळित्	तोळव	तत्तडन्	देर्मिशैप्	पायन्दान्
आळिप्	पल्बडै	यनैयन्	वळपपरुज्	जरत्ताल्
वाळिप्	पोर्वलि	मारुदि	मेत्तियै	मडैत्तान् 1023

अवण्-उस स्थिति में; ऊळि काड्डु अन्न-प्रलयपवन के समान; और पर
तेर्-एक अश्व-जुते रथ को; उत्तव-(सारथी के) ला देने पर; पाळि तोळ् अवन्-
स्थूल कन्धों वाला वह; अ तटम् तेर् मिचै-उस विशाल रथ पर; पायन्तान्-लपका;
पल्-(और उसने) अनेक; आळि पटै अतैयन्-चक्रायुध-सम; अळपु अरुम् चरत्ताल्-
अगणित शरों से; वाळि पोर् वलि-लम्बे काल तक जारी रहनेवाले युद्ध के योग्य बल
से युक्त; मारुति मेत्तियै-मारुति के शरीर को; मडैत्तान्-छिपा दिया । १०२३

उस स्थिति में सारथी ने प्रलयपवनगति अश्वों के जुते एक रथ को
ला दिया । भुजबली इन्द्रजित् उस विशाल रथ पर लपका । फिर उसने
चक्रायुध के समान अनेक विविध अगणित शरों से युद्धकुशल मारुति के
शरीर को ढक दिया । जिसमें दीर्घयुद्धावश्यक बल था । १०२३

उरुउ बाळिहें ळुरननउहें लिमवहें उरुमिभुक् कुदिमवुक् वरुउक्
 कुरुउ कुरुउ मरुगिभुक् पुरिउरुउ पुरिउरुउ वलहलं
 कुरुउ कुरुउ वरुउरुउरु मुरिउरुउ लिमिभु मुरिउरुउरु 1024

कुरुउ मरुलि-लिमयणील मरुलि (ने); उरुउ अउमिभु-वध मं लिपि;
 उरुउ बाळिह-लन रहे गरी को; उक-लिउरुहें हल; उरुउ-मरुउककर; अरुपवम
 नेरु मिभु-उमके रथ पर; कुलिउ-कवकर; उरुउ अलम-मारे लीकी को; पल
 काल-अनेक वार; मुरुउ वरुउ-पुणुप से लिमने जीला या (उमके); पारे मुरि-
 मुळगीम वलवम; वम लिमिभु-मयानक धु को; वम कयान-कठोर हाया से;
 पुरुउ-ममकर; पुरिउरुउ-लीमकर; अउमव-ऊपर उलकर; मुरिउरुउरु-उमकी
 लीहें दिपा । १०२४

लिमयणील मरुलि ने मरुउका देकर अपने वध मं धुसे रहे गरी को
 देर लिउर दिपा । फिर वहे उमके रथ पर कव पुरा । उमने, मारे
 लीकी को अनेक वार लिमने जीला या, उम इरुलिने के मारी और माके
 और मयकर धु को अपने वलिउठ हाया से पकड़कर छीन लिपा और ऊपर
 उलकर उसे लीहें दिपा । १०२५

मुरिउरु लिमिभुव लीउगीप मुडिवम मुरनम
 मरिउरु पुरिउ वळिउकली मरिउरु मरुहलं मरिउरु
 मुरिउरु मरिउरु वरुउरु मरुहलं मरिउरु मुरिउरु 1025

मुरिउरु-दे; लिमिभु-धु के; वल ओने-मयकर रवर के; पाप मुडिवमने-
 लकर मीन होने के; मुरनम-पुव ही; मरिउरु-लीउकर; पारे इहे-मुह का;
 वळि कली-माल अपमकर; मरिउ-वध को; बाळ पडयान-नलवार से; मुरिउरु-
 धन; वरु मुरम लिउ-वहु पुरी को; अउ-कडकर; मलकळ-पवने से;
 मरिउ-पूरम करके; मुरिउरु-उमकी लिमने निवल वयाया; इरीरिउ-उम इरु
 के; इरु- (मरुगिभु मं पुररुन होकर) छोड़े गये; वम लिमिभु-वहें धु को;
 अउरुलन-अपने हाय मं से लिपा । १०२५

देहे धु को मयकर वलन के मीन होने के पडले, फिर मुह मं लमकर
 मयनाद ने, वय लगी नलवार से लिमने मुह पुरी को कडकर पवने को
 कोष के साय पडरिने किया या, उस इरु के हाया होकर छोड़े गये वहें
 धु को हाय मं लिपा । १०२५

मुरु मुरिउ मुरिउरु वरुउरु मुरिउरु वरुउरु
 मुरिउ मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु
 मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु
 मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु मुरिउरु 1026

और तीटै—एक खेप में; नूख नूख पोर् वाळि कौण्डु—शत-शत मारु बाण लेकर; नौयत्तिन्—शीघ्र; मारु इल्—प्रत्युत्तर रहित; वैम् चित्तत्तु—भयानक क्रोधी; इरावणन् मकत्—रावण के पुत्र ने; चिलै वळैत्तान्—धनु झुकाया (शर चलाये); एरु चैवकन्—संवर्धनशील वीरता के श्रीराम का; तूतनुम्—दूत भी; तन् नैटु मेत्तियिल्—अपने लम्बे शरीर में; ऊरु पल पट—अनेक घावों के होने के कारण; चिडितु पोतु—कुछ देर; ओल्कि इरुन्तान्—थका रहा । १०२६

अप्रतिरुद्ध क्रोधी रावण के पुत्र ने धनु को झुकाकर एक खेप में सौ-सौ मारु बाणों के हिसाब से शर चलाये । उत्तरोत्तर विवृद्ध वीरता के नायक श्रीराम का दूत हनुमान भी अपने लम्बे शरीर पर अनेक व्रणों के बन जाने से कुछ देर थकित रहा । १०२६

आरुत्त	वानव	राहुलङ्	गौण्डरि	वळिन्दार्
पारुत्त	मारुदि	तारुवौन्	इङ्गैयार्	पड्डात्
तूरुत्त	वाळिहळ्	तुणिबड	मुडैमुडै	शुड्डिप्
पोरुत्त	पौन्नेडु	मणिमुडित्	तलैयिडैप्	पुडैत्तान् 1027

आरुत्त वानवर—(जिन्होंने पहले) आनन्दरव किया था, वे देव; आकुलम् कौण्डु—व्याकुल होकर; अशिवु अळिन्तार्—बुद्धिभ्रष्ट हुए; पारुत्त मारुति—उसको देखकर मारुति; तारु औत्तु—एक तरु को; अम् कयाल् पड्डा—अपने सुन्दर हाथ से पकड़कर; तूरुत्त वाळिकळ्—अपने शरीर को छिपाने आये शरों को; तुणि पट—तोड़ते हुए; मुडै मुडै चुड्डि—अनेक बार उसे घुमाकर; पौन् मणि—स्वर्णरत्नमय; नैटु मुटि पोरुत्त—लम्बे किरीट से आवृत; तलैयिटै—(इन्द्रजित् के) सिर पर; पुडैत्तान्—(उस तरु से) प्रहार किया । १०२७

देवों ने पहले आनन्द-आरव किया था । अब यह स्थिति देखकर वे व्याकुल और बुद्धिभ्रष्ट हुए । मारुति ने उनकी यह स्थिति देखकर एक पेड़ को उखाड़कर उठा लिया और आवृत करते आनेवाले बाणों को बिखेर देते हुए उसको अनेक बार घुमाया । फिर स्वर्णरत्नमय किरीट से ढके हुए इन्द्रजित् के सिर पर उस पेड़ को दे मारा । १०२७

पार	मामर	मुडियुडैत्	तलैयिडैप्	पडलुम्
तारै	यिन्नेडुङ्	गड्डैहळ्	शौरिवत्त	तयङ्ग
आर	माल्वरै	यरुवियि	तळिहौळुङ्	गुरुदि
शोर	निन्नेळन्	दुळङ्गित्त	नमररैत्	तौलैत्तान् 1028

पार मामरम्—भारी वड़ा तरु; मुटियुटै—किरीट-सहित; तलै इटै—सिर पर; पडलुम्—ज्योंही लगा त्योंही; तारैयिन्—रक्तधारा की; नैटुम् कड्डैकळ्—लम्बी लट्टे; चौरिवत्त तयङ्क—बहती रही; माल् वरै—बड़े पर्वत की; आर—माला-सी; अरुवियिन्—सरिता के समान; अळि कौळुम् कुरुति—गिरनेवाला गाढ़ा रक्त; चोर—दोनों बाजुओं में गिरता रहा; अमररै तौलैत्तान्—अमरों का (बल-) नाशक; निन्ने—थका खड़ा रहा और; उळम् तुळङ्कित्तन्—कपित-मन हुआ । १०२८

उस थारी वड़े पेड़ के फिरीटधारी फिर पर लगते ही इन्द्रजित के थारी पर रक्तधारा की लम्बी लट्टे दीर्घा वाहुओं में पर्वतध्वज मालाओं के समान थीं। जव वड़े गाढ़ा रक्त उस तरहे गिरते लगी, तब देवी को हराकर जिसने भगवा था, उस इन्द्रजित का मन काँप उठा। १०२८

निर्गुण पादपुवनं कुंडलं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं
निर्गुणं निरंजितं निरंजितं निरंजितं

निर्गुण-यका लड़ा रहकर; पीतमं वरुण उल्लस-सवेन होले हो; निरं-
वन्दकला के समान; निरं-मरे रहे; अलिप्त निरं-वत पीसले हुए; निरं-
मुनिवत्स-देवी और मुनियों; अवलम्ब-और दानवी के; निरं-प-वक्तिन रहे;
कुनंठ पीत-पर्वत-सम; नंद मादित-ल-वोले रहे हुमान के; आकृष्य-थारी के;
कुनंठक-कापीत; अलिप्त पीतवत-एक ही सम; आपिरम पकड़ि-सहेन बाला;
कापि-धृ पर संधान करके; उद्वेग-वलाय (इन्द्रजित के) १०२९

कुछ देर वड़े रक्तध लड़ा रहने के बाद थोड़ा स्वरुण हुआ। जव
उसे बोध हुआ, तब उसने वन्दकला-से दीर्घा की पीसले हुए एक समान हवा
वाण धनु पर संधानकर छोड़ा, जिससे कि मुनिगण और दानव वक्तिन
हुए और पर्वत-सम ल-वोले रहे हुमान का थारी काँपा। १०२९

उद्वेग-वलाय वरुण-मयंकर थार; उद्वेगित-वस-सं और;
करते-वित्त-होथों में; अलिप्त-पुसकर छिप गये, तब; कवेन विरं-प-उवड़े
मन बाला; मादित-पवनधृत; नति तब-वृष अलिप्त; कनंठ-रुत-कृपित हुआ;
वित्तकन-विवाहप; वित्त विरं- (थारम) धनु से जो छोड़े हैं; कथ विरं-प-सं-
उन बालों के वेग से अलिप्त; कदकि-वेग के साथ आकर; अ तदमं प्रसं नेर ओर
उम-उस विमान और वड़े रथ के साथ; अद्वेग- (उसकी भी) उठाकर; अतिरं-
पटक दिया और; आद्वेग-गारे लगये। १०३०

इन्द्रजित-धरित वे थार हुमान के वस और मृजालों में छिप गये।
हुमान का दिल उचट गया। अत्यधिक क्रोध करके वड़े शानमूर्ति थारम
के धरित बाण से भी उलिक्त वेणी से गया और उसने उस वड़े और जोड़े
रथ के साथ उसकी भी उठाकर हरे फेंक दिया और उचट गालन
लिया। १०३०

कण्णिन् मीच्चेत्तु विमैयिडेक् कलप्पदत् मुत्तन्म
 अण्णिन् मीच्चेत्तु वैरुवलिन् तिरुलुडे यिहलोत्
 पुण्णिन् मीच्चेत्तु पौळिबुत्तल् पशुम्बुलाल् पौडिप्प
 विण्णिन् मीच्चेत्तु तेरोडुम् वार्मिशं विळुन्दात् 1031

कण्णिन् मी-आँखों के ऊपर; चैत्तु इमै-जो उठी थी वह पलक; कलप्पदत् इट्टे-(नीचे आ) नीचे की पलक से मिलने की अवधि; मुत्तन्म-के पहले; अण्णिन् मी चैत्तु-गणना को पार कर गये; वैरुवलि-अधिक बली; तिरुलुडे इकलोत्-साहसी योद्धा (इन्द्रजित्); पुण्णिन् मी चैत्तु-व्रणों के ऊपर से आकर; पौळि-गिरनेवाले; पुत्तल् पच्चुम् पुलाल्-रक्त और ताजा मांस; पौडिप्प-निकल आये और; विण्णिन् मी चैत्तु-आकाश में जो जाता रहा; तेर् ओडुम्-उस रथ के साथ; पार् मिच्चै-भूमि पर; विळुन्दात्-गिरा । १०३१

आँखों के ऊपर उठी हुई पलकों के गिरकर नीचे की पलकों के साथ लगने में जितनी देर लगती है (यानी पलक मारने की), उतनी देर के अन्दर अपार बली और युद्धसमर्थ इन्द्रजित् आकाशगामी रथ के साथ भूमि पर गिरा और उसके शरीर के व्रणों से रक्त और ताजा मांस बाहर निकल पड़े । १०३१

विळुन्डु पारडै यामुत्त मिन्नेत्तु मैयिरुत्तान्
 अळुन्डु माविशुम् वैय्दित्ति डैयवन् पडियिल्
 शैळुन्दिण् मामणित् तेर्क्कुलम् यावैयुज् जिदैय
 उळुन्डु पेर्वदन् मुन्नेडु मारुदि युदैत्तान् 1032

मिन् अँतुम्-विजली के समान; मैयिरुत्तान्-दाँत वाले (इन्द्रजित्); विळुन्डु-गिरकर; पार् अटैया मुत्तन्म-भूमि पर लगने से पहले; अळुन्डु-उठकर; मा विचुम्पु-विशाल आकाश; अय्यत्तित्तन्-पहुँचा; इट्टे-इसके बीच में; नैट्टु मारुति-लंबोतरे मारुति ने; उळुन्डु पेर्वदन् मुन्-उड़द के लुढ़कने की देर में; अवम्-उसके; चैळुम्-आडम्बरपूर्ण; तिण्-सुदृढ़; मा मणि तेर् कुलम्-बड़े रत्नमय रथों; यावैयुम्-सभी को; पडियिल् चित्तैय-भूमि पर टूटकर गिरें, ऐसा; उदैत्तान्-लात मारी । १०३२

विजली के समान चमकते दाँत वाला इन्द्रजित् भूमि पर गिरने से पहले ही उठा और ऊपर आकाश में उछल गया । इसके बीच में लम्बोतरे हनुमान ने उड़द के लुढ़कते समय के अन्दर उसके पुष्ट, सुदृढ़ और बड़े रत्नमय सारे रथों के समूहों के लात मारी और वे सब भूमि पर गिरकर तहस-नहस हुए । १०३२

एरु तेरिल नैदिर्निर्कु मुरत्तिल नैरियिल्
 शोरु वैञ्जितन् दिरुहित् तन्दरन् दिरिवात्

[illegible]

पुत्रम्	वैतर	वधिराजम्	दीवसम्	कुडुम्
रात्रिम्	पावम्	पारकीर्त्तिम्	तद्वचनम्	शम्भुदेवम्
नेत्र	पादुम्	मुलदेमम्	दिवदेविषम्	द्वेषकम्
कान्ति	रात्रिमुदम्	पङ्ककलम्	वचककपिम्	कान्तिदेवम्

1034

पुनर्-सुप्त और; पुन-पुन-वप (बुझ); अविद्युप्त-बाधत; लोपुप्त-
 लोपाद्यत; लुक्पुप्त-पुन; लपु-लप-निर्दिष्ट; पावर्तयत- (पवित्र) पावत के
 साथ; कर्तव्य-पूजा में वर्तकः; अर्चयत-अर्चना; चमत्कृत-करके; नेत्र
 उलकय पादपुन-देवताओं और माते; लोका की; निरन्तर-निर्दिष्ट के से बनाया
 बन; संपद के निर्व-देवायक; नाने मुक्त-वर्तुषु मन्त्राली के; पदककलम-
 अरव की; तत्प कल्प-अपने विद्याल श्रेय में; कालाटत-से विद्य। १०३४

इसलिए मैं उस अरब की विधिवत पूजा की। पुण्य, शुद्ध वात, क्षीप, सुगन्धित धूप आदि की निर्दोष भावना के साथ चढ़ाया। फिर यथोचित अर्चना की। देवी और चारुतरेयों के सुन्दरतम शरीरों के अरब की उसने अपना विमान डेढ़ मं लिया। १०३४

कौण्डि	कौरुउव्व	निबुनू	नण्डि	कंदिव	कौण्डि
वण्ड	वेहेव	मण्डि	नौडि	जार्वे	मण्डि
मण्डि	उडि	मण्डि	उडि	मण्डि	मण्डि
विण्डि	उडि	मण्डि	उडि	विण्डि	विण्डि

1035

भूमि को कँपाते हुए; मातिरम् तुळङ्किट-दिशाओं को कँपाते हुए; मति तोय-चन्द्राश्रय; विण् तुळङ्किट-आकाश काँप जाए, ऐसा; मेरुवम् तुळङ्किट-मेरु भी काँप उठे, ऐसा; विट्टान्-प्रेरित किया (इन्द्रजित्) ने । १०३५

उसने उसे हाथ में लेकर विजयदायी और कठोर धनु की लम्बी डोरी पर रखकर संधान किया, प्रचण्डवेग मारुति के कन्धों का निशाना लगाया और प्रेरित किया, जिससे भूमि काँपी, दिशाएँ काँपीं और चन्द्राश्रय आकाश काँपा तथा मेरुपर्वत भी काँप उठा । १०३५

तणिप्प	रुम्बेरुम्	बडैक्कलन्	दळलुमिळ्	तरुहण्
पणिक्कु	लङ्गळुक्	करशिन	दुरुवितैप्	पर्त्ति
तुणिक्क	वुर्रुयर्	कलुळुत्तुन्	दुणुक्कुर्त्तु	चुर्त्ति
पिणित्त	दप्पेरु	मारुदि	तोळ्हळप्	पिर्त्तु 1036

तणिप्पु अरुम्-अवार्य; पैरुम् पटैक्कलम्-बड़े अस्त्र ने; तळल् उमिळ्-अग्नि-वर्षक; तरुहण्-कूर; पणि कुलङ्कळुक्कु-सर्पकुल के; अरचित्तु-राजा का; उरुवितै पर्त्ति-रूप लेकर; तुणिक्क उर्त्तु-उसे खण्डित करने का विचार लेकर; उयर् कलुळुत्तुम्-उठनेवाला गरुड़ भी; तुणुक्कु उर्-भयभीत हो, ऐसा; अ पैरु मारुति-उस विश्वरूप मारुति के; तोळ्कळै-कन्धों को; पिर्त्तु चुर्त्ति-खूब लपेट कर; पिणित्तु-बाँध गया । १०३६

उस अवार्य और उत्कृष्ट ब्रह्मास्त्र ने अग्निवर्षक और हिंस्र सर्पराज का रूप लेकर, उसको भग्न करने के लिए उठ आये गरुड़ को भी भयभीत करते हुए आकर, उस विराटरूप मारुति के कन्धों से लपेटकर उन्हें बाँध दिया । १०३६

तिण्णैन्	याक्कैयैत्	तिशैमुहन्	पडैशैन्	तिरुह
अण्णन्	मारुदि	यन्नुत्तन्	पित्तुशैन्	वरत्तिन्
कण्णि	नीरौडुङ्	गन्नहतो	रणत्तौडुङ्	गडैनाळ्
तण्णैन्	मामदि	कोळौडुङ्	जाय्न्दैत्तच्	चाय्न्दान् 1037

तिचै मुक्कु पटै-दिशामुख (ब्रह्मा) का अस्त्र; तिण् ँन्-सुदृढ़; याक्कैयै-शरीर को; चैन्नु तिरुह-जाकर लपेटकर दुःख देने लगा तो; अण्णल्-मान्य महावीर; अन्नु-उस दिन; तन् पित्तु चैन्नु-उसके पीछे गये; अरत्तिन्-धर्म के; कण्णिन् नीरौडुम्-नेत्र के अश्रुजल के साथ; कटै नाळ्-युगान्त के दिन; तण् ँन्-शीतल; मा मति-श्रेष्ठ चन्द्र; कोळ् ओडुम्-परिवेश के साथ; चाय्न्तु अँत-गिरा जैसे; कन्नक तोरणत्तु ओडुम्-कनकतोरण के साथ; चाय्न्तान्-गिर गया । १०३७

दिशामुख ब्रह्मा के अस्त्र ने हनुमान के बहुत सुदृढ़ शरीर को लपेट कर पीड़ा दी । वह युगान्त में परिवेश के साथ गिरनेवाले शीतल और बड़े चन्द्र के समान कनक-तोरण के साथ नीचे गिर गया; जिससे उसकी सहायता लेकर लंका में आये धर्म की आँखों से आँसू वह निकले । १०३७

शापुनद मादि शङ्खुदेन पङ्कजुन पङ्कजुन दनेष
 आपुनद मरुद बापु पवमदिने नदरने
 पुपुनद दनेष वृणाने कण्मुदिने निरुदाने
 आपुनद बापुवने बलिपुन वरकुकुवने दुरुराने 1038

बापुनद मादि-नीचे (जा) निरा (वह) मादिना; चतुष्कने पङ्क-चतुष्क
 का अरन; अनेष तनेष-यह नय; आपुनद-बापुनद; इनने आपुनद-इसके शासन
 से; अवमनिने-अवना करके; अकनने-देना; पुपुनद-जिवन नही;
 अने अणुनिने-ऐसा सीमा; कण् मुकिने-और आखे वद किध; इरनने-रही;
 अरकने-राक्षस; इवने बलि-इसका बल; आपुनने आपु-समान हो गया;
 अने-ऐसा सीवकर; वने उरुराने-पास आ पङ्कजा १०३८

हेतुमान निरा नी उसने, चतुष्क का अरन हो मेरे ऊपर लगा है—यह
 नय जान लिया। उसने सीमा कि इसकी अवना करना उचित नहीं है।
 इसलिपे वदे आखे वद किपु चप रहा। राक्षस इन्द्रजित ने सीमा कि
 उसका बल समान हो गया। वह उसके पास आया। १०३८

उरुर कालि कालिदेहि निशदेहि निशदेहि मरुदेहि
 अरुर नोकिनर निरुकिनर बाळिदेहि मरुदेहि
 शुरुरम वदुडने शुरुरिय शुरुरिय नोळुपिय उरुवप
 पुरुरि पुरुरनन रुरुरनन नोळुननर पलराने 1039

उरुर कालि-आ पङ्कजे पर; उरुर कदि-आल लेकर; निव नोळुम
 अरुर-दिशा-दिशा में हटकर; अरुरम नोकिनर-सीमा देवने हुए; निरुकिनर-
 जा वदे रहे व; बाळ अरुर अरककर-यवन दाँतों के राक्षस; पलर-अनेक;
 चुरुरम वदु-चाँदों और आकर; उरुर चुरुरिय-हेतुमान के) शरीर की लपटे
 रहे; नोळु अरुर अरु-राक्ष-सहित दाँत वाले सप को (सदृश ब्रह्मान को);
 पुरुरि-पकडकर; इरुरननर-खींचने (हूँ); आरुरननर-गरुड; नोळुननर-
 डाँट। १०३९

जब इन्द्रजित उसके पास आया, तब यवन दाँतों वाले अनेक राक्षस भी
 घेर आये, जो अपने प्राण बचा लेकर चाँदों दिशाओं में दूर-उधर जा लिये
 थे और मौके की ताक में रहते थे। उन्होंने राक्षसहित दाँतों वाले सप के
 रूप में हेतुमान की, जो लपटे रहे, उस ब्रह्मान की पकडकर खींचा; गजान
 और गजान किया। १०३९

कुरकुर नलवलन मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे
 निरुके निरुके मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे
 अरकुर निरुके मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे
 मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे मलदे 1040

कुरङ्कु-बन्दर का; नल् बलम्-अच्छा बल; कुलैत्ततु-अस्त-व्यस्त हो गया;
 अँत्तु-कहकर; आवलम् कौट्टि-शोर मचाते हुए; इरैक्कुम् मा नकर्-कोलाहल-
 पूर्ण वह बड़ा नगर; अँत्ति कटल् औत्ततु-तरंगायमान समुद्र के समान रहा; अँ
 मरुङ्कुम्-सब ओर; तिरैक्कुम्-लपेटकर कसनेवाला; माचुणम्-सर्प; वाचुकि
 औत्ततु-वासुकी-सम रहा; अरक्कर् तेवर् औत्तत्तर्-राक्षस देवों के समान लगे;
 अनुमन्-हनुमान; मन्तरम् औत्तत्तन्-मन्दर पर्वत-सा रहा । १०४०

सारी लंका नगरी ने कोलाहल मचाया कि हरि का अच्छा बल मिट
 गया । तब वह तरंगायमान सागर के समान रही । चारों ओर से
 हनुमान को जो लपेटे रहा, वह अस्त्र वासुकी के समान रहा । राक्षस देवों
 के समान रहे और हनुमान मन्दरपर्वत के समान रहा । (सारा मिलकर
 क्षीरसागर-मथन का दृश्य उपस्थित कर रहा था ।) । १०४०

कडत्त	माशुण्ड	गनहमा	मेत्तियैक्	कट्ट
अडत्तुक्	काङ्गौरु	तन्तित्तुणै	यानित्तु	वनुमन्
मडत्तु	मारुदम्	बौरुदनाळ्	वाळरा	वरशु
पुडत्तुच्	चुड्रिय	मेरुमाल्	वरैयैयुम्	वोत्तुडान् 1041

कडत्त माचुणम्-(क्रुद्ध) काले सर्प (अस्त्र) के; कत्तक मा मेत्तियै-स्वर्णसन्निभ
 वेह को; कट्ट-कसने पर; अडत्तुक्कु-धर्म के; आङ्कु-वहाँ के; और तत्ति
 तुणै आ-एक अनुपम सहायक के रूप में; नित्तु अनुमन्-जो रहा वह हनुमान;
 मडत्तु-सबल; मारुदम् पौरुत नाळ्-पवन के प्रहार के समय; वाळ् अरा अरचु-
 उज्ज्वल सर्पराज (आदिशेष); पुडत्तु चुड्रिय-जिसको चारों ओर से लपेटे रहा;
 मेरु माल् वरैयैयुम्-उस महामेह के; वोत्तुडान्-समान भी रहा । १०४१

क्रुद्ध और काले (अस्त्र-) सर्प ने हनुमान के कनकवर्ण शरीर को
 खूब कस लिया । तब धर्म का अद्वितीय सहायक हनुमान उस मेह के
 समान लगा, जिसको सर्पराज आदिशेष ने पवन की होड़ में चारों ओर
 से लपेटकर बाँध लिया था । १०४१

वन्दि	रैत्तत्तर्	मैन्दरु	महळिरु	मळैपोल्
अन्दि	रत्तित्तुम्	विशुम्बिन्नुन्	दिशैत्तीरु	मारप्पार्
मुन्दि	युड्डौ	रुवहैक्कोर्	करैयिलै	मौळियिन्
इन्दि	रन्बिणिप्	पुण्डना	ळौत्तदव्	विलङ्गै 1042

मैन्तरुम्-पुरुषों और; मळिरुम्-स्त्रियों ने; वन्तु-आकर; इरैत्तत्तर्-शोर
 मचाया; मळै पोल्-मेघ-जैसे; अन्तरत्तित्तुम्-रिक्त स्थानों में और; विचुम्पित्तुम्-
 आकाश में; तिच्चै तौडम्-चारों दिशाओं में; आरप्पार्-(रहकर) नर्दन करते;
 मुन्ति-सबसे पहले; उड्डतु ओर् उवकैक्कु-उन्हें जो हुआ उस आनन्द का; ओर्
 करै इल्लै-(एक) ठिकाना नहीं रहा; मौळियिन्-कहना चाहें तो; अ इलङ्कै-वह

၆၈၀၆ ၊ ၂၉၂ ဟိမမ နှင့် ဟိမမ

ᐅᐱᐅᐅ ᐱ ᐱᐱ ᐱᐱᐱ

અર્થપૂર્ણ	વૌશર્ણ	પૈર્ણિમ	પર્ણિમ
કાર્થપૂર્ણ	કર્ણિરક્	કર્ણ	કર્ણિમ
શ્રુપૂર્ણ	શ્રુર્ણિરક્	શ્રુર્ણિમ	શ્રુર્ણિમ
અર્થપૂર્ણ	વૌર્ણિમ	વૌર્ણિમ	વૌર્ણિમ

உயிர் உயிர் (உயிர் உயிர்)

॥ अगरे पदे बब जायगा ते देसायी जान नही बब रहेगा । ०४६ ॥

[illegible]

स-अजगुप्तः, तदम् कर्णोप-वर्णं अर्धं वालं राक्षस-निर्वा आरः, सैनर-राक्षस युवकः, यावद्-सर्गः, पुं लब्ध अरु-कन-सहित सौम्यः, अर्ध-वर्णः, कनक-कोपकः, पुनल-क्षुण्णोकर कोः, इदं सर्वं पृथिव-इतनी देरः, कर्ण-द-
 (जीवित) रत्नकरः, इत्युपनी-रुद्रा है यथा; अर्ध-कहकरः, सौम्येननर-वस
 पर दद पृष्ठः, विवर-कुलः, कौलं वय-इत्या करते काः, सुपल्लिकितर-अपल
 कर्तुं है १०४४

अञ्जन-लगी विद्याल अखी वाली राक्षसरमणियाँ और तेरेण सभो

फन वाले सर्प के समान फुफकारते आये । 'इस छोकरे को इतनी देर जीवित रहने दिया जाय क्यों ?' यह प्रश्न करते हुए वे सब उसके चारों ओर मिल आये । कुछ उसको मारने का भी प्रयास करने लगे । १०४४

नच्चडे	पडैहळा	नलियु	मोट्टदो
वच्चिर	वुडन्मरि	कडलिन्	वाय्मडुत्
तुच्चियि	तळुत्तुमि	नुरुत्त	दिन्नेत्तिल्
किच्चिडे	यिडुम्मेत्तक्	किळक्किन्	शार्शिलर् 1045

चिलर्-कुछ; नच्चु अटै-विषैले; पटैकळाल्-हथियारों द्वारा; नलियुम् ईट्टतो-मिटनेवाला है क्या; वच्चिर उटल्-वज्र-से शरीर को; मरि कडलिन् वाय्-प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर में; मडुत्तु-डुबोकर; उच्चियिल् उरुत्तु-सिर को पकड़कर; अळुत्तुमिन्-दबाओ; अतु इन्नु अँत्तिन्-वह नहीं होगा तो; किच्चु इटै-अग्नि में; इटुम्-डालो; अँत्त-ऐसा; किळक्किन्शार्-कहते । १०४५

कुछ राक्षसों ने संशय उठाया कि क्या यह विषैले अस्त्रों द्वारा मारा जा सकेगा ? इसलिए उनका सुझाव था कि इसके वज्र-सम कठोर शरीर को प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र में फेंककर सिर दबाकर डुबो दो । अगर ऐसा नहीं हो तो आग में डाल दो । १०४५

अँन्दैयै यैम्बियै यैम्मु तोरुहळैत्, तन्दनै पोहँत्तत् तडुक्किन् शार्पलर्
अन्दरत् तमरर्त्त माणै यालिवन्, वन्ददँन् रुयिर्होळ मरुहि तार्पलर् 1046

पलर्-और अनेक; अँन्तैयै-हमारे पिताओं को; अँम्पियै-हमारे छोटे भाइयों को; अँम् मुत्तोरुहळै-हमारे ज्येष्ठ भ्राताओं को; तन्ततै-दे दो, बाद; पोकु-जाओ; अँत्ता-कहकर; तडुक्किन्शार्-रोकते है; पलर्-अनेक; अन्तरत्तु-आकाशलोक के; अमरर् तम्-अमरों को; आणैयाल्-आज्ञा से; इवन् वन्ततु-यह आया; अँन्नु-कहकर; रुयिर् होळ-उसके प्राण हरने; मरुकिता-आतुर हुए । १०४६

अनेक राक्षसों ने उसे यह कहते हुए रोका कि हमारे पिता को लौटा दो, तभी जाओ; हमारे छोटे भाई को, हमारे बड़े भाई को लौटा दो, तभी जा सको । अनेक ने कहा कि यह व्योम के देवों की आज्ञा से आया है । वे उसके प्राण हरने को आतुर हुए । १०४६

ओङ्गलम् बैरुवलि युयिरि तन्नुरै, नीड्गल मिन्नीडु नीड्गि तामिति
एङ्गल मिवन्शिरत् तिरुन्द लार्शिरु, वाङ्गल मँन्ऱळु माद रार्पलर् 1047

ओङ्कल्-पर्वत के सदृश; अम् पैरु वलि-सुन्दर और अतिवलिष्ठ; उयिरिन् अन्परे-प्राण-सम प्यारों को; नीड्कलम्-हम छोड़कर नहीं रहे थे; इन्नु ओट्टु नीड्किताम्-आज से विद्युत्त हो गये; इति एङ्कलम्-अब आर्त नहीं होंगे; इवन् चिरत्तु इरुन्तु अलाल्-इसके सिर पर रहकर ही, अन्यथा; तिरु वाङ्कलम्-अपने

मंगलपूर्वा (अश्विन के चिह्न) को अलग नहीं करे; अर्द्ध-रेशा कहकर; अर्द्ध-रीवाली; सातार-रिवा; पल-अनक रहें। १०४७

अनेक राक्षस-रिवा रीयी। पर्वत-सदृश सुन्दर और अतिबली हमारे प्राणप्रिय पतियी से हम कभी अलग नहीं हुई थी। आज से हम विद्युत्त हो गयी। अब हम आवर नहीं होंगी। पर इसके पिर को हो पीठ बनाकर उस पर बैठेगी और मंगलपूर्व निकालेगी। अन्यथा नहीं। १०४७

कौण्डल रीदर्रीयुङ गीरु मानदेर, अण्डपुर उडुनरि वारकुक मारपुड

कण्डपुर उडवडु गणवरक केरुमिय, कुण्डल मुदेरिपरक कुवडे करवे 1048
कौण्डलर- (हनुमान की) से जानेवाली के; अतिर वसु-सामने से आनेवाले;
कीरु मा नकर-रिवायी वडे नगर के (राक्षसी) ने; नैदु आरकुकु-उच्च धीव जो
निकाला; आरपु अरु-वडे थोर; कण्डम उरु उड- (हनुमान द्वारा) छिन्न-भिन्न
हुए; अरु कणवरकुकु पृथिक्य-अपने पतियी के लिए आने; कुण्डल
मुकदेरिपरकुकु-कण्डलालंकित मुखा वालिय को; उवके कर-आनन्द दिनाते हुए;
अण्डम उरुउरु-अण्ड मर से व्याप। १०४८

हनुमान की खिचने ले जा रहे थे लोग। तब उनके सामने से जो
राक्षस तमाशावीन बनकर आये थे, उन्होंने धीरे आनन्दरव उठाया।
वडे धीव मारे अण्ड से फला और उसे मुनकर युद्ध में आते पतियी के
लिए तरसनेवाली कण्डलालंकित मुखा की राक्षसी रिवायी मुदित
हुई। १०४८

वडिडुकु कनरपड वयवर मानकरि
कौडिडुकु नेरपरि कौण्ड वीशलिम
डुडिडुकु विदेनदमाल वरुपि निरुलाम
पुडिडुकु कण्ड कण्ड पयिमान 1049

वडि उडे-वीश; कनल पडे-अनल-सम आयुधधारी; वयवर वीरी; मान
करि-वडे गयी; कौडि उडे नेर-उच्चवायुबल रयी; परि-अपनी को; कौण्ड
वीशलिम- (हनुमान ने) उठाकर फका था, इसलिए; डुडि पड विदेन-प्रहार पाकर
जा उडे थे; मान वरुपि-वडे पर्वतों-से; डुल अलाम-समी धर; पुडि पड-
मर डोकर; कण्डनल-जा पडे रहे वडे; कण्ड-देवते हुए; पयिमान-हनुमान
जाना रहे। १०४९

हनुमान भी बन्धन में रहकर तमाशा देखता जा रहा था। उसने
पुडले वीश और अतिनवुकु हिस हियारधारी वीरी, वडे नागी, डवजा-
सहित रयी और अपनी को उठा ले फका था। वे सब जाकर वडे पर्वतों
के समान प्रसादों को चूर कर गये थे। उस चूर्ण को देखते हुए वडे
गया। १०४९

मुयिरलैत्	तैळुमुदु	मरत्तिन्	मौय्म्बुतोळ्
कयिरलैप्	पुण्डुदु	कण्डुडु	गाण्गिला
तैयिरलैत्	तैळुमिद	ळरक्क	रेळैयर्
वयिरलैत्	तिरियलिन्	मयङ्गि	तारपलर् 1050

मुयिरु-माटे (लाल चींटे); अलैत्तु अँळु-संकट देते हुए जिस पर चढ़ते हैं; मुतु मरत्तिन्-उस वृद्ध तरु के समान; मौय्म्बु तोळ्-बलवान कन्धों को; कयिरु अलैप्पु उण्टु कण्डुम्-रस्सी पीड़ा देती रहीं, वह देखकर भी; काण्गिलातु-विना देखे (डर के कारण); अँयिरु अलैत्तु अँळुम्-दाँत के किटकिटाने से बाहर निकले हुए; इतळ्-ओठों वाली; अरक्कर् एळैयर्-राक्षस-स्त्रियाँ; वयिरु अलैत्तु-पेट पीटकर; इरियलिन्-अस्त-व्यस्त भागी, इसलिए; पलर् मयङ्कितार्-अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

एक वृद्ध तरु को माटे (लाल चींटे) जैसे रस्सी हनुमान को बाँधकर संकट देती रही। राक्षसियाँ देखना चाहतीं पर देख नहीं सकीं। उनके दाँत किटकिटाते और ओंठ बाहर निकल आते। वे अपना पेट पीटती हुई तितर-बितर भाग गयीं। अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

आरप्पुडु	वज्जिन	रडङ्गि	तारपलर्
पोरप्पुडुच्	चैयलिनैप्	पुहल्हिन्	डारपलर्
पारप्पुडुप्	पारप्पुडुप्	पयत्ति	तारपदेत्
तूरप्पुडुत्	तिरियलुडु	रोडु	वारपलर् 1051

पलर्-अनेक; आरप्पु उडु-अधिक कोलाहल के शोर के उठने से; अञ्चितर्-डरकर; अटङ्कितार्-चुप हो गये; पलर्-अनेक; पोर्-युद्ध में; पुडु चैयलिनै- (हनुमान के) वीरता के कृत्यों को; पुक्किल्किन्डार्-बतलाते; पलर्-अन्य अनेक; पारप्पु उडु पारप्पु उडु-ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों; पयत्तिताल्-डर से; पतैत्तु-थरकर; ऊर् पुडुत्तु-नगर के बाहर की ओर; इरियल् उडु-अस्त-व्यस्त होकर; ओटुवार्-भागते। १०५१

लंका में जो तुमुल शोर मचा, उसे सुनकर अनेक जन स्तब्ध रहे। अनेक हनुमान के युद्ध में साहसिक कार्यों का बखान करते रहे। अनेक हनुमान को ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों भयाभिभूत होकर नगर के बाहर की ओर, अस्त-व्यस्त भागे। १०५१

कान्दुरु	कदळैयिर्	उरविन्	कट्टोरु
पून्दुणर्	शेर्त्तेनप्	पौलियुम्	वाण्मुहम्
तेरन्दुरु	पौरुळ्पैर्	वैण्णिच्	चैय्युमिन्
वेन्दुडुल्	पळुदेन्	विळम्बु	वारशिलर् 1052

कान्तु उडु-जलानेवाले; कतळ् अँयिरु-हिल दाँतों वाले; अरविन्-सर्प का; कट्टु-बन्धन; और पूम् तुणर्-एक पुष्पमाला; चेर्त्तु अँत-द्वारा बाँधा

गया हो जैसे; बाण मुक्त-उज्ज्वल-मुख (हेतुमान की); परिवर्त-शोभायमान है; उक्त पक्षे प्र-उचित हित-प्राप्तयः; वेदंते अंगि-अच्छी तरह सोचकर; व्युत्पत्ति- (कार्य) करो; वेदंते उज्ज- (इस स्थिति में) राजा के पास जाना; पछुते-गलत है; अंत-ऐसा; विषमप्रकार-कहेते; विनर-कुल राजा १०५२

कुल राजाओं ने कहा कि यह जलाने के स्वभाव के दलों के संप्र का वर्धन है। तो भी इस वन्दर का प्रकाशमय मुख ऐसा भासमान है, मानो काम करो। इसी स्थिति में इसकी लेकर राजा के पास जाने का काम मान लेंगे।

अभिषेक	नाहिले	काले	वृणसेयन
उज्ज्वर	लनेउद	नृणाम	वेउसाके
कविर	विनदेयउ	काण्डि	नहेण्डव
वृजिहने	यामने	नीजिहने	उरिहिलर 1053

अभिषेक-इ-लो लिपि नहीं है; नाकलेउर-उस नाम (अस्तर) से; अलंकरण-इ-लो (सा) रहेगा; उणसे अर्ध-सत्य नहीं (जाना); अविषरत्न-अर्ध-इतना दुबल नहीं; इतने अणाम वेउ-इसका वातपु और है; अंवा-सोचकर; विनर-कुल राजाओं से; कवि वर विनोदयान-प्रसन्नचित्त हो; काण्डि-इस पर दंड रहेगा; नष्टक-इस पर; वृजिहने-कोपदंड मत डालो; अंत-कहेकर; नीजिहिलर-नमस्कार किया। १०५३

यह अस्तर का नाम परीक्ष रूप से नहीं प्रत्यक्ष रूप से उसकी कस रहा है। तो भी इसका इ-लो-सा दिखना ही है, सत्य नहीं है। इसकी बांधना जलना देना काय नहीं है। इसका लिपि वातपु वृषरा कुल होगा—यह कहकर कुल राजाओं ने सीधे हेतुमान से विनय की कि हेम पर प्रसन्नचित्त दंड रहेगा। कोप की दंड मत डालो। वे हेतुमान की नमस्कार करते। १०५३

पुण्ड्र	लज्जमान	पिण्डन	पानदेक
किंगार	रीकृडके	किउरनेड	परिगार
ऐमवदि	वापिउर	रळवि	वाउउलर
मपुमपिनि	वेउवलि	कळन	मुमसेयार 1054

पुं कळन-वमकदार (स्वर्ण) पायलधारी; अमुन-हेतुमान की; पिण्डन पानदेक-लो वड कर रहा था, उस संप्र की; मपुमपिनि-पराक्रम से; अउळ वलि कळन-अतिबली गडक के; मुमसेयार-लिपि बलशाली; अउळ इल आउउलर-अपार साहसी; किङ्कर ऐमपिनिपार-प्रवास सहज फिर; अउ पड-एक तरफ; किउरनेड-मिलकर; परिगार-एकड से चलें। १०५४

जब यह सब हो रहा था तब पचास सहस्र किंकर, जो बल में गरुड़ के तिगुने थे, चमकदार स्वर्णपायलधारी हनुमान को उसके नाग-बन्धन के साथ एक ओर मिलकर खींचते चले जा रहे थे । १०५४

तिण्डिउ	लरक्करदञ्	जैरक्कुच्	चिन्दुवान्
तण्डलि	उत्तुखक्	करन्द	तन्मैयान्
मण्डमर्	तौडङ्गिय	वान्	रत्तुखक्
कौण्डन्	तन्दहन्	कौल्लेन्	डारपलर् 1055

तिण् तिङ्-अतिबली; अरक्कर तम्-राक्षसों का; जैरक्कु-धमंड; चिन्दुवान्-चूर करने के लिए; अन्तकत्-यम; तण्डल् इल्-अबाध; तन् उर-अपना रूप; करन्द-छिपाने की; तन्मैयान्-स्थिति में; मण्डु अमर्-धमासान युद्ध; तौडङ्किय-प्रारम्भ जिसने किया उस; वातरत्तु उर-वानर का रूप; कौण्डन् कौल्-ले गया है क्या; अन्डार् पलर्-कहा अनेक ने । १०५५

अनेक कहते कि अतिबली राक्षसों का गर्व चूर करने हेतु यमराज अपना अवारित रूप छिपा लेकर युद्धकर्ता हनुमान का रूप ले आया है, शायद ! । १०५५

अरमियत्	तलन्दौरु	मम्बौन्	माळिहैत्
तरमुरु	निलन्दौरु	जाळ	रन्दौरुम्
मुरशैरि	कडैदौरु	मिरैत्तु	मौयत्तनर्
निरैवळै	महळिरु	निरुदर्	मैन्दरुम् 1056

निरै वळै-पंक्तियों में चूड़ाधारिणी; मळिरुम्-राक्षस-रमणियाँ और; निरुदर् मैन्दरुम्-तरुण राक्षस लोग; अरमिय तलम् तौरुम्-हर्म्य-हर्म्य में; अम् पौन् माळिकै-सुन्दर स्वर्ण-महलों के; तरम् उरु-श्रेष्ठ; निलम् तौरुम्-स्थानों में; जाळरुम् तौरुम्-गवाक्षों में; मुरचु अँरि-भेरियाँ जहाँ बजती है, उन; कडै तौरुम्-स्थानों में; इरैत्तु-शोर मचाते हुए; मौयत्तनर्-आकर भर गई । १०५६

राक्षस-रमणियाँ, जिनके हाथों को पंक्तियों में कंकण अलंकृत कर रहे थे और राक्षस तरुण हर्म्यों में, स्वर्ण प्रासादों के श्रेष्ठ स्थलों में और झरोखों में, गवाक्षों में, भेरियों के बजने के स्थानों में —सर्वत्र कोलाहल करते हुए आ जुटे । १०५६

कयिलैयि	तौरुदन्तिक्	कणिच्चि	वातवन्
मयिलियर्	चौदैदन्	कर्पिन्	माट्चियाल्
अयिलुडैत्	तिरुनहर्	चिदैप्प	वैय्दित्तन्
अयिलैयिर्	रौरुकरड्	गार्येन्	बारपलर् 1057

कयिलैयिन्-कैलासपति; और तत्ति-अद्वितीय; कणिच्चि वातवन्-परशुधर ईश्वर; मयिल् इयल्-मयूराभा; चौदै तन्-सीतादेवी के; कर्पिन् माट्चियाल्-

अदकंकक
मरककिकयर्
मडिमि
कयमि
मरुवर्
मरुवर्

विरैक्कुळर् चीदैदन् मैलिवु नोक्कियो
इरक्कमो वरत्तिन दैण्मै येहीलो 1060

अरक्करम्-राक्षस नरों; अरक्कियर् कुळामुम्-और नारियों के दलों के; अल्लवर्-जो नहीं रहे वे (देव आदि); नैट्टु मळै-निरन्तर वर्षा के समान; कण्णिन् नीर् अतु-आँखों के आँसुओं को; करक्किलर्-नहीं छिपाते (रोकते); विरै कुळल्-सुवासित केशिनी; चीतै तन्-सीता का; मैलिवु नोक्कियो-दुःख देखकर; इरक्कमो-या (हनुमान के प्रति) सहानुभूति; अरत्तिन्-धर्म-सम्बन्धी; दैण्मैये कौलो-विचार क्या । १०६०

राक्षस पुरुषों और स्त्रियों से अन्य (देवादि) लोगों ने अपनी आँखों से आँसू को बहने से नहीं रोका (न छिपाया) । वे क्यों दुःख कर रहे थे ? सुगन्धित केशिनी सीता का कष्ट देखकर, या हनुमान की सहानुभूति में; या धर्म का विचार करके ? । १०६०

आण्डीळि लनुमनु मवरी डेहिनात्
मीण्डिलन् वेरीन्ऱुम् विरुम्ब लुर्ऱिलन्
ईण्डिदु वेतीडर्न् तिलङ्गै वन्दनैक्
काण्डले नलत्तैनक् करत्ति तैण्णिनात् 1061

आण् तीळिल् अनुमनुम्-पुरुषयोग्य कार्य करनेवाले हनुमान ने भी; मीण्डिलन्-न लौटकर; वेरु औन्ऱुम्-और कुछ; विरुम्पल् उर्ऱिलन्-नहीं चाहता हुआ; ईण्डु-यहाँ; इतुवे तीटर्न्तु-इसी क्रम को अपनाकर; इलङ्कै वेन्तनै-लंका के राजा को; काण्डले-देखना ही; नलन् अत्त-भला है, ऐसा; करत्तिन् तैण्णिनात्-मन में सोचा; अवरीट्टु एकितान्-उनके साथ गया । १०६१

पुरुषोचित कार्यदक्ष महावीर ने न लौटना चाहा, न और ही कुछ । “हम इसी क्रम में जायँगे और लंका के राजा से मिलेंगे । यही अच्छा है ।” —यह सोचकर वह उनके साथ चूपचाप गया । १०६१

अैन्दैय दरुळिनु मिरामन् शेवडि, शिन्दैशैय् नलत्तिनुन् देव रीन्दन्
मुन्दुळ वरत्तिनुम् बाश मुर्ऱुच्, चिन्दुर्वै तयर्ऱु शिन्दै शीरिदाल् 1062

अैन्तै अतु अरुळिनुम्-मेरे पिता (वायुदेव) की कृपा से; इरामन् चे अटि-श्रीराम के श्रेष्ठ चरणों के; चिन्तै चैय्-स्मरण करने से प्राप्त; नलत्तिनुम्-पुण्यप्रताप से; तेवर् ईन्तन्-देव-दत्त; मुन्तु उळ-पूर्व के; वरत्तिनुम्-वरों के बल से; पाचम्-पाश को; मुर्ऱु उर्-पूर्ण रूप से; चिन्तुर्वै-छिन्न कर दूंगा; अयर्ऱु उळ-(पर) थकित (सा) रहने का; चिन्तै-यह विचार; चीरितु-अच्छा है । १०६२

उसने यह भी सोचा कि अपने पिताजी की कृपा, श्रीराम के उत्तम चरण-स्मरण के प्रभाव और देव-प्रदत्त प्राचीन वरों के प्रताप से मैं इस पाश को छिन्न-भिन्न कर सकता हूँ । पर थकित-सा रहने का यह विचार ही ठीक है । १०६२

वडैयुपियं उरकैकनं पुंरुं मरुदरतं, तळवरुं मुदियर मरिय वारुणलं

विळवव विळमुपिवारुं मिदिलं नाडिय, इळहिनं वृजवयि नीद लेयुमालं 1063

वडै अपिउरुं-वक दंतो वलि; अरकैकनं-राधल (राजा) के पास; उरुं-

जाकर; मरुदरतं-मंदरा-सभा में; अळव अरु-अपार; मुदियरुम-वृद्ध के;

अरिय-जाते; आणुपलं-(श्रीराम की) आशा से; विळवव-होनेवाली बातें;

विळमुपिवारुं-कहे तो; इळहिनं-मन में परीजाकर; मिदिलं नाडिय-मिथिलाप्रदेश के;

को; अपै वरियुं-मेरे पास; इतलं पुयुं-आपद दे भी दे, यह संभव है। १०६३

वकदरतं रावण के पास जाऊंगा। वडै मंदी-सभा में आयोजित वृद्ध

राहो। उनके जाने अगर मैं श्रीराम की आशा के संयाप्य नवीजों का

वर्णन कहे तो रावण का मन नरम हो जाय और आपद वह मिथिला-सुती

की मेरे पास सौंप भी दे। १०६३

अलंलडुव मवडैतं पुणव राधियारुंके, कलंलपुनं वृदिवरुं मणुनं देरलाम

वल्लव लिंलसैयु मवपुनं देरलाम, सींलपुल्ल मुहंमुनं वृडु सींललव 1064

अलंलडुवम-उसके अलना; अवडै-उसके; पुणवर-सहेयक; आधियारुंके-

जाते हैं, उनके; अलंलपुनं-(प्रणम की) सीमा थी; वृदिवरुं-जाती जा सकी;

अणुपलं-मंथना भी जान सकते; मुकम अंनम-पुछ जा कहे जाना है; वृडु

सींललव-वह दूत में जाकर कहे तो; सींल उक-उसके वचन निकलीं तब; वल्लव

लिंलसैयुम-प्रतापी उसकी स्थिति और; मवपुनं-मनोभाव; देरलाम-समझ सकते

हैं। १०६४

अलना, उसके सहेयकों की स्थिति और संख्या भी जान सकेंगे।

दूत राजा का मुख कहे जाना है। वैया मैं राजाराम का सहेय युवाऊ

तो तब प्रतापी रावण के मुख से जो शब्द निकलेंगे, उनसे उसकी स्थिति

और उसके मनोभाव भाव भी समझ जा सकते हैं। १०६४

वालिनं लिडियुं मरुदरतं

कलंलव कलंलपुनं

सींलपुनं कलंलव

लीडियुं लिडियुं

लीडियुं लिडियुं

लीडियुं लिडियुं

लीडियुं लिडियुं

लीडियुं लिडियुं

और सूर्यसूनु का बल-विक्रम और गौरव —यह सारी बातें नील वर्ण रावण के मन में बिठायी जा सकती हैं । १०६५

आदला	तरक्कतै	यैय्दि	यार्इलुम्
नीदियु	मत्तक्कीळ	निरुवि	निन्ऱदिल्
पादियिन्	मेर्चैल	नूरिप्	पयप्पयप्
पोदले	करुममैन्	इनुमन्	पोयित्तान् 1066

आतलाल्-इसलिए; अरक्कतै अँय्ति-राक्षस के पास जाकर; यार्इलुम्- (श्रीराम का) पराक्रम और; नीदियुम्-न्याय; मत्तम् कौळ-समझाते हुए; निरुवि स्थिर करके; निन्ऱदितल्-जो बची रही; पातियिन् मेल् चैल-उस सेना की आधी से अधिक को; नूरि-मारकर; पयप्पय-धीरे-धीरे; पोतले-जाना ही; करुमम्-करणीय है; अँनू-ऐसा सोचकर; अनुमन्-हनुमान; पोयित्तान्-चुप जाता रहा । १०६६

इसलिए रावण के पास जाकर श्रीराम का पराक्रम और उनकी नय आदि उसके मन में धर कर ले, ऐसा समझाऊँगा । (अगर कुछ असर नहीं हो तो) जो सेना इस युद्ध के बाद बची है, उसमें से आधी से अधिक को मिटाकर धी रे-धीरे जाना ही मेरा करणीय कार्य है । —ऐसा सोचते हुए हनुमान गया । १०६६

कडवुळर्क्	करशतैक्	कडन्द	तोन्ऱलुम्
पुडैवरुम्	बैरुम्बडैप्	पुणरि	पोर्त्तळ
विडैपिणिप्	पुण्डडु	पोलुम्	वीरनैक्
कुडैहैळु	मत्तन्तिर्	कौण्डु	पोयित्तान् 1067

कडवुळर्क्कु अरचनै-देवराज को; कटन्त-जिसने हराया; तोन्ऱलुम्-वह राक्षसराजकुमार भी; पुटै वरुम्-पार्श्व में आनेवाली; पेरुम् पटै पुणरि-बहुत बड़ी सेना-सागर के; पोर्त्तु अँळ-घेरकर शोर के साथ आते; विटै-ऋषभ; पिणिप्पु उण्डतु-बन्धन में आ गया जैसे; पोलुम्-रहनेवाले; वीरनै-महावीर को; कुटै कौळ-विजयचिह्नक छत्रशोभित; मत्तन् इल्-राजा के महल में; कौण्डु पोयित्तान्-ले गया । १०६७

देवराजविजेता इन्द्रजित् सागर के समान सेना के मध्य रहकर बद्ध ऋषभ-जैसे महावीर को विजयछत्र रावण के महल में ले गया । १०६७

तूडुव	रोडितर्	तौळुडु	तौल्लैनाळ्
मादिरड्	गडन्दवर्	कुरुहि	मत्तनिन्
कादलन्	मरैमलर्क्	कडवुळ्	वाळियाल्
एदिल्वा	तरम्बिणिप्	पुण्ड	दामैन्ऱार् 1068

तूडुवर्-(इन्द्रजित् के) दूत; ओडितर्-बौड़े; तौल्लै नाळ्-प्राचीन दिन के;

ने उनसे कहा कि भागो और मेरा आदेश (इन्द्रजित् को) सुनाओ। वानर को न मारकर इधर जीवित लाया जाय। १०७०

अव्वुर तूदरु माणै याल्वरुम्, तैव्वुरै नीक्किता तरियच् चैप्पितार्
इव्वुरै निहळ्वुळि यिरुन्द शीदैयाम्, वैव्वुरै नीङ्गिता णिलैधि लम्बुवाम् 1071

तूतरुम्-दूतों ने भी; आणैयाल्-(रावण की) आज्ञा के अनुसार; अ उरै-उस आदेश-वचन की; वरुम्-(अपने सामने हनुमान को ले) आते हुए; तैव्व उरै-'शत्रु' का नाम ही; नीक्कितात्-जिसने मिटा दिया, उस इन्द्रजित् से; अरिय चैप्पितार्-समझाते हुए कहा; इ उरै निकळ् उळि-जब यह बात चल रही थी; इरुन्त चीतैयाम्-(जो अशोक वन में) रहीं उन सीता; वैव्व उरै नीङ्गिताळ्-अनिन्द्य देवी की; निलै-स्थिति; विळम्पुवाम्-कहेंगे। १०७१

दूत रावण की आज्ञा ले गये। सामने इन्द्रजित् आ रहा था जिसने शत्रु का अभाव कर रखा था। उन्होंने इन्द्रजित् से रावण के आदेश-वचन कहे। यहाँ यह बातें हो रही थीं। तब अशोक वन में जो अनिन्द्य सीताजी रही; उनकी स्थिति बताएँगे। १०७१

इरुत्तत्तन्	कडिपीळि	लैण्णि	लोर्पड
औरुत्तत्त	नैन्ऱुकीण्	डुवक्किन्	ऱाळुयिर्
वैरुत्तत्तळ्	शोर्वुउ	वीरर्	कुऱ्ऱवैक्
करुत्तलिल्	शिन्दैयाळ्	कवन्ऱु	कूऱिन्नाळ् 1072

कटि पीळिल् इरुत्तत्तन्-सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया; अँण् इलोर्-असंख्य राक्षसों को; पट-मिटते हुए; औरुत्तत्तन्-मार डाला; अँन्ऱु कीण्डु-ऐसा जान लेकर; उवक्किन्ऱाळ्-जो हर्षित रहीं उनसे; करुत्तल् इल् चिन्तैयाळ्-कोप या घृणा ने काला जिसका मन कभी न हुआ (उस त्रिजटा ने); उयिर्-वैरुत्तत्तळ्-जीवित रहने से उचटकर; चोर्वु उऱ-लट जाएँ, ऐसा; वीरर्कु-महावीर को; उऱ्ऱतै-जो हुआ; कवन्ऱु-व्यग्रता के साथ; कूऱिन्नाळ्-कहा। १०७२

देवी ने जब जाना कि हनुमान ने सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया और असंख्यक राक्षसों को मार डाला, तब वह बहुत हर्षित हुई। पर उनसे कोप या घृणा से जिसका मन काला नहीं हुआ था, उस त्रिजटा ने व्यग्रता के साथ महावीर हनुमान को जो हुआ, वह वृत्तान्त बताया। यह सुनकर देवी जीवन से ही उचट गयीं और बहुत लट गयीं। १०७२

ओवि	यम्बुहै	युण्डडु	पोलवोर्
पूविन्	मैल्लियन्	मेत्ति	पौडियुऱप्
पावि	वेडन्गैप्	पारप्पुऱ	वैय्दुरुम्
तूवि	यन्तमन्	त्ताळिवै	शील्लित्ताळ् 1073

वे थीं बोलों। १०७३

उनके गुण-सम कोमल शरीर पर पसीना निकल आया और वे छुपूँ में छिपे बिब के समान निद्रम्य हुईं। वह उस कोमल पुरी बाली हँसिनी की-सी स्थिति में, जिसका पीटा किसी पापी व्याध के होय लग गया हो। अस्वाब्ध-समान जो रहें; इवें बोलिवाब्ध- (वे बोलाली) थीं बोलों। १०७३

और गुहिन-एक गुण-वृत्त; मल्लिखल सति-कोमल शरीर; अविषम-

विष; एक उलटव-धुप से ढँक गया; पाल-जैसे; पाँटे उर-स्वेदयुक्त हुआ; पाँव वेदने के-पापी विराध के होय में; पादपु उर-अपने वस्त्र के लगने से; वृष उरम-आकुल रहनेवाली; वृष अर्धम-कोमल पुरी बाली हँसिनी के;

उरुण्ड-अन्य भूलों की अपने में लिये; उलटाप-जो पहले उत्पन्न हुआ; विषमप-उस आकाश की; उरविवाप-आपन रहकर; मुरुण्डापा-उसके ऊपर गया; कलें यावदुप-सभी (६४) कलाओं की; मुरुवुर-पूर्ण रूप से; कुरुण्डापा- (सूँ से) सीधे लिया; और कळ अरककनाल-एक चौर राक्षस द्वारा; पुरुण्डापा- बरधन में डाल दिये गये; इविव-अप्य यही; अर पावुसे-अपनी व्यवस्था है। १०७४

आकाश अन्य भूलों की अपने में लेकर सबसे पहले प्रकट हुआ था। गुम उस आकाश की व्यापकता उसके ऊपर थी गये। चौधठों कलाओं की गुमने सूँ के सामने उनकी और मुख किये पीछे बिना मुड़े चलने हुए सूँ से सीधे। ऐसे गुम एक चौर राक्षस द्वारा बरधन में डाल दिये गये। अप्य यही धर्म की व्यवस्था है ?। १०७४

कलहले उरुं पुष्टिने कण्डहर, उलहले उरुं पुष्टिने कळि कउरुनिने अलहले उरुं विरुं पुष्टिने नयननी, इउरुं उरुं निदिने वरुं निदिने रेयनी 1075

अलह कउरुन-शिववलापारंगत; विरुं पुष्टिने-गुह कणों के; अणुन-सहिमापन; कलह कउरु-सामर पार करके; पुष्टिनेने-आप; कण्डकर-कंडक लीनों के; उलह कउरु निदिने-शरीरों की नद करके रहने पर भी; कळि कउरुनिने-आप के उस पार नहीं हुए; नी इउरु कउरुनिने-गुम उःख की तर नहीं गये; इउरु वरुं- (अप्य गुम पर भी) संकट आ; एयुनी-लग सकेगा। १०७५

गुम समुद्र तरकर आये। कंडकों के शरीरों की विषय किया, पर अपनी आयु के उस पार नहीं गये (गुम जीवित रहे)। नी भी गुम कलह के उस पार जा नहीं पाये क्या ? अप्य गुम पर भी संकट आ सकता है ?। १०७५

आळि काट्टियेन् नारुयिर् काट्टिनाय्, ऊळि काट्टुवै नैन्नुरैत् तेनदु
वाळि काट्टुव दुण्डुन् वरैप्पुयप्, पाळि काट्टिप् पळियैयुड् गाट्टिनाय् 1076

आळि काट्टि—(श्रीराम की) मुंदरी दिखाकर; अँन् आर् उयिर् काट्टिनाय्—मेरे प्यारे प्राण दिखाये (बचाये); ऊळि काट्टुवैन्—युग-युग दिखाऊँगी (जीवित रहने का वर दूँगी); अँन् उरैत्तेन्—ऐसा कहा मैंने; अतु—वह (आशीर्वाद); वाळि काट्टुवतु—चिरंजीवता दिखाएगा; उण्डु—अवश्य होगा; उन्—तुम्हारे; वरै पुय पाळि—पर्वत-सम हाथों का बल; काट्टि—दिखाकर; पळियैयुम्—अपयश भी; काट्टिनाय्—पैदा कर लिया, तुमने। १०७६

तुमने श्रीराम की मुंदरी दिखायी और मेरे प्राणों को भी दिखाया (दिलाया)। मैंने तुमको आशीर्वाद दिये कि तुम्हें अनेक युग दिखाऊँगी (युगों तक जीवित रहोगे)। वह तुम्हें अनेक युगों को दिखायगा भी (युगों तक जीवित रखेगा)। तुम अपना महान् भुजबल दिखाने चले और निन्दा दिखवा ली। (इसमें काट्टु—दिखाना, जीवित रखना, दिलाना, प्राप्त करना आदि अनेक अर्थों को व्यंजना और लक्षणा के आधार पर देता है।)। १०७६

कण्डु पोयितै नोर्णैरि काट्टिड, मण्डु पोरि नरक्कनै मायत्तैक्
कौण्डु मन्तवन् पौमन्नुड् गौळ् हैयैत्, तण्डि नार्थैक् कारुयिर् तन्दनी 1077

अँत्तक्कु—मुझे; आर् उयिर् तन्त—प्यारा प्राणदान करके; नो—तुम; कण्डु पोयितै—मुझसे मिलकर गये; मण्डु पोरिन्—घमासान युद्ध में; अरक्कनै—राक्षस को; मायत्तु—मारकर; नौळ् नैरि काट्टिड—लम्बा (यमराज्य का) मार्ग दिखाकर; अँत्तै—मुझे; मन्तवन्—राजा (राम); कौण्डु पोम्—ले जाएँगे; अँत्तुम् कौळ्कैयै—इस धारणा को; तण्डिनाय्—तोड़ दिया तुमने। १०७७

तुम मुझे प्राण प्रदान करके मुझसे मिलकर गये। तब तुम कह गये कि घमासान युद्ध होगा; उसमें श्रीराम राक्षस को मारकर यमलोक का लम्बा मार्ग दिखा देंगे। फिर मुझे अपने साथ ले जायँगे। अब उस धारणा को तुमने तोड़ दिया। १०७७

एयप् पत्तिन्न तित्तदन् नारुयिर्, तीयक् कन्ऱु पिडियुऱत् तोङ्गुरुम्
तायैप् पोल्त् तळर्न्दु मयङ्गिनाळ्, तीयच् चुट्टदीर् कर्प्पेत्तुन् दीयिनाळ् 1078

तीयै—आग को; चुट्टतु—जलानेवाली; ओर् कर्प्पु अँत्तुम्—पातिव्रत्य नाम की; तीयिनाळ्—अग्नि वाली; एय—योग्य रीति से; इत्त पत्तिन्नळ्—ऐसा कहती हुई; कन्ऱु पिडि उर—बछड़े के बँध जाने पर; तोङ्गुरुम्—दुःखनेवाली; तायै पोल्—माता गाय के समान; तन् आर् उयिर्—अपने (शरीर से) युक्त प्राणों के; तीय—झुलसते; तळर्न्दु—लटकर; मयङ्किनाळ्—बेसुध हुई। १०७८

अग्नि की भी जला सकनेवाली पातिवत्याग्नि से अग्नि देवी सीता इस तरह कहती हैं, वहाँ के (हिंस पशु हारा) एकड़े जाते पर दुखनेवाली माता गाय के समान, उनके प्राणी के तल होकर क्षीण होती, लटकर वैद्य

हैं । १०७८

पूरेनद हैपूदि योनेपुपि लिनेनपरे
मुनेनद मरु मुनेनद
अनेनद वपप नालर शाळहेनेनद
इनेनद वपपुवइ गीपुवनेनद रूपदिन 1079

पूरेम सक-योगना में वड़े और; पुरिया- (आकार में भी) वड़े हुवेमान की; पुरिया-जिन वैया; पूरे मुनेनद-वड़े बुद्ध-क्याल इन्द्रजित; मरु- (लका के) अलावा; वल्लु और मुनेनद-तीनों लोको पर; अरेम नव पयमान-खेद नपया के फलवरेप; अरे आळिकुनेन- जो राव (शासन) करता है; इनेन-वसका वासथान; अ पूरेम कोपल-वस वड़े मन्दर में; वरेड अयुतिनने-जा पड़वा । १०७९

उधर गुण और आकार में वड़े महावीर की जिसने बाँध दिया था वह इन्द्रजित, लका के अलावा तीनों लोकों पर पूर्वपुण्यवश से शासन करनेवाला रावण बड़ा रहा, उस वड़े मन्दर में जा पड़वा । १०७९

नलनेगण मुनेनदुम विनेदीर सविनलेन ननेन
अलनेगण वोगुडे कणगुडे यविनेदि परपप वडेनेन
वलनेगी लोडनान मणुगुनेम वानेन वडेनेन
पौलनेगी ममणि वळेडियडे गुनेनेनप पौलिय 1080

अलनेकले-होर जिससे लटकते थे; वण कुड़े-वड़े भवेन छव; नलनेकले मुनेनदुम-तीनों लोकों के लिए; पुरिउ और मलि-और एक वः; नळेवे अनेन-अशिय रूप से प्रकाश देना रहा जैसे; कण कुड़े-आँखों में छमला हुआ; अरि आळि-फलनेवाला प्रकाश; परप-लिटकाता रहा; वलम कळे लोडनान-सबल काया से; मण निनेडुम वाने वर-यूमि से लेकर आकाश की छेने हुए; अडेनेन-जो उठाय गया; पौलम कळे-सुन्दरलुक्त; मा मणि-खेद रतमय; वळेडि अम-सुन्दर बाँधी के; कुनेड अम-पवत-से; विळक-शीम रहे थे । १०८०

(अगो १०१७वें पद्य तक लगानार चलनेवाले वाक्य में रावण का वर्णन है । वाक्य १०१७वें पद्य में ही पूर्ण होला है ।) भवेन छव था, जिससे माती आदि की लडियाँ लटक रही थीं । वड़े तीनों लोकों पर प्रकाश फैलाने के लिए वने एक दूसरे चन्द के समान प्रभा बिखेर रहा था, जो आँखों में छम रहा था । और वड़े उस सुन्दर रतमय और भवेन कैलासगिरि

के समान भी शोभ रहा था, जिसे रावण ने अपने सबल हाथों से भूमि से आकाश तक उठाया था । १०८०

पुळ्ळु यरत्तवन् त्रिहिरियुम् बुरन्दर तयिलुम्
तळ्ळिन् मुक्कणान् कणिच्चियुन् दाक्किय तळ्ळुम्बुम्
कळ्ळु यिर्क्कुम्भेन् गुळलियर् मुहिल्विरर् कदिर्वाळ्
वळ्ळु हिरप्पेरुड् गुडिहळुम् बुयङ्गळिन् वयङ्ग 1081

पुळ्ळु उयरत्तवन्-गरुडध्वज का; त्रिहिरियुम्-चक्रायुध; पुरन्दरन् अयिलुम्-और पुरन्दर का भाला (वज्र); मुक्कणान्-त्रिनेत्र शिवजी का; तळ् इल्-अप्रतिहत; कणिच्चियुम्-परशु; दाक्किय-इनके प्रहार से हुए; तळ्ळुम्बुम्-दाग और; कळ्ळु उयिर्क्कुम्भे- (पुष्प के कारण) शहद-निहित; म्भेन् कुळलियर्-कोमल केशिनी राक्षसियों की; मुक्किल्ल-कलियों-सी; विरल्-उँगलियों के; कतिर् वाळ्-उज्ज्वल तलवार-सम; वळ्ळु उकिर्-तीक्ष्ण नाखूनों के बने; पेरुम् कुडिक्कुळुम्-बड़े-बड़े (नख-क्षत) निशान; पुयङ्गळिन् विळङ्क-भुजाओं में शोभायमान थे । १०८१

गरुडध्वज श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र, पुरन्दर का वज्र और त्रिनेत्र शिवजी का अबाध फरसा — इनके लगने से बने व्रणों के दाग और शहद-लसे कोमल केश वाली प्यारी राक्षसियों की कलियों के समान बन्द उँगलियों के ज्वलन्त तलवार के समान नाखूनों के बने नखक्षत उनकी भुजाओं पर विद्यमान थे । १०८१

तुत्तु शम्भयिर्च् चुटर्नेटुड् गरुडहळ् शुर्त्त
निन्नु तिक्कुड् निरैत्तन् कदिर्क्कुळ्ळु निमिर
ओत्तु शीर्त्तत्ति तुयिर्प्पनुम् बैरुम्बुहै युयिर्प्पत्
तैन्नि शैक्कुमोर् वडवन् तिरुत्तिय दैन्न् 1082

तुत्तु चम्भयिर्-घने लाल केशों की; चुटर् नेटुम्-प्रकाशमय लम्बी; कर्त्तुहळ्-लटें; शुर्त्त निन्नु-सब ओर रहीं; तिक्कु उड्-सभी दिशाओं में लगे ऐसा; निरैत्तन्-पक्षियों में; कतिर् कुळाम्-किरणों की राशियाँ; निमिर-बढ़ीं; ओत्तु-युक्त; शीर्त्तत्ति-कोप का; उयिर्प्पु अँनुम्-श्वास रूपी; पेरुम् पुक्के-बड़ा धुआँ; उयिर्प्प-प्रकट होकर; तैन्नि त्रिचक्कुम्-दक्षिण दिशा में भी; ओर्-वह; वड अत्तल्-एक बड़वाग्नि; तिरुत्तियतु अँन्न्-पैदा हुई जैसे रहा । १०८२

उसके मुख के चारो ओर घने लाल बालों की लटें थीं । उनसे सभी दिशाओं में लाल प्रकाश की किरणें छूट रही थीं । कोप के कारण साँसें धुएँ के रूप में निकल रही थीं । सब मिलकर बड़वाग्नि का दृश्य उपस्थित कर रहे थे और वह दक्षिण दिशा की बड़वाग्नि-सी लगी । १०८२

मरह दक्कीळुड् गदिरीडु माणिक्क नैडुवाळ्
नरह तेयत्तु णडुक्कुडा विरळैयु नक्कच्

विरम वेदवेद्युनं विद्योतीकृतं विद्योतीकृतं विद्योतीकृतं
उदहरे कोविदं दशुवीर्यं विरुदधनं श्रीप 1083

मरकतम-मरकत की; कौटिल्य कतिरं श्री-गुह किरणों के साथ; मालिक
नंदबाळ-मालिक की लक्ष्मी किरणों; मरक वेद्युवेद्यु-मरक वेद्यु; नंदकै उर-
अवल; इच्छुम-अथकार की श्री; मरक-वाटकर दूर करती रहो; विरु
अनंतवेद्युम-सभी सिरों की; विरु नक्षत्र विरुवेद्युम-विद्या-विद्या में; वेद्युवेद्यु-
मोडकर; उरकर कोर-गणराज; इतिरु-गुह से; अरु वेद्युवेद्युम-विद्या-
विद्येसन पर विरुज रहो; श्रीप-वेद्यु १०८३

वह अपने सिरों की जब विद्या-विद्या में वृत्तांत, जब मरकत मालिनी
के गुह प्रकाश और मालिक परचरों की ज्योति दीनों उठकर मरक प्रदोष
के अवल अथकार की श्री वाट लेते। वह वेद्यु, उरगाराज विद्येसन पर
विराजमान हो, वेद्यु जग १०८३

कृतिवत पद्ममालिकं कृपयहेळं कलमयीरुहं गीतिपद्मं गीतिपद्मं
विविधं उरककलं ललिनदप्रीरं रीतिरुहं नयनगं
गुतिवत उमवदरं मववपं श्रीमंशुहं श्रीमंशुहं
कविप्र मालिखंडं गडगडं लिखनंदं कडप 1084

कृतिवत-राशिपों में रहे; पद्म मालि कृपयकल-अनेक रत्नमय; कल श्रीरुह-
उत्तरीय के साथ; कौटिल्य-लक्ष्मी किरणों; अलिनत-पद्म वेद्यु; विरु वेदर-वेद्यु-
मय; कलम-आमरण; श्रीमंशुहं-रत्नमय-धारी कंधों पर; नयन-
श्रीमंत; मालि उरक-वृद्ध वडो; कलम कल-नीला सागर; गुह नदम-पुनल में;
पदर-कल रहे; मवव पद्म गुह श्रीमंशुहं-मरक की रत्नमय-किरीट के स्थान में; कविप्र-
पद्म वेद्यु; इच्छुम-रहो; कडप-वेद्यु १०८४

उसके उत्तरीय में गंध रहे अनेक रत्नों की राशिपों उत्तरीय वरन
के साथ विजयी-जोती रहो। उसने जो आभरण पहन रखे थे, वे उसके
बीनों सुन्दर रत्नमय के साथ वेजीमय रहे। वह वेद्यु कल और वडे सागर
के समान शीघ्र रहो था, जो अपने सिर पर पुनल में विद्याल रूप से स्थाप
मर के किराट की धारण किया रहता हो। १०८४

विद्युतकविप्रं विरु गिरु-यने विरुदधनं कपडं कपडं श्रीरुहं
कमरवार के साथ; विरु-वेद्यु कंधे रहे; पद्म-पुनल में; वेद्यु सुवेद्यु अलि
कलम-सकल मालिनी के आभरण; गुह विरु-गुहवार की वादनी-सा प्रकाश;
पदप-कल रहे; इच्छु वेद्यु कड-वार के समान वरन लक्ष्मी में;
विद्युतकविप्र-वेद्यु १०८५

अल्लु-रात; अन्तिवान्-उटुतु-सन्ध्या-गगन पहने हुए; तारकै इत्तम् पूण्डु-तारागणों के आभरणों से अलंकृत हो; वीरुत्तिरुन्तु आम्-विराजमान रही; अँत्त-जैसे । १०८५

घना रक्त-वर्ण वस्त्र और उसके ऊपर कमरबन्द शोभायमान थे । पंक्तियों में मोतियों को रखकर बनाये गये आभरण राकाचन्द्र की चाँदनी-सी प्रभा बिखेर रहे थे । सब मिलकर रात्रि की देवी की-सी शोभा बन रही थी, जो इन्द्र-सम श्वेत छत्र कि छाँह में संध्यागगन-वस्त्र पहनकर तारागणाभरणों से अलंकृत होकर विराजमान हो । १०८५

वण्मैक्	कुन्दिरु	मरैहट्कुम्	वान्तिनुम्	बैरिय
तिण्मैक्	कुन्दति	युरैयुळान्	मुळुमुहन्	दिशैयिल्
कण्वैक्	कुन्दौरुड्	गळिर्त्तौडु	मादिरड्	गाक्कुम्
अँम्मर्क्	कुम्मर्त्त	यिरुवर्क्कुम्	बैरुम्बय	मैय्द 1086

वण्मैक्कुम्-दानशीलता और; तिरु मरैकट्कुम्-दिव्य वेदों और; वान्तिनुम् पैरिय-आकाश से भी बड़े; तिण्मैक्कुम्-साहस का; तति उरैयुळान्-अप्रतिम आश्रयस्थान रावण; मुळु मुक्कुम्-सारे मुखों को; तिचैयिल्-एक साथ एक दिशा में; कण्वैक्कुम् तोडुम्-रखकर ज्यों-ज्यों दृष्टि दौड़ाता, त्यों-त्यों; कळिर्त्तौडु-गजों के साथ; मातिरम् काक्कुम्-दिशाओं का पालन करनेवाले; अँम्मर्क्कुम्-आठों (दिक्पालों) को और; मर्त्त इरुवर्क्कुम्-अन्य (आकाश और पाताल के ध्रुव और आविशेष) दोनों को; पैरुम् पयम् अँय्त-बड़ा भय लगता । १०८६

रावण दानशीलता, दिव्य वेदज्ञान और आकाश से भी बड़ा साहस —इनका अनुपम आगार था । जब उसके दसों मुख एक ही समय दसों दिशाओं की ओर फिरते और आँखें उन दिशाओं पर पड़तीं, तब आठों दिग्गजों के साथ आठों दिक्पाल और आकाश का ध्रुव और पाताल का अनन्तनाग —सबको बड़ा भय ग्रहण कर लेता । १०८६

एक	नायहन्	रेवियै	यैदिरन्ददन्	पित्तु
नाहर्	वाळिड	मुदलैन	नान्मुहन्	वैहुम्
माह	माल्विचुम्	वीरैत्त	नडुवुळ	वरैप्पिल्
तोहै	मादरुहळ्	मैन्दरिर्	रौत्तिर्	चुर्त्त 1087

एक नायकन्-एक नायक श्रीराम की; तेवियै-देवी को; अँतिरुन्ततन् पित्तु-देखने के बाद; नाकर् वाळ् इटम्-नागलोक; मुत्तल् अँत्त-से लेकर; नान्मुक्कुम् वैक्कुम्-चतुर्मुख जहाँ वास करते हैं उस; माक् माल् विचुम्पु-बड़े आकाश में स्थित ब्रह्मा के लोक को; ईरु अँत्त-अन्त बनाकर; नटु उळ-मध्य में रहनेवाले; वरैप्पिल्-लोकों की रहनेवाली; तोकै मातरुक्ळ-कलापी-सी रमणियाँ; मैन्तरिल्-तरुणों के समान (कामोत्तेजना में असमर्थ); चुर्त्त तोन्त्तिर्-चारों ओर लगी रहीं । १०८७

अद्वितीय (एक) तथ्यक शीरस की देवी से साधारणकार होने के बाद कोई भी देवी रावण के मन में प्रवेश नहीं कर सकी। इसलिए मणजीक से लेकर आकाश के ब्रह्मा के लोक तक मध्य में रहनेवाले सभी लोकों की कलापी-सी कल्पाएँ उसे जो घेरे रहें, वे युवकों के समान घेरे रहें। (उसके मन में उनके कारण कोई कामोद्देग उठा नहीं।) १०८७

वान	रङ्गमूर्ति	वानव	रिवव	मनिदर
आम	पुण्ड्रि	लोरव	विह्विन्न	ववम्
एते	निमंत्रव	रिविन्न	विन्नरि	विपाकम्
पुन	निमंत्रवे	नरककरदह	गुह्वरी	गुह्वर

1088

वानरकर्म-वानर और; वानवर इवहम्-शिवजी और शिवल, दोनों देवता; मनिनर आम-मानव जो रहें; पुन वीह्वरी-ब्रह्म काय करनेवाले; अन्न-देवता; इकलिकेन्द्र-निर्वा करनेवाले; अवहम्-वे राक्षस; एवं निमंत्रव-और जो रहें; इवहिवर-बिलर-कुल अपि; अहिन्न-इवको छोड़कर; पावम्-आम सभी; वे निमंत्र-मंसिलिन; वेल-आलवासी; अरककर वम कुल-राक्षसों के बली; अहि-के साथ; वुह्वर-घेरे रहने। १०८८

उसकी सेवा में उसके चारों ओर सभी लोग मंसिलिन आलवासी राक्षसों के साथ खड़े रहें। उनमें केवल वानर, शिव और विष्णु—वे देव, राक्षसों द्वारा वृंछ मानव कहेकर निन्दित मनुष्य और कुछ अपि—ये ही नहीं थे। (बाकी सभी थे।) १०८८

नरमूर्ति	कण्ठादेव	वृंछ	नरुनि	पण्डित
निरमूर्ति	विन्नरि	पण्डित	गुह्वरि	विश्वप
अरमूर्ति	मन्त्र	रमिह्वर	गानन	पडल
वरमूर्ति	निमंत्रि	विनिह्व	विनिह्व	वृंछ

1089

नरमृ कण् अकनृ-निरुपों में; उह उह नर-आननिहिन रवर ऋषी गह्वर; निरुपण्डित-लक्षणयुद्ध वृंछा; निरमृ विन्नरि पण्डित-मरे रहे, विन्नरि नाम के बाले; कुरहम्-और, कुरह नाम के बालवाल; निरुह इवप-वज उठने; अरमृ मन्त्र-अरारु; अहिन्न उह्वल-अधुन सरसाली; अन्न-वैश; पाडल-जो गाली है उन गानों के; वरमृ वल-असीम; इव इव-मधुर वलिन; वलिन निह्व वलिन निह्व-कण-कण में; वृंछ-क-लानी। १०८९

रावण अपने कानों से संगीत सुन रहा था। बीणा आदि नितियों का स्वरमय, खूबसूरती और 'कुरह' (नामक) बालवाल आदि के बाल-मेल में अस्तराएँ अमृतमान गा रही थीं। उसकी हविमयिता अपार थी। रावण के हरे कान में वहे संगीत भर रहा था। १०९०

कूडु	पाणियि	निशैयौडु	मुळवीडुङ्	गूडत्
तोडु	शीरडि	विळिमनङ्	गैयौडु	तौडरुम्
आड	नोक्कुडि	तरुन्दव	मुत्तिवर्क्कु	ममैन्द
वीडु	मीट्कुरु	मेनहै	मेतहै	विळङ्ग 1090

पाणियि कूडु-ताल से मेल खानेवाले; इचै औटुम्-संगीत के साथ; मुळवु औटुम्-और मर्दल के साथ; कूट-मेल लगाते हुए; तोडु चीरु अटि-कमलदल-से चरणों का रखना; विळि मत्तम् कैयौडु तौडरुम्-दृष्टि, मन और हाथों की मुद्राएँ जिससे मेल रखती हैं, उस; आटल् नोक्कु उरित्-नाच को देखें तो; अरुम् तव मुत्तिवर्क्कुम्-कठोर तपस्वी मुनियों को भी; अमैन्त-उनके योग्य; वीटु-मोक्ष से; मीट्कुडुम्-लोटा दे, ऐसा नाचनेवाली; मेल नकै-हास-वदना; मेतकै-मेनका; विळङ्क-शोभा के साथ रहती । १०६०

हासवदना मेनका नाच रही थी । करताल के मेल में गाना, मर्दल का स्वर आदि के साथ अपने कमलदल-सम सुन्दर चरणों को ठीक तरह से रखकर नाच रही थी । उसकी दृष्टि, हस्तमुद्राएँ और पदचाप —इनमें अतिशय मनमोहक मेल था । वह नृत्य मुनि भी देख ले तो कठोर तपस्या से प्राप्त मोक्ष-गमन से भी उसे लौटा लेता । ऐसा नाचती हुई मेनका उसके बगल में विद्यमान थी । १०९०

ऊडि	तारमुहत्	तुन्नर	वौरुमुह	मुण्णक्
कूडि	तारमुहक्	कळिनरै	यौरुमुहङ्	गुडिप्पप्
पाडि	तारमुहत्	तारमु	दौरुमुहम्	वरुह
आडि	तारमुहत्	तारमु	दौरुमुह	मरुन्द 1091

ऊटितार्-जो रुठी रहें; मुकत्तु उरु-उनके मुखों पर दिखनेवाले भावों के; नरुवु-मधुर शहव को; और मुकम् उण्ण-एक मुख पान करता; कूटितार् मुकम्-उससे जो मिली थीं, उनके मुख पर के; कळि नरै-मोद-मधु; और मुकम् कुटिप्प- (और) एक मुख स्वादन करता; पाटितार् मुकत्तु-गानेवालियों के मुखों का; आर् अमुतु-मधुर अमृत-रस; और मुकम् परुक्-एक मुख पीता रहता; आटितार् मुकत्तु-नाचनेवालियों के भावों का; आर् अमुतु-मधुर अमृत; और मुकम् अरुन्त-एक मुख पीता रहता । १०६१

उसके दस मुख थे । हर एक एक काम कर रहा था । एक मुख रुठी हुई स्त्रियों के मुखों का भावमधु पी रहा था । दूसरा उन स्त्रियों के मुदित मुखों के आनन्द का मधु-रस लूट रहा था, जो उससे मिल गयी थीं । तीसरा गानेवालियों के मुखभावों का मधु पी रहा था । चौथा नाचनेवालों के आनन्द रूपी अमृत का स्वादन कर रहा था । १०९१

तेव	रोडिरुन्	दरशिय	लौरुमुहङ्	जैलुत्त
मूव	रोडुमा	मन्दिर	मौरुमुह	मुयलप्

पाव दारिद्र्यं पावह पावह पुरवति पुरवति वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 1092 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं

आदि मुक्त-एक मुख; वेदोद्दिष्ट-देवों के साथ मिलकर; अरि दूषण-
 राजानव; वृद्धदेव-वज्राना; मूर्धोद्दिष्ट- (पुरोहित, मन्त्री, सेनापति) वीर्य के साथ;
 मा मन्त्रिरस-अथ मन्त्रिणा; आदि मुक्त-एक मुख लगा रहता; पावकति
 तर्क-पापकर्मा राग के; पावकर्म-मात्रा को; आदि मुक्त-एक मुख बजाना
 रहता; पूर्व वालकी-देवी जानकी के; उर वृद्धि-अन्तरिक्ष में दिवनेवाले मित्रा रूप
 में; आदि मुक्त-प्राप्त-एक मुख लगा रहता। १०६२

पावर्वा मुख देवी के साथ राजनय की बात कह रहे थे। ठो
 पुरोहित, मन्त्री और सेनापति वीर्य के साथ मन्त्रणा में लगा था।
 सातवाँ उस पापी के पाप कर्मों की कल्पना में लीन था। आठवाँ मुख
 देवी जानकी का मिथ्या रूप, जो अन्तरिक्ष में (उसकी कल्पना के कारण)
 दिखाई दे रहा था, उसे देखने में व्यस्त था। १०६३

कान्दवा मन्त्रिरस मन्त्रिरस वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 1093 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं

कान्दव-कादव नाम के फल जैसे; मूल विरल-कौमल उगलियाँ बाली;
 वनिक-जानकी के; कर्तु अर्थ-कन्द-प्राप्त-एक मुख लगा रहता; नील पृष्ठ-
 त्रिकर नीर पर बहता; अङ्क-ऐसा; अङ्क-ऐसा; आदि मुक्त-निम्न-एक
 मुख सोवता; वानु अन्तरिक्ष-मन्द-वसित; कौटुक-रत्न बाली; तर्क वृद्ध-
 उसकी धरे रहते; नम सकल-पुद्गे रमणियाँ हारा; एतन्म आदि-पुद्गे-पुद्गे
 में; अलिखित-अपनी सुन्दरता की; आदि मुक्त-एक मुख देखता रहता। १०६४
 नवाँ मुख सोच रहा था कि 'कादव' पुरुष के समान कौमल उगलियाँ
 बाली जानकी के प्राप्ति-संगर की कैसे तरा जाय ? दशवाँ मुख आठवें
 में अपना सौन्दर्य देख रहा था, जिसे चन्दनचर्चित रत्नों वाली उसकी
 पावर्वालिनी उठाकर उसके मुख के सामने दिखा रही थी। १०६५

पावर्वा-आठवें वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 1094 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं

पावर्वा-आठवें वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं
 1094 वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं वीर्यं

मउकि वैतुम्पुवार्-दुःख-तप्त रहनेवाली; अकम् वैन्तु-चित्त झुलसकर; अळिवार्-
मिटनेवाली; नकिल्-स्तनों पर; विळि नीर्-और आँखों के आँसू; ततुम्पुवार्-
छलकानेवाली स्त्रियों के; विळि तारै-नेत्रों की पंक्तियाँ रूपी; वेल्-भाले; तोळ्
तौळ्-सारे कन्धों पर; ताक्क-प्रहार करते । १०६४

उसका मन झाड़-मध्य रहे शहद को घुसकर पीने के लिए लालायित
रहनेवाले भ्रमर के समान जानकी की ओर जा रहा था । उससे अनेक
स्त्रियाँ दुःखतप्त हुई । वे व्याकुलमना होकर झुलसीं और क्षीण हुई ।
अपने स्तनों पर अपनी आँखों से आँसू बहाने लगीं । ऐसी रावण की
प्यारियों की आँखों की पंक्तियों के भाले उसके कन्धों में जाकर चुभ रहे
थे । १०९४

मार	ळाविय	महरन्द	नडवुण्डु	महळिर्
वीड	ळाविय	मुहिण्मुलै	मैळुहिय	शान्दिन्
शेड	ळाविय	शिरुनरुण्	जीदळत्	तैन्डल्
ऊड	ळाविय	कडुवैन	वुडलिडै	नुळैय 1095

मार अळाविय-(विरहियों के साथ) वैनस्य रखनेवाला; मकरन्त नडवु उण्डु-
मकरन्द-भरा शहद पान कर; मकळिर् वीड अळाविय-स्त्रियों के गर्वोन्नत; मुकिळ्
मुलै-कुडमल स्तनों पर; मैळुकिय चान्तिन्-लिप्त चन्दन के; चेड अळाविय-लेप पर
लगा आनेवाला; चिड-मन्द; नडुम्-सुगन्धित; चीतळ-शीतल; तैन्डल्-मलयपवन;
ऊड अळाविय-दुःखमिश्रित; कडु अँत-विष के समान; उटल् इटै-रावण के शरीर
के अन्दर; नुळैय-प्रवेश करता । १०६५

विरही जनों का शत्रु है मलयपवन । वह मकरन्द और शहद पीकर
(समेट लेकर) स्त्रियों के गर्वोन्नत, कलियों-से स्तनों पर लिप्त चन्दनलेप
से लगकर बहा । वह मन्द सुगन्धित शीतल दक्षिणी पवन दुःखदायी
विष के समान उसके शरीर में घुसकर उसे सता रहा था । १०९५

तिङ्गळ्	वाणुदन्	मडन्दैयर्	शेयरि	किडन्द
अङ्ग	यत्तडन्	दामरैक्	कलरियो	ताहि
वैङ्गण्	वात्तवर्	दात्तव	रैन्ड्रिवर्	विरियाप्
पौङ्गु	कैहळान्	दामरैक्	किन्दुवे	पोन्डुम् 1096

तिङ्गळ् वाळ् नुतल्-(आठवें दिन के) चन्द्रमा-जैसे उज्ज्वल ललाट वालियों के;
चेय् अरि किटन्त-लाल डोरों से युक्त; अम् कय-सुन्दर सरोवर के; तटम् तामरैक्कु-
बड़े-बड़े कमलपुष्पों के लिए; अलरियोन् आकि-सूर्य बनकर; वैम् कण्-शत्रु;
वात्तवर् वात्तवर् अँतु-देव और दानव-कथित; इवर्-इन लोगों के; विरिया-अविकसित
(बन्द); पौङ्कु-रहनेवाले; कैकळ् आम् तामरै-हाथ रूपी कमलों के लिए; इन्तुवे
पोन्डुम्-चन्द्र के ही समान रहा । १०६६

रात्रि आठवें दिन के चन्द्रमा-तुल्य जलाट वाली दिव्या के, जल ज्यों से युक्त व सुन्दर सरोवर के कमल-तुल्य मुखों के लिए युग्म था (उनके मुख मोदविभक्ति थे) और शब्द देव-दाव्यों के वन्द (अंजलि-वन्द) दिव्यों के कमलों के लिए दण्ड-सम था । (रात्रि के समाप्त उनके दोष दशमभा अंजलि में जुड़े थे ।) १०१६

इकनन्दं वृण्विभक्तं किञ्चनं सारिधं प्रहिरनन्दनं
कननंदि यानन्दनं नोक्किय ककुलितं कननंदि
निरनन्दं नोळि वीक्किय पानानन्दनं निरनंदि
उकनन्दं नञ्जुपोलं वननंविडं पानुवनेनं इकननंदि 1097

इकनन-इस मालि विरजमान; अणुविभक्त-आठों दिव्याओं के राजा की; कनन-कमल; वृण्विभक्त-समान (नारदीय) जलकर देखा; कनन-कनन; निर-सबल; नोक्किय-देखते हुए; ककुलित-गहक के समान; कनन-कनन; पानानन्दन-पान का लोडकर; वनन-नञ्जु पानुवने-सकटकारी विष-तुल्य; उकनन्द-रात्रि) पर; पानुवने-अपढ़गा; अंनन्द-ऐसा; उकनन-इसा । १०९७

मारि न आठों दिव्याओं के शासक, रात्रि की समक्ष देखा । काल और मोटे सपु की देखकर गहक-जैसा वह कोप से भर गया । उसने आप ही आप कहा कि "अपने सुपर कननों से पान-वन्दन को लोड दूंगा । तु:खदापी विष-सदृश रहनेवाले रात्रि पर अण्ड पड़गा ।" वह क्रुद्ध हुआ । १०९७

उकनंदि विनयं विपणनं कुरुरसं उलिनन्दनं
प्रहिरं प्रीमणि पानानन्दं निरकेश्वरं कुरुरं
निरनं जंवनं निरनंदि पानानन्दं निरनंदि
अनन्द-गोळं कोमलं मोदं नन्दनं इकननंदि 1098

उकनंदि-कुरुर पानु-सोले समय; उपर उकन-पान पी (हर) बेना; कुरुरसं अंनन्द-दोष है, समझकर; अलिनन्दन-वह विचार त्याग दिया; प्रहिर-शोभायमान; प्रीमं मणि आचरतु-स्वर्ण-रत्नमय आसन पर; निरकेश्वर-प्रहिर-देखा हुआ देखा है; निरकेश्वर-पल-अनेक दीवियों से; अंनं विनोदित-पान-सोचना है; इकनं नन्द-विनय-इसके सिरों की निराकर; अरु कौळ कोमल-प्रहिर (पानिबल) प्रमोदित-गोळ-सो देवी की; मोद-छडाकर; उकनं अकेश्वर-गुरुर बल जाऊगा; अंनन्द-ऐसा; अमनन्द-सकल किया । १०९८

नव रात्रि सी रहो था तब मैंने उसे मारने का विचार त्याग दिया था, क्योंकि निद्रारत आदमी को मारना दोषपूर्ण है । अब देखता हूँ कि वह स्वर्णरत्नमय आसन पर आसीन है । अब विविध दीवियों से भरा

सोचना है ? अभी इसके सिरों को गिरा दूँगा और पातिव्रत्यधर्मपालिनी पुष्पशाखा-तुल्य देवी को छुड़ाकर तुरन्त ले जाऊँगा । हनुमान ने यह संकल्प किया । १०९८

तेवर्	दानवर्	मुदलितर्	शेवहन्	इवि
कावल्	कण्डिव	णिरुन्दवर्	कट्पुलन्	कटुवप्
पाव	कारितन्	मुडित्तलै	पडित्तिलै	तेन्डाल्
एव	दामिति	मेर्चैयु	माळ्वित्तै	येन्डाल् 1099

चेवकन् तेवि—श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को; कावल् कण्टु—बन्धन में देखकर भी; इवण् इरुन्तवर्—यहाँ रहनेवाले; तेवर् तातवर् मुतलितर्—देव, दानव आदि; कण्पुलन् कटुव—अक्षेन्द्रियगोचर रीति से; पावकारि तन्—पापकर्मा के; मुडि तलै—मुकुटधारी सिरों को; पडित्तु इलैन् अन्डाल्—न नोच लूँ तो; इति मेल्—आगे; चैयुम् आळ् वित्तै—कर्तव्य पौरुषकर्म; एवतु आम्—कौन सा होगा; अन्डाल्—कहा । १०९९

ये रहे देव और दानव, जो श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को बन्धन में देखकर भी यहाँ चुप रहते हैं । इनकी ही आँखों के सामने पापकर्मा इसके सिर नहीं नोच लूँगा, तो अन्य कौन सेवा-कार्य (पौरुषमय कार्य) है जो किया जाय ? । १०९९

माडि	रुन्दमर्	शिवन्बुणर्	मङ्गैयर्	मरुहि
ऊडि	रिन्दिड	मुडित्तलै	तिशैदीरु	मुरुट्टि
आडल्	कण्डुनिन्	आर्क्किन्ड	दडुक्कौडि	दम्मा
तेडि	वन्ददोर्	कुरङ्गैनुम्	बैरुम्बोरुळ्	तैरिय 1100

तेडि वन्ततु—खोजता आया; ओर् कुरङ्कु—एक वानर; माटु इरुन्त—पास में रही; इवन् पुणर् मङ्कैयर्—इसकी समागमयोग्य स्त्रियों को; मरुकि—भ्रमित-दुःखित होकर; ऊटु इरिन्तिट—अन्दर तितर-बितर भागने को मजबूर करते हुए; मुडि तलै—मुकुट-सिर को; तिचै तौळुम् उरुट्टि—दसों दिशाओं में लुढ़काकर; आटल् कण्टु—उनका तड़पना देखकर; निन्डु आर्क्किन्डतु—खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है; अतु कौटितु—वह हिल है; अन्नुम्—ऐसा; पैरुम् पोरुळ्—बड़ा यश; तैरिय—प्रकट हो ऐसा । ११००

एक वानर जानकी को खोजता आया । उसने इसके पास जो रहीं, इसके समागमयोग्य उन स्त्रियों को भ्रमित-दुःखित हो अन्दर तितर-बितर भागने देते हुए इसके मुकुटसिरों को दसों दिशाओं में लुढ़का दिया; उन सिरों का छटपटाना देखता है और खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है । यह बड़ा ही क्रूर बन्दर है । —ऐसी बड़ी (कीर्ति की) बात प्रकट करते हुए— । ११००

ਸੀਸਤ	ਬਾਝੀਪੁਤ੍ਰ	ਤਰਕਕਥਕ	ਕਾਗਾਝ	ਬੇਰੇ
ਕਾਗਾਝਲੇ	ਬੇਧਾਤ੍ਰਿਤਿਪੁਰ	ਬੰਧਿਤ੍ਰਿਮਨ	ਵੰਦਿਤ੍ਰਿਮ	ਕਾਝੀ
ਸੀਸਤ	ਪਾਝੀਤ੍ਰਿਤ	ਬਧਾਪਾਝ	ਬੁਧਿਤ੍ਰਿਮ	ਵੰਦਿਤ੍ਰਿਮ
ਸੀਸਤ	ਪਾਝੀਤ੍ਰਿਮ	ਭੁਝੀਤ੍ਰਿਮ	ਸਤ੍ਰਿਮਨ	ਕਾਝੀ

1101

नीणां पाठे-नरदी नलपार-पुण्य; अमिहं नरकरकन-नदी (राज-राजस
 का; कणकजिह्व-अर्वा के; नरे कणादेव अर्वा-सम वेगवा वाहकर; इ उर्वा-
 पद ग्राम; वृमद्व-पारण करता हुआ; अर्वा-उसके सामने; वल कर्जि-ऊँ
 ककर; नीणां पाठे-नर दी जाने पर भी; वर पाँच उपादे-निवाचन हो शीला;
 वृहं वन-सं न वीनं; अर्वा-नो भी; माणां पवित्र-मरने पर भी; पुण्य
 अर्वा-पुण्य के विना; मरुम अर्वा उपादे-अरे वसता (अपव) शीला पुण्य। ११०१

लक्ष्मी ललवार के समान दवाँवा वाले राक्षस (राक्षस) की समस्त देवता चाहते । इसीलिए यह प्राण धारण करता रहते । अब इसके मुख पर कुछ कहकर लौट जाऊँगी श्री अम्बादेवी होगी । पर लड़की न जीवने पर श्री, माँदे जाने पर श्री भगवती मिलेगी । उसे छिड़कर दूसरी (अपराध) मिलेगी क्या ? (तर्क) । ११०१

[illegible]

अन्त-प्रेम शीतकरः, नान्द-क-पा क मयः, दृढकृत्स्न पाम-क-सं दृ
पाम कोः दृढ एक-मान कर रं केः कुञ्जितं मेव-निरि परः, अहमे-उज्ज्वलं क
निर उठः, काष्ठि पृष्ठ-प्रथम कसरीः, अत्र-असः, कुतिपत्वं श्रेष्ठ-एक लला मे
वाकरः कन्दवं अष्टप-पट्टव वाङ्मा, पेसाः विनोदं वृथा-शीतकरः, निरुद-
ककरः, काटिपम अन्त-मद करणीय गर्तः, अत्र-प्रेसाः, नीतिपद-पाम को
रीति मेः विनोद-विवादा (दृष्टमान मे) ११०२

ऐसा सावकर उसने विचार किया कि रक्तवर्षण की सीढ़िकर पर्वत पर उछलने की उठनेवाले पुरुष कैसी के समान उलान माले और रावण के पास जाऊँ। पर यह विचार रोककर वह नीति की बात सोचने लगा कि यह करने योग्य कार्य नहीं। १९०२

कलिलान्	दरतान्	मलान्	कल्लिखुमं
शानिलान्	दरतान्	मलान्	खलिलान्
अलिलान्	दिरण्डान्	दिरतान्	वाड्डान्
वलिलान्	दिरामान्	दिरुमं	वल्लवरा 1103
कलिलं आमं-मार सक्कं पुणं! तरतान् अल्लव-वगवट का मां भणं!			

कौशुमुम्-इसका पराक्रम भी; चोल्लल् आम् तरतुतुम्-वर्ण्य रीति का; अल्लन्-
नहीं; तौल्लै नाळ्-बहुत प्राचीन काल से; अल् अलाम्-अन्धकार सब; तिरण्टु
अन्त-इकट्ठा हुआ जैसे; निरुतुतन्-रंग वाले के; आरुलै-बल को; इरामनाल् वल्लल्
आम्-श्रीराम ही परास्त कर सकेंगे; पिउरुम् वल्लवरो-दूसरे जीत सकेंगे क्या । ११०३

हनुमान ने सोचा कि यह रावण ऐसी बनावट का नहीं दिखता कि
आसानी से मारा जाय ! उसकी विजयशीलता भी वर्णनीय नहीं लगती ।
बहुत प्राचीन काल से लेकर अब तक का सारा अन्धकार इकट्ठा होकर
आया हो —ऐसे रंग का है यह ! इसके पराक्रम को एक श्रीराम ही परास्त
कर सकते हैं । और कोई जीत सकेगा क्या ? । ११०३

अन्तैयुम्	वैलङ्करि	दिवनुक्	कीण्डिवन्
तन्तैयुम्	वैलङ्करि	दैतकुन्	दाक्किनाल्
अन्तवे	कालङ्गळ्	कळियु	मादलाल्
तुन्नरुज्	जैरुत्तौळि	रौडङ्ग	रुयवो 1104

अन्तैयुम् वैलङ्कु-मुझे भी जीतना; इवतुकु अरितु-इसके लिए दुस्साध्य है;
ईण्टु-यहाँ; इवन् तन्तैयुम्-इसको भी; अन्तकुम्-मेरा; वैलङ्कु अरितु-जीतना
असाध्य होगा; ताक्किनाल्-इससे लड़ूँ तो; अन्तवे-वैसे ही; कालङ्गळ् कळियुम्-
काल बीत जायगा; आतलाल्-इसलिए; तुन् अरुम्-अगम; चैरु तौळिल्-युद्ध-
कार्य; तौटङ्कल्-प्रारम्भ करना; तूयतो-सही होगा क्या । ११०४

उसका मुझे जीतना भी असाध्य है । वैसे ही यहाँ उसे जीतना भी
मेरे लिए दुस्साध्य है ! अगर युद्ध में लग जाऊँ तो परस्पर अजेय होने से
बहुत दिन बीत जायँगे । इसलिए अगम युद्ध का प्रारम्भ करना निर्दोष
काम होगा क्या (कैसे) ? । ११०४

एळुय	रुलहङ्गळ्	यावु	मिन्बुरप्
पाळिवन्	बुयङ्गळो	डरक्कन्	पः(ह)उलैप्
पूळियिर्	पुरट्टलैन्	बूणिप्	पार्मेन्
ऊळियान्	विळम्बिय	वुरैयु	मौन्नूण्डाल् 1105

एळु-सात; उयर् उलकङ्कळ्-ऊपर के लोक; यावुम् इत्तु उर-सब सुखी
रहें ऐसा; अरक्कन्-राक्षस (रावण) के; पाळि-स्थूल; वन् पुयङ्कळ् ओटु-
सबल हाथों के साथ; पल् तलै-अनेक (दस) सिरों को; पूमियिल् पुरट्टल्-भूमि
पर लुढ़काना; अन् पूणिप्पु आम्-मेरा संकल्प है; अन्त-ऐसा; ऊळियान्-युगपति
श्रीराम का; विळम्बिय-कहा; उरैयुम् औन्नू-वचन भी एक; उण्टु-है । ११०५

इसके अलावा श्रीराम की सौगन्ध भी एक है । उन्होंने कहा है
कि भूमि के साथ ऊपर के सातों लोकों को सुखी बनाते हुए इस राक्षस

કાર્તિક ૧૫ તારીખ ૧૯૭૭

[illegible]

पञ्चकृ-वर्षतः । यमं चरुं दृढं-यमकरं पुष्टं यः । पाण्डुरं पाण्डुकान्तं-समम्य
 कञ्चने । दृष्टु-यज्ञे । अथ लिङ्गकन्द-एकं ह्ये । महीतः । यत्तु दृष्टयत्त-सं जीविष
 रङ्गी । अन्त-प्रेमा । अथ कर्मा-सु-वरं भूतल के । नायकत्वं तत्तु आत्मा-नायक आराम
 को सीमास्य जाकरः । कश्चि-वि-होते । कश्चि-य-व-न देवी का सी । मत्तं
 चित्तर-अपुं सै नाना प्राणा को । पुत्रवैतन्-यमा देवा । याम्पे आत्मा-सम्य ह्ये
 वायमा । ११०६

और श्री समग्रशक्ति समाजान समर में ही समग्र व्यय करना रहूँ, जो अपने जगत्पति श्रीराम की सीमास्थ छाकर जिन देवी ने कहा कि मैं एक ही महीने जीवित रहूँगी, उनका मरना समय हो जाएगा । १९०३

आदवा	ममरुनेवाळि	नळदेर	उमरुम
वेवना	रुमवे	वुपवे	उमनिना
वेवना	मदेरुनि	वुपवे	वेरुनिना
पुदिना	उरुकर	देकर	पुदिना 1107

अनाल-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः
(अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः)
पुन-इतिहासः पुन-इतिहासः पुन-इतिहासः पुन-इतिहासः पुन-इतिहासः
का-इतिहासः का-इतिहासः का-इतिहासः का-इतिहासः का-इतिहासः
बा-इतिहासः बा-इतिहासः बा-इतिहासः बा-इतिहासः बा-इतिहासः
अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः अना-इतिहासः

इस कारणात् से समरकण्ड युद्धर काम नहीं है ; अरु ईश का पात्र
अदा करता ही निर्विष है । यह सोचकर वेदनाय श्रीराम का अवलिप्त
सद्व्यक्त हृदिमान पराक्रमी शत्रु, ललवारधारी राजा के पास गया । १०१

[illegible]

नीरदिय बाळें-नीच की सुईं नलवार के समान; तेंच काल-सुसनी आंखीं
बालीं; नेविपर-अपनी दिव्यां के; ईंदरिय कुळें-ईंद-एकजिन समूह-समूह; इंदन

एतद्भु-जो रहा उस राजा को; कटलिन्-क्षीरसागर का; आर् अमुतु ऊट्टिय-अपूर्व
अमृत जिन्होंने खाया था, उन; उम्परै-देवों को; उलैय-दुःखी करके; ओट्टितान्-
जिसने भगाया उस (इन्द्रजित्) ने; अनुमत्तै-हनुमान को; काट्टितन्-दिखाया । ११०८

तब क्षीरसागरामृतपायी देवों को दुःखी कर खदेड़नेवाले इन्द्रजित् ने
हनुमान को उस रावण को दिखाया जो तेज की हुई तलवार के समान
चुभकर वेदना देनेवाली आँखों से युक्त अपनी पत्नियों के जमघट के मध्य
रहा । ११०८

पुवत्तमैत्	तत्तैयवै	यत्तैत्तुम्	बोरहडन्
दवत्तैयुर्	ररियुर्	वान	वाण्डहै
शिवत्तैनच्	चैङ्गणा	नैत्तच्चैय्	शैवहन्
इवत्तैत्तक्	कूरिनिन्	रिरुहै	कूपपित्तान् 1109

पुवत्तम् अतैत्तै-भुवन जितने हैं; अव अतैत्तुम्-उन सबको; पोर कटन्तवत्तै-
युद्ध में जिसने जीता था, उसके; उर्-पास जाकर; आण्टक्-पुरुषश्रेष्ठ; अरि
उरवात्त इवन्-वानर-रूप में यह; चिवन् अतै-शिव के समान; चैम् कणान् अतै-
अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के समान; चैय्-युद्ध किया; चैवकन्-श्रेष्ठ वीर है; अतै
कूरि-यह कहकर; निन्-उसके सामने स्थित होकर; इरु के कूपपित्तान्-दोनों हाथ
जोड़े (इन्द्रजित् ने) । ११०९

जितने भुवन हैं उन सबके युद्धविजेता, रावण के पास जाकर इन्द्रजित्
ने कहा कि पुरुषश्रेष्ठ ! वानरशरीरधारी यह श्रेष्ठ वीर है, जिसने शिव
के समान और अरुणाक्ष (पुण्डरीकाक्ष) विष्णु के समान युद्ध किया । ११०९

नोक्किय	कण्गळा	नौरिर्क्	नूर्पोरि
तूक्किय	वनुमन्मैय्	मयिर्शु	रूक्कोळत्
ताक्किय	वुयिर्प्पोडु	तवळ्न्व	वैम्बुहै
वीक्किय	ववनुडल्	विशित्त	पाम्बित्ते 1110

नोक्किय कण्गळाल्-उसको देखनेवाली (रावण की) आँखों से; नौरिल्-
छूटकर जलवी गये; कत्तल् पोरि-अग्नि के कण; तूक्किय-खड़े रहे; अनुमन्मैय्
मयिर्-हनुमान के शरीर के वालों को; चूळ् कौळ-झुलसाते हुए; ताक्किय-वेग से
लगे; उयिर्प्पु ओट्टुम्-श्वास के साथ; तवळ्न्व-जो मिलकर गया उस; वैम्
पुक्कै-गरम धुएँ ने; अवन् उटल् विचित्त-शरीर को बाँधे रहे; पाम्पित्-सर्प (अस्त्र)
के समान; वीक्किय-कसकर बाँध लिया । १११०

रावण ने हनुमान को सक्रोध घूरा । तब उसकी आँखों से जो
अग्निकण निकलकर तेज चले, वे हनुमान के शरीर के उठे हुए वालों को
झुलसाते हुए उस पर गिरे । उसकी साँसों के साथ जो धुआँ बढ़ चला,
उसने उस सर्पपाश के समान उसके शरीर को कस लिया जो उसके शरीर
को बाँधे हुए था । १११०

यम के-से स्वभाव के यम रीतग ने ऐसी ऊँछ बनकर डेरमान से वसकी बातें जानने के विचार से गुंठा कि गुंठोरा डहर आना क्याकर हुआ ? यम हो कौन ? उसका कोठी त्वर ऐसा या कि पास रहे देव आदि वसके भाई दहेल उठे । ११११ ।

नमो	कुलिश्या	नृद्धेन	शिवविप्रा
नामदे	किञ्चनो	तद्धरे	पः(ई)रुप
पुमिनाइ	गोखनो	प्राकृ	मुद्धवाने
नाम	मुखमई	गदने	नगोनापे

नेमिपु-वक्रपारी (विष्णु) हे! कुंतिविपु-कुंतिशय्याला; नृपेयं कर्णविष्णु-
 दोषं विज्ञास्वदेवाला शिव; तामरं किञ्चन-कमलासन अदो! लक्ष्मण-निवृत्तः
 पद्मं तन-अंकि विरं का; पुंमं वाङ्म-प्रादरादो! अविबनो-एक (आविब) हो;
 पर्व-लङ्कट; मुद्वेदातं-नाश करतो; नामयुग्मं उदययुग्मं-नाम और रूप; कर्णवि-
 श्रिपकर; नर्णालाप-इतर आहे । १११२

२।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।३२।३३।३४।३५।३६।३७।३८।३९।४०।४१।४२।४३।४४।४५।४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४।७५।७६।७७।७८।७९।८०।८१।८२।८३।८४।८५।८६।८७।८८।८९।९०।९१।९२।९३।९४।९५।९६।९७।९८।९९।१००।

विभूतशिवं	पुष्टिद्वयं	नीलकं	कावली
कुंभशिवं	वसिष्ठं	वृद्धिभवं	कूर्चशिवं
नैर्ऋतशिवं	किञ्चनं	विश्वनिभं	उद्विष्यं
अर्वाङ्गशिवं	किञ्चनं	रिवरुद्धं	यावली

1113

निर्गुह- (समर्थ) स्थित होकर; अर्थात्-बोधन में कसकर; उचित कर-
माण करनेवाला; नील, काली-काला कालदेव यम; कुतूह अर्थात्- (कौब) गिरि
को हिलाकर; अधिष्-भाला; उर-अवर जाकर नीचे दे, ऐसा; अतिवत-लसने
का; कर्तृत्व-वहे विजयी कुमारदेव हो; तैवे विव-वसिणी विद्या का;

किळवतो-पालक यम हो; तिचै निन्हु-दिशाओं में रहकर; आट्चियर् अँन्हु-पालन करनेवाले (दिग्पाल) ऐसा; इचैक्कुम्-कहलानेवाले; इवरुळ्-इनमें; नी यावत्-तुम कौन हो । १११३

रावण ने आगे पूछा कि क्या तुम काले रंग वाले कालदेव हो, जो जीवों के समक्ष खड़े होकर उनको पाशबद्ध करके उनके प्राण हर ले जाता है ? या वह विजयी (कार्तिकेय) कुमार हो, जिसने अपनी शक्ति चलाकर क्राँच पर्वत को हिलाते हुए दो भागों में चीर दिया ? या दक्षिणी दिशा के स्वामी यमराज हो ? (यम और कालदेव अलग माने जाते हैं, और कालदेव यम का आज्ञाकारी दूत है जो जीवों के प्राण हर ले जाता है ।) दिक्पाल में तुम कौन हो ? । १११३

अन्दणर्	वेळ्वियि	त्ताक्कि	याणैयित्
वन्दुर	विडुत्तदोर्	वयवैम्	वूदमो
मुन्दोरु	मलरुळो	निलङ्गै	मुर्कुरुच्
चिन्देन्त	तिरुत्तिय	तैरुहट्	टैय्वमो 1114

अन्तणर्-मुनि द्वारा; वेळ्वियित्-यज्ञ में; आक्कि-उत्पन्न करके; आणैयित्-आज्ञा के अनुसार; वन्दु उर्-मेरे पास आने के लिए; विडुत्ततु-प्रेषित; ओर् वय-एक बलवान; वैम्-भयंकर; पूतमो-भूत हो क्या; मुन्दु ओरु-सर्वप्रथम; मलर् उळोत्-कमलवासी (ब्रह्मा) द्वारा; इलङ्कै मुर्कुरु उर्-लंका का अन्त करते; चिन्दु अँन्त-तहस-नहस करो; अँन्त-कहकर; तिरुत्तिय-रचित; तैरु कण्-वाहक आँखों वाला; तैय्वमो-देवता हो । १११४

या तुम एक बहुत ही वलिष्ठ और हिंस्र भूत हो, जिसे मुनियों ने यज्ञ से उद्भूत करके अपनी आज्ञा द्वारा मेरे पास आने के लिए प्रेषित किया ? या कोई द्वेष के साथ जलानेवाली आँखों का देवता हो, जिसको सर्वप्रथम सृष्ट ब्रह्मा ने, लंका नगर को पूर्णरूप से चूर कर दो, कहकर रचकर भेजा है ? । १११४

यारैनी	यैन्नैयिड्	गैय्दु	कारियम्
आरुनै	विडुत्तव	ररिय	वाणैयाल्
शोर्विले	शौल्लुदि	यैन्नच्	चौल्लित्तान्
वेरौडु	ममरर्तम्	बुहळ्वि	ळुङ्गित्तान् 1115

अमरर् तम् पुक्कळ्-देवों के यश को; वेर् ओटु-जड़ से; विळुङ्कित्तान्-जिसने खा लिया, उस (रावण) ने; नी यारै-तुम कौन हो; इङ्कु अँय्तु-इधर आने का; कारियम् अँन्तै-कार्य क्या है; आर् उन्नै विडुत्तवर्-कौन तुमको भेजनेवाला है; अरिय-मुझे बताते हुए; आणैयाल्-मेरी आज्ञा से; चोर्वु इलै-विना छिपाये; चौल्लुत्ति-कहो; अँन्त-ऐसा; चौल्लित्तान्-कहा । १११५

देवी के गुण की विसते जइ से जाया (मिदया) या, उस रावण ने और भी पूछा कि तुम कौन हो ? इधर आने का हेतु-कर्म कौन सा था ? किसने गुह्ये इधर भेजा ? भरी आजा है । विना विषये सोरी बातें बता दी । रावण ने अपनी बात समाप्त की । १११५

श्रीनलिय	वचवक	मल्लन	श्रीनवप
पुनलिय	बलियिनी	रेव	पुण्डिल्ल
अल्लियइ	गमलस	पव	शुङ्गागोरे
विल्लियद	इदंय	लिलङ्गा	भियव

श्रीनलिय-(वृषभ) कथित; अवचम अल्लन-सभी में (कोई) नहीं है; यान्-भैवे; श्रीन-कथित; अ-उन; पुनलिय-अप; बलियिनी-बलवान् की; पव-वेवकाई; पुण्डिल्ल-नहीं अपनायी है; अल्ल अम-दलों के साथ सुवर; कमलस अवच-कमल ही सम; वृष कर्ण-अवगाध; ओरे-अद्वितीय; विल्लिय-सम-धुवरी का; वन-वन है; यान् इल्लकं भियव-सं लका आय। १११६

हेसमान ने उत्तर दिया कि मैं उन सभी में कोई नहीं हूँ, जिनके नाम तुमने लिये । उन अपवली लोगों की दासता में वे गइए नहीं की है । पुण्डिय-सहित कमलगुण ही सम जिनके अख्याय है, उन अगुम धुवरी का वन बनकर मैं लका में आया । १११६

अवचव	यान	वरि	यहिसे
मवव	मवर	मवर	वेवम
अवचव	रेव	यार	यवपुम
विवचम	वियपु	मुलिक	विङ्खळ

अवचव-वह धुवरी; यान-कौन है; अम-ऐसा; अरि अकिचन-जाना साही नो; मुवचम-मुनि; अमरम-वच; मवर वेवम-विदेव; अवचव-साही नो; पुवचम-अप सभी (निर्व पदाय); विव अम-जिसकी सोच भी नहीं सकती; विपुम-वह काय भी; मुलिक-कर चुकने की; विङ्ख उल्ल-सं (सकप लेकर) रहते हैं । १११७

अगर तुम जानना चाहो कि वे वीर कौन हैं तो सुनो । मुनिगण, देवगण, विदेव और इनके वैसे जिनने लोग हैं, और अन्य जो भी जइ है, वे जिसकी कल्पना भी नहीं करते वैसे कठिन काम को भी करने का निश्चय लेकर रहनेवाले हैं वे । १११७

इदिय	बलि	मना	वियरिय	नवपुम	याणर
कदिय	पवपुम	देवर	कडुननल	वरमुड	गदपुम
नीदिय	वाळ	मपव	विवनिय	पुव	मल्लम
नीदिय	पदलि	पुङ्गा	मुदली	मुलिक	विङ्खळ

ईदृष्टिय बलियुम्-तुम लोगों ने जो संग्रह किया है, वह बल और; मेल् नाळ्-प्राचीन दिनों में; इयद्रिय तवमुम्-(तुम लोगों द्वारा) की हुई तपस्या; याणर् कूट्टिय-नये रूप से एकत्रित; पट्टयुम्-सेना भी; तेवर् कौटुत्त-देवों द्वारा दत्त; नल् वरमुम्-अच्छे वर; कौटुप्पुम्-अन्य साधन; तीदृष्टिय वाल्वुम्-श्रेष्ठ जीवन; अयत्त-बिताने के लिए; तिरुत्तिय पित्रुम्-रचित सभी; नीदृष्टिय पकळि औत्तुडाल्-(मेरे स्वामी द्वारा) बढ़ाए हुए एक अस्त्र से; मुतल् औटु मुटिक्क-नाश करने (का संकल्प लेकर); निन्नुडान्-स्थित हैं। १११८

उनका संकल्प है कि तुम्हारा सम्पादित बल, पूर्वकृत तपस्या का फल, नवीन तौर से तुम्हारे द्वारा संगृहीत आयुध, देवताओं द्वारा दत्त वर, अन्य आपके सारे तन्त्र, तुम्हारा श्रेष्ठ जीवन और उसको वैसे बनानेवाली सारी सामग्रियाँ, इन सबको अपने द्वारा प्रेषित एक ही शर द्वारा समाप्त कर लूँ। १११८

तेवरुम्	बिडुरु	मल्लन्	इशेक्कळि	इल्लन्	इक्किन्
कावल	रल्ल	नीशन्	कयिलैयड्	गिरियु	मल्लन्
मूवरु	मल्लन्	मड्डै	मुत्तिवरु	मल्ल	नैल्लैप्
पूवल	यत्तै	याण्ड	पुरवलन्	पुदल्वन्	पोलाम् 1119

तेवरुम्-देवों में और; पित्रुम् अल्लन्-अन्यों में एक नहीं; तिचै कळिक्क अल्लन्-दिग्गज नहीं; तिक्किन् कावलर् अल्लन्-दिग्पाल नहीं; ईचन्-ईश्वर की; कयिलै अम् किरियुम्-कैलास की सुन्दर गिरि भी; अल्लन्-नहीं; मूवरुम्-त्रिदेव भी; अल्लन्-नहीं; मड्डै-अन्य; मुत्तिवरुम् अल्लन्-मुनिगण नहीं; अल्लै पूवलयत्तै-समस्त भूवलय पर; आण्ड पुरवलन्-जिन्होंने शासन किया, उन राजा के; पुतल्वन् पोल् आम्-पुत्र ही हैं। १११९

वे (तुमसे हारकर जो भागे) उन देवों या अन्यो में एक नहीं। दिग्गज, दिग्पाल, ईश्वर की चाँदी की कैलासगिरि, त्रिदेव और अन्य मुनिगण इनमें कोई नहीं। पर वे समस्त भूमि के पालक एक राजा के ही पुत्र हैं। १११९

पोदमुम्	पौरुन्दु	वेळ्विप्	पुरैयर्	पयत्तुम्	पौय्दीर्
मादवज्	जुमन्दु	तीरा	वरङ्गळु	मड्डुम्	यावुम्
यादव	नितैन्दा	तन्त	पयत्तत	वेदु	वेण्डित्
वेदमु	मड्डुम्	जौल्लु	मैय्यड	मूर्त्ति	विल्लोन् 1120

पोदमुम्-(आत्म-) बोध; पौरुन्दु वेळ्वि-योग्य यज्ञ के; पुरै अर्-निर्दोष; पयत्तुम्-फल और; पौय् तीर्-असत्य-रहित; मा तवम्-बड़े तप से; जुमन्तु-धारणकर; तीरा वरङ्कळुम्-अमिट वर और; मड्डुम् यावुम्-अन्य सभी; यातु अवन् नितैन्तान्-जो उन्होंने चाहा; अन्त पयत्तत-वह देनेवाले बने; एतु वेण्डित्-

हेतु चाहते तो; विजयाने-वे धनुर्धर; वेदसुम्-वेदों द्वारा प्रतिपादित; अरुणम्
 वीजसुम्-और धर्म द्वारा कथित; 'सुम् अरु मूर्तेति-सत्यधर्मसहित है। ११२०
 ज्ञान, शास्त्रयुक्त यज्ञ के अगोचर फल, असंख्यरहित वत्स्य, अक्षय
 वर और अन्य गौरव—ये सब उनके मनमाने फलदायक वने हैं। हेतु
 क्या है ? वे धनुर्वीर वेदशास्त्र-प्रतिपादित सत्यधर्मस्वरूप हैं। ११२०

कारणः शेटि पापि कडिपि मरुपि कण्ठम्
 आरणः गट्ट मट्टा वरिविक्के कडिवाप निरुत्त
 पारणः पिङ्गार कवव पाडिनिर मुदले धुत्त
 वारणः गक्के वन्दे वमरुक्के काक्के वन्देति 1121
 कारणम्-(अवतार का) कारण; कट्टि आपिर्-पूछते तो; कट्ट डल-अनल;
 मरुपिर् कण्ठम्-वेदों में; आरण्य कट्ट मट्टा-उपनिषदों द्वारा भी वन में न जा
 सकनेवाले; अरिविक्के अडिवाप-ज्ञान के भी ज्ञान (आधार-स्वरूप); निरुत्त-
 जा है; पाट अण्डक-युद्ध में पीड़ित करते हुए; इट्टेकर कवव-ग्राह के यज्ञ में पर;
 पारि-सामान्य; मुदले अंगुल-आदिदेव पुकारते पर; वारण्य काक्के-गो-वन्देकरसामान्य;
 वन्देति-जा आये; अमरु-(वे) देवों को; काक्के-रक्षित करने; वन्देति-
 आये है। ११२१

वहे परापर वद मनुष्य क्या हुए ? कारण पूछो तो अगल वेदों
 द्वारा या उपनिषदों द्वारा अनिदित ज्ञान के ज्ञानमूल हैं वे। जब ग्राह
 ने वास देते हुए गजेन्द्र का पूर यज्ञ लिया, तब गजेन्द्र ने 'सर्वसामान्य रूप
 से विद्यमान आदिदेव'। 'यही कहकर पुकारा। उसे वचने पधारने से
 वे। आज वे ही देवों के रक्षणार्थ अवतार ले पधारते हैं। ११२२

कर्म मूलम् नड्वि मारु मिजलदेर सुमसेने ताय
 कालमुड गणक नोवन कारणम् कवि नेनदिव
 वलमुन विदित मड्गुत्त गरुमुन कुनडु नोवन
 आलम् मलकम् वुडिण्ण पोरुपुमविद ट्योतेति वन्देति 1122
 मूलसुम् नड्वि-आदि और मध्य; ईरुम् इजलदेर-अन विनका नहीं है, वह;
 कारणम्-कारणमूल; सुमसेने आल-जीन (मूल, वतमान और सविद्य); कालमुम्-
 कालों के; कणकम्-लक के; नोवन कारणम्-पार रहनेवाला कारण है; कवि
 पुनति-द्वेष में धनु लेकर; वलमुम्-विजय; विकिरि-वक्र; वड्डुम्-गंज और;
 करकमुम्-कमण्डल का; कुनडु-छोड़कर; नोवन-गोवीन; आलमुम्-वटपत्र
 का; मलकम्-और कमण्डल; वुडिण्ण पोरुपुम्-और वादों के (कलास) पत्र
 का; विद-प्राप्तकर; अयोतेति वन्देति-अपेक्षा आये। ११२२

आदि, मध्य और अन्तहीन हैं वे। सभी के कारणमूल हैं। विकल
 और लक के परे हैं। अशेष कार्यों का कारण हैं। वे ही दक्ष में धनु

धारण कर शंख-चक्र, त्रिशूल और कमण्डल (विष्णु, शिव, ब्रह्मा के हाथ की वस्तुओं) और वटपत्र, कैलासपर्वत और कमलपुष्प (उनके वासस्थानों) को छोड़कर अयोध्या में आये हैं। (कम्बन की धारणा है कि श्रीराम वे आदिमूर्ति हैं, जिनके विष्णु, ईश्वर और ब्रह्मा रूप हैं; जिनको वे तत्तत् कार्य के लिए अपना लेते हैं।) । ११२२

अरुन्दलं निरुत्ति वेद मरुत्शुरन् दरैन्द नीदित्
तिरुन्दैरिन् दुलहम् बूणच् चैन्नैरि शैलुत्तित् तीयोर्
इरुन्दुह नूरित् तक्को रिडरुडुडैत् तेह वीण्डुप्
पिरुन्दत्तन् इन्बोर् पाद मेत्तुवार् पिरप्प रूपान् 1123

तन् पाँत्र पातम्-अपने (उनके) स्वर्णचरणों की; एत्तुवार्-वन्दना करनेवालों का; पिरप्पु अरुप्पान्-जन्म के काटनेवाले हैं; अरुम् तलै निरुत्ति-धर्म की संस्थापना करके; वेतम् अरुत् चरन्तु-वेदों ने कृपा करके; अरैन्द-जो घोषित किया; नीति तिरुम्-उन नीतिमार्गों की; उलकम् तैरिन्तु-संसार जानकर; पूण-अपनावे, ऐसा; चैन् नैरि शैलुत्ति-धर्मशासन करके; तीयोर् इरुन्तु एक-दुष्टों की मार; नूरि-मिटकर; तक्कोर् इटर्-शिष्टों का दुःख; तुटैत्तु-(पाँछ) दूर करके; एक-(बाद अपने परमपद) जाने का संकल्प करके; ईण्डु पिरुन्दत्तन्-इधर (भूमि में) अवतरित हुए हैं। ११२३

वे अपने चरणों की वन्दना करनेवाले भक्तों का जन्म काटनेवाले प्रभु हैं। धर्मसंस्थापना करना, वेदों द्वारा करुणा के साथ विहित नीति-मार्ग को प्रशस्त बनाना, लोगों को उनका ज्ञान दिलाकर उन पर जाने की सिखाना, दुष्टों का निग्रह, शिष्टों का कष्ट-निवारण आदि करके फिर अपने स्थान में लौट जाने का संकल्प लेकर वे अयोध्या में अवतार ले आये हैं। ११२३

अन्तवर्कु कडिमै शैय्वे नाममु मनुम तैन्वेन्
नन्नुद इन्नेत् तेडि नाउर्पेरुन् दिशैयिर् पोन्द
मन्तरिर् ईन्बाल् वन्द तात्तैक्कु मन्तन् वालि
तन्मह नवन्डन् रुदन् वन्दत्तैन् इत्तिये तैन्डान् 1124

अन्तवर्कु-ऐसे उनकी; अटिमै चैय्वेन्-दासता करता हूँ; नाममु-नाम (का); अनुमन् अन्पेन्-हनुमान कहाता हूँ; नल् नुतल् तन्तै-(सुन्दर) भाल वाली (सीताजी) की; तेडि-खोजकर; नाल् पेरुम् तिचैयिल्-चार लम्बी दिशाओं में; पोन्त-जो गये; मन्तरिल्-उन सेनानायकों में; तैन् पाल् वन्त-दक्षिण की तरफ आगत; तात्तैक्कु मन्तन्-सेना का नायक; वालि तन् मकन्-वाली का पुत्र; अवन् तन् तूतन्-उसका दूत मैं; तत्तियेन्-एकाकी; वन्तत्तैन्-आया हूँ; अन्डान्-कहा (हनुमान ने) । ११२४

उनका दासकर्म करनेवाला हूँ, मैं। मेरा नाम हनुमान है।

सुन्दर आल वाली सीतली की खोज में चारों दिशाओं में अनेक वानर और गये । उनमें दक्षिण दिशा की ओर जो आया उस सेना का नायक वाली का पुत्र अंगद है । उसका मैं दूत हूँ और मैं इधर एकाकी आया । ११२४

अंगदस्य भिलङ्गं वेतदं विपुत्रिभं मण्डिलं नापणं
मित्रिभिरनं देवसं नक्तुं वालिभ्यं विवृतं वेदं
वपुत्रिभं लय वालि वलिभ्योऽपि वरिभ्यं वाङ्मकं
नक्तुहो नक्तुं लोड्यं नापहं नक्तुं नक्तुकां 1125

अंगदस्य—कहे हैं; इलङ्क वेतन—लका के राजा की; अंगिष्ठ इलम्—वसुधामाता; अण्डिल नापण—सुपण्ड; मित्रं विपुत्रि—विजली वसुधो; अंगेन—लोक; नक्तु—हंसकर; वालि चपु—वालीपुत्र के; विवृतं वेदं—वृष्टि वेद; वपुत्रिभं आय—वृद्ध वली; वालि—वाली; वलिभ्यं कलि—स्वयं है क्या; अरिभ्यं वाङ्मक—उसका राज्य-शासन; नक्तु कलि—अच्छा चलता है क्या; अंगेन—आदिम—पुत्र पर; नायकन—सर्वलोकनायक का; दूतं—दूत; नक्तुकां—हूँ । ११२५

हेतुमान के यह कहने पर लंकाधिपति हूँसा और उसकी दलपत्निकायां सुमधस्य विजली के समान वसकी । उसने प्रश्न किया कि वालीसुवर्धपित दूत ! क्या अतिबलिष्ठ वाली स्वयं है ? उसका राज्य-शासन अच्छा चलता है क्या ? जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब सर्वलोकनायक का दूत हूँसा उठा । (दीनों की हूँसी में जो भेद है, वह स्वादिशयय

अञ्जलं परककं पार्विदं दनेवरं मङ्गदं नक्तुं
वृञ्जिनं वालिं मोजिभं वासुपुत्राय विवृतं वनेरं
अञ्जनं मणिं पात्रं नक्तुहो पात्रं मण्डिलं
वृञ्जिनं नङ्गाळं वेतनं वीरियं रीरियं रीरं 1126

अरक-राक्षस; अञ्जल—हरी मत; वपुत्रिभं—वसुधामाता कीयां; वालि—वाली; पार्विदं—पुत्रल छेड़कर; अंगेनम् अदनेनम्—अनारिष (स्वर्ग) विधार गये; मोजिभं—लौट गये; अंगेन—उसी समय; वासुपुत्र—उसकी पूँछ कीयां; मणि—वालीक बाण; अंगेनम्—एक के द्वारा; मण्डिक—पण्डित होकर; वृञ्जिन—सी गया; अङ्कळ वेतनम्—हमार राजा; वीरियं रीरियं—सुपुत्रियार; अंगेनम्—कहे । हेतुमान के) ११२६

हेतुमान ने (अपराधिन के स्वर में) उत्तर दिया कि राक्षस राजा ! हरी मत ! वाली अब मणि पर नही है ! अङ्कुर कीली वाली अनारिष (स्वर्ग) में विधार गये । वे लौट गये आये ! उसी दिन उनकी पूँछ

भी चली गयी नाश होकर ! (रावण वाली की पूँछ से ही अधिक डरता था, क्योंकि उसी में वह बँधा फिरा !) अंजनवर्ण श्रीराम के एक ही घातक शर से आहत होकर पीड़ा के साथ (सदा के लिए) सो गया ! अब हमारे राजा सूर्यसूनु सुग्रीव हैं । ११२६

अँतुडै यीट्टि तालव् वालियै यँडुवा यम्बाल्
इन्नुयि रुण्ड दिप्पो दियाण्डैया तिराम तँन्वान्
अन्तवन् रेवि तन्तै यङ्गद नाड लुङ्ग
तन्मैयै युरैशैय् हँन्तच् चमीरणन् उत्तयन् शौल्वान् 1127

अँतु उटै ईट्टिताल्-किस अभिप्राय से; इरामन् अँन्पान्-राम नाम के उसने;
अ वालियै-उस वाली के; अँडुवाय्-बलिष्ठ; अम्बाल्-शर से; इन्नु उयिर्
उण्डतु-प्यारे प्राणों को खा (हर) लिया; इप्पोतु-अब; याण्डैयान्-कहाँ रहता है;
अन्तवन् तेवि तन्तै-उसकी पत्नी को; अङ्कतन् नाटल् उङ्ग-अंगद के ढूँढ़ने का;
तन्मैयै-वृत्तान्त; उरै चैय्क-बताओ; अँन्त-कहने पर; चमीरणन् तत्तयन्-
समीरणसूनु; शौल्वान्-बोला । ११२७

रावण ने पूछा कि राम नामक व्यक्ति ने किस अभिप्राय से उस वाली के प्यारे प्राण सशक्त बाण चलाकर हर लिये ? वह राम अब कहाँ रहता है ? उसकी देवी को अंगद खोजता आया, उसका हेतु क्या है ? बताओ । तब समीरणसूनु ने उत्तर में यों कहा । ११२७

तेवियै नाडि वन्द शँङ्गणार् कँङ्गळ् कोमान्
आवियौन् राह नट्टा नरुन्दुयर् तुडैत्ति यँन्त
ओवियर्क् कँळुद वीण्णा वुरुवत्त नुरुमै योडुम्
कोवियर् चैल्व मुन्ने कौडुत्तुवा लियैयुङ् गौन्डान् 1128

तेवियै नाटि वन्त-देवी को खोजते आये; चँङ्कणार्कु-अरुणाक्ष श्रीराम का;
अँङ्कळ् कोमान्-हमारे राजा; आवि औन्नु आक-प्राण एक बनाकर; नट्टान्-
मित्र हुए; अरुम् तुयर् तुडैत्ति-मेरा कठोर दुःख मिटाओ; अँन्त-कहने पर;
ओवियर्क्कु-चित्तेरों के लिए; अँळुत औण्णा-जिनका चित्र खींचना असाध्य है;
उरुवत्तन्-ऐसे रूप वाले (श्रीराम) ने; उरुमैयोडुम्-रुमा के साथ; को इयल् चैल्वम्-
राज्य की श्री की भी; मुन्ने कौडुत्तु-पहले देकर; वालियैयुम् कौन्डान्-वाली को
भी मारा (श्रीराम ने) । ११२८

अपनी देवी सीताजी को खोजते हुए अरुणाक्ष श्रीराम आये । तब हमारे राजा ने दोनों के प्राण एक बनाकर उनसे मित्रता बना ली । और उनसे प्रार्थना की कि मेरा कठोर दुःख मिटाइए । तभी, समर्थ चित्तेरों के लिए भी जिनका चित्र बनाना असाध्य है, उन श्रीराम ने सुग्रीव को उनकी पत्नी रुमा के साथ राज्य भी दिलाने का वादा कर दिया । बाद वाली को भी मार डाला । ११२८

आयवने रतेनो जगज्जने विज्जान्तेर नान्गुम वेदि
 सेवने सेन जेने वीरुते विरुतेद वीरुते वीरुते
 पृथिवि नाडु मृतेव पृथिवे वृष्टिदे वीरुते वीरुते
 उपवने रुदने शीतेना निरावण निदनेव वीरुतेना 1129

आयवने रतेनो-ऐसे सुग्रीव (की सम्पत्ति) से; आगते-बहे; विरुते-
 आर नाडुकुम-एक मासवर्षावध; वीरु-उदरेकर; इति वीरु इवने वीरु-वी
 सुख से रहे, उन श्रीवोररायव के; मय वृष सेने वृष्टि-एकविन भयकर (बानर) सेना
 के वरकर आने पर; इति पाप नाडुम-अब जाकर छोले; अनेव-कहेने पर;
 पृथिवे-देस आये; पृथुनेव वृष्टि-इआ यह; अनेक-ऐसा; उपवने-जिहने सेना
 या, उनके; वृते-वृते से; शीतेना-कहे; इरावणने-रावण ने; इतने-यहे;
 शीतेना-कहे। ११२६

फिर ऐसे सुग्रीव की सम्पत्ति से श्रीराम चार महीने बहे, ऋण्यमक
 पर्व पर समुख ठहरे रहे। अर्धम वीर के पास भयानक बानर-सेना
 आ मिली। तब उन्होंने आशा दी कि अब जाकर सीताजी की खोज
 लगाओ। हेम आये। आशापक श्रीराम के दैव ने यों कहे। रावण
 यों बोला। ११२९

उज्ज्वलने तनेवने रतेनो जगज्जने वीरुते वीरुते
 वृद्धेना यमविरे कीरुतेर कट्टेज्जिने मरेकीण जेने
 अज्ज्वलने पृथुने वीरुते विरुतेद वीरुते वीरुते
 मज्जुलिरे पृथिविने जल मरुसे पृथुतेव माते 1130

उम कुल तनेवने रतेनो-ऐसे (बानर) कुल के अधिपति थे, साथ-साथ;
 अर्ध इला-उपमा-रहित; उपरुवविधुते-जो जलम थे, उनको; वृष-भयकर;
 कीले सम्पत्ति-मारक शर से; कीरुतेर-विषने मारा उसकी; अज्ज्वलने-
 बासला का काम; मरे कीण्ठोरे एव-अपमाया है (वृष लोगों ने) वी; वृष वीरुते-
 वृद्धेना शीरुव; अनेक जलपृथुम-कहे जाकर भिटेना; वृष अनेक-वृद्धेने लिए;
 इवनेव अनेक-पृथुव रहा वी; मरुज्ज्वलने पृथिविने-भेषों के कारण पनपनेवाला;
 जलम-यहे लोक; मायुम उदरेव माली-सौन्दर्यमय हेगा न। ११३०

बाली वृद्धेने कुल का अधिपति था; अलावा इसके वहे अपभय
 गीरवपुत्र था। उसकी निधने अपने भयकर मारक अनेक शरीर मारा,
 उसकी दासला का काम वृष लोगों ने अपना लिया है। वृद्धेना कीले
 कहे भिटेनी? अगर यह काम वृद्धेने लिए योग्य हुआ तो भेषों के कारण
 पनपनेवाला यह भौतिक वडा सौन्दर्यमय रहेगा न? (व्यास की वचन
 है।) ११३०

तमसुतेक कीलेविरे तनेवाइ कीरुतेवर कनेव शानरे
 उमसिबने तनेव तनेव तनेव यादमके करेकेक वरे

द्वैम्मुत्तैत् तूडु वन्ददा यिहल्पुरि तन्मै यैन्तै
नीम्मेतक् कौल्ला नैज्ज मज्जलै नुवरि यैन्तान् 1131

तम् मुत्तै-अपने ज्येष्ठ भ्राता को; कौल्वित्तु-किसी के द्वारा मरवाकर;
अन्तान् कौन्डवड्कु-वैसा मारनेवाले के प्रति; अन्पु चान्द्र-प्रेम रखनेवाले; उम्
इत्त-तुम्हारे समूह के; तलैवन् एव-राजा के भेजने पर; यातु-क्या; अम्कु-
हमसे; उरैक्कल् उड्डतु-बताना पड़ा है; अम् मुत्तै-मेरे समक्ष; तूतु वन्ताय्-दूत
के रूप में जो आये; इक्कल् पुरि-ऐसा तुम युद्ध करो; तन्मै अन्तै-इसका हेतु क्या
है; नीम् अन्त-सहसा; कौल्लाम्-मारेंगे नहीं; नैज्चम् अज्चलै-मन में मत डरो;
नुवल्लि-कहो; अन्तान्-कहा । ११३१

अपने ज्येष्ठ भ्राता को किसी के द्वारा मरवाकर, और मारनेवाले
पर ही प्रेम करनेवाले अपने समूह के नायक द्वारा प्रेषित तुम मुझसे क्या
कहना चाहते हो ? और मेरे पास दूत बनकर आगत तुमने युद्ध किया ।
उसका कारण क्या है ? हम तुमको सहसा मारेंगे नहीं । इसलिए विना
डरे बताओ । रावण ने हनुमान से कहा । ११३१

तुणर्त्त	तारवन्	शौल्लिय	शौड्कळैप्
पुणर्त्तु	नोक्किप्	पौदुनिन्ड	नीर्मेयै
उणर्त्ति	त्ताल	दुरुम्मेत	वुन्तरुड्
गुणर्त्ति	नान्तु	मित्तैयत्त	कूडित्तान् 1132

उन्त अहम्-अचित्तनीय; कुणर्त्तित्तान्तुम्-उत्तम गुणी हनुमान ने; तुणर्त्त
तार्-फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी; शौल्लिय शौड्कळै-(रावण द्वारा) कथित
वचनों को; पुणर्त्तु नोक्कि-मिलाकर विचारा; पौतु निन्ड-सर्वसाधारण;
नीर्मेयै उणर्त्तित्ताल-श्रेष्ठ तत्त्वों को समझाऊँ; अतु उड्डम्-तो वह फल देगा; अन्त-
सोचकर; इत्तैयत्त कूडित्तान्-यों बोला । ११३२

हनुमान अचिन्तनीय श्रेष्ठ गुणी था । उसने फूलों के गुच्छों की
बनी मालाधारी रावण के सब वचनों को मिलाकर सोचा । उसे लगा कि
सर्वसामान्य तत्त्व समझाए जाएँ तो वह शायद अच्छा फल दे सकता है ।
इसलिए वह यों बोला । ११३२

तूडु वन्दडु शूरियन् कान्मुळै, एडु वीन्ड्रिय नीदि यियेन्दत्त
शाडु वैन्रुणर् हिड्डियेड् इक्कत्त, कोदि उन्दत्त निन्वयिड् कूड्वाम् 1133

चूरियन्-सूर्य के; कान् मुळै-(पैर के अंकुर) पुत्र का; तूतु वन्ततु-दूत बनकर
आना हुआ (आया); एतु औन्ड्रिय-हेतुयुक्त; नीति इयैन्तत्त-नीतिसम्मत; तक्कत्त-
तुम्हारे हितकारी; कोतु इड्डन्तत्त-दोषरहित; आम्-होंगे (मेरे कथन); चातु
अन्ड-साधु, ऐसा; उणर्किड्डियेल्-मानोगे तो; निन् वयिन्-तुमसे; कूड्वाम्-
कहेंगे । ११३३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਸਤਿਨਾਮ ਕੀਰਤਨ ਤੇ ਗੁਰਮਤਿ ਪੰਥ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਅਸਲੀ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਮੱਧਮ ਵਾਲੇ ਭਾਈ-ਭੈਣਾਂ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਹੱਲ ਹੋਣ ਲੱਗਦੀਆਂ ਹਨ।

[illegible]

पुसने अपने जन्म को व्यर्थ बिताइ दिया है । राजधर्म पर किचित्
 भी ध्यान नहीं दिया । पापकर्म बहुत जपराना के साथ कर रहे हो ।
 पुनरात्मक अन्तकाल आ हो गया तो भी एक दिवोपदेश है । पुनो तो बहुत
 काल तक अपने प्राणों को सुरक्षित रख सकोगे । १९३४

॥ १३५ ॥

કાપિલ-કાલ કરે તો; તોરૂં અર્ધ-અવાય આર; કરે અર્ધ-અવલ; કરૂંપિયાર-પાતિચય મેં; તોપિયં રૂપવઢ-અનિ સે મો પવિત્ર દેવો કો; ઉપરે રૂપસનાલ-રૂપને કરડે દિવા, દેસાલિય; તિરે પુલં, વૃંદ-અપનો રૂંદિયો કો તિરૂંદે કરકે; પોરૂંદિય-પરિપાલિત; થાપિલ-લિપો મો મારે સે; તોરૂંદે અરિય આકિય-અરૂંભા રહો; માં ભવમ-(ગુરોર) વજાં ભપ; પોપિરૂંદે-કલહોન રોં ગયા તો ૧૧૩૫

पतिव्रत धर्म ऐसा है कि पतिव्रता गरी गुरुता करेगी तो वह अर्वाध होगा। पतिव्रत्य अवल है। पतिव्रत्य धर्मपालन के कारण सीताजी अनि संधी पतिव्रत है। उनकी गुमने कष्ट दिया है। इसलिये इतिव्य-निग्रह करके जिस महान् तप को गुम संधी विष अक्षय रूप से पालने आ रहे-ये वहे अब छूट जानेवाला है। १९३५

३२३ श्रीनरैः पाठ्यं विद्विष्यते, निरुक्तं श्रीनरैः दलानिर् नित्यं कर्मा
श्रीनरैः श्रीनरैः नवविषयं वसुधैव कुटुम्बकम् विद्विष्यते ॥३६

इतह वीजतु-आज का दिन हो गया (बला गया) ; गल-कल ; बिड़ि इरु निरु-कुछ समय ठहरकर ; वीजतु-मिरा ; अला-गहो वा ; इरु निरु-कुछ इरु रमाया रहिगा क्या ; नल उगद-अठ बुडियाल ; उगद-देवा का ; वरु वीकिय-जीनकर अलिन ; वीकिय आगु-एक गौरव ; विविजाल-विषि के कारण ; वीजतु-मर हो गया । ११३६

‘आज’ तो गया । ‘कल’ कुछ देर के बाद जायगा; नहीं तो वह कुछ (अमर) रहनेवाला है क्या ? तुमने श्रेष्ठ ज्ञानी, देवों को जीता और गौरव सम्पादन किया । अब वह, विधि के विधान से दूर हो गया, देखो । ११३६

तीमै नन्मैयैत् तीत्तलौल् लादेत्तुम्, वाय्मै नोक्किन्नै मादवत् ताल्वन्द
तूय्मै तूयव डन्वयिर् रोन्त्रिय, नोय्मै याड्डैक् किन्त्रुनै नोक्कलाय् 1137

तीमै-पापकार्य; नन्मैयै-अच्छे धर्मों को; तीत्तल् ओल्लातु-मिटानहीं सकेगा; ऐत्तुम्-इस; वाय्मै-सत्य को; नोक्किन्नै-तुमने हटा दिया; मादवत्ताल् वन्त तूय्मै-बड़ी तपस्था से प्राप्त पवित्रता को; नोक्कलाय्-न देखकर; तूयवळ् तन्-पवित्र देवी के; वयिन् तोन्त्रिय-प्रति हुए; नोय्मैयाल्-(कामना-) रोग से; तुटैक्किन्त्रुनै-पोंछ रहे हो । ११३७

साधु कहा करते थे कि पाप पुण्य को मिटानहीं सकता । पर तुमने उस कथन को झूठा बना दिया । महान् तप के सिलसिले में तुमने पवित्रता पायी थी । उसकी तुमने चिन्ता नहीं की और पातिव्रत्य में पवित्र देवी सीता पर उदित कामरोग से उसे मिटा रहे हो । ११३७

तिन्त्रुदि	रम्बिय	कामच्	चैरुक्किताल्
मन्नुदु	तत्त	मदियिन्	मयङ्गितार्
इन्त्रुदि	इन्दिळिन्	देरुव	दैयलाल्
अन्त्रुदि	इम्बिन्न	रारुळ	रायितार् 1138

तिन्त्रु त्रिन्त्रुपिय-अतिक्रमित; काम चैरुक्किताल्-कामाहुंकार से; मन्नुदु-सही मार्ग को भूलकर; तम् तम् मतियिन्-अपनी-अपनी बुद्धि में; मयङ्गितार्-भ्रमित लोग; इन्त्रु इन्त्रु-मर-मरकर; इळिन्नु एरुवते अलाल्-नीचे गिरते ही जायेंगे, नहीं तो; अन्त्रु त्रिन्त्रुपित्-धर्म का उल्लंघन करनेवाले; आर् उळर् आयितार्-कौन श्रेष्ठ गति पर स्थिर रहे । ११३८

जिनमें अतिक्रमित काम है और अहंकार भी, वे अपने बुद्धिभ्रम से फिर-फिर मरते और अधोगति में उत्तरोत्तर बढ़ते जाते । इस स्थिति के सिवा कौन अधर्मी हुए हैं जो सकुशल रहे हैं । ११३८

नामत् ताळ्हडन् जालत् तविन्दवर्, ईमत् तान्मरैन् दारिळ मादर्पाल्
कामत् तालिन् दार्हळि वण्डुरै, तामत् तारिन्न रैण्णिन्नुज् जार्वरो 1139

नामत्तु-भयोत्पादक; आळ् कटल्-गम्भीर समुद्र-मध्य; जालत्तु-इस भूतल में; इळ मातर् पाल्-कम आयु की स्त्रियों के; कामत्ताल् इन्त्रु-काम में सीमा लाँधकर; कळि वण्डु उरै-मधु पीकर मत्त रहनेवाले भ्रमरों से भूषित; ताम तारिन्-पुष्पमालाधारी (पुरुष); अविन्तवर्-सब तरह से नष्ट होकर; ईमत्ताल्-चिता

पर; सङ्गतरा-जी जल मिष्ट; अणुल्लिख- (वे) निरती में; चारवरी-आयो
था । ११३६

अथानक और गहरे सागरतलपिच भूतल में कम आयु की स्त्रियों पर
अत्यधिक कामासक्त होकर जी संभोग की आशा में मरे, उन मधुप्राणी अमर-
मण्डल मालाधारी पुण निरती में आयी क्या ? । ११३९

पौरुण्ड गामयु सुनरिख पोकिकवे, रिखण्ड जामुव वृणाल रीदरुम
अखण्ड गारदिलर रीरदल्ल मल्लदोर, लैखण्ड जामुव वृणालर शीरियोर 1140

शीरियोर-साध लीन; पौरुण्ड गामयु अमर-अय और काम कथित; इव
पोकिक-इनके सिवा; वृण्ड जामुव आस-अन अथकार है; अथ वृणालर-ऐसा
नहीं सोचते; इतल्लुम-लिया (गरीबी की) देना; अखण्ड-ऊपा करना; कारदिल्ल
रीरदल्लुम-काम (या कामना) से दूर रहना; अखण्ड और-इनके अलावा कोई;
लैखण्ड जामुव-एक जाम है; अथ वृणालर-ऐसा नहीं माना है (उन्होंने) । ११४०

साध लीनो ने अथसक्ति और कामासक्ति के सिवा और कहीं
अथकार है —ऐसा नहीं माना था । (शिक्षा-) दान और दया और काम
से वचना —इनके से अन्य ज्ञान का अतिरिक्त भी नहीं माना था । ११४०

इववेन लुसुसिपि रिखरिख रिखलिने, नर्वसि नळ नळैयुर नालिने
पववे सैनि पुनरुनरु पण्डवडुम, कौववे यणुसुयुन शीरुसैयुर कडुमा 1141

इववे लुसुसिपिने-काम अपने स्वभाव से; पिउर इतलिने-परदारा की;
नर्वसि-बाहक; नळैस नके उर-दिने-दिने इसी का पाव बनकर; नाल इने-
शेरस बनकर; पववे सैनि-बिकना शरीर; पुनरुनरु-सुखकर; पण्ड पड उम-
अथसा के वश होकर; कौववे यणुसुयुम-नीच पुंसव के साथ रहता है, पड भी;
शीरुसैयिने-अच्छ गुणों में; कडुमा-मिलना क्या । ११४१

काम की स्वाभाविक प्रेरणा से परदारा की इच्छा करना, सदा
परिहास का पाव बनना, निरुद्ध होकर रूप के सुन्दर की तरावट का सुख
जाना और निन्दित होना —इन सबके साथ रहनेवाला नीच पौंसव भी अच्छे
गुणों में लिया जायगा क्या ? । ११४१

और नीचल होखव रुतुणुप, पीद नीदिय राखर पायिमार
वेद नीदि विदिवळि सेवववस, काद नीयउरु लेले कडुनेतिपो 1142

औरस नीर उल्ल-वरंगायमान जल (समुद्र) बलिय भूमि के; आणउवर-
यासक; पायिमार-चल वसे; उरु गुण-(उत्तम) पुम-जैसे; पावस नीदिपर-ब्रह्म
और नीदिमार; और उळर-कौन है; वेस नीदि-वेद और नीदि (जैसे) ससार
की सिखायी; विदि-उन विद्यायक ज्ञान के; वळि सेले वरुम-वश में उपनय;
काद नी-पुव पुम; अउरु लेले-धर्म की सीमा का; कडुनेतिपो-अतिक्रम
करती क्या । ११४२

तरंगायमान जल के सागर से वलयित भूमि का पालन करके जो मरे, उनमें तुम्हारे जितने ज्ञानी और न्यायी कितने हैं ? तुम ब्रह्मा के वंशज हो और ब्रह्मा ने ही वेद-शास्त्र आदि का ज्ञान संसार को दिया । तुम धर्म की सीमा का उल्लंघन करोगे क्या ? । ११४२

वैरूप्युण्	डाय	वौरुत्तियै	वेण्डिताल्
मरूप्युण्	डायपिन्	वाळ्हिन्ऱ	वाळ्वितिल्
उरूप्युण्	डाय्मिह	वोङ्गिय	नाशियै
अरूप्युण्	डाल	दळ्हैन	लाहुमे 1143

वैरूप्यु उण्टु आय-जिसके मन में घृणा है; वौरुत्तियै-ऐसी एक स्त्री को; वेण्डिताल्-चाहोगे तो; मरूप्यु उण्टाय पिन्-इनकार होने के बाद; वाळ्विन्ऱ-जीनेवाले जीवन से; उरूप्यु उण्टु आय्-सुन्दर अंग जो बनी है; मिक ओङ्किय नाचियै-बहुत उन्नत नाक का; अरूप्यु उण्टाल्-कटना हो जाय; अतु-वह (नासिका-रहित मुख); अळकु अँतल् आकुमे-सुन्दर कहा जा सकता है न । ११४३

अप्रिय और घृणा करनेवाली स्त्री को चाहो; इनकार भी मिल जाय । फिर निर्लज्ज जीवन जीने से सुन्दर अंग जो उन्नत है, उस नाक का कट जाना अधिक सुन्दर कह सकेंगे न ? । ११४३

पारै नूरुव पल्पल पौरुपुयम्, ईरै नूरु तलैयुळ वेंत्तित्तुम्
ऊरै नूरुङ् गडुङ्गन लुट्पीदि, शीरै नूरुवै शेमर् जैलुत्तुमो 1144

पारै नूरुव-भूमिनाशक; पल्पल पौरु पुयम्-अनेक सुन्दर हाथ; ईर् ऐ-दस; नूरु तलै उळ-सौ सिर हैं; वेंत्तित्तुम्-तो भी; शेमर् जैलुत्तुमो-भला कर सकते हैं क्या; अवै-वै; ऊरै नूरुम्-नगर-दाहक; कटुम् कत्तल्-भयंकर अग्नि को; उळ् पीति-अन्दर लिये रहनेवाले; नूरु चीरै-सौ वस्त्र हैं । ११४४

भूतलनाशक अनेक हाथ और दस सौ सिर हों तुम्हारे; तो भी भला मिल सकता है क्या उनसे ? उनको सौ (अनेक) साड़ियाँ समझो, जिनमें आग बँधी रहती है जो नगर को ही जला देगी । ११४४

पुरम्बि	ळैप्परुन्	दीप्पुहप्	पीङ्गितोन्
नरम्बि	ळैत्तनिन्	पाडलि	तल्हिय
वरम्बि	ळक्कु	मरैपिळै	यादवन्
शरम्बि	ळैक्कुमैन्	रैण्णुदल्	शालुमो 1145

पुरम् पिळैप्पु अरुम्-त्रिपुर न वचें; ती-ऐसी बड़ी अग्नि; पुक्-घुसे इस भाँति; पीङ्गितोन्-क्रुद्ध शिवजी; नरम्पु इळैत्त-अपने हाथ की नसों को तन्त्री बनाकर जो तुमने स्वर निकाला; निन् पाडलिन्-ऐसे तुम्हारे सामगान से; नलकिय-तृप्त होकर दिये गये; वरम् पिळैक्कुम्-वर चूक जायेंगे; मरै पिळैयातवन्-वेदमार्ग

कृषवर कष्ट हूँ और विपुल में आम लग गयी और पुर नही बचे। ऐसे शिवजी ने तुम्हारे दोषों को नशों की लकी में उलब सामान में देवा दीकर तुम्हें बर दिये थे। वे भी व्यर्थ हो सकते हैं, पर वेदमार्ग से जो नही हटते उन श्रीराम के घर बँक जायेंगे—ऐसा समझना ठीक होगा। क्या ? (नही होगा) । १४४५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११४६ ॥

त्रिभुवनं पवन-अनेक पारुषेण जगति शरीरः, कामकर्म-काम्यः, सर्वव्याप-
 योऽवतः, ईदृक् ईदं तान् उक्त-अर्थेण (साहं जीव करोहं सर्वां क्री) आद्य पक्ष करो
 ह्युः, अथर्वन् इत्य-अर्थः, नत्वे निर-अर्थे सप्तति क्री, नहि-मिच्छते ह्युः,
 नोपतिर्नामिक-अर्थे वनकरः, वक्रम-विपरीतः, इत्यनेन नक्त आस-आर पतिहोमयोगः,
 विवर्तित्व-काम्य करोतु मः, मुञ्जितयो-प्रविष्ट होना चाहते हो ११४६

सुलक्ष्णं हि अनेक ज्ञानी जिन गुणों की कामना करते हैं, उन गुणों से युक्त (राजग) । अथवा पुनर्जाती चाहें तीन करोड़ सालों की आयु का क्षय करते हैं, अष्टौण वैलोकित्थिय आदि ज्ञियों की प्राप्ति करते हैं, तीन बरकर, इस वैश्वमय जीवन के विपरीत ज्ञियों के योग्य काम में प्रवृत्त होना चाहते हो क्या ? । १४४६

[illegible]

पिरागड	जारेपिरा	बाद	पूरुमबदम	देवरप	पिरामन	११४७
त्रिरागड	जारेपूर	देवरकुन	पार	रहितर	बापुदेगल	११४७
कुरागड	जारेपिर	पार	पिरामन			
मरगड	जारा	रहितर	बापुदेगल			

पिउरगुळार-जमसे गुड; पिउवान-और गुजानम न हो; ऐसे; पूरम पवम-परम-
 पव को पवन कर; बिउरगुळार-जठण्ड वा गुड है; पूरम नेवरककुम-बडं देवा के
 श्री; नेवराय डउरगुळार-देव वा वसे है; पिउर पाठम-अथ वे श्री; डरासन
 मउरगुळार आकिलर-औराम को भुलनेवाले गही होले; वापुसे-पडे मय है । ११४७

जन्म जी से चुके हूँ, फिर से जन्म जहाँ से नहीं हूँ। उस परमपद-
वासी वे, देवी के देव जी हैं बिदेव वे, और अन्य देवता—कोई भी शीरास
को नहीं मूलते हैं। यह सत्य है। ११४७

କା ମାତା । ପୁଅ । ପୁଅ । ପୁଅ । ପୁଅ ।

आदि	पर्वणि	वृषभ	रामरव
आदि	नार	नरमवर	ववभम

चीदै यैत्तरु हैन्तेनच् चैप्पितान्
शोदि यान्मह तिर्केन्नु शौल्लितान् 1148

आतलाल्-इसलिए; तन् पेरल् अरुम्-अपनी दुष्प्राप्य; चैल्वमुम्-सम्पत्ति; ओतु पल् किल्लियुम्-(बन्धु) कहलानेवाले अनेक बन्धु-बान्धव; उयिल्-प्राण; उर-लगे रहें, इस वास्ते; चीतयै तरुक् अन्-सीताजी को लौटा दो, ऐसा कहो; अंत-ऐसा; चोत्तियान् मक्कन्-ज्योतिर्मय (सूर्य) के पुत्र ने; निरुक् अन्नु-तुम्हारे लिए; चौल्लितान्-कहला भेजा। ११४८

इसलिए अपने दुष्प्राप्य धन, अपने कहे जानेवाले बन्धु-बान्धव और अपने प्राण —इनको स्थायी रखना चाहो तो सीताजी को लाकर श्रीराम के पास अर्पित कर दो। सुग्रीव ने मुझसे कहा कि मैं यह सब तुमसे कहूँ। ११४८

अन्नु लुम्मिवै शौल्लिय वैरुकोरु, कुन्डिल् वाळुङ्ग गुरङ्गुहो लामिदु
नन्नु नन्डत्त मानहै शैयदत्तन्, वैन्डि यैन्डोन्नु तानन्डि वेडिलान् 1149

अन्नुलुम्-कहते ही; वैन्डि अन्नु-विजय नाम की स्थिति; ओन्नु तान् अन्डि-एक के सिवा; वेरु इलान्-और किसी को न जाननेवाले ने; इवै-ये बातें; अन्नु चौल्लियतु-मुझसे कहीं; कुन्डिल् वाळुम्-पर्वतवासी; ओर कुरङ्कु कोल् आम्-एक वानर ही न; इतु नन्नु-यह भी खूब; नन्नु अंत-अच्छा रहा; अंत-ऐसा; मा नकै-अट्टहास; चैयत्तन्-किया। ११४९

हनुमान के ऐसा कहने पर विजयेतर स्थिति न जाननेवाले रावण ने कहा कि हा ! यह उपदेश देनेवाला एक पर्वतवासी वानर ही है तो ! यह भी खूब रहा ! अच्छा ! वह ठठाकर हँसा। ११४९

कुरक्कु वार्त्तैयु मानिडर् कौरुमुम्
निरक्कु नीदि होलाम्नेरि नीङ्गियेन्
पुरत्ति तुट्टरुन् दूडु पुहुन्दपिन्
अरक्क रैक्कोन्डु वः(ह)दुरै यार्येन्डान् 1150

कुरक्कु वार्त्तैयुम्-बन्वर का उपदेश; मानिडर् कौरुमुम्-मनुष्यों का पराक्रम; निरक्कुम् नीदि कोल् आम्-बड़ी नेक नीति बन गये क्या; अन् पुरत्तिन् उळ्-मेरे नगर के अन्दर; तरुम् त्तु-किसी के प्रेषित दूत के रूप में; पुकुन्त पिन्-प्रविष्ट होने के बाद; नेन्डि नीङ्कि-मार्ग (सीमा) लाँघकर; अरक्करै कोन्डु-राक्षसों को मारने का; अःतु-वह; उरैयाय्-(क्यों,) कहो; अन्डान्-कहा। ११५०

रावण ने हनुमान से कहा कि वानर का उपदेश देना और मानवों का जीत पाना सीधा न्याय बन गया शायद ! (वह रहे।) मेरे नगर के अन्दर दूत के रूप में न आये ! फिर अपने दौत्यधर्म का उल्लंघन

दी । ११५०

करके पढ़ी के राक्षसों की मारा जो था वह क्यों ? सीधा उत्तर

काट्टे बारिसें पारकटि कातिसे, वाटि तेनेनेक कोल वनारिदेळ

वाटि तेनेनेक सनेसिप वाखिरेन, माट्टे वनेदळ काण मदिपान 1151

काट्टेवार- (उन्हें) मुझे वनासेवाले; इनेसेयाले-गहरी रहे, इसलिये; कटि कातिसे-
मुगधुण उखान की; वाटिसेने-नट किया; अनेके कोल वनारकळे-मुझे मार
जाले जो आये; वाटिसेने-उन्हें मार जाला; पने-वाद; सनेसेपिवाले-नरम
रही लगी; उने नने माट्टे-उन्हें पास; वनेदळ-जाला; काण मदिपान-
मिलने के मन से (हवा) । ११५१

हेतुमान ने उत्तर दिया कि रावण ! कोई नही मिल जा मुझे तुमको
दिखाये ! इसलिये मैंने सुवासपूर्ण अशोक वन को मिटाया । उससे नाराज
होकर जो मुझे मारने आये, उन राक्षसों की मैंने मार जाला । पशुचारों में
अपना उग्र रूप त्यागकर सीन्ध रूप में रहने; इसलिये तुम्हारे पास आया
तुमसे मिलने (सदेष्टा सुगते) की इच्छा से । ११५१

अने मारिदिरने मारिदिरने

मिनेने मारिदिरने

कोसेमिने मारिदिरने

निनेमिने मारिदिरने

अने मारिदिरने (हेतुमान के) ऐसा कहने मात्र से; ईष्टे अति-बड़ी ईष्टे

अतिन के; नीण्डे उक-बहुत दूर तक जाकर गिरे; मिनेनेम-ऐसा समकसेवाले;

बाळे अमिरे-नलवार-से-बोरे रावण ने; विरम घोड़किमाने-बहुत कोप में आकर;

कोसेमिने अनेउरने-मारी, कहा; कोलिपर केरनेमु-वहिक के (हेतुमान के) पास

पहुंचने हो; नीलिपाने-नीलिमान; वाटपाने-विषीण ने; निनेमिने-उहरे;

अनेउरने-कहा । ११५२

उपगोही हेतुमान ने यह कहा, ग्योही समकदार नलवार-सम दलारे,
रावण का गुस्सा भयंक उठा । जिससे आग निकलकर बहुत दूर तक
फली और आगरे छिरे । उसने तुल आवा दी, मार जाली इसे । वहिक
लोग पास आ हो गये कि नीलिमान विषीण ने रोकेते हुए कहा कि
रुकी । ११५२

आण्डे आण्डे

नीण्डे नीण्डे

मण्डे मण्डे

मण्डे मण्डे

विमल 1153

नीतियान्-नीतिज्ञ ने; आण्टु-तब; अँळुन्तु निन्ऱु-उठ खड़े होकर; अण्णल्-महिमावान; अरक्कत्तै-राक्षस (रावण) को (देख); नीण्ट कैयिन्-अपने दीर्घ हाथों से; वणङ्कितन्-नमस्कार किया; मूण्ट कोपम्-बड़ा यह कोप; मुऱैयतु अन्ऱु आम्-क्रमगत नहीं है; अँत-ऐसा; वेण्टुम् मैय् उरै-सर्वमान्य वचन; पय-धीरे-धीरे; विळम्पित्तान्-कहा । ११५३

नीतिमान् विभीषण ने उठकर अपने महिमामय रावण को हाथ जोड़कर नमस्कार किया । फिर निवेदन किया कि आपका बड़ा हुआ कोप न्याय-सम्मत नहीं है । फिर वह सर्वमान्य सत्य को बहुत ही सावधानी से कहने लगा । ११५३

अन्तण तुलह मून्ऱु मादियि नऱत्ति नार्ऱित्
तन्दवन् मरविन् वन्दाय् तवनेऱि युणर्न्दु तक्कोय्
इन्दिरन् करुम मारु मिऱैवन्नी यियम्बु तूदु
वन्दन् तैत्तु पित्तुन्ऱु गोरियो मऱैहळ् वल्लोय् 1154

तक्कोय्-सौम्य; मऱैकळ् वल्लोय्-वेदविदग्ध; उलकम् मून्ऱुम्-तीनों लोकों को; आतियिन्-प्रथम; अऱत्तिन् आऱ्ऱि-धर्म के द्वारा ही; तन्तवन्-जिसने सृष्टि किया; अन्तणन्-उस ब्रह्मविद् (ब्रह्मा) के; मरपिन् वन्ताय्-वंशज हैं; तव नेऱि उणर्न्दु-तप-मार्ग जानकर; इन्दिरन्-देवेन्द्र; करुमम् आऱ्ऱुम्-जिनकी सेवा करता है; इऱैवन् नी-वह प्रभु हैं आप; इयम्पु तूतु-(स्वामी का सन्देश) कहनेवाला दूत; वन्तैन्-आया (मैं); अँन्ऱु पित्तुम्-कहने के बाद भी; कोऱियो-मार डालेंगे क्या । ११५४

सुयोग्य ! वेदविदग्ध ! आप ब्रह्मविद् ब्रह्माजी के वंशज हैं, जिन्होंने इन तीनों लोकों को धर्म के मार्ग पर रहकर आदि में सृष्टि किया । आपकी तपस्या का गौरव समझकर इन्द्र भी आपका आज्ञाकारी रहता है । आप ऐसे स्वामी हैं । वैसे आप इसको यह कहने के बाद भी मारेंगे कि मैं सन्देश सुनाने आया हुआ दूत हूँ ? । ११५४

पूदलप् परप्पि नण्डप् पौहुट्टित्तुट् पुऱत्तुट् पौय्दीर्
वेदमुर् रियङ्गु वैप्पिन् वेऱुवे रिडत्तु वेन्दर्
मादरेक् कौलैशैय् दार्हळ्ळरैन् वरित्तुम् वन्द
तूदरेक् कौन्ऱुळ्ळारहळ् यावरे तौल्लै नल्लोर् 1155

पू तल परप्पिन्-भूतल के विस्तार में; अण्ट पौहुट्टित्तु उळ्-अण्डगोल के अन्वर; पुऱत्तुट्-बाहर; पौय् तीर्-जो कभी असत्य नहीं बन सकते; वेतम् उऱ्ऱु इयङ्कुम्-वे वेद जहाँ चालू रहते हैं; वैप्पिन्-उन लोकों में; वेऱु वेऱु इटत्तु वेन्तर्-विविध स्थानों के राजाओं में; मातरै-माताओं को; कौलै चैय्तार्कळ्-मारनेवाले; उळर्-हैं; अँत-ऐसा; वरित्तुम्-हो सकता है तो भी; तौल्लै नल्लोर्-प्राचीन साध

लोमः वनं वनं-आगतं वनं काः कान्ते उमार्कन्द-जिह्वेति मार उलाः पावर्-कीन है । ११५५

इस भूल के स्थल में, अण्डगोल के आन्दर और अण्डगोल के बाहर भी जहाँ निरयवेदमार्ग सुस्थापित है, विविध स्थानों में आपकी ऐसे राजा शापद मिल सकेंगे जिन्होंने विषयों की मार उला दी; पर प्राचीन और सुयोग्य राजा कीन है, जिन्होंने वनों की मार दी ? । ११५५

पहैपुल नर्पिहै युपर्वनार् पहरर्वद पहरर्वद पहरर्वद
मिहैपुल नडकफि मयमसे विळमपुवले विरदम वण्ड
नहैपुलने पिरिडुण जामे नडगुल नवपिने रामे 1156

एक पुल अणिक-शब् के स्थान में आकर; उपर्वनार्-जिह्वेति भला; पकरर्वतु-उन्होंने जो सन्देश भला; पकरर्वतु-वह सुनाकर; पउरार्-शब् का; मिहैपुल-कोप के भाव का; अडकफि-(अपने वचनों से) शमन करके; मयमसे विळमपुल-सत्य कहने का; विरदम पुण्ड-जिह्वेति वन रखा है; नक पुल-खेठ बुडिमान; कयमर्वनार्-वन की; कोउलिने-मारने से बहकर; नककार पारकुम-पिण्ड सभी लोगों के लिए; नक पुल-हैसी योग्य काम; पिरिउ उण्डासे-इसरा कीड़े हो सकता है क्या; नम कुलम-हैमारा कुल; नव इण्ड आस-कलक-होन रहेगा क्या । ११५६

जो वन शब् के स्थान में निहर होकर पडैव जाते हैं, फिर अपने प्रक का सन्देश सुनाते हैं, फिर शब् के कोप आदि की भावनाओं की अपने चार्पु-वचन द्वारा शमन करते हैं, ऐसे सत्यवादनवादी कार्यकुशल वनों की मारने से बहकर उलम लोगों द्वारा पारिहसनिय विषय और कुछ हो सकता है क्या ? हैमारा कुल निर्दोष हो सकेगा क्या ? ११५६

मुनवल धः(ह)हेन मरउ मुरावदहने मुनिवने मुनेना
अनेवल नमसे नीना वमररकु नहैपुन रामाले
अनेवल पुलहेन गककुम वेदनी वेररी रेव
इनेवल धुपदि नानके कालिपुद लिङ्केक मिनेम 1157

अपु अल-उलनी आनेवाली तरंगों से मरे समुद्र-मध्य रहेनेवाले; उलकम काकुम-लोकपालक; वेन नी-राजा आप; वेररी एव-शब् द्वारा भेज जाने पर; इ नल-यही; अपुनिनाल-जो आप इसे; कालिपुल-मार; यह; इङ्केकम-गौरव के लिए राजा है; मु नल अ.कम-विशेषाती; मरउ मुरावनकम-इसरा, पुरारि; मुनिवर्-शब्द आदि; मुनेनी-हमसे ईर्ष्या करनेवाले; अ नल-वही (ऊपर) के; अमररकुम-देवों के लिए; नक इण्ड आस-हैसने योग्य होगा; इनेम-और भी । ११५७

उछलकर बढ़नेवाली तरंगों वाले सागर-मध्य स्थित भूमि के पालक राजा ! आपका, शत्रु द्वारा भेजा जाकर जो इधर आया है, उस दूत को मारना दोषपूर्ण होगा । और भी त्रिशूलधारी शिव, मुरारि विष्णु और ब्राह्मण-श्रेष्ठ ब्रह्मा आदि हमसे ईर्ष्या करनेवाले ऊपर के देवों को हमारी हँसी उड़ाने का मौका मिल जायगा । और भी । ११५७

इळैयव डन्नैक् कौल्ला दिरुशैवि मूक्को डीरन्दु
विळैवुरै यैन्ऱु विट्टार् वीरराय् मैय्मै योर्वार
कळैदिये लावि नम्बा लिवन्वन्दु कण्णिर् कण्ड
अळवुरै यामर् चैय्दि यादियेन् इमैयच् चोन्नान् 1158

वीरर् आय-वीर रहकर; मैय्मै ओर्वार-सत्य पर चलनेवाले; इळैयवळु तन्तै-हमारी छोटी बहिन को; कौल्लानु-विना मारे; मूक्कु ओटु-नाक के साथ; इरु चैवि-बोनों कानों को; ईरन्नु-काटकर; विळैवु उरै-(जो) हुआ (वह जाकर) कहो; अँन्ऱु विट्टार्-ऐसा कहकर भेज दिया; आवि कळैतियेल्-(इसके) प्राण निकाल देंगे; नम्पाल-हमारे पास; इवन् वन्तु-इसने आकर; कण्णिल् कण्ड अळवु-अपनी आँखों से जितना देखा, उतना; उरैयामल् चैय्ति आति-जाकर न कहेगा, ऐसा करनेवाले आप बन जायेंगे; अँन्ऱु-यह; अमैय-मन में बात लगे, ऐसा; चोन्नानु-कहा । ११५८

श्रीराम और लक्ष्मण वीर है और सत्यनिष्ठ है । उन्होंने हमारी छोटी बहिन को (उसके अनुचित काम करने पर भी) मारा नहीं । पर उसकी नाक के साथ दोनों कानों को काटा और यह कहकर भेज दिया कि जाकर जो हुआ उसे सुना दो । अगर आप इस दूत के प्राण हर लेंगे तो आप ही इसको वहाँ जाकर अपनी आँखों-देखी बातें कहने से रोकनेवाले बन जायेंगे । विभीषण ने ऐसा अपने तर्क पेश किये कि वे रावण के मन में प्रभाव डाल सकें । ११५८

नल्ल दुरैत्ताय् नम्बियिव नवैशैय् दाने यानालुम्
कौल्लल् पळुदे पोयवरैक् कूऱिक् कौणर्दि कडिर्वेन्नात्
तौल्लै वालै मूलमर्च् चुट्टु नहरैच् चूळ्पोक्कि
अँल्लै कडक्क विडुमिन्ऱु लैन्ऱा निन्ऱा रिरैत्तैळ्ऱन्दार् 1159

नम्पि-सौम्य; नल्लतु उरैत्ताय्-अच्छा कहा तुमने; इवन् नवै चैय्ताते-इसने अपराध किया ही है; आत्तानुम्-तो भी; कौल्लल्-मारना; पळुते-रालत ही होगा; पोय् कूऱि-जाकर कहो और; कौणर्त्ति कटितु-लाओ शीघ्र; अँन्ऱा-कहकर; तौल्लै वालै-संकटकारी (इसकी) पूँछ को; मूलम् अर्-समूल नष्ट करते हुए; चुट्टु-जलाकर; नकरै चूळ् पोक्कि-नगर में घुमा ले जाकर; अँल्लै कटक्क-सौमा-पार; विडुमिन्ऱु-छोड़ो; अँन्ऱान्-(रावण ने) आज्ञा सुनायी; निन्ऱार्-पास जो खड़े रहे; इरैत्तु अँळ्ऱुन्तार्-शीघ्र मचाते हुए उठे । ११५९

उत्तरादि-वर्णन करती है। उ० । ११५१

अथ कालने तयवत्तया छिन्नप वाहो वनविहारे
 स्य पाश स्रवपवलवृद्ध गीणरुनृद्ध पलिमिने रीळनेना
 स्य स्रवप पङ्ककलनेने विदिपिने सीटाने पोरेवृत्ताने
 पृथु वापुने विहृक्कृतं तीव्रने कपिरुत्तरं पिणितेरीरपपारं 1160

अथ कालने-तय, पोरे वृत्ताने-पुद्धविजोना (उद्दलिते) ने; अथ पृथगे
 कृत्तप-वृद्धिवत्तवृद्ध रहने समय; अवत्तं कृत्त-अग लगाना; आकादि-ठीक नही हो सकना;
 स्रव पाश स्रव पलवप-श्रव अनेक रसिया; कालरुनेने-लाकर; वीळ-इसके कंधा
 की; पिणिसिने-बाँध ली; अनेना-कटकर; स्य-उस पर ली रही; स्रव पृ
 कलनेने-विषय अने की; विदिपिने-पथाविधि; सीटाने-लौटा लिया; पृ
 अना स्रव-‘पृ’ कहने की देरी के बाद; कृत्त पुक्ते-पास जाकर; वीडे-बडे हुए;
 वत्तं कपिरुत्तर-माडे रस्से से; पिणितेने-बाँधकर; कृत्तपपार-‘राक्षस’ खोचने
 ली । ११६०

उस समय पुद्धविजोना कृत्तलिते ने कहा कि वृद्धास्त्रवृद्ध विपति में
 रहनेवाले इसके शरीर पर आग लगाना ठीक नहीं है । इसलिये माडे
 रस्से से इसकी भुजाओं की बाँध ली । यह कहकर कृत्तलिते ने हनुमान
 पर ली रही वृद्धास्त्र के अनुसार लौटा लिया । ‘पृ’ कहने
 की देरी के बाद राक्षस उसके पास पहुँच गये । माडे और बडे हुए
 रस्से से उसे खूब कसकर खींचने लगे । ११६०

नारिं नरिं नरुवृळ कपिळ नविषुने दहैस्यवा
 वीरिं नेश नृसुववा मरु लेरुप विविउरनेद
 मारुं मुरि वाममला मरुि मरुि गारुगिने दौडपळिनेद
 पुरे वल्लि मरुलप पुरा पिळनेद पोरेपारं 1161

वीरिं-‘लंका के’ वरों के; ऊचने-शूलों के; नृसुप पाम-नरब रस्से;
 अरु-‘(वाकी) नही’ रहे; लेरुप-रथ गी; विवि गुत्तने-रस्से से रहित हो गये;
 मारुं-‘जहाँ’ बाँध जाते हैं; पुरि आम-‘सभी’ अवशालाप;
 मरुि वामुत्त-बाँधकर ली खोली जाती है; वीडे अलिने-उन रसियों से होन हो
 गयीं; पोरे पार-पुद्धागल; पुरेस वल्लि-जो उनके पृष्ठ और पीठ पर लगाया जाता
 है, उस कलापक की; पुरा-‘जो’ उसके गले में बाँधा जाता है, उस ‘पुरा’ नामक रस्सी;

मुतलाय-आदि को; इल्लन्त-खो गये; नाट्टिन् नकरिन्-देश में और नगर में; नट्ट उल्ल-बीच में रहनेवाली; कयिऱ-रस्सियों की बात; नविलुम् तकमैयवो-कहने योग्य होंगी क्या । ११६१

(ये रस्से-रस्सियाँ कितनी आयीं, कहाँ से आयीं ?) लंका के घरों में जो झूले लगे थे, उन सबकी रस्सियाँ लायी गयीं और झूले रस्सियों से हीन रहे । रथों के रस्से, अश्वशालाओं में अश्व बाँधने-खोलनेवाले रस्से, गजों के कलापक और पेट के रस्से सभी लाये गये और अश्व, रथ, गज आदि रस्से से हीन रहे । उस स्थिति में नगर के और देश के मध्य रही रस्सियों की बातें कहना आवश्यक हैं क्या ? । ११६१

मण्णिऱ् कण्ड वान्नवरं वलियिऱ् कवर्न्द वरम्बैऱ्
 अण्णऱ् करिय वेत्तैयरे यिहलिऱ् पडित्त दमक्कियेन्द
 पण्णिऱ् कमैन्द मङ्गलत्तिऱ् पिणित्त कयिऱे यिडैपिळैत्त
 कण्णिऱ् कण्ड वन्नाश मेल्ला मिट्टुक् कट्टित्तार् 1162

मण्णिल् कण्ट-(विग्विजय के सन्दर्भ में) भूमि (के विविध भागों) से हर लाये गये; वान्नवर-देवों से; वलियिल् कवर्न्त-बलात्कारपूर्वक प्राप्त; वरम् पंड-वर द्वारा प्राप्त; अण्णऱ्कु अरिय-गिनने में असाध्य; एत्तैयरे-अन्यों से; इकलिल् पडित्त-युद्ध में बलात् लिये गये; कण्णिल् कण्ट-आँखों देखे गये; वन् पाचम् मेल्लाम्-स्थूल पाश सभी लेकर; इट्टु कट्टित्तार्-उनका उपयोग करके बाँधा; तमक्कु इयन्त-अपनी जो बनी थीं; पण्णिऱ्कु कमैन्त-पत्नी स्त्रियों के गले में लगे; मङ्गलत्तिल् पिणित्त-मंगल-सूत्र के रूप में बद्ध; कयिऱे-रस्सियाँ ही; इट्टे पिळैत्त-बीच में बचीं । ११६२

भूलोक के अनेक स्थानों से दिग्विजय के अवसर पर रावण तथा राक्षसों द्वारा हर लाये गये रस्से; देवों से बलात्कारपूर्वक लाये गये रस्से; वरों द्वारा प्राप्त, अगणित अन्यों को युद्ध में हराकर लायी गयी रस्सियाँ—राक्षस लोगों ने ये दृष्टि में पड़ी सभी रस्सियाँ लाकर हनुमान को बाँध लिया । लंका में कोई रस्सी बची रही तो राक्षसों की पत्नियों के मंगलसूत्र के रूप में लगी मंगलसूत्र की रस्सियाँ थीं । ११६२

कडवुट् पडैयैक् कडन्दउत्ति नाणै कडन्दे त्ताहामे
 विडुवित् तळित्तार् तैव्ववरे वेन्ऱे तन्ऱो विवर् वेन्ऱि
 शुडुविक् किन्ऱ दिव्वैर्च् चुडुहेन् रुरैत्त तुणिवैन्ऱु
 नडुवुर् इयै मउन्नोक्कि मुऱ्ऱु मुवन्दा तवैयऱान् 1163

नवै अऱान्-निर्दोष हनुमान; कडवुट् पडैयै-दिव्यास्त्र को; कडन्तु-लौघकर; अउत्तित्त् आणै-धर्म के शासन का; कडन्तेन् आकामे-उल्लंघन करनेवाला न बनकर (मैं); तैव् अवरे-उन शत्रुओं ने ही; विडुवित्तु अळित्तार्-छुड़ाकर उपकार किया;

ኢትዮጵያ ፣ 11፡፪

उत्तरे अण्णत्तं क्विअत्तं । ११३३

पुष्प पुष्प नलकोकनर याने यानराने यानेनराने ११६४

पुनीत क. सुमन; पानिक्करुत- (पुनरुत्पत्ति) १९६६। १९६६। १९६६।

ᐱᐱᐱᐱ ᐱ ᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱ

[illegible]

वेनुतन् कोयिल्-राजा के मन्दिर के; वायिल् तोरुम्-सभी द्वारों को; विरविल् कटन्तु-शीघ्र पार कर; वैळ्ळिट्टैयिल् पोन्तु-खुले मैदान में आकर; पुऱम् निन्ऱु-उसके चारों ओर खड़े होकर; इरैक्किन्ऱु-शोर मचानेवाले; पौऱै तीर्-असहनशील; मऱवर्-वीर राक्षस; पुऱम् चुरऱ-सभी ओर घेरे रहे; एन्तु नैटु वाल्-उठी हुई लम्बी पूँछ में; किळि-(फटे-पुराने) वस्त्र; चुरऱि-लपेटकर; इळ्ळुतु अण्णय्-घृत और तेल में; मुऱ्ऱुम् तोयत्तार्-पूरा भिगो दिया; कान्तुम्-जलती; कटुम् ती-उग्र आग; कौळुत्तितार्-लगा दी; अण्टम्-अण्ड को; कटि कलङ्क-भयभीत करते हुए; आर्त्तार्-नर्दन किया । ११६५

राक्षस हनुमान को खींचते हुए राजमहल के सभी द्वारों को शीघ्र पार करके खुले मैदान में आये । फिर उन्होंने चारों ओर से घेरकर बड़े कोलाहल के साथ उसकी उठी हुई लम्बी पूँछ में फटे-पुराने कपड़े लपेटे और घी तथा तेल में उसे भिगोये । पश्चात् उन्होंने उसमें आग लगायी और ऐसा नर्दन किया कि अण्डगोल ही अस्त-व्यस्त हो गया । ११६५

औक्क औक्क वृडन्विशित्त वुलप्पि लाद वुडऱ्पाशम्
पक्कम् बक्क मिरुहूऱाय् नूऱा यिरवर् पऱऱित्तार्
पुक्क पडैऱर् पुडैहाप्पोर् पुणरिक् कणक्कर् पुऱज्जैल्वोर्
तिक्कि तळवा लयनिन्ऱु काण्पोर्क् कैल्लै तैरिवरिदाल् 1166

औक्क औक्क-अनेक (रस्सियाँ) मिलाकर; उटन् विचित्त-एक साथ जो बँधा रहा; उलप्पु इलात-जो टूट नहीं सकता; उटल् पाचम्-वह शरीर-पाश; पक्कम् पक्कम्-दोनों बाजूओं में; इरु कूऱाय्-दो भागों में; नूऱु आयिरवर्-सौ सहस्र राक्षसों ने; पऱऱित्तार्-पकड़ लिया; पुटै काप्पोर्-पार्श्वरक्षक; पुक्क पडैऱर्-वहाँ आगत हथियारधारी वीर; पुणरि कणक्कर्-'समुद्र' की संख्या में रहे; पुऱम् जैल्वोर्-उनकी बगल में जानेवाले; तिक्किन् अळवु-दिशाओं भर में व्याप्त रहे; आल्-इसलिए; अयल् निन्ऱु काण्पोर्क्कु-उनसे हटकर खड़े होकर देखनेवालों के लिए; कैल्लै तैरिवु-सीमा जानना; अरितु-कठिन था । ११६६

हनुमान के शरीर पर अनेक परतों में स्थूल रस्से बाँधे गये थे । और दोनों बाजूओं में लाख-लाख राक्षसों ने खड़े होकर पाश को पकड़ लिया । उनके बाद हथियारधारी राक्षस आकर खड़े हो गये । उनकी संख्या 'समुद्र' की हिसाब में थी । उनके बाद घेरे जानेवाले राक्षसों की बड़ी भीड़ लगी थी । वे दिगन्त तक फैले रहे । इसलिए परे रहकर उन राक्षसों की सीमा जानना दुस्साध्य था । ११६६

अन्द नहरुड् गडिहावु मळिवित् तक्कन् मुदलायोर्
शिन्द नूऱिच् चीदैयोडुम् पेशि मन्निदर् तिरज्जैप्प
वन्द कुरङ्गिर् कुऱ्ऱदत्तै वम्मिन् काण वम्मेन्ऱु
तन्दन् देरुवुम् वायिऱौऱुम् यारु मऱियच् चाऱित्तार् 1167

अँरिये-अग्निदेव; ताये अतैय-माता ही सम; करणैयान्-करुणामय हनुमान का; तुणैये-सहायक; तकवु एतुम्-कोई भी अच्छा गुण; इल्ला-जिनमें नहीं है; नाये अतैय-कुत्तों के समान; वल् अरक्कर्-नृशंस राक्षस; नलिय-कष्ट दे रहे हैं; कण्टाल्-देखते जब हो; नल्कायो-सहायता नहीं दोगे क्या; नीये-तुम ही; उलकुक्कु और चान्द्र-संसार के लिए अनुपम साक्षी हो; निरुके तैरियुम्-तुम ही (सब) जानते हो; आतलाल्-इसलिए; कड्पु अततिल्-पातिव्रत्य में; तूयेन् अँन्तिल्-पवित्र हूँ तो; अवतै चुटल्-उसको मत जलाओ; तौळुकिन्नेन्-नमन करती हूँ; अँन्नाळ्-कहा (देवी ने) । ११६६

सीताजी ने अग्नि का ध्यान करके कहा कि अग्निदेव ! हनुमान माता के ही समान कृपालु है । उसके तुम ही अकेले सहायक हो । कुत्ते के समान बिल्कुल अयोग्य राक्षसों को हनुमान को सताते देखकर तुम उसे सहायता नहीं दोगे क्या ? तुम सारे संसार के साक्षीरूप हो ! इसलिए तुम सब जानते ही हो । अगर मैं पातिव्रत्य में पवित्र हूँ तो उसे तुम मत जलाओ । तुमसे प्रार्थना करती हूँ । ११६९

वैळिर्त्तमैन् तहैयवळ् विळम्बु मेल्वैयिल्
 ओळिर्त्तवैड् गनलव नुळ्ळ मुट्किनान्
 तळिर्त्तत मयिर्प्पुरम् जिलिर्प्पत् तण्मैयाल्
 कुळिर्त्तदक् कुरिशिल्वा लैन्बु कूरवे 1170

वैळिर्त्त-श्वेत; मैन्-कोमल; नकै अवळ्-दांतों वाली उनके; विळम्बुम् एल्वैयिल्-कहने मात्र से; ओळिर्त्त-ज्वलन्त; वैम् कतल् अवन्-सन्तापक अग्नि वह; उळ्ळम्-मन में; उट्कितान्-भीत हुआ; पुरम् मयिर्-शरीर पर के बाल; तण्मैयाल्-शीतलता से; चिलिर्प्प-पुलकित हुए; तळिर्त्तत-समृद्ध हुए; अ कुरिचिल् वाल्-उस श्रेष्ठ हनुमान की पूँछ; अँन्पु कूर-हड्डियों तक; कुळिर्त्ततु-शीतल हुई । ११७०

श्वेत रंग की और मनोरम दन्तावली से भूषित देवी ने जब यह कहा, तब ज्वलन्त तथा दाहक अग्नि मन में भीत हुआ । फलस्वरूप हनुमान के शरीर पर के बाल शीतलता के कारण पुलकित हुए । उस उत्तम हनुमान की पूँछ हड्डी तक शीतल हो गयी । ११७०

मर्त्तिनिप् पलवैन् वेलं वडवन्नल् पुविय लाय
 कर्त्तैवैड् गनलि मर्त्तैक् कायत्ती मुत्तिवर् काक्कुम्
 मुर्त्तु मुम्मैव् चैन्दी मुप्पुर मुरुङ्गच् चुट्ट
 कौर्त्तव तैर्त्तिक् कण्णिन् वन्त्तियुड् गुळिर्न्द वन्ने 1171

वेलं-समुद्र में; वट अतल्-उत्तर में रहनेवाली अग्नि; पुवि अलाय-भूमि पर मिली रहनेवाली; कर्त्तै वैम् कतलि-पुंजीभूत गरम आग; मर्त्तै-और; काय ती-आकाश की अग्नि; मुत्तिवर् काक्कुम्-मुनियों द्वारा पालित; मुर्त्तु उरु-पूर्ण

अभिप्रेत नार- (अभिराम-) अर्थात् का रागाः अत्रात् विवर्ते- (विषयं) न दृष्टा, हेतुं स न काः अतिसम्यक्-हेतुमान् योः हेतुं नो-प्रवृत्त अस्मिन्; वृत्तिमान् हेतुमतेषु अतिस-पूर्वकं वने-वृक्षैः; वारिव-हेतुम कोः; विच्छेदक-निगलकरः; निर्योत्तम-वनी दृष्टौ नो योः वृष्टि विवृत्त-विना जलाय दृष्टे कोः नीरेभ्य-रहित कोः विविधं लोकिक-अपहं स न स विचार करः; वलकते पादो-जनकस्य न कोः कर्यमान-

पातिव्रत्य से; इयन्नुत्तु-बनी है यह; अँत्तुपात्-निश्चय करके; पैरियतु और कळियन् आतान्-बहुत ही बड़े हर्ष के वश का हुआ । ११७३

हनुमान के मन में श्रीराम-भक्ति का ताँता कभी टूटता ही नहीं था । उसके पर्वत के बने-से दुम को भयंकर आग संवृत किये रही । तो भी उसे गर्मी नहीं लग रही थी । इस वैशिष्ट्य के सम्बन्ध में हनुमान ने सोचा । उसे सूझ गया कि यह जनकसुता के पातिव्रत्य का अद्भुत प्रभाव है । यह निर्धारण होते ही वह अतिहर्षित हुआ । ११७३

अउरैयव् विरविर् इत्तु नरिवित्तान् मुळुदु मुत्तन्प्
पैरिल नैत्तु माण्डौत् इळ्ळुदु पिळैयु इमे
मउरु पौरिमुन् शैल्ल मउन्नुशैल् लरिवु मातक्
कर्त्तिला वरक्कर् तामे काट्टलिर् ईरियक् कण्डान् 1174

अउरै अ इरविल्-उस दिन की उस रात में; तान्-स्वयं; तन् अरिवित्तान्-अपनी बुद्धि से; मुळुदु उत्तु पैरिलन्-पूर्ण रूप से जान नहीं पाया; अँत्तुम्-तो भी; आण्डु-तब (जब खींचा जाता रहा); औत्तु उळ्ळु-किसी का रहना; पिळे उइमे-न छूटा, ऐसा; कउ इला-अपढ़; अरक्कर्-राक्षस; तामे काट्टलि-स्वयं दिखाते गये, इसलिए; उरु पौरि-बाहर लगी हुई इन्द्रियों के; मुत्तु चैल्ल-आगे जाते; मउन्नु चैल्-उनके पीछे छिपे-छिपे जानेवाली; अरिवु मात-बुद्धि के समान; तैरिय कण्डान्-(हनुमान ने) देखा और जाना । ११७४

उस दिन की रात में (जब वह नगर में सीताजी का अन्वेषण करता, घूमा) उसने अपनी बुद्धि के सहारे लंका नगर के सारे दृश्य नहीं देख पाये थे । पर अब राक्षसों ने खुद सारी वस्तुएँ दिखा दीं, कोई भी विषय या दृश्य छूट नहीं पाया था । जैसे शरीर से लगी बाह्येन्द्रियाँ आगे-आगे इन्द्रिय-गोचर विषयों को दिखाती जाती हैं और उनके पीछे छिपे-छिपे जाकर मन सभी से अवगत होता है, वैसे ही हनुमान लंका में रहे सभी वस्तुओं को देखता चला । ११७४

मुळुवदुन् दैरिय नोक्कि मुरुमूर् मुडियच् चैन्ऱान्
वळुवु काल मीदैन् ईण्णित्तन् वलिदिर् पऱित्
तळुवित् रिरण्डु नूऱा यिरम्बुयत् तडक्कै ताम्बो
डैळुवैत् नाल विण्मे लैळुन्दत्तन् विळुन्द वैल्लाम् 1175

मुळुवदुम्-सारे (नगर) को; तैरिय नोक्कि-खूब देखकर; ऊर् मुरुम्-नगर भर में; मुडिय चैन्ऱान्-सर्वत्र गया; वळुवु उरु कालम्-बच निकलने का समय; ईत्तु अँत्तु-यही है, ऐसा; ईण्णित्तन्-सोचकर; वलितिल् पऱि-मजबूती से पकड़कर; तळुवित्-जो लिपटे रहे उन राक्षसों के; इरण्डु नूऱायिरम्-दो लाख; पुयम् तट कै-कन्धों और विशाल हाथों को; ताम्पु ओट्टु-रस्सों के साथ; अँळ अँत-खम्भों के

प्रासादों में आग लगे, ऐसा आग लगाऊंगा । और राजाराम के श्रीचरणों की बार-बार वन्दना करके अपने युद्ध-पुच्छ को उस स्वर्णनगरी पर सरकने दिया, जिससे प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा निर्दिष्ट शत्रु-पुर-दहन-वर्णन की परिपाटियों के अनुसार वर्ण्य विषय भी लज्जित हुए । [यानी इस प्रकार दहन का काम चला की उसका वर्णन करें तो उसके आगे प्राचीन आचार्यों की बातें भी फीकी पड़ जायँ । अनुवादक की अवतरणिका में (बालकाण्ड की) पाठक देख सकते हैं कि तमिळ-काव्य में प्रेम (अहम) और युद्ध (पुत्रम) के दो प्रधान विषयों के काव्य-वर्णन में क्या-क्या रीतियाँ अपनायी जायँ; प्रसंगों का नामकरण कैसे हो ? प्रसंगों के अन्तर्गत कैसा समय, कैसी ऋतु, कौन से पक्षी, पशु, लोग आदि की चर्चा होनी चाहिए —यह सब निश्चित है । इस शत्रुनगर-दहन का वर्णन 'पुर' तिणै के अन्तर्गत "उळ पुल वज्जि" तुरै में आता है ।] । ११७७

अप्पुडळ्	वेलै	कारु	मलङ्गुपे	रिलङ्गै	तत्तै
अप्पुडत्	तळवुन्	दीय	वीरुहणत्	तैरित्त	कौट्पाल्
तुप्पुडळ्	मेनि	यण्णन्	मेरुविल्	कुळैयत्	तोळाल्
मुप्पुरत्	तैय्द	कोले	यौत्तदम्	मूरिप्	पोर्वाल् 1178

उडळ् अप्पु-परस्पर टकरानेवाली लहरों के जल से भरे; वेलै काडम्-समुद्र तक; अलङ्कु पेर् इलङ्कै तत्तै-विद्यमान बड़ी लंका को; अँ पुडत्तु अळवुम् तीय-सभी ओरों की सीमा तक जल जाय, ऐसा; और कणत्तु-एक क्षण में; अँरित्त-जलाने के; कौट्पु आल्-प्रभाव से; अ मूरि-वह बलवान; पोर् वाल्-युद्ध-पुच्छ; तुप्पु उडळ्-प्रवाल-सम; मेनि अण्णल्-(लाल) शरीर के प्रभु शिवजी ने; मेरु विल्-मेरु-धनु को; कुळैय-झुकाते हुए; तोळाल्-अपने हाथ से; मु पुरत्तु अँय्त-त्रिपुर पर जो चलाया; कोले यौत्तु-उस बाण के ही समान था । ११७८

परस्पर टकराती हुई उठनेवाली तरंगों के जल से भरे समुद्र तक फैली लंका को उस पूँछ ने एक पल में सभी ओर से जलाकर खाक बना दिया । उस सामर्थ्य को देखते हुए वह सबल और युद्धविक्रमी दुम, प्रवाललाल-शरीरी श्रीशिवजी द्वारा मेरुधनु को झुकाकर उनके हाथों से छोड़े गये शर के ही समान रही । ११७८

वैळ्ळियिर्	पौन्नि	ताह	विळङ्गुपौन्	मणियिन्	विज्जै
तैळ्ळिय	कडवुट्	टच्चन्	कम्मुयन्	इरिदिर्	चैय्द
तळ्ळरु	मनैह	डोरु	मुडैमुडै	ताविच्	चैन्डान्
औळ्ळैरि	योडुड्	गुन्डत्	तूळिवी	ळुरुमो	डौप्पान् 1179

वैळ्ळियिन्-चाँदी के; पौन्निन्-और स्वर्ण के; विळङ्कु पौन् मणियिन्-और प्रभापूर्ण रत्नों के; आक-बने हों ऐसा; विज्जै तैळ्ळिय-शिल्प-विद्या में निपुण;

कटवळ तवचम-विद्य शिरो विप्रकमां हार; कं मुचमूक-अपना हेतकौशल पूर्ण रूप से प्रयोग करके; अतिरिक्त चैतन-अपूर्व रूप से निर्मित; तबे अर-अभिष्ट; सबकुळ लोक-सबनों में; ओळ ओरि ओट्टम-प्रचलित आम कं साथ; कंठेउरुव-पवन पर; ऊळि वीळ-गुणान स गिरनेवाली; उरुम ओट्ट ओपाम-अशानि की तुलना करनेवाला हुमान; मुट्ट मुट्ट-कम से; तावि चैउराम-मवन से मवन उलवा ला रहा था। ११७६

लंका के प्रासाद शिरोपविद्याविदमय विप्रकमां हार। रजत, रत्न, मनोरम प्रभापूर्ण रत्नों आदि का उपयोग करके अपना सारा हेतकौशल लगाकर रचे गये थे। वे आसानी से मिटाय जा सकनेवाले नहीं थे। उन प्रासादों पर हेतुमान अपनो जवान रूम के साथ वारी-वारी से गिरा। जैसे गुणान स अशानि पवनों पर गिरती है, वैसे ही वड़े आम लगाना हुआ एक से दूसरे पर उलकर कूदता चलने लगा। ११७९

नीनिउ निरदर पाण्डुम नैपुण्डि वैळिव नौकेकम्
पालवम् विय वनेवान् मारुव वालुप् पुरै
आलमुण्ड ववनिम् इट्ट वलहेला मविम नैपुण्डम्
कालसे नून सवनी कनलियुङ्ग गिडि नैपुण्डम् 1180

नीने निर-नीलवर्ण; निरदर-राक्षसों के; पाण्डुम-सर्वव; नैपुण्डि-धन निर्मल गुणक रूप से अतिन स डाला जाता है; वैळिव नौकेक-उन प्रानों की रोकेन से; पाल वरुम-अपने पास आगत; पविम-वृक्ष; कनलियुम-अनिन्देव श्री; मारुव वाल-मारुति की पूँछ की; अनेपाल-लगाव के साथ; पुरै-एककंठर; आलमुण्डवम्-विषयीकता शिवजी के; निरुड अट्ट-रथ में छिपाने (सहोदर करने) पर; उलळ अलाम-सारे लोकों की; अविम-हेत के समान; उणुम कालसे अनेव-छानेवाले काल हो के समान; कटिविमु उण्डाम-शीघ्र था लिया (जान दिया)। ११८० की हेल के समान था जाता है। ११८०

13. इलळुगै पुरियुट्टे पडलम् (लंका-दहन पटल)

कौडियुप् पुरै विदामड गौळेतिलेवाळ, नैडिय नैणने तडवि नैडुवुव
मुडियप् पुरै मुळुड मुचकैकिरुयल, कडिय मामवे दोळ गड्डुगनल 1181
कट्टम कनल-प्रवण अभिन; कडिय-सुरक्षित; मा मने लोडम-सभी बड़े-बड़े शवनों में; कौडिय पुरै-ध्वजा की लयकर; विदामस कौळेतिल-विजानों की

जलाकर; ताड़-पीठों पर; नैटिय तृणै-लम्बे खम्भों को; तटवि-लगकर; नैटुम्
चुवर्-ऊँची दीवारों को; मुटिय चूर्डि-पूर्ण रूप से घेरकर; मुळुतुम्-(इस भाँति)
पूरा-पूरा; मुरुक्किर्डु-(भवनों को) जला दिया । ११८१

प्रचण्ड अग्नि ने सुरक्षित रहे सारे घरों को, ध्वजा में लगकर, वितान
जलाकर, पीठ-सहित लम्बे खम्भों को भस्म करके और लम्बी दीवारों को
चारों ओर से घेरकर पूर्ण रूप से जला डाला । ११८१

वाश लिट्ट वैरिमणि माळिहै, मूश मुट्टि मुळुडु मुरुक्कलाल्
ऊश लिट्टत वोडि युलैन्दुपोयप्, पूश लिट्ट विरियड् पुरमैलाम् 1182

वाचल् इट्ट-द्वार पर लगायी गयी; अँरि-आग के; मणि माळिकै-रत्नमय
प्रासादों को; मूच मुट्टि-मण्डलाकार जोर से लगकर; मुळुतुम् मुरुक्कलाल्-पूर्ण
रूप से जला देने से; इरियल्-अस्त-व्यस्त; पुरम् अँलाम्-नगरवासी सभी; ऊचल्
इट्टु अत-झूलों के समान आगे-पीछे; ओटि-भागे; उलैन्तु पोय्-लटकर; पूचल्
इट्ट-(उन्होंने) बड़ा शोर मचाया । ११८२

हनुमान ने द्वार पर ही आग लगायी । पर उसने सुन्दर प्रासादों को
सभी ओर से घसकर पूरा-पूरा जला डाला । इसलिए सभी पुरवासी
अस्त-व्यस्त हो झूले-जैसे (पेंग मारते और आगे से पीछे और पीछे से आगे
आते-जाते हैं वैसे) भागे, थके और बड़ा शोर मचाने लगे । ११८२

मणियि ताय वयङ्गौळि माळिहै, पिणियिर् चैञ्जुडर्क् कर्ड् पेरुक्कलाल्
तिणिहौ डीयुड् दुर्डिल देर्हिलार्, अणिव लैक्कैनल् लारल मन्दुळार् 1183

मणियिन् आय-रत्न-निमित्त; औळि वयङ्कु-प्रकाशमय; माळिकै-प्रासाद;
पिणियिन्-(आग के) लगने से; चैम् चुटर् कर्ड्-लाल किरणों की लटों को;
पेरुक्कलाल्-(प्रतिविम्बों के रूप में) संख्या में बढ़ाने से; तिणि कौळ्-घनी; ती
उड्-आग-लगे स्थान; तुर्डिल-जिन स्थानों में आग नहीं लगी थी, वे स्थान;
तेर्किलार्-(उनमें भेद) जो नहीं जान सकीं; अणि वळै कै-(वे) कंकण वाले हाथों
की; नल्लार्-स्त्रियाँ; अलमन्तु उळार्-गड़बड़ायी रहीं । ११८३

वे प्रासाद रत्नों के बने थे और चिकने और प्रभापूर्ण थे । इसलिए
उनमें लगी आग की ज्वालाएँ प्रतिविम्बित दिखीं और आग की लटें अत्यधिक
संख्या में बढ़ी दिखायी दीं । इसलिए कंकणहस्ता स्त्रियाँ यह भेद नहीं कर
सकीं कि कहाँ आग लगी है, कहाँ नहीं ! इसलिए वे किंकर्तव्यमूढ़ बनी
भ्रमित रहीं । ११८३

वान हत्त नैडुम्बुहै माय्त्तलाल्, पोत्त तिक्कडि याडु पुलम्बित्तार्
तेत्त हत्त मलर्पल शिन्दिय, कान्त हत्तु मयिलन्न काट्चियार् 1184

तेन् अकत्त-शहद जिसके मध्य में है; पल मलर्-ऐसे विविध फूल; चिन्तिय-

मनु-मया की; गुणरूप अत्र-लगाव देता है और; कर्त्तव्य-उदात्त फककर; तम इत्यत्र-स्वभाव में; अर्घुम-आगत; कर्त्तव्य-पौत्र-विधकी के समान; इतल्ले तत्कृत-म- (राक्षसी के) घरी में रहते; यद्धक अत्र यावुम-ज्वलत अग्नि समी में; शील्लिल दीर्घतम पौत्र- (रावण की) आमा से छूट गया-जोही; अस्म-अर्घव; तल्ल उर-अपना पुराना (स्वामाधिक) रूप; गुल्लि कीर्त्तव्य-अपना लिप्य। ११८६

आय दङ्गोर् कुडळुरु वायडित्, ताय लन्दुल हङ्ग डरक्कोळ्वान्
मीयै लुन्द करियवन् मेत्तियिल्, पोयै लुन्दु परन्ददु वैम्बुहै 1187

ओर् कुडळ् उरुवाय्-पहले एक वामन के आकार में; तर-(गये और दान) दिये जाने पर; उलकङ्कळ्-लोकों को; अटि ताय्-अपने चरणों से लाँघकर; अळन्तु कोळ्वान्-नाप लेने के लिए; मी अळुन्त-आकाश में ऊँचे बढ़े हुए; करियवन्-काले रंग के त्रिविक्रम श्रीविष्णु के; मेत्तियिल्-शरीर की तरह; वैम् पुक्कै-गरम धुआँ; अङ्कु अळुन्तु पोय्-वहाँ से उठकर गया और; परन्ततु आयतु-सर्वत्र व्याप्त हुआ । ११८७

गरम धुआँ घने रूप से उठा और लंका के ऊपर सारे आकाश में फैला । (कवि की कल्पना है कि) वह, पहले वामन के रूप में जाकर दान प्राप्त करने के बाद तीनों लोकों को अपने चरणों से नापकर अपना लेने के निमित्त जो त्रिविक्रम के रूप में संवर्द्धित हुए उन विष्णु के समान रहा । ११८७

नील नित्तु निरुत्तत कीळ्निनै, मालित्, वैञ्जित्त यात्तैयै मानुव
मेल्वि लुन्दैरि मुर्ळम् विळुङ्गलाल्, तोलु रिन्दु कळन्तुत्त तोलैलाम् 1188

नीलम् नित्तु-काले; निरुत्तत-रंग वाले; तोल् अलाम्-गज सभी; मेल् विळुन्तु-ऊपर लगकर; अँरि-आग के; मुर्ळम् विळुङ्कलाल्-पूरी तरह से आवृत कर लेने से; तोल् उरिन्तु-चमड़ा उधड़कर; कळन्तुत्त-दूर हो गया, होकर; कीळ् निनै-पूरब की दिशा के; मालित्-इन्द्र के; वैम् चित्त यात्तैयै-(ऐरावत नाम के) भयंकर क्रोधी गज के; मात्तुव-समान हो गये । ११८८

लंका के गजों के चर्म आग में जलकर दूर हो गये । तब वे सफ़ेद होकर सब पूर्व दिशा के पालक इन्द्र के ऐरावत के समान लगे । ११८८

मीदि मङ्गलन् दालन्तु वैम्बुहै, शोदि मङ्गलत् तीयोडुञ् जुर्लाल्
वीदि मङ्गुलिन् वीळ्पुत्तल् मीप्पडर्, ओदि मङ्गळित् माद रौदुङ्गिनार् 1189

मीतु-ऊपर; इमम् कलन्ताल् अन्त-हिम-मिश्रित-सा जो रहा; वैम्पुक्कै-उस धूम के; चोत्ति मङ्कु अल्-ज्योति जिसकी मन्द नहीं हो रही थी (अमन्दप्रभ); अ तीयोडु-उस अग्नि के साथ; चुर्लाल्-मण्डल बनाता रहा, इसलिए; वीत्ति-वीथियों में; मातर्-स्त्रियाँ; मङ्कुलिन् वीळ् पुत्तल्-मेघ से गिरनेवाले जल को छोड़; मी पटर्-आकाश में उड़ते रहे; ओत्तिमङ्कळित्-हंसों के समान; ओत्तुङ्कितार्-हटकर चलीं । ११८९

हिमावृत-सा वह धुआँ अभेदज्योति अग्नि के साथ मण्डलाकार फैल रहा था । तब राक्षसियाँ उससे बचकर दूर हट जाने लगीं । वे उन हंसों के समान थीं, जो मेघ से गिरे, भूमि पर जमे अशुद्ध जल को छोड़कर उपर उड़े जा रहे हों । ११८९

कल्लि तुम्बलि दाम्बुहैक् कर्इयाल् अल्लि पॅइउ दिमैयवर् नाट्टिडम्
वल्लि कोलि निवन्दत्त मामणिच्, चिल्लि योडुन् दिरण्डत्त तेरैलाम् 1193

कल्लितुम् वलितु-पत्थर से भी घना; आम-जो रहा; पुकै कर्इयाल्-उस धुएँ की राशियों से; इमैयवर् नाट्टु इटम्-देवलोक का सारा स्थल; अल्लि पॅइउ-अन्धकार से भर गया; वल्लि कोलि-ध्वजाओं से अलंकृत करके; निवन्दत्त-ऊँचे बनाये गये; तेर् अलाम्-सारे रथ; मा मणि-श्रेष्ठ रत्नों से सजे हुए; चिल्लियोट्टम्-चक्रों के साथ; तिरण्डत्त-जलकर एक पिंड बन गये । ११६३

धुएँ की लट्टे पत्थर से भी कठोर थीं । उनके घने व्यापने से देवों के लोकों के सारे स्थल अंधकारमग्न हो गये । ध्वजाओं से अलंकृत बड़े-बड़े रथ जो थे, वे सब अपने श्रेष्ठ रत्नजडित पहियों के साथ पिघलकर पिण्डाकार बन गये । ११९३

पेय मन्त्रिनि लन्ऱु पिइङ्गैरि, माय रुण्ड नरुवं मडुत्तदाल्
तूय र्ऱन्ऱिलर् वैहिडन् दुन्तिताल्, तीय रन्ऱियुन् दीमैयुम् जैय्वराल् 1194

पेय मन्त्रिनि-मधुशालाओं में; अन्ऱु-उस दिन; पिइङ्कु अरि-(जो) जली (वह) आग; मायर् उण्ट-मायाचतुर राक्षसों से पीत; नरुवं-सुरा को; मडुत्तदाल्-स्वयं पीने (उसमें लगने) से; तूयर् अन्ऱु इलर्-अपवित्र; वंकु इटम्-(लोगों के) वासस्थान; दुन्तिताल्-जायँ तो; तीयर् अन्ऱियुम्-(ऐसे जो जाते हैं वे) बुरे नहीं होने पर भी; तीमैयुम् जैय्वर्-बुरा काम करेंगे । ११६४

मधुशालाओं में जो आग लगी उसने वहाँ रही ताड़ी का अशन किया । ताड़ी वञ्चक राक्षसों का पान है । पवित्र आग का उसका अशन करना इस मसल का प्रमाण है कि अपवित्र लोगों के स्थान में जानेवाले स्वयं बुरे न होने पर भी बुरे काम कर देते हैं । ११९४

तळुवि लङ्गै तळुङ्गैरि दाय्च्चेल्, वळुविल् वेलै युलैयिन् मरुहित
अळुहौ लुञ्जुडर्क् कर्इशैन् रैय्दलाल्, कुळुवु तण्बुत्तन् मेहड् गौदित्तवे 1195

इलङ्कै तळुवु-लंका में लगकर; तळुङ्कु अरि-शब्द के साथ जलनेवाली आग; दाय् चेल-उछल चली, इसलिए; वळुवु इत् वेलै-अपृथक् रहनेवाला सागर; उलैयिन्-(अन्न पकाने के लिए) खौलते पानी के समान; मरुहित-खौल गया; अळु-ऊपर उठती; कौळुम् चुटर् कर्इ-घनी आग की लट्टे; चैन्ऱु अय्तल् आल्-ऊपर जा पहुँचीं, इसलिए; कुळुवु-घुमड़े हुए; तण् पुत्तल् मेकम्-शीतल जल-भरे मेघ; कौतित्त-गरम हो तपे । ११६५

लंका पर लगी आग सशब्द फैलती हुई चली । इसलिए अपृथक् रहनेवाले सागर का जल धान पकाने के लिए खौलाये गये जल के समान खौल गया । ऊपर उठनेवाली घनी लपटें आकाश तक गयीं, इस वजह से समूह में रहे शीतल जल-भरे मेघ गरम हो गये । ११९५

अनि लोड् मरिपौ डुपड्गुवार, कानि लोड् नुड्मनुन कानि
 वानि लोड् मरिड् मयड्गुवार, वीनि लोड्गुन डेरिड् वीड्गुनवर 1196

अनिष ओड्म-मवज के अवर लानी जलनी, ओरि ओड्-आम से, उड्कुवार-
 डु:वो; वानिष ओड्-अनरिष से मागवोवाले; मकडिर्-राखिया; मयड्कुवार-
 वड्डोण डुड्; कानिष ओड्म-वन से वड्डोण; नुड्म गुवल-वड् प्रवाह; कान् ओवा-वो
 कडकर; वीनिष ओड्-गोम से वड्डोण-मा विवोवाले; अरुम डेर डुड्-अपुव गुजल
 से; वीड्गुनवर-लिटी 1 ११६६

रिखी के मवज के अवर भी आग पड्ककर जलाने लगी।
 असदुष वेदना के साथ वे अनरिष से भागी, पर वेसुष हो गयी। उनके
 सामने गुजल (गिमड से इसे 'गुवरण' कहते हैं।) देखा। कहते लगी
 कि देखो जल में वड्डोवाला जलप्रवाह डुधर है। वे पास गयी और
 लिटी 1 ११६६

वेन वामवोडि रीपडव विनरिष, ओड् सामनरुव गुमिष लोड्गुनवर
 पोम लीचुवड् गुण्डरि डेनडुम, कान सामन वीड्गुन कतिनरुव 1197
 वेन-शहद की मखिया; अवास-वड्डो वाव के साथ आती है; पौडिब-उम
 उखानी से; ली पड-आम लगी, इसलिप; विनरिष-विनर-विनर डुड्; वीड् मा
 मलर-वड-सम वड्ड कौं पर; गुमिष-(मड्गुनोवाले) अमर; वीड्गुन-उम
 लगीनार लीकर; अपल पोम-उमसे डेर भी ध्यान; ली वड्-अनि की जालाओ
 की; गुण्डरि लड्म काम आम-विजाल गुण्डरीकवन है; अत-ऐसा सोचकर;
 वीड्गुन-लिटरकर; कतिनर-राख वने 1 ११६७

उखानी से भी आग लगी, जहाँ शहद की मखिया वाव के साथ
 आती है। आग उखानी के उस पार भी फैल गयी। वड-सम जो गुण्डो
 पर मूड्गु रहे थे, वे आग से डरकर विनर-विनर डुड् और डेर के स्थानों
 पर लगी आग के विरवार की विजाल गुण्डरीक-वन समक्षकर उससे जाकर
 लिटे और अरुम हो गये। ११६७

नरक डुमिड् नमगुपिर् नयडेर, मरक डुनरुड् माण्डवर वीड्गुनवर
 डेरक डुनरिषि डेडलम मापम, विरक डुनर डुनरिषर वीड्गुनर 1198
 निव कडन-धु से भी अधिक मनोरम; गुनरिषर-माल वाली राखिया;
 नम उलिर् नयकर-डेमार माण्डिष पवि; मरकडुम डेर-मकड के मारने से;
 माण्डवर-मर गय; माप-डेम; वीड्गुन डलम-(गुड्डोम के) जीवन से रहित हो
 गय; डुन कडन-धु से बाहर; डुनि-अव; एकलम-वड्डो जा सकती; अत-
 ऐसा सोचकर; डुड् नम कडम-यड् अठ्ठा कनेव वना; अत-यड् निवम करके;
 वीड्गुनर-माण्डिष गयी 1 ११६८

धु के रूप की सुन्दरता की डेरनेवाले जगहों से शोभित राखियायों
 ने सोचा कि डेमार माण्डिष मकड के मार डालने से मर गये। अब

(दक्षिण में प्रचलित प्रथा के अनुसार विधवाएँ) हम बाहर कहीं खुले में आ-जा भी नहीं सकतीं। यही अच्छा काम है—आग में गिरकर सती हो जाएँ। यह निर्णय करके वे आग में कूद पड़ीं। ११९८

पूक्क रिन्दु पौरिप्पौरि यायडै, नाक्क रिन्दु शिनैनरुज् जाम्बराय्
मेक्क रिन्दु नैडुम्बणै वेरुडक्, काक्क रिन्दु करुङ्गरि यानवे 1199

पू-सारे फूल; करिन्दु-झुलसकर काले बनकर; पौरि पौरियाय्-राख के कण बने; अटै ना-पत्र रूपी जिह्वाएँ; करिन्दु-झुलसीं और राख बनीं; चित्तै नडुम् चाम्पराय्-डालियाँ अच्छी क्षार बनीं; मे करिन्दु-ऊपर के भाग जले; नैडुम् पणै-बड़ी शाखाएँ और; वेर् उर-जड़ एक बनकर (समान रूप से); का करिन्दु-उपवन जलकर राख बना, इसलिए; करुम् करि आत्त-काली राख के ढेर बन गये। ११९९

उद्यानों में फूल जले; जिह्वा के स्थान रहे पत्र जले; और छोटी टहनियाँ जलीं। ऊपर के अंश जले। बड़ी-बड़ी डालों की जो गति हुई वही जड़ों की भी हुई। इस भाँति सारे के सारे उद्यान जलकर भस्म के ढेर बन गये। ११९९

कार्मु लुक्क वैळुङ्गनर् करुंरैवोय्, ऊर्मु लुक्क वैदुप्प वुरुहिन
शोरी लुक्क मरामैयिर् रुन्नुवोन्, वेर्वि डुप्पडु पोन्ऱन विण्णैलाम् 1200

कार् मुलुक्क-मेघों को आवृत करते हुए; अँलुम्-उठी; कत्तल् करुंरै-अग्नि की ज्वालाएँ; पोय्-जाकर; ऊर् मुलुक्क-(व्योम-) लोक भर को; वैदुप्प-जलाने लगीं तो; उरुक्कि चोर् ओलुक्कम्-पिघलकर गिरनेवाली अग्निमय धाराएँ; अरामैयिल्-टूटती नहीं थीं, इसलिए; विण् अँलाम्-सारे व्योमलोक; तुन्नु-घने रूप से; पोन् वेर्-स्वर्ण की जड़ें; विटुप्पतु-निःसृत करते; पोन्ऱन-जैसे लगे। १२००

आग की लपटें उठीं और मेघों को आवृत कर गयीं। वह आकाश में फैली और व्योमलोकों को भी ताप देने लगी। तब वहाँ के स्वर्ण पिघले और तारें बनीं। उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो व्योमलोक घनी स्वर्णमयी जड़ें निकाल रहे हों। १२००

नैरुक्कि	मीमिशै	योङ्गु	नैरुप्पळल्
शैरुक्कुम्	वैण्गदित्	तिङ्गळैच्	चैत्तुरु
उरुक्कि	मैयि	नमुद	मुहुत्तलाल्
अरक्क	रुन्जिल	राविपैर्	आररो 1201

नैरुक्कि-बहुत घने रूप से; मी मिचै-आकाश पर; ओङ्कु-उठ रही; नैरुप्पु अल्ल-आग की लपट; चैरुक्कुम्-गर्वोले; वैण् कतिर्-तिङ्कळै-श्वेतकिरण चन्द्रमण्डल में; चैत्तुरु उर-जा लगी, तो; उरुक्कि-उसको पिघलाकर; मैयिन्-(राक्षसों के) शरीर पर; अमुत्तम् उकुत्तलाल्-अमृत बरसाने से; अरक्करुम् चिलर्-कुछ राक्षस भी; आवि पैंऱार्-पुनः जीवित हो गये। १२०१

तब्द-(अथ के) पुरी को बाँटने के पद्म को; कौटिल्य-जलाकर; तब्द
 और-ऊपर उठनी आग; ताम्र-लाल के रसों के साथ; मुँह-बूँद को भी;
 कौटिल्य-जलाकर; मुकतु कूट मीषवेत-मुख पर धन रूप से जो रहे; पूरे उब्द-
 लब्धे वालों को; कौटिल्य-जलाकर; वल्ल कृष्णपत्र-कुंठित छुरी वाले; मणि मित्र-
 सुन्दर रंगीन; वालि-वाली; वल्लव-पुत्रलाकर; उब्धे उरुन-मर गये। १२०३

फिर गले की रस्सियाँ जलायीं; खूँटे जलाये; फिर अश्वों के मुखों पर उगे लम्बे बाल जलाये । इस तरह कुञ्चित खुरों के और सुन्दर रंगीन अश्व तपे, संकटग्रस्त हुए और आखिर जल मरे । १२०३

अँळुन्दु	पीरुलत्	तेरुलि	नीळपुहैक्
कौळुन्दु	शुर्ऱ	वुयिर्प्पिलर्	कोळुर्
अळुन्दु	पट्टुळ	रौत्तयर्न्	दारळल्
विळुन्दु	मुर्ऱिनर्	कूर्ऱै	विळुङ्गुवार् 1204

कूर्ऱै विळुङ्गुवार्-यम को (यों ही) निगल सकनेवाले राक्षस; अँळुन्दु-उठकर; पीत् तलत्तु-स्वर्ण (स्वर्ग) लोक को; एरुलिन्-जब चढ़ जाने लगे; नीळ-लम्बे; पुक्-धुएँ के; कौळुन्दु-किसलय (अग्र भाग) के; चुर्ऱ-घेर लेने से; उयिर्प्पु इलर्-श्वास न छोड़ सकें; कोळ उर्-इस रीति से आवृत होकर; अळुन्दु पट्टु उळर् ओत्तु-फँसकर मरनेवालों के समान; अयर्न्तार्-बेहोश होकर; अळल् विळुन्दु-आग में गिरकर; मुर्ऱितर्-घल बसे । १२०४

राक्षस ऐसे थे कि वे यम को यों ही निगल ले सकते थे । वे आग से बचने के लिए अन्तरिक्ष में उठकर स्वर्णलोक स्वर्ग में जाने लगे । तब धुएँ के अग्रभाग ने उन्हें घेर लिया । तब दम घुटकर धुएँ से आवृत होकर मृतक के समान बेसुध हो गये और अग्नि में गिरकर मर गये । १२०४

कोशि हत्तिनि लुर्ऱ कौळुङ्गनल्, तूशि नुत्तरि हत्तोडुञ् जुर्ऱुर्ऱा
वाश मैक्कुळल् पर्ऱ मयङ्गिनार्, पाशि लैप्पर वेप्पड रल्हुलार् 1205

पचुमै इळै-चमकदार स्वर्णाभरणधारिणी; परवै पटर्-समुद्र-सम विशाल; अल्कुलार्-भगों से युक्त राक्षस-स्त्रियों के; कोच्चिकत्तितिल्-रेशमी वस्त्रों में; उर्ऱ-लगी; कौळुम् कत्तल्-घनी आग; उत्तरिक तूचिन् ओटुम्-उत्तरीय (वस्त्र) के साथ भी; चुर्ऱ उर्ऱा-घेरकर लगी; वाचम् मै कुळल्-सुगन्धित काले केश में भी; पर्ऱ-लगी; मयङ्कितार्-तो चकित हो गयीं । १२०५

उज्ज्वल मनोरम आभरणधारिणी, समुद्र-विशाल भगों वाली राक्षस-स्त्रियों के कौशेय अधोवस्त्रों में पहले आग लगी । फिर उत्तरीय वस्त्रों में लगी । बाद सुगन्धपूर्ण काले केश भी आग के वश हो गये । वेचारियाँ क्या करतीं ? भ्रमित और चकित हो गयीं । १२०५

निलवि	ळक्किय	तुहिलिन	नैरुप्पुण	निरुदर्
इलवि	तुञ्जिल	मुत्तुळ	वैनुनहै	यिळैयार्
पुलवि	यिन्गर्	कण्डव	रमुदुहप्	पुणरुम्
कलवि	यिन्गर्	कण्डिलर्	मण्डितर्	कडन्मेल 1206

पुलवियिन्-संसर्ग की; करै कण्टवर्-विद्या के पारंगत (पूरा कर चुके थे); निरुर्-वे राक्षस; इलवित्तुम्-लाल सेमर में; चिल मुत्तु उळ-कुछ मोती भी हैं;

श्वेय-ऐसा माना जाय, इस प्रकार; नकं इछेयार-दाँतों से शोभायमान नखियाँ; तिल त्रिकोणिक गुकिलित-चाँदनी-से महीन बरतों को; नैरपु उण-आग के जला देते थे; अमुव उक-अपल सुख का अमृत जिसमें छलक आता है; गुणय-बेसा संगीत होवेवाले; कलविधित करे-संसा की वरम सोसा को; कण्डिलर-न पाकर; कटल सल मण्डिलर-समुद्र में जाकर फिर गये। १२०६

संसा में लगे रहें राजस-दत्तनी। लाल सेमर में कुछ मोती हों, ऐसे दाँतों वाली रिय्याँ और उनके पुरय प्रणय-विद्या-पारंगत थे। उनके चाँदनी-सम बरत आग में जल गये। इसलिये सुख अमृत के समान जिसमें तिल होता है, उस संसा-काय के अन्त में आ नही पाये थे। उसी रियति में वे उठ भागे और समुद्र में जाकर मिलकर गिरे। १२०६

पञ्च रत्नोड् पयुनिरुक् किलिन्नड् पदप
अञ्जनक कण्ठि वरविनोर् मुलेमुविर ललेपपक्
कुञ्ज रत्नस कौळनरै लळुवड्ड गीदपपल
मञ्जि डपुड्ड मिन्नैन्नप गृहेयड्ड मडनरै 1207

पञ्च मिं निर किलि-हरे रंग के युक्त; पञ्चरत्नो अटि-पिजरी के साथ; वन-अञ्जनकर; पदप-लङ्कते हैं, तब; अञ्जन कण्ठि-अञ्जनयुक्त नेवाँ से; अरवि नौर-नदी के समान बहनेवाला अञ्जन; मुले मुविर-कुचाय पर; अलेपप-लिरकर डूब देते हैं और; कुञ्जरत्न अल-कुजर के समान; कौळनर-पतियों को; लळुव उञ्ज-आलान करने की (स्वा पड्डकर); कलिवपपल-विषा से; मञ्जु ड्ड-समस्त; पुक्त मिन्न-सुसती बिजली के समान; पुकं ड्ड-पुप के मध्य; मडनरै-अदृश्य हो (मर) गये। १२०७

राक्षसियों ने देखा कि उनके पले हरे रंग के युक्त उनके पिजरी के साथ जलते और लङ्कते हैं। उनकी अञ्जनयुक्त आँखों से अञ्जन सिरता के समान बहने और कुचाय पर गिरे। वे दू-बी ड्डे और अपने मुँह पतियों का, स्वयं में जाकर आलान करने की अपार लपक डूबछा से संचमध्य घुसनेवाली बिजलियों के समान पुपों के अन्दर घुसी और सरकर अदृश्य हो गयीं। १२०७

वरैयि वपुर् मडङ्ग माडङ्ग मरिगुड्ड मरिगुड्ड
पुर्पुल्ल पुरैकल्ल विगिलिड्ड विमुमुविड्ड पवार
करैयि नड्डुड्ड पडल्लियरु करिन्नैन्नर कलङ्गिल
तिरैयि नड्डुपल्लि विन्नैन्नर पवैयि शैलार 1208

वरैयि-पर्वतों से; पुर्-पुल्ल; मडङ्गकळ-शासावों से; अरि पुक-आग लगी ली; मकळिर-रिय्या; पुर् ड्ड-निदोष; पुरै कल्ल-स्वर्णभरण; विन्नै-हट-आग निकालते; विमुमुड्ड ड्ड पोवार-अनरिष में जाली; करै ड्ड-अपार; पुप पुक-सुसम पुप के; पडल्लियल-पटल से; कलङ्गिक-रंग बदलकर; तिरैयि उड्ड

पौलि-पर्व के पीछे विद्यमान; चित्तिर पावैयिन्-चित्रप्रतिमा-जैसे; चैयलार्-व्यवहार करनेवाली बनकर; करिन्ततर्-प्रभा खोकर झुलस गयीं । १२०८

पर्वत-जैसे ऊँचे और बड़े प्रासादों में आग लगी तो वहाँ की स्त्रियाँ अपने दोषहीन स्वर्णभरणों की कांति बिखेरते हुए अन्तरिक्ष में जाने लगती हैं । अपार धुएँ का पटल महीन भी है । उसके पीछे वे मन्दप्रभ दिखती हैं, जैसे पर्व के पीछे से दिखनेवाली चित्र-प्रतिमाएँ । वे आग में झुलसती हैं और मर जाती हैं । वह कार्य भी, वे ही प्रतिमाएँ वैसा हो रही हों, ऐसा दिखता है । १२०८

अहर	बुन्नरुत्	जान्दमु	मुदलिय	वतेहम्
बुहरि	तन्मरत्	तुरुर्वैरि	युलहैलाम्	बोर्प्पप्
पहर	मूळियिर्	कालवैड्	गडुङ्गत्तल्	परुहुम्
महर	वैलैयिन्	वैन्दत्त	नन्दत्त	वनङ्गळ् 1209

पकरुम्-(ग्रन्थों में) उक्त; ऊळियिल्-युगान्त में; काल वैम् कटुम् कत्तल्-प्रचण्ड और उग्र कालाग्नि द्वारा; परुहुम्-सोखे हुए; मकर वैलैयिन्-मकरालयों के समान; नन्तत्त वत्तङ्कळ्-नन्दन वन; अकर उम्-अगर; नरुम् चान्तमुम्-और सुगन्धित चन्दनतरु; मुतलिय-आदि; अत्तेकम्-अनेक; पुकर इल्-दोषहीन; तल् मरत्तु-श्रेष्ठ तरुओं का; उरु वैरि-स्वाभाविक सुवास; उलकु अलाम्-सारे लोक में; पोर्प्प-व्याप जाय, ऐसा; वैन्तत्त-जल गये । १२०९

ग्रन्थों में युगान्तकालीन भयानक कालाग्नि के मकरालयों को सोख लेने की बात कही गयी है । उन मकरालयों के समान नन्दन वन जले । अगर, सुवासित चन्दन-तरु आदि जले । उनसे निकली सुगन्ध सारी दुनिया पर छा गयी । इस भाँति वे सब जल गये । १२०९

मिन्नल्प	रैन्देळु	कौळुञ्जुड	रिलङ्गैयूर्	विळुङ्गि
नितैव	रुम्बैरुन्	दिशैयुर्	विरिहिन्ऱ	निलैयाल्
शिनेप	रन्दैरि	शैर्न्दिला	निन्ऱवुञ्	जिलवैम्
कत्तल्प	रन्दवुन्	दैरिन्दिल	कड्पहक्	कात्तम् 1210

मि(न्) तल् परन्तु-विजली-सा प्रकाश फैलाकर; अळु-उठनेवाली; कौळुम् चूटर्-घनी आग; इलङ्कै ऊर् विळुङ्कि-लंका नगरी को निगल (जला) कर; नितैव अरुम्-अचित्य; पैरुम् तिचै-लम्बी दिशाओं में; उरु-फैली; विरिहिन्ऱ निलैयाल्-विस्तार के कारण; कड्पक कात्तम्-कल्पकानन; चिल-कुछ; चित्तै परन्तु-डालियों में फैली; अरि-आग; चैरन्तु इला निन्ऱवुम्-न जला पायी, ऐसे; वैम् कत्तल् परन्तवुम्-भयंकर आग से जल गये ऐसे; तैरिन्तु इल-इनमें भेद नहीं जाना जा सका । १२१०

विपुल आग की लपटें विजली के समान उठीं । उन्होंने सारी लंका को भस्म कर डाला । फिर वे लम्बी दिशाओं में फैलीं । उनका विस्तार

करिन्दु शिन्दिडक् कडुङ्गन रीडरन्नुडल् कडुव
 उरिन्द मैय्यित्त रीडित्त् नीरिट्टै यौळिप्पार्
 विरिन्द कून्दलुङ् गुञ्जियु मिडैदलिर् रानुम्
 अरिन्दु वेहिन्ऱ दौत्तदव् वैरित्तिरेप् परव 1213

करिन्दु-झुलसकर; चिन्तिट-गिराते हुए; कडुम् कतल्-प्रचण्ड आग;
 तौटर्नु-लगातार; उटल् कतुव-शरीरों पर लपेटे रही; उरिन्द मैय्यित्- (इनसे)
 चमड़ा-उधेड़े शरीर वाले हो; ओटित्-भागो; नीर् इट्टै-जल में; औळिप्पार्-छिपने
 लगे; विरिन्द कून्तलुम्-खुली वेणियों (स्त्रियों की); कुञ्चियुम्-और केश (पुरुषों
 के) दोनों; मिट्टैतलिल्-अत्यधिक मिश्रित रहों, इसलिए; अ-वह; अरि तिरै-
 लहरायमान समुद्र; तानुम् अरिन्दु-खुद जलकर; वेकिन्ऱु-झुलसता; औत्ततु-
 जैसा लगा। १२१३

उग्र आग ने राक्षसों के शरीरों को निरन्तर जलाया और वे चमड़े
 झुलसकर राख बनकर गिर गये। वे भागकर समुद्र के जल के अन्दर छिपे।
 उन पुरुषों और स्त्रियों के केशों और वेणियों से समुद्र भर गया। तब
 वह सागर भी खुद जलता-तपता-सा दिखा। १२१३

मरुङ्गिन् मेलौरु महवुहौण् डौरुतनि महवै
 अरुङ्गै यार्पर्रि मरुङ्गैरु महवुनिन् ररर्
 नैरुङ्गि नीणैडु मैरिहुळल् शुरुक्कोळ् नीङ्गिक्
 करुङ्ग डर्रलै वीळ्न्दन ररक्कियर् कदरि 1214

मरुङ्किन् मेल्-गोद में; और मकवु-एक बच्चा; कौण्टु-लेकर; और
 तत्ति मकवै-और एक बालक को; अरुम् कयाल् पर्रि-अपने अन्य हाथ से पकड़कर;
 मरुङ्ग और मकवु-तीसरा एक बच्चा; निन्ऱु अरुङ्ग-खड़ा होकर रोता आता;
 नैरुङ्कि-घनी; नीळ् नैटुम्-अतिवीर्य; अरि कुळल्-जलती वेणी; चूङ्ग कौळ-
 झुलसती; अरक्कियर्-(इस स्थिति में) राक्षसियाँ; नीङ्कि-अपना-अपना स्थान
 छोड़कर; कतर्-चिल्लाती हुई; करुम् कटल् तलै-काले समुद्र में; वीळ्न्ततर्-
 (जाकर) गिरीं। १२१४

कुछ स्त्रियाँ गोद में एक बच्चा लिये, हाथ से एक बालक को पकड़े
 निकलीं। तीसरा बालक खड़ा रो रहा था। उनकी घनी, लम्बी और
 अग्नि के-से रंग वाली वेणी जलकर झुलसने लगी। वे अपना घर छोड़कर
 विलाप करती हुई भागीं और काले सागर में कूद पड़ीं। १२१४

विल्लुम् वेलुम्बैड् गुन्दमु मुदलिय विरहाय्
 अल्लु डैच्चुड रैन्पुह लैः(ह)हैला मुरुहित्
 तौल्लै नत्तिलै तौडरन्दपे रुणर्वित्त् तौळिल्वोल्
 शिल्लि युण्डैयिर् शिरण्डन्न पडैक्कलत् तिरळ्हळ् 1215
 विल्लुम्-धनु और; वेलुम्-भाले और; कुन्तमुम्-कुन्त; विरुकाय्-इंधन

[illegible]

समुद्र में; विळुन्तत्-गिरे; अँळुन्तिल-ऊपर आ नहीं सके; मरुळिन् मीन्-मदमत्त मछलियों के; कणम्-समूहों के; विळुङ्किट-निगल लेने से; उलन्तत्-मर गये। १२१७

निर्दयमत्त वञ्चकों की शरण में आये हुआओं के समान पक्षीगण डरावने धूमपटल के ऊपर जाने से डरकर काले समुद्र में जाकर गिरे। तो क्या हुआ? उनको ऊपर उठने नहीं देते हुए मदमत्त मछलियों ने निगल लिया। १२१७

नीरै	वर्त्तिडप्	परुहिमा	नँडुनिलन्	दडवित्
तारु	वैच्चुट्टु	मलैहळैत्	तळ्ळुच्चैय्दु	तत्तिमा
मेरुवैप्	पर्त्ति	यैरिहिन्ऱ	कालवैङ्	गनल्बोल्
ऊरै	मुर्ऱुवित्	तिरावणन्	मत्तैपुक्क	तुयर्दी 1218

उयर् ती-ऊँचे उठनेवाली वह आग; वर्त्तिड- (जलाशयों को) सोखते हुए; नीरै परुकि-जल को पीकर; मा नँटु-अधिक विशाल; निलम्-भूतल में; तटवि-फैलकर; तारुवै चुट्टु-लकड़ियों को जलाकर; मलैकळै-पर्वतों को; तळल् चैय्तु-तप्त बनाकर; तत्ति मा मेरुवै-अनुपम और बड़े मेरुपर्वत में; पर्त्ति अँरिकिन्ऱ-लगी जलनेवाली; काल वैम् कत्तल् पोल्-भयंकर कालाग्नि के समान; ऊरै मुर्ऱुवित्तु-नगर को पूरी तरह से जलाकर; इरावणन् मत्तै-रावण के महल में; पुक्कतु-घुसी। १२१८

उठती हुई आग ने जलाशयों को सोखकर जल से खाली कर दिया। भूतल को तपा दिया। लकड़ियों को जलाया और पर्वतों को तप्त कर दिया। अनुपम मेरु को जलानेवाली कालाग्नि के समान वह सारी लंका का नाश करने के बाद रावण के महल में जा लगी। १२१८

वान	मादरु	मर्ऱुळ	महळिरु	मर्ऱुहिप्
पोत्त	पोत्तदिक्	कनैवरु	मर्ऱिहिलर्	पोत्तार्
एत्तै	निन्ऱव	रैङ्गणु	मिरिन्दन	रिलङ्गैक्
कोन	वात्तवर्	पदिहोण्ड	नाळैत्तक्	कुलैन्दार् 1219

वात्त मातरुम्-अप्सराएँ; मर्ऱुळ उळ-और रहनेवाली अन्य; मर्ऱुळिरुम्-स्त्रियाँ; अत्तैवरुम्-सभी; मर्ऱुकि-दहलकर; पोत्त पोत्त तिक्कु-गमन की दिशा; अर्ऱिकिलर् पोत्तार्-नहीं जानती गयी; एत्तै-अन्य; निन्ऱवर्-जो खड़ी रह गयीं, वे; अँङ्कणुम् इरिन्तत्-सर्वत्र भटकीं; इलङ्कै कोन्-लंकाधिपति ने; अ वात्तवर पत्ति-(जिस दिन) उस देवलोक को; कौण्ट नाळ् अँत्त-ले लिया उस दिन के समान; कुलैन्दार्-हड़बड़ायीं। १२१९

रावण के महल में अप्सराएँ थीं और अन्य स्त्रियाँ भी। वे सब हड़बड़ाकर गमनदिशा से भी अज्ञात होकर तितर-बितर भागीं। जो नहीं भागी वे इधर-उधर भटकी और जिस दिन रावण ने देवेन्द्र की नगरी

अमरावती की जीव लिपि था, उस दिन की-सी लिपि में आकर डेढ़वर्षापी। १२१९

नवि	गुननकडे	गलवपुडे	गडेपडे	नकेक
पुव	मारपु	मडिबुमन	रिउपन	पुडेपन
देव	तणमळ	गुडिपुडडे	गुलमनन	लेशपिन
पुव	मारनकडे	गुलनदेळम	वरिमळम	वरनदे

गालियुम-कर्वरी और; नरुम कलवपुम-गणदेप; कडेपकम नकेक-कननर-विकसित; पुवम-सुमन; आरपुम-और वरन; अकिउम-आर की लकडिया; अनेक डेवपन-आदि ऐसे; पुकप-पुव वने; तण-शीतल; वडि-पने; मळ-सवा की; पुवम कुलम-वडे समुहो; अल-के समान; लिबपिन-समी लिखाओ की; तैव पावपार-देवी लिपि की; नरुम कुलकळम-सुवातिन कय सी; परिमळ परनल-नये अखे सुवास से वातिन हुए। १२२०

रावण के महेल में कर्वरी, गणदेप, कनपनर के विकसित फूल, चन्दन-काठ और आग के काठ आदि थे। सब गुगुआनि लगे। तब शीतल वने सवा की वडे समुहो के समान ली देवी लिपि की कय थ और लो पडेले हो सुगंध-भरे थे, अब वे और भी नवीन सुवास से सुवासित हो गये। १२२०

गुळम	वैजुडर	नीडरनडिड	पावरन	वौडर
आळि	वैजानन	तणुजोळि	लिरावणन	मवंपिन
अळि	वडेगन	गुणडिड	वुलदेसुम	रुपरनदे
पुळम	वैवदेन	वैरिनदेन	नैडलिन	पुळम

वुळम वम वुडर-वारी और वरे रहनेवाली आग की; लीडरमोतिड-जाने से; पावरम लीडर-किसी के लिए सी आग; आळि वम लिबपु-समुद्र-सम (गणपति) और वासक कोय का; आण लोळिन-वोरकुल; डेरवणन-रावण के; मवंपिन-महेल के; नैड लिन पुळम-साली लने; अळि वम कनन-गुगान की सपकर आग डार; उणुतिड-जलले जाने से; उलकम अनेक उपरनन पुळम-ऊपर के साली लोक; वनन अल-जल गये वसे; अरिनन-जल गये। १२२१

सब वरे रही आग सब जगह जा लगी। लो गुगुम समुद्र-सम गणपति, कीसी और वोरकम रावण का महेल भी जल गया। वडे साल लने का था। डेसलिय गुगान में ऊपर के साली लोक जैसे जले वसे उसका जलना रहा। १२२१

पुनरि	रनसिप	दादलि	लिरावणन	वुरेनर
किनर	मोवुवर	नडनैड	मानिके	कापिल
लेशि	डुडरि	पवडिड	नैडिडर	वुडलिन
	शकुकिमोर	मरवण	डामनन	लेशिन

इरावणन्-रावण का; पुरे तीर्-अकलंक; कुनुइम् औतु उयर्-पर्वत-सम उन्नत; तट नैटु-विशाल; मा निलै-अधिक (सात) तल्लो का; कोयिल्-महल को; पोन् तिरुत्तियतु-स्वर्णनिमित्त था; आतलिन्-इसलिए; निन्ऱ-जो भी स्थित है, उसको; तुऱ्ऱु अरि-लगकर जलानेवाली आग के; परकिट-अशन करने से; नैकिळ्वु उऱ-नरम बनकर; उरुकि-पिघलकर; तैन् तिरुक्कुम्-दक्षिणी दिशा में भी; ओर् मेरु उण्टु-एक मेरु; आम् अँत-है, ऐसा कहने योग्य रीति से; तैरिन्त-दिखा । १२२२

रावण का महल निर्दोष था; पर्वत के समान था । सात तल्लो का बहुत बड़ा मकान था । वह स्वर्ण का था । उसको आग ने जलाया तो वह पिघलकर दक्षिण दिशा का मेरु बना-सा दिखने लगा । १२२२

अतैय	कालैयि	तरक्कुनु	मरिवैयर्	कुळुवुम्
पुतैम	णिप्पोलि	पुट्पह	विमान्ततुप्	पोनार्
नितैयु	मात्तिरै	यावरु	नीङ्गितर्	नितैयुम्
वितैयि	लामैयिन्	वैन्ददव	विलङ्गन्मे	लिलङ्गै 1223

अतैय कालैयिन्-उस समय; अरक्कुनुम्-राक्षस (रावण) और; अरिवैयर् कुळुवुम्-उसकी स्त्रियों का समूह; पुतै मणि पोलि-सजे हुए रत्नों के साथ चमकनेवाले; पुट्पक विमान्ततु-पुष्पक यान पर; पोतार्-गये; यावरुम्-(अन्य) सभी; नितैयुम् मात्तिरै-सोचने मात्र से; नीङ्गितर्-चले गये; नितैयुम् वितै-सोचा हुआ काम करने की क्षमता; इलामैयिन्-न रहने से; अ विलङ्गन् मेल् इलङ्गै-उस त्रिकूटपर्वतस्थ लंका नगर; वैन्ततु-आग में भुन गया । १२२३

तब रावण और उसकी स्त्रियाँ पुष्पक यान पर बैठकर चले गये । अन्य राक्षस भी सोचने मात्र से वहाँ से चले गये । पर बेचारी त्रिकूटपर्वतस्थ लंका सोच नहीं सकी और सोचा हुआ करने का गुण भी उसमें नहीं था (वह जड़ थी) । अतः वह वहीं रहकर जल गयी । १२२३

आळित्	तेरव	तरक्करै	यळलैळ	नोक्कि
एळुक्	केळैत	वडुक्किय	वुलहङ्ग	ळैरियुम्
ऊळिक्	कालम्बन्	दुऱ्ऱदो	पिऱिदुवे	रुण्डो
पाळित्	तोशुड	वैन्दवैन्	नहरैतप्	पहरन्दात् 1224

आळि तेर् अवन्-पहियेदार रथ के स्वामी उस (रावण) ने; अरक्करै-राक्षसों पर; अळल् अँळ नोक्कि-आग्नेय दृष्टि डालकर; एळुक्कु एळु-नीचे के सात के मुक्कावले में ऊपर सात; अँत अटुक्किय-ऐसे एक के ऊपर एक रचे गये; उलङ्कळ्-चौदहों लोक; अँरियुम्-जिसमें जल जायेंगे, ऐसा; ऊळि कालम्-युगान्त का काल; वन्तु उऱ्तो-आ गया क्या; पिऱितु-या) अन्य; वेरु उण्टो-कुछ हो गया; नकर्-नगर; पाळि ती चूट-बड़ी आग के जलाने से; वैन्ततु अँन्-जल गया क्यों; अँत-ऐसा; पकर्न्तान्-पूछा । १२२४

पड़ियों वाले रख के खापी रावण ने तब आनेय नेवीं से राक्षसों को देखकर उनसे प्रथम किया कि क्या एक के ऊपर एक चूने हुए, नीचे और ऊपर के चौदहों भूवनों की जलनेवाला गुगुल आ गया ? या और कुछ हो गया ?

नगर बड़ी आग में जला क्योंकर ? । १२२४

करुणाले कर्पणवत् तड़ितले विहवीड्ड गणार्
हरुणु हिरुवत् नरकेशरी विषमविन विरुपु
नरुणु वेलपि व्रिषदत्त वालिदत्त तळलाल
कुरुणु गुदददी वृत्रुलि विरावणन कीविनेनन 1225

तम किछे-अपने परिवारों की; विरु ओडेम-सप्तवि के साथ; कालार-जी देव नहीं रहे थे (जो चुके थे); हरुकुलिगु-दुःखी; बल अरुकेकर-बलवान (जग) राक्षसों ने; करुणाले कर्पणवत्-हाथ जोड़कर; देव इषमपिबत्-यह कहे; इरुणुप-खापी; नरककर्म वेलपि-नरगायमान समुद्र से भी; नृदिप-विदेव रूप से; तम बाले-अपनी पूँछ में; इदत्त तळलाल-लगायी गयी आग से; कुरुणु-वानर का; चंदरु देव-जलने का काम है यह; अंगुडुप-कहेने हो; इरावण कीविनेनन-रावण खोल उठा । १२२५

पड़ने हो राक्षस अपने ब-धु-बा-धवी और परिवारों के साथ अपनी सारी सप्तवि खा चुके थे । वे दुःखी थे । उन्होंने हाथ जोड़कर यह उत्तर दिया—प्रभु ! वानर ने अपनी पूँछ पर लगायी गयी, नरगायमान समुद्र-सम विपुल आग से जलने का जो काम किया उसी का फल यह है ! यह सुनकर रावण उबल पड़ा । १२२५

इरुणु पुनरुलिउरु कुरुणुलिउरु वलिपिब
निगुणु वृत्रुमग नीरुणु हिरुवत् वलिपिब
निगुणु नेकलिउ हिरुवत् विरुवणन नककान 1226

इरुणु-आग; पुन नीलिउ-शुद्धकर्म; कुरुकु-वानर; ननु वलिपिबाल-अपने बल से; इलउके निगु-लका खूब जलनी है और; या नीउ अंलिउकिउरु-बहुत राख निकलनी है; ननुपु निगु-आग अथान कर; नेककु इरुकिउरु-उकार लेनी है; नेवरुकउ-देवलीग; विरुपुपार-हैसी; इरावणन पीरु वलि-रावण का पुच्छबल; ननुउ ननुउ-बला है; अउल है; अंग-कहेकर; नककान- (कीध की हैसी) हुआ । १२२६

रावण ने कहे कि हूँ ! आग शूद्ध-कर्म एक वानर के बल से लंका विधर रूप से जलनी है और भस्म उठनी है ! आग अथान करके उकार ले रही है ! देव लोग हैसी ! रावण का पुच्छपरकर्म बड़ा अच्छा रहो ! बड़ा भला वना ! यह यह कहकर उठकर (कहे हैसी) हुआ । १२२६

उण्डनै रूपैक्, कण्डनर् पड्रिक्
कौण्डणै हेन्त्रान्, अण्डरै वेन्त्रान् 1227

अण्डरै वेन्त्रान्-देवों के विजेता ने; उण्ड नैरूपै-(लंका का) अशन करनेवाले अग्निदेव को; कण्डनर्-देखनेवाले; पड्रिक् कौण्ड-पकड़कर; अणैक-आओ; अँन्त्रान्-आज्ञा दी । १२२७

देवों के विजेता रावण ने आज्ञा निकाली कि लंका के दाहक अग्निदेव को जो भी देखें वे उसे पकड़ ले आवें । १२२७

उड्रह लामुन्, शैड्र कुरङ्गैप्
पड्रमि नैन्त्रान्, मुड्र मुत्तिन्दान् 1228

मुड्र मुत्तिन्तान्-अत्यधिक क्रुद्ध रावण ने; शैड्र कुरङ्कै-हानिकारक बन्दर को; उड्र अकला मुन्-वहाँ छोड़ जाने से पहले; पड्रमिन्-पकड़ लो; अँन्त्रान्-कहा । १२२८

अतिक्रुद्ध रावण ने आगे कहा कि हानिकारक मर्कट को उसके वहाँ जाकर बचने के पूर्व ही पकड़ लाओ । १२२८

शारय त्रिन्डार्, वीरर् विरैन्दार्
नेरुदु मँन्डार्, तेरिन् शैन्डार् 1229

चार् अयल् त्रिन्डार्-लगे जो पास रहे; वीरर्-वे वीर; नेरुम् अँन्डार्-सम्मत हैं, कहा; विरैन्तार्-शीघ्र; तेरिन् चैन्डार्-रथ पर सवार हो गये । १२२९

पास लगे जो खड़े रहे उन वीरों ने कहा कि जैसी आज्ञा ! वे शीघ्र रथों पर सवार होकर चले । १२२९

अँल्लै यिहन्डार्, विल्लर् वँहुण्डार्
पल्लदि हारत्, तौल्लर् तौडर्न्दार् 1230

अँल्लै इकन्तार्-असीम; विल्लर्-धन्वी वीर; वँकुण्डार्-क्रुद्ध हुए; पल् अतिकार-अनेक अधिकार के पदों पर; तौल्लर्-बहुत काल से रहनेवाले; तौडर्न्तार्-पीछे गये । १२३०

अपार धन्वी वीर रोष के साथ उठे । अनेक अधिक अनुभवी पदाधिकारी भी उनके पीछे गये । १२३०

नीर्हँळु वेलै निमिर्न्दार्, तार्हँळु तानै शमैन्दार्
पोर्हँळु मालै पुनैन्दार्, ओर्हँळु वीर रुयर्न्दार् 1231

उयर्न्तार्-उनमें बड़े; ओर् अँळु वीरर्-सात वीर; पोर्हँळु मालै पुतैन्तार्-युद्धचिह्न श्रेष्ठ माला पहनकर; नीर्हँळु-जल-भरे; वेलै-सागर के समान; निमिर्न्तार्-उमग उठे; तार्हँळु तानै-अग्रसेना में; चमैन्तार्-मिलकर गये । १२३१

मातिरम्-सभी दिशाओं से; वालिन्-अपनी पूँछ से; वळैतूतान्-(राक्षसों को) घेर लिया; पातवम् औन्तू-एक पादप; पशितूतान्-उखाड़ लेकर; मोतितन्-उससे पीटा; मोत-पीटने से; मुतिन्तार्-क्रुद्ध शत्रुओं ने; एतियुम्-हथियारों और; नाळुम्-अपनी आयु के दिन; इळन्तार्-खो दिया । १२३५

उसने सभी दिशाओं से उन्हें आवृत करके एक पादप उखाड़ लिया और उससे उनको पीटा । पिटाई से क्रुद्ध उन शत्रुओं ने अपने हथियारों से ही नहीं, बल्कि अपनी आयु से भी हाथ धो लिया । १२३५

नूरिड मारुदि नौन्दार्, ऊरिड वूनीड पुण्णीर्
शेरिड वूरिडु शैन्दी, आरिड वोडिन दाशाय् 1236

मारुति-मारुति के; नूरिड-पीटने से; नौन्दार्-दुःखी हुए राक्षस; ऊरु इट-व्रणों के बनने से; ऊन् ओटु पुण्णीर्-मांस के साथ बहनेवाले व्रणनिर्गत रक्त; चेड इट-कदम बना दिया उससे; ऊर् इट-नगर में लगी; चैम् ती-लाल आग; आरिड-बुझ जाय ऐसा; आशाय् ओटित्तु-नदी के रूप में बहा । १२३६

मारुति का आघात पाकर राक्षस पीड़ित व दुःखी हुए । उनके शरीरों पर व्रण बने और मांस बहाते हुए व्रण-निर्गत रक्त नदियाँ बनकर लंका पर लगी आग को बुझाते हुए बहा । १२३६

तोइरिनर् तुज्जित् रल्लार्, एइरिहल् वीर रैदिरन्दार्
काइरिन् महन्गलै कइरान्, कूइरिन् मुम्मडि कौन्त्रान् 1237

तुज्जित् अल्लार्-विना मृतक हुए; तोइरिनर्-जो दिखायी दिये; एरु-पुरुष सिंह के समान; इकल् वीरर्-योद्धा वीर; ऐतिरन्तार्-हनुमान से टकराये; कलै कइरान्-कलानिपुण (हनुमान); काइरिन् मकन्-पवनसुत ने; कूइरितुम्-यम से; मु मडि-तिगुने (जोर से); कौन्त्रान्-मार डाला । १२३७

जो नहीं मरे वे वीर उसके सामने आये । पुरुष सिंह के समान उन योद्धा वीरों ने हनुमान से युद्ध छेड़ा । सर्वविद्यापारंगत हनुमान ने यम से तिगुने जोर के साथ उनका हनन कर दिया । १२३७

मज्जुइळ् मेनियर् वत्तूओळ्, मीयम्बित् वीरर् मुडिन्दार्
ऐम्बदि नायिर रल्लार्, पैम्बुत्तल् वेल् पडिन्दार् 1238

मज्जु उइळ्-मेघ-सम; मेतियर्-काले रूप वाले; वत्तू तोळ्-सबल कन्धों के; मीयम्पित् वीरर्-साहसी वीर; ऐम्पित् नायिरर्-पचास सहस्र; मुटिन्तार्-मरे; अल्लार्-अन्य; पैम् पुत्तल् वेल्-हरे जल के समुद्र में; पडिन्तार्-गिरे (डूबे) । १२३८

पचास सहस्र मेघवर्ण वीर्यस्कंध राक्षस उसके हाथों मरे । जो बचे, वे हरे जल के समुद्र में जा गिरे । १२३८

वतववर् शील मडिजेवत, वृत्तिवर् वीर्य विपदवर् उपवर्देन वीर्य वृत्तवर्, वृत्तवर् नालेदे पालवर्देन 1242

उयर्न्तात्-अन्तरिक्ष में उठा; पैम् तौटि-चमकदार आभरणभूषित (सीता) के; ताळकळ्-पैरों पर; पणिन्तात्-विनत हुआ । १२४२

आगत विद्याधरों के यों कहने पर बड़ा सामर्थ्यशाली वीर हनुमान हर्षित हुआ । सीताजी की महिमा से विस्मित हुआ । उसे राहत मिली कि मुझ पर दोष नहीं लगेगा । वह ऊपर उड़ा । उसने आकर चमकीले स्वर्णाभरणधारिणी सीताजी के श्रीचरणों पर नमन किया । १२४२

पार्त्ततत्तळ् शान्हि पाराक्, कूर्त्तैरि मेत्ति कुळिर्न्दाळ्
वार्त्तैयन् वन्दतै यैन्नाप्, पोर्त्तौळिल् मारुदि पोत्तान् 1243

पार्त्ततत्तळ्-देखा; चात्कि-जानकी ने; पारा-देखते ही; अँरि मेत्ति-जलता रहा शरीर; कूर्त्तु कुळिर्न्ताळ्-खूब शीतल हुआ, ऐसी (हर्षित) हुई; वार्त्तै यैन्-कहने को क्या है; वन्दतै अँन्ता-वन्दना कहकर; पोर् तौळिल् मारुति-युद्धकर्म-कुशल मारुति; पोत्तान्-चला गया । १२४३

जानकी ने हनुमान पर अपनी दृष्टि फेरी । आश्वस्त हुई और उनका तपता शरीर शीतल हुआ; आगे वचन के लिए कहाँ स्थान है ? हनुमान ने 'नमस्कार' कहा, और विदा ली । फिर युद्धचतुर मारुति लौट चला । १२४३

तैळळिय मारुदि शैन्नात्, कळळ वरक्करहळ् कण्डाल्
अँळुवर् पङ्गव रैन्ता, ओळ्ळैरि योन् मीळित्तान् 1544

तैळळिय मारुति-सुलझी हुई बुद्धि वाले मारुति; शैन्नात्-चला गया; कळळ अरक्करहळ्-चोर राक्षस; कण्डाल्-देखेंगे तो; अँळुवर्-निन्दा करेंगे; पङ्गवर्-पकड़ेंगे; रैन्ता-ऐसा समझकर (डरकर); ओळ् अँरियोत्तुम्-ज्वलन्त अग्निदेव भी; मीळित्तान्-छिप गया । १२४४

ज्वलन्त अग्निदेव भी यह सोचकर छिप गया कि सुलझा हुआ बुद्धिमान हनुमान भी (मुझे अकेले छोड़कर) चला गया । चोर राक्षस देखेंगे तो मुझे गाली देंगे और पकड़ (रावण के पास) ले जाएँगे । १२४४

14. तिरुवडि तौळुद पडलम् (श्रीचरण-वन्दना पटल)

नीङ्गुर्वन् विरैवि तैन्नु निनैवित्तन् मरुङ्गु निन्ऱु
आङ्गौरु कुडुमिक् कुन्ऱै यरुक्कनि लणैन्द वैयन्
वीङ्गिन नुलहै यैल्लाम् विळ्ळुङ्गिन नैन्त वीरन्
पूङ्गळ् रीळुदु वाळ्त्ति विशुम्बिडैक् कडिदु पोत्तान् 1245

विरैविन्-शीघ्र; नीङ्गुर्वैन्-छोड़ जाऊँगा; तैन्नु निनैवित्तन्-यह विचार करनेवाला; आङ्गु-वहाँ; मरुङ्गु निन्ऱु-पास रहनेवाले; ओरु कुडुमि कुन्ऱै-

एक निखर-सहित पर्वत पर; अरुक्कलिन-सूय के समान; अर्धनख ऐयन-जो पर्वत पर महिमावान्; उनके अंगनाम-सादे लोको को; विळुक्किलन अंगन-उदरय निहोले किया उन (अविष्णु) के समान; वोडुक्किलन-विरोड रूप लेकर; वीर-वीर और स्तुति करके; विरुसुडु डट-अनरिष म; कटि पौवान-शीघ्र गया। १२४५

सवेग जाने का निश्चयकारी हेतुमान वही पास रहे एक पर्वत-शिखर पर उदयाचल पर सूय-जैसे वर्त। महिमावान हेतुमान ने निश्चय के विष्णुदेव के समान निश्चरूप धरा। शीराम के सुन्दर पायलधारी चरणों की संस्तुति की। फिर वह शीघ्र गया। १२४५

सूयनाह सूनन निमर कुनरुय सरिब मरुडिक्
 कननाह सनयी मरुडु उणरुनेलिनन कणलिन कालप
 पुननाह निरुक्कुम वीरु नननेडु वरवु पारुक्कुम
 कोपुननाह नरुननेडु शिनडुडु गुवडिडुक् कडिपुडु गौण्डान 1246

के नाक अंगुली-सूड वाले नाग (करि) के समान रहनेवाले साबलि ने; सनाक-सनाक; अंगुल निमर-नाम के साथ स्थित; कुनरुय-पर्वत को; सरिब अंगुलि-क्रम से पर्वतकार; उरुडु उणरुनेलिनन-लंका में जो घटी वह वृत्तान्त गुनाया; कणलिन काल-एक क्षण की देर में; नने नंदम वरव पारुक्कुम-वहिल देर से अपनी प्रतीक्षा करनेवाले; प नाकम-कले कनो वाले सय; निकरुक्कुम वीरु-से वृत्त वीर (जहाँ रहे); कप नाक-लोडने योग्य सुदृग्गना के फल; नडम नेने विनयुम-लिख पर गहिर निरासे थे; कुनरु डट-उम (महेन्द्र) पर्वत पर; कुलिपुम कोण्डान-कूब १२४६

सूड वाले नाग-सा वह वीर यथाक्रम सनाक पर्वत पर पर्वत। उससे उसने लंका का वृत्तान्त पूरा बताया। फिर एक ही क्षण की देरी में वह महेन्द्र पर्वत पर आ गया। उस महेन्द्र पर्वत पर वहुत देर से अंगवलि वीर कन-उठान सयों के समान फिर उठकर उसके आने की राह देख रहे थे। वह पर्वत ऐसा था, जिस पर लोडने योग्य (विकसित) सुदृग्गना फल गहिर निरा रहे थे। १२४६

पोपुवरुडु गहम सुरिडु उववडोर पोपुमल पोङ्गा
 वापुवुरीडु निमर वीरि वीर वानर पोपुवुरीडु
 पोपुवरु पोळन लोडग निरुनडम पडवप पारुपुवले
 पोपुवरुके कणड वनन ववुडैयिडु उडिरनेना रममा 1247

पाप वर-जिसमें अति निम गति से आता है; नीळवेळु आडुकण-उम नीड के आवर; वरुनन-रहे; पडव पारुपु-पक्षी के बच्चे ने; नाप वर-माला की आले; कणड अंग-देख लिया जैसे; वापु वुरीडु निमर-गुल छलिकर जो सय प्रकट कर रहे थे; वीरि वानर वीरु-लिखयी वानर वीर; पोपु वरम कवम-हो आने का

कार्य; मुद्गिर्ग-सम्पूर्ण हुआ; अन्तपतु-ऐसा; ओर् पौममल् पौङ्क-अनुपम आनन्दजनित सौन्दर्य के बढ़ने से; उवकैयिल्-हर्षातिरेक से; तळिर्त्तार्-प्रफुल्लित हो उठे । १२४७

नीड़ में विहग-शिशु माता पक्षी की प्रतीक्षा में हैं । तब मादा पक्षी सरपट अन्दर घुस आता है । उसको देखकर खग-शिशुओं की जो हालत होती है, उसी स्थिति में आये वे विजयी वानर वीर, जो अपना मुख खोलकर मारुति सम्बन्धी भय को प्रकट बोल रहे थे । तब उन्हें यह देखकर आनन्द हुआ कि लंका-गमन का आशय सुसम्पन्न हो गया । आनन्द से उनकी देहकांति बढ़ी । हर्षातिरेक से उनके शरीर प्रफुल्लित हुए । १२४७

अळदन्तर् शिलवर् मुत्तिन् आर्त्तन्तर् शिलव रण्मित्
तौळुदन्तर् शिलव राडिल् तुळ्ळित्तर् शिलव रळ्ळि
मुळ्ळुडु विळ्ळुङ्गु वार्पोन् मौय्त्तन्तर् शिलवर् मुद्गम्
तळुवित्तर् शिलवर् कौण्डु शुमन्तन्तर् शिलवर् ताङ्कि 1248

चिलवर्-कुछ; अळुतन्तर्-(आनन्द के कारण) रोये; चिलवर्-कुछ वानरों ने; मुत्तिन्-उसके सामने खड़े होकर; आर्त्तन्तर्-आनन्दगर्जन किया; चिलवर्-कुछ एक ने; अण्मि-पास जाकर; तौळुतन्तर्-नमन किया; चिलवर्-कुछ; आटि-नाचे; तुळ्ळित्तर्-उछले; चिलवर्-कुछ; अळ्ळि-उठाकर; मुळ्ळु उड-पूर्ण रूप से; विळ्ळुङ्गुवार पोल्-निगल जायेंगे जैसे; मौय्त्तन्तर्-बहुत पास आये; चिलवर्-कुछ; मुद्गम्-पूर्ण रूप से; तळुवित्तर्-लिपट गये; चिलवर्-कुछ वीरों ने; कौण्डु ताङ्कि-उठा लेकर; चुमन्तन्तर्-धारण कर लिया । १२४८

हनुमान को देखकर कुछ वानर वीर रोये । कुछ एक ने उच्च आनन्दघोष किया । कुछ ने जाकर नमन किया । कुछ नाचे-उछले । कुछ इतने समीप गये, मानो उसे यों ही उठाकर निगल लें । कुछ उससे बिल्कुल लिपट गये । कुछ ने उसे उठाकर अपने सिर पर रख लिया । १२४८

तेत्तौडु किळ्ळुङ्गुडु गायु नरियन् वरिदिर् रेडि
मेन्मुडै वैत्तो मण्ण नुहर्न्दनै मेलिवु तीर्दि
मात्तवाण् मुहमे यैङ्गट् कुरैत्तडु माड्द मन्तात्
तानुहर् शाह मेल्ला मुडैमुडै शिलवर् तन्दार् 1249

चिलवर्-कुछ एक ने; अण्णल्-सहिमामय; मात्त-महान्; वाळ्-उज्ज्वल; मुक्के-मुख ही ने; माड्दम्-(शुभ-) समाचार; अँङ्कट्कु-हमें; उरैत्तनु-बता दिया; नरियत्त-स्वादिष्ट; तेन् ओट्टु-मधु के साथ; किळ्ळुङ्गुम्-कन्द और; कायुम्-फल (तरकारी); अरितिल् तेटि-कण्ट के साथ खोजकर; मेल् मुडै-अच्छे क्रम से; वैत्तोम्-(हमने) रखे हैं; नुकरन्तत्तै-भुगतकर; मेलिवु-थकावट; तीर्त्ति-दूर करो; अँन्ता-कहकर; ताम् नुकर-अपने भोज के लिए सुरक्षित;

बाकस अल्लस-समी गार्को को; मुई मुई-वारी-वारी से; तनवार-गार
दिया। १२४६

कुछ वानरों ने कहा—महिमावान ! तुम्हारे रोजीले और सहेस
वदन ने सारा वृत्तान्त बतल दिया है ! अब तुम रघुपतिदेव शत्रुघ्न, कन्द और
तरकारी (कच्चे फल जो यों ही भोजन के रूप में खाये जाते हैं) भोजी
और विद्यान्त हो जाओ। हमने वह सब कण्ड के साथ हँस लोकर रख
दिए। यह कहकर उन्होंने वारी-वारी से अपने भोजन के लिए सुरक्षित
रखे हुए शाक आदि लाकर दिये। १२४९

राजदेहिनें मारिबरें खीळरें खीळरें उल्लसिबरें उल्लसिबरें
बाळदेहिनें बोलिबरें बाळ मळदेहिनें बाळदेहिनें वृणवरें वृणवरें
नाळदेहिनें वृणवरें वृणवरें नमसिबरें नमसिबरें कणवरें कणवरें
ऊळदेहिनें नोकोकि नोकोकि वृणवरें वृणवरें नोमदरे 1250

राजकलिन-परी से; मारिबरे-वध से; नोमिबरे-काथी पर; नल्लसिबरे-
सिर पर; नर के नमसिबरे-विद्यान्त होयों से; बाळकलिन-नल्लवारी से; बोलिबरे-
सालाशों से; बाळ मळकलिन-गार-वधियों से; वरिकरुनेन-सिरकर वधे; वृणकले-
भणों की; उल्लसिबरे-संधार से वीत गये; नाळकले-बले-दिनों के समान
(अगिन) : नमसिबरे-नमस्क के; कणव नोकोकि-गरीर पर नगा; ऊळ कळि-
पूर्ण रूप से; नोकोकि नोकोकि-देवकर; उल्लरे उक-गण निकल जाए, ऐसा;
वपिरुनेव-समस्त छोड़ें हुए; नोमदरे-पीड़ित हुए। १२५०

वानरों ने उन गणों की देख लिया जो हनुमान के पूरों, वध, कपों,
सिर और विद्यान्त होयों से नल्लवारी, गालाशों और गार-वधों द्वारा नगा
गये थे। उसके गरीर के गणों की उन्होंने पूर्ण रूप से देखा तो उनकी
समस्त ऐसी चलेने लगी, मानो वे गण निकलकर ले जायें। उन्होंने वह
पीछा का अवशेष किया। १२५०

बालिहारे वलनें मुनें वणवरेन वणवरेन मुनें वणवरेन
काळिउरे पणवरेन पणवरेन पणवरेन पणवरेन पणवरेन
पुणरे विपरेन पणवरेन पणवरेन पणवरेन पणवरेन
बालना पणवरेन पणवरेन पणवरेन पणवरेन पणवरेन 1251

मुनें-पणवरेन-बालिहारे वलनें मुनें वणवरेन-वणवरेन-मुनें वणवरेन-
करके; अणिकने वेनें-रोजी के राला (गाम्बवान) को; काल उर-वरणों से
लगाकर; पणवरेन-नमन करके; पणवरेन-वध; कडवारेकरके अल्लसिबरे-विनका करना
बाहिए, उन सबका; कडने मुई-पणवरेन आदर आदि; पण उर-उल्लसिबरे रीति
से; वपिरुनेन-करके; आळकण वणवरेन-वहो रडकर के; वणवरेन-वहोकरके
अल्लसिबरे-पणवरेन जो रहे उन (आप) सबको; गाल नोकोकि वधे-गाम्बवान को; नोमि-
देवी से; नमो-हिलेशीवारे; बोलिबरे-कहे; अणवरेन-कहे (हनुमान) से। १२५१

हनुमान ने सबसे पहले वालीपुत्र को नमस्कार किया । फिर रीछों के राजा जाम्बवान के पायँलागन किया । फिर जिन-जिनका जैसा-जैसा आदर दिखाना चाहिए, वैसे उनकी अभ्यर्थना की । फिर वहाँ एक ओर आसीन होकर हनुमान ने उन लोगों से कहा कि जगन्नाथ की देवी ने यहाँ रहे तुम सबको अपनी शुभ कामना भेजी है । १२५१

अँन्रलुङ् गरङ्गळ् कूपि यँळुन्दत्त रिङ्गञ्जिप् पोर्ङ्गि
निन्ऱन रुवहै पौङ्ग विम्मला निमिर्नुद नँञ्जर्
शँत्तुडु मुदला वन्द दिङ्गदियाय् चँप्पर् पाले
वन्ऱिऱ लुरवो यँन्तच् चोल्लित्तन् मरुत्तिन् मैन्दन् 1252

अँन्रलुम्-कहते ही; अँळुन्तत्तर्-वे सब उठे; करङ्गळ् कूपि-हाथ जोड़कर; उवकै पौङ्क-उभगते आनन्द के साथ; इङ्गञ्चि-नमन करके; पोर्ङ्गि-स्तुति करके; विम्मलाल्-आनन्द-स्फीति से; निमिर्नुत्त नँञ्चर्-उत्साहपूर्ण मन के साथ; वन् तिङ्गल्-बहुत अधिक; उरवोय्-बलवान; चँत्तुत्तु मुत्तल् आ-जबसे गये, तबसे लेकर; वन्ततु इङ्गितियाय्-आने तक का (वृत्तान्त); चँप्पल् पाले-कहिए; अँन्त-कहने पर; मरुत्तिन् मैन्तन्-मरु के पुत्र ने; चोल्लित्तन्-कहा । १२५२

हनुमान के ऐसा कहने पर सब उठ खड़े हुए । हाथ जोड़कर सीताजी की स्तुति की । उनके सीने आनन्द की स्फीति से फूल गये । उन्होंने हनुमान से याचना की कि अतिबली वीर ! तुम्हारे यहाँ से जाने से लेकर यहाँ लौट आते तक जो हुआ वह सारा वृत्तान्त सुनाओ । पवन-सूनु ने सब बातें कहीं । १२५२

आण्डहै देवि युळ्ळत् तरुन्दव ममैयच् चोल्लिप्
पूण्डये रडैया ळङ्गैक् कौण्डदुम् बुहन्ऱु पोरिल्
नीण्डवा ळरक्क रोडु निहळ्न्ददुम् नैरुप्पुच् चिन्दि
मीण्डदुम् विळम्बान् इान्ऱत्त वँन्ऱियै विळम्ब वँळ्हि 1253

आण् तकै-पुरुषश्रेष्ठ; तेवि उळ्ळत्तु-देवी के मन के; अरुम् तवम्-अभूतपूर्व (पातिव्रत्य-संकल्प रूपी) तप को; अमैय चोल्लि-साफ़ बताकर; पूण्ड-उनके पहने हुए; पेर् अटैयाळम्-प्रबल अभिज्ञान; कै कौण्डत्तुम्-हाथ में लेना भी; पुक्कन्ऱु-बताकर; तत्त वँन्ऱियै-अपनी विजय को; तान् विळम्प-खुद कहने से; वँळ्कि-लजाकर; पोरिल्-युद्ध में; नीण्ड वाळ्-लम्बी तलवारों वाले; अरक्करोटु-राक्षसों के साथ; निकळ्न्तत्तुम्-जो हुआ वह; नैरुप्पु-और आगे; चिन्ति-लगाकर; मीण्डत्तुम्-लौटना; विळम्पान्-बोला नहीं । १२५३

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने देवी के दृढ़ मन के पातिव्रत्य-तप की श्रेष्ठता को साफ़-साफ़ बताकर उनके पहने हुए आभरण को प्रमुख अभिज्ञान के रूप में प्राप्त कर आने का वृत्तान्त भी सुनाया । अपनी विजय-कहानी अपने

सूत्र से कहने से लजाकर उसने लंका में युद्ध में लम्बी लज्जारधारी राजाओं के साथ जो हुआ वह और लंका-दहन आदि समाचार नहीं कहे । १२५३

पौरुषं गुणं शीलं वीर्यं शौर्यं
उरुशय ऊरुनी पिदत दोडुल्लिमं
कदलरं पुरुषं देवि मीणाडिलाम्
नीरिदर वृणरुनेम विनं रूनिविनि नेरव देवरेर 1254

पौरुष-लक्षण; गुण शील-शय हो कहते हैं; वीर्य-शीत-शीत पला; पौरव लंका-लौट आना हो; उरु शय-बलता है; ऊरु नी कदल-मगर में आग लगाता; शौर्य-उठा; इरु पुरुष-विपुल धर्म हो; शील-शील करता है; कदलर-शायों के; पुरुष-वर्णन को; देवि-देवी का; मीणाड डल-न लौट आने का; वृणल-काम्य हो; कदलर उणरुनेम-साझ समझ गये; नीरदर-निर; शूरु डलि नेरव-क्या है समझने को; अंगरे-कहा । १२५४

(नी श्री वानर वीर अगमान कर गये । उन्होंने कहा—) गुमने वही युद्ध किया, यह सुन्दर शरीर के बग हो वना रहे हैं । गुमने विजय पायी यह बाल गुन्दारे लौट आने के प्रकार से हो साफ विदित हो गयी । गुमने लंका में आग लगायी—यह बाल वही जो वना हुआ उठा, उससे हमने जान ली थी । देवी लौट नहीं आयी—यह बाल शत्रुओं के वलगीरव को साफ बला रही है । हम सब समझ गये । फिर क्या है, गुमने पुँठकर जान लेने को ? । १२५४

पावडु मिनिवे रूणं वेणुव विरुयु मिनेल
शिवरं रिव लनेके कण्डु विरेविरे वृपि
आवदव वण्ण वुळवे लनेदुय ररेर लेयाम
वीवडु गुलम धुंनप पुरिकेन वुळवे पोवार 1255

डल-आगे; वेणु अणु वेणुव-अणु कुछ सींचने को; पावडु इरुयु डल-कुछ भी बरती थी नहीं है; आव-जा करता है; वरे; वेकम-शरीर-रिव को; रिव लने-देवी को; कण्डु-जा देवा है; विरेविरे-(वरे) गीत; वृपि-कहेकर; अणुल वळवे-महिमावान प्रभु के मन का; अरुम वृप-कठोर दुःख को; अकरुल प आम-दूर करना हो है; पीव-जाना; गुलम-वृद्धिमान का काम है; अंगन-कहेकर; पुरिकेन अंग-सहेसा; अळवे पोवार-उठ के बले । १२५५

(सब वीरों ने एक साथ विचार ।) अब सींचने के लिए कुछ भी नहीं, कोई भी विषय नहीं । अब करना यही है कि शरीर-रिव की पत्नी से पूँट करने की बात शीघ्र जाकर कहे और महिमावान श्रीराम के मन का कठोर दुःख दूर करें । इसलिए जाना हो वृद्धिमान का काम होगा । वे शीघ्र उठकर बले । १२५५

[इसके आगे 'मधुवन' का वृत्तान्त है। पन्द्रह पद्य में वर्णित यह वृत्तान्त क्षेपक माना जाता है। अतः हम इनको छोड़ देते हैं।]

एदुना लिङ्गन्द शाल वरुन्दित दिरुन्द शेनै
आदलाल् विरेविङ् चैल्ल लावदन् इळिय मॅम्मै
शादडीरुत् तळित्त वीर तलैमहन् मॅलिवु तीरप्
पोदुनी मुन्न रॅन्डार् नन्डैन् वनुमन् पोत्तान् 1256

अळियम् अॅम्मै-दीन हमें; चातल् तीरुत्तु-मरने से बचाने की; अळित्त वीर-कृपा करनेवाले वीर; एतु नाळ्-(अन्वेषण) हेतु (निश्चित) दिन; चाल इङ्गन्त-बहुत पहले ही पूरे हो गये; इरुन्त चेतै-यहाँ जो रही वह सेना; वरुन्तित्तु-दुःखी रही; विरेविळ् चैल्लल् आवतु-शीघ्र जाने में समर्थ; अन्ड-नहीं है; आतलाल्-इसलिए; तलैमकन्-हमारे नायक के; मॅलिवु तीर-दुःख को दूर करने; नी-आप; मुन्नर्-पहले; पोतु-जाएँ; रॅन्डार्-कहा; नन्ड अॅन्त-अच्छा कहकर; अनुमन्-हनुमान; पोत्तान्-गया। १२५६

वीरों ने हनुमान से कहा कि हे वीर ! जिसने हम दीनों को मरने से बचाया ! सीताजी के अन्वेषणार्थ निर्णीत अवधि के दिन कभी के बीत गये। यहाँ जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रही वह सेना अधिक संकटग्रस्त होकर निर्बल हो गयी। इसलिए वह शीघ्र जाने में असमर्थ है। इसलिए तुम पहले जाकर समाचार दो, ताकि नायक श्रीराम का दुःख दूर हो। हनुमान ने कहा कि ठीक है। वह चला। १२५६

मुत्तलै यैः(ह)हि ताङ्कु मुडिप्परुड् गरुम मुङ्गि
वित्तहत् तूदन् मीण्ड दिरुदियाय् विळैन्द तन्मै
अत्तलै यङ्गिन्द वेल्ला मरैत्तन माळि यान्माद्
टित्तलै निहळ्न्द वेल्ला मियम्बुवा नैडुत्तुक् कौण्डाम् 1257

वित्तक-(श्रीराम का) समर्थ; तूतन्-दूत; मुत्तलै अ. कित्ताङ्कुम्-त्रिशिर शूलधारी के लिए भी; मुटिप्पु अरुम्-असाध्य; गरुमम् मुङ्गि-कार्य सम्पन्न करके; मीण्डतु-लौटा; इरुदियाय्-वहाँ तक का; अ तलै-वहाँ; विळैन्त तन्मै-जो घटा वह वृत्तान्त; अङ्गिन्तु अॅल्लाम्-हमारे जाने सभी; अरैन्तैत्तम्-हमने कहे; इ तलै-यहाँ; आळियान् माद्दु-चक्रधारी श्रीराम के प्रति; निकळ्न्त-जो हुआ; अॅल्लाम्-वह सब; इयम्बुवान्-कहने को; अॅदुत्तुक् कौण्डाम्-तत्पर हुए हैं। १२५७

(कवि—) सर्वसमर्थ दूत हनुमान त्रिशूलधारी शिवजी के लिए भी असाध्य कार्य सम्पन्न कर आया। वहाँ तक का उधर का सारा वृत्तान्त जो हम जानते थे, हमने बताया है। अब इधर चक्रधर विष्णु के अवतार (या चक्रवर्ती) श्रीराम पर क्या बीता वह कहने चलते हैं। १२५७

❖	ଶୈବ	ମୟମାର୍ଗ	ବିଶ୍ୱ	ବୈବେକ
	କାର୍ତ୍ତିକ	ସକଳପୁର	କାବି	ଶବ୍ଦ
	ନୀତି	ସର୍ବ	ଶିବ	ନାମ
	ବୈବ	ବିଶ୍ୱ	କାବି	ଶବ୍ଦ

(ଅ) 1257 ସମ୍ବତ୍

तण्डल् इल्-अबाध गति से; नैटुम् तिचै मून्ऱुम्-तीन लम्बी दिशाओं में; ताविन्नर्-लपक जो चले वे; मटन्तैयै-देवी को; कण्टिलर्-देख नहीं पाये; अँन्तुम्-यह; कट्टुरै-वचन; अकत्तु उयिर् उण्डु-अन्दर प्राण हैं; अँत-ऐसी स्थिति में; ओइक्कवुम्-बड़ा कष्ट देता रहा; तिण् तिरुल्-अतिशय बलशाली; अनुमतै-हनुमान का; नितैयुम् चिन्तैयान्-स्मरण करनेवाले मन के हो; उळन्-(जीवित) रहे (किसी विध) । १२५६

अबाध गति से जो तीन लम्बी दिशाओं में गये थे, वे लौट आ गये । वे देवी के दर्शन नहीं कर सके । यह कथन उन्हें, चूँकि प्राण थे, सता रहा था । वे अतिबलिष्ठ हनुमान का स्मरण करते रहे । इसलिए ज्यों-त्यों अपने प्राणों को रखते रहे । १२५९

✽ आरिय	नरुन्दुयर्क्	कडलु	ळाळ्ववन्
शीरिय	दन्ऱुनञ्	जैय्हाँ	तीर्वरुम्
सूरिवैम्	बळियौडु	मुडिन्द	दामैन्नाच्
चूरियन्	पुदल्वनै	नोक्किच्	चौल्लुवान् 1260

आरियन्-आर्य श्रीराम; अरुम्-कठोर; तुयर् कटल् उळ्-दुःख-सागर में; आळ्ववन्-मग्न; चूरियन् पुतल्वळ् नोक्कि-सूर्य-पुत्र को देखकर; नम् चैय्कै-हमारा काम; चीरियतु अन्ऱु-श्रेष्ठ नहीं; तीर्वु अरुम्-अवार्य; सूरिवैम् पळि ओटु-कठोर और भयंकर निन्दा के साथ; मुडिन्ततु आम्-समाप्त हो जायगा; अँता-कहकर; चौल्लुवान्-आगे बोले । १२६०

कठोर दुःखसागरमग्न श्रीराम ने अर्कपुत्र से कहा कि हमारा कार्य श्रेष्ठ नहीं लगता । वह अवार्य और कठोर भयंकर अपमान में पूरा होगा । वे आगे यों बोले । १२६०

✽ कुडित्तना	ळिहन्दन	कुन्ऱुत्	तैन्ऱिशै
वैरिक्करुड्	गुळलियै	नाडन्	मेयितार्
मडित्तिवण्	वन्दिलर्	माण्डु	ळार्हौलो
पिरित्तवर्क्	कुरुळ	वैन्ऱु	पैर्रियो 1261

कुडित्त नाळ्-निर्णीत दिन; इकन्तत-बीत गये; कुन्ऱु-बीतने पर; तैन् तिचै-दक्षिण दिशा में; वैरि करुम्-सुगन्धित काले; गुळलियै-केश वाली को; नाटल् मेयितार्-खोजने जो चले; मडित्तु-(वे) लौटकर; इवण्-यहाँ; वन्तिलर्-आये नहीं; माण्डुळार् कौल् ओ-मर गये क्या; पिरित्तु-द्वसरा; अवरक्कु उरु उळतु-उन पर जो बीता; अँन्त पैर्रि ओ-कैसा है तो । १२६१

अवधि के दिन बीत गये । तो भी दक्षिण दिशा में सुवासित काले केश की सीता की खोज में जो चले वे लौट के इधर नहीं आये । क्या वे मर गये होंगे ? फिर उन्हें क्या हुआ होगा ? कैसा हुआ होगा ? । १२६१

કૌટિલ નાઝ-નિર્ણય વિન મેં ; અવરે રૂઢકે-વનકે (શ્રીરત્ન કે) વામરયાન ; કૌટલ-પૃથ્વી નહીં ; પૂરલ અરેલુચિ-વાને મેં યમ લગાતા હૈ ; એલ-પેલા સોષકર ; રૂપેય વૃત્તકકલ આંઝિર-મુલ-રૂ-લ-શ-ન હોકર ; અલમ તવમ-કોર તવયા મેં ; અમૃતકેરૂર કરેલ હૈ ; આ-મયા ; વૃઠ અમે-ઓર મયા ; અવરેકેકે વરેરૂ-વનકા હિઆ ; વિઠમુવમ-વોલે ; અંગેર-વોલે । ૧૨૬૪

“अवधि के दिन बीत गये । वहाँ पहुँचने में डर लगता है ।” ऐसा सोचकर सुखदुःखनिवृत्त होकर वे कठोर तपस्या में विश्रान्त रहते हैं क्या ? फिर उनका क्या हुआ होगा । बोलो । श्रीराम ने सुग्रीव से पूछा । १२६४

ॐ अँबुलि	यनुमन्	मिरवि	यँबवन्
तँबुलत्	तुलनेनत्	तँरिव	दायिनान्
पौन्बौलि	तडक्कयप्	पौरुविल्	वीरनुम्
अन्बुरु	शिन्दैया	नमैय	नोक्किनात् 1265

अँतुपुलि—जब वे यह कह रहे थे; अनुमनुम्—(तब) हनुमान और; इरवि अँनपवन्—रवि नाम का वह; तँतु पुलत्तु उळत् अँत—दक्षिण में उदित हुआ जैसे; तँरिवतु आयितान्—प्रकट हुआ; पौन् पौलि—(याचक को) स्वर्ण-वर्षा के समान देनेवाले; तड क—विशाल हाथों के; अ पौरु इल् वीरनुम्—उन अनुपम् वीर (श्रीराम) ने भी; अन्तु उड चिन्तैयान्—प्रेममन हो; अमैय—खूब; नोक्किनात्—(हनुमान पर) दृष्टि गड़ाकर देखी । १२६५

श्रीराम यों कह ही रहे थे कि दक्षिण में रवि प्रकट हो गया—जैसे हनुमान दिखायी दिया । (याचक—) स्वर्णवर्षी हाथों के उन अनुपम वीर श्रीराम ने भी बड़े प्रेम के साथ हनुमान को ध्यान से देखा । १२६५

ॐ अँयदिन्	ननुमन्	मँयदि	येन्दउन्
मौय्हळ	तौळुदिलन्	मुळरि	नीङ्गिय
तँयलै	नोक्किय	तलैयन्	कँयितन्
वैयहन्	दळीइनेडि	दिरैञ्जि	वैहितान् 1266

अनुमनुम्—हनुमान भी; अँयतितन्—आ पहुँचा; अँयति—पहुँचकर; एन्तल् तन्—प्रभु के; मौय् कळल्—सुदृढ़ पायलधारी चरणों की; तौळुतु इलन्—बन्वना न करके; मुळरि नोङ्किय—कमल छोड़कर (भूमि पर) अवतरित; तँयलै—देवी (की दिशा) को; नोक्किय—उद्दिश्य करके; तलैयन् कँयितन्—फिरे मुख वाला और जुड़े हाथों वाला बन; वैयक् तळीई—भूमि पर लगकर; नेट्टु इरैञ्चि—बहुत देर दण्डवत करता हुआ; वैकितात्—रहा । १२६६

हनुमान भी वहाँ आया । (उसने एक विचित्र काम किया ।) वह सम्मानित प्रभु श्रीराम के सुदृढ़ पायलधारी चरणों पर नमस्कार न करके कमलवास छोड़, भूमि पर अवतरित हुई श्रीलक्ष्मी, सीताजी जिस दक्षिण दिशा में रहीं उस ओर मुख करके और उसी ओर हाथ जोड़कर भूमि पर दण्डवत् की मुद्रा में भूमि से लगकर गिरा और लम्बी देर तक पड़ा रहा । १२६६

ॐ तिण्डिउ	लवन्शैय	रैरिय	नोक्किनात्
वण्डुउ	योदियुम्	वलियण्	मर्शिवन्

कण्ठं मण्डवळं कर्तुं कर्तुं नर्तनकं गीतहेयान् 1267

कुरिपविना-ईनिन से; उवाक्यं कौंकेयान्-आशय समस्तं की (विषक) शिव रत्नवाली श्रीराम से; विष्णु निरुल-वर्द्ध हो कुशल; अवर्ण धूपन-उसका काय; त्रिपु नौकिकिवाते-मलीशानि देवा और जाना; वण्ड उरु-अमराशय; श्रीविष्णु-केशिनी श्री; वलिय-रवरय है; इवम कण्ठवृत्त-इसकी मूट श्री; उवाट-ईई है; अवळ कर्तुम-उसका पावित्रय श्री; नर्तक-मुदं है; अत-ऐसा; कौण्डिन-नाइं लिया। १२६७

श्रीराम इतिनाथ ये। उन्हीने सामर्थ्याली उस हेतुमान के तत्वाभ्यास कायू देवा और समस्त गये कि अमरावत मुकेशिनी सीताजी स्वरय है; इसने उनसे मूट की है और उनका पावित्रय सुरक्षित है। १२६७

आङ्गावमं श्रीहेयं यवयं यमना
आङ्गिय वृणरविनालं विळनदं विमिन
बोङ्गिय नौङ्गिय दवनडुपरं काद
गीतहेय 1268

आङ्कु-वहो; अवर्ण धूपन-उसका काम हो; अवळ आप-सापवण है; श्रीना-मानकर; श्रीकृष्ण उवाटविनाल-उत्कृष्ट अपने ज्ञान द्वारा; विळनदु उन्हीना-जी वटा उसका अनुमान कर लिया। (श्रीराम से); नौळ बौङ्गिकि- (उनके) काय फल उठे; कण्ठकळ-आँव; पुनल विमिन- (अभ-) जल से मरी; अरम पुपर-कठोर दुःख; श्रीकृष्ण-इर- हुआ; कानल- (सीता पर) प्रेम; गीण्डु-वहिन हुआ। १२६८

श्रीराम ने अपने उत्कृष्ट ज्ञान द्वारा, हेतुमान के कृत्य की माप बनाकर बीजे काप्यो का अनुमान लगा लिया। तब उनके कण्ठ फल उठे। आँव अर्जुन से खूब भर गयी। कठोर दुःख इर हो गया। सीताजी के प्रति प्रेम बढ गया। १२६८

कण्ठनमं कर्तुमिक्कं कण्ठयक्कं कण्ठयळ
नौण्डिरं यल्लड्डं लिलड्डं नौण्डिरं
अण्डरंनं यड्डविनं यड्डयं नौण्डिरं
बण्डळ पुययं यययं यययं
पण्डिना 1269

अनुमन-हेतुमान से; अण्डरं नायक-देवनायक; नौळ निरं-साक और उठ गिरनेवाली; अल-तर्गाकुल; कडल-समुद्र-मध्य; इलड्डक-लंका (नाम) के; निने नकर-दक्षिण (से रहनेवाले) नगर से; कर्तुमिक्क अण्ण-पावित्रय के श्रृंगार को; कण्ठकळ कण्ठनम-आँव से देवा; इति-आगे; पुययम-इ-ख; नौण्डिरं-इर कर; अण्ड-ऐसा; पण्ड उल-पडल से रहा; पुययम-इ-ख; कर्तुमिक्क-इर कर; अण्ड-ऐसा; पण्डिना- (कडकर) विरवार से कहे। १२६९

हनुमान ने श्रीराम से निवेदन किया, हे देवादितेव ! (अण्डनायक !)
स्वच्छ और लहराती तरंगों के समुद्रमध्य, दक्षिण में स्थित लंका के नगर
में मैंने पातिव्रत्य के शृंगार मान्य सीताजी को अपनी आँखों से देख लिया ।
अब आप सन्देह और बहुत दिनों का दुःख छोड़ दें । उसने आगे विस्तार से
यों कहा । १२६९

ॐ उन्वैरुन्	देवि	यैन्नु	मुरिमैक्कु	मुन्नैप्	पैरु
मन्वैरु	मरुहि	यैन्नुम्	वाय्मैक्कु	मिदिलै	वेन्दन्
तन्वैरुन्	दन्तयै	यैन्नुन्	दन्मैक्कुन्	दहैमै	शान्नु
अन्वैरुन्	दैय्व	मैया	विन्नमुडु	गेट्टि	यैन्बान् 1270

ऐया-प्रभु; उन् पैरुम् तेवि-आपकी महीयसी देवी; अन्नुम् उरिमैक्कुम्-रहने
का स्वत्व और; उन्नै पैरु-आपके जनक; मन्-चक्रवर्ती की; पैरु मरुकि-सम्मान्य
बहू के; अन्नुम् वाय्मैक्कुम्-उस गौरव के लिए; मिदिलै वेन्दन् तन्-मिथिला के
राजा की; पैरु तन्तयै-सुपुत्री; अन्नुम् तन्मैक्कुम्-होने के गौरवपूर्ण स्थान के
लिए; तन्मै चान्नु-पूर्ण योग्य; अन् पैरुम् तैय्वम्-मेरी आराध्या देवी; इन्नमुम्
केट्टि-और भी सुनिए; अन्शान्-कहा । १२७०

प्रभु ! आपकी उत्तम धर्मपत्नी का पद, आपके जनक चक्रवर्ती
दशरथ की आदरणीय पतोह बनने का गौरव, मिथिला के राजा की
सम्मान्य पुत्री बनने का भाग्य —इनके बिल्कुल योग्य हैं मेरी आराध्या
श्रेष्ठ देवी । और भी सुनिए । हनुमान ने जारी किया । १२७०

ॐ पौन्तल	दिल्लैप्	पौन्तै	योप्पैन्	पौरैयि	निन्नाळ्
तन्तल	दिल्लैत्	तन्तै	योप्पैन्त	तन्क्कु	वन्व
निन्तल	दिल्लै	निन्तै	योप्पैन्	नितक्कु	नेरन्दाळ्
अन्तल	दिल्लै	यैन्तै	योप्पैन्	वैन्क्कु	मीन्दाळ् 1271

पौन्तै ओप्पु-स्वर्ण से तुल्य; पौन् अलतु इल्लै-स्वर्ण छोड़ दूसरा नहीं; अन्त-
इसी रीति से; पौरैयिल्-क्षमा के गुण में; निन्नाळ्-स्थित हैं; तन्तै ओप्पु-अपनी-
अपने समान; तन् अलतु-अपने को छोड़; इल्लै-दूसरा नहीं; अन्त-ऐसे ही;
तन्क्कु वन्त-अपने पति के रूप में प्राप्त; निन्तै ओप्पु-आपसे तुल्य; निन् अलतु-
आपके सिवा; इल्लै-नहीं; अन्त-ऐसा (गौरव); नितक्कु नेरन्ताळ्-आपको दिलाया
है (देवी ने); अन्तै ओप्पु-मेरे समान; अन् अलतु-मुझे छोड़ दूसरा; इल्लै
अन्त-नहीं है, यह; अन्क्कुम्-(गौरव) मुझे भी; ईन्ताळ्-प्रदान किया । १२७१

स्वर्ण से तुल्य स्वर्ण से अन्य कोई वस्तु नहीं है । वैसे ही वे अनुपम
क्षमाशीला हैं । अपनी सानी वे अपने से अलावा कोई नहीं रखतीं ।
उन्होंने आपको भी 'आपसे तुल्य आपके सिवा अन्य नहीं है' —यह कहाने
का गौरव प्रदान किया है । मुझे भी यह पद दिला दिया है, जिससे अपने
से तुल्य मैं ही हूँ । कोई दूसरा मेरे समान नहीं है । (स्वर्ण ताडन,

निष्कर्ष, वाच्य... किंसे से भी अपना स्वभाव नहीं छिंटा। सीताजी की उपमा इसी से स्वर्ण से दी गयी है। सीताजी के कारण अब श्रीराम अनुपम सौभाग्यवान् पति बन गये। 'कुरु' का कहना है—सती पत्नी के अनिर्दिष्ट पुरुष के लिए प्राप्य बड़ी वस्तु क्या है ? इतुमान का भी गौरव इतना बड़ा कि सामान्य वाच्य अब असामान्य हो बन गया। इस पद्य में चेतनदा, ईशदा—दो क्रिया शब्द आये हैं। दोनों के अर्थ में यह स्थिति है कि पढ़ेला शब्द सामान्य का शक्ति है और दूसरा यह इतिवत् करता है कि पातेवाला नीची हैसियत में है।) १२७१

वर्ण्युल मुनेन दाकीक युपरवृद्धके कीरवलि यय
नर्णुलन दनेन दाकीकने ननेपिये ननेपिये श्रुपदाने
वर्णुलनः मूर्द्धके कीरने वाचने वानने कुलनेन वाळिवे
नैर्णुल मृककुने ननेदा ननेविनिये वृपव द्रुमपिये 1272

अथ भीय-सती माता; उक्त कुलम्-आपका कुल; उक्तवर्ण आकीक-आपका स्थापित करके; उपर्युक्तकु-उपर्युक्त युग्म के लिए; आनेविनिये आप-यौग्य अनेकी जा है; नर्ण कुलम्-वह अपना कुल; ननेपिये आकीक-अपना स्थापित कर; ननेन द ननेपिये-अपने की निमित्त इस तरह युक्त क्रिया; वने कुलम्- (उस राधाव) नृपस कुल की; कर्द्धके ईश्वर-सृष्ट के द्वारा संपादक; वाचने कुलनेन-देवकुल की; वाळिवेन-निर्णय जीवन प्रदान करके; अने कुलम्-सती कुल अनेक कुलनेन-युक्त विवाहा; इति-आगे; अथ वृपवृ-करने की क्या है। १२७२

सती माता ने आपके कुल की आपका बना दिया (यानी आपके नाम पर आपका कुल स्मरण किया जायगा); उक्त युक्तिवनी अपने कुल की अपना बना लिया (उनका कुल उनके नाम पर चलेगा); अपने की आपसे युक्त करनेवाले राधाव के कुल की सृष्ट का बना दिया; देवकुल की निर्णय जीवन का बनाया और मेरे कुल की मुझे दे दिया (यानी मायाजी वाचने भी इतमान के कुल का बनाया जायगा)। इससे बंधकर कहने की क्या है ? १२७२

ॐ विरूपने दहनदेने वीर वीरुनी रिलङ्गा विरुपे वीरुने नर्णुलन दनेन यय नर्णुलन दनेन विरुपवृद्धे विरुपवृद्धे गणिननेप वृत्रियके कर्णने 1273
विन- (कोपव) धुवर्; पुरुष-वृद्ध; नने नीने-विना कर्णने वने; वीर-वीर; वीरु नीर-वृद्ध वल के समुद्र की विर; इलङ्के वृत्रिय-वका की लिए पर; नर्ण पुरुष वनेने आप-अने और वृद्ध नप में गयी; नर्णके-देवी की कर्णने अनेने-सही देवा; इने विरुपु अनेपु-कुल-नम, यह; अनेपु-एक; इरुप पाते अनेपु-अति वाचने अपा नाम की; अनेपु-एक वरु और; कर्ण-

पातिव्रत्य; अँतुम् पँयर् अतु-नाम की; औन्नुम्-एक चीज; कळि नटम् पुरिय-
(इनको) मत्त नृत्य करते हुए; कण्टेन्-देखा । १२७३

कोदण्ड के धारक बड़े और विशाल भुजाओं वाले वीर ! विपुल जलाश्रय समुद्र के मध्य त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका में मैंने केवल अति-श्रेष्ठ तपस्विनी स्त्री को नहीं देखा; वरन् श्रेष्ठ कुल में जन्म, गम्भीर क्षमा और सतीत्व — इन तीनों तत्त्वों को मिलकर मत्तता से आनन्दनृत्य करते हुए देखा । १२७३

कण्णिनु मुळैनी तैयल् करुत्तित्तु मुळैनी वायिन्
अँण्णिनु मुळैनी कौङ्गै यिणैक्कुवै तन्नित्तु तोवा
दण्णल्वैड् गाम तैय्द वलरम्बु तौळैत्त वाडाप्
पुण्णिनु मुळैनी नित्तुत्तैप् पिरिन्दमै पौरुन्दिर् आमो 1274

नी-आप; तैयल् कण्णिनुम्-देवी की आँखों में भी; उळै-हैं; करुत्तित्तुम्-मन में भी; तो उळै-आप विद्यमान हैं; वायिन् अँण्णिनुम्-मुख के बोलों में भी; नी उळै-आप रहते हैं; कौङ्गै इणै-स्तनद्वय के; कुवै तन्नित्तु-अग्रभाग में; ओवातु-निरन्तर; अण्णल्-महिमावान; वैम् कामत्-सन्तापक कामदेव द्वारा; अँयत्-प्रेषित; अलर् अम्पु-पुष्प-शर; तौळैत्त-से विद्ध; आडा-जो नहीं भरता, उस; पुण्णिनुम्-घाव में भी; नी उळै-आप ही हैं; नित्तुत्तै पिरिन्दमै-आपसे वियुक्त होने की बात कहना; पौरुन्दिर् आमो-युक्त होगा क्या । १२७४

प्रभु ! आप देवी की आँखों पर सदा विद्यमान है; उनके मन में विराजमान हैं; मुख के शब्दों में घुले मिले हैं । महिमावान और सन्तापक कामदेव द्वारा निरन्तर प्रेषित सुमन-शरों से उनके स्तनद्वय के अग्र भाग में बने, सदा ताजे व्रण में भी है । फिर आपसे वे अलग हो गयीं — यह कहना युक्त होगा क्या ? । १२७४

वैलैयु ळिलङ्गै यँत्तुम् विरिनह रौरुशार् विण्डोय्
कालैयु मालै तानु मिल्लदोर् कनहक् कर्प्पच्
चोलैयड् गदनि नुम्बि पुल्लिनाड् रौडुत्त तूय
शालैयि निरुन्दा ळैय तवञ्जैय्द तवमान् दैयल् 1275

ऐय-प्रभु; तवम् चैयत् तवम्-स्वयं तप ने तपस्या करके जिन्हें पाया; आम् तैयल्-वह देवी; वैलै उळै-समुद्र-मध्य; इलङ्कै अँन्नुम्-लंका नाम के; विरि नकर्-विशालनगर के; ओरु चार्-एक तरफ; विण् तोय्-गगनस्पर्शी; कालैयुम् मालै तानुम्-(और)सवेरा और शाम; इल्लतु-जहाँ (उनमें भेद) नहीं रहते; ओर्-उस एक; कत्तक कर्प्प चोलै-एक स्वर्णकल्पतरुओं का वन; अङ्कु-वहाँ; अतत्तिन्-उसमें; उम्पि-आपके कनिष्ठ द्वारा; पुल्लिनाल् तौडुत्त-घास से निमित्त; तूय चालैयिन्-पवित्र पर्णशाला में; इरुन्ताळै-रहीं । १२७५

प्रभु ! तप का तपस्या का फल है वे ! समुद्रमध्यस्थित लंका नगर

के किसी कोने में अर्थात् बन है, जिसके कनककल्प वर आकाश से गढ़े करते रहते हैं। वहाँ सबरे और श्याम का भेद दिखायी दी नहीं देता (क्याँकि कल्पवर का प्रकाश एक-सा है)। उसमें आपके छोटे भाई द्वारा पास की निर्मित पण्यशाला में देवी रहती है। १२७५

मण्योदितः गीर्वाण पोतान् वामपरे कर्त्तुं शक्यं
गुणायुधं सैनं तीक्ष्णं वज्रवत् नैलहेमं वृत्तं
कण्ठोदने कमलने तण्णालं कवचेतिनादं दृष्टिदलं कण्ठोत्तमं
अण्णोरुदं गूरुपुं मयुधिं धूर्तदोरं मूर्ध्नि 1276

उत्तमं पूर्वत-लोकसर्वकः कर्त्तुं अकर्म-विशालः कमलवत् अण्णालं-कमल पर विराजमान शङ्खाली नैः कवचं इलाह-गुप्त पर मन न लगानेवाली को; नैलहेम-रत्न करनी; कण्ठोत्तम-सोवोती नैः अण्ण अरुणं कूरुपु-असंख्य जवही नैः मयुध- (विश्वरु होकर) मरीचि; धूर्तदु-जी कहेता था; और मूर्ध्नि-उत्तम कण्ठ को; अण्णाल-सोवकर; वामं उपर-वृद्धन उत्कृष्ट; कर्त्तुंविनाहं नै-पानिबन्ध-शाला के; गुणायुध सैन-पवित्र शरीर को; तीक्ष्ण वज्रवत्-रत्न करके से डरना; मण्णोदित-सैन के साथ; कर्त्तुं पोतान्-ले गया। १२७६

पञ्चसर्वक, कमलपान, सप्तमान्य शङ्खाली नै रावण को श्राप दिया था कि अगर गुप्त पर मन न लगानेवाली किसी स्त्री का रत्न करनी तो गुप्त असंख्यक दैत्यों में एककर मर जाओगे। इस श्राप के स्मरण से ही रावण अत्यन्त मनीसी शरीर को पवित्र शरीर का रत्न करके से डरकर भूखण्ड के साथ ही उल्टे ले गया था। १२७६

तीक्ष्णं वामं विधायुदने वामं विधायुदने
कौटिल्यं वामं विधायुदने कौटिल्यं वामं विधायुदने
मौक्तिल्यं वामं विधायुदने मौक्तिल्यं वामं विधायुदने
मौक्तिल्यं वामं विधायुदने मौक्तिल्यं वामं विधायुदने 1277

तीक्ष्णवर्ण-उत्तमं रत्नं नही किया; अर्त्तुमं वामं-यह सत्य; विधायुदने वामं वृद्धं-वामं वामं-वैद और वैद-विधि; मौक्तिल-नन्द नही वृद्ध; मौक्तिल-मूल का लालकर नही लोटे; वृद्धक-समी प्रकाशमण्डल; अन्तर्गत का फिर; कौटिल्य-विरा नही; वेद अर्त्तु-समस्त उमङ्कर; वामं वृद्ध-वर्त्तु-वृद्ध अण्णाल; कौटिल्य-कटा नही; अन्तर्गत उत्तम-तीक्ष्णवर्ण-उत्तमं रत्नं नही किया; अर्त्तुमं वामं-यह सत्य; विधायुदने

जान नै। १२७७

उत्तमं उत्तम रत्न नही किया। यह सत्य इन अटल रहनेवाली बातों से प्रमाणित है। वर्त्तुमण्डल अण्णाल नही फटा। अन्तर्गत का फिर नही फिर। समस्त उमङ्कर मूल का लालकर पुनः प्रकाशित नही

हुए । सूर्य, चन्द्र आदि तेज के मण्डल चुए नहीं । वेद और वेदविधियाँ बेकार नहीं हुई । १२७७

ॐ शोहत्ता लाय नङ्ग कर्पितार् शौलुदर् कीत्त
माहत्तार् देवि मारुम् वान्शिउप् पुर्रार् मर्रैप्
पाहत्ता लल्ल लीशन् महडत्ताळ् पदुमत् ताळुम्
आहत्ता लल्लण् माय नायिर मोलि याळाल् 1278

चोक्तताळ् आय-दुःखिनी बनी; नङ्क-देवी के; कर्पिताल्-पातिव्रत्य से; माहत्तार् तेविमारुम्-व्योमवासियों की पत्नियाँ भी; शौलुतर्कु औत्त-पूजार्ह; वान् चिउप्पु-बड़े गौरव को; उर्रार्-प्राप्त कर गयी हैं; मर्रै-और; ईचन् पाहत्ताळ्-परमेश्वर की अर्द्धांगिनी; अल्लळ्-न बनकर; मकुटत्ताळ्-सिर पर रहनेवाली बनीं; पदुमत्ताळुम्-पद्मा भी; मायन् आहत्ताळ् अल्लळ्-मायावी की वक्षनिवासिनी न बनकर; आयिरम् मोलियाळ्-उनके सहस्र सिरों पर शोभनेवाली बनीं । १२७८

शोकाकुल नायिका सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से अन्य देवियाँ भी गौरवान्वित हो गयीं, पूजाह्व हो गयीं । और भी शिवपत्नी को अर्द्धांगिनी के पद में रहकर भी शिवजी के सिर पर रहने से प्राप्य गौरव मिल गया । श्रीपद्मा भी मायावी की वक्षःस्थलवासिनी से सहस्र सिरों पर रखकर पूज्य हो गयीं । १२७८

इलङ्गैयै मुळुदु नाडि यिरावण तिरुक्कै यैय्दिप्
पौलङ्गुळै यवरै यैल्लाम् पौदुवुड नोक्किप् पोनेन्
अलङ्गुतण् शोलै पुक्के नव्वळि यणङ्ग ताळैक्
कलङ्गुवैण् डिरैयिड् राय कण्णिनीर्क् कडलिड् कण्डेन् 1279

इलङ्कैयै मुळुतुम् नाटि-लंका भर में खोजकर; यिरावणन् इरुक्कै अय्यति-रावण का वासस्थान पहुँचकर; पौलन् कुळै-सुन्दर कर्णकुण्डलालंकृता; यवरै अल्लाम्- (स्त्रियों) सभी को; पौतु उड नोक्कि-सामान्य रूप से देखता हुआ; पोतेन्-गया; अलङ्कु-हिलनेवाले (पत्तों और डालों के); तण् चोलै-शीतल अशोक वन में; पुक्केन्-प्रविष्ट हुआ; अ वळि-वहाँ; अणङ्कु अत्ताळे-देवी स्त्री-सम इनको; कलङ्कु-विलोडित; वैळ् तिरैयिड् आय-सफ़ेद तरंगों वाले; कण्णिन् नीर् कडलिल्-अश्रुजल-सागर में; कण्डेन्-(मैंने) देखा । १२७९

मैंने लंका भर में खोजा । रावण के महल में गया । वहाँ सुन्दर कुण्डलधारिणी सब स्त्रियों को सरसरी निगाह से देखकर आगे गया और अशोक वन में पहुँचा, जिसमें तरु के पल्लव और डालें हवा में हिलती रहीं । वहाँ देवी-सी सीता को मैंने विलोडित श्वेत तरंगों वाले अश्रुजल-सागर-मध्य देखा । १२७९

अरकिकय रजवर् रारुह लवहैपिन् कळव मयव नोकक मयपिब
नरककिकय कपय निववा वेगवे मयव वडिव मयपिब
इरककमम रीमरु लानी रेवडिळ मयपिब
नरककिकय रीमरु रीमरु लानी रेवडिळ मयपिब
नरककिकय रीमरु रीमरु लानी रेवडिळ मयपिब

अथ अरुकरकम्-असलक; अरकिकय-रासविषय; अलकिय-पिशाच के; कुठवम अवव-शुण्ड की मयपील कर सकवेवाली; नरककिकय-विजुल पास से धरकर; कपय-रहित करती रहती; अवम-मय की; निव पावे वेम-आपके प्रति प्रम के ही शरा; नोकक-दूर करके; अ लमिय-वे एककिकनी; इरककम अरु-दीनवा नाम का; अरुलवा-एक (नरव) ही; और एनविळ वडिवम-एक आमरवाधारिणी (अंगना) का रूप; अपि-लेकर; नरकक उयर-अतिकठोर; विर उरु-कारा से बच रहती; अव-जोषी; लकय-विधिल से रहवेवाली है। १२८०

वेद्युमार विधाचरिया, विनसे मूतवाल मी मयपील होत है, विजुल पास से धरकर उनकी रखवाली कर रहती है। उससे जो मय देवी के मन में पूरा होता है, उससे आपके प्रति प्रम हो रक्षा कर रहती है। वे एककिकनी ऐसी विष रहती है, मानी दीनवा हो (आमरवाधारिणी) अंगना का रूप धरकर अलि कठोर कारा में विदनी वनी रहती हो। १२८०

नैवल वण्डार काल विडपुन दमसे नोकक
ऐयना निरनद काल पलङ्गालवे लिलङ्ग वेनदम
अपिन विरनरु कडि पिङ्गोलिन विरनद नङ्गा
वैपुडै शीलनवे चौरिके कोरनवेरु कोण्ड विटन 1281
ऐय-आय; नैवल-देवी की; वण्डकरु अल-नमरकार (पूट) करने योग्य; इड-अवकाश; प्रम लगे-पाल करने के उपाय की; नोकक-सोचकर; नाने- (जव) में; इरनद काल-रही, उस समय; अलङ्कन वेव-मालाधारी, माले वाला; इलङ्क वेनद-लका का राजा; अपिलन-आया; इरनद कडि-विनय मुनकर; इरुविलन-नमरकार किया; इरनद नरक-(विदनी) जो रहती, उन देवी के; वैपु उरु-कठोर बचन; शीलन-कहने पर; चौरिके-कोप करके; कोरन-मारने पर; मरुकोण्ड विटन-वृल गया। १२८१

देव। देवी से पूट कल, उस समय की प्रतीक्षा में मैं बैठता था। तब माला से अलङ्कित मालाधारी लका का राजा राजा आया। उसने दीनवा के बचन कहकर देवी की नमस्कार किया। विदनी रहो देवी ने कुछ कटु बचन कहे। राजा की मुस्सा हुआ और वह देवी की मारने पर उठाक हो गया। १२८१

अपिड पण्डित कडु मयपिन नरळम जयय
नैवल लरन मरुड लिलन लीङ्गरु कपय
पपिन नरकक मरुवे चौरिक पपि वेवडि
गपिन वरु लामने मरुदिरु वरुडि 1282

ऐय-आर्य; आ इटै-तब; अणङ्किन् कर्पुम्-भगवती का सतीत्व; निन्
अरुम्-आपकी कृपा; चैय्य-श्रेष्ठ; तूय-पवित्र; नल् अरुम्-अच्छा धर्म;
अन्त इत्तयत्त-आदि ऐसे तत्त्व; तीटर्त्तु काप्प-निरन्तर रक्षा करते रहे;
अरक्किमारै-राक्षसियों को (देख) उनसे; पोमिन्-जाओ; चील्लुमिन्-समझाकर
कहो; अन्त-कहकर; पोयित्तु-गया; एयित्त-आज्ञापित; अवर अलाम्-वे सब;
अन् मन्तिरत्तु-मेरे जादू से; उरङ्कि-सोकर; इरुडार्-निष्क्रिय रहें। १२८२

तब, हे प्रभु ! भगवती का सतीत्व, आपका अनुग्रह और श्रेष्ठ व
पवित्र सद्धर्म —ऐसे तत्त्वों ने देवी की रक्षा की और निरन्तर वे उनकी रक्षा
करते रहे तो रावण ने राक्षसियों को बुलाकर आज्ञा सुनायी कि चलो।
उसे सलाह दो। फिर वह चला गया। उससे आज्ञापित वे सब मेरे मन्त्रित
जादू के कारण जडवत् सो गयीं। १२८२

अन्नदोर् पौळुदि नङ्गै यास्यिर् तुडप्प दाह
उन्तिन्नळ् कौडियोन् रेन्दिक् कौम्बोडु मुडैप्पच् चुड्डित्तु
तन्मणिक् कळुत्तित् चार्त्तु मळवैयिर् उडुत्तु नायेन्
पौत्तन्डि वणङ्गि निन्ऱु निन्पैयर् पुहनर् पोळ्दिल् 1283

अन्तु ओर् पौळुत्ति-ऐसे एक समय में; नङ्क-देवी के; आर् उयिर्-प्राणों
को; तुडप्पतु आक-त्यागने का; उन्तिन्नळ्-निश्चय करके; कौटि ओन्तु-एक
लता को; एन्ति-पकड़कर; कौम्पु ओडुम्-शाखा से; उडैप्प चुड्डि-बूढ़ रूप से
लपेटकर; तन् मणि कळुत्तिल्-अपने सुन्दर गले में; चार्त्तुम् अळवैयिल्-लपेटते
समय; नायेन्-वास में; तडुत्तु-रोककर; पौन् अटि-(स्वर्ण-) सुन्दर चरण;
वणङ्कि निन्ऱु-नमन करके खड़ा होकर; निन् पैयर्-आपका श्रीनाम; पुक्कुड
पोळ्दिल्-जब दुहराने लगा, तब। १२८३

उस समय नायिका देवी ने प्राणहत्या कर लेने का संकल्प करके एक
लता को पकड़ा, उसे एक शाखा से खूब कसकर बाँधा। ज्योंही वे उसे अपने
गले में लपेटने लगीं, त्योंही दास मैंने रोक लिया। उनके चरणों पर नमस्कार
करके आपके श्रीनाम को दुहराने लगा। तब। १२८३

वञ्जत्तै यरक्कर् शैय्ऱै यामेन् मत्तक्कोण् डेयुम्
अञ्जत्त वण्णत् तान्ऱन् पयैरुरैत् तळिय वेंत्ताल्
तुञ्जुळ् पौळुदिर् उन्दाय् तुडक्कमेन् इवन्दु शौन्ताळ्
मञ्जत्त वण्णक् कौङ्गै वळिहिन्ऱ मळैक्क गीराळ् 1284

मञ्जु अत-मेघ-सम; वण्ण कौङ्क-सुन्दर स्तनों पर; वळिक्कुड-गिरकर
बहनेवाले; मळै कण् गीराळ्-वर्षा के समान अश्रुजल-सहित देवी ने; वञ्जत्तै-वंचक;
अरक्कर् चैय्क् आम्-राक्षसों का काम; अत-ऐसा; मत्तक् कोण्डेयुम्-मन में
विचार करने पर भी; तुञ्जु उड पौळुत्तिल्-मरते समय; अळिय-दीना; अन्पाल्-
मेरे पास; अञ्जत्त वण्णत्तान् तन्-अंजनवर्ण (श्रीराम) का; पैयर् उरैत्तु-नाम
जपकर; तुडक्कम् तन्ताय्-स्वर्ग दिलाया तुमने; अन्तु-ऐसा; उवन्तु-हवित
होकर; शौन्ताळ्-कहा। १२८४

धूल-सायबल; श्री कणतु-एक हो पल के अन्दर; इरादे कहेई-दी
 (विषय) देह; आँख मल आँख-तेजीमय मलमूँदरी की; ऊपर-छूट गइँकर;
 निह मुँह नदतु-आँखननल पर; बहेला-रख लिवा (देवी से); बहेलुम-
 रखने हो; निसे पाल-आपके; वरकम अँपलनिह-बिरह से; बरन-उपन;
 ब्रम कण्डू दीपनल-अकर और विपुल आग (ताप) से; बरु-गरम होकर;
 उरकियत-पुवला; कुँहिरपु-आमा की (हर्षण) शीतलता; उठे ऊर-अन्दर
 होने से; उठने-पुनल; आँख-ठोका पइँकर; बलितल- (पुँवसे) दूँ बला १९८५
 -- सायबल ! एक हो समय से मैंने दी विचित्रताएँ देखीं। देवी ने
 तेजीमय मलमूँदरी की अपन श्रीरत्नों के ऊपर रखा। रखते हो आपके

विरहताप रूपी विपुल तथा भयानक आग से वह गरम होकर पिघल गयी । पर तुरन्त, विश्वासजनित आन्तरिक सन्तोष की शीतलता ने उसे ठण्डा कर दिया और वह पूर्ववत् सुदृढ़ बन गयी । १२८६

वाङ्गिय वाळि तनुतै वज्जरूर् वन्द दामैन्
 राङ्गुयर् मळैक्क णीरा लायिरड् गलश माट्टि
 एङ्गिन छिरुन्द दल्ला लियम्बल छैयत्त मेनि
 वोङ्गितळ् वियन्द दल्ला लिमैत्तिल छुयिर्प्पु विट्टाळ् 1287

वाङ्किय आळि तनुतै-गृहीत मुंदरी की; वज्जरूर् ऊर्-वंचकनगर; वन्दताम्-आया है (अतः अपवित्र हो गया); अँत्तु-सोचकर; आङ्कु-तब; उयर् मळैक्क नीराल्-उत्कृष्ट वर्षा-सम अश्रुजल के; आयिरम् कलचम्-सहस्र कलशों से; आट्टि-अभिषिक्त कर; एङ्कितळ्-दुःखाभिभूत होकर; इरुन्ततु अल्लाल्-चुप रहना छोड़कर; इयम्पलळ्-कुछ नहीं बोलीं; अँयत्त मेनि-कृश बना शरीर; वोङ्कितळ्-फूल उठा; वियन्ततु अल्लाल्-विस्मित रहना छोड़कर; इमैत्तिलळ्-पलकें नहीं गिरायीं; उयिर्प्पु विट्टाळ्-साँसें रोक लीं । १२८७

देवी ने हाथ में आयी मुंदरी के सम्बन्ध में सोचा कि यह वंचक लोगों के नगर में आयी है, अतः अपवित्र हो गयी है । इसलिए भावनाओं के कारण उत्कृष्ट बने, वर्षा-जैसे अपने सहस्रकलश-परिमाण में निकले अश्रुजल से उसे अभिषिक्त करा दिया । और वे चुप रही, पर बोलीं नहीं । कृश बना रहा शरीर फूला और वे विस्मय करती रहीं पर पलकें नहीं गिरायीं । उसी दशा में वे साँसें भी रोके रह गयीं । (सहस्रकलशाभिषेक शास्त्रोक्त पवित्रकारी क्रिया है ।) । १२८७

अन्तवट् कडिये नुन्निर् पिरिन्दपि तडुत्त वैल्लाम्
 शौन्मुट्टै यरियच् चौल्लित् तोहैनी यिरुन्द चूळल्
 इन्तवैन् इरिहि लामै यित्तुणै ताळत्त दैन्ऱेन्
 मन्तनिन् वरुत्तप् पाडु मुणरुत्तिन्नु नुयिर्प्पु वन्दाळ् 1288

मन्त-राजा; अटियेन्-दास मेरे; उन्निर् पिरिन्त पित्-आपसे छूटने के बाद; अटुत्त वैल्लाम्-जो घटा वह सब; अन्तवट्कु-उन्हें; अरिय-समझाते हुए; चौल् मुट्टै-कथनोचित रीति से; चौल्लि-कहकर; तोकै-कलापी-सी देवी; इ तुणै-इतनी देर; ताळत्ततु-विलम्ब करना; नो-आपके; इरुन्त चूळल्-रहने का स्थान; इन्ततु-अमुक है; अँत्तु-ऐसा; अरिक्किलामै-न जानने का फल है; अँन्ऱेन्-(मैंने) कहा; निन् वरुत्तप्पाडुम्-आपका दुःख भी; उणरुत्तिन्नु-बताया; उयिर्प्पु वन्दाळ्-साँसें छोड़ने लगीं । १२८८

महाराज ! मैंने उन्हें सारा वृत्तान्त ठीक प्रकार से कह सुनाया, जो मुझ दास के आपसे अलग हो जाने के बाद घटा था । फिर मैंने समझाया कि मयूरनिभ देवी ! इतना विलम्ब हुआ आपके रहने का स्थान न जानने के

कारण ही । मैं आपके दुःख का हल भी बताया । यह सुनने के बाद ही वे साँसें छिड़ने लगीं । १२८८

इत्युज्ज्वलं तपसं धृत्वा विप्रसंबकं - केटुजं
अत्युज्ज्वलं तपसं धृत्वा मधुपुत्रं कश्चिद्यत्
विदग्धोऽपि विरूपं नृपं यत्नं यत्नं यत्नं
मह्यं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
वैतलं 1289

इच्छ-यही; उज्ज-जा है; तपसं धृत्वा-उन सभी विषयों की; इत्युज्ज्वल-
यथा है, वैसे ही; इत्युज्ज्वल-मैं कहने पर; केटुजं-सुन लिया; अच्छ उज्ज-यही
के रहनेवाले; तपसं धृत्वा-सभी वृत्तान्त; अतिपुत्र-पुत्र; अति-समाधि-
हृदय; धृत्वा-देवी के; कहो; विप्रसंबक-एक मांस; इत्युज्ज्वल-
रुही; अत्युज्ज्वल-कहो; अत्युज्ज्वल-उस (एक मांस) के; नृपं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
के बाद; मह्यं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं; अत्युज्ज्वल-यही; उज्ज-यही
अति-आपके कमल-वरण; धृत्वा वैतलं-सिर पर धर लिये । १२८९

यही के सारे हल मैंने जो सुनाये, उन्हींमें सुने । फिर उन्हींमें वही
के सारे हल साफ-साफ बताकर कहो कि एक ही महीने जीवित रहूँगी ।
बाद में ही जीवित-दीप बुझ जायगा—यह धृष्ट है । यह कहकर उन्हींमें आपके
कमल-वरण अपने सिर पर धर लिये (आपकी नमस्कार किया) । १२८९

वैतल्यं विप्रसंबकं कश्चिद्यत्
कश्चिद्यत् विप्रसंबकं कश्चिद्यत्
विप्रसंबकं कश्चिद्यत् कश्चिद्यत्
उत्तमं कालं धृत्वा 1290

वैत तप-अच्छ वैद-शास्त्रों द्वारा; उत्तमं कालं-सुनिश्चित; कालं धृत्वा-
काल धर; धृत्वा-आपके-यथा के साथ; आच्छि-मान में बर्तना हुआ; विप्रसंब-
जी रहोगा, उस इत्युज्ज्वल में; वैतल्यं-रुद्ध के बाद (नमस्कार करने के बाद);
विकल्पितं वैतल्यं-अपने वरदान में निहित; मा मलिकं अरु-अच्छ मलिकों में राजा
ब्रह्मण्यं को; वाच्छि-
वैतल्यं-यस के साथ दिया; विप्रसंबक-वृद्धिप्रसंब; तपसं धृत्वा-कमल-
धर; काच्छि-वैद लीला; अत्युज्ज्वल-कहकर; कश्चिद्यत्-दिया । १२९०

अच्छ वैदों के बताये काल तक बर्तने यथा के साथ जो रहनेवाला है,
उस विप्रसंब इत्युज्ज्वल ने आगे कहा । आपकी नमस्कार करके देवी ने
अपने वरदान में बांध रखा हुआ ब्रह्मण्यं निकाला । उन्हींमें उसे मेरे
करवाने में रखा । वृद्धिप्रसंब; अपने कमल-वरण धरकर आप देख लें ।
इत्युज्ज्वल ने ब्रह्मण्यं श्रीराम के हृदय में दिया । १२९०

पैपयप् पयन्द कामम् बरिणमित् तुयर्नुदु पौङ्गि
 मैय्युर् वेदुम्बि युळ्ळम् मैलिवुर् निलैयै विट्टान्
 ऐयनुक् कङ्गि मुत्त रङ्गैयार् पङ्गुम् नङ्गै
 कैयैत् लायिर् इन्ऱै कैपुक्क मणियिन् काट्चि 1291

कै पुक्क-हस्तप्रविष्ट; मणियिन् काट्चि-मणि का दृश्य; ऐयनुक्कु-प्रभु के लिए; अङ्कि मुत्तर्-(विवाह के समय) अग्नि के सामने; अम् कैयाल्-अपने सुन्दर हाथ से; पङ्गुम्-(जिनकी) ग्रहण किया; नङ्गै कै-उन देवी के हस्त; अँत्तल्-ऐसा; आयिर्-लगा; पयन्त-उससे जनित; कामम्-प्रेम; पै पय-धीरे-धीरे; परिणमित्तु-बढ़कर; उयर्नु-उठकर; पौङ्कि-उमड़कर; मैय् उर्-शरीर खूब; वेत्तुम्पि-गरम होकर; उळ्ळम्-मन; मैलिवु उळ्ळम्-दुर्बल बनने की; निलैयै-स्थिति को; विट्टान्-छोड़ दिया । १२६१

जब वह चूडामणि श्रीराम के हाथ में आया, तब वह उन्हें देवी सीता के हाथ के समान लगा, जिसको उन्होंने विवाह के अवसर पर अपनी हथेली (मुट्ठी) के अन्दर कर लिया था । इससे मन में प्रेम उद्भूत हुआ, उठा, बढ़ा और उमगा । इससे शरीर का गरम होना और मन का दुर्बल होना आदि कष्ट दूर हो गये । १२९१

पौडित्तन् वुरोम मेन्मेर् पौळिन्दन् कण्णीर् पौङ्गित्
 तुडित्तन् मार्वुन् दोळुन् दोन्ऱिन् वियर्विन् रुळ्ळि
 मडित्तदु मणिवा यावि वरुवदु पोव दाहित्
 तडित्तदु मेन्नि यैन्ने यारुळर् तन्मैत् तेर्वार् 1292

उरोमम्-रोम; पौडित्तन्-पुलकित हुए; कण् नीर्-अश्रुजल; पौङ्कि-उमड़कर; मेन् मेल्-उत्तरोत्तर; पौळिन्तन्-बहा; मार्वुम् तोळुम्-वक्ष और कन्धे; तुडित्तन्-फड़के; वियर्विन् तुळ्ळि-पसीने की बूँदें; दोन्ऱिन्-प्रकट हो आयीं; मणि वाय्-सुन्दर अधर; मडित्तन्-मुड़े; यावि-साँसें; पोवतु वरुवतु आकि-जाती-आतीं बनीं; मेन्नि-शरीर; तडित्तन्-फूल उठा; अँन्ने-क्या (ही आश्चर्य); तन्मै तेर्वार्-स्थिति जाननेवाले; यार् उळ्ळर्-कौन हैं । १२६२

श्रीराम के रोम पुलकित हुए । आँखें डबडबा आयीं और उत्तरोत्तर अश्रुजल उमड़कर वर्षा के समान बहने लगा । भुजाएँ और वक्ष फड़क उठा । स्वेदकण प्रकट हुए । सुन्दर अधर मुड़े । साँसें तीव्र गति से निकलने और अन्दर आने लगी । शरीर फूल गया । कैसा आश्चर्य ! तब की उनकी स्थिति का वर्णन कौन परख कर सकेगा ? । १२९२

आण्डैय तरुक्कन् मेन्द तैयहे ळरिवं नम्वाल्
 काण्डलुक् कैळिय ळान्ना ळैन्ऱपिन् कालन् दाळ्
 ईण्डित्तु मिरुत्ति पोला मेन्ऱन् तैन्ऱ लोडुम्
 तूण्डिरण् उन्नैय तोळान् पौरुक्कैन् वेळुन्ऱु शौन्ऱान् 1293

वीररुम्-वीर भी; विरिविन् पीतार-नेत्र वने; वार कळवे अमुमने-लम्बी
 पामलपारी हुपमान के; विलङ्ककम् सेने-विकट पर्वत पर की; कलङ्क-लंका के;
 वृष्णीने-उष्णारुमि; परेव कला-बहो नहो वा सकला, ऐसा; कावने पादने-सुरक्षा
 का प्रवास और; प्रहृष्युम्-वडंपन; अरुणने-सुरक्षा-प्रवास (गढ़ निर्माण आदि);

कौड-विजयी; कार् निरुत्तु-काले रंग के; अरक्कर् अत्तपोर्-राक्षस नामक लोगों की; कणितमुम्-संख्या; पिरवुम्-और अन्य विषय; अल्लाम्-सब; चोल्ल-कहते हुए जाते; वळि नैटितु-लम्बा मार्ग; अळितितु-अनायास; पोन्नार्-तय करते गये । १२६५

वीर श्रीराम और लक्ष्मण भी जाने लगे । लम्बी पायलधारी हनुमान भी उनके साथ त्रिकूट पर स्थित लंका नगर का ऐसा सुरक्षा-प्रबन्ध, जिससे सूर्य भी उसमें न जा पाये, उसके अन्य बड़प्पन, गढ़ आदि प्रबन्ध, काले रंग के विजयी राक्षसों की संख्या और अन्य समाचार सुनाता हुआ चला । वे ये सब सुनते हुए चले जा रहे थे । १२९५

अन्नेरि यिरण्डु नाळि लङ्गदन् मुदलि तोरहळ्
 पोन्नडि वणङ्गि तारैप् पुहळ्न्दुडन् पोरुन्दिप् पोवार्
 इन्नेडुम् बळुवक् कुन्नि लिन्नुळि यिरुत्तुप् पिन्नर्
 पन्तिह पहलिर् चैन्नु तैन्निशैप् परवै कण्डार् 1296

अ नैरि-उस मार्ग में; इरण्डु नाळिन्-दो दिनों में; अङ्कतन् मुतलितोर्कळ्-अंगदादि वीर; पोन् अटि वणङ्किन्नारै-जिन्होंने अपने सुन्दर चरणों पर नमस्कार किया (उनकी); पुहळ्न्दु-प्रशंसा करके; उटन् पोरुन्ति-उनके साथ लगकर; पोवार्-जानेवाले; इन्-सुहावने; नैडुम् पळुव-विशाल बागों से पूर्ण; कुन्नि-पर्वतों पर; इत् उळि-सुखद स्थानों में; इरुत्तु-ठहरकर; पित्तर्-बाद; पन्तिह पकलिल्-बारह दिनों में; चैन्नु-जाकर; तैन्नि तिवै परवै-दक्षिण-सागर को; कण्डार्-देखा । १२६६

उस मार्ग में दो दिन चलने के बाद अंगदादि वीर भी (जिन्होंने हनुमान को पहले खबर देने भेज दिया था) आकर श्रीराम आदि के चरणों पर नत हुए । सबने उनकी प्रशंसा की । फिर सब आगे चले । मार्ग में पर्वतों पर सुहावने बागों में ठहरते हुए वे बढ़े और उन्होंने बारह दिन चलकर दक्षिणी सागर को सामने देखा (वे सागर-तीर पर आ पहुँचे) । १२९६

॥ सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

